प्रस्तावना.

दृढ स्तंभ जेम मेहेलनी दृढताना कारणरूप छे, तेम दरेक शासननी प्रौढताना, ते शासनमां थएला महान पंमितो अने ज्ञानवंत एवा धुरंधर आचार्योनाअसाधारण बुद्धिवैभवे रचाएला एवा सुविहितग्रंथो, कारणरूप छे; एमाटे कार्य करतां कारणनी यत्न विशेषे करवी के, जेथीकरी कार्य निरंतर निर्विघ्नपणे जगत्नेविषे प्रवर्त्ते. कारणनी यत्नाए करी कार्यनीज अक्षयस्थिति रहे छे एटलुंज नही; पण तेनो उपभोग करनारा घणा जनोने आ संसारनेविषे घणां एक अगत्यनां बाह्यांतरंग सुखोनी सगवडता पण ते कारण करी आपेछे. चिरकालपर्यंत महान् वृक्षनुं अस्तित्व राखवानी इच्छा करनारा रक्षपाले, ते वृक्षना मूलने जलसिंचनादिक करवुं; के जेथी करी ते वृक्ष, पोताना वीजा बाह्यना अवयवोने आपो आप पुष्टता मलतां निरंतर पत्र पुष्प फलादिके करी उपकार करतुं रहे छे.

हालमां आ दुषम कालनेविषे आपणा जिनशासनरूप धर्मवृक्षनां दृढ मूल, अगाध बुद्धिवाला पंमितो अने आचार्यो—एउए रचेला परंपराए मोक्षसुखदायक एवा सुविहित ग्रंथोज छे. तेउने वर्त्तमान समयानुसारे ज्ञानरक्षणार्थे सद्गुथी सहेलो अने उत्तम तथा जेथी शुद्धधर्म प्रवृत्तिनी परंपरा चाले, ते उपाय ए छे के, ते ग्रंथोने शोधावी उपावीने बाहार पाडवा, तेउनो जगत्नेविषे प्रसार करवो, अल्पमूल्ये भाविकजनोने तेनो लाभ आपवो; इत्यादिक धर्मवृक्षमूलनी पोषण क्रिया तन मन अने धनथी करवी, ए आपणा दरेक साधर्मिकभाइउनुं सर्व अगत्यनां कामोमांनुं प्रथम कामछे.

अथवा एवा सुविहित ग्रंथोनुं संशोधन करी वीजा अप्रसिद्धग्रंथो महा प्रयासे अने महोटा खरचे पण जो ते ग्रंथो प्राप्त थता होय तो ते प्राप्त करी, तथा वली ते जो संस्कृत भाषामां होय तो तेनां गुर्जरभाषामां भाषांतर करावी उपावीने बाहार पाडवानुं महा दुर्घट अने अतिशय द्रव्यविनियोगनुं काम, जे माणस, मात्र शासनोन्नतिने माटेज, पोताना वीजां व्यवहारीक कृत्य मूकीने करे, तेने जेटलो पोताथी वने तेटलो तन मन अने धनथी आश्रय आपवो. वर्त्तमानसमयमां आपणा जिनशासननेविषे पंमितोनी न्यूनताने लीधे नवीन ग्रंथो रची शासननी उन्नति करवी, तेम तो वनतुं नथी; ए दृढता तो बुद्धिनिधान एवा पूर्वाचार्यो संपूर्ण प्रकारे करी गया छे. हवे आपणुं काम मात्र एटलुंज छे के, जगत्जीवोना उपकार माटे पूर्वोक्त पंमितो सूरिउ प्रमुख जे ग्रंथोनी रचना करी गया छे, ते ग्रंथोने केटलाक

महान सम्यक्दृष्टि पुरुषो लखावीने ज्ञानना भंडार जे करी गयाछे, अने ते ज्ञान भंडाराउ कालप्रबलताए अने अल्पबुद्धिउनी अज्ञानताए करी आधुनिककालनेवि षे वचनपणु पामी गोप्य रह्या छे, एटलुज नही पण ते ग्रंथोना भंडारोने घणो का ल अतित थवाने लीधे तथा प्रमादनेयोगे पुन ते ग्रंथोनो उद्धार न थवाने लीधे ते माना घणा ग्रंथो तो विछेद गया छे, अने थोडाज ग्रंथो जे हालमा विद्यमान छे, ते उनो कोइपण रीते जगत्नेविषे प्रसार करी ते ग्रंथोना कर्त्ताउना परोपकार रूपनो लाभ सर्व साधर्मिकभाइउने सुखे लेवा देवो जोइए बीजा बधा दानो करतां ज्ञानदान ए सर्वोत्कृष्ट छे आ शिवसुखकारक शासन छे, अने आ मिथ्यात्वि शासन छे, एवो विवेकमय जे अनुभव ते ज्ञानना योगेज थाय छे अने एवो शुद्धविवेक प्रगट थये भविकजनो, शुद्धशासननो आश्रय करी परभवनेविषे कल्याणकारक देव संपदा अथवा मोक्षसंपदा प्राप्त करे छे' अर्थात् भविकजनोनी परलोकसुख संबधी संपूर्ण सामग्री कहीए तो ते मात्र एक उत्तम ज्ञानज छे एवु जे उत्तम ज्ञान, ते पूर्वाचार्योए ग्रंथ रूपे साक्षात् मूर्तिमंत स्थापन कर्युछे, तेनी आधुनिककालने अनुसरता संस्कारे प्र तिष्ठा करी अर्थात् तेने शोधावी छपावीने भविकजनोना उपकार माटे अने फरी वि छेद न जाय तेमाटे जगत्नेविषे विस्तार करवो, के जे थकी हालना समयमा थएली पडतीनोनी अत्यंत न्यूनता पूराय ए विस्तार करनारने, तेमज एवा शुभ काममां तन मन धनथी आश्रय आपनाराउने अप्रमेय अने अखंड यशछे, ए वगर विवादे स्वत सिद्ध छे

वली जेम सैन्य, किल्ला, अने कोषादिक ए राज्यना अंगो छे, ते अंगो जेटला प्र माणमां सबल होय, तेटला प्रमाणमा ते राज्यनी प्रबलता अने दृढता लेखाय छे परचक्रीउना मनमां भय प्रवेश कराववा माटे अने स्वचक्रीउ, बलवो करी स्वतंत्र थवा माटे अथवा परराज्यमा जवामाटे उद्योग न करे, तेमाटे तेउने आक्रोशमां रा खवा ए राज्यांगोनी प्रबलता तेउना मनमां उतरे एवीरीते निरंतर प्रसिद्धपणे बताव वी, ए अतिशय जरुरनु कामछे, तेम इहा सुविहित ग्रंथो, ए धर्मरूपी राज्यनु एक मु ख्यमां मुख्य अंगछे, ते अंगनी प्रबलताथी अन्य तीर्थिउना मनमां जिनधर्मनेविषे सर्वोत्तम उत्तम विचार, अने साधर्मिकभाइउने शुद्धदेव, शुद्धगुरु अने शुद्धधर्म उपर नि रंतर श्रद्धा रहे, अने कुदेव कुगुरु तथा कुधर्मना आग्रहथी तेउ दूर रहे, ए कारणमाटे ते अंगने सबुत राखवु, ए सरासर महा आवश्यकतानु कामछे एक देशमां सर्वोत्तम रत्नोनी खाण छे, ते सबधी त्यांना सर्व लोकोने माहिती पण छे, तथापि प्रमाद, अज्ञान अने आलस प्रमुख अवगुणोएकरी ते लोको ते रत्नोनी आवश्यकता छता ते रत्नोने खाणमांज रहेवा देशामा कोण जाणे शु मोटु पोतानु महापण समजता होय ! ! ए

कालांतरे तेउंनी अप्रमादी, ज्ञानी अने उद्योगी एवी प्रजानी जाणमां ते उत्तम रत्नोनी खाण आवी; ते समये तेउ ते रत्नोने खाणमांथी वहार काढी तेनो उपयोग करती वेला वा रंवार पोताना वडीलोनी बुद्धिनो उपहास करशे के, आवां उत्तम रत्नोनी ते कालना आपणा वडिलोए कांइ गणना करी नही ? ए तेउंनी बुद्धिने शुं कहेवुं? तेम धर्मना ग्रंथोने जगत्नेविषे न प्रसिद्ध करवामां जे लोको महापण समजता होय, ते उ ना महापणने शुं कहेवुं? कालांतरे अमूल्य ग्रंथोतो कोइ परीक्षकना अने शोधकबु द्धिवालाना हाथमां जशे, ते समये तेउंनी आवश्यकताविषेनी उत्तम गणना थइ प्र सिद्धि थवानीज, तेनीसाथे अज्ञानीउंनी अज्ञानबुद्धिनी ते समये जे हेलना थशे तेप ण कांइ जेवी तेवी नही थाय—सारांश सारी वस्तुनी गणना कालांतरे परीक्षकना हाथे जगत्नेविषे थवानीज, तो ते आपणे पोतेज कां न करीए ?

ए पूर्वोक्त कारणो शीवाय बीजां पण ए पुस्तको छपावी प्रसिद्ध करवानां घणां का रणो ज्ञानवृद्धिनांछे, ते यद्यपि अही प्रस्तावनामां गौरवता थाय, तेना जयनेलीधे द र्शाव्यां नथी, तथापि विवेकीजनोना मननेविषे ग्रंथो प्रसिद्ध करवानी रमणता हर हमेश थइ रहेली छे, ए वात प्रसिद्धज छे. इत्यादिक हेतुउंने माटेज में आ प्रकरण र त्नाकर नामनुं पुस्तक छापी प्रसिद्ध करवानुं काम चालुं कर्युं छे, तेमांनो प्रथम जाग तथा बीजो जाग प्रथम छपाइ प्रसिद्ध थएलो छे, अने आ त्रीजोजाग पण सुज्ञजनो नी कृपाथी समाप्त थयो छे, तेथी मारा अंतःकरणनेविषे आनंद प्रदिप्त थयो छे.

विज्ञापना.

निरंतर धर्मश्रद्धावंत, अत्यंत विनयवंत, अने परम ज्ञानाभिलाषि एवा सुज्ञसा धर्मिक जाइउंनी तथा साधुजनोनी सेवामां आ प्रकरणरत्नाकरनो त्रीजो जाग निवेदन करतां मने परम हर्षथायछे. अने एवे समये आपणा सर्व साधर्मिकजाइउंने अति शय नम्रतापूर्वक विनती करुंछुंके, माणस कोइपण काममां निरंतर उद्योगवंत रह्योथ को ते कामना अनुजवे करी ते कामनी स्पष्टता तेनाथी उत्तरोत्तर जेम सारी थाय छे, अर्थात् कामु कामने शीखवे, तेम आ, सर्व साधर्मिकजाइउंनी रुडी सहायताए पूर्वे आरंजेला उद्योगने करतां मारो एमांने एमां केटलोक काल निर्गमन थयो छे;

महान सम्यक्दृष्टि पुरुषो लखावीने ज्ञानना भंडार जे करी गयाछे, अने ते ज्ञान भंडाराउं कालप्रबलताए अने अल्पबुद्धिउंनी अज्ञानताए करी आधुनिककालनेवि षे वधनपणु पामी गोप्य रह्या छे, एटलुज नही पण ते ग्रंथोना भंडारोने घणो का ल व्यतित थवाने लीधे तथा प्रमादनेयोगे पुन ते ग्रंथोनो उद्धार न थवाने लीधे ते मांना घणा ग्रंथो तो विछेद गया छे, अने थोडाज ग्रंथो जे हालमा विद्यमान छे, ते उंनो कोइपण रीते जगत्नेविषे प्रसार करी ते ग्रंथोना कर्त्ताउंना परोपकार कृत्यनो लाभ सर्व साधर्मिकभाइउंने सुखे लेवा देवो जोइए बीजा बधां दानो करता ज्ञानदान ए सर्वोत्कृष्ट छे आ शिवसुखकारक शासन छे, अने आ मिथ्यात्वि शासन छे, एवो विवेकमय जे अनुभव ते ज्ञानना योगेज थाय छे अने एवो शुद्धविवेक प्रगट थये भविकजनो, शुद्धशासननो आश्रय करी परभवनेविषे कल्याणकारक देव संपदा अथवा मोक्षसंपदा प्राप्त करे छे। अर्थात् भविकजनोनी परलोकसुख संबंधी संपूर्ण सामग्री कहीए तो ते मात्र एक उत्तम ज्ञानज छे एवु जे उत्तम ज्ञान, ते पूर्वाचार्योए ग्रंथ रूपे साक्षात् मूर्तिमंत स्थापन कर्युछे, तेनी आधुनिककालने अनुसरता संस्कारे प्र सिद्ध करी अर्थात् तेने शोधावी छपावीने भविकजनोना उपकार माटे अने फरी वि छेद नजाय तेमाटे जगत्नेविषे विस्तार करवो, के जे थकी हालना समयमां आपणी पंडितोनी अत्यंत न्यूनता पुराय ए विस्तार करनारने, तेमज एवा शुभ काममां तन मन धनथी आश्रय आपनाराउंने अप्रमेय अने अखंड थशछे, ए वगर विवादे स्वत सिद्ध छे

वली जेम सैन्य, किल्ला, अने कोषादिक ए राज्यना अंगो छे, ते अंगो जेटला प्र माणमां सबल होय, तेटला प्रमाणमां ते राज्यनी प्रबलता अने दृढता लेखाय छे परचक्रीउंना मनमां भय प्रवेश कराववा माटे अने स्वचक्रीउं, बलवो करी स्वतंत्र थवा माटे अथवा परराज्यमां जवामाटे उद्योग न करे, तेमाटे तेउंने आकोशमां रा खवा ए राज्यांगोनी प्रबलता तेउंना मनमां उतरे एवीरीते निरंतर प्रसिद्धपणे बताव वी, ए अतिशय जरुरनु कामछे, तेम इहां सुविहित ग्रंथो, ए धर्मरूपी राज्यनु एक मु ख्यमां मुख्य अंगछे, ते अंगनी प्रबलताथी अन्य तीर्थिउंना मनमां जिनधर्मनेविषे स्वमेव उत्तम विचार, अने साधर्मिकभाइउंने शुद्धदेव, शुद्धगुरु, अने शुद्धधर्म उपर नि रंतर श्रद्धा रहे, अने कुदेव कुगुरु तथा कुधर्मना आग्रहथी तेउ दूर रहे, ए कारणमाटे ते अंगने मजबुत राखवु, ए खरोखर महा आवश्यकतानु कामछे एक देशमां सर्वोत्तम रत्नोनी खाण छे, ते संबंधी त्यांना सर्व लोकोने माहिती पण छे, तथापि प्रमाद, अज्ञान अथवा बीजा प्रमुख अवगुणोएकरी ते लोको ते रत्नोनी आवश्यकता छतां ते रत्नोने खाणमांज रहेवा देवामां कोण जाणे शु मोटु पोतानु महापण समजता होय ! !

कालांतरे तेउनी अप्रमादी, ज्ञानी अने उद्योगी एवी प्रजानी जाणमां ते उत्तम रत्नोनी खाण आवी; ते समये तेउ ते रत्नोने खाणमांथी बहार काढी तेनो उपयोग करती वेळा वारंवार पोताना वडीलोनी बुद्धिनो उपहास करशे के, आवां उत्तम रत्नोनी ते कालना आपणा वडिलोए कांइ गणना करी नही ? ए तेउनी बुद्धिने शुं कहेवुं? तेम धर्मना ग्रंथोने जगत्नेविषे न प्रसिद्ध करवामां जे लोको महापण समजता होय, ते उना महापणने शुं कहेवुं? कालांतरे अमूल्य ग्रंथोतो कोइ परीक्षकना अने शोधकबुद्धिवालाना हाथमां जशे, ते समये तेउनी आवश्यकताविषेनी उत्तम गणना थइ प्रसिद्धि थवानीज, तेनीसाथे अज्ञानीउनी अज्ञानबुद्धिनी ते समये जे हेलना थशे तेपण कांइ जेवी तेवी नही थाय—सारांश सारी वस्तुनी गणना कालांतरे परीक्षकना हाथे जगत्नेविषे थवानीज, तो ते आपणे पोतेज कां न करीए ?

ए पूर्वोक्त कारणो शीवाय वीजां पण ए पुस्तको छपावी प्रसिद्ध करवानां घणां कारणो ज्ञानवृद्धिनांछे, ते यद्यपि अहीं प्रस्तावनामां गौरवता थाय, तेना भयनेलीधे दर्शाव्यां नथी, तथापि विवेकीजनोना मननेविषे ग्रंथो प्रसिद्ध करवानी रमणता हरहमेश थइ रहेली छे, ए वात प्रसिद्धज छे. इत्यादिक हेतुउने माटेज में आ प्रकरण रत्नाकर नामनुं पुस्तक छापी प्रसिद्ध करवानुं काम चालुं कर्युं छे, तेमांनो प्रथम भाग तथा वीजो भाग प्रथम छपाइ प्रसिद्ध थएलो छे; अने आ त्रीजोभाग पण सुज्ञजनोनी कृपाथी समाप्त थयो छे, तेथी मारा अंतःकरणनेविषे आनंद प्रद्दित थयो छे.

विज्ञापना.

निरंतर धर्मश्रद्धावंत, अत्यंत विनयवंत, अने परम ज्ञानाभिलाषि एवा सुज्ञसा धर्मिक भाइउनी तथा साधुजनोनी सेवामां आ प्रकरणरत्नाकरनो त्रीजो भाग निवेदन करतां मने परम हर्षथायछे. अने एवे समये आपणा सर्व साधर्मिकभाइउने अतिशय नम्रतापूर्वक विनती करुंछुंके, माणस कोइपण काममां निरंतर उद्योगवंत रह्योथको ते कामना अनुभवे करी ते कामनी स्पष्टता तेनाथी उत्तरोत्तर जेम सारी थाय छे; अर्थात् कासु कामने शीखवे, तेम आ, सर्व साधर्मिकभाइउनी रूडी सहायताए पूर्वें आरंभेला उद्योगने करतां मारो एमांने एमां केटलोक काल निर्गमन थयो छे;

तेणे करी ग्रंथोने शुद्ध केवी रीते करवा तथा करावदा? साधर्मिकनाइउंनी श
तिने अनुसरती गाथाना अर्थनी, श्लोकना अर्थनी, अने वाक्यरचनानी स्प
केवीरीते करवी तथा करावची? इत्यादिक वातोनो महारी अल्पबुद्धि प्रमाणे
पण किंचित् उत्तरोत्तर अनुनव थयो छे, अने ते अनुनवनो आ प्रकरणरत्नाक
त्रीजा नागमां उपयोग कर्यो उतां पण श्री प्रवचनसारोद्धारना स्थविल परठव
एक हजार चोवीश नांगाना द्वारमां, तथा वीजा पण कोइ कोइ स्थले अशुद्ध
दोष, बुद्धिदोषे करी तथा दृष्टिदोषे करी तथा गुरुगम्यना अनावथी रह्या हशे
मां कांइपण शक नथी वली आ प्रकरणरूपी रत्नाकरनेविषे दोषरूपी तृणना अ
उ कुड् होवाथी निरतर रत्नाकरनी उपरज तरया करवाना स्वनाववाला छे, ते उपर
रथी दृष्टि करनारा अर्थात् दोषदृष्टि धारण करनाराउने तो सेहेज दृष्टिगोचर थइ
ण महामूल्य एवां प्रकरणरूपी रत्नो, जेउ निरंतर महत्ववालां होवाथी रत्नाकर
तरजागनेविषे पणां उंमां रहेले, तेउने अवलोकन करनारा अने प्राप्त करनारा तो
द एवा नीरला जनोज छे माटे हु सर्व साधर्मिकनाइउंनी पासे आ पुस्तकमां
दोषोने माटे क्षमा मागुछु; अने विनती करु छुं के तेउ सर्व दोषोने सुधारी व
अने मने अल्पबुद्धिवालो जाणी वाला समजीने माहारा कोइपण दोष नणी न
महारा उपर स्नेहयुक्त कृपादृष्टि राखी तेउ पोतानुं उदारचित्त प्रदर्शित करशे

आ पुस्तकने आश्रो आपनारा सद्गृहस्थोनी यादी

आ प्रकरणरत्नाकर नामनु पुस्तक छापी प्रसिद्ध करवा माटे जेउ मुख्य मुख्य
करनारा साहेबो छे, तेमनां नाम अंकित करतां प्रथम आ पुस्तकना वांचनार
नोने मदद आपनारा जनोना सद्लक्षणोनी सूचना करुछु
जेम हंसपक्षीनी चचुमां एवाज कोइ जातिना पुद्गलो रह्या छे, के तेथी तेन
सदाकाल दूधने महण करवानाज स्वनाववाली होय छे, तेमज काकपक्षीनं
मां एवा कोइ जातना पुद्गलो रह्या छे, के तेथी तेनी चचु सदाकाल विष्टानेज
करवाना स्वनाववाली होय छे; तेमज सद्गुणीजनोना अंत करणना परिणामनो
यान कोइ उत्तम जातिना पुद्गलो रहेला होय छे, के तेथी तेमनी बुद्धि सदाक
स्वार्थ करवानेविषेज प्रवर्त्तमान थइ रहे छे, अने दुर्गुणीजनोना अत करण

रिणामनेविषे एवाज कोइ जातना पुंजजो रह्या छे, के तेथी तेमनी बुद्धि सदाकाळ दुष्कृत्यो करवानेविषेज प्रवर्त्तमान थकी रहे छे.

ए वातनो प्रत्यक्ष अनुभव आ ग्रंथ छापवाना पहेलां ए ग्रंथ छापवाना सहायनो आरंभ कर्यो, ते दिवसथी मांडीने आ त्रीजो भाग समाप्त थतां सुधीमां मने दिवसा नुदिवस स्पष्ट थतो जाय छे. एटले म्हारा आ ग्रंथो छापवाना अति दुस्तर, अने स र्वोत्कृष्ट पुण्यहेतु कृत्यनो आरंभ चालु रेहेवाथी तेनो आश्रय लेतां लेतां जे राजहंस तुल्य मोक्षनिकट भव्यजनो सद्बुद्धि वाळा छे; तेमां जोपण कोइ अल्प द्रव्यवान छे, तो पण आ माह्रा प्रारंभित शुभकृत्यने आजपर्यंत हरेक रीते जेम पोताथी बने तेवी रीते आश्रय आपताज जाय छे; अने पोताना सज्जनपणानो गुण पोतानी उदारता युक्त बतावताज जाय छे. अने जे काकपक्षीतुल्य अभव्य दूर्भव्य दुष्ट दुर्गुणीजनो छे, तेउनुं द्रव्य जो के दुष्टकृत्योमां व्यय थतां ते दुष्टो पोताने कृत्यकृत्य मानता जाय छे, तथापि आ शुभकृत्यने तेउनाथी आश्रय मळतो नथी, ए कर्मनी विचित्रताज छे.

आ ग्रंथने शेठ केशवजी नायके आपेली मददविषे.

हरेक देश, राज्य, ज्ञाति तथा संघनेविषे सर्वोत्कृष्ट शुभकर्मफलभोक्तापुरुष दीपक नी पठे प्रकाशक होय छे; तेमां वळी अद्भुत उद्युक्तमतिमान, आतपनामकर्मादिस हायकसाधनयुक्तशरीराकृतिवान, स्वनिवासस्थानजनादिकउत्तरोत्तरसुखपदादिआरोहण करणोत्सुकपुमान, ते ते स्थानीय महादीपक कहेवामां पण कांइ दोष नथी. केम के, अंधकारे करी आवरित पदार्थोने जेम दीपशिखा प्रकाश करे छे, तेम पूर्वोक्त ल क्षण पुरुष स्वाश्रित स्थानने अद्भुत प्रख्यातिरूप दीप्तिमान करे छे. जे संस्थाननेवि षे एक प्रख्यात पुरुष होय, तेना योगे तत्संबंधी इतर जनोनी पण प्रख्याती थाय छे. एवा प्रभाविक पुरुषो क्वचितज होय छे. केम के, पूर्वजन्मनेविषे उत्कृष्ट शुभ क र्मोनुं बंधन कर्या विना एवी उत्कृष्टतानी प्राप्ति थती नथी. त्यारे जे एवी उत्तमता पाम्या छे, ते पुरुष धन्यछे.

जुवो संप्रतिराजा, के जेणे जिनप्रणीत सर्वोत्तम धर्मने अंगीकार करीने एवां धर्म कृत्यो कर्यां के, जैनशासननी अति प्रख्याती थई. तेणे ठेकाणे ठेकाणे देवालयो कराव्यां; केटलाएक ज्ञानना भंडारा कराव्या; स्वधर्मीउने विविध प्रकारे आश्रयो आप्या; अ

ने पोते शुद्धश्रावकव्रतादि आचरण करी अंते उत्तम गतिने पाम्या त्यार पछी केट
लाएक काले वस्तुपाल तथा तेजपाल ए बे प्रख्यात श्रावको सर्वे संपत्तियुक्त थ
या, तेउए पण नानाप्रकार जिनचैत्यो तथा ज्ञानभंडारादि करावीने स्वधर्मनी प्र
ख्यातीनी वृद्धि करी त्यार पछी अणहिल्लपुरपाटणमां कुमारपाल राजा जिनध
[illegible] थया तेणे पण जे विचित्र स्वधर्मकृत्यो कर्याछे, ते सर्वजग
प्रसिद्ध छे अत्युत्तम अर्हत्प्रासादो तथा अत्युत्कृष्ट ज्ञानभंडार कराव्या छे, ते
कोइने अज्ञात नथी एना राज्यना समयमां विद्वत्शिरोमणीभूत श्रीहेमाचार्य थई
गया छे, तेमणे साडात्रण क्रोड श्लोक संख्यांक विविधविषयक ग्रंथो गुंथन क
र्या छे तेमांना घणा ग्रंथो वर्त्तमान काळमां विद्यमान छे ए कुमारपाल राजाना प
रम गुरु हता ए कुमारपाल राजाए पोताना आखा राजमां हिंसानो लेश पण
रहेवा दीधो न होतो तेथी जैननी कीर्त्ति ज्यां त्यां प्रसरी रही हती अन्य
दर्शनीओ गमे तेटलो छेष करता, तो पण तेउनु काई चालतु नही सर्वत्र जिनधर्म
ना जय जयकार थई रह्या हता

ए उपरथी जुवो के प्रभाविकपुरुषने लीधे धर्मनु केवु दीपन थाय छे! धर्मनु
दीपवु धर्मना कृत्योउपर आधार राखे छे. नवीन जिनचैत्यो कराववां, पुरातन जर्ज
रीभूत थई गयेलां देरासरोना जीर्णोद्धार कराववा, स्वधर्मीउने यथायोग्य आश्रय
देवो, इत्यादिक अनेक धर्मकृत्यो छे, ते बधा धर्मकृत्यो करतां ज्ञाननी वृद्धि करवा
जेवु एक उत्तम कृत्य नथी ते कृत्य तो आ ग्रंथ छपावी प्रसिद्ध करवानुंछे ते उद्यमने
[illegible] मदद करनार पुर्वोक्त संपति राजा प्रमुख महापुरुषोनी पंक्तिमां
गणवा लायक स्थानमां श्रीभुजनगरना रहेवासी श्रावकसमुदायना आगेवान जगत्
प्रसिद्ध, जेनी कीर्त्ति दशे दिशाउनेविषे प्रसार पामेली छे, अने जे एवा शुभ कृत्यो
विषे वारंवार द्रव्यनो व्यय करी कृतकृत्य थएला छे, एवा शेठ केशवजी ना
यकजी तेमनुं नामस्मरणार्थे आ पुस्तकनेविषे अर्पित करुछु

तेमज वली परम मनोहर, दयाळु, कृपणतारहित, निर्लोभि, सदा शांतमुद्र
वान, वैराग्यवान, धर्मानुरागी, अनेक शास्त्रज्ञ, चतुर, विवेकी, जे हरहमेश
धार्मिक पुस्तकोने छपाववामां उदारताथी आसरो आपताज आव्याछे, अने जे धैर्य,
गांभीर्य तथा निरभिमानादिक उत्तम गुणोए शोभनिक, महान् पुरुषोनी पंक्तिमां गणायला
एवा [illegible] विनयसागरजीना शिष्य मुनि, महिमासागरजी तथा मुनि सुमति
सागरजी [illegible] आ ग्रंथने घणोज सारो आसरो आप्योछे,

अने हजी आजपर्यंत पण ए कृत्यने उत्तेजन आपताज रहेछे. माटे ए महा पुरुषो नुं नाम स्मरणार्थे आ पुस्तकनेविषे अंकित करुंछुं.

ते वार पछी पूर्वोक्त संघस्थापक राजाओ जे अति अद्भुत धर्मकृत्यना करनार महान् पुरुषो थई गयाछे; तेमनीज पंक्तिमां गणना करवा योग्य, अने वर्त्तमान समये नृपतिसाहेब साक्षात् दिव्यमूर्तिमत लक्ष्म्यादि अनेक वैभवादियुक्त श्रीमकसुदाबादनगरनिवासी रायबाहादुर, बाबु साहेब, लक्ष्मीपतिसिंहजी छत्रपति सिंहजी, तथा रायबाहादुर बाबुसाहेब, धनपतिसिंहजी छत्रपति सिंहजी, एमणे आ ग्रंथने सारो आश्रय आप्योछे; माटे आ पुस्तकनेविषे नामस्मरणार्थे अंकित करुंछुं.

तेवारपछी श्री मुंबइनगरनिवासी शेठ हरखम नरसी, शेठ पेथाभाइ पदमसी, शेठ वर्द्धमान पुनशी, शेठ सोजपाल-देवराज एओ मुंबइमांना श्रावकमंडळना मुख्य शेठीआ छे; एमणे आ पुस्तक अंकित करवाने अर्थे घणोज सारो आश्रय आप्यो छे, माटे एमनां नाम स्मरणार्थे अत्युपकारपूर्वक आ पुस्तकनेविषे अंकित करुं छुं.

तेवारपछी श्रीमुंबइनगरनिवासी शेठ कस्तुरचंद सिंघजी पारेख, तथा शेठ कीका भाई फूलचंद-एमणे आ ज्ञानवृद्धिकृत्यने अति उदारतापूर्वक महोटो आश्रय आप्यो माटे एमनां नाम स्मरणार्थे महोटा मानसहित अंकित करुं छुं.

तेवारपछी श्रीमुंबइनगरनिवासी शेठ परबत लधा, शेठ जीवराज वसाइआ, शेठ वर्द्धमान टोकरसी, शेठ जादवजी परबत, शेठ मूळजी देवजी, शेठ ठाकरशी देवजी, शेठ मुरारजी मेजपाळ-एओए पण यथाश्रद्धानपणे आ पुस्तकने आश्रय आप्यो छे, माटे एमनां नाम महोटा उपकारपूर्वक अंकित करुं छुं.

श्री अमदावादनगरनिवासी श्रावकमंडळमां मुख्य शेठ, दलपतभाइ भगुभाइ अने शेठ मयाभाइ प्रेमाभाइ-एओए आ पुस्तकने घणी उदारताथी सारो आशरो आप्यो छे, माटे एमनां नामस्मरणार्थे महोटा आभारसहित अंकित करुं छुं

श्रीभरुचनगरनिवासी शेठ अनुपचंद मलुकचंद एमणे आ ज्ञानवृद्धि कृत्यने आशरो आपवाथी एमनुं नाम स्मरणार्थे अंकित करुं छुं.

श्रीताणंदनगरनिवासी शेठ सांकळचंद हुकमचंद-एओए पण आ शुभकृत्यने अति उत्कृष्ट आशरो आप्योछे, तथा आपता रह्या छे, तेमनुं नाम स्मरणार्थे अंकित करुंछुं.

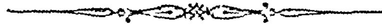
हवे साधुमंडळमा मुख्य मदद आपनारा तथा अपावनारा अने जेटलुं पोता थी बने तेटलुं उत्साहपूर्वक उत्तेजन आपनारा एवा धुरंधर संवेगपक्षी गुणानुरा गी महामोह विध्वस करनारा मुनिश्री मूळचंदजी महाराज तथा कवेरसागरजी महा राज छे. एओनां नाम स्मरणार्थे आ पुस्तकमां महोटा मान सहित अंकित करुं छुं.

[illegible] संवेगीमुनि आत्मारामजी तथा मुनि नीतिविजयजी एमना तरफथी ज्ञान
[illegible] आश्रय मळवानो गुण स्मरण करी आ पुस्तकनेविषे नाम अंकित करुंछुं
श्री[illegible] भट्टारक श्री विवेकसागरसूरि, तथा श्री तपगच्छाचार्य भट्टा
श्री[illegible]सूरि. तथा पंडित रूपसागरजी पन्यास–एओनी तरफथी आ उद्यमने
[illegible] आ पुस्तकनेविषे नाम अंकित करुं छु
[illegible] जे [illegible] पोतानी उत्कंठित रुचिए ज्ञाननुं महत्व [illegible]
[illegible] आरंभित ज्ञानवृद्धिरूप कार्यने मदद आपी छे, ते
[illegible] नाम हु आवता [illegible] अंतनेविषे अंकित करीश



श्री

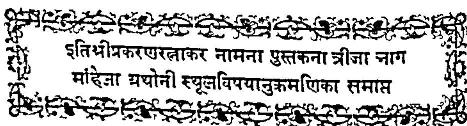
प्रकरणरत्नाकर नामना पुस्तकना त्रीजाभागमाहेला ग्रंथोनी स्थूलविपयानुक्रमणिका प्रारंभः



पहेलो ग्रंथ श्रीनेमिचंद्रसूरिकृत प्रवचनसारोद्धार नामेछे. ए ग्रंथ मूल तथा बालावबोध सहित गप्योछे. ए ग्रंथमां जैनसैलीमांना जूदा जूदा वशे ठवतेर विपयो लेइने तेनां वशेने ठवतेर द्वार बांधेलांछे. तेमांनां वली केटलांएक द्वारोमां तो प्रसंगागत् ते द्वारना नामने अनुसारे बीजा पण अपूर्व अपूर्व अनेक विपयो आवेलाछे. एवां पण घणां द्वारोछे; ते वांचनारा विवेकीजनोने आ ग्रंथ वांचवाथी स्पष्ट समजाइ आवशे. पण एनी अनुक्रमणिका मात्र वशे ठवतेर द्वारोनीज करीए छैए; कारण ते द्वारोमां वली प्रसंगे बीजी वातो जे आवीछे तेनी अनुक्रमणिका करतां गौरवता थायछे.

इति प्रवचनसारोद्धार ग्रंथनी स्थूल विषयानुक्रमणिका समाप्तमिदम्.

बीजो ग्रंथ श्रीमहावीरजिनस्तुतिरूप दोढसो गाथानुं हुंमितुं स्तवन, श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायनुं रचेलुं छे जेमां ढुंढकमतिनुं निराकरण करेलुं छे ते ग्रंथ श्रीपद्मविजयजीना करेला बालावबोध सहित छाप्यो छे तेनी स्थूल विषयानुक्रमणिका.


इतिश्रीप्रकरणरत्नाकर नामना पुस्तकना त्रीजा जाग मांहेला ग्रथोनी स्थूलविषयानुक्रमणिका समाप्त

॥ श्री जिनेंद्राय नमः ॥

अथ

श्री प्रवचनसारोद्धारग्रंथ बालावबोधसहित प्रारभ्यते.

प्रथम अर्थकर्त्ता, ऋषभादि तीर्थंकरोने नमस्कार करेछे.

आर्यावृत्तं ॥ श्रीमन्नाभेयादीन्, नत्वा कृत्वा च शारदां चित्ते ॥
प्रवचनसारोद्धारे, करोमि बालावबोधमहं ॥ १ ॥

अवतरण.— प्रत्येक शास्त्रना आरंभमां अभीष्ट देवताना वंदनरूप मंगलाचरण करवानी श्रेष्ठ पुरुषोनी रीति छे, ते प्रमाणे आ ग्रंथना आरंभमां पण प्रथम ग्रंथकर्त्ता मंगलाचरण करे छे. अने ते मंगलाचरण द्वाराए ग्रंथनां अभिधेय संबंध प्रयोजन तथा अधिकारी ए चार अनुबंधोनी सूचना करे छे.

मूल आर्याः— नमिऊण जुगाइ जिणं, वोछं भव्वाण जाणण निमित्तं; पवयण सारुद्धारं, गुरूवएसा समासेणं. ॥ १ ॥ अर्थ.— जुगादि जिन जे श्री ऋषभदेव भगवान, तेमने नमस्कार करीने भव्य प्राणीउने बोध थवासारु संक्षेपे करी गुरुना उपदेश वडे प्रवचन सारोद्धारने कहुं छुं. आ आर्यामां जुगादि जिन श्री ऋषभदेव भगवानने नमस्कार कर्यो छे ते वडे आद्यनेविषे मंगलाचरण सिद्ध थयुं. भव्य प्राणीउ कहेवाथी अधिकारीनी सूचना करी, जाणवा निमित्ते ए प्रयोजन जाणवुं अने प्रवचनसारोद्धार ए अभिधेय कह्युं; गुरुना उपदेशरूप कथनवडे ग्रंथनो वाच्य वाचक भाव संबंध जणाव्यो. ॥ १ ॥

अवतरण.— हवे चोसठ गाथाए करी वशें ने छोतेर द्वार कहेछेः— मूल आर्याः—चिइ वंदण वंदणयं, पडिकमणं पच्चखाण मुस्सग्गो; चोवीस समहिय सयं, गिहि पडिकमणाइ याराणं ॥ २ ॥ अर्थः— प्रथम चैत्यवंदनद्वार, जे वधा द्वारोमां श्रेष्ठ छे; तेनुं वर्णन करुं छुं:—त्यां चैत्य शब्दे जिन प्रतिमा ते चंद्रकांत, सूर्यकांत, मरकत, (सोनुं) मुक्ताफल, अथवा शैलदल (पाषाण) प्रमुखनी बनावेली पण चित्तना भावेकरी अथवा कर्मकरी साक्षात् तीर्थंकरनी बुद्धि उत्पन्न थाय तेथी "चैत्य" कहिये तेने काया, मन, तथा वचनेकरी जे प्रणिधान करवु तेने

"चैत्य वदना" कहिये एवी चैत्यवदनानी विधिने केहेवे करी चै
प्रथम द्वार समजवो
हवे क्रिया क्रिया नाविके केवी केवी रीते चैत्यवदन करवु ते
वे छे – चैत्यवदन करनारो जो कोई महर्द्धिक ऋद्धिवत राजादिक हो
"सवाए इड्डिए, सवाए दित्तिए, सवा पज्जुइए, सव वलेण, अने सव प
एवां वचनो वडे जिनशासन प्रभावना निमित्ते मोटी ऋद्धिएकरी चैत्य
वी अने जो सामान्य वेनववालो पुरुष होय तो तेणे औद्धत्यादिकनो
करी अने लोकोना उपहासनो त्याग करीने चैत्यवदन करवाने प्रवर्त्तवु
ताडुनादिक सचित्त द्रव्यनो परिहार करी. कटक, (कडा) कुमल, केयूर, अने
क उचित द्रव्य लईने एक वस्त्र परिधान पहेरवो ने बीजा उपला वस्त्र
रासण करवु एवी रीते पुरुषाश्रयी विधि जाणवी हवे स्त्रीए केवीरीते
दन करवु ते दर्शावे छे – पोतानु शरीर सारीपठे ढाकीने विनप नत गात्र
मस्तक अजली बधन करी चित्तने एकाग्र राखी श्री वीतरागनु दर्शन करवा
अभिगम पूर्वक श्री जिन मदिरमा प्रवेश करे एविषे श्री भगवती सूत्रमा
छे – "सचित्ताण दिव्वाण, विउसरणाए, अचित्ताण दिव्वाण, अविउसरणा य
एगान साडिएण, उत्तरा सगेण, चक्कुफासे, अजलिय ग्गहेण, मणसो एगति कर
ण," अने श्लोक "एगाइ अचित्ताण, दिव्वाण, विउसरणाए" एवो पाठ पण
गमां आवे छे एनो अर्थ आवीरीते थाय छे – पूर्वोक्त ऋद्धिवान राजादि
पुरुष ज्यारे चैत्यवदन करवाने अर्थे जिनमदिरमा प्रवेश करे त्यारे तत्काल पो
ताना राजचिन्ह छत्र, चामर, तथा मुकुटादिक बाहेर मूकी देवा जोइए, पोतानी
साथे राखवा नही एविषे सिद्धांतमा बीजे ठेकाणे पण कह्यु छे – "अवहट्टरा
यकउहाइ, पचवरराई ककुहरूवाइ, खग्गछत्तोवाहण, मउमतचामराउय' एवीरीते
ए विधि सक्षेपे देखाडी अने देवताउनो चैत्यवदननी विधि ग्रथकर्त्ता आगलदेखाडशे
हवे "वदणय" एटले जे गुणवतनी वदना करवी ए बीजो द्वार, परिक्रमणु
ए त्रीजो द्वार, पच्चखाण करवा ए चोथोद्वार, पच्चखाण (प्रत्याख्यान) एटले
प्रत्याख्यान शब्दमाथी प्रति-आ-ख्यान ए त्रण पद नीकले छे ते दरेक पदनो
जुदा जुदो अर्थ थाए छे ते आवीरीते – "प्रति" एटले स्वेछा प्रवृत्तिने प्रति
पणे, "आ" एटले मर्यादा विवक्षित कालमान [illegible]
करवु तेने पच्चखाण कहिये अने –

मूल आर्याः—नरहंमि नूयसंपइ, नविस्स तिथंकराण नामाइं; एरवयंमिवि ताइं, जिणाणु संपइ नविस्साणं. ॥३॥ उसहाइ जिणंदाणिं, आइम गणहर पवि त्तणी नामा; अरिहंत जिनछाणा, जिण जणणी जणय नाम गई. ॥४॥ उक्किठ ज हन्नेणं, संखा विहरंत तिथ नाहाणं; जम्मा समएवि संखा, उक्किठ जहन्निया तेसिं ॥५ जिण गणहर मुणि समणी, वेउव्विय वाइ अवहि केवलिणो; मण नाण चउद्दस पु, व्वि सड़ सड्ढीण संखाओ.॥६॥ जिण जरका देवीओ, तणु माणं लंछणाणि वन्नाय; वय परि वारो सव्वा, उअंच सिवगमण परिवारो. ॥७॥ निव्वाण गमण ठाणं, जिणंतराइंच तिथ वुच्छेओ; दस चुलसीवा आसा, पणाउ तह पाडिहेराइं.॥८॥ चउतीसाइ सयाणं, दोसा अठारसारिह चउक्कं; निरकमणो नाणम्मी, निव्वाणं मिक्ष जिणाण तवो. ॥ ९ ॥ नावि जिणेतर जीवा, संखा उट्टाह तिरिय सिद्धाणं; तहयइक समय सिद्धा, एं ते पन्नरस नेएहिं. ॥ १० ॥ अवगाहणायसिद्धा, उक्किठ जहन्न मज्झिमाएअ; गिहिलिंग अन्नलिंग स्सलिंग सिद्धाण संखाओ. ॥११॥ वत्तीसाई सिद्धंतिय विरयंजा व अठ अहिय सयं; अठ समयेहि एक्किक्कूणं जावेक्क समयंतं. ॥१२॥ येवेए पुंवे ए, नपुंसए सिज्झमाण परिसंखा; सिद्धाणं संगाणं, अठठिइ ठाणंच सिद्धाणं. ॥ ॥ १३ ॥ अवगाहणाय तेसिं, उक्कोसा मज्झिमा जहन्नाय; नामाइ चउन्हंपिहु, सासय जिणनाह पडिमाणं. ॥ १४ ॥ उवगरणाणं संखा, जिणाण थविराण साहुणीणं च; जिण कप्पिआण संखा, उक्किठा एक वसहीणं. ॥१५॥ ठत्तीसं सू रिगणा, विणओ वावन्न नेअ पडिनिन्नो; चरणं करणं जंघा, विज्जा चारण गम ण सत्ती ॥ १६ ॥ परिहार विसुद्धि अहा, लंदानिज्जा मयाण अहयाला; पण वीस नावणाओ, सुहाय असुहाय पण वीसं. ॥ १७ ॥ संख्या महव्वयाणं. किइ क म्माणय दिणे तया खित्ते; चारित्ताणं संखा, ठियकप्पो अठियकप्पोय. ॥१८॥ चेइय पुहय दंमय, तण चम्म डुसाइ पंच पनेयं; पंच अवग्गह नेया, परीसहा मंमलीय स. ॥ १९ ॥ दस ठाण वुवठेओ, खवगस्सेढोअ उवसमस्सेढी; थंमिलाण नठ स्तो, अहिओ चउमहिय वीनाए. ॥ २० ॥ पुव्वाणं नामाई, पयसंखा संखआइ चउदसवि; निग्गंथा समणाविय, पत्तेयं पंच पंचेव. ॥ २१ ॥ गासे सणाण पण गं, पिंडे पाणेय एसणा सत्त; भिरका यरिया वीही, पुमहगं पाय छिजाई. ॥२२॥ सामायारीओहे, मि पय विजागंमि तहय दसहाओ; निग्गंथन्न जीवस्स पंच याग उ नववाने. ॥२३॥ साहु विहार स्सरुवं, अप्पनिमझोप गोयरिसे पडो; जाया जा या कप्पो, पच्चिवणु झार करणठिमी ॥२४॥ अहाग्ग पुच्चिसु, वीसं डझोहु दस

नपुंसेसु, पव्वावणा अणरिहा, तहविगलंगस्सरूआइ ॥ २५ ॥ जंमुननजईकप्पे, वज सेज्जाय रस्सपिमोय, जेतिय सुत्तेतम्म, जह निग्गया गिचउगइआ ॥ २६ ॥ जि ते मग्गे काले, तहा पमाणे अईय मक्कप्प, कुन सुह सेज्जा चउक्क, तेरस किरियाण ठाणाइ ॥ २७ ॥ एगम्मि वहु नवे सुअ, आगरिमा चउविहेति सामइए, तीन गाणठारस,हस्स नय सत्तग चेव ॥ २८ ॥ वग्गगहणविहाण, वत्तहारा पव तह अहा जाय, निसि जागरणम्मि विही, आलोअण दोसगन्नेसा ॥२९॥ गुरु पसु हाण कीरइ, असुहसुहेहि जे तिअ काल, उवहीगोअणकालो. नोअण नावाव सहिसुद्धि ॥ ३० ॥ सलेहणा ड्वालस, वरिसे वसहेण वसहि सगहण, उन णिस्सफासु असमरि, जलस्स सच्चित्तया कालो ॥ ३१ ॥ तेरछीओ तिरियाण माणवीओ नराण देवीओ, देवाण जग्गुणाओ, जिन्नि अ मत्तेण अहियाओ ॥ ॥ ३२ ॥ अछेरयाण दसग, चउरो नासाउ वयण सोलसग, मासाण पंच नेया, नेया वरिसाण पचेव ॥ ३३ ॥ लोगस्सरूव सन्ना, उ तिन्नि चउरोव दसव पनर सवा, तह सत्तसठ लक्कण, नेअ विसुद्धच सम्मत्त ॥ ३४ ॥ एग विह दुविह तिविह, चउहा पचविह दसविह सम्म, दवाइ कारगाई, उवसम नएहि वासम्म ॥ ३५ ॥ कुल कोडीण सखा, जीवाण जोणि लक्क चुलसीइ, तिकालाई वित्त,उ विवरण सढ़ि पडिमाओ ॥ ३६ ॥ धन्नाण मवीअत्त, खेत्ताईआण तह अचित्तं, धन्नाई चोवीस, मरण सत्तरस नेयच. ॥ ३७ ॥ पलिओवम अयर वस, प्पिणी ण उवसप्पिणीण विसरुव, दवे खेत्ते काले, नावे पोगाल परिअट्टो ॥३८॥ पन्नरस कम्मनूमी, अकम्म नूमी उ तीस अछमया, दोन्निसया तेआला, नेया पाणाइ वायस्स ॥ ३९ ॥ परिणामाण अठोत्तरसय वजच अठदस नेअ, कामाण चउवीसा, दस पाणा दस य कप्पडुमा ॥ ४० ॥ नरया नेरइआण, आ वासा वेयणाउ तणुमाण, उप्पत्ति नास विरहो, लेसावाहे परम अहिमा य ॥ ४१ ॥ नरउ वट्टाणल,द्धिसनवो तेसु जेसि ववबाउ, सखाउ पज्ञ त्ताण, तहायउ वट्टमाणाण ॥ ४२ ॥ कायठिइ नवठिईउ, एगिंदिय विग ल सन्नि जीवाण, तणुमानमेसि इंदिय, सरूव विसयाय लेसाउ ॥ ४३ ॥ एआण जठ गई, नत्तोगयोहि आगईएसि, उप्पत्ति मरण विरहो, जायत मरत सखाय ॥ ४४ ॥ नवणवइ वाणमतर, जोइसिअ विमाणवास देवाण, ठिइ नवण देहमा ण, लेसाउ उहि नाणच ॥ ४५ ॥ उप्पत्तीए तहुवट्टणाइ विरहो इमाण सखाय, ज म्मियएयाणगई, जत्तो वाआगईएसि ॥ ४६ ॥ विरहो सिद्धि गईए, जीवाणाहारगा

हण कसाला; तिन्नि सया तेसठी, पासंमिणछयपमाया ४७ नरहाहि वा हलहरा, रहिणो पडिवासु देवरायाणा; रयणाइं चउदस नव, निहिउ तह जीव संखाउ ४७ कम्माइ अठतेसिं, उत्तर पयडीए अठवन्न सयं; बंधोदयाणुदीरण, सत्ताणय किं पिहु सरूवं ॥ ४९ कम्मठिई सावाहा बायालीसाय पुन्न पयडीउ; वासीइ पाव प यमी उंनाव ठक्कस पमिज्जेयं ॥ ५० ॥ जीवाण अजीवाणय, गुणाण तह मग्ग णाण पत्तेयं; चउदसगं उवउगा, वारस जोगाय पन्नरस ॥ ५१ ॥ परलोअगई गु णवा, एसु तहताण काल परिमाणं; नरय तिरि नर सुराणं, उक्कोस विउव्वणाका लो ॥५२॥ सत्तसमुग्घाया ठप्पज्जत्तिउ अणहारया चउरो; सत्तनयछाणाइं, ठप्पासा अप्पसहाउ ॥ ५३ ॥ जंगाणिहिवयाणं, अठारस पावठाण गाइंपि; मुणि गुण स त्तावीसा, इगवीसा सावय गुणाण ५४ तेरिक्किणुक्किठ, गप्पठिइ तहय सामणुस्सी णं; गप्पस्सय काय ठिई, गप्पठिई जीव आहारो ॥ ५५ ॥ रिठु रुहिर सुक्क जोए, तेत्तिअ कालेण गप्प संभूइ; जेति अपुत्ता गप्पे, जेत्ति अ पिअरोअ पुत्तस्स ॥५६॥ महिला गप्प अजोगा, जेत्ति अ कालेण अवीअउ पुरिसो; सुक्काईण सरीर, ठिया ण सवाण परिमाणं ॥५७॥ संमत्ताई णुत्तम, गुणाणलाहंत रंज मुक्कोसं; न लहंति मा णु सत्तं, सत्ता जेणंत रूवट्टा ॥५७॥ पुव्वंग परीमाणं, माणं पुवस्स लवण सिहमाणं; उस्सेह आय अंगुल, पमाण अंगुल पमाणाई ॥ ५९ ॥ तम कायसरूवमणं,— तठक्कगं अठगं निमित्ताणं; माणुम्माण पमाणं, अठारस नरक भोज्जाई ॥ ६० ॥ ठठाण वुढिहाणी, अवहरिउ जाइ नेव तीरंति; अंतर दीवा जीवा, जीवाणं अप्प बहुअंच ॥ ६१ ॥ संखानिस्सेस जुग,—प्पहाण सूरीण वीर जिणतिछे; उस्स प्पिणि अंतिमजिण, तिछ अविछेय माणंच ॥ ६२ ॥ देवाणप्प वियारो, सरूव म ठएह काएहराईणं; सज्झायस्स अकरणं, नंदीसर दीव ठिठ भवणं ॥ ६३ ॥ लद्धीउ तव पाया, ल कलस आहारगस्स रूवंच; देसा अणारिया आ,— रिया य सिद्धे ग तीस गुणा ॥६४ ॥ समय समुद्दरियाणं, आसत्य समत्तिमेसि दाराणं; नामुक्कित्त ण पुव्वा, संखिसय विआरणा नेआ ॥ ६५ ॥

अर्थः—आ ग्रंथमां आरंभथी अंत पर्यंत बधा द्वारोना भावनो उद्धार सिद्धांतो मांथी कर्यो छे. ते उपर कहेला द्वारोनां नामोत्कीर्त्तन पूर्वकज तेमां विषयविषे पण विचारणा जाणवी ॥ ६५ ॥

एवी रीते सर्व द्वारोनां नाम कह्या पछी अनुक्रमे द्वारवखाणतां प्रथम चैत्यवं दन द्वारनुं वर्णन करे छे — आ ग्रंथ उपर संस्कृत भाषामां टीका कर्त्ताए शास्त्रां

तरनी समतथी चैत्यवंदना करने विषे (१७७) स्थानकनी जणावनारी त्रण गाथाउ कहेछे – आर्या – "सोलस पुण आगारा, दोसाए गुणवीस उस्सग्गे, उ च्चिय निमित्त हुतिअ, पचेवयहेयवो नणिया ॥१॥ अट्ठिगाग पुणबारस, दमायच व हुति नायवा, तिन्नेव वंदिणिज्जा, धुइउं पुण हुति चत्तारि ॥२॥ तिन्नि निसीहीए मा,इ तीस तह सपयाउ सत्तणउं, चियवंदणमि नेयं, सत्तण उत्तरंपु गणाण ॥३॥ अगणीउं छिंदिज्जवि, बोही खोहाइ दीहडक्कोय; इय एव माइएहिं, अभ्भग्गो हु ज्ज उस्सग्गो " ॥ ४ ॥ एमां चोथी गाथा पूर्वे कोई प्राकृत व्याख्या कर्त्ताए ना खी जणाय छे. तेथी अमे पण आंही लई लीधीछे

हवे सूत्र कारक कहेछे –मूल आर्या –तिन्नि निसीहिय तिन्निय, पयाहिणा ति न्नि चेवय पणामा, तिविहा पूयाय तहा, अवछतिय नावण चेव ॥६६ ॥ तिदि सिनिरिक्खण विरई, तिविह नूमी पमज्जण चेव, वन्नाइ तिअ मुद्दा, तिअ घ ति विह च पणिहाण, ६७ ॥ इय दह तिय संजुत्त, वंदणयंजोजिणाण तिक्काल; कु णइनरो उवजुत्तो, सो पावइ निज्जर विउल ॥६८॥ अर्थ –दश प्रकारनी त्रिक वर्त्ते चैत्यवंदन करवु, ते दर्शावे छे –जे निषेधे करी नीपनी ते नैषेधिका कहिये तेमां प्रथम काया, वचन, अने मनना अनुक्रमे करी जे घर संबंधी व्यापार थाएछे तेनो निषेध करवो इत्यादि निषेधिकात्रिक् आगल कहेसे बीजी प्रदक्षिणा त्रिक् एटले ज्ञान, द र्शन, अने चारित्रनी आराधना रूप अनुक्रमे चैतने दक्षिण दिशायो त्रण प्रद क्षिणा करवी त्रीजी प्रणाम त्रिक, एटले जिन प्रतिमाने सन्मुख आवी नक्ति अतिशय करी नूमि उपर त्रण वार माथु टेकीने नमस्कार करवो चोथी पूजा त्रिकनो प्रकार "पुप्फरकय" इत्यादि आगल कहेशे पांचमी अवस्थात्रिक ते "अवछ तिअ होइ ठवमछ" इत्यादिक वाक्ये करी ग्रंथकर्त्ता आगल कहेशे छठी त्रिदिशा निरख णवर्ज्य त्रिक एटले चैत्यवंदन समये जे दिशामां जिन प्रतिमा होय ते दिशाएज निर खवु, अर्थात् प्रतिमा सामे जोवु, बाकीनी त्रण दिशा कोरे नजर करवी नही बालबोध व्याख्या कर्त्ता लखे छे के कायाए करी बे हाथ जोडी मस्तके लगाडी, मने एकाग्र नगव त नेध्यावतो वचने करी मधुर वाणीवडे परमेश्वरना गुण स्तवतो जे दिशिए प्रतिमा होय ते दिशिए जोवु बाकीनी त्रण दिशि सन्मुख जोवु नही जो बीजी दिशा तर फ जोइए तो चैत्यवंदनाने अनादर थाय सातमी नूमि प्रमार्जन त्रिक् एटले चै त्यवंदन करनाराए जीवयत्नने अर्थे सम्यक् प्रकारे दृष्टिवडे जोईने जो गृहस्थ हो य तो वस्त्राचले करी अने साधू होय तो रजोहरणे करी त्रण वार नूमिका प्रमा

र्जन करवुं "आठमी वन्नाऽ तिअंवन्नद्वा" इत्यादि नवमी "मुद्दाऽतियं जिणमुद्द" इत्यादिवडे जाणी लेवुं. एटले आठमी वर्णत्रिक्, नवमी मुद्रात्रिक् ए त्रिकोना अर्थ आगल कहेवाशे तेथी अत्रे लख्या नथी. अने दशमी प्रणिधान त्रिक् पण "कायम णा" इत्यादि गाथावडे आगल आवशे माटे आ ठेकाणे विस्तार कर्यो नथी. एवी रीते उक्त दश त्रिक् वडेज पुरुष प्रभात मध्यान्ह अने संध्या समये सावधान चित्तथी श्री वीतराग भगवाननुं वंदन करे; ते समस्त कर्मनो क्षय करवा वाली अने मोक्षरूपी लक्ष्मीने देवावाली विस्तीर्ण निर्जराने पामे. ॥ ६७ ॥

अवतरण.—उपर कहेली तिन्निनिसही प्रमुख दश त्रिक्नुं विस्तारथी वर्णनकरेछे.

मूलः—घर जिणहर जिणपूआ, वावारच्चायउ निसीह तिगं; पुप्फरकय थुएहिं, तिविहा पूया मुणेयवा. ॥ ६९ ॥

अर्थः— गृहस्थ संबंधी जे जे सावद्य व्यापार छे ते सरवेनो त्याग करवो तेने प्रथम निषेध कहेवुं, एटले चैत्यवंदन करवा जतां जिनालयनी पायरी उपर पग मूकतांज पोताना घर संबंधी अथवा धंधा व्यवहार संबंधी सर्व व्यापारने तजी देवुं. अर्थात् तेनोनिषेध करवो. बीजो जिनगृह संबंधी जे जे पाषाण तथा काष्ट प्रमुख घडाववारूप सावद्य व्यापार थतो होए ते सरवेनो त्याग करवो तेने बीजो निषेध कहेवो. एटले जिनगृहमां प्रवेश थया पछी श्री जिननी सन्मुख स्थित छतां ते जिनगृह संबंधी समारवा वगेरे व्यापारनो निषेध करवो. अने श्री जिनेश्वरनी पूजा करती वखते फूल, फल, जल दीपक इत्यादि पूजानी सामग्री जे भेली करी होए ते पूजा थई रह्या पछी चैत्यवंदन करवाना समये ते सावद्य व्यापार जाणीने सरवे तजी देवुं. अर्थात् तेनो निषेध करवो. तेने त्रीजो निषेध कहे छे. बीजी प्रदक्षिणा तथा त्रीजी प्रणाम त्रिक्नुं लक्षण आगल कह्युं छे. चोथी पूजा त्रिक्नुं व्याख्यान आगल कह्युं नथी माटे ते कहे छेः—पूजा त्रण प्रकारनी कही छे. तेमां पहेली विविध वर्णना महासुगंधवाला फूलो वडे पूजा करवी कही छे ते. बीजी शाली तंडुलादिकवडे पूजा कहीछे ते. अने त्रीजी स्तुतिरूप पूजा; एटले जेमां लोकोत्तर सद्भूत तीर्थंकरना गुणोनी अने संवेगनी उपजावनारी स्तुति होय. इहां गाथामां "पुप्फादि" प्रमुखना उपलक्षण वडे बीजा ठेकाणे कहेली श्री भगवंतनी पूजा विधिनेविषे महा मनोहर रत्न, सुवर्ण, मुक्ता भरणादिक अलंकारो अने नाना प्रकारना वस्त्र पेहेराववांनु कह्यु छे ते आंही पणजाणी लेवु. अने श्री जिनेश्वर आगल सरसव, तथा चोखा प्रमुखे करी आठ मांगलिक

लखवां पठी प्रधान जल मंगल दीप, दधि, घृत, प्रमुख पदार्थोंने
नाजनेविषे ढोववु गोरोचन तथा कस्तूरिकादिक वडे तिलक करवु ए
नगवतनी पूजा करीने इरिआ वही पडिकमवा पूर्वक शक्रस्तवादिक
वंदना करीनेजे उत्तम कवि विरचित, गंनीर अर्थ सहित, विविध वर्ण
उत्पन्न करनार, अने जेमां पोताना पापनु वर्णन करेलुं होय इत्यादिक
उत्तम स्तोत्र वडे गुणोत्कीर्तन करवु इत्यादिक प्रकारे त्रिविध पूजा कर
उपलक्षणवडे सर्व जनने आनंदने करवावाली श्रीअरिहंतनी अष्ट प्रका
पण जाणी लेवी ते विषे आ एक गाथा कही ठे – "वरधूपगंध चोक्ख
कुसुमेहिं पवर दीवेहिं, नेवज्ज फल जलेहिय, जिणपूआ अठ्ठहा नणिया
हवे गाथाना पूर्वार्द्ध वडे पांचमी अवस्था त्रिकनु वर्णन करे ठे – मू
र्या – ढाइ उउमत्थ केवलि, सिद्धत्तेहिं जिणे अवत्थ तिग, अर्थ –उद्मस्थ
केवलावस्था, तथा सिद्धावस्था ए त्रण अवस्था चैत्यवंदन करवाना सम
यरी उठी त्रिदिशा निरखण वर्ज्य त्रिक, सातमी नूमि प्रमार्जन त्रिक ए बे
नो अर्थ पूर्वे कह्या ठे माटे आ ठेकाणे लख्यो नथी
गाथाना उत्तरार्धवडे आठमी वर्णादित्रिक कहेठे – मूल आर्या – व
नअणत्थ, लंबाइ तियं वियाणिज्जा ॥ ३० ॥ अर्थ – अकार तथा ककारादि
गाना अकारप्रमुखना उच्चार करिये ते वर्णालंबन कहिये अने अर्थ थकी क
त अर्थालंबन कहियें तथा सूत्र अने अर्थ बेहुथकी उच्चरिये ते आलंबना
कहियें अर्थात् श्री नगवत संबंधी गुणानुवाद सहित आलंबने करी नगवत
प्रतिमान जावु ए रीते त्रण बालंबरी वर्णादित्रिक जाणवी ॥ ३० ॥ हवे नवम
मुद्रा त्रिक अने दशमी प्रणिधान त्रिक एक गाथावडे कहे ठे –
मूल आर्या – जिण मुद्द जोग मुद्रा, मुत्ता सुत्तीय तिन्नि मुद्दाउ, कायमणो
वयणनिगे, हलाघ निविहत्त पणिहाण पावंतरे, हण च पणिहाण तियमेयं ॥ ३१ ॥
अर्थ ॥ एक जिन मुद्रा, बीजी योगमुद्रा त्रीजी मुक्तासुक्ति मुद्रा, ए त्रण मुद्रा
नो नाम मात्र आ गाथामांना पूर्वार्धमां कहेलो ठे एनो अर्थ आगल कहशे
अने प्रणिधान त्रिकना अर्थ अग्रेज कहेठे – शरीरना अशुभ व्यापारने टालीने
शुन आकार करवा रूप काय सदा सुनम्रपणे कर कमल जोडीने मननविषे
अविश्व चिंतामणि श्री नगवतने स्थापी मुख करी मधुर वचन वडे स्तवन करवु
ए त्रिविध प्रणिधान जाणवा ॥ ३१ ॥

अवतरणः— हवे जे मुद्रावडे जे करवुं ते कहे छे.—मूलः— पंचगो पणिवाउ, थुय पाढो होइ जोग मुद्दाए; वंदण जिण मुद्दाए, पणिहाणं मुत्त सुत्तीए ॥ ७२ ॥ अर्थ ॥ सूत्रमां प्रणिपात पंचांग कह्युंछे ते प्रणिपात पंचांगमुद्राए जाणवो. स्तुति पाठ ते योग मुद्राए थाएछे "अरिहंत चेइआणं" इत्यादि चैत्यवंदना जिनमुद्रा वडे थाय छे. अने "प्रणिधानते जयवीराय" मुक्तासुक्ति मुद्रायें थाय छे. ॥७२॥

अवतरणः—पंचांग प्रणिपात करवानो प्रकार कहेछेः—मूलः—दो जाणू दुन्नि करा, पंचमगं होइ उत्तमंगं तु; संमं संपणिवाओ, नेउ पंचंग पणिवाओ. ॥७३॥ अर्थः—बे जानु एटले गुठणो बे कर एटले हाथ ए चार अंग थया अने पांचमो उत्तमांग एटले मस्तक ए पांचे अंग समके० रूडीरीते पृथवीने लगाडी नमस्कार करवो. यद्यपि इहां सूत्रमां भूमीए लगाडवानुं कह्युं नथी तथापि परंपरा संप्रदायथी अंगीकार करी लेवुं, प्रकर्षे करी श्रीभगवंत आगल प्रपतन एटले नमन करवुं तेने संप्रणिपात जाणवो. एवी रीते पंचांग प्रणिपातनो प्रकार कह्यो. ॥ ७३ ॥

अवतरणः— मुद्रा करवानो प्रकार कथन करेछेः— मूलः— अन्नोनंतर अंगुलि, कोसागारेहिं दोहि हछेहि; पिट्टोवरि कुप्परिसिं, ठिएहिं तह जोग मुदत्ति. ॥ ७४ ॥ अर्थः—बे हाथनी दशे आंगलीओ माहोमाहे घालीने कमलना डोडानी परे आकार करवो. पछी पेट उपर बेउ भुजानी कोणीउंटेकवी राखवी एम करता योगमुद्रा थाय.

मूलः— चत्तारि अंगुलाइं, पुरओ ऊणाइ जछ पछिमओ; पायाणं उस्सग्गो, एसा पुण होइ जिणमुद्दा. ॥ ७५ ॥ अर्थः—बे पग सरखा उभा रहीने पग वच्चे चार आंगला जेटलो अंतर राखवो तेमां पण पेनीओ वच्चे चार आगलथी पण कांइक ओछो अंतर राखीने काउसग्ग करिये ते जिनमुद्रा कहेछे. ॥ ७५ ॥

मूलः— मुत्तासुत्ती मुद्दा, जछ समा दोवि गन्भिया हछा; ते पुण निलाड देसे, लग्गा अन्ने अलग्गत्ति. ॥७६॥ अर्थः—बेहु हाथ भेला करी पोला राखवा पण हथेलीने हथेली लगाडवी नही मात्र आगलीओना उपरना भाग अने हथालीओ नो थडनो भाग एक बीजानो साथे लागी रेहवो जोइए. जोडेला हाथोनो वच्चे थोडोक पोकल जागा राखवी. एवी रीते वचलाग सहित गर्भितपणे मुद्रा करीने ते ललाटने लगाडवी. केटलाएक ग्रंथकर्त्ताओ कहेछे के, ते मुद्रा करीने ललाट नी सांवे जे आकाश प्रदेशे रह्या थका हाथ जोडे देखाय त्या राखिये एटले ललाट अने ते मुद्रावच्चे अवकाश रेहवो जोइए. एने मुक्तासुक्ति मुद्रा कहेछे. ॥ ७६ ॥

अवतरण.— चैत्यवंदना करवाना समये वंदन करनाराए किंचे ठेकाणे उभा रही

ने वंदना करवी ते अवग्रहपूर्वक कहेछे —मूल —दाहिण वामग विउ, नर नारिगए निवदए देवे उक्तिठ सठि हत्थु, गहे जहन्नेण कर नवगे ॥ ७७ ॥ अर्थ — वंदन कर्त्ता दक्षिण एटले जमणी बाजुए पुरुषोनो समूह रह्यो थको देव वांदे अने वाम एटले मावी बाजुए स्त्रीउनो समूह रह्यो थको देव वांदे त्यां उत्कृष्टो साठ हाथनो अवग्रह एटले अंतर अने जघन्य नव हाथनो अंतर तीर्थंकरथी होवो जोइए, ए बन्ने अंतरना वच्चेनो जे अंतर तेने मध्यम अवग्रह कहियें ॥ ७७ ॥

अवतरण — नमस्कारादिकनी संपदा एटले विश्राम लेवानास्थानकनी संख्या कहेछे — मूल — अठठ नवठ्य अ,ठवीस सोल सय वीस वीसामा, मगल इरिया वहिया, सक्कठय पमुह दंमेसु ॥ ७८ ॥ अर्थ — आ ठेकाणे अनुक्रमे करी मंगल रूप नवकारनेविषे आठ संपदा, इरिया वहियानेविषे आठ संपदा शक्रस्तवनेविषे नव संपदा, अरिहंत चेइयाणनेविषे आठ संपदा, चोवीसत्थानेविषे अठावीश संपदा, पुक्खर वरदीनेविषे शोल संपदा, अने सिद्धाण बुद्धाणनेविषे वीश संपदा एटला वीसामाना स्थानक ए दंमकोमां जाणवा ॥ ७८ ॥

अवतरण — सरवे संपदाउनी संख्या कहे छे — मूल — पंच परमेठि मंते, पए पए सत्त संपया कमसो, पजंत सत्तर सक्खर, परिमाणा अठमी नणिया ॥ ७९ ॥ अर्थ — पंच परमेष्टी मंत्रनेविषे प्रत्येक पदने अंते संपदा कही छे एवा अनुक्रमे सात पदनी सात संपदाओ थाय अने छेनो अठमी संपदा सत्तर अक्षर प्रमाण प्रवचन प्रमुख नगवंत कही छे कोइक आचार्य एम कहेछे के पढम हवइ मंगल ए नव अक्षरनी आठमी संपदा अने ए सो पंच नमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो ए बे पदनी उठी संपदा जाणवी ॥ ७९ ॥

अवतरण — इरिआ वही प्रमुखनी संपदाना धुरिया कहे छे — मूल — इछ गम पाण हामा, ज मे एगिंदि अनिहया तस्स, इरिया वीसामेसु पढम पया हुंति नायवा ॥ ८० ॥ अर्थ — पहेली "इछामि पडिकमिउं" बीजी इरिया वहियाए त्रीजी गमणागमणे चोथी पाणक्कमणे पांचमी जेमेजीवाविराहिया उठी एगिंदिया सातमी अनिहया आठमी तस्सउत्तरिकरणेण इहां "ठामिकाउसग्गं" ए पद हवी इरियावहीनु सूत्र छ, ए सूत्रमां सर्व मलीने बत्रीश पद छे अने आठ संपदा छे "ठामिकाउसग्गं" पावन रह्या तेमाटे काउसग्ग दंमक कहिये ॥ ८० ॥

मूल — अरिह आइगर पुरिसा, लोगो नय धम्म अप्प जिण सव्वा स हव्ववरपाल, पदमुलिंगए पया नेया ॥ ८१ ॥ अर्थ — "नमोत्थुणं ए"

हेला पद वमे वंदना करनाराने क्रियानुं कहेनारपणुं जणाव्युं. अने अरहंताण नगवंताण " ए बे पदोवमे नगवंतनेविषे स्तोतव्य करवानी योग्यता जणावी. ए त्रणे पदोनी एक संपदा थई. "आदिगर" इत्यादि जे त्रण पद छे ते स्तुतिपर छे माटे स्तोतव्य जाणवा; अने तेनी बीजी संपदा समजवी. एने साधारणासाधारणरूप संपदा कहे छे. जे कारण माटे तीर्थंकर स्वयंसंबुद्ध अने आदिकरणशील छे. ते कारण माटे ते स्तुति करवाने योग्य छे. एवुं आ संपदाथी सिद्ध थाय छे. "पुरुषोत्तमाण" इत्यादि जे चार पद छे. तेमां जिननी स्तुति होवाथी तेनी स्तोतव्य संपदा थाय छे. एज असाधारणगुणरूप हेतु संपदा थाय छे. ते हेतु दर्शावे छेः— सिंह, पुंमरीक एटले कमल, अने गंधहस्ति ए त्रणेना धर्मने नोगववाथीपुरुषोत्तम कहेवाय छे. तेथी स्तोतव्यपणानी उत्पत्ति सिद्ध थाय छे "लोग्" इत्यादि पांच पदनी चोथी संपदा थाय छे. एमां सामान्यपणे स्तुति कही छे, ने एथी सर्व जनो पर उपकारीपणु सिद्ध थाय छे, तेने लीधे एने उपयोग संपदा कहे छे. वली एमां ज लोकोत्तमादि विशेषण कह्यांछे तेथी परार्थत्वपणे जणाव्युं छे. "अनय" इत्यादि पांच पदनी पांचमी संपदा थाय छे. एमां पूर्वोक्त उपयोग संपदाने हेतु संपदापणुंजणाव्युं छे. केमके, अनय दानादि पदे करी परना अर्थिनी सिद्धिनुं प्रतिपादन होवाथी एने उपयोग हेतु संपदा कहे छे. "धम्मदयाणं" इत्यादि पांच पदनी छठी संपदा थाय छे. एमां धर्म दायकादिक विशेषणे करीज स्तुति करी छे. ए संपदानेविषे उपयोग होय तेथी एने विशेषें उपयोग संपदा कहे छे. "अप्पमिहय" ए पदनी सातमी संपदा थाय छे. एमां श्रीअरिहंत नगवतने अप्रतिहत वर ज्ञान दर्शन धर व्यावृत्त छद्मस्थ प्रमुखतावडे स्तुति करीछे, ने स्तुति करनार पण तेवोज थाय तेथी एने सकारण स्वरूप संपदा कहे छे. "जणाणं" इत्यादि चार पदे करी आठमी संपदा थाय छे. एमां पोतानी पठे बीजा जनोने फलनुं करवा पणुं अर्थवडे दर्शाव्युंछे. केमके, ए पदनो अर्थ एवोज छे, तेथी एने आत्मतुल्य परफल कर्त्तव्य संपदा कहे छे. "सव्वन्नूणं इत्यादिथी जिअनयाणं" पर्यंत नवमी संपदा थाय छे. एमां प्रधान गुणनो अपरिक्षय थकी प्रधान फलनी प्राप्तिकरी अर्थ रहेलो छे, अने जे सर्वज्ञ सर्व दर्शी छे, तेनेज शिव अचलादि स्थानकनी प्राप्ति जित नय पणानो अंगीकार होय तेथी एने अनय फल संपदा कहे छे. ए संपदायें करी शक्रेंद्र श्रीजिनवरना जन्मादिकने विषे स्तवे तेथी ए शक्रस्तव केहेवाय छे, तेनेविषे जे संपदा छे तेना ए उल्लिंगन चितारवाना पद जाणवा. इहां जे

जायां षष्ठी प्रतिबोधे सप्तमी सामान्यतो यतेरहो रात्रमध्ये सप्त
पि चैत्य वंदना कार्येवान्यथातिचार संभवात् महानिशीथे प्रायश्चित्त
गृहीमाय साध्वीना त्रिसंध्य चैत्यवंदना न कुर्यात्तस्य प्रायश्चित्तं इति
॥ ९० ॥ मूल –पडिकमउ गहिणो विहु, सत्तविह पचहाउ इअरस्स
त्रण पुणा, तीहु संजासु इयतिवीह ॥९१॥ अर्थ – बन्ने पडिकमणाने
करीने गृहस्थनेपण सात प्रकारे चैत्यवंदना करवी, अने इतरके०बीजाज
मणा ना करनार तेने पांच वखत चैत्यवंदना करवी,
न करे तेने उत्रामांउत्री त्रण संध्या समये तो जरूर चैत्य वंदना करवानु कह्यु ठे अने जे
अवतरण – हवे जघन्य, मध्यम, अने उत्कृष्ट रीते चैत्यवंदना करवी
तेने – मूल – नवकारेण जहन्ना, दंडग थुइ जुअल मज्झिमा नेआ,
तिहि पुण, गकाउप पंच मिम्माया ॥ ९२ ॥ अर्थ – काउसग्गने
नमस्कार [illegible], 'नमो जिणाण' इत्यादि वडे एक नमस्कार कही
गए हाथ अथवा पराग प्रणाम करवो ते जघन्य चैत्यवंदना भूमितपर
'[illegible]' इत्यादिक दंडक थुइ बन्ने करी देवनी वंदना करवी तेने मध
[illegible]वंदना कहे ठे अने उत्कृष्ट चैत्यवंदनातो साधु अथवा श्रावक चैत्य
[illegible] पर्याप्ति प्रतिलेखित प्रमार्जित स्थण्डिलनेविषे रह्यो ठता त्रै
[illegible] स्थाप्यां ठे पोतानी दृष्टि अने मन जेणे, वली संवेग वैराग्यना
[illegible] रह्या ठ तना गमांच तण करीने कंचुकित थयु ठे जेनु शरीर, अने
न थय [illegible] ठे हर्षाश्रुना पूर तेणेकरी जेना नयनकमल पूरण थय
[illegible] पुन थया थका अन्यत दुर्लभ जगवतनु नमन मनमां मान
[illegible] प्राकृतमागमुइराक परमेश्वरनी सन्मुख स्थित रह्यो थको अस्खलि
[illegible] पाठ [illegible] चैत्यवंदे तेने उत्कृष्ट चैत्यवंदना कहेले ॥ ९२
[illegible] गाथाए करी चैत्यवंदना द्वारनु वर्णन कर्यु हवे (गुरुवंदना)
[illegible] वदन करनां ठता प्रथम एक वा ने बाणु स्थानिक वांदणाना कहेले –

अथ द्वितीय गुरुवंदनद्वार प्रारभ्यते

मूल – मुहपत्ती [illegible] [illegible] पणवीस हुति पत्तेय, ठठाणा ठवयु
[illegible] हवे हवंति गुरुवयणा ॥ ९३ ॥ अहिगारिणाय पंचय, इयरे पचर पर
[illegible], [illegible] पचा, निद्दाण पचर आहरण ॥ ९४ ॥ आसायण तत्ती
म [illegible] कारणा अठ, बाणुया अगय ठाणाण वंदणे होइ नायव ॥ [illegible] ॥

अर्थः–मुखनो अनंतक एटले वस्त्र, एने मुखानंतक अथवा मुहपत्ती कहेछे. एनी पचीशपडिलेहणा तथा शरीरनी पचीश पडिलेहणा, आवश्यके पचीश वांदणा, एम पचीस प्रत्येके जाणवा. छ स्थानक, छ गुण, अने छ गुरुवचन. आचार्यादिक अधिकारी पांच, इतर अनधिकारी पासत्थादिक पांच, व्याक्षिप्तादि प्रतिषेध पांच, अवग्रह एक, अभिधान पांच वंदणचिइ इत्यादि पांच आहरण सीयले इत्यादि, तेत्रीश आसातना, बत्रीश दोष, "अणाढियं" इत्यादि वांदणा देवाना कारण आठ, ए सर्वमळी एकशो ने बाणु स्थानक वांदणानेविषे थाय छे. ॥ ए३ ॥ ए४ ॥ ए५ ॥

अवतरणः– एवी रीते उद्देश मात्र देखाडीने हवे विस्तारपणे अनुक्रमे करी कथन करतां छतां प्रथम मुहपत्तीनी पचीश पडिलेहणा देखाडे छेः– मूल.– दिट्ठि पडिलेहण एगा, नव अक्खोडा नवेव पक्खोडा; पुरिमिल्ला छच्चभवे, मुहपत्ती होइ पणवीसा. ॥ ए६ ॥ अर्थ.–प्रथम मुहपत्ती लईने दृष्टि पडिलेहण करवुं, पछी नव अखोडा, नव पखोडा तथा छ पुरिमिल्ला करवां, ए संप्रदायगम्य छे माटे विस्तार कर्यो नथी. एवी रीते मुहपत्तीनी पचीश पडिलेहणा जाणवी ।।ए६॥

हवे देहनी पचीस पडिलेहणानी गाथा ग्रंथांतरथी कहेछेः–"बाहू सिर मुह उरे, पाए सु य तिन्नि हुंति पत्तेयं; पिट्ठी हुंति चउरो, एसा पुण देह पणवीसा." मूलः– छत्ताइसु तिन्नि सिरे, तिन्नि मुहे तिन्नि उरसि चउ पिट्ठे; चलणे सुछक्क एवं, पणवीस पमज्जणा देहे॥ ए७ ॥ अर्थ.–छ बांहनेविषे, तेमां प्रथम डावी बांहनो मध्य पछी जमणो पासो पछी डावोपासो ए त्रण एमज जमणी बांहनेविषे पण त्रण, एवीज रीते मस्तक उपर त्रण, मुख उपर त्रण, उरएटले हृदय उपर त्रण, ते पण सर्वत्र मध्य दक्षिण अने वामभागें अनुक्रमे देवी पीठ एटले वांसा उपर चार, ते दक्षिण भागे वामे भागे उपर अने हेठे एवी रीते चार जाणवी अने चरणोनेविषे छ. एमां पण प्रथम डावा चरणनेविषे ने पछी जमणा चरणनेविषे ते पण मध्य दक्षिण तथा वाम भागना क्रमेदेवी एवी रीते देहनेविषे पचीश प्रमार्जन करवां ए पुरुष शरीर संबंधी प्रमार्जन कह्यां अने स्त्रीना शरीरना केटलाएक अवयवो गोप्य रहेवाने लीधे दर्शन राखवा भणी पूर्वोक्त पुरुषनी रीति प्रमाणे छ बाहोनी उपर छ चरणोनी उपर, तथा त्रण मुखनी उपर एवी रीते पंदर प्रमार्जन करवां. ॥ए७

हवे पचीश आवश्यक कहेछे – मूल –दुओणयं अहाजायं, किइकम्मं बारवयं चउसिरं; तिगुत्तं च दुपवेसं, एग निक्खमणं ॥ ए८ ॥ अर्थ.– बे व[illegible] अवनमन एटले नमन कराय छे, तेने दुअवनत कहे छे. तेमां एक तो ज्या

गुरुनी पाशे जाय छे अने "इच्छामि इत्यादिथी ते निसीहीया सुधी पोताना अ
निप्राय जणाववा शारू मुखथी उच्चार करे छे त्यारे, अने वीजु वीजी वखते पूर्व
नी पछे वांदणु करे त्यारे एम वे वार अवनमन करवु तथा अहा जाय (यथा जा
तं) एटले जेम जन्म एमा वे प्रकार छे एक श्रमणपणा आश्रयी, अने वी-
योनि निर्गमन आश्री जन्म जाणवु तेमां श्रमणपणु आश्रयी एटले जेम श्रमण
थती वखते उंगो, मुहपती अने चोल पट्टक एटलो श्रमण आश्रयी जे थया
अने योनि निर्गमनपणु एटले जेम योनिमांथी प्रसव थता वालक पोताना
मस्तकने हाथनी संपुट लगाडयो छतां वाहेर निर्गमन करे छे तेम वांदणु पण क
रवु ते माटे यथा जात वांदणु पण कहीयें वली कृतकर्म वांदणु पण केवो ए त्रण
तथा हाथ जोडी राखीने अहो कायादि वार आवर्त्त हस्तना न्यासविशेष करवा,
ए पन्नर मस्तकवडे चार वांदणां करवा खामेमिखमासमणो इहा एक शिष्यनो ग्रने
एक गुरुनो एरीते वीजे वांदणे मली चार वार मस्तक नमावे अथवा तफास स
मणिजोने एमपण गुरु शिष्यना चार जाणवा ए (१९) अने त्रण गुप्ति एटने
पोतानु मन संकल्पादिक रहित करवु छता एकाग्र राखवु, अस्खलित वचननो उ
चार करवो, अने कायाये यथोक्त आवर्त्त साचवे ए त्रण गुप्ति ए वावीस थया तथा
अवग्रहमां प्रवेश करवा समये वे वार वांदणा करवा, अने अवग्रहमाथी नीकलता
एकवार वांदणु करवु ए पचीस थया वीजे वांदणे अवग्रहथकी निकलवु नही ए९
अवतरण --हवे छ स्थानकोनु वर्णन करे छे --मूल --इच्छाय अणुन्नवणा, अवा
वाहच जत्तजवणाय, अवराह खामणाविय, छठाणा हुंति वंदणए ए९ अर्थ --प्रथम
इच्छारूप स्थानक छ प्रकारनुं छे --प्रथम नाम इच्छा, अने वीजी स्थापना इच्छाए वे सु
गम छे माटे विस्तार कर्यो नथी अने त्रीजी द्रव्य इच्छा एटले सचितादि द्रव्यनी अनि
लाषा अथवा अनुप युक्तने "इच्छामि" एवी रीते कहेवु ते तथा चोथी क्षेत्र इच्छा ए
मगधादि क्षेत्रनी इच्छा करवी ते वली पांचमी कालेच्छा एटले रात्र प्रमुख काननी
अनिलाषा जेमके, "रयणि नमिसारियाओ, चोरा पर दारियाइ इच्छंति ताना
सु निरक, वहु धन्नाकेइ इनिरक" अने छठी नाव इच्छा, एना वे प्रकार छे-
प्रशस्त अने वीजी अप्रशस्त ज्ञानादिकनी अनिलाषाने प्रशस्त नाव इच्छा क
' अने कामिनी प्रमुखनी अनिलाषाने अप्रशस्त नावइच्छा कहे छे ए वन्ने प्रका
नावइच्छामानी प्रशस्त नावइच्छा ग्रहण करवानो आंही अधिकार छे हव वीजो
स्थापनारूप स्थानक पण नामादि नेदे करी छ प्रकारनो छे -- पहेलो नामानु

ज्ञापना. अने बीजी स्थापनानुज्ञापना. ए वे सुगम छे माटे विस्तार कर्यो नथी. त्रीजी द्रव्यानुज्ञापनाना त्रण प्रकारछेः– प्रथम लौकिक. बीजी लोकोत्तर, अने त्रीजी कुप्रावचनिकी. तेना एकेकना वळी सचित्त. अचित्त अने मिश्रना भेदे करी त्रण त्रण प्रकारछे. लौकिकी सचित्त एटले अश्वादिकनी अनुज्ञापना, लौकिकी अचित्त एटले मुक्ताफळ तथा वैडुर्यादिकनी अनुज्ञापना.अने लौकिकी मिश्र एटले आभरणादि भूषित वनितादिकनी अनुज्ञापना जाणवी. लोकोत्तर सचित्त एटले शिष्य प्रमुखनी अनुज्ञापना,लोकोत्तर अचित्त एटले वस्त्रादिकनी अनुज्ञापना,तथा लोकोत्तर मिश्र एटले वस्त्रादि सहित शिष्यनी अनुज्ञापना जाणवी. अने कुप्रावचनिकी अनुज्ञापना पण उपर कहेली वे अनुज्ञापनाउनी पठे त्रणप्रकारे छे त्रीजो अव्याबाधरूप स्थानक द्रव्य अने भाव ए वे भेदे करी वे प्रकारनो छे. व्याबाध एटले पीडा तेथी जे प्रतिकूल एटले पीडा रहित होय तेने अव्याबाध कहे छे. खड्गादिकना अभिघात एटले मार वमे जे पीडा थाय छे तेने द्रव्य व्याबाध कहे छे, अने मिथ्यात्वादिकना उपघात एटले वचनादिक मार वडे जे पीडा थाय छे तेने भाव व्याबाध कहे छे. ए बेहु प्रकारना व्याबाधना अभावे अव्याबाध स्थानक थाय छे ते "वहु सुभेणभे" इत्यादि पदे करी जाणी लेवु. चोथो यात्रारूप स्थानक. एना पण द्रव्य अने भाव ए वे भेद छे. तेमां तापसादि मिथ्यादृष्टिने पोतानी क्रियामां उत्सर्पण तेने द्रव्य यात्रा कहे छे, अने साधुने विषे भाव यात्रा कहे छे. पांचमो यापनारूप स्थानक द्रव्य अने भाव ए वे भेदे करीने वे प्रकारनो छेः– तेमां शर्करा अने द्राक्षादि सारी औषधीए करीने शरीरनी दृढ यापना करवी एटले वृद्धि करवी, तेने द्रव्य यापना कहे छे, अने इंद्रिय नोइंद्रियोने उपशमेकरी विषयोथी उपराग करी शरीरने सामाहितपणु शांति करवी तेने भाव यापना कहेछे. अने छठो खामणारूप स्थानक पण द्रव्य अने भाव ए वे भेदे करीने वे प्रकारनो छे. तेमां कलुषित चित्तवाळा आ लोकना भयवडेथी बीक राखनाराने ते द्रव्यथी खामणा कहे छे अने संविग्न चित्तवाळा आ संसारथी बीक राखनाराने भाव खामणा कहेछे. एवी रीते वांदणानेविषे छ स्थानक थाय छे ते कह्या. ॥ ९९ ॥

अवतरणः-वांदणाकरनारने छ गुणथायतेकहेछे. मूलः– विणओवयारमाण,स्स भंजणा पूयणा गुरुजणस्स; तित्थयराणय आणा,सुअधम्माराहणा किरिया.॥१००॥

अर्थः– प्रथम विनयोपचाररूप गुण एटले आठ प्रकारना कर्मोनो नाशकरवारूप विनयवडे तेने उपचारके०आराधवानो प्रकारछे ज्यां तेने विनयोपचार कहेछे, ते विन

योपचारवडे गुरुनु वादणुं करायछे बीजो माणस्स भंजनारूपगुण जे जात्यादि आठ प्रकारना, मदेकरी युक्त होय ते देवने माने नही, गुरुनी वंदना करे नही, पम्नी अना घा करे नही, माटे माननु त्याग करीने श्रमानादि गुण वडे वांदणु थायछे त्रीजो पूयणा गुरुजणस्स गुरु एटले ज्ञानादिक गुणेकरीने अधिक एवा जे गुरुजन तेम नो बहुमान वडे पूजा थायछे चोथो तिथ्थयराण के० तीर्थंकरनी आज्ञाने आरा वारूप गुण थायछे पांचमो सुयधम्माराहणा के० श्रुत धर्मनी आराधना रूपगुण थायछे अने छठो अकिरियारूप गुण एटले अक्रिया थी सिद्धस्थानरूज प्राप्त थायछे एवी रीते परपराए करी वांदणा लक्षण विनयवडे होय छे यडुक्त " तहारूवए भंते, समणंवामाहणं वा वदमाणस्सवा, पज्जुवा समाणस्सवा वदणं पज्जुवास णाय, किंफलागोयमा, सवणफला, सेणं सवणे, किंफले नाणफले, नाणं किं फले, विन्नाणफले, विन्नाणे पच्चखाण फले, पच्चखाणे सयम फले, सयमे अनण्ह ए फले, अनण्हएतव फले, तवेवोदाणफले, वोदाणे अकिरियाफले, अकिरिया सि द्धिगइ गमणफलत्ति वादणा देता ए छ गुण थायछे ॥ १०० ॥

अवतरण - हवे गुरुना छ वचन देखाडेछे —मूल —छदेण अणुजाणामि, तह त्ति तुब्भंपि वट्टई एवं, अहमविखामेमि तुमे, वयणाइ वदणरिहस्स ॥ १०१ ॥ अर्थ —प्रथम छदेण एटले मने निराबाध छे बीजु अणुजाणामि एटले अनुज्ञा आपु छु त्रीजु तहत्ति एटले जेम तू कहेछे तेमज चोथु तुब्भंपिवट्टई एटले मने सयमयात्रा प्रवर्त्ते छे, पांचमुं तेम तुने पण एवं एटले एवी रीते प्रवर्त्ते छे छठु अहमविखामेमितुमे एटले हु पण तमने अवधिशिष्यणादिव्यतिक्रम खमाऊ छु ए छ वचन वदना करवा योग्य आचार्यादिकना जाणवा ॥ १०१ ॥

अवतरण — पांच अधिकारी कहे छे — मूल — आयरिय उवज्झाए, पवत्ति थे रे तहेव रायणिए, ए एसि किइ कम्म, कायव णिज्जरट्ठाए ॥ १०२ ॥ अर्थ प्रथम आयरिय एटले जे सूत्र तथा सूत्रना अर्थने सारी पठे जाणता होय शरीर समस्त श्रेष्ट लक्षण सहित होय, अने गंभीर धीर, विभूषित एवा आचार्यनी मुमुक्षुए मोक्षने अर्थे सेवा करवी एटले जेने मोपे कहेतां समीप रहीने भणीयें एवा उपाध्यायने पवत्ति, यथोचित प्रशस्त योगनेविषे साधुने प्रवर्त्तावे यडुक्त — सजम जोएसु, जो जोग्गो तत्थ तं पवत्तेइ, असहुच नियत्तो चोथो थेरे एटले जे ज्ञानादिकनेविषे सीदाय छे पामे

प्राणीने आ लोक अने परलोकना उपायने देखाडीने स्थिर करे एवा स्थविरनी वंदना करवी. उक्तंहि.– "थिर करणा पुण थेरा, पवत्ति वावारिएसु अत्थेसु, जो जह सीयइजइ. संतवलोतथिरकुणई." अने तहेवके० तेमजवली पांचमो रायणिए एटले ज्ञान, दर्शन. चारित्र ए त्रण रत्ने करीने जे पोताथी अधिक होय ते रत्नाधिकने पण वांदवुं ए पांचेने कर्मक्षय लक्षण जे निर्जरा तेने अर्थे कृत कर्म एटले वदण कर्म करवाने योग्य वांदणुं करवुं. ॥ १०२ ॥

अवतरणः– पांच अवंदनीय कहे छेः– मूल.– पासत्थो ओसन्नो, होई कुसीलो तहेव संसत्तो; अहछंदो विय एए, अवंदणिज्जा जिण मयंमि. ॥ १०३ ॥ अर्थः– पहेलो पासत्थो एटले जे ज्ञानादिकनी पासे तटस्थपणे रहे अथवा जे मिथ्यात्वादिक बंधन हेतुरूपपास तेनेविषे रहतो होय ते पार्श्वस्थ बीजो ओसन्नो त्रीजो कुसीलो, चोथो संसत्तो, पांचमो अहछंदो. एपांचेजण वंदन करवा योग्य नथी. १०३

अवतरणः– एज विस्तारथी कहे छे.– मूलः–सो पासत्थो डुविहो, सव्वे देसेय होय नायव्वो; सव्वंमि नाण दंसण, चरणाणं जो उपासंमि. ॥ १०४ ॥ अर्थः– ते पासत्थो बे प्रकारनो होय छे. एक सर्वतः बीजो देशतः तेमां जे ज्ञान दर्शन अने चारित्रनी पासे तटस्थपणे रहे तेने सर्व पासत्थो कहेछे. ॥ १०४ ॥

अवतरण.– हवे देश पासत्थो कहेछेः– मूलः– देसम्मि अ पासत्थो, सेज्जायर निहम रायपिंमंच; नियंच अग्गि पिंमं, भुंजइ निक्कारणे चेव. ॥ १०५ ॥ अर्थ ॥ देश पासत्थो एटले सेज्जातर पिंम, अभ्याहृतपिंम राजपिंम नित्यपिंम अने अग्र पिंम एटला पिंम कारण विना भुंजे एटले भोजन करे ते. ॥ १०५ ॥

अवतरणः– उसन्नाना बे भेद देखाडे छेः– मूल.– उसन्नो विय डुविहो, सव्वे देसेय तह सव्वंमि, उउ बद्ध पीढ फलगो, ठविय गभोईय नायव्वो.॥१०६॥ अर्थः– एक सर्व उसन्नो अने बीजो देश उसन्नो तेमां रुतु बद्ध कालनेविषे चोमासा विना जे पीठ फलकनुं सेवन करे अने स्थापना पिंमने भोगवे. ते सर्व उसन्नो ॥ १०६ ॥

अवतरण –देश ओसन्नो कहेछेः–मूलः– आवस्सग सज्झाए, पडिलेहण निरक झाण भत्तछे; आगमणे निग्गमणे, गणेअ निसीअण तुयट्टे.॥१०७॥ अर्थः–पचीश आवश्यक अने पचीश पडिलेहणपूरे पूरा करे नही. स्वाध्यायनकरे भिक्षा गोचरी विधि पूर्वक करे नही, एम ध्यान अनत्कार्थे पण विधिए करी करे नही, आगमन एटले बाहेरथी आववुं, निर्गमन एटले उपाश्रयमांथी बाहेर जवुं, गणेअ एटले काउसग्गनो करवो निषीदन एटले बेशी रहेवो, तथा तुयट्ट एटले रात्रीनेविषे सुवो,

मूल – श्रावस्सयाइ न करे, अहवा विकरे इहीण महियाइ, गुरु वयण वल
तहा, नणिउ देसावसन्नोति ॥ १०८ ॥ अर्थ ए सर्व पूर्वोक्त श्रावश्यकादिक
वोल कह्या ते करे नही, अथवा न्यूनाधिकपणे करे, तेने जो गुरु कहे के,
आवश्यादिक कर, तो तेमने तेज वचन वडे पाछो जवाब आपे अने उलटुं कांइ
अनिष्ट वचन कही सनलावे, तेने देस उसन्नो गणधर तीर्थंकरे कह्यो छे ॥१०८॥

अवतरण – कुसीलनुं वर्णन करे छे मूल – तिविहो होइ कुसीलो,
नाणे तह दसणे चरित्तेय, एसो अवदणिज्जो, पन्नत्तो वीयरागेहि ॥१०९॥ अर्थ॥
कुशीला त्रण प्रकारना छे -- एक ज्ञान कुशील, वीजो दर्शन कुशील, त्रीजो चा
रित्र कुशील कुशील एटले जेनो आचार कुत्सितशीलवालो होय माटे श्री वीत
राग नगवाने एवा कुशीला अवदनीय कह्या छे ॥ १०९ ॥

अवतरण –उपली गाथाना सगला द्वार दर्शावे छे - मूल ॥ नाणे नाणायार
जोछ विराहेइ काल माईहि, दसणे दसणायार, चरण कुशीलो इमो होइ ११०
अर्थ -- ज्ञाननेविषे काल अने विनयादिक आठ अतिचार लगामीने जे ज्ञाननी
विराधना करे तेने ज्ञान कुशील कहे छे दर्शननेविषे निस्सकिय इत्यादिक अति
चार लगाडीने जे दर्शननी विराधना करे दर्शनाचारविराधे तेने दर्शन कुशील कहे
छे अने चरण एटले चारित्र कुशील आगल देखाडे छे ॥ ११० ॥

अवतरण – चारित्र कुशील दर्शावतां द्वार गाथा कहेछे – मूल – कोउअ
नूइ कम्मे, पसिणा पसिणे निमित्ति माजीवी, कक्क कुरुयाइ लक्कण, उवजीवइ
विज्ज मताइ ॥ १११ ॥ ए गाथानो अर्थ द्वारे वखाणेछे अवतरण – चारित्र
कुशीलनुं वर्णन करता पहेला गाथाना वे पदवडे तेना लक्षणरूप कौतुक कहेछे –
मूल – सोहग्गाइ निमित्त, परेसि नवाणइ कोउअनणिय, जरियाइ नूइदाण,
नूई कम्म विणि दिठ ॥११२॥ अर्थ – सौनाग्य एटले जन मान्यताने अर्थे नाना
प्रकारना चेटक करवा जेमके, सतानादिकने अर्थे स्नानादिकनुं करावबुं, अथवा ज
मी प्रमुखनुं वधावबुं, इत्यादिक मूलना आदि शब्द वडे जाणी लेवुं अथवा कौतुक
एटले आश्चर्यकारक कृत्य करी देखाडवुं जेमके, पोताना मुखमां गोली घालीने
नाककानमांथी कहाडवी अने मुखमांथी अग्निनी ज्वाला कहाडवी इत्यादिक करी
देखाडे तेने आश्चर्य कहेछे नूति कर्म एटले ताप प्रमुख निवारण करवाने अर्थे
मन्त्रादिके सिद्ध करीने रक्षा आपे अने ते सय्याना चारे पासे वधावे इत्यादि ॥११२॥

अवतरण – पसिणा पसिण कहे छे – मूल – सुविणग विज्जा कहिय आइ

खिवि घंटियाइ कहियंवा; जं सीसई अनेसिं, पसिणा पसिणं हवइ एयं. ॥११३॥ अर्थ – विद्याए करी स्वप्ननुं शुभाशुभपणुं कहेवुं, कर्ण पिशाचिका विद्यावडे गुह्य वात्ताओ कहेवी, घांट प्रमुख मंत्रवडे अभिमंत्रीने प्रश्न पूछनारने तेनो जवाब कहेवो. ते प्रश्नाप्रश्न जाणवुं ॥ ११३ ॥

अवतरणः—निमित्त अने आजीवी ए बन्ने एक गाथावडे कहे छेः— मूळः— तीयाइ भाव कहणं, होइ निमित्तं इमंतु आजीवं; जाइ कुल सिप्पकम्मे, तव गुण सुत्ताइ सत्तविहं. ॥११४॥ अर्थः—अतीत, आगामि, अने वर्त्तमान ए त्रणे काळना लाभालाभ भाववुं जे कथन करवुं तेने निमित्त कहे छे. इमंतु के० एमज आजीविका ते जाइते माता संबंधीनी जाति, कुलते पिता संबंधी, शिल्प, ने कर्म आजीव, एम तप प्रगटपणे करे तेनो अभ्यास प्रसिद्ध करे, तथा गुण शब्द अशुद्ध जणायछे माटे गण ते चंद्रादिक समजवा. अने सूत्र कालिकादिकनो अभ्यास प्रगट करे, आदि शब्दवडे एवा पोताना अनेक भेद सुचवे. एम गुण अने सूत्र ए बन्नेकरी सात प्रकार थायछे. इत्यादि कारणो दर्शावी अजीविका चलावे. ॥ ११४ ॥

अवतरणः— कक्कादि कहे छेः— मूळः—कक्क कुरुआइ माया, नियडीएभंजणंतिजं भणियं; थीलक्कणाइ लक्कण, विज्जा मंताइआपयडा. ॥ ११५ ॥ अर्थ.— कक्क कुरुआ शब्दनो अर्थ माया थाय छे, एनुंज तात्पर्य कहेछे नियडीए एटले निकृति शब्दे करी शठपणुं धारण करीने बीजाने भंजण एटले ठगी लेवुं. केटलाएक आवो अर्थ करे छेः— प्रसूति प्रमुख रोग उपर जे काढो थाय छे तेने कक्क कहेछे अथवा पोताना शरीरने लोध्र प्रमुखनो उगटणो लगाडवो, ते शरीरना एक देशमां अथवा सर्व शरीर उपर तेने कक्क कहेवुं, अने कुरुका पण शरीरना एक देशने अथवा आखा शरीरने धोइ नाखवुं. अने स्त्रीनां सामुद्रिक लक्षण प्रमुख कहेवां. जेमके, लाड लक्षणोपेत होय तो द्रव्य मळे, अने मांश लक्षणोपेत होय तो मृत्यु थाय इत्यादि लक्षणनो कहेवो वळी ज्यां साधना सहित स्त्री देवी अधिष्टायिक होय, ने विद्या अने जिहां साधनारहित देव अधिष्टायिक होय तेने मंत्र कहे छे. मूळना आदि शब्दवडे मूळ कर्म चूर्णादिक आपे ते इत्येव मादिक प्रगटेज जाणवा. ॥ ११५ ॥

अवतरणः— त्रण गाथाए करी संलक्को कहे छे.— मूळ.— संलत्तो उइआणि सो पुण गोमतसंद ए चेव; उज्जिठ मणुज्जिठं जंजिंचो वुञ्चइ सब्बं. ११६ अर्थ —जे मां गुण अने दोष मिश्र थया होय एटले एकग मत्यानोंये एटले केटलाक गुण होय अने केटलाएक दोष होय तेने संलक्क कहे छे. तेनो वळी प्रकार देखाडे छे —जे

म गायनी पासे तेनो चारो नाखीए ते जे वासणमा नाखीए ते वासणमां गाइना खाधेनमांनो केटलो एकठो थयो होय अने केटलाएक जेमनो तेम एक कोरे रही गयो होय एम जे अनुछिष्ट एटले एकठो न थयो होय ते पण तेनेविषे तुल्य के० नेळ सेळ करे सरवे एकठो थई रहेछे ॥११६॥ मूल --एमेवय मूलुत्तर, दोसा य गुणाय जत्तिया केई, ते तमिसन्निहीया, ससत्तो जणईतम्हा ॥११७॥ अर्थ - एवी रीते मूल अने उत्तर गुण सबधी जेटला दोष अने गुण छे ते तेनेविषे सनि हतके० एकठा लावे एटले मूलनु रूप बदलावी नाखे अने प्रसग वडे सारा अथ वा नरशा गुण दीठामां आवे पण सारा अनेनरसागुण साथेजरहे माटे ससक्त कहे छे ॥११७॥ मूल -- पासत्थाईएसु, संविगेसु च जछ मिलईउं, तहि तारीसउं होइ, पियधम्मो अहवईयराउं ११८ अर्थ -- तेससक्त पासत्थादिनी साथे अथ वा सवेगीउंनीसाथे ज्या जेनीसाथे मळे त्या तेना जेवो थई जाय वळी प्रिय धर्म एटले पोताने प्रियजे धर्म होय ते अथवाइतर जे बीजानो धर्म अप्रिय होय तो पण ते गमे त्यां प्रसगानुसार मळी जाय तेने ससक्त कहे छे ॥ ११८ ॥

अवतरण -- बे गाथाए करी ससक्तना बे भेद देखाडे छे -- मूल -- सोदुविग प्पो भणिउं, जिणेहि जिय राग दोस मोहेहि, एगो उ सकिलिट्ठो, असकिलिट्ठो त हा अन्नो ११९ अर्थ -- राग, दोष अने मोहने जेणे जीत्या छे एना उपलक्षण वडे बीजा अनेक दोष पण जीत्याछे जेणे एवा जे श्रीजिनवर तेमणे ते ससक्त बे प्रकारनो कह्या छे एक सकिष्ट अने बीजो असकिष्ट ॥ ११९ ॥

मूल -- पचासवप्पसत्ता, जाग्वजु तिहिगारवेहि पडिबद्धो, इच्छिगिहि सकिलिट्ठो [illegible]सकिलिट्ठो १२० अर्थ --जे प्राणातिपातादि पाच आश्रवनेविषे आसक्त [illegible] इच्छि रस साता लक्षण त्रणे गारव वडे प्रतिबध सहित, होय वळी स्त्रीनो [illegible] ते स्त्रीसकिष्ट जाणवा, अने जे गृहस्थसबधी द्विपद एटले बे पगवाळा दा [illegible]दास प्रमुख, तथा चतु पद एटले गाई भेस अने घोडा प्रमुख पशु होय अन न धान्यादिकनी जने घणी चिता होये तेने गृहस्थ सक्लिष्ट ससक्त जाणवा १२०

अवतरण -- त्रण गाथाए यथाछदो कहे छे -- मूल -- उस्सुत्त मायरतो, उ [illegible] एमा जअहा छदा, इच्छा छदेतिएगछा ॥ १२१ ॥ अर्थ - [illegible] उत्सूत्रने आचरे, अने बीजाने पण उत्सूत्रवडे प्ररूपे, तेने यथाछदा कहवे अ [illegible] इच्छाछदापण तेनेज कहे छे, यथाछद अने इच्छाछद ए पदोनो अर्थ एकज

मूल--उस्सुत्तमणुवइठ्ठ, सछद विगप्पिय अणणुवाइ, परतत्ति पवत्तति, तण

इणमो अहाछंदो. ॥ १२२ ॥ जे तीर्थंकर अथवा गणधरे उपदेस्यो न होय, मात्र पोताना मन गमता छंदेके० अभिप्राय वडे कल्पना करेलुं होय एवुं अनुपपाती एटले पोतानी बुद्धिवडे जेनी रचना करी छे तेथी भगवंतना आगमने अनुयायी थाय नही. एवा उत्सूत्रने जे प्रवर्त्तावे तेने उत्सूत्र कहिये वली यथाछंदानो लक्षणांतर कहेछे जे गृहस्थना प्रयोजनने विषे, करण करावण अनुमतीए करी जे प्रवर्त्ते तथा कोइ एक साधु प्रमुखथी कांइ अपराध थइ गयो होय तो ते वारंवार ज्यां त्यां बकतो फरे तेने यथाछंदो कहे छे. ॥ १२२ ॥

मूलः— सछंदमइ विगप्पिय, किंचिअसुह साय विगइ पडिबद्धो ; तिहि गारवेहि मज्जइ, तं जाणाइ अहा छंदं. ॥ १२३ ॥ अर्थः— पोताना मतवडे अने पोताना अभिप्राय प्रमाणे नाना प्रकारना विकल्पे करी कांइक अध्ययनादिकनी रचना करे अपुष्ट आलंबनवडे नाना प्रकारना सुखनी इछा करे विगयनेविषे प्रतिबंध होय कारण विना विगयनो आहार करे ऋध्यादि गौरवता पामीने जे गर्व करे तेने यथा छंदो जाणवो. इहां पासथ्थाने सर्वथा अचारित्रिउज केइक मानेछे ते अयुक्त छे जो सर्वथा एकांत अचारित्रिहोय तो देश अने सर्व एवां बे छेदनो करवो ते असंमत चारित्रना अभावनो बे स्थानके सरिखोज तेमाटे बे छेदना कल्पना थकीज चरित्र सत्ताजाणवी ए सर्ववात पोताना मनथी नथीकही किंतु निसिह चूर्णिमांपण एमकह्युंछे पासथ्थो अइ सुत्त पोरसिंवा नकरेइ दंसणाइ यारेसु वट्टइ चारित्तेसु नवट्टई अइयारेवा नवज्जेई एवं सथ्थो अछई पासथ्थोति एटले एने सबल चारित्र युक्तपणो जाणवो ए अढारगाथायेकरी पासथ्थादिक पांचे अवंदनीयकह्या एटले वांदवायोग्य नही. ॥ १२३ ॥

अवतरणः—पांच प्रतिषेध कहेछेः—मूलः—वक्खित्त परहुत्ते,पमत्तेमाकयाइ वंदिज्जा; आहारंच करिंतो, नीहार वाजइ करेइ. ॥ १२४ ॥ अर्थः— अनेक भविक लोक सहित सभामां देशनादि करवाना श्रमथी जेनुं चित्त विक्षेपने पामेलुं छे तेने व्याक्षिप्त कहे छे. तेवखते वांदवुं नही, कोइ एक कारणे जे उपरांगापणाने पामेलो होय तेवारे वांदवुं नही वली प्रमादेकरी क्रोधे करी अथवा निद्राएकरी युक्त जे होय तेवारेपण वांदवु नही, एमज चोथो आहार करता अने पांचमो निहार करतां पण वांदवुं नही. ए पांच बोल वडे अनुक्रमे पांच दोष जणाव्या छे ते आप्रमाणेः— पहेलो धर्मांतराय, बीजो अनवधारण, त्रीजो कोप, चोथो आहारांतराय, अने पांचमो लज्जाने वश थयो थको शंका न भांजे ए पांच दोष जाणी लेवा. ॥ १२४ ॥

अवतरण – हवे क्यारे वांदवा ते कहे छे – मूल अनुष्टुप छंद – पसंते आसणत्थेय, उवसंते उवछिए, अणुन्न विनुमेहावी, किइ कम्म पउंजए ॥ १२५॥ अर्थ –१ प्रशांत ते व्याक्षिप्तादिकना अभाव थकी, २ आसन उपर बेठा छता, ३ उपशांत इंद्रिय नोइंद्रियने उपशमे वर्त्ते छे क्रोधादि प्रमादथी रहित वर्त्तवे उपस्थितत्व इत्यादि वचन उच्चरतो एवा गुरुनी सन्मुख उपस्थितथइने छंदाणिक वचन वडे बुद्धिमान पुरुष अनुज्ञा मागीने कृत कर्म वांदणानी प्रयोजना करे ॥ १२५॥

अवतरण – हवे अवग्रह कहे छे – मूल – आयप्पमाण मित्ते, चो दिसि होइ उग्गहो गुरुणो, अणणुणायस्स सया, न कप्पए तत्थ पविसेउ १२६ अर्थ - नामादिक भेदे करी छ प्रकारना अवग्रह छे – तेमा नामावग्रह अने स्थापनावग्रह ए बे प्रकार सुजन छे, द्रव्यावग्रह एटले मुक्ता फलादिकनु देवु, क्षेत्रपे ते क्षेत्रावग्रह ते सक्रोश योजन एकज क्षेत्रनेविषे अवग्रह लीवाथी थाय छे कालावग्रह एटले रुतु बद्ध कालनेविषे एक मास, वर्षनेविषे चार मास अथवा जे जेटला कालनो अवग्रह करे तेने कालावग्रह कहे छे अने भावावग्रह ते प्रशस्त अने अप्रशस्त ए बे भेद वडे बे प्रकारनो छे प्रशस्त ते ज्ञानादिकना अवग्रह अने अप्रशस्त ते क्रोधादिकनो अवग्रह कहेवो अथवा "देविंदराय गिहिवइ" इत्यादि वक्ष्यमाण एटले जे आगल अवग्रह कहेवाशे ते जाणवा पण अहीं तो क्षेत्रावग्रह ने प्रशस्त भावावग्रहनो अधिकार छे हवे गाथार्थ कहे छे शरीरनो प्रमाण साडा त्रण हाथ होवाथी ते प्रमाणे चारे दिशिए साडात्रण त्रण हाथ गुरुनो अवग्रह थाय छे तिहा आज्ञा माग्या विना प्रवेश करवो कल्पेनही.

अवतरण –हवे पांच वंदनना नाम गाथामा कहेछे –मूल –वंदण चिइ किइ कम्मे, पूया कम्मच विणयकम्म च, वंदणयस्स इमाइ हवंति नामाइ पचेव ॥१२७॥

अर्थ – प्रथम वंदन एटले स्तवन करवु, एटले प्रशस्त मनो वचन तथा कायाना व्यापारे करी गुरुने जे वंदन करवु ते कर्मने वंदन कर्म समजवु ते वंदन बे प्रकारनु छे एक द्रव्य वंदन अने बीजो भाव वंदन तेमा मिथ्यादृष्टि अथवा अनुपयुक्त सम्यक्दृष्टिने जे वंदना थाय छे ते द्रव्यवंदना कहेवाय छे, अने उपयुक्त सम्यक्दृष्टीने जे वंदन थाए छे ते भाववंदन कहेवाय छे बीजु चिइ चिति एटले चयन जे कुशल कर्मनु चयन एटले वृद्धि थाय छे तेने चिति कहे छे आदी कारणनेविषे कार्यना उपचारनु करवु एटले कुशल कर्मना उपचयनु कारण जे रजो हरणादि उपधिनो समूह एना पण द्रव्य अने भाव

रुपे बे जेद जाणवा. तेमां तापसादिकनालिंग ग्रहण तेनो कर्म अथवा अनुपयुक्त सम्यकदृष्टिना रजोहरणादि ग्रहणनुं कर्म तेने इव्यरुप जाणवुं, अने उपयुक्त सम्यकदृष्टिनुं रजोहरणादि कर्म ते जावरूपे जाणवुं त्रीजुं करवुं ते कृति एटले जे नमन आवर्तादिक क्रिया करवी एना पण इव्य अने जावरूप बे जेद छे. तेमां निन्हवादिकने अथवा अनुपयुक्त सम्यकदृष्टिने जे नमनक्रिया करवी ते इव्यरुप जाणवी, अने उपयुक्त सम्यकदृष्टिने जे नमनआवर्त्तादिक्रिया करवी ते जावरूप जाणवी. चोथुं पूजा एटले पूजनकर्म ते प्रशस्त मन, वचन अने कायनी जे चेष्टा तेने पूजन कर्म कहेवुं. ए पण इव्य अने जावरूप बे जेदे पूर्वनीपरें जाणवुं. पांचमुं विनीय कहेतां विणासीए जे थकी आठ प्रकारनुं कर्म तेने विनय कहिये एना पण इव्य अने जावरुप बे जेद छे ते पण पूर्ववत् जाणी लेवा एवी रीते वांदणानां ए पांच नाम थाय छे. ॥१२७॥

अवतरणः—पांच वांदणाना पांच आहरण दृष्टांत कहे छेः—मूल.—अनुष्टुप् छंद. सीयले खुड्डए किन्हे, सेवए पालए तहा; पंचेहि दिठंता किय, कम्मेहुवंति नायव्वा.१२८

अर्थः—वंदण कर्म उपर शीतलाचार्यनो दृष्टांत लेवो. चिति कर्म उपर खुडुगचेला नाना ने आचार्य पद दीधु छे ते दृष्टांत लेवो. कृति कर्म उपर कृष्ण तथा वीराशालवीनो दृष्टांत लेवो. पूजा कर्मनी उपर बन्न सेवकोनो दृष्टांत लेवो. अने विनय कर्म उपर पालकने संबुकुमरनो दृष्टांत लेवो. ए पांच दृष्टांते करी पांचवंदन कर्म समजी लेवा.१२८

हवे त्रण गाथायेकरी तेत्रीश आसातना कहेछेः— पुरउ पक्कासन्ने, गंताचिठ्ठण निसीयणाय मणे ए आलोयण पडिसुणणे, पुव्वालवणेय आलोए ॥ १२९ ॥ तहउवदंस निमंतण, खद्धा अयणे तहा अपडिसुणणे ॥ खद्धत्तिय तञ्छगए,किंतुम तज्जाय नोसुमणे ॥ १३० ॥ नोसरसि कहंछित्ता, परिसंभित्ता अणुठियाइकहे ॥ संथारपायघट्टण, चिठुच्च समासणेयावि ॥ १३१ ॥

हवे एना नामोनो वखाण गाथाये करी कहे छेः— मूल —पुरउ अग्ग पएसे, पक्के पासंमि पछ आसन्ने ॥ गमणेण तिन्निगणे,ण तिन्नि तिन्निय निसीयणाए ॥१३२॥ अर्थः—पुरउके० अग्रप्रदेशे गुरु थकी आगलें पक्केपासंमिके० बेहुपासे पछआसन्नेके० ढूकडो ए त्रणे स्थानके गमणेणके० चालतायका त्रण आशातना एमज ए त्रण स्थानके उजारहेवाथी पण त्रणआशातनाथाय अने निसीयणएके० ए त्रण स्थानके बेसवाथी पण त्रण आशातनाथाय केमके ढूकडो रहेवाथी सासोस्वास तथा छीकनो श्लेषमलागे तेवारे आशातना थाय. ॥ १३२ ॥

एज वात सूत्रकार देखाडे छेः— मूलः— विणयप्पंसाइग दूसणाउ आसायणा

व नवएथा ॥ सेहस्स वियारगमे, रायणिए पुव्व माय मणे ॥ १३३ ॥
विनयचनगादिक दूषण थकी ए पूर्वोक्त नव आशातना जाणवी एमज व
निकजे गुरु तेनीसाथे वडिलें गयाथका पहेलाआवी शाचे ते दशमी आश

मूल — पुव्वगमणा गमणे, लोए सेहस्स आगयस्स तउ॥ राउसुत्तेसु जा
गुरुनवि अपडिसुणणा ॥१३४॥ अर्थ — बाहेर थकी गुरुसाथे आवेलो शि
थकी पहेला गमणा गमण आलोचे ए इग्यारमी आशातना राउसुत्तेसु जा
के॰ रात्रिनेविषे गुरु बोलावे जे कोण सुतो छे कोण जागे छे एवु सांभली ज
होय तोपण सादआपेनहीं ते अप्रति श्रवणनामे बारमी आशातना ॥ १३

मूल — आलवणाए अरिहं, पुव्व सेहस्स आलविनस्स ॥ रायणियाउ
तेरस मासायणा होइ ॥ १३५ ॥ अर्थ — आलापनके॰ बोलाववु तेने अर्ह
योग्य जे श्रावकादिक ते श्रावकादिको आव्यायकाने रत्नाधिकजे गुरु तेनाथी
लाज जे शिष्य बोलावे ते शिष्यने तेरमी आशातना थाय ॥ १३५ ॥

मूल — असणाईयं लद्धु, पुव्वसेहे तहेव रायणिए ॥ आलोए चउदसमि, १
ववदसणे नवर ॥१३६॥ अर्थ —अशनादिक लेइने प्रथम शिष्यादिक आगलें आ
इ पछी रत्नाधिक आगलें आलोवतांने चउदमी आशातना होय तेमज प्रथ
शिष्यने अशनादिक देखाडी पछी रत्नाधिकने देखाडे ते पन्नरमी आशातना जाणवी॥

मूल — एव निमित्तणोवी, लद्ध रयणाहि गेण तह सिद्ध, असणाए पुछाए,
खद्धति बहु दल तस्स ॥ १३७ ॥ अर्थ — एमज पहेला बीजाने अशनादिकनी
निमित्रणाकरी पछी गुरुने निमत्रण करे ए सोलमी वली गुरुने पूछयाविना बीजाने
आहारादि आपे तथा पोते खाए ए सत्तरमी ॥ १३७ ॥ इहां शिष्य प्रश्न करे छे

मूल — सगह गाहाए जो, नखद्ध सद्दो निरुविए बीसु, तं खद्धायणए पए
रक्खति विनज्ज जोइज्जा ॥ १३८ ॥ अर्थ — सग्रह गाथामा खधशब्द जुदो क
यो नथी तो इहां क्यांथी लीधो तेनो उत्तर जे यद्यपि सग्रह गाथामा खधशब
जुदो कयो नथी ते खधाइए ए पदनेविषे खध एवो शब्द जूदा करी लीजे कमके
ए गाथा पण सूत्रकारनी करली जाणवी ॥ १३८ ॥

[illegible] — एव खद्धा अयणे खद्ध बहु अति अयण मसणति, आई सद्दाणयं
होइ पुणो [illegible] पत्त सागनं ॥ १३९ ॥ अर्थ — एमज खधाअयणे ए पदे अढारम
दार पाधे [illegible] आवोरीते — खध शब्दे घणो अयन शब्दे अशन आदिशब्दे [illegible]
शाक भाजणो [illegible] य पुणो के॰ वली ते पत्रशाक वेगण चोनहो चिणादिक ए ग

थातुं विवरण दशाश्रुतस्कंधनी अपेक्षाये लख्योछे ते सूत्र आवीरीते छे सेहेअस णंवा रायणिएण सिद्धिं भुजमाणे तत्थ सेहेखद्धं उसढं रसियं मणुनं मणामंनिद्धं लुखं अहारित्ताज्भवत्ति आसायणा सेहेत्ति ॥ १३९ ॥

अवतरण.— वली एनोज विशेष सूत्रकार गाथायेकरी वखाणेछेः— मूल.— व न्नाइजुअं उसढं, रसियं पुण दाडिमं वगाईयं ॥ मणइठं तु मणुसं, मन्नइ मणसा मणामंतं ॥ १४० ॥ अर्थ ॥ वर्णादिकें करी सहित उसढं के० ऊंचो रसेकरी स हित ने वली कोइकरीते अचित्त करेला एवा दाडिम आंबाप्रमुख मनने इष्ट म नोज्ञ एटले मनने माने जे सारो अथवा खराब तेने मणाम कहिये. ॥ १४० ॥

मूल.— निद्धं नेहवगाढं, रुक्खं पुण नेह वज्जिअं जाण; एवं अप्पम्मि सुणणे नवर मिणंदिवस विसयंति. ॥ १४१ ॥ अर्थ ॥ निद्धते स्निग्ध चोपडे करीने अव गाढ के० व्याप्त लूखो ते चीगट रहीत इत्यादिक आहार गुरुनी साथेकरतां सरस वस्तु पोते वापरे ते अढारमी, एवं के० एमज अप्पमीसुणणे के० गुरुना वचन सां भल्या छतां गणकारे नही पाछो जवाब न आपे ते ओगणीसमी नवरं के० एटलो विशेष छे जे प्रथम बारमी आशातना कही गया ते रात्रीनेविषे गणकारे नही एम समजवुं अने आ हमणानी कही ते दिवससंबंधी जाणवी ॥ १४१ ॥

मूल.— खद्धंति वहु भणंते, खर कक्कस गुरु सरेण रायणियं; आसायणाउ सेहे, तह गए होइ नायव्वा. ॥ १४२ ॥ अर्थ ॥ गुरुयें वोलाव्योथको खद्ध के० खर कर्कस वचने आकरे शब्देकरी रत्नाधिकने कहे तथा तिहांज वेठो उत्तर आपे एम अवज्ञाकरे ते शिष्य ने वीशमी आशातना कहियें. ॥ १४२ ॥

मूल.— सेहो गुरुणा भणिउं, तत्थ गउ सुणइ देइ उल्लावं; एवं किंतव भणइ, नमछएणंतु वंदामि. ॥ १४३ ॥ अर्थ ॥ शिष्यने गुरुयें वोलाव्यो थको तिहांज पोताने स्थानके रह्योथको गुरुनुं वचन सांभली उत्तर आपे पण पासेनावे ते ए कवीसमी आसातना कहिये तथा गुरुये पुछयु छता त्यांजमछएण वंदामि कहो पूछे सुं आदेश आपोछो ए वावीसमी ॥ १४३ ॥

मूलः—एवं तु मंति भणई, कोसि तुमं मज्झ चोयणाएओ; एवं तज्जाएणं, पमि भणणा सायणा सेहे. ॥१४४॥ अर्थ॥ तुं कोणछो जे महारी चोयणानेविषे प्रवर्त्तेछे एम तुकारे वोलावे ते त्रेवीसमो. एमज जेवुं वचन गुरु कहे तेहीज वचन कहीने पाछो जवाब देतां शिष्यने आशातना थाय ते कहेछे. ॥ १४४ ॥

मूलः—अज्जो किं न गिलाणं, पडिजग्गसि पडिभणेइ किं न तुम; रायण एक

हपंते, कहच एव असु मणत्ति ॥ १४५ ॥ अर्थ – गुरु कहे हे आर्य आ ग्ला ननी प्रति जागरणा सार सुद्धि केमनथी करतो तेवारे पाछो जबाव आपे जे तु केम नथी करतो एम तर्क्षना करी बोले ते चोवीसमी गुरुधर्म कथा कहे ते शु न्य चित्ते सानले पण एम न कहेजे हे महाराज तमे जतो अर्थ कह्यो एनी अ्ता घा न करे ते असुमण नामे पचीसमी आसातना ॥ १४५ ॥

मूल –एव नो भरसि तुम, एसो अत्थो न होइ एवत्ति, एव कहमा छिंदिय, सयमे व कहेव मारजई ॥ १४६ ॥ अर्थ –रत्नाधिके अर्थ केतेछते कहेके तमने बराबर अर्थकेतां आवडतु नथी ए अर्थ एम नथी ते छवीसमी एमज गुरु कथा केताहो य तेना व्याख्यानने छेदीने पोते आगलथी केवामांडे ते सतावीसमी ॥ १४६॥

मूल – तह परि सपिय भिदइ, तह किंचि भणइ जहन्न सामिलई, ताए अ णुट्ठियाए, गुरु भणिय सवित्थर भणई ॥ १४७ ॥ अर्थ – तेम वली गुरु कथा क रता होय प्रमुदित परखदा सांभलता छता शिष्य एवु कहे के भोजन वेला थई भिक्षावेला सूत्रपोरसीनी वेला थई छे पछी भिक्षा मलशे नही माटे हवे उठो इत्या दिक कहीने परखदा भग करे ते अठावीसमी तथा तेहीज परखदा उठयानी अ गाउ गुरुयेंजे अर्थ ते सभा आगल कह्योछे तेज अर्थ सविस्तरपणे पोतानु माप ण बतावयाने सभाजनोने वारवार कहे ते ओगणत्रीसमी ॥ १४७ ॥

मूल – सिज्जासथारवा, गुरुणो सघट्टइण पाएहि, खामेइ न जो सेहो, एसा आसायणा होइ ॥ १४८ ॥ अर्थ –शय्या ते शरीर प्रमाण सथारोते अढीहाथ प्र माण जे गुरु सबधी छे तेने पग साथे सघटी फरसीने तथा गुरुना पगने पग ल गाडी पछी खमावे नही एवा शिष्यने त्रीसमी आशातना जाणवी ॥ १४८ ॥

मूल – गुरु सेज्जा सथारग, चिठ्ठण निसियण तुयट्टणेऽह वरा, गुरु उच्च स मामण चिठ्ठणाइ करिणेण दो चरिमा ॥ १४९ ॥ अर्थ – गुरु सबधी सय्या स थारकनेविषे चिठ्ठणके० उभा रहे अथवा निसियणके० वेसे तुयट्टणके० सुईरहे एवी रीते करतां शिष्यने एकत्रीसमी आशातना अहके० हवे अवराके० वीजीक हेले गुरु थकी उचाआसन उपर वेसे ते बत्रीसमी गुरुने बराबर सरखे आसने वेशे ते तेत्रीसमी आदिशब्द थकी निसीयण तुयट्टण करतानेपण ए चरम के० छेली वेहु आशातना बत्रीशमी तथा तेत्रीसमी जाणवी एटले ए एकवीस गाथायें करी तेत्रीस आशातना देखाडी ॥ १४९ ॥

हवे वांदणाना बत्रीश दोष देखाडे छे –तेमां प्रथम गाथाए सात, बीजी गाथा

वमे आठ, त्रीजी गाथा वमे सात चोथी गाथा वडे सात अने छेली पांचमी गाथा ए करीने त्रण दोष; एवी रीते पांच गाथाए करीने बत्रीश दोष देखामे छे, तेमां प्रथम नाम मात्र कहीने पछी अर्थ कहेशेः—

मूल अनु० अणाढियंच थद्धंच, पविद्ध परि पिंमयं; टोलगं अंकुसं चेव, तहा कछव रिगिअं ॥ १४ए ॥ मछुवत्तं मणसापउठं तहय वेड्या; जय सा चेव जयंतं, मित्ती गारव कारणं ॥ १५० ॥ तेणिअं पडिणियं चेव रुठं तज्जिय मेवय; सढंच हिलियं चेव तहा विप्पलियं चियं ॥ १५१ ॥ दिठ मदिठंच तहा, सिंगंच करमोयणं; आलिद्ध अमणा लिद्धं, उणं उत्तर चूलियं ॥ १५२ ॥ मूअंच ढहूरं चेव, चुमलिंच अपछिमं; बत्तीस दोस प्परिसुद्धं किइ कम्मं पउज्जए ॥१५३॥

अर्थः— पहेलो अणाढिय एटले अनादृत दोष, बीजो थद्ध एटले स्तब्ध दोष. त्रीजो पविद्ध एटले पविद्ध दोष. चोथो परिपिंमिय एटले परिपिंमित दोष. पांचमो टोलगइ एटले टोलगति दोष. छगो अंकुस एटले अंकुश दोष. सातमो कछव एटले कछप दोष. आठमो मछुवत्त एटले मत्स्योद्धत दोष. नवमो मनसा प्रद्ुष्ट दोष. दशमो वेड्या बद्ध एटले वेदिकाबद्ध दोष. एकादशमो जयसा एटले जय दोष. बारमो जयंत एटले जजंत दोष. तेरमो मित्ती एटले मैत्री दोष. चौदमो गारव एटले गर्व संबंधीदोष. पंदरमो कारण दोष. शोलमो तेणिय एटले स्तैन्य दोष. सत्तरमो पमिणिय एटले प्रत्यनीक दोष. अढारमो रुष्ट एटले रुठ दोष. ओगणीशमो तज्जित एटले तर्जित दोष. वीशमो सढं एटले सठ दोष. एकवीशमो हीलिय एटले हीलित दोष. बावीशमो विप्पलिय एटले परिकुंचित दोष. त्रेवीशमो दिठमदिठ एटले दृष्टादृष्ट दोष. चोवीशमो सिंग एटले शृंग दोष. पच्चीशमो कर एटले करदोषः छवीशमो मोचण एटले मोचन दोष. सत्तावीशमो आलिद्ध अमणालिद्धं एटले आश्लिष्टानाश्लिष्ट दोष. अठावीशमो उण एटले न्यून दोष. ओगणत्रीशमो उत्तर चूलिय एटले उत्तर चूलित दोष. त्रीशमो मूअ एटले मूक दोष. एकत्रीसमो ढटर एटले प्रश्न दोष. अने बत्रीशमो चूमलीअ एटले चूमलिकदोष. एवी रीते बत्रीश दोषनां नाम जाणी लेवां. ॥१४ए॥ १५० ॥१५१॥ १५२ ॥१५३॥

हवे ए बत्रीश दोषनुं विस्तार सहित वर्णन करे छेः—मूलः— आयर करणं आढा, तव्विवरीयं अणाढियं होइ; दव्वे जावे पउो, चोजंगो दव्वउ जइउ ॥ १५४ ॥ अर्थः— आदर विना वांदवुं, तेने अणादा दोष कहेले. आदर करवुं ते [illegible] अने तेथी जे विपरीत एटले अनादर करवुं ते अणादा कहिये [illegible] ना

मे प्रथम दोष कहे छे बीजो स्तब्ध दोष छे, तेना द्रव्य अने भावरूप बे
एमा चतुर्भंगी छे (१) कोइ द्रव्य वडे स्तब्ध होय छे, अने भावथी नथी होत
कोइ भावथी स्तब्ध होय ने द्रव्यथी नथी होतो, (३) कोइ भाव अने द्रव्य ए
स्तब्ध होय छे अने (४) कोइ भाव अने द्रव्य ए बन्ने करी स्तब्ध होतो नथी
उदर शूलादिक कारणथी नमी शके नही पण नमवानो भाव होय तो र
ष्ट स्तब्ध कह्यो जे कोईपण कारण विना नमी शके तोपण स्तब्ध पणा १
मे नही तेने पाडूओ स्तब्ध कहे छे चक चारे भांगामाना जे भावे अने द्र
व्य न होय तेने उत्तम कहेवो अने जे द्रव्ये तथा भावे स्तब्ध रहे ते मह
डूओ जाणवो ए तात्पर्य छे ॥ १५४ ॥

मूल — पविद्ध मणु वयार, ज अप्पितोणि जतिउ होई, जडव तडव उइ
किय किन्नो वर वरचेत्र ॥ १५५ ॥ अर्थ — जे उपचार रहित होय तेने पवि
कहे छे वादणु देता जे अनिमन्त्रित एटले व्यवस्था रहित होय वादणु पूरकी
विना नासी जाय तेने त्रीजो पविद्ध दोष कहे छे जेम भाकुत प्राणीने कोई
ण कामे लगाडयो छता धणीनु काम बराबर थाओ के न थाओ पोतानु ते भ
दा पूरतु लक्ष राखीने उपर पडयु ते करवु एम जाणीने गमे तेवी रीते अस्ताव्य
स्त ते क्रिया मात्रने करी छुटो थायछे ते पविद्ध विपे जाणवु ॥ १५५ ॥

मूल — सपिंडि एव वदइ परि पिंडिय वयण करणओ वावि, टोलोव्व उप्फि
मतो, वस्सक अट्टिमकणे कुणए ॥ १५६ ॥ अर्थ — सपिंडित एटले आचार्यादि
कने एकठा वादे अथवा प्रथम ज्यां बत्रीश दोषना नाम कह्यां छे त्यां ए दोषनु
नाम परिपिंडित कह्यु छे तेनो अर्थ आवी रीते छे — मुख थकी सूत्रोना वचनो
सिवाय बीना वचन बोले अने पोताना हाथ अने पग स्थिर राखे नही ते सपि
डित नामे चोथो दोष समजवो जेम तीड ए नामना वर्षाकालमा एक जातना पक्षी
थाए छे ते पृथ्वी उपर स्थिर थई बेशता नथी, अही तहीं कूदता फिरे छे तेम
जे वादणु देता ज्यां त्यां आगो पाछो फर्या करे तेने पाचमो टोलक दोष कहे छे

मूल — उवगरणे हत्थमिव, पितु निवेसेइ अकुस विति, विअचिर्हरगण ज,
तं कच्छव रिंगिय भाण ॥ १५७ ॥ अर्थ — जेम महत हाथीने अकुश वडे गमे तेम
फेरवे छे तेम शिष्य गुरुने फेरव एटले सूरि उभा होय के बेठा होय अथवा काइ
कार्य व्यग्रद्गमा होय तने अवज्ञा रहे चाजपट अथवा कपडु पकडीने आसन उपर
बेसाडी वांदणु करे तेने छठ्ठो अकुश दोष कहे छे वांदणुदेतां काचबानी पठ आगनने

तांथो अथवा पाछले गांथो गमे त्यां स्वेच्छा वके फिरवुं तेने सातमो कच्छप दोप कहे छे.

मूलः— उच्छित निवेसंतो, उव्वत्तइ मच्छ उव्व जल मज्झे; वंदिउ कामो वन्नं, उ सोव्व परियट्ट ए तुरियं ॥ १५७ ॥ अर्थः— जेम पाणीमां माछलुं स्थिर रहे नही, तेम जे वांदणु करतां स्थिर रहे नही, जेम माछलुं घडीकमां बाहेर देखाय घडीक मां पाणीमां गेप थई जाय तेम जे वांदणुंकरतां उठता बेसतां ऊवकी मारे विचित्र चाला करे अथवा एकने वांदी बीजा आचार्यने वांदे तेने आठमो मच्छ दोप कहे छे.

मूलः—अप्प परि पत्तिएणं, मणप्पउ सोय वेइआ पणगं; तं पुण जाणू परि जा.णु हिठउ जाणु वाहिंवा ॥ १५८ ॥ अर्थः— पोताने अर्थे अथवा बीजाने अर्थे गुरुद्वाराए कांई कार्य सिद्धि न थवाथी तेनो मनमां द्वेप उत्पन्न थाय छे तेमां पोताने आचार्यादिके प्रद्वेप कह्यो ए आत्मअप्रीति इम शिष्यना संबंधीने पण कहेछते परअप्रीति एम इर्षालु थकोवांदे तेने नवमो मनप्रद्दुष्टदोप कहे छे. ॥१५८॥

अवतरण.— वेदिकादोप पांच प्रकारे कहे छेः— मूलः— कुणइ करे जाणुंवा एगकरं छवइ कर जुअल मज्झे; उवछंगे करइ करे, ज्ञयंति निक्कूहणाईयं ॥ १५९ अर्थः—बेंहु हाथ गूढण उपर मूकी १ अथवा बेउ हाथनी विचमा ढीचणराखे २ एक गुढण बे हाथनीवचे राखे ३ अथवा खोळामां हाथ राखवा ४ बेहु हातउत्संगे धरे ५ ए पांच प्रकारे वेदिकाबद्ध दशमो दोप जाणवो. अने जो हूं वांदणुं प्रमुख दईश नही तो आचार्य मने कहाम्हो मूकशे एवो जे ज्ञय तेने अग्यारमो ज्ञय दोप कहेछे

मूल.— ज्ञयइव ज्ञइ सत्तिवई, इवदइ एहो रयंतिवेसंतो; एमेवय मोत्तीए, गारव सिक्का विणीउंहं ॥ १६० ॥ अर्थः— बीजा मुनिओ ज्ञजे छे अनुवर्त्तेछे अथवा ज्ञजशे इत्यादिक देखीने हुं पण बीजानी पठे वांदणुं करुं तेने बारमो ज्ञजंत नामे दोप कहे छे. जोहुं आचार्यने वांदू तो मारी साथे आचार्यनी प्रीति थाए अने मित्राइ थाए वगेरे मित्रताना कारणथी जे वांदवुं तेने तेरमो मैत्री दोप कहे छे. मने लोको समाचारिमां पंमित कुशलविनीत जाणे एमज बीजासाधु पण जाणे एवा अभिप्राये जे वांदवुं तेने चौदमो गारव दोप कहे छे. ॥ १६० ॥

मूलः— नाणाइ तिगंमातुं, कारण मिह लोय साहयं होइ; पूआ गारव हेऊ, नाणग्गहणे विए मेव. ॥ १६१ ॥ अर्थः— ज्ञानादिक त्रण मूकीने जे आलोक संबंधी सुखना साधनोनी प्राप्तिने अर्थे वांदणुं दिए एटले वस्त्र कांबल्यादिकनी इछा राखे तेने पंदरमु कारण वांदणुं कहे छे. आंही कोई आशंका करे के एकांत ज्ञानादिक आश्रयी वांदणुं देतां तेने कारण वांदणुं शावास्ते न कहिये? तेनो उत्तर

जो पूजाना अभिप्रायथी गौरवनी अभिलाषा करे,अने जो ज्ञानना ग्रहणने
दे उपलक्षणथी दर्शनादिक पण लेवां तो तेने पण कारण वांदणुज कहिये
मूल – हाउ परस्स दिट्ठि, वदंते तेणियं हवइएय, तेणोविव अप्पाए
उनावणामासे ॥ १६२ ॥ अर्थ – बीजा साधुनी दृष्टिने चुकवीने वांदए
टले पोतामां अने साधु प्रमुखमा अतरो राखीने पोताने छुपावे केमके, ए
णाने देखतां वांदीश तो लाज थशे, अथवा मने बीजाथी लघु जाणशे ए
माटे पोताने गोप्य राखीने चोरनी पठे जे वांदे ते स्तैन्य नामनो शोळमो
मूल –आहारस्स उ काले, नीहारस्सावि होइ पडिणीयं, रासेण धमधमत
वदइ रुठ मेयतु ॥१६३॥ अर्थ – आहारना काळनेविषे अथवा नीहारना व
विषे जे वांदणु दिये तेने सत्तरमु प्रत्यनीक दोष दोषे करीने धमधमतो थको
वा गुरुने क्रोधायमान करतो थको जे वांदणु करे तेने अढारमो रुष्ट दोष क
मूल – नवि कुप्पिसि न पसीयसि, कट्ठसिवोचेवतज्जिअ एय, सीसगुलिमा
य, तज्जेइ गुरु पणिवयंतो. ॥१६४॥ अर्थ –गुरु कोप करता नथी तेम प्रसाद
करता नथी, एटले घडेली जेम शिव देवनी काठनी पूतळी विशेष तेनी पठे
छे अथवा मस्तके करी आगळीए करी अथवा भृकुटीए करीने तर्जना करवी ते
ओगणीशमो तर्जित दोष कहे छे ॥ १६४ ॥
मूल – वीसंभट्ठाणमिण, सब्भाव जढे सढंवइएअ, कवडति कइअ वतिय
सढयाविकहोति एगट्ठा ॥ १६५ ॥ अर्थ –ए वांदणु विश्वासनु स्थानक छे केमके
वांदतां छतां आचार्य तथा श्रावकादिक माहरो विश्वाश करशे एवा भावे करी
वांदे परतु भजनावेकरी शुन्यछे तेने वीशमो सठ दोष कहे छे एनेज कपट कैतव
अने सठ ए त्रण नामे कहे छे ॥ १६५ ॥
मूल – गणिवायगजिट्ठजत्ति, हीलीउ कि तुमे पणमिकण, दर वदिअमिविक
ह, करेइ पलिय चिय एय ॥ १६६ ॥ अर्थ – हे गणिन्, हे वाचक, हे ज्येष्ट हे
आर्य इत्यादिक शब्दे करीने गुरुनी हीलना करेने कहे के सुं तन प्रणाम करिये
एम कहीने जे वांदणु करे तेने एकवीशमो हीलित दोष कहे छे थोडुक वांदण
कर्या छता देशादि सबंधीनी विकथा करे तेने बावीशमो कुंचित दोष कहेछे १६६
मूल – अतरिउतमसेवा, न वदई वदई उदीसतो, एय दिठ्ठमदिट्ठ सिंगे पुण
कुम्भ पासेहि ॥१६७॥ अर्थ – अतरित के० यती प्रमुखने अतरे रह्यो थको अथ
वा अधारानेविषे रह्यो थको कोई देखे नही त्यारे वांदे नही ...

वांदे तेने त्रेवीशमो दृष्टा दृष्ट दोष कहे छे. मस्तकने सन्मुख टालीने मावी तथा जमणी ए वन्ने वाजु तरफ वांदणु दिए तेने चोवीशमो शृंग दोष कहे छे.॥१६७॥

मूलः— करमिवमन्नऽदिंतो, वंदणयं आहरंति अकरोति; लोऽय कराउ मुक्का, न मुच्चिमो वंदण कराउ. ॥ १६८ ॥ अर्थः— जेम राजादिकनो कर प्रजाने जरूर देवो पडे छे तेम वांदणा संबंधी अरिहंतनो कर पण शिष्योए देवो जोइये. एम जाणीने जे वांदणुं दिए तेने पचीशमो कर दोष कहे छे. ग्रहित व्रते करीने अमे लोक संबंधी करथी तो मुक्त थया छैए पण अर्हत संबंधी वांदणा लक्षण करथी मुकाणा नथी एम जाणीने जे वांदणुं करे तेने छवीशमो मोचन दोष कहे छे.

मूल.— आलिद्ध मणालिद्धं रयहरणसिरेहिं होइ चउभंगो; वयण खिरेहिंकणं, जहन्न काले वसेसेहिं. ॥ १६९ ॥ अर्थः— आश्लिष्ट अने अनाश्लिष्ट दोषनी रजोहरण ने मस्तक साथे चतुर्भंगी थाय. प्रथम रजोहरण साथे हाथ लगाडे माथे न लगाडे ए एक भांगो, वीजो मस्तके लगाडे पण उंघे न लगाडे; त्रीजो मस्तके न लगाडेने रजोहरणे पण न लगाडे; चोथो रजोहरणे लगाडे अने मस्तके पण लगाडे ए सत्तावीशमो दोष समजवो. अक्षरोना समूहने वचन कहे छे. ते वचनमां प्रमादे करीने एक वे अक्षरो उंणा कहे अथवा कोइक अति उतावलो प्रमादना वशे करीने वांदणुं थोडी वारमां पूरुं करे, त्यां वचनाक्षर तो रह्या पण शेष अवनामादिक ते आवश्यक पण उंणा थाय तेने अठावीसमो न्यून दोष कहेछे.॥१६९॥

मूलः— दाऊण वंदणं मत्थएण वंदामि चूलिया एसा; मूअव्व सद्दरहिउं, जं वंदइ मूयगं तं तु ॥ १७० ॥ अर्थः—वांदणुं दइने पछी मोटे सादे करी "मत्थएण वंदामि" कहे तेने उगणत्रीशमो चूलिकादोष कहेछे. मूअवके० मूगानी पठे मुखथकी शब्द कहाडयाविना जे वांदे तेने त्रीशमो मूक दोष कहेछे. ॥ १७० ॥

मूलः— ढड्ढर सरेण जो पुण, सुत्तंघोसेइ ढड्ढर तमिह; चुडलिं विगिण्हिऊणं, रयहरणं होइ चुडलिं तु. ॥ १७१ ॥ अर्थः— मोटा स्वरवडे जे वांदणानुं सूत्र घोषे उच्चार करे तेने एकत्रीशमो ढड्ढर दोष कहेछे. अने उमाडनी पठे रजोहरण झालीने फरावतो छतां जे वांदणुं दिये तेने वत्रीशमो चुडलिक दोष कहेछे एवी रीते वांदणाना वत्रीश दोष कही वताव्या. ॥ १७१ ॥

हवे नियत अने अनियत ए वे प्रकारना वांदणाना स्थानक देखाडे छे. तेमां प्रथम आठ नियत स्थानक कहेछे— मूलः—पडिक्कमणे सज्झाए, काउस्सग्गा वराह पाहुणए; आलोयण संवरणे, उत्तम ठेय वंदणयं. ॥ १७२ ॥ अर्थः— प्रथम

पडिक्कमणे एटले अगुणस्थानकथी जे गुणस्थानकनेविषे आववु तेनेविषे, बी
गमनाए एटले वाचनादिकनेविषे, त्रीजु काउसग्ग के० विगयना परिभोगने अर्थ
आंबिल प्रमुखनु विसर्जन थायछे तेनेविषे, चोथु अपराध एटले गुरुसबंधी विन
यना उल्लंघननविषे, पाचमु पाहुणए एटले परोणानेविषे तेपरोणा बे प्रकारनाछे –
एक सांभोगिक अने बीजा असांभोगिक छे तेमा सांभोगिक एटले एक समाचारी
ना साधुनु आगमन थयाथी तेने गुरुने पूछी वांदणु देवु अने असांभोगिक एट
ले बीजी समाचारीनो साधु आवे तो पहेला गुरुने वांदणु दईने गुरुने पूछी वांदे
अने नहीतो आवता थकां छठु आलोयण एटलेवांदणु दईने आलोयणा लेवी
सातमुं संवरणे एटले जे एकासणादि पच्चक्खाण घणा आगारे लीधा होय छे त्यां
भोजन पछी आगार संक्षेपवाने अर्थे अथवा नोकारसी प्रमुख कीधा थका अजीर्णा
दि कारणे, अनशनार्थी सेलांमवर वांदणु थाय आठमु उत्तमार्थे एटले अनशनमापण
वांदणुं देवु १४० तथा १०३१ बे गाथाओना आक दबाव मडाणा तेथीइहा १३४
ए वांदणाना छ अनियत स्थानक कहेछे – मूल – माण नियं कम्म बधण.
प्रमादवश करण परयण विसणया, नरबुद्धि अवाहीए, छ दोसा वंदणा क
रणे ॥ १३५ ॥ अर्थ – (१) ज्यां मान होय, (२) नित्य कर्म बधन थतु हो
य, (३) आशातनानु दृश्य होय, (४) प्रवचननी आज्ञानु उल्लंघन होय, (५)
नरनी बुद्धि घनी होय (६) अने ज्यां अज्ञानी होय ए छ स्थानके वंदना कर
वी नही. वंदन न करवानां अर्थ ए छ दोष कह्या छे माटेज ए अनियत स्थानक छे
एवी रीत पाछील गाथा करी वांदणाना दोष कह्या आही बीजा वांदणानो
द्वार संपूर्ण थया हवे त्रीजा पडिक्कमणाना द्वार कहे छे

अथ प्रतिक्रमण द्वार त्रितीय प्रारंभ

तना आगममा प्रथम प्रतिक्रमण शब्दना व्युत्पत्ति अर्थ करे छे – प्रतिए उपसर्ग
प्रतिकूल अर्थनेविषे प्रवर्ते क्रमशब्द पादना विक्षेपनविषे प्रवर्तते एना भाव – प्र
तीप-प्रतिकूल अथवा प्रतिक्रमण एटले पाछा फरवु एवा समजवा अथवा पडिक्कम
णं ते प्रतिक्रमण शब्दनो अर्थ संयमरूप नदीनारानु ज पातानु स्थानक ते मुकीने बीजा
असंयमरूप स्थानकना स्थानक ते जवु तेने क्रमण कहे छे अने ते असंयमरूप
स्थानकथी पाछा पोताना संयमरूप नदीनाराना स्थानक आववु तेने
प्रतिक्रमण कहे छे कहे – स्वस्थानात्परस्थान स्थानं, प्रमादस्य वशाद्गत ते
णैव क्रमणं भूयः प्रतिक्रमणमुच्यते' ए श्लोकना अर्थ – आगा छे – ज पोताना

स्थानकथी पर एटले भिन्न स्थान छे. त्यां प्रमादने वश थइने गतः एटले जवायुं छतां फरी त्यांथी जे पोताना स्थानके पाछुं आववुं तेने प्रतिक्रमण कहेछे. हवे बी जी रीते अर्थ करे छे.— अथवा प्रतिकूल गमन जे क्षायोपशमिक भावथी औद यिक भावने विषे जवुं तेने पण प्रतिक्रमण कहे छे. तथापि तेनो अर्थ तेज छे प्रतिकूल गमनथी प्रतिशब्दनो सर्वत्र व्याप्ति जाणवी. उक्तंच प्रति प्रति प्रवर्त्तन अथवा शुभ फल जे मोक्ष फलदायकनेविषे निःशल्य यतिने ते प्रतिक्रमण कहि ये. एवी रीते ए प्रतिक्रमण अतीत अनागत अने वर्त्तमान ए त्रणे कालविषयक जाणी लेवुं. अंहि शिष्य प्रश्न करे छे के, प्रतिक्रमण तो अतीत कालने विषेज यु क्त छे एम कहेलुं छे. जेमके — "अईयं पडिकमामि, परु पुन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चरकामीति" आवो प्रमाण छतां प्रतिक्रमणने त्रिकालविषयक केम प्रतिपादन करोछो तेनो गुरु उत्तर कहेछे.—अंही प्रतिक्रमण शब्दमात्र अशुभयोगथकी निवृत्ति जाणवी. यदुक्तं "मिछतिप्पमिक्कमणं, तहेव असंजमे पमिक्कमणं; कसायण प मिक्कमणं, जोगाणयं अप्प संथाणं." तेकारण माटे प्रतिक्रमण त्रणे कालनेविषे जाणी लेवुं. जेमके,पूर्वकृतपापनी निंदा करवी ते द्वारे अशुभयोगनो निवृत्तिरू प अतीत विषयनो प्रतिक्रमण जाणवो अने संवर द्वारें करी प्रत्युत्पन्न विषय एटले वर्त्तमान समये संवर कर्युंछे तेवर्त्तमान प्रतिक्रमण जाणवो अने प्रत्याख्यान द्वारे करी एटले पच्चरकाण लेवो ते अशुभ योगनिवर्त्तन पच्चरकाणे अनागत समयनो प्रतिक्रमण जाणवुं. इत्यादि ते प्रतिक्रमण दैवसिकादि भेदोएकरी पांचप्रकारे थाय छे.—दिवसना अंतनेविषे दैवसिक प्रतिक्रमण थायछे. रात्रना अंते रात्रिक प्रतिक्र मण, पक्षना अंते पाक्षीक प्रतिक्रमण, चार मासना अंते चातुर्मासिक प्रतिक्रमण, अने संवत्सरना अंते सांवत्सरिक प्रतिक्रमण थायछे. दैवसिक शब्दनी व्युत्पत्तितो दिवस संबंधिथाय कणि दैवसिक इत्यादि तेनेविषे स्थित नर पण बे प्रकारना छे. एक ध्रुव ने बीजा अध्रुव. तेमां भरत अने ऐरवत क्षेत्रोनेविषे प्रथम अने चरम ती र्थंकरना समये बन्नेकाले प्रतिक्रमण करवुं तेने ध्रुव कहिये. अने महाविदेह क्षेत्रने विषे सदाकाल तथा भरतादिक दश क्षेत्रनेविषे मध्यना बावीश तीर्थंकरोना समये कोइ कारणने लीधे प्रतिक्रमण करवुं पण अन्यदा न करवुं ते अध्रुव कहेवाय छे. यदाह.— "सपडिक्कमणो धम्मे, पुरिमस्सय पछिमस्सय जिणस्स; मज्झमगाण जिणाणं, कारण जाए पडिक्कमणं." प्रतिक्रमण विधि आवी रीते छेः— पंच विहा

यार विशुद्ध हेउ मिह साहु सावगो वावि, पडिकमण सद्गुरुणा गुरुविरह कुण ऽ इक्कोवि " ते चिइवदण इत्यादिके करी कहेछे –

हवे प्रथम संध्याप्रतिक्रमण विधि देखाडे छे – मूल –चिइ वदण उस्सग्गा, पुत्तिअपमिजेइ वदणा लोए, सुत्त वदण खामण, य वदण चरित्त उस्सग्गो ॥ १७३ दसणु नाणोसग्गो, सुयदेवय खित्त देवयाणच, पुत्तिअवदण थुइ तिय, स क्कथयोत्त देवसिअं ॥ १७६ ॥ अर्थ –तेमाप्रथम त्रसस्थावर प्राणीए करी रहि त प्रेक्षित प्रमार्जित गमनेविषे इरियावही पडिकम्मीने, चत्यवदन विधान करवु पछे आचार्यादिकने खमाश्रमणादिक देइने देवसिक अतिचारना चितननेअर्थे काउस ग्ग करे, पण काउसग्गमा बहु व्यापारवाला साधु जेटले एक गुण देवसिक अतिचार चितवे, तेटले तेथी बमणा अतिचार अल्प हिडक गुरु चितवे तेथी गुरु हलवेथी चितवे, त्यारपछी साधु गुरुनी समीपे काउसग्गनो उच्चार करे ते पालीने लोगस उज्जो यगरे जणीने पछीमुहपत्ती पडिलेहिवी, त्यार पछी वादणो देवु पछी आलोपति एटले आलोचन आलोचवु कायोत्सर्ग तथा चिंतित अतिचार गुरुने केवा पछी पडिकम ण सूत्र जणवु साधु ए पण पोते जणवु अने श्रावकेपण पोते जणवु त्यार पछी वां दणो आपवु खामणेति एटले गुर्वादिकने खामणु करे ते प्रथम गुरुने खमावी पछी अनुक्रमे बीजा सर्व मोटाओने खमाववु ज्यारे पचकादि गण होय त्यारे त्रीनो खा मणु करवु ते पचकमां जे मोटो होय तेने खमाववु एजी रीते प्रभातना प्रतिक्रमण नेविषे पण तदणु वदणयत्ति एटले वांदणु देवु मूलमा (च) शब्द समुच्चय वा ची छे ए गुरुना आश्रय करवाने अर्थे अजियारण नामनुवांदणु कहेछे पछी चारित्रातिचारनो काउसग्ग करवो पछी दर्शन विशुद्धिनिमित्ते तथा ज्ञानातिचार शुद्धि निमित्ते काउसग्ग करवा, त्यार पछी श्रुत समृद्धि निमित्ते श्रुत देवतानो का योत्सर्ग करवो पछी स्तुति देवी अथवा बीजाए स्तुति देता शांभळवी त्यार पछी सर्व विघ्नोनु निर्दलन करवाने अर्थे क्षेत्र देवतानो कायोत्सर्ग करवो ते समये एक नमस्कारनु चिंतवन करीने स्तुति देवी अथवा बीजाए स्तुति देतां शांभळवी. मूलमा चकार समुच्चय अर्थे छे त्यार पछी नमस्कार करी बेशीने 'पुत्तियत्ति' एटले मुहपत्तीनी ए करी प्रत्युपेक्षण करवु, त्यार पछी मगलादि निमित्ते वांदणु देवु त्यार पछी इच्छामो अणुसठि एम जणीने नीचे बेशी एक गुरुनी स्तुति जणता छतां प्रवर्धमान स्वरे करीने प्रवर्धमान एटले श्री महावीर स्वामीनी त्रण स्तुतिओ जणवी तदनुतर 'सक्कथयत्ति' एटले शक्रस्तव जणवु, त्यार पछी था

त्तंति ' एटले स्तोत्र नणवुं. त्यार पठी दिवसातिचारनी विशुद्धिने अर्थे कायोत्सर्ग करवो ते समये चार लोकस्य उद्योतकर कहेवां. एवुं गाथामां कह्युं नथी तो पण जाणी लेवुं ' देवसियंति ' एटले ए संध्या समये दैवसिक प्रतिक्रमण जाणवुं. एट ले बे गाथा वमे देवसी प्रतिक्रमणनी विधि कही. इति संध्या प्रतिक्रमण विधि.

हवे प्रनात प्रतिक्रमण विधि कहे ठेः— मूलः—मिह्याउक्कड पणिवा, य दंडगं काउसग्ग तिअ करणं; पुत्तिअ वंदण आलो अ सुत्त वदणय खामणयं. ॥१७४॥ वंदणयं गाहा तिअ, पाढो ठम्मासि अस्स उस्सग्गो; पुत्तिअ वंदण नियमो, थुइ तिअ चिय वंदणा राउ ॥ १७८ ॥ इहवि पढमे चरणे, दंसण सुद्धीय बीय उ स्सग्गो; सुअ नाणस्स तईउ. नवरं चिंतेइ तिहइमं॥१७ए॥ तइय निसायइआरं, चिं तइ चरमंमि किंतवं काहं; ठम्मासा एग दिणा, इहाणिजा पोरिसि नमोवा॥१८०॥

अर्थः— नूमिकाने मस्तक लगामी, आखी रात्रना अतिचारनो मिह्यामि डुक्क म दइने, प्रतीपाद दंमक नमोत्थुणं कहीने उस्सग्गतियकेण्काउस्सग त्रण करवा. पठी मुहपत्ती पडिलेही, वांदणुं दइ, आलोअणुं आलोइ. प्रतिक्रमण संबंधी सूत्र गुणी, उना थइ, पठीबे वांदणा दइ, खामणुंकरी वली बे वांदणा दइ. "आयरिय उवज्झा ए" इत्यादि त्रण गाथा कही पठी ठ मासी तप चिंतववा संबंधी काउसग्ग करवो. तेमां ठ मासी तपनी चिंतवना आवी रीते करवीः—श्री महावीरना तीर्थनेविषे उ त्कृष्टताथी ठ मासी तपवर्त्ते ठे. माटे हे जीव ए तप तूं करी शकशे के नही? एम पोताना अंतरमां चिंतवना करवी पठी जो ते तप पोताथी थइ शके नही तो वली चिंतवन करवुं के एक दिन ओठा ठ मासी तप थई शकशे? एम एक एक दिवस ओठो करतां ज्यारे ओगणत्रीश दिवस उंठा थई रहे त्यारे तेनो मास एक गणीने पांच मासी तपने विषे प्रथमनी पठे अंतर प्रश्न करवुं, पठी चोमासी, त्रीमासी, बेमासी अने एक मासी चिंतवना करवी. ते पण जो पोता थी बनी शकतुं होय नही तो तेमांथी एक एक दिवस उंठो करतां तेर दिवश उ ठा करीने वली चिंतववुं के हवे चोत्रीसम तप करी शकाशे के नही? ते पण जो बने नही तो बत्रीसम विषे चिंतववुं. एमयावत् पठी दशम, अट्ठम, ठठ, चउछ, अने शेवट आंबिल सुधी आववुं. त्यार पठी निवी एकासणुं पोरिसीनी अवधिसुधी नी चिंतवना करवी. एम नवकारशी आदि जेटलुं करी शकाय ते पच्चरकाण मनमां चिंतववुं. अने ते नमो अरिहंताणं कहीने पारवुं त्यार पठी मुहपत्ती पडिलेही, बे वांदणा दईने, पच्चरकाण करवां. पठी थुइतिअ एटलेगोढलीए बेशीने गिलोई प्रमु

वकना उत्तर गुण शिक्षाव्रत छे हिंसादिकनी निवृत्तिरूपे करी मूल गुणोनुं प्रत्याख्यानल थायछे, प्रतिपक्ष निवृत्तिरूपे करी पिंडविशुद्ध्यादिक अने दिग्व्रतादि उत्तर गुणनु प्रत्याख्यानल थाय छे. त्या पोते करेला प्रत्याख्यान कालनेविषे विनय सहित सम्यक् उपयुक्त गुरु वचननो उच्चार करता प्रत्याख्यान करेछे ते प्रत्याख्याननेविषे चतुर्भंगी थायछे – जेम के, पोते प्रत्याख्याननुं स्वरूप जाणतो छता जाणनारा गुरुनीपासे करेछे ए प्रथम भंग, गुरु जाणनारा होय अने पोते अजाण छता गुरुनीपासे करे ते द्वितीय भंग, शिष्य जाण होय अने गुरु अजाण छतां तेनी पासे करे ते तृतीय भंग, अने गुरु तथा शिष्य बन्ने अजाण छतां गुरुनी पासे करे ते चतुर्थ भंग जाणवो ए चार भंग पोताना मने कल्पीने कह्या नथी पण सिद्धांतनेविषे कहेला छे यदाह – "जाणगो जाणगसगासे जाणगो अजाणग सगासे अजाणगो जाणग सगासे अजाणगो अजाणग सगासे इत्यादि" तेमा प्रथम भंग शुद्ध छे केमके बन्नेने जाणपणु छे. बीजो भंग पण शुद्ध छे. केमके, गुरु जाणनार अने शिष्य अजाण छता तेने संक्षेपथी बोध करी प्रत्याख्यान करावे छे अन्यथा अशुद्ध छे त्रीजो भंग जो पण अशुद्ध छे, परंतु ए पण तथाविध गुरुनी अप्राप्ति छता गुरुना बहु मानेकरी गुरुतत्वथी पिता, पितृव्य, बंधु, मामा, अने शिष्यादि बीजापण कोई साक्षी करीने ज्यारे प्रत्याख्यान करेछे त्यारे शुद्ध छे चोथो भंग अशुद्धज छे ॥ १८३ ॥ १८८ ॥

अ० उत्तर गुण प्रत्याख्यान प्रतिदिन उपयोगित्वेकरी कहेवाय छे –ते पच्चखाणना दश प्रकार छे ते कहेछे – पहेला नावी पच्चक्खाण, बीजा अतीत पच्चक्खाण, त्रीजो कोटि सहित पच्चक्खाण, चोथो नियंत्रित पच्चक्खाण पाचमो सागार पच्चक्खाण छठो निरागार पच्चक्खाण, सातमो परिमाणकृत पच्चक्खाण, आठमो निर्विशेष पच्चक्खाण नवमो साकेत पच्चक्खाण, अने दशमो अद्धा पच्चक्खाण छे तेमा नवमो साकेत पच्चक्खाण आठप्रकार छे अने दशमो अद्धा पच्चक्खाण दश प्रकारे छे.

मूल – होही पज्जोसवणा, इत्थ न तरो ढवेज कालम्मे, गुरु गण गिलाणसिहग, तवस्सि कज्जा उज्जेग ॥ १८९ ॥ इअ चितिअ पुव्वं जो, कुणइ तवं अप्पणेवे बिंति, तमइक्कंतं पण, व हेउणातव इज़ वइ ॥ १९० ॥ अर्थ – प्रथम भावि पच्चक्खाणनु वर्णन करे छे – गुरु एटले आचार्यादि, गण एटले साधुना समूह, ग्लान एटले रोगे करीने ग्रसित शिष्य, अप्यजन जात एटले नाना चनाउ अने तपस्वी एटले उत्कृष्ट तपना करनार एउ संबधी जे कार्य विश्रामणादिक मा

ठे तेणे आकुल व्याप्त पणायी मारुं मन व्याकुल थवाथी पर्युषणादिक पर्वना
दिवशे अष्टम्यादिक तप जो थइ शकशे नही तो मने ए लाजनी हाणी थशे इयचिंति
०० एवो चितवीने जे कोई ते पर्व आव्यानी पहेलांज ए तप करवा विषे गुरुनी
ासे पच्चरकाण लइने नावि शुन कार्यनी सिद्धि करी लेवाना हेतुथी जे तप करेछे
ने अनागत नावी तप तीर्थंकरादिक कहे ठे. ए पहेलो नावी पच्चरकाण जाणवो.
हवे बीजो अतीत पच्चरकाण देखाम्हे ठेः– अनागत नावी तपनी पठे पूर्वोक्त कार
णोने लीधे पर्युषणादि पर्वने दिवशे जो तप थइ शक्यो न होय तो ते पर्व गया पठी
ठित तप करवो तेने अतिक्रांत अतीत तप कहे ठे. ॥ १८९ ॥ १९० ॥

मूल – गोसे अप्रुत्तर्ठं, ज काउ त कुणइ बीअ गोसेवि; इअ कोडी डुगमिल
णे. कोडी सहियंति नामेणं. ॥ १९१ ॥ अर्थः– हवे त्रीजा कोटि सहित पच्चरका
णनुं स्वरूप कहे ठे·– प्रनातना समये अनक्तार्थ एटले उपवास करीने एमज
आंबिल, नीवी, एकासणुं, अने एकलगाणो प्रमुख व्रत करीने वली बीजा दिव
शमां प्रनातने समये गत दिवशनी पठेज व्रतनो आरंन करवो त्यारे गतदिवशना
प्रनात समयथी व्रतनो आरंन थयो ने वर्त्तमान दिवशना प्रनात समयमां अंत
थयो कहेवाय. ते पूर्व व्रतना अंतने समये पूर्वनी पठेज वली बीजा व्रतनो
आरंन करवो एम एक पठी एक शृंखलावद्ध एकनो आरंन अने बीजानो अंत
एवा कोटिक्रम वडे जे तप करवो तेने कोटि सहित पच्चरवाण कहे ठे. ॥ १९१ ॥

मूल·– हिठेण गिलाणेणव, अमुग तवो मुगदिणंमि नियमेण; कायव्वोत्ति निअं
टिअ, पच्चरकाणं जिणाविंति. ॥ १९२ ॥ अर्थः– नियंत्रित पच्चरकाण कहेठेः–हिठे
ण एटले निरोगता ठते अथवा गिलाणेणके० सरोगीठते पण चिंतवेजे अमुक दिवशे
अमुक ठठ अठमादिक तप मारे जरुर करवो एवा नियमेण के० निश्चय वडे जे
तप करवो तेने त्रिलोकनाजाण नगवत्त नियंत्रितनामे चोथो पच्चरकाण कहेठे.१९२

अवतरणः–ए तप कया कालेहतो ते देखाम्हे ठे. मूलः– चोद्दस पुव्विसु जिण
कप्पिएसु पढमंमि चेव संघयणे; एववोछिन्नं चिय, थेरावि तया करे सीय. ॥
१९३ ॥ अर्थ.– चौद पूर्वना धरनार अने जिनकल्पीनेविषे वली प्रथम वज्रऋषन
नाराच संघयणनेविषे एतप विछेद गयोपण ए तपने तेकाले स्थविरकल्पी करता हता.

अवतरण – सागार नामे तप अथवा पच्चरकाण कहे ठे. मूलः– महत्तरयागा
राइ, आगारेहिं जुअंतु सागारं; आगार विरहियं पुण, नणिय मणागार नामंतु.
॥ १९४ ॥ अर्थ.– महत्तरागारेणं इत्यादिक आगारे करी सहित होय तेने सागार

तप अने ए आगारे करीरहित होय तेअनागार नामे तप एवी रीते अं
अने गणधरादिके कह्युंछे ए पांचमो आगार ने वळी अनागारपच्चरकाण क
आंही कोई आशंका करेके "अन्नछणा भोगेण, सहसागारेण" एमूकी
गादि आगारेकरी रहित अनागार कहेवावुं कारण शुं तेनो उत्तर आवी री

मूल – किंतु अणा भोगाइहं, सहसागारेयछन्नि भणियवा, जेणतिणाइ
ज्ञा, मुहमि निविज्ञि वाकहवि ॥ १९५ ॥ इय कय आगारछगपि, सेस
रहिअमणागार, दुब्भिरक वित्ति कंता,र गाढ रोगाइ एकुज्ञा ॥ १९६ ॥ अर्थ
नाभाग एटले भोला होय अथवा जेनी स्मरणशक्ति ओछी होय तेथी पच्च
नुं स्मरण रहे नहीं ते अने इहा सहसात्कारेकरी मुखमा तृणादि घाले, अ
पातानी मेले कांइ पदार्थ मुखमा पडे. तेनो शो उपाय थाय ? इयकय के०ए
णयरी ए बे आगार कर्या छता पण अनागार कहेवायछे ते अनागार कया कर
ते कहेछे – दुब्भिरक. एटले ज्यां दुकाल पडयो होय अनेफिरता पण वृत्ति मन
नहोय ते दुर्भिक्ष अने वृत्तिकांतार ते वृत्तिकहेतां वर्त्तवुं एटले जेणेकरी शरीर
निर्वाह थाय ते वृत्तिभिक्षा प्रमुख ते विषयक कांतार ज्यां होय तेने वृत्ति कांता
कहेछे जेम अटवीमाभिक्षा मळे नहीं तेमज सिणवल्लयादि गाममा अदाता
ब्राह्मणा प्रमुख होय तेथी, अथवा शासनना द्वेषी होय तेना आकीर्ण पणाने लीधे
भिक्षा न मळे ते कारणे तथी कांइ मोटो रोग थयो होय ते मटाडवा माटे कांइ
ग्रहण करवुं पडे आदि शब्दथी कांतार ते केसरी सिंहनी आपदावडे करवुं पडे ते

मूल – दत्तीहिं कवलेहिं, घरेहिं भिरकाहिं अहव दवेहिं, जो भत्तपरिचाय
करेइ परिमाणकडमेअं ॥ १९७ ॥ अर्थ – दातनी सख्याए करी कालीआनी स
ख्याए करी अथवा घरनी संख्याये करी संक्षेप भिक्षा ते मसूरादिक तण करी
अथवा द्रव्यते द्रूर, ओदन मुग, प्रमुख तेणे करीने जे कांइ भोग आहारना प
त्याग करे, तने परिमाण कृत सातमा पच्चरकाण कहे छे ॥ १९७ ॥

मूल – सत्र असण सत्र, च पाणग खाइमवि सव्वंपि, वोसिरइ साइमपिहु, सव्व
निरवसेसतं ॥१९८॥ अर्थ – असण शब्दना अर्थ संस्कृतमा अशन थाय छे ए
शब्द अश धातु माथी थयो छे ए धातु भोजनने अर्थे वर्त्ते छे अश्यते एटले
जमीए छैए ते अशन छे पाणग शब्दना संस्कृतमा पानक थाय छे ए शब्दनी
न धातु था छे ते पीवानी क्रियाने अर्थे वपराय छे तेनु रूप पान थाय छ तन
कर्दिये ते पानक खाइमनो संस्कृतमा खादिम शब्द छे. एनी मूळ धातु खाद छे

खावाने अर्थे वपराय छे तेनुं रूप खादिम थाय छे अने स्वाद (ष्वर्द) ए धातु आस्वादने अर्थे वपराय छे तेनुरूप स्वादिम थायछे हवे समयज्ञापार्थे जे निरुक्ति तेणे करीव्युत्पत्ति दर्शावे छे. आशु एटले उतावलपणे, भूखने उपशमावाने अर्थे अशन शब्द छे. प्राणेंद्रियादि दशने तृप्तिकार पणे वर्त्ते तेपान शब्दनो अर्थ जा णवो. ख शब्द आकाशवाची छे तेथी मुखना पोलाणने ते रूपे करी तेमां वस्तु खवाय छे तेने खादिम कहे छे. अने रसादिक स्वाद वडे स्वादयति स्वादरूपी गु णवालो जे पदार्थ तेने स्वादिम कहे छे. एवी रीते जे ए अर्थ देखाड्यो ते यद्यपि एकार्थिक छे, तोपण जे तथाविध ज्ञानथी रहित बाल छे तेने सुखाववोधने अर्थे अने विवक्षित द्रव्यनी सुखे परिहरणादिने अर्थे एभेद कल्पना देखाडीछे. एवाउक्त प्रकारना अशनादिक सर्वनुं जे वोसिरवुं तेने निरविशेष नामे आठमो पच्चरकाण कहेछे.

मूलः—केयंगिहंति सहत्ते, ण जेउतेसिं इमंतिसाकेयं; अहवा केयं चिंधं, सकेय मे वाहु साकेयं ॥ १९९ ॥ अर्थः—केत शब्दनो अर्थ घर थायछे तेणे करीने जे स हित होय ते ग्रहस्थ जाणवो ए साकेत अथवा केत शब्दनो अर्थ चिन्ह पण था यछे. एटले अंगुष्टादि चिन्ह प्रमुख सहित जे होय तेने साकेत सचिन्ह कहेछे.

अवतरणः—ए नवमो साकेत पच्चरकाण आठ प्रकारे थायछे ते कहेछे. मूल.—अंगु ठि मुठि गंठि. घरसे उस्सास थिवुग जोइरके; पच्चरकाण विचाले, किच्चमिण मन्निग्गहे सुविंयं ॥२००॥ अर्थः— अंगुष्टादि आठ पच्चरकाण एवी रीते करवा ते पच्चरकाणने विचाले थाय एटले कोइके पोरसि प्रमुख पच्चरकाण कीधो छतां ते पोरिसिनोका ल पूरो थइ रह्या पछी मनमा कल्पना थाय के मारे अमुक एक काम करवुं छे ते काम करीने पछी जमीश त्यांशुधी वली साकेतक पच्चरकाण करुं तो सारु एम विचारी पहेलो "अंगुठसहिअं पच्चरकामि" एटले ज्यांसुधी मूठमां आंगोठो राखुंछुं त्यासुधी पच्चरकाणनी शीमाथइ. एमज बीजो मूठ वांधवी तेने मूठसहियंपच्चरका मी त्रीजो गांठ वांधवी ते गांठिसहियं पच्चरकामि चोथो घरसहियं पच्चरकामि पांच मो सेउपरसेउ एटले आंगनो परसेवो ते ज्यांसुधी परसेवानो विंदु नीकले त्यांसु धी ते सेउसहियपच्चरकामि छठो श्वासोत्वास एटले उस्साससहियं पच्चरकामि. सातमो थिवुग एटले पाणीनो पपोटो ते सहित, एटले थिवुग सहियं पच्चरका मि; आठमो जोइ एटले दीवा प्रमुखनी ज्योति सहित, ते जोइ सहियं पच्चरका मि; ए आठ प्रकारनो नवमो साकेत पच्चरकाण कहेवायछे. ए पच्चरकाण जेम प

च्रकाण विचाले थाय छे तेम अभिग्रहनेविषे पण थाय छे अने ज्यां सुधी गुरु मांमलीमा आवे नही त्या लगे साधुने पण एपच्चरकाण थाय छे ॥२००॥
हवे दशमो अद्धापच्चरकाण कहेछे – मूल –अद्धाकालो तस्सय, पमाण मद्धु ज नवे तमिह, अद्धा पच्चरकाण, दसमतु पुण इम नणिअ॥२०१॥ अर्थ –अद्धा शब्द वडे काल जाणवो तेनो जे प्रमाण मुहूर्त्त, प्रहर, प्रमुख उपचारथी जाणी लेवु एटले दशमो काल दर्शक अद्धा पच्चरकाण तीर्थंकर गणधरे कह्यो छे ॥ २०१ ॥ ए पच्चरकाणनो चालना पूर्वक जघन्य कालमान कहेछे
मूल – अद्धा पच्चरकाण, एयतु जइ विनेव कालतु, तह वि जहन्नो कालो, मुहुत्त मित्तो मुणेयव्वो ॥ २०२ ॥ अर्थ – अद्धा प्रत्याख्यान एयतु के० ए यद्यपि यतु तथापि काल मान कह्यो नथी तोपण जघन्ये मुहूर्त्त मात्र जाणवो ॥२०२॥
हवे अद्धा पच्चरकाणना दश भेद देखाडे छे – मूल – नवकार पोरिसीए, पुरिमड्ढेगासणेगठाणेय, आयंबिल अभतट्ठे, चरिमेय अभिग्गहे विगई ॥ २०३ ॥
अर्थ – नवकारसी, पोरिसी, पुरिमड्ढ, एकासणो, एकलठाणो, आंबिल, उपवास, दिवसचरिम अथवा नवचरिम, अभिग्रह, अने विगइ, ए दश नामछे
हवे नोकारसी प्रमुख दश पच्चरकाणनी आगार सरव्या कहे छे – मूल – दोचेय नमुक्कारो, आगारा छच्च पोरिसीएउ, सत्तेवय पुरिमड्ढे, एकासणगमि अट्ठेव ॥२०४॥ सत्तेगठाणस्सउ, अट्ठेय अबिलमि आगारा, पचेवय अब्भतट्ठे, छ प्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २०५ ॥ पच चउरो अभिग्गहि, निव्वीए अठ नवय आगारा, अप्पावरणे पचउ, हवति सेसेसु चत्तारि ॥ २०६ ॥ अर्थ – प्रथम 'नोकारसी भगपरिहारार्थे" अन्नत्थणाभोगेण, अने सहसागारेण, ए वे आगार जाणवा
' पोरसी भगपरिहारार्थे" अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पछन्नकालेण, दिसामोहेण, साहुवयणेण, अने सव्वसमाहिवत्तियागारेण, ए छ आगार छे साढ पोरसी भगपरिहारार्थे पण एज छ आगार जाणी लेवा पुरिमड्ढनेविषे उपरला छ आगार रवी पुरिमड्ढनेविषेपण पोरसी अथवा साढ पोरसी भगपरिहारार्थे कहेला छ आगार लइने तेमां महत्तरागार मेलवीने सात आगार समजी लेवा एकासणा भगपरिहारार्थे अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, सागारिआगारेण, आउंटणपसारेण, गुरु अब्भुठ्ठाणेण, पारिठावणीआगारेण, महत्तरागारेण, अने सव्वसमाहिवत्तिआगारेण, ए आठ आगार छे अने वेआसणा भगपरिहारार्थे पण एज आठ आगार जाणवा एकलठाणाभगपरिहारार्थे पण आउंटण पसार

एं विना बाकीना सात आगार एकासणानीपठे जाणवा. आंबिल भंगपरिहारार्थे अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसठेणं. उखित्तविवेगेणं, पारिठावणीयागारेणं. महत्तरागारेणं, अने सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ए आठ आगार छे. उपवास भंगपरिहारार्थे अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिठावणीयागारेणं, महत्तरागारेणं. अने सव्व समाहिवत्तियागारेणं, एपांच आगारछे. पाणीभंगपरिहारार्थे, लेवेणवा, अलेवेणवा. अछेणवा, बहुलेणवा, ससित्थेणवा, अने असित्थेणवा. ए छ आगारछे. दिवस चरिम भंगपरिहारार्थे" अन्नछणा भोगेणं, सहसागारेणं. महत्तरागारेणं, अने सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ए चार आगारछे. वली भवचरिम भंगपरिहारार्थे महत्तरागार, तथा सव्वसमाहिवत्तियागार ए बन्नेनुं कांइ काम नथी एम जो ते जाणे तो अन्नछणाभोगेणं. अने सहसागारेणं ए बे छतां पण ते निरागार छे. अभिग्रह पच्चरकाण भंगपरिहारार्थे" दिवस चरिमनेविषे कहेला चार आगार जाणी लेवा. द्रव्य, क्षेत्र, काल, तथा भाव ए चार प्रकारे अभिग्रह थाय छे तेने विषे पूर्वोक्त चार आगार कह्या छे ते वली कोइक स्थले पांच पण कह्या छे. नीवीनेविषे, आंबिल पच्चरकाणमां कहेला आठ आगार लइने तेमां पडुच्चमक्खिएण उमेरवो एटले नव थाय छे. अने केटलाक आठ पण कहे छे. नीवी शब्दनो व्युत्पत्ति सहित अर्थ कहे छे – एनो मूल शब्द संस्कृतमां निर्विकृतिक छे. एमां निः उपसर्ग छे अने विकृतिक पदछे. नि. उपसर्ग अभाव देखाडे छे अने विकृतिक ए टले चित्तने विकार करणार. ते विकृति निर्गत थइ एटले विकृति नथी तेथी निर्विकृतिसिद्ध थयुं. अथवा मूल संस्कृत शब्द निर्विगतिक छे. एमां पण प्रथमनी पठे नि·उपसर्ग अभाव वाची अने विगतिक शब्द वडे पाकुइ गतिनुं निर्गमन सिद्ध थाय छे. एटले जे करवाथी प्राणीनी नरकनी गति निवृत्त थाय छे. माटे एनुं नाम निर्विगतिक कहिये एने आठ अने नव आगारनो कारण ते नवणी उंगारिस ए गाथायेकरी आगल कहेशे अप्रावरणाभिग्रहनेविषे पूर्वोक्त द्रव्यादि अभिग्रह पच्चरकाणमां कहेला चार आगार लइने अने तेओमां पांचमो चोलपट्टागारेणं ए आगार उमेरवो. ए आगार श्रावक प्रमुखना आववाथी चोल पटे लेतां पण भंग थाय नही. ए आगार रीते त्यां पांच आगार जाणवा अन्यथा शेष सर्व अभिग्रहनेविषे चार आगार जाणवा.

नीवी पच्चरकाणनेविषे आठ आगार पण कह्या छे ने नव आगार पण कह्या छे तेनुं कारण शुं? ते कहे छे – मूल – नवणी ओगाहिमगे, अद्दव दवि पिंडि अ पय घडेसुवः नव आगाराएसिं, सेस दवाणंच अठेव. ॥ [illegible] ॥ अर्थ.–नव

नीत एटले माखण, ओगा हिमग कहेतापकवान अइव दही एटले कढीण महा दधि पिशित एटले मास, धृत, तथा गोल प्रसिद्ध हे एटली नवनीतादि अइव विगयनेविपे नव आगारहे जेनो उक्षित एटले विवेक करी सकिये के जेवुं मूल कारण द्रव्य जुदु हता पही परिणामथी रुपातर थयु हे अने ए विषयमा अइय कह्यु हे एवा पदार्थनेविपे नव आगार थाय हे अने बाकी जेनो विवेक करी स कीयेनही तेनेविपे थाठ आगार थाय हे ॥ २०७ ॥

पूर्वे "सर्व असण सव्व च पाणग" ए गाथामा चार असनादि कह्या हे तेर्न नु विवेचन करीने देखाडे हे – मूल – असण उवण सत्तुग, मुग्ग जगाराइ खल ग विहीय खीराइ सुरणाई मरुग प्पभिइ उविन्नेय ॥ २०८ ॥ अर्थ – अशन एट ले चावलादिक धान सघलु समजवु, सातु, मूग, प्रमुखनी जगाराइ एटले राव अ थवा पेज बनावे हे ते खज्जग विधि एटले खाजा, मामा, मोदक, सखानी, घेवर, लापसी, अने साकली प्रमुख समस्त पकवाननी जाति जाणवी अने क्षीर एटले दूध आदि शब्द वडे दही, धृत, गास, तीमण रसालादिक मेवा जाणवा वली सूरण प्रसिद्ध हे आदि शब्दे आधु प्रमुख सघली वनस्पतिना सालणानो परिग्रह जाणवो वली मामा प्रभृति प्रकृतिना ग्रहणवडे रोटी कूलिर, डडर इत्यादि सम जी लेवा ए सर्व पदार्थोने अशन जाणवो ॥ २०८ ॥

हवे पानक कहे हे मूल – पाण सोवीरजवो, दगाइ चित्त सुराइय चेव, आ उक्काउ सव्वो, कक्कडगजलाइयच तहा ॥ २०९ ॥ अर्थ – पान एटले पानक पदा र्थ सोवीर एटले काजी, यवोदिकादि एटले यवादिक धाननोतु धोवण आदि शब्दे करी गोधूम, चोखा, तथा कोद्रवादिकनु धोवणनो पाणी चित्र एटले नाना प्रका रनो सुरादि सघली प्रवाही पदार्थ अहीं पण आदि शब्द वडे सरको लेवो आ उक्काउ अपकायना जेटला भेद कह्या हे नोमतरिक्ष इत्यादि समस्त जाणवा तेम कक्कडग एटले काकडी खडबुजा प्रमुखमाथी जे पाणी नीकले हे ते जाणवु आदि शब्दवडे खजूर, द्राक्ष, नालीयर, प्रमुखनी आवीजवाणी इत्यादि जाणवा २०९

हवे खादिम कहे हे – मूल – भत्तोस दताई, खज्जूरगनालिकेर दरकाई, कक्कड अवड फणसा,5 बहुविह खाइम नेय, ॥ २१० ॥ अर्थ – भत्तोष एटले भूजेला चणा, गोधुम, अने जव अने दताई एटले दातोने हितुउदाल्य गुडादि आदिशब्दवडे चा रोली, खाम, अने शाकर एमज सर्व जातनी सुखडी अथवा दतादि देशविशेष प्रसिद्ध गुणे करी सस्कारयुक्त दत पवनादिक तेमज नालियर, खजूर, द्राक्ष आदि

दे अखोड वगेरे जाणवा. तेमज फल विशेष कक्कड एटले काकडी, आंबा. फ
स. आदि शब्दे करी केला प्रमुख सर्व फल लेवा, एवी रीते बहु विहंके० अनेक
कारे खादिम जाणीलेवुं. ॥ २१० ॥

हवे स्वादिम कहे छेः— मूलः— दंतवणं तंबोलं, चित्तं तुलसी कुहेडगाईयं;
हु पिप्पलि सुंगाई, अणेगहा साइमं नेयं. २११ अर्थ.— दंतवणं एटले जेणेकरी
ांतनी शुद्धि थाय छे एवी बावल प्रमुखनी डाल ते प्रसिद्ध छे. तांबोल एटले
ागवेलिना पान अने शोपारी प्रमुख चित्रके० अनेक प्रकारना थायछे ते. तुलछी
हेडक एक जातनुं फल विशेष आदि शब्दे करी जीरो; वरेआली. लेवा, महुके० मधु,
ीपरी, सुठ आदि शब्द वडे गुल मरचां, अजमोद, हरडे, बहेडा अने आमला तथा
ोकटु भांडादि सर्वलेवा. एम अनेगहाके० अनेक प्रकारे स्वादिम पदार्थ जाणवा.

हवे असनादिमां जे विगइ जेमां आवे छे ते देखाडे छेः— मूलः— पाणम्मि स
इ विगई. खाइम पक्कन्न अंसउ भणिउ ; साइम गुलमहु विगई, सेसाउ सत्त अस
ांमि. २१२ अर्थः— पानक पदार्थोमां मदिराविगइ कह्यु छे. खादिमनेविषे पक्कन्न
ंसउ के० पकवानांश विगइ कह्याछे. स्वादिमनेविषे मधु, अने गुलादिपदार्थ विगइ
ाय ते. बाकी सात विगइ असणंमिके० धान्यमां जाणवा. नवरंके० एटलो वि
ोष जे सरउमह खादिमगुलनेविषे तलेला गुडनो अवयव जाणवो. ॥ २१२ ॥

हवे छ प्रकारनी शुद्धि कहे छेः— मूल अनुष्टुप् छंदः— फासिअं पालिअं चेव
ोहिअं तीरअं तहा; किट्टिअ माराहिय चेव, जइव्वा परि सम्मिउ. ॥ २१३ ॥
अर्थः— स्पर्श कर्युं. पाल्युं. शोध्युं. निश्चे तीर्युं. तेमज कीर्त्युं. आराध्युं, वली आ
दर कर्युं एवा पच्चख्खाणविषे विशेष जइव्वा के० यत्न करवो ॥ २१३ ॥

एवा पच्चख्खाणने विषे नाम मात्र कहीने हवे गाथाए करीने व्याख्यान करेछेः
मूलः— उचिए काले विहिणा, पत्तंजं फासिअं तयं भणियं; तह पालिअं च
असइ, सम्मं उवओग पडियरियं ॥२१४॥ अर्थ.—साधु अथवा श्रावकना पच्चख्खा
णनो अर्थ कहेछेः— समस्त प्रकारे जाणतो छतां सूर्यउदय थयानी पहेलां पोतानी
साखे चैत्यस्थापना चार्यनी समक्षे. पोताना विवक्षित पच्चख्खाणनो अंगीकार करीने
पछी चारित्र पात्र गीतार्थ गुरुने समीपे विधि वडे कृतकर्म वांदणु करीने विनये करी
रागादि रहित उपयुक्त थयो थको अंजली बंध करीने जीणे अवाजे गुरुना वचन
पछे जेवारे उचरे तेने फासिअं कहेछे. तेमज पालित एटले असइ कहेतां वारंवार
तेज पच्चखाणनो उपयोग चिनवो. तेणेकरी सहित करीपालवो ते पालित जाणवो.

मूल – मह्‌ु पुग्गल रसयाण, अद्धंगुलय तु होइ ससठ्ठ, गुल पोग्गल नवणीए, अद्धामलय तु ससठं॥ २२४ ॥ अर्थ – मधु मांस अने माखणनो रस एनो अर्धो आंगलानो प्रमाण कह्यो छे तेटलु लीधाथी निव्विगड थाय अने उपरांत विगड जाणवु अने गोल पोग्गल के० मांस नवनीत एटले माखण, तथा अद्धामलक के० खारी जानवु मोर अथवा पीलु ए वस्तुउ जेटली निव्विगइ पदार्थोमा मले ते विगड थायछे॥२२४॥

मूल – विगई विगइगयाणिय अणतकायाण वज्जवत्थूणि, दस तीस व तीस, बावीस सुणेह् वन्नेमि ॥ २२५॥ अर्थ – विगई ए दश छे, अने विगइगत एटले विगयथी नीपना निर्विगइआ ते ठ जन्य विगयना त्रीश छे, अनंत काय बत्रीश छे, अने वर्ज्य वस्तु जे अनक्ष्य ते बावीश छे ए सर्व सविस्तर हुं कहु छु ते तमे शाजनो ए गाथामां " सुणेह् " ए आज्ञावाचक शब्द कहेवाथी जे पोतानी साथे शाजनवा ने नव्य जीवो आवे तेनेज धर्म शनलाववो अने बीजा जे सानजवा न आवे ते ने कहिये नही यडुक्त·–अणुवठियस्स धम्म, साहु कहिज्जाइ सुठुविपिअस्स विठगय होइ सुह्, विज्जा अग्गि धम तस्स, ए गाथामा अनुपस्थित एटले जे साथे आव्या नथी ते जाणवो बाकीनो अर्थ सुगम छे" यत सुच्चा जाणइ कल्लाण, सुच्चा जाणइ पावग, उनय जाणई सुच्चा, ज ठेय तं समायरे " अर्थ सुगम जाणवो २२५

हवे दश विगईना विकृतिभेद कहेछे – मूल – छ्ुद्द दहि तेल्ल नवणिय, घय, गुड मह्‌ु मज्ज मज्ज पक्कच, पण चउ चउ चउ चउ छुग, तिग तिग दुग एग पहिनिन्न ॥ २२६ ॥ अर्थ – दूध, दही, तेज, माखण, घी, गाज, मधु, मांस, मद्य, अने पकवान्न ए दश नाम विगयना छे एमा पांच दूधना, चार दहीना, चार तेलना, चार माखणना, चार घृतना, बे गोलना, त्रण मधुना, त्रण मांसना बे मद्यना, एक पकवान्ननो, एम एकेकना नेद थाय छे ॥ २२६ ॥

विकृति गत निविगया देखाडे छे – मूल – दव्व ह्या विगइगय विगई पुण तेण तं ह्य दव्व, उद्धरिए तत्तमिउ, उक्किठ्ठ दव्व इम अन्ने ॥२२७॥ अर्थ –"इव्य एटले कजमशाली तंडुलादिक, तेणे करीने निर्विगय करेली जे क्षीरादिक, तेने "विगइ गय " एटले विकृतिगत कहे छे तेण के० ते कारण माटे चोखा प्रमुखमें दूधप्रमुखनु जे रूपांतर थाय छे ते इव्य कहेवाय पण विगई कहेवाय नही ए माटेज नीवीना पञ्चरकाण करनारा जे छे तेने क्या क्या कांई कांई कल्पे छे तेम वली " उद्धरिये " एटले रसोई करवाना गामडामांथी पूर्मी वगेरे जे तली कडा हीए ठेए मतलब के शजगता चूलाउपर घी घालीने चडावेलु गामडु अग्नि चडे तत

या पढी तेमां घहुं आदि धान्यनो लोट घाली तेनी जे रशोई थाय ढे तेने उत्कृष्ट द्रव्य
ाणवुं. एटले ते विकृतिगतज ढे. ६मं अन्ने के० एम कोइ बीजा केटलाक कहेने
ही गीतार्थनो आवो अनिप्राय ढे. के चूलाउपर चमावेला घृतादिकने नीचे ऊता
तेमां घृत प्रमुख टाढो थया पढी तेमां जे कणिक प्रमुख घालीए ते वखते तथा
य पाकना अनाव होवाथी विकृतिगत कहेवाय अने चूला ऊपर तप्त थता
मां घालीने सारी रीते जे पकववुं एटले परिपक्व थयला नेने विकृतिज कहे ढे.
गाथानुं व्याख्यान टीका कारें एवी उक्त रीतिए कर्युं ढे अने पंमित जनोए वि
र करीने व्याख्यान करी लेवुं. हवे कोई कहेशे के ए आचार्ये पोतानी मन क
ाना करी हशे ? तेम न जाणवु केमके सिद्धांतमां पण विकृति गतनुं स्वरूप ए
रीतेज कह्यु ढे. यतः " आवस्सग चुन्नीए गाहा " एटले अवश्यक चूर्णिनेवि
परिनणित ढे. आंही ग्रंथनेविषे सामान्य द्वारे वर्णन कर्युं ढे. अने विशेष द्वारे
हेवुं ढे जे कुशल बुद्धिवान ढे तेमना अर्थे पउंजियव्वंति एटले प्रयुंजवुं अ
ात् कारणनेविषे कहेवुं ए अनिप्राय जाणवो. आंही यद्यपि क्षीरादि प्रमुख सा
ात विगई नथी किंतु विकृतिगत कह्यां ढे. अने ते नीवीताने पण कल्पे ढे तथा
जे ए उत्कृष्ट द्रव्य जमताथकां जे संत जन ढे तेना मनने पण विकार पमाडेढे
ने जे ए नीवी कीधी ढे तेने उत्कृष्ट निर्जरा पण प्राप्त थाय नही. माटे एवा द्रव्य
लेवां तेज सारुं ढे अने जे विविध तप करवा थकी महाकृश थयो होय अने अ
ठान, सज्झाय, तथा अध्ययनादिक करी शकतो न होय तो उत्कृष्ट द्रव्य ज
वुं तेने कांई दोष नथी अने कर्मनिर्जरा पण मोटी थाय ढे. यदाहुः नवर इह
रे नोगो, निविगइयाणं पि कारणावेक्खो ॥ उक्कोस दव्वगहणे, नउं विसेसेण वि
ओ ॥ १ ॥ आवन्न निव्विगइयस्स, असाहुणो जुज्जई परो नोगो ॥ इंदिय जय
हीए, विगई चायं मिनो जुत्तो ॥ २ ॥ जो पुण विगई चायं, काऊणं खाइ निद्ध
हुराइं ॥ उक्कोसग दव्वाई, तुह फले तस्स सोनेउ ॥ ३ ॥ दीसंति अ केइ इहं,
ख्खकाएवि मंदधम्माणो ॥ कारणियं पडिसेवं, अकारणेणवि कुणमाणा ॥ ४ ॥
ालमोयग तिलवट्टिं, वरिसोलग नालिकेर खंडाई ॥ अइ बहुल घोलखीरिं, घय
फय वंजणाईय ॥ ५ ॥ घयबुम मंमगाई । दहि दुद्ध करंबनेह माईहिं ॥ कुल्ल
चूरिमपमुहं । अकारणेकेइ उज्झंति ॥ ६ ॥ नयतपि इहपमाणं । जहुत्तकारीण
ागमन्नूणं ॥ जरजम्ममरण नीसण । नवन्नवुव्विग्गचित्ताणं ॥ ७ ॥ मोत्तुं जि
ाणमाणं । जिआण बहु डुहदवग्गित वियाणं ॥ नहु अन्नोपमियारो । कोइ

ली, कुमारि तह थोहरी गिलोईय, ल्हसण वस करिल्ला, गज्जर तह लोणउ लो ढो ॥ २३९ ॥ गिरिकन्नि किसल पत्ता, खीरसुआ थेग अल्ल मुत्थाय; तह लो ण रुक्ख छल्ली, खिल्लुडो अमयवल्लीय ॥ २४० ॥ मूला तह भूमिरुहा, विरुहा तह ढक्क वत्थुलो पढमो, सुअरवल्लो य तहा, पल्लंको कोमलंबिलिया ॥२४१॥ आलू तह पिंडालू, हवंति एए अणंतनामेहिं, अन्न मणंत नेय, लक्खण जुत्ती य समयाउ ॥२४२॥ अर्थ — सव्वाहु कंदजाइ के० निश्चयथकी १ सर्व कंदनीजाति अनंत कायकादिक जे छे ते २ सूरणकंद ३ वज्रकंद ४ अल्लहलिद्राके० नी लीहलिद् तेमज ५ अल्ल के० नीलोआदु ६ अल्लकचूरो के० नीलोकचूरा ७ सता वरीप्रसिद्ध ८ विरालीलताविशेष ९ कुआरी १० थोहरि ११ गिलोइ एटले गुलवेल १२ लसण १३ वस सवधीनी कारेली १४ गाजर तेमज १५ लोणउ के० साजी वृक्ष १६ लोढो लोढक ते पद्मनी कंद वनस्पति विशेष १७ गिरिकन्नि एटले गि रिकर्णिका वल्लि विशेष तेना किसलय पत्ता के० कुपलपान ते नवुनिकलतु कोम ल पान १८ खीरसुकंद अने १९ थेगकंद ए बे कंदविशेषछे २० अल्लमुत्थाय के० नीलीमोथ तेमज २१ लोण वृक्षनी छाल २२ खिल्लुडो कंदविशेष २३ अमृत वे ली तथा २४ मूला ए प्रसिद्ध छे तेमज २५ भूमिरूहा के० भूमि फोडा तथा २६ विरुहा प्रसिद्ध द्विदलधान जेने अंकुर आव्या होय ते तेमवली २७ ढक्क वत्थुलो के० ढाक ते वनस्पति शाकविशेष पहेलो उगे ते २८ सूकरवाल देश प्रसिद्ध. ते मज २९ पालकोते शाकविशेष ३० कामलंबिलिया के० काची आंबली जेमां ठळीउ पणु न होय ते ३१ आलु अने ३२ पिंडालु ए बे कंदविशेष प्रसिद्ध छे एटलीव नस्पति संबधी वस्तु अनंत काय कही छे ते आर्यदेशमा प्रसिद्ध छे तेम बीजी पण अनंतकाय वस्तुना लक्षणोनी युक्तिये करी सहित थकां सिद्धांत थकी जाण वा ॥ २३८ ॥ २३९ ॥ २४० ॥ २४१ ॥ २४२ ॥

वली केटलाएक अनंतकाय देखाडीने तेना लक्षण समयोक्त देखाडे छे —मूल— घोसाड करीरंकुर, तिंदुअ अइकोमलंबगाईणि, वरुण वड निंबगाइण, अंकु राई अणंताई ॥ २४३ ॥ अर्थ — घोषातकी अने करीर ए बे वनस्पतिना अंकुरा थाय छे तेने अनंतकाय कहे छे अने तिंदुक ते वृक्षना अतिकोमल फल, जेमां गुठली बंधाणी न होय एवा आंबा प्रमुख तथा वरुण जातनो वृक्षविशेष, तथा वडनु झाड, अने निंबादि जातना वृक्षना अंकुर ते सर्व अनंतकाय जाणवा

मूल— गूढ सिर संधि पव्व, समभंग महीरग च छिन्नरुह, साहारण सरीं,

तव्विवरीयंच पत्तेयं. ॥ २४४ ॥ अर्थः– जेनी नेसो तथा सांध अने पर्व के० गां ठ ते गूढ के० गुप्त होय पण जाणवामां न आवे जे समभंग के० भांग्या थकास रखा भांगे अहीरगके० जेने ठेदता तांतुआ थाय नही अने छिन्नरुहं के० जे ठे द्या थका पाठा वावीये तो उगी आवे ते साधारण शरीर. अने जे ए लक्षणोथी विपरीत होय ते प्रत्येक वनस्पति जाणवी. ॥ २४४ ॥

मूलः– चक्कं व भज्जमाणस्स जस्स गंठी हवेज्ज चुन्न घणो; तं पुढविस रिस भेयं, अणंतजीवं वियाणाहि. ॥ २४५ ॥ अर्थः– जे भांगतां थकां कुंभारना चकला जेवा देखाय, जेनी गांठमां चूर्ण घणुं थाय, जेनो पृथवीनी पठे भेद थाय, ए सरवने अनंतकाय जाणवी. ॥ २४५ ॥

मूलः– गूढ सिरागंपत्तं, सच्छीरं जंच होइ निच्छीरं; जंपिअ पयावसंधिं, अणंत जीवं वियाणाहि. ॥२४६॥ अर्थः– जेनी नेसो देखाती न होय, एवा पांदडां जेमां क्षीर होय, अथवा जे क्षीररहित होय, जेनी सांधमां उण्णता घणी होय. अथवा सर्व प्रकारे जेनो सांधो दीठामां आवे नही, एवी वनस्पतिने अनंतकाय जाणवी.

हवे बावीश अनक्ष्य कहे ठेः– मूल.– पंचुंबरि चउ विगई, हिम विस करगे य सव्वमट्टीय; रयणीभोयणगं चिय, बहुबीय अणंत संधाणा ॥ २४७ ॥ अर्थ.– पांच उंबर एटले वड वृक्षना फल, पीपलाना फल, पीपरीना फल, उंबर फल, अने कोटिंबम्नी ए पांच. तेमज चउके० चार मद्यादिक विगइ एटले मदिरा, माख ण, मध, अने मांस ए चार मली नव थया. दशमुं हिम, अग्यारमो वच्छनागादिक विषनी जाति, बारमुं करगा, तेरमुं सर्व जातनी माटी, चोदमुं रात्रिभोजन, पंद रमुं पंपोटक केवल बीजमय दाडिम खस खस प्रमुख बहुबीज, जाणवा. शोल मुं सगला अनंतकाय. सत्तरमुं संधाणा के० सर्व जातनुं अथाणुं. ॥२४७॥

मूलः– घोलवडा वायंगण, अमुणिय नामाणि पुप्फ फलयाणि; तुच्छफलं चलियरसं, वज्जह वज्जाणि बावीसं. ॥ २४८ ॥ अर्थः– अढारमुं घोलवडा एट ले काचा घोलमां नाखेला वडा, ओगणीशमुं रीगणा, वीशमुं जेना नाम जाणता न होये एवां फूल तथा फल, एकवीसमुं तुच्छफल के० असारफल ते अतिकाचा फल महुडा जांबु मुगनी फरी इत्यादि. अने बावीशमुं शडेलुं अन्न जेनुंरस चला यमान थयुं होय एवो कुत्सितअन्न कालातिक्रांत सुखडी प्रमुख जाणवी. वज्जाणि के० वर्जवा योग्य बावीसं के० ए बावीस अनक्ष्यठे. तेने तुमे वज्जह के० वर्जो एटले त्याग करो. इतिश्री पच्चरकाण द्वार चतुर्थ समाप्त ॥ २४८ ॥

हवे पाचमो उत्सर्ग काउसग्गनो द्वार कहे छे –

प्रथम शब्दार्थ करे छे – स्थान, मौन, ध्यान, अने क्रियाना अव्यतिरे
उसासादि बोल टालीने काय एटले शरीर, तेनो उत्सर्ग एटले जे त्याग, ते
योत्सर्ग कहे छे तेना बे प्रकार छे – तेमा एक गमनागमनादि चेष्टाए क
यावही प्रमुखने पडिकमवा समये बीजो अभिभव एटले देवतादि कोइ उप
दि पराभव करे तेवारे ते उपसर्गने जीतवाने अर्थे काउसग्ग करवो

हवे प्रथम काउसग्गना ओगणीस दोष कहे छे – मूल – घोडग लयाय
कुड्डे मालेय सवरि वहु नियले, लबुत्तर थण उद्धी, संजड खलिणेय वायस क
ठ ॥२४९॥ सीसो कंपिय मूइ, अंगुल भमुहाइ वारुणी पेहा, ए ए काउसग्गे,
ति दोसा इगुणवीस ॥२५०॥ ए पूर्वोक्त ओगणीसदोषनो अर्थ गाथाए करी वखाणे

मूल – असोव विसम पाय, आउटा वितु गइ उस्सग्गो कपइ काउस्सग्
लयव्वखर पवण सगेण ॥२५१॥ अर्थ –घोडानी पठे एक पग लगारेक वाकु राखीने
जे काउसग्ग करवु तेने प्रथम घोडक नामनो दोष कहे छे कठोर पवनना योगे
जेम वेली हाल्या करे तेम काउस्सग्गमा कंपायमान थवु तेने बीजोलता दोष कहेछे

मूल – खंभेवा कुड्डेवा, आवट्टंभीअ कुणइ उसगतु, मालेअ उत्तमंग, अवल
निश्र कुणइ उस्सग्ग ॥२५२॥ अर्थ –थाभलाने अथवा कुडेके भीतने आधारे उभा
रहीने जे काउस्सग्ग करवु तने त्रीजो स्तंभदोष कहे छे उपरनो माल अथवा चांदना
प्रमुखने उत्तमंग जे माथु ते टेकीने काउस्सग्ग करवु तेने चोथो माल दोष कहे छे

मूल – सबरी वसण विरहिया, करेहि सागारिअ जहट्ठवेइ, ठविऊण गुज्झ
स करेहि इअ कुणइ उस्सग्ग २५३ ॥ अर्थ –जेम भीलडी वस्त्र रहित थती पो
ताना गुह्य अंग हाथे करीने ढाके छे तेमज बन्ने हाथो गुह्य देशविषे राखीने जे
काउस्सग्ग करवु तेने पाचमो सबरी दोष कहे छे ॥ २५३ ॥

मूल – उणामि उत्तमंग, काउस्सग्ग जहा कुलवहुव, निअलिअउ विव
चरणे, वित्थारिय अहव मेलविउ ॥ २५४ ॥ अर्थ – जेम सारा कुलनीवहु नीचु
माथु करीने रहे छे तेम मस्तक नमावीने जे काउस्सग्ग करवु, तेने छठो वधू दो
ष कहे छे जेम कोइ पुरुषना पगमा बेडी घाली होय तेना जोगे ते पोताना पग
एकठा मेलवीने अथवा पसारीने रहे छे तेवीरीते जे काउस्सग्ग करवु, तेने सा
तमो निगडित दोष कहे छे ॥ २५४ ॥

मूल – काऊण चोल पट्ट, अविहीए नाहिमंडलस्सुवरिं, हेट्ठाय जाणुमि

त्तं, चिठ्ठइ लंबुत्तरुस्सग्गं. ॥ १५५ ॥ अर्थः— चोलवटो नाभी करतां ऊंचो बांध्य थी नीचे गूठणो सुधी जांग ढांकी रहे छे. एवी अमर्यादावडे जे काउस्सग्ग क वुं तेने आठमो लंबोत्तर दोष कहे छे.॥ १५५ ॥

मूल.—पच्छाऊणय थणे, चोलगपट्टेण ठाइ उस्सग्गं; दंसाइ रक्कणट्टा. अहव णाभोग दोसेण ॥१५६॥ अर्थः—दंस मसकादिकना भयेकरी एटले काउसग्ग क रतां मच्छर के माख कोइ करडे नही माटे अथवा अनाभोगे करी पोताना स्तन चोलपटादिके ढांकीने जे काउस्सग्ग करवुं. तेने नवमो स्तनदोष कहे छे. ॥१५६॥

मूल — मेलित्तु पण्हियाओ, चरणे वित्थारि ऊण बाहिरउ; काउस्सग्गं एसो बाहिर उद्धी मुणेयव्वो. ॥ १५७ ॥ अंगुठे मेलविउं, वित्थारिय पण्हियाउ बाहिंतु काउस्सग्गं एसो, भणिओ अभिंतरुद्धित्ति. ॥ १५८ ॥ अर्थः— पगनी बन्ने पेनी म लवीने तथा आगला बन्ने पगनां फण मोकला राखीने जे काउस्सग्ग करवुं तेने बाह्य शकट दोष कहेछे, अने बन्ने पगना आगला फण साथे मेलवीने तथा पाछल पेनी मोकली राखीने जे काउस्सग्ग करवुं तेने अभ्यंतर दशमो शकटोर्ध्विकदोष कहेछे.

मूलः— कप्पंवा पट्टंवा, पाउणियं संजइव्व उस्सग्गं, ठायइ खलिणं च जहा रयहरणं अग्गओ काउं. ॥ १५९ ॥ अर्थः— कपडो ते पछेडी अथवा चोलवटो पहेरीने महासतीनी परे जे काउस्सग्ग करवुं तेने अग्यारमो संयति दोष कहे छे. जेम घोडाना चोकडानी लगाम हाथमां झालीने स्वार स्थित रहे छे तेम र जोहरण अने ओघो आगल करीने जे काउस्सग्ग करवुं तेने बारमो खलिन दोष कहेछे. अथवा कोईक आ दोषनुं वर्णन आवी रीते करे छेः— जेम घणुं दा क्याथी चोकडाए करी पीडा पामेलो घोडो स्थिर न रहेतां वारवार माथुं ऊंचुं नीचुं कर्या करे, तेनी पठे जे काउस्सग्ग करवुं तेने खलिन दोष कहे छे. ॥१५९॥

मूल.— भामेइ तहा दिट्ठिं, चल चित्तो वायसोव्व उस्सग्गे; छप्पइ आण भए णं, कुणइअ पट्टं कविठ्ठंव. ॥ १६० ॥ अर्थः— जेम कागडो पोतानी दृष्टि स्थिर न राखतां प्रत्येक क्षणमां छओ दिशा तरफ नजर फेरव्या करे छे तेम जे काउ स्सग्ग करतां दृष्टि स्थिर न राखतां गमे त्यां नजर फेरव्या करवी तेने तेरमो वायस दोष कहे छे. चोलवट जमीनने लागशे तो जूआदिक भराइ जशे तेना भयथी संकेलीने को ठना फलनी पठे काउस्सग्ग करवुं तेने कोठ नामे चौदमो दोष जाणवो. ॥१६०॥

मूल.—सीसं पकंपमाणो, जरकाइठोव कुणइ उस्सग्गं, मूउव्व हूहु अंतो, तहेव छि ज्जंत माएसु ॥१६१॥ अर्थः— जेम कोइने भूत वलग्युं होय अथवा कोइ यक्षनी

गया पडी होय तेथी ते माथु हलावीने धूणे तेनी रीते मस्तक धूणावतो छतां काउसग्ग करवु तेने पदरमुं शीर्षोत्कंपित दोष कहे छे बोबडानी पठे अव्यक्त हु हु शब्द करवु, अथवा जेम कोइ वनस्पति प्रमुखने कापता जेम हुकार शब्द करे तेनी पठे काउसग्ग करवु तेने सोलमुं मूक दोष कहे छे ॥ २६१ ॥

मूल.– अंगुलि भमुहाओविअ, चालतो कुणइ तहय उस्सग्ग, आलावग गणणट्ठाए, सव्वणवच जोगाण ॥२६२॥ अर्थ –काउसग्गना आलावा गणवासारु आंगुलीना चाला करे योग जे व्यापारांतर तेने सस्थापन ते निरूपण करवासारु भृकुटी चलावता अने चकार शब्दथी आखना पापणआगल पाछल फरावता का उस्सग्ग करवु, तेने सत्तरमो अंगुली भमुहा दोष कहेछे ॥ २६२ ॥

मूल – काउस्सग्गमि ठिउ, सुरा जहा बुडबुडेइ अव्वत्तं, अणुपेहतो तह वा नरोव चालेइ उट्ठपुम ॥ २६३ ॥ अर्थ – जेम मदिरा बुडबुडाट करे तेम नम स्कारादिकनी चितवना करतो छतां अव्यक्त बुडबुड करवु तेने अढारमो वारुणी दोष कहे छे अने तेवी रीतेज नमस्कारादि चितवता वांदरानी पठे होठ पुट चना वतां रहेवु तेने उगणीशमो प्रेष्य दोष कहे छे एवी रीते उगणीश दोष काउस्सग्ग ना कह्या छे तेमां स्तंभ अने कुड्य ए बे दोष कोई जुदा माने छे तेमज अंगुली अने भमुहा ए बे जुदा दोष मानीए तो एक वीश दोष थाय ॥ २६३ ॥

मूल – ए ए काउस्सग्गं, कुणमाणेण विबुहेण दोसाउ, सम्म परिहरियव्वा, जिण पडिसिद्धत्ति काऊण ॥ २६४ ॥ अर्थ – पूर्वोक्त कायोत्सर्ग करता पण्डिते सम्यक् प्रकारे आ कहेला दोषोनो त्याग करवो एवी रीते श्री वीतरागे एनो निषेध कह्यो छे एवु जाण्या छता पण " अगिणीउ छिंदिज्जव " इत्यादि कारणे चालतां दोष नही ॥२६४॥ एवी रीते दूषणमात्रने कहीने पाचमो काउस्सग्ग द्वार कह्यो हवेगृहस्थने पडिकमवानाबारव्रतना एकशोनेचोवीश अतिचारोनो छठो द्वार कहेछे –

मूल – पण संलेहण पन्नर,स कम्म नाणाइ अट्ठ पत्तेअं, बारस तव विरि अ तिअं, पण सम्म वयाइ पत्तेय ॥२६५॥ अर्थ –सलेषणाना पाच अतिचार, क र्मादानना पदर अतिचार, ज्ञानना आठ अतिचार, दर्शनना आठ अतिचार चा रित्रना आठ अतिचार तपना बार अतिचार, वीर्यना त्रण अतिचार, सम्यक्त्व ना पांच अतिचार अने प्रत्येक व्रतना पांच पाच अतिचार प्रमाणे बार व्रतना साठ अतिचार मली सर्व एकशो ने चोवीश अतिचार थकी पडिकमवो ॥२६५॥

एवी रीते द्वार गाथा कहीने एज छठु विस्तारथी वर्णन करता जेवी रीते

सूत्रमां उद्देश कीधो छे तेज क्रम लईने प्रथम संलेषणाना पांच अतिचार कहे

मूलः– इह परलोगासंसा, पउग मरणंच जीवियासंसा; कामे जोगे य तह मरणंते पंच अइआरा. ॥ २६६ ॥ अर्थः– प्रथम इहलोकाशंसा, द्वितीय प लोकाशंसा, तृतीय मरणाशंसा. चतुर्थ जीविताशंसा. अने पांचमी कामभोग शंसा ए पांच अतिचार संलेषणानेविषे कह्याछे. एटले श्रीजिनशासननेविषे जे क्रियाउनो कलाप थाय छे ते सघलो आशंसा विना करवो जोये. जेमके, "आ सया विनिर्मुक्तो, नुष्ठानं सर्वमाचरेत्; मोक्षे भवेच सर्वत्र, निस्पृहोमुनि सत्तमः॥ एनो अर्थः–जे प्राणी आशंसाने मूकीने सर्व अनुष्टानने आचरे छे अने जेने म क्षनी अने संसारनी तेमज बधा पदार्थोनी इच्छा नथी तेने मुनिउमां श्रेष्ट कहिये

पहेली इहलोकाशंसा एटले मनुष्यने अन्य मनुष्यना भवनी जे वांछा थव ते इहलोकाशंसा अने तेनो प्रयोग ते आवी रीते जेम के, आ अणसणने प्रमाणे आवता भवनेविषे हुं राजा अथवा धनवान श्रेष्ट थाउं इत्यादि जे प्रार्थना करवं तेने इहलोकाशंसा प्रयोग कहिये ए प्रथम इह लोकाशंसातिचार कहिये.

एवी रीतेज मनुष्यना भवनेविषे उक्त युक्तियुक्त जे सुंदर देवांगना स्त्रीओ छे तेओना नेत्र कमल वडे पान करेलुं जेमनुं देदीप्यमान लावण्य तद्रूप जे पुण्य तेज जेने अमृत छे एवा इंद्रादि देवता थवानी जे प्रार्थना करवी तेने बीजो पर लोकाशंसा नामे अतिचार कहेछे.

अणसण व्रत धारण कर्युं छतां कोई गामडीआ प्रांतने लीधे तेनी बीजा पुरु षो घणी पूजा अथवा प्रशंसा करे नही अथवा शरीरमां कोई गाढ रोगनी पीडा थी अंतःकरणमां खेदने पामीने हवे जलदी मृत्यु आवे तो सारुं थाय एवी जे प्रार्थना करवी तेने त्रीजो मरणाशंसा नामनो अतिचार कहेछे.

कर्पूर, कस्तुरी, चंदन, वस्त्र, गंध, पुष्प, इत्यादि पूजा सामग्रीना पदार्थो देखी तथा नाना प्रकारना धोल तथा रासा प्रमुख गीतो गवाता सांभलीने अथवा ए शेठ मोटा परिवारवालो छे तेथी माणसो घणा आवे छे, माटे ए धन्य छे, ए पु न्यवान छे तेथी श्लाघा करवा योग्य छे एवी पोतानी प्रशंसा सांभलीने पोताना मनमां जाणे के शासननी प्रभावना मारा उद्देशथी वृद्धिने पामे छे तेथी जो हुं घणुं जीवुं तो शारुं एवी जे प्रार्थना करवी तेने चोथो जीविताशंसा नामनो अतिचार कहेछे.

आवता जन्ममां मने काम भोगनी प्राप्ति थाय तो सारुं एवी अणसण ली

धा छतां जे प्रार्थना करवी तेने पांचमो कामभोगाशंसा नामनो अतिचार कहेछे काम शब्दे शब्द, स्पर्श, रूप, रस, अने गंध, जाणवा ॥ २६६ ॥

एवी रीते अणसण व्रत धारण कर्या पछी मरणना समये जो उपर कहेला पांच अतिचार होय तो तेनुं प्रतिक्रमण करवुं आलोवणा लेवी.

हवे कर्मादानना पंदर अतिचारनी व्याख्या करे छे – मूल – भाडी फोडी सा डी, वण अंगारस्सरूव कम्माइ, वाणिज्जाणिय विस लक्ख दंत रस केस विसया णि ॥ २६७ ॥ दव दाण जंत वाहण, निल्लछण असइ पोस सहियाणि, सर जासय सोसाणिय, कम्माइ हवंति पन्नरस ॥ २६७ ॥ अर्थ – पोताना गाडा बलद तथा उंटेकरी बीजानुं भाडु करे, अथवा बीजा कोईने भाडे आपे तेने प्रथम भाटक कर्मातिचार कहे छे हडेकरी भूमि खणाववी, पाषाणो तोड वां, तळावो अथवा कुवा खणाववा, लूण प्रमुख जेटली पृथवीकायवस्तुउ छे ते खणी कहाडवी, अथवा यव, घहू मूग अने सरसव प्रमुख धान्यनु वेचवु, अथ वा सातु तथा आटा प्रमुख आजीविकाने अर्थे करे अथवा करावे, तेने बीजो स्फोटककर्मातिचार कहेछे गाडां पइडा अथवा पावर प्रमुख करावीने वेचे वे चावे तेना अंग संग्रह आजीविकाने निमित्ते जे करे तेने त्रीजो शकट कर्मातिचा र कहे छे फल, फूल, पत्र, पुष्प अने कंदादिक उत्पन्न करवा अथवा करावर्वा अथवा एवी जेटली वस्तुउ वनमा उत्पन्न थती होय तेउनो व्यापार करवा अथ वा करावयो अथवा वन भेदावयु तेने चोथो वनकर्म अतिचार कहे छे अंगार एटले अग्निनी भठीप्रमुखमां पकावीने सिद्ध करेली हरेक व्यापारोपयोगी वस्तु जेवी के. कुंभार लोहार सोनार कंसार तथा चणा प्रमुखनो सेकवो इत्यादिक अग्निसं बंधे समारंभे जे आजीविका करवी तेने पांचमो अंगार कर्मातिचार कहे छे ए पांच प्रकारना कर्मातिचार कह्या हवे एना जेवा बीजा पांच प्रकारना कुवाणि ज्यातिचार कहे छे तेओमां प्रथम विषवाणिज्य एटले विष अफीण वछनाग, अ ने सोमल प्रमुख जे वस्तुनो थोडो भाग खाधाथी प्राणनी हाणी थाए, अथवा लोहना सर्व हथीआर जेवा के तरवार, कटारी, कमान, सरकसी, अने कुदाल प्रमुख जेथी अनेक जीवोनी हाणी थाय तेवा मालनो क्रय विक्रय करवो तेने छठो विषवाणिज्यातिचार कहे छे लाख, धाडी, गुली, मणशील, हरीआल अने तुरी प्रमुख जे वस्तुउमांथी रंग उत्पन्न थाय छे ते वस्तुनो क्रय विक्रय करवो तेने सातमो लाक्ष वाणिज्यातिचार कहे छे दांत, नख, चर्म, शख, कोमा सीप अने क

सूरी प्रमुख बीजा पण एवा जे पदार्थों होए तेनो जे क्रय विक्रय करवो तेने आठमो दंत वाणिज्यातिचार कहे छे. मधु, मद्य माखण, मांस. दूध, घृत. तेल, प्रमुख जेटली रसरूप वस्तुउ छे तेना क्रय विक्रयने नवमो रसवाणिज्यातिचार कहे छे. मनुष्य, दास, दासी. घोमा. हाथी, उंट. बोकमा, बलद अने गाय प्रमुख पोतानी आजीविकाने अर्थे लईने जे वेचवां तेने दशमो केशवाणिज्य कर्मातिचार कहे छे केटलाएक वनमां आग लगाडवामां पुण्य जाणिने ते कर्म करे छे अथवा जुना तृणादिक बाली नाखीये तो बीजा नवा थशे इत्यादिक अभिप्रायथी जे वनमां आग लगाडवी तेने अग्यारमो दवदान कर्मातिचार कहे छे. शेरमी, तल, सरस व. अने अलसी प्रमुख वस्तुउने यंत्रमां पीलवी, तेने बारमो यंत्र पीलन कर्माति चार कहे छे. कान कापवां, नाक विंधवां, गाय अथवा बलद प्रमुखने मांन देवा, अने गल, कंबल, तथा पूठ प्रमुख अवयवोमांना कोई अवयवने कापी नाखवुं, तेने तेरमो निर्लंछन कर्मातिचार कहे छे. मार्जार,मोर, कूकड, कुतरा, सारही अने सूडा प्रमुख दुष्ट पक्षीउने अथवा दुराचार दास दासी प्रमुखनुं जे पोषण करवुं तेने चौदमो असती पोषणकर्मातिचार कहे छे. अने पाणीथी भरेला सरोवर, द्रह, अथवा तलाव प्रमुख जलस्थानकोनुं शोषण करवुं के जेथी घणा जीवोनो क्षय थाय तेने पंदरमो जलाशय शोषणातिचार कहे छे. ए पंदर कर्मथी ज्ञानावरणी आदिकर्मोनुं आदान एटले ग्रहण थाय छे. माटे ए कर्मादान श्रावके जाणवा, पण समाचरवां नही. जो अनाजोगादि थकी कांई समाचरवुं थयुं होय तो तेनुं प्रतिक्रमण करवुं.

हवे ज्ञानना आठ अतिचार कहे छेः- मूलः- काले विणए बहुमाण उवहा णे तहा य निन्हवणे; वंजण अछ तडभए, अठ विहो नाण मायारो.॥ २६७ ॥ अर्थः- शुभ कृत्यादि करवानो जे नियमित विधियुक्त काल कह्यो होय ते काल मां ते क्रिया कर्याथी फलदायक थाय छे अने समयोल्लंघन कर्याथी ते निष्फ ल थाय छे. जेम कह्युं छे के, "कालम्मि कीरमाणं, किसि कम्मं बहु फलं जहा भणियं; इअ सव्वच्चिय किरिया, निय निय कालम्मि कायव्वा." जे सूत्र भणवा नो जे काल होय, ते कालनेविषे ते न भणवुं, अथवा अकाले भणवुं गणवुं ए पहेला अकालाध्ययनातिचार. ज्ञाननो, ज्ञानीनो अथवा ज्ञानना साधन पुस्तकादिकनो वि नयोपचार करवो. तेमां ज्ञानीनीपासे आसन, दान अथवा आज्ञा पालनादि विन यथी भणवुं तेम न करतां विनयने अभावे भणवुं तेने बीजो अविनयातिचार कहेछे. बहुमान ते गुरुऊपर प्रीति एटले अंतरंग चित्तनो प्रमोद राखीने भणवुं एवो विधिछतां

ना ध्यान करवा अने छठो उत्सर्ग तप एटले काउसग्ग करवो एवीरीते छ
रे अभ्यंतर तप कह्यो छे सर्व मलीने बार प्रकारनु तप कह्यु ॥ २७२ ॥

तेमज तपना बार प्रकारना अतिचार छे अने त्रण वीर्यना अतिचार छे
कहे छे — मूल — सम्मगकरणे बारस, तवाइयारा तिगतु विरियस्स, मण
काया पाव, पमत्त विरिअ ति अइआरा ॥२७३॥ अर्थ —ए बार प्रकारना जे त
कह्या, ते सम्यक् मन वचन अने कायानी शुद्धिविना करवा तेने अकरण कहि
ते सम्यक्रीते न कराय अथवा विपरीत पणाने करवेकरी अथवा तेओमा काई अ
निको ओछोकरता अथवा अयथावस्थित अनुष्ठान प्रमुखना करवाथी बार प्रका
ना तपना अतिचार थाय छे एमज मन, वचन तथा काया ए त्रणेनी शुद्धि कया
विना जे करवु तेथी त्रण अतिचार वीर्यना थाय छे ॥ २७३ ॥

हवे सम्यक्त्वना पाच अतिचार कहेछे — मूल — संका कंखाय तहा, वितिगि
छा अन्नतित्थियपसंसा, परतित्थियउवसेवण, मइयारा पंच सम्मत्ते ॥ २७४ ॥
अर्थ — शंका एटले जीवादिक नव तत्वनेविषे संशय करवो कंखा एटले अन्य
दर्शननेविषे पण श्री वीतरागना दर्शननी तुल्यता करवी वितिगिछा एटले मति
नी भ्रमता थकी क्रियाना फलनेविषे जे संदेह थवो ते अन्य तीर्थी जे अन्य द
र्शनीनी प्रशंसा करवी एटले आ महा तपस्वी भला क्रियानुष्ठान करे छे इत्यादिरूप
अने परतीर्थीनु उपसेवन एटले तेनी सेवा करवी तेथकी तेनी क्रिया शालयामा
तथा दीठामा आवे तेथी सम्यक्त्वने मलिनता थाय तेथी अतिचार लागे एवी
रीते सम्यक्त्वना पाच अतिचार कह्या छे ॥ २७४ ॥

हवे बार व्रत संबंधी अतिचार कहता छता प्रथम प्राणातिपात विरमणव्रतन
पाच अतिचार कहे छे — मूल — पढमवए अइआरा, नर तिरियाणन्न पाण वोछे
ओ, वधो वहोय अइभा ररोवण तह छविछेओ ॥ २७५ ॥ अर्थ — नर एटले
मनुष्य अने तिर्यंचादिकने अन्न पाणीनो व्यवछेद करवो एटले तेमा विघ्न करवो,
ए प्रथमातिचार इहा आ विधि जाणवो के, रोगादिक कारणे अथवा पोताना पु
त्रादिकने शीरामण देवासारु आज आने जमवानु देसो नही तोपण जमती वे
लाए पहेला तेमनो सार करीने पछी पोते जमे परंतु संभाल न लेता पोते जान
न करवाथी अतिचार लागे ए प्रथम अन्न पाण व्यवछेदातिचार जाणवो ॥

श्रावके श्वापदादिकने बंधन बडे एवी रीते बांधवु जोये के आग पाणी आ
दिकना उपद्रवनी वेलाए तत्काल ते बंधनथी मुक्त थई शके तेमज पुत्रादिकन

सीखामण देवासारु सबल बंधनथी बांधवुं नही एवी विधि छतां पशुआदि अथ वा पुत्रादिकने सबल बंधन वडे बांध्याथी बीजो बंध अतिचार लागे

पश्वादिकने अथवा पुत्रादिकने कोई अपेक्षाने लीधे अर्थात् कोई कारणने लीधे योग्य रीते ताडन करवु एवी विधि छतां कोई पण अपेक्षा अथवा कारण विना मारतां त्रीजो वध अतिचार लागे.

पश्वादिकनी पीठ पर एटलो भार नाखवो जोये के जेथी ते पोतानी मेले उठी शके, अने ते भार सुखथी उतारी अथवा चडावी शकाय एम छतां जो वधारे भार आरोपिए तो चोथो अतिभार आरोपण अतिचार लागे.

पश्वादिकनुं गल कंबल कापवुं नही, नाक वींधवुं नही, वृषणनुं छेदन करवुं नही इत्यादिक दुःखदायक क्रिया करतां छतां पांचमो छविछेद अतिचार लागे.॥ २७५॥

हवे थूल मृषावाद विरमण नामना बीजा व्रतना पांच अतिचार कहे छे –

मूल – सहसा कलंकणं रह सदूसणं दारमंतभेयंच; तह कूड लेह करणं, मुसो वएसो मुसावोसो. ॥ २७६ ॥ अर्थ– सहसा पणेकरी कोई पण निरपराधी मा णसने चोर. यार, अथवा जुगारी प्रमुखनो जे आल चडाववो ते प्रथम सहसा त्कारातिचार जाणवो. कोईक त्रे माणसो एकांते कांई वातो करतां होय ते जोई ने ए राजविरुद्ध वातो करे छे एवुं जे कहेवुं तेने बीजो रहस्य भाषण दूषणाति चार जाणवो. पोतानी स्त्री आदिक स्वकुटुंबी माणसना हाथथी अथवा मित्रादि कना हाथथी भूले चूके कोई एवुं काम बनी गयुं होय के ते छानुंज राखवुं जोये. प्रसिद्ध करायज नही एवुं होय अने ते काम थई गया पछी ते कामना करना राए तेनो पश्चात्ताप करीने ते दोषनो त्याग कीधो होय तेमछतां केटलाएक दिवस वील्या पछी ते वात गई गुजरी थई गई होय तेवा अवसरे ते वात प्रकट कर्याथी ते लोक लाजना बंधनथी कोई विषादिक प्रयोगथी पोताना प्राणनी हाणी करे तेनुं कारण ते वात प्रकट करनार होवाथी तेने ते दोष लागे तेने त्रीजो दारमंत्र भेदातिचार कहे छे. खोटो लेख बनाववो खोटुं नामुं लखवुं कमवेश अक्षरो लखवा, प्रथम लखेला अक्षरो छरी प्रमुखना प्रयोगथी कहाडी नाखवा. परवाना उपर खोटी महोर करवी, अने खोटा खतो बनाववा इत्यादिक प्रकार वडे जे कांई खोटुं बनाववुं तेने चोथो कूटलेखनातिचार कहे छे. पोते उपदेष्टा बनीने नाना प्रकारनो पापोपदेश करवो एटले कोई वनमानी जडी बूटी बतावीने कहेवुं के अमुक बूटी[illegible] क हाडी अमुक बूटीना रसमां भेलीने तेनी साथे आटली चीजो [illegible] जो

[illegible] थाय, तो तेना शरीरनेविषे अतिशय नोग करवानी शक्ति थाय. आ मंत्र ना जप करवाथी अमुक देवता प्रसन्न थाय छे अने जेवी इच्छा होय ते मले छे. हुं कामशास्त्रमां महानिपुण छुं एम कहीने चोराशी नोगना आसननी विधि शी खडावनी, ने कहेवुं के आ शीखवाथी विविध प्रकारे रति [illegible] सारी रीते प [illegible] करी शकशो. वीर्यनी वृद्धि थशे. कामनो विशेष उद्भव थशे. अथवा [illegible] शास्त्रो शीखडाववां. कोईने दुःखमां नाखी देवाना उपाय बताववा. पोताना [illegible] प्रतिपक्षिने कुबुद्धि देवी. अने विषय कषायादिकनी उत्पत्ति थाय [illegible] तेने पांचमो मृषोपदेशकथनातिचार कहे छे.

हवे त्रीजा स्थूल अदत्तादान विरमण व्रतना पांच अतिचार कहे छे— मूल— [illegible] तप्पओगे कूडमाण तुलमाणे [illegible] ववहारो, सरिसजु [illegible] ॥ २७३ ॥ अर्थ— प्रथम चोरे चोरी करीने आणेली वस्तु [illegible] तेने स्तेनाहृतातिचार जाणवो. बीजो चोरने [illegible] प्रेरणा करवी. अथवा धैर्य देवुं. अने तेने शंबल प्रमुख दईने तेनो [illegible] तेने तस्करप्रयोगातिचार कहे छे. त्रीजो तोल तथा माप कूडां राख [illegible], लेवाना जुदां अने देवाना जुदां राखवां. अर्थात् लेवानां मोटां, अने देवानां नानां राखवां तेने कूटमानातिचार कहे छे. चोथो पोताना राजाना वैरी [illegible] कोई वस्तु पोताना गाममांथी लई जईने त्यां वेच [illegible] गाममांथी [illegible] वस्तु लईने पोताना गाममां आणीने [illegible] करवी. तथा [illegible] थाय छे तेने राजविरुद्धगमनातिचार [illegible] तेने जाणे [illegible] कोई सारी वस्तुमां नेना जेवी बी [illegible] वस्तु [illegible] मूल [illegible] शुद्ध द्रव्य होय तेमां बीजी [illegible] वस्तु [illegible] व्यापार करवा. जेम के, [illegible] अने [illegible] प्रमुख तेनी दशा तेने तत्प्रतिरूपातिचार कहे छे.

हवे चोथा ब्रह्मचर्य व्रतना पांच अतिचार कहे छे— मूल— [illegible] कामेतिव्वाभिलासा, अणंगकीडा परविवा [illegible] अर्थ— प्रथम [illegible] द्रव्य दईने वेश्याप्रमुख सामान्य स्त्रीने [illegible] मनातुं मनोरथ करी [illegible] इत्वरपरिगृहीतागमनातिचार कहेवा. बीजो [illegible] सिवाय [illegible] जाय, जनी [illegible] नार [illegible]

पुरुषनो होय नही, अने कोई पुरुषनी पतिरूप सत्तातळे होय नही एवी स्त्रीने कोई पुरुषे ग्रहण करेली नही होवाथी तेनी साथे संजोग करवो तेने अपरिगृहीतागमनातिचार कहेवो. त्रीजो कामनो तीव्र अभिलाषा करवी, एटले परस्त्रीनुं दर्शन थतां ज कामाग्निनी ज्वाला उठे. हृदयमां निरंतर स्त्रीनुं चिंतन कर्यां करवुं. दीवानानी पठे बुद्धि काम वश थयाथी अस्थिर रहेवुं. अने शरीरमां कामनी वृद्धि करवाने अर्थे कोई औषधीप्रमुख अथवा माद्य पदार्थ खावो. वीर्यस्तंभन करवाने अर्थे कोई मात्रा अथवा पाकप्रमुखनुं सेवन करवुं तेने त्रीजो तीव्रानुरागातिचार कहेवो. चोथो कामोद्दीपन करवाने अर्थे कामशास्त्रमां कह्या प्रमाणे नाना प्रकारना हाव भाव युक्त अनेक तरेहथी विविध विधिए कामक्रीडा करवी जेम के, भ्रृकुटीरूप धनुष्यमां नेत्र कटाक्षरूप बाण चडावीने स्त्रीए पुरुषने अथवा पुरुषे स्त्रीने मारवा तेमज आलिंगन, चुंबन, अने हास्य प्रमुख करवां तेने अनंगक्रीडातिचार कहेवो. पांचमो लोकोमां पोतानी प्रतिष्ठा अथवा कीर्ति वधारवाने अर्थे कोई पुरुषनो कोई स्त्रीनी साथे पोते आगेवान थईने विवाह करी देवो, तेने परविवाहकरणातिचार कहे छे. एम जो स्त्रीए ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर्युं होय तो तेणे उक्त रीतिए पुरुष विषे प्रवर्त्तन कर्याथी ए अतिचार लागे एम सर्व स्थळे जाणी लेवुं २७८

हवे पांचमा थूल परिग्रह परिणाम व्रतना बे गाथावडे पांच अतिचार कहेछे.—

मूल — जोएइ खित्त वत्थूणि रुप्प कणगाइ देइ सयणाणं; धण धन्नाइ परघरे, बंधइ जाविय पमक्कंतो. ॥ २७९ ॥ डुपयाइ चउप्पयाइ, गप्पं गाहेइ कुप्पसंगंच; अप्पधण बहुमुल्लं. करेइ पंचम वए दोसा. ॥ २८० ॥ अर्थ — प्रथम पोतानु एक क्षेत्र अथवा एक घर होय तेना पडोशना बीजा क्षेत्र तथा बीजा घरनी शीम भांगीने ते पहेलानी साथे जोडी लेवुं. अर्थात् नियम ग्रहण करती वेळाए पांच अथवा सात प्रमुख संख्या धारण करेली होवाथी तेनी अपेक्षावडे जे पोताना क्षेत्रने लागतुं क्षेत्र होय ते जोमी लेवुं. तेमज पोतानुं प्रथमनुं नानुं घर होय तेनी जोडेनुं कोई बीजानुं घर वेचातु लईने तेनी साथे जोमी लेवुं, पोताना स्थाननुं वधारवुं ने मनमां जाणवुं के मारी नियमित संख्यामां कांई पण दोष आवशे नही ते प्रथम क्षेत्र परिणामातिचार कहेवो. बीजो रुपुं अथवा सोनुं आटलुंज राखवुं एवुं संख्या परिमाण कीधुं हतुं तेनी वृद्धि थई जवाथी मनमा विचार करे के आटलुं पुत्र शाह राखवुं. आटलुं स्त्रीने अर्पण करवुं, आटलुं अमुक कुटुंबने आपवुं, एटले मारे तो परिमाण संख्या जेटलुंज रहेशे. तेमां मने कांई दोष

लागनार नथी मारा पोताना नामनु होय तो मने दोष लागे एवी रीते लोभने लीधे खोटा विचारे करी कुरीत करवी तेने बीजो रौप्यसुवर्णपरिमाणातिक्रमातिचा र कहेवो त्रीजो एक वर्ष प्रमुख सुधी आटलु धान्य अथवा आटलुज द्रव्य पा से राखवु, एथी वधारे राखवु नही एवो संख्या परिमाण नियम लीधा पछी धा न्य अथवा द्रव्यनो वधारो थई जवाथी ते वधेलु सर्व बीजानी पासे राखीने अ थवा कोई बीजानी पासे होय तो तेनी पासेज रहेवा दईने पोते मनमा जाणे के, मे तो पोतानी पासे राखवानो नियम कर्यो छे, पण बीजानी पासे रहेवा दे वो नही एवो नियम कर्यो नथी, तेथी एम कर्याथी काइ दोष लागनार नथी एम कुविकल्प करीने जेनी पासे द्रव्य होय तेने कहे के आटला दाहाडा अथवा आटला मास के वर्ष पछी तमारी पासेथी हु हिसाब चुकवी लईश तेमज धान्य प ण जो क्षेत्रमा होय तो नियमित समय सुधी त्याज रहेवा दईने अथवा बीजा खे डुतना घरमां रहेवा दईने नियम पूरो थया पछी लेवानी इच्छा राखवी अने पोताने निर्दोषी समजवो तेने धन धान्य परिणामातिक्रमातिचार कहेवो चोथो द्विपद एटले दास अने दासी प्रमुख, तेमज चतुष्पद एटले गाई, भेंस, उंट, तथा घोडा प्रमुख पशुउ आटलाज राखवा एथी अधिक राखवा नही एवो सख्यारूप नियम कर्या पछी ते दास दासीओ अथवा पशुओ प्रमुख गर्भ धारण कर्याथी तेउनी संतति नी वृद्धि थवाथी ते नियमित दास दासी अथवा पशुउथी उत्पन्न थया छे तेथी तेओ पोताना मावित्रोथी जुदा कहेवाय नही अथवा वधेली संतति कोई सं बंधीने आपी देवी अने तेनु गुप्त रीते स्वामित्व पोतेज राखवु तेने द्विपदचतुष्पद प्रमाणातिक्रमातिचार कहेवो पाचमो त्राबु, पीतल, अथवा कांशा प्रमुख धातु उना आटला वासणोज घरमा राखवा एवो संख्या परिमाण नियम छता ते वास णोनी संख्या नियम प्रमाणे रहेवा देता तेउनी तोलमा वधारो करवो अने मनमां एम जाणवु के मारे तो मात्र वासणोनी संख्यानो नियम छे पण तोलनो तो नियम नथी तेथी तोल अधिक कर्याथी काई दोष लागे नही तेमज जो काचा तोलनी स ख्यापुर्वक नियम लिधा होय तो ज्या मोटो तोल चालतो होय एवा कोई स्थानर मा त्यांना तोलना परिमाणे वासणो कराववा, अने मनमा एम जाणवु के में काचा तोलनो नियम लीधो छे खरो पण काचो अने पाको तो आहिजछे बीजा देशमा का चा अने पाका नहो होवाथी त्याना गमे तेवा तोलवडे वासणानु वजन थयु होय

तेथी व्रतभंग थाय नही एवी कुटिलता करवी तेने कुपद परिमाणातिक्रमातिचार कहेवो. ए पांच अणुव्रतना अतिचारो कह्या. ॥ २७९ ॥ २८० ॥

हवे त्रण गुण व्रतना अतिचार कहे छे. तेमां प्रथम छठा दिसि परिणाम व्रतना पांच अतिचार कहेछेः— मूल.— तिरियंअ होय उड्ढं, दिसि वय संखा अइक्कमे तिन्नि, दिसि वड दोसा तह से. विम्हरणं खेत्तवुड्ढीय. ॥ २८१ ॥ अर्थः— प्रथम नीछो लोकमां आटलासुधी गमनागमन करवुं एवुं व्रतनुं परिमाण कीधा पछी अनाभोगादिकवडे काई अधिक गमनागमन थई जाय तो तिर्छो गमनातिक्रमातिचार लागे. बीजो अधोगमन करतां विस्मृति अथवा चित्तनी विभ्रमताने लीधे व्रतना परिमाण करतां कांई वधारे गमन थई जाय तो अधोदिसि गमनातिक्रम अतिचार लागे. त्रीजो ऊर्ध्व गमन करतां उक्त कारणादि वडे कांई वधारे गमन थाय तो ऊर्ध्वदिशि परिमाणातिक्रम अतिचार लागे. चोथो कोई दिशिए गमन करतां में दश योजन पंथ कर्यो के पंदर योजन कर्यो छे एवी विस्मृति थई जाय अथवा दिशिपरिमाण कर्याने घणा दिवस थई गयाथी जे दिशिविषे जेटला योजननो परिमाण होय ते भूली जईने ते परिमाणमां न्यूनाधिकता करवी. अथवा ते परिमाण कागलमां लखी राखेलुं नही होवाथी तेमां वधघटथई जाय अथवा बुद्धिनी मंदताने लीधे अथवा विभ्रमताने लीधे अधिक न्यूनता कर्याथी अस्मृति अंतर्धान अतिचार लागे. पांचमो जे दिशिनेविषे जेटला योजन जवानी छूट राखी होय ते दिशिमां ते छूटना करतां वधारे गमन थई जाय त्यारे बीजी दिशानेविषे ते वधेला पंथगमननो आरोप करी लईने परिमाण पूरुं करवुं. एटले पूर्व दिशानेविषे शो कोश जवानी छूट होय ने पश्चिम दिशानेविषे पचाश कोश जवानी छूट होय. हवे पश्चिम दिशाए पोणोशो कोशनुं गमन थई जाय त्यारे पूर्व दिशाना शो कोशमांना पचीश कोश नाखी देवा अर्थात् हरेक प्रकारे दिशिओने विषे गमन परिमाणमां न्यूनाधिक थवाने लीधे एक दिशिनुं अधिक गमन बीजी दिशिना न्यूनगमनमां भेलवी लेवुं तेने क्षेत्रवृद्धि अतिचार कहे छे. ॥२८१

हवे सातमा भोगोपभोग व्रतना पांच अतिचार कहेछे.— मूलः— अप्पक्कं दुप्पक्कं, सच्चित्तं तह सचित्त पडिबद्धं; तुच्छोसहि भरकणयं, दोसा उवभोग परिभोगे. ॥ २८२ ॥ अर्थ.— ए व्रतने उपभोग परिभोग पण कहे छे. केमके क्रियाना भेदथकी भोगना बे प्रकार थाय छे एक उपभोग अने बीजो परिभोग, एटले एकज वार आहार तथा फूल प्रमुखनो भोग करवो. अने

वारवार नोग नोगववा जेम के, गृह तथा स्त्री प्रमुख नोग वारवार नोग
ठे ए परिनोग कर्मनेविषे पूर्वोक्त पदर कर्मादान जाणवा तेमा श्रावके उत्त
समयने विषे प्रासुक एषणीय आहार लेवो जो ते न होय तो वहु पाप त
ननो त्याग करवो. प्रथम आटो ठाण्याविना तेनी रोटी कस्याथी तेमा ते थ
जना कण रही जाय ठे तेम ठता तेने अचित जाणीने खावु अथवा लोग
अचेतन जाणीने अग्निसंस्कार कस्याविना काचोज खावो तेने अपक्व नक्षणाति
चार कहेवो बीजो कांईक पाकेलु तथा कांईक नही पाकेलु जे अन्न प्रमुख होय
जेमके, जुवारी प्रमुख सर्व जातिना कणिश (पोंक) अग्निमा पकाव्याथी तेमाना
केटलाएक कण पाके ठे ने केटलाएक काचा रही जाय ठे तेम ठता ते अचित
जाणीने खावु तेने दुष्पक्व नक्षणातिचार कहेवो त्रीजो श्रावकने सचित्त आहा
रनु अवश्य पच्चरकाण ठता अनानोग थकी परिमाणनु उल्लंघन थई जाय एटले
पाणीने त्रण उकाळा दीधाथी ते अचित्त थाय ठे एवु परिमाण ठता तेने एक
अथवा बे उकाळा दई अचित्त थयु एम जाणीने ते पाणी पीवाई जाय तथा
सचित्त वस्तने अचित्त थवामां कांईक वखत वाकी रह्यो ठता ते वस्तु अचित्त जा
णीने खवाई जाय तेने सचित्ताहार अतिचार कहेवो चोथो अचित्त वस्तुनो स
चित्त वस्तुनी साथे संबंध ठतां ते संबंधनो नंग थया पठी तरतज ते वस्तु खवाई
जाय, जेमके, गुंदर अचित्त ठे तेने वृक्षनी साथे संबंध ठता ते संबंधनो नंग थ
या पठी तरत न खावु जोईए नही, केमके सचित्त वस्तुना स्पर्शथी केटला एक
वखत तेमां पण सचित्तपणु रहे ठे तेवा समयमा ते खवाई जवाय तेने सचित्तप्रति
बद्धातिचार कहवा पाचमो जे वस्तु मेळव्यामा घणो प्रयत्न करवा पडे, अन
नक्षण कराथी पूर्ण तृप्ति थाय नही, जेमके, वदरी फळ (वोर) मा जे वडीं
पाप ठे ते नाग्याथी तेमा अति सूक्ष्म स्वादिष्ट नक्षणीय पदार्थ नीकळे ठे त
जारा ठहोरा नांग्याना प्रयत्न कर्यो ठता तेमाथी मेळवेली वस्तुथी आत्मानी
ति थाय नही तेम ठता तेनु नक्षण करवु तेने तुच्छौषध्यातिचार कहेवा ॥२०१॥
हवे आठमा अनर्थदंड विरमण व्रतना पाच अतिचार कहे ठे – मूळ –
कुच्य मोहरिय, नोगुवनोगाइरेग कंदप्पा, जुत्ताहिगरण मेए, अइयाराणउ
ए ॥ २०२ ॥ अर्थ – अनर्थदंडना शब्दार्थ आवी रीते थाय ठे – कोइपण
ए एटले प्रयोजन नही ठता पोतानी आत्माने दंडनी प्राप्ति थाय तन अनर्थ
कहेवो. एना पाच अतिचारमाना प्रथम नयनादिक शरीरना अवयवोए

बीजाने हास्यादिकनी उत्पत्ति करवी अथवा चार पुरुषना जेवी कुचेष्टा करवी तेने कौकुच्यातिचार कहेवो. बीजो मुख थकी एवा शब्दो उच्चार करवा के जेथी सांभळनारनुं हृदय कचवाय अने पोतानी अप्रतिष्ठा थाय तेने मौखर्य वाचालातिचार कहेवो. त्रीजो भोगोपभोगनी अधिकता करवी जेमके. अंगमळ हरण करनार साबु वगेरे वस्तुथी स्नान करतां पाणी वधारे वापरवुं. केशादिकने सुगंधी तेल लगाडवु अंतरादिक सुगंधि पदार्थोनो उपयोग करवो. इत्यादिक व्यर्थ आरंभ करवो तेने भोगोपभोगाद्यतिचार कहेवो. चोथो शृंगाररस विषयक कथन करवुं. एटले मंद मंद हास्ययुक्त भाषण करवुं. जेथी विषय कामना उत्पन्न थाय एवा नाना प्रकारना श्लोको कहेवा. अथवा बीजाने क्रोध उत्पन्न थाय एवुं भाषण करवुं तेने कंदर्पोत्पादकातिचार कहेवो. अने पांचमो पोताना उपयोग करतां वधारे अधिकरणनो संग्रह करवो. अथवा जेनुं परिणाम हिंसारूपे थाय एवा पदार्थोने एकठा करी राखवा. अने मागनार मळवाथी ते वस्तुओ बीजाने मांगी आपे जेम के. रथ उखल. मुसळ. अने तलवार प्रमुख हथीआरो पोताना उपयोग करतां वधारे राखवा. तेने अधिकरणातिचार कहेवो. ए पांच अतिचार अनर्थदंड नामना व्रतनेविषे कह्या छे. एवी रीते ए त्रण गुणव्रत ते पांच अणुव्रतने गुणनी उत्पत्ति करनारा होवाथी एने गुणव्रत कह्यां छे.

हवे नवमाथी ते बार सुधी चार शिक्षाव्रतो कहे छे – ए चारे व्रत शिक्षानी पेठे अथवा शिक्षारूप होवाथी एओने शिक्षाव्रतो कह्यां छे. तेमज नवीन शिक्षानो पुन पुनः अभ्यास करवो जोइये. तेओमां प्रथम जे सामायिक नामनुं नवमुं व्रत छे तेनो अर्थ आवी रीते थाय छे – राग द्वेषना अभावने सम कहेवुं. अने आय एटले तेनो लाभ थवो. तेने समाय कहेवो अने ते [illegible] करनारुं होवाथी सामायिक व्रत कहेवु. बीजो अर्थ.– आर्त अने रौद्र ए बे ध्याननी प्रवृत्तिरूप जे क्रियाओ थाय छे ते आरंभ अने सावद्य व्यापार छे तेनो त्याग करीने उपजे छे एवो प्रशम स्वभावने समता परिणामना लाभनुं. तेने सामायिक व्रत कहेवुं. त्रीजो अर्थ – सम कहेतां सम्यक् प्रकारे ज्ञान. दर्शन. तथा चारित्र ए रत्नत्रयीरूप लक्षण उदासीन वृत्ति एज मोक्ष मार्ग, तेनो आय एटले लाभ थवो तेने सामायिक व्रत कहेवुं. ते [illegible] कहेवुं. यदुक्तं – " [illegible] सामायिक [illegible] " ॥ १३ ॥

ए सामायिकव्रतना पांच अतिचार कहे छे – सूत्र – [illegible]

॥ २८४ ॥ अर्थ – प्रथम शरीरना हस्त पादादिक अवयव पुज्याविना अने प्रमा र्ज्या विना हलाववा. भीतने पीठ लगाडीने बेसवु, पृथवी पुज्याविना निद्रा प्रमु ख करवी, अप्रेक्षित तथा अप्रमार्जित स्थंडिलनेविषे वसवु तेने काय दुःप्रणिधा न अतिचार कहेवो. बीजो मनो दुःप्रणिधान ते मनमा गृह संबधी सावद्यनु चि तवन करवु. त्रीजो वचन दुःप्रणिधान ते उघाडे मुखे सावद्यपणे बोलवु. सई क र्म ते निद्रा तथा क्रियाने मने शून्य चित्ते करीने जे अनुष्ठानतुं करवु. अनव स्थित काल ते जे सामायक काल पुरो थवानी निरत रहे नही. अने जेम तेम अनादर पणे करवु. ए पाच अतिचार सामायकना जाणवा ॥ २८४ ॥

दशमो देशावगासिक व्रतना पाच अतिचार कहेछे – मूल – आणवरा पे सवरा, सद्दणुवाई य रूव अणुवाई, बहि पोग्गल परकवो, दोसा देसावगासस्स ॥ २८५ ॥ अर्थ – देशेकरी ज्यांहा अवकाश छे तेने देशावकाश कहिये. ते प्रथम दिग्व्रतो एकमे परदेशनो व्यापार प्रमुख करीने पोतानी व्रती चलाववाने अर्थे जे योजन शतादिक प्रमुख सुधी दूर जवानो नियम कर्यो छे तेनो वली संक्षेप करवो एटले गृहशय्यास्थानादिकथी दूर जवानो निषेधरूप अथवा सर्व व्रतसंक्षेपकरण रूप नियम छे. ए उपर दृष्टांत कहेछे – जेम बार योजनमा व्यापनार दृष्टिवि षधरा आशीविष विषम विषधर संबधी विष कोई मनुष्यना सर्व अंगनेविषे व्यापी रह्या होय, तेने कोई मंत्रवादी उतारीने एक अंगुली प्रदेशे लावीने मूके छे. आम समजवु के, जेम मंत्रवादी आखा शरीरमां व्यापेलो विष अनुक्रमे ए क एक अवयवमाथी उतारतो उतारतो छेवटे एक अंगुलीना एक प्रदेशमां आणी राखेछे. तेम व्रत धारण करनार पुरुष शत योजनादि गमनरूप नियमने घटाडतो घटाडतो शय्यादिकसुधी आवी राखे. ते देशावकाशिक व्रत कहेवायछे. ए व्रतनो वेलो पण मुहूर्तादि कालनो पण संकोच थायछे ते अर्थात् जाणी लेवु.

देशावकाशिक व्रतना पाच अतिचार छे, ते आ प्रमाणे – प्रथम आनयन, बी जो प्रेषवण, त्रीजो शब्दानुपात, चोथो रूपानुपाती, तथा पांचमो पुद्गल प्रक्षेप तेमां प्रथमनुं जे देशावकाशिक कीधो छे ते विवक्षित क्षेत्रथी बाहेर रहेलु जे सचेतना दिक द्रव्य, ते बीजा चाकरादिकना हाथे मंगावी विवक्षित (धारेला) क्षेत्रमां प्र वर्तवु ते एवा अभिप्रायथी के जो हु पोते जई लावीश तो व्रत भंग थाय माट प्रथम आनयनातिचार कहिये; एज अभिप्रायेथी विवक्षित क्षेत्रमा रहेली वस्तु कोई मनुष्यद्वारा बाहेर मोकलावी देवी तेने बीजो प्रेषणातिचार कहिय

एवी रीते पोते लीधेला व्रतनो भंग न थाय माटे पोते करवानी क्रिया कोई बीजा द्वाराए करावी पोतानुं प्रयोजन सिद्ध करी लेवुं तेथी यद्यपि व्रतनो भंग थतो नथी तथापि व्रत सफल थतुं नथी. केमके, बाहेर गयाथी गमनादिक व्यापारे करी सूक्ष्म प्राणीउनो घात थाय छे तेनो बचाव करवाने अर्थे देशावकाशिक व्रत लीधामां आवे छे. ते व्रत लीधा पछी पोते तो गमन क्रियानो त्याग करे परंतु पोतानुं प्रयोजन सिद्ध करवाने अर्थे कोई बीजानी मारफते ते क्रिया करावे तेथी शु हिंसा थती नथी? उलटी वधारे हिंसा थवानो संभव छे. केमके, पोते गमन कर्याथी ईर्यासमितिनी शुद्धतारूप गुण थाय छे, ते बीजाने मोकल्याथी थतो नथी. किंतु ईर्यासमितिना अभावथी दोषनी प्राप्ति थायछे. माटे एम कर्याथी अतिचार लागे छे. तेमज पोताना घरने फरती भीत प्रमुख जे प्राकार होय छे तेटली ज गोथी बाहेर जई कोईने हाक मारवी नही एम अभिग्रह पूर्वक व्रत धारण कर्युं छतां पोते ते क्रिया करे तो व्रतनो भंग थाय, माटे पोतानुं कांई प्रयोजन सिद्ध करवाने अर्थे ते भीतनी पासे जईकोईने बोलाववुं होय तो मोटा अवाजे खुंकारो करीने बोलाव्याथी त्रीजो शब्दानुपातातिचार लागे छे. अथवा ते भीतादिक ऊंचा स्थलनेविषे पोतानुं कार्य सिद्ध करवाने अर्थे जई ऊभो रहे तेने जोईने जे माणस द्वारे काम कराववुं होय ते माणस पासे आवे त्यारे पोतानुं प्रयोजन सिद्ध करी लीधाथी चोथो रूपानुपातातिचार लागे अने पोतानुं कार्य सिद्ध करवाने अर्थे नियमित जागाथी पोते बाहेर न जतां पाषाण अथवा काष्टनुं ककडुं लईने कोई माणसनी पासे फेंकवु तेथी ते पाछो आवे त्यारे तेने कहीने ते प्रयोजन सिद्ध करी लेवाथी पांचमो पुद्गल प्रक्षेपातिचार लागे छे. ॥ २७५ ॥

हवे त्रीजा पौषध नामना शिक्षा व्रतना पांच अतिचार कहे छेः— मूल — अप्पडिलेहिय मपम, ज्जियं च सेज्जाइ थडिलाणि तहा; सम्मं च अणणुपालण, अइआरा पोसहे पंच ॥ २७६ ॥ अर्थ — पौषध एटले पुष्टि धर्मने धारण करनार. ते पोषध व्रत अष्टमी आदि पर्वने विषे धारण करिये. एवी विशेषता छे. ते आ प्रमाणेः— चार शिक्षा व्रतमांना सामायक तथा देशावकाशिक ए बन्ने प्रति दिवशे करवा अने पौषध तथा अतिथिसंविभाग ए बे प्रतिनियत दिवस अष्टमी आदि पर्वने विषे करवां एम आवश्यकादि शास्त्रोमां कह्युछे. तेमां त्रीजा पौषध व्रतना पांच अतिचार छे ते आ प्रमाणेः—अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सज्जासंथारे अप्पमज्जिय दुप्पमज्जियसज्जा संथारे अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि, अप्पमज्जि

य डुप्पमज्जिय उच्चारपासवण भूमि, तथा पोसह विधि विचरिए ए पाच अतिचा
तेमा जे स्थानकनेविषे पोसह सथारो करवो होय ते सथारानी जे प्रतिले
न करवी एटले पोसहनो जगा सारी पेठे पोतानीदृष्टे जोयाविना अथवा जेवी
री रीते जाईने शय्या सथारके बेशीने पोसह करता प्रथम अतिचार ल
रमन रजोहरण प्रमुख वके पोसह करवानी जगा सारी रीते पूज्याविना अ
ना पूजी तो कांई पूजी कांई न पूजी करी रहेना दई त्या सथारा नाखी पोसह
करतां बीजो अतिचार लागे, अप्रतिलेखित दुःप्रतिलेखित स्थंडिले लघुनीति
अथवा वडीनीति अनाभोगे करवाथी त्रीजो अतिचार लागे, अप्रमार्जित दु
प्रमार्जित स्थंडिले लघुनीति अथवा वडीनीति करवाथी चोथो अतिचार लागे,
अने पोसह करता छतां क्षुधादिक परिसह उत्पन्न थयाथी प्रभातना समयनेविषे
पारणा प्रमुखनु चिंतवन करवु अथवा किवारे पोसह पुरोथासे केवारे हु
पारणा करीश एम सम्यक् प्रकारे न पालवाथी ते पाचमो अतिचार लागे छे २७१
हवे चोथु अतिथि सविभाग नामनु शिक्षा व्रत कहे छे मूल – सच्चित्ते निक्खि
वण, सचित्त पिहण य अन्नववएसो, मच्छरियंच कालाईय दोसा तिविहि
गम्म ॥ २८२ ॥ अर्थ – जेणे तिथि, पर्व तथा उत्सवादि लोकना व्यवहारनो
त्याग कर्यो छे तेने अतिथि कहिये, एवा अतिथिने श्रद्धा सत्कार क्रम युक्त पश्चा
कर्म तथा पुरःकर्मादि दोषना त्याग करीने न्यायोपार्जित अन्नपानादिक ना
दिविषे पोतानो अनुग्रह बुद्धिथी देवु तेने अतिथि सविभाग व्रत कहिये अहीं
[illegible] पोसह कीधा पछी पारणाने दिवसे श्रावके सद्भावथी साधुने था
[illegible] अतिथि सविभाग करवा एवा नियम कह्यो छे अन्यथा नियम नथी एना पा
[illegible] छे ते आ प्रमाणे – सचित्त निक्षेप, सचित्त पीहण, अन्यव्यपदेश, म
[illegible] तथा कालातिक्रम, ए पाच अतिचार जाणवा तेमा प्रथम जे साधुन
[illegible] अचित्त वस्तु होय ते न देवानी बुद्धिथी अथवा अनाभोग थकी बीजो
[illegible] सचित्त वस्तुनी उपर अथवा अंदर राखी मूकवी ते एवा दानुय। [illegible]
[illegible] वस्तुने अन्य करीने अचित्त वस्तु साधुने दीवामा आव्याथी ते लेनार नथी तथी
[illegible] न थता आवा प्रमाणे सिद्ध थता एवी बुद्धि करी ते वस्तु [illegible]
[illegible] निक्षेपातिचार लाग, एमज अनिश्रायेथी अचित्त वस्तुने कांई सचित्त वस्तुथी
[illegible] छे तेने आवा सचित्तपीहणातिचार कहिये, जेम साधु आव्याथी [illegible]
[illegible] कांई वस्तु अचित्त करनी बताय कांई एवी बुद्धि [illegible]

साधुने सहज पूछवुं पडे के आ चीज कोनी छे. त्यारे बीजा कोई संबंधी वगेरेनुं नाम लिए जेथी ते साधु ते वस्तुनुं ग्रहण करे नही तेथी पोतानुं व्रत पण रहे ने चीज पण बची एम कराथी त्रीजो अन्यव्यपदेशातिचार कहिये; कोई पेरमा पहेली चीज साधुए जोई ने मांगी छतां ना कहेवाय नही तेथी मनमां कांईक चीढाईने आपवी अथवा बीजो कोई सामान्य पुरुष दान देतो होय तेनी कीर्त्ति सांजलीने मत्सरथी तेथी अधिक दान देवुं तेने मत्सर दानातिचार कहिये; अने साधु आहारादिक लई आव्या पछी तेने तेडी आवीने ते वस्तुनुं दान दीधाथी पांचमो कालातिक्रमातिचार लागे छे. ॥ २७३ ॥ ए छठो द्वार थयो.

हवे सातमो द्वार कहे छे—मूल.—जरहम्मि जय संपइ, जविस्स तित्थंकराण नामाइ, एरवयंमि विताई. संपइ जिण जावि नामाइं॥२७७॥ अर्थ.—जरत अने ऐरवत क्षेत्रोमां जूत वर्त्तमान तथा जविष्य कालमां चोवीशी पणे जे तीर्थंकरो थई गया, थया छे तथा थशे तेमनां नामनो आ सातमो द्वार कहे छेः—॥ २७७ ॥

मूल.—जरहे तीए संपइ, जावि जिणे वंदिमो चउवीसं; एरवयमिवि संपइ, जावि जिणे नामउ वंदे.॥२७७॥ अर्थ — जरत ऐरवत क्षेत्रोमां जूत जविष्य अने वर्त्तमान कालमां थई गएला. थया छे तथा थवाना जे तीर्थंकरो तेउने हुं वंदना करुंछुं. २७७

प्रथम जरत क्षेत्रना अतीत चोवीस जिनोनां नाम कहेछेः— मूल.— केवल नाणी निवा,णि सायरो जिण महायसो विमलो; सवाणुजूइ सिरिहर, दत्तो दामोयर सुतेउ. ॥ २७० ॥ सामिजिणोय शिवासी, सुमई सिवगइ जिणोय अहो उ; नाहनमीसर अनिलो; जसोहरो जिण कयग्घोय.॥ २७१ ॥ धम्मीसर सुद्ध मई,सिवकर जिण संदणोय संपइय, तीउस्सप्पिणि जरहे जिणेसरे नामउ वंदे.२७२ अर्थ.— केवल ज्ञानी, निर्वाणी, सागरजिन, महायश, विमल, सर्वानुजूति, सिरिधर, दत्त, दामोदर, तथा सुतेज. ॥ २७० ॥ स्वामीजिन, शिवासी, (एमने मुनिसुव्रत पण कहेछे) सुमति, शिवगति, अस्तांग, अथवा अवाध, नमीश्वर, अनिल, यशोधर तथा कृतार्थ. ॥ २७१ ॥ धर्मीश्वर, शुद्धमति, शिवकर, स्यंदन तथा संप्रति ए नामे चोवीस जिनेश्वर आ जरतक्षेत्रनेविषे उत्सर्पिणी अतीत कालमां जे थई गया छे तेउने हुं वंदना करुं छुं. ॥ २७२ ॥

जरत क्षेत्रना वर्त्तमान चोवीश जिनोनां नाम कहेछे.— मूलः— उसजं अजियं संजव, मजिनंदण सुमइ पउम सुप्पासं; चंदपह सुविहि सीयल, सेजंसं वासुपुज्जं च. ॥ २७३ ॥ विमल मणंत धम्मं, संति कुंथुं अरच मल्लिच; सु

णिसुव्वय नमि नेमि, पास वीर च पणमामि ॥ २९४ ॥ अर्थ — ऋषभ, अजित, संभव, अभिनंदन, सुमति, पद्मप्रभ, सुपार्श्व, चंद्रप्रभ, सुविधि, शीतल, श्रेयांस, तथा वासुपूज्य ॥ २९३॥ विमल, अनंत, धर्म्म, शांति, कुंथु, अर, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्वनाथ, तथा श्रीवीर ए चोवीश जिन भरत क्षेत्रनेविषे वर्त्तमान कालना थया तेमने हुं प्रणाम करुं छुं ॥ २९४ ॥

भरत क्षेत्रना अनागत चोवीश जिनोना नाम कहेछे — मूल — जिण पउम नाह सिरि सूरदेव सुप्पास सिरिसयपभय, सव्वाणुभूइ देवसुय, उदय पेढाल मभिवंदे ॥ २९५ ॥ पोट्टिल सयकित्ति जिण, मुणिसुव्वय अमम निक्कसाय, जिण निप्पुलाय सिरि निम्ममत्त जिण चित्तगुत्त च ॥ २९६ ॥ पणमामि समाहिजिण, संवर य जसोहर विजय मल्लि, देव जिण णंत वीरिय, भद्दजिण भावि भरहंमि ॥ २९७ ॥ अर्थ — पद्मनाभ, श्री सूरदेव, श्री सुपार्श्व, श्री स्वयंप्रभ, सर्वानुभूति, देवश्रुत, उदय, पेढाल, ए गाथाना आद्यमा जिन शब्द छे ते बधा नामोने लगाडवो, तेमनी हुं वंदना करुंछुं ॥ २९५ ॥ पोट्टिल जिन, शतकीर्त्ति, मुनिसुव्रत, अमम, नि कषाय जिन, नि पुलाक, श्री निर्म्ममत्व जिन, चित्रगुप्त, आही पण पाछली गाथामाथी हुं वंदना करुंछुं एम लेवुं ॥२९६॥ समाधि जिन, संवर, यशोधर, विजय, मल्लि, देव,अनंतवीर्य, भद्र जिन अथवा भद्रकृत ए भरतक्षेत्रनेविषे भावि जिन थवाना छे ते कह्या समवायांगनेविषे तो आ प्रकारे नामदीठामा आवेछे —यथा "महापउमे सुरा देवे सुपासेय सयपभे सव्वाणुभूई अरहा देवगुत्ते यहोरकई उदए पेढालपुत्तेय पोट्टले सयएइया मुणिसुव्वय अरहा सव्व भाव विऊ जिणे अमम निक्कसाएय निप्पुलाएय निम्ममे चित्तगुत्ते समाहीय आगम्मस्सेण होरकई संवार अनियट्टीय विवाए विमलेइय देवोववाए अरहा अणंत विजएइय आगचस्सेण होरकइत्ति" ए भविष्य कालमा थनारा छे ए प्रकारे करी आगल पण नामविषे जे कोई ठेकाणे समवायांगादिकथी विसंवाद दीठामा आवे त्या मतांतर छे, एम जाणवुं ॥ २९७ ॥

अवतरण — हवे ऐरवत नामना क्षेत्रमा वर्त्तमान जिनना नाम कहे छे — मूल — बालचंद सिरि सिचय, अग्गीसेण च नंदिसेण च, सिरि दत्त वयधर सोमचंद जिण दीहसेण च ॥ २९८ ॥ वंदे सयाउ सच्चइ, उ जुत्तिसेण जिण च मपस, सीहस्सेण सयजल, उवसंतं देवसेण च ॥ २९९ ॥ महविरिय पास मरुदेव सिरिहर सामिकुट्ठ मभिवंदे, अग्गिस्सेण जिण म ग्गदत्त सिरि वारिसेण

च ॥ ३०० ॥ इय संपइ जिणनाहा, एरवए कित्तिया सनामेहिं; अहुणा नाव जिणंदे, नियनामेहिं पकित्तेमि ॥ ३०१ ॥ अर्थः— बालचंद्र, श्रीसिचय, अग्नि सेन, नंदिसेन, श्रीदत्त, व्रतधर, सोमचंद्र जिन, दीर्धसेन, ॥ २९८ ॥ शतायुष, स त्यकी, युक्तिसेन, श्रेयांसजिन, सिंहसेन, स्वयंजल, उपशांत, देवसेन, एउनी वंदना करुं छुं. ॥ २९९ ॥ महावीर्य पार्श्व, मरुदेव, श्रीधर, स्वामिकोष्ट, अग्निसेन, अग्र दत्त अथवा मार्गदत्त श्रीवारिषेण. ए सर्वने समस्त पणे वंदुंछुं. ॥ ३०० ॥ एप्रकारे सांप्रत वर्त्तमान जिन ऐरवत क्षेत्रनेविषे तेमनां नाम कह्यां. ॥ ३०१ ॥

हवे ते ऐरवत क्षेत्रमां नावि जिननां नाम कहुं छुं — मूलः— सिद्धत्र पुन्न घो सं, जसघोसं, सायरं, सुमंगलयं; सव्वठसिद्धि निव्वा,णसामि वंदामि धम्म धयं ॥ ३०२ ॥ तह सिद्धिसेण महसे,ण नाह रविमित्त सव्वसेण जिणे; सिरि चंदं दढकेउं. महिंदयं दीहपासं च. ॥ ३०३ ॥ सुव्वय सुपासनाहं, सुकोसलं जि णवरं अणंतहं; विमलं उत्तर महरिद्धि देवयाणंदयं वंदे. ॥ ३०४ ॥ अर्थः— सिद्धार्थ, पूर्णघोष अथवा पुण्यघोष, यशघोष, सागर, सुमंगल, सर्वार्थसिद्धि, नि र्वाणस्वामी, ने धर्मध्वज, एमने वंदुं छुं. ॥ ३०२ ॥ तथा सिद्धसेन, महासेननाथ, रविमित्र, सत्यसेनजिन, श्रीचंद्र, दृढकेतु, महेंद्र, दीर्घपार्श्व, एमने हुं वंदुं छुं. ॥ ३०३ ॥ सुव्रत, सुपार्श्वनाथ, सुकोशल जिनवर, अनंतनाथ अथवा अनंतार्थ, वि मल, उत्तर, महर्द्धि, ने देवतानंदक, एमने हुं वंदना करुं छुं. ॥ ३०४ ॥

अवतरणः— हवे पूर्वोक्त गाथामां कहेला तीर्थंकरोनी सर्व संख्या कहेछेः— मूलः— निहिसु नवसमुद्दे, वीसाहिय सय जिणे सुहसमिद्धे; सिरिचंद मुणिव इनए, सासय सुहदायए नमह. ॥ ३०५ ॥ अर्थ.— नव समुद्रथी तरेला जे एक शोने वीश संख्या जिन जे सुखना समुद्र अने जेमने श्रीचंद्रमुनिपतिए नमन कर्युं छे एवा शाश्वत सुखदायकने हे नव्य लोको तमे नमस्कार करो. ॥ ३०५ ॥ अहीं पांच चोवीशोना एक शो ने वीश तीर्थंकरना नामोनुं सप्तम द्वारनेविषे विवरण कर्युं.

हवे 'उसजाइ जिणिंदाणं आइम गणहरत्ति' अष्टम द्वारने विवरतां कहेछेः—

मूल.— सिरि उसहसेण पहु सीहसेण चारुरु वज्जनाहक्खा; चमरो पज्जोय विय,प्ञ दिन्न पहुणा वराहोय. ॥ ३०६ ॥ पहुनंद कुछुहा विय, सुनोम मंदर जसा अरिहो य; चक्काउह संब कुंन, जिस्सह मल्ली य सुंनो य॥ ३०७ ॥ वरदत्त अज्जदिन्ना, तहिंदनूईय गणहरा पढमा; सिस्सा रिसहाईणं, हरंतु पावाइं पण याणं. ॥ ३०८ ॥ अर्थ — श्री ऋषभसेन, सिंहसेन, चारुरु, वज्रनानाख्य, चमर,

प्रद्योत, विदर्भ, दत्तप्रभु, वराह ॥ ३०६ ॥ प्रभु नद, कौस्तुभ, सुभौम, मदर यश. अरिष्ट, चक्रायुध, शंबू, कुंभ, भिषज, मल्लि, ने शुभ ॥ ३०७ ॥ वरदत्त, आर्यदत्त, तथा इन्द्रभूति, ए प्रकारे ऋषभादि जिनोना प्रथम गणधरो छे ते प्रणत जनोना दुरितने हरण करे छे ॥ ३०८ ॥

हवे नवमो पवत्तिणीनो द्वार कहेछे — मूल — बंभी फग्गू सामा, अजिया तह कासवी रई सोमा, सुमणा वारुणि सुजसा, धारिणि धरिणी धरा पउमा ॥ ३०९ ॥ अज्जा सिवा सुई दामणीय रक्खी य बंधु चइ नामा, पुप्फवई अनिला ज,रक्खदिन्न तह पुप्फचूला य ॥ ३१० ॥ चंदणसहिय पवत्तिणि उ चउवीसाण जिणवरिंदाण, दुरियाइ हरतु सया, सत्ताण भत्तीजुत्ताण ॥ ३११ ॥ अर्थ- ब्राह्मी, फल्गु, श्यामा, अजिता, काश्यपी, रति, सोमा, सुमना, वारुणी, सुयशा, धारिणी, धरणी,धरा, ने पद्मा ॥३०९॥ आर्या शिवा, शुचा, अथवा सुचि दामिनी, रक्षी, वधुमती, पुष्पवती, अनिला, यक्षदत्ता, ने पुष्पचूला, ॥ ३१० ॥ चंदना, सहीत ए चोवीस जिनवरेंद्रनी प्रवर्त्तिनीउं, ते भक्तिएकरी सहित प्राणिउंनु दुरित एटले पाप हरण करेछे ॥ ३११ ॥ एवी रीते त्रण गाथाएकरी तीर्थंकरोनी प्रथम प्रवर्त्तिनीउंना नाम कथन पूर्वक नवमो द्वार कह्यो

हवे 'अरहतत्तण गणत्ति' अर्हंत नाम कर्म उपार्जवाना स्थानक लक्षण दशमो द्वार कहेछे —मूल —अरहत सिद्ध पवयण, गुरु थेर बहुस्सुए तवस्सीसु, वच्छलयाय एसिं, अभिक्खनाणो वउगे अ ॥ ३१२ ॥ अर्थ —पहेला अशोकादि आठ महाप्रातिहार्यरूप पूजाने जे अर्ह एटले योग्य ते अर्हंत, बीजा अपगत सकल कर्मांश, परम सुखी ने एकात कृतकृत्य ते सिद्ध, त्रीजा प्रवचन एटले द्वादशांग अथवा संघ, चोथा गुरु ते आचार्य धर्मोपदेश कर्त्ता, पाचमा स्थविर ते त्रण प्रकारना छे — छठा उपाध्याय ते सूत्रादिकना जाणनारा बहुश्रुत, ते त्रण प्रकारना — सूत्रधर, अर्थधर ने उभयधर तेमां सूत्रधर करता अर्थधर प्रधान अने अर्थधर करतां उभयधर एटले सूत्र ने अर्थ ए बन्नेने धारण करनार श्रेष्ठ छे सातमां विचित्र अनशनादि भेद भिन्न बार प्रकारना तपने करनारा ते तपस्वी, ए सात स्थानोनेविषे वात्सल्य भाव करवु एटले अनुराग ते तीर्थंकर नाम बंधनु कारण थाय छे तथा अभीक्ष्ण एटले निरतर पणे ज्ञानोपयोग व्यापार छे जेहने ते ज्ञाननेविषे व्याप्रियमाणता ए आठमु कारण छे ॥ ३१२ ॥

मूल — दसण विणए आवस्सए अ सीलव्वए निरइयारो, खण लव तवच्चिया

ए. वेयावच्च समाहीय. ॥ ३१३ ॥ अर्थः— नवमो दर्शन एटले सम्यक्त्व; दशमो विनय एटले ज्ञानादिनो जे पूर्वे कही आवेला छेये ने आगलपण कहेवाना छे; इग्यारमो एनी शुद्धिनुं करवुं ते आवश्यक एटले अवश्य कर्त्तव्य सामायिकादि; बारमो शीलव्रतपालवुं ते उत्तर गुण व्रत: अने मूल गुण व्रत; एउने निरतिचार पणे पाल्याथी तीर्थंकर नाम कर्म बांधाय छे. तेरमो क्षणलव एटले लवादि स्तोक काल विशेष. एम सर्वकालने विषे निरंतर संवेग भावनाए अने ध्यान सेवनेकरी जे समाधि ते क्षण लवसमाधि; चउदमो तप एटले बाह्याभ्यंतर भेद भिन्न अनशनादिनेविषे यथाशक्तिए निरंतर जे प्रवृत्ति ते तपसमाधि; पनरमो त्याग बे प्रकारनो छे:— एक द्रव्य त्याग ने बीजो भाव त्याग. तेमां द्रव्य त्याग एटले आहार उपधि तथा सय्यादिक जे पोताने काम न आवे तेनो परित्याग अने उपयोगमां आवे तेनुं यतिउने दान देवु; अने भाव त्याग एटले क्रोधादिकनो त्याग तथा ज्ञानादिकनुं यति जनोने दान देवुं. एवब्बे प्रकारना त्यागनेविषे सूत्रनो अतिक्रम न करतां यथा शक्तिये जे प्रवृति करवी ते त्याग समाधि; सोलमा वेयावच्चना दशभेदने विषे सूत्रने अनतिक्रमे स्वशक्ति अनुसार जे निरंतर प्रवृत्ति ते वेयावच्च समाधि; सत्तरमो मन वचन तथा कायाए करी जे अशुभ व्यापारनुं रुंधन करवुं ते योग समाधि; ॥ ३१३ ॥

मूलः— अपुव्वनाण ग्गहणे. सुयभत्ती पवयणे प्पभावणया; एएहि कारणेहिं, तित्थयरत्तं लहइ जीवो. ॥ ३१४ ॥ अर्थः—अढारमो निरंतर नवीन नवीन ज्ञाननुं जे ग्रहण ते अपूर्व ज्ञान ग्रहण जाणवुं. उगणीसमो श्रुत ज्ञाननी भक्ति एटले श्रुतविषे बहुमाननुं करवुं; वीसमो प्रवचननेविषे प्रभावनानुं करवुं. ए कहेला वीस हेतु करीने जीव तीर्थंकरपणुं पामेछे. ॥ ३१४ ॥

अवतरणः— एमांना केटलाएक बोलोनुं सूत्रकार स्वतः व्याख्यान करेछे:—

मूलः— संघो पवयण मिहं, गुरुणो धम्मोवएसयाईया, सुत्तत्थोभयधारी, बहुस्सुया हुंति विरकाया. ॥३१५॥ अर्थः— संघ शब्द प्रवचन कहेवुं अने गुरु ते धर्मोपदेशादिकना देवावाला तथा सूत्र अर्थ अने तदुभयना धरनार ते बहुश्रुत जाणवा.॥३१५॥

मूलः— जाई सुय परियाए, पडुच्च थेरोति जह क्कम्मेणं; सट्ठीवरसो समवाय, धारउ वीस वरिसो य. ॥ ३१६ ॥ अर्थ.—जाति, श्रुत, अने पर्याय आश्री स्थविर त्रण प्रकारना छे, तेमां शाठवर्ष प्रमाण जाति स्थविर. समवायांगना धरनार ते श्रुतस्थविर, जेने दीक्षा लीधे वीस वर्ष थई गया ते पर्याय स्थविर होय ॥३१६॥

मूल – नत्ती पूआ वएणप्पयरूण वज्जण मवन्न वायस्स, आसायण परिहारो, अरिहताईण वह्लल्ल ॥ ३१७ ॥ अर्थः– नक्ति ते जे अतरग बहुमाननी विशेषता अने पूजा ते यथोचितपणे फल आहार वस्त्रादिके करी उपचरवु वर्णके० श्लाघा तेनुं प्रकटनके० प्रकाशवु वली अवर्णवादनु वर्जवु एम आशातानु परिवर्जवु पूर्वोक्त अरिहतादिक सातपदनु वात्सल्य करवु ॥ ३१७ ॥

मूल – नाणुवउगो निरू, दसण सुद्धी अ विणय सुद्धी अ, आवस्सय जो एसु, सीन वएसु निरइयारो ॥ ३१८ ॥ अर्थ – ज्ञान लेवामा सावधान निरतर एज उपयोग होय, दर्शन शुद्धि ते निरतिचार पणे सम्यक्त्व निर्मल राखे, विनय शुद्धि ते पण निरतिचारपणे विनयनु करवु आवश्यकना योगनेविषे पण मन वचन कायाना योग स्थिर राखे, तथा शीलव्रतपाले ते मूल गुण तथा उत्तरगुण विषे निरतिचारपणु ए बार स्थानक थया ॥ ३१८ ॥

मूल –सवेग नावणा जाण सेवण खण लवाइ कालेसु, तव करण जइ जणस,वि नाग करस जह समाही ॥३१९॥ अर्थ – १३ सवेगनावनाये करी शुक्लध्यान तथा धर्म ध्याननु आसेवनु ते क्षणलवादिक विशेषनेविषे ते क्षण लव समाधी, १४ यथा शक्तिए तपनु करवु, १५ यतिजनने सविनागनु करवु जेम समाधिने करवे ३१९॥

मूल – वेयावच्च दसहा, गुरुमाईण समाहि जिणण च, किरिया दारेण तहा, अपुव नाणस्स गहण तु ॥३२०॥ अर्थ –१६ व्यावृत ते गुरु प्रमुख दशनु दश प्रकारे करवु, १७ गुरुवादिकने क्रियाद्वारे समाधिनु उपजाववु जेम तेमने सुख थाय तेम करवु १८ अपूर्व ज्ञाननु ग्रहण ते नवु नवु ज्ञान जाणवु इति ॥ ३२० ॥

मूल – आगम बहुमाणोविय, तित्थस्स पनावण जहासत्ती, एएहि कारणेहिं, तित्थयरत्त समज्जिणई ॥३२१॥ अर्थ – १९ सिद्धांतनेविषे बहुमाननु करवु २० तीर्थ ते चतुर्विध सघरूप तेनी पूजा प्रनावना पोतानी शक्तिने अनुसारे करवी. ए वीस कारणे करी तीर्थंकरपणु प्राणी उपार्जे, इहा वर्द्धमान स्वामी अने ऋषन देव एथ्रोए पूर्व नवनेविषे कहेला सर्व वीसे स्थानकनु सेवन कर्यु छे मध्यम अजितनाथस्वामी आदे दईने बावीश तीर्थंकरमाना कोईए एक, कोईए बे. कोईए त्रण, अने कोईए सर्व वीसे स्थानकना सेवन कर्या छे ए तीर्थंकरनाम कर्म मनुष्य गतिनेविषेज वर्त्तमान पुरुष स्त्री किंवा नपुसक ते तीर्थंकर नाव पामवानी पूर्वे त्रीजा नवमां बंधनो आरन करेछे ॥ ३२१ ॥ इति दशम द्वार समाप्त

अवतरण – 'जिणजणणी जणय नामेत्ति' एटले ऋषनादिक जिनेश्वरनीमा

ता तथा पिताना नामोनो अग्यारमो द्वार कहेछे.— मूलः— मरुदेवि विजयसे णा, सिद्धत्था मंगला सु सीमाय; पुहवी लरकण रामा, नंदा विन्हू जया सामा. ॥ ३२२ ॥ सुजसा सुव्वय अइरा, सिरिदेवी य प्पन्नावई; पउमा वईय वप्पा, सिव वम्मा तिसल याई य. ॥ ३२३ ॥ नानि जिअ सत्तुरिआ, जिआरि संवरो अ; मे हे धरे पईठे अ महसेण अ खत्तिए. ॥ ३२४ ॥ सुग्गीवे दढ रहे विण्ह वसुपुज्जे अ खत्तिए; कयवम्म सिंहसेण अ, नाणु विसा सणेऽ अ. ॥ ३२५ ॥ सुरे सुदं सण कुंने, सुमित्तविजए समुद्दविजए अ; राया य अस्स सेणे. सिद्धत्थे विय ख त्तिए. ॥ ३२६ ॥ अर्थः— रुषन्न स्वामीनी माता मरुदेवी; अजित स्वामीनी मा ता विजया; संनव नाथनी माता सेना; अनिनंदन स्वामीनी माता सिद्धार्था; सुमतिनाथनी माता मंगला; पद्मप्रन्न स्वामीनी माता सुसीमा; सुपार्श्वस्वामीनी माता पृथ्वी; चंद्रप्रन्न स्वामीनी माता लक्ष्मणा; सुविधि स्वामीनी माता रामा; सीतल स्वामीनी माता नंदा; श्रेयांसस्वामीनी माता विष्णु; वासुपूज्य स्वामीनी माता जया; विमल स्वामीनी माता श्यामा; अनंतजिन स्वामीनी माता सुय शा; धर्मनाथनी माता सुव्रता; शांतिनाथ स्वामीनी माता अचिरा; कुंथुनाथनी माता श्री; अर स्वामीनी माता देवी; मल्लिजिननी माता प्रन्नावती; मुनिसुव्रत नी माता पद्मावती; नमिनाथ स्वामीनी माता वप्रा; अरिष्टनेमीनी माता शिवा; पार्श्वनाथ स्वामीनी माता वामा, अने श्री वर्द्धमान स्वामीनी माता त्रिशला जाण वी. ए बे गाथाएकरी जिननी माताओनां नाम कह्यां. हवे एज अनुक्रमे पिताओनां नाम कहेछे. तेमज श्री रुषनदेव स्वामीनो पिता नानि; अजितस्वामीनो पिता जितशत्रु; संनवनाथ स्वामीनो पिता जितारि; अनिनंदन स्वामीनो पिता संवर; सुमतिनाथ स्वामीनो पिता मेघ; पद्मप्रन्न स्वामीनो पिता धर; सुपार्श्व स्वामीनो पिता प्रतिष्ट; चंद्रप्रन्न स्वामीनो पिता महासेन क्षत्रिय; सुविधि स्वामीनो पिता सुग्रीव; शीतल स्वामीनो पिता दृढरथ; श्रेयांस स्वामीनो पिता विष्णु; वासुपूज्य स्वामीनो पिता वसुपूज्य क्षत्रिय; विमलस्वामीनो पिता कृतवर्म; अनंतजिन स्वा मीनो पिता सिंहसेन; धर्मनाथनो पिता नानु; शांतिनाथनो पिता विश्वसेन; कुंथु नाथनो पिता सूर; अरस्वामीनो पिता सुदर्शन; मल्लिजिननो पिता कुंन; मुनिसुव्रतनो पिता सुमित्र, नमिनाथनो पिता विजय; अरिष्टनेमिनो पिता समुद्र विजय; पार्श्व नाथ स्वामीनो पिता अश्वसेन; अने वर्द्धमान स्वामीनो पिता सिद्धार्थ क्षत्रिय.३२६

अवतरणः— 'जिण जणणि जणय गत्ति' एटले तीर्थंकरना माता तथा पिता

नी गतिनो बारमो द्वार कहे छे.— मूल — अठण्हं जणणीओ, तित्थयराण तु हुं
ति सिद्धाओ, अठ्य सण कुमारे, माहिंदे अठ बोधव्वा ॥ ३२७ ॥ नागेसु उसन
पिआ, सेसाण सत्त हुंति ईसाणे, अठ्य सणकुमारे, माहिंदे अठ बोधव्वा ॥३२८

अर्थ — ऋषभ देव भगवाननी आदि लईने चंद्रप्रभना अंतसुधी आठ तीर्थंक
रोनी माताओ सिद्धिने पामी; सुविधि स्वामीने आदि लईने शांतिनाथना अंतसुधी
आठ तीर्थंकरोनी माताओ त्रीजा सनत्कुमार नामना देवलोकमा गई, तथा कुंथु
स्वामीने आदि लईने श्री महावीर स्वामीना अंतसुधी आठ तीर्थंकरनी माताओ
माहेंद्र नामना चोथा देवलोकमा गई तेमज श्री ऋषभ देव स्वामीना पिता ना
भिराजा, नाग कुमारनामा भवनपतिनी द्वितीय निकायनेविषे गया, अजित नाथनी
आदि लई चंद्रप्रभ स्वामिसुधी सात तीर्थंकरोना पिताओ ईशान नामना बीजा दे
वलोकनेविषे गया, सुविधि प्रभृति शांतिनाथ पर्यंत आठ तीर्थंकरोना पिताओ सनत्कु
मार नामना त्रीजा देवलोकमा गया, अने कुंथु प्रमुख श्रीमहावीरांत आठ तीर्थंकरो
ना पिताओ माहेंद्र नामना चोथा देवलोकमा गया एवी रीते जाणवु ॥ ३२८ ॥

अवतरण — हवे 'उक्किठ जहन्नेहिं, सत्ता विरहंत तित्थ नाहाण' एटले उ
त्कृष्टे अने जघन्ये करी विचरता तीर्थंकरोनी संख्या गाथाना पूर्वार्द्धवडे तेरमो द्वा
र तथा 'जम्म समएवि संखा, उक्किठ जहन्निया तेस' एटले उत्कृष्टथी तथा ज
घन्यथी तेओना जन्मनी संख्या गाथाना उत्तरार्द्धमा चौदमो द्वार कहे छे —

मूल — सत्तरि सय मुक्कोस, जहन्न वीसाय देस विरहंति, जम्म पइ उक्कोस
वीस दस हुंति उ जहन्ना ॥ ३२९ ॥ अर्थ — उत्कृष्टेकरी समय क्षेत्रनेविषे एक
ज काले एकशोने सित्तेर तीर्थंकरो विहार करे छे, ते आ प्रमाणे — पांच भरत
क्षेत्रनेविषे एक एक अने पांच ऐरवतनेविषे पण एक एक उत्कृष्टे विहार करे
ते आवी रीते —पांच महाविदेह क्षेत्रमाना प्रत्येक क्षेत्रनेविषे उत्कृष्टे बत्रीश विज
यना सद्भाव थकी बत्रीश बत्रीश तीर्थंकरो विचरे छे ते बधा एकशोने साठ थाय
तथा पांच भरतने पांच ऐरवतना मळी दश भेळिये त्यारे एकशोने सित्तेरनी संख्या
नो संभव थाय छे तथा जघन्यथी वीश तीर्थंकरो विहार करे छे ते आवी री
ते — जंबुद्वीपना पूर्व विदेहमा शीता महा नदीए द्विभाग कर्या जे दक्षिण अने
उत्तर भाग त्या एक एकनो सद्भाव होवाथी बे, अपर विदेहनेविषे पण शीतो
दया महानदीए द्विभागीकृत जे दक्षिणोत्तर भाग तेओनविषे एक एक होवाथी बे
ए बन्ने मळी चार थया ए प्रकारेज अपर द्वीप द्वय संबंधी चतुष्टय महाविदे

नेविषे चार चार करतां शोळ थाय ने प्रथमना चार मळी वीसनी संख्या थाय. भरत अने ऐरवत एओनेविषे युगलियाना काळे एकांत सुख आश्रीने अभावज छे. बीजा केटलाएक सूरि कहे छे के. जघन्ये करी दशज तीर्थंकरो विहार करे छे. कारण के. पांच महाविदेहना पूर्वापर विदेहनेविषे प्रत्येक विहार करनार एकेक नोज सद्भाव होवाथी दश तीर्थंकरो लभ्यमान थाय छे. ए तेरमो द्वार थयो.

हवे प्रतिजन्म आश्रयीजोतां उत्कृष्टथी एक काळे वीस जिनोनी पछे वीस तीर्थंकरोनो जन्म थाय छे. केमके, सर्व तीर्थंकरनो अर्द्धरात्र समयेज जन्म थाय छे. माटे महाविदेह क्षेत्रनेविषे तीर्थंकरना जन्म समये भरत ने ऐरवत क्षेत्रोमां दिवसोनो सद्भाव होवाथी तीर्थंकरनी उत्पत्तिनो अभाव छे. तेथी एटलाज थायछे आशंका.– महाविदेहवर्त्ति विजयनेविषे चार थकी अधिक तीर्थंकरोनी उत्पत्तिनो संभव छे, तेथी उत्कृष्टथी वीसज केम कह्या ?

उत्तरः– अहो मेरुनेविषे पांडुक वनमानी चूलिकानी चार दिशाउं मध्ये प्रत्येक चार योजन प्रमाण बाहुल्य ने पांच योजन शत प्रमाण आयाम ने मध्य भागनेविषे साडात्रण शें योजन प्रमाण विष्कंभ अर्द्धचंद्र संस्थान संस्थित, सर्वश्वेत, सुवर्णमय. एवी चार अभिषेकशिला छे. त्यां चूलिकाना पूर्व दिग्भाविनी पांडु कंबल शिलानेविषे बे तीर्थंकरोना अभिषेक सिंहासन छे. तेमां एक उत्तर ने एक दक्षिण छे. त्यां जे शीता महानदीना उत्तरमा कच्छादि विजयनेविषे तीर्थंकर उत्पन्न थायछे. तेने उत्तर सिंहासननेविषे देवेंद्र अभिषेक करेछे. अने जे शीता महानदीना दक्षिण भागनेविषे मंगलावती प्रमुख विजयमां उत्पन्न थायछे तेने दक्षिणात्य सिंहासननी उपर अभिषेक करेछे. तेमां एक उत्तर ने एक दक्षिण एवा बे सिंहासन छे त्यां शीतोदा महानदीनी दक्षिण दिशामां पद्मादि विजयनेविषे जे तीर्थंकर उत्पन्न थायछे ते दक्षिण सिंहासने अभिषिक्त थाय छे अने जे शीतोदा महानदीनी उत्तर दिशामा गंधिलावति प्रमुख विजयनेविषे उत्पन्न थाय छे ते उत्तर सिंहासने अभिषिक्त थायछे, तथा जे भरत क्षेत्रनेविषें तिर्थंकरो उत्पन्न थायछे, ते चूलिकाना दक्षिण दिग्भाविपांडु कंबल शिलानेविषे अभिषिक्त थायछे. जे ऐरवत क्षेत्रनेविषे उत्पन्न थायछे ते उत्तर दिग्भाविनी रक्त कंबल शिलानेविषे अभिषिक्त थायछे. जे सिंहासन कह्यां ते बधां रत्नमय छे ते बधां पांचसें धनुष्य आयाम विष्कंभनां. अने साडात्रणशें धनुष्य बाहुल्य प्रमाणे छे. एथी अधिक सिंहासननो अभाव होवाथी विदेहोनेविषे चारना करतां अधिक तीर्थंकरोनो एक

काले उत्पन्न थवानो अनाव छे. अने जघन्यथी एक काले दशज तीर्थंकरो उत्पन्न थाय छे तेमा जरतनेविषे पाच, अने ऐरवतनेविषे पांच, मली दश जाणवा कारण के, प्रत्येके एकेकनोज सन्नाव छे नरत ने ऐरवतनेविषे जिनजन्म समयेमहा विदेहमा दिवस सन्नाव होवाथी अधिकनी उत्पत्ति थती नथी ए चौदमो द्वार थयो ३१९

अवतरण – जिण 'गणहरत्ति' एटले श्री तीर्थंकरोना गणधरोनी सख्याना पदरमो द्वार कहेछे – मूल.– चुलसीइ पच नवई, बिउत्तर सोल सुत्तर सयत, सत्तुत्तर पण नवई, केणउई अत्तसोई य ॥ ३२० ॥ एक्कासीई बावत्तरो य छाव ठि सत्तवन्ना य, पन्ना तेथ्यासीता, छत्तीसा चेव पणतीसा, ॥३२१॥ तेतीस अठ वीसा, अठारस चेव तहय सत्तरस, इक्कारस दस इक्कारसेव इय गणहर पमाण॥३२२॥

अर्थ – श्री रुषनदेव स्वामीना चोराशी गणधर, अजित नाथ स्वामीना पचाणु गणधर, सनव स्वामीना एक शो ने बोतेर गणधर, अनिनदन जिनना एक सो ने सोल गणधर, सुमतिनाथना एक शो पूरा, पद्मप्रन स्वामीना एक शो ने सात गणधर, सुपार्श्व स्वामीना पचाणु गणधर, चइप्रन स्वामीना त्र्याणु गणधर, सुविधि नाथना अठयाशी गणधर, शीतल जिनना एक्याशी गणधर, श्रेयांस स्वामीना छोतेर गणधर, वासुपूज्यना छासठ गणधर, विमल नाथना सत्तावन, अनंत नाथना पचाश, धर्म जिनना तेतालीश, शातिनाथना छत्रीश गणधर, कुंथुनाथना पांत्रीश गणधर, अर जिनना तेत्रीश गणधर, मल्लि जिनना अठयावीश गणधर, मुनिसुव्रत स्वामीना अढार गणधर, नमिनाथना सत्तर गणधर, नेमिनाथना अग्यार गणधर, श्री पार्श्वनाथ स्वामीना दश गणधर, अने श्रीवीर नगवानना अग्यार गणधर जाणवा ए प्रकारे करी रुषनादि चोवीश तीर्थंकरोना यथा क्रमे करी गणधर एम्जे मूल सूत्र कर्त्ता तेउनु प्रमाण कह्यु ॥ ३२२ ॥ ए पदरमो द्वार थयो

अवतरण – 'मुणित्ति' एटले तीर्थंकरोना मुनिओनी सख्यानो शोलमो द्वार कहे छे – मूल – चुलसीइ सहस्साए, ग लरक दो लरक तिन्नि लरका य, बोसहिया तीसहिया, तिन्निय अढाई इ इक्क ॥ ३२३ ॥ चउरासीइ सहस्सा, बिसत्तरी अठ सठि छावठी, चउसठी वासठी, सठी पन्नास चालीसा ॥ ३२४ ॥ तीसा वीसा य ठारसेव सोलसय चउदस सहस्सा, एत्र साहु पमाण चउवीसाए जिण वराण ॥ ३२५ ॥ अर्थ – आद्य जिनना चोरासी हजार, अजित नाथना एक लाख ए प्रमाणे अनुक्रमे त्रीजातीर्थंकरना बे लाख, चोथाना त्रण लाख, पाचमाना त्रण लाखने वीस हजार, छठाना त्रण लाखने त्रीश हजार, सातमाना त्रण लाख, आठ

माना अढी लाख, नवमाना बे लाख; दशमाना एक लाख; अग्यारमाना चोरा शी हजार; बारमाना बोतेर हजार; तेरमाना अम्सत्र हजार; चौदमाना ठासठ ह जार; पंदरमाना चोसठ हजार; शोलमाना बासठ हजार; सतरमाना साठ हजा र; अढारमाना पचाश हजारः उंगणीशमाना चालीश हजार; वीशमाना त्रीश ह जार; एकवीशमाना वीश हजार; बावीशमाना अढार हजार, त्रेवीशमाना शोल हजार; अने चोवीशमा श्रीवर्द्धमान स्वामीना चउद हजार मुनिउं हता. ए क्रमे करी चोवीश तीर्थंकरोना साधुउंनुं प्रमाण कह्युं. ॥ ३३५ ॥

अवतरणः– कहेला सर्व साधुउंनी जे संख्या थाय छे ते कहेछेः– अडावीसं लक्खा, अडयालीसं च तह सहस्साइं; सव्वेसिंपि जिणाणं, जईणमाणं विणिद्दिठं ॥ ३३६ ॥ अर्थः– अठ्यावीश लाख ने अडतालीश हजार एटलुं सर्व जिनोना य तिउंनुं परिमाण जाणवुं, ते जेउंने जिनेंद्रे पोते दीक्षा दीधेली छे तेउंनुं समजवुं, परंतु गणधरोए जेउंने दीक्षा दीधी छे तेउंनुं नही. केम के, ते यतिउं घणा छे. ॥ ३३६ ॥ ए शोलमो द्वार पूरो थयो.

अवतरण – 'समणिति' एटले साध्वीउंनी संख्यानो सत्तरमो द्वार कहेछेः– मूलः– तिन्निय तिन्निय तिन्निय, छ पंच चउरो चउ तिगेक्केका; लखाउं सहमो तुं, तडवरि सहसाणि मासंखा. ॥ ३३७ ॥ आ गाथामां एकली संख्या मात्रज कही छे. जेम के. त्रण, त्रण, त्रण. छ. पांच. चार. चार, त्रण, एक अने एक एटला लाख क्रमेकरी थायछे; तेमां ऋषभ जिननी आर्यिकाउंनी संख्या त्रण लाख; एमने मुकीने बाकीना जिनोनी साध्वीउंनी संख्यानी उपर क्रमेकरी जेटला हजारो अ धिक छे ते कहे छेः– मूल.– तीसा छत्तीसा तीस तीसा वीसा य तीस असई य; वीसा दसम जिणिंदे, लक्खोवरि अज्जिया छक्कं. ॥३३८॥ अर्थः–त्रीश; छत्रीस; त्री श, त्रीश, वीश; त्रीश; एशी, वीश एटला हजार अनुक्रमे कहेली बीजा तीर्थंकर थी दशमां तीर्थंकर सुधि लक्षांक संख्यानी ऊपर समजवी. जेम के. प्रथम जिन नी तो त्रण लक्षज जाणवी अने अजित नाथनी त्रण लाखने त्रीश हजार; सं भव जिननी त्रण लाख ने छत्रीश हजार; अभिनंदन जिननी छ लाखने त्रीश ह जार; सुमति नाथनी पांच लाख ने त्रीश हजार; पद्मप्रभनी चार लाख ने वीश हजार; सुपार्श्व जिननी चार लाख ने त्रीश हजार ; चंद्रप्रभनी त्रण लाख ने एशी हजार; सुविधि जिननी एक लाख ने वीश हजार; अने दशमा शीतल जि ननी एक लाख ने छ आर्या उं जाणवी. ॥ ३३८ ॥

अवतरण – हवे श्रेयांशादि जिनोनी आर्याओनुं प्रमाण कहेछे – मूल – लरको तिन्नि सहस्सा, लरको लरको य अठ सय सहिउं, बासठी पुण बासठि सदस अहिया चक सयहिं ॥ ३३९ ॥ ठ सया सत्र इग सठी, सठी ठ सया य सठि पण पन्ना पन्नेग चत्त चत्ता, अडतीस ठतीस सहस्सा य ॥३४०॥ अर्थ – श्रेयांश जिननी एक लाखने त्रण हजार साध्वीउं, वासुपूज्य जिननी एक लाख, विमल जिननी एक लाख ने आठ शें, अनंत जिननी बासठ हजार, धर्म जिननी बासठ हजारने चारशें, शांति जिननी एकसठ हजार ने ठ शें, कुंथुनाथ जिननी साठ हजार अने ठ शें, अर जिननी साठ हजार, मल्लि जिननी पचावन हजार, मुनि सुव्रतनी पचाश हजार, नमिनाथ जिननी एकतालीश हजार, नेमिनाथ जिननी चालीश हजार, पार्श्वनाथ स्वामीनी अडत्रीश हजार अने श्रीमहावीर स्वामीनी साध्वीउंनी संख्या छत्रीश हजार जाणवी ॥ ३४० ॥

अवतरण – कहेली सर्व साध्वीउंनी जे एकंदर संख्या थाय छे ते कहेछे – मूल – चौआलीस लरका, बायाल सहस्स चोसय समग्गा, अज्जा छक एगो, अ ज्जाण सगहो कमसो ॥ ३४१ ॥ अर्थ – चुमालीस लाख बेतालीस हजार बारशें ने छ साध्वीउं एकंदर थायछे एम क्रमे करीने सर्व आर्याओनो संग्रह जाणवो॥ ३४१ ॥ सत्तरमो द्वार पूर्ण थयो

अवतरण – 'वेउवियत्ति' एटले वैक्रिक लब्धिने धारण करणाराउंनी संख्याना अढारमा द्वार कहे छे – मूल – वेउविय लद्धीण, वीस सहस्सा य सय छ गन्नहिया, वीस सहस्सा चउ सय, इगुणीस सहस्स अठ सया ॥ ३४२ ॥ इगुणिस सहस्स अहार चउ सया सोल सहस्स अठ सया, सतिसय पनरस चउद स, तेरस बारस सहस दसमे ॥ ३४३ ॥ इक्कारस दस नव अठ सत्त ठ सहस्स पण सत्त सया, सत्त सहस्स सति सया, दुन्नि य सहस्सा नव सयाइं ॥ ३४४ ॥ इन्नि सहस्सा पचय, सहस्स पनरस सयाइं नेमिमि, इक्कारस सयपासे सयाइं सत्तेव वीर जिणे ॥ ३४५ ॥ अर्थ – जेओने अनेक प्रकारना वैक्रियरूप करवानी शक्ति छे एवा वैक्रिय लब्धिवान जनोनी संख्या आदि जिनने वीस हजार ने छशेंनी जाणवी अजित जिनना वीस हजार ने चारशें, संभव जिनना ओगणीश हजार ने आठ शें, अभिनंदन जिनना ओगणीश हजार, सुमति जिनना अढार हजार ने चार शें, पद्म प्रभना शोल हजार एक शें ने आठ, सुपार्श्वना पंदर हजार ने त्रण शें, चंद्रप्रभना चौद हजार, सुविधिना तेर हजार शीतल

जिनना बार हजार, श्रेयांस जिनना अग्यार हजार; वासुपूज्यना दश हजार; विमलना नव हजार; अनंत जिनना आठ हजार, धर्म जिनना सात हजार; शांति नाथना ठ हजार. कुंथु जिनना पांच हजार ने एक शो. अर जिनना सात हजार ने त्रणशें, मल्लि जिनना वे हजार ने नवशें; मुनिसुव्रत स्वामीना वे हजार; नमि जिनना पांच हजार; नेमि जिनना दोढ हजार; श्रीपार्श्वनाथना अग्यार शें; अने वीर जिनना सातशें वैक्रिय लब्धिवान मुनीओ जाणवा. ॥ ॥ ३४७ ॥ ए अढारमो द्वार समाप्त थयो.

अवतरण—'वाइनि' एटले तीर्थंकरोना वादीओनी संख्यानो ओगणीशमो द्वार कहेछे—मूल—सट्ठ ठ सया डुवालस. सहस्स बारसय चउसय सहीया; बारेकारस सहसा. दस सहसा ठ सय पन्नासा. ॥ ३४६ ॥ ठन्नवई चुलसीई, ठ हत्तरी सहि अठ्यच्चा य; पन्नासा य सयाए, सीयाला अहव बायाला. ॥३४७॥ ठत्तीसा वत्तीसा. अठावीसा सयाणि चउवीसा; बिसहस्सा सोल सया. चउदस बारस दस सयाइं ॥ ३४८ ॥ अठ सया ठच सया. चत्तारि सयाइ हुंति वीरंमि; वाइ मुणीण पमाण. चउवीसाए जिनवराणं. ॥ ३४९ ॥ अर्थ—राजसभानेविषे प्रतिवादीओनी साथे प्रमाण युक्त भाषण करनारा बार हजारने साडा ठ शें वादीओ प्रथम तीर्थंकरना जाणवा. अजितनाथना बार हजार ने चार शें; संभव जिनना बार हजार; अभिनंदन जिनना अग्यार हजार; सुमति जिनना दश हजार ने साडा ठ शें, पद्मप्रभ जिनना नव हजार ने ठ शें; सुपार्श्वजिनना आठ हजार ने चार शें; चंद्रप्रभ जिनना सात हजार ने ठ शें; सुविधि जिनना ठ हजार; शीतल जिनना पाच हजार ने आठ शें; श्रेयांस जिनना पांच हजार; वासुपूज्य जिनना चार हजार ने सात शें; अथवा मतांतरे चार हजार ने वशें पण कहेला छे. विमल जिनना त्रण हजार ने ठशें; अनंत जिनना वत्रीश शें; धर्म जिनना वे हजार ने आठ शें, शांतिनाथ जिनना चोवीस शें, कुंथु जिनना वे हजार; अरनाथ जिनना शोल शें; मल्लि जिनना चौद शें; मुनिसुव्रतना बार शे; नमिनाथ जिनना एक हजार; नेमिनाथ जिनना आठ शें; श्रीपार्श्व जिनना ठ शें अने वीर जिनना चार शें वादी वाद समारंभनेविषे सुरासुरने पण अजय एवा यतिओनुं प्रमाण कह्यु ॥ ३४९ ॥ ए ओगणीशमो द्वार परिपूर्ण थयो.

अवतरण—हवे 'अवहित्ति' एटले तीर्थंकरोना अवधि ज्ञानीओनो वीशमो द्वार कहे छे.—मूल—ओहीनाणि मुणीणं, नवइ चउणवइ ठन्नवइ सयाणि;

अट्ठाणवइ सयाइ, इक्कारस दस नव सहस्सा ॥ ३५० ॥ असीइ चुलसि वहुत्तरि सट्ठी चउपन्न अठ चत्ताला, तेआला ठत्तीसा, तीसा पणवीस ठव्वीसा ॥ ३५१ ॥ वावीसा अट्ठारस सोलस पन्नरस चउ दस सयाणि, तेरस साहुण समाणि, उसहो नाणीण वीरस्स ॥ ३५२ ॥ अर्थ – प्रथम जिनना अवधि ज्ञानी मुनि नव हजार जाणवा, अजित नाथना नव हजार ने चार शें, संभव जिनना नव हजार ने ठ शें, अभिनंदन जिनना नव हजार ने आठ शें, सुमति जिनना अग्यार हजार, पद्मप्रभ जिनना दश हजार, सुपार्श्व जिनना नव हजार, चंद्रप्रभ जिनना आठ हजार, सुविधि जिनना आठ हजार ने चार शें, शीतल जिनना बोंतेर शे, श्रेयांस जिनना ठ हजार, वासुपूज्य जिनना पांच हजार ने चार शें, विमल जिनना चार हजार ने आठ शें, अनंत नाथना चार हजार ने त्रण शें, धर्म जिनना त्रण हजार ने ठ शें, शांतिनाथ जिनना त्रण हजार, कुंथुनाथ जिनना बे हजार ने पांच शें, अरनाथना बे हजार ने ठ शे, मल्लि जिनना बे हजार ने बे शें, मुनिसुव्रतना एक हजार ने आठ शे, नमिनाथना एक हजार ने ठ शें, नेमीश्वर भगवानना पंदर शें, श्रीपार्श्व जिनना चउद शें अने चरम जिनना तेर शें अवधि ज्ञानिउं जाणवा ॥ ३५२ ॥ ए वीशमो द्वार पुरो थयो

अवतरण – हवे 'केवलिनि' एटले तीर्थंकरोना केवल ज्ञानीओनी संख्यानो एकवीशमो द्वार कहे ठे – मूल – वीस सहस्सा उसहे, वीस वावीस अहव अजियस्स, पनरस चउदस तेरस, वारस इक्कारस दसेव ॥ ३५३ ॥ अद्धम सत्तय, ठस्सड्ढा ठच पंच सड्ढाय, पंचेव अद्ध पंचम, चउ सहसा तिन्नि य सयाय ॥ ३५४ ॥ वत्तीस सया अहवा, वावीस सयाइ हुंति कुंथुस्स, अट्ठावीस वावीस तहय अट्ठारस सयाइ ॥ ३५५ ॥ सोलस पन्नर दस सय, सत्तेव सया हवंति वीरस्स, एय केवलि नाण, मण पज्जव नाण मिन्हितु ॥ ३५६ ॥ अर्थ – ऋषभ देव भगवानना वीस हजार केवली अजित जिनना वीश हजार अथवा बावीश हजार, संभव जिनना पंदर हजार, अभिनंदनना चौद हजार, सुमति जिनना तेर हजार, पद्मप्रभ जिनना बार हजार, सुपार्श्व जिनना अग्यार हजार चंद्रप्रभ जिनना दश हजार, सुविधि जिनना साडा सात हजार, शीतल जिनना सात हजार, श्रेयांस जिनना साडा ठ हजार, वासुपूज्य जिनना ठ हजार, विमल जिनना साडा पांच हजार, अनंत जिनना पांच हजार, धर्म जिनना साडा चार हजार शांतिनाथ जिनना चार हजार ने त्रण शे, कुंथु जिनना त्रण हजार ने बे शें अ

थवा बे हजार ने वर्शें; अरजिनना बे हजार ने आव शें; मल्लि जिनना बावीस शें; मुनिसुव्रत जिनना एक हजार ने आव शें; नमि जिनना एक हजार ने ठ शें; नेमि जिनना दोढ हजार; पार्श्वनाथ स्वामीना एक हजार अने वीर नगवानना सात शें; एटली केवलज्ञानवान साधुओनी संख्या समजवी ए प्रमाणे पूर्वोक्त क्रमे करी तीर्थंकरोना केवलीओनुं प्रमाण कह्युं; हवे मनः पर्यव ज्ञानीओनुं मान कहे ठेः– ॥ ३५६ ॥ ए एकवीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– हवे 'मणनाणित्ति' एटले बावीशमो मनःपर्यव ज्ञानीओनो द्वार कहेठे.– मूलः– बारस सहस्स तिएहं, सय सड्ढा सत्त पंचय दिवड्ढं; एगदस सड्ढ ढस्सय, दस सहसा चउ सया सड्ढा. ॥३५७॥ दस सहसा तिन्नि सया, नव दिवढ सया य अठ सहसा य; पंच सय सत्त सहसा, सुविहि जिणे सीयले चेव ॥ ३५८ ॥ ठ सहस्स दोन्हि मित्तो, पंच सहस्साय पंच य सयाइं; पंच सहस्सा चउरो, सहस्स सय पंच य ग्रहिया. ॥ ३५ए ॥ चउरो सहस्स तिन्नि य, तिन्ने व सया हवंति चालीसा; सहस डुगं पंच सया, इगवन्ना अर जिणंदस्स ॥३६०॥ सत्तरि सयाइ पन्ना, पंच दस सया य बार सय सठा; सहसो सय अद्धठम, पंचेव सयाउ वीरस्स. ॥ ३६१ ॥ अर्थः– आदि जिनना मन. पर्यव ज्ञानी बार हजार ने साडा सात शें; अजित जिनना साडा बार हजार; संनव जिनना बार हजार ने दोढ शें; अनिनंदन जिनना अग्यार हजार ने साडा ठ शें; सुमति जिनना दश हजार ने साडा चार शें; पद्मप्रन जिनना दश हजार ने त्रण शें; सुपार्श्व जिनना नव हजार ने दोढ शें; चंद्रप्रन जिनना आव हजार; सुविधि जिनना साडा सात हजार; शीतल जिनना साडा सात हजार; श्रेयांस जिनना ठ हजार; वासुपूज्य जिनना ठ हजार; विमल जिनना साडा पांच हजार; अनंत जिनना पांच हजार, धर्म जिनना साडा चार हजार, शांति जिनना चार हजार; कुंथु जिनना त्रण हजार त्रण शें ने चालीश; अरजिनना अढी हजार ने एकावन; मल्लिजिनना साडा सत्तर शे; मुनिसुव्रतना पंदर शें; नमि जिनना बार शें ने साठ; नेमि जिनना एक हजार; पार्श्वनाथ स्वामीना साडा सात शे अने श्री महावीर स्वामीना पांच शें मन.पर्यव ज्ञानी जाणवा. ॥३६१॥ ए बावीशमो द्वार पूर्ण थयो.

अवतरण – हवे 'चउदस पुव्वित्ति' एटले तीर्थंकरोना चौद पूर्वने धारण करनारा साधुओनी संख्यानो त्रेवीशमो द्वार कहेठे.– मूल.– चउदस पुवि सहस्सा, चउरो अद्धठ माणिय सयाणि; वीसहिय सत्ततीसा, इगवीस नयाय पन्नासा.॥

॥ ३६१ ॥ पनरस चउवीस सया, तेवीस सया य वीस सय तीसा, दो सहस्स प नरस सया, सय चउदस तेरस सयाइ ॥ ३६२ ॥ सय बारस एक्कारस, र्स नव अठ्ठेव ठच्च सय सयरा, दसहिअ ठचेव सया, ठच्च सया अठ सठ हिया ॥ ३६४ ॥ सय पच अद्ध पचम, चउरो अद्धठ तिन्निय सयाइ, वसनाइ जिणा ण, चउदस पुव्वीण परिमाण ॥ ३६५ ॥ अर्थ – आदि जिनना चार हजार ने साडा सात शे चौद पूर्वधर, श्रीअजित जिनना त्रण हजार सात शे ने वीश, श्रीसंभव जिनना बे हजार एक शो ने पचाश, श्रीअभिनंदन जिनना दोढ हजार, श्रीसुमतिजिनना बे हजार ने चार शे, श्रीपद्मप्रभ जिनना बे हजार ने त्रण शें, श्रीसुपार्श्व जिनना बे हजार ने त्रीश, श्रीचंद्रप्रभ जिनना बे हजार, श्रीसुविधि जिनना दोढ हजार, श्री शीतल जिनना एक हजार ने चार शें, श्री श्रेयांस जिनना तेर शे, श्री वासुपूज्य जिनना बार शें, श्रीविमल जिनना अग्यार शें, श्रीअनंत जिनना एक हजार, श्रीधर्मजिनना नव शे, श्रीशांति जिनना आठ शें, श्रीकुंथु जिनना ठ शे ने शितेर, श्रीअर जिनना ठ शें ने दश, श्रीमल्लि जिनना ठ शें ने अडसठ, श्रीमुनिसुव्रत जिनना पांच शे, श्रीनमि जिनना साडा चार शें, श्रीनेमि जिनना चार शे, श्रीपार्श्व जिनना साडा त्रण शे, श्रीवीर जिनना त्रण शें, ए पूर्वोक्त ऋषभादि जिनेंद्रोना क्रमे करी चतुर्दश पूर्विओनु परिमाण कयु

अवतरण – हवे 'सड्डि' एटले तीर्थंकरोना श्रावकोनो चोवीशमो द्वार क हेछे –मूल – पढमस्स तिन्नि लक्खा, पच सहस्सा दु लक्ख जा संति, लक्खोवरि अड नउई, तेणउई अट्ठसीई य ॥ ३६६ ॥ एगासी ठावत्तरि, सत्तावन्नाय तहय पन्नासा, एगुण तीस नवासी, इगुणासि पन्नरस छेव ॥ ३६७॥ ठचिय सहस्स च उरो, सहस्स नउई सहस्स सतिस्स, तत्तो एगो लक्खो, उवरि गुणसी य चुलसीय ॥ ३६८ ॥ तेयासी बावत्तरि, सत्तरि इगुणत्तरीय चउसट्ठी, एगुणसठि सहस्सा, सावग्गाण जिणवराण ॥३६९॥ अर्थ –आदि जिनना श्रावक त्रण लक्ष ने पांच हजार, श्री अजित जिनना बे लाख ने अठाणु हजार, श्री संभव जिनना बे लाख ने त्र्याणु हजार, श्री अभिनंदन जिनना बे लाख ने अठ्याशी हजार श्री सुमति जिनना बे लाख ने एक्याशी हजार, श्री पद्मप्रभ जिनना बे लाख ने बो तेर हजार, श्री सुपार्श्व जिनना बे लाख ने सत्तावन हजार, श्री चंद्रप्रभ जिनना बे लाख ने पचाश हजार, श्री सुविधि जिनना बे लाख ने ओगणत्रीश हजार श्री शीतल जिनना बे लाख ने नेव्याशी हजार, श्री श्रेयांस जिनना बे लाख ने ओ

गणाशी हजार; श्री वासुपूज्य जिनना बे लाख ने पंदर हजार; श्री विमल जिन ना बे लाख ने आठ हजार; श्री अनंत जिनना बे लाख ने छ हजार; श्री धर्म जिनना बे लाख ने चार हजार; श्री शांति जिनना बे लाख ने नेवु हजार, कुंथु जिनना एक लाख ने ओगणाशी हजार, श्री अर जिनना एक लाख ने चोराशी हजार; श्री मल्लि जिनना एक लाख ने त्याशी हजार: श्री मुनि सुव्रत जिनना ए क लाख ने बोतेर हजार; श्री नमि जिनना एक लाख ने सित्तेर हजार; श्री ने मि जिनना एक लाख ने उगणोतेर हजार; श्री पार्श्व जिनना एक लाखने चोस ठ हजार; श्री महावीर स्वामीना एक लाख ने ओगणसाठ हजार; एवी रीते चो वीश जिनवरेंद्रना श्रावकोनुं क्रमेकरी प्रमाण जाणवुं॥३६ए॥ए चोवीशमो द्वारथयो.

अवतरणः–हवे 'सड्ढीणंत्ति' एटले तीर्थंकरोनी श्राविकाउनी संख्यानो पचीशमो द्वार कहेछेः–मूलः–पटमस्स पंच लरका, चउपन्न सहस तयाणु पण लरका, प णयालीस सहस्सा, छ लरक छत्तीस सहसा य ॥ ३७०॥ सत्तावीस सहस्सा, हिय लरका पंच पंच लरका य, सोलस सहस्स अहिया, पण लरका पंचउ सहस्सा ॥ ३७१ ॥ उवरिं चउरो लरका, धम्मोजा उवरि सहस तेणवई, इग नवई इगहत्तरि, अमवन धडयाल छत्तीसा. ॥ ३७२ ॥ चउवीसा चउदस तेरसेव तत्तो तिलरक जावीरो; तडुवरि तिनवइगासी, बिसत्तरी सयरि पन्नासा. ॥ ३८३ ॥ अमयाला छत्तीसा, इगु चत्तद्वार सेवय सहस्सा; सड्ढीण माण मेयं, चउवीसाए जिणवराणं ॥३७४॥ अर्थ.--तत्र प्रथम श्री आदिजिननी श्राविकाओ पाच लाख ने चोपन ह जार जाणवी. श्री अजित जिननी पाच लाख ने पिसतालीश हजार; संजव जिननी छ लाख ने छत्रीश हजार, श्री अजिनंदन जिननी पांच लाख ने सत्यावीश हजार; श्री सुमति जिननी पांच लाख ने शोल हजार; श्री पद्मप्रज जिननी पाच लाख ने पांच हजार; श्री सुपार्श्व जिननी चार लाख ने त्याणु हजार; श्री चंद्रप्रज जिननी चार लाख ने एकाणु हजार; श्री सुविधि जिननी चार लाख ने एकोत्तेर हजार; श्री शीत ल जिननी चार लाख ने अठावन हजार; श्री श्रेयांस जिननी चार लाख ने अमता लीश हजार; श्री वासुपूज्यनी चार लाख ने छत्रिस हजार; श्री विमल जिननी चार लाख ने चोवीश हजार, श्री अनंत जिननी चार लाख ने चौद हजार; श्री धर्म जिन नी चार लाख ने तेर हजार, श्री शांति जिननी त्रण लाख ने त्याणु हजार; श्री कुंथु जिननी त्रण लाख ने एक्याशी हजार, श्री अर जिननी त्रण लाख ने बोत्तेर हजार; श्री मल्ली जीननी त्रण लाख ने शित्तेर हजार. श्री मुनिसुव्रत जिननी त्रणला

ख ने पचाश हजार, श्री नमि जिननी त्रण लाख ने अम्रतालीश हजार, श्री नेमि जिननी त्रण लाख ने छत्रीश हजार, श्री पार्श्व जिननी त्रण लाख ने ओगणचालीश हजर, अने श्रीवीर जिननी त्रण लाख ने अढार हजार, ए रीते चोवीश जिनेंद्रोनी श्राविकाओनु प्रमाण कह्यु ॥ २७४ ॥ पचीशमो द्वार पूरो थयो

अवतरण – हवे 'जिण जक्खत्ति' सर्व तीर्थंकरोना यक्षोना नामोनो छवीशमा द्वार कहे छे – मूल – जक्ख गोमुह मह जक्ख तिमुह ईसर सतंबरू कुसुमा, मायंगो विजया जिय, बंभो मणुउंसुरकुमारो ॥ ३७५ ॥ छम्मुह पयाल किन्नर, गुरुम्हो गंधव तहय जक्खिंदो कूबर वरुणो भिउडी, गोमेहो वामण मयंगो ॥३७६ अर्थ – जक्खिनेविषे दक्ष एवा तीर्थंकरोना यक्ष तेमा प्रथम श्री आदि जिनेंद्रना गोमुख नामे यक्ष तेनो सुवर्णना जेवो वर्ण कह्यो छे गज वाहन, चार भुजाउं, वराक्ष मालिका युक्त, बे दक्षिण हस्तोनेविषे मातुलिंग अने बे वाम हस्त पाशकान्वित छे श्री अजित जिननो महा नामनो यक्ष, तेना चार मुख, श्यामवर्ण, गजेंद्र वाहन, आठ हाथ , वरद मुद्गराक्ष सूत्र पाशक अन्वित दक्षिण दिशाना चार हाथ अने वाम दिशाना चार हाथो बीजपूरक अभय अंकुश शक्तियुक्त जाणवा श्रीसंभव जिनना यक्षनु नाम त्रिमुख, तेना त्रण मुख छे, त्रण नेत्र, श्याम वर्ण, मयूर वाहन, छ भुजाउं तेमा नकुल गदाभय युक्त, दक्षिण कर कमल त्रय , अने मातुलिंग नागाक्षसूत्रयुक्त वामपाणिपद्मत्रय जाणवा श्री अभिनंदन जिनना यक्षनु नाम ईश्वर, श्याम कांति, गजवाहन, चार भुजाउं, तेमा दक्षिणना करकमलद्वय मातुलिंगाक्षसूत्रयुत अने वामपाणिद्वय नकुलांकुशान्वित जाणवा• श्रीसुमति जिनना यक्षनु नाम तुंबरु, श्वेतवर्ण, गरुड वाहन चार भुजाउं, तेमा दक्षिणना बे हाथ वरद शक्ति युक्त, अने वामपाणिद्वय गदानागपाश युक्तजाणवा श्री पद्मप्रभ जिनना यक्षनु नाम कुसुम, नीलवर्ण, कुरंग वाहन, चतुर्भुजा, तेमां दक्षिणनी बे फलाभय युक्त, वाम दिशानी बे नकुलाक्षसूत्रयुक्त कही छे श्री सुपार्श्व जिनना यक्षनु नाम मातंग, नील वर्ण, गजवाहन, चतुर्भुजा, तेमांनी बे दक्षिण भुजा बिल्वपाशयुक्त अने बे वाम भुजाउं नकुलांकुश युक्त छे श्रीचंद्रप्रभ जिनना यक्षनु नाम विजय, हरित वर्ण, त्रण लोचन, हंसवाहन, चार भुजाउं तेमा दक्षिणनी बेमा चक्र तथा वाम बाजुनी बेमा मुद्गल छे एम जाणवु श्री सुविधि जिनना यक्षनु नाम अजित, श्वेतवर्ण, कूर्म वाहन, चार हाथ, तेमा दक्षिणना बे मातुलिंगाक्षसूत्रयुक्त, अने वाम हस्तद्वय नकुल कुंतकालयुक्त जाणवा श्रीशीत

ल जिनना यक्षनुं नाम ब्रह्मा, एनां चार मुख. त्रण नेत्र, सितवर्ण पद्मासन, अ
ष्ट भुजाउ तेमां दक्षिण पाणि चतुष्टय मातुलिंग मुजर पाशका नय युक्त, तथा
वाम पाणि चतुष्टय नकुल गदा कुशाक्ष सूत्रयुक्त जाणवा. श्रीश्रेयांस जिनना य
क्षनुं नाम मनुज, मतांतरे ईश्वर नाम पण कहेलुं छे. धवल वर्ण, त्रण नेत्रो, वृष
न वाहन, चतुर्भुजा, तेमां दक्षिण पाणिद्वय मातुलिग गदायुक्त तथा वाम पाणि
द्वय नकुलाक्ष सूत्रयुक्त जाणवा. श्रीवासुपूज्य जिनना यक्षनुं नामअसुर कुमार,
श्वेत वर्ण, हंसवाहन, चतुर्भुजा तेमां दक्षिण पाणिद्वय मातुलिंग वाणान्वित
तथा वाम पाणिद्वय नकुल धनुर्युक्त कह्या छे. श्री विमल जिनना यक्षनुं नाम
षण्मुख, श्वेतवर्ण, शिखि वाहन, द्वादश भुजा, तेमां दक्षिण पाणिषट्क फल
चक्र वाण खड्ग पाशाक्ष सूत्रयुक्त अने वाम पाणीषट्क नकुल चक्र धनु फलक
अंकुश ने अनय युक्त जाणी लेवां. श्रीअनंत जिनना यक्षनुं नाम पाताल, त्रण
मुख, रक्त वर्ण, मकर वाहन, छ भुजाउ, तेमां दक्षिण पाणित्रय पद्म, खड्ग तथा
पाशयुक्त अने वाम पाणित्रय नकुल तथा फलकाक्ष सूत्र युक्त जाणवां. श्रीधर्म
जिनना यक्षनुं नाम किन्नर, त्रण मुख, रक्तवर्ण, कूर्मवाहन, छ भुजाओ तेमांनी
दक्षिण त्रण वीज पूरक गदा तथा अनय युक्त अने वाम भुजा त्रण नकुल प
द्माक्ष नानायुक्त जाणवी. श्रीशांतिनाथ जिनना यक्षनुं नाम गरुम, वराह वाह
न, क्रोड वदन, श्याम रुचि. चार भुजा तेमां दक्षिणकरद्वय वीज पूरकने पद्म
युक्त अने वामकरद्वय नकुल अने अक्षयुक्त छे. श्रीकुंथुजिनना यक्षनुं नाम गं
धर्व, श्यामवर्ण. हंस वाहन, चतुर्भुज तेमां दक्षिण बे पाणिमां वरद ने पाशक
छे; अने वाम बे हाथमां मातुलिग ने कुश छे. अरजिनना यक्षनुं नाम यक्षेंद्र,
छ मुख, त्रण नेत्र, श्यामवर्ण, शंख वाहन, वार भुजा तेमां दक्षिण हाथ, वीज
पूरक वाण खड्ग मुजर पाशक ने अनय युक्त छे; अने वाम हाथ, नकुल धनु
फलक शूल अंकुश अक्ष सूत्र युक्त छे. श्री मल्लिजिनना यक्षनुं नाम कूबर चार
मुख. इंद्रायुध वर्ण. गज वाहन. अष्ट भुजा तेमां दक्षिण हाथमां वरद परशु शू
ल ने अनय ने अने वाम हाथमां वीजपूरक शक्ति मुजर अक्षसूत्र ने अनय छे.
कोई कूबरने वदले कुबेर पण कहेछे. श्रीमुनिसुव्रतना यक्षनुं नाम वरुण, चतु
र्मुख. त्रण नेत्र, श्वेत वर्ण, वृषभ वाहन, जटामुकुट भूषित. आठ भुजा तेमां
दक्षिण हाथमां वीजपूरक गदा वाण शक्ति छे अने वाम हाथमां नकुल पद्मधनु
परशु छे. श्री नमिजिनना यक्षनुं नाम भृकुटी चार मुख, त्रण नेत्र. सुवर्णवर्ण

वृषभ वाहन, आठ भुजा तेमा दक्षिण करमा बीजपूरक शक्ति मु
अने वाम करमा नकुल परशु वज्र ने अक्षसूत्र छे श्री नेमिजिन
गोमेधो, त्रण मुख श्याम कांति, पुरुष वाहन, छ भुजा तेमा द
मातुलिंग परशु अने चक्र छे, अने वाम हाथमां नकुल शूल ने
पार्श्वजिनना यक्षनु नाम वामन. मतातरे पार्श्व पण नाम छे गज
ना मणिन मस्तक, श्याम वर्ण, कूर्म वाहन, चतुर्मुख, बे भुजा तेमा
मां बीजपूरक सर्प छे अने वाम हाथमा नकुल सर्प छे श्रीमहावीर
यक्षनु नाम मातंग, श्यामवर्ण, गज वाहन, बे भुजा तेमां दक्षिणकरम
वाम करमां बीजपूरक छे ॥ २०६ ॥ ए छवीशमो द्वार कह्यो
अवतरण – हवे 'जिणदेवीओ' जिन देवी एटले जे तीर्थंकरोनी
शासनाधिष्ठायिका तेओनां नामोना सत्यावीशमो द्वार कहेछे –
मूल – देवीओ चक्केसरि, अजिआ दुरिआरि कालि महकाली, अ
[illegible], सुतारया साय [illegible] ॥ २०७ ॥ पवर विजयंकुसा पन्न पत्ति
[illegible] धरणी, वइरुट्ट छुत्त गधारि अब पउमावई सिद्धा ॥ २०८ ॥
टीका श्री आद जिननी देवीनु नाम चक्केश्वरी मतांतरे सणा अप्रतिचक्रा सुवर्ण
गरुड वाहन आठ भुजा, दक्षिण हाथमा वरद बाण चक्र ने पाश छे अने
वाम धनुष वज्र चक्र ने अंकुश छे श्री अजित जिननी देवीनु नाम अजि
[illegible] वर्ण लोहासनाधिरूढ, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमा वरद ने पाशक छे, अ
वाम हाथमां बीजपूर ने अंकुश छे श्री संभव जिननी देवीनु नाम दुरितारि, [illegible]
वर्ण [illegible] वाहन, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां वरद ने अक्षसूत्र छे अने वाम
[illegible] फल ने अभय छे श्रीअभिनंदन जिननी देवीनु नाम काली श्याम वर्ण, पद्म
[illegible] चतुर्भुजा दक्षिण हाथमा वरद ने पाश अने वाम हाथमां नाग ने [illegible]
[illegible] छे श्री सुमति जिननी देवीनु नाम महाकाली सुवर्ण वर्ण पद्मासन चतुर्
दक्षिण हाथमां वरद ने पाश अने वाम हाथमा मातुलिंग ने अंकुश छे श्री [illegible]
प्रभ जिननी देवीनु नाम अच्युता, मतांतरे श्यामा नाम पण छे श्याम [illegible]
नर वाहन चतुर्भुज दक्षिण हाथमां वरद ने बाण अने वाम हाथमां धनु
ने अभय छे श्री सुपार्श्व जिननी देवीनु नाम शांता, सुवर्णवर्ण गज वाहन [illegible]
[illegible] दक्षिण हाथमा वरद ने अक्षसूत्र छे अने वाम करमां शूल ने अभय छे [illegible]
चद्रप्रभ जिननी देवीनु नाम ज्वाला, मतांतरे भृकुटी नाम पण छे [illegible]

राजकाख्य जीव विशेष वाहन. चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां खड्ग ने मुद्गर अने वाम हाथमां फलक अने परशु छे. श्री सुविधि जिननी देवीनुं नाम सुतारिका, गौर वर्ण, वृषभ वाहन. चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां वरद ने अक्षसूत्र छे अने वाम करमां कलश ने अंकुश छे. श्री शीतल जिननी देवीनुं नाम अशोका. नीलवर्ण. पद्मासन. चतुर्भुज; दक्षिण हाथमां वरद ने पाश छे अने वाम हाथमां फलक ने अंकुश छे. श्री श्रेयांस जिननी देवीनुं नाम श्रीवत्सा, मतांतरे मानवा नाम पण छे. गौर वर्ण. सिंह वाहन. चतुर्भुज. दक्षिण बे हाथोमां वरद अने मुद्गर छे अने वाम बे हाथोमां कलश ने अंकुश छे. श्री वासुपूज्य जिननी देवीनुं नाम प्रवरा, मतांतरे चन्द्रा पण नाम छे. श्यामवर्ण, अश्व वाहन, चतुर्भुज. दक्षिण बे हाथमां वरद ने शक्ति छे अने वाम हाथमां पुष्प ने गदा छे. श्रीविमल जिननी देवीनुं नाम विजया. मतांतरे विदिता, हरित वर्ण. पद्मासन. चतुर्भुज. दक्षिण बे हाथोमां बाण ने पाश अने वाम बे हाथोमा धनुष्य ने नाग छे. श्री अनंत जिननी देवीनुं नाम अंकुशा, गौरवर्ण. पद्मासन, चतुर्भुज; दक्षिण हाथमां खड्ग ने पाश छे अने वाम हाथमा फलक ने अंकुश छे श्रीधर्म जिननी देवीनुं नाम पन्नगा, मतांतरे कंदर्पा गौर वर्ण, मत्स्य वाहन. चतुर्भुज. दक्षिण हाथमां उत्पल ने अंकुश अने वाम हाथमां पद्म ने अभय छे. श्रीशांतिनाथ जिननी देवीनुं नाम निर्वाण. सुवर्ण कांति. पद्मासन, चतुर्भुज. दक्षिण हाथमा पुस्तक अने उत्पल, अने वाम हाथमां कमंडलु ने कमल छे. श्रीकुंथुजिननी देवीनुं नाम अच्युता, मतांतरे बला कनकछवि. मयूरवाहन चतुर्भुज. दक्षिण हाथमां बीजपूरक ने शूल अने वाम हाथमां मुषंढी ने पद्म छे. श्री अरजिननी देवीनुं नाम धारणी. नीलवर्ण, पद्मासन. चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां मातुलिंग ने उत्पल अने वाम हाथमां पद्म ने अक्षसूत्र छे. श्रीमल्लि जिननी देवीनुं नाम वैरट्या. कृष्णवर्ण. पद्मासन, चतुर्भुज दक्षिण हाथमां वरद ने अक्षसूत्र अने वाम हाथमां बीजपूरक ने शक्ति छे. श्री मुनिसुव्रत जिननी देवीनुं नाम अच्छुप्ता. मतांतरे नरदत्ता. कनकरुचि, भद्रासन चतुर्भुज. दक्षिण हाथमा वरद ने अक्षसूत्र अने वाम हाथमां बीजपूरक ने शूल छे. श्रीनमि जिननी देवीनुं नाम गांधारी. श्वेतवर्ण. हंस वाहन. चतुर्भुज. दक्षिण हाथमां वरद ने खड्ग अने वाम हाथमा बीजपूरक ने कुंत छे. श्रीनेमि जिननी देवीनुं नाम अंबा. कनककांति. सिंह वाहन, चतुर्भुज. दक्षिण हाथमां आम्रलुंबी ने पाश वाम हाथमां चक्र ने अंकुश छे. श्रीपार्श्व जिननी देवीनुं

नाम पद्मावती, कनक वर्ण, कुर्कुट सर्प वाहन, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमा पद्म ने पाश वाम हाथमा फल ने अंकुश छे श्री वीर जिननी देवीनु नाम सिद्धायिका, हरितवर्ण, सिंह वाहन, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमा पुस्तक ने अभय अने वाम हाथमा बीजपूरक ने वीणा छे, अत्र सूत्रकारे यक्ष अने देवीओना केवल नामज कह्या, पण नयन वदन वर्णादि स्वरूप कह्या नथी ते अमे शिष्यना हितने अर्थे निर्वाणकलिकादि शास्त्रानुसारे करी किंचित तदीय मुख, वर्ण, प्रहरणादिकनु स्वरूप कह्यु ॥ ३७८ ॥ ए सत्यावीशमो द्वार पूरो थयो

अवतरण – हवे 'तणुमाणत्ति' एटले तीर्थंकरोना शरीरोना प्रमाणनो अठ्ठावीशमो द्वार कहे छे – मूल – पंच धणुस्सय पढमो, कमेण पन्नासहीण जा सुविही दसहीणजा अणंतो, पचूणा जाव जिण नेमि ॥ ३७९ ॥ नव हत्थ पमाणो पास सामिओ सत्त हत्थ जिण वीरो, उस्सेह अंगुलेण, सरीरमाण जिण वराण ॥ ३८० ॥ अर्थ – श्री आद्य जिनना शरीरनुं प्रमाण पांच सें धनुष्य पछी श्री अजित जिनथी ते सुविधि जिन सुधि क्रमेकरी पचाश पचाश धनुष्य ओछु देहप्रमाण जाणवु एनो फलितार्थ – श्री अजित जिनना शरीरनु प्रमाण साडा चार सें धनुष्योनु, संभव चार सें धनुष्य, श्री अभिनंदन साडा त्रण सें, श्री सुमति जिन त्रण सें, श्री पद्मप्रभ जिन अढी सें, सुपार्श्व जिन बसें, श्री चंद्रप्रभ दोढ सें, श्री सुविधि जिन एक सो सुविधि नंतर अनंत जिनसुधी जेटला तीर्थंकरो छे, तेओना शरीरनु प्रमाण क्रमेकरी दश दश धनुष्य ओछु करवु एटले सुविधिजिनना शरीरना प्रमाणमांथी दश धनुष्यो ओछां कर्याथी शीतल जिनना देहनु मान नेवु धनुष्य छे श्रेयांस जिन एंशी, श्री वासुपूज्य जिन सित्तेर, श्री विमल जिन साठ, अनंतजिन पचाश, हवे अनंत जिन पछी नेमि जिनसुधि जेटला तीर्थंकरो छे, तेमना शरीरनु प्रमाण अनुक्रमे पांच पांच धनुष्य ओछु करवु जेम के, अनंत जिनना देहमानमांथी पांच धनुष्य ओछु कर्याथी श्री धर्म जिनना देहनु मान पिस्तालीश धनुष्य जाणवु श्री शांतिनाथ चालीश, श्री कुंथु पांत्रीश, श्री अरजिन त्रीश, श्री मल्लि जिन पचीश, श्री मुनिसुव्रत जिन वीश, श्री नमि जिन पंदर, श्री नेमि जिन दश, श्री पार्श्वजिनना शरीरनु प्रमाण नव हाथ अने श्री वीर जिनना शरीरनु प्रमाण सात हाथ जाणवु ए प्रकारे उत्सेधांगुलेकरी श्री जिनवरना शरीरनु प्रमाण जाणवु ॥ ३८० ॥ ए अठ्ठावीशमो द्वार पूरो थयो

अवतरण – हवे 'लंछणत्ति', एटले श्री तीर्थंकरोना लक्षणोनो ओगणत्रीशमो

द्वार कहेछे:— मूलः— वसह गय तुरय मक्कड, कुंचो कमलंच सत्थिउ चंदो; मयर सिरिवछ गंमय, महिस वराहो य सेणेय. ॥ ३८१ ॥ वज्जं हरिणो छगलो, नंदा वत्तो य कलस कुम्मो य नीलुप्पल संख फणी, सीहोअ जिणाण चिन्हाइं.॥३८२॥ अर्थः— वृषभ, गज, तुरंग, मर्कट, क्रौंच, कमल, स्वस्तिक, चंद्र, मकर, श्रीवत्स, गंमक, महिष, वराह, शीचाणो, वज्र, हरिण, छगल, नंदावर्त्त, कलश, कूर्म, नीलो त्पल, शंख, सर्प, सिंह, ए क्रमेकरी चोवीसे तीर्थंकरोनां चिन्ह जाणवां ॥ ३८२॥ ए उंगणत्रीशमो द्वार पूर्ण थयो.

अवतरणः— हवे 'वन्नाइत्ति' एटले तीर्थंकरोना वर्णनो त्रीशमो द्वार कहेछे:— मूल:— पउमाभवासुपुज्जा, रत्ता ससि पुप्फदंत ससिगोरा; सुव्वय नेमी काला, पासो मल्ली पियंगाभा. ॥ ३८३ ॥ वरतवियकणयगोरा, सोलस तिथ्थंकरा मुणे यव्वा; एसो वन्नविभागो, चउवीसाए जिणंदाण. ॥ ३८४ ॥ अर्थः—पद्मप्रभ ने वासुपूज्य ए बन्नेनो वर्ण जासूना फूलना जेवो रातो छे; श्रीचंद्रप्रभ ने सुविधिनो वर्ण चंद्रनी पठे गौर छे. श्रीमुनिसुव्रत ने नमिनो वर्ण इंद्रनील मणिना जेवो कृष्ण छे, श्रीपार्श्व ने मल्लिनो वर्ण प्रियंगुपुष्पना जेवो नील छे. एओना शिवाय बाकी रहेला शोल तीर्थंकरो तपावेला सुवर्णना जेवा वर्ण वाला जाणवा ए चो वीश तीर्थंकरोनो वर्णविभाग जाणवो. ॥ ३८४ ॥ ए त्रीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरण.— हवे 'वयपरिवारोत्ति' एटले जे तीर्थंकरे जेटला परिवारनी साथे दीक्षा लीधी ते व्रत परिवारनो एकत्रीशमो द्वार कहेछे.— मूलः— एगो भगव वीरो, पासो मल्ली य तिहि तिहि सएहिं; भगवंपि वासुपुज्जो, छहिं पुरिस सएहि निख्कंतो ॥ ३८५ ॥ उग्गाणं भोगाणं, रायन्नाणं च खत्तियाणं च; चउहि सहसेहि उसभो, सेसाउ सहस्स परिवारा. ॥ ३८६ ॥ अर्थः— तत्र एक श्री वर्द्धमान स्वामीए कोईनी साथे व्रत ग्रहण कर्युं नथी; भावथी तथा द्रव्यथी एक लाएज दीक्षा लीधी छे. श्री पार्श्वनाथ भगवान तथा श्री मल्लि जिन एमणे त्रण त्रण शो परिवारनी साथे दीक्षा लीधी छे. तेमां श्री मल्लि जिन स्त्रीउ तथा पुरु षो प्रत्येक त्रण त्रण शोनी साथे मली एटले छ शोनी साथे मली ने प्रव्रजित थ या छे, अने आ सूत्रकारे तो त्रण शोनी साथे दीक्षा लीधी एम कह्युं छे. तेमां के वल पुरुष अथवा स्त्रीउनुं ज ग्रहण करेलुं छे. बीजो पक्ष छतां पण कांई विच क्षा नथी एवो संप्रदाय छे. ए विषे स्थानांगटीकामां पण कह्युं छे के, मल्लि जि नं स्त्रिशतैरपि त्रिभिरिति' एटले मल्लि जिने त्रण शो स्त्रीउनी साथे दीक्षा लीधी

एत्तो जिणतराइ, वोछ किल उसभ सामिणो अजिउ, पन्नास कोडि लक्खे
राण समुप्पन्नो ॥३९५॥ तीसाइ सभव जिणो, दसहि अभिनदनो जिण वा
वहि सुमइ जिणिदो, उप्पन्नो कोडि लक्खेहि ॥३९६॥ नउई अ सहस्सेहिं,
वोलयाण पउमाभो, नवहि सहस्सेहि तउ, सुपास नामो समुप्पन्नो ॥३९
मी सएहि नवहि, जाउ चदप्पहो जिणाणदो, नउई सागर कोडिहि सु
जिणो देसिओ समए ॥३९७॥ सीयल जिणो महप्पा, तत्तो कोडीहि नवहि
हो, कोडीए सेअसो, कणाइ इमेण कालेण ॥३९९॥ सागर सएण एगे, ए त
गरहि वरिस लक्खेहि, छवीसाइ सहस्से,हि तउपरे अतरे सुत्ति ॥४००॥ च
न्ना अयरेहि, वसुपुज्ज जिणो जगुत्तमो जाउ, विमलो विमल गुणाहो, ती
हि अयरेहि रयरहिउ ॥४०१॥ नवहि अयरेहि णता, चउहि धम्मो य धम्म धु
धरजा, तिहि कणेहि सती, तिहि चउ भागेहि पलियस्स ॥४०२॥ भागेहि दा
कुथु, पलियस्स अरोउ एग भागेण, कोडि सहस्सूणेण, वासाण जिणेसरे न
उ ॥४०३॥ मल्ली तिसल्लरहिउ, जाओ वासाण कोडिसहस्सण चउपन्न वा
लक्खेहि सुव्वउ सुव्वउ सिद्धा ॥४०४॥ जाउ छहि नमि नाहो पचहि लक्खेहि
णवरो नेमि, पासो अड्ढछम सय, समहिय तेसीइ सहसेहि ॥४०५॥ अड्ढाइज्ज स
हि, गएहि वीरो जिणेसरो जाउ, दुसम अइ दूसमाए, दोएहवि इगवीस सहसेहि
॥४०६॥ पुव्वाइ कोडा कोडी, उसह जिणाओ इमेण कालेण भणिअ अतर दा
एप समयाणुसारेण ॥४०७॥ अर्थ –जिनना निर्वाण स्थान पछी जिनाना अत
दु कहु छु – श्री ऋषभ जिन पछी श्री अजित जिन पचास लाख कोडी सागर
म काल गया पछी समुत्पन्न एटले सिद्ध थया पण समुत्पन्न एटले उत्पन्न थया
एवो अर्थनथी, अही ऋषभ सामी इत्यादि पदोनेविषे अवव्यर्थ पचमी त
अपरि बे प्रकारना छे अभिविधि ने मर्यादा तेमा जो अभिविधिनविष पचमी
गमोने समुत्पन्न ए शब्दना जात एटले थयो एवो अर्थ करिये ता ऋषभ सामि
ना जन्म कालथी यथाक्त अजितादिना जन्म कालनु मान थाउ तथी ऋषभ सा
मिना सर्व कालमानथी अधिक इ पम सुषमारकना नेवाश। पक्ष बाकी रह्या वर्त
श्री महावीर स्वामीनी उत्पत्ति प्रसक्त थशे, अने आगममा ता अन्यूनाधिक न
थ्यासी पक्ष बाकी छतां श्री महावीर स्वामीनी सिद्धि कही छे माटे आगम विरो
समग आवशे तेथी अही अभिविध्यर्थक पचमी नथी किंतु मर्यादानविष छे न
मा पण समुत्पन्न एटने जात एवा अर्थ कर्या ता यथोक्त जिनातर कालमान था

तेज चतुर्योगिक परिपूर्ण थायछे. वली अजितादि जे त्रेवीश तीर्थंकर छे तेओनुं सर्व आयुष्य कालमान जिनांतर कालने करी अंतर्गृहीतत्व छे. ते माटे अधिक थाय छे. तेथी आगल आववानी जे उत्सर्पिणी तेनेविषे महावीरनी उत्पत्ति प्रसक्त थशे ते कांई इष्ट नथी ते माटे ऋषभ स्वाम्यादि निर्वाणथी यथोक्त कालथी अजितादि तीर्थंकर समुत्पन्न एटले सिद्ध थया एवुं व्याख्यान करवुं अन्यथा करवुं नही. तथा अजितना निर्वाणथी त्रीश लक्ष कोटी सागरोपम गया पछी संभव जिन सिद्ध थया, संभव जिननी पछी दश लक्ष कोटी सागरोपम गया पछी अभिनंदन मुक्त थया. अभिनंदन जिननी पछी नव लक्ष कोटी सागरोपम गया पछी सुमति जिनेंद्र मुक्त थया सुमति जिननी पछी नेवु सहस्र कोटी सागरोपम गया पछी पद्मप्रभ जिन मुक्त थया. पद्मप्रभ जिन पछी नव सहस्र कोडी सागरोपम गया पछी सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर निर्वाण पाम्या सुपार्श्व जिन पछी नवशे कोडी सागरोपम गया पछी चंद्रप्रभ जिन जनने आनंद करनार सिद्ध थया. चंद्रप्रभ जिन पछी नेवु कोडी सागरोपम गया छतां सुविधि जिन सिद्धांतनेविषे सिद्धत्वे करी कहेलुं छे. सुविधि जिन पछी नव कोडी सागरोपम गया पछी शीतल महात्मा मुक्तपणे कह्या छे. शीतल जिन पछी एक कोडी सागरोपममां एक शो सागरोपम तथा छासठ लाख ने छवीस हजार वर्ष ऊणा करिये एटलो काल गया पछी श्रेयांस सिद्ध थया. श्रेयांस जिन पछी चोपन सागरोपमानंतर वासुपूज्य जिन जगत्त्रयमां उत्तम थया. वासुपूज्य जिन पछी त्रीश सागरोपमानंतर विमल जिन सिद्ध थया. निर्मल गुण सहित अने कर्म रजवध्यमान रहित एवा विमल जिन पछी नव सागरोपमानंतर अनंत जिन सिद्ध थया. अनंत जिननी पछी चार सागरोपमानंतर धर्मनाथ सिद्ध थया. धर्मनी धुर उपाडवाने उत्तम वृषभ समान जे धर्मनाथ जिन, तेमनी पछी एक पल्योपमना चार भाग कस्याथी तेवा त्रण भाग ऊणा त्रण सागरोपमानंतर (एटले त्रण सागरोपममां पोणो पल्योपम ओछो करिये एटलो काल समजवो) शांतिनाथ जिन शिवश्री पाम्या. शांति जिन पछी अर्द्ध पल्योपमानंतर श्री कुंथुजिन निवृत्त थया. कुंथुजिनथी पल्योपमनो चोथो भाग तेमां कोटि सहस्र वर्ष ओछो काल गयानंतर श्री अरजिन सिद्ध थया. अरजिन पछी कोटि सहस्र वर्ष गयानंतर त्रिशल्य रहित मल्लि जिन सिद्ध थया. मल्लि जिन पछी चोपन लाख वर्ष गया नंतर श्री मुनिसुव्रतजिन एटले शोभनिक छे व्रत जेनां ते सिद्ध थया. सुव्रतजिन पछी छ लाख वर्ष गयानंतर नमिनाथ सिद्ध थया. नमिनाथ जिन पछी पांच लाख वर्ष गयानंतर नेमिनाथ जिन सिद्ध थया.

नेमिनाथ जिन पछी त्र्यासी हजार अने साडासातसें वर्ष गयानतर श्री पार्श्व
जिन सिद्ध थया श्रीपार्श्वजिन पछी अढीसें वर्ष गयानतर श्रीवीर जिन सिद्धता
ने पाम्या अही त्रीजा आराने विषे नेव्याशी पक्ष अपरिपूर्ण आदिनाथ सिद्ध
थया अने श्रीमहावीर नेव्याशी पक्ष ऊणा चोथा आरामा सिद्ध थया ए प्र
माणे चतुर्थ आरक काळमान सर्व जिनानतर काळ संवृत थयो ते चोथो आरो
बेतालीस हजार वर्ष न्यून कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण छे तेने पाचमो दुःषम
तथा छठ्ठो अतिदुःषम ए बन्ने आराना बेतालीस हजार वर्ष सहित करिये तेवार एक को
डा कोडी सागरोपम थायछे ॥४०७॥एवी रीते सिद्धातानुसारे अतराय द्वार कह्यो
अवतरण – हवे प्रसगातरे करी सर्व तीर्थंकर चक्रवर्त्ती, अने वासुदेवो एओ
नो अतर ज तीर्थंकरना काळमा अथवा आतरे जे चक्रवर्त्ति अने वासुदेव थया
छे ते तथा तेउना शरीरनु प्रमाण अने ते सर्वनो आयु कहे छे – मूळ – बत्तीस
घरयाइ काउ तिरियाय पाहि रेहाहि, उड्ढाय पाहि काउं, पच घराइ तउ पढमे
॥४०८॥ पन्नरस जिणनिरतर, सुण्ण दुग ति जिण सुन्न तियगच, दो जिण सुण्ण जि
णदा सुण्ण जिणो सुण्ण दोन्नि जिणा ॥४०९॥ चिंडञ्च पतिठ्वणा –दो चक्कि सुन्नि
तेरस पण चक्की सुण्ण चक्कि दो सुण्णा, चक्की सुण्ण दु चक्की, सुण्ण चक्की दुसुण्ण
च ॥४१०॥ तईय पतिठ्वणा – दस सुन्न पच केसव, पण सुन्न केसि सु
न, केसी य सुण्ण केसव दोय, सुन्न दुग केसव ति सुन्न ॥४११॥ स
रीरमानि द्वारा – पचसय उसहाण दाहिवि, चउत्त पच धणुसए हुती, अ
द्ध सयाण हाहवि, जाव चारि अद्ध च ॥४१२॥ पन्नास पन्नास,
धणु दसहाणी जिणाण तेरस पर, ता जाव पुप्फदतो, धणु सय मेग स
भसा ॥४१३॥ नउइ धणु सीयलस्सा, सेज्जस तिविठमाइण पुरओ, ज
सास दुपिसमेसा, अवस तेसिम हाइ ॥४१४॥ कमसा असीइ सत्तरि, सट्ठी
पन्नास तहय पणयाला, एग हवति धणुआ, बापालद्ध चमयस्स ॥४१५॥
इगयाल धणुस्सद्ध, सणकुमारस्स चक्कवट्टिस्स, सतिस्स य चत्ताला, कुथु ति
ण्डस्स पणतीसा ॥४१६॥ तीस धणूणि अरस्सउ, गुणतीस पुरिसपुड
अस्स, अट्ठवीस सुभमे, छवीस धणूणि दत्तस्स ॥४१७॥ मल्लिस्स प
णवीसा, वीस य धणूणि सुव्वए चक्के, नारायणस्स सोलस, पनरस नमिस
स जिणिदे ॥४१८॥ बारस जय नामस्सा, नेमी कण्हाण दस धणूयन
णु अट्ठ य बभदत्ते, नव रयणीओ य पासस्स ॥४१९॥ वीरस्स सत्त रयणी अद्धर

भणिअ माउअ अट्ठणा ; पंचम घरय निदिठे, कमेण सव्वेसि वोच्छामि.॥ ४२० ॥ उसह भरहाण दोणहवि, चुलसीई पुव्व सय सहस्साई ; अजिय सगराण दोण्हवि, बावत्तरि सय सहस्साउ. ॥ ४२१॥ पुण्णो जहक्कमेणं, सठीपन्नास चत्त तीसाया; वीसा दस दो चेवय, लरकंगे चेव पुव्वाणं ॥ ४२२॥ सेज्जंस तिविठ्ठणं, चुलसीई वास सय सहस्साई; पुण्णो जिण केसीणं, धम्मोजा ताव वुच्छमिणं.॥ ४२३ ॥ कमसो बावत्तरि सठि तीस दस चेव सय सहस्साई; मघवस्स चक्किणो पुण, पं चेवयं वास लरकाइं. ॥ ४२४ ॥ तिन्निय सणकुमारे, संतिसय वास लरक मेगं तु ; पंचाणउइ सहस्सा, कुंथुस्सविआउअं भणिअं. ॥ ४२५ ॥ चुलसीइ सहस्साइं, आउअं होइ अर जिणंदस्स ; पणसठि सहस्साइं, आउं सिरि पुंडरीयस्स. ॥४२६ सठि सहस्सा सुभुमे, छप्पन्न सहस्स हुंति दत्तस्स; पणपन्न सहस्साइं. मल्लिस्सवि आउअं भणिअं. ॥४२७॥ सुव्वय मह पउमाणं, तीस सहस्साउ आउअं भणियं वारस वास सहस्सा, आऊ नारायणस्स भवे. ॥ ४२८॥ दस वास सहस्सा ई, नमि हरिसेणाण हुंति दोण्हंपि ; तिन्नेव सहस्साइं, आउं जय नाम चक्किस्स. ॥ ४२९ ॥ वास सहस्सो आउं, नेमी कण्हाण होइ दोण्हंपि , सत्तय वास सयाइं चक्कीसर बंभदत्तस्स. ॥ ४३० ॥ वास सयं पासस्स य, वासा बावत्तरीच वीरस्स इय बत्तीस घराई, समय विहाणेण भणिआइ. ॥ ४३१ ॥ व्याख्या.– अही प्रज्ञा पके करी आलेखना उपदर्शनने अर्थे सूत्र कर्त्ता पोते स्वमुखे पटिका एटले कोष्ट कनी स्थापना करवानी रीत बतावेछे. प्रथम तिर्यक् एटले आडी तेत्रीश लीटी क रीने तेना बत्रीश घर करवां. पछी ऊभी छ लीटीओ करी तेनां पांच गृह करवां. ते पांच गृहमांना पहेला गृहमां तेम आडा बत्रीश गृहमाना पण पहेला गृहमां ऋप भ जिननुं नाम लखवुं, एम प्रत्येक आडा घरमां अनुक्रमे तीर्थंकरोनां नामो ल खतां धर्म जिनसुधी पंदर नामो लखवां. त्यार पछी शोलमां अने सत्तरमां ए बे घर मां बे शून्यो मूकवां, त्यांथी त्रण गृहोमां शांतिनाथ, कुंथु अने अरजिन ए त्रणनां नाम लखवां. त्यांथी त्रण घरोमा त्रण शून्यो मूकवां. त्यांथी बे गृहोमां क्रमे करी मल्लि अने सुव्रत ए बे जिनोनां नामनी स्थापना करवी, त्याथी एकगृहमां शून्य मूकवुं. त्यांथी एक गृहमां नमि जिननुं नाम लखवुं; त्यांथी एकग्रहमां शून्य मूकवुं; त्याथी एक गृहमां नेमि जिननुं नाम लखवुं, तेनी बाजूना घरमां शून्य मूकवुं ; त्यार पछी बे गृहने विषे अनुक्रमे पार्श्वजिनने वीर जिनना नामोनी स्थापना करवी ए प्र थम पंक्तिनी स्थापना कही हवे बीजी पंक्तिनी स्थापना कहे छे'– तत्र प्रथमना

नमिनाथ जिन पछी च्यासी हजार अने साडासातसे वर्ष गया
जिन सिद्ध थया श्रीपार्श्वजिन पछी अडीसे वर्ष गयानतर श्रीवी
न पाम्या अही त्रीजा आरानेविषे नेव्याशी पक्ष अपरिपूर्ण था
थया अने श्रीमहावीर नेव्याशी पक्ष ऊणा चोथा आरामा सिद्ध
माणे चतुर्थ आरक कालमान सर्व जिनानतर काल सवृत थयो ते
बेतालीस हजार वर्ष न्यून कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण छे तेने प
तथा त्रण अनिष्ट सम ए त्रणे आराना बेतालीस हजार वर्ष सहित करिये
ए कोटी सागरोपम थायछे ॥४०७॥एवी रीते सिद्धांतानुसारे अतराय
ग्रंथातरथी – हवे प्रकारांतरेकरी सर्व तीर्थंकर चक्रवर्त्ती, अने वासु
ना अतर जे तीर्थंकरोना कालमा अथवा आतरे जे चक्रवर्त्ति अने वा
छे ते तथा तेउना शरीरनु प्रमाण अने ते सर्वनो आयु कहे छे – मूल
चउपाइ दोन्नि पाय पाहि रेहाहि, उड्ढाय पाहि काउ, पच घराइ त
॥४०८॥ पढमस्स निणनिरतर, सुन्न डुग ति जिण सुन्न तियगच, दो जिण
नतर, दस चक्की सुन्न चक्कि दो सुण्णा, चक्की सुण डु चक्की, सुम्म चक्की
॥ ४१० ॥ तइय पतिछरणा – दस सुन्न पच केसव, पण सुन्न के
सु पति छरणा – उसह नरहाण दाणहति उच्चत्त पच धणुसए हुत
निय मग्गाण छाहति, उच्चत्त चारि अड्ढ च ॥ ४१२ ॥ पन्नास
धणु दुन्निसयाणी जिणाण तेण पर ता जाव पुप्फदंता, धणु सय मेग
॥ ४१३ ॥ नउइ धणु सीयलस्सा सेजस तिविठमाइण पुरओ
धम्म दुन्निसयाडा, उच्चत्त तसिस हाउ ॥ ४१४ ॥ कमसो असीइ सत्तरि स
सुन्नर नउइ पणयाला, पण इयति धणुआ वापानह चमनरस्स ॥ ४१५
इच्चस्स धणुरुद्ध, सणकुमारस्स चक्कवट्टिस्स, सतिस्स य चत्ताना कुथु
स्सहस्स पन्नतीसा ॥ ४१६ ॥ तीस धणूणि अरस्सउ, गुणतीस पुरिसपुंडरी
यस्स अट्ठावीस सुभूमे, छवीस धणूणि दत्तस्स ॥ ४१७ ॥ मल्लिस्सय
पन्नीस वीस य धणूणि सुव्वय पउमे, नारायणस्स साउस पन्नरस नमिस्स
इगविसे ॥ ४१८ ॥ बारस जय नामस्सा, नमी हत्थाण दस धणुसन सत
नेउ हर हंसे नव रयणीओ य पासस्स ॥ ४१९ ॥

नणिअ माउअ अहूणा ; पंचम घरय निदिठे, कमेण सवेसि वोछामि.॥ ४२० ॥ उसह नरहाण दोएहवि, चुलसीई पुव्व सय सहस्साइं ; अजिय सगराण दोएहवि, वावत्तरि सय सहस्साइ. ॥ ४२१॥ पुरओ जहक्कमेणं, सठी पन्नास चत्त तीसाया; वीसा दस दो चेवय, लस्केगे चेव पुव्वाणं ॥ ४२२॥ सेज्जंस तिविहूणं, चुलसीई वास सय सहस्साइं; पुरओ जिण केसीणं, धम्मोजा ताव तुल्लमिणं.॥ ४२३ ॥ कमसो वावत्तरि सठि तीस दस चेव सय सहस्साइं; मघवस्स चक्किणो पुण, पंचेवयं वास लस्काइं. ॥ ४२४ ॥ तिन्निय सणंकुमारे, संतिसय वास लस्क मेगं तु ; पंचाणवइ सहस्सा, कुंथुस्सविआउअं नणिअं. ॥ ४२५ ॥ चुलसीइ सहस्साइं, आउअं होइ अर जिणंदस्स ; पणसठि सहस्साइं, आउं सिरि पुंमरीयस्स. ॥४२६ सठि सहस्सा सुनुमे, ठप्पन्न सहस्स हुंति दत्तस्स; पणपन्न सहस्साइं. मल्लिस्सवि आउअं नणिअं. ॥४२७॥ सुव्वय मह पउमाणं, तीस सहस्साइ आउअं नणियं वारस वास सहस्सा, आउ नारायणस्स नवे. ॥ ४२८॥ दस वास सहस्साइं, नमि हरिसेणाण हुंति दोएहंपि , तिन्नेव सहस्साइं, आउं जय नाम चक्किस्स. ॥ ४२९ ॥ वास सहस्सो आउं, नेमी कराहाण होइ दोएहंपि ; सत्तय वास सयाइं चक्कीनर बंनदत्तस्स. ॥ ४३० ॥ वास सयं पासस्स य, वासा वावत्तरीच वीरस्स इय वत्तीस घराइ, समय विहाणोण नणिआइ ॥ ४३१ ॥ व्याख्या:– अही प्रज्ञापकं करी आलेखना उपदर्शनने अर्थे सूत्र कर्त्ता पोते सम्मुखे पटिका एटले कोष्टकनी स्थापना करवानी रीत वतावेछे. प्रथम तिर्यक् एटले आडी तेत्रीश लीटी करीने तेना वत्रीश घर करवां. पछी ऊभी छ लीटीओ करी तेनां पांच गृह करवां. ते पांच गृहमांना पहेला गृहमां तेम आडा वत्रीश गृहमाना पण पहेला गृहमां ऋषन जिननुं नाम लखवुं, एम प्रत्येक आडा घरमां अनुक्रमे तीर्थंकरोनां नामो लखतां धर्म जिनसुधी पंदर नामो लखवां. त्यार पछी सोलमां अने सत्तरमां ए वे घरमां वे शून्यो मूकवां, त्यांथी त्रण गृहोमां शांतिनाथ, कुंथु अने अरजिन ए त्रणनां नाम लखवां. त्यांथी त्रण घरोमां त्रण शून्यो मूकवां. त्यांथी वे गृहोमां क्रमे करी मल्लि अने सुव्रत ए वे जिनोनां नामनी स्थापना करवी. त्यांथी एकगृहमां शून्य मूकवुं. त्यांथी एक गृहमां नमि जिननुं नाम लखवुं; त्यांथी एकग्रहमां शून्य मूकवुं; त्यांथी एक गृहमां नेमि जिननुं नाम लखवुं; तेनी वाजूना घरमां शून्य मूकवुं ; त्यार पछी वे गृहने विषे अनुक्रमे पार्श्वजिनने वीर जिनना नामोनी स्थापना करवी ए प्रथम पंक्तिनी स्थापना कही हवे वीजी पंक्तिनी स्थापना कहे छे.– तत्र प्रथमना

श्रेयांसने त्रिपृष्टादीयी लईने यावत् वर्द्धमान जिन ने पुरुषसिंह सुधी दे
चाईनुं प्रमाण अनुक्रमे आप्रमाणे छेः—अग्यारमां गृहनेविषे श्रेयांस जिन
ष्ट वासुदेव एओना देहनी उंचाईनुं मान ऐशी धनुष्योनुं जाणवुं; त्यांथी
गृहनेविषे वासुपूज्य जिन ने द्विपृष्ट वासुदेव ए बन्नेना शरीरनी उंचाईनुं
त्तेर धनुष्य; त्याथी तेरमा गृहनेविषे विमल जिन ने स्वयंभू वासुदेव ए ब
देहनी उंचाईनुं मान साठ धनुष्य; त्यांथी चौदमां गृहनेविषे अनंत जिन ने
म वासुदेव ए बन्नेना देहनी उंचाईनुं मान पचाश धनुष्य; त्यांथी पंदरमां
षे धर्म जिन ने पुरुषसिंह वासुदेव ए बन्नेना देहनी उंचाईनुं मान पिस्ता
नुष्य; तथा शोलमां गृहनेविषे मघवा चक्रवर्त्तिना देहनी उंचाईनुं मान
बेतालीश धनुष्य एटले बेतालीश धनुष्य ने बे हाथ; सत्तरमां गृहनेविषे
मार चक्रवर्त्तिना देहनी उंचाईनुं मान साडी एकतालीश धनुष्य; अढारमां
षे शांति जिनना देहनी उंचाईनुं मान पूरा चालीश धनुष्य; ओगणीशमां
षे कुंथु जिनेंद्रना देहनी उंचाईनुं मान पांत्रीश धनुष्य; वीशमां गृहनेविषे
जनना देहनी उंचाईनुं मान त्रीश धनुष्य; एकवीशमां गृहनेविषे पुरुषपुंडरीक
ना देहनी उंचाईनुं मान ओगणत्रीश धनुष्य; बावीशमा खाणामां सुभूम
र्तिना देहनुं मान अठ्यावीश धनुष्य; त्रेवीशमां खाणामां दत्तवासुदेवना दे
चाईनुं मान छवीश धनुष्य; चोवीशमां घरमां मल्लि जिनना देहनी उंचाईनुं
चीश धनुष्य; पचीशमां गृहनेविषे मुनिसुव्रत जिनने पद्मचक्रवर्त्तिना देहनी
मान वीश धनुष्य; छवीशमां गृहनेविषे नारायण वासुदेवना देहनी उंचा
न शोल धनुष्य; सत्यावीशमां गृहनेविषे नमिनाथ जिन ने हरिषेणचक्रीना
उंचाईनुं मान पंदर धनुष्य; अठ्यावीशमां खानामां जयचक्रवर्त्तिना देहनी
मान बार धनुष्य; ओगणत्रीशमा गृहनेविषे नेमिनाथ जिन ने कृष्ण वासु
देहनी उंचाईनुं मान दश धनुष्य; त्रीशमा गृहनेविषे ब्रह्मदत्त चक्रीना देह
ाईनुं मान सात धनुष्य; एकत्रीशमां गृहनेविषे पार्श्व जिनना देहनी उंचा
न नव हाथ, अने बत्रीशमा खाणामां श्री वीर जिनना देहनी उंचाईनुं
ात हाथनुं जाणवुं. एवी रीते प्रथम जिनादि सर्वनुं उंच्चत्व कह्युं; हवे
पंक्तिगृहक निविष्ट सर्व जिनादिकनुं क्रमे करी आयु कहुंछुं:— प्रथम खाणा
न जिन ने भरत चक्रवर्त्ति ए बन्नेनुं आयु चोराशी लक्ष पूर्व; बीजा गृहमां
जिन ने सगर चक्रवर्त्ति ए बन्नेनुं आयु बोतेर लक्ष पूर्व; एनी आगल य

था क्रमे [illegible] जिनोनु आयु साठ, पचाश, चालीश, त्रीश, वीश, [illegible]
[illegible] लक्ष पूर्व शीतल जिनसुधी छे ते आप्रमाणे – त्रीजा गृहमा [illegible]
आयु साठ लक्ष पूर्व, चोथा गृहमा अभिनंदन जिननु आयु पचाश ल[illegible]
[illegible] गृहनेविषे सुमति जिननु आयु चालीश लक्ष पूर्व, छठा गृहनेवि[illegible]
[illegible] जिननु आयु त्रीश लक्ष पूर्व, सातमा गृहनेविषे सुपार्श्व जिननु आयु वी[illegible]
[illegible] आठमा गृहनेविषे चंद्रप्रभ जिननु आयु दश लक्ष पूर्व, नवमां गृह[illegible]
[illegible] जिननु आयु बे लक्ष पूर्व, दशमा गृहनेविषे शीतल जिननु आयु [illegible]
[illegible] तथा अग्यारमां गृहनेविषे श्रेयांस जिननु आयु ने त्रिपृष्ट वासु[illegible]
[illegible] आगल तीर्थंकर, तथा वासुदेवो, जेओनु तुल्य तुल्य आ[illegible]
[illegible] – चोतेर साठ त्रीश ने दश लक्ष वर्ष एटले बारमां गृहनेवि[illegible]
[illegible] जिन ने द्विपृष्ट वासुदेव ए बन्नेनु आयु बोतेर लक्ष वर्ष, तेरमां गृ[illegible]
[illegible] जिन ने [illegible] वासुदेवनु आयु साठ लक्ष वर्ष, चौदमा गृह[illegible]
[illegible] जिनने पुरुषोत्तम वासुदेवनु आयु त्रीश लक्ष वर्ष, पंदरमां गृह[illegible]
[illegible] धर्म जिन ने पुरुषसिंह वासुदेवनु आयु दश लक्ष वर्ष तथा [illegible]
[illegible] मघवाचक्रिनु आयुष्य पांच लक्ष वर्षनु सत्तरमा गृहनेविषे सनत्कुमार
[illegible] आयु त्रण लक्ष वर्ष, अढारमा गृहनेविषे शांति जिन चक्रवर्तिनु आ[illegible]
[illegible] वर्ष ओगणीशमां गृहनेविषे कुंथुजिन चक्रिनु आयु पचाणु ह[illegible]
[illegible] गृहनेविषे अरजिन चक्रिनु आयु चोराशी हजार वर्ष,
[illegible] गृहनेविषे पुरुषपुंडरीक वासुदेवनु आयु पांसठ हजार वर्ष, [illegible]
[illegible] सुभूम चक्रीनु आयु साठ हजार वर्ष [illegible]
[illegible] आयु छप्पन हजार वर्ष चोवीशमा गृहनेविषे [illegible]
[illegible] हजार वर्ष, [illegible] गृहनेविषे मल्लि जिननु आयु [illegible]
[illegible] हजार वर्ष [illegible] गृहनेविषे मुनिसुव्रत जिन ने महापद्म चक्रीनु आयु
[illegible], [illegible] गृहनेविषे नारायण ते लक्ष्मण वासुदेवनु आयु [illegible]
[illegible] गृहनेविषे नमि जिन ने हरिषेण चक्रीनु आयु दश हजार व[illegible]
[illegible] जिन ने [illegible] चक्रीनु आयु त्रण हजार वर्ष ओगणत्रीशमा गृह[illegible]
[illegible] आयु [illegible] हजार वर्ष त्रीशमा गृहनेविषे [illegible]
[illegible] वर्ष, [illegible] एकत्रीशमा गृहनेविषे पार्श्वजिननु [illegible]
[illegible], [illegible] बत्रीशमा गृहनेविषे वीर जिननु आयु बोतेर वर्ष [illegible]
[illegible] विमान [illegible] तेनी स्थापना आ प्रमाणे -

हवे तिहांथकीज एटले जे तीर्थंकरनी वारमां तीर्थनो विछेद थयो ते कहेता छतां तेनो अंतर प्रमुख देखाडे छे.– मूल.–पुरिमंतिम अठठं, तरेसु तित्थस्स नत्थि वोछेओ; मन्झिलएसु सत्तसु, एत्तिय कालं तु वोछेओ ॥४३२॥ चउ भागं चउ भागो, तिन्नि य चउभाग पलिय चउभागो; तिन्नेव य चउ भागो, चउत्थ भागो य चउ भागो. ॥४३३॥ व्याख्या.– जेम चार आंगलीओना त्रण अंतरा थाय छे तेम अहीं चोवीश तीर्थंकरोना त्रेवीस अंतरा थाय छे तत्र पूर्वे श्री रुषभादि जिनथी ते सुविधिजिन सुधी नव तीर्थंकरोना संबंधे करी आठ आंतरा थायछे अने शांतिनाथ जिनथी लईने महावीर जिनना अंतसुधी नव जिनना संबंधे करी आठ आंतरा थायछे ए सोल अंतरानेविषे संघरूप तीर्थनो व्यवछेद थयो नथी पण 'मन्झिलएसुत्ति' एटले मध्यवर्त्ति सुविधि जिनथी लईने शांतिनाथ जिन पर्यंत आठ तीर्थंकरोना सात आंतरामां तीर्थनो व्यवछेद थयो छे ते आ प्रमाणे.– चउभागेत्यादि:– सुविधिथी ते शीतल जिनसुधी वचमांना आंतरानेविषे पल्योपमना चार भाग करवाथी तेमांना एक भाग जेटला कालसुधी तीर्थनो व्यवछेद थयो एटले अर्हद्धर्मनी वार्त्तानो पण नाश थई गयो. शीतल अने श्रेयांस जिनना आंतरानेविषे पल्योपमना चोथा भाग जेटला कालसुधी तीर्थनो विछेद थयो. श्रेयांस जिनने वासुपूज्य जिनना आंतरानेविषे पल्योपमना चार भाग संबंधी त्रण भाग जेटला कालसुधी तीर्थनो व्यवछेद थयो; वासुपूज्यने विमल जिनना आंतरानेविषे पल्योपमना चोथा भाग जेटला कालसुधी तीर्थनो व्यवछेद थयो. विमल ने अनंत जिनना आंतरानेविषे पल्योपम संबंधी चार भागमाना त्रण भाग जेटला काल सुधी तीर्थनो व्यवछेद थयो. अनंत ने धर्म जिनना आंतरानेविषे पल्योपमना चोथा भाग जेटला काल सुधी तीर्थनो व्यवछेद थयो. तथा श्री धर्मनाथने शांतिजिनना अंतरानेविषे पल्योपमना चोथा भाग जेटला कालसुधी तीर्थनो व्यवछेद थयो ए सर्व कालने एकठो करवाथी पोणा त्रण पल्योपम जेटलो काल थाय. ॥४३३॥ एनोज विशेष देखाडे छे.–मूलः– मुत्तूण दिठ्ठिवायं, हवति एक्कारसेव अंगाइ ॥ उसहाइजिणंतरेसु, उसह जिणदाउ जा सुविही ॥ ४३४ ॥ अर्थ.–उसह के० रुषभ जिनथी मांडीने जासुविही के० जावत् सुविधिनाथ सुधीना आठ आंतरानेविषे एक दृष्टीवादने मुत्तूण के० मूकीने बाकीना इग्यार अंग हवंति के० होय ॥ ४३४ ॥ मूलः– सत्तसुजिणंतरेसु, वोछिन्नाइं दुवालसंगाइ ॥ सुविहिजिणा जा संती, कालपमाणं कमेणेसिं ॥ ४३५ ॥ अर्थ.– श्री सुविधि जिन

थी मासीने श्री शांतिनाथ सुधी आठ तीर्थंकरना सात आंतरानेविषे अनुक्रमे पा वकरीते पोणत्रण पल्योपमना काल जेटला प्रमाणमा द्वादशांगीनो विछेद थयो छे ॥४३५॥ मूल – अट्ठसु जिणंतरेसु, वोछिन्नाई नहुति अंगाइ ॥ संतिजिणा जा वीर, वुछिन्नो दिठिवाउ तहि ॥ ४३६ ॥ अर्थ – श्री शांति जिनथी मांडीने याव त् श्री वीरजिन सुधीना आठ अंतरानेविषे अंगनो विछेद न थयो त्यां दृष्टिवाद नो विछेद थयो ॥४३६॥ हवे पूर्वगत केटलो काल रह्यो ते कहे छे – मूल – एग वास सहस्स, पुव्वगय वीरतित्थ अणुचिण ॥ सेसाण केसि सख, काऊमसख य केसिपि ॥ ४३७ ॥ अर्थ – श्री वीर जगवानना तीर्थनेविषे एक सहस्र वर्ष लगी पूर्व गत श्रुतनो अर्थ प्रवर्त्यो अने शेष तीर्थंकरोना शासनेनेविषे क्यांक संख्यातो काल प्रवर्त्यो क्यांक असंख्यातो काल प्रवर्त्यो ॥ ४३७ ॥ ए चार गाथाउं प्रदेश छे ए बत्रीशमो द्वार पूरो थयो

अवतरण – हवे दस असायणत्ति एटले दश आशातनानो साडत्रीशमो द्वार कहे छे – मूल – तंबोल पाण नोयण, वाणह थीजोग सुयण निठुवण, मुत्तुचा र जुय, वज्जे जिणमदिरस्संतो ॥ ४३८ ॥ व्याख्या – तांबूल पान प्रमुखनुं नह ण करवु, पाणी पीवु, नोजन करवु, उपानत् (जोडा पेरवा) स्त्रीनोग करवा, स पन एटले सुवु, निष्ठीवन एटले थूंक नाखवी, लघुनित करवी, वडीनित करवी, अने जूगारनुं रमवु, ए दश आशातना श्री वीतरागना जुवननेविषे विवेकी जने त्याग करवी ॥ ४३८ ॥ ए साडत्रीशमो द्वार पूरो थयो

अवतरण – हवे 'आसायणाउ चुलसीत्ति' एटले चोराशी आशातनानो आडत्रीशमो द्वार कहेछे – मूल – शार्दूलविक्रीडितछद – खेलि केलि कलि कला कुलजय, तंबोल मुग्गालय, गाली कगुलिया सरीरधुवण, केसे नहे लोहि य, जत्तोसं तय पित्त वंत दसणे विस्सामण दामण, दंत छी नह गंड नासिय सि रो, सोत छवीण मल ॥ ४३९ ॥ मंत मीलण लेखय विजजण जंडार दुठ्ठासण, छाणी कप्पड दालि पप्पड वडी विस्सारण नासण, अक्कंद विकह सरिछुघडण ते रिछ संठवण, अग्गीसेवण रंधण परिखण, निस्सीहिया जंजण ॥ ४४० ॥ छत्ता वाणह सत्थ चामर, मणोणेगत्त मन्नजण, सच्चित्ताणमचाय चाय मजिए दिठ्ठि नो अजलो, साडेगुत्तरसंगजग मउड मोलि सिरो सेहर, हुड्डा जिडुह गेडियाई रमण, जोहार जंमक्किय ॥ ४४१ ॥ रेकार धरण रण विवरण वालाण पल्हत्थिय, पाऊ पायपसारण पुमपुडी पक रयो मेहुण, जूया जेमण गुज्झ वेज्ज वणिज म

ऊं जघुम्मऌणं; एमाईयमवऌ कऌ मुजुऊ वऌे जिणिंदालए ॥ ४४२ ॥ अर्थः— आय के० ज्ञानादिकनो लाज तेनो शातयति के० विनाश थाय तेने आशातना कहियें ते कहेछेः—१ खेल एटले मुखश्लेष्म जिन मंदिरमां नाखवुं; २ केलि एट ले अनेक प्रकारनी क्रीडा करवी; ३ कलि एटले वचननो कलह करवो, ४ कला एटले धनुर्वेदादिक कलानो अभ्यास करवो; ५ कुललयं एटले महोमामांथी पाणीना कोगळा अथवा कुरला नाखवां; ६ तंबोल एटले पान सोपारीनु खावुं; ७ मुग्गालयं एटले तेनो उगल थूकवुं; ८ गाली एटले मुखथी चकार मकार बोलवुं गालनु काढवुं. ए कंगुलिया एटले लघुनीत अथवा वडीनीत करवी; १० सरीर धुवणं एटले शरीरनुं धोवुं प्रक्षालन करवुं; ११ केसे एटले वाल कतरावववा; १२ नहे एटले नख कतराव वा; १३ लोहियं एटले रुधिर नाखवु; १४ नत्तोसं एटले मिठाई प्रमुखनुं खावुं १५ तय एटले फोडा प्रमुखनी त्वचा कहाडीने नाखी देवी; १६ पित्त एटले औ षधादिकेकरी पित्तनुं कहाडी नाखवुं; १७ वंत एटले वमन करवुं. १८ दसण एटले दांत कहाडी नाखे अथवा समरावे; १९ विस्सामणं एटले अंगसंवाधन अथवा वीसामणनुं करवुं; २० दामणं एटले गाय तथा नेंस प्रमुखने बांधवुं; २१ दंत शब्दे दांतनुं मेल, २२ अढी शब्दे नेत्रोनुं मेल, २३ नह शब्दे नखोनुं मेल, २४ गंम शब्दे गंमस्थलोनुं मेल, २५ नासिय शब्दे नाशिकानुं मेल, २६ सि रो शब्दे माथानुं मेल; २७ सोत शब्दे श्रोत्र एटले कानोनुं मेल; २८ ठवीणं मलं एटले चामडीनुं मेल कतारीने प्रासादमां नाखवुं; २९ मंत शब्दे मंत्र एटले मंत्रेकरी नूतप्रेतादिकनुं कहाडवुं; अथवा राज्यादि कार्योनी मसलेहत करवी; ३० मीलण शब्दे काई विवाद कार्यने अर्थे वृद्ध पुरुषो वगेरे मलीने त्यां एकवा थवुं; ३१ लेखयं एटले व्यवहार संबंधी कागल पत्र लखवां; ३२ विनंजणं एटले दायादिकना विनाग करवा; ३३ नंमार एटले पोताना द्रव्यनो नंढार करी राखवो; ३४ दुष्ठा सणं एटले पग ऊपर पग मूकीने बेशवुं इत्यादि दुष्टासन करवुं; ३५ ठाणी एटले ठाणा करीने सूकववां; ३६ कप्पम एटले कपडां धोईने सूकववां; ३७ दालि एट ले मुगादिकनी दाल सूकववी; ३८ पप्पड एटले पापम वाटीने सूकववां; ३९ वडी एटले वडी करीने सूकववी; एटला वानाने विस्लारणं एटले सूकववुं अथ वा प्रसारवुं प्रमुख ते ठाणाथी लईने वडी पर्यंत जाणवुं; ४० नासण एटले ठा नी रीते छुपी रहेवु; ४१ अक्कंदं एटले पुत्र कलत्रादिकना वियोगथी रडवुं; ४२ विकहं एटले नाना प्रकारनी रमणीय स्त्री पुरुषोनी शृंगार प्रमुखनी विकथाउं एकां

त म्यल वमी करवी, ४३ तरिछु घमण एटले वाण घमवा अने शेर
मन सग्उ एवो पाठ दीगामा आवे त्या सर एटले वाण ने अठ
तेनु घडतु जाणवु, ४४ तेरिठ सगवण एटले तिर्यंच पशु पक्ष्यादिक रा
अग्गी संबण एटले टाढ प्रमुखना निवारणने अर्थे अग्नीनु सेवन करवु, ४
एटले रसोई प्रमुख करवु, ४७ परिखण एटले सुवर्णादिक पदार्थोनी प
णी, ४८ प्रवेश करतां समाचारी चतुरोए अवश्य निस्सीहि करवी जोइ
नग करवा, ४९ ठवो एटले ठव, ५० उवाणह एटले जोडा, ५१ सठ ए
ग, ५२ चामर एटला पदार्थो उपाश्रयथी बाहारे कहामी न मूकता म
शार नगनवा, ५३ मणाएगत्त एटले मनमा नाना प्रकारनी कल्पनाओ क
५४ मननाग एटले आगने तेलादिक लगाडवु मर्दनकरवु, ५५ सच्चित्ताणम
एटले तांबूल पुष्पादिक जे सचित्त पदार्थो तेओनो अत्याग, ५६ चाय म
एटले मुद्रिका हार प्रमुख रत्नादिक अजीव पदार्थोनो त्याग करे, जेथकी अ
यार थाय अन्य दर्शनी हासी करे भिक्षाचरनो धर्म कहे तेथी न मूकवां
हिडीठ एटले नगरतन दीठ अजली बद्ध न करे ५७ साडेयुत्तरसगत्तग ए
एक नीचे पहेरवानु वस्त्र अने एक उतरासण तेनो भग करवो अर्थात् तेम
करवु ५९ मउम एटले मस्तकनी ऊपर मुकुट धारण करवु, ६० मानि एटले
म.पा करवा एटा धारवा ६१ निगमेहर एटले माथानी ऊपर पुष्पादिक गुथन
करवा अथवा महग गाग ६२ टुहा एटले होड करवी ६३ तथा गेडियाय रमण
एटले रमो दाह रमन करवी दडायी रमवु ६४ जोहार एटले नवा मयाने जुन
रु करवु पित्रादिकने जोहार करवु ६५ नमक्किय एटले नाम चेष्टानु करवु अथवा
एटले वानी एउ रागमा हाय वानी वगाडवु वगेरे जे क्रिया करवीते ६६ रेका
एटले चाग्नाल रकादि तिरस्कारना शब्द बोलवा, ६७ धरण एटले धरणे नां
शु दवा गसनादि करवु ६८ रण एटले सग्राम करवा, ६९ विवरण वाना
एटले कन वीमारना फणी प्रमुखनु करवु ७० पल्हत्थिय एटले व गुवण वानीनी
बाध एकग करी सामामायी कानीत नीटी माव कहामी वेशवु ७१ पाऊ एटले
राऊ वन्दटीत नाखवी ७२ पाय पसारण एटले पग पसारवा ७३ पुडपडी
एटले पुडपुडिका दीर न करवु, ७४ पक एटले स्नान वगेरे करी चीरन रगो
नानवु ७५ मल्ल एटले पग प्रमुखन नागनो मल छाटकी नाखवी ७६ म
एटले मदन मना करवी, ७७ जुवा एटले माथामांनी जू कहाडवी ७८ नम

एटले नोजन करवुं: ७ए गुज्ज एटले लिंग उघाडुं करवुं; पाठांतरे जुज्ज एटले बाहुयुद्धादिक करवुं; ८० वेज्ज एटले वैद्यक कृत्य करवुं; ८१ वाणिज्जं एटले क्रय विक्रयादि व्यापार करवो; ८२ सेज्ज एटले मांचाप्रमुखे शय्या करीने त्यां सूवुं; ८३ जल एटले पाणी पीवा माटे राखवुं अने नाखी देवुं; ८४ मज्जणं एटले स्नान करवुं; इत्यादि आशातनाना कारण सदोष कार्य जिनमंदिरनेविषे नरलथका वर्ज करवां; अथवा निर्मल अंतःकरण वालाए त्याग करवां केम के, एम कस्याथी आशा तना थायडे. ते पण ऊपर कहेली अशातनाउनोज त्याग करवो एम नथी पण बीजी हास्यादिक जे अपक्रिया छे ते वधीनो त्याग करवो. ॥ ४४२ ॥

आशंकाः— पूर्वे तांबोलादिक दश आशातनाउ कहीछे तेनाज उपलक्षणेकरी ए वधी आशातनाउनुं ग्रहण थायडे तेम छतां बीजो जुदो द्वार शासारु कस्यो.

समाधानः— सामान्य अनिधान थयुं छतां पण विशेष बालावबोधार्थे अनि धान कस्यामां आवेछे. एविषे दृष्टांतः— ब्राह्मण वधा आव्या ने वसिष्ठ पण आ व्या एवो लोकमां प्रयोग छे. एटले ब्राह्मणोमां वसिष्ठ पण समाई गयो छतां कांई विशेष बोधने अर्थे वसिष्ट एवुं जुदुं ज कहेवाय छे.

अवतरणः— ए आशातनाउ कस्याथी ग्रहस्थने ज दोष उत्पन्न थाय छे अथवा कोईयेपण करवीज नही एवा विकल्पोनुं निवारण करेछेः— सावद्य करणोद्यत ग्रह स्थोनेज नव ब्रमणादिक दोषनी उत्पत्ति थाय छे एम नही पण निरवद्य आचार र तमुनिउने पण ए आशातनाउथी दोषनी उत्पत्ति थाय छे तेविषे कहे छेः— मूलः— आसायणाउ नवन्नमण कारणं इयविजाविउं जइणो; मल मलिणत्ति न जिणमं दरम्मि निवसंति इय समउ ॥४४३॥ अर्थ —संसारमां परिभ्रमण करवानुं ए आशात नाउ कारण छे एवो विचार करीने यतिउ जे छे ते पोतानी मलमलिन देह होवाथी श्री जिन मंदिरनेविषे वास करता नथी एवुं सिद्धांतमां गणधरे कस्युं छे. ॥४४३॥

अवतरणः—तेज समय व्यवहार नाष्य नाषित देखाडे छेः— मूलः—डुब्भिगंध मल स्सावि, तणुरप्पेसएहाणिया, डुहा वायव होवावी, तेण ठंति न चेइए ॥४४४॥ अर्थः— स्नान कस्याथी पण शरीर ते मल प्रस्वेदनुं श्रवण द्वार डुरनिगंधवालुंछे तेमां थी वायु दो केतवे प्रकारनो नीकले छे एक अधो वायु एटले अपान द्वाराए अने बीजो ऊर्ध्वएटले मुखद्वाराए नीकलेछे. तेकारण माटे यति जिनमंदिरमां वास करतां नथी.

अवतरणः— साधुए केटलो कालसुधी जिनमंदिरमां वास करवो ते देखाडे छे मूल — तिसिवा कइ जाव, थुईउ तिसलोइया; ताव तछ अणुसाय, कारणेण प

रेणउं ॥४४५॥ अर्थ – कायोत्सर्ग कस्या पछी त्रण स्तुति ज्यांसुधि बोलाय छे तिसलोईया त्रण श्लोक वंदनीनिक्षेपता ज्यां छे ते आवीरीते – जेम के, सिद्धा ण बुद्धाण ए पहेलो, जो देवाण ए बीजो, अने एकोविनमोक्कार ए त्रीजो, तेमन आगली बे गाथाओ अने थोईनी चोथी गाथा ते गीतार्थ आचरणा कहिये गीतार्थ नी आचरणा ते मूल गणधर जणित समान जाणवी तेथी तेटला कालसुधी य तिये जिनमंदिरमांहे रहेवु अनुज्ञात छे, अथवा धर्मे देशनादिक धर्म श्र वणादि अर्थे आव्या जे जाविक जन, तेओना उपकार करवाना कारणे चैत्यवंदन नी पाछल पण यतिने त्यां रहेवानी अनुज्ञा छे, बाकीना कालमां जिनाशातनादि जये करी साधुने तीर्थंकर अने गणधरादिके रहेवानी आज्ञा करी नथी माटे व्रती जनो ते आशातनानो त्याग करे छे एमज ग्रहस्थे तो अवश्य त्याग करवी जोईए छे. एवी तीर्थंकरनी आज्ञा छे आज्ञानो जंग मोटा अनर्थनुं कारण थाय छे य दाह – "आणाऽच्चियचरणमित्यादि" ॥ ४४५ ॥ ए अडत्रीशमो द्वार पूरो थयो

अवतरण – अठ महा पडिहाराइति एटले अष्ट महाप्रातिहार्यनो उंगणचा लीशमो द्वार कहे छे –मूल –किंकिल्लि कुसुम वुठी, देवज्झुणि चामरा सणाइ च, जा वलय जेरि छत्त, जयंति जिण पाडिहेराइ ॥ ४४६ ॥ अर्थ – प्रतिहारनी पेठे प्रतिहार एटले इन्द्रना आदेशकारी देव, तेओना कृत्याने प्रातिहार्य कहेछे ते प्रातिहार्य आठ छे ते आ प्रमाणे –जेनेविषे राता पातरानो समूह शाजी रह्या छे, सर्व कालवि कसित पुष्पसमूहमाथी निरंतर अत्यंत परिमलाकार नीकली रह्यो छे, तेना अति शयेकरी लालायला भ्रमरोना समूहनो रण रण शब्द थई रह्या छे, तेणेकरी नम स्कार करवाने आवेला जव्य जनना कर्णरंध्र शीतल थई रह्या छे, एवो अति म नोरम जेना आकार अने विस्तीर्ण शाखाओ वालो किंकिल्ली एटले अशोक वृक्ष जिनना उपरला जागनेविषे देव धारण करे छे ए प्रथम प्रातिहार्य जननी वि षे तथा स्थलनेविषे उत्पन्न थनारा पाच रंगना विकसित पुष्प, जेओनी नरः नीचे ने मुख उपर एटले जेम वृक्षनी उपर होय छे तेवा फूलानी जानु प्रमाण वृ वृष्टि करे छे ए बीजु प्रातिहार्य अतिशय रसयुक्त अमृतना रसनुं पुं, अनि त्वराए करी अनेक देश थकी हरण करेला एवा मुक्ताफलना व्यापारनी जेओना प्रसारित मुख छे एवा हरिणोना कुल कान दईने शाजनी रह्या छे, अने सर्व जनने आनंद दायक एवो दिव्य ध्वनि देव करेछे ए त्रीजु प्रातिहा र्य, सुंदर कदली कामतनपी तंतु समजना जेवी सुंदर किरणाना समूहरूपी

विस्तृत अति उत्तम विचित्र पवित्र रत्नोमांथी नीकलेला किरणांकुर जाल समूहना योगे दिशा दिशानेविषे प्रसारने पामेला इंद्र धनुष्यनी पठे मनोहर सुवर्णना रमणीय दंमयुक्त चामरो देवो ढोले छे; ए चोथुं प्रातिहार्य. अत्यंत देदीप्यमान जटाउना समूहेकरी सुंदर स्कंधबंधयुक्त कर्मरूप वैरीने वीवरावयाने कराल दर्पेकरी जीवता सिंहना रुपनी तुल्यता करनार अने जेमां नाना प्रकारना श्रेष्ठ रत्न जडेलां होयछे, तेउथी नीकलेली किरणावलीने लीधे अंधकार मंत्रर नाश थई गएलो छे एवुं चारुतर मेरुना शृंगनी परे ऊंचुं सिंहासन देव करेछे, ए पांचमुं प्रातिहार्य. शरत् कालनेविषे प्रकाशमान अखंम किरण मंमले करी प्रचंम सूर्यना मंमलनी पठे डुरालोक एटले जेनी सामे जोवाई शकाय नही; अने स्वनावेकरी देदीप्यमान तीर्थंकरकल्प संबंधी निरुपम रूपनुं आछादन करनार तथा अतुल एवुं प्रना पटलने एकठुं करी जिनना पाठला नागनेविषे मंमलाकार नामंमल देव करेछे. ए छठुं प्रातिहार्य; मंड एवो नांकार शब्दे करी आखुं जग व्याप्त थई रहे एवी नेरी ते डुंडुनी देवो वगामेछे ए सातमुं प्रातिहार्य; त्रैलोक्यनेविषे परमेश्वरपणानो जणावणहार शरत् कालना चंद्र मुचकुंदनी परे अने उज्ज्वल मोतीउनी मालाये विराजमान कुमुद एटले श्वेत पुष्प ए प्रमाणे स्वछ, लंबायमान मुक्ताफल समूहनी शिनागीरूप जालरी वडे शोनायमान एवां त्रण छत्रो देवो करे छे. ए आठमुं प्रातिहार्य; ए प्रकारे करी जिनेश्वरना आठ प्रातिहार्य सर्वोत्कृष्टत्वे करी वर्त्ते छे एमां अशोक वृक्षना प्रमाण उपर गाथा कहेछे. यडुक्तं-"उसहस्स तिन्नि गाऊ, बत्तीस धणूणि वद्धमाणस्स; सेस जिणाणमसोउ, सरीरउ बारस गुणोय" तेमां ऋषन्न जिननो अशोक वृक्ष त्रण गाउनो ऊंचो श्री महावीरनो अशोक वृक्ष बत्रीश धनुष्य ऊंचो अने अजितादि जिनथी बाकीना जे श्री पार्श्व जिनपर्यंत बावीश तीर्थंकरो छे तेउना अशोक वृक्षो पोतपोताना शरीरना प्रमाणथकी बार गुणा अधिक जाणवा.

आशंका -महावीरनो अशोक वृक्ष तो पोताना शरीर थकी बार गुणो कहेलो छे; यडुक्तं आवश्यक चूर्णौ श्री महावीर समवसरण प्रस्तावे.-'असोग वरपायवं जिण उच्चत्ताउ बारस गुणं सक्को विउव्वइत्ति' तेम छतां अही बत्रीश धनुष्य केम कह्युं?

समाधान.- आवश्यक चूर्णिमां तो केवल अशोक वृक्षनुं मान कह्युं छे ने अही तो सालवृक्ष सहित प्रमाण कह्युं छे माटे अही पण केवल अशोकवृक्षनो बार गुणोज छे. ते स्वाम रुप प्रमाण श्री महावीरना शरीर थकी बार गुणो एटलाथी एकवीश धनुष्य थाय अने साल वृक्ष अगीयार धनुष्य प्रमाण छे. ए बंने म

लीने बत्रीश धनुष्य थाय ठे एवो सप्रदाय पण ठे तथा समवायांगेप्युक्तं – "व
धणुयाइ, चेइय रुक्खो य वद्धमाणस्स, निच्चोउगो असोगो, उच्छन्नो सालरुक्खे
तट्टीकाच – निच्चोउगोत्ति– नित्य सर्वदा ऋतुरेव पुष्पादि कालोयस्य स नित्यर्तु
असोगोत्ति– अशोका निधानोय समवसरणभूमिमध्ये भवति, उच्छन्नो सालरु
एति अवच्छन्न शालवृक्षेणेत्यतएव वचनादशोकस्योपरि शालवृक्षोपि कथंचि
त्तित्यवसीयत इति तथा योजनभूमि पर्यंत पुष्पवृष्टिविषे कोईएक प्रेरणा करेठे –

आशंका – विकसित उत्तम पुष्पना समुदायेकरी युक्त समवसरण भूमिनेविषे
जीव दया रसिक अत करण वाला श्रमण लोकोनु अवस्थान तथा गमन क
वानु केम थायठे? कारण के त्या जीवोनो नाश थवानो सभव ठे

समाधान – ते पुष्प अचित्तज होय ठे प्रसार करवा सारुज देवो करे ठे

आशंका – ए वात अयुक्त ठे वधा पुष्पो विकुर्वमाणज थता नथी केमके,
त्यां जलज तथा स्थलज पुष्पोनो पण सभव ठे ए अनार्ष नथी, आर्ष ठे यत
'विटठाई सुरभि जल थलय दिव कुसुम नीहारिं, पइरिति समतेण दसद्धवण्णकुसुम
वुट्टि,' सिद्धांत वचने करी ए प्रमाणे शास्त्रथी बीजा सहृदय जनो उत्तर आपेठे

समाधान – ज्या यती रहेठे ते देशनेविषे देव पुष्पनी वृष्टि करता नथी

आशंका – ए पण उत्तरनो आभास ठे, खरेखर उत्तर कहेवाय नही तथा
धन जे ठे तेथोत काष्ठीभूत अवस्थानु अवलबन करीने तेज दशमां अवश्य रहेवु
नही कारण के, त्यां प्रयोजन गमनादिकना पण सभव ठे तेमाटे निश्चित
गीतार्थ सम्मत उत्तर हवे कहेठे –

समाधान – जेम एक योजनमात्र जे समवसरण भूमि, तेनेविषे पण असं
मित सुरासुरादिकना जे समर्द ते थयो ठता पण परस्पर कांई बाधा थती नथी
तथा जानुसुधी नाखेना मद मकरदनी सपत सपादित आनद एवा मदार, मच
कुद, कमल, बकुल, मालती, विकसित मोगरा, इत्यादि जे कुसुम समूह तेमांनी
उपर सचार करनारा अथवा रहेनारा त्यां बेसनारा ऊठनारा, एवा मुनि समूह
अने विबुध जन समूह ठता कांई बाधा थती नथी वधारे शुं कहेवु' सुधारस
तेना आग उपर पडना ठे तेमनी पठे अत्यत अचिंतनीय निरुपम तीर्थंकर
प्रभावथी प्रकाशमान जे प्रभाव तेना योगे उल्लास थाय ठे

आशंका – (दिव्यध्वनिनविषे कांई पूर्व पक्ष वचन कहेठे) सकल भव्य
आनंद देनार, उत्तम जे शर्कर, द्राक्ष, इत्यादिना रसेकरी मिश्रित अन तथा

दुग्ध रसनो सहोदर तीर्थंकरनोज ए ध्वनि छतां प्रतिहारे कह्यो एम केम कह्युं?

समाधानः- उदार मति जे छे तेमणे ए योग्य कह्यु. तीर्थंकरनी अपर परम मधुरताएकरी मनोरम पदार्थ समूहे करी अधिक शब्दनी पंक्ति स्वभावेकरी छे; जे समये मालकौसादि जे ग्राम, राग, तेओए करी भवजनना उपकारार्थ भगवान देशना दिएछे. ते समये बन्ने बाजूए रहेनारा देवोए अति मनोहर वेणू वीणा एओनुं मंड शब्द करण तेणेकरी तेज तीर्थंकर शब्द अत्यंत कलतर एटले दृढ करायछे. जेम के, मधुर गाननेविषे प्रवृत्त तरुण लोकना गायन रवना समये वीणा वगाडनार तेनो साथकरीने तेनी सहायता करेछे तेम ए पण जाणी लेवुं. माटे अंशेकरी प्रतिहार देवकृतत्वने कांई विरुद्ध नथी. एम कह्याथी सर्व समंजस छे. ॥ ४४६ ॥ ए उंगणचालीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः- 'चउतीसा तिसयाणंति' एटले चोत्रीश अतिशयोनो चालीशमो द्वार कहे छे - मूलः- रय रोय सेयरहिउ, देहो धवलाइ मंस रुहिराइ; आहारा नीहारा, अद्दिस्सा सुरहिणो सासा ॥ ४४७ ॥ जम्माउ इमे चउरो, इक्कारस कम्म रकय भव इणिहं; खेत्ते जोयणमित्ते, तिजइ जणो माइ बहुउवि. ॥ ४४८ ॥ नियभासाए नर तिरि, सुराण धम्मावबोहिया वाणी; पुव्वभवरोगा उवसमंति नय हुंति वेराइं. ॥ ४४९ ॥ दुब्भिक्ख डमर दुम्मारि ईई अइवुट्ठि अणविवुट्ठीउ; हुंति न बहुजियतरणी, पसरे भामंडलुज्जोओ ॥ ४५० ॥ सुररइया गुणवीसा, मणिमय सीहासणं सपय पीढं; छत्तत्तय इंदद्धय, सिय चामर धम्मचक्काइं ॥ ४५१ ॥ सहजग गुरुणा गयण,ठियाण पंचवि इमाइ वियरंति; पाउब्भवइ असब्ओ, चिट्ठइ जथ्थ प्पहू तथ्थ. ॥ ४५२ ॥ चउ मुह मुत्ति चउक्कं, मणि कंचण तार रइय साल तिगं; नव कणय पंकयाइं, अहोमुहा कंटया हुंति. ॥ ४५३ ॥ निच्च मवट्ठियमेत्ता, पहुणो चिट्ठंति केस रोम नहा; इंदियअत्था पंचवि, मणोरमा हुंति छप्पि रिओ ॥ ४५४ ॥ गंधोदयस्स वुठी, वुठी कुसुमाण पंच वन्नाणं; दिंतिय पयाहिणी ओ, सउणा पवणोवि अणुकूलो ॥ ४५५ ॥ पणमंति दुमा वज्जं,ति दुंदुहीउ गभीरघोसाओ; चउतीसाइ सयाणं, सव्व जिणिंदाण होइ इमा. ॥४५६॥ अर्थः- १ रज शब्दे मल, रोग जे श्वास प्रमुख ने स्वेद जे परसेवो एओए करी रहित, उपलक्षणे करी लोकोत्तर रुप तथा गंध करी सुंदर एवो तीर्थंकरनो देह, २ तथा उज्ज्वल गायना दूधनी धारा समान मांस ने रुधिर होय छे; ३ जेनो आहार अने नीहार अवध्यादिक ज्ञान शिवाय चर्मचक्षुवालाथी देखाय नही. ४ विकसित क

मजनी पठे सुगंधित जेनो श्वासोश्वास होय ले. ॥४४७॥ जन्माउइमे चउरो केव अतिशय तीर्थंकरना जन्मनी वखतेज थएला होय बीजा इक्कारस कम्म के० अग्यार अतिशय ज्ञानावर्णी आदि चार घाती कर्मोना क्षयथी थायले ले ते – ७ योजन प्रमाण क्षेत्रनेविषे समवसरणे त्रिजगना कोडाकोडी प्राणी मा पण परस्पर बाधा न थाय, किंतु सुखे करी वर्ते ॥४४८॥ ६ जगवतनी अ गणी नाना मनुष्य तिर्यंच ने देवताओने तेओनी पोतपोतानी जापारूप थ धर्मना अवबोधने देनारी अथवा धर्मना अवबोधना जाणपणानी करन थाय ले एनो नावार्थ – एक योजन व्यापिनी एकरूप एवी ए नगवतन वाणी मेघ नागना उदकनी पठे तदाश्रयानुरूपत्वे करी परिणामने पामेले यदु क – "देवा देवी नरा नारी, शबराश्चापि शाबरी, तिर्यंचोपि हि तैरिश्चा, मेनि नगवद्गिर " ७ त्रिजग भुवनेविषे अद्भुत अतिशय शिवाय एक काले अनेक जीवोनो उपर उपकार करवाने समर्थ थाय नही ७ पूर्व उत्पन्न थएला रोगादि प शांत थाय ले ने नवा उत्पन्न थता नथी ८ पूर्व नवनेविषे बांधेला वैर अने जाति सबंधी विराध कांई थाय नही ॥४४९॥ ए डुर्निक्षकाल पडे नही १० मार दावे मरक अने पर चक्रनो उपद्रव थतो नथी ११ डुम्मारिशब्दे डुष्ट देवतादिकन करनार प्राणीओनी उत्पत्ति न थाय १२ अतिवृष्टि थाय नही तथा १४ अनावृष्टि थाय नही रोगादिक ज सात ले ते ज्यां ज्यां जगवान विहार करेले त्यां त्यां चारे दिशानेविषे सवेर पचीश योजनमां थता नथी यदुक्तं समवायांगे – " जउ जउ विय णं अरिहंता जगवंता विहरंति तउ तउ वियणं पणुवीसाएणं ईई न नवइ मारी न नवइ सचक्कं न नवइ परचक्कं न नवइ अइवुट्ठि न नवइ अणावुट्ठि न नवइ डुप्तिक्खं न नवइ अवुपन्ना वियणं उप्पाईयावाही खिप्पामेव उवसम ति " स्थानांग टीकायामपि दशस्थानके लिखितं – " महावीरस्य जगवत मनुष्यक्षेत्रमिनयोजनशतमध्यगतवैरमारिविड्वरडुर्निक्षाद्युपद्रव्यापीनि १७ अ देहना पठवाडे नामंमलनेविषे निरस्कृत ले द्वादश सूर्यनुं तेज जेणेकरी एवा नामन नो प्रगट दटनना टयान प्रसंग ले ॥४५०॥ ए अग्यार अतिशय कर्मना क्षयथी थाय हवे बाकीना ओगणीश अतिशय सुररचित कहेले – १६ आकाशनी पठे अ स्वच्छ स्फटिक मणिनुं सिंहासन सपाद पीठ युक्त १७ अति पवित्र त्रण ठ २० जिनना अग्र जागनेविषे हजारोगमे न्हानी पताकाओएकरी सहित अन

अत्यंत सुंदर ऊंची रत्नमय बीजी ध्वजाओकरतां मोटी होवाथी तेने इंद्रध्वज कहे छे ते. १९ जिनना पार्श्व जागनेविषे एटले बन्नेपाशे बे यक्षोना हाथमां श्वेत चामर. २० अग्र जागनेविषे महा किरणोए करी देदीप्यमान कमलाकार धर्म प्रकाशक धर्मचक्र. ॥४५१॥ ए कहेला सिंहासनादि पांच ज्यां ज्यां तीर्थंकर गमन करे छे त्यां त्यां साथे जाय छे. २१ ज्यां प्रजु बेशे छे त्यां विचित्र पुष्प, पल्लव तेणे करी पल्लवित अने अत्यंत स्पृहणीय छत्र, ध्वज, घंटा, पताका इत्यादिके करी परिवृत एवो अशोक वृक्ष प्रादुर्जूत त्यां समिपें थाय छे. ॥ ४५२ ॥ २२ चार दिशोनेविषे चार मुख तेमां पूर्वाजिमुख जगवान पोते बेशे छे, बाकीनी त्रण दिशाओनेविषे तीर्थंकरना आकार प्रमाणे तीर्थंकरना प्रजावे करी युक्त तीर्थंकरने अनुरूप एवा सिंहासनादि युक्त देवोए आकार करेला होय छे ते दिशायें रहेला जीवोने एम जणाववा माटे के जगवंत अमारी सामा जोईने प्रत्येकने बोध करेछे. २३ समवसरण थाय छे ते मणि, कांचन, रौप्य एओएकरी रचित त्रण प्राकारनुं होय छे. तेमांनो पहेलो प्राकार रत्नमय वैमानिक देव करे छे, बीजो मध्यनो प्राकार उत्तम सुवर्णमय ज्योतिष्क देव रचे छे; अने त्रीजो बाहारनो उत्तम प्राकार रौप्यमय जवनपति देव करे छे. २४ नव सुवर्णनां कमल माखणना जेवा स्पर्शवाला रचाय छे. तेमांना बे कमलोनी ऊपर जगवान पोते चरण मूके छे. बाकीना सात कमलो पाछल रहे छे. जगवान ज्यारे आगल पग नाखे छे त्यारे पाछलनां बबे कमलो आगल आवता जायछे. २५ ज्यां ज्यां जगवान विहार करेछे त्यां त्यां कंटक अधोमुख थाय छे. ॥४५३॥ २६ प्रजुना केश, रोम ने नख अवस्थित मात्र ने अवृद्धि स्वजावेज रहे छे. तेमां दाडी, मूछ ने मस्तकना केश जाणवा अने बाकीना आंग ऊपरना रोम जाणवां २७ पांच इंद्रियोना शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध ए पांच विषय ते अमनोज्ञने अजावे करी ने मनोज्ञने प्रादुर्जावे करी चित्तने प्रेरण हार थाय छे. २८ वसंतादि छ ऋतु, शरीरने पुष्ट करनार जे सुख स्पर्शादि तेओना संपादकत्वे करी सर्व काल विकसित कुसुमादिकनी समृद्धियें करी अनुकूल. संपन्न थइ चित्तने हर्ष करनार थाय छे. ॥४५४॥ २९ ज्यां जगवान रहे छे त्यां ऊडती धूलनो नाश करवाने अर्थे गंधोदक जे कर्पूर प्रमुख सुगंधिक वस्तुयें मिश्रित जलनी वृष्टि थाय छे; ३० श्वेत, रक्त, पीत, नील ने श्याम ए पांच रंगना मंदार पारिजातक ने चंपक, इत्यादिक पुष्पोनी वृष्टि थाय छे. ३१ ज्यां जगवान संचार करे छे त्यां नील, चाष, जारद्वाज तथा मयूर प्रमुख तथा

बीजा पण जे नद्रा शकुनना करनार पक्षीओ ते सर्वे प्रदक्षिण गमन करे छे ३१ संवर्त्तक वायु एक योजन पर्यंत क्षेत्र सुधी विशयपकरवे करी अने सुरनि, शीतल ने मदत्वे करी अनुकूलसुख देनार थाय छे. यदुक्त समवायांगे – "सीयलेण सुहं फासेण सुरनि मारुएण जोयण परिमंडल सव्वओ समंता संपम ज्जिक्कड्सत्ति" ॥४५५॥ ३३ ज्यां नगवान गमन करे छे त्यां वृक्ष नम्र थाय छे ३४ ज्यां नगवान संचार करे छे त्यां सजल मेघना जेवा गंनीर शब्दवाला डडनि वागे छे ए प्रकारे सर्व जिनेंद्रोना चोत्रीस अतिशयो थाय छे अही समवायांगनी साथे कांई अन्यथापणु दीसमा आवे छे ते मतांतर जाणवु ॥ ४५६ ॥ मतांतरवीज सर्वज्ञ विज्ञेय छे ए चालीशमो द्वार पूरो थयो

अवतरण – हवे 'दोसो अठारसत्ति' एटले अढार दोषोनो एकतालीशमो द्वार कहेछे – मूल – अन्नाण कोह मय माण लोह माया रई्य अरई्य, निद सोय अलियवयण, चोरीया मह्यर नया य ॥ ४५७ ॥ पाणिवह पेम कीडा, प संग हासाइ जस्स इय दोसा, अठारसवि पणठ्ठा, नमामि देवाहि देवतं ॥४५८॥ अर्थ – १ अज्ञान एटले संशय अनध्यवसायी विपर्यंयात्मक लक्षण मौढ्य २ कोह एटले क्रोध ३ मद एटले कुल, बल, ऐश्वर्य रूप ने विद्यादिकनो अहंकार करवो अथवा बीजाना अनिमानने निबंधन करवु ते ४ मान एटले डुरनिनिवेशने न मूकवु अथवा तेनु युक्तिए करी ग्रहण करवु ५ लोन एटले गृद्धि ६ माया एटले दंन अथवा कपट ७ रति एटले अनीष्ट पदार्थोनी उपर मनेकरी प्रीति करवी ८ अरति एटले अनिष्ट संप्रयोगना संनवथी मनने डुःख थाय ते ए निड़ा एटले सापावस्था पांच प्रकारनी १० शोक एटले वैधुर्य अथवा डुःखात्मक अंतःकरणनी वृत्ति इष्टने वियोगें आक्रंदादिरूप ते ११ अलीक वचन एटले वितथ नाषण १२ चोरी एटले परद्रव्यनु हरण करवु १३ मत्सर एटले बीजानी संपत्तिने जोई न शकवु १४ नय एटले प्रति नय करवो एटले कांईने नय उपजाववु अथवा कोईथी नय उपजे ते ॥४५७॥ १५ प्राणिवध एटले हिंसा करवी १६ प्रेम एटले स्नेह विशेष परस्पर चित्तनो राग १७ क्रीडा एटले विविधप्रकारनी क्रीडाना प्रसंगनेविषे आसक्ति १८ हास्य एटले हसवु ए अढार दोष जेना नष्ट थएला छे एवा देवाधिदेवने हु नमस्कार करु छु ॥४५८॥ ए एकतालीशमो द्वार पूरो थयो

अवतरण – हवे 'अरिह चउक्कति' एटले नामादि चार प्रकारना अरिहंतना

बेतालीशमो द्वार कहेछे:– मूल – जिण नामा नामजिणा. केवलिणो सिव गया य नाव जिणा; ठवणजिणा जिणपडिमा. दव्वजिणा नावजिण जीवा ॥ ४५९ ॥ अर्थ – जिन चार प्रकारना छे – नाम जिन, स्थापना जिन, द्रव्य जिन ने नाव जिन तेमां ऋषभ अजित तथा संनवादि तीर्थंकरोनां जे नाम मात्र तेने नाम जिन कहिये अष्ट महाप्रातिहार्यादि समृद्धिने साक्षात अनुनवता एवा केवली एटले जेउने केवल ज्ञाननी उत्पत्ति थईने परम पदने प्राप्त थया ते नाव जिन जाणवा अही गाथाना अनुलोमे करी वचमा नावजिननुं व्याख्यान कर्युं छे. अने कांचन मुक्ताफल शैल तथा मरकतादिनी निर्माण करेली जिन प्रतिमाने स्थापना जिन कहेछे अने नविष्य कालनेविषे श्रेणिकादिकना जीवो जे तीर्थंकर थवाना छे ते द्रव्यजिन कहेवाय छे. ॥ ४५९ ॥ ए बेतालीशमोद्वार पूरोथयो

अवतरण.– हवे 'निक्कमण तवोत्ति' एटले तीर्थकरोए दीक्षा संबंधी तप लीधो तेनो तेतालीशमो द्वार कहेछे:– मूल.– सुमइछ निच्चनत्ते,ण निग्गओ वासुपुज्ज चउछेण, पासो मल्ली विय अछमेण सेसाउ छछेणं ॥ ४६० ॥ अर्थ – आ अवसर्प्पिणी कालनेविषे चोवीस तीर्थंकरोमध्ये सुमति नाथ नगवाने नित्य नोजन करता गृहवास त्याग करीने दीक्षा लीधीछे. बारमा वासुपूज्य जिन एक उपवास करी प्रव्रजित थया छे. त्रेवीशमां श्री पार्श्वनाथ जिन अने ओगणीशमा श्री मल्लिजिन ए बन्ने त्रण त्रण उपवासकरी दीक्षालीधी छे; अने बाकीना ऋषनादि वीश तीर्थंकरोए बबे उपवास करी व्रत अंगीकार कर्युं छे एतेतालीशमो द्वार

अवतरण – हवे 'नाणतवोत्ति' एटले ज्ञान संबंधी तपनो चुमालीशमो द्वार कहेछे.– मूल – अछम नत्त वसाणे, पासो सह मल्लि रिठ नेमीणं; वसुपुज्जस्स चउछे ण छठ नत्तेण सेसाणं. ॥ ४६१ ॥ अर्थ – अष्टम नक्तांतसमये श्री पार्श्व जिन, ऋषन स्वामी. मल्लिनाथ ने अरिष्टनेमि ए चार ने केवल ज्ञाननी उत्पत्ति थई वासुपूज्य जिनने एक उपवासने अंते केवलज्ञान ऊपन्नुं,बाकीना अजितस्वामी प्रमुख ओगणीश तीर्थंकरोने छठ नक्ते केवल उत्पन्न थयुं छे. एचुमालीशमो द्वार.

अवतरण – हवे 'निव्वाणतवोत्ति' एटले मोक्षसंबंधी तपनो पिसतालीशमो द्वार कहेछे – मूल – निव्वाणं सपत्तो, चउदस नत्तेण पढम जिणचंदो; सेसाउ मासिएण, वीरजिणंदोय छठेण ॥ ४६२ ॥ अर्थ.– चतुर्दश नक्त एटले छ उप वासे करी प्रथम जिनचंद्र श्री ऋषनदेव निर्वाण एटले परमानंदने प्राप्त थया सामान्यकेवलीमां पूज्य पणानेलीधे जिनचंद्र कहियें बाकीना अजित जिनथी लईने

पार्श्वनाथ पर्यंत बावीश तीर्थंकर मास एटले त्रीश उपवासेकरी मोक्षने पाम्या अ ने चोवीशमा श्रीवीर जिनेंद्र छठ्ठेणके० बे उपवासेकरीमुक्त थयाछे एपिस्तालीशमोद्वार

अवतरण – हवे 'नाव जिणेसर जीवत्ति' एटले नविष्य काळनेविषे थवाना तीर्थंकरोना जीवोनो ठेतालीशमो द्वार कहेछे तेनुं विवरण करता प्रथम तेनी प्र स्तावनानो गाथा कहेछे – मूल – वीर वरस्स जगवओ, वोलिअ चुलसीइ वरि स सहस्सेहिं,पउमाई चउवीस, जह हुंति जिणा तहा थुणिमो ॥ ४६३ ॥ अर्थ – अत्रे षष्टी पचम्यर्थे, अने तृतीया सप्तमीना अर्थे छे समग्र ऐश्वर्यादि गुणयुक्त श्रीमहावीर जगवान निर्वाण पाम्या पछी चोराशी हजार वर्ष गया केडे पद्मनाभ प्रमुख चोवीस जिनो जे प्रमाणे थशे, तेओने नाम ग्रहण पूर्वक नमस्कार करु छु अहीं आवी जावना करवी – आ अवसर्पिणीनेविषे दुःषम सुषमा लक्षण चोथा आरानेविषे नेव्याशी पक्ष अवतिष्ठमान छता श्रीवर्द्धमान स्वामी निर्वृतथया तदनतर नेव्याशी पक्ष अधिक प्रत्येक एकवीश हजार वर्ष प्रमाणना आ अवस र्प्पिणी सबधी ने आरक, तथा उत्सर्प्पिणी सबधी अतिदुःषम अने दुःषमरूप प्र त्येक एकवीश हजार वर्ष प्रमाण वाळा आद्यना बे आरा व्यतीत थया पछी त्री जा दुःखम सुखम नामना आराना नेव्याशी पक्ष वीत्या पछी श्री पद्मनाभ उत्प न्न थशे ए चारे आराना वर्षोनी सख्या चोराशी हजार वर्षनी थायछे तेनी उ पर बे नेव्याशी पक्षो एटले एक नेव्याशी पक्षो अवसर्प्पिणीना ने बीजा नेव्याशी पक्षो उत्सर्प्पिणीना जाणवा तेनी अल्पत्वने लीधे विवक्षा करी नथी ॥४६३॥

अवतरण – हवे तेज क्रमेकरी कहेछे – मूल – पढम च पउमनाभ, सेणिय जीव जिणेसर वंदे, बीअं च सूरदेव, वंदे जीवं सुपासस्स ॥ ४६४ ॥ तइयं सु पास नाम, उदाय जीव पणठ्ठ नव वास, वंदे सयंपभजिण, पोट्टिल जीव चउ त्थमहं ॥ ४६५ ॥ सव्वाणुभूइ नाम, दढाउ जीवं च पंचम वंदे, छठ्ठ देवसुय जि ण, वंदे जीवं च कित्तिस्स ॥ ४६६ ॥ सत्तमयं उदय जिण, वंदे जीव च संखना मस्स, पेढालं अठ्ठमयं, आणंद जिय नमसामि. ॥ ४६७ ॥ पोट्टिल जिण च नव मं, सुरस्य सेव सुनंद जीवस्स, सयकित्ति जिणिंद सम, वंदे सयगस्स जीवंति ॥ ४६८॥ एगारसम मुणिसुव्वय च वंदामि देवइय जीवं, बारसम अमम जिण, सु वइ जीव जयपयड ॥ ४६९ ॥ निक्कसाय तेरसम, वंदे जीयं च वासुदेवस्स, बलदे व जिअ वंदे, चोदसम निप्पुलाउ जिण ॥ ४७० ॥ सुजसा जीव वंद, पनरसम निम्ममत्त जिण नाम, रोहिणि जीव नमिमो, सोळसम चित्तगुत्तति ॥ ४७१ ॥

रूपक. परम गुरु प्रणीत प्रवचन तेथी जे निराधार नही तेने संघ कहिये. ते अ
वा प्रथम गणधर उत्पन्न थए जे सिद्ध थया ते तीर्थ सिद्ध; ४ रजोहरणादिरू
व्यवस्थित छतां जे सिद्ध थया ते स्वलिंग सिद्ध; ५ परिव्राजक संबंधि वल्कल
ापायादिरूप वेषना धरनार नाव सम्यक्त्वने अंगीकार करी तेहीज समये जो
वल ज्ञान पामी काल करी सिद्ध थाय ते अन्य लिंग सिद्ध कहिये; अन्यथा
जो पोतानुं घणुं आयुष्य जुवे तो ते लिंगनो त्याग करीने साधुलिंगने धा
ण करे छे. पछी जो सिद्ध थाय तो तेने अन्य लिंग सिद्ध न कहिये ६ स्त्रीलिंग
तां सिद्ध थया ते स्त्री लिंग सिद्ध. ते स्त्री लिंग त्रण प्रकारनो छे.– वेद, शरीर
निर्वृत्ति, ने नेपथ्य, तेमां अही मात्र शरीर निर्वृत्तिनुं प्रयोजन छे. पण वेद ने नेप
थे करी न जाणवुं. केमके, वेद छतां सिद्धतानो अनाव छे, तेम नेपथ्यनुं पण
प्रप्रमाण पणुं छे. ते स्त्रीलिंगनेविषे वर्त्तमान छतां जे सिद्ध थया ते स्त्रीलिंग सिद्ध
पुरुष शरीर निर्वृत्तिरूपे व्यवस्थित छतां जे सिद्ध थया ते पुरुष लिंग सिद्ध.
जे गृहस्थ छतां सिद्ध थया ते गृहलिंग सिद्ध ते मरुदेवी प्रमुख जाणवा. ए
नपुंसक लिंगे वर्त्तमान छतां जे सिद्ध थया ते नपुंसक लिंग सिद्ध, १० तीर्थनो जे अ
नाव तेने कहिये अतीर्थ. तीर्थना अनावे मरुदेवी प्रमुखनीपरें अथवा श्री सुवि
धि नाथने श्री शांतिनाथने अंतरे तीर्थनो व्यवछेद थया पछी पाछी तीर्थ
नी उत्पत्ति थई नथी तेना अंतराल समयमां जे जाति स्मरणादिके सिद्ध थया
ते अतीर्थ सिद्ध; ११ किंचित् वृषनादि कारण अनित्यादि नावनानो हेतु जाणी
ने बोधवान थईने जे परमार्थ जाणीने सिद्धताने पाम्या ते प्रत्येकबुद्ध सिद्ध; १२
एक समये एकाकी जे सिद्ध थया ते एक सिद्ध; १३ एक समये जे अनेकनी सा
थे सिद्ध थया ते अनेक सिद्ध; १४ पोतानी मेलेज तत्वज्ञान पामीने आईकु
मारादिनीपरे जे सिद्ध थया ते स्वयंबुद्ध सिद्ध, १५ आचार्यादिकना प्रतिबोधे
करी जे बोधने पाम्या थका सिद्ध थया ते बुद्ध बोधित सिद्ध; ए पूर्वोक्त तीर्थंक
रत्वादिना विशेषकरी नेदोनुं प्रतिपादन कर्युं, ए पंदर प्रकार सिद्धांतनेविषे कहे
ला छे. पण तीर्थंकर सिद्ध अतीर्थंकर सिद्धरूप बे नेदनेविषे अथवा तीर्थ सिद्ध
ने अतीर्थ सिद्धरूप बे नेदनेविषे बाकीना सर्वे नेदोनो अंतरनाव थाय छे. त्यारे
र नेदोनुं उपादान शास्त्रकारे कर्युं ? तेम न समजवुं केमके. जो पण ए बीजा
चु छे तेम अंतरनाव थाय छे तो पण विवक्षित बे नेदना उपादान मात्रथी

तिसवादि पणाने लीधे विशेषेकरी विवरण कर्यु नथी ॥४७६॥ एवेतान

अवतरण – हवे 'सत्ता उड्ढ तिरिय सिद्धाणमिति' एटले अध
तिर्छा लोकनेविषयता सिद्धोनी सख्यानो सुम्मतालीसमो द्वार कहेछे – मूल
उड्ढ लोए, डुवे समुद्दे तिउ जले चेव, बावीस मह्हो लोए, तिरिए अडुत्तर
॥ ४७७ ॥ अर्थ – ऊर्ध्व लोकनेविषे एक समये उत्कृष्टपणे चार सिद्ध थ
समुद्रनेविषे बे, शेष ह्रद नद्यादि सर्वपि जलनेविप त्रण, पण प्राकृतानि
री तो जलमा चार सिद्ध थता देखाय छे अधोलोकनेविषे उत्कृष्ट एक
बावीश सिद्ध थायछे सिद्ध प्राकृतनेविपे वली आम दीठामा आवे छे –
"चत्तारि उड्ढ लोए, जले चउक्क डुवे समुद्दपि, अठ सय तिरि लोए, वीस
अहो लोए ' एतट्टीकाया च – "विंशति पृथक्त्व रचने करी जो पण अहीं 'दोवीस मह्हा लाए'
नृत्या नवन्य इति ' पृथक्त्व रचने करी जो पण अहीं 'दोवीस मह्हा लाए'
थाय छे तो पण समीचीनज छे अने तीर्यग लोके एक समये उत्कृष्टथी ए
शो ने आठ सिद्ध थाय छे ॥ ४७७ ॥ ए सुडतालीशमो द्वार पूरो थयो

अवतरण – हवे 'तह एक समय सिद्धाणति' एटले एक समये सिद्धोनी
सख्यानो अडतालीशमो द्वार कहे छे – मूल – इक्कोव दोव तिन्निव, अठ सय
जाव एक समएण, मणुअगईए सिज्झइ, सखाउ य वीयरागाउ. ॥ ४७८ ॥ अर्थ –
एक समये जघन्यथी एक, बे अथवा त्रण सिद्ध थाय छे अने उत्कृष्टथी एक शो
ने आठ सिद्ध थाय छे ते मनुष्यगतिनेविपे जाणवा पण देवगतिनेविपे न जाणवा
ते पण सख्याता आउखावाला जाणवा पण असख्याता आउखावाला नसमन
वा ते वली वीतराग लक्षणवाला एटले जेउए सर्व कर्म कनक अपगत करेना
छे ते समजवा पण बीजा कुतीर्थीउनी समत पढे सकर्माउ नहीं जाणवा
॥ ४७८ ॥ ए अडतालीशमा द्वार पूरो थयो

अवतरण – तेय पन्नरस नएहिति' एटले ते सिद्ध पदर भेदे छे तेना आगण
पचाशमा द्वार कहे छे – मूल – तित्थयर अतित्थयरा तित्थ सलिंग अन्निंग थी पु
रिसा, गिहि लिंग नपुस अतित्थ सिद्ध पत्तेय बुद्धाय ॥ ४७९ ॥ एग अणग सय
बुद्ध बुद्ध बोहिय पत्तेयओ नणिया, सिद्धांते सिद्धाण भेया पन्नरस सरानि
॥ ४८० ॥ अर्थ – १ तीर्थंकरनी पदवी भागवीने जे सिद्ध थया ते तीर्थंकर सिद्ध
२ सामान्य पणे केवल ज्ञान पामीने जे सिद्ध थया ते अतीर्थंकर सिद्ध ३ तण
करी ममार सागरने तराय तेने तीर्थ कहिये ययाउक्त

प्ररूपक. परम गुरु प्रणीत प्रवचन तेथी जे निराधार नही तेने संघ कहिये. ते अथवा प्रथम गणधर उत्पन्न थए जे सिद्ध थया ते तीर्थ सिद्ध; ४ रजोहरणादिरूप व्यवस्थित ठतां जे सिद्ध थया ते स्वलिंग सिद्ध; ५ परिव्राजक संबंधि वल्कल कापायादिरूप वेषना धरनार भाव सम्यक्त्वने अंगीकार करी तेहीज समये जो केवल ज्ञान पामी काल करी सिद्ध थाय ते अन्य लिंग सिद्ध कहिये, अन्यथा ते जो पोतानुं घणुं आयुष्य जुवे तो ते लिंगनो त्याग करीने साधुलिंगने धारण करे छे. पछी जो सिद्ध थाय तो तेने अन्य लिंग सिद्ध न कहिये ६ स्त्रीलिंग ठतां सिद्ध थया ते स्त्री लिंग सिद्ध. ते स्त्री लिंग त्रण प्रकारनो छे.– वेद. शरीर निर्वृत्ति, ने नेपथ्य, तेमां अही मात्र शरीर निर्वृत्तिनुं प्रयोजन छे. पण वेद ने नेपथ्ये करी न जाणवुं. केमके, वेद ठतां सिद्धतानो अभाव छे, तेम नेपथ्यनुं पण अप्रमाण पणुं छे. ते स्त्रीलिंगनेविषे वर्त्तमान ठतां जे सिद्ध थया ते स्त्रीलिंग सिद्ध ७ पुरुष शरीर निर्वृत्तिरूपे व्यवस्थित ठतां जे सिद्ध थया ते पुरुष लिंग सिद्ध. ८ जे गृहस्थ ठतां सिद्ध थया ते गृहलिंग सिद्ध ते मरुदेवी प्रमुख जाणवा. ९ नपुंसक लिंगे वर्त्तमान ठतां जे सिद्ध थया ते नपुंसक लिंग सिद्ध; १० तीर्थनो जे अभाव तेने कहिये अतीर्थ. तीर्थना अभावे मरुदेवी प्रमुखनीपरें अथवा श्री सुविधि नाथने श्री शांतिनाथने अंतरे तीर्थनो व्यवछेद थया पछी पाछी तीर्थनी उत्पत्ति थई नथी तेना अंतराल समयमा जे जाति स्मरणादिके सिद्ध थया ते अतीर्थ सिद्ध; ११ किंचित् वृषभादि कारण अनित्यादि भावनानो हेतु जाणीने बोधवान थईने जे परमार्थ जाणीने सिद्धताने पाम्या ते प्रत्येकबुद्ध सिद्ध; १२ एक समये एकाकी जे सिद्ध थया ते एक सिद्ध; १३ एक समये जे अनेकनी साथे सिद्ध थया ते अनेक सिद्ध, १४ पोतानी मेलेज तत्वज्ञान पामीने आईकुमारादिनीपरे जे सिद्ध थया ते स्वयंबुद्ध सिद्ध; १५ आचार्यादिकना प्रतिबोधे करी जे बोधने पाम्या थका सिद्ध थया ते बुद्ध बोधित सिद्ध, ए पूर्वोक्त तीर्थकरत्वादिना विशेषेकरी भेदोनुं प्रतिपादन कर्युं, ए पंदर प्रकार सिद्धांतनेविषे कहेला छे, पण तीर्थकर सिद्ध अतीर्थंकर सिद्धरूप बे भेदनेविषे अथवा तीर्थ सिद्ध ने अतीर्थ सिद्धरूप बे भेदनेविषे बाकीना बधा भेदोनो अंतरभाव थाय छे. त्यारे शेष भेदोनुं उपादान शातारु कर्युं? तेम न समजवुं केम के, जो पण ए बोलवुं साचुं छे तेम अंतरभाव थाय छे तो पण विवक्षित बे भेदना उपादान मात्रथी

शेष नेदोनु परिज्ञान न थाय माटे विशेष परिज्ञानने अर्थे आ शास्त्रारंभ प्रयासत फल ले माटे शेष नेदोनु उपादान कर्यु ॥ ४७० ॥ ए उंगणपचाशमो द्वार थयो

अवतरण – हवे 'अवगाहणाय सिद्ध. उक्किठ जहन्न मज्झिमाएयत्ति' एटले उत्कृष्ट मध्यम ने जघन्य ए त्रण प्रकारनी अवगाहनाएकरी एक समयनेविषे केटला सिद्ध थाय तेनो पचाशमो द्वार कहेले – मूत्र – दोवेवुक्कोसाए. चउर जहन्नाइ मज्झिमाएउ, अठ्ठहियं सय खलु, सिज्झइ ओगाहणाइ तहा ॥ ४७१ ॥ अर्थ – एकज समये उत्कृष्टथी पाच शें धनुष्य प्रमाणना शरीरनी अवगाहना वाला वे सिद्ध थाय, तथा जघन्यथी एक समयमा वे हाथना शरीरनी अवगाहना वाला चार सिद्ध थायले, अने ते थकी वचमांना मध्यम अवगाहना वाला तो एक समये एक शो ने आठ सिद्ध थायले,

आशंका –नाभिकुलगरनी पत्नी मरुदेवी ने नाभिराजा ए बन्नेनां शरीरोनु पांच शें पचीश धनुष्यनु प्रत्येक मान गणशे नहीं , केमके, जेटलु नाभि राजाना शरीरनु मान ले तेटलुज मरुदेवीना शरीरनु मान ले यत – "संघयणं संठाण उच्चत्त चेव कुलगरेहिं सममिति वचनात्" तेमा मरुदेवी जगवती सिद्ध थया, त्यार उत्कृष्टथी पांच शें धनुष्य अवगाहना केम घटे? अर्थात् न घटे

समाधान – एमां दोष नथी केमके, मरुदेवीना तनुनु प्रमाण नाभिराजाना तनुथी कांइक न्यून ले उत्तम संस्थानवान स्त्री, उत्तम संस्थानवान पुरुषना करता पोतपोताना कालनी अपेक्षाए किंचित् ओला प्रमाणवाली थायले माटे मरुदेवीनी पण पांच श धनुष्यनी अवगाहना कहेवाथी कांइ दोष नथी वली हस्तिना स्कंधनी उपर आरूढ थता संकुचितांगी मरुदेवी सिद्ध थया ते कारण माटे शरीर संकोची जावथी अधिक अवगाहनानो संजव होवाने लीधे कांइ विरोध नथी अथवा जे उत्कृष्टथी पांच शं धनुष्योनु मान आगमने विषे कह्यु ले ते बाहुल्यापेक्षाएकरी जाणवु अन्यथा पाच शें ने पचीश धनु प्रमाण उत्कृष्टावगाहना ते मरुदेवी माताना कालनेविषे वर्त्तनारा मनुष्यने अनाव करवा योग्य थशे, केमके, मरुदेवीना आ देशांतरे नाभिकुलकर तुल्य ले तदुक्तं सिद्ध प्राभृत टीकायां – मरुदेवीविआए सतरेण नाभितुल्लत्ति " सिद्धप्राभृत सूत्रेप्युक्तं – उंगाहणा जहन्ना, रयण डुग अह पुणोइ उक्कोसो, पंचेव धणु सयाइ, धणुह पहुत्तेण अहिआइ " एतट्टीकाव्याख्याच – ' पृथक शब्दो बहुलवाची बहुत्व चेह पंच विंशति रूप इष्टव्यमिति " ॥ ४७१ ॥ ए पचाशमो द्वार पूरो थयो

अवतरण:— 'गिहिलिंग अन्नलिंग सलिंग सिद्धाण संखाउत्ति' एटले गृहिलिंग तथा अन्यलिंग अने स्वलिंग सिद्धोनी संख्यानो एकावनमो द्वार कहेछेः मूल:— इह चउरो गिहिलिंगे, दसन्नलिंगे सयं च अट्ठहियं; विन्नेयं च सलिंगे समयेणं सिद्धमाणाणं. ॥ ४७२ ॥ अर्थः— अहीं जिनशासने मनुष्य लोकमां गृहस्थलिंगि वर्तमान एकज समय उत्कृष्टथी चार सिद्ध थाय छे. तथा तापसादि अन्यलिंगे वर्तमान उत्कृष्टथी एक समये दश सिद्ध थायछे. तेम यतिलिंगे एक समये उत्कृष्टथी एक शोनेआठ सिद्धथाय. ॥४७२॥ ए एकावनमो द्वार पूरो थयो.

अवतरण.— सांप्रत 'बत्तीसाई सिज्झंति अविरयमिति, बत्रीशादि निरंतर पणे सीझतां एक शो ने आठ लीम एक समयथी आठ समय सीझतानी संख्यानो बावनमो द्वार कहेछेः— मूल:—बत्तीसाई सिज्झं,ति अविरयं जाव अठ अहिय सयं, अठ समएहिं एक्के,क्कणं जावेक समयंति ॥४७३॥ बत्तीसा अडयाला, सठी बावत्तरी य बोधव्वा; चुलसीई छन्नउई, दुरहिय मठोत्तरसयं च. ॥ ४७४ ॥ अर्थ.— एकथी लईने बत्रीश पर्यंत सिद्ध थायछे. निरंतर आठ समय सुधी यावत् जाणवुं. अहीं आ परमार्थ छे.— प्रथम समयनेविषे जघन्यथी एक अथवा बे अने उत्कृष्टथी बत्रीश सिद्ध थायछे. बीजा समयनेविषे पण जघन्यथी एक अथवा बे अने उत्कृष्टथी बत्रीस मांडीने यावत् आठमां समये पण जघन्यथी एक अथवा बे अने उत्कृष्टथी बत्रीश सिद्ध थायछे एम जाणवुं. एनी उपर अवश्य अंतर समयादिके कोई पण सिद्ध थाय नहीं. तथा पूर्वोक्तरीते तेत्रीश आदिदई अडतालीश पर्यंत निरंतर उत्कर्षे करी सात समय यावत् प्राप्त थता सुधी सिद्ध थायछे. एनी उपर नियमे करी अंतर समयादिक रहे. तथा ओगण पचाश आदि देईने साठ पर्यंत निरंतर सिद्ध थाय छे ते उत्कृष्टथी यावत् छ समय प्राप्त थता सुधी तेनी उपर अवश्य अंतर रहे. तथा एकसठ आदि देईने बोत्तेर सुधी निरंतर सिद्ध थाय छे ते उत्कृष्टथी पांच समय सुधी त्यार पछी नियमथी अंतर रहे. तथा तोतेरथी लईने चोरासी सुधी निरंतर सिद्ध थाय ते उत्कृष्टथी चार समय सुधी. त्यार पछी अवश्य अंतर रहे तथा पच्यासीथी ते छनु सुधी निरंतर सिद्ध थाय छे ते उत्कर्षथी यावत् त्रण समय सुधी. त्यार पछी नियमथी अंतर रहे. तथा सताणुथी ते एक शो ने बे सुधी निरंतर सिद्ध थाय ते उत्कर्षथी बे समय सुधी त्यार पछी नियमथी अंतर रहे. तथा एक शो ने त्रणथी लईने एक शो ने आठ पर्यंत सिद्ध थाय छे ते नियमथी एक समय प्राप्त थता सुधी त्यार पछी अवश्य समयादिक अंतर रहेछे.॥४७४॥

हवे आठ समय आदेदई एकेक कणो समय अतर पडे ते देखाडे छे मू
त य छय पच चेव चत्तारि तिन्नि दो एक्कं, वत्तीसाइ सुसमया, निरतर अतर
अर्थ – वत्रीस सीजे तो आठ समय पछी आतरो, अडतालीस सीजे त्या
पछी आतरो, साठ सीजे ते वारे छ समय पछी आंतरो वकतेर सीजे तेवार
पछी आतरो, चोरासी सीजे तेवारे चार समय पछी आंतरोपडे छनु सीजे
समयपछी आंतरो पडे एक सो त्रे सीजे तेवारे वे समय पछी आतरो पडे अने
आठ सीजे तो एक समयपछी आंतरो पडघा पछी सीजे परतु आतरा विना स
ए ४८४–८५ ए वे गाथा तेना अर्थ प्रमाणेज जाणवु ॥४८५॥ ए वावन

अवतरण – 'थीवेए पुवेए नपुसए सिझमाण परिसखा मिति' एटले
पुरुषवेद तथा नपुसक वेदना सिझता जीवो तेनी सख्यानो त्रेपनमो
छे – मूल – वीस त्थि गाउ पुरिसाण अठ सयं एग समयउ सिज्झ, दस
पुसा तह, उवरि समएण परिसेहो ॥ ४८६ ॥ अर्थ – एक समयनेविषे
पंथी वीश स्त्री सिद्ध थाय पुरुष एक शो ने आठ सिद्ध थाय अने नपुसक
सिद्ध थाय उक्त सख्यानी ऊपर सर्वत्र पणे एक समये सिद्ध थवानो सिद्धा
प्रतिषेध छे, एटले एथी वधारे सिद्ध थई शके नही ॥ ४८६ ॥

अवतरण एज द्वारनेविषे कई गतिथी आवीने केटला जीवो उत्कर्षथी
समये सिद्ध थाय छे ? ते विशेषे करी प्रतिपादन करता छता कहे छे – मूल
वीस नर कप्प जोइस, पचय नवण वण दसय तिरियाण, इत्थीउ पुरिसा पु
दस दस सवेवि कप्प विणा ॥ ४८७ ॥ कप्पठ सय पुढवी आउ पकप्प ना
चत्तारि, रयणाउसु तिसु दस दस, छतरूण मणतर सिज्झे ॥ ४८८ ॥ अर्थ – न
र के० मनुष्योमाथी स्त्रीए स्त्रीपणानो त्याग करीने बीजा नवे पाछा मनुष्य गति
मां आवीने जे एक समयनेविषे सिद्ध थाय छे ते उक्त रीतीए वीशज जाणवा
सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी स्त्रीओ स्वनावे ते नवनो त्याग कर्या पछी मनुष्य
गतिमां आवीने एक समये वीश सिद्ध थाय छे वेज कल्पमा स्त्रीउ उत्पन्न थाय
छे माटे कप्पत्ति एवी सामान्योक्ति छता सौधर्म ने ईशान लख्यु ज्योतिषीनी स्त्रीओ
मनुष्यगतिमां आवीने एक समये वीस सिद्ध थायछे भुवनपती, दश निकायनी तथा
व्यतरनी स्त्रीओ मनुष्यमां आवीने प्रत्येक पाच पांच सिद्ध थाय छे पचेंद्रिय तिर्यचनी
स्त्रीओ त्यां स्त्रीत्वथी निवर्त्तन थईने मनुष्य नवमा आवी दश सिद्ध थाय छे ए
इत्थीउ एटले स्त्रीउ कही हव पुरिसाण के० पुरुष ते सर्व कल्प शिवाय मनुष्य त्या

तिष्क, नवनपति, व्यंतर, तथा तिर्यग्गति लक्षण पांच स्थान संबंधि पुरुषो पुरुष त्वथी निवृत्त थई अनंतर मनुष्य नवमां आवी एक समये उत्कर्षे करी प्रत्येक दश दश सिद्ध थाय छे. ए कल्पना देवोविना कह्युं.॥४७३॥पण कल्पथी आवीने केटला सिद्ध थाय छे ते कहे छेः—कल्पस्थ एटले विमानवासी देवो अनंतर नवनेविषे मनुष्यपणुं पामीने एक समयमां उत्कर्षथी एक शो ने आठ सिद्ध थाय छे. तथा पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तथा पंकप्रना थकी आवीने प्रत्येक चार सिद्ध थाय छे; रत्नप्रना, शर्कराप्रना, वालुकाप्रना ए त्रण पृथ्वीना आव्या प्रत्येक दश सिद्ध थाय छे. धूम प्रनादि त्रण पृथ्वीना आवेला सिद्ध थता नथी. वनस्पतिकायथी निवर्त्तन थईने अनंतर मनुष्य नव पामी उत्कर्षे एक समये छ सिद्ध थाय छे. तेज ने वायुकायना अनंतर नवे मनुष्यपणुं प्राप्त थयाथी तथा द्वि त्रि अने चतुरिंद्रियने नवस्वनावथीज अनंतर नावेकरी सिद्धिनो अनाव छे. तथाचोक्तं प्रज्ञापनायांः—"अणंतरागयाणं नंते नेरइया एग समएणं तेवइया एग समएणं केवइया अंतकिरियंएकारति गोयमा जहन्नेणं एगो दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं दस रयणप्पना पुढवि नेरइयावि एवं चेव जाव वालुयप्पना पुढवि नेरइया, पंकप्पना पुढवि नेरइया उक्कोसेणं चत्तारि असुरकुमारो दस असुरकुमारीउ पंच एवं जहा असुरकुमारा सदेवीया तहा जाव वणियकुमारा पुढविकाइया ए चत्तारि एवं आउकाइयावि वणस्स काइयासु छ पंचिंदिया तिरिक्ख जोणिया दस पंचेदिय तिरिक्ख जोणणीउवि दस मणुस्सा दस मणुस्सीउ वीसं वाणमंतरा दस वाणमंतरीउय पंच जोइसिया दस जोइसिणीउ वीसं वेमाणिया अठसयं वेमाणीउ वीसमिति" सिद्ध प्रानृतनेविषे देव गतिनेविषे. अन्यत्र त्रण गतिनेविषे पण दश एम कह्युं छे. "सेसाण गईण दस दस गंति वचनात्" तत्व तो श्रुत ज्ञानी जाणे. अहीं देवादि पुरुषवेदथी अनंतर निवर्त्तिने केटला एक पुरुषो थाय छे, केटलाएक स्त्रीओ थाय छे; केटलाएक नपुंसको थाय छे. एमज स्त्रीओनापण देवी प्रमुखथी चवीने तेज त्रण नांगा जाणवा तेम नारक नपुंसको चवीने तेज त्रण नांगारूपे थाय छे. ए सर्व नव नांगानी संख्या थाय छे. तेमां जे देवना पुरुषवेदथी निर्वृत्त थई पुरुष थईने सिद्ध थाय छे ते एक समयनेविषे एक शो ने आठ सिद्ध थाय छे. अने बाकीना आठ नांगानेविषे प्रत्येक दश दशज सिद्ध थाय छे. तेज विवरीने कहेछेः— देवना पुरुषवेदथी आवी पुरुष थईने एक समयनेविषे एक शो ने आठ सिद्ध थाय छे. अने तेज वेदथी आवी स्त्री तथा नपुंसक थईने प्रत्येक दश दश सिद्ध थाय छे. तथा देवीना नवथी आवी

पुरुष थईने दश सिद्ध थाय छे; एमज स्त्री तथा नपुंसक पणे थईने
सिद्ध थायछे जे वैमानिक देवीओ थकी, ज्योतिष्क देवी थकी, तथा
आवीने वीस सिद्ध थाय छे, एम पूर्वे कह्युं छे; ते पण अही पुरुष, स्त्री
कपणुं पामीने तेना द्विक सयोगेकरी अथवा त्रिक सयोगे करी मळ
सिद्ध थायछे पण केवल पुरुषो, अने केवल स्त्रीओ अथवा केवल
नेज वीश सिद्ध थती नथी तथा यदपि वीश स्त्रीओ एक समये अहीं
सिद्ध थाय छे एम पूर्वे कह्यु छे, तत्रापि कोई पुरुषवेदपणाथी कोई स्त्री
अने कोई नपुंसकवेद पणाथी आवेली मळी अही स्त्रीवेदपणु पामीने
थाय छे पण केवल पुरुषथकी, केवल स्त्रीथकी अथवा केवल नपुंस
आवेली वीस सिद्ध न थाय एरीते ए सर्व दिशाए भांगानी भावना करवी
सिद्ध प्राभृत सूत्रे – सेसाउ अठ भंगा, दसगं दसग तु होइ एक्केके, इति
ईक वीजु विशेष दर्शावे छे – जेम के, नंदनवननेविषे एक समये चार सिद्ध
छे. 'नदणे चत्तारि' इति प्राभृत टीका वचनात् प्रत्येक 'विजयनेविषे वीश
थाय छे. "वीसा एगयरे विजये' इति वचनात् वली संहरणे करी का
अकर्मभूमि कूटशिलादिक सर्व स्थाननेविषे एक समये उत्कर्षे करी दश दश
थायछे अने पंडक वननेविषे संहरणथी बे सिद्ध थायछे पदर कर्मभूमिने
जन्म पामेला एक शो ने आठ सिद्ध थायछे यदुक्त सिद्ध प्राभृत सूत्रे – "
णाए दसग, दोचेव हवति पंडगवणंमि, समयेण य अठसयं, पन्नरससु क
भूमीसु" तथा उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी ए प्रत्येकना त्रीजा तथा चोथा आ
रानेविषे एक समये एक शो ने आठ सिद्ध थाय छे अवसर्पिणीना पाचमां आ
नेविषे एक समये वीश सिद्ध थाय छे बाकीना प्रत्येक उत्सर्पिणी तथा अवसर्पि
णीना सर्व आरानेविषे एक समये दश दश सिद्ध थाय छे उक्तंच सिद्ध प्राभृतसूत्रे –
उस्सप्पिणि वसप्पिणि, तइय चउत्थय समासु अठसयं, पंचमियाए वीस, दसगद
सग च सेसासु" अही पाचमोआरो अवसर्पिणि सबधी जाणवो, पण उत्सर्पिणी
नो न जाणवो केमके, ते काळनेविषे तीर्थनो अभाव छे ॥४८८॥ ए त्रेपनमो द्वार
अवतरण – हवे 'सिद्धाण सगणत्ति' एटले सिद्धोना सस्थानोनो चोपनमो
द्वार कहेछे – दीह वा हस्सवा, जं सगण तु आसि पुव भवे, तत्तो तिभागहीणा
सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ ४८९॥ अर्थ – दीर्घ प्रमाण पांच शें धनुष्योनु ऊ
च प्रमाण बे हाथनु तथा मध्यम प्रमाण विचित्र होयछे तेमां जेटलु चरम सम

यनेविषे संस्थान होय ते संस्थानथी त्रीजा नागे हीन एटले वदन तथा उदर प्रमुख छिद्रो पूराई गयाथी त्रीजो नाग हीन सिद्धनी अवगाहना थायछे. ते पोतानी अव स्थानेविषे जाणवी, एम तीर्थंकरो तथा गणधरोए कह्युं छे. ॥ ४८९ ॥

एज स्पष्ट पणे दर्शावे छेः– मूलः– जं संगणं तु इहं, नवंच यं तस्स चरम समयंमि; आसीय पए सघणं, तं संगणं तहिं तस्स. ॥ ४९० ॥ अर्थः– जे सं स्थान आ मनुष्य नवनेविषे होय तेज वशवर्त्तिउ नव शरीर अथवा संसारनो त्याग करतां अथवा काययोग मूकतां चरमसमये सूक्ष्मक्रिया प्रतिपत्ति ध्यान ना बले करी वदन तथा उदरादि रंध्रने पूरवाथी त्रीजे नाग हीन प्रदेश घन था य छे. तेज प्रदेशघन मूल प्रमाणनी अपेक्षाए त्रीजे नाग हीन संस्थान कहेवाय छे ते लोकाग्रस्थित सिद्धनुं जाणवुं पण बीजानुं नही ॥ ४९० ॥

ते अवस्थान एक आकारेज थाय छे अथवा अन्य आकारे पण थायछे? ते कहेछेः– मूलः– उत्ताणउव पास,ल्ल उ य ठियउ निसन्नउ चेव; जो जह करेइ कालं; सो तह उववज्जए सिद्धो. ॥ ४९१ ॥ अर्थः– उत्तान एटले चीतुं सूतां, चलटुं सूतां, पासुंवाली सूतां ऊना ठतां अथवा बेठा ठतां, अधिक शुं कहेवुं प ण जे मनुष्य नवमां जेवा प्रकारे अवस्थित ठतां काल करे ते तेवाज प्रकारे करी सिद्ध थाय छे. ॥ ४९१ ॥ ए चोपनमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– हवे 'अवठि अ ठाणं सिद्धाणमिति' एटले सिद्धने रहेवाना स्था ननो पचावनमो द्वार कहेछे.– मूलः– ईसिप्पाप्भाराए, उवरिं खलु जोयणस्स जो कोसो; कोसस्स य छप्भाए, सिद्धाणोगाहणा नणिया. ॥ ४९२ ॥ अर्थः– सर्वार्थ सिद्ध विमाननी ऊपर बार योजन वर्चा जता पिस्तालीश लाख योजन विष्कंन वृत्तवाली, एटलाज आयाम युक्त छे; तेमांना वे पण विचाले कम्माह प्रमाणे आ याम विष्कंन आठ योजन प्रमाण क्षेत्रे आठ योजन बाहुल्य छे. तदनंतर एकेक प्रदेश हाणी करतां अंतनेविषे मक्षिकाना पांखथी पण पातली अंगुला संख्येय नाग मात्र बाहुल्य छे. सर्व श्वेतवर्ण एटले निर्मल स्फटिकना जेवी छे. ऊघाडेला छत्र अ थवा घृतथी नरेला वाटकाना आकारे. एवी ईषत् प्राग्नारा नामनी सिद्ध शिला जा णवी. अही केटलाएक कहेछे के, सर्वार्थ सिद्धनी ऊपर बार योजन उपरांत प्राग नाराजी ऊपर एक योजन गया पछी लोकांत छे. ते योजनना ऊपरला कोश ए टले चोथा गव्यूतिना अथवा क्रोशना सर्वोपरना छठा नागनेविषे त्रण शें तेत्रीश धनुष्योने बत्रीस अंगुल जेटली जग्यामां सिद्धनी अवगाहना छे. उत्कर्षथी एटलोज

सिद्धावाहनानो जाव श्री वीतरागेकह्यो छे. यडुक्त॥ तिन्निसया तेत्तीसा धनुत्तिनागीय कोस उप्नागो, जपरमो गाहोर्य, तो कोसस्स उप्नाग ॥४ए२॥ मूल – अलोए पडिया सिद्धा,लोयग्गे य पइठिया, इह्नं बोदि चइत्ताण, तत्थ गतूण सिज्झई ॥४ए३॥अर्थ अही सप्तमी तृतीयार्थेछे अलोकनेविषे केवल आकाशास्तिकाय छे पण धर्मास्तिकायादिना अन्नाव थकी सिद्ध प्रतिहणाणा थका पचास्तिकायात्मक लोकना अग्रे एटले मूर्द्धनि नेविषे प्रतिष्ठित एटले अपुनर्गतिए अवस्थित थया छे तथा आ मनुष्य क्षेत्रनेविषे शरीरनो त्याग करीने लोकना अग्रे समयातरे प्रदेशातरने न स्पर्शता त्यां प्राप्त थईने सिद्ध थाय छे एटले निष्ठितार्थ थाय छे ॥४ए३॥ ए पचावनमो द्वारपूरोथयो

अवतरण – सप्रति 'अवगाहणाय तेसि, उक्कोसत्ति'– सिद्धनी उत्कृष्टी अव गाहना देहना माननो उप्पन्नमो द्वार कहेछे – मूल – तिन्नि सया तेत्तीसा, धणु त्तिनागो य होइ बोधव्वो, एसा खलु सिद्धाण, उक्कोसोगाहणा नणिया ॥४ए४॥ अर्थ – सिद्धोनी उत्कृष्ट अवगाहना त्रण शें तेत्रीश धनुष्य तथा एक धनुष्यना त्रीजा नाग जेटली जाणवी ते आ प्रमाणे – सिद्धि गमन योग्य उत्कृष्ट अव गाहना पाच शें धनुष्यरूप छे तेनो त्रीजो नाग एक शो छासठ धनुष्य ने चो सठ आंगली ते सिद्धि गमनकाले वदन तथा उदरादि विवरणो पूरायाथी स कुचित थई जता ते पांच शें धनुष्योमांथी ओछा कस्याथी बाकीनी उत्कृष्ट सिद्धा वगाहना जाणवी अने जे सवा पांचशें धनुष्योनी उत्कृष्टथी अवगाहनानु मान सिद्धिगमन योग्य मरुदेवी प्रमुखनु क्यांक सजलाय छे, ते देशांतरेकरी जाणी लेवु ॥ ४ए४ ॥ ए उप्पन्नमो द्वार पूरो थयो ॥

अवतरण – हवे 'मज्झिम सिद्धोगोहणत्ति' एटले मध्यम सिद्धावगाहनानो सत्तावनमो द्वार कहेछे – मूल – चत्तारिथ रयणीउ, रयणि तिनागूणिया य बो धव्वा, एसा खलु सिद्धाण, मज्झिम उगाहणा नणिया ॥ ४एए ॥ अर्थ – चार हाथ उपर एक हाथ त्रीजे नागे ओछो करिये एटली सिद्धोनी मध्यम अवगाह ना जाणवी श्री महावीर नगवानना शरीरनु मान सात हाथनु हतु तेणे सि द्धावस्थानेविषे रध्रपूरवाथी बे हाथ ने आठ आगला जेटलो नाग सकुचाई गया थी बाकी चार हाथ ने शोल आंगला मध्यमावगाहना जाणवी उपलक्षणथी उ त्कृष्ट सिद्धावगाहनाथी नीचे अने जघन्यथी ऊपर ए सर्व मध्यमावगाहना थाय छे

आशंका – जघन्य पदे सात हाथ उचा ने आगमनेविषें सिद्धि कही छे तेथी ए अवगाहना जघन्यथी कहेवाय तेने मध्यम केम कही !

समाधानः— ते अयुक्त छे. केमके, तने वस्तुतत्वनुं अपरिज्ञान छे माटे सामान्य केवलीने तो हीन प्रमाण पण थाय छे, आ अवगाहना माननेविषे सामान्य सिद्धनी अपेक्षाए करी हीनता कही छे अने तीर्थंकरनी अपेक्षाए जघन्य पदे तेम पण कहुं छे. माटे एमां कांई दोष नथी. ॥ ४९५ ॥ ए सतावनमो द्वार पूरो थयो

अवतरणः— हवे 'जहन्न सिद्धोगाहणत्ति' एटले जघन्यथी सिद्धावगाहनो अठावनमो द्वार कहेछेः— मूलः— एगा य होय रयणी, अठेवय अंगुलाइ साहीया; एसा खलु सिद्धाणं, जहण्ण उगाहणा नणिया. ॥ ४९८ ॥ अर्थ.— एक हाथने आठ आंगलनी जघन्यथी सिद्धावगाहना तीर्थंकर तथा गणधरोए कहीछे. ते आमः— सिद्धि गमनयोग्यने जघन्य अवगाहना बे हाथ प्रमाण होय छे. तेमां रंध्र पूरण थतां त्रीजा नागना शोल आंगल बाद करतां एक हाथ ने आठ आंगलनी जघन्यथी अवगाहना थाय छे. एवी बे हाथनी अवगाहना कूर्मापुत्रनी जाणवी; अथवा सात हाथ ऊंचुं शरीर छतां पण यंत्रपीजनादिकेकरी संवर्सित शरीरनी बे हाथनी अवगाहना थायछे. ॥ ४९६ ॥ ए अठावनमो द्वार पूरो थयो. ॥

अवतरणः— हवे 'सासय जिण पडिमा नामत्ति' एटले शाश्वत जिन प्रतिमां आमंत्रण पूर्वक आशिषानो उगणसाठमो द्वार कहेछेः— मूल·— सिरि उसहसेण पहुवा,रि सेण सिरि वद्धमाण जिणनाह; चंदाणण जिण सवे, वि नवहरा होह मह तुम्हे. ॥ ४९७ ॥ अर्थः—श्री वृषभसेन एटले ऋषभानन, प्रभु वारिषेण; श्री वर्द्धमान जिननाथ, तथा श्री चंद्रानन जिन ए सर्वे तमे मने संसारना निनाशक अथवा नवहर थायो. ॥ ४९७ ॥ ए उगणसाठमो द्वार पूरो थयो.

अवतरण.— हवे 'जिनकप्पि उपगरण संखत्ति' एटले जिनकल्पीना उपकरणनी संख्यानो साठमो द्वार कहेछेः—मूलः— पत्तं पत्ताबंधो, पायठवणं च पायकेसरिया; पडलाइ रयत्ताणं, च गोछउ पायनिज्जोगो ॥ ४९८ ॥ तिन्नेव य पछागा, रयहरणं चेव होइ मुहपत्ती; एसो छुवालस विहो, उवही जिणकप्पियाणं तु ॥ ४९९ ॥ अर्थः— जेथी व्रतीनी उपक्रिया थायछे तेने उपकरण कहे छे. ते उपधि बे प्रकारनो छे एक औघिक ने बीजो औपग्रहिक. तेमां उघ एटले प्रवाह, ते सामान्य पणे सदा थाय छे एटले ते परंपरा प्रवाहे करीने साधुने ग्रहण थाय छे ते औघिक; अने उपसमीपे संयमना उपष्टंभने अर्थे जे वस्तुनुं ग्रहण करवुं ते उपग्रह जाणवुं. जे प्रयोजन सहित होय ते उपग्रहिक ; एटले कारण पड्युं छतां संयम मात्रने अर्थे जे ग्रहण थायछे ते उपग्रहिक जाणवो, पण जे नित्य होय

ते न जाणवो तत्र औधिक उपधि बे प्रकारनो छे – एक गणना आश्रयीने बी जो प्रमाण आश्रयी तेमां गणना आश्रयी ते एक बे तथा त्रण आदिरूप, तथा प्रमाण आश्रयी ते दीर्घ तथा पृथुत्वादिरूप जाणवो तेमज औपग्रहिक उपधि प ण तेज बे प्रकारनो छे तत्र औधिक उपधि गणना प्रमाणथी जिन कल्पीने अही प्रतिपादन करिये छे, तेमां १ पत्त एटले पात्र २ पात्रबंध तेजोळी ते चार छे डागानु वस्त्र ३ पात्रस्थापन एटले ते कम्बलमय खम जेमां पात्र रखाय छे ते ४ पात्रकेसरिका एटले पात्र प्रत्युपेक्षणिक जे चलवली ते प्रसिद्ध छे ५ पटल एटले भिक्षा करवाने फरतां जे पात्रनी उपर ढकाय छे ते ६ रजस्त्राण एटले पात्रनो विटणो ७ गोच्छक एटले कम्बलनो खम जे पात्रनी उपर देवाय छे ते. ए सा त प्रकारनो पात्रनिर्योग एटले पात्र परिकर छे ॥४९८॥ तथा त्रण प्रछादक कपमा ते प्रावरणरूप जाणवा तेमां बे सूत्रना अने एक ऊननो होय छे, ए दश थया तथा रजोहरण अने मुखपोतिका. ए उत्कर्षथी द्वादशविध उपधि जिन कल्पीने थायछे.

आशंका – जिनकल्पी एक सरूपेज थाय छे के, जुदा जुदा सरूपे पण थाय

समाधान – मूळ – जिनकप्पिआवि डुविहा, पाणीपाया पडिग्गहधरा य पा उरण अपाउरणा, एक्केका ते भवे डुविहा ॥५००॥ अर्थ –जिननो कल्प एटले जे आचार तेने जिनकल्प कहिये ते विद्यमान छे जेनेविषे तेने जिनकल्पी कहेछे. ते जिनकल्पी फरी बे प्रकारना होयछे एक पाणिपात्र ने बीजा पतग्रहधर, तेमां जेने हस्तज पात्र मात्र होय ते पाणी पात्र, ने जेने काष्ट प्रमुखनुं पात्र होय ते पतग्रह धर ते प्रत्येक वळी बबे प्रकारना होय छे एक सप्रावरण, ते कपमासहित ने बीजा अप्रावरण ते कपमारहित ॥ ५०० ॥ आशंका – जिनकल्पीने द्वादशविध उपधि कह्यो ते सर्वने एक प्रकारेज थाय छे?

समाधान – एक प्रकारे नही पण आठ प्रकारछे ते कहेछे – मूळ – डुग ति ग चउक्क पणग, नव दस एक्कारसेव बारसग, एए अठ विगप्पा, जिण कप्पे हुंति उवहिस्स ॥ ५०१ ॥ अर्थ – द्विक त्रिक, चतुष्क, पचक, नवक, दशक एकादश क ने द्वादश ए आठ विकल्प जिनकल्पिनी उपधिना थाय छे ॥ ५०१ ॥

अवतरण– तेज देखाडे छे – मूळ – पुत्ती रयहरणेहिं, डुविहो तिविहो य ए क कप्प जुउ, चउहा कप्प डुगेण, कप्प तिगेण तु पचविहो ॥ ५०२ ॥ डुविहो तिविहो चउहा, पंचविहो विहु सपायनिज्जोगो, जायइ नवहा दसहा, इक्कारस हा डुवालसहा. ॥ ५०३ ॥ अर्थ – मुखपोतिका तथा रजोहरणेकरी द्विविध, त

करण तो पाणिपात्र तथा प्रावरणवर्जित जिनकल्पिक पण धारण करेछे. तेने विषेज एक कपडो मुक्त थयाथी पूर्वोक्त त्रिविध उपधि थायछे. तेमज बे कपडां मळी चतुर्विध थाय; त्रण कल्प सहित पंचविध थाय; तथा पूर्वोक्त द्विविध. त्रिविध. चतुर्विध. पंचविध उपधि, सात प्रकारना पात्र निर्योग सहित छतां यथा क्रमे नवविध, दशविध, एकादशविध तथा द्वादशविध थायछे. तत्र रजोहरण मुख पोतिका, अने सप्तविध पात्रनिर्योग सहित नवविध उपधि अप्रावरण पात्र जोजीने जाणवो. बाकीना दशविध, एकादशविध, तथा द्वादशविध पात्रजोजी सप्रावरणने जाणवो. ॥ ५०२ ॥ ५०३ ॥

अवतरणः— हवे सूत्रकारज अप्रावरणना उपकरणोनी संख्या कहेछेः—मूलः— अहवा डुगं च नवगं, ववगरणे हुंति डुन्नि विगप्पा; पाउरण वज्जियाणं, विसुद्ध जिणकप्पियाणं तु. ॥ ५०४ ॥ अर्थः— पूर्वे सामान्ये करी जिनकल्पिक उपधि ना आठ भेदोनुं प्रतिपादन कर्युं. अथवा द्विकं नवकं एटले ए बेज भेद छे. तत्र द्विक ते जे पात्रे जमे नही ते रजोहरण तथा मुखपोतिकारूप; अने नवकं ते जे पात्रे जमतो होय तेने रजोहरण मुखपोत्तिका तथा सप्तविध पात्रनिर्योग लक्षण जाणवुं. एवुं जे प्रावरण एटले कपडा वर्जित छे ते स्वल्पोपधिपणेकरी विशुद्ध जिनकल्पिक कहेवाय छे. एओनाज द्विक तथा नव लक्षणवाला बे भेद कह्या. अने कपडा राखनार अविशुद्ध जिनकल्पिकना तो १०-११-१२ ए भेद जाणवा.

अवतरणः— ए कारण माटे जिन कल्प पडिवजण द्वारनी तुलना कहे छेः— मूलः—तवेणय सुत्तेणय, एगत्तेण बलेण य; तुलणा पंचहा वुत्ता, जिणकप्पं पव ज्जउ. ॥ ५०५ ॥ अर्थः—जेणेकरी आत्मानुं तोलन एटले परीक्षा थाय छे, तेने तुलना कहिये. अर्थात् आत्माने जिनकल्पांगी करण प्रति परिक्षण करवुं. ते पांच प्रकारनी कहीछे, ते कहे छे.—प्रथम तवेण के० तपे करी एटले चतुर्थ षष्ट अष्टम्यादि छ मास सुधीनो तप; तेना अभ्यासे करी आत्माने भाववुं; ज्यारे एवा तप करवाथी प्रथम बाध न थाय त्यारे ते जिनकल्प पडिवजे; अन्यथा नही, ए भाव बीजो सुत्तेण के० सूत्रेकरी एटले पूर्वादिलक्षण श्रुतनो एवो अभ्यास करे के जेथी पश्चानुपूर्व्यादि क्रमे करी तेनुं परावर्त्तन करवाने शक्तिमान थाय. त्रीजो सत्तेण के० सत्वे करी एटले मानसिक अवष्टंभ लक्षणे करी आत्माने ए प्रकारे तोलन करे के जेम शून्यगृह तथा स्मशानादि भयने उत्पन्न करनारा स्थानोनेविषे कायोत्सर्गादि गृहण समये निरर्गल दुर्गोपसर्ग परिसहादिके करी क्षोभायमान थाय नही. चोथुं ए

गत्तेण के० एकत्वे करी एटले एक पणे आत्माने नाववुं एकाकी विचरवु; ज्यारे पोतानी ख्याति तेनो बोध करी न शके एटले ए क्यां विचरे छे एवो पण कोइ जाणी शके नही एवी शक्ति थाय त्यारे जिन कल्प अंगीकार कराय छे अन्यथा नही अने पांचमो बलेणय के०बलेकरी एटले एक अंगुष्ठादिके करी स्थित रहीने व करी ऊना रहेवु, ए शरीरेकरी, तथा, बीजो धृतिरूप, एटले मनेकरी स्थित थइने आत्मानी परीक्षा करवी ए प्रकारे पांच नेदेकरी तुलना जाणवी ए यथा पछी जिनकल्पनी प्रतिपत्ति करवायोग्य थाय छे ॥ ५०५ ॥ ए साठमो द्वार पूरो थयो

अवतरण – हवे 'थविर कप्पोपकरणे इति' एटले स्थविर कल्पना उपकरण नो एकसठमो द्वार कहे छे – मूल – एए चेव डुवालस, मत्तग अइरेग चोलपट्टो उ, एसो चउदसरूवो, उवही पुण थेरकप्पस्स ॥ ५०६ ॥ अर्थ – पूर्वे कहेला जिनकल्पिक संबंधी पात्रकादि मुखवस्त्रिका पर्यंत बार प्रकारना उपधि थकी अ तिरिक्त एक मात्रक ने बीजो चोलपट्ट ए बे लीधाथी चतुर्दश उपधि स्थविर कल्पी विषयकने थाय छे गणना प्रमाणे करी एम जाणवु, तेमां प्रथम पात्रकनु प्रमा ण कहे छे – मूल – तिन्नि विहत्थी चउर, गुल च नाणस्स मज्झिम पमाणं, एत्तो हीण जहन्न, अइरेगयरं तु उक्कोस ॥ ५०७ ॥ अर्थ – त्रण वेत ने चार आंगल जेटला परिधिवालु जे नाणस्स के० पात्रं होय ते मध्यम प्रमाणनु कहेवाय छे ए टले वर्तुल आकारने छिद्र रहित, स्निग्ध वर्णोपेत, एवु पात्र परिधियुक्त जाणवु एत्तो के० एवा मध्यम प्रमाणवाला पात्रथी हीण के० न्यून बे अथवा एक वेत प्रमाण वालु प्रमुख पात्र होय ते जघन्य कहेवाय, अने एउथी अइरेग के० अ तिरिक्त एटले मध्यम प्रमाणथी अधिक होय ते उत्कृष्ट प्रमाणवालु जाणवु ॥ ५०७ ॥ हवे पात्रबधनुं प्रमाण कहे छे – मूल – पत्ताबंधपमाणं, नाणप माणेण होइ कायव, जह गंठिमि कयंमि, कोणा चउरंगुला हुंति ॥ ५०८ ॥ अर्थ – पात्रना बधनु प्रमाण ते नाणपमाणेण के० नाजनने प्रमाणे करी थाय छे जो मध्यम पात्रनो बध करवो होय तो बंधक पण तेज प्रमाणे करवु, जघन्य थी करवु होय तो तेपण ते प्रमाणे करवु अने उत्कृष्ट करवु होय तो तेपण ते प्रमाणे मोटु करवु कपर गांठवाळ्या उपरांत चार आंगला जेटलु वस्त्र वधारे रहे एवु करवु ॥ ५०८ ॥ हवे पात्रनु स्थापनक, गोछक तथा पात्रप्रत्युपेक्षणिक ए टले पडिलेहिणी ए त्रणेनुं प्रमाण कहे छे –मूल – पत्तग ठवणोय तहा गोछग पायपडिलेहण चेव, तिएहंपिउप्पमाणं, विहत्थि चउरंगुलंचेव ॥ ५०९ ॥

अर्थः — पात्रक स्थापन, गोछक तथा पात्र प्रतिलेखनी ए त्रणनुं प्रमाण एक वेंतने चार अंगुल एटले सोळ आंगळनो छे एम जाणवुं. एनुं प्रयोजन कहे छे — पात्रबंध तथा पात्र स्थापने करी रज प्रमुखथी रक्षण करवुं; गोछकथी भोजन समे तथा पडलादिनुं प्रमार्जन करवुं, केसरिकाए करी पात्रप्रमार्जन करवुं. उक्तं च — "रयमाइ रक्खणठा, पत्ताबंधो य पायठवणं च, होइ पमज्जणहेउं, केसरिया इउ पायाणं" ॥ ५०९ ॥ हवे पडलानुं प्रमाण कहे छे — मूल — अड्डाइज्जा हत्था, दीहा छत्तीस अंगुले रुंदा; बीयं पडिग्गहाओ, ससरीराउ य निप्पन्नं ॥ ५१० ॥ अर्थः — अढी अढी हाथ दीर्घ एटले लांबो अने छत्रीस आंगळ एटले एक हाथने बार आंगळनी पहोळी ए प्रमाणे विस्तीर्ण पडलो होय छे. अथवा बीजुं प्रमाण आवी रीते छेः— पतद्ग्रह एटले पात्राथी ने स्वशरीरथी निष्पन्न थनो छुं अर्थ.— मोटे पात्रके ने मोटे शरीरे, तथा लघुतर पात्रके ने कृश शरीरे पडलो पण तदनुसारे करवां ॥ ५१० ॥ ते पडलानुं स्वरूप तथा प्रयोजन देखाडे छे.— मूल — "कयलीगप्रदलसमा, पडला उक्किट्ट मज्झिम जहन्ना; गिम्हे हेमंतमिय वासासु य पाणिरक्खठा ॥ ५११ ॥ अर्थः— कदली गर्भदल समान महा उज्वल सुकोमल, बारीक तथा सघेजा तारवाळा घाटा होय जोये ते गणना करेलां पडल उत्कृष्ट मध्यम ने जघन्य ए त्रण भेदकरी भिन्न भिन्न थाय छे. ग्रीष्म एटले उष्ण काळे, हेमंत एटले शीतकाळे, अने वर्षाकाळे प्रत्येकनेविषे त्रण प्रकारना जाणवा ते शासारू कराय छे? ए विषे, आम कहु छेः— उघाडा पात्रानेविषे संपातिम जीव पडे छे. जेम के, पवनेकरी कंपित थएला वृक्षो प्रमुखना पत्र पुष्प फळ, सचित्त रज सलिलादिक, व्योमवर्ति विहंगमना पुरीष व्युत्साहृत पांशु प्रकारादिक आवी पडे छे. ते माटे तेना संरक्षणने अर्थे पडलोने धारण कराय छे. तथा भिक्षाने साम भ्रमण करनारा साधुनेपण कदाचित वेदोदयनो संभव छे माटे तेनुं विकुर्वण थयाथी लिंगने ढांकवाने अर्थे स्थगन कराय छे. ॥ ५११ ॥ हवे एनीज उत्कृष्ट मध्यम तथा जघन्ये करी ग्रीष्मादिकनेविषे संख्या कहे छेः— मूलः—तिन्नि चउ पंच गिम्हे; चउरो पंच छग्गं च हेमंते, पंच छ सत्त वासा,सु हुंति घण मसिण रु वाते. ॥५१२॥ अर्थः— ग्रीष्मनेविषे उत्कृष्टथी शोभावाळा होय एवा त्रण रेखायछे केम के काळना अतिरूक्ष पणाने लीधे सचित्त पृथ्वी रज प्रमुखनी परिणतिए तेथी भेदाय नही माटे. अने मध्यमथी घणी शोभावाळा पण नही नेअशोभन पण नही एवा चार राखवा. जघन्यथी महा जीर्ण प्राय अत्यंत अशोभन थाय तो पांच राखवा

एयी घणा कार्य सरे इहा उत्कृष्ट मध्यम ने जघन्य जे कह्यु ते शोनानी अपेक्षायें जाणवु हवे हेमत ऋतु एटले शीतकालनेविषे उत्कृष्ट चार राखवा, केमके, कालना स्निग्धपणाना सघटने लीधे पटला नेदायानो सनव छे ते माटे अधिक कहिये ते मन उत्कृष्ट शोनावालां चार, मध्यम पांच, तथा जघन्य शोनावालां छ जाणवां तथा वर्षाऋतुनेविषे अत्यंत स्निग्धपणु होय छे माटे अतिघणे काले पटला नेदाय छे माटे ते उत्कृष्ट पाच, मध्यम छ, अने जघन्य सात जाणवां ते पटलो घन को मलादिरूप करिये जेना ढाकवायी सूर्य न देखाय ॥ ५१२ ॥

हवे रजस्त्राणनु प्रमाण कहेछे — मूल — माण तु रयत्ताणे, नाण पमाणेण होइ निप्पन्न, पायाहिण करत, मझे चउरगुल कमइ ॥ ५१३ ॥ रजस्त्राणनु प्र माण नाजन एटले पात्रना प्रमाणे करी थायछे ते आवीरीते जाणवु तिर्यक् प्रदक्षिणा क्रमेकरी नाजननु वेष्टन थतां नाजनना मध्य नागे जेम चार आंगल रजस्त्राणना अनुक्रमे सर्व छेडा वधे ते प्रकारे रजस्त्राण ते जोली करवी एनुं प्र योजन — मूषक नक्षण, रेणु पतन, वर्षादनुं उदक पडवु, अने सचित्त पृथ्वीका यादि पात न थाय माटे राखवा उक्तच —'मूसग रय उक्कोरे, वासासिन्हार पयर रक्खहा, कांति गुण रयत्ताणे, एव नणियं जिणिवेहि' ॥ ५१३ ॥

हवे कप्प के० पछेडीनुं प्रमाण कहेछे —मूल —कप्पा आयपमाणे, अड्डाइज्जा य वित्थरा हत्था, दोचेव सुत्तियाओ, उन्निय तइओ मुणेयव्वो ॥ ५१४ ॥ अर्थ - कल्प पोताना शरीरना प्रमाणे एटले साडात्रण हाथ दीर्घ एटले लांबु, अने अ ढी हाथ पहोंलु कहेलु छे एवां बे सूत्रनां करेलां अने एक ऊननुं करेलु मली त्रण जाणवां ॥ ५१४ ॥

हवे रजोहरणनु प्रमाण कहेछे — मूल — बत्तीसगुल दीहं, चउवीस अंगुलाइ दमेणु, अठ्ठंगुला दसाउ, एगयर हीण महियवा ॥ ५१५ ॥ अर्थ — सामान्यपणे रजोहरण बत्रीस आंगल दीर्घ के० लांबु करवु तेमां चोवीस आंगलनी दांडी क रवी अने आठ आंगलनी दशिका करवी अथवा एक आंगल अधिक अथवा न्यून सुधी करवु एनो अर्थ शुं ? के कांइ दम हीन होय तो दशिका अधिक प्र माण करवी ने कांइ दशिका हीन होय तो दम अधिक प्रमाणवानो करवो मली बत्रीस आंगलनु प्रमाण करवु ॥ ५१५ ॥

हवे मुहपत्तिकानु प्रमाण कहेछे —मूल —चउरंगुल विहत्थी, एयं मुहणंत गस्स उ पमाण; बीयं मुह प्पमाणं, गणणपमाणेण निप्पन्नं ॥५१६॥ अर्थ —एक वत न

चार आंगल चतुरस्र मुखवस्त्रिका एटले मुखपोत्तिका अथवा मुखानंतकनुं प्रमाण जाणवुं. द्वितीय आदेश मतांतरे मुखानंतक मुख प्रमाणे निष्पन्न एटले बनाववुं एविषे आम कहेवाय छेः--वसति प्रमार्जनार एटले पोसाल पुंजतां साधु नाशिका तथा मुखमां रज प्रवेश रक्षणाने अर्थे अने उच्चार भूमिनेविषे नाशिकाशी दोषना परिहारने अर्थे जेटलाथी मुख ढंकाय एवी वस्त्रिकानी त्रिकोणकरीने गलाना पाछला शरल भागमां जेवी रीते गांठ देवाई शकाय तेटला प्रमाणनी मुखवस्त्रिका राखे. ॥५१६॥

हवे मात्रक प्रमाण कहेछेः-- मूलः-- जो मागहउ पच्छो, सवि सेसयरं तु मत्त गयमाणं; दोसुवि दव्वग्गहणं, वासा वासेहि अहिगारो. ॥ ५१७ ॥ जे मागधो ए टले जे मगध देश उद्भव प्रस्थ 'दो असईउ पसई, दोपसईओ य सेइया होई; चउ सेइयाइ कुमउ, चउ कुमहो मागहो पच्छो.' ॥५१८॥ एनो भावः--असइ केο भूठ, बे भूठनी एक पसई कहिये, बे पसईए एक सेई थाय; एवी चार सेईए एक कुंमो था य; अने एवा चार कुंमाए एक मगध देशनो पाथो थाय छे. एवा क्रमेकरी निष्पन्न पाथो तेना मानथी वली विशेषतर एटले अधिकतर मात्रक प्रमाण थायछे. तेनुं प्रयो जन शुं ते कहेछे.--वर्षा अने अवर्षा ते ऋतुबंधकाल ए बे काळनेविषे गुरुग्लानादि प्रायोग्य द्रव्यनुं ग्रहण करिये, इहां ए भाव के जे क्षेत्रनेविषे गुरु ग्लान प्राहुणादिने योग्य द्रव्यनो अवश्य लाभ थतो होय त्यां वैयावृत्त्यकर ते मात्रकनेविषे ते संघाटक प्रायोग्य द्रव्य गृहण करे; अने ज्यां तेना प्रायोग्यद्रव्यनो ध्रुव लाभ न होय त्यां सर्व संघाटक मात्रकनेविषे गुरु प्रायोग्य द्रव्य गृहण करे; केमके, एवुं न जणाय के, कोईने कांई भावशे! कोइने शुं भावशे? तथा जे क्षेत्रे जे ते काले स्वभावेज भक्त पान संपजे छे त्यां प्रथम मात्रकनेविषे गृहण करवुं, पछी शोधन करीने भक्त पान इतर भाजनेविषे प्रक्षेपन करवुं. तथा दुर्लभ घृतादि दान गृहण सहसात्कारे ला भे तो तेमां लीजे इत्यादि मात्रकनुं प्रयोजन जाणवुं. ॥ ५१७ ॥ ५१८ ॥

हवे बीजुं मात्रकनुं प्रमाण कहेछेः-- मूल.-- सूवोदणस्स भरियं, दुगाउ अद्धा ण मागउ साहू; भुंजई एगट्ठाणे, एयं करमत्तग पमाणं. ॥ ५१९ ॥ अर्थ-- सूपो दन एटले नरम दाल चोखा सहित भरेलुं जे एक स्थान एटले भाजनरूप बे गा उथी आवीने साधु खाए, ते किंचितमात्र बीजुं प्रमाण जाणवुं. मूल नगरथी उपनगर गोकुलादिकनेविषे बे गाउनेविषे रहेलो छतां त्यांथी भिक्षा मांगी लावीने वसतिनेविषे मात्रकमां सर्व नाखी ते समये घणला श्रमथी एक स्थाने स्थित थाय. अने ते सूपोदन खाय, ते जेटलुं साधु खाई शके तेटलुं, ते पात्रमां माय.

तेथी अधिक अथवा न्यून कांई थाय नही. त्यारे ते प्रमाण जाणवु ए तात्पर्य ॥५१९

हवे चोलपट्टनुं प्रमाण कहे छेः— मूल — दुगुणो चउग्गुणो वा, हत्थो चोल चवलपट्टोउ, थेरे जुवाणयाणं, सण्हे थुल्लमिय निनासा. ॥ ५२० ॥ अर्थ — द्विगुण अथवा चतुर्गुण कस्यो छतो जेम चार हाथ चतुरस्र प्रमाण थाय तेम चोल शब्दे पुरुषनु चिन्ह, तेनु पट शब्दे वस्त्र तेने चोलपट्ट कहेवो ए द्विगुण अने चतुर्गुणनु प्रमाण केवी रीते छे ते कहे छे — क्रमेकरी स्थविर एटले वृद्ध अने बीजो तरुणनेविषे सामर्थ्यना प्रयोजनने अर्थे जाणवु तेमां स्थविरने बे हाथनो चोलपट्ट जाणवो केमके, तेनी इंद्रियने प्रबल सामर्थ्यनो अभाव छे, माटे अल्प प्रावरणथी पण निर्वाह थाय छे, अने तरुणने इंद्रियना प्रबलपणा माटे चार हाथनो चोलपट्ट करवो, ए भाव ते वली श्लक्ष्ण एटले झीणो अने स्थूल एटले जाडो होवो जोये ए बे भेदमांथी स्थविरे बारिक करवो, केमके, इंद्रियना स्पर्शथी चोलपट्टना उपघातनो अभाव छे माटे अने तरुणने माटे स्थूल कर्त्तव्य छे. केमके, एनी इंद्रियथी उपघात थाय ते माटे ॥ ५२० ॥

हवे पूर्वे अनुद्दिष्ट उपकरण प्रस्तावादिनेविषे परिगृहिक उपधिरूप सत्थारक उत्तर पट रखाय छे तेनु मान कहे छे — मूल — संथारुत्तरपट्टो, अड्ढाइज्जा य आयया हत्था, दोण्हंपिय विच्छारो, हत्थो चउरंगुलो चेव ॥ ५२१ ॥ अर्थ — सत्तारक तथा उत्तरपट्ट ए बन्ने प्रत्येक अढी हाथना आयत के० लांबा जोये अने एक हाथने चार आंगला पहोलाईवाला जोये एनु प्रयोजन — सत्तारकेकरी प्राणी तथा शरीरे जे रजरेणु लागे तेनी रक्षा थाय छे; माटे तेनो अभाव होय तो शुद्ध भूमिविषे शयन कस्या छतां पण साधु पृथ्वीआदि प्राणीउनो उपमर्दन करनारो थाय अने शरीरनी उपर रेणु लागे, तथा उत्तरपट्ट पण क्षौमिक षट्पदादि संरक्षणार्थ एटले दाबना करेला संथारामांनी भ्रमरिओनो घात न थवा माटे सत्तारकनी उपर पथराय छे एम न करतां कबलमय सत्तारक कस्याथी शरीरना संघर्षणने लीधे ए प्रमुख जीवोनी विराधना थाय ॥ ५२१ ॥

हवे सूत्रकार, केटलाएक उपकरणोना प्रयोजन प्रतिपादन करतां प्रथम रजोहरणनु प्रयोजन कहे छे — मूल — आयाणे निरकेवे, ठाण निसीयण तुयट्ट संकोए, पुव्विं पमज्जणहा, लिंगठ्ठ चेव रयहरण॥ ५२२ ॥ अर्थ — आदाने एटले ग्रहण करती वखते, निक्षेपे एटले त्याग करवाना समये, स्थाने एटले उभा रहेतां, निषीदने एटले बेसतां, उठतां, शयन करतां संकोचने एटले आंगने संकेलतां, उप

लक्षणथी श्रागनो प्रमार पण जाणवो. एटली क्रिया करतां संपातिमादि सूक्ष्म जीवनी रक्षा करवाने अर्थे पूर्वे जूम्यादिनुं प्रमार्जन करवा सारु रजोहरण राखवुं एवुं तीर्थंकरे कथन करेलुं वे. पूर्वे प्रमार्जन करेला पात्रादिकनेविषे आदान करवाथी अवश्य मशक कुंथादिकनो उपघात थाय. तेने जो रजोहरणे करी प्रमार्जन कर्युं होय तो तेओनी रक्षा करी एम थायहे. तथा अर्हदीक्षानो लिंग एटले ए प्रथम चिन्ह वे ते जणाववाने अर्थे रजोहरण राखवुं. ॥ ५२७ ॥

हवे मुखवस्त्रिकानुं प्रयोजन कहेहेः— मूलः— संपाइम रयरेणू, परमज्जण ठाव यंति मुह पोत्तिं; नासं मुहं च बंधइ, तीएव सहिं पमज्जंतो. ॥ ५२३ ॥ अर्थः— संपातिम जीवो मक्षिका मांस तथा मशकादि तेओना रक्षणने अर्थे नाषण करतां मुखनी उपर मुखवस्त्रिका देवाय वे. तथा रज एटले सचित्त पृथ्वीकाय तेना प्रमार्जनने अर्थे, तथा रेणु प्रमार्जनने अर्थे मुखपोतिका तीर्थंकरादिकोए प्रतिपादन करेली वे. तथा वसति उपाश्रयने प्रमार्जतांथतां साधु नासिका तथा मुख बांधे वे एटले आहादन करेवे, तेणे करीने मुखादिकनेविषे रेणु प्रवेश करे नही, तेमबांधवी. ५२३

हवे पात्र गृहणनुं प्रयोजन कहेवेः— मूलः—वक्काय रस्कणठा; पायग्गहणं जिणेहिं पन्नत्तं, जेय गुणा संजोए, हवंति ते पायगहणेवि. ॥ ५२४ ॥ अर्थः— वकायनो रक्षणाने अर्थे जिनेश्वरे पात्र गृहण करवानुं कह्युं वे. पात्रक विना साधु जोजनार्थी व कायना जीवोने परिशातनादि दोषे करी विणासे वे. अने जे गुणी गुरु, ग्लान, वृद्ध, बाल ते जिक्षा भ्रमण करवाने असमर्थ राजपुत्रादि अने प्राहुणा तथा अलब्धिमान साध्वादिकने अर्थे जिक्षा ग्रहणादिक संजोगे के० सांजोगिक एटले एक मंमली रुपनेविषे जे गुण सिद्धांतमां वर्णन करेला वे, ते गुणो पात्र गृहण कस्याथी थायवे. पात्र गृहणविना पूर्वे कहेला जे गुरुप्रमुख सांजोगिकादिक तेने निमित्ते जिक्षा शाथी लावी शकाय? इति जावः ॥ ५२४ ॥

हवे वस्त्र ग्रहणना गुण कहे वे.— मूलः— तणगहणा नलसेवा, निवारणं धम्म सुक्कजाणठा; दिठं कप्पग्गहणं, गिलाण मरणठयाचेव. ॥ ५२५ ॥ अर्थः— वस्त्रविना तृण व्रीहि पलालदर्जादिनुं गृहण करे; टाढेपीड्यो थको अनल एटले अग्निनी सेवा करे तेम करता जीवोनो वध थाय तेना निवारणने अर्थे कल्पनुं गृहण थाय वे. एनो जाव जेनी पासे कपडुं न होय अने गाढ शीतपडतुं होय, तेने पलाल तथा अग्निनुं सेवन अवश्य करवुं पडे वे, तेम कस्याथी जीवोनो वध थाय वे. तथा धर्म शुक्लध्यान निमित्ते शीतादिकना उपद्रवनेविषे कपडाथी आहादित

थएला सुखेकरी धर्मध्यानने शुक्लध्यान करी शके छे अन्यथा शीतादि कंपमान काय थयाथी ते ध्यान केम थई शके? तथा ग्लानि संरक्षणार्थे कपडुं ग्रहण थायछे; अन्य था शीत वातादिक करी ते गाढतर ग्लानि थईजाय, तथा मृतकनी उपर आछादनने अर्थे कपडुंलेवु अन्यथा आछादन न कस्याथी लोक व्यवहारविविरोध थाय. ५२५

हवे चोलपट्टनुं प्रयोजन कहे छे – मूल – वेउब्व वाउडे वा, हिए यही खद्ध जणणे चेव, तेसि अणुगारछा, लिंगुइया य पट्टोउं ॥ ५२६ ॥ अर्थ – जे साधु ने प्रजनन साधन जे इंद्रिय ते वैक्रिय एटले विकारवान थाय, जेमके, दाक्षिणात्य पुरुषोने अग्र नागनेविषे पुरुषाकार दीठामां आवे, तेवी रीते विकृत थाय त्यारे तेने प्रछादनने अर्थे चोलपट्ट धारण करवो अवाउड पदनो सर्वत्र संबंध छे ते जो चोलपट्टेकरी अप्रावृत होय तो आटला दोषो प्राप्त थाय यथा – कोई साधु आछादन विनाना साधनवालो थाय छे; एटले आगलना नागनेविषे चर्म करी अनाछादित लिंग होय ते छुअर्म कहेवाय तेना अनुगृहने अर्थे चोलपट्ट जाणवु तथा कोई साधुनो लिंग वायुये करी उपज्यो होय, तेने करी खद्ध के० महोग पजणो के० प्रजनन ते लिंग थाय तेना अनुगृहने अर्थे चोलपट्ट अनुमत छे, त था कोई प्रकृतिएकरीज लज्जावान होय छे तेने ढाकवाने माटे चोलपट्ट जाणवो तथा स्वभावे करीनेज कोईनो बृहत् साधन एटले विकारवान इंद्रिय थाय, तेने लोक जोईने हांसी करे, त्यारे तथाविध अनुग्रहने अर्थे चोलपट्ट छे. तथा लिंगु दयछा के० लिंगोदयने अर्थे जेम के, कदाचित् मनोहर रूपवाली अनुपमेय यौ वन युक्त वनिताने जोईने लिंगनो उदय थाय छे, अथवा जे लिंग मनोरम होय तेनी उपर चोलपट्ट ढांक्यु न होय तेने जोईने स्त्रीआने स्त्रीवेद उदय थाय माटे तेना आछादनने अर्थे चोल पट्टनी अनुज्ञा तीर्थंकरे दीधी छे ॥ ५२६ ॥

हवे एज द्वारनेविषे उपकरणादिनी व्यवस्थाने अर्थे साधुना भेद कहे छे – मूल – अवरेवि सयं बुद्धा, हवति पत्तेय बुद्ध मुणिणोवि, पढमा दुविहा एगे, ति छयरा तदियरा अवरे ॥ ५२७ ॥ अर्थ – अवरेवि के० बीजा जिनकल्पी तथा स्थविर कल्पी जे कही आव्या तेओथी जुदा पण मुनिओ थाय छे ते स्वयंबुद्ध तथा प्रत्येक बुद्ध जाणवा तेमां पढमा के० पहेला स्वयंबुद्ध ते बे प्रकारना छे- एक तीर्थंकर स्वयंबुद्ध अने अवरे के० बीजा तदितर ते अतीर्थंकर स्वयंबुद्ध ते सामान्य साधु तेनो तीर्थंकरथी जुदो अधिकार जाणवो तत्र स्वयंबुद्ध प्रत्येक बुद्धने बोधि, उपधि, श्रुत तथा लिंगकृत विशेष माटे स्वयंबुद्धने बोधि प्रमुख कहे

॥५२७॥ मूलः—तिथयर वज्जियाणं, बोही उवही सुयं च लिंगं च; तेयाइ तेसि बो ही, जाइस्स रणाइणा होइ. ॥ ५२७ ॥ अर्थः— तीर्थंकर वर्जित एटले जुदा जे स्वयंबुद्ध तेओने जिन धर्मनी प्राप्ति ते बोधि, उपधि एटले उपकरणो, श्रुत एटले ज्ञान अने लिंग, ए चार वस्तु प्रत्येकबुद्ध थकी भेद देखाडनारी छे. तेज क्रमेकरीने कहेछेः— तेओमां बोधि ते बाह्य प्रत्ययांतरे करीने जातिस्मरणादिथी बोध थाय छे. ॥५२७

हवे उपधिनो भेद कहेछेः—मूल— मुहपत्ती रयहरणं, कप्पतिगं सत्तपायनिज्जो गो ॥ इह बारसहा नवही. होइ सयंबुद्ध साहूणं ॥५२९॥ अर्थः—मुखपोत्तिक रजोहर ण, कल्पत्रिक, सप्तविध पात्राओ, ए स्वयंबुद्धने बार प्रकारनो उपधि जाणवो. ॥५२९

हवे श्रुतनो भेद कहेछेः—मूलः— हवइ इमेसि मुणीणं, पुव्वाहीयं सुयं अहवने यं ॥ जइ होइ देवयासे, लिंगं अप्पइ अहव गुरुणो ॥ ५३० ॥ अर्थः— ए स्वयंबु द्ध साधुने पूर्व जन्मनेविषे अधीत एटले पठन करेलुं श्रुत थाय छे; अथवा नथी पण थतुं. किंतु नवतर पठित थाय छे. तेमां ज्यारे पूर्वाधीत श्रुत तेने प्राप्त थाय त्यारे ते स्वयंबुद्धने देवताओ रजोहरणादि लिंग अर्पण करेछे. अने जो पूर्वाधीत श्रुत उभूत न थयो ने नवो श्रुत भण्यो होय तो तेने गुरु लिंग आपे छे. ॥५३०॥

वली एनोज विशेष कहेछेः— मूल— जइ एगागी विहरिउं, रणरकमो तारिसी वसेइछा, तो कुणई तमनह गछ वासमुणु सरइ निअमणुवा ॥ ५३१ ॥ अर्थः— ए जो एकाकी विहार करवाने समर्थ होय, अने तेवीज इछा एटले एकाकी विहा र करवानी अभिलाषा थाय तो ते एकलो विहार करे; अन्यथा एकाकी विहार करवाने समर्थ छतां जो इछानो अभाव होय तो ते गछना वासने अनुसरे ते गछनेविषे नियमे निश्चयेकरीने रहे. ए पूर्वाधीत श्रुतनो सद्भाव जाणवो. अने पू र्वाधीत श्रुतना अभावे नवा श्रुतना भणनारने तो गछ वासज अवश्य कर्त्तव्यछे तथाचोक्तंः— पुव्वाहीयं तु सुयं सेह चइ वानवा जइ सेनछितो लिंगं नियमा गुरु सन्निहे पडिवज्जइ गछेय विहरइत्ति अहवा पुव्वाहीय सुय संभवो अछितोसे लिंगं देवयाओ पयछइ गुरु सन्निहे वा पडिवज्जइ जइ य एक विहार विहरणे सम्मछो इछा वसेतो एकोचेव विहरइ अन्नहा गछे विहरइत्ति" ॥ ५३१ ॥

हवे प्रत्येकबुद्धना बोध्यादि चार स्थान कहेछे— मूलः— पत्तेय बुद्ध साहूण हो इ वसहाइ दंसणे बोही; पोत्तिय रय हरणेहिं, तेसिं जहन्नो इहा उवही. ॥५३२॥ मुहपत्ती रयहरणं, तह सत्तय पत्तयाइ निज्जोगो; उक्कोसावि नवविहो, सुयं पु णो पुव्वभवपढियं ॥५३३॥ लिंगं तु देवया दे, इ होइ कइयावि लिंग रहिउंवि;

एगागिच्चिय विहरइ, ना गछे गछ वासेसो ॥ ५३४ ॥ एक्कारस अगाइं, जहन्नतं होइ तं न उक्कोस, देसेण असंपुन्ना, इ हुंति पुव्वाइ दसवतस्स ॥ ५३५ ॥ अर्थ - प्रत्येकबुद्ध साधुने बाह्य वृषनादि कारणना दर्शनथी नियमथी बोध थाय ठे त था तेने उपधि बे प्रकारनो होयछे - जघन्य तथा उत्कृष्टथी तेमां जघन्यथी मु ख पोत्तिका तथा रजोहरण ए बे प्रकारे तथा उत्कृष्टथी मुखपोत्तिका, रजोहरण तथा सप्तविध पात्र निर्योगरूप मली नवविध जाणवो एने पूर्वपवित श्रुत नियमथी उद्भव थाय ठे ते जघन्यथी एकादश अग आचारांगादिक तथा उत्कृष्टथी एक देशेकरी न्यून दशपूर्वसुधी थाय अने प्रत्येक बुद्धना लिंग रजोहरणादिक देवता जेज तेने आपे ठे, कदाहित् लिंगरचित पण होयछे तथा वसुंधरानेविषे एकाकी ज विहारकरे पण ते गछ वासमा आवे नही ॥ ५३५॥ ए एकसठमो द्वारपूरो थयो

अवतरण - हवे 'साहूणीणोवगरणा इति' एटले साध्वीओनां उपकरणनो वासठमो द्वार कहेछे - मूल - उवगरणाइ चउद्दस, अचोलपट्टाइ कमढ य जुयाई, अज्जाणवि भणियाई, अहियाणिय हुंति ताणवर ॥ ५३६ ॥ अर्थ - पूर्वोक्त पत्त पत्ताबध इत्यादि उपकरणादि चतुर्दश ते चोलपट्ट रहित अने कमढग युक्त आर्यि काने पण कह्याठे पात्रादिनुं प्रमाण गणना स्वरूपे स्थविरोनी पठे जाणवु कम ढक ते लेपित तुबक भाजनरूप कांसानी मोटी कटोरीने आकारे एकेक संयतीने निज उदर प्रमाण जाणवु सयतिने पण मफलि मध्ये पतगृह न थाय केमके, तुछ स्वभाव ठे माटे किंतु आर्या कमढुकेज आर्यिका भोजनक्रिया करेछे माटे कमढनु ग्रहण ठे ॥ ५३६ ॥ पूर्वोक्त चतुर्दश उपकरणोथी व्यतिरिक्त अधिक उ पकरणो पण आर्यिकाने थायछे तेज कहेछे मूल - ओगहण तगपट्टो, अद्धोरुय चलणिया य बोधवा, अभ्यंतर बाहि निर्य,सिणी य तह कचुए चेव ॥ ५३७ ॥ अर्थ - अवग्रहानतक पट्टक एटले योनिने ढाकवानु वस्त्र, अर्द्धोरुक ने चलनिका जाणवी अभ्यतर निवसनी तथा बाह्य निवसनी, तथा कचुक, ॥ ५३७ ॥ मूल - उक्कछिय वेकछिय, सघाडी चेव खंधकरणी य, आहो विहम्मि एए, अज्जाण पस वी सतु ॥५३८॥ अर्थ उपकक्षिका, विकक्षिका, सघाटी तथा स्कध करणी ए आ र्यिका सबधि निषेध उपधिना पचीश भेद ठे ॥५३८॥

हवे अवग्रहानतकादिक बोल सविस्तरपणे वखाणे ठे - मूल - अह उग्गह णतक नावसंठिय गुज्ज देस रख्खड्ढा, तंतु पमाणे णेक, घणमसिण देह मास द्रू ॥ ५३९ ॥ अर्थ - उग्गह एटले योनि द्वार ते सिद्धांतोनी सज्ञानो शब्द ठे

तेनुं अवग्रहानंतक एटले वस्त्र तेने ओग्रहानंतक कहिये. ते नाविकाना संस्थान जेवुं करवुं, एटले जेम होडी मध्यभागे विशाल अने छेडाना भागे सूक्ष्म होय छे तेम जाणवुं. ते गुह्य प्रदेश रक्षणार्थे एटले ब्रह्मचर्य रक्षणार्थे ग्रहण कराय छे. ते गणना प्रमाणे एकज होय छे. ते वस्त्र ऋतुवीतराग संरक्षणार्थे घन एटले घाटुं करवुं जोईये. मसृण ते पुरुष समान कठिन स्पर्शने परिहरवाने अर्थे ते वस्त्र सुकोमल कराय छे. कारण के, जेवी स्त्रीनी योनी सुकुमाल होय छे तेवा सुकुमाल वस्त्रनो स्पर्श थवाथी लज्जालीयने लज्जालीयथी संघातन पराभव न थवा माटे कोमल वस्त्र करवुं. तथा देहना प्रमाणनी बराबर ते वस्त्रनुं मान करिये. केमके, कोईनो देह बारीक होय ने कोईनो देह स्थूल होय ते प्रमाणे वस्त्र पण करवुं. ॥५३९॥

हवे पट्टक वखाणे छे:— मूलः— पट्टोवि होइ एगो, देहपमाणेण सोउ भइयव्वो; छायंतो ग्गहणंतं, कडिबद्धो मल्लकच्छा व. ॥ ५४० ॥ अर्थः— पट्टो पण गणना प्रमाणे एक थाय छे. ते छेला भागे बीटावने बंध होतो जोइये. पोहोळाइए चार आंगलनो जोइये. अथवा तेथी कांई अधिक न्यून पोहो होय तो चिंता नही. अने लांबाई स्त्रीनी कटी प्रमाणे करवी. जेम के, कोईनी न्हानी कटी होय तेने पट्टो पण न्हानो जोइये ने कोईनी मोटी कटी होय तेने पट्टो पण मोटो जोइये छे. ते अवग्रहानंतकनी आगलथी तथा पाछलथी तेमानो भाग ढांकतो थको बांध्यामां आवे छे. ते बन्ने छेडा बांध्याथी मल्लना काछनी पठे दीसमां आवे छे. ॥ ५४० ॥

हवे अर्द्धोरुक कहे छे मूलः— अड्ढोरुओ वि तेदो, वि गिण्हिउं छायए कडी भागं, जाणुपमाणा चलणी, असि विथालंखिया एवं. ॥ ५४१ ॥ अर्थ — अर्द्धो रुक एटले साथलने जे नजे ते अर्द्धोरुक जाणवुं. ते दोविके० पूर्वे कह्यां जे अवग्रहानंतक अने पट्टो ते बन्ने गिण्हिउं के० गृहण करीने सर्व कटी भागने छा यए के० आछादन करे छाकी मूके ते मल्ल चलनाकृति प्रमाणे जाणवुं. तथा जा णुपमाणा के० गूढणने प्रमाणे होयतं चलणी के० चलनीका जाणवी ते सीवे ली न होय पण तेथी कशोये करी केवल ऋवांग्तरे ते जघाज बंधाय छे, जेम वलनि पीट एटले चर्मी पहेरीने नर्त्तकी वांसनी उपर चडी जाय छे ने त्यां नृत्य करे छे तेना जानु उघाडां रहे छे ते प्रमाणे जाणवी. ॥ ५४१ ॥

हवे अभ्यंतरनी असणी तथा बाह्यासणी एटले साडी कहे छे—मूलः— अंतो नियसिणी पुण, लीण तरी जाव अद्धजंघाओ, बाहिरगा पुण जा खलु, कडी य दोरेण पडिबद्धा. ॥ ५४२ ॥ अर्थ.— अंतर्निवसनी ते वली लीनतर आश्रीत

थाय कटीना ऊपरला नागथी मांमीने अर्द्ध जंघा सुधी थाय ठे ते परिधान काने ढीली पहेरवी, आकुलपणे जनमां हांसो न थाय माटे अने बहिर्निवसनी क टीना उपरला नागथी लईने जाखलुगा के० यावत् नीचे पगना गिरिया ढकाय तेटनी लांबी करवी ए प्रमाणे साधवीना शरीरना नीचला नागना ठ विधिए उपकरणकह्यां

हवे ऊर्ध्व कायना उपकरण कहे ठे – मूल – गएई अणु कुडए, उरोरुहा क चुओ असिधियओ, एमेवय उकछिय, सानवरं दाहिणे पासे ॥ ५४३ ॥ अर्थ - दीर्घता आश्रित एटले लंबाई पोताना हाथ प्रमाणे अडी हाथनी जाणवी, पो होलाई एक हाथनी, अथवा पोत पोताना शरीरना प्रमाणे अणसीव्युं करवु, तेनी कसो बन्ने पासे बांधवी, एवु कापालिकना कचुकनी पठे कचुक करवु, तथी उर अने स्तनोनु आछादन थाय ठे ते आ प्रमाणे –जे आंगमां सहेलाईथी घाली शकाय, लगार पण आग सकुचित थाय नही एवी ढीली कचुकी न होवाथी अति विचित्र विनागथी नयन तथा मनने अति अनिलाषिणीय देखाय, माटे क चुकनु परिधान शिथिलज कह्यु ठे अने एमेवय के० एनीपरेज उकछी एम्ने काखनी समीपे होय तेने उपकछिका कहे ठे एटले जे कुक्षीनु आछादन करे ते कचुकनी पठे न सीवेली थाय ठे ते चतुरस्र एटले समचोरस पोता पोताना हाथ प्रमाणे दोड हाथनी होवी जाये तेथी दक्षिण एटले जमणु पासु अने पूठ ढकाय ठे, अने वाम पासु तथा वाम स्कधने विषे बीटक व मेबांधी थकी पहेराय ठे ॥५४३॥

हवे विकछिका कहे ठे –मूल – वेगछिआउ पट्टो, कचुक मुक्कछिय च ठायंतो, सघामीओ चउरो, तछ डुहडक उव सयंमि ॥ ५४४ ॥ अर्थ – उपकछिकाथी वि परीत लक्षणवाळो पट्टो ते विकछिक थाय ठे तु शब्द उपकछिकाना सादृश्यपणाना अवधारणने माटे ठे, अथवा मावापासे पहेरवानो विशेष कांचूओ जाणवो अने बेउ उपकछिकनी ऊपर वाम पाशेथी पहेराय ठे अने सघाटकनेविषे उपरला वस्रो चार होय ठे तेमा एक बे हाथवालु उपाश्रयनेविषे काम आवे ॥ ५४४ ॥

मूल –दोन्नि ति हन्ना यामा, निक्कण एग एग मुच्चारे, उसरणे चउ हत्था, निसन्न पछायणमसिणा॥५४५॥अर्थ –एक बे हाथनु पहोलु बे त्रण त्रण हाथ पोहोला, एक चार हाथ पोहोलु अने ए चारे साडा त्रण त्रण हाथ लांबां होवा जोइये, अथवा चार चार हाथ लांबा दीठामा आवे ठे तेमांनो बे हाथना विस्तारवाळो उपाश्रय नेविषे उपयोगमां आवे ठे, एटले तेने मूकी प्रगट देह करी कदाचित् साध्वी होय नही अने बे जे त्रण त्रण हाथना विस्तारवाळा होय ठे तेमानु एक निहाने अर्थ

एटले वोरवा जतां ओढाय छे. अने वीजुं पछी सरिखो वेष टालवा सारु उच्चारभूमि एटले स्थंडिलेजतां ओढाय छे. ए त्रण थया तथा अवसरणे एटले समवसरणनेविषे व्याख्यान शांभलवा जाय छे त्यारे चोथुं चार हाथ विस्तारवालुं उढाय छे. ते कृत्नी हतां ढांकवाने अर्थे जाणवुं. केमके, साध्वीने त्यां बेशवानो अधिकार नथी; किंतु कृत्नीज रहेवी जोये छे. ते कारण माटे खभाथी लईने पगसुधी शरीरने आछाद न कराय छे; अने पूर्वे पेरेलो वेष पण ढंकाय छे. ए वस्त्र श्लाघादीसिने अर्थे म सृण एटले कोमल कराय छे ए चारे वस्त्रोनो जोपण भेलो परिभोग थतो नथी तो पण एउने गणना प्रकारे करी एकज रूपे जाणवुं. ॥ ५४५ ॥ हवे स्कंध करणी क हे छेः— मूलः— खंधगरणीउ चउ ह,ञ विछडा वाय विद्धुय रक्कठा; खुज्ज कर णिओ कीरइ, रूववईणं कुडह हेक. ॥ ५४६ ॥ अर्थः— स्कंधकरणी चार हाथ पहोली अने चार हाथ लांबी होय छे. एटले समचोरस सरखी जाणवी ते [illegible] रणने वात विधुलथी रक्षणने अर्थे चतुःपुटी एटले चोवडी करीने [illegible] टले खभाउपर राख्यामां आवेछे. ते स्कंध करणी संयति रूपवान होय [illegible] एटले कुरूप (कुब्ज) करवाने पण कर्यामां आवे छे. पाछलां भागनेविषे [illegible] नीचे संवर्त्तित पणे कोमल वस्त्र पट्टकेकरी उपकक्षिक ने वैकक्षिक [illegible] यछे तेउने विरुपता करवाने माटे रखाय छे ॥ ५४६॥ ए बासठमो [illegible]

अवतरणः— हवे 'जिणकप्पियाणं संखा उक्किठा एगवस[illegible] जिनकल्पीउनी सख्या उत्कृष्टे एक वस्तिमां केटली होय तेनो [illegible] छेः— मूलः— जिणकप्पियाय साहू, उक्कोसेणं तु एग वसहीए [illegible] मवि, अहिया कइयावि नो हुंति. ॥ ५४७ ॥ अर्थः—अहीं [illegible] तुयहने अर्थे अने किंचित् अप्रसिद्ध पणो होवाने लीधे [illegible] थाजंदने कल्पे एनो प्रयोजन थासे ते माटे प्रथम जिन[illegible] करेछे तत्र जिनकल्पनी इच्छा करनाराए पाछलीरात्रे [illegible] चारित्रना अनुष्ठाने करीने में आत्मानुं हित कीधुं; [illegible] हित पण कर्यो ते शिष्यो मारा गच्छनुं पालन [illegible] आत्महितने अर्थे काई अनुष्ठान करवुं उचित [illegible] ण होय तो बाकीनुं रहेलुं आयु पोतेज [illegible] ण होय तो बीजा अतिशयवान आचार्य [illegible] भक्तपरिज्ञादिकमांनुं कोईपण मरण [illegible]

जंघावल क्षीण होय तो वृद्धावास पडिवजी रहे अने जो पुष्ट शक्ति वतां जिनकल्प ने आदरे तो तेनी प्रतिपत्ति थवाने अर्थ प्रथम पांच तुलनाए करीने आत्माने तोल वु तद्यथा – तवेण सत्तेणसुत्तेण. एगत्तेण वलेणय, तुलणा पंचहा वुत्ता. जिणकप्पं पडिवज्जओ ॥ तुलना जावना परिकर्म्म ए सर्व एका र्थिक वे एना पडिवजण हार आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्त्तक, स्थविर तथा गणावछेदक स्वरुप प्रायेकरी ए पांचज थाय वे एओ पांच जावना ए करी जिन कल्पनी इन्नावाला वतां प्रथम आत्मानी जावना करे अने अप्रशस्त कंदर्प देव किल्बिष आनियोगिक असुर स माह स्वरुप अप्रशस्त पाच जावनाने सर्वथा परिहरतो, तत्र प्रथम तपेकरी आत्माने जाववु तेमा क्षुधानो पराजय एवी रीते करवो के, जो देवादिके करेला उपसर्गादिकने सहन करता व मास सुधी आहार मले नही तो पण काई वाधाने पामवु नही बीजी सत्व जा वनाएकरी जय निज्ञानो पराजय करवो ते पाच नेदेवे जय निज्ञाना जयने अर्थ रात्रिए सुतेला सर्व साधुओने विषे उपाश्रयमांज कायोत्सर्ग करवाथी प्रथम सत्व जावना थाय वे अने द्वितीयादिक तो उपाश्रयथी वाह्यादि स्थानकोने विषे जा णवी आहच –" पढमा उवस्सयम्मी, बीया वाहीं तईय चउकम्मी, सुन्न घर म्मि चउत्थी, अह पचमिया मसाणम्मी " त्रीजी सूत्र जावनाए करी सूत्राना एवो तो दृढ परिचय करवो के, जेम पोतानु नाम कोई समये पण जूलाय नही तेम कोइकाले पण सूत्र विस्मरण थाय नही जेम के, दिवस अथवा रात्रे जे समये शरीरनी वायानो अजाव होय ते वखते पण सूत्रादिकना परावर्त्तनना अनुसारे स्तोक लव तथा मुहूर्त्तादिक प्रमाण सर्व सम्यक् प्रकारे जाणी शके चोथी एकत्व जावनाए करी आत्माने जावता वतां संघाटक साधु प्रमुखनी साथे पूर्व प्रवृत्त आलाप सुख डु ख परस्पर पूववु तेनु अथवा कथानो व्यतिकर करवु इत्यादिक वाह्य ममत्वनो निराकरण ते मूल व्यवछेद करवो पवी देह तथा उपधि आदिक थी आत्माने निन्न जाणीने सर्वथा तेथी पण रहित थाय वे ते अंतर ममत्वना निराकरण जाणवो पाचमी वल जावना वे प्रकारनी वे – एक शरीर वलने बीजु मनोधृतिवल तेमा शरीर वल जिनकल्पीओनु बीजा जनोथी अधिक होय वे. तेने तप प्रमुख करवाथी शिथिलता थई जवाने लोधे यद्यपि शरीरवल तेवु रहेतु नथी तथापि धृतिवले करी आत्माने एवी रीते जाववु के जेम मोटा मोटा परिसह उपसर्गोथी काई पण वाधा थाय नही ए पांच प्रकारनी जावनाए करी जेणे पो ताना आत्माने जाव्यो वे, एवो जिनकल्पी सरिखो थको गहनेविषे रहेतो उपधि तथा

आहार विषयक बे प्रकारनी परिकर्मणा करे; १ तेमां ते जो पाणिपात्रनी लब्धिवंत थाय तो ते प्रमाणेज परिकर्मणा करेछे; २ अने जो पाणिपात्रनी लब्धि न होय तो परिग्रह धारित्व परिकर्मणानेविषे यथायोग्य परिवर्त्तन करे, एटले यथायोग्य पात्राने धारण करे. वली आहार परिकर्मणा ते त्रीजी पौरसीये वाल अने चणादिक कगोर अंत प्रात रुक्ष यथाः— "संसठ मसंसठा, उद्धड तह अप्पलेवडा चेव; उग्गहिया पग्गहिया. उज्झियधम्मो य सत्तमि य." ए सात पिंडेषणामध्ये प्रथमना बे ने मूकीने बाकीना पांचमांना गमे ते बे गृहण करे. तेमां पण एक भक्तनी ने बीजी पानकनी जाणवी. ते आगमोक्त विधिए करी गछमां रह्यो थको तुलना करी पछी जिनकल्पनो अंगीकार करतो छतो समग्र संघने एकठो करे तेना अभावे पोताना समवायने एकठा करी पछी तीर्थंकरनी समीपे तेना अभावे गणधरनी समीपे तेना अभावे चतुर्दश पूर्वधरनी सीमपे तेना अभंभवथी दश पूर्वधरनी पाशे तेना पण अलाभथी वट पीपल तथा अशोक आदिनी समीपे मोटी विभूतिए करी युक्त जिन कल्प अंगीकारकरे पछी पोताना पदे स्थापेला सूरि सहीत बाल वृद्ध, कुल गच्छ एउनी साथे विशेषे करीजे पूर्वना विरोध होय ते क्षमावे. तद्यथा·— "जइ किंचि पमाएणं, न सुठु भेवठियं मए पुव्वं; तं खामेमि अहं, निस्सल्लो निक्कसाउ य. । १ । आणद मंसु पायं. कुणमाणा तेविभूमि गय सीसा; खामंति तं जह रिहं, जहारिया खामिया तेण. ।२। त्यार पछी पोताना पदनेविषे स्थापेला सूरिने तथा बीजा संघने अने साधुउने आवी शीख दिये छे. यथा.— पालेक्ष सुगणमेयं. अप्पडिबद्धो य होक्ष सबत्थ; एसोउ परंपरउ, तुमं पि अंते कुणसु एवं. ॥ १ ॥ पुव्वप्पवणं विणयं, साहु पमाणसु विणयजोगेसु; जो जेण पगारेणं, उववक्षइ तंच जाणेहिं. ॥ २ ॥

तथा.—ओमो समराइणिउ, अप्पतरसु ओय मायणं तुम्ह; पच्चियह एन तुम्हवि विसेसउ संपयं हुक्षा. १ इत्यादिक शिक्षा दइ, गछथी नीकली जता तेने साधुउ आनंदे करी जोता थका ज्यारे ते दृष्टीथी अगोचर थइ जाय त्यारे दर्पित थका पाछा वले. ए रीते जिनकल्प पडिवजे पछी ते जिनकल्पी विचरतां कोइ ग्रामादिकने विषे ज्यां मासकल्प अथवा चतुर्मासादि करे त्यां छ भाग कल्पे. तेओमांना जे दिवसे एकविभागमां फरी गोचरी करी होय ते ठेकाणे फरी सातमे दिवसे आवे; भिक्षाचर्या तथा ग्रामांतर गमन ए बन्ने त्रीजी पौरुषीएज करे चोथी पौरुषी तो ज्यां अवगाहे त्यां रहे. नियमथी भक्तपान जे ने ते पूर्वोक्त बे एषणाना अभिग्रहे

करी, ग्रहण करे एषणा विषयेज बोले बीजा कोइनीसाथे जल्पे नही उपसर्ग तथा परिसह उपना सहन करे, रोगनेविषे चिकित्सा करावे नही. तेनी वेदना बधी सहन करता थका एकाकीज रहे अनापाता सलोकादि दश गुणोपेत एवा स्थण्डिलेज उच्चारादि करे, जीर्ण वस्त्रादिकनो पण त्याज त्याग करे, प्रमार्जनादि परिकर्म विरहित वसतिनेविषे रहे जो बेशवु होय तो नियमथी उत्कट भूमिज बेशे पण आसन उपर नबेशे, केमके, उपग्रहिक उपकरणोनो अभाव ठे माटे ए मास कल्पनोज विहार करे ठे मत्त मतंगज व्याघ्र सिंहादि सन्मुख आव्याथी उन्मार्गादि गमन करता ईर्या समितिने मूके नही एने श्रुत संपदा पण जघन्य थी नवमा पूर्वनो त्रीजो आचार वस्तु त्या सम्यक् प्रकारे कालनु परिज्ञान था य ठे उत्कर्षेकरी संपूर्ण दश पूर्व जाणवा एने प्रथम संघयण वज्रनी नीत समा न श्रवर्त्तन होय ठे एने १ लोच तो नित्य करवो कह्यो ठे, २ आवसही, ३ नैषेधिकी, ४ मिथ्या डु कृत, तथा ५ गृहस्थविषयक पृष्ठा उपसंपदा लक्षण पांच सामाचारी थाय ठे केटलाएक आचार्यो कहे ठे के, आवश्यकी, नैषिधिकी तथा गृहस्थोपसंपदा ए त्रण समाचारीओज थाय ठे, केमके, एओ आराम निवासी होय ठे तेथी ओपेकरी पृष्ठादिकनो अभाव ठे, इत्यादि जिनकल्पीनी बीजी पण समाचारीउं कल्पग्रंथादिकथी जाणी लेवी तथा जिनकल्पक स्थिति प्रतिपादनार्थ आगलपण काममा आवसे तेथी केटलाएक द्वारो देखाडीये ठे तद्यथा– १ 'क्षेत्र द्वार, २ काल द्वार, ३ चारित्र द्वार, ४ पर्याय द्वार, ५ तीर्थ द्वार, ६ आगम द्वार, ७ वेद द्वा र, ८ कल्प द्वार, ९ लिंग द्वार, १० ध्यान द्वार, ११ गणना द्वार, १२ प्रव्राजन द्वार, १३ अ भिग्रह द्वार, १४ नि प्रतिकर्म द्वार, १५ भिक्षा द्वार, १६ पथ द्वार चेति ' एओमाना तीर्थ, पर्याय, आगम, वेद, ध्यान, अभिग्रह, प्रव्रज्या, नि प्रतिकर्म, भिक्षा, तथा पथ, ए द्वा रो ओगणोतेरमा परिहार विशुद्धिना द्वारमां जे प्रमाणे कहेवाशे तेमज अही जाणी लेवा अने क्षेत्र द्वारनेविषे जन्मना सद्भावेकरी पदर कर्मभूमिनेविषे अने संहरणे करी अकर्म भूमिनेविषे पण थाय ठे काल द्वारे अवसर्प्पिणी तृतीय तथा चतुर्थ आरक मां जन्म थाय ठे, व्रतस्थ तो पाचमां आरामां पण थाय ठे अवसर्प्पिणी नेविषे तो त्रीजा तथा चोथा आरामा व्रतस्थ थाय ठे जन्म आश्रयी तो बीजा आरामा पण देखाय ठे प्रतिभाग काल एटले डु षम सुषमरूप कालनेविषे ज न्मना सद्भावे पण प्राप्त थायठे केम के, महाविदेह क्षेत्रनेविषे सदा जिनकल्पी नो सद्भाव होयठे माटे अने संहरणेकरी तो सर्व कालनेविषे थाय ठे चा

रित्र द्वारे प्रतिपद्यमान तो सामायक तथा छेदोपस्थापनीयज थाय तेमां मध्य ना बावीश तीर्थंकरोने वारे तथा महाविदेहमां सामायकनेविषे, अने प्रथम तथा चरम जिनने तो छेदोपस्थापनीयनेविषे तेम पूर्व प्रतिपन्न सूक्ष्म संपराय तथा यथाख्यात चारित्रनेविषे पण थायछे; परंतु ते उपशम श्रेणीमांज थाय पण क्षपक श्रेणीए न थाय. केम के, 'तज्जम्मे केवल पडिए हा जावाउ' इति वचनात्. एटले तेने केवल ज्ञाननी उत्पत्ति थती नथी कल्पद्वारे करी तो स्थिति कल्पनेविषे तथा अस्थिति कल्पनेविषे पण थाय छे. लिंग द्वारे प्रतिपद्यमान बे प्रकारे थाय छे, एक द्रव्य लिंग ने बीजुं भाव लिंग तेमां पूर्व प्रतिपन्न तो अवश्ये करी भाव लिंगे थाय; अने द्रव्य लिंगे भजना ते रजोहरणादिक कोईएक समये कोईये हरण कर्यो होय अथवा जीर्ण थयाथी पण तेनो अभाव थाय छे. गणना द्वारे प्रतिपद्यमान तो जघन्येकरी एकादि अने उत्कर्षे करी शत पृथक्त्व थाय. अने पूर्वप्रतिपन्न तो जघन्यथी तथा उत्कृष्टथी पण सहस्र पृथक्त्वज थाय छे; परंतु उत्कृष्टथी जघन्य थोडा होय छे, इत्यादिक स्वरूप आगमथकी विस्तारयुक्त जाणी लेवु. हवे ए विषेज सूत्रना अनुसारे कहे छेः– जन्म शब्दे गर्भथी बाहेर नीकलेलो साधु विशेष; तेनो कल्प एटले समाचारी, तेणे करी जे विचरे तेने जिनकल्पिक कहे छे. ते जिन कल्पि साधुउ उत्कर्षथी एक वसतीनेविषे सात थाय छे, एथी अधिक आठ थता नथी अने कोई वसतिमां कोई समये न पण थाय. यद्यपि एक वसतिनेविषे उत्कृष्टेकरी सात जिन कल्पीउ वसे छे, तथापि तेउ परस्पर भाषण करतां नथी. तेउ एक ठेकाणे मली गया छतां पण प्रत्येक एकाकी प्रतिदिन अटन करे छे; पण बीजानी साथे फरे अथवा रहे नही उक्तंचः– "एगाए वसहीए, उक्कोसेणं वसंति सत्त जिणा; अवरोप्पर संभासं, वयंति अन्नेत्ते अ वाहिं च." ॥ ५४३ ॥ ए त्रेसठमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– हवे 'छत्तीसं सूरि गुणत्ति' एटले सूरिना छत्रिश गुणोनो चोसठमो द्वार कहे छे.– अठविहा गणिसंपइ, चउग्गुणा नवरि हुंति वत्तीसं; विणओय चउभेउ, छत्तीस गुणा इमे गुरुणो. ॥ ५४८ ॥ अर्थः– जेने गुणना समूहनी प्राप्ति थई छे, अथवा साधुना समुदायनी प्राप्ति थइ छे, एवा अतिशय वाला जे होय तेने गणी कहिये. तेज आचार्य तेनी जे संपत् एटले भावरूप समृद्धि ते गणि संपत् कहेवाय छे, ते आचारादि भेदेकरी आठ भेदे छे. ते वली एकेकना चार चार भेद होवाथी बत्रीश थाय. तेमा चार प्रकारनो विनय नाखिये त्यारे गुरु जे

आचार्य तेना छत्रीश गुणो थाय तेमां प्रथम आठ संपदा आ प्रमाणेछे –॥५
सूत्र – आयार सुय सरीरे, वयणे वायण मई पओगमई, एएसुसंपया
अट्ठमिया संगह परिण्णा ॥ ५४९ ॥ अर्थ – १ आचार संपत्, २ श्रुत संप
शरीर संपत्, ४ वचन संपत्, ५ वाचन संपत्, ६ मति संपत्, ७ प्रयोग म
पत् अने आठमी संग्रह परिज्ञा संपत् तेमां प्रथम आचारनु अनुष्ठान त
जे संपत् ते आचार संपत् अथवा संपत् एटले विभूति तद्विषय जाणवी अ
संपत् ते संपत्ति एटले प्राप्ति ते आचार संपत् एवी आगल पण व्युत्पत्तिन
र्थनी भावना करवी तेआचार संपत् चतुर्विध छे मूल – " चरणजुओ म
ओ अनिययवित्ती अचचलो चेव, जुग परिचय उस्सग्गी, उदत्त घोसाइ वि
॥५५०॥ एनो भाव – चरण युत, मद रहित, अनियत वृत्ति अने अचचल
चरण ते चारित्र कहिये, ते महा व्रत तथा श्रमण धर्म इत्यादि जाणवु. ते
व्यापार सहित छे तेणे करी जे युक्त तेने चरण युत कहिये बीजा वली
स धुवजोग जुत्तो' एवो पाठ बोल छे तेनो पण परमार्थ एज छे केमके, संयम
चारित्र छे तेन विषे ध्रुव योग समाधि तेणे करी जे युक्त पणो ते तथा
कुल, तप, तथा श्रुतादिकना अहंकारे करी रहित तेने कहिये मद रहित ग्रं
'अणुस्सय' एवो पाठ छे तेनो पण एज अर्थ जाणवो केम के, सम्यक्
अहंकारे जाति, श्रुत, तप तथा रूपादि प्रकृष्ट लक्षण करी आत्मानुं
एटले हुं जातिवंत छु हुं श्रुतवंत छु इत्यादि रूपे करी अवधारण ते प
कहवाय छे, जे प्रमद नही तेने कहीये अप्रमद ते जाति प्रमुखने विषे
करता नही एवो अर्थ समजवो अनियत वृत्ति एटले ग्रामादिकने विषे अ
(अप्रतिबद्ध) विहार स्वरूप पणो जाणिये तथा अचचल एटले जेणे प
इंद्रियो वश करेली छे अन्यत्र 'वृद्धशीलता' एवो पाठ छे, तत्र वृद्ध शील
एवे कामिनीना मनने मोहन करनारे वय तथा यौवनने विषे करि वर्तमान
पण निर्विकार स्वभावता एटले विकार उत्पन्न थाय नही यत " मन
सर्वेन्द्रिय चपलने यौवनेपि विद्वांस ॥ मृदस्यि पुनरितरे, भवति वृद्धत्वना
ए अन्यना पुर्वार्द्धना अर्थ थयो हवे गाथाना उत्तरार्द्ध वड बीजी श्रुतस
पत् भेद कहे छे – जेमा सूचना मात्र सूत्र जाणवु एवाये युग एटले यु
वचन आदिने, आगम परिचित एटले तेमां क्रमोत्क्रम वाचनादिक
परिचयवत स्थिर सूत्र थाय ते, उत्सर्गी एटले उत्सर्गापवादे समस्य

परमसमयने जाणवुं उत्सग एटले पोपवादि स्वरूपना प्रकार तेनी विशुद्धिनो कर नार. अन्यत्र 'बहु श्रुतता. परिचित सूत्रता. विचित्र. सूत्रता. तथा घोष विशु द्धि करता' एवो पाठ टीकामां आवे छे. तेनो पण अर्थ एज छे. ॥ ५५० ॥

हवे त्रीजी शरीर संपदा चार प्रकारनी छे ते अर्ड गाथाये कहेछे —मूल.—चउरंसो कुंटाई. बहिरत्तण वछियो तवंसत्तो:॥ अर्थ.—तत्र १ चतुरस्त्र एटले आरोह परिणाह युक्त तथा लावी पोहोळाई ए प्रमाण युक्त: शरीर.तथा २ अकुटाई एटले संपूर्ण छे जेना हस्तादिक तथा३ बधिरत्वादियी वर्जित ते अविकल इंड्रियवाळो; समस्त इंड्रियपूरण; तथा ४ दृढसंहनत्वे करी बाह्याऽभ्यंतर भेदे करी तपनेविपे आसक्त एटले समर्थ जाणवो. ए शरीर संपदाना चार भेद जाणवा. अन्यत्र तो '१ अरोह परिणाह युक्तता. २ अनवत्राप्यता. ३ परिपूर्णेंड्रियता, ४ स्थिर संहननता' एवो पाठ टी कामां आवे छे; एनो पण एज अर्थ थाय छे जे कवल अवघमान ते अवत्राप, जेनुं अवत्रपण लज्जन होय तेने अनवत्राप्य कहिये. अथवा अवत्रापवित एटले लज्जित करवाने योग्य एटले शक्य अने अनवत्राप्य ते लज्जा करवा योग्य न होय तथा अवत्राप्य ते अहीन सर्वांगे एटले अलज्जाकर जाणवो ॥

हवे चोथीवचन संपदानाचार भेद कहेछे मूलः—वाइ मुहुरत्त निस्सिय; फुडवयणो संपयावयणे ॥५५१॥ अर्थ —वादी. मधुर वचन, अनिश्रित वचन, तथा स्फुट वच न ए प्रकारना वचनेकरी वचन संपत् जाणवी. तत्र १ वदनने वाद कहिये, एटले जेनुं प्रशस्त वादनुं बोलवु छे. अथवा जे अतिशयवान छे ते वादी आदेय वच न वाळो जाणवो. तथा २ प्रकृष्ट अर्थ प्रतिपादक कोमल सुस्वरता तथा गंभीर तादि गुणोपेत होवाथी श्रोता जनना मनने आनंद उत्पन्न करनार छे जेना वचन तेने मधुरवचन कहिये ३ राग द्वेपादिकेकरी ने नीकळेला, एवां कलुषता सहित जेनां वचन न होय, तेने अनिश्रित वचन कहिये; ४ स्फुट एटलेजेना व चन सर्व जनने सुबोध करनार होय सुळुन बोलवुं होय तेने स्फुट वचन कहिये. बीजा ठेकाणे तो आदेय वचनता, मधुर वचनता, अनिश्रित. वचनता, तथा अ संदिग्ध वचनता, एवो पाठ जणाय छे एनो अर्थ पूर्वनी पठेज जाणी लेवो.॥५५१

हवे पाचमी वाचना संपत्ना चार भेद अर्ड गाथावडे कहेछे —मूल.—जोग्गोपरिय ण वायण, निज्जविया वायणाय निव्वहणे. अर्थ.— तत्र १ परिणामिक गुणोपेत शि ष्योने जाणीने जेने जे सूत्र योग्य होय, तेने ते आपी तेनो उद्देश तथा समुद्देश करावे तेने योग्यवाचक कहिये केम के, आपरिणामिकने सूत्रार्थ दीधाथी जेम

काचा घडामां नाखेलु पाणी विनाशने पामे छे तेम तेने पण दोषनो संभव थाय छे माटे पूर्व दीधेला आलापकोने शिष्य ग्रन्थे सम्यक् प्रकारे परिणमाव्या पछी बीजा आलापकनी वाचना आपे, तेने बीजी परिणत वाचन कहिये वाचना एटले व्याख्यान, तेनो निर्यापयित एटले निर्वाह करनार, शिष्यने उत्साह उपजावीने ज्यां सुधी ग्रंथ पूरो करावे, पण वचमां मूकी दिये नही तेने त्रीजी निर्यापयिता कहिये तथा निर्वाहण एटले अर्थनो निर्वाहक जाणवो एटले पूर्वापर संगतिए करी पोते जाण छतां बीजाने कथने करी सर्व अर्थ समजावी दिये तेने चोथी निर्वाहण कहिये ग्रंथांतरने विषे आम दीगमाडावे छे –विदित्वा देशन (२) विदित्वा समुद्देशन पारिणामिकादि शिष्यने जाणीने इत्यर्थ परिनिर्वाप्य वचन ते पूर्वे नदीधेला आलापकने अनधिगम शिष्यने पुन सूत्रदान देवु इत्यर्थ अने अर्थ निर्यापणा ते अर्थनी पूर्वापर संगतिनी गमनिका जाणवी इत्यर्थ । हवे छठी मति संपत् चतुर्धा कहे छे – मूल – उग्गह ईहा वाया, धारण मइ संपया चउरो ॥ ५५२ ॥ अर्थ – अवग्रह, ईहा, आवाय, तथा धारणा अवग्रहादिकनु स्वरूप व गो ने शोलमा द्वारमा विस्तारे कहे वाशे तथा सातमी प्रयोग तेवादादि प्रयोजननी सिद्धिने माटे व्यापार जाणवा ते प्रयोगना प्रस्ताव समयनेविषे जे मति एटले वस्तुनु विवेचन करवु तेने प्रयोग मति कहिये तेनी चार प्रकारनी संपत् छे मूल – सत्ती पुरिस खेत्त, वत्थु नाउ पउजए वायं ॥ अर्थ – शक्ति, पुरुष, क्षेत्र, तथा वस्तुने जोईने वाद करे तेमां प्रथम शक्ति ज्ञान एटले वादादि व्यापार कालने विषे आ वादी महा बोलणहार देखाय छे तेने जीतवा जेटली मारामां शक्ति छे के नही? एवी रीते पोतानी शक्तिनो आलोचन करवु, बीजु पुरुष ज्ञान एटले आ प्रतिवादी पुरुष सौगत सांख्य वैशेषिकादिक अथवा कोई बीजो छे इत्यादि ने विचारी जाणी लईने वाद करे त्रीजु क्षेत्रज्ञान एटले आ क्षेत्र मर्यादा वालु छे अथवा कोई बीजा प्रकारनुं छे अथवा कपटी छे किंवा निष्कपटी छे? तथा साधुभावित छे किंवा अभावित छे? इत्यादिक सारी रीते विमाशे चोथी वस्तु ज्ञान एटले आ राजा अमात्यादि सभासदादि वस्तु दारुण अदारुण अथवा भद्रक अभद्रक छे के केम? इत्यादिक विचारीने ते प्रमाणे निरूपण करे ए प्रयोगमतिना चार भेद कह्या हवे आठमी संग्रह एटले स्वीकरण ते अंगीकार तेनी परिज्ञा एटले जाणपणु तेने परिज्ञा संग्रह कहे छे तेनी संपत् चार प्रकारनी छे ते कहेछे –मूल – " गण जोग संसत्त, सज्झाए सिक्खा जाणे ॥ ५५३ ॥ अर्थ – तेमा प्रथम गण एटले गच्छ बाल, दुर्बल, ग्लान, गीतार्थ

ाति समुदाय लक्षण तेने निर्वाह. योग्य क्षेत्रनुं ग्रहण करवुं ते गण योग्याप
ांग्रह संपत् प्रथमा जाणवी. बीजी लइकादि पुरुष ने योग्य देशनादि करवी ते
ांसक्त संपत् द्वितीया कहिये. ग्रंथांतरे तो निषद्यादि एटले संथारा प्रमुख उप
ारण मलिन नथाय तेने पीठ फलकोपादानात्मिका द्वितीया संपत् कहेल छे.
ाण ए पीठ फलकादिकनुं ग्रहण थतुं नथी, केम के, सिद्धांतने विषे अग्राहित
ा माटे. तथा जीत कल्पनेविषेः—" पीठफलगाइ गहणे. नउ मइलिंती ति सन्ना
; वासासु विसेसेणं, अन्नं कालं तु गम्मए नउ. ॥ पाणा सीयल कुंथा, इयाय
ो गहण वासासु " त्रीजी जेम समयने विषे कह्युं होय तेम सज्झाय प्रत्युपेक्ष
ाा भिक्षाटनोपधि समुत्पादन लक्षण ते स्वाध्याय संपत् तृतीया कही छे. चोथी
ुरु दीक्षाना आपनार तथा अध्यापक ते भणावनार रत्नत्रयाधिक प्रमुखनी
ापविनो वहेवुं, विश्रामणनु करवुं आव्यां थका उपाश्रयमां पेसतां मामानुं लेवुं
्त्यादि शिष्यने सीखावे ते शिष्योपसंग्रह संपत् चतुर्थी जाणवी. एवी रीते सं
ापरिज्ञा ए चार. प्रकारे जाणवी. एटले चार चार प्रकारे करी आठ प्रकारनी
ाणीनी संपदा वखाणी एटले ए वधा मली बत्रीस गुण थया ॥ ५५३ ॥

हवे चतुर्विध विनय कहेछेः—मूल —आयारे सुय विणए, विक्खिवणे चेव होइअो
यव्वा; दोसस्स परीघाए, विणए चउहे स पडिवत्ती. ॥५५४॥ अर्थः—आचार विन
र, श्रुतविनय, विक्षपण विनय तथा दोष परिघात विनय. एम विनयनेविषे
चार प्रकारनी प्रतिपत्ति जाणवी जेणेकरी कर्म निवर्त्तन थाय तेने विनय कहि
ये तत्र आचार एटले यतीनो समाचार. ते आचार विनय चार प्रकारनो छेः—
एक संयम सामाचारी, बीजो तप सामाचारी त्रीजो गण सामाचारी चोथो एका
कीविहार सामाचारी. तत्र संयम ते पोते आचरे अने बीजाने गृहण करावे; ते
मा जे सीदाए तेने स्थिर करे; अने संयमनेविषे जे उद्यत होय तेनी उपवृंहणा करे,
ए प्रथम संयम सामाचारी जाणवी बीजी पाक्षिकादिकनेविषे पोते पण तप करे
ने बीजाने पण करावे. भिक्षाचर्याने अर्थे पोते जाय अने बीजाने पण तेमां प्रव
र्तावे, ए बीजी तप सामाचारी कहियें. त्रीजी गण सामाचारी ते पडिलेहणानेविषे बा
लवृद्ध, तथा ग्लान प्रमुखनो वैयावृत्त्यादिकना कार्य प्रत्युपेक्षणानेविषे पोते उ
द्यमपण करे अने बीजा अग्लान गणने तेम करवानी प्रेरणा करे तेने गण सामा
चारी कहिये. चोथी एकाकि विहार प्रतिमाने पोते आदरे अने बीजाने ग्रहण क
रावे. एने एकाकि विहार सामाचारी कहियें. ए पहेलुं आचार विनय कह्यो हवे

वीजो श्रुतविनय पण चार प्रकारनो छे – तत्र सूत्रनी वाचना शिष्यादिकने देवी ए प्रथम, तेना अर्थनु यथार्थ व्याख्यान करवु ए वीजो हितवाचना एटले सूत्र अने सूत्रनो अर्थ तथा ए बन्ने पारिणामिक गुणोपेत शिष्यनी जाचना करीने जेने जे योग्य होय तेने ते आपे ए त्रीजो, तथा सूत्र अथवा अर्थ नि शेष परिसमाप्ति सुधी वाचे पण अनवस्थितपणे अतराले मूकी न दिये ते चोथो जाणवो त्रीजो जेथी विक्षेप थाय तेने विक्षेपण कहे छे ते विक्षेपविनय चार प्रकारनो छे – तत्र मिथ्यादृष्टिने मिथ्या मार्गथी कहाडीने सम्यक्त्व मार्ग ग्रहण करावे ते प्रथम वीजो सम्यक्दृष्टि छतां गृहस्थ होय तने गृहस्थ नावमाथी कहाडीने चारित्र लेवरावे ते द्वितीय त्रीजो सम्यक्त्वथकी अथवा चारित्र थकी पडी गएलाने ते नावमाथी कहाडीने फरी पूर्व स्थाने परिस्थापे ते तृतीय चोथो जेम चारित्र धर्मनी अभिवृद्धि थाय ते प्रमाणे पोते प्रवृत्ते, अनेषणीय परिभोगादिकनो त्याग करे अने एषणीय परिभोगने धारण करे ए चतुर्थ हवे क्रोधादिक जे दोष तेनो परिघात एटले विनाश तेज चोथो द्वार परिघात विनय जाणवो ए पण चार प्रकारनो छे –क्रोधमा आवेला मनुष्यने देशनादिके करी शांत करवो अर्थात् तेनो क्रोधनो निर्घात एटले नाश करे, ते प्रथम कषाय विषयादिके करी दुष्ट थयला ने तेवा नावथी निवर्त्तन करवु ते द्वितीय अने भक्तपान विषय अथवा पर समय विषय आकाङ्क्षानु निवर्त्तन करवु ए तृतीय, तथा पोते क्रोध दोष आकांक्षा रहित छता आत्महिते प्रवर्त्तवु ते चतुर्थ जाणवो ए चार प्रकारना विनयने अगीकार करे ए प्रमाणे ए सर्व मली छत्रीश गुणा गुरुना होय, अथवा ए छत्रीश गुणोवाला गुरु होय, ॥ ५५४ ॥

अथवा प्रकारातरे वीजा छत्रीश गुण कहे छे – मूल – सम्मत्त नाण चरणे, पत्तेय अठ अठ भेइला, वारस भेयो य तवो, सूरि गुणा हुति छत्तीस ॥ ५५५ ॥ अर्थ –सम्यक्त्व एटले दर्शनाचारना नि शकितादिक, ज्ञान एटले ज्ञानाचारना कालविनयादिक अने चरण एटले चारित्राचारना ईर्यासमित्यादि ए प्रत्येकना आठ आठ भेद मलीने चोवीश भेद थाय बाह्य अने अभ्यतर ए वे प्रकारना तपना प्रत्येकना छ छ भेद होवाथी ते अनशनादिक वार भेद मलीने वीजा छत्रीश भेद थाय छे॥५५५॥

हवे अन्यतरे करीने पण गुरुना छत्रीश गुणो कहे छे – मूल – आयाराई अठ तह चेवय दसविह होइ ठियकप्पो, वारस तव छावस्सग, सूरिगुणा हुति छत्तीस ॥ ५५६ ॥ अर्थ – आचार तथा श्रुतादिक पूर्वे कहेली आठ गणिनी सप

दा, तथा 'आचेलक्कुद्देसिय. सिज्जायर रायपिंम किइ कम्मे, वय जेठ पडिक्कमणे मासं पज्जोसवाण कप्पे.' एवीरीते वक्ष्यमाण स्वरूप दशविधस्थित कल्प; तथा बार प्रकारनो तप, अने पूर्वोक्त स्वरूप छ अवश्यकादिक एटले सामायिक, चोवीशस्तव वंदनक, प्रतिक्रमणक, कायोत्सर्ग तथा प्रत्याख्यान लक्षण छ आवश्यक जाणवा ए सर्व मलीने छत्रीश गुणो थाय छे. ए शिवाय बीजी पण गुरुना गुणनी छत्रीशी घणी छे. पण अति विस्तारना जयथी ते इहां कहेता नथी. तोपण सोपयोगी प णाने लीधे तथा सुप्रतीत पणाथीआ कहिये छेये, 'देस कुल जाइ रूवे, संघयण धिई जुओ अणासंसी; अविकत्थणो अमाई, थिर परिवाडी गहिय वक्को. जिय प रिसो जिय निद्दो, मज्जत्थो देस काल जावन्नू; आसन्न लद्ध पइजो, ताणा विह वे स जासन्नू. पंच विहे अइआरे, जुत्तो सुत्तत्थ तडुजय दिहिन्नू; आहरण हेउ कारण नय निउणोगाहणा कुसलो; ससमय परसमय विऊ, गंजीरो दित्तिमंसिवो सोमो; गुण सयल लिउ जुत्तो, पवयण सार परिकहेउं. ए प्रमाणे चार गाथाउनेविषे कहेला सूरीना छत्रीश गुणो ढीगमां आवे छे. तत्र युत शब्द प्रत्येकनी साथे लगाडवो; जेम के, देशयुत तथा कुलयुत इत्यादि तेमां १ साडी पचवीस आर्यदेश कहेवाय छे तेनेविषे जे उत्पन्न थयो होय ते देशयुत. तेना समीपे सर्व शिष्यो सुखेकरी अध्ययन करे तेथी देशनुं ग्रहण कर्युं. २ कुल ते पिता संबंधी जाणवुं; जेम के, लोक व्यवहारे करी आ इक्ष्वाक कुलनो छे एम कहेवाय छे तेणे करी युत होय ते पडिवज्या अर्थनो निर्वाह करे. ३ जाति ते माता संबंधी जाणवी. तेणे करी युक्त ते विनयादि गुणोपेत थाय छे. ४ रुप युत ते लोकमां बहुमान पामनारो होय छे; जेम के, 'यत्राकृतिस्तत्र गुणावसंतिति वादात्' एटले ज्यां आकृति हो य त्यां गुणो वसे छे एवी वदंता छे. केमके, कुरूपने अनादेय पणानो प्रसंग था य छे एटले तेणे क्यांय मान मलतुं नथी. ५ संहननेकरी विशिष्ट शरीरनी सामर्थ्य रूपे करी युक्त होय ते व्याख्या करता थाकी जाय नही. ६ धृति ते विशिष्ट म ननुं अवष्टंजन एटले धैर्य तेणे करी युक्त होय ते अति गहन अर्थनेविषे पण मु झाय नही. ७ अनाशंसी एटले जे श्रोताउनी पासेथी वस्त्रादिकनी आकांक्षा करे नही. ८ अविकत्थन एटले अतिबहु जापी नही. जेम के, कोईए थोडोपण अप राध कर्यो छतां तेनु उत्कीर्त्तन एटले मुखथी वारवार कही बतावबुं एवा विक त्थन रहित होय. ९ अमायी एटले मूर्खताए करी रहित कपट रहित. १० स्थिर एटले अतीशये करी निरतर अज्यासने लीधे जेने अनुयोगनी परिपाटी स्थिर थई

छे, ते स्थिर परिपाटी तेनु मन सूत्र अथवा अर्थनेविषे लगार पण स्खलीत थतु
नथी ११ ग्रहीत वाक्य ते उपादेय वचन एटले तेनु स्वल्प वचन छता पण मह
अर्थनी पठे जासे १२ जित पर्षद ते मोटी पर्षदानेविषे पण क्षोभने पामे नही १३
जितनिद्रा एटले जेने निद्रा थोडी होय ते रात्रे सूत्रार्थनी नावना करतो पण निद्रा
ये पीमाये नही १४ मध्यस्थ एटले सर्व शिष्योनी उपर समान चित्त वालो, १५
देश १६ काल १७ नावज्ञ एटले जे देश काल तथा नावनो जाणनार होय ते
सुखेकरी विहार करे अथवा शिष्योना अनिप्रायने जाणीने तेउने सुखेकरी वर्ता
(ए त्रण गुण साथे छे) १८ आसन्नलब्ध प्रतिन तत्र आसन्न एटले तत्क्षणे
जेने कर्मना क्षयोपशमावरण विना प्रतिना एटले परतीर्थी आदिकने उत्तर देव
नी शक्ति प्राप्त थई छे ते १९ नानाविध देशनापज्ञ एटले जे नाना प्रकारना देश
नी नाषाउने जाणतो होय ते नाना देशोना शिष्योने सुखेकरी शास्त्रोनु ग्रहण
रावे अने ते ते देशना जनोने ते ते नाषाए करी धर्म मार्गनेविषे आणे तथा ज्ञा
नादिक पाच प्रकारना आचारे करी युक्त ते पोते आचारनेविषे अवस्थित ह
बीजाने आचारमा प्रवृत्ति करावबाने उद्युक्त करे पण जो पोते आलसु होय
बीजानी प्रवृत्ति करावी शके नही ए पाच गुण मेलवता चोवीस थया २५ सू
र्थ तडुनय विधिज्ञ ते आम –सूतार्थ तथा तडुनयनी चतुर्नंगी उपजे तेमां प्रथ
सूत्र पण अर्थ नही, बीजो अर्थ पण सूत्र नही, त्रीजो सूत्र तथा अर्थ बन्ने
चोथो सूत्र पण नही ने अर्थपण नहीए चार नांगामाथी त्रीजा नांगना ग्रहणने
तडुनय ग्रहण कह्यु छे ते माटे सूत्रार्थ तडुनय विधिज्ञ जाणवो २६ आहरण
तु तथा उपनयमा निपुण होय तेमा आहरण शब्दे दृष्टात लेवु अने हेतु
प्रकारनो छे – एक कारक ने बीजो ज्ञापक तेमा कारक ते जेम घटनो कर्ता
कार होय छे तेम जाणवु अने ज्ञापक ते जेम अंधकारनेविषे घटादिक पदा
प्रकाश करनार दीपक होयछे तेम जाणवु उपनय ते उपसंहार एटले जे दृ
करी दीठेना अर्थ तेने सरिखा सुयोजन करवु इति नाव अने पाठे करी तो
उपनयने स्थानके कारण कहेले ते कारण नो अर्थ नयनिमित्त जाणवु नैग
क नउनेविषे निपुण ते आहारण हेतु उपनय निपुण कहिये तेज आचार्य
तानी अपेक्षाए एटले तेनी प्रतिपत्तिना विरोधथी क्यांक दृष्टांतेकरी उपन्यास
२७ क्यारु हेतु देखाडी समजावे अने २८ क्यांक उपनय एटले ते निपुण
सम्यक् अविरुत अर्थनु यथार्थ वर्णन करे २९ नय निपुणपणे नयना कथ

अवसरे सम्यक् सप्रपंच विवक्त करी नयने वापरे जे नय ज्यां लागतो होय तेने त्यां जोडे ३० ग्राह्ण कुशल एटले प्रतिपादन करवानी शक्तियें युक्त ३१ स्वसम य एटले पोताना शास्त्रनो जाण तेमज ३२ परसमय एटले परना शास्त्रनो जा ण तेने कोईएक परदर्शनीये आक्षेप कर्यो ठते तेनो निरवाह्कर ३३ गं नीर एटले अतुच्छ स्वनाव. ३४ दीप्तिमान एटले जेनो परवादी तिरस्कार करी श के नही ३५ शिव ते कोपथी रहित अथवा ज्यां ज्यां विहार करे त्यां त्यां कल्या णनो करनार. अने ३६ सौम्य एटले शांत दृष्टि ए प्रकारे ठत्रीश गुणेकरी सहि त गुरु जाणवा. अने उपलक्षणथी ए कहेला गुणोथी बीजा पण गुणो जेवा के, औदार्य धैर्य स्थैर्य गांनीर्यादि के करी शशधरकर निकर कमनीयैरलंकृतः प्रवच नो पदेशक गुरु होय ठे. तथा चाहः— गुण सयल जिवजुत्तो. पवयण सारं प रिकहेइंति. अथवा मूल गुणो तथा उत्तर गुणो जाणवा. एवा ठेकडोगुणो एकरी कलित एटले युक्त, समीचीन ते प्रवचन एटले द्वादश अंगनो सार एटले अर्थ क थन करवा समर्थ. यडुक्तं — गुणसुठिवस्स वयणं, घण परिसत्तोय पावउ नाई; गुण हीणस्स न सोहइ, नेह विहूणो जह पईवो. ॥ ५५६ ॥ एचोसठमो द्वार थयो

अवतरण:— हवे ' विणउ वावन्ना नेय पमि जिन्नोत्ति ' एटले वावन नेदे करी विनयनो पांसठमो द्वार कहे ठेः— मूल.— तिठयर सिद्धकुल गण, संघ किरिय ध म्म नाण नाणीणं; आयरिय थेरु वज्ञा, य गणीणं तेरस पयाणि.॥५५७॥ अर्थः— तेमां तीर्थकरादि स्वरूप तेर पद जाणवा. तत्र तीर्थंकर अने सिद्ध ए बे प्रसिद्ध ठे, त्रीजुं कुलपद ते नागेंद्र कुलादिक जाणवुं; चोथु गण पद ते कोटिकादि कहि ये; पांचमुं पद संघ प्रसिद्ध ठे; ठहुं प्रतीत क्रिया ते अस्तिवाद रूप समजवी, सात मुं पद धर्म ते क्षमादि दशविध श्रमणधर्म कहेवुं; आठमुं पद ज्ञान ते मत्यादि कहेवाय ठे; नवमुं पद ज्ञानी ते ज्ञानवान जाणवुं, दशमुं आचार्य पद ते पांच प्रकारनो आचार पालनार; अग्यारमुं स्थविर पद ते संयमनेविषे सीदायलाने स्थिर कर वानो हेतुवंत, बारमुं उपाध्याय पद प्रसिद्ध ठे; अने तेरमुं गणी पद ते केटलाए क साधुना समुदायनो उपरि नूत जाणवो. ॥ ५५७ ॥ हवे ए प्रत्येक पदनो चा र चार प्रकारे विनय थाय ठे ते कहे ठेः—मूल — अणसायणा य नत्ती, बहुमा णो तह य वस संजलणा; तिठयराई तेरस, चउग्गुणा हुंति नायव्वा (बावन्ना) ॥ ५५८॥ अर्थ.— प्रथम आशातना एटले जात्यादि हीलना, ने तेना अनावे अ नाशातना जाणवी, ते अनाशातना सदैव तीर्थंकरादिकोनी करवी. बीजो

केमके क्रोधादिक जे चार छे ते बे प्रकारना छे –एक उदीर्ण अने बीजा अनुदीर्ण तेमाना उदीर्णोनो जे निग्रह ते क्रोधादि निग्रह जाणवो, अने अनुदीर्णोनो तो तेओना उदयनु निरोधन जे क्षात्यादिरूप ते जाणवाने अर्थ जुदुं उपादान कर्यु अथवा वस्तु त्रण प्रकारे ग्रहण करवी तेमा एक ग्राह्य बीजी हेय ने त्रीजी उपादेय तेमा क्षात्यादिक उपादेय करवा योग्य छे अने क्रोधादिक त्याग करवा योग्य छे माटे ए निगृहीतव्य छे. एटला माटे ए उपन्यासकरेलो सर्व अनवद्य छे ॥५५९॥

हवे एविषे पोते सूत्रकार अवयवेकरी कहेछे – मूल – पाणिवह मुसावाए, अदत्त मेहुण परिग्गहे चेव, एयाइ हुति पचउ, महव्वयाइ जईण तु ॥५६०॥ अर्थ – पदने देशेकरी पदना समुदायनो उपचार थाय छे पाणिवहने ग्रहणे प्राणिवध विरति एम कहेवो एवी रीते मृषावादादिकनेविषे पण जाणवु तत्र प्राणीउ एटले त्रस तथा स्थावर जीवोनी १ अज्ञान, २ सशय, ३ विपर्यय, ४ राग, ५ द्वेष, ६ स्मृतिभ्रश, ७ योगदुप्रणिधान तथा ८ धर्मानादर रूप अष्टविध प्रमादना योगेकरी वध एटले हिसा करवी तेने कहिये प्राणिवध तेथकी विरति एटले सम्यक् ज्ञान श्रद्धान पूर्वक जे निवृत्ति ते प्रथम व्रत जाणवु बीजो मुसावाए एटले अलीक वचन अथवा जूठु बोलवु ते प्रिय पथ्यने तथ्य वचन तेना परिहारे करी जे नाषण करवु तेने कहिये मृषावाद तेथकी जे विरति ते बीजु व्रत जाणवु तत्र प्रिय वचन एटले जे साभळवाथी चित्तनेहर्ष उपजावे पथ्य एटले आगामिक कालनेविषे जे हितकरनार थाय, तथ्य एटले सत्य ए तथ्य छता पण व्यवहारनी अपेक्षाएकरी अप्रिय बोलवु नही जेम के, चोरने कहेवु के तु चोर छे, अने कुटणीने कहेवु के तु कुटणी छे एम कह्याथी तेने अप्रिय लागवाथी तथ्य न कहेवाय अने बीजो तथ्य थको पण जे अहित छे जेम के वनमां जता कोई पारधीए पूछ्यु के, अहीथी कोई मृगजु जतु तमे जोयु के, तेने जो तथ्यने अनुसरीने साचे साचु कहिये के पणे जाय छे तो तेनो घात थवाथी पाप लागे माटे एवा स्थले सत्य नाषण करवु ते पण तथ्य कहेवाय नही त्रीजु अदत्त एटले धणीए न आपेलानुं आदान एटले ग्रहण करवु तेने कहिये अदत्तादान ते अदत्त स्वामी, जीव, तीर्थकर, तथा गुरु ए चार प्रकारनो छे तेमा तृण, काष्ठ, तथा पाषाणप्रमुखना माळके न दीधा छता जे लई लेवु तेने स्वाम्यादत्त कहिये, बीजो स्वामीए दीधे छु छता जीवे न दीधु होय जेम के पोते प्रव्रज्या लेवाना परिणाम रहित छता तेनां माता पितादिके पुत्रादिकने गुरुने अर्पण कर्यो होय अथवा सचित्त पृथ्वी काया

दिक चीज तेना स्वामीए आपी छतां तेना अधिष्ठाता जीवनी चोरी कहेवाय न ही ते जीवादत्त कहेवाय. त्रीजुं तीर्थंकरादिके करी निषेध करेला जे आधाकर्मी आदिक अन्न तेनुं ग्रहण करवुं ते तीर्थंकरादत्त कहेवाय छे. अने आधाकर्मी आदि दोषरहित पदार्थ तेना स्वामीए दीधेलो छतां पण गुरुनी अनुज्ञा विना जे ग्रहण करवो तेने गुरु अदत्त कहेछे. तेथी जे विरमवुं ते त्रीजुं अदत्तविरमण व्रत जाणवुं. चोथो मैथुन एटले स्त्री तथा पुरुषनुं द्वंद्व एटले जोडुं तत्संबंधी जे कर्म तेने मैथुन कहेछे तेथी जे विरति ते चतुर्थ व्रत जाणवुं. पांचमो जेथी परि० समस्तप्रकारे ग्रहणक० आदान थाय तेने परिग्रह कहिये अथवा परिग्रहणने परिग्रह कहिये. ते परिग्रह धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, रूप्य, सुवर्ण, चतुष्पद, द्विपद तथा कुप्य भेदकरी नव प्रकारनो छे तेथी विरति एटले जे मूर्छानो परिहार जे निवृत्ति ते पांचमो व्रत 'मुच्छापरिग्गहोवुत्तो' इति वचनात्. इत्यादि छतां पण तुला रहित मनने प्रशम सुख संप्राप्तिए करी चित्तना विभ्रम पणानो अभाव छे. ए कारण माटे धर्मना उपकरणने धारण करनारा मुनिने पण शरीर तथा उपकरणोनेविषे ममत्व न होय तेथीज ते निर्ममत्व कहेवायछे एविषे तीर्थंकर गणधरादिके कह्युं छे के. वस्त्र पात्र उपकारि धर्म साधन निमित्ते पूर्वोक्त रीते धारण कर्या छतां देहनी पेठे परिग्रहपणुं करवुं नही. अने जो मने करी राख्या होय तो यतीने ए मूर्छा सहित थायछे. चेव शब्द एवकारनेअर्थे छे तेथी प्रथम तीर्थंकर अने चरम तीर्थंकरोने चार व्रतो नथी होता पण पांच पूरा होयछे एवुं जणाव्युं जे व्रतोनी वृद्धि करे अथवा नियमोनी प्रौढी करे तेने महाव्रत कहिये. एने सर्व जीवादि विषयपणे करी महाविषयपणुं छे. उक्तंच.– "पढमम्मि सव्वजीवा, बीए चरिमे य सव्व दव्वाई; सेसा महव्वया खलु, तदेकदेसेण दव्वाणं." तेहोज द्रव्यने एक देश छे माटे. ॥ ५६० ॥

हवे श्रमण धर्म कहेछेः– मूल.– खंतीय मद्दव ज्जव, मुत्ती तव संजमेय बो धव्वा; सच्चं सोयं आकिंचणं च बंभं च जइधम्मो ॥ ५६१ ॥ अर्थ – १ क्षांति एटले क्षमा. शक्तिमान वा अशक्तिमान छतां सहन परिणाम ते क्षमा. २ सर्वथा क्रोधनो परिहार ते मृदु एटले अस्तब्ध तेनो जे भाव अथवा कर्म जे अनुद्धेकपणे नीचीवृत्तिए प्रवर्त्तवुं माननो परिहार तेने मार्दव कहिये. ३ ऋजु एटले अवक्रपणुं तेनो भाव अथवा कर्म, तेने आर्जव कहिये एटले मन वचन कायायेकरी विक्रियानो जे अभाव ते माया रहितपणुं कहिये ४ मुक्ति एटले मोचन ते बाह्य अने

अन्यतर वस्तुनेविषे तृष्णानो विछेद एटले लोननो परित्याग जाणवो ५ तप ए टले जेणेकरी रसादि सात धातुओ अथवा ज्ञानावरणीयादि कर्म तापने पामेछे तेनेकहिये तप ते अनशनादि नेदोएकरी बार प्रकारे जाणी लेवु ६ संयम ते आश्रवनिविरति लक्षण जाणवु ७ सत्य ते ज्या मृषावादथी विरमवु तेने जा णवु ८ शोच ते संयमप्रते निरुपलेपता अथवा निरतिचारपणु जाणवु ९ जेने किंचित द्रव्यादिक न होय तेने अकिंचन कहिये तेनो जे नाव तेने कहिये आ किंचन्य, उपलक्षणथी ए जे शरीर तथा धर्मोपकरणादि छे तेओनेविषे निर्ममत्व ने आकिंचन्य कहिये १० नवविध ब्रह्मचर्यनी गुप्तिओ तेनेविषे पोताना पुरुषा कारनु रुंधवु ते ब्रह्मचर्य ए दश प्रकारनो यतिधर्म छे ॥ ५६१ ॥

बीजा वली आवी रीते पाठ करे छे — खंती मुत्ती अज्जव, मद्दव तह ला घवे तवे चेव, संयम चियाग किंचण, बोधव्वा बनचेरे य ॥ लाघव ते द्रव्यथीअल्प उपधिपणु, अने नावथी गौरवतानो परिहार एटले त्याग ते सर्व संगथी मुक्त थवु अथवा यतिओने वस्त्रादिकनु देवु बाकीनु पूर्वनी पठे जाणी लेवु ॥ ५६१ ॥

हवे संयम धर्म सतर प्रकारे कहे छे — मूल — पंचासवाविरमण, पंचिंदिय निग्गहो कसायजओ, दमत्तयस्स विरई, सतरसहा संयमो होई ॥ ५६२ ॥ अर्थ — आश्रुयतेके० जेणे करी कर्मोनु उपार्जन थाय छे तेने कहिये आश्रव ते नवां कर्मो बंधावाना हेतुओ ते १ प्राणातिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन अने ५ परिग्रह ए पांच नेदे जाणवो ए पांचेथकी जे विरमवु एटले नि वर्त्तन थवु तेने पंचाश्रव विरमण कहिये इंद्रियो ते स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु, तथा श्रोत्र लक्षण पांच जाणवी तेओनो निग्रह एटले नियममा राखवु, अर्थात् स्पर्शादि विषयोनेविषे लंपटताना परिहारे करी वर्त्तवु तेने पंचेंद्रिनिग्रह कहिये कषाय ते क्रोध मान माया तथा लोन लक्षण चार जाणवा तेओनो जय ए टले जे उदय थया होय तेने विफल करवा अने जे अनुदित होय तेने अनुत्पा दनेकरी रोकी राखवा ते क्रोधादिचारनो त्याग जाणवो हवे दम त्रणते चारित्र रूप ऐश्वर्यना अपहारे करी आत्माने दमाववो अथवा असारपणे करिये ते ड प्रयुक्त मन वचन ने काय तेनी जे त्रिक ते दमत्रय तेनी जे विरति एटले अशुन प्रवृत्तिथी निरोध ते दंडत्रय विरति एवी रीते सत्तर प्रकारे करी संयम थाय छे ॥ ५६२ ॥

अथवा बीजा प्रकारे संयमना सत्तर नेद थाय छे ते आ प्रमाणे मूल —पुढवि दग अगणि मारुय, वणसइ बि ति चउ पणिंदिया जीवा, पडुप्पेह पमज्जण, प

णिवक्ण मणोवई काए ' ॥ ४६३ ॥ अर्थ.– पृथ्वी, उदक, अग्नि, मारुत, वन
नि ोंद्रिय त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय, पंचेंद्रियने मनो वाक कायाए करी करण क
रण तथा अनुमतिए करी संरंभ समारंभ आरंभनुं वर्जवुं, ए नव प्रकारे जीव संय
जाणवो यत्रः– "संकप्पो संरंभो; परितावकरो नवे समारंभो; आरंभो उद्दवउ, सु
नयाणं तु सव्वसिं;" तथा दशमो अजीवरूप जे पुस्तकादिक छे, ते दुःषम कालन
दोषे करी तथाविध प्रज्ञा, आयु, श्रद्धा, संवेग, उद्यम तथा बलादिकेकरीहीन
आजना काले उपना जे शिष्यादिक तेना अनुग्रहने अर्थे प्रतिलेखन तथा प्रमार्जन
पूर्वक यत्न करी धारण कर्याथी अजीव संयम थाय छे. इहां पिंडविशुद्धिनी म
होटी वृत्तिमांहे संयमेणत्ति एटले संयमनुं वखाण करते अजीव संयम पुस्तक
अप्रत्युपेक्ष दुःप्रत्युपेक्ष्य दृष्य तृण चर्म पंच मल्ल हिरण्यादिकनो अग्रहणरूप इहां
शिष्य पूछे छे एना अग्रहणे संयम किंवा ग्रहणे संयम थाय गुरु उत्तर कहे छे के, अ
पवादेनो ग्रहणेपण संयम थाय. यडुक्तं॥डुप्पडि लिहियदूसं, अद्धाणाइ विवित्तगि
ण्हंति ॥ घिप्पइ पोत्थयपणगं, कालियनिज्जुत्ति कासहा ॥१॥ अर्थः– अद्धाण के०
मार्गादिके विवक्त सागारि जेम ग्रहस्थ न देखे अने पुस्तकपाचते कालिक निर्युक्तिनी रक्षा
ने अर्थे छे वली शिष्य पूछे छे के बीजानो विशेष कंम नथी पण पुस्तक पांचे ज्ञाननो सा
धन छे तो उत्सर्गे कंम न लेवु तेनो उत्तर –सत्वने उपघातना कारण ने लीधे आ
दृच – जे तेसिंजीवाणं, तह गयाणंच सोणिअंदुज्जा ॥ पीलिज्जंते घणियं, गलिजते
अरकरे फुसिउं ॥ २ ॥ पीडीत थको लोही नीकले ते आखरमां जाय. ११ चक्षुए
करी सारीपेठे जोइने बीज हरित जंतु संसक्तयादि रहित स्थानकनेविषे शयन आ
सन तथा चंक्रमणादि करावबुं तेने प्रेक्षा संयम कहेवो. १२ जे गृहस्थ पाप
व्यापार करे छे तेनी उपेक्षणा करवी पण एम न कहेवुं के, तु भलीपरे ग्राम ग्राम
चिंताकर अथवा संयमनेविषे सीदनारा साधुउने जे प्रेरणा करवी अने पा
स्थादिक जे निर्द्धंधस पणे प्रवर्त्तताने उपेक्षानुं करवुं ते उपेक्षा संयम कहिये. १३
रुडीरीते प्रेक्षित स्थंडिलनेविषे पण रजोहरणादिके करी प्रमार्जिने, शयन, आसन,
निक्षेप तथा आदान आदि करनार अथवा ग्रहस्थने देखतां कृष्णभूमि प्रदेश थकी
श्वेत भूमि प्रदेशनेविषे प्रवेश करे त्यां सचित्त अचित्त मिश्र रजे करी खरडायला पादा
दिकनो रजदूर करवाने अर्थे रजोहरणे करी पुंजे प्रमार्जन करे त्यां पण अण पुंजता
असंयम अने ग्रहस्थदृष्टिटाली पुंजताने प्रमार्जना संयम जाणवो. यडुक्तं–पायाई
सागरीए, अपमज्जित्तावि संयमो होइ, ते चेव पमज्जंते, सागरिए

१४ भक्तपानादिक प्राणिससक्त, अविशुद्ध, अथवा काम न आवे ते अनुप कारक एवी वस्तुने जतु रहित स्थाननेविषे सूत्रोक्त विधिएकरी परिष्ठापना करवा थी परिष्ठापना सयम कहेवाय १५ द्रोह इर्ष रीस तथा अभिमानादिक थकी म नने निवृत्तावे अने धर्म ध्यानादिकनेविषे मननी प्रवृत्ति करे तेने मन सयम कहिये १६ हिंसक कठोरपणा थकी निवृत्ति अने मधुर निपुण थावो एवी शुभ भाषानो बोलवो ते वचन सयम कहिये १७ गमनागमनादिक जे अवश्यकरणीयछे तेने विषे जे उपयुक्त सावधान छतो कायानो व्यापार करवो तेने कायसयम कहिये एवी रीते ए सत्तर प्रकारे प्राणातिपात निवृत्तिरूप सयम थायछे ॥ ५६३ ॥

हवे वैयावच्च कहे छे – मूल – आयरिय उवज्झाए, तवस्सि सेहे गिलाणसाहुसु, समणोन्न सघ कुल गण, वेयावच्चं हवई दसहा ॥ ५६४ ॥ अर्थ – १ आचार ते ज्ञानादिक पंचविध तेने जे आचरे छे एटले सेवे छे तेने कहिये आचार्य २ जेप समीपे आवीने जेपकी अध्ययन अथवा उपचय थाय छे तेने उपाध्याय कहिये ३ जेनेविषे विकृष्ट तथा अविकृष्ट तप विद्यमान होय तेने तपस्वि कहिये ४ नवनव दीक्षित शिक्षाने योग्य होय तेने शिष्य कहिये ५ ग्लान ते ज्वरादि रोग करी आक्रांत साधुउ ६ साधु ७ स्थविर ते समनोज्ञ सामाचारिना करनार होय ८ सघ एटले श्रमण, श्रमणी, श्रमणोपासक, तथा श्रमणोपासिका एउनो समुदाय जाणवो ९ कुल ते चाद्रादि गच्छ एक आचार्य प्रणेय साधु समूह जाणवो १० गण ते कौटिकादिक जाणवो ए आचार्यादिक दशने अन्न, पान, वस्त्र, पात्र वसति पीठफलक सस्तारक आदि धर्म साधनेकरी ग्रहणकरे शुश्रूषा, कांतार गमना उपसर्गनेविषे रक्षण क्रिया परिपालन इत्यादि वैयावर्त्य जाणवु ॥५६४॥

हवे नवविध ब्रह्मगुप्ति कहे छे – मूल – वसहि कह निसिज्जिदिय, कुड्डतर पुव्व कीलिय पणीए; अइमायाहार विभू, सणा य नव बभ गुत्तीओ ॥ ५६५ ॥ अर्थ – १ इहवसति स्त्री पशु, पंडक एउँ ए करी सहित उपाश्रयादि वसतिनु सेवन करवु नही तेमा स्त्री ते देव तथा मनुष्यना भेदे बे प्रकारनी छे ते वली सचित्त तथा अचित्त जीवित प्रमुख तथा आलेख्यनी पुतली एवा भेद पण बे प्रकारनी छे तथा पशु एटले तिर्यग् योनिने विषे उत्पन्नथएल, गाई, भेंस, ग धेडी बकरी घोडी प्रमुख पण सभाव्यमान मैथुन पणाने लीधे त्याग कर वा योग्य छे पंडक ते नपुंसक एप तृतीय वेदादिकने विषे वर्तनार मह मोह कर्मवाला स्त्री तथा पुरुषनी सेवन करवानेविषे आसक्त अने तनविष या

तेना करेला विकारनां दर्शने करी आत्माने काम विकारना संभवथी ब्रह्मच
तने बाधा उपजे माटे स्त्री पशु नपुंसकादिके रहित एवी जे वसति उपाश्रय
तेनुं सेवन करवु. बीजो केवल एकाकी स्त्री होय तेने धर्मकथा ते धर्म देशना ल
वाक्य प्रबंधरूप कथन करवा योग्य पण नथी. अथवा स्त्रीसंबंधिनी कथा क
ी सुरतोपचार चतुरालाटी विदग्ध प्रिय इत्यादि रुप कर्त्तव्य नथी. केम के,
गानुबंधिनी छे. देश, जाति, कुल, नेपथ्य, भाषा, गति विभ्रम, इंगित, हास्य,
ा, कटाक्ष, प्रणय, कलह शृंगाररस सहित कामिनीओनी कथा अवश्य
मुनिने पण मनने विकारीभूत करे छे. माटे ते न करवी त्रीजो निषद्या आस
शुं अर्थ छे? ते स्त्रीनीसाथे एक आसने बेशवुं नही. अने ते उठीगया पछी
एक मुहूर्त्त सूधी त्यां बेशवुं नही. केम के, तेना उपभोगवालुं आसन चि
विकारनुं कारण थाय छे. यदाहः–“ इत्थीय मिलिय सयणा, सणंमि तप्पा
ग्गओ जइणो : दंसेइ मणं पाणो, कुछं जह फास दोसेणं.” ४ अविवेकी ज
अपेक्षाए करी इच्छा करवा योग्य स्त्रीनी नयन नासिकादिक इंद्रियो उप
णथी स्तन तथा जघनादि अंग पण जाणवा. तेओने अपूर्व रसना अतिशय
नेत्रो उघाडीने जोवां नही. कदाचित् अचानक दीठामां आवी गयां तो जोया
नेत्रोनुं लावण्य नासिकानुं सरलपणुं, तथा पयोधरोनुं मनोहरपणुं इत्यादिनी ए
ा चित्तेकरी चिंतना करवी नही. केम के, तेनुं अवलोकन तथा चिंतवन मो
ःकनो हेतु छे. माटे तेम न करवो ५ कुड्यांतरे एटले भीत अथवा त्राटी
वने आडे दंपतिनो सुरतादि शब्द सांभल्यामां आवे एटले ते स्त्री पुरुष मा
ाहे संभोग समये तत्संबंधी रागविषे वार्त्ताओ करता होय ते सांभल्याथी
चित्त विकारवंत थाय तेथी ते स्थाननो परित्याग साधुए करवो. ६ पूर्वे गृहस्था
ग्रानेविषे स्त्रीसंभोगनी क्रीडा करेली तेनो अनुभव लक्षण तथा द्युत्यादि रमण
ःणनुं स्मरण करवुं नही. केम के तेना संस्मरणे करी पण जेम इंधनना
ी अग्नि दीप्तिवान थाय छे तेम मतिनेविषे नवे सरथी विकार उत्पन्न थाय
७ प्रणीत एटले अति स्निग्ध मधुरादि रस भक्तनुं भोजन करवुं नही केम
निरंतर पौष्टिक स्निग्ध रसे करी संतुष्ट थयाथी प्रधान धातुना परिपोषणथी
नो उदय थाय माटे न करवुं ८ भिक्षा मागी लावेलुं रुखुं अहार पण अति
हार करीने कंठ सुधी उदर भरवुं नही. केम के ते ब्रह्मचर्यनो नाश करनारो छे.
ाज शरीरने पण पीडा करनार छे. “ ए विभूषण ते पोताना शरीरनी शोभाने

अर्थ सस्कार स्नान, विलेपन, धूपन, नख, दात, तथा केशनुं समारवु ते करव थी अब्रह्म सेववानी अभिलाश थाय माटे विभूषा करवी नही अशुचि शरीरस स्कार रहीत होय तेना मनमा जो विकार उपजे तो पण ते कायायेकरी अकार्य न करे एटला ब्रह्मचर्य एटले अमैथुन व्रतनी गुप्तिओ राखवाना उपायो छे ॥५६०॥

हवे ज्ञानादि त्रिक कहे छे – मूल – बारस अगाईय, नाण तत्तत्थ सद्दहाण तु, दसण मेय चरण, विरई देसे य सव्वेय ॥ ५६६ ॥ अर्थ – ज्ञान शब्दे कर्मनो क्षय अथवा कर्मनो क्षयोपशम छतां तेथी उत्पन्न थयो जे अवबोध तेनो हेतु होवा थी द्वादशागादि अने आदि शब्दथी उपाग प्रकीर्णकादिनु परिग्रहण करवु ते ज्ञान तथा तत्व ते जीवादि नवपदार्थ तेनो अर्थ एटले अनिश्चेय तेनेविषे श्रद्धान करवु ते मज एज प्रत्यय रूप जे रुचि तेने दर्शन कहिये तथा पाप व्यापार थकी विरमवु ते ज्ञान श्रद्धान पूर्वक परिहारने चरण कहिये ते बे प्रकारनु छे – एक देशथी बीजु सर्वथी तेमा देशथी श्रावकोने जाणवु, अने सर्वथी साधुओने जाणवु॥५६६॥

हवे द्वादश प्रकारनु तप कहेछे – मूल – अणसण मूणोयरिया, वित्ती सखे वण रसच्चाउ, काय किलेसो सलीणया य बज्झो तवो होई. ॥५६७॥ पायच्छित्त वि णओ वेयावच्च तहेव सज्झाओ, झाण उवसग्गोविय, अब्भितरओ तवो होई ॥ ॥ ५६८ ॥ अर्थ – ए बे गाथा अने एओनु स्वरूप ते तपना अतिचारोनी व्याख्या मा पूर्वेज व्याख्यान करेलु छे माटे फरी अही तेविषे वधारे लखता नथी॥५६८॥

हवे क्रोधनिग्रहादि कहेछे – मूल – कोहो माणो माया, लोभो चउरो हवति हु कसाया; ए एसि निग्गहण, चरणस्स हवति मे नेया ॥ ५६९ ॥ अर्थ -क्रोध मान माया तथा लोभ ए चार कषाय जाणवा जेनेविषे प्राणीओनी हिंसा थाय छे तेने कहिये कष, तद्रूप जे ससार तेनेविषे आय एटले प्राप्त थायछे एटले जे णेकरी प्राणीने ससारनी प्राप्ति थायछे तेने कषाय कहिये तेओनु निग्रहण ए ले नियत्रण जाणवु एवीरीते चरण एटले चारित्रना पूर्वोक्त सित्तेर सख्याये भेदो थायछे एटले व्रतना पाच भेद, श्रमण धर्मना दश भेद, सयम सबधी सत्तर भेद वैयावृत्यना दश भेद, ब्रह्मगुप्ति नव, ज्ञानादि त्रिक, तपना बार, अने क्रोधनिग्रहादि चार ए बधा एकठा कर्याथी सित्तेरनी सख्या थायछे ॥ ५६९॥ ए छासठमो द्वार

अवतरण – हवे 'करणति' एटले करण सत्तरिनो सडसठमो द्वार कहेछे – मूल – पिंडविसोही समई, भावण पडिमाय इदिय निरोही, पडिलेहण गुत्तीओ अभिग्गहो चेव करण तु ॥ ५७० ॥ अर्थ – जेनु पिंडन थाय तेने कहिये पिंड

ते सजातिओ तथा विजातियोनुं अथवा कठिण द्रव्यनुं एकत्र समुदायनो संघा त एटले मळवो तेने पिंम कहिये. वळी समुदायियकी समुदाय क्यारेक भिन्न हो य एवी रीते घणा पदार्थो एकत्र मळेला पिंम शब्दकरी कहेवाय छे तेनी विविध एटले अनेक प्रकारे आधाकर्मादिकने परिहारे करी शुद्धि एटले निर्दोषता तेने कहिये पिंमविशुद्धि. तथा समिति ते सम्यक् एटले प्रशस्त अर्हत्प्रवचनानुसारे जे चेष्टा तेने समिति कहिये. ते ईर्यासमित्यादिक पांच जाणवी. तथा जे भाववी तेने कहिये भावना; ते अनित्यत्वादिकनुं चिंतववुं. तथा प्रतिमा एटले प्रतिज्ञा जे अभिग्रहनो प्रकार मासिक प्रमुख. तथा स्पर्शादिक इंद्रिय तेओनो जे निरोध एटले पोतपोतानेवि षे इष्ट तथा अनिष्टने विषे रागद्वेषनो अभाव एम जाणवुं. तथा प्रतिलेखना ते आगमा नुसारे करी प्रति प्रति निरीक्षण एटले चोलपट्टादि उपकरण प्रमुखने ले खन के० निरखवुं ते प्रतिलेखन कहियें. तथा गुप्ति जे गोपववुं. तेणेकरी यतिने पोतानी आत्मानुं राखवुं, अथवा मनादि योगनिग्रह ते गुप्ति कहिये. तथा जे अभिग्रहिये तेने कहिये अभिग्रह ते द्रव्यादिसंबंधी नियमविशेष अनेक प्रकारे जा णवा. चकार समुदायने अर्थे छे अने एवकार ते अनुक्रमे प्रतिपादनने अर्थे छे. अने ए करणतु के० जे कराय तेने करण कहेवु ते मोक्षार्थी साधुओ करे छे. एम जाणवुं तु शब्द विशेषणार्थेछे तेथी एम कहेवुं के मूल गुणने सद्भावेज कर णपणुं छे ते एने अन्यथा न थाय अही कोई आशंका करे छे.

आशंकाः– समितिना ग्रहणथी पिंमविशुद्धिनुं ग्रहण थवाने लीधे पिंमविशु द्धिनुं जुदुं ग्रहण कर्त्तव्य नथी. जे कारण माटे एषणासमितिनेविषे सर्व एषणानुं ग्रहण थयुं छे. तो पिंमविशुद्धि पण एषणाज छे. तेनो भेदेकरी उपन्यास केम कर्यो?

समाधानः– पिंमथी व्यतिरेकपणे पण एषणा टीशमां आवेछे. ते वसति प्र मुखना पिंमप्रक्षेपणे एषणा थाय छे तेने एषणा समितिनुं ग्रहण अथवा पिंमवि शुद्धिनो भेद कहेवो ते कारणे करी ग्रहण कर्त्तव्य छे परंतु कारण विना न करवुं एवो अर्थ जाणाववाने अर्थे अथवा आहारविना पिंमविशुद्धि प्रमुख करी न शकाय ए माटे भेदेकरी उपन्यास कर्यो छे. माटे पिंम, शय्या, वस्त्र. अने पात्र ए अकल्पनीय लेवा नही अने जे कल्पनीय थाय ते साधु लिये ॥५६०॥

हवे जे दोषोएकरी रहित पिंमनी शुद्धि थाय छे ते दोषोने सामान्येकरी त्रण भेदे कहे छे.–मूलः–सोलस उग्गम दोसा, सोलस उप्पायणाय जो दोसा ; दस एसणा य दोसा ; बायालीसं इह हवंति. ॥५६१॥ अर्थः– प्रथम उद्गम शब्दे पिंमनी उत्पत्ति

तद्विषय जे आधाकर्मी आदि दोष ते उद्गम दोष सोल जाणवा. बीजो उत्पादन ते उ पजाववु, ते शुद्ध पिंमने पण धात्रीत्वादि प्रकारेकरी दूषणनु उपजाववु तद्विषयक उत्पादन दोष ते पण शोल जाणवा तथा दश एषणाना दोष छे. एषणा एटले ग्वीषे जोइये अनशनादि ग्रहण कालने विषे शंकितादिक प्रकारे करी जोवु तेने कहिये एषणा तेना दोष ते ए त्रणे मल्याथी बेतालीश दोष थाय छे ॥ ५७१ ॥

हवे प्रथम उद्गम विषयक शोल दोषोना नाम कहे छे – मूल – आहाकम्मु देसिय. पूइकम्मे य मीसजाए य, ठवणा पाहुडिया ए, पाओयर कीय पामि च्चे ॥ ५७२ ॥ परियट्टिए अभिहडु, निंभे मालोहडे इय अछिज्जो, अणिस ट्ठे अज्झोयर सोलसपिंडुग्गमेदोसा ॥ ५७२ ॥ अर्थ – आधान एटले आ श्रावक साधुने कारणे मने भक्तादिक पकाववु छे, एवा मनेकरी साधुनिमित्ते जे अशनादिक ग्रहण नीपजावे ते आधा कर्म एटले जे पाकादि क्रिया तेने कहिये आधाकर्म तेना योगेकरी ते भक्तादि पण आधाकर्मि जाणवा अथवा आधा एटले साधुना चित्तना आशयथी भक्तादि कराय छे तेने आधाकर्म कहिये साधु निमित्ते सचित्तने अचित्त करवु अने अचित्तनो पाक करवो एम षड्विध जीवनि कायना वधथी जे थाय ते आधाकर्म दोष जाणवो

२ जेनु उद्देशन करवु तेने कहिये उद्देशक दोष, ते संकेत जाणवो ते याव दर्थिकादिकनु प्रणिधान, तेणेकरी निर्वृत्तवु तेना प्रयोजनने उद्देशिक कहिये ते बे प्रकारना छे – एक ओघे करीने बीजु विभागे करी तेमां ओघ ते सामान्य, अने विभाग ते पृथक्करण जाणवु अत्र आ भावना छे – न दी धो कांइ पण प्राप्त थतु नथी ते माटे केटली एक भिक्षा देवी एम जाणी केटलाक अधिक तंदुल नाखवाथी निर्वृत्त थयुं जे अशनादि तेने ओघ कहिये ते सामान्ये करी पोताना अने बीजाना जुदा जुदा विभाग करवाना अभाव करी जाणवु एम ओघोद्देशिकनी व्युत्पत्ति जाणवी तथा विवाह प्रकर णादिकने विषे जे कांइ वधेलु होय, तेने जुदु करीने दानने अर्थे कल्पना करवी ते विभागोद्देशिक कहेवु एटले विभागे करी पोतानी सत्ताथी भिन्न करवानां जे अं तेने विभागोद्देशिक कहिये ए वेला प्रायेकरी ओघोद्देशिक थाय छे जेम क [illegible]नी सुकृत अनुभवोने दुर्भिक्ष पामेलो मनुष्य मनमां चिंतन करे के, [illegible] [illegible] भवे [illegible] कर्यु जेथी हुं आ भवे समस्त वर्तनना प्रतिदिन अर्था [illegible] [illegible] छे ते [illegible] [illegible] [illegible] दानना भक्तिनो अभाव मारामां छे तथापि मन्न

नुसारे देवा योग्य छे. केमके आ जन्मनेविषे न आप्युं होय तो उत्तर नवे स्वर्गादिक नोगनी प्राप्ति थती नथी. जो दानादि नथी करतो तो पुण्य विना स्वर्गगम न थतुं नथी. एवुं जाणीने आग्रह पूर्वक प्रति दिवस यावत् प्रमाणे करी नोजन रांधे; ते प्रमाणे नोजन रांधवानो आरंन कस्यो छतां तेवा समयमां कोई पाषंमी वचमां आवी पडे तेने निक्षादानने अर्थे आटलुं पोताने अर्थे, एवा विन्नाग कस्या विना अधिक चावलो नाखी दिये ते ओघ उद्देशिक थाय छे. अने विन्नागोद्देशिक त्रण प्रकारनो छेः— तेमां पोतोने अर्थे निष्पन्न अशनादिक जे निक्षाचरोना दानथी जुडुं कल्पेलुं होय ते उद्दिष्ट जाणवुं. अने जे निक्षा दानने अर्थे जुडुं कहाडेलुं शालि ओदन करंबादि रूपपणे ते बीजुं; अने विवाह प्रकरणनेविषे छुडुं कहाडेलुं मोदक, तथा चूर्णादि रूप निक्षाचरोने दानने अर्थे कीधेलुं कार्य ते त्रीजुं. ए एकेक वली चार चार प्रकारे छेः—उद्देश, समुद्देश, देश अने समादेश. तेमां जे उद्देश करेलुं कर्म विन्नाग तेने उद्देशिक कहिये. जेम के, कोई पण निक्षाचरो पाषंमी अथवा गृहस्थ वगेरे गमे तेटला आवे ते वधानेदेवा योग्य छे एवो ज्यारे संकल्प कस्यो होय त्यारे उद्देश संज्ञक कहेवाय छे ज्यारे एवी कल्पना करी होय के पाषंमीने न आपवुं त्यारे तेने समुद्देशाख्य कहेवुं. ज्यारे एवी चिंतवना करे के शाक्यादिकना श्रमणोने आपीश त्यारे देशानिध कहिये. अने ज्यारे एवो संकेत करे के, निर्ग्रंथ जे अर्हत् यतिओ तेओनेज आपीश एवो परामर्श करे त्यारे समादेश नाम जाणवुं. यत उक्तं— 'जावंति य मुद्देशं, पासंमीणं नवे समुद्देसं, समणाणं आएसं, निग्गंथाणं समाएसं.' एवी रीते पूर्व संख्याए करी उद्देशिक विन्नाग चार थया तेने पूर्वोक्त त्रणे गुणता बार प्रकारनो बीजो उद्देसिक दोष थाय छे.

आशंका.— आधाकर्म अने उद्देशकर्म ए बन्नेमां परस्पर विशेषपणुं छे?

समाधान.— प्रथमथीज साधुने अर्थे निष्पादित छतां फरी पण तेनी साथे बीजो पाक करवो तेने उद्देशिक कर्म कहे छे. ए विशेष छे.

३ उद्गमादि दोष रहितपणे स्वतः नक्तादिक पवित्र छतां अन्य अविशुद्ध कोटिक नक्तादि अवयवे करी सहित मेलव्याथी पूतिनूतनुं कर्म करवुं तेने त्रीजो पूतिकर्म दोष कहिये. तेना योगे करी ते नक्तादिक पण पूतिकर्म कहेवाय छे. एनो अर्थ आ छेः— जेम सौरन्य तथा मनोहरत्वादि गुणोए करी शाल्यादि नोजन द्रव्य विशिष्ट छतां पण दुर्गंधआदि द्रव्यना लवे करी युक्त थयाथी अपवित्र थाय छे. अने ते विशिष्ट जनने त्याग करवा योग्य थाय छे. तथा निरतिचार चारित्रना सातिचार पणाने

लीधे अपवित्र करणेकरी अविशोधि कोटिना अवयव मात्रेज संयुक्त छता सरूपे करी शुद्ध आहार उपभुंज्य मान नावे छता पण पूतिना कारणथी पूति जाणिये तथा आधाकर्मीकादि अवयवना लेशेकरीने पण संसृष्ट थाली, वाटकु तथा क टोरी आदिक पूति छता परिहरण करवा योग्य छे ए त्रीजो पूतिदोष कह्यो

४ कुटुंब प्रणिधान तथा साधु प्रणिधान मीलनरूप मिश्रपणे करी एटले म लेला नावथी उत्पन्न थएलु पाकादि ते नावने पामेलु जे नक्तादि तेने मिश्रजात कहिये ते त्रण प्रकारनु छे – एक यावदर्थिक, बीजु पाषंडि मिश्र, ने त्रीजु सा धुमिश्र तत्र दुर्भिक्ष कालादिकनेविषे घणा निक्षाचरो उपलन्यमान होय तेयोनी अनुकंपाएकरी जेवा के, गृहस्थ अगृहस्थ गमे ते निक्षाचरना आगमनथी तेने कुटुंबनीज बुद्धिएकरी सामान्य निक्षाचर योग्य एकत्र मेलवीने जे रांधे ते यावद र्थिक मिश्र कहेवाय अने जे केवल पाषंडि योग्य तथा पोताने योग्य एकठी रसोई करी होय तेने पाषंडिमिश्र कहिये अने जे केवल साधु योग्य तथा पोताने यो ग्य एकत्र रंधाय ते साधुमिश्र कहिये श्रमण अने पाषंडीओनो अंतर्भाव विव क्षित छे माटे श्रमणमिश्र जुदापणे कह्यु छे ए चोथो मिश्रजातिदोष जाणवो

५ केटलो एक कालसुधी जे साधुना निमित्ते रखाय तेने स्थापनादोष कहे छे अथवा आ साधुने देवु छे एम जाणीने देवानी वस्तुने केटलोएक काल अ स्थापन कर्यु होय ते स्थापना जाणवी तेना योगे करी देवायोग्य होय तेने ण स्थापना कहिये एटले छाबी तथा थाली प्रमुखमा घालीने सुस्थित कर्यु तथ छीकादिकनेविषे थोमो काल अथवा घणो कालसुधी साधुना निमित्ते करी धार करेला अशनादिकनी स्थापना जाणवी ए पांचमो स्थापना दोष कह्यो

६ कोई इष्ट अथवा पूज्यने अर्थे बहुमान पुरस्सरी करीने जे अनीष्ट व देवाय छे तेने प्राभृत कहिये प्राभृतनी पठे प्राभृत जाणवु साधुने देवायो निक्षादिक वस्तु जे नेटनी पठे होय तेने प्राभृति कहिये अथवा प्र एटले प्रक करी आ एटले साधुदान लक्षण मर्यादा तेणेकरी भृता एटले निर्वृत्त थएली क्षा ते प्राभृता जाणीये केम के, स्वार्थे क प्रत्ययनो विधान छे माटे ते प्राभृति वे प्रकारनी छे एक बादर अने बीजी सूक्ष्म तत्र बादर ते स्थूल आरंभ विषय णे जाणवी अने स्वल्प आरंभना विषयपणे सूक्ष्म जाणवी ए एकेकना पण ब नेद छे – एक उत्ष्वष्कणे करी ने बीजो अवष्वष्कणे करी जाणवो तत्र स्वय प्रवृत्ति कालनी अवधिनेविषे कचेथी आरंभनु करवु तेने अवष्वष्क कहे छे अ

आम समजवुं.—कोई श्रावक कोई नगरनेविषे पोताना अपत्यनो विवाह क
आरंभ करे. तेनुं लग्न पण ज्योतिषिए कहाडी दीधुं होय परंतु ते समये अन्य
हार करी जवाने लीधे त्यां गुरुउ न होय त्यारे ते श्रावक मनमां एवी कल्पना
के, आ विवाहनेविषे नानाप्रकारना मनोरम स्वखडी तथा पक्वानो थशे. ते व्रती
कंईपण उपयोगमां आवशे नही केमके, वखते तेउने आवता घणो काल लागी ज
माटे, हाल सांभळ्यामां आवे ठे के, गुरुउ थोडा दाहाडामां विहार करीने
त्र आवनार ठे. माटे ते समयनेविषे मारे विवाह करवो, जेणेकरी साधुउने हुं
शनादि पुष्कल आपुं. केमके, तेज अशनादिक सफल कहेवाय के जेनो विनियो
ग सुपात्रनेविषे थाय! एथी महापुण्यनुं उपार्जन थशे. अने मोटा कल्याणनी प्रा
प्ति थशे. इत्यादिक चितवना करीने निश्चय करेला लग्नने आगल ठेलीने गुरुना
आववाना समये विवाह करे. एवीरीते विवाह दिननुं उत्ष्वष्करण करीने जे न
क्तादि उपक्रिया करवी ते वादर उत्ष्वष्करण प्राभृतिका जाणवी. तथा कोई एक
श्रावके पोताना पुत्रादिकना विवाहनुं दिवस निश्चय कर्युं तेटलामां त्यां साधुओ
आवी पहोता. त्यारे ते मनमां आवीरीते परिभावना करे के, आ साधुओने वि
पुल तथा विशिष्ट एवुं भक्त पानादिक पुण्यने अर्थे देवुं जोइयेठे. ते प्राये करी वि
वाहादिकनेविषे मोटी विशाल पर्वणि थशे. अने मारा पुत्रनो विवाह थशे त्यां सु
धी तो यतिओ वीजे ठेकाणे विहार करी जशे. एवो विचार करीने वीजुं पाशे नजी
कनो लग्न कहडावे. एम विवाहना लग्ननो समय ठेराव्या ठता तेनुं अवष्कष्करण
करीने जे भक्तादि उपक्रिया करवी ते वादर अवष्वष्कर प्राभृतिका जाणवी.
तथा कोई कुटुंबिनी स्त्री सूत्र कातवाना वेपारविषे लागेली होय तेनी पाशे वालक
रोतो रोतो भोजन मागतो होय के, मा मने खावाने आप. ते प्रस्तावनेविषे पाशेना
गृहोमां भिक्षा मागतां साधुउनुं संघाटक तेणे जोयुं. त्यारे सूत्र कातवाना लोभेकरी
रोता अने धांधल करता वालकने कहे के, हे वालक तु रोदन तथा प्रलापन ना
कर, जो आ पेला साधु घेर घेर भिक्षालेता अनुक्रमे ज्यारे आपणे घेर आवशे ते संघा
टकने भिक्षा देवासारु हुं उठीश त्यारे तने पण भोजन आपीश. त्यार पठी क्रमे
करी साधुओनुं संघाटक आव्याथी धर्मादिकने अर्थे उठीने भिक्षा आपे त्यारे
वालकने पण भोजन आपे. हवे जे क्षणनेविषे वालके भोजन माग्युं हतुं ते
समये तेने आपवा उचित ठतां भविष्य कालनेविषे साधुउने भिक्षा देवाना समये
तेने उत्ष्वष्करण कहे ठे. तेनेविषे जे प्राभृतिका ते सूक्ष्मोत्ष्वष्करण

कहिये तथा कोई गृहस्थनी स्त्री कातणु करती ठता खावाने मागता बालकने कहे के, एक पूणी कातो लक पठी तने जोजन आपु एटलामा साधु आव्या त्यारे कहीने तेने निक्षा आपे, अने बालकने पण खावाने दिये हवे पूणी काती लीधा पठी ठोकराने जोजन आपवानु ठता वचमा साधु आवी लागायी ते समये ज बालकने खावा आपवु तेने अवष्कष्करण कहिये ए प्राभृतिका साधुन सूक्ष्म अवष्कष्करण प्राभृतिका कहिये ए प्राभृतिका साधुने अर्थे करी ठता बालकने जोजन दान देवा पठी हस्तधावनादिके करी षट्कायादि उपमर्दनो हेतु होवाथी अकल्पनीय ठे ए ठठो प्राभृतिका दोष कह्यो

७ साधुना निमित्ते अग्नि प्रदीप तथा मणि आदिकनी स्थापनाए करी अथवा नित्यादि अपनयने करी बाहार निकास्य धारणेकरी प्राडु प्रकटस्वेकरी देवानी व स्तुनु करण तेने प्राडुष्करण कहिये तेने योग्य जे नक्तादिक ते पण प्राडुष्करण क हिये अथवा प्राडु करण होय जेनु तेने कहिये प्राडुष्करण ते बे प्रकारे ठे —एक प्रकाश करण, ने बीजु प्रगट करण, कोई श्रावक साधुनी नक्तिएकरी नूषित मन वालो, निरतर सत्पात्र दाने करी पवित्र करेला ठे जेणे पोताना हाथो, पण म द विवेकी ठे तेथी अधकार वाला गृहनविषे पडेलु साधुने देवायोग्य अशनादि क साधुने देवु ठे एवी परिनावना करीने तेना प्रकाशवाने अर्थे अजवालु करवा वाली मणिने त्या स्थापन करे, अथवा अग्नि प्रदीप करे, वा गवाक्ष करावे, ना नु दरवाजु होय तो मोटु करावे अथवा नीतिप्रमुखमा काणु पाडे, एवीरीते को ई ठेकाणे पडेली देवानी वस्तुने प्रकाशवु तेने प्रकाश करण कहेठे अने घरमा ना चूलानी ऊपर पोताना गृहने अथ राधेलु उदनादिक ते अधकारमाथी कहा डीने बाहेरना चूलानी ऊपर अथवा घरना चूलाथी निन्न काई बीजा स्थानके अ थवा कोई बीजाज प्रकाशवान प्रदेशनेविषे साधुने दानने अर्थे जे स्थापन करवु तेने प्रकट करण कहिये ए बन्ने प्रकारनु प्राडुष्करण ठकाय जीवोनी हिसा का रवाना दोषना सन्नाव होवाथी साधुने ते वर्जन करवा योग्य ठे ए प्राडु कृत दोष

८ साधुने अर्थे जे मूल दईने काई वस्तु वेचाती लइये, तेने क्रीतदोष कहे ठे ते चार प्रकारे ठे —आत्म इव्य क्रीत, आत्म नावक्रीत, परइव्य क्रीत तथा पर नाव क्रीत तत्र आत्माएकरी पोतेज इव्यथी बद्धर्यतादि तीर्थ शेष परावर्तादि गुटि का सौजाग्यादि सपादक रक्षादि रूपेकरी प्रदान करवाथी परम अर्थनो त्याग क रता ठता जे नक्तादिक ग्रहण करवु तेने आत्म इव्य क्रीत कहिये एनेविषे आटला दो

षो छेः—उज्जयंतादि तीर्थशेष गुटिका समपर्ण कस्या पछी थोडा कालेज दैवयोगे गृहस्थ ने अकस्मात ज्वरादिके मांदाई थई आवे त्यारे ते मनमां जल्पना करे के, हुं साजो ता जो छतां आ साधुए आपेली गुटिकाथी रोगी थयो; एवी बकवाथी शासननी मलि नता थाय अने एवी जो राजादिकने खवर पडे के अमुक जैननो साधु गुटिका आपीने माणसोने मांदा पाडेछे तेथी तेने पकडी मारकूटादि करे. अने ते शेषादि समर्पण कस्याथी दैवयोगे रोग मंद थई जाय तो लोकोमां ते साधुनो वहावा था य ते साधुने अयोग्य होवाथी शासननी हीलना थाय तथा तीर्थाटन करतां देव ने अर्पण करेली कांई वस्तु लई आवीने आप्याथी शरीर तथा व्यापारनी पुष्टी थयाथी छकायना जीवोनो घात थाय तेथी कर्मबंध थाय इत्यादि दोषो जाणवा वीजो आत्मभावक्रीत ते पोते भक्तादिकने अर्थे धर्म कथन करनार वादी, क्षपक तापक तथा कवि प्रमुखे करी धर्म कथा उपन्यासादि लक्षण भावेकरी कहेला ध र्म कथाना उपन्यास थकी जे अशनादिकनुं ग्रहण करवुं. ते आत्मभावक्रीत क हिये. एना दोष पोतानुं निर्मल अनुष्ठान निष्फल करवुं वगेरे जाणी लेवा. त्री जो परद्रव्यक्रीत एटले पर ते गृहस्थे साधु निमित्ते सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्ये करी करेला अशनादिकनुं जे ग्रहण करवु तेने परद्रव्य क्रीत कहिये एना षट्कायविराधनादि प्रसिद्ध दोषो छे ते जाणी लेवा. तथा परभाव क्रीत ते पर एटले यति आदिकनी भक्तिना वशेकरी साधुना निमित्त पोताना विज्ञान प्रद र्शनादिरूपे करी अथवा धर्मकथादिरूपे करी भावेकरी वीजाने पीगलावीने जे गृह ण करवुं तेने परभाव क्रीत कहेछे. एना त्रण दोषो छे.— एक क्रीत दोष, वीजो वीजाना गृहथी आण्याथी अभ्याहृत दोष अने त्रीजो लावी लावीने एकत्र साधुने अर्थे स्थापन करवुं ए आठमो क्रीत दोष कह्यो.

ए अप एटले हमणा मने अमुक चीज जोईए छे ते आप हुं तने पाछी आपीश एम कहीने साधुने अर्थे कढीनुं लेवुं तेने अपमित्य अथवा प्रामित्यक कहेवो. अही जे अपमित्यनुं ग्रहण कर्युं ते पण उपचारथी कह्युं छे एम जाणी लेवुं. ते वे प्रकारनो छे.— एक लौकिकने वीजो लोकोत्तर तेमां लौकिक ते कोई ग्रहस्थ वी जानी पाशेथी उछीनुं लईने कोई व्रती एटले साधुने आपे ते जाणवो. एना दोष कहेछे ते कढीनो लेनारने तेना आधीन रहेवुं पडे, वचननुं वंधन थई पडे अने नियमथी ते करवुं जोये ए जाणवा. अने लोकोत्तर ते वस्त्रादिकनी परस्पर साधु ओनेविषे लेवड देवड जाणवी. ते वली वे प्रकारे छेः— तेमां प्रथम कोई साधु

कोईनी पाशेथी वस्त्रादि मागी लिये ते एवी बोलीथी के केटलाएक दिवससुधी हु वापरीने पछी पाछुं आपीश अने बीजुं कोई एवी बोलीथी लिये के आटला दिवस पछी हु तने आना जेवुज वस्त्रादि आपीश तेमा प्रथम प्रकारे लीधेलुं वस्त्रादि शरीरना मलादिकेकरी मलीन थयु होय, फाटी गयु होय, चोराई गयु होय, अथवा कोई ठकाणे रस्तामा पडी गयु होय तो तेने लीधे माहो माहे कजीओ थाय, इत्यादिक दोष जाणवा अने बीजा प्रकारे लीधेलु वस्त्रादि फरीज्यारे धणी मागे त्यारे बोली प्रमाणे तेथी पण विशेष आप्यु छता तेनु मन मानतु करण थाय तेथी पण कोई वखते कलहनी उत्पत्ति थाय ए नवमो प्रामित्य दोष जाणवा

१० जे साधुने अर्थे परिवर्त्त एटले ग्रकलोरु करी राख्युं होय तेने परावर्त्त कहेले ते बे प्रकारनो छे — एक लौकिक अने बीजो लोकोत्तर जाणवो ते वली एकेक बे बे प्रकारनो छे — तेमा एक तद्द्रव्यविषय अने बीजो अन्यत् द्रव्यविषय एम जाणवा तेमा तत्द्रव्यविषय ते खराब घृत आपीने साधुने अर्थे सारं सुगंध वालु घृत लेवु इत्यादि जाणवु अने अन्यत द्रव्यविषय ते जेम कोद्रवकूर समर्पण करीने साधुने निमित्ते शाल्योदनन्नु ग्रहण करवु इत्यादि जाणवु ए लौकिक जाणवो. एमज लोकोत्तर पण जे साधुओ पोतपोतामा वस्त्रादिकनु लेवु दवु करे तद्रूप जाणवो तेनी पण ते बे प्रकारे भावना करवी एमा पण पूर्वेनी पठे दोपजछे ए दसमो दोष

११ अभि एटले साधुनी सन्मुख हृत एटले कोई ग्रहस्थे बीजा कोईगृहस्थनी पाशेथी आणेनु अभिहृत जाणवु ते बे प्रकारे छे एक अनाचीर्ण ने बीजु आचीर्ण तेमा प्रथम अनाचीर्ण बे प्रकारनु छे —एक प्रछन्न ने बीजु प्रकट तेमा जे साधुए अन्याहृतपणे जाण्यु होय तेने प्रगट कहिये ते प्रत्येक बेबे प्रकारे छे — स्वग्रामविषय तथा परग्रामविषय जेमा साधुओ वास करी रह्या होय तेने स्वग्राम कहिये अने बाकीनाने परग्राम कहिये तेमा कोई श्राविका भक्तियुक्त साधुने प्रतिलाभे करी अभ्याहृतनी शकानी निवृत्ति करवाने अर्थे उत्साहने दिवसे काई बांटवा नीकली छे तेनी पठ उपाश्रयमा आवीने पोतानी साथे मोदकादिक लावीने साधुने कहे के, हे भगवन्, मने भाई प्रमुख कोई सगाना गृहथी आ प्राप्त थएलु छे ते ज्यारे हुं स्वजनोना घेर आ उत्साहनेविषे आपवानु पोताना गृहथी आणीने आपवा गई त्यारे तेउए रोषादि कोई कारणने लीधे लीधु नही हमणा हु मात्र वदन करवाने आवेली छु, तेथी आ भक्त जो तमारे लेवा योग्य होय तो एनु ग्रहण करो एम कही ते जे आपे ते प्रछन्न स्वग्राम विषय अभ्याहृत जाणवु तथा काई आ

मनेविषे घणां श्रावको होय अने ते वधा एक कुटुंबवालां होय, कोईएक समयने विषे तेउना गृहनेविषे विवाहनो संजव थयो. तेमां जमण वगेरे थइगया पठी प्रचुर मोदकादिक अन्न वध्युं. त्यारे तेउ मनमां विचार करवा लागे के, आ अन्न जो साधुउने आप्युं होय तो आपणने महत्पुण्यनी प्राप्ति थाय. एवो संकेत करीने ते साधुउमांना केटलाएक दूर रहे ठे अने केटलाएक पासे वसे ठे पण अंतराले नदी वहे ठे. तेथी तेउ ठकाय जीवोनी विराधनाना जयथी आवता नथी. अने जो कदाचित् आवे तो पण प्रचूर मोदकादिकने जोइने जो आपणे कहीशुं के आ शुद्ध ठे तो पण आधाकर्मनी शंकाए करी गृहण करशे नही. माटे जे ग्राममां साधुओ वसे ठे त्यांज प्रछन्न लइने जवुं सारुं ठे. वली वीजो विचार एवो करे के, जो साधुउने त्यां जइने आपशुं त्यारे तेउ अशुद्धनी आशंका करीने गृहण नहीकरशे ते कारण माटे वीजी ज्ञातिवालाना हाथेज केटलुंएक तेउने अपाववुं कदाचित् तेम दीधाथी पण साधूउ कबूल करशे नही केम के ए अवस्थाए करी अशुद्धनी शका थाय. तो ज्यां ज्यां उच्चारादि कार्यार्थे नीकलेला ठता साधुउ दीगमां आवे त्यां तेमने देवुं एवो विचार करीने कोइएक विजातीय मनुष्यना हाथे थोडुंक अन्न आपवानुं कह्युं; तदनंतर उच्चारादि कार्यने अर्थे केटलाएक नीकलेला साधुउ दीगमां आव्याथी तेउने कह्यु के, हे मुनिराज, आ अमारी पासे वधेलुं अन्न मोदकादि प्रचूर रहेल ठे ते जो तमारा कांई उपयोगमां आवे तो तेनुं ग्रहण करो, एम कह्याथी साधुउ तेने शुद्ध जाणीने ग्रहण करी लिये तेने प्रछन्न परग्रामविषय अनिहृत कहिये, एम परंपरा ज्ञानेकरी जेनी परिष्टापना करवी ते जाणवुं. तथा कोई साधु कोइने घेर निक्षा मागवा पेठो त्यां गौरवने योग्य स्वजनादिकने माटे जोजन करेलुं हतु ते कारण माटे त्यां तो साधुउए निक्षा देवानी प्रेरणा करी नही, तेथी कोई श्राविका पोताना गृहथी मोदकादिक लइने उपाश्रयमां आवी साधुने आपे तेने प्रगटस्वग्रामविषयअनिहृत कहिये; आचीर्ण वे प्रकारनुं ठेः—क्षेत्रविषय. तथा गृहविषय तेमां क्षेत्रविषय ते उत्कृष्ट, मध्यम तथा जघन्यथी त्रण प्रकारनुं ठे. तत्र कोई मोटा ग्रहनेविषे घणा जमनारा जननी पंक्ति वेठी ठतां त्यां एक पर्यंत साधुनुं संघाटक आव्युं अने अशनादिक जे देवा योग्यठे ते तो वीजा घरमां पड्युं ठे त्यां साधु संघाटक स्पृष्टि जयादिके करी देवायोग्य अशनादिकने समीप जवा शक्तिमान न थाय ते माटे एकशो हाथथी आणेलुं ग्रहण करे तेने उत्कृष्ट क्षेत्रथी अपहृत आचीर्ण जाणवुं, अने एक शो हाथ थकी दूरथी आणेलुं तो प्रतिषेध

जे छे तथा मध्यम क्षेत्रथी अभ्याहृत ते कर परिवर्त्तथी ऊपर यावत् एक शो हाथथी किंचित् न्यून थाय त्यां सुधी जाणवु अने करपरिवर्त्तनेविषे तो जघन्ये करी क्षेत्राचीर्ण अभ्याहृत जाणवु कर परिवर्त्त एटले हाथनु किंचित् चलन करवुं तेने जाणवु जेम के, कोई भोजन देनारी बाई कचे ठेकाणे ऊभी होय अथवा पोतेज पोताना हाथमां गृहण करेला मोदक तथा मण्डकादिक प्रसारित बाहुवडे करी होय, तेवी रीते स्थित छता साधु संघाटकने जोईने हाथमां रहेला मोदकादिक करी तेने बोलावे त्यारे ते हाथने नीचे पात्रने धारण करे ते समये भुजानु किंचित् पण चालन न करतां किंचित् मुष्टिने सिथिल करे तेथी मण्डकादिक पात्रने विषे पडे ए क्षेत्रविषय आचीर्ण जाणवु अने गृहविषय अभ्याहृत आचीर्ण बनी आवी रीते जाणवु – एक हारमां त्रण गृह होय, त्यां ज्यारे साधुसंघाटक भिक्षा ग्रहण करे त्यारे एक साधु एकज घेरनेविषे धर्मलाभ कस्वाथी जे घेरमाथी भिक्षा लेवी होय तेज घेरनेविषे उपयोग करीने भिक्षा गृहण करेछे अने पाछल रहेलो बीजु संघाटक तो धर्म लाभित गृहथी इतर बे गृह थकी आणेली भिक्षा उपयोग दईने गृहण करे छे एवी रीते त्रण घेरामांथी आणेलु आचरित अशनादिक जाणवु, पण चोथा गृहथी आचरित न जाणवु ए इग्यारमो अभ्याहृत दोष कह्यो

१२ उद्भिन्नने उद्भिन्न कहेछे साधुने अर्थे घृतादि दान निमित्त कुतुप्ती मुख घृतनां वासणनां मढाढानी उपर माटी प्रमुख स्थापन करेलु होय तेने उघाडवु ते बे प्रकारनु छे – पिहितोद्भिन्न तथा कपाटोद्भिन्न तत्र जे घरनेविषे अग्निना तापथी सचित्त पृथ्वीकाय प्रमुख जतुउं तपायमान थईने नागोलाउं श्लेष्म वगेकरी आच्छादित थयला द्वारनी, उपर नरायला छतां प्रतिदिन परिभोग स्थान, म, घृतादिके करी भरेला घट कुतुप तथा कुम्भादि साधुने दान निमित्ते उघाडी स्थान प्रमुख अपायछे, ते जे आपवानु स्थान प्रमुख तेने पिहितोद्भिन्न कहीये ए व्युत्पत्ति जाणवी अने जे स्थान तथा गोळ प्रमुखे करी सहित वासणना भरेला कपाटादि होय, तेनु द्वार दर रोज कमाडवु पडतु न होय, ते साधुना दानने निमित्ते उघाडीने तेमाथी कहाडेला स्थान तथा गोळ प्रमुख वस्तु साधुने आपवी. तेने कपाटोद्भिन्न कहिये एमां छकायजीवोनी विराधना थाय ते प्रमाणे – कुतुपादिना मढोढामांथी साधुओने आपीने वाळीनानु ग्रहण करवा अर्थे फरीथी कुतुपादिकनु मुख सचित्त पृथ्वीकायने जलेकरी आर्द्रकृत करीने करार नीरे, तेथी पृथ्वीकायनी विराधना थायछे पृथ्वीकायमध्ये मुकादिक त

कीटकादिकनो संभव थायछे, तेथी तेउनी पण विराधना थायछे. तथा कोई कुतु पादिकने उलखवाने अर्थे लाखने तपावीने ते कुतुपादिकना मुखनी उपर तेनी मुद्रा करे तेथी तेजस्कायनी विराधना थाय; अने ज्यां अग्नि त्यां वायुकायनी विराधना तो थायज छे. तथा कुतुपादिनी उपर लेपन करवाने अर्थे मृत्तिकादिकने लोधतां ते दाता ने कदाचित् दैवयोगे कोई वींछीनो कांटो वागवाथी पीडा थती दीठामां आवे त्या रे लोको कहे के, जुवो तो खरा आ यतिउने दान आपवानो केवो प्रभाव छे! दा न देतां वारज आवा फलनी प्राप्ति थई एवो उपहास करे, तथा प्रथमथीज कुतु पादिकना मुख साधुने अर्थे उगाडेलां छतां पुत्रादिकना मागवाथी तेमने घृतादि क आप्याथी तथा विक्रय व्यापारनेविषे प्रवृत्ति थई जवाथी तथा ते कुतुपादिक नां मुख बंध करतां भूली जवाथी तेमां मूखकादिक जीवो पडीने विनाशने पामे. तेम कपाटोद्भिन्ननेविषे पण एटलाज दोषो थाय छे जेम के, कपाटथकी पूर्वे कोई पण पृथ्वीकाय तथा अपकाय करच, कोचा, बीज पूरक मुक्त थई जाय त्यारे कपाटना उघाडवाथी तेओनी विराधना थायछे. जलकाय जीवो करकादिकनेवि षे आलोटता जलरूप प्रसारने पामीने पाडोना चूलामां जई पडे तेम थयाथी अग्निका यनी विराधना थाय. ज्यां अग्निकायनी विराधना थाय त्यां वायुकायनी विराधना अवश्य जाणी लेवी. वली तेमां भूमिका प्रविष्ठ छिद्रोनेविषे प्रवेश करनारा कीटक गृह गोधादिकनो विनाश थयाथी त्रसकायनी विराधना थाय. तेमज दान तथा क्रय विक्रय थकी अधिकरणनी प्रवृत्ति थायछे. ते कारणे बन्ने प्रकारनुं उद्भिन्न ग्रहण करवुं नही. पण ज्यारे कुतुपादिकनुं मुखबंध प्रति दिवसे बंधाय अने छूटे एम होय त्यारे लाखनी करेली मुद्राथकी रहित केवल वस्त्रनी गांठ दीधामां आवे वली ते नी उपर सचित्त पृथ्वीकायादिनो लेप पण करेल न होय एवुं ज्यारे साधुने अ र्थे उद्भिन्न दीधामां आवे त्यारे ते साधुए ग्रहण करवुं. तथा कपाटोद्भिन्न पण जे दररोज उघडातुं होय त्यां उद्घाटननेविषे पण कपाटाकिना अंदरना खाणामां राखेलुं अन्न साधुने कल्पे ए बारमो उद्भिन्न दोष कह्यो.

१३ मालातरनेविषे छीकादिकनी उपर राखेलुं अशनादिक साधुने अर्थे आ पीये तेने कहिये मालापहृत तेना चार भेद छे.— एक ऊर्ध्व मालापहृत, बीजो अधोमालापहृत, त्रीजो उभय मालापहृत तथा चोथो तिर्यग मालापहृत जाण वो. तेमां उर्ध्व मालापहृत. जघन्य उत्कृष्ट तथा मध्यम करी त्रण प्रकारेछे. तेमां ऊपर वलगेलुं छीकुं प्रमुख होय ते साधारण रीते ऊभा थका माणसना हाथमां

आवी शकतु न होय तेनो समूलु नाश कखायी, पाछली पेनी ऊची करी, पा
दना अधोनागरूप आगलना फणो वडे नूमिन्यस्त दाता पोताना चक्षुए
करी अदृष्ट छता जे अशनादिक गृहण करे ते पार्ष्णोत्पाटन मात्र स्तोक एटले
थोडी क्रियाएकरी गृहीत होवाथी जघन्यथी ऊर्ध्वमालापहृत जाणवु. अने जे निश्रे
णी आदिनी ऊपर चडीने प्रासादना उपरना तलथी दाता गृहण करे ते निश्र
णी ऊपर चढवा प्रमुख गुरु क्रियाए करी गृहीत होवाथी उत्कृष्ट मालपहृत क
हेवाय, अने वीजा मध्यवर्त्ति ते मध्यम जाणवु तथा साधुने अर्थे नूमि गृहादि
नेविषे प्रवेश करीने त्या पडेलु नक्तादिक लावीने आपे ते अधोवर्त्ति नूमिगृहस्थ
की अपहरण एम करी अधोमालापहृत जाणवु तथा माटीना पात्रमा, कना
मां तथा मजूष काष्ठकादिकनेविषे स्थित किंचित् कष्ट सहित जे दाता आपे ते उनय
एटले ऊर्ध्व तथा अधोगत व्यापारादि उष्ट्रिका तथा कुनादिके करी हरण करेलु होय
तेने उनय मालापहृत कहिये तथा अति मोटा कुन प्रमुख मध्ये पडेलु देवाइ
अशनादि होय तेना गृहणने अर्थे जे दाता पाछलो नाग उचा करे तेणे करी ऊ
र्ध्व व्यापारता थाय तथा जेणेकरी अधोमुख करी बाहुनो व्यापार करे छे ते अधोग
त व्यापारता कहिये, ज्यारे जाडी नित्यादिकनेविषे खत्ताना जेटला ऊचा प्रदेश प्रा
गोखलु प्रमुख लांबु होय, तेमां तिर्यग प्रसारेला हाथो नारसीन तेमाथी देवाइ
गृहण थाय छे ते प्राये करी जोई अथवा न जोईने दाता दिये छे तेने ति
र्यग मालापहृत् कहे छे तिर्यग् माल ते नीति आदिकनेविषे स्थित गवाक्षादिरू
अपहरण एम करी जाणवु

आशंका —मालशब्दे करी उचा प्रदेश होय तेज कहेवाय छे तेम छता नूमि
गृहादिक एटले नीच नूमिनेविषे स्थित तेने माल शब्दे करी केम कह्यु ?

समाधान — लोकनी रूढीथी ऊचा प्रदेशनेज माल शब्दे करीज गृहण करे
छे, पण समय प्रसिद्धिए करी समयनेविषे माल शब्दे नूमिनु ग्रहण पण था
छे ए मालापहृतमा आटला दोष छे —मांचीनी ऊपर माचानी उपर अथवा ऊखला
कनी ऊपर चढी पोताना शरीरनो पाछलो नाग ऊचा करीने ऊपर वलगेला छीकादि
नेविषे स्थित मोदकादिकनु ग्रहण करता कोई दान देनारनु नीचेथी पग नम
जाय तेथी नीचे पडे त्यारे नीचेनी पृथ्वी ऊपरना पिपीलिकादि तथा पृथ्वीका
दिक जीवोनो विनाश थाय वली दाताना हस्तादिकनो पण वखते नंग थई
य, अने कोई वधारे खराब ठेकाणु होय तो प्राणनो पण घात थाय तथा प्रव

नी हीलना थाय; जेम के, आ दाता साधुने अर्थे अशनादि लेवाने ऊपर चमतां नीचे पडीने मरी गयो माटे ए साधुउ कल्याणकारी नथी एवा दोषनो आरोप करे; प ण दातानी ऊपर कोई दोष राखे नही. एवी रीते लोकमां मूर्खताथी अपवाद थाय. इत्यादिक दोषोना संभवथी साधुए मालापहृत ग्रहण करवा योग्य नथी. अने योग्य पगोठी आदिकनी ऊपर चढी सारी रीते पोताना शरीरनो भार तोलन करी तथा कोई प्रकारे पण पडी न जवाय तेवी रीते ऊभा रही दात्री ऊपर च डी अशनादिक आपे ते मालापहृत न कहेवाय माटे साधुए लेवुं. अने केवल साधु पण एषणानी शुद्धिना निमित्ते प्रासादादिकना दादरादिकनी ऊपर चढीने अपवादे करी भूमिए लावीने स्थापेलुं ग्रहण करे. ए तेरमो मालाहृत दोष कह्यो.

१४ चाकर अथवा पुत्रादिकनी इछा न उतां तेउनी पाशेथी फाटीने जे साधुने दान देवाने माटे ग्रहण करवुं तेने आछेद्य कहेछे. ते त्रण प्र कारनो छेः– स्वामिविषय, प्रभुविषय, तथा चोरविषय. तत्र जे ग्रामादिकनो धणी होय तेने स्वामि कहेये; तथा मात्र गृहनो जे नायक होय तेने प्रभु क हिये; अने जे चोरी करनार होय तेने चोर कहेछे. हवे ग्रामादिकनो स्वामी य तीउने देखीने पोताने कल्याणनी इछाथी कजीउ करीने अथवा बलात्कारे करी साधु ने अर्थे गाममां रहेनारा कटुंबीउनी पाशेथी अशनादिक छीनवी लईने ते यतिओने जे आपे तेने स्वामीविषय आछेद्य कहेछेः तथा जे गाई प्रमुखनी रक्षा करनारां पु त्र, पुत्रिका, वधु तथा भार्यादिक सकाम जनोनी पाशेथी तेमनी इछा न उतां ग्रहण करीने ते ग्रहनो नायक साधुउने दूध वगैरे आपे तेने प्रभुविषय आछेद्य कहिये. तथा केटलाएक चोरो पण संयतिउनुं सारुं करनारा होयछे. ते मार्गमां चालतां कोईएक समये केटला एक वाटमार्गी भोजन करतां बेठेला दीठामां आ व्यां तेटलामां त्यां भिक्षाने माटे फरतां तेउनी इछा पूरती गोचरी न मलतां के टलाएक यतीउ पण आवता दीठामां आव्या, तेउने निमित्ते तथा पोताने अर्थे पेला जमवा बेठेला ग्रहस्थोनी पाशेथी बलात्कारे मालमता छीनवी लईने तेमांथी केटलुं एक साधुउने आपे तेने स्तेन विषय आछेद्य कहेछे. ए त्रणे प्रका रनो आछेद्य साधुउने कल्पे नही. केम के, एमां अप्रीति, कलह, आत्मघात, अंतराय तथा प्रद्वेष प्रमुख अनेक प्रकारना दोषोनो संभव छे. तेमां चोर विषय आछेद्यमां कांईक विशेष दर्शावे छे.– जे वाटमार्गीउ संबंधी भक्तादिक बलात्कारे छीनवी लईने चोरो साधुउने आपे छे. ते सार्थिक लोको के, जेउने चोरोए

लूटी लीधा छे ते एम कहे के अमेतो अवश्य चोरोना हाथे लूटाववाना हता, ते जो चोरो अमने लुटीने तमने आपे छे, तो एथी अमने पण मोटो संतोष थाय छे एवीरीते ते मालवालाने अनुज्ञात छतां आपेलु अशनादि अवश्य साधु ग्रहण करे पछी ज्यारे चोरो जता रहे त्यारे ते ग्रहण करेलु द्रव्य फरीथी तेना मालेकोने स मर्पण करे अने कहे के, चोरोना भयथी अमे आ समये ग्रहण तो कलु पण हवे चोरो जता रह्या छे माटे आ तमारु द्रव्य तमे पाछु लेओ, एम कहु छतांपण जो ते सुज्ञ माणसो होय अने कहे के, ए तमने चोरे आप्युं नथी पण अमेन दीधु छे माटे ए लेवामां तमने कांई दोष नथी त्यारे ते अवश्य लेवा योग्य छे ए चवदमो आछेद्य दोष कह्यो

१५ जे सर्व स्वामीओएकरी साधुने अर्थे अनुज्ञात होय तेने अनिसृष्ट कहे छे ते त्रण प्रकारनु छे –साधारणानिसृष्ट, चोलकानिसृष्ट, तथा जडानिसृष्ट तेमां घणा जनोने सामान्य होय तेने साधारण कहिये, तथा ग्रामादिकना धणीए पोताना पायदल लस्करने प्रसाद एटले इनाम आप्यु होय ते अथवा कोई कुटुंबना मालके क्षेत्रादिकनेविष रहेला कामकरनाराने जे कांई दीधु होय ते एने देशी भाषामां भक्त कहे छे एने चोलक कहे छे अने जड ते हस्ति समजवो ए त्रणकरी निसृष्ट एटले अनुज्ञात साधुओने कल्पे नही तत्र साधारण निसृष्ट एटले कांई हाट, गृह, तथा बीजा कांई ठेकाणे रहेली तिलकुट्टितैल, वस्त्र लडुक, व िथ तथा अशनादिक वस्तुना भदकरी अनेक वस्तु विषय जेम के, घाणी आदि यंत्रन स्थले तिलकुट्टितआदिक, दुकानना ऊपर वस्त्रादिक तथा गृहने विषे अश नादिक घणा जणान साधारण अन ते गामना जेटला वारसो होय तओना अनु मतथी जे कांई साधुने दीधामां आवेछे तेने साधारण अनिसृष्ट कहिय तथा चो लक व प्रकारनो छे – छिन्न अने अछिन्न. तत्र कांई कुटुंबिक क्षेत्रमां रहेना का म करनाराओमांथी कांईने पाछे लईने तेने भोजन आपे ते ज्यारे एक एक हारीने योग्य जुदा जुदा वासणमां नाखे त्यारे ते चोलिक अने ते भोजनना सत्र हालिकोने योग्य एक मोटी थाळीमा नाखीने मोकलावे त्यारे तेन छिन्न कहछे पछी ते चोलिक जेना निमित्ते भिन्नभिन्न करनु देरानु होय तेने न दईने मूल स्वामि ज कुटुंबीक तेना न दखता अथवा दखतां साधुन आपे ते छेदनेकरी तनु पोता नु करनु हावाथी, तथा कौटुंबिक ज जे हालिकोने योग्य चोलिकने एकत्र भो जन त्यारे ते साधुने दयान धणीने जाणतां, अजाणतां, तथा दखता न दख

तां साधुने आपे ते साधुए लेवुं नही केम के. तेथी द्वेषांतराये करी परस्पर कल
हनो संजव ठे. तथा जडानिसृष्ट एटले हाथीने देवानुं जोजन राजा तथा हाथी
थी ठानुं लेवुं नही केम के, हस्तिनुं जे जोजन ते राजा संबंधी ठे तेथी कदाचि
त् राजाने खबर पमेतो ते लेनारने पकडे अथवा पकडीने खेंचे वा तेने दंमादि
कनो संजव थाय. वली ते देनारे साधुने पिंम आप्युं तेथी कोपायमान थईने
राजा कदाचित् तेने तेना अधिकार उपरथी कहाडी मूके तेथी ते बिचारानो
निर्वाह बंध थई जाय अने लोकोमां एवुं कहेवाय के, पेला साधुने जोजन आ
प्युं तेथी बचारा एनी चाकरी गई एवा दोष लागे; तथा राजाने अजाणे दीधाथी
अदत्तादान दोष पण लागे; तथा हाथीने जोतां पण साधुए तेना जोजनमांथी
ग्रहण करवुं नही. केम के, ते सचेतन होयठे. तेथी तेणे जोई लीधाथी एवुं मन
मां आणे के, मारा कवलमांथी आ मूंमाए पिंम ग्रहण कर्योठे. तेथी ते कोपाय
मान थईने कोई समये यथायोग्य मार्गमां परिज्रमण करतां उपाश्रयनेविषे ते सा
धुने देखी ते उपाश्रयने तोडी नाखे, अने जो ते साधु लागमां आवी जाय तो
तेने मारी पण नाखे. ए पनरमो अनिसृष्ट दोष कह्यो.

१६ अधि एटले अधिकपणे करी जे अवपूरण तेने कहिये अध्यवपूरण. पो
ताने अर्थे रांधवाने चूलानी उपर चडावेलुं ठतां साधुउ आवेठे एम जाणीने
तेउना योग्य जोजन तैयार करवाने अर्थे ते रंधाता जोजनमां बीजुं नाखवुं ते.
अही क प्रत्यय स्वार्थे ठे. तेना योगे करी अध्यवपूरक कहिये. ते त्रण प्रका
रनो ठेः– स्वगृहयावदर्थिकमिश्र; स्वगृह साधुमिश्र; अने स्वगृहपापंमिमिश्र. त
त्र स्वगृहयावदर्थिक मिश्रनेविषे स्वगृहसाधुमिश्र अने स्वगृह पापंमिमिश्र एबन्ने
नो अंतर्जाव थाय ठे अने स्वगृह श्रमणमिश्रनो स्वगृह पापंमिमिश्रमां अंतर्जा
व ठे. तत्र यावदर्थिकना आववानी पहेलांज चूलामां आग पेटवी, थालीमां
पाणी नाखी वगेरे पोताने अर्थे बधी रांधवानी तैयारि करी पाठलथी यथा संज
व त्रणेमांना यावदर्थिकादिकोने अर्थे तंडुलादिक वधारे नाखे तेने अध्यवपू
रक कहे ठे. जे कारण माटे ते एकठुं रंधाय ठे ते कारणमाटे मिश्रपणो थएलुं
कहेवाय ठे. जे प्रथमथीज यावदर्थिकादि अने पोताने माटे जेलुं रंधाय ते मिश्र
जाणवुं अने जे प्रथम पोताने अर्थे रांधवानुं शरु कर्युं होय अने पाठलथी पापं
मी अथवा साधु प्रमुखनुं आगमन थएलुं जाणीने तेओमां अधिकतर जल तथा
तंडुलादि जे नखाय तेने अध्यवपूरक कहे ठे. हवे ज्यां स्वगृह तथा यावदर्थिक

मिश्र अध्यवपूरक शुद्ध नक्त होय तो तेमाथी जे कण तथा कार्पट एटले पापड प्रमुखने अर्थे जे पाठ्यथी नाखेलु होय तेटलु थालीमांथी जुडु करीने अथवा क पंटिका थकी जुडु करीने आप्याथी बाकी रहेलु जे अन्न ते साधुने कल्पे ए कारण माटे एने विशोधि कोटि एटले शोधेलु कहे छे तथा स्वगृह पाखंडि मिश्र तथा स्वगृह साधु मिश्रनेविषे शुद्ध नक्तमाथी पमेलु जे होय तेने पापमिश्रादि थकी थालीमांथी जुडु करी आपे ते लेवु नही केम के, ते बधु भोजन पूतिदोषेकरी दुष्ट थाय छे एतोन मो अध्यवपूरक दोष कह्यो ॥५७२॥५७३॥ एवी रीते शोल उद्गम दोषो कह्या

अवतरण — हवे सोल उत्पादन दोष साधुथी थाय ते कहेछे — मूल — धाई दूइ निमित्त, आजीव वणीमगे तिगिच्छा य, कोहे माणे माया, लोभे य हवंति दस एए ॥७४ पुव्विं पच्छा संथव, विज्जा मंते य चुन्न जोगेय, उप्पायणा य दोसा, सोलसए मूल कम्मेय॥५७५॥अर्थ — १ प्रथम धात्री दोष आ प्रमाणे — तत्र जेने बालको धाय अथवा पिये तेने धात्री कहिये, अथवा बालकोने जे दूध पिवरावववाने अर्थे धा रण करे तेने धात्री कहेछे वली ए बालपालिका पण कहेवायछे ते पांच प्रकार नी छे — क्षीरधात्री, मज्जनधात्री, मंडनधात्री, क्रीडनधात्री, तथा उत्संगधात्री अहीं धात्रीपणानु जे करण एटले सापन अने कारण एटले हेतु होय ते धात्री शब्दे कहेवापणु दोषमां आवे छे तथा विचक्षणाए करी धात्रीनो पिंड धात्रीप णाना करण अने कारण वडे जे उत्पन्न थाय तेने धात्री पिंड कहिये एवी रीतें दूति आदिकनेविषे पण भावना करवी काई साधु भिक्षाने अर्थे आगलना भोग गीना घरमां पेसी त्या रोता बालकने जोईने तेनी माताने कहेवा लागे के, आ बालक हजी सुधी स्तनपान करवानु मूकयु नथी तेथी क्षीरादिकने अर्थे रोदन करे छे माटे मने शीघ्र भिक्षा आपो पछी ए बालकने स्तनपान करावजो अथवा पहेला एने स्तनपान करावी लीधा त्यार पछी मने भिक्षा देजो अथवा मन भिक्षा मली हमणा एम जाणीने आ बालकने स्तनपान करावो अने बीजा घरमांथी भिक्षा मागी लईने पछीफरीथी हुं अहीं आवीश अथवा तु निराकुल थईने बेठी रहे हुं स्वादीष्ट क्षीर लावीने अने आपीश एवी रीते पोते धात्रीपणु करे तथा बालकने स्तनपान करावु होय तोज मतिमान् रोग रहित तथा दीर्घायु थाय छे, अने जो स्तनपान सारी रीते न करावीए तो तेथी उलटु थाय तथा लोकनेविषे हलकु मुख सारु पण दुर्लभ छे ते कारण माटे बीजा बधा कर्मोने मूकीने आ बालकने स्तनपान करावो एम कराव्याथी घणा दोषो थाय छे जेम क

वालकनी माताने ते वोलवुं सारुं लागे तेथी वीजा वधा ठेकाणेथी मन खेंचीने आधाकर्मादिक करे. वली ते वालकने लागता वलगता तथा वीजा जनो ते वालकनी मातानी साथे जापण करवानो साधुनो संवंध होवाथी खोटी संजावना करे; केम के, तेमने ते साधुनी साथे सहवासनुं कारण दीठामां आवे माटे. अथवा ते वालकनी माता दैवयोगे मरी जाय तो ते साधुनी साथे वधा द्वेप करे. अथवा वेदनीय कर्मना विपाकना वशथी ते वालकने जो ज्वरादिकनी मांदाई थाय, त्यारे ते वालकनी माता एम कहे के ते मारा पुत्रने पीडा करी ठे इत्यादिक कहीने साधुनी साथे कलह कस्याथी प्रवचननी मलीनता थाय. अथवा कोई गृहस्थना गृहनेविपे वालकने धवरावनारी धात्रीने पोतानी वुद्धिना प्रपंचेकरी त्यांथी कहडावीने वीजी धात्रीने रखाव्याथी धात्रीत्व लक्षण दोपने संपादन करे. जेम के, कोई एक साधु जिक्षाचर्याने अर्थे कोईना गृहनेविपे प्रवेश करतां ते गृहनी कोई एक स्त्रीने शोक सहित जोईने तेने पूठे के, केम वाई तुं आजे अधीरी देखाय ठे? त्यारे ते कहे के, जे दुःखनेविपे सहायता करनारो होय तेनेज दुःख कहेवाय ठे. ते सांजली तेने यति कहे के दुःखमां सहायता करनारो कोण कहेवाय ठे? त्यारे ते वाई कहे के, जेनी पाशे दुःख कहेतां ते दुःखनो निवारण करे ते दुःखमां सहाय करनार कहेवाय. फरी मुनि कहे के. मारा विना वीजो तेवो तमने कोण जासे ठे? त्यारे ते वाई वोले के. शांजलोः— अमुकना घरमां हुं धात्री हती, त्यां वीजी धात्री आवी अने मने कहाडी मूकी तेथी ते मारुं धात्रीपणुं गयुं तेथी हुं खिन्न थई छुं; त्यारे साधु अनिमानमां आवीने कहे के, ज्यां सुधी हुं तने पाठी त्यां रखावुं नही त्यांसुधी माहरे तारा घेरथी जिक्षा लेवी नही एम कहीने पठी तेनी प्रतिपक्षी धात्रीने ते घेरमांथी कहडाववाने अर्थे ते धात्रीने दीठेली नही ठतां तथा तेनुं स्वरूपपण न जाण्याठतां तेनी आसपास जईने पूठा करे. के, ते तरुणी ठे? किंवा मध्यमा ठे? अथवा वृद्धा ठे? वली श्रेष्ट स्तनोवाली ठे? किंवा स्थूल स्तनोवाली ठे? अथवा चपटा स्तनोवाली ठे? फरी मांसवाली ठे? अथवा कृश ठे? तेमज काली ठे? अथवा गोरी ठे? इत्यादिक पूठीने ते गृहस्थना घरमां जई ते वालकने जोईने गृहना स्वामी प्रमुखनी समक्ष धात्रीना दोप कहेवा लागे के, वृद्ध धात्री तो वलहीन स्तनोवाली होयठे तेनां स्तन धाव्याथी वालक पण वल रहित थाय. कृश शरीरवाली धात्रीनां स्तन न्हानां होवाथी तेने धाव्याथी वालक पण परिपूर्ण स्तनना अजावथी अवस्य शीदाईने कृशज थाय. अने स्थूल स्तनवालीनुं दूध पीधाथी वालकनां अंग कोमल होवाने लीधे धात्रीना पयो

धरनी नीचे मुख अने नाक चपायाथी तेनु नाक चपटु थई जाय तेम
धाव्याथी बालक सर्वदा पोतानु मुख लांबुं कर्याथी सूईना जेवु लांबु
उक्तंच – " स्थामास्यनिरां धात्री, सूच्यास्य कूर्परस्तनी, चिपिट स्थू
यत् तन्वी रुशोनवेत् ॥१॥जाम्यनवति स्थूलाया, स्तनुम्यास्त्वबल करं,
नम्याया , स्तन्यं पुष्टिकरं स्मृतं ॥२॥तथा ए जे नवी राखेली धात्री छे
रूण, तथा शरीरे करी रुशादिक होवाथी सारी नथी, इत्यादिक तेनी वण
निंदा करे यथा –' रुम्मा न्नसयते वर्ण, गौरी तु बलवर्जिता, तत श्या
धात्री, वनरणं प्रगसितेत्यादि " एवु ते साधुनु बोलवु ते गृहनो स्वामी
स्थविरत्वादि स्वरूपे वर्तमान धात्रीनी परिनावना करीने तेने कहाडी मूके
साधुना समतथी बीजी धात्रीने राखे पछी ते अति आनंदित थई थकी ते
अति मनोज्ञ तथा निपुन भिक्षा आपे एवी रीते साधु आहार ले ते धात्रीपिं
गो एनेविषे घणा दोष छे ते आ प्रमाणे –जेने कहाडी मूके ते अति प्रद्वे
थामे तेथी ते साधुनी ऊपर एवो आल चढावे के पेली नवी धात्रीनी साथे सा
घाए रहेछे एम कहे, अने अति द्वेषना आवेशथी कदाचित् ते साधुने विष दईने
पण मारे तनी जे जूनी कहाडोने नवी राखेली धात्री ते पण कदाचित् मनमां
चिन्तवन करे के जेम आ साधुए मारी आगलनी धात्रीने कहडावीने मने रा
करु जाड्ये के तेम ए साधुनाम अनार थई जाय एवो विचार करीने विषादि
नेम कदाचित् मन पण कहडावीने बीजीने रखावे तेमां नवाई शी। त्यारे
प्रयोगवडे साधुने मारी नाखे एवी रीते मज्जन धात्री पणु, मण्डन धात्री पणु, क्रीड
धात्री पणु, तथा उत्संग धात्रीपणु ए प्रत्येक बीजानी पासेथी कराव्याथी अप्रा
पोने इत्यादी घणा दोषोनी परिनावना जणवा योग्य छे ए प्रथम धात्री दोष जाणवो
२ जे परस्पर संदेशाने कहेनारी होय तेने दूती कहे छे एवु परस्पर संदेशा
दि कथनरूप दूतीत्व कर्याथी जे पिंडनी उत्पत्ति थाय छे ते पनिपण दूतीपिंड
कहेवाय छे ते दूती बे प्रकारनी होय छे – स्वग्रामविषे तथा परग्रामविषे तत्र
जे ग्रामना साधुआ रहेना होय ते ग्राममांज ज्यारे संदेशो कहे त्यारे स्वग्रामविषे
दूती कहेवाय अने ज्यारे परग्रामने विषे जईने संदेशो कहे त्यारे परग्रामविषे दूती
कहेवाय छे ते एक एक प्रगट अने प्रछन्न एम बे प्रकारे छे तेमां वली प्रछन्न
दे प्रकारे छे –एक लोकोत्तर विषया अने बीजी संघाटिक साधुउंथीपण गुप्त विषया
तथा बीजी वली लोक तथा लोकोत्तर ए उभय विषया छे –एटले पाम

देनारा संघाटिक साधुउ पण जाणी न शके ए नाव. तत्र कोई एक साधु निक्षाने अर्थे नीकल्याथी पोताना विशेष लानने अर्थे तेज ग्रामसंबंधी तथा बीजा ग्राम संबंधी कोई एक प्रांतमां अथवा तेनी माह्लिली कोरे मातादिकनो कहेलो संदेशो पुत्रिकादिकनी पाशे कहे; जेम के, तारी माता, तारो पिता, अथवा तारा भ्रातादिके कह्यु ठे के, तुं आजे अहीं आवजे एम मारी पाशे कहेवराव्युं ठे. एवी रीते स्वपक्ष तथा परपक्षना शांजलता निःशंकपणे कहेवाथी प्रगट स्वग्राम तथा परग्राम विषय द्वितीय जाणीये. तथा कोई एक यति कोई गोकरीनी माता प्रत्ये स्वग्रामने विषे अथवा परग्रामनेविषे संदेशो कहेवाने माटे प्रेरित थयो थको ते संदेशाने लईने ते मातादिकनी पासे जई कहे के, आ दूतीपणुं साधुने निश्चयकरी निंदा करवा योग्य ठे. केम के, सावद्य ठे माटे. बीजा संघाटकना साधुओ मारो दूतीपणानो दोष न जाणे तो सारुं ! ए अर्थे नंग्यंतरे आम कहे ठेः– तारी पुत्री जे अति मुग्ध श्राविका ठे, तेणे सावद्य योग्य रहित एवा जे अमे, ते प्रत्ये कह्युं ठे के, मारा आववानुं आ प्रयोजन ठे. ते मारी मातानी पाशे तमारे जई कहेवुं. एम कह्याथी तेनी माता पण अति चतुराईथी तेनो अनिप्राय सारी रीने जाणी लई बीजा संघाटकना साधुने खबर न पडे माटे ते साधुने कहे के, तमारी पाशे फरीथी एवो संदेशो कोई दहाडे न आपे माटे हुं तेने वारीश. एवी रीते संघाटक साधुथी ठानुं राखे पण लोकनुं नय न राखे एम लोकोत्तर प्रठन्न स्वग्राम परग्रामविषय दूतीत्व जाणवुं. अने लोक तथा लोकोत्तर उन्नय प्रठन्न आवी रीते ठेः–कोई श्राविका साधुने कहे के, मारी माताने कहेजो के, आगल जे तारी प्रतीतनुं कार्य जेम तुं जाणे ठे तेमज सिद्ध थयुं ठे एमां साधुना संघाटकने तथा बीजा लोकने ए संदेशो जाण्यामां न आववाने लीधे एने उन्नयप्रठन्नत्व कहिये. एनेविषे दोषो सर्वत्र गृहस्थ व्यापारणादिके करी जीवोनुं उपमर्द्दन थाय इत्यादिक जाणवा. ए बीजो दूती दोष जाणवो.

३ अतीतादिक अर्थना परिज्ञाननो जे हेतु अथवा शुनाशुनादि चेष्टा अने उपचारथी तेना ज्ञाननो हेतु पण निमित्त कहेवाय ठे. एवा निमित्तनुं साधन जे पिंम तेने निमित्त पिंम कहिये एनो अर्थ आम ठेः– कोई एक व्रती पिंमादिक लानने निमित्ते गृहीनी पाशे निमित्तनुं कथन करे. जेम के, अतीत दिवशोनेविषे तने आवी रीते सुख तथा दुःख थयेलुं हतुं. तथा नावि कालनेविषे अमुक दिने तने राजादिकनी घणी महेरबानी थशे, अने हमणा आज काल तने आवी आवी रीते थशे; त्यारे ते गृहस्थ पण लान, अलान, सुख, दुःख जीवित तथा मर

णादि विषय निमित्त पूछेलुं अथवा न पूछेलुंछतां पेठा धृष्ट साधुए जेम कह्युं तेम सांभळी लईने मनने आवर्जी ते मुनिने मोदकादिकविशिष्ट विपुल भिक्षा आपे तेने निमित्त पिंड कहिये ते छेवु यतीने योग्य नथी पोताना तथा परना विषये षट्काय वधादिक अनेक दोषोनो संभव छे ए त्रीजो निमित्त दोष जाणवो

४ जे सर्व प्रकारे जीवन करनार होय तेने कहिये आजीव अथवा आजीविका ते पांच प्रकारे छे — जातिविषय, कुलविषय, गणविषय, कर्मविषय तथा शिल्पविषय ए प्रत्येक रुनी बबे प्रकारे छे —सूचनाथी तथा असूचनाथी तत्र सूचनाथी ते वचन [illegible] कथन अने असूचनाथी ते स्पष्ट वचने करी कथन एम जाणवु तत्र [illegible] पोतानी जाति प्रगट करवाथी आजीविका करे तेने जाति उपजीवन कहेछे जेम के, कोई भिक्षाने अर्थे विचरतो ब्राह्मणना गृहनेविषे जाय, त्यां ब्राह्मणना पुत्रो सम्यक् होमादि क्रिया करी रह्या हता ते जोईने तेना पितानी पासे स्वजाति प्रगट करवाने अर्थे बोले, यथा समिधि मंत्र, आहुति स्थान, याग, काल तथा घोषादि आश्रित सम्यक् अथवा असम्यक् क्रिया प्रमुख होय ते तत्र पीपलादिकनी काईक तेनी शाखाओ प्रमुखना कटकाने समिधि कहिये, प्रणवादिक वर्णपद्धतिवाळा मंत्र कहेवाय छे, अग्निनेविषे घृत नाखवु तेने आहुति कहेछे उत्कट आदिक स्थान होय छे; अश्वमेधादिक यज्ञ योनापने, प्रभातादिक काल जाणवो, अने उदात्त तथा अनुदात्तादिक घोष कहेवाय छे ज्यां जे प्रमाणे योजना करवी जोये त्यां तेवी रीते करवी तेने सम्यक् क्रिया कहिये तत्प्रमाणे आ तमारो पुत्र सम्यक् क्रिया करवाथी कोई श्रोत्रियना पुत्रनी पठे जणाय छे यद्वा वेदादि शास्त्र पारग एवा कोई उपाध्यायनी पासेथी ए सम्यक् जाणे छे एवी रीते कहेवाथी ते ब्राह्मण कहे के हे साधु तुं [illegible] ब्राह्मण छे जे माटे आ होमादिक सर्व जाणे छे त वखत साधु कांई [illegible] तेना चुप थई रहे ए सूचनाए करी स्वजातिनु प्रगटन थयु अने असूचनाए करी जातिनु जीवन तो कोईना पूछवाथी अथवा न पूछवाथी आहारादिकने अर्थे पोतानी जातिने प्रगट करीने आजीविका करे जेम के, हुं ब्राह्मण छु इत्यादिक कहे एमां [illegible] दोषो छे —ते आप्रमाणे के, जो ते ब्राह्मण भाग [illegible] होय तो पोतानी जातिना पक्षपातथी [illegible] आहारादिक तेने माटे पकावीने तेने आपे त्यारे आधाकर्मी दोष लागे अने [illegible] साधु [illegible] होय तो आ पोताना ब्राह्मणपणाने मूकीने भ्रष्ट थयो [illegible] [illegible] करी पोताना गृहमांथी बाहार कहाडी मूके एवी रीते इत्यादिक [illegible] [illegible] करवी. ए पांचमो आजीविका दोष जाणवो

५ वनु धातु याचना करवाने अर्थे छे. जेम के, वनुते एटले याचे छे. प्रायेक री दायकने अभिमत जे श्रमणादिक तेउनेविषे पोतानुं भक्तपणुं बतावीने जे पिंमनी याचना करवी तेने वनीपक कहेछे. कोईएक निर्ग्रंथ, शाक्य, तापस, परिव्राजक, आजीविक. द्विज, प्राघूर्ण तथा श्वान, काक, अने शुक इत्यादिकनो भक्त जे कोई गृही. तेना गृहनेविषे भिक्षामाटे भमतो साधु पेसे, तेनी आगल अशनादिकना लाभना अर्थे निर्ग्रंथना गुण वर्णने करी पोते तेनो भक्त छे एम दर्शावे ते आ प्रमाणेः—ते साधु कदाचित् निर्ग्रंथना उपासकना घरनेविषे प्रवेश करे, त्यारे निर्ग्रंथोने आश्रीने बोले. जेम के, हे श्रावकतिलक, तारा आवा गुरुउ छेः— सातिशय ज्ञाने करी भूषित, बहुश्रुत, शुद्ध क्रियानुष्टान पालन परायण, जेउए चतुर धार्मिक जनोनां मन विशद सामाचारीना समाचरणे करी चमत्कार सहित करेलां छे; जेउ शिवनगर मार्गना सार्थवाह छे इत्यादि. तथा जो शाक्यना उपाशकना गृहमां प्रवेश करे, अने त्यां शाक्यो जमता बेठा होय त्यारे तेना उपाशकनी आगल ते शाक्योनी प्रशंसा करे, ते आम.— अहो ! महानुभाव शाक्य शिष्यो जे छे तेउ कहाडेला चित्रनी पठे निश्चल थया थका प्रशांत चित्तवृत्तिएकरी भोजन करेछे. महात्माउने एवी रीतेज भोजन करवुं उचित् छे. तेमज दयालु तथा दानशील इत्यादि कहे इत्यादि. एवी रीते तापस परिव्राजक, आजीवक तथा द्विजोने आश्रयेक रीने तेना गुण तथा दान वगेरेनी प्रशंसा करवाथी वनीपकपणुं जाणवुं. तथा अतिथिउना भक्तोनी आगल आम कहे — आहो प्रायेकरीने लोको पोताना परिचित, आश्रित अथवा उपकारीने दिये छे, पण रस्तामां चालतां थाकीने आवेला अतिथिने जे पूजे तेज दान जगतमां प्रधान कह्यु छे. तेमज श्वानोना भक्त पुरुषनी आगल कहे के, आ कांई कूतरा जाणवा नही, श्वाननी पठे देखाय छे खरा, पण कैलाश पर्वतथी आवीने यक्षज श्वानरूपे करी पृथ्वीनेविषे विचरे छे; माटे एउनी पूजा मोटा हितने अर्थे थाय छे. एवी रीते काकादिकना भक्तोनेविषे पण भावना करी लेवी ए प्रमाणे वनीपकपणुं करवाथी उत्पादन करेलुं जे पिंम तेने वनीपक पिंम कहिये. एनेविषे घणा दोषो छे;— जे कारण माटे धार्मिक अथवा अधार्मिक कोई पण पात्रने दीधेलुं दान निष्फल थतुं नथी. एम कहवाथी अपात्रदानने पात्रदाननी बरोबरी करी प्रशंसा करवाथी सम्यक्त्वातिचार थाय. केमके, कुपात्र जे शाक्यादिक तेउनी साक्षात्प्रशंसा थाय माटे. उक्तंचः— "दाणं न होइ अफलं, पत्तमपत्तेसु सन्नि जुञ्जंतं; इय भणिएविय दोसा, पसंसउ किंपुण अपत्ते"

एवी रीते शाक्यादिकनी प्रशंसा करवाथी लोकनेविषे मिथ्यात्वने स्थिर करयु एम थाय. ते आ प्रमाणे — लोक कहेके साधुओ पण एओनी प्रशंसा करे छे, ते कारणथी एओनो धर्म जरूर मान्य छे इति. तथा जो ते शाक्यादिकोनो भक्त सारो होय तो ते साधुए करेली प्रशंसाने जाणीने तेना योग्य आधाकर्मादिक समाचरे. वली तेनेविषे लुब्ध थइ कदाचित् शाक्यादिक व्रतने धारी लिये, तथा लोकोनेविषे कहेवाय के एओए जन्मांतरनेविषे दान दीधु नथी माटे आहारने अर्थे कृतरानीपठे लापडुआ करता रेने एवा अवर्णवाद थाय. अने जो गृहीने सारो न लागे तो तेने घेरमांथी कहाडी मूके. तथा मरेला मारवा निरतानी प्रशंसा करवाथी मृषावाद तथा प्राणातिपातादिक न अनुमोदन करनारो थाय. ए पांचमो वनीपक दोष जाणवो.

६ जे चिकित्सयु तेने कहिये चिकित्सा, ते रोग प्रतिकार एटले ते रोगनो प्रतिकार करवाना उपाय जाणवा. ते चिकित्सा बे प्रकारनी छे — एक सूक्ष्म ने बीजी बादर. तत्र सूक्ष्म औषधविधि वैद्यना ज्ञापने करी जाणवी. अने बादर पोते चिकित्सा करवाथी समजवी. तत्र कोइ ज्वरादिक रोगेकरी आक्रांत थएला गृहस्थना घरने विषे साधु भिक्षाने अर्थे प्रवेश करे, तेने जोइने पेलो गृहस्थ पूछे हे भगवन्, आ मारी व्याधिना प्रतिकार कांइ जाणो छो? त्यारे ते साधु कहे के, हे श्रावक, जेवा तने रोग थया छे तेवो मने पण एक वखत थयो हतो ते अमुक औषधे करी मने उपशम थया एवी रीते अज्ञानी रोगी गृहस्थने औषधना करवानो अभिप्राय उत्पादन करीने औषधनी सूचना करे. अथवा रोगीए चिकित्सा पूछया थकां कहे के शुं हुं वैद्य छुं के जेथी रोगना प्रतिकार जाणु! एवु कहेवाथी रोगी ते जाणीने वैद्यना उपाय पूछे तेने सूचना करे, तेने सूक्ष्म चिकित्सा कहिये. अने ज्यारे पोते वैद्य बनीने साक्षात वमन विरेचन, तथा क्वाथादिक करे अथवा करावे तेने बादर चिकित्सा कहिये. एवी रीते उपकारी थयेला गृहस्थ मने भिक्षा आपशे एम जाणी चिकित्सा करे, ते वृद्धि पामे एम यतिने करवु उचित नथी केमके, ए दोषना प्रसंग थाय छे केमके, चिकित्सा करवाना समये कदापि पीडा वधारे. वली कदनादि पाप व्यापार करवाथी असंयम थाय तथा ते गृहस्थ पाछला तापना रोगानी पठे प्रगुणी थयाथी अनेक जीवोनी घात करे. तथा जो दैवयोगे साधुए करेला चिकित्सा निष्फल थाय तो अधिक पाप थाय तो तेना पुत्रादिक कोपायमान थइने

राजकुलादिकनेविषे रंधे त्यारें लोक कहे के आहारादिकना लालचु साधु आम आम वैद्यकादिककरेछे, एम प्रवचननुं मलिनपणुं थाय. ए छठो चिकित्सा दोष जाणवो.

७ क्रोध एटले कोप; तेनो हेतुक जे पिंम तेने क्रोधपिंम कहिये. ते आवी रीते कोईएक साधुसंबंधी उच्चाटन मारणादिक विद्या प्रभाव, शाप दानादिक तप प्रभाव, तथा सहस्र योध्धादिकनुं बल; राजकुलनेविषे वल्लभपणुं; जाणीने अथवा शापदाने करीने कोईने मारणादि अनर्थरूप क्रोधना फलने साक्षात् देखीने भय पामी गृहस्थ जे कांई तेने आपे तेने कहिये क्रोध पिंम. अथवा कोईए बीजा ब्राह्मणादिकोने आप्युं अने साधुए याचना करी छतां पण तेने न मल्याथी ते कोप करे, ते जोई साधुनो पोतानी उपर कोप थाय, ते सारुं न कहेवाय. एम जाणीने जे आपे तेने क्रोध पिंम कहिये. अही सर्व पिंमनुं, उत्पादन करवाने अर्थे कोपज मुख्य कारण दीठामां आवे छे, अने विद्या तथा तप प्रमुख तो तेना सहकारी कारणो छे आ लक्षण विद्यापिंमादिके करी सहित छतां तेने एकठुं समजवुं नही केमके, तेउनां लक्षणो जुदां होयछे. ए क्रोध पिंम दोष सातमो जाणवो.

८ मान एटले गर्व तेनो हेतु जे पिंम तेने कहिये मान पिंम. एनो अर्थ आ छे.– कोई एक यतिने केटलाएक साधुउ कहे के. तुं अमने लब्धिमान जाण्यामां आवेने माटे आ अमुक अमुक अमने खावाने आप. इत्यादिक वचनेकरी तेने उत्तेजन आपीने वली कहे के, ताराथी शुं थवानुं छे! कांई पण सिध्धि थवानी नथी' एवुं अपमान थयाथी ते गर्वकरी आंधलो थईजाय; अथवा पोतानी लब्धि प्रशंसादिक अपार विख्यातीने पामेली सांभली जे जे ठेकाणे हुं जाउं ते ते ठेकाणे सर्व मने प्राप्त थाय छे, तेमज जन प्रशंसा पण करे छे. एवी रीते जेना मनमां अभिमाननी वृध्धि थई होय, एवो साधु कोईएक गृहीनी पासे जईने ते गृहीने तेवां तेवां वचने करी दाननेविषे अभिमान दीपन करे के, जोप तेना कलत्रादिकनी दान देवानी इच्छा न छतां पण अशनादिक आपे तेने आठमो मानपिंम कहे छे.

९ माया ते परवंचनात्मिक बुध्धि जाणवी. तेणेकरी कोई साधु मंत्र योगादि उपायमां कुशल थईने पोताना रूपनुं परावर्त्तनादिक करीने जे मोदकादिने पेदा करे तेने मायापिंम कहिये. ए माया पिंम रूप नवमो दोष थयो.

१० लोभेकरी गृहस्थनी पासेथी जे ग्रहण करवुं तेने लोभ पिंम कहिये. अही आवी भावना करवी.– कोईएक साधु, आजे हुं अमुक सिंह केसर मोदकादिक ग्रहण करीश. एवी बुध्धिए करी बीजुं वाल तथा चणादिक मलतु छतां पण ते

गृहण न करे, किंतु तेनीज इछा करे, तेने लोनपिंम कहिये अथवा घूरे ते
छिना अनावे पण यथा नावे मलेलु घणु लापशी आदिक नोजन सारु ठे
करीने जे गृहण करे तेने लोन पिंम कहिये यद्दिवा दूधादिक मल्युंठतां हवे
क्यांक खांम तथा शाकर प्रमुख मले तो सारु थाय एवो अध्यवसाय करीने फ
तां जे खांमप्रमुख मली जाय तेने लोन पिंम कहेले ए दशमो लोन दोष थयो

११ सस्तव बे प्रकारनो ठे – वचन सस्तव तथा सबधिसस्तव तत्र वचन ए
टले श्लाघा तद्रूपपणे जे सस्तव तेने वचन सस्तव कहिये अने सबधी ते माति
त्रादिक तथा ससरादिक तद्रूपपणे जे सस्तव तेने सबधि सस्तवकहेले ते एकेक द्वि
ध ठे, पूर्वसंस्तव तथा पश्चात्सस्तव, तत्र देवानु प्राप्त न थयु ठतां पूर्वेज दातारना गु
णोनु जे वर्णन करवु ते पूर्व सस्तव कहेले अने देवानु प्राप्त थया पठी जे दातारना
गुणोनु वर्णन करवु तेने पश्चात् सस्तव कहेले अही आवी नावना करवी –कोईएक
साधु निक्षाने माटे अटन करतां कोईएक गृहनेविषे किंचित् ईश्वर दातारने जोईने
दान लीधाथी पूर्वेज सत्य अथवा औदार्यादिक गुणोएकरी ते गृहस्थनो जे सस्तव क
रे जेम के, अहो दानपति, अमे जे प्रथम वात शांनली हती ते अमे प्रत्यक्ष आने
जोइये ठैये तथा अही तही विचरनारा जे अमे तेने एवा औदार्यादि गुणो बीना कां
ईनेविषे पण दीठामा अथवा शांनल्यामा आव्या नथी तथा तमे धन्य ठो के, जे
नां आवा गुणो सर्वत्र अस्खलित सर्व दिग्वलयमां व्यापी रह्या ठता प्रसारने पा
मी रह्या ठे एवी रीते पूर्व सस्तव जाणवो तथा जे गृहस्थे दान दीधा पठी तेनी
स्तुति करे जेम के, तमारा दर्शने करी आजे अमारा लोचन तथा मन शीतल
थयां ठे, एमा काई अद्भुतता नथी, केम के, दातार अथवा गुणवान दीठाथी को
ण आनदवान न थाय' एने पश्चात् सस्तव कहे ठे ए बन्ने रूपवाला सस्तवोने
विषे माया, मृषावाद, असयतानुमोदनादिक दोष उत्पन्न थायठे तथा माता
पितादिरूप पण जे सस्तव एटले परिचय तेने पूर्वसबधी सस्तव कहिये केम
, मातादिकनो पोताथी पूर्वकालनेविषे नाव होय ठे माटे अने जे सासू स
सरादिरूपपणे सस्तव तेने पश्चात् सबधि सस्तव कहेले केम के ससरादिक
पोतानी पाठल नाव होय ठे तत्र कोई साधु निक्षाने अर्थे कोई एक गृह
विषे प्रवेश करे, अने आहारने माटे लंपट पणे पोतानु वय तथा परनु वय
गीने तेनीसाथे तदनुरूप सबधनी घटना करे, जेम के, ...
होय, अने पोते मध्यम वयवालो ...

पठे जोईने मातृस्थानेकरी आंखमांथी थोडांएक आंसु पाडे. ते जोईने ते पूठवा ला गे के. महाराज. अधीरा केम देखाओ ठो? त्यारे ते साधु कहे के. मारी माता आपना जेवीज हती अने जो ते मध्यम वय वाली होय तो आवी मारी वेन हती, तेमज वयेकरी जो बाल होय तो आवी मारी ठोकरी हती इत्यादिक चापण करे. ए प्रमाणे पश्चात् संस्तवनेविषे नावना करवी. एनेविषे पण घणा दोषो ठे.—जेम के, जो ते गृहस्थ सारो होय तो साधु प्रतिबंध सहित थाय, प्रतिबंध थयाथी आधा कर्मादिक करीने तेने आहार आपे. अने जो ते गृहस्थ खराब होय तो आ अमने पोतानां कपटि प्राये जननिआदिक कल्पना करी ठगवानी युक्ति करे ठे. एवु चिंतवन करीने पोताना गृहमांथी बहार कहाडी मूकवा प्रमुख अपमान करे; तथा अधीरो थईने आंखोमांथी आंशु कहाडयाथी आ मायावी ठे, माटे एवी रीते अमने दया आणवा सारुं चालाई करे ठे एम तेनी निंदा थाय. तथा मारी आवी माता ह ती एम कह्याथी ते बाईनो पुत्र पूर्वेज अचानक मरण पामेलो होय तेनी स्मृति थई ते साधुनी ऊपर एवो नाव उत्पन्न थाय के, मारा मुवेला पुत्रना स्थाने आ नेज हुं पुत्र मानी लईश, एवी बुद्धिएकरी तेनी शुश्रूषा तथा दान करे. अने तमा रा जेवी मारी सासू हती एम कह्याथी ते जो खराब होय तो पोतानी विधवा अ थवा कुरूपा ठोकरी दैवयोगे वेरेली ठतां तेने आपे इत्यादिक दोषो ठे, माटे सं स्तव पिंम यतिए कल्पवो नही ए अग्यारमो संस्तव दोष जाणवो.

१२–१३ हवे विद्या ने मंत्र ए बे दोषो साथे कहेठे:– तत्र विद्या ते प्रज्ञप्ति आदि स्त्री रूप देवता अधिष्ठित तथा जप ने होमेकरी साध्य अथवा अक्षरपद्ध ति पुरुषरूप देवता धिष्ठित पाठ मात्र सिद्धि जाणवी; अने अक्षरविशेष पद्ध ति ते मंत्र जाणिये. एउना व्यापारेकरी जे पिंम नुं उपार्जन करवुं तेने विद्यापिं म अने मंत्रपिंम कहिये. एना दोष आ प्रमाणे ठे.– जे विद्याएकरि अनिमंत्रित थयो थको दान दिये तेने कोई बीजो विद्यावालो जुवे तेने महाद्वेष उत्पन्न थाय अथ वा कोई बीजो पोतानो पक्षपाती तेवी विद्यावालो होय ते द्वेषमां आवीने प्रतिविद्या येकरी स्तनन, उच्चाटन, तथा मारणादि करे. तथा विद्यादिकेकरी बीजानो द्रोह करवारूपे पोतानुं जीवन करनारा आ मूर्खो ठे एवी लोकोमां निंदा थाय तथा एउ जादूकरा ठे एम जाणीने राजकुलनेविषे गृहण, आकर्षण, वेष परित्याजन कदर्थन तथा मारणादिक करे. एम विद्या तथा मंत्र ए बे दोषो साथे जाणी लेवा.

१४–१५ हवे चूर्ण अने योग ए बे दोषो साथे कहे ठे.—तत्र नयननेविषे अंज

नादिक चूर्ण अने तेनु अतर्धानादिक फल जाणवु अने पाद प्रलेपनादि यो
सौनाग तथा दौर्नाग्य करनारो जाणवो एउंना व्यापारे करी जे पिम्नु उपा
करवु, तेने चूर्ण पिम्न तथा योगपिम्न कहिये एना पूर्वनी पठेज दोषो जाणीने

आशका – चूर्ण अने योग ए बन्ने क्षोद एटले नूकारूपे होवाथी तेउंनो
स्पर विशेष शु छे के जेथकी एउंने जुदा कह्या

समाधान – ए तारु बोलवु यद्यपि साचु छे, तथापि कायनो बहिर उपयोगी
चूर्ण छे, अने बहिर तथा अतर उपयोगी योग छे ते वली अभ्यवहार्य तथा
आहार्य ए नेदेकरी बे प्रकार थाय छे तत्र जल पानादिके करी अभ्यवहार्य तथा
पादलेपादिके करी आहार्य जाणवो ते माटे ए निन्न छे ए विशेष जाणवो

१६ ए पाठेज कही आव्या जे दोषो तेउंमानो शोलमो दोष मूलकर्म छे ते
अति गहन नवरूप वननु मूल कारण छे प्ररोहनो हेतु कर्म ते सावद्य क्रिया
जाणवी तेनो मूल तेनो जे कर्म तेने मूलकर्म कहिये तत्रगर्नस्तंनन, गर्नाधान,
गर्नपात, क्षतयोनित्व करण तथा अक्षत योनित्व करण, प्रमुखवडे उपार्जन करे
लो जे पिम्न तेने मूल कर्मपिम्न कहिये ए साधुने योग्य नथी केम के, एथी प्रद्वे
ष, प्रवचननी मलिनता, तथा जीव विघातादिक अनेक दोषोनो सनव छे
जेम के, गर्ननु स्तंनन अने शातन साधुए करवाथी प्रद्वेषनी उत्पत्ति थाय
तेथी शरीरनो पण विनाश थाय छे गर्नाधान तथा क्षतयोनित्व करण थकी या
वत् मैथुन प्रवृत्ति गर्नाधान थकी प्राये विपुत्रनी उत्पत्ति थएली दीगमां थावे छे
अने क्षतयोनित्व करणेकरी नोगांतरायादिक थाय ए शोलमो मूल कर्म दोष क
ह्यो ए प्रमाणे – शोल उत्पादन दोषो साधु थकी थाय ते कह्या

अवतरण –एषणाना दस दोषो कहेछे –मूल –संकिय मक्खिय निक्खित्त पिहिय
साहरिय दायगुमिस्से, अपरिणय लित्त छड्डिय, एसण दोसा दस हवंति ॥

अर्थ –संकित एटले आधाकर्मादि दोषे करी सनावित जाणवु इहा चतुर्नंगी छे प्र
हण शकित तथा नोजन शकित ए प्रथम नग, ग्रहण शकित तथा नोजन अशकित
बीजो नग, नोजननेविषे शकित तथा ग्रहणनेविषे अशकित, ए त्रीजो नग तथा
हणे पण अशक्ति अने नोजने पण अशकित ए चोथो नग जाणवा तेमाना आ
द्य त्रण नांगानेविषे शोल उद्गमना दोषो अने नव एषणाना दोष रूप पचीश दो
मध्ये जे दोषे करी शक्ति थाय ते दोषोने प्राप्त थायछे ते आ प्रमाणे – ज्या
आधाकर्मपणे शकित गृहण करे अथवा खाए त्यारे आधाकर्म दोषकरी ग्रा

य; अने ज्यारे औद्देशिक पणे शंकित ग्रहण करे अथवा खाए त्यारे औद्देशिक दोषे करी बंधाय इत्यादि: तथा चतुर्थ भंगनेविषे जे वर्त्तमान ते शुद्ध समजवुं तेनो कोई पण दोषेकरी संबंध थाय नही इत्यर्थः एउनो आवीरीते संभव छे. जेम के, कोई साधु स्वभावेकरी लज्जामान होय ते कोईना गृहनेविषे भिक्षाने अर्थे प्रवेश कस्यो छतां तेने प्रचुर भिक्षानी प्राप्ति थई, त्यारे पोताना मनमां शंका आणे पण लज्जावडे तेने पूछवाने शक्तिमान थाय नही पछी तेमज शंकित छतां गृहण करी अने सकित छताज खाए तेने प्रथम भंगवर्त्ति कहिये. तथा कोई साधु भिक्षाने अर्थे गयो छतां कोई गृहमांथी पूर्वनी पठे शंकित मनेकरी प्रचुर भिक्षाने लेईने पोतानी वसतिमां आवे अने भोजनना समये तेनुं मन भोलायमान थाय तेने कोई बीजो साधु होय के. जेणे ते साधुए जे घेरमांथी भिक्षा लीधी हती ते सारी रीते जाणेली हती ते तेनो अभिप्राय जाणीने तेने कहे के, हे साधु जे ठेकाणे तने विपुल भिक्षा मली तेना गृहनेविषे आजे महा प्रकरण वर्त्ते छे; अथवा तेने घेर क्यांकथी मोटुं लाभनक आव्युं छे. एवी रीते तेना वचन सांभलीने ए शुद्ध अन्न छे एवो निश्चय करीने शंका थकी रहित थयो थको भोजन करे तेने द्वितीय भंगवर्त्ति कहिये. तथा कोई साधु कोई गृहस्थना घेरमाथी नि शंकित प्रचुर भिक्षा गृहण करीने वसतिमां आव्यो, ते समये बीजो कोई साधु पोताना जेवी भिक्षा मागी लावीने गुरुनी आगल आलोवणा लेतां सांभलीने तेने शंका उत्पन्न थाय तेथी चितवन करे के, जेवी मने प्रचुर भिक्षानी प्राप्ति थई छे, तेवीज आ बीजा संघा टकना साधुउने मली छे. माटे ए निश्चेकरी आधाकर्मादि दोष दुष्ट छे एम जाण्या छतां खाए तेने तृतीय भंगवर्त्ती जाणवो. ए प्रथम शंकित दोष कह्यो.

२ म्रक्षित एटले पृथ्व्यादिकेकरी गुंमालेलुं जाणवुं. ते बे प्रकारे छे.– एक सचित्त म्रक्षित. तथा बीजुं अचित्त म्रक्षित. तेमा सचित्त म्रक्षित त्रण प्रकारनुं छे.– पृथ्वीकाय म्रक्षित. अपकाय म्रक्षित. तथा वनस्पतिकाय म्रक्षित. तत्र शुष्क अथवा आर्द्र सचित्त पृथ्वीकायेकरी देवानुं भाजन अथवा हस्त जो म्रक्षित थयुं होय त्यारे सचित्त पृथ्वीकाय म्रक्षित जाणवुं. बीजुं अपकाय म्रक्षित ते चार प्रकारनुं छे.– पुराकर्म, पश्चात्कर्म सस्निग्ध तथा उदकार्द्र. तत्र भक्तादिकना दाननी पूर्वे जे साधुने अर्थे कर्म एटले हस्त तथा मात्रादिकने पाणीवडे धोवानी जे क्रिया तेने पुराकर्म कहिये. जे भक्तादिकना दानथी पाछल कराय छे ते पश्चात् कर्म कहिये; थोडाएक लक्षण वाला जलेकरी खरडायला हस्तादिक ते सस्निग्ध: अने स्पष्ट उपलभ्यमान जे जलनां

धु सेवन करे तो बन्नेने कर्मबंध थाय तथा अहो आ साधुउ अति निरुष्टन
पासेथी पण निक्षा लिये ने एवी लोको निंदा करे अने जो अपवादेकरी त
त कच्चपित होय, मन्त्रे करीहत थएलो होय, कोईए तेने मीयन्ना तथा देवादि
सोगन दीधा होय के तने वेदादिकनु सेवन करवु नही. एवो नपुसक दिये ते
क्षा गृहण करवी तथा कपायमान कायवालो पण निक्षादान समयनेविप
वानु होय तेमानु केटलुएक नाखिदिये तथा साधुने आपता ढोलाई जाय अथ
ते देवानु पात्रक पडीजाय तो फूटि पडे अने ते निक्षानु नाजन जो दृढ हाय तय
पुत्रादिके तेने जाल्यो होय, ते निक्षा आपे तो गृहण करे एम ज्वरवडे पीडा
ताना हाथे निक्षा गृहण कस्याथी पण दोपोनी सन्नावना करवी केमके तेना
पागेथी निक्षा गृहण कस्याथी कदाचित् साधुने पण ज्वर सक्रमण थाय त्यारे
टोकोमा वात फेलाय के, अहो आ आहार लपट साधुउ आवा ज्वरेकरी पीडाता
गृहस्थनी पाशेथी पण निक्षा लिये ने अने ज्यारे तेने ताप कतरी गयु होय
त्यारे यत्नेकरीने कदाचित् निक्षा गृहण पण करवी तथा अधना हाथे निक्षा गृ
हण कस्याथी एवी वात फेलाय के, आ पेटना नीखारीउ जे निक्षा दई शके नही
एवा आधला पागेथी पण निक्षा लीधाविना मूकता नथी तथा अध होयते जाई न
शकवाने लीधे चालतां पगवडेनूमि आश्रित पटविधजीव निकायनी घात थाय तेना
काई स्थले पग लपसी जाय अने नूमि ऊपर पडो जाय तो तेम थयाथी निक्षा
दानने अर्थे लीधेली हाथमानी थाली प्रमुख पडी गयाथी ते फूटी जाय, अथवा
साधुना पात्रकथी वहार पडे त्यारे परिशाटि थाय एवा आ नवाने पण जो तेना
पुत्रादिके हाथे करी पकडयो होय, ने ते आपे त्यारे ते निक्षा ग्रहण करवी तेम
ज वाल ते जन्मथी आठ वर्षनी अदर वयवालो कहेवाय ने तेथी तेन प्रमाणनी
खबर होती नथी तेथी तेनी माता प्रमुख वेगा ठता पण अतिप्रचुर नि
क्षा आपे, तेथी तना मातिओ तथा बीजा जनोमा एवी वात फेलाय के आ
लुटारा साधुउ वालकानेज ठगी खाय ने. तेथी ते मातादिकना ते यतीनी
ऊपर द्वेष उत्पन्न थाय पण जो ते वालक कहे के, मारी माता प्रमुख काइ का
ने लीधे बाहार गयां ने अने मने कही गया ने के, जो कोई यती वारवा आव
तेने आपजे ते पण जो ते वालकने प्रथमथी देवाना साधारण स्वनाव हाय
ी याग्य रीते आपता होय तो तेनु दीधेलु गृहण करे कम क तथी तेनी मा
दिकना कलहनो अनाव होय ने माटे तथा जेणे मदिरादिक पीधु हाय त

ने मत्त कहेछे. ते तेवा आवेशे भिक्षा देतां कदाचित् उन्मत्त पणे साधुने आवीने वलगी पडे तो ते भोजन वधुं वीखराई जाय. अने कदाचित् सारी रीते भिक्षा आपे ने ते साधु लईलिये तेने बीजा जन जुवेतो धंचना करे के, आ साधुउ पीधे लानी पाशेथी भिक्षा लिये छे ते जरूर तेनी लाल वगैरे वडे खरमायली होवी जोईये तेथी ए अशुचि छे. तथा मदोन्मत्त वगेरनी भिक्षा लेता पण चूकता नथी ए शुं ए उने योग्य छे! अथवा कोई मत्त पुरुष मदनीविव्हलताएकरी सामे आवी कहे के हे मुंमा; तुं केम अहीं आव्यो छे? एम कहीने तेने मारे अथवा तेनो घात पण करी नाखे. तथा उन्मत्तनी पाशेथी भिक्षा लीधाथी तेना आप्त वगेरे बीजा गृही होय ते तेनी निर्भर्त्सना वगेरे करे इत्यादिक दोषोनी भावना करवी ते पण जो मत्त पुरुष भद्रक होय अने मद्य प्राशन कर्युं छतां तेना निशानुं तेने लक्ष पण न होय अने ते गाममां बीजो कोई सागारिक एटले श्रावक न होय तो तेनी पाशेथी भिक्षा लेवी. अन्यथा न लेवी. वली उन्मत्त पण जो भद्रक तथा शुचि होय तो कल्पवा योग्य छे. तथा जे छिन्नकर एटले जेना हाथ न होय ते मूत्र तथा उत्सर्गादिक कर्या पछी जल शौचादि बराबर करी शके नही, तेणे भिक्षा दीधाथी लोको निंदा करे जे हस्तना अभावे भिक्षा दिये तेमांनी केटलीएक कदाचित् नीचे पडी जाय त्यारे षट्जीवनी विराधना थाय. तथा छिन्नचरण एटले जेना पग न होय तेणे भिक्षा दीधाथी पण एटलाज दोषो जाणवा. केमके पादना अभावे ते जेम तेम चालता पडी जाय तो भूमिनेविषे आश्रित पिपीलिका वगैरे प्राणीउनो घात थाय तेमां छिन्न कर पण जो बीजा सागारिकना अभावे भिक्षा आपे तो यत्ने करी लेवी अने छिन्नचरण वालो पण जो लाकडी प्रमुख ना आधारे हलवे हलवे चाली आवे ते पण बीजो कोई सागारी देनार न होय तो तेनी पाशेथी लेवुं तथा गलकुष्ठ एटले जेनुं कोढे करी शरीर गली गयुं होय, ते भिक्षा आपतां तेनो श्वास तथा त्वक्ना संस्पर्शे करी तथा तेना आंगमांथी श्रवता रोग तथा रुधिरादिके करी साधुने पण कदाचित् कोढनो संभव थाय, ते पण जो मंमलप्रसूतिरूप कुष्टाकीर्ण काय होय अने त्यां बीजा श्रावकनो अभाव होय तो तेनी पाशेथी भिक्षा लेवी पण बीजा कुष्टीनी पाशेथी भिक्षा लेवी नही शेष कुष्टि जो सागारिक होय तो पण तेनी शामे जोवुं नही. अने मंमल एटले वृत्ताकार खराब न लागे एवी उत्पन्न थएली होय छे माटे तेने करीने नखेकरी विदारण कर्या छतां पण चेतनाने संवेदन थाय नही. तथा हाथमां नाखवानी बेडीरूप बंधनेकरी हस्त बंधायला छता तथा पगमां ना

खवानी लोढानी वेडी वमे पग वधाएला ठतां दातरी निक्षा आपे तो तेने देता
अति कष्ट थायठे तथा मूत्र अने उत्सर्गादिकनेविषे तेठनाथी शौच थायनही मा
टे तेनी पाशेथी निक्षा ग्रहण करवाथी लोकोमा जुगुप्सा एटले निंदा थाय ले
म के, आ साधुठ पोते पण अशुचि ठे माटेज आवा अशुचि वगैवान माणस
नी पाशेथी पण निक्षा लीधावना चूकता नथी अने पगेकरी बंधायला ठता तं
अही तही पीडा वगर फरी शकतो होय, तो तेना पाशेथी निक्षा लेवी थाय ने
अने वीजो जे अही तही फरी न शकतो होय ते बेठेला ठता निक्षा दिये तेनी
पाशेथी पण जो वीजो कोई सागारिक त्या विद्यमान न होय तो निक्षा लेवी अने ने
ना हाथ बंधायला होय ते तो निक्षा आपीज न शके तेथी ते तो निषेधज ठे तथा
पाडुका एटले काष्ट मय उपानह तेना उपर आरूढ ठता निक्षा देवाने आवता क
दाचित् पग खसी जाय तो ते पडी जाय माटे न लेवी तो पण पाडुका ऊपर
चढेलो ठता अचलपणे स्थित होय तो तेना पाशेथी निक्षा लेवी तथा कखरीनां
चोखा खांमती होय तो तेनी पाशेथी निक्षा लेवी नही केम के कखरीमा नाखेना
शाल्यादिक वीजोनो संघट्टादि करे ठे ते निक्षा दान आपवानी पूर्वे अथवा पठी
पाणीएकरी हाथ धोवा वगैरे पोतानी सामे करवाथी दोष थाय इत्यादिक वीना
पण दोष लागे अत्रे पण खामनारीए खामवाने अर्थे उत्पाटित मूशलने कांई
पण धान्यनु वीज लागु न होय, एटलामा साधु त्या आवे त्यारे जो ते यत्नं
करी वीना अर्थे रहित मुशल गृहना खुणा प्रमुखनेविषे राखीने निक्षा दिये तो
ते साधुए लेवी तथा शिलाएकरी तिल तथा आमलकादिक पीशनारी ते पी
शता ज्यारे निक्षा देवाने माटे कठे त्यारे पीसवाना तिलादि सक्त केटलाएक स
चित्त हाथना नखोमा वलगी रहेवानो संनव ठे ते निक्षा देवान माटे हस्तादिक
शटपाथी निक्षा दिधाथी तेना संबंध करी जीव विराधना थाय ते निक्षाना अवयवक
री खरडायला हस्तोने जलेकरी धोए त्यारे अपकायनी विराधना थाय त पीशवानु
बंध करी ते पीशनारी प्रासुक वस्तु आपे त्यारे साधुए लेवा योग्य ठे तथा चूनानी
ऊपर कमाई प्रमुखमा हुजाता चणा प्रमुखने हलावती होय ते जो निक्षा ग्वा ऊ
ठ म्यारे ते कढाईमा नाखेला गोधूम तथा चणा वगैरे वहार उडता तना कपडा
मा लागे तेथी ते वस्त्र ना प्रक्षेपादि दोष थाय अही पण जे सचित्त गोधूमादिक
कढाईमा नाखेला तेमांथी वाहार कढाडी लीधा होय, अने ते टाढा थइ गया
होय ते एवा के, हाथमा लीधाथी हाथ वले नही, एवा समयमा निक्षा कस्ता

साधु आवे त्यारे ऊठी करीने ते आपे ते साधुये लेवु तथा जे कातनारी होय एटले रुनी पोंणीमां सूत्र करती होय ते; तथा जे रुतनी चरखीमांथी रुतमांथी कपासीयानी कहाडनारी होय; तथा जे मूंकायला रुतने हाथोवडे वीखीने टूटुं टूटुं करती होय; तथा जे पीजणेकरी रुतने पीजती होय एटले अति टूटुं अथ वा कोमल करती होय; एटलीउंनी पासेथी भिक्षा लेवी नही केम के, एउंना हा थो रजकरी खरडायला होवाथी पाणीथी धुए तेथी अपकायनी विराधना थाय इत्यादिक दोषोनो संभव ने माटे तेमज कपासीया प्रमुखना सचित्तना संघट्टनो सं भव ने माटे. पण सूत्र कातता सूत्रने अतिशय श्वेतता लाववाने माटे शंखनुं चूर्ण लगाडयाथी पण हस्त खरडायला न होय तो तेनी दीधेली भिक्षा लेवी तेमज क पास वीखेरनारी तथा पींजनारी पश्चात हस्त धोवनादि क्रिया न करे तो तेउंनी पासेथी भिक्षा लेवी तथा दलनारी एटले जे घरंटीए करी गोधूमादिकने पीसी लो ट करती होय. ते भिक्षा देवाने ऊठीने हाथ धुवे तेथी अपकायनी विराधना था य माटे तेनी पासेथी भिक्षा न लेवी. पण सचित्त मुद्गादिक दलाववाना सुधां ते द लनारी घरटीने मूकीने छूटी थाय एटलामा साधु भिक्षा मागवा आवे अथवा अ चेतन मुद्गादिक दलती होय अने भिक्षा आपे तो साधुए लेवुं. तथा विलोवनारी ते द धिप्रमुख मथनारी, ज्यारे ते दधि प्रमुख वडे खरडायली छतां मथती होय, त्यारे ते वलगेलो दधि प्रमुखथी हाथ जेवायला छतां भिक्षा दिये तेथी त्रसजीवोनी विराधना थाय अत्रे पण वेदयी संसक्त दधि प्रमुख मथती होय त्यारे तेना हाथे भिक्षा साधु न कल्पे. तथा जमवा बेठेली दात्री दानने अर्थे आचमन करे एटले पाणी पिये तेम करवाथी उदकनी विराधना थाय, अने जो आचमन न करे तो लोको मां जुगुप्सा थाय. उक्तंच'—'छक्काय दयावतो, विसंजउ दुल्लहं कुणइ बोहिं; आहारे नीहारे दुगंछिए पिंम गहणाय' तथा आपन्नसत्वा एटले गर्भवाली स्त्रीनी पासेथी भिक्षा लेवी नही. केम के, ते भिक्षादानार्थे ऊंची थईने भिक्षा आपी ने पाछी आ सन ऊपर आवे त्यां सुधी गर्भने बाधा थवानो संभव छे. अहीं स्थविर कल्पि कने यावत् आठ माससुधी कल्पे छे, अने पूरा मासे नथी कल्पता. वली पूरामा से पण जो ऊंचा भवनादिकनेविषे सम्यक् प्रकारे स्वभावे स्थित छतां त्यांथी दिये तो ग्रहण करवुं. तथा बालवत्सा एटले बालकोनी माता होय ते बालकने भू मि ऊपर अथवा मांचि प्रमुखनी ऊपर नाखीने जो दिये तो ते बालकने मार्जार तथा सारमेयादिक शकुलाना बालकनी पठे मांसना कटका करी नाखे तो ते नाश

ने पामे तथा आहार करी खरडायला हाथो सूकाई गयाथी कर्कश था
माटे भिक्षा दईने दात्री तेवाज हाथे बालकने गृहण करे तेनु कोमल श
थाथी तेने पीडा थाय पण जे बालक आहारनाहाथो लागाथी अथवा भूमि
क्याथी रडे नही, तेनी माताना हाथथी भिक्षा कल्पवा योग्य छे अने तेनाहू
नि कल्पिक आहार गृहण करे छे ते प्राये ते बालक शरीरे मोटो होय, ते
मार्जार प्रमुख करडी खावानो संभव न होय माटे अने जे भगवत जिनक
तेता निरपवादने माटे सूत्रना बलेकरी गर्भादानादि जाणी प्रथमथीज आपन्न
वात्सल्यने सर्वथा भोजनने अर्थे परिहरे तथा जेथी षट्कायनो सघट्ट थाय ए
हस्तपादादि शरीरना अवयवोने फरशे तेथी सजीव लवण, उदक, अग्नि, वायु, पृ
नस्ति बीज पूर फलादि मत्स्यादि हस्त स्थाने होय, स्थि दार्थिक, दूर्वा पल्लवमा
का, शतपत्रिका प्रमुख पुष्प जेने शिरस्थाने होय मालती मालादिक उरस्थाने होय
जपा कुसुमादिक आभरण कर्णस्थाने होय, पहेरेला वस्त्रोना अंतरनेविषे धारण
करेला सरसवृत तांबूल पत्रादिक कटिस्थानेविषे सचित्त जलकणादिक पगमां
वलगेला होय, इत्यादिक धारण करीने जो दात्री दिये तो ते भिक्षा यतिने न कल्पे
मे छे तत्र कुश्यादिकेकरी भूमि खोदतो थको पृथ्वी कायनी विराधना, जे का
मज्जन करता, वस्त्र धोतो तथा वृक्षने पाणी पावा प्रमुखे करी मज्जन करतो प
का अपकायनो विराधना, जे अग्निना कणनु मीलन करतो थका अग्निकायनी
विराधना, जे चूलामां अग्निने फूंकवाथी सचित्त वायुवडे भरायली रमण प्रमुख
यही तहां फेंकवायो वायुकायनो विराधना, अने केली प्रमुख छेदनेकरी वनस्पतिकाय
नी विराधना, अने माचा प्रमुखमाथी माकण प्रमुखने कहाडी नाखवा त्रसकाय
नी ज विराधना करता होय तेनी पासेथी यतिये भिक्षा लेवी नही तथा ज्यां स
प्रत्यपाय भवात्यमान अपाय एटले अल्हित फल थवानी कारण भवत उपाधिना
योग होय ते स्थले भिक्षा लेवी नही ते अपाय त्रण प्रकारना छे –तिर्यक ऊर्ध्व,
तथा अध तेमां तिर्यग् गाई प्रमुख वडे जाणवा, ऊर्ध्व उत्तरंग ते कापेला काष्टादिकवड
तथा अध ते सर्पने कंटकादिके करी जाणिये ए त्रण प्रकारना अपाय अन ए
थी जे बीजा बीजा अपाय होय तदेनी बुद्धिनेविष संभावना करीने पछी भिक्षा
ग्रहण करवी. अहीं विशेष एम समजवु के, ज्यां षट्कायना सघट्ट थता होय तेउ
ना विनाश थता होय, अने सप्रत्यपायना अपवाद न होय त्यां सर्वथा भिक्षा न

कल्पवी. बीजा अपवादो जे देखाडेला छे ते जाणवा. एवा बीजा पण देनारना दोषो शास्त्रांतरनेविषे परिजावना करीने परिहरवा ए छगो दायक दोष जाणवो.

७ उन्मिश्र एटले सचित्तनी साथे जे मळेलुं होय ते. कोईएक गृहस्थने घर यति वोरवा आव्यो छतां तेनी पाशे आहार तो एकज वस्तु होय ते पण थोडी होय ते केम अपाय एवी लज्जा थाय अने बीजी देवानी वस्तु लेवा जतां वार लागे. देवानी तो घणी उत्सुकता होय, त्यारे एक पाशेनी बीजी सचित्त वस्तु जोईने धारे के आ चीज जो आमां मेलवीये तो सारी मीठी थशे एम जक्तिएकरी मेळवीने सचित्त जक्षणरूप जांगो करे. एम प्रत्यनीकपणे अथवा अनाजोगे करी साधु उचित थशे एवो विचार करीने मेलववानी वस्तु प्रमुख अकल्पनीयपणे मुनिने अनुचित थायछे; जेम के, करमर्दक, दाडिम, कुलिकादिके करी मेलवीने जे दिये तेने उन्मिश्र कहिये. अही कल्पनीय तथा अकल्पनीय ए बन्ने वस्तुओने एकठी ओ करीने जे आपे तेने उन्मिश्र कहिये. हवे संहरण अने उन्मिश्रनेविषे आटलो विशेष छेः— जे जाजननेविषे न देवानी वस्तु तेथी कोई बीजा स्थगनिकादिक प्रमुखमांथी हरणकरीने दिये तेने संहरण करीने दियेछे, तेम आ ठेकाणे नथी एटलो जेद छे. ए सातमो उन्मिश्र दोष जाणवो.

८ अपरिणत दोष एटले अप्राशुकीजूत अर्थात् परिणामने न पामेलुं आहार जाणवु. ते सामान्यपणे बे प्रकारे छे.— इव्यथी तथा जावथी ते वली एकेएक बे बे प्रकारे छे.— दातृविषय तथा गृहितृविषय तत्र परिणामने न पामेला जे पृथ्वीकायादिक इव्य तेस्वरूपे सजीव छे. अने जे जीवेकरी विप्रमुक्त एटले रहित थयुं छे तेने परिणमित जाणवुं. ते ज्यारे दातानी सत्तामां वर्त्ते छे त्यारे दातृविषय कहेवाय; अने ज्यारे गहितृनी सत्तानेविषे वर्त्ते त्यारे गृहितृविषये; जाणिये तथा कोई बे अथवा बहु जनोने साधारण देवा योग्य वस्तु होय, तेनेविषे तेओमांना कोईने एवो जाव थाय के, हुं आ वस्तु आपुं, तेने जावपरिणत कहे छे. बाकीनाने न जाणवु. माटे ए जावथी दातृविषय परिणत जाणवुं. एमां अने साधारण अनिसृष्टमां आटलो जेद छे.— दायकना परोक्षपणे दातृजाव परिणत वस्तुने साधारण अनिसृष्ट जाणीये, अने दायकनी समक्ष दातृजाव परिणतने जावथी दातृविषय परिणत कहेछे. तथा एक संघाटकरूप कोई बे साधुओ जिक्षाने अर्थे कोई गृहीना गृहमां गयां. तेणे जिक्षा देवा मांनी त्यारे तेमांना एक साधुए जाण्युं के आ मळेलुं अशनादि शुद्ध छे, एवुं मनमां परिणाम कर्युं अने बीजाना मनमां नेवी परिण

૧૦ [illegible] [illegible] તથા [illegible] પર્યાય કહ્યો છે. તે [illegible] ત્રણ પ્રકારનું છે.—
સચિત્ત, અચિત્ત તથા મિશ્ર. તે પણ કોઈ સમયે સચિત્તનાં, કોઈ સમયે અચિત્તનાં
અને કોઈ સમયે મિશ્રનાં [illegible] મિશ્રનો સચિત્તનિવિડ [illegible] છે. તે
[illegible] સચિત્ત તથા અચિત્ત [illegible] આધારભૂત તથા આધેયભૂ
[illegible] સચિત્ત તથા અચિત્ત [illegible] — , સચિત્તનિવિડ સચિત્ત; [illegible]
[illegible] કરી [illegible] થાય છે. તે આ પ્રમાણે — [illegible] અચિત્ત [illegible]
[illegible] સચિત્ત [illegible] તથા અચિત્તનિવિડ [illegible] છે;
[illegible] સચિત્ત [illegible] [illegible] [illegible] થાય છે [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] થાય છે [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] થાય.
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] કરવું. [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] તથા [illegible] [illegible] થાય [illegible] [illegible]
[illegible] થાય છે. [illegible] [illegible] તથા [illegible] [illegible] [illegible]. ॥ [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. ॥ [illegible] ॥ અર્થઃ—
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] કરે છે. તે ન
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] કરી [illegible] [illegible] [illegible]. તે
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] નથી;
[illegible] [illegible] [illegible] કરી [illegible] છે.— [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] નથી. [illegible] [illegible] કરી [illegible] [illegible] [illegible]
અને [illegible] નથી. [illegible] [illegible] નથી અને [illegible] નથી; તથા [illegible] [illegible]
[illegible] નથી. [illegible] [illegible] નથી અને [illegible] [illegible]. [illegible] થાય
[illegible] [illegible] તથા [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. ॥ [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] થાય છે. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] કરી
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible]
[illegible]— [illegible] [illegible] [illegible] તથા [illegible] [illegible]. તે [illegible]
છે પ્રકાર છે. તે આ પ્રમાણે:— [illegible] [illegible] તથા [illegible] [illegible]; તે [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] તે [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].
[illegible] [illegible]. અને [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] છે:— [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]. ॥ [illegible] ॥ અર્થઃ— [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]: ૪ [illegible] તથા [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

होवाथी ठेला त्रण कह्या छे ५ पूतिकर्म भक्तपानरूप आद्यु ७ मिश्रजात ते पा
षंडिमिश्र तथा साधुमिश्र, ते अतना बे बादर भेद जाणवा ८ प्राभृतिका आती
१० अध्यवपूरकना स्वगृह पाषंडिमिश्र तथा स्वगृह साधुमिश्र अतना बे भेद जा
णवा एटला उद्गम दोषो अविशोधि कोटिमा जाणवा, आ अविशोधि कोटिना
अवयवे करी शुष्क सिक्थादिके करी तथा तक्रादिकना लेपेकरी ने वल्ल चणकादि
ना अलेपेकरी मळेलु जे शुद्ध भक्त ते मूकी दईने पण जे अकृत कल्पत्रय पात्रमां
अशुद्ध भक्त जे पछी ग्रहण थाय छे ते पूतितर जाणी लेवी अने शेष उद्देशिक
नव प्रकारे छे तो पण विभागोद्देसिक जे छे ते उपकरण पूतिमिश्रना आदि भेदनी
स्थापना, सूक्ष्म प्राभृतिका, प्रादु करण, क्रीत, प्रामित्यक, परिवर्त्तित, अभ्याहृत, उद्भि
न्न, मालापहृत, आछेद्य अनिसृष्ट अने अध्यवपूरकना भेद एवारूपे अविशोधि
कोटि जाणवी जेनेविषे कहाडी लीधेलु शेष भक्त शुद्ध थाय छे, अथवा जेनेवि
षे कहाडी लीधाथी कल्पत्रय रहित पात्र पण शुद्ध थाय छे. तेनी विशोधि एवी जे
कोटीतेने कहिये विशोधिकोटि उक्तंच – उद्देसियम्मि नवगं, उवगरणे जंच पूइय
होई जावंतियमीसगयं, अज्झोयर एय पढम पय ॥१॥ परियट्टिए अभिहडे, उब्भिन्ने,
मालो हडे इय अछिज्जे, आणिसिट्टे पाउयरकीय पामिच्चे सुहुमाया हुडिया॥२॥ विय
हरियग पिमोय जो भाव डुविहो सव्वि एस रासी विसोहि कोडी मुणेयव्वो" अ
ही भिक्षाने अर्थे अटन करवा वालाए पूर्वे पात्रनेविषे शुद्ध भक्त ग्रहण करु हो
य, अने पछी तेज पात्रनेविषे कोई अनाभोगादिक कारणना वशे करी विशोधि
कोटिरूप दोषे करी दुष्ट भक्तनु ग्रहणथयु. त्यार पछी तेना जाणवामां आव्यु के,
आ में विशोधिकोटिरूप दोषे करी दुष्ट भक्तनु ग्रहण कर्यु अने जो ते विना नभी शके
तो ते सर्व विधिये करी परिष्टापन करे, अने जो न नभे तो जेटलु विशोधि को
टिरूप दोषे करी दुष्ट होय तेटलुज सम्यक् प्रकारे जाणी करीने तेना त्याग करे
अने जो वर्ण गंधादिकेकरी तुल्य होवाथी जुदु लखाई न आववाथी न जाणी श
कवाने लीधे मिश्रित थई जाय अथवा द्रव्येकरी तक्रादि होय तो तेनो सर्वथा वि
वेक होय छे तेथी तेनेविषे सर्व प्रकारे विचार करीने एवु जाणे के कांई सूक्ष्म
अवयवो आमा मळी गया हशे तो पण ते पात्रमां नही लीधेलानेविषे ग्रहण क
रनाराओ साधु भक्तने मूर्कीदीये केमके ते अविशोधि कोटि थाय छे माटे ॥७३८॥
हवे पांच समिति कहे छे – मूळ – इरिया भासा एसण, आयाणाईसु तहय
परिठ्वणा, सम्मजू उपविठा सा समई पचहा एव ॥ ७३९ ॥ अर्थ – जं इरि

ते ईर्या एटले गति जाणवी. भाषा ते भाषा. एषणा ते एषणा. आदीयते एट
ले ग्रहण करवुं ते आदान जाणवुं तेनी आदिने विषे निक्षेपादि क्रिया विशेष ते
तेने आदाननिक्षेप कहेवुं एटले ईर्या, भाषा, एषणा तथा आदानादिक जाणवी
तथा परिष्ठापन एटले त्याग करवुं. सम्यक् आगमानुसारे जे प्रवृत्ति एटले चेष्टा तेने
समिति कहे छे. ए पांच चेष्टाओनी नाम्नि एटले पारिभाषिक संज्ञा छे. ते माटे ई
र्या १ समिति २ भाषा समिति ३ एषणा समिति ४ आदान समिति अने (५) परि
ष्ठापना समिति एवी रीते एम स्वार्थे करी पांच प्रकारनी समिति जाणवी. तत्र त्रस
तथा स्थावररूप जे जीव जाल छे तेने अभयदाननी दीक्षा लीधी छे जेणे एवो
जे यति, ते आवश्यक प्रयोजने करी लोकना गमनथी अत्यंत भिन्न थयो होय
सूर्यनी किरणाए करी तपेलो होय. प्रासुक विविक्त एवा मार्गने विषे चालनारो सा
धु जंतुओनी रक्षाने निमित्ते तथा पोताना शरीरनी रक्षाने निमित्ते पोताना पगना
अग्रभागथी मांडीने साडात्रण हाथ प्रमाण क्षेत्र निरखीने साधु चाले तेने ईर्या एटले गति.
तेनी जे समिति तेने ईर्या समिति कहिये यदुक्तं – "पुरओ जुगमायाए, पेहमाणो
महिं चरे; वज्जंतो बीयहरियाइं, पाणेइ दगमट्टियं. ॥ १ ॥ उवाए विसमं खा
णुं, विज्जलं परिवज्जए; संकमेण न गच्छिज्जा, विज्जमाणे परक्कमे" ॥२॥ एवी रीते उ
पयोगे करी चालता यति थकी कोई पण प्राणिनो वध थई जाय तो तेने पाप लागे
नही यदाहु – "उच्चालयम्मि पाए, इरिया समियस्स संकमट्ठाए; वा वज्जिज्ज कु
लिंगी, मरिज्ज तं जोगमासज्ज; नहु तस्स तन्निमित्तो, बंधो सुहुमो वि देसिओ सम
ये; अणवज्जो उपओगेण, सव्व भावेणसो जम्हा" तथा – "जियदुव मरदुव
जीवो, अजयाचारस्स निच्छओ; हिंसा पयदस्स नत्थि बंधो, हिंसा मित्तेण समिदस्स"

२ वाक्यनी शुद्धिना अध्ययनने प्रतिपादन करनाराए सावद्य भाषाएटले
धूर्तारा, कामुक एटले कामी, क्रव्याद एटले राक्षस, चोर तथा चार्वाकादि
नास्तिक प्रमुखना जेवु बोलवानो निर्दंभ पण त्याग करीने सर्व जनोने सहेज सम
ज्यामा आवे अने सर्वने अभिमत एवुं भाषण करवो ते पण स्वल्प एटले थोडुं
भाषण करया छता तेथकी प्रयोजनने साधी शके. अने असंदिग्ध एटले जेमां सं
देह उत्पन्न न थाय एवुं जे बोलवु तेने भाषासमिति कहे छे.

३ गवेषण ग्रहण ग्रासेषणा ते दोषे करी अदूषित अन्नपानादिक रजोहरण त
था मुखवस्त्रिकादिक औधिक उपधि तथा शय्या, पीठफलक वस्त्र, पात्र, दंडादिक औ
पग्रहिक उपधिने शुद्ध रीतेजोईने तेनी जे गवेषणा करवी तेने एषणा समिति कहिये.

४ आसन, संस्तारक, पीठफलक, वस्त्र, पात्र तथा दंमकादिक चक्षुए करी
खी तथा प्रतिलेखना करीने सम्यक्उपयोग पूर्वक रजोहरणादि वमे पुजीने जे गृह
करवु अने जे निरखेली तथा प्रतिलेखन करेली नूमिनेविषे राखे तेने आदाननि
प समिति कहिये अनुपयुक्तनी प्रतिलेखना तो पूर्वे पण आदान तथा निक्षेप
विषे शुद्ध समिति न थाय यदवाचि – " पडिलेहण कुणतो, मिहो कह कुणइ
जणवय कहवा, दोइय पच्चरकाण, वाएइ सय पमिच्छइवा ॥ १ ॥ पुढवी आउक्का
ए, तेऊवाऊ वणस्सइ तसाण, पडिलेहणा पमत्तो उण्हपि विराहिउं नणिउं ॥ २॥
५ पुरीष एटले मल, प्रस्रवण एटले मूत्र, निष्ठीवन एटले मुखमाथी पडती ला
ल अथवा थूक, श्लेष्म एटले नाकमाथी नीकळतो सेटो अथवा लीट अने शरीर
ऊपरनो मल तथा अनुपयोगी वसन एटले वस्त्र, अन्न तथा पानादिकनो जे जुर
हित स्थमिलनेविषे उपयोग पूर्वक परित्याग करवु तेने परिष्ठापना समिति कहिये
ए पांच समिति थई ॥ ५७९ ॥

अवतरण – हवे बार नावनाउंनु प्रतिपादन करे छे – मूल – पढम मणिच्च
मसरण, ससारो एगयाय अन्नत्त , असुइत्त आसव संवरोय तह निज्जरा नवमी ॥१॥
लोग सहावो बोहिय, डुल्लह धम्मस्स साहगा अरिहा, एयाइ हुति बारस जहक्कम
नावणीयाउं ॥ ५८० ॥ अर्थ – प्रथमा अनित्य नावना, द्वितीया अशरण नावना,
तृतीया ससारनावना , चतुर्थी एकत्व नावना, पचमी अन्यत्व नावना, षष्ठी अ
शुचित्वनावना, सप्तमी आश्रव नावना, अष्टमी संवर नावना, नवमी निर्ज
रानावना, दशमी लोकस्वनावनावना, एकादशी बोधि डुर्लनत्व नावना, अने
बारमी धर्मकथकोऽर्हत्नावना ए बार नावना तेयथाक्रमे एटलेरात्र दिवस नाव
नीय एटले अन्यास करवा योग्य छे एउंनु किंचित् स्वरूप निरूपण करुछु

तत्र प्रथम अनित्य नावना स्वरूप – अनुष्टुब्वृत्तम् – यस्यते वज्रसारगात्रे
ष्यनित्यत्वरक्षसा, किंपुन कदलीगर्ननि सारान्नीहि देहिन ॥ १ ॥ अर्यावृत्तम्–
विषयसुख डुग्धमिव स्वादयति जनो बिडाल इव मुदित । नोत्पाटितलकुटमि
वोत्पश्यति यममहह कि कुर्मः ॥ २ ॥ अनुष्टुब्वृत्त – धराधरधुनीनीरपूरपारि
व वपु । जतूना जीवितं वातधूतध्वजपटोपम ॥ ३ ॥ लावण्य ललनानोकनो
चनांचलचचल । यौवन मत्तमातंगकर्णतालचलाचल ॥ ४ ॥ स्वाम्यं स्वप्नावली
साम्य, चपलाचपला श्रिय ॥ प्रेमद्वित्रिक्षणक्षेमस्थिरत्वं विमुख सुख ॥ ५ ॥ स
र्वेषामपि नावानां, नावयन्नित्यनित्यतां, प्राणप्रियेपि पुत्रादौ, विपन्नेऽपि न शाच

ति ॥६॥ सर्ववस्तुषु नित्यत्वग्रहत्रस्तस्तु मूढधीः । जीर्णतार्णकुटीरेपि, नष्टे रोदित्य हर्निशं. ॥ ७ ॥ ततस्तृष्णाविनाशेन, निर्ममत्वविधायिनीं । शुद्धधीर्भावयन्नित्यमि त्यनित्यत्वभावनां. ॥ ८ ॥ इति प्रथमा अनित्यत्व भावना.

अथ द्वितीया अशरणभावनाः— शिखरिणी वृत्तम्ः— पितुर्मातुर्भ्रातुस्तनयदयि तादेश्च पुरतः प्रभूताधिव्याधिव्रजनिगमिताः कर्मचरटैः॥ रटंतः क्षिप्यंते यममुख गुहांतस्तनुभृतो हहा कष्टं लोकः शरणरहितः स्थास्यति कथं ॥ १ ॥ शार्दूल विक्रीडितं वृत्तम्ः— ये जानंति विचित्रशास्त्रविसरं ये मंत्रतंत्रक्रियाप्रावीण्यं प्रथयं ति येच दधति ज्योतिःकलाकौशलं । तेपि प्रेतपतेरमुष्य सकलत्रैलोक्यविध्वंसनव्यग्र स्य प्रतिकारकर्मणि नहि प्रागल्भ्यमाबिभ्रति॥ २॥नानाशास्त्रपरिश्रमोद्भटभटैरावेष्टिताः शत्रवो गत्युद्दाममदांधसिंधुरशतैः केनाप्यगम्याः क्वचित् । शक्रःश्रीपतिचक्रिणोपि सहसा कीनाशदासैर्बलादाकृष्टा यमवेश्म यांति हह हा निस्त्राणता प्राणिनां ॥३॥ उद्दंडं ननु दंडसात्सुरगिरिं पृथ्वीं पृथुच्छत्रसाधे कर्तुं प्रभविष्णवः कृशमपि क्लेशं विना नात्मनः॥ निःसामान्यबलप्रपंचचतुरास्तीर्थंकरास्तेप्यहो नैवाशेषजनौघवस्मर मपाकर्तुं कृतांतः क्षमः ॥४॥ अनुष्टुब्वृत्तम्ः— कलत्रमित्रपुत्रादिस्नेहग्रहनिवृत्तये । प्रतिशुद्धमतिः कुर्यादशरण्यत्वभावनां ॥ ५ ॥ इत्यशरणभावना ॥

अथ संसारभावनाः— वृत्तम्ः— सुमतिरमतिः श्रीमानश्रीः सुखी सुखव र्जितः सुतनुरतनुः स्वाम्यस्वामीप्रियः स्फुटमप्रियः ॥ नृपतिरनृपः स्वर्गीतिर्यङ्नरोपि च नारकस्तदिति बहुधा नृत्यत्यस्मिन् भवी भवनाटके ॥ १ ॥ शार्दूलविक्रीडितंवृत्त म् ॥— बध्वा पापमनेककल्मषमहारंभादिभिः कारणैर्गत्वा नारकभूमिषूद्भटतमःसंघ ट्टनष्टाध्वसु । अंगच्छेदनभेदनप्रहणनक्लेशादिदुःखं महज्जीवो यद्भजते तदत्र गदितुं ब्रह्मापि जिह्माननः ॥ २ ॥ मायात्त्वादिनिबंधनैर्बहुविधैः प्राप्तस्तिरश्चां गतिं सिंह व्याघ्रमतंगजैणवृषभच्छागादिरूपस्पृशां । क्षुत्तृड्भावधबंधताडनरुजावाहादिदुःखं सदा यज्जीवः सहते न तत्कथयितुं केनाप्यहो शक्यते ! ॥ ३ ॥ खाद्याखाद्यविवेकशून्य मनसोनिर्ह्रीकृतालिंगिताः, सेव्यासेव्यविधौ समीकृतधियोनिःशूकतावल्लभा. । तत्रा नार्यनरानिरंतरमहारंभादिभिर्दुःसहं, क्लेशं संकलयंति कर्म च महादुःखप्रदं चिन्वते ॥ ४ ॥ मर्त्यो.क्षत्रियवाडवप्रभृतयो येप्यार्यदेशोद्भवा स्तेप्यज्ञानदरिद्रताव्यसनितादौ र्भाग्यरोगादिभिः । अन्यप्रेषणमानभंजनजनावज्ञादिभिश्चानिशं, दुःखं तद्विपदंति यत्कथयितुं शक्यं न कल्पैरपि ॥ ५ ॥ रंभागर्भतमः सुखी शिखिशिखावर्णैर्निरुद्धै रयः, सूचीभिः प्रतिरोमभेदितवपुस्तारुण्यपुण्यः पुमान् । यद्दुःखं लभते तदष्टगुणित

स्त्रीकुक्षिमध्यस्थितो सपद्येत तदप्यनंतगुणितं जन्मक्षणे प्राणिना ॥ ६ ॥ बाल्ये मूत्रपुरीषधूलिलुठनाज्ञानादिभिर्नैदिता, तारुण्ये विभवार्जनेष्टविरहानिष्टागमादिभि या । वृद्धत्वे तनुकम्पदृष्टयपटुता श्वासाद्यतुल्यात्मता, तत्का नाम दशास्ति सा सुख मिह प्राप्नोति यस्या जन ॥ ७ ॥ सम्यग्दर्शनपालनादिभिरपि प्राप्ते भवे त्रैदशे जीवा शोकविषादमत्सरतपस्त्वत्पार्द्धिकत्वादिभि । ईर्ष्याकाममदक्षुधाप्रभृतिभिश्चा रपतपीडार्दिता क्लेशेन क्षपयति दीनमनसोदीर्घं निज जीवितं ॥ ८ ॥ अनुष्टुवृत्तम् — इत्र गिरफलाथापि, भववैराग्यवीरुध । सुधावृष्टि सुधी कुर्यादेना ससार भावना ॥ ९ ॥ इति ससारभावना ॥

अथ चतुर्थ्येकत्वभावना — उपजातिवृत्तम् — उत्पद्यते जन्तुरिहैकएव, वि पद्यते चैकक एव दु खी कर्मार्जयत्येककएव चित्र मासेवते तत्फलमेकएव ॥ १ ॥ शार्दूलविक्रीडितम् — यज्जीवेन धन स्वय बहुविधै कष्टैरिहोपार्ज्यते, तत्सभूय कलत्रमित्रतनयभ्रात्रादिभिर्भुज्यते । तत्तत्कर्मवशाच्च नारकनरस्वर्वासितिर्यग्भवे ष्वेष दु खसहानि सहते दु खान्यसख्यान्यहो ॥ २ ॥ जीवो यस्य कृते भ्रमत्यनु दिग दैन्य समालम्बते, धर्माद्भ्रश्यति वञ्चयत्यतिहितान्यायादपक्रामति, देह सो पि महात्मना न पदमप्येक परस्मिन् भवे गच्छत्यस्य तत कथ वदत भो सा त्मपरमाराध्यते ॥ ३ ॥ इन्द्रवज्रावृत्तम् — स्वार्थैकनिष्ठस्वजन स्वदेहमुख्य त न सारमचिन्त्य सम्यक्, सर्वत्र कल्याणनिमित्तमेक, धर्म सहाय विदधीत धीमान् ॥ ४ ॥ इत्येकत्वभावना ॥

अथ पचमी अन्यत्वभावना — शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् — जीव कायमपि स्वा स्य यदहो ज्ञानात्मना यानि तद्भिन्नाऽस्मा अपुनापि केवल्हि कथा इत्यादिवस्तुत्रजे ॥ त स्मात्तिष्ठति यस्तु मज्जपर्जयोहति दमादिभिर्ध पुनाति धनादिभिश्च हरते तस्या साम्य श्रयेत् ॥ १ ॥ अनुष्टुब्वृत्तम् — अन्यत्वभावनामेव, य करोति महामति । तस्य सर्वस्वनाशेऽपि न शोकांशोपि जायते ॥ २ ॥ इत्यन्यत्वभावना ॥

अथ षष्ठ्यशुचित्वभावना — आर्यावृत्तम् — लवणाकारपदाया पतिता ला ण यथा भवतीह । शरीरे तया मना क्षुद्रमावशुचि सदा काय ॥ १ ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् — काय शोणितशुक्रमीलनभवो गर्भे जरावेष्टितो मात्रास्वादित खाद्यपेयरसत्रं वृद्धि क्रमात्प्रापित । श्लिष्यधातुसमाकुल कृमिरुग्गण्डूपदाद्य र्दैर्मलैश्च सुगंधिभि स्वचितया सर्वत्र वह्मन ॥ २ ॥ सुस्वादु सुगंधि स्वर्गात्निकोद्भूतात्मोदनशाकापेयादिकामृतावृतपुष्पगन्धयुताप्रादिक बुन्दर

सैव यत्र मलस्तान्नंपद्यते सर्वतस्तं कायं सकलाशुचिं शुचिमहो मोहांधिता मन्वते ॥ ३ ॥ अंग. कुंभशतैर्वपुर्भनुत्रहिमसुगंधा· शुचित्वं कियत् कालं लंन यथोत्तमं परिमलं कस्तूरिकाद्यैस्तथा ॥ विष्ठाकोष्टकमेतदंगकमहोमध्ये तु शौचं कथंकारं नेष्यथ लुब्रयिष्यत कथंकार च तल्लंारभं ॥ ४ ॥ दिव्यामोदसमृद्धिवासितदिशः श्रीखंमकस्तूरिकाकर्पूरागरुकुंकुमप्रभृतयोभावा यदाश्लेषतः । दौर्गंध्यं दधति क्षणेन मलतां चाविभ्रते सोप्यहो देह केश्चन मन्यते शुचितया वैधेयतां पश्यत ॥ ५ ॥ अनुष्टुब्वृत्तम्·— इत्याशौचं शरीरस्य, विभाव्य परमार्थतः । सुमतिर्ममतां तत्र, न कुर्वीत कदाचन. ॥ ६ ॥ इत्यशुचित्वभावना ॥

अथ सप्तम्याश्रवभावना.— अनुष्टुब्वृत्तम्.— मनोवचोवपुर्योगाः, कर्म येन शुभाऽशुभं ॥ भविनामाश्रवत्येते, प्रोक्तास्तेनाश्रवा जिनैः ॥ १ ॥ मैत्र्या सर्वेषु सत्वेषु. प्रमोदेन गुणाधिकः । मध्यस्थेनाविनीतेषु, कृपया दुःखितेषु च ॥ २ ॥ सततवासितं स्वांत कस्यचित् पुण्यशालिनः । वितनोति शुभं कर्म द्विचत्वारिंशदात्मकं ॥ ३ ॥ रौद्रार्त्तध्यानमिथ्यात्वकषायविपर्ययैर्मन. । आक्रांतमशुभं कर्म, विदधाति द्व्यशीतिधा ॥ ४ ॥ सर्वज्ञगुरुसिद्धांतसंघसद्गुणवर्णकम् । कृत हितं च वचनं, कर्म संचिनुते शुभं ॥ ५ ॥ श्रीसंघगुरुसर्वज्ञधर्मधार्मिकदूषकं । उन्मार्गदेशिवचनमशुभं कर्म पुष्यति ॥६॥ देवार्चनगुरूपास्तिसाधुविश्रामणादिकं । वितन्वति सुगुप्ता च, तनु वितनुते शुभं ॥ ७ ॥ मांसाशनसुरापानजंतुघातनचौरिकाः । परदारादिकुर्वाणम शुभं कुरुते वपुः ॥८॥ शार्दूलविक्रीडितंवृत्तम्:—एतामाश्रवभावनामविरतं योभावयेद्भावत स्तस्यानर्थपरंपरैकजनकाद्दुष्टाश्रवौघात्मनः।व्यावृत्त्या खिलदुःखदावजलदे निःश्रेयसशर्मावलीनिर्माणश्रमणे शुभाश्रवगणे नित्यं रति पुष्यति॥९॥इतिआश्रव भावना

अथ अष्टमी संवरभावनाः—अनुष्टुब्वृत्तमः—आश्रवाणां निरोधो यः, संवरः सप्रकीर्त्तितः । सर्वतोदेशतश्चेति, द्विधा सतु विभिद्यते ॥ १ ॥ अयोगिकेवलिष्वेव, सर्वतः संवरोमत· । देशतः पुनरेकद्विप्रभृत्याश्रवरोधिषु ॥ २ ॥ प्रत्येकमपि सद्वेधा द्रव्यभावविभेदत· । यत्कर्म पुद्गलादानमात्मन्याश्रवतोभवेत् ॥ ३ ॥ एतस्य सर्वदेशाभ्यां, छेदनं द्रव्यसंवर. । भवहेतुक्रियायास्तु त्यागोसौ भावसंवर· ॥ ४ ॥ मिथ्यात्वकषायादीनामाश्रवाणां मनीषिभि· । निरोधाय प्रयोक्तव्या उपाया· प्रतिपंथिनः ॥ ५ ॥ यथा.— मिथ्यात्वमार्त्तरौद्राख्यकुध्याने च सुधीर्जयेत् । दर्शनेनाकलंकेन शुभध्यानेन च क्रमात् ॥ ६ ॥ क्षांत्या क्रोधं मृदुत्वेन मानं मायां मृदुत्वतः । संतोषेण तथा लोभं; निरुंधीत महामतिः ॥ ७ ॥ शब्दादिविषयानिष्टानिष्टांश्च वि

पोपमान् । रागद्वेषप्रहाणेन, निराकुर्वीत कोविद. ॥ ८ ॥ यएतद्भावनामार्गीसंजाग्र्य ज्जते नर । एति स्वर्गापवर्गश्रीरवश्य तस्य वश्यता ॥ ए ॥ इति संवरजावना॥

अथ नवमी निर्जराजावना – अनुष्टुब्वृत्तम् – संसारहेतुजूताया, य क्षय क र्मसंतते । निर्जरा सा पुनर्द्वेधा, सकामाकामजेदत ॥ १ ॥ श्रमणेषु सकामा स्यादकामा शेषजन्तुषु । पाक स्वतउपायाच्च कर्मणा स्यायथाम्रवत् ॥ २ ॥ क र्मणां न क्षयोजूयादित्याशयवता सता । वितन्वतां तपस्यादि सकामा शमिना मता ॥ ३ ॥ एकेंद्रियादिजन्तूनां सज्ञानरहितात्मना । शीतोष्णवृष्टिदहनछेदजेदादि नि सदा ॥ ४ ॥ कष्टं वेदयमानाना, य शाटो कर्मणा जवेत् । अकामनिर्जरामेना मामनति मनीषिण ॥ ५ ॥ तप प्रनृतिनिर्वृद्धि, व्रजती निर्जरा यत. । ममत्व क र्मसंसार, हन्यात्ता जावयेत्तत ॥ ६ ॥ इति निर्जराजावना ॥

अथ दशमी लोकस्वजावजावना –आर्यावृत्तम् –वैशाखस्थानस्थित कटिस्थकर युगनराकृतिर्लोक । जवति इव्यै पूर्णस्थित्युत्पत्तिर्व्ययाक्रांति ॥ १ ॥ अनुष्टुब्वृत्त म् – ऊर्ध्वतिर्यगधोजेदे , सा त्रिधा जगदे जिनै । रुचकादष्टप्रदेशा मेरुमध्यव्य वस्थितात् ॥ २ ॥ नवयोजनशत्यूर्ध्वव्यधोजागेपि सा तथा । एतत्प्रमाणकात्ति र्यक् लोकश्चित्रपदार्थनृत् ॥ ३ ॥ ऊर्ध्वलोकस्तदुपरि सप्तरज्जुप्रमाणक । एतत्प्रमा णसयुक्तश्चाधोलोक प्रकीर्तित ॥ ४ ॥ रत्नप्रजा प्रजृतय , पृथिव्य सप्त वेष्टिता । घनादधिघनवाततनुवातै क्रमोघना ॥ ५ ॥ तृष्णाक्षुधावधाघातजेदनछेदनादि नि । दु खानि नारकास्तत्र, वेदयन्ति निरंतर ॥ ६ ॥ प्रथम पृथ्वीपिंमो यान नानां सहस्रक । अशीतिर्लक्षमेर च, तत्रोपरि सहस्रक ॥ ७ ॥ अधश्च मुक्त्वा पिंम स्य, शेषस्याप्यंतरे पुन । जवनाधिपदेवाना, जवनानि जगुर्जिना ॥ ८ ॥ असुरा नागास्तमित्त सुपर्णा अग्नयानित्र । स्तनिताब्धि द्वीपदिक्कुमारातादशेति ते॥ ए ॥ व्यवस्थिता पुन सर्वे दक्षिणोत्तरयोर्दिशो । तत्रासुराणां च मेरोर्दक्षिणावासिनां विन्नु ॥ १० ॥ उदीच्याना वलिर्नागकुमारादेर्यथाक्रम । धरणा जूतानदश्च हरि र्हरिसहस्तथा ॥ ११ ॥ वेणुदेवो वेणुदाली चाग्निशिखाग्निमाणवौ । वेलंवप्रजंजनौ सुघोषमहाघोषकौ ॥ १२ ॥ जलकांताजलप्रजस्तत पूर्णावशिष्टक । अमिताभित वाहन इडा ज्ञेया द्वयोर्दिशो ॥ १३ ॥ आर्यावृत्तम् – अस्याएव पृथिव्या उपरि तने मुक्तयोजनसहस्रे । योजनशतमधउपरि च, मुक्त्वाष्टसु योजनशतेषु ॥ १४ ॥ अनुष्टुब्वृत्तम् – पिशाचाद्यष्टजेदाना व्यंतराणां तरस्विनां । नगराणि जवन्यत्र दक्षिणो त्तरयोर्दिशो ॥ १५ ॥ पिशाचाजूतयक्षाश्च, राक्षसा किन्नरास्तथा । किंपुरुषा महा

रगा गंधर्वा इति चाष्टधा ॥ १६ ॥ दक्षिणोत्तरनागेन, तेषामपि च तस्थुषां। द्वौ द्वा विन्द्रौ समाम्नातौ, यथासंख्यं सुबुद्धिभिः ॥ १७ ॥ कालस्ततोमहाकालः सुरूपप्रति रूपकः । पूर्णभद्रो माणिभद्रो, भीमो भीमो महादिकः ॥ १८ ॥ आर्यावृत्तम्ः—कि न्नरकिंपुरुषौसत्पुरुषमहापुरुषनामकौ तदनु । अतिकायमहाकायौ, गीतरतिश्चै व गीतयशाः ॥ १९ ॥ अस्याएव पृथिव्या, उपरि च योजनशतं हि यन्मुक्तं । त न्मध्यादधउपरि च योजनदशकं परित्यज्य ॥ २० ॥ मध्ये शीताविह योजनेषु तिष्ठं ति वनचरनिकायाः ॥ अप्रज्ञप्तिकमुख्याअष्टावल्पर्द्धिकाः किंचित् ॥ २१ ॥ अनु ष्टुब्वृत्तम्ः— अत्र प्रतिनिकायं च, द्वौ द्वाविंद्रौ महाद्युती । दक्षिणोत्तरभागेन, वि ज्ञातव्यौ मनीषिभिः ॥ २२ ॥ आर्यावृत्तम्ः— योजन लक्षोन्नतिना, स्थितेन मध्ये सुवर्णमयवपुषा । मेरुगिरिणावशिष्टे, जंबुद्वीपे भवंत्यत्र ॥ २३ ॥ अनुष्टुब्वृत्तम् वर्षाणि भारतादीनि, सप्तवर्षधरास्तथा । पर्वताहिमवन्मुख्याः षट्शाश्वतजिना लयाः ॥ २४ ॥ आर्यावृत्तम्ः— योजनलक्षप्रमिता जंबुद्वीपात्परो द्विगुणमानः । ल वणसमुद्रः परतस्तद्विगुणद्विगुणविस्तारः ॥ २५ ॥ अनुष्टुब्वृत्तम्ः— बोद्धव्या धा तुकीखंडकालोदध्या असंख्यकाः । स्वयंभूरमणांताश्च, द्वीपवारिधयः क्रमात् ॥ २६ ॥ प्रत्येकरससंपूर्णा श्चत्वारस्तोयराशयः । त्रयोजलरसा अन्ये सर्वेपीक्षुरसाः स्मृ ताः ॥ २७ ॥ सुजातपरमद्रव्य, हृद्यमद्यसमोदकः । वारुणीवरवार्द्धिः स्यात्, क्षीरोदजलधिः पुनः ॥ २८ ॥ सम्यक्कथितखंडादि मुग्धदुग्धसमोदकः । घृतव रः सुतापितनव्यगव्यघृतोदकः ॥ २९ ॥ लवणाब्धिस्तु लवणास्वादपानीयपूरितः कालोदः पुष्करवरः स्वयंभूरमणस्तथा ॥ ३० ॥ मेघोदकरसाः किंतु कालोदजल धिर्जलं । कालं गुरुपरिणामं, पुष्करोदजलं पुनः ॥ ३१ ॥ हितं लघुपरिणामं, स्वच्छस्फटिकनिर्मलं; स्वयंभूरमणस्यापि, जलधेर्जलमीदृशं ॥ ३२ ॥ त्रिभागाव र्त्तसुचतुर्जातकेक्षुरसोपमं । शेषासंख्यसमुद्राणां, नीरं निगदितंजिनैः ॥ ३३ ॥ स मभूमितलादूर्ध्वं, योजने शतसप्तके । गते नवतिसंयुक्ते, ज्योतिषां स्यादतिस्थलं ॥ ॥ ३४ ॥ तस्योपरि च दशसु योजनेषु दिवाकरः । तदुपर्यशीतिसंख्ययोजनेषु निशाक रः ॥ ३५ ॥ तस्योपरि च विंशत्यां योजनेषु ग्रहादय. । स्यादेव योजनशतं ज्यो तिर्लोको दशोत्तरं ॥ ३६ ॥ जंबुद्वीपे भ्रमंतौ च, द्वौ चंद्रौ द्वौ च भास्करौ; चत्वारो लवणांभोधौ चंद्रा सूर्याश्च कीर्त्तिता ॥ ३७ ॥ धातकीखंडके चंद्राः सूर्याश्च द्वा दशैव हि । कालोदे द्विचत्वारिंशच्चंद्राः सूर्याश्च कीर्त्तिता. ॥ ३८ ॥ पुष्करार्द्धे द्विस प्ततिश्चंद्राः सूर्याश्च मानुषे । क्षेत्रं द्वात्रिंशमिंदूनां, सूर्याणां च शतं भवेत् ॥ ३९ ॥

मानुषोत्तरत पचाशद्योजनसहस्रके । चद्रेरतरिता सूर्या सूर्यैरतरिताश्च तौ।
मानुषोत्तरचद्रार्कप्रमाणार्द्धप्रमाणका । तत्क्षेत्रे परिरिर्द्धया वृद्धिमतश्च
या ॥ ४१ ॥ स्वयभूरमण व्याप्य, घटाकारा असख्यका । शुभलेश्या मद्रमे
स्तिष्ठति सतत स्थिरा ॥ ४२ ॥ समभूमितलादूर्ध्वं, सार्द्धरज्जा व्यवस्थितौ।
ल्पावनल्पसपन्नौ, सौधर्मैशानमानकौ ॥ ४३ ॥ सार्द्धरज्जुद्वये स्याता समानौ
क्षिणोत्तरो । सनत्कुमारमाहेद्रो, देवलोकौ मनोहरौ ॥ ४४ ॥ कर्ध्वलोकस्य
ध्ये च, ब्रह्मलोक प्रकीर्तित । तदूर्ध्वलातक कल्पो महाशुक्रस्तत पर ॥ ४५ ॥
देवलोक सहस्रारोथाष्टमोरज्जुपचके । एकेद्रो चद्रवद्वृत्तावानतप्रणतौतत ॥
॥ ४६ ॥ रज्जुपष्ठे तत स्यातामेकेद्रावरुणाच्युतो । चद्रवद्वर्तुलाश्चैव, कल्पाश्च
दश कीर्त्तिता ॥ ४७ ॥ ग्रैवेयकास्ततोध्वस्ता स्त्रयोमध्यमकास्तथा। त्रयस्योपरित
ना स्युरितिग्रैवेयकानव ॥ ४८ ॥ अनुत्तरविमानानि, तदूर्ध्व पच तत्र च। प्रा
च्या विजयमप्राच्या वैजयती प्रचक्ष्यते ॥ ४९ ॥ प्रतीच्या तु जयताख्यमुदीच्या
मपराजितम् । सर्वार्थसिद्ध तन्मध्ये सर्वोत्तममुदीरितम् ॥ ५० ॥ स्थितिप्र
भावलेश्यानिर्विशुद्धयवधिदीप्तिभि । सुखादिभिश्च साधर्मायावत् सर्वार्थसिद्धक
॥ ५१ ॥ पूर्वपूर्वस्त्रिदेशोन्यस्ते धिकाउत्तरोत्तरे । हीनहीनतरा देहगतिसर्वपरिग्रहे
॥ ५२ ॥ घनोदधिप्रतिष्ठाना विमानाकल्पयोर्द्वयो । त्रिषु वायुप्रतिष्ठानास्त्रिषु वा
युदधिस्थिता ॥ ५३ ॥ ते व्योमविहितस्थाना, सर्वेप्युपरिवर्तिन । इत्यूर्ध्वलोकवि
मानप्रतिष्ठानविधि स्मृत ॥ ५४ ॥सर्वार्थसिद्धा द्वादशयोजनेषु हिमोज्ज्वला । यात
नपचचत्वारिंशल्लक्षायामविस्तरा ॥ ५५॥ मध्येष्टयोजनपिण्डा शुद्धस्फटिकनिर्मला।
सिद्धशिलेत्यागनारा, प्रसिद्धा जिनशासने॥५६॥तस्या उपरिगव्यूतत्रितयेतिगते
सति । तुर्यगव्यूतिषड्भागे, स्थिता सिद्धानरामया ॥ ५७ ॥ अनतसुखविज्ञानवीरत्त
दर्शना सदा, लोकातस्पर्शिनोन्योन्याविगाढा शाश्वताश्च ते ॥ ५८ ॥शार्दूलविक्रीडित
वृत्तम् – एव नव्यजनस्य लोकविषयामत्यन्तोभावना, ससारैकनिबधनेन विषयमा
मे मनो धावति । किंत्वन्योन्यपदार्थभावनसमुन्मीलत्प्रबोधोद्धुर धर्मध्यानविधाविह
स्थिरतर तज्जायते सतत ॥ ५९ ॥ इति लोक स्वभाव भावना

अथैकादशमी बोधिदु – शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् –पृथ्वीनीरहुताशवा
द्युतरुपुक्लिष्टो निजे कर्मनिग्रा ... त्वपरावर्त्तानिनतानहो। जीव काममका
तनिर्जरतया सप्राप्य पुण्य शुभ प्रा ... पिद्धिद्वीद्रि ...प्रामिह ॥ १॥
...नताज॥ततरच्छ ... ...हेतोरवाप्ता

त्त्वयं तत्त्वातत्त्वविवेचनैककुशलां वोधिं न तु प्राप्तवान् कुत्राप्यक्षयमोक्षसौख्यजननीं श्री सर्वविद्देशितां॥ १॥ अनुष्टुब्वृत्तम्.—वोधिर्लब्धा यदि नवेदेकदाप्यत्र जंतुभिः । इयत्का लं न तेषां तद्भवे पर्यटनं भवेत् ॥ ३ ॥ द्रव्यचारित्रमप्येतैर्बहुशः समवाप्यते । संज्ञान कारिणी क्वापि न तु वोधिः कदाचन ॥४॥ ये सिद्धा ये च सिद्धयंति ये सेत्स्यंति च केच न । ते सर्वे वोधिमाहात्म्यात्तस्माद्वोधिरुपास्यतां ॥ ५ ॥ इति वोधिदुर्लभभावना.

अथ द्वादशमी धर्मकथकोऽर्हन्निति भावना.— अर्हंत केवलालोकालोकितालोक लोकिकाः । यथार्थं धर्ममाख्यातुं परिष्ठानपुनःपरे. ॥ १ ॥ वीतरागा हि सर्वत्र पदार्थ करणोद्यता । न कुत्राप्यनृतं ब्रूयुस्ततस्तद्धर्मसत्यता॥ २॥ क्षांत्यादिभिर्देधर्मं च दशधा ज गद्गुर्जिनाः। यं कुर्वन् विधिना जंतुर्भवाब्धौ न निमज्जति ॥३॥ पूर्वापरविरुद्धानि हिंसा देः कारणानि च । वचांसि चित्ररूपाणि. व्याकुर्वन्निर्निजेच्छया. ॥४॥ कुतीर्थिकैः प्रणी तस्य सज्जति. प्रतिपंथिन. । धर्मस्य सकलस्यापि कथं स्वाख्याततां भवेत् ॥५॥ यच्च य त्समये क्वापि दयासत्यादिपोषणं ॥ दृश्यते तद्वचोमात्रं वुधैर्ज्ञेयं न तत्त्वतः ॥ ६ ॥ शा र्दूलविक्रीडितंवृत्तं —यत्प्रोद्दाममदांधसिंधुरघटं साम्राज्यमासाद्यते यन्निःशेषजनप्रमो दजनकं संपद्यते वैभवं । यत्पूर्णेंदुसमद्युतिर्गुणगण· संप्राप्यते यत्परं सौभाग्यं च विजृं भते तदखिलं धर्मस्य लीलायितं॥ ७॥यन्नाप्लावयति क्षितिं जलनिधिः कल्लोलमालाकु लो यत्पृथ्वीमखिलां धिनोति सलिलासारेण धाराधर.॥यच्चंद्रोष्णरुची जगत्युदयतः सर्वोपकारिन्निर्दांतन्निःशेषमपि ध्रुवं विजयते धर्मस्य विस्फूर्जितं ॥८॥ शिखरिणीवृत्त म् — अवंधूनां वंधु· सुहृदसुहृदां सम्यगगदोगदार्त्तिक्लांतानां धनमधनभावार्त्तमनसां॥ अनाथानां नाथोगुणविरहितानां गुणनिधिर्जयत्येकोधर्मः परमिह हितव्रातजन क ॥ ९॥ अनुष्टुब्वृत्तं.— अर्हता कथितोधर्मः सत्योयमिति भावयेत् ॥ सर्वसंपत् करे धर्मे धीमान् दृढतरो भवेत् ॥ १० ॥ इति धर्मकथकोर्हन्निति भावना.

शार्दूलविक्रीडितंवृत्तम्.— एकामप्यमलामिमां सुमततं योभावयेद्भावनां भव्य. सोपि निर्दह्यशेषकलुषं दत्वा सुखं देहिनां ॥ यस्त्वभ्यस्तसमस्तजैनसमयस्ता द्वादशा प्यादराद्भ्यस्येद्भजते ससौख्यमतुलं किं तत्र कौतूहलं ॥ १॥ अर्थ.— ए वार भाव नामांनीकोईएक अमल भावना जे भव्य निरतर भावे ते पण ते देहीने सुख द ईने अशेष कलुष एटले वधा पापोनो नाश करे तो जे समस्त जैनसिद्धांतोनो अ भ्यास कर्यो छतां अति आदरेकरी वारे भावनाओनो अभ्यास करे ते अतुल सौ ख्यने पामे तेमां आश्चर्य शुं!॥ १ ॥ इति द्वादशभावनाः समाप्ताः ॥ ७७१ ॥

अवतरण.— हवे प्रतिमानुं प्रतिपादन करेछे.— मूल — मासाई सत्तंता पढमा

तिइय तइय सत्तराइ दिणा । अहराइ एगराई, भिक्खु, प्पडिमाण बारसग ॥५८
अर्थ – एक मास प्रमुख आदि दईने सात मासनी सातमी प्रतिमा थाए
जेनु एक मासनु परिमाण होय तेने मासिकी प्रथमा प्रतिमा कहेछे एम द्वि
मिकी द्वितीया, त्रिमासिक तृतीया ते यावत् सप्तमासिकी सप्तमी जाणवी प
मा तिइय तईय सत्तराइदिणत्ति एटले ते सात प्रतिमाओनी ऊपर प्रथमा एटले
आठमी, द्वितीया एटले नवमी अने तृतीया एटले दशमी ए त्रण प्रतिमाओ
सातसात रात्रि दिवसनी थायछे अहराइति– जेनु अहोरात्रनु परिमाण होय
तेने अहारात्रिकी कहिये एवी एकादशमी प्रतिमा जाणवी एगराइत्ति–जेनु एक
रात्रिनु परिमाण होय तेने एक रात्रिकी कहिये एवी द्वादशमी प्रतिमा जाणवी
एवीरीते साधुनीप्रतिज्ञाविशेष ते भिक्षुप्रतिमा बार थाय छे ॥ ५८२ ॥
अवतरण – हवे ए प्रतिमाओनो पडिवज्जणहार कहेछे – मूल – पडिवज्ज
इ एआओ, सघयणधिई जुओ महासत्तो, पडिमाउ भाविअप्पा, सम्म गुरुणा अ
णुनाओ ॥ ५८३॥ गछेच्चिय निम्माउ, जा पुव्वादसभवे असपुन्ना, नवमस्स तइ
यवत्थु, होइ जहन्नो सुयाभिगमो ॥ ५८४ ॥ वोसठ्ठचत्त देहो, उवसग्गा सहो जहे
व जिणकप्पी, एसण अभिग्गहिया, भत्त च अलेवड तस्स ॥ ५८५ ॥ अर्थ–
ए बेनी प्रतिमाओनो अंगीकार करनार ते वज्रऋषभ नाराच सघयण युक्त होय
तेथी अत्यंत परिसह सहन करवाने समर्थ थाय वली धृति एटले चित्तनी स
स्थता युक्त एकाहाय तेथी रति अरति प्रमुखवडे पीडाने पामे नही त्रीजु महा
सत्त्व एटले घणा साहसिक होय ते निश्चेकरी अनुकूल तथा प्रतिकूल जे उपस
र्गो तेनेविषे हर्ष तथा विषादने पामे नही चोथु भाविअप्पा के० भावितात्मा ए
टले सद्भावनाए करी भावित अंत करणवालो अथवा प्रतिमानुष्ठाने करी भावित
स्वरूप जाणवो ते भावना पांच तुलनाएकरी थायछे तदुयथा – ' तवेण सुत्तेण सत्त
एणेण बलेण्य तुलणा पंचहा वुत्ता, पडिम पडिवज्जओ ॥१॥ एवी व्याख्या पूर्वे
करी आवेला छेये ते प्रमाणे जाणवी तथा सम्मके० सम्यक् यथागमजे गुरुणाके०
गुरुनेनी अणुनाओके० अनुमत लइने ॥ ५८३ ॥ गुरुनाअभावे स्थापनाचार्य अ
थवा गडना अनुमतेकरीने निम्माओ के० निश्चयकरी गच्छ जे साधुसमुदाय तेना
विषे रहीने आहारादिकनेविषे प्रतिमा कल्प परिकर्मणाएकरी परिनिष्ठित थाय अ
–' पडिमा कप्पिय हुत्तो, गच्छेच्चिय कुणड ठविह परिकम्म, आहारा उहिमा
इस पडिवज्जइकप्प' आहारादिप्रतिकर्म आगलनी गाथामां कहेश परिकर्मनु प्र

माण ते मासिकादिक कालनेविषे यावत् परिमाण प्रतिमाओ छे ते प्रतिमानुं ते परि
कर्म समजवुं. तथा वर्षाकालनेविषे ए प्रतिमाओनो अंगीकार थतो नथी. माटे तेनो परि
कर्म करे नहीं. तथा आदिनी बे प्रतिमाने एक वर्षमां. त्रीजी अने चोथी प्रतिमां एक
एक वर्षमां अने बाकीनी त्रण प्रतिमाओ अन्यत्र वर्षनेविषे परिकर्म प्रतिपत्ति जाण
वी. एरीते सात प्रतिमाओ नववर्षे पूरण थायछे. हवे तेने केटलो श्रुताधिगम था
यछे:– ते कहेछे यावत्दश पूर्व. असंपूर्ण एटले कांइक उणा समजवा. संपूर्ण दश
पूर्वधर जे होय ते तो अमोघ वचननें लीधे धर्मदेशनादिकेकरी भव्यने उपकार क
रवाने लीधे तीर्थनी वृद्धि करवानेअर्थे प्रतिमा कल्प न पडिवज्जे एम उत्कृष्ट श्रुता
धिगम जाणवो. अने जघन्य तो नवमां पूर्वना तृतीय आचार वस्तु सुधी श्रुताधिगम
जाणवो. एथी श्रुतथी रहित होय तो निरतिशय ज्ञानपणाने लीधे ते कालादिक
ने जाणे नहीं ॥ ५७४ ॥ तथा संस्कारना अभावने लीधे शरीरनी ममता जेणे
त्यागी दीधी छे. तथा देव मनुष्य अने तिर्यग्ना उपसर्ग जिनकल्पीने पठे सहन
करनारो होय. तथा एषणापिंड ग्रहणनो प्रकार सात प्रकारे होय ते कहेछे
उक्तंच संसठ्ठम संसठ्ठा. उद्धड तह अप्पलेवडाचेव; उग्गहिया पग्गहिया, उज्झिय
धम्मा य सत्तमिया. एनो अर्थ – ए वक्ष्यमाणस्वरूपे आम गृहण कर्युं छे; जे गृ
हण करनारा छे ते आम गृहण करे. ते सात एषणा मध्ये आद्यनी बेनुं गृहण
करवुं नहीं, अने पछीनी पाचनुं गृहण करवुं तेमां वली विवक्षित दिवसे अंत
नी ते पांचमां बेनुं ग्रहण करवुं. एक भक्तनेविषे अने एक पाननेविषे. तथा भक्त
ते अन्न जाणवुं. ते अलेपकृत एटले अलेपकारक वल्ल तथा चणकादिकजाणवुं ते प्रति
मानी प्राप्तिनी इच्छानो परिकर्म करवावालो; च शब्दे एने उपधि पण बे एषणानी
होय अने तेना अभावे यावत् उचित करेलानी प्राप्ति थाय. त्यारपछी ते कारण
सिद्ध थाय तो तेने मूकी दिये. उक्तंच – उवगरणं सुद्धेसण, माणजुयं जमुचि
अं सकप्पस्स, त गिण्हइ तय भावे, अहागडं जाव उचियंतु ॥ जाए उचिएयित
य, वोसिरइ अहागडं विहाणेण; इय आणानिरयस्सिह, विन्नेयं तपि तेणसमं ॥
कल्पनेविषे उचित उपधिने, ते पोतानी बे एषणाए करी ग्रहण करेछे. ए एषणा
चार ते अंतनी समजवी ते आप्रमाणेः– प्रथम कपासिकनुं वस्त्र गृहण करेलुं
बीजुं मूकी दीधेलुं, त्रीजुं ओढवा प्रमुखथी परिभोगेलुं होय ते; अने चोथुं ते मू
की देवाना जेवो होय ते. एवीरीते कृतपरिकर्म जे करे छे तेज कहेछे. ॥ ५७५ ॥

मूलः– गच्छाविणिरक मित्ता, पडिवज्जइ मासियं महा पडिमं; दत्तेग [illegible]णस्स

पाणस्स तह एग जवे ॥ ५०६ ॥ जछमेइसूरो, नतउंगणा पयपि सन्नि, नोएग राइवासी, एगच ङगच अणाए ॥५०७॥ ङछाण हछिमाइण, नानए। यपि उसरइ, इय माईनियम सेवि, विहरइजा खमियोमासो ॥ ५०८ ॥ अन- पठी ते गछने मूकी दिये तत्र जो ते पोतेआचार्यादि होय तो जेने प्रतिमानीव प्ति थई होय एवा वीजा कोई साधुने पोताना पदनेविषे थोडा काळसुधी स्थ अने पठी शुन इव्यादिक शरत्कालादिकनेविषे सकळ साधुउने आमत्रण करीह मण पूर्वक उक्तच – खामेई तउ सव, सबालवुड जहो चिय एव, अन्नतंनवि पुववविरुद्धे विसेसेण । ज किंचि पमाएण, न सुछुने वछिय मएपुर्वि, तने तव मि अह, निस्सल्लो निक्कसाउत्ति । एम गछमाथी नीकळीने मासिकी एटले ए मास प्रमाणनी महाप्रतिमा एटले मोटी प्रतिज्ञा अगीकार करे तत्र एक अविछि दानरूप जे एकज जातनो नोजन होय तेवो अन्नलिये ते पण अज्ञात एटले अ जाणेलुं होय वळी वीणेलु होय ते तथा उद्दृत्ता एटले वधेला होय तेपण पात्रा पांच एषणायेकरी सहित होय अने अलेपकारी, होय रुपण पण जेनी इछा नहो वळी जेनो एकज धणी होय अने दाटगर्नवती होय, वाळकोनी माता होय, तथा पीयमान स्तनवाली होय तो ते एक पदमाहे मूकीने वीजु वाहार राखी दीये तेन एक जणो आपनार होय तो लिये तथा पान पदार्थनु अहार पण एकज आपनार हार तो लीये तत्र मासिक प्रतिमा एक दाती थाय जल, स्थल तथा पर्वतादिकनेविषे ज सुधीसूर्य होय त्यां सुधीचाले॥५०६॥ पठी जछउमेईसूरेके० ज्यासूर्य अस्त थाय त्यांथी एक पग मात्र पण आवो न चाले तथा जो आ प्रतिमापन्न ठे एवो रीते लोको ने जाण्यामा आवी गयु होय, तो त्या ते एग राइवासिके० एक अहोरात्र वास करे पण एथी वधारे काल सुधी रहे नही तथा अन्नाएके० वीजा जे ग्रामादिक ज्या एवी खवर न होय के आ प्रतिमा प्रतिपन्न ठे, त्या एक दिवस एक रात्र अथवा बे दिवस बे रात्रि सुधी रहे वधारे वास करे नही ॥५०७॥तथा ङछाणहछि माईणके० डट हस्ति सिंह अने व्याघ्रादिक मारणहाराजे पशुउतेनाथी नयण पयपिक्कमरणं मरणनी नीतिएकरी एक पग पण आगल न कसरे केम के जा तेनानयथी साधु आगळ नयेकरी दाहे तेथी, तथा तेनी पाठळ ते डट जनावर दाह तेथी हस्तिादि क जीवोनी विराधना थाय अने जो अडष्ट पशु दीठामा आवे ता साधु पाताना मार्गे चाल्यो जाय तेथी हरितादिकनी विराधना थाय नही इयमाइनियमसेवि के० इत्यादिक नियमनो सेवनारो थयो थको आदि शब्दे करी तडकाथी तावडाना

न जाय अने तापढामांथी नडकामां न आवे इत्यादिक अभिग्रहवान थयो थको
विहरेहिं० ज्यां सुधी नदीनो पुर न थाय त्यां सुधी ग्रामानु ग्रामे विहार करे जा
अरंमिदयमासोत्ति० ते यावत् अन्तदिन परिपूर्ण मास थाय त्यां सुधी जाणवु.
आदि शब्दथी बीजा पण घणा नियमो जाणवा. जेम के, संस्तारक उपाश्रय मा
गवाने अर्थे, संशय उत्पन्न थयाथी सूत्रार्थ पूछवाने अर्थे. गृहादि पूछवाने अर्थे
तृण काष्ठादिनी अनुज्ञा मागवाने अर्थे पूछेलो जे सूत्रार्थ तेनो जवाब ते आचा
र्य अथवा बीजाने कहेवा माटे एक अथवा बे वखत प्रतिमा प्रतिपन्न दिये अन्य
था भाषांतर करे नही तथा आगंतुक आगार. विवृत गृह तथा वृक्षमूल लक्ष
ण ए त्रण ठेकाणे वसति करे. अन्यत्र वास करे नही तेमां आगंतुकागार एटले
कार्पटिक लोक आवीने वसे. विवृत गृह एटले नीचे कुटीनो अभाव होय अने उ
पर आच्छादननो अभाव होय ते अनावृत जाणवु. अने वृक्षमूल एटले ज्यां सा
धुने त्याग करवा योग्य दोषो प्राप्त न थाय एवा करीरादिकना वृक्षना थंडमां
जाणवुं. उक्तंच – जायण पुछाणुन्नवण पुठवागरण भासगो चेव; आगमण विय
ड गिह रुक्खमूलगा वासयतिगोत्ति तथा अग्नि थकी जयपामे नही उपाश्रयादिक
मां आग प्रदिप्त थयाथी त्यांथी नाशी जाय नही कदाचित् ते गृहादिकमाथी को
ई खेंचीने कहाडे तो ते जाय पण खरो अने पगमां लागेलुं कांटु तथा रेती प्रमु
ख कहाडी नाखे नही. आंखमां पडेली रेणु तृण तथा मलादिक कहाडे नही.
तथा हाथ पग अने मुखादिक अंग प्रासुक जलेकरी धोए नही. बीजा साधुउ पु
ष्टालंबने धोए तो भले; पण पोते धोए नही ॥ ५८८ ॥

सूत्र – पच्छा गच्छ मुवेई, एव दुमासी तिमासि जा सत्त; णवर दत्ती वड्ढइ, जा
सत्त उसत्त मासीए ॥ ५८९ ॥ अर्थ –पच्छाके० ते मास पूरो थया पछी गच्छमुवेई
के० गच्छ एटले साधुनो समूह तेना स्थाननी पाशेना ग्राममा आवे त्या आचार्या
दिकने वात प्रगट करे, ते आचार्य राजाने जणावे, के प्रतिमानुं जेणे पालन क
र्युं ते एवो अमुक साधु अही आव्योछे. त्यार पछी नृपादिक लोक अथवा श्रमण
संघेकरी अभिवद्यमान थयो थको ते गच्छमा प्रवेश करे. ते तपना बहुमानने अ
र्थे तथा बीजाने श्रद्धानी वृद्धि थवाने अर्थे, तथा प्रवचननी प्रभावना अर्थे
जाणवुं. एम प्रथमा प्रतिमा कही हवे बाकीनी छ प्रतिमाउ कहेछे –एव दुमासी
तिमासिके० एवी रीते एज क्रमे करी द्विमासिकी तथा त्रिमासिकी प्रमुख जासत्त
के० ज्यां सुधी सात मासिकी प्रतिमा थाय त्यां सुधी जाणवो तेमा णवरके०एट

लो विशेषठे जे प्रथम मासिकनी जे प्रतिमा छे तेना करतां द्विमासिकी प्रमुख प्रतिमांडमा 'दत्तयत्तासु वर्द्धते एटले दात्तिनी वृद्धि थाय छे द्विमासिकीनेविषे बे दात्ति, त्रिमासिकीनेविषे त्रण एम जासत्तउंसत्तमासिएके० यावत् सात दत्ति पाणीनी अने नोजननी ते सात मासिकी प्रतिमामा होय एम जाणवु ॥५८०॥

अवतरण – हवे अष्टमी प्रतिमा कहेछे – मूल – तत्तोय अट्ठमीए नवई हुपढम सत्त राइदि, तीए चउड चउड्डेण पाणएण अह विसेसा ॥ ५८० ॥ उत्ताणग पासल्ली, नेसज्जि वावि गण गाइत्ता, सहइउवसग्गे घोरे, दवाई तड अविकपो॥५८१॥अर्थ –त्यार पछी सप्तमी अनतर अष्टमी प्रतिमा ते सात अहो रात्रिनी थाय छे ए प्रतिमानेविषे चतुर्थ नक्त ते एकातरे एकांतरे पाणएण के०पाणी रहित चउविहार करे हवे पूर्वे कही आवेली प्रतिमाउंथी अहविसेसाके० एटलो विशेष नेद छे अही पारणे आंबिल करवु दत्तिनो नियम नथी ॥५८०॥तथा उत्ताणगके० उंचे मुखे सूर्य सन्मुख काऊसग्गादि करे अने पासल्ली एटले पूठ वाली नूमिये अणफरसतोरहे अने गरुमासन अथवा वीरासन वाली वेसे वावि गणगाइत्ताके० अथवा ठानोजरहे गामथी बाहार रह्यो थको, सहइउवसग्गे घोरेके० उपसर्ग अप इव घोर रौड देवादि सबंधी सहनकरे दवाई तड अविकपोके० ड्रव्य क्षेत्र काल नाव आश्रित मन तथा कायाये करी नि प्रकप थको रहे ॥ ५८१ ॥

अवतरण – हवे नवमी प्रतिमा कहेछे – मूल –दोच्चा विएरि सच्चिय, वहिया गामाइयाण नवर तु, उक्कड लगडसाई, दमायय उव्व गाइत्ता ॥ ५८२ ॥ अर्थ – वीजी एटले नवमी प्रतिमा ते पण सात अहो रात्रीनी अने एवीज रीते तप अने पारणाएकरी सरखी जाणवी अने वहिर्वृत्तियें पण सरखा पणेज कही छे वाहिर ते ग्रामादिकअने सनिवेश विशेषे जाणवु एमा नवरतु के०केवल आटलु विशेष छे जे उक्कड के०ऊकडु बेठो लगण्ड शब्दे वाका पडेला लाकडानी पठे सूवे एवो जे होय तेने लगडशायी कहिये एटले मस्तक अने पगनी पेनीयें अथवा पीठ वडे पाठला देशने नूमिना नागने स्पर्श करी सूवे दमवत् एटले लाकडीनी पठे लाबो पई पग पसारी नूमिनी उपर नाखेलुं शरीर तेने दमायत कहिये ए रीत लाबो पई सूवे इहा वा शब्द निकटपार्थ छे ते वाके० अथवा एवी स्थितिए करी रहेता थको देवादिकना करेला उपसर्गोने सहन करे. ॥ ५८२ ॥

अवतरण – हवे दशमी प्रतिमा कहेछे – मूल – तच्चाविएरि सिच्चिय नवर गाए तु तस्स गो दोही, वीरासण मह्वावी, गाइज्जा अव खुज्जोवा ॥ ५८३ ॥

अर्थः—सातमी थकी त्रीजी एटले दशमी प्रतिमा पण सप्तरात्रि दिवसनी कहेला स्वरू
पनी परेज जाणवी. पण नवरंके० एटलो विशेषजे केवल शरीरनो ठाणातुके० स्थान
एटले राखवो ते जेवीरीते गोदोहीके० गाईने दोहवा वेसिये एटले पगनी पेनी
ऊपाडी आगला तलीये वेसी जेम गोवालीउ गाई दोहवा वेशे तेम शरीरने स्थिर
करे वीरासन एटले दृढ संघयणी पुरुषोनुं जे आसन तेने वीरासन कहिये. जेम
सिंहासननी उपर वेठेलो ठतां तेना पगनीचे पृथ्वीने वलगेला होय तेनी नीचेथी
सिंहासन कहाडी लीधुं ठतां पण तेनो आसन भगे नही पग त्यांज स्थित होय ए
वी रीते वेसे अहवाविके० अथवा मावी जांघनीऊपर जमणुं पग करे अथवा मावा
हाथनी हथालीनी ऊपर जमणा हाथनी हथाली करे. अने ते नालीने लगाडी
राखे एम प्रतिमानीपरे वेसे तेने वीरासन कहिये. अथवा ए वा शब्द प्रकारांतरने प्रगट
करवाने अर्थे ठे. अपि शब्द समुच्चय अर्थे ठे. गाङ्का एटले एवी रीते वेशवुं. अथवा
अंबखुज्जोवाके० आम्रकुब्ज एटले आंवाना फलनी परे वक्राकारे स्थित थाय-एवी
रीते ए त्रणे प्रतिमाउसातसात अहोरात्रीनीकरता एकवीशदिवसे पुरी थायठे ॥५५३

अवतरणः— हवे इग्यारमी प्रतिमा कहे ठे.— मूलः— एमेव अहोराई, ठठं भ
त्तं अपाणगं नवरं; गाम नगराण वहिया, वग्घारिय पाणिए ठाणं. ॥५५४॥ अर्थः
एमेव के० एमज कही आवेली रीति प्रमाणे अहो रात्रिकी प्रतिमा इग्यारमी था
य ठे. नवरं के० एटलो विशेष जे केवल ठठ भक्त जे उपवास छयरूप तेनेविषे चारे
आहारनो त्याग करे. माटे अपाणगं के० पानक आहारथी पण रहित कहि ठे ए
नो आरंभ एकाशने करी थाय ठे. नवरं के० एटलोविशेष ठे जे गाम नगराण वहि
या के० ग्राम ने नगरथी वाहारे वग्घारिय पाणिए के० विस्तारित पाणि एटले
भुजादंम लांवीकरीने एरीते ठाणं के० स्थान एटले काउसग्ग ध्याने रहे ठे. ए
अहो रात्रिकी प्रतिमा त्रण दिवसे थाय ठे. अहोरात्रना अंते ठठ भक्त करवामां
आवेठे तेमाटे. यदाः— 'अहो राई यांतिहि, पच्छा ठठं करे इत्ति' ॥ ५५४ ॥

अवतरणः— हवे वारमी प्रतिमा कहे ठेः— मूलः— एमेव एगराई, अठम भत्ते
ण ठाण वाहिरउ, ईसी पब्भार गउ अणमिसनयणेग दिठीए ॥५५५॥ साहट्टुदोवि
पाए, वाघारिय पाणि ठायए ठाणं; वाघारि लंबिअ भुउ, अंते समयाइ लद्धित्ति.
॥५५६॥ अर्थ.— एमेव एटले अहोरात्रिकी प्रतिमानी परे एगराई एटले एक रा
त्रिकी प्रतिमा थाय ठे. एमां विशेष ठे ते आ प्रमाणे.—अठम भत्तेण एटले पान
क आहार रहित उपवास त्रण करवा अने ठाणके० ग्रामादिकथी वाहिरउ के० वा

रपठी कल्पत्रिक जाणवा एना उपलक्षणथी उपग्रहिक उपधि प्रत्युपेक्षण
योग्य छे तथा उग्घाट पौरुषिनेविषे सात प्रकारे पात्र नियोगनी प्रत्युपेक्ष
वी तत्र आसनेबेसीने प्रथम मुखवस्त्रिकानी प्रत्युपेक्षणा करीने पठी गोछ
त्युपेक्षणा करवी पठी पटलाउ, त्यारपठी पात्रकेसरिका, त्यारपठी पात्रबंध
पठी रजस्त्राण त्यारपठी पात्रस्थापन ए प्रत्युपेक्षणानी विधि विस्तारना
लखी नथी विस्तारे उंघ निर्युक्ति तथा पंच वस्तुकादिक ग्रंथोथी जाणी लेवी ॥
अवतरण – अही वसतिप्रमार्जननो विशेष कहे छे – मूल – पडिलेहिक
रहि, गोसमि पमज्जणाउ वसहीए, अवरण्हे पुण पढम, पमज्जणा तयणु पडि
॥ ६०१ ॥ अर्थ – गोसे एटले प्रभात समये मुखवस्त्रिकादि लक्षण पूर्वोक्त
निकें० उपधिनी पडिलेहिकणके० प्रतिलेखणा करीने त्यारपठी यतियें वसहीके
निवासरूप जे वसति ते तेनी उपयुक्तकरी पमज्जणाके० प्रमार्जना करवी अ
गाण्हे० बीजी पाठला पहोरे फरी प्रथम वसतिनु प्रमार्जन करवु, अने तयणु
के० तेवार पठी उपधीनी प्रतिलेखना करवी ॥ ६०१ ॥
अवतरण –शेषकाल अने वर्षाकाले उपाश्रय प्रमार्जननो विशेष कहेछे मूल –
दोन्निवपमज्जणाउ, उउम्मि वासासु तइय मज्जणहे, वसहि बहुसो पमज्ज अइ
सपदअन्नहिगेहे ॥६०२॥अर्थ –ज्या वसतिनेविषे जीवोनो संसक्ति एटले मेनावडोन
थता हाय, त्यां पण ऋतुबद्ध कालमां एटले आठ मासमा दोन्निउके० बे प्रमार्
न कहेना छे एक सवारनोअनेबीजीपाछला पहोरनीएवे वार वसतिनुअवश्य प्रमा
र्जन कर्तव्य छे, अने वासासुके० वर्षा कालनेविषे जीवोनो मेला वडो घणो था
य छे माटे वसतिनी त्रीजी प्रमार्जना थाय छे तेमा बे पहेला कही ते अन त्र
यके० त्रीजी मज्जणहे के० मध्यान्ह कालनेविषे थायछे तथा ऋतुबद्ध काले अथ
वा वर्षा काले कुंथुआदिक प्राणीउएकरी वसहिके० वसति संसक्त थयाथी बहुसो
के० घणी वार पण वसतिनी पमज्जके० प्रमार्जना करवी ईहां वा शब्द विकल्प
दर्शनार्थ छ. ते विकल्प आ छे – जो पूर्वोक्त प्रमार्जना प्रमाणेज जीव संसक्त
नो जाय ता घणा वखत प्रमार्जन न करवु अने जो जीव संसक्त न टले ता घ
णी प्रमार्जना पण करवी. अन जो घणी वार पूजता पण जीव समन्न टले न
अन वसाग ममक दरसाय अने कजटा प्राणिउना संघट्ट थाय त्यार न वसि
ती बीजी वसतिमा यथवा बीजा गाममां जावु ॥ ६०२ ॥
अवतरण – हवे अण शुद्धि कहेछे – मण शुद्धि माइयाउ, शुद्धीउ तिन्निहूनि नाम

वा,अकुसल निविित्तिरूवा,कुसलपवित्ती सरूवा य.॥६०३॥अर्थः-मनोगुप्त्यादिक एटले मनोगुप्ति वचन गुप्ति तथा काय गुप्ति लक्षण त्रण गुप्तिउ जाणवी. एउनुं स्वरूप आ प्रमाणे ने.– अकुशल एटले अशुन मन वचन तथा कायनी निवृत्तिरूप ते अकुशल मन वचन, कायाना निरोध रूप जाणवी. अने कुशल एटले शुन मनो वचन कायनी प्रवृत्ति रूप जाणवी. एनो अनिप्राय आ ढेः– मनोगुप्ति त्रण प्रकारे ढेः– तेमां प्रथम आर्त्त रौद्र ध्यानानुबंधि कल्पना समुदायना वियोग रूप जाणवी. बीजी शास्त्रानुसारणी परलोकनी साधक धर्मध्यानानुबंधिनी मध्यस्थ परिणतिवाली परिणामविशेषे जाणवी ते कुशल तथा अकुशल मनोवृत्तिना निराधेकरी समता परिणामरूप थायढे. त्रीजी योग निरोधावस्थानेविषे जे आत्मा आत्म स्वरूपे थाय ते स्वात्माराम तृतीया जाणवी. ए मनोगुप्ति थई हवे वचन गुप्तिना बे नेद कहेढे.– एक मुख नयन नृकुटिना विकारो तथा चपटीनो वजाडवो प्रमुख जाणवी.तेमां नेत्रने विकाशी, मुखथी हुंकारो करे नृकुटीने ऊचीनीची करे एवी सूचना करवानी जे चेष्टा तथा ऊनोथावो, खुकारो करवो, हुंकारोकरवो ढेखाल प्रमुखनो नाखवो इत्यादिक अर्थनी जणावनारी जे चेष्टाउ होय ढे तेउनो परिहार करीने आजे मारे आ न करवुं. एवो अनिग्रह कर्याथी पहेली वाक्गुप्ति जाणवी; एटले चेष्टाविशेषेकरी पोताना प्रयोजनोनी सूचना करतो ढता मौन धारण करवानो अनिग्रह लेवो निष्फल ढे. तथा वांचवुं, पूढवुं, तथा बीजो कोई पोताने व्याकरणादि पूढे तेने लोक तथा आगमथी अविरुद्ध मुखपोत्तिकाथी ढांकेला मुखकमलथी बोले एम वचन वृत्तिने नियममां राखवी एवां नेदेकरी वांचननो जे निरोध ते सम्यक नाषण रूप प्रतिपादिक जाणवी. इहां नाषा समितिनेविषे सम्यक् वचननी प्रवृत्ति होयढे अने गुप्तिमां सम्यक् वचननो पण निरोध ढे एटलो नाषा समिति अने वचन गुप्तिमां नेद ढे. यदाहु.– 'समिउ नियमा गुत्तो, गुत्तो समियत्तणंमि नयणिज्जो कुसल वय मुदीरतो, जंवइ गुत्तोवि सम्मिउवि. ॥ हवे त्रीजी काय गुप्ति पण बे प्रकारे ढे·– तेमां एक चेष्टा निवृत्ति लक्षण अने बीजी यथागमानुसारे चेष्टा नियम लक्षण जाणवी. तत्र जे देव संबंधी तथा मनुष्य संबंधी उपसर्गो ढतां तथा क्षुधा पिपासा प्रमुख परिसहादिक थता ढतां पण कायोत्सर्ग करवा प्रमुखवमे कायाने निश्चल करवी तथा सर्व योग निरोधावस्थानेविषे सर्वथा काय चेष्टानो निरोध करवो ते प्रथमा कायगुप्ति जाणवी. तथा गुरुने पूढतां शरीर संस्तारक, नूमिकादि प्रतिलेखना प्रमार्जनादि आगममां कह्या प्रमाणे क्रि

या कलाप सहित शयनादिक यतिने करवो ए रीते शयन आसन तथा निक्षेपादि नेविषे स्वछंद चेष्टानो त्याग करवो अने नियमे करीने काय चेष्टा करवी ते त्रीजी कायगुप्ति जाणवी ॥ ६०३ ॥

अवतरण – हवे चार अनिग्रह कहे छे – मूल – दव्वे खेत्ते काले, नावेय अ निग्गहा विणिद्दिहा, ते पुण अणेग नेया, करणस्स इम सरूवतु ॥ ६०४ ॥ अर्थ – इव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी, नावथी ए चार प्रकारना अनिग्रहो जिनेश्वरे कह्या छे ते वली सर्व अनेक नेदे छे ते त्रैलोक्य स्वामी श्रीमहावीरे छद्मस्थाव स्थाने विषे विचरता कौशवी नगरीमा ग्रहण कर्या छे तेमा इव्यानिग्रह ते हु कुल्माष बकुल सूर्पना एक कोणामा तलपीश, तथा क्षेत्रानिग्रह ते देनारीना पग वन्नेयत्रथी आवरी लीधेला होय एक उवरामा होय ने वीजु पग वाहार ए वी ठता मने आपे तो लक तथा कालानिग्रह ते जो दिवसे वीजो पोर थईगया पठी दात्री देशे तो लईश तथा नावानिग्रह ते जो माथु मूमेलु ठता रोती थकी देशे तो हु निक्षा लईश अन्यथा मारे गृहण करवी नही ए विधिना अनिग्रहे करी नगवते ठमासने पाच दिवस अन्न पाणी लीधु नही पठी चदन वालान हाथे पा रणो कर्यो ए इव्यादिक चार अनिग्रहो जाणवा एवी रीते उक्त प्रकारे करी करणसित रिनु स्वरूप जाणवु ए करणना सित्तेर नेदो गुरुउए कहेला छे ते आ प्रमाणे- वेताजीश आधाकर्मादिक दोषो, पिम्, ते१ आहार२ शय्या तेवस्ति ३ वस्त्र ने४ पात्र ते विशुद्ध दोष रहित लिये ए लक्षण वस्तु चतुष्टय पणे करी चार पिमादिक गणाय तथा पांच समितिउ, मली नव, द्वादश नावना मली एकवीश द्वादश प्रतिमा उ मली तेत्रीश, पाच इंद्रिय निरोध मली अमत्रीश पचीश प्रतिलेखना मली त्रेस ठ, गुप्तिउ त्रण मली ठासठ अने अनिग्रहो चार मली सित्तेर नेदो थाय ॥६०४॥

आशंका – चरण तथा करणनेविषे विशेषता शु छे?

समाधान – जेनुं नित्य अनुष्ठान होय तेने चरण कहिये, अने जे प्रयोजन प्राप्त थये कराय आवे तेने करण कहिये यथा व्रतादि सर्व काल पाल्यामां आवे छे, पण कोईकाल व्रतथकी शून्य होतो नथी अने पिम् विशुध्यादिक ता प्रयो जननी प्राप्ति थयाथी कर्यामा आवे छे एम जाणवु ए सडसठमो द्वार पूरायथो

अवतरण –हवे 'जंघा विज्ञाचारणगमणसत्तित्ति' एटले जघाचारण अने विद्या चारणोनी गमन विषयक शक्तिनो अडसठमो द्वार कहे छे – मूल – अइसय च रण समत्था, जघा विज्ञाहि चारणा मुणउ, जघाहिजाइपढमा, निस्सकाउरवि करेति

॥६०७॥ एगुप्पाएण गर्ड, रुयगवरं मिय तर्ड पडिनियत्तो; वीएणं नंदीसर, मि एइ तइएण समयेणं. ॥६०६॥ पढमेणं पंमगवणं, वीउ प्पाएण नंदणं एई, तइउ प्पाएण तर्ड, इह जंघा चारणो एई. ॥ ६०७ ॥ पढमेण माणुसोत्तर, मगंसु नंदी सरंतु वीएणं. एइ तर्ड तइएणं, कयचेइय वंदणे समणे. ॥६०७॥ पढमेण नंदण वणं, वीउप्पाएण पंमगवणम्मि; एइ इहंतइएणं,; जो विज्ञा चारणो होइ.॥६०७॥ अर्थः- चरण एटले गमन ते जेमां विद्यमान छे तेने चारण कहिये. तत्र वीजा मुनिर्डने पण गमन तो होय छे. पण इहा तो विशेषे करी गमन आगमननुं ग्रहण करवुं जेम आ कन्यारुप वर्ते छे . एम कह्याथी रूपवाला विशेषणे करी सहित होय तेनी पठे ए पण जाणवुं. तेम इहां अतिशय चारित्रनी समर्थाइये करी अ तिशय गमनागमननी लब्धियेकरी जे संपन्न होय तेने चारण कहिये ते वे प्रकार ना छे. एक जंघाचारण ने वीजा विद्याचारण तेमां जेने चारित्र अने तपना विशेष प्रजावथी उत्पन्न थयली गमना गमन विपयकलब्धि तेणे करी जे संपन्न होय तेने कहिये जंघाचारण अने जे विद्याना वशे करी उत्पन्न थएली गमनाग मन लब्धिए करी युक्त होय तेने विद्याचारण कहिये. तेमां प्रथम जंघाचारण प हेंला सूर्यना किरण निश्रा करी अवलंविने एकज उत्पाते उपडी चारित्रना अ धिकपणा थकी यावत् तेरमां रुचकवर द्वीपसुधी तिर्छो जवाने समर्थ थाय छे. त्यांना चैत्य वांदेछे. अने विद्याचारण नंदीश्वर द्वीप सुधी जई शके छे. तत्र जंघा चारण जे ठेकाणे जवानी इछा करे त्यांसूर्यना किरणोनुं अवलंवन करीने जाय छे. विद्या चारणो विषे पण एमज जाणी लेवुं.॥६०५॥तेमां जंघाचारण रुचकवर द्वीप प्रत्येजता छतां एकज उत्पाते करी जाय छे. अने पाछा फरतां एक उत्पाते नंदी श्वर नामा आठमा द्वीप प्रत्ये आवे छे; त्यां विसामो लेई अने वीजा उत्पाते पोताना स्थानके पाछा इहा आवे छे. ए तीर्छिगतीना एवी रीते त्रण उत्पातो जाणवा॥६०६॥ अने ज्यारे उर्ध्वगतियें जाय त्यारेप्रथम मेरुनी शिखर उपर जवा नीकले त्यारे ए कज उत्पाते करी पंमकवनपर जई चढे अने पाछो फरतां एक उत्पाते नंदन व नप्रत्ये आवेछे अने वीजा उत्पाते पोताना स्थाने आवेछे जघाचारणने चारित्रा तिशयना प्रजावेकरी लब्धीना उपजीवननेविषे उत्सुक्यना जावथी प्रमादनो संज व थायछे. तेथी चारित्रातिशयनु वंधन थईने तेनी लब्धिनी कांईक हीनता थाय छे. तेथी त्यांथी पाछा फरतां वे उत्पादे करी पोताना स्थानके आवे छे. ॥६०७॥
विद्याचारणो तिर्छिगतियें प्रथम उत्पाते करीनेज मनुष्योत्तर पर्वतप्रत्ये जायछे.

तथा बीजे उत्पाते नंदीश्वर द्वीपें जायछे त्यां जईने चैत्य वंदन करेछे त्यांथी पाछा फरता एकज उत्पाते करी पोताना स्थानप्रत्ये आवेछे ॥६०७॥ तथा उर्ध्वगतियें ते मेरुनी ऊपर जता पण प्रथम उत्पातेज नंदनवन प्रत्ये जायछे अने बीजा उत्पाते पंडकवन प्रत्ये जायछे त्यां चैत्योने वंदना करीने त्यांथी पाछा फरता एकज उत्पातेकरी पोताना स्थाने आवेछे कारणके विद्याचारणो विद्याना वशथी थाय छे ते माटे ते विद्यानो वारवार सेवन करिये तो अत्यंत चोखी थायछे. ते माटे ईहांथी जता एकवीसामो लियेछे पण पाछा फरता शक्तिना अतिशय पणाना सजवथी एकज उत्पातेकरी पोताना स्थाने आवेछे. पण क्यावीसामो लेतानथी ॥६०८॥ ए बे चारणोना नेद सूत्रकारे कह्या पण उपलक्षणथी बीजा पण घणा प्रकारना चारणो थायछे ते आ प्रमाणे –

आकाशमां फरनारा, पर्यंक आसने बेठा थका जाय कायोत्सर्गे स्थित थया थका कडी जाय पग ऊपाड्याविना आकाशमा जता रहे ए व्योमचारण जाणवा

बीजा वली वाव्य, नदी, तथा कूप समुद्रादिकनेविषे अपकायजीवनी विराधना कर्या विना जलनेविषे नूमिकानी पठे पग उपाडे ते जलचारण होय छे

बीजा वली पृथ्वीनी ऊपर चार आंगल आकाशमा जंघा ऊंची करवाने निपुण होय तेने जंघाचारण कहिये

नाना प्रकारना वृक्ष वेलीउं तथा पुष्पादिकनु ग्रहण करीने तेना सूक्ष्म जीवोने न विराधता कुसुमनी पांखडीना समुदायने अवलंबी रहेछे, तेनेपुष्प चारणो कहिय

बीजा चार सें योजन ऊचा निषेध तथा नीलवंत पर्वत छे तेना टुंक ऊपर सम श्रेणीयें आववा जवाने निपुण होय तेने श्रेणिचारण कहिये

बीजा अग्निशिखाने आश्रयीने तेजकाय जीवोने न विराधता अने पोत पण न बलता पगे करी गमन करवाने निपुण होय तेने अग्निशिखाचारण कहिये

बीजा धूमवर्त्ति ते तिर्यक अथवा ऊर्ध्व गमन करवाने अग्नीनी परे धुम्रनो आलंबन करीने जे अस्खलित गमन करे तेने धूमचारण कहिये

बीजा चाकाचूका वृक्षोना अंतरायमांना अवकाशमा जे कुब्जवृक्ष संबंधी कांनि आहानातंतुने आलंबन करी गमन करवाने जे समर्थ तेनेमर्कट तंतुचारण कहिय

बीजा चंद्र, सूर्य, ग्रह नक्षत्र तारादिकनी तथा बीजी कोई पण ज्योतिना किरणो आश्रयकरी गमनागमना करे तेने चक्रमण ज्योतिरश्मि चारण कहिये

जे सामो अथवा आपणांठो जे दिशाउनेविषे वायगंजनो होय ते दिशिये तेज आ काश प्रदेशनी श्रेणीने आश्रय करीने तेनी साथेज चाले तेने वायु चारण कहिये.

जे जालनुं अवलंबन करीने अपकायिक जीवने अणविराधता थका तेनीज साथे गति करे तेने नीहार चारण कहिये. इत्यादिक बीजा पण जलद एटले मेघ चारण; उंस चारण तथा फलचारणादिक जाणवा ए अढसठमो द्वार थयो.

अवतरणः— हवे 'परिहारविसुद्धि तवोति' एटले परिहार विशुद्धितपनो ओगणोतरमो द्वार कहेछे — परिहारियाणउतवो. जहन्न मज्झो तहेव उक्कोसो; सी उण्ह वास काले. नणिओ धीरेहि पत्तेयं ॥ ६१० ॥ अर्थः— जे परिहरिये तेने परिहार कहिये. ते तपविशेष जाणवो. तेणेकरी जे विचरे तेने परिहारिको कहिये ते बे प्रकारे छेः— एक निर्विशमानक अने बीजा निर्विष्टकायिक. तेमां विवक्षित तपविशेषने सेवनार होय ते निर्विशमानक कहिये. अने जेणे विवक्षित तप विशेषनुं सेवन कर्युं न होय ते निर्विष्ट कायिक कहिये. अही नव साधुओनो गण एटले गच्छ जाणवो. तेमां चार निर्विशमानक. एटले विवक्षित तपविशेपना करनार होय; अने चार अनुचारी एटले वेयावच्चगर होय तथा एक कल्पस्थित वाचनाचार्य करेलो होय. यद्यपि ए सर्व साधुओ श्रुतातिशय संपन्न होयछे तथापि कल्प होवाथी ते नवमांनो कोई पण एक वाचनाचार्य स्थापवामां आवेछे. निर्विशमानक तथा निर्विष्टकायिक ए बन्नेनो तप त्रण प्रकारनो होयछेः— जघन्य मध्यम तथा उत्कृष्ट ए त्रण प्रकारे परिहार विशुद्धियानो तप जाणवो ते शीतकाल. उसकाल तथा वर्षाकाल ए प्रत्येकनेविषे त्रण प्रकारनो जाणी लेवुं. एवुं धीर जे तीर्थंकर तेओए कयुं छे. ॥६१०॥ ते जूदोजूदो देखाडेछे.

अवतरणः— तेमां ग्रीष्म कालनेविषे करवानो तप कहेछेः— मूलः— तत्थ जहन्नो गिम्हे, चउत्थ छठं तु होइ मज्झिमओ; अठम मिह मुक्कोसो, एत्तो सिसिरे पवक्खामि ॥ ६११ ॥ अर्थः— ते त्रण कालोमां ग्रीष्म काल अतिरुक्ष होवाथी तेमा जघन्यथी तप चतुर्थ ते एक उपवासरूप जाणवो; मध्यम तप षष्ट ते बे उपवासरूप जाणवो; अने उत्कृष्ट तप अष्टम ते त्रण उपवासरूप होयछे. तप शब्द नपुंसक लिंगे छतां प्राकृत भाषाने लीधे सूत्रमां पुल्लिंगे राख्यामां आव्यो छे.

अवतरणः— एनी पछी शिशिरऋतु एटले शीतकालनेविषे करवाना तपविषे कहे छेः— मूलः— सिसिरे उ जहन्न तवो, छठाई दसम चरिम गो होई; वासासु अठमाई, बारस पज्जंत गो नेउ ॥ ६१२ ॥ अर्थः— शिशिर एटले शीतकाल ते ग्री

षमकालथी किंचित् साधारण छे तेनेविषे जे तप थाय छे ते आ प्रमाणे
जघन्यथी षष्ठम, मध्यमथी अष्टम अने उत्कृष्टथी दशम ते चार उपवासरूप
तु तथा वासासुके० वर्षा कालते साधारण कालने तेनेविषे जघन्यथी अ
मध्यमे दशम, तथा उत्कृष्टथी द्वादशम ते पांच उपवासरूप जाणवु ॥ ६१
मूल – पारणगे आयाम, पचसु गहो डुसु निग्गहो निरके, कप्पठियावि प
ण, करति एमेव आयाम ॥ ६१३ ॥ अर्थ – ए त्रणे कालनेविषे आविने प
णु थाय छे यथा संसृष्टादिक सात भिक्षा थायछे तेमांनी छेली पांचनु ग्रहण
रवु, अने आगली वे संसृष्ट अने असंसृष्ट एउनो त्याग करवो एटले उद्धृतादि
पाचज ग्रहण करवायोग्य छे एम जाणवु तेमां वली विविक्षित दिवसे ऊपर
कहेली छेली पाचमानी आज मारे वेज विवक्षित भिक्षा ग्रहण करवी एवा
र परिहारिकोनो तप जाणवो अने बीजा जे ते कल्पस्थितादिक पाच छे, तेमां
एक वाचनाचार्य तथा चार अनुचारिउ छे ए सर्वे पूर्वोक्त भिक्षाना अभिग्रहयुक्त
थया छता नीकाले प्रति दिवसे आविल करे ॥ ६१३ ॥

मूल – एव छम्मास तव, चरिय परिहारिया अणुचरति, अणुचरगे परिहारिय
पयठिए जाव छम्मासा ॥६१४॥ अर्थ –एम छमास सीम तप करी पछी परिहार
विशुद्धि तपवाला जे चार होय ते अनुचरो थाय अने जे पहेला अनुचरो हाय ते
परिहारिकना तपनेविषे समस्त प्रकारे स्थित थाय ते पण छ मास सुधीजाणवु ६१४

मूल – कप्पठिउवि एव, छम्मास तव करेइ सेसाउ, अणुपरिहारिय नाव, च
यति कप्पठियतव च ॥ ६१५ ॥ अर्थ – एम वार मास वीत्या पछी कल्पस्थित
जे वाचनाचार्य ते पण पूर्वोक्त न्याये करी छमास यावत् परिहारिक तप करे
अने वाकीना आठ अनुपरिहारिक नाव, ते वैयावृत्यकरपणु तथा वाचनाचार्य
पणाने कल्पस्थित पणे रहीने ग्रहण करे छे एटले सात वैयावृत्यकर थाय अ
एक वाचनाचार्य थाय एम जाणवु ॥ ६१५ ॥

मूल – एव सो अट्ठारस, मास पमाणो य वन्निउ कप्पो, सखेवउ विसेसो वि
सुत्ताउ नायवो ॥ ६१६ ॥ अर्थ – ए प्रमाणे कल्प जे आचार विशेष ते अ
मास प्रमाणवालो कह्यो ते संक्षेपे जाणवो अत्र जे सविशेष छे ते कृपा
विशेष सूत्रोथी जाणवु ॥ ६१६ ॥

अवतरण – हवे कल्पनी समाप्तिनेविषे जे कर्त्तव्य छे ते कहेछे – मूल – क
म्मत्ती इसय, जिणवाउ वितिगच्छवा ॥

ले पारिहारिकानुष्ठानरूपनी समाप्ति थयापठी फरी तेज पारिहारिक कल्पने पडिव जे अथवा जिनकल्प पडिवजे अथवा गछमांहे आवे ते परिहारिक विशुद्धिका वे प्रकारे ठे.– इत्वर ने यावत् कथिक. तेमां जे परिहारविशुद्धि कल्पनी समाप्तिअ नंतर परिहार विशुद्धि कल्पने अंगीकार करे अथवा गछनेविषे जाय तेने इत्वर कहिये. अने जे परिहारविशुद्धि कल्पनी समाप्ति थया पठी अवधाने करी जिनक ल्पने अंगीकार करे तेने यावत् कथिक कहिये उक्तंच –'इत्तिरिय थेरकप्पे, आ वकहियत्ति' एम जाणवुं अही इत्वरोने देव मनुष्य तथा तिर्यंचे करेला उपसर्गो जेवा के, तत्काल घात करे. एवा तथा जे अत्यंत दुःखेकरी पण सहन न थाय एवी वेदना उत्पन्न न थाय अने यावत्कथिकोने तो ए बधी वेदनाउनो संभव ठे उक्तंच –'इत्तिरियाणुवसग्गा आयंका वेयणाय न हवंति; आवकहियाण जइयाइति'

अवतरणः– आ कल्प जेनी समीपे अंगीकार कराय ठे ते दोढ गाथाये करी कहेठेः– पडिवज्जमाणगा पुण, जिण सग्गासे पवज्जंति. ॥ ६१७ ॥ तित्थयरसमीवा. सेवगस्सा पासेवनोवअन्नस्स, ए एसिंजंचरणं. परिहारविसुद्धिगंतु ॥ ६१८ ॥ अर्थः– परिहारविशुद्धिकल्पने पडिवजणहार जिन सकासे एटले तीर्थंकरनी पासे अंगीकार करे अथवा तीर्थंकरनी समीपे जेणे आसेव्यो ठे तेनी पासे अंगीकार करे ए वेने मूकीने बीजानीपासे प्रतिपत्ति थाय नही एओनुं जे चरण एटले चा रित्र ते परिहारविशुद्धि कहेवाय ठे. परिहार जे तपोविशेष तेणेकरी विशुद्धि एटले निर्मलता जे चारित्रमां थाय एवी एनी व्युत्पत्ति जाणवी ॥६१७॥६१८॥अहिं ए परिहा र विशुद्धिका कया क्षेत्र अथवा कया कालनेविषे संभवेठे तेना निरूपणने अर्थे श्री पन्नवणा उपांगना पहेला पदे एना वीस द्वारोनी परूपणा करीठे ते कहिये ठइये.

१ तेमां क्षेत्र द्वारनेविषे बे प्रकारनी मार्गणा ठे.– एक जन्मथी ने बीजी सद् भावथी तेमां जे क्षेत्रमां जन्म थयो होय त्यां जन्मथी मार्गणा जाणवी. अने ज्यां कल्पनो अंगीकार थायठे त्यां सद्भावथी मार्गणा जाणवी. हवे जन्म अने सद्भाव आश्री पांच भरत तथा पांच ऐरवतमां प्राप्त थायठे, पण महाविदेहनेविषे नथाय. जेणे करी जिनकल्पिकोनी पठे संहरणथी सर्व कर्मभूमिनेविषे अथवा अकर्म भूमिनेविषे प्राप्त नथाय उक्तंच –'खेत्ते भरहे रवए, मुहुंति सहरण वज्जिया नियमा';

२ काल द्वारनेविषे अवसर्पिणीना तृतीय अथवा चतुर्थ आरकमां जन्म जा णवो अने सद्भाव तो पांचमा आरामां पण जाणवो. अने उत्सर्पिणीना द्विती य, तृतीय, अथवा चतुर्थ आरामां जन्म जाणवो अने त्रीजे तथा चोथे आरे

सद्भाव जाणवो उक्तंच – उस्सप्पिणीउ दोसुं जम्मणउ तीसु संति भावे य' उत्सर्पिणी विवरीउ, जम्मणउ संति भावे य' उत्सर्पिणी अवसर्पिणीरूप आरकप्रति भागकालनेविषे जन्मनो संभव न थाय केमके महाविदेह क्षे पे तेहनो असंभव छे माटे.

३ चारित्र द्वारे संयम स्थानने द्वारे करी मार्गणा करवी त्यां सामायक रित्र अने छेदोपस्थापनीय चारित्रनाजे जघन्य संयम स्थानक छे ते समान णाम पणाये करीने माहोमांहे तुल्य छे ते माटे असंख्यात लोकाकाश प्रदेशप्र ण जे संयमस्थान तेने उल्लंघीने उंचाजे संयम स्थानक ते परिहार विशुद्धिक योग्य अने तेपण केवलीनी दृष्टीयें चितवता असंख्येय लोकाकाश प्रदेशप्रमाण थाय अने धुरला बे चारित्र तेने अविरुधि पणे करीने तेनो ईहां संभव थाय छे वली ते थकी उपरलाजे संयमस्थानकते सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात चारित्रने योग्य होय त्यां हवे जेने पडिहार विशुद्धिनामा कल्पनो पडिवजवोछे ते पोतानी मे लेज तेटलाज संयम स्थानकनेविषेज थाय अने शेषस्थाननेविषे नजथाय अने जेवारे अतीतनय अधिकरी जोईये तेवारे पूर्वप्रतिपन्ननी विवक्षा करिये तेम विवक्षा कर तां शेषसंयम स्थानकनेविषे पण होय जे कारणे परिहार विशुद्धिकल्पनी समाप्ति होय तेवारे अनेरा चारित्रनो पण संभव हायछे एम अनेरा चारित्रनेविषे वर्तमान अने अतीत नयनी अपेक्षाये पूर्वप्रतिपन्ननो अविरोध होय

४ पर्याय द्वारनेविषे, पर्याय बे प्रकारे छे – गृहस्थ पर्याय तथा यतिपर्याय ए प्रत्येक वली व बे प्रकारे छे – ते जघन्यथी तथा उत्कृष्टथी छे तत्र गृहस्थ पर्याय उ घन्यथी उगणत्रीश वर्ष अने यतिपर्याय जघन्यथी वीश वर्ष अने बने उत्कृष्टथी देशऊणा पूर्वकोटि प्रमाण उक्तंच पंच वस्तुके – एयस्स एसनेउ, गिहि परियाउ जहन्न ईगु तीसा, जइ परियाउ वीसा, दोसवि उक्कोस देसूणा इति वली जे सूत्रनेविषे – जम्मेण तीस वरिसो, परियाए णिगुणवीस वरिसो य, परिहार प० ीउ, कप्पइ मणुउक्कुएरिसहो ॥ १ ॥ इत्युक्त

५ तीर्थ द्वारे निश्चेथकी तीर्थप्रवर्त्ततामां होय परंतु तीर्थने अणप्रवर्त्ते तथा तीर्थनेवि छेति नियमउच्चि होइ,संतिउमिन उणतह भावेवि,गएणुपत्तेवाजाईसरणाइएहिं उ द आगम द्वारमां ते पुरुष अपूर्व आगमनो अध्ययन करतो नथी केमके परिहा शुधिकनो कल्प अधिकरीने आदर्योछे जे तप तेना आराधवेकरी तेकृत्य क

त्थयाय अने पूर्वाधित श्रुतने निरंतर मन स्थिर राखवाने अर्थे एकाग्रचित्ते स्मर रणकरेछे यडुक्तं अपुव्वं नाहि कुइ आगममेसो पढुव्वतं कप्पं; जमुचिय पगहियजो गाराहणउ ए सकयकिच्चो ॥१॥ पुव्वाहीयं तु तयं पायं अणुसरइ निच्चमेवेसो; एग ग्गमणोसम्मं विस्सोयत्तिगाय खयहेउं. ॥२॥

७ वेद द्वारें प्रवृत्तिकालें मात्र पुरुषवेद अने नपुंसकवेद ने परिहार विशुद्धिप णो संनवेछे पण स्त्रीवेदने संनवतो नथी अने अतीत नयने अधिकरीने जो पूर्व प्र तिपन्ननो चितन करियें तो सवेदि अने अवेदिपण होय तेमां श्रेणीप्रति पत्तिना अन्नावे सवेदी अने उपशम श्रेणी अथवा क्षपकश्रेणी प्रतिपत्तिने स्थानके अ वेदि उक्तंच वेदोपवत्तिकाले इत्थी वज्जो उहोइ एगयरो ॥ पुव्वपडिवन्नगो पुण, हो इ सवेदो अवेदोवा ॥ १ ॥

८ कल्प द्वारमां स्थितकल्पमां होय परंतु अस्थित कल्पमां न होय ठियकप्पं मियनियमा इतिवचनात् तेमां आचेलिकादिक दशस्थानननेविषे रहेलाजे मुनि तेने स्थित कल्पि कहियें अने जे शय्यातर पिंमादिक चारकल्पोमां रहेनारा अथवा चेलकादिक बाकीना ठ कल्पोमां रहेनारा होय तेउना कल्पने अस्थित कल्प कहेछे.

ए लिंग द्वारमां नियमेकरीने द्रव्यलिंग अने न्नावलिंग ए बन्ने लिंग जाणवा प रंतु एके लिंग विना पण विवक्षित कल्पने पडिवजवानो अधिकार नथी

१० लेश्या द्वारे तेजोलेश्यादिक त्रणलेश्याये पडिवजे अने पूर्वप्रतिपन्न सर्व लेश्याये पडिवजे ते कोईकने थाय त्यां अत्यंत अशुद्ध लेश्याये प्रवर्त्तेनही किंतु थोडीसीवेलारही आपणा वीर्यनावले पाछो वले परतु कर्मने वसे प्रवर्त्ते नही.

११ ध्यान द्वारमां प्रवर्द्धमान धर्मध्यानेकरी परिहारविशुद्धिक कल्पने पडिवजे अने पूर्वप्रतिपन्न आर्त्त रौद्र ध्यान पण थाय छे परतु त्यां घणो रहे नही.

१२ गणना द्वारमां जघन्यत्वे करी त्रण पडिवज्जे अने उत्कर्षे करीने एकसो ग ण पडिवजे अने पूर्वप्रतिपन्न जघन्य अने उत्कर्षेकरी सो गण पडिवजे पुरुष ग णनायें जघन्य सतावीस पडिवजे उत्कृष्टेकरी एक हजार पडिवजे तथा पूर्व प्रतिपन्न जघन्यथी अने उत्कर्षेकरी एकसो पृथक्त्व अथवा एक हजार. आहच गणउ ति न्नेवगणा; जहन्नपडिवत्ति सयस उक्कोस; उक्कोस जहन्नेणय, सयसोच्चिय पुव्वपडिवन्ना ॥ १ ॥ सत्तावीसजहन्ना, सहस्समुक्कोसकअपडिवत्ति ॥ सयसो सहस्ससोवा, पुव्वपडि वन्न जहन्न उक्कोसा ॥ २ ॥ ज्यारे पूर्वप्रतिपन्न कल्पमांथी एक निकलेछे अने बी जो प्रवेश करे छे त्यारे नाना प्रक्षेपने विषे प्रतिपद्यमान कोईवारे एक थायछे अ

थवा पृथकत्व एटले जुदाजुदा पण थायछे अने पूर्वप्रतिपन्न पण एमज कोईक वारे एकज थायछे अथवा जुदाजुदा पण प्राप्त थायछे उक्तंच पडिवक्कमाण न यणा, एहोक्क एकोविऊण परकेउ ॥ पुव्वपडिवन्न आविय, नईया एक्को पुहत्तवा ॥१॥

१३ अनिग्रह द्वारमां द्रव्यादिक चारे अनिग्रह ग्रहण थता नथी केमके आ कल्पज यथोक्त स्वरुपे महा अनिग्रह रुपछे उक्तंच दव्वाईय अनिग्गह, त्ति विन रुवान हुति पुणकेई ॥ एअस्स जावकप्पो, कप्पोच्चि यनिग्गहो जेण ॥ १ ॥ एयम्मि गोय राई, नियमानियमेण निरववादाय ॥ तप्पालण वियपर, एअस्स विसुद्धिठाणतु ॥२॥

१४ प्रव्रज्या द्वारमां ए परिहार विशुद्धिक कोईने दीक्षाआपे नही पण यथा शक्तिये उपदेश आपे उक्तंच ॥ पव्वावेइनएसो, अन्नकप्पठियएत्ति काऊण॥१॥ नति

१५ मुंडापना द्वारे ए कोईने मुंडन करे नही ईहां कोई पूछे जे प्रव्रज्याने अनंतर नियमे मुंडन थाय माटे प्रव्रज्या ने ग्रहणे एनो पण ग्रहण थयो तेम छतां जु दो द्वार केम कह्यो तेनो उत्तरजे प्रवर्ज्या द्वारमा नियमे मुंडननो असंभव छे के मके अयोग्यने कोईके प्रवर्ज्या दीधाछता पण पछी योग्यताने जाणपणे मुंडनना अयोग्य पणोछे तेमाटे जुदो द्वार कह्यो

१६ प्रायश्चित द्वारमा सूक्ष्म अतिचार कपनाछता पण निश्चेथी चारेगुरुनो प्रा यश्चित थाय केमके ए कल्प एकाग्रतायें थायछे तेमाटे तेना जगथी गुरुदोष लागे

१७ कारण द्वार कारण शब्दे आलंबन कहिये ते रुडीपरे जे शुद्धज्ञानादिक वतहोयतेने आलंबन नहोय केमके जेना आश्रयथी अपवाद पदनो सेवनार था य एवो कांई ते अंगीकार करेज नही एणेतो निरापेक्षपणे जे कर्म क्षय निमिते तप ने प्रारंभ्योछे तेहिज यथोक्त विधियेकरीने पूरणकरे

१८ नि प्रतिकर्म द्वारमां शरीर आश्रयीतो आखमा पडेलो मेल मात्र पण का ढेनही कारण तेनो शरीर नि प्रतिकर्मछे माटे अने प्राणांत उपसर्ग आवे तापण अपवाद सेवेनही उक्तंच निप्पडिकम्म सरीरो, अच्छिमलाइव्विना वणेऽसया पाए तिणवियमहा, वसणम्मि नवट्टए वीए ॥१॥ अप्पबहुत्तालोयण, विसया ऽ उ उ हांर एसत्ति, अहवा सुहुत्तावाउ, बहुगपेय चिय ईमस्स ॥ २ ॥

१९ भिक्षा द्वारमा परिहार विशुद्धिक भिक्षा अने विहार ए बेहु त्रीजा प होरने विषे करे तथा बाकीना पहोरनेविषे कायोत्सर्गकरे निद्रातो स्वल्प जणाय छे अने जो कोईपण कारणे एनु जंघाबल क्षीण थयुं होय तेथी विहार न थाय तथापि ते महानाग्यवान अपवादने सेवन करे नही किंतु यथा योग्यपणे ये

तानो आचार पूरो करे. उक्तंच तइयाए पोरिसिए, निरकाकालो विहारकालोय, सेसा सुय उस्सग्गो, पायं अप्पाय निद्दत्ति ॥ १ ॥ जंघावलंमि खीणे, अविहरमाणो वि नवर नावक्के, तत्थेव अहाकप्पं, कुणइ उजोगं महानागो ॥ २ ॥

२० बंध द्वारे ए परिहार विशुद्धिक बे प्रकारेछे तेमांजे कल्प समासे तेहिज कल्प पडिवजे अथवा गच्छमां आवे ते इत्वर अने बीजा जे आंतरा रहित जिनकल्प पडिवजे ते यावत् कथिक जाणवो वली एटलो विशेष जे इत्वरने एकल्पना प्रजावथकी देव मनुष्यकृत उपसर्ग तथा तत्कालमरणने आपे एवा रोगादिक तथा सहन करवाने दोहिली ऐवी वेदना पण नथाय अने यावत् कथिकने एवी वेदनाउनो संनव छे ए वीसमो बंध द्वार थयो विस्तारे शास्त्रांतरथकी जाणवो एवीरीते ए परिहार विशुद्धिकनो उंगणोतेरमो द्वार समाप्त थयो.

अवतरणः—अहालंदत्ति एटले यथा लंदिसाधुनो सीतेरमो द्वार कहियेछे. मूलः— लंदंतुहोइकालो, सोपुण उक्कोस मज्जिम जहन्नो ॥ उदउल्ल करो जाविह, सुक्कइसोहोइ उजहन्नो ॥ ६१९ ॥ अर्थ.— सिद्धांतनी परिज्ञाषाये लंदशब्दे कालनो उच्चारण थायछे माटे लंद शब्दे काल समजवो ते काल उत्कृष्ट मध्यम अने जघन्य एम त्रण प्रकारेछे तेमां उदउल्ल करोके० पाणीयेकरी जीजेलो हाथ जेटला कालमां सुकाईजाय तेने जघन्य काल कहेछे आटला कालने जघन्य जे कह्योछे ते मात्र प्रत्याख्यानना नियमविशेषने लीधे जाणवो अन्यथा सिद्धांतमांतो कालनो जघन्यपणो समयादि लक्षण अतिसूक्ष्मतरने कह्योछे ॥ ६१९ ॥

अवतरणः— हवे उत्कृष्ट अने मध्यम कालनो परिमाण कहेछे. मूल·— उक्कोसपुव्वकोडी, मज्जे पुण हुंति णेगगणाइं ॥ इत्थपुण पंचरत्तं. उक्कोसं होइ अहलंदं ॥ ६२० ॥ अर्थः—उत्कृष्ट कालमानतो पूर्वकोटी संख्याप्रमाणछे ते पण चारित्रना कालमान आश्रयेंकरीने उत्कृष्ट कहेलोछे अन्यथा पल्योपमादिरूप एवोपण उत्कृष्ट कालनो संनवछे. पुणके० वली मज्जेके० मध्यमकालना वरसप्रमुख जेदेकरी णेगगणाइके० अनेक स्थानक हुंतिके० छे. ॥ ६२० ॥

अवतरणः— ईहां पाच रात्री प्रमाण उत्कृष्टो लंद होय तेज देखाडेछे. मूलः— जम्हाउ पंचरत्तं, चरंति तम्हाउ हुंति अहलंदी ॥ पंचेव होइ गछे, तेसिंउक्कोस परिमाणं ॥ ६२१ ॥ अर्थः— जम्हाउके० जे माटे पंचरत्तंके० पाच अहोरात्रलगे पेटाई एटले पेटादि वीथीयें ग्रामादिकनेविषे निक्षाने अर्थे देह निर्वाह करवा सारुं चरतिके० विचरे तम्हाउके० ते कारण पणा माटे हुंतिके० थाय छे अहलं

टीके० यथालंदी अने जेनो पचेवहोऽगछेके० जे पांचनो समुदा
एटले लंदिकाना पचक ए नामना गण एवा कल्पने प्राप्तथाय
गणनाये ए पुरुष परिमाण उत्कृष्ट ठे एम समजवु ॥ ६२१ ॥
। अवतरण –हवे एमाना सर्व प्रकारनो कथन करतां ग्रंथगौरव
लीधे नथी करता पण यथा लदिनो जिनकल्पनी साथे समपणो अने
येठे मूल –जाचेविय जिणकप्पे, मेरासाचेव लदियाण तु,नाणत्तपुण
मासकप्पेय ॥६२२॥अर्थ –जाचेवके०जे जिणकप्पेके० जिनकल्पिकने
रनी तुलनादिरूप मेराके० मर्यादाकहेलीठे साचेवके० तेज मर्यादा ल
यथालदिने माटे पण घणु करीने कहेलीठे अने नाणत्तके०नानात्वनेद
ठ अने यथालदीने घणुकरी सरखाजठे पुणके०वली सुत्तेके० सूत्रनेविषे
नेविषे मासकल्पनेविषे अने चकार शब्दे प्रमाण विषयिनेविषे नेद प
अवतरण – हवे विधानपूर्वक थोडु कहीने प्रथम मासकल्पनो ने
खाडेठे, मूल – अहलंदियाणगछे, अप्पडिवद्धाण जहजिणाण तु ॥ नव
सेसो, उउवासे पणगचउमासो ॥ ६२३ ॥ अर्थ –तेमां प्रथम यथालदिक
रनाठे एकगछनेविषे प्रतिवद्ध अने बीजा अप्रतिवद्ध एवा बे नेद ठे, ते
लदिकने गछनेविषे प्रतिबंध ते कारणपरत्वे कांई न साचलेलो जे अर्थ तेने
वाने माटे ठे एवु मानवु त्यारपछी यथालदिकने गछनेविषे अप्रतिबंधनु
ण ठे अने प्रतिबंधोनी तवेण सत्तेण इत्यादिक नावनारूप सपूर्ण पण सामा
ठे ते जेवी जिनकल्पिकोनेविषे पूर्वे कहेली तेवीज जाणवी, हवे नवरके० ए
जे उउवासे पणगचउमासेति एटले ऋतुबधकालमा यथालदीक साधुउ
विस्तीर्ण ग्रामादिक होय तो ते गामनी ठ प्रकारनी गृहपक्तिरूप ठेरी करीने ए
एक सेरीमा पाच पाच दिवस निक्षाटन करेठे ते निक्षा घृतादिक पाच मादेलीड
दीछुदी निक्षा लिये जे एक दिवशे लीधी ते बीजे दिवशे लिये नही अने तेज विधिये
वास पण करेठे ए प्रकारे ठ वीथीये करीने एक गाममा मास पूर्ण करेठे हवे
जो तेवु मोटु गाम न होय तो तेनी पासेना नाना नाना गाममा पाच पाच दि
वस रहेठे अने वर्षाकालना चारमास एक गाममा रहे उक्तच कल्पनाष्ये एक्के
क पच दिणे, पण पणउ निठिउमासो, एतच्चुर्णिश्च जइ एगोचिव मासो सवियारा
त्ति विठिन्नोतोठवी हीउंकाउ एक्केकी ए पच पच दिवसाणि हिंडति निक्खाए वि

पंच दिवसे जाव ठाईए. वि पंच दिवसा एवं एग गामे मासो भवइ अहवाह्नि एगो
गामो नवियासो तो वसइ अहालंदीया ए उगामे विक्खंभ पविसंतो तिंति एक्केक्क पं
चदिवसागि अडंति एवं मासो विगिक्कमासो पण पण निट्ठियं होंति ॥६२३॥

अवतरण — हवे गच्छ प्रतिबंध तथा अप्रतिबद्ध यथालंदिकोना परस्पर भेद
कहे छे — मूल — गच्छे पडि बद्धाणं. अहालंदीणं तु अह पुण विसेसो. उग्गह जो
ते सिं तु. सो आय रियाण आभवइ ॥ ६२४ ॥ अर्थः— अर्थादिकना कारणे गच्छ
संघाते प्रतिबद्ध छे जेने एवा यथालंदिकोने गच्छ अप्रतिबद्ध यथालंदिक साथे पु
र्वोक्त वली अद्भुत एटलो विशेष भेद छे. ते कहे छे. गच्छ प्रतिबद्ध यथालंदि
कपणाना जे शेष पंचक लक्षण क्षेत्रावग्रह कहेलो छे ते तेवाज आचार्यना निश्राये क
रीने विहार करे छे तेज आचार्यना परान क्षेत्रावग्रह थाय छे. ए तात्पर्य. हवे ग
छमां अप्रतिबद्ध जे छे तेने जिन कल्पीनी जेम क्षेत्रावग्रह नथी ए भेद छे॥ ६२४ ॥

अवतरणः— वे प्रकारना यथालंदिकोना पण भिक्षाटनना नाना प्रकार
कहे छे.— मूलः— एगवसहि ए पणगं छव्वीहि उय गामिकुव्वंति. दिवसे दिवसे अ
न्ने अडंति वीही सुनियमेण ॥ ६२५ ॥ अर्थः— ऋतुबद्ध कालनेविषे एटले शीतऋ
तु तथा ग्रीष्मादि आठमासमां एक उपाश्रयमां मात्र पांच दिवसपर्यंत रहेछे.
अने वर्षाऋतुमां चार महिना रहे छे. गाममां छवीथीउ एटले शेरीउ करीने रहेछे.
हवे एमां एवो अर्थ छे के यथा लंदिक जे ते गृहपंक्तिरूप छ शेरीए गामने विषे
कल्पना करे छे. अने एक एक शेरीने विषे पांच पांच दिवस भिक्षापर्यटन करेछे.
तथा त्यांज वास करे छे. उक्तंच पंच कप्प चूर्णौ. छप्पागे गामो काऊण एगेगा पंच
दिवसंहिं भिक्ख तत्तेव वसंति वासासुएगच्च चउम्मासोत्ति" ते शेरीमां दिवसे दिवसे नि
यमें करीने पसार भिक्षा पर्यटन करे छे. ऋतुनादि भिक्षासंचक मांथी जे एक दिव
से करे छे तेज फरी बीजे दिवसे करे नहीं. एटले हमेशां जुदी जुदी भिक्षा करे
छे. ए भाव छे. आ प्रमाणे अमे कहेलुं छे ते उपल प्रकारनी बुद्धिवाळा पुरुषो
ए समयाविरोधे करी बीजा प्रकारनुंपण व्याख्यान करवुं एवो अमारो आशय छे.

अवतरणः— हवे सूत्रना नाना प्रकारनो कथन करतां प्रथम यथालंदिक
ना भेद कहे छे.—मूलः— पडिबद्धा इयरे विहु, एक्किक्का ते जिणाय थेराय॥ अह
लंदेसंतिय. अलंमलंतेसि पडिबंधो ॥६२६॥ अर्थः—यथालंदिक बे प्रकारना छे.
एक गच्छ प्रतिबद्ध अने इतरकेo बीजा गच्छ अप्रतिबद्ध. ते बंने वली दरेक बबे प्रका
रना छे. एक जिन कल्पिक अने बीजा स्थविर कल्पिक. तेमां जे यथालंदिक कल्प

समाप्ति करी पछी जे जिन कल्पने पडिवजसे ते जिन कल्पिक जाणवो
पछी स्थविर कल्पिने पमिवजे ते स्थविर कल्पिक जाणवो हवे जे गछनेविषे
वद्द थाय छे ते अनेक प्रकारे करी थाय छे तेना कारण कहे छे अछस-
अर्थनोजे देश कहिये शेष तेने अर्थे एटले गुरुने सन्मुख जे सूत्रनो
करवामांमयु तेनी समाप्ति थइनथी हजी असमत्त के० पुरो कर्यो नथी केट
वाकी रहुछे ते पूरो करवाने अर्थे यथालदिकने गछमा प्रतिवद्द थाय छे ॥६
अवतरण – इहां कोइपूछेजे त्यारे सूत्रार्थ पूरण करीने पछी यथालदिप
केम पडिवजतो नथी तेने उत्तर कहे छे मूल –लग्गाइसु त्तरते, तोपडिवज्जिउ
लग्गाइसुके० शुभलग्न आदिशब्दथकी शुभयोग अने चद्रवलादिक तुरतनो आव्यो
जाणी अने बीजो मुहूर्त्त हजीघणो दूर होय तेवारे गुरु समीपे प्रारभ करेला अ
र्थ पूरण कर्याविनाज ते शुभमुहूर्त्ते पडिवजे पछी ते गछमाथी निकलीने गुरुने
क्षेत्रमां अथवा ग्राममा अथवा नगरमा रह्याहोय ते नगरथी वाहिर केटलेक दू
र क्षेत्रे जइ रहे त्यां ते अत्यत विशिष्ट कठोर एवा समस्त अनुष्टान ग्रहण
करे अने त्या जयगहिअ के० गुरुपासे जे नथी अध्ययन करेलो अर्थ, ते तेने
गुरु पोते दयावत छतो तेना स्थानके जईने ते यथालदिने विशेष अर्थसमजाविआपे
आशका – ते यथालदि पोतेज गुरुने सन्मुख आवी विशेष अर्थ केम सम
जो जतो नथी तत्रोत्तर मूल – तेसितय पयछइ, खेत्त इताण तेसिमे दोसा, वद्दत
मवद्दते, लोगमि होइ परिवाउ ॥ ६२८ ॥ अर्थ – ज्या गुरुहोय ते क्षेत्रमां जो
ते यथालदिक आवे तो तेने अनेक दोष प्राप्तथाय ते दोष कहेछे – जो यथाल
दिक त्या गुरुपासे आवे तो गछमा रहेनारा साधुउ तेने वदना करे तेछकाणे
करी यथालदि तेने वांदेनही केमके ए यथालदिक कल्पनो एवोज आचार छे के
पोताना गुरु आचार्यादिक सीवाई बीजा कोइ साधुने वदन करे नही तेवारे वी
जा गछवासी साधुउए वांदावता जो यथालदि न वांदे तो लोक निंदाकरे के आ
यथालदिक साधु दुष्टशील अने निर्गुण छे केमके बीजा साधु मुनिराज एने व
दन करता छतां ए तेमनीसाथे भाषण पण करतो नथी अने वदन पण करता
नथी एवी निदानी शकाछे वली ते गछमां रहेला साधुने पण लोको एम कहे के
ए अवश्य भ्रष्टने दुष्टशील छे निर्गुणने माटे एने वादे छे पण उत्तम हापत
नही अथवा ए गछवासीयोने एमां काइ स्वार्थ...

इत्यादि अपवाद थाय माटे आचार्य ते यथालंदिने सन्मुख जईने अर्थआपे
मूल — नतरेइ जाजइगंतुं. आयरिउनादि एइओचेव ॥ अतर पल्लिपडिवस. नगा मवसहिय वसहिंवा ॥ ६२७॥ तिगरइअपरिनोगं. तेवदंते नवदइसोउ. तरंतुस पडि वक्षा. नाहिंजलिंगाइ विहरंति ॥६२७॥ अर्थ—कदाचित ते आचार्यनो जंघाबल की एहोय तेथीते सामां जई शके नही तो पोताना मूल क्षेत्रथी अढीगव्यूत कपरनो नि कटवर्ती संबंधी ग्रामविशेष तेने अंतरपल्ली कहिये त्यां जाय अथवा मूलक्षेत्रथी बा हिर अथवा मूलक्षेत्रज बीजी वस्तिमा आवे वाशब्द थकी अथवामूलगी वस्तियेंआवे

इहा ए नाव के जे आचार्य यथालंदिने समीपे जई शके नही तो ते यथालं दिमांहे जे धारणा कुशल होय ते अंतर पल्लीयें आवे त्यां आचार्य तेने जईने अर्थ कहे इहां वली संघाडीआ साधु ते मूल क्षेत्रथी अशन पान लेईने आचार्यने आपे पछी ते गुरु नोजन करी मध्यान्हमयें पोतानी मूलगी वस्तियें आवे

हवे ते गुरु जो अंतर पल्लीयें पण आववाने असमर्थ होयतो अंतरपल्ली अने प्रतिवृषनग्रामने विचाले जई अर्थ कथनकरे त्यांपण जावाने असमर्थ होयतो प्रतिवृषनग्रामेजाय त्यां जई न शके तो प्रतिवृषनग्राम अने मूलक्षेत्रविचालेजाय त्यां जइ न शके तो मूल क्षेत्रथी बाहेर ज्यां कोई लोक नहोय एवा एकांत प्रदेशे जाय त्यांपण जइ नशके तो मूलक्षेत्रमाज बीजे स्थानके जाय त्यांपण जइ नश के तो मूलक्षेत्रनी वस्तिमांहेज गुप्तस्थानके ज्यां बीजा लोक न होय त्यां आचार्य तेने अर्थ आपे एम त्यां गया थका तेने गच्छवासी साधुवांदे पण ते यथालंदि त्यां गच्छ वासीया साधुने वांदेनही पछी ते अर्थ शेष अप्रतिबद्ध छतां लेइकरीने पछी ज्यां पोतानी इच्छामा आवे त्यां विहारकरे उक्तंच कल्पचूर्णौ आयरिएसुत्तपोरसिं अछ पोरिसिंच गच्छेनियाणदाउं अहालंदियाणं सगामगंतुं अछंसारेइ अहनतर इदोवि पोरिसीउ दाउंगंतु तोसुत्तपोरिसिंदाउंवच्चइ ॥ अछपोरिसिंसोसेणदवावेइ अछसुछ पोरिसिंपिदाउं गतुनतरइतो दोविपोरिसीउ सीसेणवायावेइ अप्पणाअहालंदिएवाएइ जइनसक्केइआरिउजंवेत्तवहि अथा लंदियसगासगंतु ताहेजोतेसि अहालंदियाण धार णाकुसलो अंतरपल्लि आसन्ने खेत्तवसहिंएति आयरियातस्सगंतु अछंकहति एछपुण संघाडो नत्तपाणंगहाय आयरियस्स नेइगुरु वेयालियंपडिएइति एवपिअसमछे गुरु अं तरपल्लियाएपडिवसनगामस्सय अंतरावा एइत्तिअसतिपडिवसनेवाइए असतिपडिव नस्सवसगामस्स य अंतरावाएत्ति असतिवसनगामस्सवहियाएवाएति अंतरते संगामे अन्नाएवसहीए अंतरते एगवसहीएचेव अपरिनोगउवासेवाएति इत्यादि ६२७॥६२९

अवतरण — हवे जिनकल्पिक यथालंदिक अने स्थवरकल्पिक यथालंदिकनो मांहो मांहेजेविशेष भेदछे ते कहेछे मूल — जिणकप्पियायतह्यि, किंचिविगिच्छंपितेनकारिंति, निप्पडिकम्मसरीरा॥अविअच्छिमलंपिनचणिति ॥६३०॥ अर्थ — तेमा जिनकल्पिक यथालंदिक तो पोताना कल्पमा स्थित समये मरणात रोगादिक उत्पन्न थता तेना नाशने अर्थे काइपण चिकित्सा करता नथी केमके तेनो नि प्रतिकर्म शरीर एटले पोताना शरीरे प्रतिक्रिया रहित छे माटे ते भगवत पोताना नेत्रतणी मेल मात्रनेपण काढतानथी ते कल्पस्थितनो एवुज लक्षण छे ॥ ६३० ॥

अवतरण — हवे स्थविर कल्पिक यथालंदिक कहे छे — मूल — थेराण णाणत्त, अतरत्त अप्पिणंति गच्छस्स, तेवि असे फासुएण, करिंति सवपि परिकम्म ॥ ६३१ ॥ अर्थ — स्थविर कल्पिक यथालंदिक ते वली नानात्व एटले अनेक प्रकारे थाय छे ते आवीरीते — अतरत्त के० पोताना समुदायनो साधुहोय तेना शरीरे उत्पन्न थयेलु रोग सहन करी नशके तो ते यथालंदि पाछा गच्छमा जाय अने ते गणपंचक पूरो करवाने अर्थे ते गच्छमा रहेनार उत्तम ज्ञानवंत अने प्रति प्रमुखे करी युक्त एवा बीजा मुनिने पोताना कल्पमा प्रवेश करावे पछी ते गच्छमा गयला रोगी साधुने बीजा गच्छवासी साधुउं प्रासुक अन्न पान औषधादिके करी समस्त परिकर्म घणा प्रकारे करे ॥ ६३१ ॥

हवे कोने वस्त्रपात्र थाय अने कोने नथाय ते कहे छे — मूल — एकेक परिग्गहगा, सप्पाउरणा हवंति थेराउं ॥ जे पुणजिणकप्पे, जयए तिं वत्थपायाइ ॥ ६३२ ॥ अर्थ — स्थविरकल्पक यथालंदिक पाचे प्रत्येक एकेक पतद्ग्रह धारण करे छे अने सप्पाउरणाके० प्रावरण एटले वस्त्रेकरी सहीत होय अने जे यथालंदिकोमाथी पछी जिनकल्पमा जसे एटले जिनकल्पिक यथालंदिक होय तेउने प्रत्येक वस्त्र, पात्र, पततद्ग्रह, ए सर्वनी भयणाके० भजना छे एटले केटलाएकोने वस्त्र, पात्र, इत्यादिक साधन होय, अने केटलाकने ते साधन न होय एवा अवातर भेद छे ॥ ६३२ ॥

अवतरण — हवे सामान्ये करीने यथालंदिक साधुना प्रमाण कथन करे छे गणमाणउंजहन्ना, तिन्नि गण सयग्गसोय उक्कोसा ॥ पुरिसपमाणे पनरस, सहस्स सोचेव उक्कोसा ॥ ६३३ ॥ अर्थ — गणमाणउं के० गच्छना प्रमाण थकी जहन्नाके० जघन्ये करी तिन्निगणके० त्रणगण थाय अने उक्कोसाके० उत्कृष्टे करी सयग्गके० शतपृथक्त्व गण थाय तेमज पुरिसपमाण

के० पुरुष प्रमाण करियें तो जघन्य पनर पुरुष थाय छे केमके ए कल्पमां प्रत्ये क पांच पुरुष होय छे ते पांचने जघन्य त्रण गणेकरी गुणियें तेवारे पन्नर पुरुष थाय छे अने उत्कृष्ट पुरुष प्रमाणतो सहस्स सोचेवके० एक सहस्र पृथक्त्वथाय

हवे सहस्र पृथक्त्व पुरुष प्रमाणनाज आश्रयेकरीने फरी विशेष कहे छेः— मूलः— पडिवज्जमाण गावा. इक्का इहवेज्जऊण परकेवि ॥ होंति जहन्ना एए, सय ग्ग सोचेव उक्कोसा ॥ ६३४ ॥ अर्थः— प्रतिपद्यमान यथालंदिकोनो निश्चेकरीने पांच मुनिनो एक गछथाय छे तेमां ज्यारे ग्लानत्वादिक कारणने वशे एकादि ऊण थाय अथवा परकेवि कं० प्रक्षेप एटले प्रवेश करावववाना योगेकरी पंचक गछ थाय छे ए परमाणे जघन्य प्रतिपद्यमानक गण पण समजवा अने उत्कृष्ट प्रतिपद्य मानक पण शतक पृथक्त्व समजवा ॥ ६३४ ॥

मूलः— पुव्वपडिवन्नगाणवि । उक्कोस जहन्न सोपरीमाणं ॥ कोडिपहुत्तं नणियं । होइ अहालंदियाणंतु ॥ ६३५ ॥ अर्थः— पूर्वेप्राप्त थयेला यथालंदिपण जघन्ये करीने अने उत्कृष्टताए करीने कोटि पृथक्त्व संख्यादिक थाय छे. तेमां जघन्यपरि माणनुं प्रमाण न्यून संख्याए समजवुं. आप्रमाण पूर्वे जेणे यथालंदिपणो आदस्यो छे एवा पडिवजणहार यथालंदिक साधुओनुंकह्यो. उक्तंच कल्पचूर्णौ पडिवज्जमा णगाजहन्नेणं तिन्निगणा उक्कोसेणं सयपुहत्तं गण णपुरिसप्पमाणेणं पडिवज्जमाण गाजहन्नेणं पन्नरस पुरिसाउक्कोसेणं सहस्सपुहत्तं पुव्वपडिवन्नगाणं जहन्नेणं कोडि पुहत्तं उक्कोसेणवि कोडिपुहत्तमित्ति ॥६३५॥ इति यथालंदिक साधुनो द्वार समाप्त.

अवतरणः— निज्जामयाणं अडयालत्ति एटले निर्यामक जे ग्लाननी परिचर्या करे तेवा साधुना अडतालीस भेदोनो एकोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः— उव्वत्त दार संथार कहग वाईय अग्गदारंमि॥नत्ते पाणे वियारे, कहगदिसाजे समत्थाय॥६३६॥ एएसिं तु पयाणं । चउक्कगेणं गुणिज्जमाणेणं । निज्जामयाणसंखा । होइ जहा समयणिद्दिट्ठा ॥ ६३७ ॥ अर्थः— हवे निर्यामक एटले अशक्त थयेला साधुओनी शुश्रुषा करनार ते साधुओनीपासें रहेछे. आ योगे करीने तेओने पराधीनपणु एवा दोषेकरी दुष्ट होवाथी ते अगीतार्थ छे एवुं समजवुं नही, कारण कोइ कालप्रसंगे शुश्रूषा करनारपण गीतार्थादि गुणयुक्त अने वर्णनकरवाने योग्य थायछे, अने तेनामा बहुसारा गुणो होइने ते विशेषे करी साधुओनी शुश्रूषा करवामाटे उद्युक्त थायछे. ते शुश्रूषा करनार उत्कृष्टेकरी अडतालीस प्रकारना छे. तेनुं वर्णन करेछे उव्वत्त एटले उद्वर्तनादिए करीने साधुना शरीरनी शुश्रू

या करनार चार जण होय बीजा द्वार एटले साधुना अभ्यंतर अदरने
लोकनो समर्दन टाळवाने अर्थे रहेनारा चार होय त्रीजा सथार एटले सथ
आपनार चार होय चोथा कहग एटले अनशन वृत्तिवाळा साधुपासे रही
कथन करनारा चार होय पांचमा वाईय एटले वाद करनारा चार होय व
ग्गदारमि एटले अग्रद्वारनी पासे रहेनारा चार होय सातमा नत्ते एटले साधुन
न्न परिवेषण करनार चार होय आठमा पाणे एटले पाणी आणवाने योग्य
होय नवमा वियरे एटले उच्चार परिस्थापक चार होय अने दशमा प्रस्र
परिस्थापक चार होय इग्यारमा कहग एटले बाहार धर्म कथन करनारा चार, बा
रमा दिसा जे समद्याय एटले पूर्व, दक्षिण, पश्चिम अने उत्तर एचारे दिशानेवि
जे रहीने हजारो वीरपुरुषोसामे युद्ध करवाने समर्थ होय ए पूर्वे कहेला बार प्रकारन
निर्य्यामक ते प्रत्येक साधुना चारचार भेद छे ए प्रकारे सर्व निर्य्यामकानीसंख्या अ
डतालीशनी थायछे ए प्रमाणे सिद्धातनेविषे अडतालीस कहेलाछे ६३६॥६३७

अवतरण – हवेसूत्रकर्ता पोतेज अडतालीश लक्षणनु विवरण करेछे मूल-
उवत्तति परावत्तयति पडिवन्न अणसण चउरो ॥ तह चउरो अभितर दुवार मू
लमि चिठति ॥ ६३८ ॥ सथारय सथरआ, चउरो चउरो कहति धम्मसे॥ च ग
यवायिणोसे अग्गदारे मुणिचउक्क ॥ ६३९ ॥ चउरो भत्त चउरो य पाणिय तउ
चिय निहालिती॥ चउरो उच्चार पुरि ठवति चउरोय पासवण ॥ ६४० ॥ चन्न
बोहि धम्म कहिति चउरो वि चउसु विदिसासु ॥ चिठति उवद्दवर, किया सहस्स
हिणो मुणिणो ॥ ६४१ ॥ अर्थ – अहिया सामान्य विशिए घणुकरीने अनशन
व्रत करनारा साधुए पोतेज उद्वर्तनादिक करवु, परतु ते करवाविषे ते साधु अ
समर्थ होय तो तेनी शुश्रूषाविषे योजना करेला चार साधुउ उद्वतन करेछे उ
द्वर्तन शब्द साधरण छे, ए माटे तेज चार साधुउ उद्वर्तना परावर्तना एटले
उथजवो पाथलवो एना उपलक्षणथी उगाडवो, बेसाडवो बाहार लेईजवा अं
र लाववो उपधिनो पडिलेहवो इत्यादिक शुश्रूषाकर्म ए चार करेछे तेमज अभ्य
तर द्वारनी पासे जे चार साधु रहेछे ते त्या आवनारा लोकोनी भीड न थाय
ते सारु ते अनशनी पासे रहेछे केमके ते त्या न रहेतो ते द्वारनी पास नारा
नी भीड थाय तेथी अनशनव्रत करनारानी समाधिमा विघ्न उत्पन्न थाय॥६३८॥
तेमज बीजा चार साधु ते अनशनीने अनुकूल समाधिनी वृद्धि थवा सारु स
स्थारक विछावणहार थायछे ते न करे तो तेने समाधिनी वृद्धिथाय नही न

मल ते अनशनी पोते तत्व गीतार्थ ने तेम ठतापण बीजा चारसाधु विदितते नी पासे उत्तम प्रकारनी विशिष्ट देशनाथी धर्म कथन करे छे. जो पण ते सर्व रीते शास्त्रार्थमां निपुण होय तो पण अनशनादिके करीने तेने उद्वेग प्राप्त थाय ते ते दूर थवा सारु धर्म कथन करेछे. तेमज बीजा चार साधु, वादी अनशनव्रत करनाराना प्रभावथी विस्तार पामेली स्तुति श्रावक लोकोए करी देखीने कोईक दुरात्मा दुष्टबुद्धिवंत पुरुष ते स्तुतिने न सहन करी वीतरागना मतनी निंदाकरवा आवे तेनुं निराकरण करवा सारुं वाद करनारा अतिशय वक्ता अने प्रमाणनेविषे निपुण एवा चार लब्धिसंपन्न साधु ते दुष्टोनो पराभव करी ते अनशनीनी शुश्रूषा करेछे तेमज बाहेरने दरवाजे चार साधुउ सामर्थ्यवान रहेछे तेउ अन्य जनोनो प्रवेश निवारवाने अर्थे त्यां रहेछे ॥ ६३९ ॥ तेमज बीजा चार साधु ते तेणे अनशनी यें आहारनो त्याग कर्यो छतां कदाचित् क्षुधायेपीडीत तेने आहारनी अपेक्षा थाय तो ते आहारनी याचना करेछे ते कोई देवता संचारथी आहारनी याचना करेछे किवा ग्लानता प्राप्त थवाथी याचना करे छे तेनी परीक्षा करवा सारु ते चार साधु प्रथम तेने प्रश्न करे छे के तमे गीतार्थ छो किंवा अगीतार्थ छो अथवा तमने अनशनव्रत करेलानुं स्मरण छे के नथी. तेवारे ते प्रस्तुत कहे के मने व्रतनुं स्मरण छे एवुं केतां पण आ समये दिवस छे के रात्रीछे. इत्यादिक प्रश्न पुछी खातरी करे ने जाणे के ए देवता अधीष्ठित नथी किंतु परीसह पीडीतछे तेवारे तेने समाधी संपादान करवाने अर्थे किंचित आहार समर्पण करेछे पछी ते आहार स्विकारीने ग्लानत्वनो पराभव करीने समाधिनी वृद्धि करेछे हवे जो कदाचित् वेदनार्दित आहार न करे तो ते आर्त्तध्यानेकरी भवनपतिव्यंतरादिक प्रत्यनिक देव थईने पछी कदाचित् यतिने उपद्रव करे तेमज बीजा चार साधुउ तेना देहने दाहादिक प्राप्त थाय तेनी शान्ती करवा सारु पाणीनी गवेषणा करेछे. तेमज बीजा चार साधुउ एकांतस्थलमां उच्चार ते वडिनीति परठवे तेमज बीजा चार साधुउ मूत्रोत्सर्गने दूर परठवे ॥ ६४० ॥ तेमज बीजा चार साधुउ उपाश्रयनी बाहार रहीने लोकोनी समीपे मनने आनंद करनारा धर्म कथन करे छे. तेमज बीजाचार साधुपूर्व, दक्षिण, पश्चिम, अने उत्तर ए चारे दिशाने विषे रहिने तुच्छ उपद्रवथी रक्षण करेछे ते चारे सहस्रयोधि महामल्ल जेवा जाणवा.॥६४१॥

अवतरणः— हवे ए अडतालीश साधुउ जो प्राप्त नथाय तो केटलाये चलावबुं ते कहे छे. मूलः— ते सब्भावे ता कुज्जा एक्केकगेणऊणा जा तप्पासठिई ए

गो जलाइ अन्नेसउं वीउं ॥ ६४२ अर्थ – ते निर्यामक सर्वे अमृताजीश प्राप्त न थाय तो ते प्रत्येक चारमाथी एक एक कमी करवो तेना अजावे बे बे कमी करवा एवा प्रकारे करीने जघन्य माने करी यावत् बे निर्य्यामक अवश्य होवाजोइए ते बेमां एक अनशनी साधुनीपासे निरंतर रहेछे बीजो पाणी विगेरेनी गवेषणा कर नारो होइने अन्नपानादिक आणवा सारु पर्यटन करे मूलतो उत्सर्गे अनशनी पोतेज सर्व करे अने तेम जो न करे तो अडतालीसमाथी ओछा करता यथा योग बे जोइये पण एक निर्यामके अनशनव्रत करनारानी शुश्रुषा नकरवी यदु क्त एगोजइ निज्जवगो अप्पावत्तो पराप वयणच, सेसाण समनावे वि, हुती बीउ वस्स कायवोत्ति ॥६४३॥ ए अडतालीस निर्य्यामकोनो एकोतेरमो द्वार समाप्त थयो.

अवतरण – पणवीस जावणाउ सुहाउत्ति एटले पचीस जावना जे शुज छे तेनो बहोतेरमुं द्वार कहे छे – मूल – इरिया समिए सयाजए, उवेह, जुजेज्ज पाण जोयण ॥ आयाण निरकेव डुगछ सजए समाहिए संजयए मणोवई ॥६४४॥ अर्थ – प्राणातिपात निवृत्ति प्रमुख पाचमहाव्रतोनु दृढत्व संपादन करवासारु जे जाविये, अन्यसीयें तेने जावना कहे छे तेमा प्रथम जावना शब्दनो अर्थ कहेछे जेना योगेकरीने सन्मार्गनो अन्यास थायछे तेने जावना कहेछे जेम अन्यासवि ना विद्यामलीन थाय छे तेम जावनाना अन्यासविना व्रत मलीन थायछे ए प्रत्येक महाव्रतनी पाच पाच जावनाउ छे तेमाना प्रथम महाव्रतनी पाच जावना कहेछे प्रथम इरियासमिति एटले समता राखवी केमके, समता रहित थ को अ समता वत प्राणी जीवनी हिंसाकरे माटे ए प्रथम जावना जाववी

हवे सयाके॰ समस्तकाले उपयुक्त थको उत्तम प्रकारे एकाग्रचित्ते थई अवलोकन करीनेजोजन करे वा शब्देकरीने जलप्राशन पण करे छे एमा एवो अर्थ छे के पो ताना पात्रमा पडेली निक्षा पोताना नेत्रेकरी अवलोकन करे अने ते निक्षाने प्राप्त थएला मक्षिकादिकोनु वारवार निवारण करी प्रत्येक निक्षाने वखते अन्नना अवलोकन करे, अने पोताने स्थानके आवी प्रकाशयुक्त जग्यामा बेसीने प्रति ग्रासमा जोतो जोतो जोजन करे, तेमज अवलोकन करी जलप्राशन करे ए प्र माणे न अवलोकन करतो जोजन करे किंवा जलप्राशन करे तो तेथी प्राणीउनी हिंसानो संजव थाय छे ए प्रमाणे बीजी जावना कही

तेमज पात्रादिकनु ग्रहण करवु अथवा ग्रहण करेलु पात्र फरी नीचे मूकवु तना जुगुप्सा नकरे एटले जे स्थलथी पात्रादिक ग्रहण कर्यु ते स्थल अथवा ते पात्रादि

क जंतुउना उपसर्गे पीमित ठे के नही तेनो विचार करी ते पात्रादिक क्षालन पूर्व क ग्रहण करे अने ते प्रमाणेज सारे स्थले मूके एवुं न करेतो प्राणीनो घात करनार थाय ठे ए त्रीजी नावना थई.

तेमज साधु संयम समाधिये युक्त थको कोइपण कर्मनेविषे प्रवर्त्त थाय त्यारे स्वस्थ अने शांत तथा अडुष्ट चित्ते ते कार्य करे एवुं जो न करे अने डुष्ट चित्ते करे तो तेनो कायसंलीनतादिक उद्योगपण सर्व कर्मबंधनोकारण थायठे. इहां प्रसन्न चंइनो दृष्टांत जाणवो. श्रूयतेहि प्रसन्नचंड्रो राजर्षिर्मनोगुप्त्या नावितोऽहिंसाव्रताहिंसामकुर्वन्नपि सप्तमनरकपृथ्वीयोग्यंकर्म निर्मितवान् ॥आ प्रकारनी चोथी नावना ठे.

ए प्रकारेज मिथ्यावाणी उच्चार करे नही. केमके मिथ्यानाषण करनार प्राणीनो घात करेठे एम वचननो अडुष्ट पणो प्रवर्त्ताववो ए पांचमी नावना. तत्वार्थ ग्रंथमां आ पांचमी नावनाना स्थाने एषणा अने समिति लक्षण ए नावना कहेली ठे. ॥ ६४३ ॥ एवा प्रकारनी प्रथमव्रत नी पांच नावना कही.

हवे बीजा महाव्रतनी पांच नावना कहेठे.— मूल — अहस्ससच्चे अणुवीअ नासए जे कोह लोहनय मेव वज्जए॥ सदीहरायं समुपेहियासिया मुणी डु मोसं परिवज्जए सया ॥६४४॥ अर्थः—हवे हास्य न करता सत्यनाषण बोलवुं केमके हसीने बोलनारो कदाचित मिथ्यानाषण पण करे, ते नथाय तेने प्रथमनावना जाणवी.

तेमज सम्यक् प्रकारे ज्ञान पूर्वक विचार करी नाषण करे केमके विचार कर्याविना जो बोले तो कदाचित् मिथ्या नाषण पण बोलाय तेथी तेने वैर पीडा अने सत्वोपघातादिकनो संनव थायठे. ए बीजी नावना जाणवी.

तेमज जे क्रोधनो, त्याग करे एवो जे साधु तेनो स्वनाव मोक्षनुं अवलोकन करनारो ठे ते एवो थईने निरंतर निश्चयथी मिथ्यानाषणनुं वर्जन करे ठे अने क्रोधने स्वाधीन थनारो वक्ता पोतानी अथवा बीजानी अपेक्षा न करतां जेम तेम बोलतो थको कांईपण मिथ्यानाषण करे एटला माटे क्रोधनी निवृत्ति करवी तेज श्रेष्ठठे ए त्रीजी नावना जाणवी.

तेमज लोने पराजव करेलुंठे चित्त जेनुं ते प्राणी अत्यंत इव्यनी इछाए जूठी साक्षी विगेरे देईने मिथ्यानाषण करनारो थायठे. माटे सत्यव्रत पालणकरनार साधु ए लोननो त्याग करवो ए चोथी नावना जाणवी.

तेमज नयपीमित जे होय ते पण पोताना प्राणादिकना रक्षण सारु कपट

थी बोलेछे माटे निर्जयपणु स्थापन करवु ए पाचमी नावना जाणवी एवी ए बीजा महाव्रतनी पाच नावना कही ॥ ६४४ ॥

हवे त्रीजा महाव्रतनी नावना कहेछे'— मूल — सयमेव अडग्गहजायणा घडे मइम निसम सइनिरकु डग्गह॥अणुन्न विय नुजियपाणनोयण जाइत्तामाहम्मि याणडग्गह ॥ ६४५ अर्थ — जे साधु जनछे ते सयमेवके० पोतेज पोताने मुखे करीने निक्षादि पदार्थ सम्यक रीतिए जाणीने गृहपति अथवा गृहपतिये जेने आज्ञा दीधी होय एवा लोकोनी पासे याचना करेछे पण परमुखे याचना करे नहीं ए रीते देवेंद्रादिक अवग्रहनी याचनाये प्रवर्त्तवो केमके घरना मालेकसिवाय बीजानी पासे याचना करे किंवा बीजाना मुखे याचना करावे तो माहोमाहे विवाद निर्घटनादिक अने अदत्त परिनोगादिक दोष प्राप्त थायछे, ए प्रथम नावना जाणवी

तेहिज मागी लीधेला अवग्रहनेविषे तृणादिक लेवा सारु पण बुद्धिमान साधु उद्यम करेछे ते केवी रीतेके अवग्रहना देनारनो अनुज्ञा वचन सांनलीने तृणादिक लिये परंतु तेना वचन सानल्याविना जो तृणादिकलिये तो ते अदत्त स्वीकार कर्या सरखुं थायछे ते न करे एबीजी नावना जाणवी

तेमज सयके० सदासर्वकाल निक्षुके स्पष्ट मर्यादा ए अवग्रहनी याचना करवी एमा एवो अर्थछे के एकवार स्वामिए अवग्रह दीधो होय तो वारवार अवग्रहनी याचना करवी पूर्वे अवग्रह माग्यो हता त्या ग्लानादिक अवस्थायें मूत्र पुरीषोत्सर्ग परठवता पात्र कर अने चरण प्रक्षालन करता स्थानानिदायकनी पीडानो परिहार करवा सारु याचना करवीजजोईये एवी त्रीजी नावना जाणवी

तेमज अणुन्नवियके० गुरुनी अथवा अनेरा साधुनी आज्ञा लेईने पोतें नोजन करे किंवा जल प्राशन करे एमा एवो अर्थ छे के सूत्रोक्तविधिये लीधा जे प्रासुक एषणीय ते आलोयण पूर्वक गुरुने जणावी गुरुनी अनुज्ञालेई मंडलीमां अथवा एकलो नोजन करे एना उपलक्षणथी अधिक उपग्रहिक नेदनिन्नजे धर्म साधनना उपकरणो छे ते सर्व गुरुनी अनुज्ञायेंज सेवन करे अन्यथा अदत्त सेवन कर्या प्रमाणे थाय छे ए चोथी नावना जाणवी

तेमज जे सरखे धर्मे चाले तेने साधर्मिक कहिये एटले जे एक शासन प्रतिपन्न संविज्ञ साधु प्रथम कोई क्षेत्र मासादिक कालनो शक्रोश योजन क्षत्रावग्रह मागीने रह्योछे तो तेनी अनुज्ञा लीधाविना जो बीजोसाधु त्या रहे तो ते चोरी करी सरखु थाय ए पाचमी नावना जाणवी, ए त्रीजा महाव्रतनी पाच नावना कही

हवे चोथा महाव्रतनी पांच नावना कहेछे. मूल.–आहारगुत्ते अविनूसियप्पा ऽत्थिन निघ्राइ न संथवेज्जा ॥ वुद्दे मुणी खुद्दकहं न कुज्जा धम्माणु पेहीसंधइ वंन चेरे ॥६४६॥ अर्थ – जे आहारनेविषे गुप्त थाय पण अति स्निग्ध अने मात्राधिक जे आहार होय ते आरोगे नही केमके अति गवलस्निग्ध मधुर रस युक्तआहारनो प्रीति पूर्वक नोजन कर्याथी धातुपुष्टी थाय तेथी वेदोदय थवाने लीधे अब्रह्म सेवा करे अने जो केवल अतिमात्रा नोजन करे तो ते थकी पूर्वोक्त दोष न थाय किंतु काय क्लेश तो अनुनवे माटे परिमित आहार करवो ए प्रथम नावना जाणवी

हवे विनूषारहित देह एटले स्नान विलेपनादि नाना प्रकारनी विनूषा धारण करवाविषे आसक्त चित्त थयुं तो ब्रह्मव्रतने बाधा उपजे ए बीजी नावना जाणवी.

तेमज स्त्रीने अवलोकन करवी नही. अर्थात् स्त्रीना अवयव जे मुख, स्तनादिक ते इच्छापूर्वक न जोवा. तेम चितववा पण नही जो चिंतविये तोब्रह्मव्रतना अतिचारनो संनव थाय ए त्रीजी नावना जाणवी.

तेमज स्त्रीनी साथे परिचय करवो नही केमके तेनो संस्तव. वस्ति तथा तेणे उपयुक्त शयन, आसन इत्यादिक विषय तेनुं सेवन करतां छतां ब्रह्मव्रतनो नंग थाय छे. ए चोथी नावना जाणवी.

तेमज वुद्ध के० जेने तत्वज्ञान प्राप्त थयेलुं छे, एवो साधु तेणे क्षुद्र के० प्रशंसा करवाने अयोग्य एवी स्त्रीविषयक कथा वर्णन करवी नही. ते वर्णन करवाना आसक्त पणाथी मनने उन्माद प्राप्त थायछे. ए पांचमी नावना जाणवी. ए पांच नावनाए करीने नावित जेनुं अंःतकरण छे ते धम्माणुपेही के० धर्मनु सेवन करवामां तत्पर थईने संधइ के० सम्यक् प्रकारे ब्रह्मचर्यनी वृद्धिने पामे छे ए पांचमी नावना जाणवी एवी चोथा व्रतनी पांच नावनाकही छे. ॥ ६४६ ॥

अवतरणः– हवे पांचमा महाव्रतनी नावना कहेछे.– मूल.–जे सद्द रूव रस गंध मागए, फासेय, संसप्पमणुस्स पावए ॥ गहिं पउसं न करेज्ज पंमिए, सेहोइ दंते विरए अकिंचणे ॥ ६४७ ॥ अर्थ – तेमां जे साधु तेणे शब्द, रूप, रस, गंध, ए चार विषयो मकार ए अलाक्षणिकछे तेथी आगत आव्यो जे स्पर्श तेने पण पामीतेनेविषे आसक्त थईने सेवन करवु नही एक मनोहर अने बीजा पापकारक ते अमनोहर एटले इष्ट अने अनिष्ट, तेने विषे रागद्वेष करे नही ए विषयो सेवन समये बहु मनोहर लागे छे परतु एनुं परिणाम दुःखद छे. माटे पंमित अने तत्वज्ञान जाणनार वली दांत के० जितेंद्रिय पुरुष तेणे एउना उपर वि

रक्त थइ सर्व विषयोनो परित्याग करीने बाह्याभ्यंतर परिग्रह रहित थई अकिंचनी थवु अने ए शब्दादिक पाचना अग्रण करवा थकीए पाचमा महाव्रतनी पांच नाव नाउ थाय अने जो एम न थाय तो शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श ए पाच वि षयोनेविषे आसक्त थई पांच प्रकारे करी व्रतनो भंग थाय ते माटे ए पांचे विष योनो परित्याग करवो आ एकंदर पचीश नावनाउ पाच महाव्रतोने विषे क हेलीउ ठे. ॥ ६४३ ॥ ए शुन नावनानो बहुतेरमो द्वार सपूर्ण थयो

अवतरण – असुहाउ पणवीसत्ति एटले अशुन पचीश नावनानो तोंतेरमुं द्वार कहेठे मूल – कदप्प देवकिब्बिस अनिउंगा आसुरीय संमोहा॥ एसाहुअप सत्था पचविहा नावणा तथ ॥ ६४८॥ अर्थ – तेमा कार्दर्प्पि देवकिल्बिषी, आ नियोगी, आसुरी, अने समोहा ए पाच प्रकारनी अप्रशस्त नावनाउ ठे तेमां प्रथम कदर्प एटले काम तेणे करी प्रधान हास्य प्रमुख तेनविषे निरतपणे करी ने विटसमान एटले जार पुरुष जेवा जे देवविशेष ते कदर्प कहिये तेनी जे ना वना ते कादर्पि नावना जाणवी एमज देवोमा अस्पृश्यादि एटले जेने अडकीने नही एवा पापिष्ट जे किल्बिषिक देवविशेष तेनी जे नावना ते देवकिल्बिषी नावना तेमज आसमतात् प्रकारे अनियुज्यतेके० मुख्यत्वे करीने दूतकर्मनेविषे व्यापार क रेठे ते आनियोगिक एटले किंकरस्थानीय देवविशेष तेनी जे नावना ते आनियो गी नावना तेमज असुर एटले नुवनपति देवविशेष तेनी जे नावना ते आसु री नावना तेमज समुह्यति एटले सम्यक प्रकारे जे मुफाय ते अत्पत माइने पा मेला देवविशेष तेनी जे नावना ते समोहा नावना आ पाच नावना अप्रशस्त अ ने संक्लेशकारक नाना प्रकारना स्वनावनी कहेलीउ ठे तेमा जे साधु तत्पर थईने जे नावनानेविषे प्रवर्त्तेठे ते साधु शुन नावनाना मंद पणा थकी अशुन नावना युक्त थयो थको चारित्रना लेश पणा थकी तेज कंदर्पादिक देव विशेष तेउनी गतिने पामेठे उक्तंच जो सजउ विएयासु अप्पसहा सुवहइ कहि विसो, तंवसेसु गहइ सुरेसु नइ उ चरणहीणो, तेमज सर्वथा प्रकारे जे चारित्ररहित होय तेनी तो नजना जाण वी ते तो कदाचित् पूर्वोक्त देवविशेषनी गतिमा जाय अने कदाचित् नरकमा किंवा तिर्यगयोनिमा किंवा मनुष्ययोनिमा पण उत्पन्न थाय ठे ॥ ६४८ ॥

अवतरण – आ पाच नावना प्रत्येक पाच पाच प्रकारनी ठे तेमा पेहेली पा च प्रकारनी कादर्पी नावना कहेठे मूल – कदप्पे कुक्कुईए दोसीलत्तेय हासकरणे य ॥ परविम्हय जणणेविय कदप्पो णेगहातहय ॥ ६४९ अर्थ – कदर्प कोकुच

दुःशीलत्व, हास्यकरण, परविस्मयजनन तेमां कंदर्प अनेक प्रकारनो छे ते कहे छे कह कहाट्टकरी मोटा उंचा शब्दे करीने हास्य करवुं. परस्पर हास्य मस्करी करवी पोताना गुरुप्रमुखनी साथे निष्ठुर वक्रोक्ती ए यथेच्छ नाषण करवुं कामशास्त्रनी कथा कहेवी तुं आवीरीते कर एवुं कहीने कामोपदेश करवो. कामविषयक प्रशंसा करवी. इत्यादिक ए छ प्रकारे कंदर्पे नावना करे. यडुक्तं कहक हकहस्सहसणं कंदप्पो अणिहु पापसंलावा कंदप्पकहा कहणं कंदप्पुवएस संसाय ॥

तेमज कुकुच एटले नांमनी चेष्टा तेनो जे नाव ते कौकुच्च कहिये ते बे प्रकारनो छे एक काय कौकुच बीजो वचन कौकुच तेमां जे पोते हास्य न करता नृकुटी नेत्रादिक देहावयवे करीने हास्य कारक चेष्टा करीने बीजाने हसावे ते काय कौकुच कहिये तेमज पोतेपण हसीने बीजाने पण हसाववो पोते हास्य करतो विविध प्रकारना जीवोनी नापाना शब्दो पोताना मुखथी उच्चार करे वाजित्र प्रमुख मुखथी वजावे तेथी बीजाने हसवुं आवे ते बीजो वचन कौकुच. यडुक्तं जुमनयण वयण दसणछएहिं करचरण कन्नमाईहिं ॥ १ ॥ तंनं करेइ जहहस्सइ परोउत्तणा अहस्संवा

तेमज दुष्ट स्वनावनो जे नाव ते दुःशीलत्व त्यां संभ्रमावेगे करीने बीजाने अवलोकन न करतां जे अणविमास्यो उतावलो उतावलो बोलेछे. अने जे शरदकालनेविषे एटले अश्विन तथा कार्तिकमासनेविषे दर्पे करीने गोधासमान शीघ्र शीघ्र गमन करे छे, अने जे सर्व ठेकाणे कोइपण विचार न करतां कोइपण कार्य उतावलो उतावलो करेछे अने तीव्रदर्पे करी महाअनिमान युक्त थको निरतर स्फुटन पाम्यो सरखो रहेछे. ते सर्व दुःशीलत्व जाणवुं. यडुक्तं नासइ दुयं दुयं गच्छएय दरिव्वगोविसो मरए ॥ मच्छदुयदुयकारी फुटइ छविउ विदप्पेण.

तेमज जे नामनीपरे बीजाना नापादिक विपर्ईया विरूपवेषना छिद्रोने निरतर गवेषण करतो रहे अने तेवाज विचित्रवेष अनेविचित्र नापणे करीने जोनारा लोकोने तथा पोताने हास्य उत्पन्न करावे ते हास्यकरण कहिये. यडुक्तं वेसवयणेहिं हासं जणयंतो अप्पणो परेसिंच॥ अहहासणोत्ति नन्नइ घयणोवछले नियछंतो.

तेमज गारुडी विद्यावगेरे इंद्रजालप्रमुख कौतुहले करी अने प्रहेलिका कुहेटकादिकोए करीने तेवा तेवा जे ग्रामना नानाप्रकारना लोकोने पोते हास्य न करतां विस्मय उत्पन्न करे एम अज्ञानी लोकोने फसवे छे ते परविस्मयजनन जाणवो यडुक्तं. सुरजालमाइएहिं तु विम्हय कुणइ तव्विह जणस्स ॥ तेसुन विम्हयइ सयं आहट्टकुहेमएहिंच ॥१॥ ए पाच प्रकारे कांदप्प नावना कही ॥ ६४९ ॥

अवतरण – देवकिल्बिषी भावना पाच प्रकारनी छे ते कहेछे मूल – सु यनाण केवलीण धम्मायरियाण सघ साहूण, माई अवस्रवाई किब्बिसिय भावण कुणइ ॥ ६५० ॥ अर्थ – एक द्वादशागीरूप श्रुतज्ञान बीजो केवल ज्ञानवान त्रीजो धर्माचार्य एटले धर्मनो उपदेश करनार चोथो चतुर्विध सघ पाचमा साधु एटले यति ए सर्वनो अवर्णवाद बोले अने मायी एटले पोतानी शक्ति गुप्त करनार ते माय यी अवर्णवादि एटले अश्लाघारूप सुज्ञानादिकना सारा गुण छता तेनी नि करीने तेमां अछता दोष काहाडवा तेमां श्रुतज्ञानो अवर्णवाद आवी रीते बोले जे पृथ्वी आदिक छ प्रकारना जीवनिकाय ते छजीवणिया अध्ययनमांहे वर्णवे वली शस्त्र परिज्ञा अध्ययनेवर्णव्या तेमज प्राणातिपातादिक व्रत पण फरी फरी त्यांज कह्या छे तेमज प्रमाद ते मद्यादि जे अप्रमादना विपक्षी भूत छे ते पण पुनरुक्तिपे ठेकाणे ठेकाणे कह्याछे त्या पण तेटलुज कथन कर्यु छे पण अधि ता कांई नथी तेवारे एम वली वली कहेता सुज्ञने पुनरुक्ति दूषण पण प्र प छे तथा तमारे जो मोक्षनीज वांछा छे तो सूर्य प्रज्ञप्ति प्रमुख ज्योतिष शास्त्र नो शो प्रयोजन छे केमके ए ग्रथोतो ससारना हेतु छे माटे निरुपयोगी छे एवी रीते ए सूत्रनी निदा करी अवर्णवाद बोलेछे उक्तच कायावयाय तेच्चिय त चेव पमा अप्पमायाय ॥ मोक्खाहिगारियाण जोइस जोणीहि कि कज्ज ॥ १ ॥

हवे केवलज्ञाननो अवर्णवाद कहेछे ते एवी रीते के केवलीने ज्ञान दर्शना योग ए बे अनुक्रमे करीने थाय छे किंवा समकालेज प्राप्त थाय छे तेमां अ क्रमेकरी प्राप्त थायछे एवु कहेसो तो ज्ञानकालमां दर्शननो अभाव अने दर्शन कालमां ज्ञानना अभाव थशे ए प्रकारे परस्परनु आवरणत्व प्राप्त थसे हवे यु पत् एटले समकाले प्राप्त थायछे एम कहेसो त्यारे ज्ञान अने दर्शननु एकत्व थ शे भिन्नत्व रहेशे नही एरीते केवल ज्ञानीना अवरणवाद बोले छे उक्तच एगत समुप्पाए दसणा नाणणपा डुवेणह पि॥केवल दसण नाणाणमेगकालेय एगत्त॥१॥

हवे धर्माचार्यना अवर्णवाद कहे छे ए धर्माचार्यनी जाति सारी नथी ए कव्यवहारमा कुशल नथी, ए उचित अनुचित जाणतो नथी इत्यादिक गुरु कारनो भाषण गुरुपत्ये बोले अने गुरुना विनयमा प्रवर्त्त नही, तथा गुरु छिद्रने गवेषण करता छता सर्व सभानी समक्ष गुरुना अवर्णवाद बोले प्र ने प्रतिकूल पणो आचरण करे उक्तच जच्चाईहि अवन्न भासइ वट्टइ नयावि उव वाए ॥ अहिओ छिद्दप्पेही पगास वाई अणणुकूलो ॥ १ ॥

हवे संघनो अवर्णवाद कहे छे. जेम शृगालादिक घणा पशुनो समुदाय तेवोज आ पण समुदाय छे. तेमां क्या समुदायनुं तुं सेवन करीस? इत्यादिजाषण करे.

हवे साधुनो अवर्णवाद कहेछे ते एवो के आ साधु एक बीजानो उत्कृष्ट सहन करता नथी. माहोमाहे कोइकोइनो सहन करे नही तेथीज परस्पर स्पर्धा करतां देशांतरमां भ्रमण करे छे. पण एकस्थले मलीने एकठा रहेता नथी तेमज ए महाकपटी, मायावी होइने निरतर लोकोने रीजववा सारुं नीची दृष्टीकरी हलवे हलवे चालेछे. जोतां तो सारा साधु देखाय छे परंतु स्वजावे तो बहुनिष्ठुर छे. जेवारे क्रोधायमान थाय छे. तेवारे कोइ वस्तु दीधाथी ततकाल संतोष पामे छे. तेमज गृहस्थलोकोने नानाप्रकारनां चाटुक वचनो कहीने गृहस्थने पोता उपर रुची करावे छे. उक्तंच. अविसहणा तुरियगई अणाणुवत्ती य अविगुरुणंपि ॥ खणमित्त पीइरोसा गिहिवच्छलगाइसं वइगा ॥ अन्यैरप्युक्तं ॥ अनित्यताशब्दमुदाहरंति जग्नां च तुर्वी परिशोचयंति ॥ यथा तथान्यंच विकत्थयंति हरीतकीं नैव परित्यजति ॥ एरीते साधुनी निंदा करे. क्यांक सव्वसाहूणं एवो पाठ देखाय छे तेवारे ए मायी ए पद जुदो करी पांच जावना कहिये तेमां मायीनो स्वरूप एवीरीते छे जे पोतानो स्वजाव गोपवतो बीजाना छतागुण गोपवे चोरनीपरे सघलाढुंतीसांके एवो गूटाचारीतेमायी जाणवो. यथा. गूहइआयसहावं छायइ य गुणे परस्स संतेवि. चोरोव्वसव्वसंकी गूढायारोहवइमाई ॥ ६५० ॥

अवतरण.— अजियोगी ए नामनी पांच प्रकारनी त्रीजी जावना कहे छेः—

मूलः— कोउय जूईकम्मे पसिणेहिं तह्य पसिण पसिणेण ॥ तह्य निमित्तेणंचिय, पंचवि अप्पा जवे साय ॥ ६५१ ॥ अर्थः— अजियोगी जावना कौतके करीने जूतिकर्मे करीने प्रश्नकरीने प्रश्नाप्रश्न करीने अने निमित्ते करीने एम पांच प्रकारनी छे. तेमां बालक विगेरना रक्षण, पोषणादि निमित्त स्नान, हस्तभ्रमण, अजिमंत्रण, घुघु करण, छुहणा प्रमुखनो कहेवो हाथ फेरववो धूप मंत्री आपवुं इत्यादिक जे करेछे ते कौतुक. उक्तंच. विन्नवण होम सिर परिया य खार डहणाइं धूवेय ॥ असरिस वेसग्गहणं अवतास ए उत्तुजण बंधो. ॥

तेमज घर, शरीर, क्रियाणादिक एओना रक्षणने सारुं जे जस्मादिक प्रमुख सूत्रना दोराथी परिवेष्टन करी आपे ते जूतिकर्म ॥ १ ॥ उक्तंच. जूईए मट्टिए एवसुत्तेण य होइ जूइकम्मं तु, वसही सरीर जंमय रस्का अजिओगमाईया ॥ २ ॥

तेमज बीजानी पासे लाज किवा अलाज थशे एविषे प्रश्न करे, अथवा पोते

स्वप्न अंगुष्ठ, खड्ग, दर्पण, उदक प्रमुखने अवतारी जाणे ते प्रश्न. एहेय होइ पसिण ज पासइ वा सयतु तं पसिण ॥
तेमज पोतानु शुनाशुन जीवित मरणादिक ते पोते विचाए करी घाटिकादिक अवतारी जे देवता तेणे कहेलो जे शुनाशुन जीवित मर जाने कहे ते प्रश्नाप्रश्न उकच ॥ पसिणापसिण सुमिणे विज्जासिठ कहे अहवा आइ सणिया घटियसिठं परिकहेइ ॥ तथा अतीत अनागत अने वस्तुना जाणपणानो कारण जे ज्ञाननो विशेष तेने निमित्त कहियें ॥ ए गातुकादिक जे जे ते पोताना गारवादिकने अर्थे जो साधु करे पाभिर बांधे अने अपवाद पदे अतिशय ज्ञानवत गौरव रहित निस्पृह थ ऽ एस्करे तो आराधक केवाय अने उच्चैर्गोत्रपण बाधे
अवतरण – चाथी आसुरी नावना कहे छे – मूल – सय विग्गह समनतरा निमित्तरहणच ॥ निक्किवियाविपथवरा, पचमग निरणुकपत्त ॥ ६
अर्थ – पहेली सय के० सदासर्वकालनेविषे विग्गह के० वढवाडनो करव न्नि गीननर्ं० सन्नाव छे जेनो तेने विग्रहशील कहिये इहा ए नाव जे प्र वटवाढकरीने पछी जा सामोधणी खमावे तोपण तेना उपरथी क्रोध निवा करे नही विगाशनु बधंज दोडे तेमज बीजी ससकतप ते आहार उपधि अने ना आदिकनिये प्रतिबद्ध तेनाज नावे करी अनशनादिक करे तेने ससकतप कहि एमज त्रीजी त्रिकालविषयी जीवितव्य मरण लानालान सुखडु खादिकना निमि म अभिमाने करी प्रकाश करवा त त्रिविध निमित्त त्रीजी नावना जाणवी चे पी निर्दयपणे स्थावरादि जीव अजीवने समान गणतो थको करुणारहित का तर उपर आसनादिक करी पछी तेना अनुतापन एटले पश्चात्ताप पण न क राइ कह तापण ते निर्दय नाव प्रगट करे ए नि रुपता नामे चाथी नावना पाचमी न कोई रुपापात्रने कोइक कारणे कापता जाइ तेना उपर दया न कर ते निरनुकंप नामे पाचमी नावना जाणवी ॥ ६०२ ॥
अवतरण – समोह नावनाना पाच प्रकार छे ते कहे छे – मूल – उमग्ग देसणा मग्ग दूसण मग्गविपडिवत्ति॥ मोहोय मोहजणण एवं सा हवइ पचविहा॥ ६०३।
अर्थ – उमग्ग देसणा उन्मार्ग दर्शनादि प्रकार करी समोह नावना ... देशनी ने ज्ञानादिक दूषवना थका विपरीत धर्ममार्ग उपदेश न उन्मार्ग ना नामे देशनी नावना जाणवी बीजी ज परमार्थिक ज्ञान, दर्शन चारित्र ...

ए भावमार्गे तेहनेविषे प्रतिपन्न जे साधुउ तेउनी प्रत्ये पोतानी बुद्धिथी रचेलो जात्यादि दोष तेणेकरी डुखवे ते मार्ग दूषण नामे त्रीजी भावना. त्रीजी ज्ञानादि मार्ग अणहतां दूषणे डुखवी पछी जमालिनी पेठे एकेदेशे उन्मार्ग पडिवज्जे ते उमग्ग पडिवत्तिनामे त्रीजी भावना. चोथी – अतिघणां मूढबुद्धिवालो हतां अति गहनज्ञानादिकना विचारे मनमां मुंझाइजाय अने परतीर्थिनी नाना प्रकारनी समृद्धि जोइ तेनेविषे मोह पामे ते मोहनामे चोथी भावना. पांचमी मोह उपजाववाना स्वभावे करी अथवा कपटे करीने अनेराने अन्य दर्शन उपर मोह उपजावे. ते मोहजनन नामे पाचमी भावना जाणवी. ए पचीश भावना अशुभने एमां साधु जे जे भावे वर्त्ते तेवीगतिमां उपजे ॥६४३॥ए तोतेरमो द्वार समाप्त थयो.॥६४३॥

अवतरण:– संखा महव्वयाणंति एटले महाव्रतनी संख्यानुं चुमोतेरमु द्वार कहेछे. मूल:– पंचवउ खलु धम्मो पुरिमस्सय पछिमस्सय जिणस्स ॥ मज्जिमयाण जिणाणं चउव्वउ होइ विन्नेउ ॥ ६४४ ॥ अर्थ –प्राणातिपात विरमणादिक पांचमहाव्रत ते प्रथम जिनने चरम जिनना वारनासाधु तेमने थाय. अने मध्यम बावीश जिनना वारना साधु तेमने चार महाव्रत थाय. अहींया राजना स्वभावे करीने ते जीव ऋजुजड. ने वक्र जड थाय छे तेमां ऋजु एटले सरलपणागुणे अने जड एटले यथार्थ अर्थनुं जे जाणपणुं तेना अभावथी कहेलो जे अर्थ मात्र तेनोज ग्रहण करनार ते ऋजु जड अहिंया प्रथम जिनना वारना साधु ते नटावलोकन साधुने दृष्टांते छे तेउ एवा मुग्धछे के गुरुए नट जोवानो निषेध कर्यो होय तो मात्र नट जोवा न जाय पण रागना कारणथी नटना निषेधविशेषे नटवी जोवानो पण निषेध आवी गयो एम न जाणे अने चरम एटले श्री वर्द्धमान जिनना वारना तीर ते वक्र जड एटले वाका अने मूर्ख ते एवी रीते के नटनो निषेध गुरुए कर्यो होय अने एवामां नटवी नाचती दीठी तो तेने जुए अने गुरुपुछे त्यारे वक्रपणे न थाय त्यारे उदरपीडादि अणहता पण खोटा प्रश्ननो उत्तर बहु आपवे आरे. वली नटवीनो गुरुए निषेध कर्यो होय ने नटने जोवा गयो होय त्यारे गुरु पुछे ते समये ते मूर्खपणाथी कहेके नटवीनो तमे निषेध कर्यो छे. परंतु नट जोवाना निषेध कर्यो नथी एमजाणे वक्रपणानो आचरण करे ते वक्रजड हवे बावीस जिनवारना ऋजु प्रज्ञ कह्या छे. ऋजु एटले सरल अने प्राज्ञ एटले प्रज्ञावंत (बुद्धिमान). ते साधु नटना निषेधथी प्रज्ञावंत पणाथी रागना कारण जोनारी सहु स्त्रीनो पण निषेध करे. वली सहुलपणाथी जे प्रमाणे कह्युं छे ते प्रमाणे पाले. अने [illegible]

पदेश मात्रेकरी हेय जाणी गमे ते कारणे सदा स्त्री अपरिगृहीत जोग्य नथाय एम जाणी परिग्रह विरमणथी मैथुन विरति पणो पण पडिवज्ञे ते सारु तेने पाच व्रतनो धर्म ते चार व्रतोने अगीकारे थाय ते माटे चतुर्याम धर्म जाणवो अने प्रथम जिननावाराना साधुने ऋजु जड पणाथी घणा उपदेशे समस्त हेय अर्थना जाणपणानो ज्ञान थाय वली चरम जिनना यति वक्र जड पणाथी का टे करी हेय पदार्थना आसेववाथी परिग्रह विरमणव्रतथीज मैथुनविरमण व्रत अगीकार करे नही ते माटे एउने पचयाम धर्म कह्यो इति गाथार्थ ए महाव्र तोनी सख्यानो चुमोतेरमो द्वार समाप्त थयो ॥ ६५४ ॥

अवतरण —कियकम्माणय दिणे सखत्ति एटले कृतकर्म वादणानी सख्यानु पचोते मोर द्वार कहेछे मूल —चत्तारि पडिक्कमणे कियकम्मा तिन्नि हुति सज्झाए।पुवाह्णे अव राह्णे कियकम्मा चउद्दस हवति ॥६५५॥अर्थ —पडिकमणानेविषे चारप्रकारनी व ना थायछे एक आलोचन वदन बीजी क्षमणक वदन त्रीजी आश्रयणा वदन अने चोथी प्रत्याख्यान वदन वली स्वाध्यायनेविषे त्रण वदन थाय ते एक स्वाध्याय तेमा एक स्वाध्याय प्रस्थापने बीजी स्वाध्याय प्रवेदने त्रीजी स्वाध्यायानतरे एम प्रत्यक दिवसमा प्रभात काले ए सात वदनथाय तेमज अपराह्णकाल एटले पाछले चोथे पहो रे पण एमज सात वदना थाय तेमां एक उद्देश बीजी समुद्देश अने त्रीजी अनुज्ञा ए त्रण वदणा स्वाध्यायनेविषे सभवे अने चार वदणा सध्याकाले पडिकमणानेवि पे सभवे ए प्रमाणे कृतकर्म वदणा चौद थाय इति गाथार्थ॥६५५॥पचोतेरमा द्वार

अवतरण — खित्ते चारित्ताण सखत्ति एटले कीया क्षेत्रमां केटला चारित्र प्रा प्त थाय तेनी सख्यानो गोतेरमु द्वार कहेछे मूल — तिन्नियचारित्ताइ बावीस जि णाण एरवइ भरहे ॥ तह पच विदेहेसु बीअं तईय च नविहोइ ॥ ६५६ ॥ अर्थ - सामायिक सूक्ष्मसपराय अने यथाख्यात ए त्रण चारित्रो पचभरतामा अने पांच ऐरवतोमा मध्यम बावीस जिनना वारा तथा पांच महाविदेहोनेविषे सदाकाले प्राप्त थायछे अने छेदोपस्थापनीय तथा परिहारविशुद्धिक ए बे चारित्र स्वभाव प्राप्त थता नथी तथा प्रथमना अने छेला तीर्थकरोने वखते भरत अने ऐरवत नेविषे पांचे चारित्र प्राप्त थाय छे एम जाणवु ॥ ६५६ ॥ ए गोतेरमो द्वार थयो

अवतरण — ठिइकप्पोत्ति एटले स्थिति कल्पनु सीतातेरमु द्वार कहछे मूल - सिज्जा यर पिंमिमिय चाउज्जामेय पुरिसजेठेय ॥ कियकम्मस्सयकरणे ठिइकप्पो मज्झिमा ण तु ॥ ६५७ ॥ अर्थ —कल्पशब्दे करीने साधुनो आचार ते सामान्यपणे आचनु

काल्पिक दश प्रकारनो छे त्यां प्रथम अने चरम तीर्थंकरोना साधुउने ए दशेकल्प स
र्वदा सेववा पडेछे माटे तेनो अवस्थित कल्प छे. अने मध्यम बावीस जिनना साधु
उने तो चार स्थानकोनुं सेवन करवुं पडेछे बाकी छ स्थानकोनेविषे अस्थितकल्प
पणुं छे तेणेकरी दश स्थानकनी अपेक्षाये अनवस्थित कल्पछे तथा वली म
ध्यम जिनना साधुने चार स्थानोमां सदाय रहेवुं पडेछे. अने छ स्थाननेविषे कि
वारेक रहेवुं पडे छे तेणे करीने स्थित अने अस्थित कल्प बेहु प्रकारे संभवे
छे. त्यां प्रथम स्थित कल्प कहेछे. तेमां प्रथम शय्यातर पिंड एनुं स्वरूप आगल कही
शुं अने चार महाव्रत पुरुष जेष्ठ कृतकर्म वांदणानुं करवुं तेमां जे तत्पर रहेछे ते
स्थित कल्प कह्यां ए चारजे बावीस जिनना साधुने तथा [illegible] महाविदेहने
विषे जे साधुउछे तेउने प्रथम अने चरम जिनना साधुनीपेरे शय्यातर पिंड न ले
वो. १ तेम परिग्रह विरमणव्रतमां चोथा महाव्रतनो अंतर्भाव थाय छे तेथी ते नि
रंतर चतुर्याम धर्म माने छे. २ अने प्रथम तथा चरम जिनना साधुने महा
व्रतना आरोप लक्षणथी थई जे उपस्थापना ते करे [illegible] जाणवुं. ३
तेम प्रत्युत्थान लक्षण अने द्वादशावर्तादिरूप ए बे प्रकारनुं कृतकर्म वांदणा ते
साधुउ पोताथी जे पर्याय वृद्ध साधुहोय तेने वंदन करे अने साध्वीउ पर्याय
जेष्ठ छता पण आजनां दीक्षितयतिने पुरुष जेष्ठ धर्मपणाथकी वांदे. ४ ए चार
स्थानक सर्वने निरंतर थाय ते माटे स्थित कल्प जाणवो. ॥ इति गाथार्थः ॥ ६५७ ॥

अवतरण.— अस्थित कल्पोनि एटले अस्थितिकल्पनुं [illegible] कहेछे.
आचेलुक्कु देसिय, पडिक्कमणे रायपिंडमासेसु। पज्जोसणाकप्पंमिय, अट्ठियकप्पो मुणेयव्वो ॥ ६५८ ॥ अर्थः—आचेलक्य. औद्देशिक. प्रतिक्रमण. राजपिंड. मासकल्प.
पर्युषणाकल्प. एटला स्थानकनुं जे निरंतर सेवन करवा नथी पण कदाचित एक स्थान
कनुं सेवन थाय छे ते मध्यम बावीस जिनना साधुउनो अस्थित कल्प जाणवो
कारण के ते मध्यम जिन साधु आचेलक्यादिक छए स्थानक सेवन करेछे ६५८

तेमां प्रथम आचेलक्यनुं स्वरूप कहेछे. मूल — आचेलक्को धम्मो पुरिमस्स
य पच्छिमस्स य जिणस्स ॥ मज्झिमगाण जिणाणं होई अचेलो सचेलो वा ॥ ६५९ ॥ अ
र्थ — [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

गया पछी वस्त्र रहितपणाने लीधे अविद्यमान वस्त्र जाणवो अने शेष प्रथम त
था चरम जनना वाराना साधुउने विद्यमान वस्त्र छता श्वेत अने स प मूल्य
ला समित वस्त्र होवाने लोधे ते अचेलज कहेवाय छे कारणके लोकमा पण ब
ला वस्त्रने अनावे वस्त्र छते पण अचेलक कहेवायछे जेम कोईक दोली पातानो
गाढलो पुराणो थयो तेवारे शामीवालाने कहे के हु नागी फरुछु माटे साडी आप ए
दृष्टांते जाणवो अने मध्यम बावीस जनना साधुउ ते सचेल पण थाय ने अचेल
पण थाय एमने बहुमूला पाच वरणना वस्त्रोनी पण अनुज्ञा छे ते माटे ॥६५७॥

अवतरण —उद्देसियत्ति एकहेछे मूल —मज्झिमगाण तुइम, कम ज मुदिस्स तत्त
चेउत्ति, नोकप्पइ सेसाणउ कप्पइ त एस मेरत्ति ॥६६०॥ अर्थ —उद्देश एटले साधु
ना सङ्कल्पेकरी जे कीधु ते औद्देशिक आधाकर्म जाणवो ते मज्झिमके० मध्यम बा
वीस जिनना साधुनो ए स्वरूपले के अशनादिक जेना आश्रयीकीधा होय तेने
ज कल्पे पण सेसाणके० शेष बीजाओने कल्पे एवी मेरत्तिके० मर्यादाछे ॥६६०॥

अवतरण — पडिक्कमणेत्ति ए वखाणेछे मूल —सपडिक्कमणो धम्मो, पुरिमस्स
पच्छिमस्सय जिणस्स, मज्झिमगाणजिणाण, कारणजाए पडिकमण॥६६१॥ अर्थ -
जे पडिकमणासहित तेने सप्रतिक्रमण धर्म कहियें ते प्रथम अने पश्चिमके० छेल्ला
जिनेश्वरनेवारे पापलागे किंवा नलागे तोपण एने पडिकमणो अवश्य करवा अने
मज्झिमके० वचमाना बावीस जिनना साधु ते तो काई अतिचार लागो जाणे
तोज पडिक्कमणोकरे अन्यथा करे नही ॥६६१॥

अवतरण — रायपिंडत्ति ए वखाणेछे मूल — असणाइ चउक्कवछ पत्त कंबल
पायपुछणए, निवपिंडमि नकप्प,ति पुरिमअंतिमजिणजईण ॥६६२॥ अर्थ -
प्रथम अने चरम जिनना यतिने राजा चक्रवर्त्यादि संबधी पिंडते असनादि चार अने
पाचमु वस्त्र छठो पात्र सातमो कबल आठमो पादप्रोंछनक ए आठ प्रकारना पि
डमेता अनेक दोषनो सभव छे ते आवीरीते — राजकुलमा निकलने अथ जाता
यतिने घणानाकना पेसवा निसरवाथी घणो समर्द थाय, काई अजाण पु
अमगलबुद्धिए पात्रभग अथवा देहघातादि करे वली चोर हरु घातकादिनी
सभावनाए राजा शंकाय ता तेथी ते कुल, गण तथा सघने उपघात करे नदी
बहुनिदा थाय माटे ए महापापी राजप्रतिग्रहपणाने मुकवु वली राजपिंडनि
स्कार करवा योग्यछे एवु स्मृतिमा पण कह्युछे राजप्रतिग्रहदग्धाना, ब्राह्मणा
युधिष्टिर ॥ मिन्नानामिव बीजानां, पुनर्जन्म नविद्यते, इत्यादि दोष जाणी राजपिं

लेवो नही. एरीते पुरिमके० प्रथम अने अंतिम जिनेश्वरे अकल्पनीय कह्योछे.॥६६१

अवतरणः—मासंति कहेछे. मूल —पुरिमेयरतित्थगराण मासकप्पो ठिउ विणिद्दि ठो, मज्झिमगाणजिणाणं, अठियउ एस विन्नेउ ॥६६३॥ अर्थः— प्रथम अने चरम तीर्थंकरना साधुने मासकल्पे विहार करवो ए स्थितिकल्प नगवंते कह्योछे एम न करे तो अनेक दोषनो संनव थायछे. यडुक्तं पडिबंधो लहुअत्तं. न जणुवयारोन देसविन्नाण, नाणराहणमेए, दोसा अहारपरकंमि ॥ १ ॥ जो कदाचित् डुर्निक्षादि कने योगे संयमयोग क्षेत्रना अनावथकी ग्लानपणे योग्यनक्तादिकने अनावे वा ह्यवृत्ते मासकल्पनकरीशके तोपण नावथकी संस्तारकादिक परावर्त्तने अवश्ये करवोज जोईयें अने मध्यम बावीसजिननेवारे तो अठियउके० अस्थिति कल्प कहिये अने अनवस्थित तो ए मासकल्प जाणवो तेहने ऋजु सरलपणा थकीने अधिक रहेतां पण पूर्वोक्त दोषनो असंनवछे उक्तंच दोमासऽमज्झिमगा. अछंतिउ जाव पुव्वकोडीवि, विहरतीवासासुवि, अकद्दमे पाणरहिएय ॥१॥ निन्नंपि मासकप्पं, करंति तणुयपि कारणं पप्प, जिणकप्पियावि एवं, एमेव महाविदेहम्मि॥२॥६६३॥

अवतरण.—पज्जोसवणाकप्पोत्ति ए वखाणेछे. मूल.— पज्जोसवणाकप्पो, चेवं पुरिमे वरायनेएणं, उक्कोसेयरनेउ, सो णवरं होइ विन्नेउ ॥६६४॥ अर्थ — ईहां पज्जोसवणा शब्दनो अर्थ करेछे परिके० समस्त प्रकारे उपणाके० एकक्षेत्रे वासकरवो ते पर्युपणा तेने मलतो जे कल्प एटले उणोदरीनो करवो अने विगईनो त्याग करवो पीठफलक संस्तारक उच्चारादिकना मात्रा प्रमुखनो संग्रह करवो लोचनो करावबो नवा शिष्यनो अदिक्षवो वली प्रथम जे नस्म डगलादिक लीधेला होय तेनो त्याग करी नवानो ग्रहण करवो द्विगुणोवर्षा संबंधी उपकरणनो धारण करवो नवा उपकरण नलेवा सक्रोश योजन क्षेत्रावग्रहथकी दूर नजवुं इत्यादिक वर्षाकाल संबंधी समाचारछे. अनिवस्थितहुए पण केवल मासकल्पेज अनवस्थित नथाय. ईहां चकार पद पूर्वाने अर्थे छे. एवके० ए उक्तप्रकारे तेहिज देखाडेछे पुरिमेवरायके० पूर्वोत्तरादिनेदेकरीने अने आदि, अंतिम अने मध्यम जिनना साधु तेहने विशेषे ईहां ए नावजे पहेला अने छेला ए बे जिनना वारे पर्युषणा कल्प अवस्थितछे अने बावीस जिनना साधुने अनवस्थितछे ईहावली विशेष देखाडेछे. उक्कोसके० उत्कृष्टेतर जघन्य एटले उत्कृष्ट अने जघन्यने नेदे सके० तेपर्युपणाकल्प नवरके० केवल थायछे ते विन्नेउके० जाणवो. ॥ ६६४ ॥

अवतरणः— पूर्वोक्त बे नेद देखाडेछे. मूल — चाउ म्मासुक्कोसो, सत्तरि राइंदि

उ जहन्नोउ, थेराणजिणाण पुण, नियमा उक्कोसउ चेव ॥ ६६५ ॥
उम्मासके० चारमहिनानो उत्कृष्ट पर्यूषणाकल्प जाणवो अने सत्ति
रात्री अने दीवसनो जघन्य पर्युषणा कल्प थायछे एमा प्रथम अने
ना स्थविर कल्पिकने ए बे पर्युषणा कल्प थायछे तेमज ए बन्ने तीर्थं
नकल्पिक साधुओने निश्चेथकी उत्कृष्टेज पर्युषणा कल्प थायछे कारण
अपवादना सेवनाराछे तेमाटे तेने उत्कृष्टेज थायछे ए अगोतेरमो द्वार सम

अवतरण – चेइयत्ते एटले पाच चैत्यनी सख्यानो ओगणएसीमो द्वा
छे मूल – भत्ती मगल चेइय, निस्सकडे अणिस्स चेइएवावि सासय चेइ
म, सुवईछ जिनवरिंदेहि ॥६६६ ॥ अर्थ – ईहा चैत्य शब्द सर्वपदोनी साथे
वो तेवारे एक भक्ति चैत्य बीजो मगलचेत्य त्रीजो निश्राकृतचैत्य चोथो अ
कृतचैत्य पाचमो शास्वतचैत्य एरीते श्री जिनवरे उपदिष्ट एटले कह्याछे ॥६६

अवतरण – पूर्वोक्त पाच चैत्य सूत्रकारज वखाणेछे. मूल –गिहजिण पडि
ए भत्तिचेइय उत्तरगघडियमि, जिणबिंबे मगल चेईयति समयन्नुणोविंति ॥६६
अर्थ – गृहसबधिनी प्रतिमा यथोक्त लक्षण सहित त्रिकालपूजावदनादिक
अर्थे करावियेछे तेने भक्तिचेत्य कहिये तेमज बीजो उत्तरगशब्दे घरना द्वार उपरे
तिर्छो काष्ट तेने उत्तरग कहेछे त्या श्री वीतरागनी प्रतिमा होय तेने मगलच
त्य कहियें एवी सज्ञा सिद्धांतना जाणनारे कहिछे जेम मथुरानगरिये घर कीधा
छता मगल निमित्ते उत्तरगे श्री पार्श्वनाथनी प्रतिमाकरे अन्यथा ते घर पडिजाय
वली ए शास्त्रनी करेली स्तवनमाहे एम कह्यो छे –जम्मि सिरिपासपडिम सतिक
ए करेइपडिगिहदुवारे, अज्जवि जणोपुरितं, महुरमधन्नानपेछति ॥६६७॥

मूल –निस्सकम जगछस्स सतिय तदियर अनिस्सकम, सिद्धायतण च इम, च
इयपणगविणिद्दिठ॥६६८॥ अर्थ –त्रीजो निश्राकृत चैत्य तेने कहिये जे कोईक गछ
सबधी चैत्य ते जेना प्रतिष्ठादि प्रयोजने तेहिज गछना जना अधिकारी थाय प
रतु बीजो कोई प्रतिष्ठादिक करवा पामेनही चोथो ए थकी इतरते अनिश्राकृत च
त्य जाणवो ज्या सर्वकोई प्रतिष्टा दीक्षा मालारोपणादिक कार्यकरे पाचमा सिद्धा
यतन ते शाश्वतजिननी प्रतिमा जाणवी इमके० ए चैत्यनो पचक विशेषकरी कह्यात्र

अवतरण – एज प्रकारातरे कहेछे मूल – नीयाईसुरलोए, भत्तिकयाइ च ना
हमाईहि, निस्सानिस्सकयाई, मगलकय मुत्तरगमि ॥ ६६९ ॥ अर्थ – नियाई के०
नित्य शाश्वतिप्रतिमा जे देवलोकनेविषे उपलक्षणथी मेरुनीशिखर ...

दीश्वर रुचकादिक द्वीपोनेविषे छे ते शाश्वत चैत्य जाणवा अने नरतादिके जे क राव्या ते नक्ति चैत्य जाणवा अने निश्राकृत तथा अनिश्राकृत पूर्वोक्त रीतेज जा णवा अने मंगल चैत्य ते उत्तरंगनेविषे करेला जाणवा. ॥ ६६९ ॥

मूलः— वारत्तयस्स पुत्तो, पडिमंकासीयचेईएरम्मे, तत्थयथलीअहेसी, साहम्मिय चेइयंतंतु ॥६७०॥ अर्थः—वारत्तकमुनिनापुत्रे स्नेहे करीने पोताना पितानी मूर्त्ति मुहपत्ति तथा उंघा प्रमुख सर्वपरिग्रह सहित रम्यचैत्यनेविषे करावी त्यां दान शा लाथई ते थलीशब्दे साधर्मिक स्थली सिद्धांत नाषायें कहिये ते साधर्म्मिक चैत्य जाणवो ए कथा एज ग्रंथनी टीकामां कहीछे ए उंगणएसीमो द्वार समाप्त थयो.

अवतरणः—पोछयपंचगंति एटले पांच प्रकारना पुस्तकनो एसीमो द्वार कहेछे. मूलः—गंमी कछविमुठी संपुमफलए तहा छिवाडीअ, एयपोछयपणगं, वरकाणमिणंनवे तस्स॥६७१॥अर्थः—गंमी पुस्तक,कछपी पुस्तक,मुष्टी पुस्तक, संपुटफलग पुस्तक, छेदपा टी पुस्तक ए पांच पुस्तक कह्या ॥६७१॥ एहिज पुस्तक पंचकनो वखाण करेछे.

मूलः—बाहिल्ल पुहएहिं, गंमीपोछोउतुल्लगो दीहो,कछविअंते तणुउ, मझे पिहुलो मुणेयवो ॥ ६७२ अर्थः— बाहुल्यपणे, पहोलपणे, अने जाडपणे सरिखो तुल्य होय ते गंमी पुस्तक जाणवो दीहोके० दीर्घपणे पण तुल्य जाणवो बीजोकछपी पुस्तकते अंते एटले छेहडे पातलो अने वचाले पहोलो जाणवो ॥६७२॥

मूलः— चउरंगुलदीहोवा, वट्टागिइमुठिपुछगोअहवा. चउरंगुलदीहोचिय. चउरं सो होइ विन्नेउ ॥६७३॥ अर्थः—त्रीजो चार अंगुल लांबो अने वाटलें आकारे ते मुष्टीपुस्तक जाणवो अथवा चार अंगुल लांबोज थाय अने चउरंस थाय ॥६७३॥

मूलः— संपुमगो डुगमाई, फलयावोछंछिवाडिमित्ताहि, तणुपत्तूसियरूवो, होइ छिवाडी बुहा विंति ॥६७४॥ अर्थः—चोथो संपुटफलग पुस्तक ते बे प्रमुख फलक जोडेथके थाय हवे पाचमो छिवाडिके० छेदपाटी पुस्तक कहेछे तनुके० जेना थो डा पाना होय तोपण तटलें पाने करी ते उंचो देखाय तेने छेदपाटीनामा पुस्तक बुहाविंतिके० बुद्ध पंडितो कहेछे ॥ ६७४ ॥

मूलः— दीहोव हस्सोवा, जो पिहुलो होइ अप्पबाहल्लो. तम्मुणिय समयसारा, छिवाडिपोछं नणंतीह ॥ ६७५ ॥ अर्थः—दीर्घ अथवा न्हस्व पहोलो होय अने जेह नो बाहुल्यपणो अल्प होय ते जेणे सिद्धांतनो सार जाण्योछे एवा पुरुषो एने छिवाडी पुस्तक कहेछे. इति गाथापंचकार्थ ए एसीमो द्वार समाप्त थयु ॥ ६७५ ॥

अवतरणः— दंमपंचगंति एटले पांचदंमानो एक्यासीमो द्वार कहेछे मूलः—

लठी तह्रा विलठी, दम्रोय विदम्रठय नालीय, नणिय दंम्रयपणग, वरकाणमि
स्त ॥ ६७६ ॥ अर्थ.– एकलठी, बीजोविलठी, त्रीजोदम्र चोथोविदम्र प
नाली ए पांच दांम्राकह्याठे ॥६७६॥ तेनो वरकाण आवीरीते थाय ठे.
मूल – लठी आयपमाणा, विलठिचठरगुलेण परिह्रीणे, दम्रो वाहुपमा
विदम्रठ करकमेत्ताठ ॥ ६७७ ॥ अर्थ – लठीपोताना शरीर प्रमाणे साढात्रणह
नी थाय ठे अने लठी थकी बीजी विलठी ते चार आगुल परिह्रीण के० ठ
थायठे दम्रते वाहु प्रमाण स्कध प्रदेश प्रमाण थाय विदम्रते कारवमात्र प्रमाणवानी
मूल – लठीए चठरगुल, समूसीया दम्रपचगे नाली, नइपमुह जलुत्तारे, तीए
थग्गिज्जए सलिल ॥ ६७८ ॥ अर्थ –लठीथकी चारअगुल समुछ्रित के० अधकीना
ली थाय एटले त्रण हाथने शोल अगुलनी थाय ठे ते पाचदाम्रा मांहेनी कहिवें
तेणेकरीने सलिलके० नदीप्रमुख उतरता तेना पाणीनो ऊम्रपणो जोवायठे ॥६७८॥
मूल – वज्जइलठीए जवणि यावलिठिए कठइडवार, घट्टिज्जए ठवस्सय, त
यण तेणाड रस्कठा ॥ ६७९ ॥ अर्थ – नोजननी वेलाये सागारी प्रमुखना रात
वाने अर्थे लाठीयेकरी तिरस करिणी एटले पडदो वाधीये अने विलठीयेकरी क
ठइ के० क्याक प्रत्यत ग्रामादिकनेविषे नोजन वखते उपाश्रयनो डुवार ते चार
कुतराप्रमुखनो अटकाव करवाने अर्थे घट्टिज्जं के० वध करीये अम्रकाविये ॥६७९॥
मूज – ठठवद्धम्मिठ दम्रो, विदम्रठथिप्पएव वरिसयाले, जसोलहुठनिज्जइ
ए तरियठ जलनएण ॥ ६८० ॥ अर्थ – ठठवद्ध के० रुतुवद्धकाल एटले चो
मासाविना आठमास कालमा नीक्षावेलाये द्विपद मनुष्यादि जे प्रद्वेषी होय ते
अने चतुष्पद गाय घोडादिक तथा वहुपद शरनादिक तेना निवारणने अर्थे त
था निहारकरता अटवीमा व्याघ्र चोरादिकनो नय निवारणने अर्थे दाम्रा ह्यी
यारठे माटे दाम्रोलेवो अने वरिस के० वर्षारुतुमा चारमास कालसुधी विदम्रकली
जे केमके ते न्हानोहोय तेथी वस्त्रमाहे जलके० अप्पकाय फरसे नही ॥६८०॥
हवे ए थकी थता गुण अवगुण देखाम्रे ठे मूल – विसमाइ वद्धमाइ दसप
पद्याइ एगवन्नाइ, दम्रेसुअपोह्णाइ, सुहाइ सेसाड असुहाइ ॥ ६८१ ॥ अर्थ–वि
समतो एक त्रण पाच सात ने नव कातली सीम वद्धमाइ के० उपरात्तपर वधि
ने पामतोपस्रो मह्रोटो दस पद्याडके० दश पर्व एटले दश गांठसुधी एकीना जाव्यँ
अने दसथी उपरात तो एकी पण सपदा करे अने वेकीपण सपदा करे त कातनी
एक्वर्णनी नली जाणनी दाम्रानेविप पह्रोलपणो न थाय पण नवो निघ्राट नाय

ते शुभकारणी जाणवो अने ए थकी विपरीत लक्षण ते अशुभ दायक थाय इहां ओघनिर्युक्तनी गाथा कहे छेः— एगपव्वं पसंसंति, दुपव्वाकलहकारिका, तिपव्वा लाभ संपन्ना, चउपव्वा मारणंतिया ॥१॥ पंचपव्वाउजालठी, पंथेकलहनिवारणी, छपव्वा य आयंको, सत्तपव्वा निरामया ॥ २ ॥ अठपव्वाअसंपत्ती. नवपव्वा जसकारिया. दस पव्वाउजालठी. तहियं सव्वसंपया ॥३॥ इति गाथाषट्कार्थः एक्यासीमो द्वार

अवतरणः— तणपणगंति एटले पांच तृणनो ब्यासीमो द्वार कहे छेः—

तणपणगं पुण भणियं, जिणेहि जियराग दोसमोहेहिं, सालीवीहियकोद्दव. रालय रन्ने तणाइंच ॥ ६७२ ॥ अर्थः— राग, द्वेष, अने मोह जेणे जीत्या ते जिने श्वरे तृणनुं पंचक आवीरीते कह्युं छे ते कहेछे. एक साली कलमशाली प्रमुख वीजी व्रीहिसाली प्रमुख चावलादिकनी त्रीजी कोद्रव ते धाननोविशेष तेनो पलाल चोथी रालक ते कांगुविशेष ते रालधानणो पलाल जाणवो. पांचमो के॰ अरण्यना श्यामाक प्रमुख तृणविशेष कह्याछे ए ब्यासीमो द्वार

अवतरणः— चम्मपंचगंति एटले चर्म पांचनो त्र्यासीमो द्वार

अय एल गावि महिसी, मिगाणमजिण च पंचमं होइ, तलिगा [illegible]
कित्तीअ वीयतु ॥ ६७३ ॥ अर्थः— छालीनो चर्म, गामनो [illegible]
सनो चर्म, हरिणनो चर्म, ए पांचना अजिन के॰ चामडा [illegible]
वा वीजा आदेशेकरी चर्म पंचक प्रयोजनसहित कहे [illegible]
या ते एक तलियो अने तेना अभावे वेलुतलानापग [illegible]
न देखाय अथवा सथवारो मेली जाय तेवारे उताव [illegible]
मयथी उतावला जतां कांटादिकथी पोतानो रक्षण [illegible]
अथवा कोइ कोमल पगवालो होय ते चालवाने [illegible]
वीजो खलग ते खासडा ते पगे व्याघात [illegible]
तो मार्गे जता तृणादिक उलजे थाय वली [illegible]
होय तो पहेरवाने अर्थे राखे त्रीजा वर्धक॰ [illegible]
प्रमुखने सांधवालणी कामआवे चोथो कोश [illegible]
कोइकना नख अथवा पगने कांइ लागवा [illegible]
वेधाधिचे अथवा नख प्रमुख राखवाने [illegible]
लत्ति ते कोइक मार्गमां दावानलना [illegible]
वे अथवा पृथ्वी कायादिक सचित्त [illegible]

रीने वेतीये अथवा मार्गमा चोर लोकोये वस्त्र लेइ लीधा होय तो पहेरवामा प
ए काम आवे एने कोइक कृति कहे ले ने कोइक नत्ति कहे ले एवा वे नाम ले ए
यतिजनयोग्य चर्मपचक कह्यु ॥६७३॥ए त्र्यासीमो चर्मपचकनु द्वार समाप्त थयु

अवतरण – दूसपंचगंति एटले वस्त्र पचकनु चोराशीमुं द्वार कहे ले –मूल–
अप्पडिलेहिय दूसे, तूली उवहाणग च नायव ॥ गडुवहाणा लिगिणि मसूरए चेव
पोत्तमए ॥ ६७४ ॥ अर्थ – दूष्यवस्त्र वे प्रकारना ले एक अप्रत्युपेक्ष्य अने बीजा
दु प्रत्युपेक्ष्य तेमां अप्रत्युपेक्ष एटले जेने मूलथी पडीलेइ शकीयेज नही ते अने दुप्र
त्युपेक्ष्य एटले जे कष्टे पडीलेइ शकीये ते जाणवा तेमा अप्रत्युपेक्ष्य वस्त्र पाच प्रकारना
श ले प्रथम रुथी नरेली तथा अर्कतूलादिके नरेली विछाववा सारु तलाइ अर्थात
पनीपनो विछोप १ उपधानक एटले हसरोमादिके करी नरेलु उसीकु २ गडोप
धानिका एटले उसीका उपर राखवानु गालमसरियुं ३ आलिगिणी एटले गाला
अने कोणीने नीचे वेवा सारु होय ४ लुगमानु अथवा चामडानु होय ने तेना
चीधण नरीमोढु सीवेलुं होय ते एवु गोल आसन जेने चाकलो कहे ले ते ५ ए
पांच घणु करीने वस्त्रमा थाय ले ॥ ६७४ ॥

हवे बीजो दु प्रत्युपेक्ष्य वस्त्र तेना पाच प्रकार ले ते कहेले – मूल – पल्हवि
कोयवि पावार नवयए तहय दाढिगालीप ॥ दुप्पडिलेहिय दूसे एय बीयं नवे प
एग ॥ ६७५ ॥ अर्थ – पल्हवि १ कोयवि, २ प्रावारक, ३ नवतक, ४ अने द
ढगाली ए दु प्रत्युपेक्ष्यना पांच प्रकारले ॥ ६७५ ॥

अवतरण –ए समस्त बोल पल्हवि प्रमुख सूत्रकार वखाणे ले मूल –पल्हवि
हत्थुत्थरण, कोयवउरुय पूरिअं पडिअं ॥ दढगालि धोय पोती मेस पति द्वानवेनेया
॥६७६॥ अर्थ –पल्हवी शब्देकरीने हाथीनी पीठ उपर नाखवानो आथर जेने सार
वटी कहे ले वली एना उपलक्षणथी थोडा रोमे नरेला तथा बहु रोमे नरेलाह
य ते तथा उंटनो आथर पण ए पल्हवीमांज गणाय १ कोयवी ए शब्द
रीने रुए नरेलु वस्त्र जेने बूरटी कहे ले वली तेमा शालजोडी तथा रूमिथी उ
त्पन्न थएलां वस्त्र पीतांबर विगेरे ते सौ बूरटीमा गणवां २ दढगाली शब्द क
ने दशीउं सहित ब्राह्मणने पेहेरवा योग्य वस्त्र ३ प्रावारक ४ अने नवतक ५ ए
प्रसिद्ध ले तेमां प्रावारक एटले माणकी प्रमुख सलोम वस्त्र बीजा अथवा ए
मोटो कांवलो तथा परिवि एवु कहेले अने नवतक एटले जीर्ण ५ ॥ ६७६ ॥

ए विवेचुत्रान थया सारे सूत्रकार तेनो पर्याय कहे ले मूल –खरमो तह वारहीम

लोम पम्हउतहा हवइ जीणं ॥ सदसं वत्थं पल्हवि पमुहाण मिमेउ पज्ञाया ॥ ६७७ ॥ आ गाथानो पूर्व गाथामां अर्थ कहेलो छे. ॥ ६७७ ॥

अवतरणः– पंच अवग्गह नेयत्ति एटले पांच अवग्रहना नेदनुं पंचासीमुं द्वार कहेछे. मूलः– देविंद राय गिहवइ । सागरि साहम्मि उग्गहे पंच । अणुजाणा विय साहूण कप्पए सव्वया वसिउं ॥ ६७८ ॥ अर्थः– देवेंद्र, राजा, गृहपति, सागरिक, अने साधर्मिक, ए पांच संबंधे पांच अवग्रह छे. ए माटे ए पांचेनी अणुजाणाविय के० आज्ञा लेइने साधुए सदावास करवो. ॥६७८॥

अवतरणः–एनो स्पष्ट अर्थ सूत्रकारज कहेछे. मूलः–अणुजाणावेयव्वो जईहिं दाहिणदिसाहि वो इंदो॥नरहंमि नरहराया जं सो छरकंमभहिनाहो. ॥६७९॥ अर्थः– दक्षिण दिशानो धणी सौधर्मेंद्र तेनी नरत क्षेत्रना यतिए आज्ञा लेवी ने पछी त्यां वास करवो तेम ऐरवत क्षेत्रना यतिए ईशानेंद्रनी आज्ञा लेवी. वली नरत क्षेत्रनो धणी चक्रवर्त्ती छखंम्नो नायक नरत राजा तेनो अवग्रह लेवो.॥६७९॥

अवतरणः–गहवाऽइत्यादि वखाणेछे. मूलः–तह गहवई विदेसस्स नायगो सागरायत्ति सेज्जावई॥साहम्मिउअ सूरी जंमि पुरे विहियवरिसालो ॥६९०॥ तप्पडिवद्धं तं जाव दोहि मासे अउ जईण सया॥अणणुन्नाए पंचहिवि उग्गहे कप्पइ न गउं ॥ ६९१ ॥ अर्थः– गृहपति एटले देशमंमलनो नायक तेना अवग्रहनेविषे वसनारा साधुए तेनी आज्ञा लेवी सागारी एटले शय्या वस्तिदान इतर ते सय्यातर घरनो धणी तेना घरनेविषे रहेवासारु पण यतिए आज्ञा. मागवी साधर्म्मिक एटले सूरि आचार्य तेओना उपलक्षणथी उपाध्यायादिक ते जे नगरमां वर्षाऋतुमां चतुर्मास वास करे ते नगरनी पासे पांच कोशपर्यंत ते आचार्यादिकनो प्रतिबद्ध छता ते क्षेत्रनो तेणे पहेलो अवग्रह लीधोछे तोत्यां तेनो अवग्रह लेवो. ए प्रमाणे यतिने सदा आज्ञा माग्याविना पांचे अवग्रहनेविषे रहेवुं कल्पे नही. इहा पेहेलो पेहेलो अवग्रह बाधित जाणवो. जेम राजावग्रहे करीने देवेंद्रावग्रह बाधित थायछे'कारणके राजावग्रहमांराजानी आज्ञाज प्राधान्यछे. ए प्रमाणे आगलनावना करवी ॥ ६९० ॥ ६९१ ॥ ए पंचासीमुं द्वार समाप्त थयुं

अवतरण.– परीसहत्ति एटले बावीस परिसहनुं छासीमुं द्वार कहेछे. मूलः– खुहा पिवासा सीउण्हं दंसा चेला रइ छिउ॥चरिया निसीहिआ सेज्जा अक्कोस वह जायणा ॥ ६९२ ॥ अर्थः– परि एटले समस्त प्रकारे जिन मार्ग नहि मूकवासारु अने निर्जरासारु जे सहन करवुं पडे ते परिसह कहिये. तेमां एक दर्शन परि

सह अने बीजी प्रज्ञा परिसह ए बे मार्ग नमूकवाने अर्थेछे अने निर्जरार्थे बीस प रिसह छे तेना नाम क्षुधा १ पिपासा २ शीत ३ उष्ण ४ दंसा ५ अचेला ६ रति ७ स्त्री ८ चर्या ९ नैषेधकी १० शय्या ११ आक्रोश १२ वध १३ याचना १४ अ लाभ १५ रोग १६ तृणस्पर्श १७ मल १८ सत्कार १९ प्रज्ञा २० अज्ञान २१ अने सम्यक्त्व २२ ए बावीस परिसहनो यथाक्रमे संक्षेप अर्थ कहेछे

१ तेमां क्षुधाथी उत्पन्न थनारी वेदना जे समस्त वेदनाथी अधिक आतरनुं अने पेटनी बालनार तेने आगमोक्तप्रमाणे सहन करतां अनेषणीयने परिहारी उपशमावता क्षुधा परीसह जीत्यो जायछे पण अन्यथा जीताय नही ए क्षुधा स मस्त परीसहोमा सहन करवो बहुदोहलो छे माटे सहुथी श्रेष्ट गणीने प्रथम कह्योछे

२ क्षुधापीडा मटाववा सारुं उंचानीचा घरोनेविषे विहार करवाना श्रमे तरस उत्पन्न थाय माटे बीजो पीपासापरीसह ते तरसे करी अति आकुलित थयो छतो पण शीत ल जलादिनी प्रार्थना नही करता तृष्णा सहन करे ते पिपासा परिसह जाणवो ए परिसह बहु कठण छे इहा जे यतिएषणीयने अभावे समग्र अनेषणीय परिहरता प्रा णिमात्र उपर चित्तमा दया आणीने तृषा सहन करे तेणे पिपासापरिसह जीत्यो

३ एम क्षुधा तथा तृषापीडितने शीतपणु थाय माटे त्रीजो शीतपरीसह ते एम —शीतकालनेविषे सबल टाढ पडे ते समय गृहादिकेरहित अल्प जीर्णवस्त्र धारण करनारा यतिए आगमोक्त विधिए पोताना कल्पनीज गवेषणा करवी अतिशी ते पीडित थाय तो पण अग्नि प्रदीप्त करी तेणे तापवु नही तेमज बीजा ए प्रदीप्त करे ला अग्नीनु पण सेवन करवु नही एवी रीतिए रहेवाथी शीतपरिसहनो जय कर्यो

४ उष्णपरिसह एटले उष्णऋतु ए शीतऋतुनो विपक्षीछे तेमाटे चोथो उष्णपरीसह ते एम उष्णकालनेविषे तप्तशिलाये सूर्यनुप्रतिबिंब माथे आवे एवा मध्यान्ह समये बेसी आतपना थयेथके पण छत्रीनी के लुगडानी छाया वांछे न ही वींझणाप्रमुखना वायुने अणवांछतो अने स्नानविलेपनादिवर्जतो थको उष्ण परिसह सहे ते उष्णपरिसहनो जय जाणवो

५ उष्ण पछी वर्षाकाल आवे ते समये डांस मसा मछरादिक थाय ते सारू उष्णप छी मश परिसह पांचमो ते मशादि जु माकण शूल इत्यादि क्षुद्र जतु तेओ जेम श त्रुओ संग्राममां बाणनो प्रहार करे तेवो डंक मारे परतु एवा तेओना उपद्रवथी ते ठाम तजीने जाय नही अथवा तेना परिहारने सारु धूम्र तथा वींझणा प्रमु

खनी वांछना करे नही ते मांसादिक जंतुउ पोतानुं लोही पीये तो पण तेनाउपर प्रद्वेप करे नही तेनुं निवारण करे नही. एरीते मंस परिसहनो जय थाय.

६ मांसे पराजव पाम्योथको पण वस्त्र वांछे नही. तेथी ठगी चेल एटले वस्त्र तेनो अजाव ते अचेल. जिनकल्पी तथा स्थविरकल्पी ए बंनेने अचेल कहेछे. फाटेलुं, अल्पमूलनुं अने जुनुं ते पण अचेल. ए अचेलनो परीसह ते अचेल परीसह ते एम के पोतानुं फाटेलुं वस्त्र जोइ एम न जाणे के आ वस्त्र फाटेलुंछे तेथी आज ने काले कोइ नवा वस्त्रनो आपनार सुजतो नथी तो हवे केम करशुं, एवीरीते अतिदीन जाव मनमां न आणे अथवा आ वस्त्र उतारीने बीजा नवां वस्त्र पेहेरीशुं एवीरीते नचिंतवे ते अचेल परीसहनो जय जाणवो.

७ अचेल ते अप्रतिबद्ध विहारी ठतां तेने शीतादिकना संजवे करी अरति उपजे ते अरति परिसह. जे रमण करवुं ते रति. अने संयमनेविषे जे धृति तेनाथी विपरीत ते अरति तेनो परिसह ते अरतिपरिसह. विहार करतां यतिने मनमां अरति उपजे तो धर्मनेविपेज रत थवुं. क्षांत्यादिक धर्मध्याववुं एरीते अरतिपरीसहने सहन करे ते अरतिपरिसह जय जाणवो.

८ संयममां अरति उत्पन्न थाय एटले स्त्री निमंत्रि ते तेनी अजिलापा करे ते सारु हवे स्त्रीपरीसह कहेछे ते एम के स्त्री दीठी थकी तेने रागनो हेतु जाणी, तेनी गति, इंगित, आकार, विलोक इत्यादिक पण रागना निबंध जाणी अंग, प्रत्यंग थान, हसित ललित, विभ्रम विलासादि अणचिंतवतो अने ते स्त्री दीठी ठतां काम बुद्धिए तेनी जणी दृष्टि साथे दृष्टी मेलवे नही ए स्त्रीपरीसहनो जय जाणवो.

९ एकस्थले रेहेतां मंदसत्त्वने स्त्रीउपर अनुराग थाय ते सारु एक गामे न रहे ते माटे स्त्री परीसह पठी चर्यापरीसह एटले चालियें ते एमके. आलस रहित थइने ग्राम, नगर कुलादिकोनेविपे विहारनो करवो ते द्रव्यथी चर्या अने जो एकगामे रहेता पण अप्रतिबद्ध ममतारहितपणो आदरवो ते जावथी चर्या एवो प्रतिमास कल्पे विहार करे ते चर्यापरीसह जय जाणवो

१० जेम ग्रामादिकनेविपे अप्रतिबद्ध चर्या करवी तेम देहादिकने विपे अप्रतिबद्ध स्वाध्याय सारु नैपिधिकी करवी तेमाटे चर्या पठी नैपिधिकीनो परीसह. जे निपेधियें तेनेनिपेध कहियें ते एक पापकर्मनो बीजो गमनागमननो तेहिज छे प्रयोजन जेनो तेने निपेधकी कहिये. इहां निपेधकी शब्दे शून्य घर श्मसानादिक स्वाध्याय जूमिका तेनो परिसह ते निपेधकी परीसह. कोइ ठेकाणे निपद्या परीसह

एवु कहेलु छे निषीदति ते निषियास्थानक जे स्त्री पशु, अने पमक विवर्जित छे त्यां रहेता थका, इष्ट अनिष्ट जे उपसर्ग उपजे ते सर्व उद्वेगरहितपणे सम्यक् रीतिए सहन करे तेने नैषिधिकी अथवा निषद्या परिसह कहेछे

११ निषेधकीये सज्झाय करी सज्झाने आवे ते सारु हवे अगीयारमो शय्या परिसह कहे छे ते एम के जेनेविषे शयन करे छे ते शय्या एटले उपाश्रय अथवा सस्तारक तेनो जे परीसह ते शय्यापरीसह ते एम के उचीनीची भूमी, घणी धूल घणी टाढ तथा घणी उमता अने कठण तथा सुकोमल अने छुद्र जो सथारो पामी तेने सारो नठारो कहेनही, उद्वेग करे नही पण एम विचारे के उपाश्रये एक गृहस्थ रत्नमय घरमा रहे छे, एकने भेरजीपणो पण थतु नथी एक पल्यक उपर तलाइपाथरी सुए छे ने एक भोंये सुए छे, माचो पण मनतो नथी तो माहारे शु करवा शोच करवो जोइए? आज अहींया छेए अने वहाणे बीजे स्थले जइशु एवीरीते वेहुने विषे राग द्वेष वर्जे ते शय्या परीसह जय जाणवा

१२ सथार्ये रहेलाने सथातर अथवा अन्यकोइ आक्रोश करे तेथी हवे बारमो आक्रोश परिसह कहे छे ते आवीरीते के यतिने कोइ अनिष्ट वचन कहे क्रोध करे तेवारे जाणे के ए महारो उपकारी छे तेथी मने शीखामण आपे छे केमके कदाच ए बोल हु करत पण हवे नही करु अथवा ए जे कहेछे ते ताहु करतोज नथी तो ए मने एम कहेछे तो तेमा महारे सावास्ते क्रोध करवापड, एम विचारी क्रोध नकरे जो क्रोध करे तो साधुपणो छता चम्डाल समान थाय

१३ आक्रोशनो करनार जे होय ते वध पण करे तेथी हवे वधपरिसह कहेछे वधते हनन ताडन सबधी जे परिसह तेने वध कहिये, ते आवीरीते क्रोधाविष्ट माणस यतिने ढीक पाटू चापट कशादिकना प्रहार करे तोपण तेना उपर ते यति क्रोध करे नही पण अकलुषित चित्तवत थको एवी चितवना करके ए गुणरते पुद्गलरूप छुदोछे अने महारो आत्मा एथी छुदोजछे माटे आत्मानेता कांइ विध्वस करी शकेज नही अने ए जे मने ताडन प्रमुख करेछे ते महारा कृतकर्म उदय थाव्याछे तेनो ए फलछे एम जाणी ते सहनकरे

१४ परथी हणाणाने औषधादिकनी याचना करवानो प्रयोजन थाय माटे याचना परिसह कहेछे जे अनेरा पाछेथी याचिये ते याचना कहिये ते आवीरीते यतिने वस्त्र पात्र अन्न पान उपाश्रय विगेरे काईपण चीज एटले एक शलो मात्र ली चीज पण माग्याविना लेरीनही यद्यपि पोतानी शोभा राखवाने अर्थे माग न

ही तथापि पोताने प्रयोजन थये दाक्षियार लाज छांमीने याचना करे पण एवो चिंतवे नही जे नाई रांधेला धानने अर्थे नला माणशने घेरजइ याचना करवी तो ते करता गृहस्थावासज नलो के ज्यां आपणा जुजादंमना पराक्रमथी उपजाव्यो जे अन्न ते दीन हीनादिकने आपी पढी जमीये एवी विचारणा करे नही. अथवा याचना करवाथी कोई आपे किंवा न आपे माटे हुं आ गृहस्थने घेरजई लाखनो मर्मगमावीने सीरीते याचना करु इत्यादिक चितवना नकरतां याचना करे ते याचना परिसह.

अवतरण.– पन्नरमी अलानादि परिसह कहेछे मूल.– अन्नाज रोग तण फास मलसक्कार परीसहा ॥ पन्ना अन्नाण सम्मत्तं ईइ वावीस परीसहा ॥६९३॥ अर्थ.–(१५) याचना करवाछता पण लाभांतरायना उदयथी कोईवारे माग्या छता मलेनही ते माटे याचना पछी अलान परिसह जाणवो ते जे लाननो अनाव तेहिजपरीसह ते अलान परिसह कहिये. ते आवीरीते के यतिये कोईपासे याचनाकरी अने त्यांथी ते पदार्थ मल्यो तेवारे आवुं चिंतवे. बहुं परघरे अछि, विवहंखाइमसाइमं, नतछ पंमिर्डकुप्पड, इछादिज्ज परोनवा ॥ १ ॥ एम चिंतवतो मुखराग फेरवेनही अथवा पिंमने आलाने एवो चिंतवे के आज नही मलेतो काले अथवा परमदिवशे अथवा चोथेदिवशे लहीशुं एम विचारणा करवाथी अलान परीसह ने बाधा न थाय ते अलाननो जय कस्यो.

१६ अलान थकी आंतप्रांत नोजनेकरी रोगोत्पति थाय माटे हवे रोगपरिसह कहेछे. ते जेवारे काश श्वास ज्वर अतीसारादिक उपजे तेवारे जिनकल्पी साधुतो तेनी चिकित्सा अणकरावतो पोताना कर्मनो विपाक चिंतवे अने स्थविरकल्पिक तो आगमोक्त विधिये करी निरवद्य चिकित्सा करावतो मनमांहे कर्मविपाक चिंतवतो हाय वोय करेनही, ए रोगपरिसहनो जय जाणवो.

१७ रोगीने सय्याये सुताथका तृणस्पर्श थाय तेथी हवे तृणस्पर्श परीसह तेहिज देखाडेछे. यतिजेछे ते पोलो तृणटालीने तृणनोज नोग गछ निर्गतने अनुमत अने गछवासी यतिने सापेक्ष संयमथाय तेथी वस्त्रपण लिये परंतु जेवारे नूमिका नीनी होय अथवा वस्त्र पुराणो थयो होय किंवा चोरे लीधो होय तेवारे जेने अनुज्ञाछे ते सुयें एम केवल तृणनो अढी हाथप्रमाण संथारोछते पण तृणना अग्रनाग तीखा होय तेथी जे पीडा उत्पन्न थाय ते सहनकरे.

१८ तृणेकरी प्रसेवाने संयोगे मलउपजे माटे तृणपरिसह पछी मलपरिसह कहेछे. प्रसेवाने जले करी कठीन पणे थई होय एवी रज जे मल तेनो परिसह ते मलपरि

सह कहिये मल शरीरे घणो होय ते उष्णकालना तापने सयोगें प्रस्वेदथी जी जाईने तेमल दुर्गंधे गधाय ते दुर्गंध दूर करवा सारु स्नान वांछेनही वली ए क्यारे छूटीस एम पण चिंतवे नही ते मलपरीसह जय जाणवो

१९ मलव्याप्त पुरुष अनेरा कोइ पवित्रनो सत्कार थतो देखी पोतेपण कोइ क सत्कारादिकनी वांछाकरे तेमाटे मलपरीसहनी पछी सत्कार परीसह कहे छे ते आवीरीते छे अनेरा कोइये स्तवन नमन चरणस्पर्शन सामोअनो थावो आसन दान महोटा राजादिके निमत्रणादिकनो करवो एवो सत्कार पोताने थतो देखी मनमां उत्कर्ष आणे नही अने सत्कार न करवाथी द्वेष पण आणे नही ते सत्कार परीसह जाणवो

२० क्षुधापरीसहना जयथी प्रज्ञाने बहुल्यपणे गर्व नकरवो तेमज प्रज्ञाने अ नावे खेदपण न करवो तेथी ते प्रज्ञापरीसह ते आवीरीते छे जेणे करी वस्तुनो तत्व प्रकर्षे करी जाणीये ते प्रज्ञा तेनो जे परीसह ते प्रज्ञापरीसह प्रज्ञावत पु ष घणाश्रुतनो जाणछता में नवातरने विषे रुडीरीते ज्ञान आराधन कर्यो छे तेथी हुं मनुष्य छतापण समस्त जाणुंछुं सर्वना पूछेला प्रश्नोनो उत्तर आपुछु एवो गर्व नकरे अने प्रज्ञाने अभावें मनमा उद्वेगपण नकरे हु मूर्खछु काइज जाणतो नथी ते थी सहुकोइ मने पराभव करे छे पूछया थका जीवादिक द्रव्यना नाम पण जाणु नही अर्थात् मने काइज आवडतु नथी इत्यादिक चिंतवना करे नही परतु पूर्वकृ तकर्मनो स्वरूपज चिंतवे तो परीसह पीडे नही ते प्रज्ञापरीसह जाणवा

२१ प्रज्ञानीपरे अज्ञानपण सहन करवो माटे प्रज्ञानी पछी अज्ञानपरीसह जाणवो वस्तुनो तत्व ते श्रुतज्ञाने जणाय छे तेनो अभाव ते अज्ञानपरिसह जाणवो ते आवीरीते छे ते यति मनमा एम न जाणे के में सर्व अविरतपणो त्यागीने व्रतिपणो अगीकार कर्यो छे तोपण काइ जाणतो नथी तेमज में नद्र महाभद्रादिक तप पडिवज्या तथा उपधान जे सिद्धातादिकमा कहेला आचिनप्रमुख मासिकादिक प्रतिमाकरी एवीरीते क्रियायें हु चालुछु तो पण सारो नवारो काइ जा णुनही अने आगममा तो एम कह्यु छे के एगजाणइ सोसव्वजाणइ एवा वचनप को पूरो नजाणु अने फोकट ज्ञान गर्वकरुछु इत्यादिक चिंतवेनही इहा प्रज्ञा अने अज्ञाननो ए विशेषछे के प्रज्ञा परीसह अनेरो पूछे तेवारे थाय अने अज्ञा न तो मत्यादिक ज्ञान महारामा पूरणनथी एम विचारे अथवा प्रज्ञा ते शास्त्रना स्फुरवो अने अज्ञान ते त्रिकाल विषयिक वस्तुना अजाणपणाने कहेछे

२२ अज्ञान थकी दर्शननेविषे शंकाथाय तेथी हवे बावीसमो सम्यकत्व परीसह कहेछे तेनो स्वरूप आवुंछे के सम्यकत्व ते सम्यक् दर्शनी पुरुष क्रियावादी प्रमुखना विचित्र मतिउने सांजलवेंकरी किंचित्मात्र चूकेनही अने उत्तराध्ययनमां कहुंछे के. नछिनूणंपरेलोए, इढीवाचित्तवस्सिणो, आउवा वंचिउमित्ति, ईईन्निरकुनचिंतए ॥ १ ॥ व्याख्याः– नवांतरनेअर्थे तेनही अथवा तपश्वीनी आमोसही प्रमुख ऋधी तेमज पगना रजेकरी रोगनो एकक्षणेकमां उपशम करवो तथा तृणने खेचवे करी कामित वस्तुनुदेवुं तेमज शाढावार क्रोम धननी वृष्टी थवाने अर्थे तथा क्रोध उपने पाषाणनी वृष्टी करवाने अर्थे पणनही अथवा लोच उपवासादिक कष्टे करी वंचूवुं एवो निकुचिंतवे नही. वली अन्नूजिणा अत्थजिणा, अडुवाविनविस्सई, मुसंते एव माहंसु, ईईन्निरकुनचिंतए ॥ २ ॥ एवी चिंतवणाकरीने दूषण नलगाडे एरीते ए बावीस परीसहनो जयकरे इति गाथार्थ. ॥ ६७३ ॥

अवतरणः– कयोपरीसह कयाकर्मनी प्रकृतियी उत्पन्न थायछे ते त्रण गाथाये करी कहेछे. मूलः– दंसणमोहेदंसण, परीसहोपन्ननाणपढमंमि, चरमे लाजपरीसह सत्तेव चरित्तमोहंमि ॥६७४ ॥ अक्कोस अरईइच्छी, निसीयाचेल जायणा चेव, सक्कारपुरक्कारे, एक्कारसवेयणिज्जंमि ॥६७५॥ पंचेव आणुपुव्वी, चरिया सेज्जा तहेव जल्लेय, वह रोग तणफासा, सेसेसु नछिअवियारो ॥६७६ ॥ अर्थ.– मोहनीयना बे नेदछे एक दर्शन मोहनी बीजो चारित्र मोहनी त्यां दर्शन मोहनीय मिथ्यात्वादिक त्रिकना उदयथकी सम्यकत्व परीसहनो सद्भाव थायछे तेमज प्रज्ञापरीसह अने अज्ञानपरीसह ते प्रथम ज्ञानावरणीयना उदयथीथाय अने चरमके० छेलो लाज्ञांतराय तेना उदयथी अलाज परीसहथाय. हवे सात परीसह चारित्र मोहनीयना उदयथी थायछे ते आवीरीते. प्रथम क्रोधना उदयथी आक्रोश परीसह थायछे बीजो अरति मोहनीयना उदयथी अरतिपरिसह थायछे त्रीजो पुरुषवेदना उदयथी स्त्रीपरीसह थायछे चोथो नयमोहनीयना उदयथी निषिधिकीपरिसह थायछे पांचमो जुगुप्साना उदयथी अचेलकपरीसह थायछे छठो मानना उदयथी याचनापरिसह थाय छे सातमो लोज मोहनीयना उदयथी सत्कार पुरस्कार परीसह थायछे. हवे इग्यार परीसह वेदनीय कर्मना उदयथी थायछे ते कहेछे तेमां अनुक्रमे क्षुधादिक पांच तथा चर्या सय्या अने वली आठमो मल नवमो वध दशमो राग ईग्यारमो तृणस्पर्श ए इग्यारपरीसह वेदनीयना उदयथी कह्या शेषकर्मनेविषे परिसहनो अवतार नथी॥६७४॥६७५॥६७६॥

अवतरण – गुणठाणानेविषे परीसहोने समवतारी देखाडे
स बायरस, पराय चउदसय सुहुमरायमि, उउमछ वीयरागे, चउद
मि ॥६९७॥ अर्थ –ए क्षुधादिक बावीसे परीसह जे छे ते यावत्
मा नवमा गुणठाणाने विषे थाय छे चउदपरीसह सूक्ष्मसपराय
गुणठाणाने विषे सनवे तेमा पाचतो क्षुधादिक जाणवी अने छठी
सय्या, आठमी वध, नवमी अलाभ दशमी राग, इग्यारमी तृणस्पर्श,
तेरमी प्रज्ञा, अने चउदमी अज्ञान ए चउद थाय एटले चारित्र मोह
अथवा उपशम तेना प्रतिबन्धथी सात अने एक दर्शन मोहनीये प्रति
छ न थाय बाकीनी चउद थाय अने इग्यारमा छद्मस्थ गुणठाणे तथा
तराग गुणठाणाने विषे पण पूर्वोक्त चउदज थाय छे हवे तेरमा स
चउदमो अयोगी ए बे गुणठाणाने विषे अनुक्रमे क्षुधादिक पाच, छठी
तमी वध, आठमी, मल, नवमी सय्या, दशमी रोग, अने इग्यारमी तृण
इग्यार परीसह वेदनीयने प्रतिबन्धे थायछे ॥ ६९७ ॥

अवतरण –उत्कृष्टे तथा जघन्ये एक प्राणीनेविषे समकाले केटली परिसह
ते कहे छे – मूल – वीस उक्कोसपए, वट्टति जहन्नउय एक्कोय, सीउसिण
यनिसीहि, याय जुगव न वट्टति ॥६९८॥ अर्थ –उत्कृष्टथीतो वीसनो उदय
अने जघन्यथी तो एकनो होय एटले एक शीत ने उष्ण तथा चर्या ने निषिद्धि
जुगव के० ए बने एकठा समकाले वर्त्तेनही. माटे उत्कृष्टथी वीस थाय केमके
शीत होय त्यांउष्ण नहोय अने चर्या होय त्यानिषधकी नहोय इत्यादि ॥६९८
अवतरण – मकडी सप्तगति एटले सात मांकडिनो सत्यासीमा द्वार कहे छे
मूल – छुने अहे जायण, काले आवस्सएय सज्झाए, सथारे वेर तहा सत्तविहा म
मनोजणा ॥६९९॥ अर्थ – एकसूत्र बीजो सूत्रनो अर्थ त्रीजा जानन चाया
उमह पाचमा आवश्यक छठो सथाय सातमा सथारो ए सात माकडीन विषे
केर ब्रिजिने करवे करी प्रवेशयाय छे अन्यथा न कल्पे ए सत्यासीमा द्वार समाप्त
अवतरण – दसठाणवुच्छिन्नि एटले दस स्थानकना विछेदना अठ्यासीमा
द्वार कहे छे –मूल –मण परिमाहि पुलाए, आहारग खवग उवसमकप्प मह
संजमतिय केवल सिज्झणाय जंबुम्मि वोच्छिन्ना ॥ ७०० ॥ अर्थ – एक मनपर्यव
बीजो परम अवधि ते अवधि ज्ञान जेना उपजवाथी अवश्य केवल ज्ञान
ज एरी परमावधि, त्रीजी पुलाक लब्धि चोथी आहारक लब्धि, पांचमी क्षपक

णी. ठठी उपशमश्रेणी. सातमो जिनकल्प, आठमो परिहारविशुद्धि. सूक्ष्मसंपराय. ने यथाख्यात ए संयमत्रिक. नवमुं केवलज्ञान, अने दशमो सिज्झणाय के० सी जवो (सिद्धथवो). इहां केवली तथा सीजवो ए बे जुदा कह्या तेनो कारण ए ठे के केवलीतो नियमे सीजे अने जे सिद्ध थाय ते केवलज्ञान पामिने सीजे एवो ज णाववाने अर्थे कह्या. ए दश स्थानक जंबुस्वामि थकी विछेद गयां तथा प्रथम संघयण, प्रथम संस्थान अने अंतरमुहूर्त्ते चउद पूर्वनो उपयोग ए त्रण अर्थ ते श्री थूलनद्र स्वामिना वखतथी विछेद गया. उक्तंच. संघयणं संठाणं, पढमं सं जोयपुव्व अणुउंगो, एए तिन्निवि यछा, वोछिन्ना थूलनदंमि ॥१॥इति॥७००॥

अवतरणः—खवगसेढित्ति एटले क्षपक श्रेणीनो नेव्यासीमो द्वार कहेठे.—मूलः— अणमिछमीस सम्मं, अठ नपुंसिछी वेयठक्कं च, पुवेयंच खवेई, कोहाईएय संजल णे ॥ ७०१ ॥ अर्थः— इहा क्षपकश्रेणीनो पडिवजणहार पुरुष आठवरसथी उपरनो उमरनो वर्त्तमान ठता वज्र रुषन नाराच संघयणनो धणी शुद्ध ध्यानवंत अ विरत, देशविरत, प्रमत्त, अप्रमत्त संयति माहेलो अनेरो कोई पडिवजे पण इहां ए टलो विशेष जे केवल अप्रमत्त संयतिहोय तो पूर्वनो जाण शुक्लध्यानोपगत होय अने बीजा सर्व धर्मध्यानोपगत होय. त्यां पहेली अनंतानुबंधियानी विसंयोजना कहेठे.

इहां श्रेणीना अपडिवजणहार पण अविरत चतुर्गतिक ठतां क्षायोपशमिक स म्यक्दृष्टि देशविरत तिर्यंच तथा मनुष्य अथवा सर्वविरत मनुष्य जे समस्त प र्याप्ते पर्याप्ता यथा संनवपणे विशुद्धि परिणाम्याठतां अनंतानुबंधीनी क्षपणाने अर्थे यथाप्रवृत्तिकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण ए त्रण करण करे ए कर णनी वक्तव्यता सर्व कर्मप्रकृति थकी जाणवी.

अनिवृत्ति करणे पहोतो ठतो उद्वलना संक्रमणे करीने अनंतानुबंधीनी स्थि ति आवलिकामात्र मूकीने बाकीना उपरला अनंतानुबंधिया सर्वनो विनाश करे अने आवलिकामात्र ते स्तिबुकसंक्रमणे करीने वेद्यमान प्रकृतिने विषे संक्रमावे एरी ते अनंतानुबंधिचतुष्क खपावीने दर्शन मोहनीय क्षपाववाने अर्थे यथाप्रवृत्त्यादिक त्रण करण करे अने अनिवृत्तिकरणाद्धाविषे वर्त्तमान थको दर्शनत्रिक संबंधीनी कर्म स्थिति उद्वलना संक्रमणे करी उद्वले ते ज्यांसीम पल्योपमना असंख्यातमां ना गमात्र प्रमाणे रहे तेवारपठी मिथ्यात्वना दलिक तेसम्यक्त्व अने मिश्रमां प्रक्षेपे.

ते पहेले समये स्तोक बीजे समये तेथी असंख्यातगुण अधिक एम त्यांसुधी ज्यांसु धी अंतरमुहूर्त्तना चरम समयनेविषे आवलिकागत मूकीने शेष द्विचरम समय संक्र

मित दलिक थकी असख्यात गुणो सक्रमावे अने आवलिकागत तो स्तिबुक
री सम्यक्त्वने विपे प्रक्षेपे एरीते मिथ्यात्व खपाव्या पठी अतरमुहूर्तेकरी सम
थ्यात्व ते एवाज अनुक्रमे सम्यक्त्वने विपे प्रक्षेपे तेवार पठी सम्यक्मिथ्याल
खपावे हवे वली सम्यक्त्व अपवर्तवा एवीरीते लागो के जेवीरीतें अतरमुहू
प्यत मुहुर्तमात्र स्थितिक थयो ते हवे अनुक्रमे वेदतो थको समय अ
एक आवली शेप थयो तेवार पठी अनतर समये तेनी उदीरणानो छेद प
ज्यासुधी चरम समय त्यासुधी केवल विपाकानुनवे वेदीए
पठी अनतर समये क्षायिकसम्यकदृष्टी थाय जो बद्धायुष्क क्षपकश्रेणी
मांडे तो अनतानुबधीना क्षय, पठी मरणने सनवे पाठो पडीवजे तो कदाचि
मिथ्यात्वना उदयथकी वली अनतानुबंधियाने पुष्टीपणे पमाडे कारणके अनता
नु वधियानो वीजनूत मिथ्यात्व हजी विणस्योनथी तेमाटे
अने जे क्षीण मिथ्यादर्शनी ते पुष्टीपणे अनतानुबधीने मिथ्यात्ववीजना अनाव
थी करेनही अने क्षीणसतक ते अप्रतिपतित परिणामे देवताने विपे अवश्य उपजे
अने प्रतिपतित परिणामि ते तो जेवो परिणामि तेवा परिणामने अनुसारे ना
नाप्रकारनी गतिमांहे उपजे तथा बद्धायुनपण जे तेवारेज काल न करे तो प
सतकक्षीण थयाथको निश्चेथीरहे पण चारित्र मोहनीय क्षपाववाने अर्थे यत्नकरे
इहां शिष्य प्रश्न करेले के गत्यतरने विपे जातो क्षीणसतक केटलेनवे मोक्ष
जाय तेनेगुरु उत्तर कहेले के त्रीजे अथवा चोथे नवे मोक्ष जाय तेमां जो दे
अथवा नरकगतिये जाय तो ते देव अथवा नारकीनो नव विचालेकरी त्रीजे न
वेज मोक्ष जाय अने जे तिर्यंच अथवा मनुष्यमां उपजे ते तो अवश्य असख्या
त वर्षआयुष्यवालामा उपजे पण सख्यातावर्ष आयुष्य वालामां न उपजे पठी
त्यांथी देवगतिपामि फरी मनुष्यमां आवी मोक्ष जाय एरीत चारनव पणथाय
हवे सतक क्षपवाला पूर्वबद्धायुष्क एवोजे होय ते तेवारेज कालकरी मरण
पामिने वैमानिकनेविप उपजे जे बद्धायुष्क ते चारित्र मोहनीय उपशमाववाने
अर्थे उद्यमकरे पण शेप नवने विप बद्धायुष्क होय तो नकरे
इहां वली शिष्यपुछेले के दर्शन त्रिक क्षपगयो ता ए सम्यक दृष्टी किंवा अन
म्यक्दृष्टी जाणवो तेवारे गुरु कहेले के सम्यक्दृष्टीतो तहारा केवायी सम्यक्त्व
नने अनावेपण सम्यक्दृष्टी पणा थया एम न कहेवो इहांतो जेहना मरणा ह
ट्यां होय एवा कोइवा ते समान गयाने जनायकी मिथ्या

त्वना पुजनरूप जेछे ते इहां सम्यकदर्शन क्षयेपणे गयाछे परंतु जे आत्माना परिणाम स्वनाव तत्वार्थश्रद्धान लक्षण सम्यकदर्शन ते गयोनथी अने ते तो अति शुद्ध थायछे अभ्रपटलने अनावे मनुष्यदृष्टी तेनीपरें महाशुद्धतर स्वरुप थाय.

हवे जे अबद्धायुष्क क्षपकश्रेणी आरंने तो सप्तक क्षयकीधेछते निश्चेयकी अनुपरत परिणामिथको चारित्रमोहनीय खपाववानणी उद्यमकरे अने ते चारित्रमोहनीय खपववाने अर्थे यथाप्रवृत्यादि त्रण करण करे ते आवीरीते के यथा प्रवृत्तकरण अप्रमत्तगुणठाणे तथा अपूर्वकरण अपूर्वकरण गुणठाणे अने अनिवृत्तिकरण ते अनिवृत्तिबादर संपराय गुणठाणे करे त्यां अपूर्वकरणनेविषे स्थितिघातादिके करीने अप्रत्याख्याना वरणचतुष्क अने प्रत्याख्यानावरण चतुष्क ए आठ ते केवीरीते खपावेछे जेम अनीवृत्तिकरण कालना प्रथम समयेज ते कषायाष्टक पल्योपमासंख्येय नाग मात्र स्थितिकथयो वली एज अनीवृत्तिकरण कालनो असंख्यातमो नाग गयेछते थीणथीनो त्रिक. नरकगति, नरकानुपूर्वी, तिर्यग्गति, तिर्यगानुपूर्वि एकेंद्रिय, बेंद्रिय, तेंद्रिय, अने चउरिंद्रियनी जाति स्थावर, आतप, उद्योत, सूक्ष्म, साधारण, ए सोलप्रकृतिनी उद्वलना संक्रमेकरी उद्वलतांथकां पल्योपमासंख्येय नाग मात्र स्थितिथई तेवारपछी वध्यमान प्रकृतिमांहे ते सोलप्रकृति गुण संक्रमे ते समय समय घालतीछति समस्तप्रकारें क्षीणथाय.

ईहां सूत्रकारनो ए अनिप्रायछे के कषायनो अष्टक प्रथम खपाववा मांड्योहे तेपण हजीसुधी क्षीण थयो नथी अने विचाले पूर्वोक्त सोलप्रकृतिखपावी पछी ते पण आठकषाय अंतरमुहूर्त्ते खपावे. अने बीजा आचार्य एम कहेछे के सोल प्रकृतिज प्रथम खपाववामांडे अने विचाले आठकषाय खपावी पछी सोलप्रकृति खपावे तेवारपछी अंतरमुहूर्त्ते नवनोकषाय अने चार संज्वलननो अंतरकरणकरे ते अंतर करण करीने नपुंसकवेदना दलिक उपरली स्थितिगत उद्वलना विधेकरी खपाववामांडे तेपण अंतरमुहूर्त्ते पल्योपमासंख्येयनागमात्र थया तेवार पछी वध्यमान प्रकृतिने विषे गुण संक्रमे ते दलिक प्रक्षेपे एम प्रक्षेपतां अंतरमुहूर्त्ते समस्त नीचली स्थितिना दलिक क्षीण थया.

जे नपुंसकवेदे क्षपकश्रेणी करवामांडे तो अनुनवतो ते खपावे अन्यथा प्रकार आवलिका मात्र ते थाय ते लेई दली वेद्यमान प्रकृतिमांहे स्तिबुकसंक्रमें संक्रमावे एटले करी नपुंसकवेद खपावे पछी एवीज अनुक्रमे स्त्रीवेद खपावे तेवारपछी ट नोकषाय समकाले खपाववामांडे अने तेवारपछी तेनी उपरली स्थितिगत

जेदलिकठे ते पुरुपवेदमांहे सक्रमावे नहो किंतु सज्वलन क्रोधने विषे
वे एम ए सर्व पूर्वोक्त विधेकरी खपावताथका अंतरमुहूर्त्तें सर्वथा प्रकारे
या हवे तेहिज समये वेदनो बध उदय उदीरणानो विच्छेद अने स
आवलिकानेविषे एटलो बद्ध मूकी शेपनो पण क्षय थयो तेवारे ए अवे
क्रोध वेदताथकाने एना त्रणविभाग होय तेनानाम अश्वकर्णकरणाद्धा,
णाद्धा, किट्टिवेदनाद्धा तेना स्वरूप ईहा शास्त्रांतरोक्त भावे देखाडीयेछे
घोडाना कर्णनीपरे जे न्हाना न्हाना कर्मनापुद्गल तेहना न्हाना न्हाना
करे जे थकी कालविशेषने विषे ते अश्वकर्ण करणाद्धा कहिये ते कर्मना
रससहित कूटी कूटीने किट्टीनीपरे अति न्हानाकरे तेने किट्टिकरणाद्धा कहिये
किट्टीकरी तेने वेदे ते किट्टीवेदनाद्धा कहियें

त्यां अश्वकर्ण करणाद्धाये वर्त्तमानछतो समय समयनेविषे चार सज्वलन
पायना अतरकरण थकी उपरली स्थितिनेविषे अनता अपूर्व स्पर्द्धककरे ते सर्व
क कोने कहिये ते कहेछे इहां जे अनतानत परमाणुये नीपनाछे एवाजे स्कध ते
जीव कर्मपणे ग्रहण करे त्यांजे एकेका स्कधनेविषे सर्व जघन्य रस परमाणुयाछे
तेनो रसपण केवलीनी बुद्धियें सर्वजीवने अनतगुण रस भाग आपे अनेरोते
रसभाग एकेअधिक अनेरोवली बेहुए अधिक एम एकोत्तरवृद्धे त्यांसुधी जाणवा
ज्यांहुद्धि अनेरो परमाणुउ अनभ्यथकी अनतगुणा अने सिद्ध थकी पण अनतमे भा
र्ग अधिक रसभागछे त्यां जघन्यरसे जेकोई परमाणुयाछे तेनो समुदाय समान
जातिपणा लगीने एक वर्गणायेज कहिये एम अनेराजे एकाधिक रसभाग सहि
त तेनो समुदाय तेनी बीजी वर्गणा जाणवी अनेरा वली द्व्यधिक रस भाग युक्त
तेनो समुदाय तेनी त्रीजी वर्गणा एम एरीते एकोत्तर रसभागवृद्धि परमाणुआनो
समुदायरूप जे वर्गणा ते सिद्धथकी अनतमाभाग समान अनभ्यथकी अनत गुणी
कहवी अने एना समुदाय ते स्पर्द्धक कहियें एटले माहोमाहे स्पर्द्धाकर न भा
स्पर्द्धक कहेवायछे एम उत्तरोत्तर वृद्धेकरी परमाणुआनी वर्गणा जाणवी इहां स
र्द्धक एटना भाग्ने ते के एयकी एकोत्तरें अधिकि निरतर वृद्धे वधता रस न भाव
किंतु सर्व जीवथकी अनतगुण जे रसभाग तेयकी तेहिज अनुक्रमे बीजा स्पर्द्धक
मांनीयें एमज त्रीजो स्पर्द्धक एम ज्यांसुधी अनता स्पर्द्धक थाय त्यांसुधी

हवे एनायकीन पहेली वर्गणा आददेईन सिद्धिना जे प्रकर्ष तेना वगदरी
अनंतगुण हीन रसकरीने पहेना नीपरे स्पर्द्धककरे एरा स्पर्द्धक पहना भाग

कोइये कह्यानथी तेथी तेने अपूर्व कहिये एणे अश्वकरण करणाद्धा पुरीकीधी करणाद्धानेविषे वर्त्तमान थको पुरुषवेद समयोन आवलिकाद्वयें क्रोधनेविषे गुण संक्रमेकरी संक्रमावतो चरम समये जीव संक्रमेकरी सर्व संक्रमावे ते वारे पुरुषवेद क्षीण थाय. एरीते अश्वकरणकरणाद्धा संपूर्ण थइ. अने किट्टीकरणाद्धाये वर्त्तमान थको चारसंज्वलननी कषायना उपरली स्थितिना जे दलिक तेनी किट्टीकरे किट्टीनोस्वरुप कहेछे. जे पूर्वस्पर्द्धक अने अपूर्वस्पर्द्धक थकी प्रथमादि वर्गणाउंड विशुद्धिप्रकर्षना वशथकी अत्यंत हीनरस करीने तेने एकोत्तरवृद्धि त्यागें वणे अंतराले करीने स्थापवो तेआवीरीते ज्यां ते वर्गणाना असत्कल्पनायें रसना [illegible] नुभाग तेहनो शत एकोत्तरादिक जे हतो तेहीज वर्गणानी विशुद्धिना [illegible] रसना अनुभाग दशक अथवा पनर तेनो जे स्थापन करवो तेने किट्टी कहिये. [illegible] ने ए किट्टी परमार्थे अनंति छतापण स्थूलजाति भेदआश्री वारनी [illegible] यें ते एकेक कषायनी पहेली बीजी ने त्रीजी एम त्रण त्रण किट्टी [illegible] क्रोधे क्षपकश्रेणी पडीवजे तेने जाणवो.

जेवारे माने पडिवजे तेवारे उद्वलन विधि करीने क्रोधे खपावे [illegible] थके तेनी पूर्वक्रमे नवकिट्टीकरे अने जो मायायें पडीवजे तो [illegible] उद्वलनाविधे क्षपणाकीधीछति शेष बे कषायनी पूर्वअनुक्रमे [illegible] लोभे पडिवजे ते उद्वलनाविधे क्रोधादिक त्रण कषाय [illegible] त्रण किट्टीकरे ए किट्टी करवानी विधिकही

हवे किट्टीकरणद्धा त्रणे पूरणथएछते क्रोधे श्रेणी [illegible] ली किट्टी संबंधी जे दलिक बीजी स्थितिगतछे ते [illegible] अने वेदेपण त्यांसुधी के ज्यांसुधि समये अधिक [illegible] मवेदे तेवारपछी बीजा समयनेविषे बीजी किट्टी [illegible] पिने प्रथम स्थितियेंकरे अने वेदे पण नांनी [illegible] मात्र शेषरहे तांसीमवेदे तेवारपछी त्रीजी किट्टी [illegible] प्रथम स्थितियेंकरे अने वेदेपण त्यांसुधी [illegible]

शेष त्रण किट्टी वेदना अद्धानेविषे [illegible] णे समय समयने विषे असंख्येय गु[illegible] अने त्रीजीकिट्टी वेदनाद्धा तेना [illegible]

य उदीरणाने समकाले विछेदे अने सत्तापण एक समयोन आवलिकाद्विके द्वी बद्ध एवो मूकी तेने अनेरोनही सर्व माननेविषे प्रक्षेप्यो

तेवारपछी माननी प्रथम किट्टी तेना दलिक बीजी स्थितिगत आकर्षि प्रथम स्थितिये करे अने वेदेपण तांलीम जांलीम अंतरमुहूर्त एम क्रोधनोपण बंधादि व्यवछिन्न थयेथके तेना दलिक समयोन बे आवलिकाये माननेविषे गुण संक्रमें संक्रमावतो थको चरम समय सर्व संक्रमावी माननीपण पहेली किट्टीना दलिक पहेली स्थितिनेविषे कीधाळे तेवेदता समयाधिक आवलिका शेषथाय तेवारे माननी बीजी किट्टीना दलिक बीजी स्थितिगत आकर्षि प्रथम स्थितियेंकरी वे ते जांलीम समयाधिक आवलिकामात्र शेषरहे त्यांसुधिवेदे पछी त्रीजीकिट्टीना द लिक बीजी स्थितिगत आकर्षि प्रथम स्थितिगत करी वेदे समयाधिक आवलिका मात्र शेषरहे त्यांसुधीवेदे अने तेहिज समये मानना बंधउदय उदीरणानो समकाले विछेदथाय अने सत्कर्मपणे तेने समयोन आवलिका द्विकबंधेज शेषतेक्रोधनीपरे जाणवो जेम त्यां क्रोध माननेविषे प्रक्षेपी तेमईहां मानते मायानेविषे प्रक्षेपीने

तेवारपछी मायाना प्रथम किट्टीदलिक द्वितीय स्थितिगत आकर्षि प्रथम स्थितेंकरी अंतर मुहूर्तमात्र लगे वेदे संज्वलन मानसंबंधी बंधादिकनो विछेदथयेथके संज्वलन मानना दलिक समयोन आवलिकाद्विके गुणसंक्रमणेकरी मायानेविषे प्रक्षेपे मायानापण प्रथम किट्टीदलिक बीजी स्थितिगतकरी पहेली स्थितियेंकरी वेदता यावत् समयाधिक अवलिका शेष थाय तेवारपछी मायाना द्वितीय किट्टीनवरी दलिक द्वितीयस्थितिगत आकर्षि प्रथम स्थितकरी समयाधिक अवलिकामात्र शेष रहे त्यांलगे वेदे तेवारपछी त्रीजी किट्टीना दलिक बीजी स्थितिगत आकर्षि प्रथम स्थितेंकरी समयाधिक आवलिकामात्र शेषलगे वेदे तेहिज समयनेविषे मायाना बंध उदय उदीरणा पण समकालें विछेदथाय अने मायानो सत्ताकर्मपण समयोन आवलिका द्विक बंधमात्रेज शेषरहे जेणेकारणे गुण संक्रमे लोभनेविषे प्रक्षेप्या

पछी लोभनी पहेली किट्टीना दलिक बीजी स्थितिगत आकर्षि पहेली स्थितकरी वेदे ते ज्यांलग अंतर मुहूर्त एटले संज्वलन मायाने बंधादिके व्यवछिन्न थयेथके मायाना दलिक समयोन बिहु आवलियें गुण संक्रमें समस्त लोभनेविषे संज्वलन लोभनी प्रथम किट्टीना दलिक प्रथमस्थितेकरी वेदतोयका समयाधिक आवलिका शेषथयो तेवारपछी लोभनी बीजी किट्टीना दलिक बीजी स्थितिगत

आकर्षि प्रथम स्थितियेंकरी वेदे ते ज्यांसीम बीजी किट्टीना दलिक प्रथम स्थिति गत कीधाछे ते आवलिकामात्र शेष जाणवी.

अने तेहीज समयें संज्वलन लोभना बंधनो व्यवछेद थाय बादर कषाय संबंधी उदय उदीरणानो व्यवछेद थाय अने अनिवृत्तिबादर संपराय गुणठाणानो काल ए सर्व समकाले व्यवछेद थाय तेवारपछी सूक्ष्म किट्टीदलिक द्वितीय स्थितिगत आकर्षि पहेली स्थितियें करी वेदे तेवारे एने सूक्ष्मसंपराय कहियें.

हवे त्रीजी किट्टीगत आवलिका शेष छे ते सर्व विद्यमान आगली प्रकृतिनेविषे स्तिबुकसंक्रमे संक्रमावे अने प्रथम द्वितीय किट्टीगत जेवीरीतेछे तेवीरी तेज बीजी त्रीजी किट्टीगत मध्ये वेदे अने सूक्ष्मसंपराय लोभनी सुक्ष्म किट्टी वेदतो थको सूक्ष्मकिट्टीना दलिक जे समयोन बे आवलिकाये बद्ध छे ते समय समयनेविषे स्थितिघातादिकेकरी त्यां खपावे ज्यां सूक्ष्मसंपरायनी अद्धाना संख्यात भाग गया होय एक थाकतो रहे ते एक संख्यातमो भाग जे थाकतो रहे ते भागने विषे संज्वलननो लोभ सर्व अपवर्त्तनायें अपवर्त्ति सूक्ष्मसंपरायनी अद्धा समानकरे ते सूक्ष्मसंपरायनी अद्धा हजीसुधी अंतरमुहूर्त्त प्रमाण छे ते आरंभी पछी मोहनीयना स्थितिघातादिक निवर्त्ते शेषकर्मना स्थितिघातादिक प्रवर्त्ते अने लोभनी अप्रवर्त्तित स्थिति उदय उदीरणाये करी वेतो थको त्यांसुधीगयो के ज्यां सुधि समयाधिक आवलिका मात्र शेष त्यां उदिरणा रहीछे.

तेवारपछी ते स्थिति केवल उदयेकरी वेदे ज्यांसुधि चरमसमय. अने ते चरमसमयनेविषे ज्ञानावरणियादिक पांच, दर्शनावरणीय चार, यशकीर्त्ति, उच्चैर्गोत्र, पांच अंतराय ए सोलप्रकृतिना बंधनो विछेद थाय तेम वली मोहनीयना उदय अने सत्तानो विछेद थाय तेवारे ए क्षीण कषायी थयो.

वली तेहने शेषकर्मनी स्थितिघातादिक ए पूर्ववत प्रवर्त्ते ज्यांसीम क्षीणकषाय अद्धाना संख्येयभाग गयांहोय अने एक भाग रहे ते भागने विषे ज्ञानावरणादिक पांच, अंतराय पांच. चार दर्शनावरण बे निद्रा ए सोल प्रकृतिनी स्थिति ने सत्ता ए सर्व अपवर्त्तनायें अपवर्त्ते ते अपवर्त्तिने क्षीणकषायअद्धासमान करे केवल निद्राद्विकनी आपणा आपणा रूपनी अपेक्षायें एक समयउणी सामान्यपणे अने कर्मरूपपणे सरखी ते क्षीणकषायअद्धापण अंतरमुहूर्त्त मान छे.

तेवारपछी ते आरंभीने तेना स्थितिघातादिक रह्या, शेष थाकतानी थाय ते सोल कर्मप्रकृति निद्राद्विके हीन तेने उदय उदीरणा, वेतो थको त्यांसुधी गयो

ज्यातीम समय अधिक आवलिका मात्र शेष रहे तेवारपछी उदीरणा निवर्त्ती आवलिका सीम केवलउदये करी ते वेदे ते ज्यासुधी क्षीणकषाय अद्धानो द्वि समय ते थकी उपलो समय ते द्विचरम समयने विषे निद्राद्विक आपणेरूपे तेनी अपेक्षाय क्षीण थयो अने चउद प्रकृतिनो चरमसमय क्षय थयो तेवारे अनतर समये केवली थाय. ॥१०१॥

अवतरण — एगाथा सूत्रकार सर्वपदे जुदी जुदी वखाणनार छतो कहे छे मूल —कोहो माणो माया, लोहोणताणुबंधिणो भणिया, खविऊण खवइ लो मिश्र मीसंच सम्मत्तं ॥ १०२ ॥ अर्थ —क्रोध, मान, माया, अने लोभ ए चार अनतानुबंधिया कषाय समकालें खपावीने सढके० नपुंसक जे श्रेणीनो पडिवज्जणहार ते मिथ्यात्व, मिश्र, अने सम्यक्त्व ए त्रण प्रकृति अनुक्रमें अंतरमुहूर्त लगें खपावे मरीनो पण क्षपणकाल अंतरमुहूर्त्तमान अने श्रेणी परिसमाप्ति काल पण अंतरमुहूर्त्त मानज जाणवो केमके अंतरमुहूर्त्तना असंख्याता भेद छे माटे॥१०२॥

मूल — अपचक्काणे चउरो, पच्चक्खाणेय सममवि खवेइ, तयणु नपुंसगवेदं, थि. वेयछग्ग उराय खवइ सम ॥ १०३ ॥ अर्थ —अप्रत्याख्यानिया क्रोधादिक चार अने प्रत्याख्यानिया चार ए आठे एकठा खपावे तेवारपछी नपुंसकवेद ने खपावे ए वेद्य समकालेज खपावे एम स्त्रीवेद तथा नपुंसकवेदना क्षय थकी समकालें पुरुषवेदना बंधना व्यवच्छेद करे ते खपावीने समकाले वक्ष्यमाण प्रकृतिने खपावे ॥ १०३ ॥ तेहिज देखाडेछे

मूल —हास रइ अरइ पुवेय सोअ भयजुय दुगंछ सत्तइमा॥तह संजलण कोह माण मायंच लोभंच॥१०४॥अर्थ —हास्यादिक छ तथा पुवेद ए सात प्रकृति खपावी पछी संजलनना चार कषाय खपावे॥१०४॥ त्यां लोभनेविषे एटलो विशेष छे ते कहे छे

मूल —ता किट्टीक्य असरा, लोह खमाइ खविय मोहखया॥ पावइ जायानाए, पासये केवल नाणं॥१०५॥अर्थ —तेवारपछीमायाक्षपणानंतर लोभना सघनी असंख्यानी किट्टीकरे तेने खपावे एम सर्व मोहना क्षय थकी लोकालोकना प्रकाशक एवं केवल ज्ञान पामे इहां एटला विशेषके एजे लोभनी किट्टीना करण ते लोभ अ्नी प्रत्ये जाणवो अने जेवार क्रोध श्रेणी पडिवजे तेवारे क्रोधादिक चारनी किट्टीकरनी माने पडिवजे तेवारे मानादिक त्रणनी किट्टीकरे अने मायायें पडिवजे तेवारे माया अने लोभनी किट्टीकरे आ सूत्रमा जे क्षपणाना क्रम कह्या ते नहीं कहाया आमीने कह्या ॥ १०५ ॥

मूल:— नवर इत्थी खवगा. नपुंसगं खविय खवइ थीवेय ॥ हासाइछगं खविउं. खवइ सवेयं नगे खवगो ॥ ७०६ ॥ अर्थ.— नवरकं० एटलो विशेषछे के जेवारे स्त्री क्षपकश्रेणी प्रारंभे तेवारे पहेलुं नपुंसकवेद खपावी पछी स्त्रीवेद अने स्त्रीवेद ना क्षयथयाथी समकालेज पुरुषवेदना बंधनो व्यवछेदथाय तेवारे अवेदक पहेलीजे पुरुषवेद तथा हास्यादिक छ ए सात प्रकृति हती ते समकाले खपावे शेष तेमज जेवारे पुरुष पडिवजे तेवारे पहेलुं नपुंसकवेद पछी स्त्रीवेद पछी हास्यादिक खपावीने पछी पुरुषवेद खपावे शेष पहेलानी परे जाणवो. ए क्षपकश्रेणीना स्वरूपनो नेव्यासीमो द्वार समाप्त थयो. ॥ ७०६ ॥

अवतरणः— उवसमसेढित्ति एटले उपशमश्रेणीनो नेवुमो द्वार कहेछे. मूलः—अणदंस नपुंस इत्थी. वेयछक्कंच पुरिसवेयच ॥ दोदो एगंतरिए. सरिसे सरिसं उवसमेइ. ॥७०७॥अर्थः—उपशमश्रेणीनो पडिवजणहार अप्रमत्त संयत गुणठाणेज होय अने प्रमत्त. अप्रमत्त. देशविरति. अविरते ए मांहे मेली आवे ते होय अने अनेरा एम कहेछे के अविरत देशविरत प्रमत्त अप्रमत्त माहेलो मेलि आवे ते अनंतानुबंधी उपशमावे अने दर्शनत्रिकादि संयमनेविषे वर्त्तमान छता ज त्यां पहेली अनंतानुबंधीनी उपशमना देखाडेछे.

अविरत्यादिक माहेलो मनोयोगादिकयोगे वर्त्तमान तेजोलेश्यादिक त्रण शुभलेश्या माहेली कोईक लेश्या माहे वर्त्ततो साकारोपयोगयुक्त प्रत्येक कर्मनी एक कोडाकोडी सागरोपममांहे स्थिति. करणकाल थकी पहेलो पण अंतर मुहूर्त्तसुधि विशुद्धमान चित्तथको एम रहेतो आगले शुभप्रकृतिबांधे परतु अशुभ प्रकृतिनबाधे अने समय समयनेविषेअशुभ प्रकृतिनो अनुभाग अनंतगुण हाणी करतो शुभप्रकृतिनो रस अनंतगुण वृद्धि करे अने स्थितिबंधेपण पुरेहुए छते पूर्वस्थिति संबंधीनी अपेक्षायें पल्योपमने असख्यातमे भागे हीन स्थिति बंध करे अने अंतरमुहूर्त्त पूरण थये छते अनुक्रमे यथाप्रवृत्तकरण अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण ए त्रणेकरणनी प्रत्येके अंतरमुहुर्त्त प्रमाण जेनी स्थिति एवाकरे चोथी ते उपशांताद्धा अनिवृत्तिकरणाद्धाना संख्याताभाग गयेछते एक भाग रहेथके अनंतानुबंधीनी नीची अवलिकामात्र मूकीने अंतरमुहूर्त्तप्रमाण अंतरकरण अंतर मुहूर्त्तकरे अंतरकरणना दलिक उखेलीने वध्यमान प्रकृतिमां प्रक्षेपे अने प्रथमस्थितिना आवलिकागत दलिक स्तिवुकसंक्रमणे वेद्यमान प्रकृतिमांहे प्रक्षेपे.

अने अंतरकरण कीधेछते बीजा समयनेविषे अनंतानुबंधीनी उपरली स्थिति

मत्रनी दलिक उपशमाववा मांडे ते प्रथम समये स्तोक बीजे समये त्रीजे अनुक्रमे असंख्येयगुण वृद्धि ते त्यांसीम ज्यांसीम अंतरमुहूर्त्ते समस्त प्रकारे अनुबंधी उपशमाव्या उपशमित तेने कहिये जेम धूळने पाणीयी सींची उपर ढूंडासाये कूटी थकी महानिचित थाय तेम कर्मरूप धूळी निर्मल अध्यवसायरूप पाणीने सींची सीचीने अनिवृत्तिकरणरूप धुलडायेकरी कूटतो थको पछी संक्रम उदय उदिरणा निधत्त निकाचनादि करणने अयोग्यथाय एक अनंतानुबंधीनी उपशमना न मानवी किंतुविसयोजना क्षपणा ते पहेली कही

हवे सांप्रत दर्शनत्रिकनी उपशमना कहेछे ईहां क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टीमनमनेविषे वर्त्तमान अंतरमुहूर्त्त दर्शनत्रिक उपशमावतो पूर्वोक्त त्रणकरणने क्रमे विशुद्धिये वर्द्धमान अनिवृत्तिकरणनी अद्धाने संख्यातभागे गयेछते अंतरकरण करतो सम्यक्त्वनी पहेली स्थिति अंतरमुहूर्त्तमान स्थापे मिथ्यात्व अने मिश्रनी दलिक आवलिकामात्र उत्किरताथका सम्यक्त्वनी पहेली स्थितिमां प्रक्षेपे न मिथ्यात्व मिश्रनी पहेली स्थितिना दलिक सम्यक्त्वनी पहेली स्थितिने तेने स्तिबुकसंक्रमणे संक्रमावे अने सम्यक्त्वनी जे पहेली स्थितिछे तेने विपाकानुभवे क्रमेक्षयथये थकी उपशम सम्यक्दृष्टी थाय अने मिथ्यात्वादि त्रिकनी अंतरनी स्थितिना दलिकछे तेनी उपशमना अनंतानुबंधीनी उपरली स्थितिना दलिकनीपरें जाणवी

एम उपशांत दर्शन त्रिक छतो प्रमत्त अने अप्रमत्तना जे परावर्त्तन ते सहस्त्र ना ने करीने चारित्र मोहनीय उपशमावणहार थको वली यथा प्रवृत्तादिक त्रण करण करे पण इहां यथाप्रवृत्तकरण अप्रमत्त गुणठाणे अने अपूर्व करण अपूर्वगुणठाणे करे अने अपूर्वकरणे रह्यो छतो स्थितिघातादिकेकरी निर्मल थइ पछी अनंतर समयें अनिवृत्तिकरणे प्रवेश करे अने अनिवृत्तिकरणना संख्येयभाग गयेछते दर्शन सप्तक रहित शेष एकवीस मोहनीयनी प्रकृतिना अंतरकरण करे अने तेणे प्रस्तावें जे वेदनोनथा जे संज्वलनकषायनो उदयछे ते बेनी पोतपोताना उदय कालमान पहेली स्थितिकरे अने शेष इग्यार कषाय अने अष्ट नोकषायनी आवलिकामात्र स्थितिकरे इहां त्रणवेद अने संज्वलन चारनो उदयकाल न अंतरकरणगत दलिकना प्रक्षेपमात्र स्वरूप ग्रयविस्तारना भयथी लख्युं नथी

हवे अंतरकरण करीने नपुंसकवेद अंतरमुहूर्त्त उपशमावे ते प्रथम समये थोडो तेथकी द्वितीयादि समयें असंख्येयगुणवृद्धें त्यांलग उपशमावे ज्यां

चरमसमय आगली प्रकृतिनेविषे समय समयनेविषे उपशमाव्याते जे दलि
क तेनी अपेक्षाये त्यांलगें असंख्येयगुण प्रक्षेपे ज्यांलीम द्विचरम समय अने चर
म समयनेविषे उपशमावतो आगली प्रकृतिनेविषे संक्रमावियेठे जे दलिक तेनी
अपेक्षायें असंख्येय गुण जाणवो

एम नपुंसकवेद उपशमावे ठते पूर्वोक्तविधियें करीने अंतरमुहूर्त्ते स्त्रीवेद उपश
मावे तेवार पठी अंतरमुहूर्त्ते हास्यादिक ठ ते ठ ए उपशमावे ठते तेहिज सम
ये पुरुषवेदना बंध उदय उदीरणानो व्यवच्छेद थाय तेवारपठी एकसमयउणि
बे आवलिये समस्त पुरुषवेद उपशमावतो समकालें अंतरमुहूर्त्तमात्रे प्रत्याख्यान
अप्रत्याख्यानावरण क्रोध उपशम्या अने तेहिज समये संज्वलनना क्रोधनो बंध
उदय उदीरणानो विछेद थयो.

तेवारपठी समयउण बे आवलियें संज्वलननो क्रोध उपशमावे ते उपशमाव्या
पठी समकालें अंतरमुहूर्त्ते अप्रत्याख्यान ने प्रत्याख्यानावरण मान समकाले उप
शमावी तेहिज समयें संज्वलनना मानना बंधादि त्रणनो विछेद थाय.

पठी समयोन बिहुं आवलियें संज्वलन मान उपशमावी पठी अंतरमुहूर्त्ते अ
प्रत्याख्यान प्रत्याख्यानावरण माया समकाले उपशमावे ते उपशमावीने तेहिज
समये संज्वलननी मायानाबंधादिक त्रणनो विछेद थाय.

ए कह्या पठी केवल लोभनो वेदक थको लोभवेदनाद्धाना त्रण विभाग करे.
एक अश्वकर्णकरणाद्धा बीजो किट्टिकरणाद्धा त्रीजो किट्टिवेदनाद्धा त्यां बेहुने
आद्यना बिहुंभागे वर्त्तमान थको संज्वलनना लोभनी बीजीस्थिति थकी दलिक
खेंचीने पहेली स्थितियें करे अने वेदे पण.

अने अश्वकर्ण करणाद्धायें वर्त्तमान पहेले समयेज अप्रत्याख्यान प्रत्याख्या
नावरण अने संज्वलनरूप ए त्रण लोभ समकालें उपशमाववालागो विशुद्ध थय
तो अपूर्व स्पर्द्धक पूर्वोक्त शब्दार्थ करे संज्वलनमायानो बंधादिक विछेद गए ठतें
समयोन बिहुंआवलिकायें संज्वलनी माया उपशमावे.

एम अश्वकर्णकरणाद्धायें गयाठतां किट्टिकरणाद्धायें प्रवेश करे त्यां पूर्व स्पर्द्धक
थकी बीजीस्थितिगत दलिक लेइने समय समय अनंतर किट्टिकरेकिट्टिकरणाद्धाने चर
मसमये समकालें अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यानावरण लोभ उपशमावे तेहिज समये प
ठी संज्वलनना लोभना बंधनो विछेद बादर संज्वलनना लोभना उदय उदीरणा नोप

काले स्त्रीवेद उपशमाववालागो त्यांगयो ज्यांसीम नपुंसकवेदोदयनी अद्धानो द्विचरम समय अने ते समयें स्त्रीवेद उपशम्यो अने नपुंसकवेदनी एक समयमात्र उदय स्थितिने. शेष सघलो नपुंसकवेद उपशम्यो. हवे समयमात्रनी हुंतिजे उदयस्थिति नपुंसकवेदनी तेणेपण अतिक्रमिठतीयें अवेदकथाय तेवारपठी पुरुषवेदोदय सातप्रकृति उपशमाववा मांमे शेष पूर्वपरे जाणवुं.

हवे स्त्रीवेदे श्रेणीपमिवजे ते पहेला नपुंसकवेद उपशमावे पठी स्त्रीवेद उपशमावतो त्यांसीम ज्यांसीम आपणा उदयनो द्विचरम समय अने तेने समयें एक चरममात्र उदयस्थितिमूकी शेष सघलो स्त्रीवेदसंबंधी दलिक उपशम्यो तेवारपठी चरम समयें गयेथके अवेदकठती पुरुषवेद अने हास्यादिषट्क ए सातप्रकृति समकाले उपशमावे शेष तेमज जाणवो. ॥ ३०८ ॥ ३०९ ॥

हवेपुरुषवेदे श्रेणीपडिवजे तेहनो स्वरूप पहेली गाथाये कह्यो.मूल –तो पुवेयतत्तो, अपच्चरकाणपच्चरवाणाण ॥ आवरण कोहजुअलं. पसमइ संजलणकोहंपि॥३१०॥ अर्थ सुगम छे. एयक्कमेण तिसिवि, माणेमाया वलोहतियगंपि ॥ नवरसंजलणा जिह लोहतिनागे इय विसेसो ॥ ३११ ॥ अर्थः– ए क्रोधादिकने उपशमाववाने क्रमे त्रणे अप्रत्याख्यानावरणादि मान माया अने लोभ उपशमावे नवरं संज्वलन लोभ किट्टि वेदना नाम त्रीजे भागें एवो वक्ष्माण विशेष तेदेखाडे छे॥३११॥

मूलः– संखेयाइंकिट्टी कयाइ खंमाइं पसमसकमेण ॥ पुणरवि चरमं खंमे, असंखखंमाइकाकणं ॥ ३१२ ॥ अर्थ.– असंख्याता जे जे संज्वलन लोभनाखंम ते किट्टीके० सूक्ष्मपणे कीधा ते अनुक्रमे समय समयप्रते उपशमावतो चरमखंमना वली असंख्याता खंमकरीनें समय समयप्रते एकेक उपशमावे. ॥ ३१२ ॥

अवतरणः– जे प्रकृति उपशमावतो जे गुणठाणे वर्त्ते ते कहेछे. मूलः– अणुसमयं एकेकं, उपसमइइहहि सत्तगोवसमो ॥ होइ अपुव्वो तत्तो, अनीअट्टिहोइ नपुमाइ ॥ ३१३ ॥ पसमंतो जा संखेय लोहखंमाइ चरमखंमस्स ॥ संखाइ ए खंमे, पसमंतो सुहम रागोसो ॥ ३१४ ॥ इय मोहोवसमम्मि, कयम्मि उवसंतमोह गुणठाणं ॥ सव्वठसिद्धिनामं,हेक संजाय वीयरायाणं ॥३१५॥ ए त्रण गाथानो अर्थ कहेछे. इहां श्रेणीनो पडिवजणहार सप्तकनो उपशम करेथके अपूर्वकरण गुणठाणे वर्त्ते तेवारपठी नपुंसकवेदादिक प्रकृति उपशमावतो जांसीम संख्यातावादर लोभना खंम उपशमावे तांसीम अनिवृत्ति बादर थाय तेवारपठी सूक्ष्मकिट्टीपणे कर्या. चरमखंमना असंख्याता खंम उपशमावतो सूक्ष्मसंपराय गुणठाणीया

य एम मोहनीयने उपशमे उपशांतमोह गुणगणो होय ते सर्वार्थसिद्धिनो
ण होर पण कोइ अप्रतिपतित परिणामि वीतरागछे तेहने एवो वाहरयकी
इतिश्रेणीद्वयस्वरूप वाचयमपद्ममदिरेणेद वृत्तरनुसारादिह त्रिजिखेश्रेणिद्वय
क ॥ १ ॥ इतिगाथानवकार्थ॥७१८॥उपशमश्रेणीना स्वरूपनो नेवुमु द्वार समाप्त

अवतरण – थंडिलाण चउवीस सहस्सोत्ति एटले एक सहस्रने चोवीस
डिना सवरी एकाणुमो द्वार कहेछे मूल – अणावायमसलोए, परस्सणु
याए ॥ समे अज्झु सिरेयावि. अचिरकाल कयमिया ॥ ७१६ ॥ विछिन्न दूरमो
नासन्ने बिलवज्जिए ॥ तसपाण बीयरहिए, उच्चाराईणवोसिरे ॥ ७१७ ॥ अ
अनापात असलोके परस्य १ अमोप घातिक २ सम ३ अशुषिर ४ अचिर
कृत ॥ विस्तीर्ण ६ दूरमवगाढ ७ अनासन्न ८ बिलवर्जित ९ अने त्रस
बीजवर्जित १० एवा जे दशप्रकारनां स्थंडिल छे त्यां पुरीष प्रश्रवणादिक
नां तेमां अनापात असलोके परस्य आ पदनो बंनेपद साथे संबंध छे अ
एटले अन्यागम जे स्थंडिलने विषे एक आपात एटले आववु ते स्वपक्ष
परपक्ष सबंधि परन्तु नहि आववु ने ते आपात जाणवो अने ते आपात
इने आववु नहि नथी ते अनापात बीजो वृक्षादिकना अनावयकी स
आवाने नहि ते सलोकवत अने एथकी विपरीत ते असलोकवत इहां च
थाय ते दरसावेछे एक अनापात असलोक बीजो अनापात सलोक. त्री
पातवत असलोक. चोथो आपातवत सलोकवत

ए चतुर्भंगीमां पहेला भागनी अनुज्ञाछे शेष भागनो निषेधछे इहां चो
एने दरसाणवायो बीना चारीना त्रण विविधि रूप सहेज जाणवामां
माटे त्रेवटनी भागनु स्वरूप निरूपण करेछे तेथी आपातवतन सलोकवत
ए जणावे आ आपात स्थंडिल ते बे प्रकारना एक स्वपक्षपातवत् बीना पर
वत् तेमा स्वपक्षना व भेद एक स्वपक्ष संयत आपातवत, बीजो स्व
ति आपातवत तेमां वली स्वपक्ष संयत बे प्रकारनाछे एक संविग्न त
हारो तेना आपात बीजो असंविग्न पासत्थादिक तेना आपात तमारनो
ना बे भेद एक सानागीक बीजो असानागिक तेमांयनी असंविग्नपण
मेव एक संविग्नपाक्षिक एटले पोताना अनुष्ठाननी निंदाकरनार यथा
स्मार्त परस्पर बीजो असंविग्न पाक्षिक ते पोते प्रमाद करना मार्गनी
करना अने पोतानी निंदाकरनारा अर्थनी गाथा वरने ततगाय

रीते आचार्योंनी माहोमांहे सामाचारी विभिन्नथाय छे ते भीश्रमनोज्ञने त
विपरीत आचरणने देखने जे शिष्यछे तेने आपणी सामाचारीने पक्षेकरवे ए सामाचा
री नथाय ईसेके० मांहोमांहे कलहहोय अने असविज्ञ जे पासत्थादिक तन आ
पाते पण न जावो केमके ते घणापाणीथी शोचकरे एवो तेनो प्रज्ञानना
देखी शिष्य जे शोचवादी मध्यम होय ते एवोकहे के ए पण प्रवजित छे
ए जलोछे एवु अनुकूलपणु मनमां आणीने समिपेपण जाय मनोज्ञन जे स
सामाचारी तेने आपाते न जवु अने संयतिनो आपात ज्याथाय ते समलग्रया
वर्जवो एटले स्वपक्षापातना दोष कह्या

हवे परपक्षापाते जे पुरुषापाते स्थण्डिले जाय तो घणु निर्मल जन देखात
अने थोडके लुखपाणीये अथवा पाणीने अनावे जे जाय ता ते यावनारात
खीने कहे के ए अशुचीछे एवो अवर्णवादकरे वली एने कोईअन्नपानादिक आ
शो मा एवो निक्षानो निषेध पण करे अथवा अभिनव श्रावक कोई थयाहोय ता
तेने विपरिणाम थाय अने स्त्री नपुसकापातवते स्वपर तदुभयनेविषे हास्य आश
कादिक दोष उपजे त्या आपनेविषे साधुनी उपर शकारोप करे के ए आपण
फसाववा ढोंग करेछे के सु परतु स्त्रीने के नपुसकनेदेखी काईक शकाकरे के ए
पापकर्मि साधुप्रत्ये कामनो अभिलाष करेछे अने उभयनी शका एटजे माहोमांहे
ए मैथुनने अर्थे आव्याछे वली स्त्री अने नपुसकापाते आत्म पर अने तदुभय था
थाय एनाथी उपने दूषणेकरी तेमनीज सघाते अनाचारसेवे अने तेवु अकाय देखा
कोइ गृहस्थ राजकुलादिकने विषे लइजाय अने तेथी प्रवचननो उड्डाहथा
अने दर्पवत तिर्यचने आपाते पाडवु थाय श्रृगादिके ताडन थाय अने वली मा
रणादिक दोष सजवे गर्हित एटले निंदवा योग्य स्त्री नपुसक तेने आपाते वली लाघ
ने मैथुन शका थाय छे अने केवारेक प्रतिसेवापण करे एटले आपात दोष कह्या

एम सलोकेपण तिर्यंच वर्जित मनुष्य विषयिक जाणवा केमके तिर्यचनो स
लोक न थाय अने मनुष्यने तथा स्त्री पुरुष नपुसकने सलोके जे आपात विषयि
क दोष कह्या छे तेज दोष प्राप्त थाय

हवे जो कदाच आत्म, पर अने उभयथी उत्पन्नथयेलु मैथुन दूषण न थाय तो पण
एवी सभावना थाय एटले कोइ एवु कहे के जे दिशाभणी अमारी नार्याप्रमुख उच्चारा
दिकने अर्थे जायछे तेज दिशाभणी ए साधु पण जायछे ते माटे निश्चयथकी ए साधु
कोइक स्त्रीनी वांछा करे छे, तथा एने सकेत दीधोछे ते दिवसे ए अहीयाज आवेछे

रीते आचार्योंनी माहोमांहे सामाचारी विभिन्नथाय ठे तेथी अमनोज्ञने साम
विपरीत आचरणने देखवे जे शिष्यने तेने आपणी सामाचारीने पक्षेकरवे एसा
री नथाय ईसेके० माहोमाहे कलहहोय अने असभिज्ञ जे पासगादिक तेने
पाते पण न जावो केमके ते घणापाणीथी शोचकरे एवो तेनो प्रज्ञाननी
देखी शिष्य जे शोचवादी मध्यम होय ते एवोकहे के ए पण प्रव्रजित छे म
ए नजोठे एवु अनुकूलपणु मनमा आणीने समिपेपण जाय मनोज्ञने जे ए
सामाचारी तेने आपाते न जवु अने सयतिनो आपात ज्याथाय ते समस्त
वर्जवो एटले स्वपक्षापातना दोष कह्या

हवे परपक्षापाते जे पुरुपापाते स्थण्डिले जाय तो घणु निर्मल जल लेइने
अने थोडके खुरवपाणीये अथवा पाणीने अनावे जे जाय ता ते भावनारा
खीने कहे के ए अशुचीठे एवो अवर्णवादकरे वली एने कोई अन्नपानादिक
शो मा एवो भिक्षानो निषेध पण करे अथवा अभिनव श्रावक कोई यथोहाय
तेने विपरिणाम थाय अने स्त्री नपुसकापातवते स्वपर तदुभयनेविषे हास्य
कादिक दोष उपजे त्या आपनेविष साधुनी उपर शकारोप करे के ए यारज
फसाववा ढोंग करेठे के सु परतु स्त्रीने के नपुसकनेदेखी कांईक शकाकरे के
पापकर्मि साधुप्रत्ये कामनो अभिलाप करेठे अने उभयनी शका एटजे माहान
ए मैथुननने अर्थे आव्याठे वली स्त्री अने नपुसकापाते आत्म पर अने तदुभय
थाय एनाथी उपने दूपेणेकरी तेमनीज सघाते अनाचारसेवे अने तेवु अकाय
कोइ गृहस्थ राजकुलादिकने विषे लइजाय अने तेथी प्रवचननो उड्डाह
अने दर्पवत तिर्यचने आपाते पाडवु थाय शृगादिके ताडन थाय अने वली
रणादिक दोष सभवे गर्हित एटले निंदवा योग्य स्त्री नपुसक तेने आपाते वली
ने मैथुन शका थाय ठे अने केवारेक प्रतिसेवापण करे एटले आपात दार
एम सलोकेपण तिर्यंच वर्जित मनुष्य विपयिक जाणवा केमके तिर्यचना
लोक न थाय अने मनुष्यने तथा स्त्री पुरुष नपुसकने सलोके जे आपात विप
क दोष कह्या ने तेज दोष प्राप्त थाय

हवे जो कदाच आत्म, पर अने उभयथी उत्पन्न थयेलु मैथुन दूषण न थाय ता
एवी सभावना थाय एटले कोइ एवु कहे के जे दिशाभणी अमारी नायाप्रमुख
दिकने अर्थे जायछे तेज दिशाभणी ए साधु पण जायछे ते माटे निश्चयथकी ए
कोइरु स्त्रीनी वाछा करे छे, तथा एने सकेत दीघोछे ते दिवसे ए अहीयान आव

रीते आचार्योंनी माहोमांहे सामाचारी विभिन्नथाय छे तेथी अ
विपरीत आचरणने देखने जे शिष्यछे तेने आपणी सामाचारीने प
री नथाय ईसेके॰ माहोमांहे कलहहोय अने असविझ जे पात
पाते पण न जावो केमके ते घणापाणीथी शोचकरे एवो तेनो
देखी शिष्य जे शोचवादी मध्यम होय ते एवोकहे के ए पण
ए भलोछे एवु अनुकूलपणु मनमां आणीने समिपेपण जाय म
सामाचारी तेने आपाते न जवु अने सयतिनो आपात ज्याथाय
वर्जवो एटले स्वपक्षापातना दोष कह्या
हवे परपक्षापाते जे पुरुपापाते स्थण्डिले जाय तो घणु निर्मल
अने थोडके लुखपाणीये अथवा पाणीने अनावे जे जाय ता ते अ
स्त्रीने कहे के ए अशुचीछे एवो अवर्णवादकरे वली एने कोई अन्नपान
शो मा एवो भिक्षानो निपेध पण करे अथवा अभिनव श्रावक कोई थ
तेने विपरिणाम थाय अने स्त्री नपुसकापातवते स्वपर तदुभयनेविपे हा
कादिक दोप उपजे त्या आपनेविपे साधुनी उपर शकारोप करे के ए
फसाववा ढोंग करेछे के सु परतु स्त्रीने के नपुसकनेदेखी कोईक शकाक
पापकर्मि साधुप्रत्ये कामनो अभिलाप करेछे अने उभयनी शका एटले मा
ए मैथुनने अर्थे आव्याछे वली स्त्री अने नपुसकापाते आत्म पर अने तदुभ
थाय एनाथी उपने दूपेणेकरी तेमनीज सघाते अनाचारसेवे अने तेवु अकाय
कोइ गृहस्थ राजकुलादिकने विपे लइजाय अने तेथी प्रवचननो उड्डाह
अने दर्पवत तिर्यचने आपाते पाडवु थाय शृगादिके ताडन थाय अने वली
रणादिक दोप लागे गर्हित एटले निदवा योग्य स्त्री नपुसक तेने आपाते वली लाघ
ने मैथुन शका थाय छे अने केवारेक प्रतिसेवापण करे एटले आपात दोप कह्या
एम सलोकेपण तिर्यंच वर्जित मनुष्य विपयिक जाणवा केमके तिर्यचना
लोक न थाय अने मनुष्यने तथा स्त्री पुरुप नपुसकने सलोके जे आपात विरा
क दोप कह्या छे तेज दोप प्राप्त थाय
हवे जो कदाच आत्म, पर अने उभयथी उत्पन्नथयेलु मैथुन दूपण न थाय ता पण
एवी सभावना थाय एटले कोइ एवु कहे के जे दिशाभणी अमारी भायाप्रमुख उभाग
दिकने अर्थे जायछे तेज दिशाभणी ए साधु पण जायछे ते माटे निश्चयथकी ए साधु
कोइक स्त्रीनी वाछा करे छे, तथा एने सकेत दीधोछे ते दिवसे ए अहीयाज आव

रीते आचार्योनी माहोमांहे सामाचारी विभिन्नथाय छे तेथी अमनोज्ञने सामाचा
विपरीत आचरणने देखने जे शिष्यछे तेने आपणी सामाचारीने पक्षे करने ए सामाचा
री नथाय ईसेके॰ माहोमांहे कलहहोय अने असविज्ञ जे पासत्थादिक तेने आ
पाते पण न जावो केमके ते घणापाणीथी शोचकरे एवो तेनो प्रहाननादि
देखी शिष्य जे शौचवादी मध्यम होय ते एवोकहे के ए पण प्रवर्जित छे मा
ए भलोछे एवु अनुकूलपणु मनमा आणीने समिपेपण जाय मनोज्ञने जे स
सामाचारी तेने आपाते न जवु अने सयतिनो आपात ज्यांथाय ते समस्तप्रवो
वर्जवो एटले स्वपक्षापातना दोष कह्या

हवे परपक्षापाते जे पुरुपापाते स्थंडिले जाय तो घणु निर्मल जल लेजाय
अने थोडके लुखपाणीये अथवा पाणीने अनावे जे जाय तो ते आवनाराने।
खीने कहे के ए अशुचीछे एवो अवर्णवादकरे वली एने कोई अन्नपानादिक आ
शो मा एवो भिक्षानो निपेध पण करे अथवा अभिनव श्रावक कोई थयोहोय त
तेने विपरिणाम थाय अने स्त्री नपुसकापातवते स्वपर तदुभयनेविपे हास्य आ
कादिक दोष उपजे त्या आपनेविपे साधुनी उपर शकारोप करे के ए आपणे
फसाववा ढोंग करेछे के सु परतु स्त्रीने के नपुसकनेदेखी कोईक शकाकरे के ए
पापकर्मि साधुप्रत्ये कामनो अभिलाप करेछे अने उभयनी शका एटले माहोमांहे
ए मैथुनने अर्थे आव्याछे वली स्त्री अने नपुसकापाते आत्म पर अने तदुभय था
थाय एनाथी उपने दूपेणेकरी तेमनीज सघाते अनाचारसेवे अने तेवु अकार्य देखी
कोइ गृहस्थ राजकुलादिकने विपे लइजाय अने तेथी प्रवचननो उड्डाहथाय
अने दर्पवत तिर्यचने आपाते पाडवु थाय शृगादिके ताडन थाय अने वली मा
रणादिक दोष सभवे गर्हित एटले निंदवा योग्य स्त्री नपुसक तेने आपाते वली लोका
ने मैथुन शका थाय छे अने केवारेक प्रतिसेवापण करे एटले आपात दोष कह्या

एम सलोकेपण तिर्यच वर्जित मनुष्य विषयिक जाणवा केमके तिर्यचनो स
लोक न थाय अने मनुष्यने तथा स्त्री पुरुप नपुसकने मलोके जे आपात विशे
क दोष कह्या छे तेज दोष प्राप्त थाय

हवे जो कदाच आत्म, पर अने उभयथी उत्पन्नथयेलु मैथुन दूपण न थाय ता पण
हवी सभावना थाय एटले कोइ एवु कहे के जे दिशाभणी अमारी नार्याप्रमुख उभाग
दिकने अर्थे जायछे तेज दिशाभणी ए साधु पण जायछे ते माटे निश्चयथकी ए साधु
कोइक स्त्रीनी वाछा करे छे, तथा एने सकेत दीधोछे ते दिवसे ए अहीयाज आवन

रीते आचार्योनी माहोमांहे सामाचारी विभिन्न थाय छे तेथी
विपरीत आचरणने देखवे जे शिष्यछे तेने आपणी सामाचारीने परकेकरवे ए तात्
री नथाय ईसेके॰ माहोमांहे कलहहोय अने असभिज्ञ जे पासत्थादिक तेने आ
पाते पण न जावो केमके ते घणापाणीथी शोचकरे एवो तेनो
देखी शिष्य जे शोचवादी मध्यम होय ते एवोकहे के ए पण प्रव्रजित छे
ए भलोछे एवु अनुकूलपणु मनमां आणीने समिपेपण जाय मनोज्ञने जे
सामाचारी तेने आपाते न जवु अने संयतिनो आपात ज्याथाय ते समस्तप्रक्
वर्जवो एटले स्वपक्षापातना दोष कह्या

हवे परपक्षापाते जे पुरुषापाते स्थंडिले जाय तो घणु निर्मल जल लेइजा
अने थोडके सुखपाणीये अथवा पाणीने अनावे जे जाय ता ते आवनारान
स्त्रीने कहे के ए अशुचीछे एवो अवर्णवादकरे वली एने कोई अन्नपानादिक आ
शो मा एवो भिक्षानो निषेध पण करे अथवा अभिनव श्रावक कोई थयोहाय त
तेने विपरिणाम थाय अने स्त्री नपुसकापातवते स्वपर तदुभयनेविषे हास्य आ
कादिक दोष उपजे त्या आपनेविषे साधुनी उपर शंकारोप करे के ए आपज
फसावंवा ढोंग करेछे के सु परंतु स्त्रीने के नपुसकनेदेखी कोईक शंकाकरे के
पापकर्मि साधुप्रत्ये कामनो अभिलाष करेछे अने उभयनी शंका एटले माहोमांहे
ए मैथुनने अर्थे आव्याछे वली स्त्री अने नपुसकापाते आत्म पर अने तदुभय
थाय एनाथी उपने दूषणेकरी तेमनीज संघाते अनाचारसेवे अने तेवु अकाय देखी
कोइ गृहस्थ राजकुलादिकने विषे लज्जाय अने तेथी प्रवचननो उड्डाहथाय
अने दर्पवंत तिर्यचने आपाते पाडवु थाय शृंगादिके ताडन थाय अने वली म
रणादिक दोष संभवे गर्हित एटले निंदवा योग्य स्त्री नपुसक तेने आपाते वली लाघ
ने मैथुन शंका थाय छे अने केवारेक प्रतिसेवापण करे एटले आपात दोष कह्या

एम संलोकेपण तिर्यंच वर्जित मनुष्य विषयिक जाणवा केमके तिर्यचना व
लोक न थाय अने मनुष्यने तथा स्त्री पुरुष नपुसकने संलोके जे आपात विषयि
क दोष कह्या छे तेज दोष प्राप्त थाय

हवे जो कदाच आत्म, पर अने उभयथी उत्पन्नथयेलु मैथुन दूषण न थाय ता पण
एवी संभावना थाय एटले कोइ एवु कहे के जे दिशाभणी अमारी भायाप्रमुख उद्यान
दिकने अर्थे जायछे तेज दिशाभणी ए साधु पण जायछे ते माटे निश्चयथकी ए साधु
कोइक स्त्रीनी वाछा करे छे, तथा एने संकेत दीधोछे ते दिवसे ए अहीयान आवछ

रीते आचार्योनी माहोमाहे सामाचारी भिन्नभिन्नथाय छे तेथी असमानाने सामाचारी विपरीत आचरणने देखवे जे शिष्यने तेने आपणी सामाचारीन पक्षकरवे ए सामाचारी नथाय ईसेके० माहामाहे कलहथाय अने असविज्ञ जे पासत्थादिक तेने आपाते पण न जावो केमके ते घणापाणीथी शाचकरे एवा तना प्रक्षालनादिक देखी शिष्य जे शाचवादी मध्यम होय ते एवाकहे के ए पण प्रवजित छे माटे ए भलाछे एवु अनुकूलपणु मनमा आणीने समिपेपण जाय सनाज्ञन जे एक सामाचारी तेने आपाते न जवु अने सयतिना आपात ज्याथाय त समस्तप्रकारे वर्जवो एटले स्वपक्षापातना दोष कह्या

हवे परपक्षापाते जे पुरुषापाते स्थण्डिले जाय तो घणु निर्मल जल लेइजाय अने थोडके लुखपाणीये अथवा पाणीन अनावे जे जाय तो न आवनारान खीने कहे के ए अशुचीछे एवा अवर्णवादकरे वली एन काइ अन्नपानादिक आपशो मा एवो भिक्षानो निषेध पण करे अथवा अभिनव श्रावक काइ ययाहाय ता तेने विपरिणाम थाय अने स्त्री नपुसकापातवत स्वपर तदुभयनेविषे हास्य आशकादिक दोष उपजे त्या आपनेविष साधुनी उपर शकारोप करे के ए आपणने फसाववा ढोंग करेछे के सु परंतु स्त्रीने के नपुसकनेदेखी काईक शकाकरे के ए पापकर्मि साधुप्रत्ये कामनो अभिलाष करेछे अने उभयनी शका एटले माहामाहे ए मैथुनने अर्थे आव्याछे वली स्त्री अने नपुसकापाते आत्म पर अने तदुभय घात थाय एनाथी उपने दूषणोकरी तेमनीज सघाते अनाचारसेवे अने तेवु अकार्य देखी कोइ गृहस्थ राजकुलादिकने विषे लेइजाय अने तेथी प्रवचनना उड्डाहथाय अने दर्पवत तिर्यचने आपाते पाडवु थाय श्रृगादिके ताडन थाय अने वली मारणादिक दोष सजवे गर्हित एटले निंदवा योग्य स्त्री नपुसक तेने आपाते वली नाका ने मैथुन शका थाय छे अने केवारेक प्रतिसेवापण करे एटले आपात दोष कह्या

एम सलोकेपण तिर्यच वर्जित मनुष्य विषयिक जाणवा केमके तिर्यचना सलोक न थाय अने मनुष्यने तथा स्त्री पुरुष नपुसकने सलोके जे आपात विषयिक दोष कह्या छे तेज दोष प्राप्त थाय

हवे जो कदाच आत्म, पर अने उभयथी उत्पन्नथयेलु मैथुन दूषण न थाय तो पण एवी सभावना थाय एटले कोइ एवु कहे के जे दिशाभणी अमारी नायाप्रमुख उद्यानादिकने अर्थे जायछे तेज दिशाभणी ए साधु पण जायछे ते माटे निश्चयथकी ए सा धु कोइक स्त्रीनी वांछा करे छे, तथा एने संकेत दीधोछे ते दिवसे ए अहीयाज आवत

रीते आचार्योनी माहामाहे सामाचारी विभिन्नथाय छे तेथी अमनोज्ञने सामाचारी विपरीत आचरणने देखवे जे शिष्यने तेने आपणी सामाचारीने पक्षेकरवे ए सामाचारी नथाय ईसेके० माहामाहे कलहहोय अने असंविज्ञ जे पासत्थादिक तेने आपाते पण न जावो केमके ते घणापाणीथी शोचकरे एवो तेनो प्रक्षालनादिक देखी शिष्य जे शोचवादी मध्यम होय ते एवोकहे के ए पण प्रवर्जित छे माटे ए भलोछे एवु अनुकूलपणु मनमा आणीने समिपेपण जाय मनोज्ञने जे एक सामाचारी तेने आपाते न जवु अने लयतिनो आपात ज्याथाय ते समस्तप्रकारे वर्जेवा एटले सपक्षापातना दोष कह्या

हवे परपक्षापाते जे पुरुषापाते स्थंडिले जाय तो घणु निर्मल जल लेईजाय अने थाइके लुखपाणीये अथवा पाणीने अनावे जे जाय तो ते आवनाराने देखीने कहे के ए अशुचीछे एवो अवर्णवादकरे वली एने कोई अन्नपानादिक आपशो मां एवा निरुाना निषेध पण करे अथवा अभिनव श्रावक कांई थयोहोय तो तेने विपरिणाम थाय अने स्त्री नपुंसकापातवते स्वपर तदुभयनेविषे हास्य आशंकादिक दोष उपजे त्यां आपनेविषे साधुनी उपर शंकारोप करे के ए आपणने फसाववा ढोंग करेछे के सु परंतु स्त्रीने के नपुंसकनेदेखी कोईक शंकाकरे के ए पापकर्मि साधुप्रत्ये कामना अभिलाष करेछे अने उभयनी शंका एटले माहामाहे ए मैथुनने अर्थे आव्याछे वली स्त्री अने नपुंसकापाते आत्म पर अने तदुभय घात थाय एनाथी उपने दूषणोरूपी तेमनीने संगाते अनाचारसेवे अने तेजु अकार्य देखी कोइ गृहस्थ राजकुलादिकने विषे उडाय अने तेथी प्रवचननो उड्डाहथाय अने दर्पयुक्त तिर्यचन आपाते पाडवु थाय शृंगादिके ताडन थाय अने वली मारणादिक दोष सभवे गर्हित एटले निंदवा योग्य स्त्री नपुंसक तेने आपाते वली लोकने मैथुन शंका थाय छे अने केवारेक प्रतिसेवापण करे एटले आपात दोष कह्या

एम सलोकेपण तिर्यच वर्जित मनुष्य विषयिक जाणवा केमके तिर्यचना सलोक न थाय अने मनुष्यने तथा स्त्री पुरुष नपुंसकने सलोके जे आपात विषयिक दोष कह्या छे तेज दोष प्राप्त थाय

हवे ना कहता थान्न, पर अने उभयथी उत्पन्नथयेलु मैथुन दूषण न थाय तो पण एवी संभावना थाय एटले कांइ एवु कहे के जे दिशाभणी अमारी नायाप्रमुख उद्यान दिकने अर्थे जायछे तेज दिशाभणी ए साधु पण जायछे ते माटे निभयपणी ए साधु कांइक अमोनी वांछा करे छे, तथा एने संकेत दीधोछे ते दिवसे ए अहींयाज आवछे

तेम वळी नपुंसक अथवा स्त्री, स्वभावे करीने किंवा वायुना दोषे विकारवंत पुरु षाकार देखी तेने विषयाभिलाष थाय तेणे करी मूर्छापामी तेउ साधुने उप सर्ग करे ते माटे ए त्रणे संलोक तजवा. तेथी चोथे भंगे आपात अने संलोक ए बने दोष छे, अने त्रीजे भंगे एक आपात दोष छे तथा बीजे भंगे एक संलोक दोष छे ए त्रणे भंगानो संलोक वर्जवो अने पहेले भंगे आपात तथा संलोक ए दूषण माहेलो कोइ दूषण न थाय. ते माटे त्यां जवु. उक्तंच. आवाय दोस तइए, बि इए संलोगउ भवे दोसा, ते दोवि नत्थि पढमे, तहिं गमणं भणिय विहिणाउ ॥१॥

हवे परस्सणुवघाउनो अर्थ करेछे. उपघात उड्डाहादिप्रयोजन जेनाथी थाय तेऔपघातिक अने ते ज्यां नथी तेने अनौपघातिक कहिये. औपघातिकना त्रण प्र कार छे. एक आत्मोपघातिक. बीजो प्रवचनोपघातिक. अने त्रीजो संयमोपघाति क. तेमां प्रथम आरामादिक बाग प्रमुखनेविषे संज्ञा करतां ते आरामनो धणी मारे ते आत्मोपघातिक जाणवो. अने बीजो जे विष्टानुं स्थानक अशुचिपणाए करी जुगुप्सित होय अने ते स्थळे उच्चारादिक करवा जाय त्यारे लोको कहे के ए तो एवोज छे, इत्यादिक प्रवचनोपघातिक जाणवो त्रीजो अंगारादिक पाडवाने ठेकाणे जेवां के नींभाडो भट्ठी प्रमुख करवाने स्थानके संज्ञा वोसिरावे अथवा बी जे ठेकाणे संज्ञा वोसिरावी जे ठेकाणे अग्नि आरम्भ थवानो होय ते ठेकाणे नाखे ते संयमोपघातिक थाय. ते माटे अनौपघात स्थंडिलनेविषे संज्ञावोसिराववी एप्र माणे बीजे ठेकाणेपण जाणवुं.

हवे सम कहेछे. समशब्दे अविषम स्थंडिल जाणवुं अने तेथी विपरीतते वि षम स्थंडिल ते विषमठामे संज्ञा कारणे बेसतां कदाचित् पोते पडिजाय ने तेथी ते विष्टानो पोताने शरीरे मर्दन थाय तेथी संयमने विराधना थाय.

अझुषिर एटले जे तृणादिकेकरी ढांक्युं न होय ते अने ढांक्युं होय ते सु षिर त्यां सुषिरे बेसवाथी सर्प वृश्चिकादिकना डंखवाथी आत्मोपघात थाय अने पुरिष प्रस्रवण त्यागे करी त्यां रहेनारा त्रस तथा स्थावरजीवोना घातेकरीने संयम ने विराधना थाय माटे अझुषिरस्थळे संज्ञानो त्याग करवो जोईये.

अचिरकालकृत एटले जे स्थंडिल जे ऋतुनेविषे अग्नि प्रज्वालनादिक कारणे करीने तैयार कीधुं ते ऋतुमां ते स्थंडिल अचिरकालकृत जाणवु. जेम हेमंत ऋ तुमां करेलुं ते हेमंतऋतुमाज अचिरकालकृत. बीजी ऋतुमां करेलुं ते चिरकाल कृ त अने ते ते ऋतुने आंतरे अथवा सचित्तमिश्रपणाने भंगे थाय ते अचिर

कालकृत जाणवो ज्या सबल वरसाद थयो होय अथवा सबल गाम वस्यो होय तो त्या बारवर्षे स्थण्डिल थाय पछी अस्थण्डिल जाणवो

विस्तीर्ण एटले मोटो ते त्रण प्रकारनो छे. एक जघन्य, बीजो मध्यम अने त्रीजो उत्कृष्ट तेमा जघन्य एटले आयाम विष्कम्भे करीने हस्तप्रमाण अने उत्कृष्ट एटले चार योजन प्रमाण ते एमके चक्रवर्ति स्कंधावारनिवेश कहेता राजानी सेनाने रहेवानी जग्या अने शेष ते मध्यम जाणवो

दूरमोगाढनो अर्थ कहेछे अवगाढ एटले गभीर ते ज्या चार आंगल मध्यम अग्नि तापादिके करी नीचे भूमिका अचेत थई छे ते पेहेलोजघन्य दूर अवगाढ अने ज्या पांच आंगल प्रमुख थाय ते बीजो उत्कृष्ट दूर अवगाढ थईंया दृढ सम्प्रदाए चार आंगल अवगाढे चडिनित वोसराविए कायिकी न वोसरीजे

अनासन्न एटले जे आरामादिकनी पासे ढुकडु नथी तेथी विपरत बे प्रकारे छे एक द्रव्यासन्न अने बीजो भावासन्न तेमां द्रव्यासन्न एटले देव, कुल, घर, आराम, क्षेत्र अने मार्गादिकनी नजीक होय ते त्यां बे दोष थायछे एक संयमोपघात अने बीजो आत्मोपघात. तेमा संयमोपघात एटले ते सारी रीतिये त्याग करेलुं पुरिषादिक कोइएक कर्मकारे करीने अन्यत्र नखावे पछी त्या प्रदेशनु जे विलेपन अने सचेत पाणीए हाथ धोवे एरीते संयमोपघात थाय अने आत्मोपघात एटले ते घरना धणी त्या आवीने रीसाईने कदाचित् ताडनादिक करावे अथवा पोते मारे त्यारे आत्मविराधना थाय तथा बीजो भावासन्नता रहे ज्यां सबलबाधा होय त्यारे बीहीने त्वरायी आगल दोडता छता कोईधूर्त जाणे के ए त्वरायी जायछे तेनी भावासन्नताने जोईने कपटे करी अर्धमार्गमा काढयो थको आवी धर्मष्टवनादि करे छता एम पुरीष वेगने धारण करनारने आत्मविराधना एटले मरण किंवा ग्लानत्व अवश्य थाय तेथी आत्मविराधना अने पुरीष वेगने सहन करी नशकेतो अथण्डिले सज्ञा व्युत्सर्ग करे किंवा जगादि ने पतग्रपु होय तो तेथी प्रवचनविराधना अने संयमोपघात पण थाय अने त्यां न अप्रत्युपेक्षित स्थण्डिलने वेगथी व्युत्सर्ग थाय तेथी संयमोपघात थाय माटे ए आसन्न द्रव्यथकी अने भावथकी ए बने प्रकारनो वर्जवा

बिलवर्जित एटले बिलेकरी रहित जगा जाणवी बिलवाला स्थण्डिले सज्ञा त्याग करता बेसता थका बिल (दरमा) चडीनिति तथा लघुनीति जाय तथा

कीडिप्रमुख जीवोनो नाश थाय तेथी संयमविराधना दोष थाय. वळी बिल (दर) मांथी सर्पप्रमुख निकळीने डंख मारे तो आत्मविराधना दोष थाय.

त्रसप्राण बीजरहितं; एटले स्थावर जंगमजंतुना समुदाये करीने वर्जित जगा जोईये पण तेणे करी सहित स्थंडिले संज्ञाव्युत्सर्ग करनारा साधुने बे दोष प्राप्त थाय छे. एक संयमविराधना अने बीजी आत्मविराधना तेमा संयमविराधना एटले स्थावर जंगम प्राणीउं किंवा बीजनेविषे संज्ञाव्युत्सर्ग कर्यो होय तो प्राणी उनाघाते करी संयमविराधना दोष थायछे. अने स्थावर जंगम सर्पप्रमुख प्राणीउंथी डंखविगेरे उपद्रव्य थाय तो आत्मविराधना थाय तथा तीक्ष्ण गोखरुं कांटादिक बीज पगमां घोचायाथी पग फाटीने पडी जायतो आत्मविराधना थाय. ए अ नापातादिक दश प्रकारना स्थंडिले उच्चारादि वोसिरावे ७१७ ॥

अवतरणः— ए क्रमे करी कहेला दशपदनो एक बे, आदेदेई दश संघाते संयोग करतां एक हजार चोवीस जंग थाय. जंगना आणवा सारुं आ करण गाथा कहे छे. क्या क्या संयोगमां केटला केटला जंग थाय? तेनी करण गाथा कहेछे. उजय मुहं रासिडुगं, हेडिल्लाणंतरे जयं पढमं ॥ लद्धहराासि विजत्ते, तस्सुवरि गुणित्तु संजोगा ॥ १ ॥ अर्थः— अहीयां दशपदोना बे इत्यादि संयोगजंग आणवाना छे. माटे तेटला प्रमाणनी बे राशी उजयमुख (बंने जणी जेनां मुख) ते स्थापन छे एमां तात्पर्य एवोके एकथी दशसुधी अंक एक बे एम पूर्वानुक्रमे करीने स्था करी तेनी नीचे उलटानुक्रमे करीने एकादियी दशसुधी अंक मांडवा स्थापना

१	१०	४५	१२०	२१०	२५२	२१०	१२०	४५	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१

ां नीचेनी राशीमा मांडेला एक अंकना उपर मांडेला दशछे ते एक एक दश जंग थाय छे. (अर्थात् एकने दशे गुणीएतो दश थायछे) तेमां यानो कर्ण नथी अने बे इत्यादिक संयोगे जंग आणवा सारु गाथा े छे. पछी नीचेना कोठानी छेवट एकना आंकडानी पाछळ लखेलो जे कडो तेणे उपरना कोठामां मांडेलो छेवटनो दशनो आंकडो तेने बेहुए थका पाच आवे छे ते पांचने पेहेला कोठाना बेनी उपरना नवे गुणी

ए तो पिसतालीश थाय छे ते सयोग जग जाणवा सारांश द्विक सयोगमां जग पीसतालीसछे पछी वली नीचेना कोठाना त्रीजा सयोग जग आणवा सारु आ प्रमाणे करवु जेम नीचेना कोठामाना त्रणने आंकडे उपरना आठना आंकडानी अपेक्षाए पूर्वं सिद्ध थयेला पीसतालीशना आंकडाने त्रणे जागतां पदर आवे ते पदरने आठे गुणता एकसो वीस आवेछे ए त्रिक सयोगमां जग जाणवा वली नीचेना कोठामा मांडेली त्रणनी पाछलनो चोथो आंक तेना उपरना सात अंकना सयोग जग सख्यानी अपेक्षाए पूर्वं सिद्ध थएला एकसो वीसने चारे जागतां त्रीस आवे. तेने सातना आंकडाथी गुणतां सयोग जग अक बशे ने दशनो जाणशे ए प्रमाणे वली नीचेना कोठाना चारनी पाछलना पाच विगेरेना अकना उपरना कोठाना छ छे ते बशे दशने पांचे जागदेता बेतालीस आवे तेने छ ना आंकथी गुणतां बशेने बावन थाय ए अकनो सयोग जग जाणवो अनुक्रमे प्रकार एक सयोगमां दश जग, द्विसयोगमा पीसतालीश, त्रिसयोगमां एकसोने वीस, चतुष्कसयोगमां बसे दश, पचकसयोगमा बसे बावन छठा सयोगमां बसे दश, सातमा सयोगमा एकसोवीस, आठमा सयोगमां पीसतालीस,नवमा सयोगमां दश ने दशमा सयोगमा एक आ सवे जगनी एकदर सख्या एक हजार ने त्रेवीश ए सौ अशुद्ध जग अने एक हजार चोवीसमो शुद्ध जग छे ते कर्णमां प्राप्त थतो नथी तथापि ते जगसख्यामां तेनो प्रक्षेपकरी सख्या पूर्ण करवी कारण सर्वं जगोना प्रस्तार ज्यां छता शुद्धजगनी प्राप्ति थायछे उक्तंच दस पणयाल विसुत्तर, सपच दासयदसुत्तगदाय, बावन्ना दोदसुत्तर दसुत्तर पचयाल्लाय ॥ १ ॥ दसएक्को यकमेण जगा एगा दिसारण एसु, सुद्धेण सममिलिया जगसहस्स चउवीस ॥ ३१३ ॥ ए प्रमाणे स्थण्डिलानो एकाणुमो द्वार समाप्त थयो

अवतरण – पुव्वाणनामाइ पयसखासजुआइति एटले चउद पूर्वनानाम पदनी सख्यापे सयुक्त एना बाणुमो द्वार कहेछे मूल – उप्पाय पढमपुव्व, एक्कारस कोडि पयपमाणेण ॥ बीय अग्गाणीय, छन्नवइ लक्खपयसख ॥ ७१८ ॥ अर्थ – ज्यां समस्त द्रव्य पर्यायना उत्पाद आश्री परूपणा करीछे त पहेलो उत्पादनामा पूर्वं जाणवो ते इग्यार कोडी पद जे अर्थनी समाप्ति तेना प्रमाणे जाणवो द्रव्य बीजो समस्त द्रव्यपर्याय जीवविशेषना अग्रके० परिमाण ते ज्यां प्ररूपिय त बीजो अग्राणीय नामापूर्व तेनविष छन्नु लाख पदनी सख्याछे ॥ ७१८ ॥

मूल – विरियप्पवायपुव्वं, सत्तरिपयलक्ख जरिकप तइय ॥ अत्थिनत्थिपवायं स

छीनरकाय चउठंतु ॥ ३१ए ॥ अर्थ.—ज्यां सकर्म अकर्मक जीव अने अजीवना व
र्यना प्रवादनी प्ररूपणा करवी ते तइयंके० त्रीजो वीर्यप्रवादनामा पूर्व जाणवो.
अने सत्तरिपयलरक लरिकयंके० सीतेरलाखपदे करी जे लक्षित एटले सहितठे. तथा
वली अस्ति एटले ठतीवस्तु धर्मास्तिकायादिक ठ द्रव्य. अने नास्ति एटले अठति वस्तु जे
गर्दभनासीगडा प्रमुख. अथवा स्याद्वादने अभिप्रायें आपणेरूपे समस्त वस्तु अस्ति
पणेठे. अने पररूपे समस्त वस्तु नास्तिपणेठे. ए आस्तिनास्ति ज्याकहियें ते अस्ति
नास्ति प्रवाद नामा चोथोपूर्व साठ लाख पदनो जाणवो ॥ ३१ए ॥

मूल.— नाणप्पवायपुव्वं, एयं एगूण कोडिपयसंखं ॥ सच्चप्पवायपुव्वं, ठप्पय अ
हिएगकोडीए ॥३२०॥ अर्थः—ज्या मत्यादिक पाचज्ञानना स्वरूपनो कथन करी तेना
भेद प्रभेद कहिये ते ज्ञानप्रवादनामे पूर्व एकेउणो पदनीकोडीप्रमाण पाचमो जा
णवो. अने ठठो सच्च एटले सत्यशब्दे संयम अथवा सत्यवचन ते जेमां समस्त
भेद सहित अने प्रतिपक्ष संघाते प्ररूपियें ते सत्यप्रवादनामा पूर्व ठठोजाणवो.
एमां ठ पदे अधिक एककोडी पदनी संख्या जाणवी. ॥ ३२० ॥

मूल.— आयपवायपुव्वं, पयाण कोमीउहुंतिठत्तीसं ॥ समयप्पवायमवरं, असीइ
लरकाइ पय कोमी ॥ ३२१ ॥ अर्थ — आत्म शब्दे जीव ते अनेक नयेकरी जिहां
परूपियें ते आत्मप्रवाद नामा सातमो पूर्व जाणवो. एमा पदनी कोडी ठत्रीस थाय.
तथा आठमो समयशब्दे सिद्धांत तेनो जे अर्थ ते इहां कर्मरूप लहियें ठइये तेमाटे
एनुं नाम समयप्रवाद अने अपर एटले बीजुं नाम कर्मप्रवाद पण कहिये. एनो
अर्थ एम ठे के ज्ञानावरणीयादिक आठकर्म तेने स्थिति अनुभागादिक उत्तर भे
दकरी सहित जिहा कहियें ते कर्मप्रवाद एने विषे एसीलाख अधिक एक कोमी
दनी संख्या जाणवी ए आठमो पूर्व कह्यो ॥ ३२१ ॥

मूल.— नवमंपच्चरकाणं, लरकाचुलसी पयाण परिमाणं ॥ विज्जणुपवाय पन्नर
सहस्स एक्कारसउकोमी ॥३२२॥ अर्थ — नवमो प्रत्याख्याननो स्वरूप समस्त
दकरी वखाणिये ते प्रत्याख्यान प्रवादनामा पूर्व कहियें. एनेविषे चौरासी लाख
नो प्रमाण ठे. तथा जेनेविषे विद्यानो अतिशय साधुना अनुकूलपणे सिद्धिने प्र
वर्णवियें प्ररूपणा करियें ते दशमो विद्यानुप्रवाद नामापूर्व, एनेविषे पन्नर ह
अधिक इग्यारकोमी पदनी संख्या जाणवी. ॥ ३२२ ॥

लः— ठवीसं कोमीउ, पयाण पुव्वे यवञ्जणामंमि ॥ ठप्पस लरक अहिया,
कोमीउ पाणेउ ॥ ३२३ ॥ अर्थः— जेमां ठवीस कोमीपदनी अवंध्य सफले

ज ज्ञानक्रिया तप प्रमुख सफलपणे वर्णविये अने वली जेमा अप्रशस्त प्रमादादिक एटले अशुभफल पण वर्णविये ते अवध्यनाम पूर्वनेविषे अथवा एनो बीजो कल्याण एवा नाम पण कहे छे ए बेहुनो अर्थ एकज छे ए इग्यारमो पूर्व जाणवो तथा छप्पन लाख अधिक एक कोडी पदनी संख्यावालो जेमा जीवना इंद्रियादिक दश प्रकारना प्राण अनेक प्रकार वर्णव्या छे ते प्राणविशेष नामा बारमो पूर्व जाणवो

मूल - किरियाविसालपुव्व, णव कोडीउपयाण तेरसम ॥ अद्धतेरसकोडी, चउदसमे बिंदुसारम्मि ॥ ३२४ ॥ अर्थ - क्रिया जे कायिकीप्रमुख तेने भेदेकरीने विशाल० विस्तीर्णपणे जिहां कहिये ते तेरमो क्रियाविशाल नामा पूर्व नवकोडी पदनी संख्यावाला जाणवा तथा जेनेविषे अद्धतेरसकोडी के० साडातेर कोडी पदनी संख्याछे ते चउदमो लोकबिंदुसार नामापूर्व जाणवो यद्यपि गाथामा बिंदुसार एनुनाम छे तथापि लोक बिंदुसार एवो शब्दछे तेमाथी गाथामां लोक शब्दनो लोप थयो छे पण बिंदुसार शब्देकरी लोकबिंदुसार अर्थमा लेवो अक्षर उपर बिंदुनीपेरे सार प्रधान सर्वोत्तम सर्व अक्षरना सन्निपातनी लब्धिनो करनार ते लोकबिंदुसार कहिये ते तेहुनेविषेछे इंहां समवायांगनी टीकामाहे पदपरमाणनो अभिप्राय जेहने तेनो तत्व केवलीजाणे ॥ ३२४ ॥

पूर्व तेने कहिये के जे तीर्थंकर तीर्थ प्रवर्त्तावे तेवारे गणधरने सर्व सूत्रने आधार पणाथकी पहेला पूर्वगत सूत्रार्थ कहे एमां कोई वातनथी के जे पूर्वमां नहोय तारण जगतमा विचित्र प्रकारना प्राणीछे तेमां जे मंदबुद्धिनाधणी पूर्वना अतिगंभीरार्थ जाणी न शके ता तेना अनुग्रहने अर्थे गणधर रचना करतां थकां प्रथम आचारांगनी रचना करेछे तेथी सूत्रकार आचारांगनी निर्युक्तिना वचनथकी कहछे

मूल - पढम आयारंग अट्ठारसपय सहस्स परिमाण ॥ एव सेसंगाणवि, दुगुणा दुगुणप्पमाणाइं ॥ ३२५ ॥ व्याख्या - प्रथम आचारांग अढार हजार पद प्रमाण एम शेष सुयगडांगादिक अंग तेना पण बमणो बमणा पदना परिमाण करवा बहु एटले बीजो सुयगडांग छत्रीस हजार पदनाछे एम वारना मांत्र इत्यादि आगलां करवी पूर्वेसरकरी पूर्वना सूत्रित उतारना एम पूर्व कहिये तत आचारांग कहेछे के जेम तीर्थकर प्रथम ए पूर्व कहेछे तम गणधरपण रचना एमी रचना

अवतरण - निधनि एटले पांच निधिना आयुमो द्वार कहे छे मूल - पंचनिहिणा नहिसा दुवार बद्धमा कुसील निग्गया ॥ बोडसिणाउयनरा गहराम्मो नंदह्निद्दो ॥ ३२६ ॥ अर्थ - एक धनोपकरण टाळीने शब्द न धनादिक प्रं

थके तेथकी निर्गत एटले जे रहितछे ते निर्ग्रंथ पांच प्रकारना श्री तीर्थंकरदेवे कह्याछे. एक पुलाक बीजो बकुश त्रीजो कुशील चोथो निर्ग्रंथ पांचमो स्नातक ते एकेक बे बे प्रकारे छे. ॥ ७२६ ॥

हवे निर्ग्रंथ शब्दनो अर्थ सूत्रकार कहेछे मूलः—गंथो मिछत्त धणाइउ मउ जे य निग्गयातत्तो ॥ ते निग्गंथावुत्ता, तेसिं पुलाउ नवे पढमो ॥७२७॥ अर्थः— ग्रंथ शब्दे मिथ्यात्वादिक अभ्यंतर अथवा धनादिक बाह्य कह्योछे तेथकी जे मुक्त थया ते निर्ग्रंथ जाणवा. तेमां पढमोके० प्रथम पुलाकनिर्ग्रंथ थाय. ॥ ७२७ ॥

हवे अभ्यंतर परिग्रह देखाडेछे. मूलः—मिछत्तं वेयतिय, हासाईछक्कगं च नायव्वं॥ कोहाईण चउक्कं, चउदस्स अभिंतरा गंथा ॥७२८॥ अर्थ.— विपरीत बोध मिथ्यात्व पुरुषवेदादिक वेदत्रण हास्यादिषट् ते आवी रीतेछे. जे विस्मय उपने नेत्र प्रमुखनो विकश्वर करवो ते हास्य, बीजो रतिजे असंयमनेविषे प्रीति, त्रीजी अरति जे संयमनेविषे अप्रीति, चोथो भय ते इहलोकादिकसातप्रकारनो जाणवो. पांचमो शोक ते इष्टवियोगादिकथकी मनमां दुःख, छठो जुगुप्सा ते मल मलीन मनुष्यादिक देखी तेनीहीलनानो करवो. ए छ प्रकार कह्या. तथा क्रोधादिक चार ते प्रसिद्धछे. एरीते एक मिथ्यात्व त्रणवेद हास्यादिक छ ने क्रोधादिक चार ए चउद अभ्यंतर ग्रंथीछे.

हवे बाह्य ग्रंथी कहेछे. मूलः—खेत्तंवत्थुधणधस्स संचउ मित्त नाइसंजोगो ॥ जाण सयणासणाणिय, दासादासीउ कुवियंच॥७२९॥अर्थ.—खेत्र ते सेतुकेतुप्रमुख, वास्तु खातादिक त्रणप्रकारे जाणवो, धनते हिरण्यादिक जाणवुं. धान्य ते चोवीस प्रकारनुं जाणवुं, तेनो संचय, संघाते बध्यासमान वयते मित्र, न्यातिते स्वजनादिक तेनी साथे संयोग संबंध, यान ते घोडा हाथी पालखी इत्यादिक जाणवा, शयनते पल्यंकादिक आसन सिंहासन बाजोटादिक, अने दासदासी प्रसिद्ध छे. कुप्यते थाली वाटका प्रमुख घरवखरी जाणवी. ए सर्व बाह्य परिग्रह जाणवो. ॥ ७२९ ॥

हवे पुलाकनुं स्वरूप प्रथम देखाडेछे. मूल.—धन्नमसार भन्नइ, पुलायसद्देण तेण जस्स समं, चरणं सोहु पुलाउ, लद्धीसेवाहिं सोय दुहा ॥७३०॥ धान्यजे चोखा प्रमुख कणेरहित एवा असार केवल पलंजिकारूप जे धान्य ते समान भन्नइके० कहियें. पुलाक शब्देकरीने तेना सरखो जेहनो असार. चरणंके० चारित्र होय तेने पुलाक कहियें. ते एक लब्धी अने बीजो आसेवनाना भेदेकरी बे प्रकारे जाणवो. तेमा जे इंद्रसमान ऋद्धिनोधणी तेने लब्धिपुलाक कहियें. अने ज्ञानादिक अतिचारना आसेववाथकी आसेवना पुलाककहियें. ते ज्ञानादिकना विराधवाथकी पाच

प्रकारे ज्ञानपुलाक दर्शनपुलाक चारित्रपुलाक लिंगपुलाक तथा यथासूक्ष्मपुलाक
हवे बकुशनुं लक्षण कहेछे मूल – उवगरण सरीरेसु, बउसो दुविहो दुहावि पचविहा ॥ आभोग अणाभोगे, संवुड अस्संवुडे सुहुमे ॥७३१॥ अर्थ – एक उपकरण ने बीजो शरीरना भेदथकी बकुश बे प्रकारनोछे एटले एक उपकरण बकुश बीजो शरीरबकुश तेमां उपकरण बकुश जे होय ते अकाले वस्त्र धोइ पात्र दांडा घृष्ट मृष्टकरे घणा उपकरणनी वांछा करे अने शरीरबकुश ते कर चरण तथा वदनादिकनी विभूषा कारणविना करे पगने घणो फामडा स पातें घसे. नीमाळा कतरावे चोपडे घणा शिष्य तथा घणा श्राविकादिक ए बेहु पामवानी कल्पिावे ए देश सर्वछेद चारित्रयुक्त छता पण मोहनीयना क्षयने अथ सदा सावधान रहेछे एरीते दुहावि० बेहुप्रकारनो बकुश कावरा चारित्रनोधणी पा च प्रकारे थाय ते कहेछे – जे जाणीने दूषण करे ते आभोगबकुश, जे अणजा ण्या दूषण करे ते अनाभोग बकुश, मूलगुण तथा उत्तरगुणना दूषण बीजा लो कना समक्ष न लगाडे ते संवृतबकुश, एथकी विपरीत ते असंवृतबकुश, अने निगारक आंख तथा मुखधोयताने यथा सुक्ष्मबकुश कहिये एपाच प्रकारे होय
हवे कुशीलना लक्षण कहे छे मूल – आसेवणा कसाए, दुहा कुसीलो दुहा वि पचविहा ॥ नाणे दसण चरणे, तवेय अह सुहुमए चेव ॥ ॥७३२॥ अर्थ – कुत्सितछे शील के० चारित्र जेने ते कुशील कहिये ते एक आसेवणाकुशील न बीजो कषायकुशील एरीते बे प्रकारेछे वली ए बेहुना पाच भेद थाय तेमां जेज्ञा नदर्शन चारित्र अने तपेकरी उपजीवना कामादिक सहित थको करे ते ज्ञानकु शील जाणवा एम दर्शनादिकपण कहवा अने चोथो तपने ठामे अनेरा लिंग कु शील कहेछे अने पाचमा यथा सूक्ष्मते मने करी क्रोधादिकनो सेवनार थाय ॥७३२॥
हवे निग्रंथ कहेछे – मूल –उवसामगखीण खवगो, दुहा नियंठा दुहावि पचवि हो ॥ पढम समउ अपढमो, चरमा चरमो अहा सुहुमो ॥ ७३३ ॥ अर्थ –माह रूप ग्रंथ थकी जे निर्गत एटले निकल्या ते निग्रंथ बेप्रकारे छे एक उपशमिकने बीजो क्षपक ते वली वली मनी पाच प्रकारछे अंतरमुहूर्त्तप्रमाण निग्रंथनी अद्धा तेना देहना समये जे वर्त्तो ते प्रथम समय निग्रंथ जाणवो अने एमज पूर्वानुपूर्वी द्वितीयादि समये जे वर्त्तो ते अपढम समय निग्रंथ जाणवो तेमज निग्रंथनी अ द्धाने चरम समय जे वर्त्तो ते चरम समय निग्रंथ जाणवो. वली अनेरा शेष समय ने विषे पश्चानुपूर्वीये जे वर्त्तो ते चोथा अचरम समय निग्रंथ जाणवा अने सा

मान्यपणे प्रथमादि समय विवक्षाये सर्व समयमां वर्त्तमान थयो ते पांचम
यथासूक्ष्म समय निर्ग्रंथ जाणवो. ए पाच प्रकार निर्ग्रंथना जाणवा. ॥ ७३३

हवे निर्ग्रंथ उत्कृष्ट जघन्ये. जेटला पामियें ते कहे छे. मूल —पाविज्जअ ठसयं,
वगाणुव सामगाए चउपन्ना ॥ उक्कोसउ जहन्ने, ऐको व दुगंव तिग महवा ॥७३४
अर्थ —क्षपकश्रेणीना पडिवजणहार एकसमयने विषे एकसोने आठ पामियें अ
उपशम श्रेणीना पडिवजणहार एक समयनेविषे चोपन्न पामिये. ए उत्कृष्टनी वा
कही अने सामान्य थकी नाना समयें तो शत पृथक्त्व लाभे तथा जघन्यथी
क वे अथवा त्रण एक समयें लाभे. वली क्षपकश्रेणीनो विरह उत्कृष्टो छ मा
पर्यंत पडे एटला कालमां कोइ न लाभे अने उपशम श्रेणीनो विरह उत्कृष्टे व
पृथक्त्वछे तेना सद्भाव थकी केवारे एकपण न थाय. ॥ ७३४ ॥

हवे स्नातक कहेछे. मूल.— सुहझाण जल विसुद्धो, कम्ममलावेक्खया सिण
उत्ति ॥ दुविहोयसो सजोगी, तहा अजोगी विणिद्दिठो ॥ ७३५ ॥ अर्थः— शुक्लध्य
नरूप पाणिये करी विशुद्ध एटले निर्मल थयलो एटले जे घातिकर्मरूप मल तेन
विनाशथी निर्मल तेनी अपेक्षायें स्नातक कहियें. ते बे प्रकारेछे. एक सयोगी अ
तेमज बीजो अयोगी एरीते विनिर्दिष्टो एटले तीर्थंकरे कह्योछे. ॥ ७३५ ॥

हवे ए पांच निर्ग्रंथोमा कोन विराधनानो करनार अने कोन विराधनानो
रनार नथी एवो देखाडे छे — मूल — मूलुत्तरगुणविसया, पडिसेवा सेवए पुला
य ॥ उत्तरगुणेसु बकुसो, सेसा पडिसेवणा रहिया ॥ ७३६ ॥ अर्थ.— मूलगुण
प्राणातिपात विरमणादिक अने उत्तरगुण ते पिंडविशुध्यादिक एवा मूलगुण
उत्तरगुणविशयिकनी जेनाथी प्रतिसेवा एटले विराधना थाय ए सेवएके० प्रतिसेवन
ते कुशीलने विषे थाय अने पुलाएके० पुलाकनेविषे थाय पण एतावता ए बेहुविराधक
होय इहां तत्वार्थना भाष्यमा पाच महाव्रत ने छठो रात्रिभोजन ते पराभियोगे
बलात्कार थकी ए माहेलो कोइपण व्रत विराधेतो पुलाक थाय एक. वली एम
कहे छे के मैथुननेज सेववाथी पुलाक थाय अने प्रतिसेवा कुशील तो मूलगुण
अविराधतो उत्तरगुणनी काइक विराधना करे ए तत्वार्थना भाष्यकारनो भाव ज
णाव्यो अने बकुश उत्तरगुणनोज विराधक थाय छे परंतु मूलगुणनो विराधक
न थाय. सेसाके० शेष कषायकुशील निर्ग्रंथ स्नातक ए प्रतिसेवानी विराधना
हित होय केमके ए मूलगुण अने उत्तरगुणनी विराधना नकरे. ॥ ७३६ ॥

हवे कयाकयानिर्ग्रंथनो विछेदथयो ने कयाकया छे तेकहेछे. मूलः— निग्गंथ

लिणायाण, पुलायसहियाण तिएिह वोच्छेउ ॥ समणा बउसकुसीला, जातिउं ताव होहोति ॥७३७॥ अर्थ –निग्रथ स्नातक पुलाके सहित ए त्रणेनो विछेद थयोछे अने बकुश ने कुशील ए बे जातना श्रमण ते ज्यालगे तीर्थप्रवर्त्तसे त्यालगे रहसे ॥ ७३७ ॥ इतिगाथा दशकार्थ ए त्र्याणुमो पाच निग्रथनो द्वार समास थयो

अवतरण – समणत्ति एटले श्रमणनो चोराणूमो द्वार कहे छे. मूल – निग्गथ सक्क तावस,गेरुअआजीव पचहा समणा॥ तम्मियनिग्गथाते,जे जिणसासणन वा मुणिणो ॥ ७३८॥ अर्थ –एकनिर्ग्रंथ, बीजा शक्य, त्रीजा तापस, चोथा गेरुक, पाचमा आजीव ए पाचे प्रकारे श्रमण कहियें हवे ए पाचमा निर्ग्रंथते तेने कहिये के जे श्रीजिनशासनने विषे नवके०थया एवाजे मुणिणोके०साधुतेजाणवा.

हवे शाक्यप्रमुख वखाणेछे मूल – सक्काय सुगय स्सिसा, जे जडिला ते उ ता वसागीया ॥ जोधाउरत्तपत्ता, तिदडिणो गेरुआ तेउ॥७३९॥ जे गोसालगमयमण, सरति नन्नति तेउ आजीवा ॥ समणत्तेण जुवणे, पचविपत्ता पसिद्धिमिमे ॥७४०॥ अर्थ – शाक्यते सोगतना शिष्य बौद्ध एवे नामे प्रसिद्ध छे अने जे जटिल एटले जटा मस्तकनेविषे धरे वनमा वास करे पाखमी होय तेने तापस गीतके० कहाछे अने जे धाउके० धातुशब्दे धावणी(धाव्ही) गेरु प्रमुख तेणेकरी रक्त छे वस्त्र जेना ते धातुरक्त वस्त्र वली त्रिदमिक परिव्राजक ना जे उपकरण तेना धरनार छे तेनेगेरुआ कहियें परिव्राजक तेने कहिये के जे गोसालग के० गोसालानामत ने अनुसरे अने सरतिके० तेना आश्रितपणे थाय तेने नन्नतिके० कहिये आजीविका श्रमण एरीते जुवण के० लोकमाहे पचवि पत्ता के० पाचे प्रसिद्धपणे छे ॥ ७३९ ॥ ७४० ॥

अवतरण – गासेसणाण पणगति एटले ग्रासजे जमवो तेनी एषणानो पच क तेसवधी पचाणूमो द्वार कहेछे मूल – सजोयणा पमाणे, इगाले धूम कारणे चेव ॥ उवगरण नत्तपाणे, सबाहिरप्रतरा पढमा ॥ ७४१ ॥ अर्थ – सके० स म्यकप्रकारे रसगृधिने अर्थे जोडिये ते सयोजना जाणवी जेम घृतनी प्राप्ति थवा थी खामनी वाटनो करवो ते साथे मेलववु ते सयोजना कहियें ते एक उपकर ण विषया अने बीजी नक्त पानविषया अने ते एकेकना वली वाह्य अन्यतर एवा बेबे नेदछे तेमा प्रथम नोजनविषया ते पात्र, मुख, अने केवलना नेद थकी त्रण प्रकारे छे. बीजो पमाणेके० प्रमाण त्रीजो इगालनाम दोष चोथो धूम्रदोष पाचमो का रणदोष ए पाच प्रकारनी एषणा शुद्ध शुद्धना विचारवो तेमा पहेली सयोजना ते उपकरणसवधीनी जेम कोइक साधु पोतानी वस्तिबाहेर कोइ गृहस्थपासेथी

चोलपटो प्रमुख पामीने फरी अन्यस्थानके विनूपाने अर्थे पछेडी प्रमुख लेइने वापरे ते वाह्य, अने पोताना उपाश्रयमां निर्मल चोलपटादिक वस्त्र पहेरी वली विनूषाने निमित निर्मल मृडु प्रमुख वस्त्र पेहेरे ते अंभ्यंतर जाणवी तेमज नक्त पान संबंधी नी आवीरीते के एक उपाश्रय ने वाहेरे वोहोरवा गयेयके त्याजे क्षीरादिक द्रव्य अने घृतशर्करादिकनो जोडवो ते वाह्य, अने अभ्यंतर ते उपाश्रयमां आवी जम ण वेलायें करे ते जाणवी. ए पढमके० पहेली एषणा कही

हवे उत्सर्गेयतिये संयोजना करवी अने अपवादे साधुने संघाडे यथा वृलादिकनी प्राप्तिये कांइक वधे तो ते वधेलो घृत उपाडवाने अर्थे खांम प्रमुखनो जोडवो तेमज घृतने मांमासाथे एकलो पण तृप्ति यथा पछी खवायनही अने परववंतापण पछी कीमी प्रमुखना आववा थकी असंयमनी वृद्धि थाय तेमाटे संयोजना करे.

तेम ग्लानने सारो करवाने अर्थे वली राज पुत्र प्रमुखें चारित्र लीधे थके प्रधान रस लालित्य सुखोचित्त ते साधुने योग्य अने अरस विरसादिक अहारना अणजा ववायकी रसगृद्धें संयोजना करवी ते दोष नणी थाय नही. ॥ ३४१ ॥

हवे प्रमाण प्रमुख दोष वखाणेछे. मूलः—कुक्कुडिअंमयमेत्ता, कवला वत्तीस नोयण पमाणे ॥ राएणा सायंतो, संगारं करइ सचरित्तं ॥ ३४२ ॥ अर्थः— कुकुमी पक्षी विशेष तेनो अंमके० इंमो ते मात्रा प्रमाणे जे कवल तेवा वत्रीस कवल अथवा जे कवलेकरी जेनो मुख नराय तेने कवल कहेछे अथवा जेनो जेटलो आहार ते नो वत्रीसमो नाग ते कवल जाणवो तेवा वत्रीस कवल नोजननो प्रमाण जा णवो पण तेयकी अधिक लेतां यका दूषण प्राप्त थाय अने उंणोलेता गुणथाय ए वीजो प्रमाण दोष कह्यो.

वली राएणके० रागेकरी तिहां राग ते अन्न एटले नोजननी उपर अथवा देनाराना उपर सुकमत्ति सुपकत्ति सुछिने सुहडेमडे इत्यादिक रूपने कहेवे करी नोजन अरोग्यनो उतो पोतानो चारित्र वालीने अंगारा समान करी नाखे ए त्री जो इंगालदोष कह्यो. ॥ ३४२ ॥

मूल.— भुंजंतो अमणुसं, दोसेण सधूमगं कुणे चरणं ॥ वेयणआयंकपमुह, कारणा छच पत्तेयं ॥३४३॥ अर्थः— नोजन करतो उतो अमनोज्ञ दोषेकरी एटले आ अन्न अलूणोछे अथवा एमा लूण घणो नाख्योछे तथा वधारसारो दीधो न थी तेमज आ रोटली काचीछे खीचडी काची छे इत्यादिक दूषण कहेतो थको नो जन करे तो धूमके० धुमाडानीपरे पोतानो चारित्र कालोकरे ए चोथो धूम्र दोष कह्यो.

पाचमो जोजन करवा संबधीकारण ढ ने तेजग्रन्थेंके वेयणवेयावच्चे, इरियठाए य संयमठाए ॥ तह पाणवत्तियाए, ठठं पुण धम्म चिताए ॥ ७४४ ॥ अर्थ – वेदनीयना प्रबलपणा थकी क्षुधा सहनकरी नशके तो ते उपशमाववाने अर्थे आहारनो ग्रहण करे ए पहेलो कारण जाणवा बीजा वेयावच्च जे करवो ते पण आहारना ग्रहणविना करायनही माटे वेयावच्चना कारणे पण आहार ग्रहण करवु ए बीजो कारण जाणवा त्रीजा इरिया शब्दे इरिया समिति तेने अर्थे आहारलेवो एटले आहारना ग्रहण कर्याविना इरियासमिति पण सोधायनही ए त्रीजो कारण तेमज सत्तरप्रकारनो संयमपण आहार लीधा विना पलेनही माटे संयम पालवाने अर्थे आहारलेवो ए चोथाकारण तहश० तेमज प्राण जे इंद्रियादिक दशप्रकारनाछे तेनी वृत्ति पालवी तेने अर्थे अथवा प्राण प्रत्येक जीवतव्य ने अर्थे एटले जीववाने अर्थे आहार लेवो ए पाचमा कारण जाणवो ठठो वली धर्मध्याननो चितवन करवाने अर्थे अथवा श्रुतधर्मनो चितन करवाने अर्थे तेमज वाचनादिकपण जोजन कर्याविना थाय नही माटे ए कारणथी पण जोजन लेवो ए ठठोकारण जाणवो ए उक्त प्रकारे ठकारणे जोजन करताथका दूषणनथी अने शरीरपुष्ट्यादिकने निमित्ते जो जोजन करियें तो दूषण प्राप्त थाय

हवे जोजन नकरवा संबधी ढ कारणछे तेकहेछे –आयंके उवसग्गे, तितिक्खया बनचेर गुत्तीसु ॥ पाणिदया तव हेक, सरीरवोछेयणठाए ॥ ७४५ ॥ अर्थ – एक अंतक ज्वरादिक रोगढता जमवानही कोइ उपसर्गकरे तेवारे ते सहन करवानी वाछाये जमचोनही एमज माता पिता व्रत मूकावे तेवारे नजिमेतो तेथी सहुका इ कहेके एने व्रत मूकावोछो ए घरे आव्यो पण नहीजिमे एवो लोकोनो अपवाद सांजली ते पोतानीमेले उपसर्ग करता रहिजाय तेमाटे जिमवोनही त्रीजा ब्रह्मचर्यनी गुप्तिराखवाने अर्थे नजिमिये तो तेथी सुखे ब्रह्मचर्य व्रत पले चोथा प्राणीमात्रनी दयाने अर्थे उपवास करी बेसिये क्यायें जंतु न होय एम जलीपरे जीवदया कीधी होय तेथी जिमवोनही पांचमो चतुर्थादिक तपने निमित्ते जिमवोनही ठठो मरणना अतसमये शरीर मूकवाने अर्थे अनशनलेई आहारनो त्यागकरे तेवारे जिमवोनही ए ढ कारणे जिमवुनही जो जिमिये तो दूषणलागे इति गाथा पंचकार्थ ॥ ७४५ ॥ पचाणुमो द्वार समाप्त थयो

अवतरण – पिंमेषाणे एसणा सत्तगति एटले पिंमपाननी एषणानो सप्तक तेनो ठन्नुमो द्वार वखाणेछे मूल – संसठमसंसठा, उद्धड तह अप्प लेवडा चव

उग्गहिया पग्गहिया. उज्झिय धम्माय सत्तमिया ॥ ७४६ ॥ अर्थः— इहां सिक्षा तनी नापाये पिंड शब्दे नोजन कहियें तेनी एषणा एटले जे लेवानो प्रकार तेने पिंडेषणा कहियें. ते सात प्रकारेछे ते असंसृष्ट संसृष्ट इत्यादि क्रमेकरी छे. इहां जे आगल आगलछे तेविशुद्ध जाणवी एमांथी प्रथम गमे तेनुं व्याख्यान कर्युं होय तो पण चाली शके. परतु सूत्रमांहे पहेला संसृष्टनो ग्रहण कर्यो ते गाथा ना बांधवाने अर्थे जाणवो. हवे साधु बे प्रकारनाछे. एक गछवासी बीजा गछनिर्गत तेमा जे गछवासीछे तेने सातेपिंडषणा लेवानी अनुज्ञाछे अने गछनिर्गतने प्रथमनी बे पिंडेषणा नो अग्रहणछे. ए सातना नाम कहेछे. असंसृष्टा, संसृष्टा, उद्धता, अल्पलेपिका, अवगृहीता, प्रगृहीता, उज्झितधर्मा. ॥ ७४६ ॥

हवे ए साते पिंडेषणा सूत्रकार वखाणेछे. मूल.— तम्मियसंसठा हठमत्तए इमा पढमनिरका ॥ तव्विवरीया बीया, निरकागिरिहं तयस्स नवे ॥ ७४७ ॥ अर्थः—ते सातप्रकारनीनिक्षामांहे संसृष्टते तक्र तीमण प्रमुखेकरी संसृष्ट एटले खरडायला हाथे लेता अने वाटली प्रमुख मत्तके० मात्रक पण खरडायला होय तेणेलेता संसृष्ट निक्षा ते पढमाके० प्रथम जाणवी अने तेथकी विपरीत एटले ज्यां मात्रक अने हस्त ए बंने खरडायला न होय तेवा हाथे अने मात्रके लेता असंसृष्ट बीजी निक्षा थाय.

मूलः—निअ जोएणं नोयण, जायमुद्धरिय मुद्धडानिरका ॥ साअप्पलेवियाजा, निल्लेवावल्लचणगाई ॥ ७४८ ॥ अर्थ — निअके० निज (पोताने) जोयणंके० यो ग्यव्यापारे परिसवा प्रमुखने अर्थे नोयणजायके० नोजन जात एटले एक गामडामाथी काढीने बीजा गामडामां नाखेले एवा प्रस्तावे महात्माये जईने धर्मलाभ दीधो तेवारे तेमाहात्माने वोहोरावे तो ते त्रीजी उधृत निक्षा जाणवी.अल्पलेपिका जे निक्षानेविषे अल्प शब्दे अनाववाची तेथी नथी लेपरूप पश्चातकर्म जिहां अथवा अल्प पश्चातकर्म छे जिहां ते अल्पलेपिका अथवा निर्लेपिका कहिये. तेवा वाल चणाप्रमुख आदिशब्दथकी पंवा ए पण लीजे ते अल्पलेपिका चोथी निक्षा.॥ ७४८॥

मूल — नोयण कालेनिहया, सरावपमुहेसु होइ उग्गहिया ॥ पग्गहिया ज दा क, लुत्तुं व करेण असणाई ॥७४९॥ अर्थ —नोजनकाले जिमवानी वेलाये पीर सेली थालीने सरावला प्रमुख माहे ते लेता साधुने पांचमी उद्गृहीत निक्षा थाय छे. छही पग्गहिया एटले अवगृहिता ते जिमवानी वेलाये जिमनारने परिसवाने अर्थे दोहेले प्रमुखेकरी उपाड्यो जे आहार ते हजी जिमनार मागने लीधोनथी

एवा प्रस्तावे साधु आव्यो अथवा जिमनारे जिमवाने फरज उपाडयोछे तें यति
ने देतां थका प्रगृहीतनामे छठ्ठी भिक्षाथाय ॥ ७४९ ॥

मूल – भोयणजाय जठ्ठु, णारियनेच्छति डुपयाई ॥ अद्धचत्त वासा, उज्झि
धम्मा नवे भिक्खा ॥ ७५० ॥ अर्थ –भोजन जातिजे अशनादिक नो ते प्रकार छांड
वाने नाखी देवाने योग्य अमनोज्ञ पणाथकी जेने द्विपद ब्राह्मण श्रमणादिक
कोइ लेवाने वांछा करे नही अथवा त्यजवाने योग्यछे ते दूर नाख्योछे त सा
धुये लेताथकाने सातमी उज्झितधर्म्मानामेभिक्षा थाय ॥ ७५० ॥

हवे पानेषणा एटले पाणीनी एषणा कहेछे मूल –पाणेसणाविएव, नवर च
उत्थीए होइ नाणत्त ॥ सोवीरायामाई, जमलेवाडति समयुत्तो ॥ ७५१ ॥ अर्थ –पा
नक सबधीनी जे एषणाछे तेपण एमज जाणवी पण नवरके० एटलो विशषछे
जे चोथी ने विषे होइनाणत्तके० भेद होय एटले चोथी अल्पलेपिका तिहां पान
क ते सोवीर काजी आयाम ओसामण आदि शब्दथकी उन्होपाणी तडुलनोपाणी
ए सर्व अलेपकृत जाणवा ए समयुत्तिके० सिद्धांतनी युक्ति सिद्धांतना भाषित अ
ने शेष इक्षुरस द्राक्षवाणी आंबिलवाणी प्रमुख जे लीपोळता यतिने कर्मरूप छे
पकरे ते लेपकृत जाणवो इति ॥ ७५१ ॥ ए छनुमो द्वार समाप्त थयो

अवतरण – भिक्खायरियाविहीण अट्ठगति एटले भिक्षा चर्यानी आठवीथीना
सत्ताणुमो द्वार कहेछे मूल – उज्जूगतुपच्चा, गईय गोमुत्तिया पत्तगविहि ॥ पेडाय
अद्धपेडा, अब्भितरवाहिसबुक्का ॥ ७५२ ॥ अर्थ – भिक्षाचर्य्यानी वीथी एटले
श्रेणीनो प्रकार ते तिहां पहेली ऋजुगति, बीजी प्रत्यागति, त्रीजी गोमूत्रिका, चोथी
पत्तगवीथी पाचमीपेटा, छठीअर्द्धपेटा, सातमीअभ्यतर सबुका आठमी बाह्यसबुका

हवे एना नाम सूत्रकार वखाणेछे मूल –गया उज्जुगईए, भिक्खतो जोइ वलइ
अनभतो ॥ पढमाए वीयाए, पविसिय निस्सरइ भिक्खतो ॥७५३॥ अर्थ – पातानां
स्थानक थकी निकली ऋजुके० सरलगतियेज विहरतो जाय वलतो पाछो फरे तेवा
रे अण विहरतो एटले विहरे नही ए पहेली ऋजुगति जाणवी बीजी प्रत्यागत
वीथीने विषे जातो आवतो बेहु वारे विहरे ॥ ७५३ ॥

मूल – वामाउ दाइणगिहे, भिक्खिज्जदाहिणाउ वाममि ॥ जीए सा गोमुत्ती
अइ वियड्ढा पयगविही ॥ ७५४ ॥ अर्थ – वाम एटले डावा पसवाडाना घरथ
की जिमणा पसवाडाना घेरे वोहोरे तेमज वली जिमणा पसवाडा थकी डावापा
साना घेरनेविषे वहोरे एवीरीतें जे भिक्षा मागियें ते गोमुत्रिकानामे त्रीजी वीथी

जाणवी. वली जिहां अर्द्धवितर्द्द के० आवोपाठो अनियतपणे वोह्रोरियें एटले पं
तग तीड प्रमुखनीपरे अनाश्रित क्रम जिहा करवो ते चोथी पतग वीथी जाणवी.

मूल.- चउदिसि सेणीजमणे, मज्झे मुक्कंमि जन्नए पेडा ॥ दिसि डुग संबद्धस्से
णी निवणे अद्धपेमिति ॥ ३५५ ॥ अर्थ - चारेदिशिनेविषे श्रेणीविह्रे अने
विचमां राखे एने पेटानामा पाचमी वीथी जन्नए के० कहियें. जेम वस्त्रादिक घा
तवानो स्थानक वशमय प्रसिद्ध तेनीपरे ग्रामक्षेत्रादिक ने चउरसपणे वेंचे ते पे
टावीथी जाणवी. अने जे दिसिडुगके० विदुदिशिने विषे श्रेणीयें विह्रे अने वेदि
शि मूकी आपे ते अर्द्धपेटानामा ठठी वीथी जाणवी.॥ ३५५ ॥

मूल - अप्भिंतर संबुक्का, जीए जमिरो वहिं विणस्सरई॥वहिसंबुक्काजन्नइ, एयं वि
वरीय निरकाए ॥३५६॥ अर्थ.- शंबूककेह्ता शंख तेना प्रकारे जिहां जमवुं ते
शंबूका नामा वीथी जाणवी. ते वाह्य अने अभ्यंतरना नेदेकरी बे प्रकारनी ठे. ते
माजे विह्रतो शंखनीपरे वाह्र निकले ते सातमी अभ्यंतर शंबूका अने जिहां
विह्रतो वाहेर थकी अंदरआवे ते पूर्वोक्त थकी विपरीतथाय ते आठमी वाह्य
सवुका वीथी जाणवी. पचाशकनी वृत्तिमांहे शखवृत्तगमन प्रदक्षण ने अप्रदक्षण
ना नेदेकरी बे प्रकारे कह्योठे माटे ए नामातरठे. एम शास्त्रांतरने विषे ठ वीथी
कहिठे. तेएम एक ऋजुगति वीजी प्रत्यागति ते शंबूका ए एकनी विवक्षा करिये
तेवारे ठ थाय इतिगाथा पंचकार्थ ॥३५६॥ आठ वीथीनो सताणुमो द्वार समाप्त.

अवतरण.- दसपायठित्ताईति एटले दशप्रकारना प्रायश्चित्तनो अठाणुंमो द्वार
कहेठे. मूल.-आलोयण पडिकमणे, मीस विवेगे तहावि उस्सग्गे ॥ तवठेयमूलअ
णवठ्ठि,याय पारचिए चेव ॥ ३५७ ॥ अर्थ - आ एवो शब्द, मर्यादाने अर्थेठे ते
आवीरीते.-जह वालो जं पत्तो, कज्जमकज्जं च उज्जुअंजणइ ॥ तं तह आलोइज्जा,
मायामयविप्पमुक्कोय ॥ १ ॥ ए मर्यादायेंकरी लोचियें एटले प्रगटपणे करिये अर्था
त वचनेकरी प्रकाशिये. ते आलोचना कहिये. आलोचनमात्रें जे सूजे ते आलोच
नानेविषे जे श्रेष्टतापणा लगीने कारण कार्यनो उपचार कहिये एवा न्यायथ
की ए प्रायश्चित्त पण आलोचना ठे. एमवीजा प्रतिक्रमण विगेरे जे गाथामां नाम
कह्या ठे ते सर्व जाणवा. ह्वे एनी व्याख्या गाथाये करी देखाडेठे. ॥ ३५७ ॥

मूल.-आलोइज्जइ गुरुणो, पुरउ कज्जेण ह्थसयगमणं॥ समिइपमुहाणमिह्रा
करणे किरइ पडिक्कमणं ॥ ३५८ ॥ अर्थ.- गुरुने पूठी अनुज्ञालेइ पोताने योग्य
निक्षा वस्त्र पात्र सश्या संस्तारक पादप्रोंठन प्रमुख लेवाने अर्थे अथवा आचार्य

उपाध्याय स्थविर बाल ग्लान शिष्य क्षपक समर्थने प्रायोग्य वस्त्र पात्र नक्त पान औषध प्रमुख लइ आव्यो ठतो तथा उच्चारादिक करीआव्यो अने चैत्यवंदना करी आव्यो तथा गृहीत पीठ फलकादिक पाठा गृहस्थने देइ आव्यो तथा बहुश्रुत अपूर्व संविज्ञने संशय पुठवा गयो थको तेपूठीआव्यो इत्यादिक एक शो हाथ थकी उपरांत दूर अथवा नजीक जइ आव्यो ठतो गुरु समक्ष आलोचना करे ए आलोचना यतिने अवश्य कर्त्तव्यठे

तिहां उपयुक्त अङ्गुष्टपणे निरतिचार चारित्रनो धणी ठद्मस्थ अप्रमत्त यती तेने आलोचनाप्राय अने सातिचार चारित्रने उपरना प्रायश्चित्तनो संनव जाणवा तथा जे केवलज्ञानना धरनारठे ते तो कृत्य कृत्य पणा थकी निरतिचारेज वर्त्तठे माटे तेने आलोचनानो अनावठे

इहां कोइ पूठे जे अप्रमत्त साधुतो नित्यकर्म्म गमनागमनादिक त्यां उपयुक्त अने अष्टनावपणाथकी पण निरतिचार ठे तो तेने आलोचना शावास्ते लेवी जोइये केमके तेउ तो आलोचना विनाज सूत्रोक्त विधिये प्रवर्त्ततो शुद्धजठे

एनो उत्तर कहेठे केवल चेष्टानिमित्ते अथवा सूक्ष्मप्रवादनिमित्ते जे सूक्ष्म आश्रव क्रिया लागे ते आलोचना मात्रे शुद्ध थाय माटे तेनी शुद्धिने अर्थे आलोचना ठे ए प्रथम आलोचना प्रायश्चित्त कह्यो

बीजो समिईके० समिति प्रमुखने मिथ्याकरणे विपरीत पणाने आचरवे अने प्रमुखना ग्रहण थकी गुप्तिनो पण ग्रहण करवो इहां ए नावजे सहसात्कारे अथवा अनानोगथकी ईर्यासमितिये मार्गे वात करतो जाय अने नाषासमितिये गृहस्थनी नाषायें बोले तेमज आकरे ढढर स्वरे शब्दकरे तथा एषणासमितियें नक्त पान गवेषणानी वेलायें सावधान नहोय तेमज चोथी तथा पांचमी समितिमा नाम मात्रा उपकरणना आदाने निक्षेपे पण अनुपयुक्त होय अने अप्रत्युपेक्षितादिक स्थमिले उच्चारादिकने वोसिरावताथका जो हिंसादिक दोष न लागे तेमज जो मने करी डुश्चिंतित अने वचने करी डुर्नाषित तथा कायाये करीडुश्चेष्टित तेमज वली कंदर्पनो उपहास स्त्रीप्रमुख नी जे चार विकथाठे तेने करवेकरी एमज क्रोधादिक चार ने करवेकरी शब्दादिकनेविषे राग करवाथी तथा अनानोगे सहसात्कार थकी कोइक आचार्य प्रमुखना उपर मनेकरी प्रद्वेष ने करवेकरीने अने वचन अंतर नाषाने करवे करीने कायायेकरी पुरोगमनादि करवेकरीने तथा इहां मिथ्यादिक सामाचारीने अण करवेकरी इत्यादिके बीजो प्रतिक्रमण मिथ्याडु कृत प्रायश्चित्त करिये

मूल.— सद्दाइ ए सुरागाइविरयणं साहिउं गुरूण पुरा ॥ दिज्जइ मिच्छा डुक्कड, मेयं मीसंतु पच्छित्तं ॥ ७५ए ॥ अर्थ.— शब्दादिक इष्टानिष्टविषयोनेविषे रागादिक नो विरचन करवो. इहा ए जावजे अनेक प्रकारना शब्दादिक विषय पामे थके कोइ एम जाणे जे हुं शब्दादिकने विषे प्रवर्त्त्यो किवा न प्रवर्त्त्यो एवो संशय ठता मिश्रप्रायश्चित्त जाणवु. ते प्रथम गुरु आगल साहिउंके० कहिये. पठी आलोचना करवी. पठी गुरुना आदेशथी मिच्छा डुक्कड देवो. ए त्रीजुंप्रायश्चित्त जाणवुं ॥७५ए॥

अने ज्या एवो निश्चयज थाय के अमुक शब्दादिकनेविषे राग अथवा द्वेष उपनोजे तो त्या तपयोग्य प्रायश्चित्त आवे. अने जे कोइ शब्दादिक उपर राग द्वेष थयो नथी एवो निश्चयथाय तो त्या ते शुद्धज ठे तो त्या प्रायश्चित्त आवे नही.

मूलः— कज्जो अणे सणिज्जे, गहिए असणाइए परिच्चाउ ॥ कीरइ काउस्सग्गो, दिठे डुस्सविणए पमुहंमि ॥ ७६०॥ अर्थः— अशुद्ध अशनादिक एटले अशन,पान, खादिम, स्वादिमरूप चार लीधेंठते अने औविकोपग्रहिक उपकरण अशुद्ध लीधेठ ते तेनोत्याग करवो. इहा ए जाव जे सम्यक् उपयुक्त कोइक साधुए नक्तपानादि ग्रहण क र्युं अने पठी ते अप्राशुक किवा अनेषणीय जाण्युं त्यारे ते ग्रहण करेलानो त्या ग करवो तेहिज प्रायश्चित्त कहियें. एना उपलक्षणथकी पर्वत, राहु, मेघ, हिम, तथा रजेकरी सूर्यनुं आवरण थयुं ठतां अशठनावेकरी सूर्यउदय पाम्यो एवी बुद्धिए अशनादिक लीधुं होय अथवा अस्त थयो नथी एवी बुद्धिए ग्रहण करेलुं अशनादिक होय तेमज जे अशनादिक पेहेला पहोरमां ग्रहण करी चोथा पहोर सुधी राख्युं हो य तथा अर्द्ध जोजन अतिक्रमे शठनावे अथवा अशठनावे त्याथकी आणेलो अ थवा लेइ गयलो ते परठववो ते विवेक प्रायश्चित्त जाणवु. शठ अने अशठनुं ए लक्षण के जे इंद्रिय विकथा, माया तथा क्रीमाये करीने पूर्वोक्त बोल करे ते शठ जाणवो. अने ग्लान, सागारी, अस्थंडिल, तथा नयादिक कारण थकी करे ते अ शठ जाणवो. ए विवेक प्रायश्चित्त चोथुं जाणवुं.

तेमज डुस्वप्नादिक जोयां ठता तेनुं विशोधन जे करे ठे ते कायोत्सर्ग प्राय श्चित्त पाचमुं जाणवु. इहां ए नावजे सावद्य बहुल प्राणातिपातादिकनुं करवुं वली प्रमुखना ग्रहणथी गमनागमन अने होडीमां बेशी नदी पार उतरवी. इत्या दि प्रमुखे एवी रीते डुःस्वप्न थाय तो तेनी शुद्धिने सारु कायोत्सर्ग प्रायश्चित्त कर वु उक्तंच. गमणागमण वियारे सुत्तेवा सुमिण दंसणेराउ ॥ नावानइसंतारे, पा यच्छितविकस्सग्गो ॥ १ ॥ हवे सुत्तेवा ए बोलनो अर्थ करेठे.— सूत्रनेविषे उद्दे

ज्ञा, समुद्देश, अनुज्ञा, प्रस्थापना, प्रतिक्रमण श्रुतस्कंधनु परावर्त्तन अने अगपरि वर्त्तनादिक प्रमुख अविधिये कर्या होय तो ते अविधि समाचरण परिहारने मा रु अथवा तेहनी शुद्धिने अर्थे कायोत्सर्ग करवो ए पांचमु प्रायश्चित्त कह्यु ॥३६०॥

मूल —निव्विगइयाइ, दिज्जइ, पुढवाइघट्टणे तवविसेसो, तवछम्मस्स मुणिणो, किज्ज ऽ पज्जायवोछेउ ॥ ३६१ ॥ अर्थ — पृथ्वी आदिकनु संघट्ट थवानी निवी ठ मास पर्यंत तपविशेष करे ए छेदग्रंथने अनुसारे अने जीतकल्पने अनुसारे तपोजद ए ठछु प्रायश्चित्त ठे ते करवु हवे तप छुर्दम ते कहीएके जे ठ मास क्षपण अनेरुजे उत्कृष्ट तप तेनु करवु ते करवा समर्थ तेणेकरी तपगर्वित थाय ने कहे के मारा श्या मोहोटा तपे करीने शु विशेष करवु ठे अथवा जे ए तप करवा सारु असमर्थ, एवा ग्लान, बाल अने वृद्ध असद्दादिक तेवा तपनी श्रद्धाए करी रहित, अथवा जे कारणविना अपवाद सेववानी रुचि करे तेने व्रतकाल थकी दिन पंचकने अनुक्रमे श्रमण पर्याय ठेदिये ए सातमु ठेद प्रायश्चित्त करवु ॥३६१॥

मूल — पाणाइवायपमुहे, पुण वयारो वण विहेयवं ॥ ठाविज्जइ नवएछु काउ घायप्पछुमणो ॥३६२॥ अर्थ —आकुट्टेकरी प्राणातिपात प्रमुख प्राणी वध कीधे अने आदिशब्द थकी अनेरा मृषावाद, अपराध संकल्पपूर्वक कर्या होय तो पुन र्व्रतारोपण एटले फरी पण व्रतस्थापन करवा इहां ए भावार्थ ठे जे आकु ट्टिए पंचेंद्रिय जीवनो वध कीधे, दर्पे करीने मैथुन सेवा करी होय एम मृषावाद, अदत्तादान, परिग्रह एनु उत्कृष्ट आकुट्टीये सेवन कर्यु ठतां किंवा वारवार सेवन क र्यु ठता पुन के० फरी नवा व्रतनो उच्चार कराविये ए पुनर्व्रतस्थापन प्रायश्चित्त करवु ए मूलनामनु आठमु प्रायश्चित्त जाणवु

ठाविज्जइके० स्थापिये नही जे व्रतने विषे हाथ प्रमुख लाकडी मुष्टी प्रमुख नि रापेक्ष थको घोर परिणाम ठता पोताने तथा परने घात प्रहारादिक करे तेणेकरीनेतु अति प्रछुष्ट मन होय ए रीते जेने संक्लिष्ट चित्तनो परिणाम थाय, एवाने एवु उ चित तपनु प्रायश्चित्त अपाय के ते ज्या लग पोतानी मेले उठी तथा बेसी शके नही जेवारे उठवा बेसवानु प्रयोजन पडे तेवारे बीजा कोइने कहे के हे आर्य मन उठा ड किंवा बेसाड एवु कहे त्यारे ते बीजो जे होय तेपण तेनीसाथे आण बोलतापका तेनु कार्य करे. एटलो उचित तपनु प्रायश्चित्त तेने देवायडे एटलु तप कीधे ठते पठी तेने उपस्थापना करवी ए अनवस्थापना नामा नवमु प्रायश्चित्त जाणवु॥३६२

मूल — पारचियमा वज्जइ, संजिगनिवनारियाइ सेवाहि ॥ अब्बत्तीजिणधरणे आ

रस वरिसाइ सूरीणं ॥३६३॥ अर्थः—मूल प्रायश्चित्त ते जे सलिंग संयति तेणेसाधवी अथवा नृपभार्या एटले राजानीराणी, तेनी साथे सेवा कीधी होय. आदिशब्दथकी लिंगिघात राजादिकना वधनुं ग्रहण करवुं ए पारंचितनामा दशमुं प्रायश्चित्त. पण ते अव्यक्त लिंगना धरनार,जिनकल्पिनीतुलना करनार, क्षेत्रादिकथकी बाहिर रह्याथका विपुल तपना करनार, अने महासत्व आचार्य तेनेपण ए थाय ते जघन्य तो छमासनो अने उत्कृष्टो बारवर्ष सीम थाय तेवारपछी वली तेने नवी दीक्षा आपिये.॥३६३॥

इहांज वली विशेषे कहेछे. मूलः— नवरं दसमावत्तो नवमसुज्झावयाण पच्छित्तं छम्मासे जावतयं, जहन्नमुक्कोसउवरिसं ॥ ३६४ ॥ अर्थ.—एमां नवरके० एटलुं विशेषछे के ए दशम प्रायश्चित्त योग्य अपराध कीधे तेनी प्राप्ति थाय, तथा नवमुं अनवस्थाप नामा प्रायश्चित्त कीधे थके तेनी प्राप्ति थाय ए बे प्रायश्चित ते अज्झावयाणके० उपाध्याय ने थाय. इहां ए अर्थछे के जेजे अपराध सेववा थकी पारचित आवे तेते अपराध घणा वखत सेववा छतां उपाध्यायने पण अनवस्थाप्येज आवे केमके उपाध्यायने अनवस्थाप्य पर्यंतज प्रायश्चित्त कह्युंछे.

एमज सामान्य साधुने अनवस्थाप्य पारंचित अपराधे छते मूल पर्यंतज प्रायश्चित्त आवे. ते अनवस्थाप्य जघन्यथी छ महीनानुं अने उत्कृष्टथी एकवर्ष जाणवुं. आशातना अनवस्थाप्य जे तीर्थंकर गणधर अने प्रवचनादिकनी निंदा करे आशातनाकरे. तेने आश्री ए कह्योछे अने जे हस्त ताडनानो करनार साधर्मि तथा अन्यधर्मिनी चोरी करे ते प्रतिसेवा अनवस्थाप्य ते आश्रयी कहिये तेवारे जघन्यथी एकवर्ष अने उत्कृष्टथी बारवर्ष जाणवां. ॥ ३६४ ॥

हवे ए दश प्रायश्चित्त ते ज्यां लगे तीर्थहोय त्यांलगे होय किंवा न होय ते कहेछे. मूलः— दस ता अणुसज्जंती, जाव चउदस पुव्वि पढम संघयणी ॥ तेण पर मूलंत, दुप्पसहो जाव चारित्ती ॥ ३६५ ॥ अर्थः— ए दशे प्रायश्चित्त त्यांलगे प्रवर्त्ते, ज्यांलगे चउदपूर्वना धरनार होय, वज्रऋषभनाराच नामा प्रथम संघयणना धणीहोय त्यांलगे जाणवा. तेणके० ते वार पछी नवमुं अनवस्थाप्य अने दशमु पाराचित ए बेनोविछेद थया नंतर आलोचनादिक अष्टविध प्रायश्चित्त ते त्यां सुधी वर्त्तमान जाणवां. ज्यांसुधी दु:प्रसह नामा सूरि थसे त्यांसुधि जाणवा. ते समाधिस्थ थया पछी तीर्थे चारित्रनो विवछेद थशे. ए अगणुसुं द्वार समाप्त थयुं.

अवतरण.— ऊहम्मि पयविभागंमि सामायारि भणंति एटले ऊंग सामाचारिनुं नवाणुसु द्वार अने बीजो पदविभाग सामाचारीनुं शोमुं द्वार ए बे द्वार

नाये कहेछे. ॥ मूल – सामायारीउहमि उहनिक्कुत्ति ज पिय सव ॥ सापय
नाग सामा, यारो जा छेयगथुत्ति ॥ ७६६ ॥ अर्थ – इहा उंघसामाचारीनेंपि
जे उंघनिर्युक्तिमा कह्योछे ते सर्व उंघ सामाचारी जाणवी ए नवाणुमु द्वार अने
जे नितकल्प तथा निशीथादिक छेदग्रथोमां नजा साधुनु आचरण करेलुं जे
क्रियाकलापनो विभाग देखाडयोछे,ते पदविभागसामाचारी जाणवी एशोमु द्वारथयुं
इहां सांप्रतकालना जे श्रमण तेने तथाविध श्रुत परिज्ञानशक्तिरहित अने
आयुष्यप्रमुखनीहाण जाणी ते ते आश्रयी उंघसमाचारी नवमां पूर्वथकी त्रीजो
वस्तु आचार एवे नामे ते थकी तिहां पण वली वीसमो प्राभृत ते थकी वली उ
पप्रानृत थकी उद्धारकरी एम पदविभाग सामाचारी ते पण नवमां पूर्व थकीज
उद्धारकरीछे ए शोमु द्वार समाप्तथयु ॥ ७६६ ॥

अवतरण.– दसहासामायरित्ति एटले दशप्रकारनी चक्रवाल सामाचारीनो ए
कशोने एकमु द्वार कहेछे मूल – इच्छामिच्छा तह, कारो आवस्सया निसी
हिया ॥ आपुच्छणा पडिपुच्छा, छंदणाय निमंतणा ॥ ७६७ ॥ उवसंपयाय काले,
सामायारी भवे दसविहाउ ॥ एएसि तु पयाण,पत्तेयपरूवण वोछ ॥७६८॥ अर्थ-
एक इच्छाकार, बीजी मिथ्याकार, त्रीजी तथाकार, चोथीआवश्यकी, पांचमी नैषे
धकी, छठी आपृच्छना, सातमी प्रतिपृच्छा, आठमी छंदणा, नवमी निमंत्रणा, अने दशमी उ
पसंपदा ए दशप्रकारनी चक्रवालसामाचारी दशप्रकारनीछे एदशेपदनी पृथक प्ररूपणा करेछे
ए दश प्रकार सम्यक अर्थसहित जाणनार छता पहेलो इच्छाकारी कहेछे त
हेनाकेज मूल – जइ अभ्भुट्ठिज्जपर, कारण जाए करेज्जसेकोइ ॥ तत्थय इच्छा
कारो, न कप्पइ बलाभिओ गाउ ॥ ७६९॥ अर्थ – इच्छाकार ए एटला वास्ते कहेछे
के एणेरे इच्छिय ते इच्छा जाणवी, अने जे करिये ते कार जाणवो इहां कार श
ब्द जे छे ते स्वेच्छे वांछिये एटले इच्छाकार, मिथ्याकार,तथाकार, तिहां इच्छाय क
रीने तु मह्यार ए कार्य कर पण बलाभियोग न करवा के ए आय तुहिज कर
एम न कहेवु ए सूत्रकारनु वचन छे, जे कदापि काइ कारणे साधु बीजा व्रत
धारीने कहेछे अभ्यर्थना कर कारणविना पतीने अभ्यर्थना तो करवीज नही परा
ञ्च छे, पण ग्लानादिक कारण उपने थके अनेराने प्रार्थनाकर ता ते अभ्यर्थना
करनार साधुये आपणा साधुने इच्छाकार करीने अभ्यर्थना करवी. के तुं अमु
का एक महारु काम कर, अथवा अन्यथा अभ्यर्थना करयाविना काइ अनेरा रत्ना
धिकना वैयावच्च करेछे ते कामकरता तेणे पण सामाइच्छाकार करवो का

सूत्रमांहे कोइ एवो शब्द आव्यो ते एवो जणाववाने अर्थे आव्योछे जे कीधाविना ज पारका कामना करनार होय ते तो विरलाज जाणवा. यतः विरला जाणंति गुणा विरला पालंति निद्धणेनेहं ॥ विरलापरकज्जकरा, परदुःखे दुःखिया विरला ॥ १ ॥

हवे इच्छाकार जे करिये ते शाने अर्थे करिये ते कहेछे. न कप्पइ बलाभिउगाउ एटले बलाभियोगे करी साधुने न कल्पे तेमाटे इच्छाकार करवो. अने गाथाने छेडे तु शब्द आव्योछे ते किहांएक बलाभियोग पण कल्पे एवो जाणवाने अर्थेछे.॥७६७॥

हवे मिथ्याकारना विषय देखाडे छे. मूलः– संजम जोए अप्भुट्ठियस्स जं किंपि वितह मायरियं ॥ मिच्छाएयंतिवियाणि ऊण मिछत्ति कायवं ॥७७०॥ अर्थ – मिथ्या, वितथ, अनृत एवा पर्याय जाणवा. मिथ्या फोक ए क्रिया शब्दनो एम अर्थछे. संयम योग जे समिति गुप्त्यादि रूपछे तेनेविषे जे अभ्युत्थितके० सावधान छे तेणे जो कांइ समित्यादिकने विषे विपरीतपणे आचरण कर्युं पछी जाण्यामां आव्युंके मे अमुक अन्यथा कीधुं तो तेने मिथ्याजाणी मिथ्याकार करियें. परंतु जे उद्देसीने कार्य करियें अने वली वली कार्यने करवे, मिथ्याकार न करियें तथा करियें, तेने तथाकार जाणवो. ते सूत्रादिकना प्रश्नने विषे जेम तुमे कह्यु ते तेमजछे.

हवे जेने ए आपिये ते कहेछे. मूलः– कप्पा कप्पे परिनिट्ठियस्स ठाणेसु पंचसु ठियस्स ॥ संजमतवड्ढगस्सउ ॥ अविकप्पेणं तहकारो ॥ ७७१ ॥ अर्थ.– कल्प शब्दे विधि आचार अने तेथकी विपरीत ते अकल्प जाणवो. अथवा कल्प ते जिनकल्प. स्थविर कल्पादिक जाणवो अने अकल्पते चरक प्रमुखनी दीक्षा तेनेविषे जे परिके० समस्त प्रकारे निट्ठियस्सके० निष्ठित जे रह्योछे, ज्ञाननी निष्ठानेविषे जे पहोच्योछे, एटले ज्ञानसंपदा जाणवी वली ठाणेसुके० जेनेविषे साधु रहे तेटलामाटे ए स्थान ते प्राणातिपात विरमणादिक पांच महाव्रत तेनेविषे स्थित आश्रितछे एटले ए मूलगुणनी संपदा जणावी. वली संयम सत्तरप्रकारनो तेणे अने बार भेदनुं तप तेणेकरी आढ्यके० संपन्नछे ए उत्तर गुणनी संपदा जाणवी. एवाने अविकल्पे तेना वचननेविषे वितथपणानी शंका न करतां तथाकार करवो. एतावता एवा गुरुने वांचना प्रश्नादिक पछी सामाचारीना शीखाडवा. अनंतर शिष्ये कहेवु के जेम तमे कह्योछो ते तेमज छे. एवा अभिप्रायें त्रीजो तथाकार जाणवो.॥७७१

हवे अवश्यकी अने निषेधकी ए बेहु कहेछे. मूलः–आवस्सिया विहेया, अवस्सगंतवकारणे मुणिणो ॥ तम्मि निसीहियाय जउ सिज्जाठाणाइआयरइ ॥७७२॥ अर्थः– अवश्य कर्त्तव्यनी जे क्रिया ते आवश्यकी एवी आवश्यकी जे क्रिया ते विहेयाके०

करवी एटले अवश्य करवो जोइयें जे ज्ञानादिक भिक्षा परिभ्रमणादिकजे कारण तिह
उपाश्रयथकी निकलताथका यतियें आवस्सहि करवी अने कारणे एवु कहेवा थ
की कारणविना जवु निषेध्यु, तथा तम्मिति एटले बाहिरथकी पाछो वल्यो छतो
तम्मिके० ते स्थानकनेविषे निस्सिहि करे एरीते जाणके० ज्यासेज्जाके० सज्जा उपा
श्रयनेविषे प्रस्थान एटलें प्रवेशलक्षण त्या अवस्थान आयरके० आचरे आदिशब्द
थकी चैत्यमां प्रवेश करता पण करे ए आवश्यकी निषेधकीमली पाच सामाचारी थई
मूल – आपुछणाउ कज्जे, पुव्वनिसिद्धेण होइ पडिपुछा ॥ पुव्वगहिएण छदण,
निमंतणा होइ अगहिएण ॥ ३३३ ॥ अर्थ – आ एटले समस्त प्रकारे गुरुने पूछी
ये ते आपृछना ए किहां करवी ते कहेछे कज्जेके० वांछित कार्यनेविषे प्रवर्त्तमान छते
करवी जे हे भगवन् हु अमुक एक विहार गमनादिक कार्य करु ए छठी सामा
चारी जाणवी एमज पडिपुछाके० फरी पूछीये ते प्रतिपृछा तेनो विषय कहेछे पु
व्वनिसिद्धेणके० पहेलां निषेध कर्योछे के हे वत्स आ अमुक कार्य करीश नही तेम
छतां तेज कार्य करवानु प्रयोजन उपनेथके ते कार्यना करनार शिष्ये पूछवु के
हु ए कार्य करु अथवा गुरुये प्रथम कहेलुछे के हे वत्स अमुकदिवसे अमुक वे
लायें अमुक कार्य करजे, अने तेदिवस तेज वेला आवेथके गुरुने जइ कहेके तमे
कह्यु हतु ते प्रस्तावछे माटे तमे कहो तो हु ते काम करु तेवारे पुव्वनिउत्तेण एवा
पाठछे तेना अर्थ जे पहेंना नियुक्त एटले प्रेर्योछे एम पूछवाथी गुरु कार्यांतर क
हे अथवा ए कार्यथी सर्यु एमज कहे ते माटे प्रतिपृछा करवी ते सातमी सामाचारी.
पुव्वगहिएण छदणा शब्द निमंत्रणा कहिये ते आवीरीते प्रथम लीधुछे ज
अशनादिक तिहां शेष बीजा साधुओने छंदनाके० निमंत्रणा करवी के मे अशना
दिक आण्युछे ते जो काइने उपयोग आवेतो इच्छाकार दया ए आठमी सामाचारी
तथा निमंत्रिये ते निमंत्रणा कहिये ते आवीरीते जे अशनादिक लाव्याविना अनेरा
साधुओ प्रत्ये कहेवु के हु तमारे प्रायोग्य अशनादिक लेइ आवु ते नवमी सामाचारी.
हवे उवसंपदा वखाणेछे मूल – उवसंपया य तिविहा, नाणे तह दंसणे चरि
त्ते ॥ एसाहुदसपयारा, सामाचारी तहन्नाय ॥ ३३४ ॥ अर्थ – उपसंपदनके०
कोइ विशिष्ट श्रुतादिकने कारणे काइ अधिक गुणी जाणीने तेनी समीपे जावु
ते उवसंपदा ज्ञानादिक त्रणना भेदथकी त्रणप्रकारे जाणवी तिहां पहेली ज्ञान
संपदनी, तेना त्रण त्रण भेद छे ते आवीरीत, एक वर्त्तना, बीजी संधना अने त्री
जी ग्रहण ए त्रणे ज्ञान आश्री कहेछे तेमां प्रथम ग्रहण कर्यात ज सूत्रादिक त

अस्थिरज्ञाणी तेनो गुणवो ते वर्त्तना जाणवी. अने तेहिज श्रुतादिकनुं कोइ एकदेश विस्मरण थयुं तेने ग्रहण करियें ते संधना जाणवी. एना घटना अने योजना ए वे पर्यायछे. अने ग्रहण ते नवाज सूत्रनुं ग्रहण करवुं तेने ग्रहण कहिये. ए त्रणे एकसूत्र वीजो अर्थ त्रीजो तदुभयविषयिक एकेक जाणवा. तेने पूर्वोक्त त्रणे गुणतां नवभेद ज्ञानने विषे थायछे.

हवे दर्शनने विषे जे सम्मत्यादिक शास्त्र दर्शन प्रभावक तेनेविषे पण एहिज नवभेद थाय. अने चारित्रनेविषे उपसंपदा वे प्रकारनीछे. एक वेयावच्च विषयिक अने वीजी क्षपण विषयिक. इहां एवो अभिप्रायछे जे कोईक चारित्रने अर्थे अनेरा गछनो आचार्य तेसारु वेयावच्चगरपणुं पडिवजे ते कालथकी कोइ इत्वर काल अने कोइ जाव जीव लगे पडिवजे. इहां कोइ पूछे के एवो जे उपसंपदाने अर्थे वीजा गछमांहे जाय तेवारे पोतानाज गछमां रह्योथको चारित्रने अर्थे वेयावच्च केम नकरे? तेनो उत्तर कहेछे के जे पोताना गछनेविषे तथाविध वेयावच्च कराववाने समर्थ सामग्रीने अभावे परगछनी उपसंपदा ग्रहण करे.

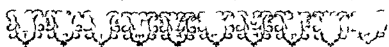
हवे क्षपणा विषये कहेछे ते आवी रीते:— कोइक क्षपणने अर्थे अनेरा गछनी उपसंपदा ग्रहण करे. ते वे प्रकारेछे. एक यावत्कथिक ने वीजी इत्वर. तेमां जे गछांतरमां जइ अनशन करशे ते यावत्कथिक अने इत्वरक्षपक तेमां एक तो अष्टम दशमादिकना करनार ते विकृष्टक्षपक अने वीजा छठ प्रमुख तपना करनार ते अविकृष्टक्षपक जाणवा. ए प्रगटपणे दश प्रकारनी सामाचारी कही तथा तेमज वली अन्नाय एटले वीजी पण वक्ष्माण दश प्रकारनी सामाचारीछे ते देखाडेछे.

मूल:— पडिलेहणा पमज्जण, भिरकिरियालोय भुंजणाचेव ॥ पत्तग धुयण वियारा, थंडिल आवस्सया ईया ॥ ७७५ ॥ अर्थ:— एक पडिलेहणाते पेहेले पहोरे अने पाछले पहोरे वस्त्र पात्रादिकनुं पडिलेहण करवुं वीजी प्रमार्जन ते उभय कालनेविषे उपाश्रयनुं पूंजवुं. त्रीजी भिरका, ते कायिकादिक व्यापार कीधापछी पात्रालेइ आवस्सहिकरी उपाश्रयथकी निकलीने अहारादिकनेविषे मूर्छानो त्यागकरी पिंडेसणा पानेसणानी उपयुक्तता धारण करीने वेतालीस दोष विशुद्ध अहार लें तेभिक्षा कहिये. चोथी इरिया, ते आवीरीते के पूर्वोक्त भिक्षा लीधा पछी निस्सहि पूर्वक उपाश्रयमांहे प्रवेशकरी नमोखमासमणाणं गोयमाइणं एवो वाचिक नमस्कार मुखथी प्रकाशकरी योग्य देश प्रथम चक्षु साथे जोइने रजोहरण साथे पूंजी इरियावहि पडिकमवी.

पाचमी आलोय एटले काउसग्गमाहे उपाश्रयथकी निकल्या पछी जिहाने ग्र ये नमता जे अतिचार लाग्याछे ते गुरुने जणाववाने अर्थे प्रथम काउस्सग्गमाहे चितवे पछी काउसग्ग पाली चउविसछोकही जेवीरीते असनादिक कटाधी प्रमुखे करी स्त्री अथवा पुरुषे दीधुं लीधुंहोय ते सर्व गुरुनी आगल गुरुनी सम्मत ने वीरीतिये दीधु लीधुहोय तेवीज रीतिये आगमोक्त विधिये आलोवे तेविधि श्रीद शवैकालिक सूत्रमा आवीरीते कहीछे उल्लुप्पन्नो अणुविग्गो, अवखित्तेण चेयता, आलोए गुरुसगासे, ज जागहियजवे एवीरीते आलोचीने पछी दुरालोचित नक पान ने अर्थे अथवा एषणीय अनेषणीयने अर्थे काउस्सगकरे, त्या नमस्कार चितवी पछी वीसमतो एवीरीते चितवे के ह्नियमछ्यानमहिज्ज जइमे अणुग्गहं कुज्जा ॥ साहू हुज्जामितारिउ इत्यादिक चितवी फरी परिश्रमना नाशने अर्थे मुहूर्त्तमात्र वेसीने सझाय करे ए पाचमी अलोयणा सामाचारी कही

छठी जुजणा सामाचारी कहेछे पूर्वोक्त विधिकरी तेवारपछी नि सागारिक प्रदेशे वेसी राग द्वेष रहितछतो नवकारगुणीने सदिसतपारयाम एवु कहीने गुरुनी य नुज्ञाये नोजन करे. सातमी पत्तगधुयण एटले पात्रानु धोवु ते नोजन कराप छी आठापाणी साथे पात्रनेविषे समयप्रसिद्ध त्रण काप आपीने पात्राने धोईनाख वु. ते लिक्षात नापाये त्रेप जाणवा आठमी वियारा एटले पछी यद्यपि प्रथम ए कासणादिक पच्चखाण कीधोछे तोपण अप्रमादने अर्थे सागारियागारेण इत्या दिक आगार रुधवाने अर्थे पच्चखाण करवो ते कर्यापछी वियार सज्ञा परिहरवा ने अर्थे वाहिर थंडिले जावु नवमी थंडिल एटले परने अनुपरोधि एवु जे प्राशु क नूमिनाग लक्षण ते स्थंडिल तिरछो जघन्य एकहाथ मात्र पडिलेहे त्या स त्यावीस स्थंडिला ते आवीरीते तेमां कायिकायोगे वस्तिमा छ स्थंडिला वाहिरना नागमां पण छ मलीने वार कायिकिना तेमज उच्चार योग्यपण वार अने त्रण काल ग्रहणना ए सर्व मली सत्यावीसथया दशमी आवस्सय एटले आवश्यक सामाचारी ते पडिकमणोकरे आदि शब्दथकी कालग्रहणादिक पण लेवा एरीते एदश सामाचारी इहां सक्षेपेकही विस्तारे पचवस्तुना बीजा द्वार थकी जाणवी ॥ ७७५ ॥ इतिगाथा नवकार्थ ए दश सामाचारीनु एकशोने एकमु द्वार समाप्तथयु

॥ इति श्री प्रवचनसारोद्धार नामके ग्रंथे एकोत्तर शततम द्वार समाप्तम् ॥



अवतरण.– निग्गंथत्तं जीवस्स पंचवाराउ नववासेत्ति एटले संसारमां वस तां थकां निर्ग्रंथपणु जीवने पाचवार आवे तेनुं एकशो बीजुं द्वार कहेछे. मूलः– उवसमसेणिचउक्कं, जायइ जीवस्स आनवं नूणं ॥ ता पुण दोएगनवे, ख वग्गसेणी पुणो एगा ॥ ७१६ ॥ अर्थ.– उपशमश्रेणीनो चतुष्क एटले जीवने उप शमश्रेणी चारवखत, आनवके० नव जे संसार तेमा नानानव आश्रयी उत्कृष्टथी उपशमश्रेणी चारवखत आवे. आ शब्द मर्यादापणे करी जाणवो, एनो ए अर्थ जे संसारमाहे वसताथकां नूनंइति निश्चय थकी जीवने उपशमश्रेणी चारवखत प्राप्तथाय, अने उत्कृष्टथी एकज नवमां बेवार थाय, अने क्षपकश्रेणी वली एकज थाय, इहां ए नाव जेउपशातमोह क्षीणमोह गुणठाणे निर्ग्रंथपणुंहोय त्यां चार उपशमश्रेणी ने एक क्षपकश्रेणी थाय तेथी पांचवार थाय इति॥७७६॥ द्वार समाप्तः

अवतरणः– साहुविहारसरूवत्ति एटले साधुना विहारनुं जे स्वरूप तेनुं एक शो ने त्रीजुं द्वार कहेछे. मूल·– गीयत्थोय विहारो, बीउ गीयत्थमीसिउ न णिउ ॥ इत्तो तइय विहारो, नाणुन्नाउ जिणवरेहिं ॥ ७७७ ॥ अर्थः– गीत शब्दे जाण्योछे जेणे कृत अकृत लक्षण अर्थ, तेने गीतार्थ बहुश्रुत कहियें. तेमां एक गीतार्थनो विहार ते एकला गीतार्थनोज विहार अने बीजो गीतार्थ मिश्रित विहार ते केटलाक गीतार्थ ने केटलाक अगीतार्थनो विहार जाणवो. इत्तोके० एथकी तइय वियारोके० त्रीजो जे विहार ते नाणुन्नाउके० श्रीतीर्थंकर देवे अनुज्ञातपणे कीधो नथी.

ए विहार इव्यादिकना नेद थकी चार प्रकारे छे ते कहेछे मूल.– दव्वउ च क्खुसापेहे, जुगमेतं तु खेत्तउ ॥ कालउ जावरीएज्जा, उवउत्तोय नावउ ॥७७८॥ अर्थः– चक्षुयेंकरी नूमिका सारी रीते जोवी ते इव्यथकी विहार जाणवो. पछी ते जोइ करीने जुगमात्र नूमि नागे जोईने पगनरतो चाले ते क्षेत्रथकी विहार जाणवो. अ ने वडी पहोर प्रमुख ज्यांलगे जइ आववुं ते कालथकी विहार जाणवो. अने जे उपयुक्तपणु समस्त इव्यादिकने विषे सावधानपणु ते नावथकी विहार जाणवो. इव्यथकी विहार न करे पण नावथकी विहार करतो थको आराधक कहेवाय. उक्तंच वाससयंपि वनंता, मुणिणो आराहगा नणिया ॥ इति गाथा र्थः द्वार समाप्त.

अवतरण.– अपडिबद्धविहारोत्ति एटले अप्रतिबद्ध ते जे रागादिके रहित एवो विहार तेना स्वरूपनु एकशो चारमु द्वार कहेछे. मूल – अपडिबद्धोय सया, गुरूवएसेण सव्वनावेसु ॥ मासाइ विहारेणं, विहरेज्जहोचियं नियमा ॥७७९॥ अर्थ.– अप्रतिबंधविहार ते गुरुना उपदेशथकी सदागुरुनी अनुज्ञा लेइने इव्यादि

कनो प्रतिबन्ध वर्जिने मासकल्प करे ते सफल जाणवो पण अन्यथा एवो विचार करे के अमुक स्थानके अमुक नगरे जाउं, त्यां नजा मह्लादिक श्रावको छे ते उपा र्जिने आपणा करुं जेम ते श्रावको मने त्यागी ने बीजाना नक्त नथाय एरीते प्र थम इव्यने प्रतिबन्धे विहार कर्योयको कार्य साधक थाय नही तेमज क्षेत्र आश्री कोइ उपाश्रयमा रहेताथका अहींया वायरो सारो आवतो नथी तेथी अहींया रहे ता थका रति थती नथी पण अमुक क्षेत्रे नली वसतिछे माटे त्यां जइये एम जाणीने विहार करेतो बीजो क्षेत्र प्रतिबन्ध थाय ए पण फोकट नटकवा जेवु समजवु पण चारितार्थे न समजवु तथा घणा सालीप्रमुख नीपजवाथी हालमां मार्ग सारा थयाछे अने शरद ऋतुछे तेपण विहार करवाने घणी सारीछे एम वि चारी विहार करे तो त्रीजोकाल प्रतिबन्ध थाय एथी पण अर्थ साधक नथाय तथा अमुकक्षेत्रे गयाथी मने स्निग्ध मधुरादिक आहारना लाने करी महारा श रीरने पुष्ट्यादिक सुख थशे आ क्षेत्रमा तो लोकोनो प्रेम लागे नथी अथवा उ द्यत विहारे विहार करता ए उद्यत विहारी छे एवु मने लोक कहेशे अने बी जा अनेरा साधुउंने शिथल विहारी कहेशे इत्यादिक नावनाये विहार करता थका चा थु नावप्रतिबन्ध पणु थाय ए विहारपण निरर्थक छे ए इत्यादिक चारे प्रतिबन्ध रहि त जे होय तेनो सफल विहार छे एरीते यथोचित्तपणे संघयणादिक ने अनुमाने निय माके० निश्चयेथी मासाइ के० मासकल्पादिक विहारे करी यति विहार करे ॥ ७७९ ॥

हवे परनो अनिप्राय आगको तेनो आ गाथाये करी उत्तर कहे छे मूल— मोत्तूण मासकप्प, अन्नो सुत्तमि निछउ विहारो ॥ ताकहमाइ ग्गहण, कज्जं कु णाइ नावेण॥७८०॥ अर्थ —ए मास कल्प मूकीने अन्नोके० अनेरो बीजो जे सूत्र मा कह्यो नथी एवो विहार करे ताके० तो मासाइ एटले इहा आदिशब्दनु ग्रहण कहके० केम आएयु कज्जं के० कार्यकरवो इहा ए नाव जे साधु चारित्रवंत मुख्यपणे मासकल्पे विहार करवो अने कारण योगे कदाचित् मासकल्पथी उंछे दिवसे पण विहार करवो तेमज क्यारेक मास थकी उपरांत पण रहेवु नाव थकी एवु जणाववाने अर्थे आदिशब्दनु ग्रहण कर्युछे ॥ ७८० ॥

वली एज वात प्रगट करतो कहे छे मूल — कालाइ दोस वऊइ, न वत्तंछे एस कीरए नियमा ॥ नावेण तहवि कीरइ, संथारग वच्चया ईहि ॥ ७८१ ॥ अर्थ — कालादि दोष थकी एटले कालदोष ते डुर्निक्षादिक थकी तथा क्षेत्रदोष ते संयम योग क्षेत्रना अनावे वली इव्यदोषते नक्तादिक शरीरने योग्य न होय अने ना

व होय ते शरीरें ग्लान थयो होय, अथवा ज्ञानादिकनी हाणी प्रमुख कारणोथी जो कदाचित वाह्यवृत्ते मासकल्प नकराय तो पण नियमा एटले निश्चेयकी नावे करी तो एक स्थानके रहेते थके पण मासकल्प करिये ते करवानी रीत कहेछे.

जे सूवानी भूमिका होय तेने संथारो कहिये. ते संथाराना परावर्त्तन प्रमुखे करी मासकल्प करवोज, वली आदिशब्द थकी उपाश्रयनु अथवा पाडानुं पण परावर्त्तन करवुं. अहीयां ए नावछे केजे स्थानके संथारो कयो होय त्यां मासकल्प पूरण, थयाथी अन्य स्थानके संथारो करवो. तेमज जे वस्तिमां रह्या होइये तेथकी वीजी वस्तिये रहेवुं, तथा जे पाडामां निक्षालीधी होय तेथकी वीजापाडामां निक्षा लेवी पण तेज पाडानी निक्षा लेवी नही. एवी रीते आचरण करतां थकां मासकल्पने अनावे पण यतिपणानी विराधना थाय नही. यदवाचि. पंचसमियातिगुत्ता इत्यादि

हवे एक क्षेत्रे उत्कृष्ट रहेवानो कालमान कहेछे. मूल·– काउण मास कप्पं तहेव ठियाण तीस मग्गसिरे॥ सालंवणाण जेठु, ग्गहोय छम्मासिउ होइ॥१८१॥ अर्थ·– ज्यां आषाढ संवंधी मासकल्प कयो, पछी क्षेत्रना अनाव थकी ते मासकल्प करीने चउमास पण त्यांज कयो अने तेचारमास पूरा थया छता पण जो वरसाद वंध न थाय तो मागसर महीनाना दश दिवश सुधी वाट जोवी तेटला मां पण वरसाद वंध न थाय तो वलीपण वीजा दश दिवस वाट जोवी. एम वाट जोतां जोतां संपूर्ण मागशर मास वीतीजाय एरीते सालंवन पुष्टकारणना सेवनार यतिने ज्येष्ट के० उत्कृष्टो छ मासनो अवग्रह थाय.॥ १८१ ॥

हवे मागशर मास पूरण थये थके वरसाद वंध थवाथी अने रस्तामानो कादव सुकाइ गयाथी यतिये शु करवु ते कहे छे. मूल – अह अच्छ पयवियारो, चउपाडि वयमि होय निग्गमणं ॥ अहवावि अनितस्स, आरोयण सुत्तनिद्दिठ्ठा ॥ ॥१८२॥ अर्थ.– अथ के० हवे अछिके० छे जेने पयवियारो के० जावानुं अनुकूलपणु छे. ते चोथा कार्त्तिक मासना पडवाना दीवश पछी अने मागसर मासना पडवानी अगाउ निग्गमणं के० निर्गम न थायज. अहवावि के० अथवा अनितस्स के० थणनिकलताने एटले जे विहार न करे तो तेने आलोयण देवानी जे प्रमाणे सिद्धातमा कहीछे ते प्रमाणे आलोयणा थावे. इहा कोइ कहेशे के एक क्षेत्रे रहेता थकां पण घणो चलापरछे तोपण कुलप्रतिवन्धादिक दोष अवश्य उपजे तेमाटे एक स्थाने वास करवो युक्त नथी. ॥ १८२ ॥

ते उपरज कहेछे. मूल.– एग खित्तनिवासी, कालाइक्कंतचारिणो जइवि ॥ त

हवि डु विसुद्धचरणा, विसुद्ध आलंबणा जेण ॥ ७७४ ॥ अर्थ – एक क्षेत्र जे वासकरे ते एक क्षेत्रनिवासी एवाजे कालातिक्रांतचारी एटले कालनेअतिक्रमिने अथा त् चतुर्मासादिक कालनु उल्लंघन करीने कदाचित रह्या तोपण जे विशुद्ध निर्मल चारित्रना धरनार छे ते विशुद्ध छता शवनावना अनाते करी अदूषित होय तथी तेने एवो आलंबनयाव्यो जे वृद्धावस्था थइ किंवा जंघाबल परिक्षीण थयो अथवा तथाविध क्षेत्रनो अनाव होय एवा आलंबन जे कारणे थाय तो एकत्र स्थानकें रहे

हवे आलंबन क्या जोवु ते कहे छे मूल – सालंबणो पडतो, अत्ताणं डुग्ग मेवि धारेइ ॥ इय सालंबण सेवी, धारेइ जई असढनाव ॥७७५॥ अर्थ – पडतां थका जेने आलंबिये आश्रय करिये तेने आलंबन कहिये, ते द्रव्य अने नावना नेदेकरी बे प्रकारे छे ते वली एकेको पुष्ट अने अपुष्टना नेदेकरी बे प्रकारे छे तेमा सबल वेली प्रमुख ते पुष्ट द्रव्यालंबन कहिये अने जेना थकी पडता थकां घणु आलंबन न होय एवा माननां गोडा सरखु होय ते अपुष्ट द्रव्यालंबन जाणवु अने पुष्ट नावालंबन जे तीर्थ अव्यवच्छेदादिक ते आगल अनंतर गाथा नेविषे कहेशे तेमज अपुष्टनावालंबन ते जे पोतानी मतिमात्रे करीने उपेक्षा करिये

हवे गाथार्थ कहे छे सालंबण के० सबल आलंबन जेणे लीधु छे एवा प्राणी पोतापासे डुग्गमेवि के० खाडा प्रमुख माहे पडतो थको ते सबल आलंबन ने धारणकरे तेम सालंबन सेवानो करनार यति ते अशव मायाये रहित नाव थको आत्माने धरीराखे एटले आत्माने डुर्गतिमां पडता वारीराखे एअनिप्रायछे

हवे पुष्ट नावालंबन देखाडे छे मूल –काहं अछित्तं अडुवा अहिस्सं, तवोविहाणे सुयउज्जमिस्सं ॥ गणच नीए सुयसारइस्सं, सालंबसेवी समुवेइ मुक्खं ॥ ७७६ ॥ अर्थ – डु इहां रह्योछतो जिन शासन संबंधी अछित्तं के० अव्यवच्छेद करीश, वली इहां रह्याथका अमुक एक राजादिकने प्रतिबोध आपी जैनशासनने विषे प्रवर्त्तावीश, अथवा अमुक शास्त्र मूल सूत्र तथा तेनो अर्थ दर्शननी प्रनावना नो करनार छे ते अहिस्सं के० पठन करीश, अथवा तपोलब्धि युक्तपणा थकी, नाना प्रकारना तपने विषे उज्जमस्सं के० उद्यम करीस वाके० अथवा गणजे गछ ते डु सूत्रोक्त न्यायेकरीने सारइस्सके० सारिश इत्यादिक अनंतरोक्त आलंबनेकरी यत्ने कोइएक नित्यवासादिक सेवतो श्रीनगवतनी आज्ञा ने न उल्लंघतो थको मोक्षपद समुवेइ के० पामे ते कारण माटे तीर्थ अव्यवच्छेदादिकेज अथवा ज्ञानादिकनी वृद्धि करवी मांहेलु काइपण कारण होय तेज आलंबन

जेवुं पण अन्य आलंबन जेवुं नही. अन्यथा तो आवीरीतेंजे आलंबणाए नत्थि, लोउंजीवस्स अजउ कामस्स ॥ जजं पेच्छइलोए, तंत आलंवणं कुणइ.॥१॥७०६॥

अवतरण.—जायाजायकप्पत्ति एटले जातअने अजात कल्पनुं एकसोने पांचमुं द्वार कहेछे. मूलः—जाउ यअजाउ य, डुविहो कप्पोय होइ नायवो ॥ एकेक्कोवि य डुविहो, समत्तकप्पो य असमत्तो ॥७०७॥ अर्थः— जेने जातके० होय श्रुतनी संपदानो लब्धात्म एटले लाभ तेना अव्यतिरेकपणाथकी कल्प जाणवो. ते कल्पने जात कल्प कहिये. अने एनाथीजे विपरीत होय तेने अजातकल्प कहिये. एरीते बे प्रकारे कल्प थायछे. ते वली एकेकना वे वेभेदछे. एक जात समाप्त कल्प अने वीजो अजातसमाप्तकल्प. तेमज जात असमाप्त कल्प अने अजात असमाप्त कल्प॥७०७॥

हवे जात कल्प अजातकल्प समाप्त कल्पादिकनुं सरूप कहेछे मूलः— गीयछजायकप्पो, अग्गियउ खलुनवे अजाउंय ॥ पणगं समत्तकप्पो, तदूणगो होइ असमत्तो ॥७०८॥ अर्थः— गीतार्थ पूर्वोक्त अर्थ तेनोजे आचार तेने जातकल्प कहिये. एमज अगीतार्थनो आचार ते अजात कल्प कहिये. ते पांच जण एकठा थाय तेवारें ते समाप्तकल्प कहेवाय, अने पाचथकी ओछा होय तेअसमाप्त कल्प जाणवो ॥७०८॥

मूल.— उउबद्धेवासासुं सत्तसमत्तो तदूणगो इयरो ॥ असमत्ताजायाणं, उहेण नाकिंचि आहव्वं ॥ ७०९ ॥ अर्थः— ए पांचनी संख्या कही ते उउबद्धके० चोमासुं टालीने आठ महिनानेविषे जाणवी. अने वासासुंके० चोमासाने विषे तो एटलुं विशेषछे जे नवानुं आववुं नथाय. ग्लानादिक भावना संभवथकी सातेजणाये करी कल्प समाप्त थाय अने तेथकी न्यूनहोय तो असमाप्त कल्प जाणवो. असमाप्त कल्प अने अजातकल्प साधु तेनेकारणे उहेणके० उत्सर्गे कोइक्षेत्र ते क्षेत्रगत शिष्य भक्त पान वस्त्र पात्रादिक आगम प्रसिद्ध किंचि आहव्वंके० कांइ छे नही.॥

अवतरण.—परिठवणुच्चार करण दिसत्ति एटले अचित्त साधुने परिठववानुं अने उच्चार करवानी दिशिनुं एकशो ने छठुं द्वार कहेछे. मूल.—दिसा अवर दक्खिणाय, दक्खिणाय अवराय दक्खिणा पुवा अवरुत्तराय पुवा, उत्तर पुवोत्तराचेव, ॥७१०॥ अर्थः—एक नैरूतकोण, वीजी दक्षिणदिशि, त्रीजी पश्चिमदिशि चोथी अग्निकोण, पांचमी वाय्यकोण, छठी पूर्वदिशि, सातमी उत्तरदिशि, अने आठमी ईशानकोण.

मूलः— पउरस्स पाण पढमा, वीया ए भत्तपाण नलहंति ॥ तइयाए उवहिमाइ, नछिचउत्थीयसप्ताउ ॥ ७११ ॥ अर्थ.— जे क्षेत्रे मास कल्प वास [illegible] गे होय, अथवा चउमास कल्प वास साधुये कस्यो होय तेणे मृतक [illegible] था

ने अर्थे महा स्थण्डिल आसन दूर मध्य लक्षण त्रण जोवा तेनु प्रयोजन आ
रीतेछे, जो कदाचित पहेले स्थण्डिले खाडो पाणीथी नख्यो होय तिहां हरित का
उपने थके ते स्थण्डिल कीडीप्रमुखे ससक्त थयो होय अथवा त्यां कोइ गाम आवी वस्यु
होय, किंवा सायरह्यो होय, तेथी व्याघात थयो तो बीजे स्थण्डिले जइ परठवणा करवी
त्यां पण ए पूर्वोक्त अथवा बीजो कोइ व्याघात थयो होय तो त्रीजे स्थण्डिले परठविवे
तिहां दिशिनो विभाग आवीरीते छे पउरण्णके० प्रचुर घणा अन्न पान वस्त्र पात्रना
पलेभिदिशिये लाभथाय ए पउरण्णपाण पढमा ए गाथाने अनुक्रमे कहेछे बीयाके०
बीजी दक्षिणदिशि तथा नैऋतकोण प्रमुखे परठवता जे थाय ते कहेछे बीजी द
क्षिणदिशिये परठवता नक्त पाननो पाठला साधुउने लाभ न थाय तइयाके० त्रीजी
पश्चिम दिशे परठवता उपधि प्रमुखनी प्राप्ति नथाय चोथी दिशि दक्षिण पूर्वनीत
रमां अग्निकोणे परठवता पठवाडे सज्झायनो अभाव जाणवो ॥ ७७१ ॥

मूल — पचमियाइ असखडि, छट्टिए गणस्स भेयण जाण ॥ सत्तमिया गेलन्नं,
मरण पुण अट्ठमे विंति ॥ ७७२ ॥ अर्थ — पांचमी दिशि वायुकोणे परठववाथी
माहामाह असखडिके० कलहथाय छठी पूर्वदिशाये परठवता गणस्सके० गच्छमां प
रस्पर भेदथाय सातमी उत्तरदिशाये, परठवता ग्लानपणु अने रोगनी उत्पत्ति प
छाडेना साधुउने थाय आठमी दिशी ईशानकोणछे त्यां मृतक साधु परठवतां
बीना काइ साधु मरण पामे एवु शास्त्रना जाण पुरुषो कहेछे अहीयां पू
र्व दिशिने अनादर उत्तरोत्तर दिशा जे पूर्व दिशा तेनेविषे परठववानु कह्यु ते प
मुखी बीजी ज ने दिशिमा परठवे ता ते ते दिशाना पाठलनाने दोष कह्या ते थाय
थाय ए त्रण गाथायें परठवणानी दिशिकही ॥ ७७२ ॥

हवे उच्चार स्थानी दिशि स्थापेछे मूल — दिसि पवण गाम सूरिय छा
याए पमज्जियाण तिक्खुत्तो ॥ जस्सोग्गहत्ति काउण, वोसिरे आयमेज्जावा ॥ ७७३ ॥
अर्थ — एना पदनी विविता आमछे के मार्ग जता बे जणा जाडा जाइ मार
गे जाय तथा उतारना न जाय माहामाहे वात करता न जाय अने विस्थाग्रहि
त्यानइ वनी पछी निर्लेपनाने अर्थे पुरीष त्यागनेन माटे माटीना दगडा प्रमुखनि
ने जो तेना उपर कीडी प्रमुख होय तो ते माटीना दगडा प्रमुखने गावान
ये दस्कोटना कर त्यारही त्रयी निर्दोष छमिले नइ त्यां पण उचा वृक्ष पवन
ढ उपर काइ नाखन होय, तथा नीचु खाडा गुफादिकमा काइहोय अन ना

ठे वृक्षादिकने नीचे आरामने अर्थे कोइ रह्यो होय एम ऊंचो नीचुं अने तीर्छु सर्व जोइने गृहस्थ प्रमुखनी दृष्टीने अनावे प्रेक्षित प्रमार्जित स्थण्डिलें जइ अणु जणाह जस्सावगाहोत्ति एवो उच्चार करी वेसतो थको संडासा ए पूंजीने दिशि प्रमुख जोइने वडीनित वोसिरावे.

हवे गाथानो अर्थ करेछेः—दिशि पूर्वादिक आगल कहेशे अने पवन ग्राम सूर्य एट लाने पुठ करवी नही, ठाहेडी वालियें अथवा वेसताथका पोतानी ठाहेडी ते मल उपर आवे पठी पमज्जियएके० त्रणवार पूंजी उपलक्षणथी स्थंडिलो जोइ ने अणुजा णह जस्सावग्गहोत्ति एम कहीने संज्ञा वोसिरावे सुचिने निमित्ते आचमन लिये.

हवे प्रमुख दिशि जणाववाने अर्थे गाथा कहेछे. मूलः—उत्तरपुव्वापुज्जा, जम्माए निसायराअहिवमंति ॥ घाणारिसाय पवणे, सूरियगामे अवन्नोउ ॥ ७०४॥ अर्थ – उत्तर अने पूर्व ए वेहु दिशि लोकमाहे पूज्यछे तेथी तेने पुठ देतांथका लोकमांहे अवर्णवाद थाय. जम्माएके० दक्षिण दिशि थकी निशाचरके० पिशाचादिक देवता अहिवंतिके० उत्तरदिशाये आवे ते सामा आवताने पुठदेता तेमने क्रोध उत्प न्न थाय, तेथी जीवतव्यनो विनाशकरे. तेमाटे रात्रे दक्षिण दिशा ने पुठ आपवानुं वर्जन करिये. उक्तंच. यतः उच्चे मूत्रपुरिषेच. दिवा कुर्यादुदन्मुखः ॥ रात्रौ दक्षिणतश्चे व तथा चायुर्न हीयते ॥ १ ॥ इति. घाणाके० वायुने पुठ देतांथका अशुभगंध न सिकामांहे प्रवेशकरे. तेथकी हरसनो रोग उत्पन्न थाय अने लोकोपण दूषवे, अने कहेके ए एवाने योग्य जे तेथी वायुने पुठ देइ वेसेछे. वली सूर्य अने ग्राम. जिहां पोते मासकल्पादि रह्योछे, तेने पुठ करतां थका लोकमाहे एवो अवर्णवाद थाय के ए कांइ जाणतोज नथी, केमके लोकमां उद्योतनो करनार एवो सूर्यछे तेने पुठ करी वेसेछे एम लोकोकहे तथा जे ग्राममा वास करिये ते गामने पुठकरी केम वेसीये? इत्यादिक लोकाचार मात्र पण ए जाणतो नथी. ॥ ७०४ ॥

हवे गाथा वखाणेछे. मूलः—संसत्त गहणी पुण, छायाए निग्गयाए वोसिरइ॥छाया सइ उण्हंमिवि, वोसिरिय मुहुत्तयं चिठे ॥ ७०५ ॥ अर्थ.— संसक्त शब्द बेइंद्रिय जीवेकरी सहितछे ग्रहणी एटले कुक्षीजेनी, ते गरुवाने अर्थे फूल फलना न आ पनारा वृक्षोनी छाया निकलीहोय त्यां वेसे अने तापडी हली न निकली होय ने मध्यान्हे संज्ञा बाधाहोय तो उष्णतामा पण पोताना शरीरनी छाया उपरनी उ पर करी संज्ञा वोसिरावे ते संज्ञा वोसिरी पठी मुहूर्त्तमात्र त्यां तापटोहनी वेसी

रहिये केमके तेटलो काल वीत्यापछी ते मलना जीवो पोताने यागेज परिण
थाय. अन्यथा उष्णताना योगेकरी ते जीवोने घणीज बाधा थाय. ॥ ३९५ ॥
हवे ते वखत पोताना उपकरण केवीरीते धरवा ते कहेछे मूल – उवगरण
गमजाणु, गमी मत्तोय दाहिणेहछे ॥ तडणडवपुडेतिहि आयमण अदूरंमि ॥
॥३९६ अर्थ –उपकरणमा मांमो, डंगो ए मावी सांथल उपर राखे, अने मात्रक
पाणीनो गमडो ते जमणा हाथनेविषे राखे.मावे हाथे माटीनु दगड लुववाने अथ
राखे तेनाथी त्यांलुंवणुकरी सुचीकरे तिहां लुवणुकरी पछी त्रणवार शौचने अ
र्थ आचमनकरे ते अदूरके० दुकडुज आचमनकरे परतु अलगु आचमन नकरे
जो करे तो उड्डाह थाय कोइ जाणेके ए शौच करतोनथी इति गाथा चतुष्टयार्थ
अवतरण – अट्ठारस पुरिसेसुत्ति एटले अढार पुरुषो दीक्षाने अयोग तेनु ए
कसो ने सातमु द्वार कहेछे मूल – वाले वुड्डे नपुंसेय, कीवे जड्डेय वाहिए ॥ ते
णेरायावगारीय, उम्मत्ते अदंसणे ॥ ३०७ ॥ अर्थ – प्रथम जन्मथकी मांडीने
आठवर्ष पर्यंतनी उमर वालाने बालक कहिये तेने दीक्षा आपवीनही क्यारेक
पनी गर्भमां रह्यां ते दिवसथी आठवर्ष गण्यांछे, एम श्री निसीथ चूर्णि प्रमुख
मां कह्यांछे अने श्रीवयरस्वामि छ मासना हता तेवारे चारित्रनो परिणाम थयो.
तेनी वात कादाचित्क बनेछे माटे एथी व्यभिचार जाणवो नही
बीजो वुड्ढके० वृद्धते सित्तेर वर्षनी उमर पछी नो जाणवो इहां इंद्रियादि
नी न्यूनता शरीरने वेनाशक थायछे तेथी कोइक साठ वर्ष पछी वृद्ध कहेछे ए
मा वृद्धने चारित्र मरुकरी समाचारनादिक करवा दुर्लभ थाय यदुक्त – उआसण
सत्तरिह्र. विणय नकरेइ गव्वमुव्वहइ ॥ वुड्डो नि दिक्खियव्वा, नइजाओ वालुगवगा॥१॥
अन्यथा सो वर्षना आयुष्यथी उपरांत जेवारे आयुष्य थाय तेवारे ते आयुष्यना
वर्षनी अवस्थाना दश भाग करिये तमां आठमा नवमा अने दसमा भागनेविषे
वर्तमान पण वृद्ध कहेवाय
त्रीजो नपुंसक ते पुरुष ने स्त्री बन्नेना उपर अभिलाषना करनार तमां पुरुष
ने आकारे पुरुष नपुंसक अने स्त्री निमित्रणा मात्र नागवो, अथवा अमडज स्त्री
ना अवयव देखीने तना शब्दादिक सांभली कामाभिलाष उत्पन्न थयाथी स्त्री
कहेनहीं तेवारपछी घणा हाथाना सबब थाय माटे एमने दीक्षा न आपवी
चोथो पुरुषाकृति पुरुष क्लीब तेने वेदना उदय घणा थाय, अथवा पुरुषवेदना
उदयथी कुचेष्टाकर बोले आलिंगनादिक करे तवा क्लीब पण कहेवाय

पांचमो जड ते त्रण प्रकारे छे. एक भाषाजड, बीजो शरीरजड, अने त्रीजो करणजड. तेमां वली भाषाजडना त्रण भेद छे. एक जलमूक, बीजो मन्मनमूक, त्रीजो एलमूक. तेमां जे पाणीमां बुडनारनीपरे बुडबुडाट करतो थको बोले ते जलमूक जाणवो अने जे वचन बोलतां थकां खचाय ते मन्मनमूक, अने जे एलक० बोकडानीपरे अव्यक्त मूकपणा थकी शब्दमात्र बोले ते एलमूक. ए प्रमाणे भाषाजड त्रण प्रकारे कह्यो. हवे शरीरजड ते जे विचरतां तथा वांदणा प्रमुख क्रिया कलाप करतां अति स्थूलपणा थकी असमर्थ थाय तेने शरीरजड कहिये. अने जेने शिखामण आपतां छतां जडपणाने योगे शिखामण लागे नही तेने करणजड कहिये. ए त्रण जातिना जडमां भाषाजड जे छे ते ज्ञान लेवाने असमर्थ, माटे एने दीक्षा न आपवी. अने शरीरजड तो मार्ग गमन करतां तथा भक्त पानादिक लेइ आववाने असमर्थ थाय. माटे एने दीक्षा आपवी नही. वली ते जाडो होय माटे जाडाने कास प्रमुख [illegible] कोइ परसेवो होय ते धोता थकां कीडी प्रमुखना विनाश थकी संयम विरा[illegible] थाय. वली लोक पण निंदा करे के ए घणा अन्ननो भक्षण करनार छे. जो [illegible] अन्न न खातो होय तो आवुं पुष्ट शरीर केम होय? एनुं गलुं फुली गयुं [illegible] काइ क्रमालाथी फरवु नथी एवुं लोक बोले. वली तेने श्वास घणो चढ[illegible] तेथी सर्प, जल अने अग्निप्रमुख दुकडा आव्याथी दूर जइ शके नही. अने [illegible] जड होय तेने समिति गुप्त्यादिक शिखवाडिये तो शिखे नही तेथी एने दी[illegible]

छठो व्याधियुक्त० भगंदर, अतिसार, कोढ, फेफरु, अने हरस, ज्वर प्रमुख [illegible] तेनी चिकित्सा करतां संयम विराधना थाय, स्वाध्याय पडिलेहणादिक दोष[illegible]

सातमो तेण शब्दे चोर जे खातरनो पाडनार अने वटेमार्गुने लूंटना[illegible] दीक्षा आपवाथी गच्छने वध बंधन ताडनादिक कदर्थना थाय माटे [illegible]

आठमो रायावगारी एटले राजाना भंडार अंतःपुर, शरीर [illegible] प्रमुखना द्रोहनो करनार जे होय ते राजापकारी कहेवाय. [illegible] की राजा देशथी बाहेर काढी मूके अथवा राजा रीसाणो [illegible] इत्यादिक दोषोनो संभव थाय.

नवमो उन्मत्त, गांडो ते जे यक्षादिकने वशथयेला [illegible] ना उदयथी परवश थयो होय, तेवा उन्मत्तने दीक्षा [illegible] कष्टनो संभव थाय तेथी सज्झाय ध्यान संयमादिकनी [illegible]

दशमो अदर्शन, एटले जेने दर्शन दृष्टि नथी [illegible]

ने इहा स्त्यानर्द्धि निद्रावाळो पण सम्यक्त्व दर्शनना अभाव थकी एहज व्युत्पत्ति तिहां ए पण लेवो एमा दूषण कहेछे ते मदाक्रीने दृष्टी रहित पणा लगीने तिहां तिहां संचार करतो जीवविराधना करे तेथी संयम विराधना थाय तेमज विषम कांटकादिक उपरपडतायकाने आत्मविराधना थाय वली थीणधी निद्रायुक्त जे होय ते श्रावकादिकना उपर रीसायो थको मारणादिक पण करे तेथकी घणा दोष उपरे

मूल — दासे डुठेय मूढेय, अणत्ते जुगिएइय ॥ उव्वद्धएय नयए, सेहनिप्फेडियाइय ॥ ७९८ ॥ अर्थ.— अग्यारमो दासेके० बीजानी दासीनो उपनो अथवा डुकाल प्रमुखे वेचातो लीधेलो अथवा लेणामा आव्यो होय अने ते लेणदार ना घरमां रहतो होय ते दीक्षा आपवाने योग्य नही केमके दासने दीक्षा आपतां तेनो धणी लेइजाय उड्डाह थाय, तेथी माठी केवत थाय

बारमो डुष्ट, ते वे प्रकारनाछे, एक कषाय डुष्ट, अने बीजो विषय डुष्ट तेमां जेम गुरुये जीरीजे सर्षपनी भाजी तेना व्यतिकर थकी रीसाएला साधुनी परे उत्कट कषाय जेमा होय ते कषाय डुष्ट तेमज जे परस्त्री उपर अति गृध होय ते विषय डुष्ट ए वेहु संक्लिष्ट अध्यवसायथकी दीक्षाने अयोग्यछे

तेरमो, जे मूढ होय ते स्नेहादिके करी परवश चित्त थको यथावस्थित वस्तुतत्वनो अजाण होय, अने जगवतनी दीक्षा तो विवेकनु मूलछे तेमाटे अज्ञानी स्त्यानर्द्ध्यादिक विरुद्ध विरुद्धपणाने योगे न जाणे माटे ए कार्य साधक न थाय

चउदमो, अण न राजा प्रमुखना सोना प्रमुखना धारनार ते ऋणी कहिये तेने दीक्षा आपवायकी राजादिकोए करेलु ग्रहण अने आकर्षणादिक स्थना, इत्यादिक दोष जाणवा

पन्नरमो जुगिए, एटले जाति, कर्म, अने शरीर तणे करी दूषित होय ते जुंगित त्रण प्रकारे जाणवा, तेमां जे कोळी खूजी माची धोबी प्रमुख अनेक कुलना ते जाति जुंगित, अने जे अकार्य मावादिकना करनारा कसाइ प्रमुख ते कर्मजुंगित जाणवा एमज जे कर चरण, करण, नासिकादिके रहित तमज वली कूरमा वामणा पांगला, टुंटा, ए सर्वे शरीरजुंगित जाणवा ए त्रणे जुंगित ने दीक्षा आपवा थकी लोकमा अवर्णवादनो मनाव थाय, माटे दीक्षा न आपवी

सोलमो अवबद्धपूर्वक विद्यादिक ग्रहण निमित्ते अथवा एटला अमुक दिवस सुधी हु तमारा घर रहीश एवीरीते ज पराधीन थायछे तेने अवबद्ध कहिये तेने दीक्षा देता थका कलहादिक दोष थाय

सत्तरमो, नयएति ते जे महीनो ठेरावी कोइक धनवंतना घरनेविषे आटला दिवस हुं ताह्हरी चाकरी करीश; एवी बोलीकरीने दिवसोनी संख्या बांधी रह्योछे-. अने ते धनवंतना हुकममां प्रवर्त्तेछे तेने नृतक कहिये. तेवांने दीक्षा देतांथकां ते जेनो पगार खायछे ते महीनो आपनार शाहुकार साधु उपर अत्यंत अप्रीति धारणकरे. इत्यादिक दोषनो संनव थाय.

अटारमो सेहनिप्फेडिया एटले जे दीक्षा लेवाने इछे ते शिष्य तेहनी निप्फेडिया एटले चोरी. इहां ए नावजे मातपिताना मोकल्याविना दीक्षा आपिये तो तेनां मात पिताने कर्म बंधनो संनव थाय, अने साधुने अदत्तादानादिक दोषनो संनव थाय. एरीते ए अढारे पुरुषाकार छता पण दीक्षाने अयोग्यछे इति गाथार्थ

अवतरणः– वीसंइत्थीसुंति एटले वीस स्त्रीने विषे पण दीक्षाने अयोग्य छे तेनुं एकशो आठमुं द्वार कहेछे. मूलः– जे अठारस नेया, पुरिसस्स तह छिया ए तेचेव ॥ गुव्विणिसवालवत्ता, डन्निवि इमे हुंति अन्नेवि॥७एए॥अर्थः–जे अढार नेद पुरुषना कह्या तेवीजरीते स्त्रीना आकारनी धरनार स्त्रीना पण तेहज अढार नेद जाणवा. अने तेमां बीजा बे अधिक करिये. ते कहेछे. एक गुर्विणी, एटले गर्नवती अने बीजो सवालवत्ता एटले न्हाना बालके सहित होय. तेना दोष लोकोपवादादिक अने साथ व्यापातादिक प्रसिद्धछे. एरीते डन्निविके० ए बे नेद मेलवतां वीश थायछे.

अवतरण.– दसनपुंसेसुत्ति एटले दश नपुंसक दीक्षाने अयोग्य तेनुं एकसो नवमुं द्वार कहेछे. मूलः–पंमए वाइए कीवे, कुंनी ईसालुयत्तिय ॥ सौणी तक्कम्म सेवीय, पक्खिया पक्खिएइय ॥७००॥ सोगंधिएय आसत्ते, दस एए नपुंसगा ॥ संकिलिठ्ठित्ति साहूणं पव्वावेउं अकप्पिया ॥७०१॥ अर्थः–एक पंमक, बीजो वातिक, त्रीजो क्लीब, चोथो कुंनी, पाचमो ईर्षालु, छठो शकुनी, सातमो तत्कर्मसेवी, आठमो पक्षिकापक्षिक, नवमो सौगंधिक अने दशमो आसक्त. ए दश नपुंसकना मनना परिणाम माठा होयछे माटे एमने दीक्षा आपवी साधुने कल्पे नही.

हवे पंमक एटले नपुंसकना लक्षण कहेछे. उक्तंच. महिलासहावो सरवन्न नेउ, मेढं महंतं मउयाइ वाणी ॥ ससदगं सुत्तमफेणगंच, एयाणि छप्पंमग लरकणाणि ॥ १ ॥ अर्थ.– यद्यपि पुरुषाकारछे तोपण महिलाके० स्त्रीनो स्वनावछे. ते आवीरीते के तेनी गति मंद थाय, मार्गमां जातो थको शंकापणे पुठे जोतो जाय. तेनुं शरीर अतिसुकुमाल अने शीतल थाय. तथा स्त्रीनीपरे गलहत्थो देइ पेट उपर तरगो मावो हाथ राखी ऊपर जमणा हाथनी कुणी देइ जम

णा हाथे गाल देइ अथवा घणो हाथ उलालतो थको वातकरे केम उपर हाथ
राखे अने प्रावरणने अनावे स्त्रीनीपरे वांहे करी हृदय ढांके बोलतोथका सवि
भ्रमणपणे पापण हलावे केशबंधन तथा वस्त्र प्रमुखनु पहेरवु प्रमुख ते स्त्री
नी परे करे स्त्रीना आभरण प्रमुख पहेरवानो घणो हर्ष करे स्नानादिकनु एका
ते आचरण करे पुरुषोनी सभामां भयसहित शका पामतो सचार करे स्त्रीं
माहे निशकपणे तेमनु जे राधवु, खांमवु, दलवु प्रमुख कार्यने ते करे इत्यादि
महिलाने सभावे पमकनु लक्षण कह्यु ए प्रथम लक्षण बीजु स्वर अने वर्ण
भेद तेमा स्वर ते साद अने वर्णते शरीर संबधी, एना उपलक्षणथकी गंध रस
स्पर्श ते पण स्त्री पुरुषनी अपेक्षाये विपरीतथाय त्रीजु मेढमहत एटले जेनो मेढ्र
शब्दे पुरुषाकार ते महत शब्दे महोटो थाय चोथो स्त्रीनीपरे मृदु जेनी सुकुमार
वाणीथाय पांचमा सद्दग एटले जेनो शब्देकरी सहित स्त्रीनीपरे मूत्र प्रस्रवण
थाय छठो वली फेनके० फीणरहित मूत्रथाय ए छ पमकना लक्षण कह्या

बीजो वाइये जेने वात होय ते वातिक जाणवो इहा ए भाव के जेने पोतानी मे
ले अथवा वायुयेकरी पुरुषाकार स्तब्ध होय ते स्त्री सेवा कस्याविना वेद धरी शके नही

त्रीजो, क्लीब जे असमर्थ ते चार प्रकारेछे दृष्टिक्लीब शब्दक्लीब आलिंगन
क्लीब, अने निमत्रण क्लीब तेमा जे विवस्त्र स्त्री देखी क्षोभ पामे ते दृष्टिक्लीब स्त्री
नो शब्द सांभली क्षोभ पामे ते शब्दक्लीब, स्त्रीने आलिंगन कयु तथा निमत्रण
कयु छता व्रत धरी शके नही ते अनुक्रमे आलिंगनक्लीब तथा निमत्रणक्लीब

चोथो कुंभी एटले जेहना मोहोत्कटपणाए करीने सागारिक अने वृषण ए
कुंभ एटले घडानी परे स्तब्ध थाय तेने कुंभी कहेछे

पांचमो ईर्षालु ते प्रतिसेवन करेली स्त्री देखी घणी रीस करे अथवा जेने रीस
उपजे ते ईर्षालु जाणवो

छठो सोणी के० शकुनि ते चडकला पक्षी विशेषनी परे उत्कृष्ट वेदपणा थकी
रतर स्त्री सेवानेविषे प्रसक्त होय

सातमो तक्कम्मसेवी एटले जे मैथुन सेवा करी पछी वीर्य निशरवाथी उठाक
णा ने लीधे कुतरानी परे ते वीर्यने चाटे इत्यादिक निंद्य कमाथकी पातान
मानो जिये ते तत्कर्मसेवी जाणवो

आठमो पक्केके० चांदणे पखवाडे जेने मैथुन नो अधिक अभिलाष थाय
अपक्खे एटले अधारे पखवाडे मैथुननो अल्पअभिलाष थाय, ते पक्षापक्षीक

नवमो पोताना लिंगमां सुगंध मानतो तेनी गंध लिये ते सोगंधिक.

दशमो आसक्त, एटले जे वीर्य पड्यापछी पण स्त्रीने विशेषे आलिंगन आपी तेनी कक्षा प्रमुखमां प्रवेशकरे ते दशमो आशक्त कहिये.

एनुं जाणपणुं मित्रादिकना कथन थकी थाय संकिछके० एने नगर दाह समान काम होय. अध्यवसायपणा थकी ने स्त्री पुरुष सेवा आश्रयथी एनुं अत्यंत मलिन चित्त होय छे. तेमाटे ए साधुने दीक्षा देवासारु अकल्पनीयछे. एमां जे पुरुषने आकारे नपुसक ते पुरुषमांहे गण्या अने स्त्रीने आकारे नपुंसक ते स्त्रीमां गण्या. इहां जे नपुंसकने आकारे होय ते नपुंसक जाणवा. एटलुं विशेषछे

हवे ए नपुंसकना सोल भेदछे तेमां दश भेद दीक्षा आपवाने अयोग्य. छे ते कह्या. हवे छ भेद दीक्षा आपवाने योग्य छे ते कहेछे उक्तंच. वद्धिए चिप्पिए चेव, मंतउ सहिउवहे ॥ इसिसत्ते देवसत्ते, पवाविज्ञनपुंसए ॥ १ ॥ अर्थः– जेनां राजाये अंत. पुरनी रखवाली करावववाने अर्थे बाल्यावस्थामां वृषण गलाव्याहोय ते वद्धिक. बीजो चिप्पिएके० जे जन्मतांज अंगुठा अंगुलीए वृषणनुं संमर्दन करी नही सरखा करे ते चिप्पित कहिये. एरीते कर्या थकीएने नपुंसक वेदनो उदय थाय तेमज त्रीजो तथा चोथो कोइकने मंत्रनी शक्तिये अने उसहके० औषधने प्रभावे पुरुषवेद अथवा स्त्री वेदे उवहेके० हणायो छतो तेने नपुसक वेदनो उदयथाय. पांचमो इसिसत्तेके० इसिजे रुषि प्रमुख ते रीशाणो थको कोइकने शाप दीधो होय के महारा तपना प्रभावथी अमुक नपुंसक थाजो. इत्यादिक शाप नपुंसकपणुं जाणवुं. छठो एवी रीते वली कोइ देव भवनपत्यादिकना शापे करी त्रीजा वेदनो उदय थाय. एवा नपुसकने निषेध संबंधी लक्षणनो असंभव छे तेथी दीक्षा आपवी योग्यछे. ॥ ८०१ ॥

अवतरणः– विगलंगंति एटले विकलेंद्रिनुं एकशोने दशमु द्वार वखाणेछे.

मूल – हत्थे पाए कन्ने, नासाउट्ठेविवज्जिए चेव॥ वामणग वडभखुज्जा, पंगुल कुंटा य काणाय ॥ ८०२ ॥ अर्थः– जे हाथ, पग, कान, नासिका, होठ, एणेकरी वर्जित होय तथा वामणगके० जे हाथपगादिक अवयवहीन होय तेने वामणो कहिये, वली जेने आगल अथवा पाछल खुंध निकली होय तेने वडभ कहिये अने जे एकपासे हीन होय तेने कुबडो कहिये. जे पगे चाली शके नही तेने पागलो कहिये जेना हाथ न्यून होय तेने ठूंठो कहिये. एक आंख जेने होय तेने कांणो कहिये एवाने दीक्षा आप्या थकी प्रवचननी निंदा रूप दोष थाय माटे एवाने दीक्षा आपवी नही

हवे जो कोइ व्रत ग्रहण कर्यापछी विकलांग थाय ते संबंधी कथन करे छे.

मूल –पञ्चाति होति नियजा, आयरियत्तं न कप्पए तेसि॥सीसो गवेयवो, काएण म
हिसार नन्नमि ॥ ८०३ ॥अर्थ – पजाविके० जे दीक्षाजीधापठी विकलके० हीनां
ग थाय ता तेने शिष्यपणामाज राखवो पण तेने आचार्यपणु कल्पे नही अने
जा कदाच कर्मनी विचित्रगतिपणाना योगे आचार्यपद पाम्यो अने पठी विकनाग
थाय ता ते पाताना पाटे गुणोपेत शिष्यने स्थापीने पोते जेम काएगके० चारेलो
महिष (पाडा) एनां एनो अर्थ के जेवो चोरेला पाडाने कोइ न देखे ते साउ
गुफानी अंदर किंवा नगरनी बहार एकात स्थलमा किंवा वनमां गुप्त स्थले राखे छे ते
म एने पण प्रवचन हीनना निन आज्ञाभंगादिक दोषना प्रसंगथकी एकांतेज रहेवु.
परंतु ए आचार्यनु ज कार्य छे ते सर्व स्थविर करे इति गाथा क्षयार्थ ॥ ८०३ ॥

अवतरण – जमाल जड कप्प र जति एटले जेटला मूल्यनु वस्त्र यतिने कल्पनी
य होय तेनु एकजा न अग्यारमु द्वार कहेछे मूल –मुल्लजुअ पुण तिविहं, जहन्नयं
मज्झिम च उक्कोस ॥ जहन्नेण छारसग, सयसहस्स च उक्कास ॥ ८०४ ॥ अर्थ – मो
रवीन युक ज वस्त्र ते त्रण प्रकारेछे ते जघन्य, मध्यम, अने उत्कृष्ट ना जेरय
की नाणारां तेमां जघन्य ते अढार रूपक अने उत्कृष्ट ते एक लक्ष प्रमाणरूपक
ना मूल्यनु अने तेनी वचमानु ते मध्यम जाणवु एमां जघन्य, उत्कृष्ट अने म
ध्यम ए त्रणे प्रकारना वस्त्र साधुने कल्पे नही परंतु ए त्रणमां जघन्य करतां प
ण थाडा मूल्यनु वस्त्र साधुने कल्पे ॥ ८०४ ॥

हवे काना रूपना रूपकना मान होय ते कहेछे मूल – दीसाजरगादीविच्छगाउ
पाडनरा रहा एका ॥ दाउनगरगा पुण पाडनिपुत्तो हवइ इक्का॥ ८०५ ॥अर्थ –
दीव ने इहां सौराष्ट्रदेशमाहे दक्षिणदिशिये यावनमात्र समुद्र अवगाहीन
रहे ते द्वीप नगरी नाणरा ते विहु साजरका एटले बे रुपकनु नाणु
थाय तेने उत्तरावहना एक रूपक थाय अने ते उत्तरपथसबंधी बिहु रूपक स
थाय नेगार पाडलीपुरना एक रूपक मानक नाणु थाय

हवे प्रकारांतर स्थानना मान कहेछे मूल –दाहिणावहारा, कचीए नगरे मइ
उ॥ एक्का कुसुमनगरउ तेण पमाण इम हाइ॥ ८०६ ॥ अर्थ –अथवा प्रकारांत
रे दक्षिणपथ नगरी ना रूपके कांचीनगर नगरी नगरके० रूपक एकनाणु थाय
ने कुसुमह० नगरना रूपिये तेगार एक कुसुमनगर पाडलीपुरना रूपक
णु थाय, ते रूपक प्रमाणे इहां वस्त्रनु प्रमाण जाणवु ॥८०६॥

अवतरण – सेज्जायरपिंडाणि एटले सिज्जातरना पिंडना एकसा न बारमु

द्वार कहेछे. मूलः— सेज्जायरो पहूवा, पहुसंदिष्टाय होइ कायवो ॥ एगअणेगेयपहूप हुसंदिष्टोवि एमेव ॥८०७॥ अर्थ —सज्जा शब्दे साधुने आप्युं जे उपाश्रय तेणेकरीने तरे तेने सज्जातर कहिये. ते घरनो धणी अथवा घरधणीये बीजा कोइने प्रमाण करी आप्युं होय तेणे त्यां सज्जातर कीधुं होय, ते एकने आप्युं होय अथवा घणाने आप्युं होय तो तेना प्रभुपणे एक होय, अथवा अनेक पण होय. संदिष्ट पणे एक अनेक होय. एज अर्थ विशेषे कहेछे. ॥ ८०७ ॥

मूल.— सागारिचसंदिष्टो, एगमणेगे चउक्कभयणाउ ॥ एगमणेगावज्जा, णेगेसुय ठावए एगं ॥ ८०८ ॥ अर्थः— सागारिक शब्दे उपाश्रयनो स्वामि तथा बीजो तेथ णीये संदिष्ट. ए बेहु एकने अनेक थाय. इहां चतुर्भंगनी भजनाछे ते आवी रीते. १ एकप्रभु एकप्रभुसंदिष्ट २ एक प्रभु अनेक प्रभुये संदिष्ट ३ अनेकप्रभु एकप्रभुए सं दिष्ट ४ अनेकप्रभु अनेकप्रभुसंदिष्ट. इहा एक पण अने अनेक पण वर्जवोज इहा अपवाद कहेछे. जो णेगेसुयके० अनेक सय्यातर थाय एटले संघ समुदाय मलि उपाश्रय कराव्यो होय, ते इहां अपवादपदे एगेके० कोइ एक ते माहेला वडे राने सद्यातर स्थापेछे अने अनेरायाकताने घरेभिक्षा लियेछे ए भावना प्रसिद्धछे.

हवे सिद्यातरक देखाडे ते कहेछे मूल.— अन्नछवसेऊणं, आवस्सगचरिममस्स हिंतुकरे ॥ दोसुवितराभवंती, सत्थाइसु अन्नहा भयणा ॥ ८०९ ॥ अर्थ.— अनेरे गामे अथवा साथमाहे वसेऊणंके० सुइने आवस्सगके० पाछली रात्रनुं पडिक मणुं अनेरेस्थाने करे तो बे सद्यातर थाय. एटले एकतो जे स्थानके रात्रेसूता ते अने बीजो जिहां पाछली रात्रनुं पडिकमणुं कर्युं ए बेउ सद्यातर थाय. आ दि शब्दथकी चोर धाडना भयनो परिग्रह थायछे. अन्नहाके० अन्यथा प्रकारे भ जना सद्यातरनी जाणवी. सद्यातरनी विकल्पना ते जे घरमां रह्यो ते अथवा अनेरो सद्यातर थाय तेहज भजना आगली गाथाये कहेशे. ॥ ८०९ ॥

मूलः—जइजग्गंति सुविहिया,करंति आवस्सयंतु अन्नछ ॥ सेज्जायरोनहोई, सुत्तेवक एव सोहोई ॥८१०॥ अर्थ.— सुष्टुके० भलुंछे जेनुं विहितके० अनुष्टान तेने सुवि हित कहिये. ते रात्रीना चार पहोर जागरण करे अने जागीने अन्यस्थानके प्रभा तनुं पडिकमणुंकरे तो जिहा जाग्यो ते सद्यातर न होय. अने जिहा सुतो होय अथवा प्रभातनुं पडिकमणुं करे ते सद्यातर थाय. अने जो उपाश्रय न्हानो होय अने साधुउ ते त्रण स्थानके रहेला होय तो तेमां जे स्थले आचार्यादिक वडेरो रहे तेज सद्यातर होय पण बीजा सद्यातर न होय. ॥ ८१० ॥

हवे उद्गमादिक दोष केवीरीते लागे ते कहेछे मूल —चाउद्धागदहस्सउ, पढमा
त्रियपाणगाइ रुङ्गेसु ॥ सञ्ञायकरण आउद्दिआ करे उग्गमेगयर ॥ ८१५ ॥ अर्थ
गउना चाउजपणायकी प्रथमालिका शिष्यने सिरामणी अथवा ग्लानने अर्थे
पणगाइ० उजपाणी प्रमुख कार्यं वली वली जाता सद्यातर आवर्ज्यो होय, स
न्याय करतां रसी अने घणे परिचये सद्यातरोपणे आवर्जित चित्तपणायकी उग्
मादिक मांहेना अन्यतर दोष करे ॥ ८१५ ॥ इतिगाथा दशकार्थ द्वारसमाप्त

अवतरण – जत्तिअसुत्ते सम्मति एटले जेटला सूत्रे सम्यकत्व होय एवु एकशोने
तरमु द्वार कहेछे मूल – चउदस दसयअभिन्ने, नियमासम्मतु सेसए भयणा ॥
मइउहिविवज्जासे होइ हुमिच्छ न सेसेसु ॥८१६॥ अर्थ – चउदपूर्व अने दशपूर्व जे
न शिष्य श्रुत होय तेने निश्चयकी सम्यक्त्व होय, अने शेष श्रुत जेने विषे होय
तेने विषे सम्यक्त्वनी भजना जाणवी एटले सम्यक्त्व होय किवा न पण होय
एवा विकल्पछे अने मतिज्ञान अवधिज्ञान तेना विपर्यासे विपरीत पणे थये थके
मतिअज्ञान ने विभंगज्ञान ए बे छतां मिथ्यात्व पण निश्चे थकी थाय ॥ ८१६ ॥

अवतरण – चउदनिग्गयाविं चउगइयत्ति एटले जेम निर्ग्रंथपण चतुर्गतिक था
य तेनु एकशो ने चउदमु द्वार कहेछे मूल – चउदस उद्दी आहारगावि मण
नाणि वीयरागावि ॥ हुति पमायपरवसा तयणतरमेव चउगइया ॥८१७॥ अर्थ –
चउदपूर्वधर, अवधिज्ञानी, आहारक लब्धिवंत, इहां चउद पूर्वधर ते आहार
लब्धिवंत होय एवा न पण होय नथी तेहनु जुदुजुदु ग्रहण कीधुछे तथा
मनपर्यवज्ञान। उपशान्त वीतरागादिक एवा पण प्रमाद विषय कषायादि
करी कलुषित चित्तपणा तदनंतर तत्काल चतुर्गतिना भागीथाय ॥ ८१७ ॥

अवतरण— पत्रातीत, मार्गातीत, कालातीत, अने प्रमाणातीत एवा चार ग्र
हणनो एकशो पन्नर, एकशो सोल एकशो सतर, अने एकशोने अढार एवा चार
बोल वखाणेछे मूल – असणाइ चउक्कंमि अतावक्खेत्तमि गहिय ममणा
दसइ न तस्स नाणु मेताऽईयत्ति ममउत्ती ॥ ८१८ ॥ अर्थ – जे सूर्य उदय
विना अनागते वे० सहे लीधु जे अशनादिक चार ते मांहेनु कोइपण अन
खेतुन भोगववु कल्पे नही अने जो भोगवे तो पत्रातीत कहेवाय एवी
तेनी युक्तिये आगमनु नाविते ए एकशो पन्नरमु द्वार थयु ॥ ८१८ ॥

– असणाईय कप्पइ कालतओपढमाउ आणेउं ॥ पच्छा आणिऊन
तेनिजहप्पे ॥ ८१९ ॥ अर्थ – जे क्षमायकी आणेलुं अशनादिक

मांहेलुं कोइपण अशनादिक यतिने कल्पनीयछे. पण बे कोशथी उपरांतनुं आणेलुं अशनादिक ते मार्गातीत अकल्पनीयछे माटे लेवुं नही. ए एकशो शोलमुं द्वार.

मूल.—पढमप्पहराणीयं, असणाइ जईणकप्पए जोत्तुं॥जावतिजामेउट्टं, तमकप्पं कालइक्कंतं ॥ ८२० ॥ अर्थः— पहेला पहोरनुं लावेलुं अशनादिक यतिने जम वुं कल्पे, ते जिहांसुधी त्रीजो पहोर तिहांसुधी जाणवुं. उपरांत चोथा पहोरमां ते अकल्पनीय थाय. पडिलेहण कस्या पछी ते कालातिक्रांत पणाने लीधे जमवुं नही. ए एकशो सत्तरमुं द्वार समाप्त थयुं ॥ ८२० ॥

मूल.—कुक्कुडिअंमयमाणा, कवला वत्तीस साहुआहारो॥अहवा नियआहारो, की रइ वत्तीस जाएहिं॥८२१॥अर्थः—कूकुडी ते पक्षी विशेष, तेना इंमाने प्रमाणे बत्रीश कवल प्रमाण साधुनो आहार जाणवो. अथवा निजके० पोतानो आहार एटले जेटला आहारथी जेनुं पेट जराय, तेनो बत्रीशमो जाग करिये ए पण कवल प्रमाणछे.

मूलः—होइ पमाणाईयं, तदहियकवलाण जोयणे जइणो ॥एगकवलायऊणे, ऊणो यरिया तवोतंमि ॥ ८२२ ॥ अर्थः—ते बत्रीश कवल थकी अधिक कवलनुं जोजन कस्याथी यतिने प्रमाणातीत थाय. अने बत्रीश थकी एकादिक कवल उंडो लीधा थकी उणोदरता नामे तप ते साधुनेविषे थाय. ॥८२२॥ इति गाथा पंचकार्थ.

अवतरणः— सुख सद्यानुं एकशो उंगणीसमुं द्वार तथा दुःख सद्यानुं एक शो वीसमुं द्वार ए बे द्वार साथे कहेछे. मूलः— पवयण असद्दहाणं, परलाजेहा य कामआसंसा ॥ एहाहाइ पत्रणं इय, चत्तारिवि दुःख सेज्जाउ ॥ ८२३॥ अर्थः जेनेविषे शयन करिये तेने सद्या कहिये. तेमां दुःखनी देवावाली सद्या ते दुःख सद्या. ते द्रव्य अने जावना जेद थकी बे प्रकारनीछे. तेमां द्रव्यदुःख सद्या ते अमनोहर ख ट्वादिरूपजाणवी. जावे दुस्थित चित्तपणे करी दुश्रमणपणु करे. ते इहां जाव थ की ते चार प्रकारे छे. तेमां प्रथम प्रवचन जिनशासननो असद्दहवो. बीजी अनेरा के० बीजाने वस्त्रादिकना अलाजनी प्रार्थनानुं करवुं. इहां चकार समुच्च य ने अर्थे छे. त्रीजी तेमज काम मनोहर शब्दादिकनी आशंसा अजिलाषानुं कर वुं. चोथी स्नानादिके करी शरीर प्रमुखनुं मर्दन करवुं. धोवा विछलवानी प्रार्थना करवी. ए रीते चत्तारिविके० ए चारे जावदुःखसद्या जाणवी. एने विषे वर्त्तमान छतो ते प्राणी कोइरीते पण सुख पामे नही. ॥ ८२३ ॥

ए जेम दुःखसद्याये दुःख. तेम इहां सुख सद्याते पण द्रव्य जावना जेदे करी पूर्वोक्त रीते कहेवी. मूल.— सुहसेज्जाइ वि चउरो, जइणो धम्माणु राय रत्तस्स ॥

विवरीयायरणाउ, सुहसेज्जा उत्तिनसुति ॥ ८२४ ॥ अर्थ –जेम पूर्वोक्त ७ खस चार कही तेमज जइणो के० यतिने सुखसज्या पण चार थाय तेपूर्वोक्तथीविपरी जाणवी इहां यतिने गाढतर धर्मनो अनुराग जे अनिजाष रूप तिहां रक्तके० आसक्तछे चित्त जेनुं, एवाने प्रथम जे प्रवचन असद्दहणा प्रमुख बोल कह्या ते थी विपरीत प्रवचननी सद्दहणा जाणवी तेमज बीजी परलाजनी वाछानुं करवुं त्रीजो मनोज्ञ शब्दादिकनी आशंसानो अनाव चोथी स्नानादिकनुं अप्रार्थवुं एम विपरीत आचरण करवाथी सुखसज्या थाय एमा वर्त्ततो थको साधु सदा काल सुखी थाय ए बे द्वार साथे वखाण्या ॥ ८२४ ॥

अवतरण – तेरसकिरियाठाणोइति एटले तेर क्रियाना स्थानकनुं एकशानुं एकवीसमुं द्वार वखाणेछे मूल – अठ्ठाणठ्ठा हिंसा, कम्माद्दिठ्ठीय मोसदिन्नेय, अज्ज्ञमाणमित्ते, मायालोजेरियावहिया ॥ ८२५ ॥ अर्थ – जे करिये ते क्रिया कर्मबंधनुं कारण चेष्टारूप तेना स्थानक जे नेद ते तेर छे एक अर्थक्रिया, बीजी अनर्थक्रिया, एम क्रिया शब्द सर्वत्र जोडवो त्रीजी हिंसा, चोथी अकस्मात्, पांच मि दृष्टिविपर्यास, छठी मोसमृषाप्रत्यय, सातमी अदत्तवृत्ति, आठमी अध्यात्म की, नवमी मानवृत्ति, दशमी मित्त, अग्यारमी माया, बारमी लोन, तेरमी ईर्या पथिकी, ए तेरक्रियाना नाममात्र कह्या ॥ ८२५ ॥

हवे सूत्रकार गाथाये करी वखाणेछे मूल – तसथावर नूएहिं, जोदंमनिसरई उ कज्जेण ॥ आयपरस्सवअठ्ठा, तमठ्ठदंम तयाबेति ॥ ८२६ ॥ अर्थ –त्रस, थावर रूप नूतके० प्राणी तेहने जो दंम निसरईउके० दंमकरवो पोताना आत्माना धर्मरूप धनने अपहारे ते दंम कहिये दंम शब्दे हिंसा जे कोइकरे ते कज्जेणके० कोइ कार्यने करवे करीने, ते पोताना शरीरने कार्ये अथवा पर जे बाधवादिक तेने कार्य जे करे तेने अर्थ दंम एटले अर्थक्रिया श्री तीर्थंकर देव कहेछे ॥ ८२६ ॥

मूल – जोपुण सरडाईय, थावरकाय चवणलयाईय ॥ मारेउछिदिकण छंडेईसो अणठ्ठाए ॥ ८२७ ॥ अर्थ – जे शरड शब्दे काकीडो, आदिशब्दथकी उदर प्रमुख त्रसकाय, अने स्थावर काय जे वनस्पति ते वेली सूरादिकने जे मारे एमन त्रस जीवो मारे तथा वन लता छेदी नांखीने नाखे अर्थात् ते छेदीने नाखी दिये तन अणठ्ठाएके० बीजी अनर्थ क्रिया कहिये ॥ ८२७ ॥

मूल – अहिमाइ वइरियस्स वहिंसी सेहींसईवहिंसेही ॥ जोदंम आरन्नइ, हिंसादंमो हवइएसो ॥ ८२८ ॥ अर्थ – सर्प प्रमुख अथवा एवपरीए अमारू अमु

क कांइकहणुंछे, ए अमने पूर्वे मारतो हतो अथवा सांप्रतके० हमणा मारशे, अ थवा आवती काळेमारशे. एमजाणीतेने दंडपीडाकरे तोहिंसादंडक्रियालागे ॥ ७२८

मूलः— अन्नठाए निसिरइ, कंडाई अंन माहणे जोउ ॥ जोवनियंतो सस्सं, छंदिज्जा सालिमाईयं ॥ ७२९ ॥ अर्थः— एकने मारतां बीजाने मारे. अनेरा मृग, पक्षी, काकीमाने अर्थे निसिरई के० नाखे कंड शब्दे बाण नाखे आदियकी पथ्थर प्रमुखथकी. अनेरा गमे ते प्राणीप्रत्ये जे कोइ मारे अथवा जे कोइ शाली मांहे अनेरा तृण प्रमुख छेदतो थको ते शाली प्रमुखने छेदे. ॥ ७२९ ॥

मूल.— एसअकम्हादंडो, दिठिविज्जासउ इमो होइ ॥ जोमित्त ममित्तंतिय ॥ काउंघाएज्ज अहवावि ॥ ७३० ॥ अर्थ.—ए चोथी अकस्मात्‌दंड क्रिया जाणवी. हवे पांचमी दृष्टि विपर्यास क्रिया एवीरीते थाय के जे कोइ मित्रने अमित्र काउंके० करीने घाएज्ज के० विनाश करे अहवावि के० अथवा. ॥ ७३० ॥

मूलः— गामाईघाएज्जव, अतेणतेण त्तिवावि वाइज्जा ॥ दिठिविवज्जा तेते, कि रिया ठाणं तुपंचमयं ॥ ७३१ ॥ अर्थः— गाममां रहेनारा कोइएक पुरुषे कांइ एक अपराध कर्यो छतां तेनायोगे जे संपूर्ण गामने मारे छे, आ वागदृष्टि विप र्यास दंड. अथवा वली चोर न होय तेने चोर कही मार आपे ए पाचमुं दृष्टि विपर्यास नामे क्रियानुं स्थान कहिये. ॥ ७३१ ॥

मूलः— अत्तठनायमाईण वावि अठाइ जो मुसं वयइ ॥ सो मोसपच्चइउ दंडो छ ठो हवइ एसो ॥ ७३२ ॥ अर्थ.—अत्तठके० पोताने अर्थे अथवा ज्ञाति वडेरा प्रमु खने अर्थे जे कोइ असत्य बोले ते मृषा प्रत्ययिक नामे दंड छठो थाय. ॥ ७३२ ॥

मूल.— एमेव आयनायग, अठा जो गिण्हई अदिन्नंतु ॥ एसोअदिन्नविंत्ती, अप्रत्तीउ इमो होइ ॥ ७३३ ॥ अर्थः— ए पूर्वोक्त मृषावादनी पेरेज जे पोतानो नायक एटले स्वामि तेना अर्थे जे गिण्हइ के० ग्रहण करे तथा स्वजन प्रमुख ए पाठ थकी एवो अर्थ थायछे के स्वजन ने अर्थे जे कोइ अदत्तादान लिये ते अद त्तादानवत्तिकी नामे सातमी क्रिया जाणवी. अने आठमी अध्यात्मकी क्रिया आ वीरीते थाय ते आगलि गाथाये देखाडे छे. ॥ ७३३ ॥

मूलः—नवि कोइकिंचिनणई, तह वि हु हियएण दुम्मणो किंचि ॥ तस्स प्रज्झी सी सइ, चउरोठाणा इमे तस्स ॥ ७३४ ॥ अर्थः— जेने कोइये कांइपण न कह्युं छतां पण पोताना हृदयमा दुर्मन आमणो दुमणो थाय तेने आठमी अध्यात्मकी क्रि या सीसइके० कहिये. एना चार ठाण छे ते आगली गाथाये देखाडे छे. ॥ ७३४ ॥

मूल –कोहो माणो माया, लोहो अप्पहिकिरियए चेसा ॥ जोपुण जाइमयाई, अद विहेणतु माणेण॥ ७३५॥अर्थ –क्रोध, मान, माया, ने लोन ए अध्यात्मकी क्रियानां कारण ठे पुणके० वली जात्यादिक आठ प्रकारना मानके० अनिमाने करीने

मूल – मत्तो हीलेइ पर, खिसइ परिजवइ माणवत्तेसा ॥ माई पियनायगाइण जो पुणअप्पेवि अवराहे ७३६ ॥ अर्थ – मत्तोके० मदोन्मत्तयको परके० बीजा ने हीलेइके० हीलना करे परने ठगे, परनी निंदा करे, खिशाकरे, कदर्थनादिके क री परानव करे ते नवमी मानप्रत्ययकी क्रिया जाणवी माईके० माता पिता ज्ञा ती, नाति सजन, सगा प्रमुख तेमने थोडे अवराहेके० अपराधे पण जे पुरुष ते मातादिकने शु करे ? ते आगली गाथाये कहेठे ॥ ७३६ ॥

मूल – तिव्व दम कुणई, दहणकणवध ताडणाईय ॥ तम्मित्तदोसवित्ती, कि रियाठाण नवेदसम ॥ ७३७ ॥ अर्थ – तीव्र एटले महोटी दम पीडा करे दह न एटले माम देइ चिन्ह करे वध एटले दोरडेकरी बांधे ताडना प्रमुख करे ते मित्रद्वेष वृत्तिनामे दशमु क्रिया स्थान जाणवु ॥ ७३७ ॥

मूल –एगारसम माया, अन्न हियर्यम्मि अन्नवायाए ॥ अन्न आयरईवा, सकम्म णा गूढसामत्थो ॥ ७३८ ॥ अर्थ – अग्यारमी माया क्रिया तेपोताना मनमां एक चिंतवणा करीहोयअने मुखथी बीजु बोले वली आचरण त्रीजुज करे एम सया के०सदाकाल दुष्टचित्तवंत थकोआपणे कर्मेकरीशक्ति गुप्त राखे परने नजणावे ७३८

मूल – मायावत्ती एसा, इत्तोपुण लोहवत्तिया इणमो ॥ सावज्जारंन परिग्गहे सुसत्तो महंतेसु ॥ ७३९ ॥ अर्थ – ए अग्यारमो मायावृत्ति क्रिया जाणवी इहा थ की आगल हवे वली लोन प्रत्ययकी क्रिया बारमी कहेठे, ते आवीरीते ठे साव द्य जे सपाप आरंन करे तो तेमां घणा जीवोनु उपमर्दन थाय ते महंतके० परि ग्रह धन धान्य रूप तेने विषे आसक्त थयो थको घणो सपाप आरंन करे ॥७३९

मूल – तह इत्थी कामेसु, गिद्धो अप्पाणयं च रक्खतो ॥ अन्नेसिं सत्ताण वह बंध मारणे कुणइ ॥ ७४० ॥ अर्थ – तह के० तेमज स्त्रीना कामुक मनोहर श ब्दादिकने विषे पोतानु चित्त गृद्ध आसक्तवंत राखतो थको ते कारणने लीधे अन्य प्राणीतने पण वध, बंधन, मरणांत उपसर्ग करे ॥ ७४० ॥

मूल – एसेह लोहवत्ती, इरियावहियं अउ पवक्खामि ॥ इहखलु अणगार स्सा, समिई गुत्तीसु गुत्तस्स ॥ ७४१ ॥ अर्थ – एसा के० ए इहा जिनशासनने वि षे लोनवृत्ति नामे बारमी क्रिया जाणवी तेरमी इरियावहिनामे क्रिया ते अउ

के० इहां एनी व्युत्पत्ति एवीरीते के ईरण के० गमन तेणेकरी जे सहित विशेष जे मार्ग ते इरिया पथ. तिहां थइ जे क्रिया ते इरियापथिकी कहिये. ए शब्दनो अर्थ कह्यो. हवे गाथानो अर्थ कहेछे. इहां खलु इति निश्चे अणगार जे साधु ते इरिया समिति प्रमुख पाच समिति अने मनोगुप्त्यादिकत्रण गुप्ति तेणे करी सहितहोय एवा.

मूलः— सययं नु अप्पमत्तस्स नगवर्ज जाव चक्कु पम्हमि ॥ निवयइ ता सुहु माहू. इरिया वहिया किरियएस्ता ॥ ७४२ ॥ अर्थः— सततं के० निरंतरपणे अ प्रमत्त साधुने विषे तथा वली उपशांत मोह क्षीणमोह. अने सयोगी लक्षण ए त्रण गुणगणाने विषे वर्त्तता एवा साधु नगवंत ते शरीर संबंधी बीजी समस्त क्रियानु ज्यां लगी रुंधन करे. चक्कु के० नेत्र तेनो पक्ष्ममात्र मेषोन्मेष करे, एक सामायिक सात बंधलक्षण अतिअल्प क्रिया थाय छे. एवाने प्रगटपणे इरि या पथिकी क्रिया तेरमी होय ॥ ७४२ ॥ इति गाथा अष्टादशकार्थ.

अवतरणः— आगरिसा सामइए चउविहेविवि एगनवेत्ति जे आकर्षवे ते आ कर्ष प्रथम लेवुं. अथवा प्रथम लेइने मूक्युं होय तेनुंज फरीथी जे ग्रहण कर वु ते आकर्ष कहिये. ते चारप्रकारना सामायक तेनेविषे एक नवमा केटला आ कर्ष थाय? तेनुं एकशोने बावीसमुं द्वार कहे छे. मूलः—सामाईय चउव्हा, सुयदं सण देस सव्वनेएहिं॥ ताणइमे आगरिसा, एगनव पप्प नणियव्वा॥७४३॥ अर्थः— एक श्रुतसामायक, बीजो, सम्यक्त्वसामायक त्रीजो देशविरति सामायक. चोथो सर्वविरति सामायक, ए चार प्रकारना सामायक छे ए चारे सामायकना आकर्ष पूर्वोक्त शब्दार्थ एक नव पामीने एकनव आश्रीने आकर्ष नणियव्वा के० कहेवा तेज देखाडेछे. मूल.—तिएहं सहस्सपुहत्तं, सय पुहत्तंच होइ विरईए॥ एगनवे आग रिसा, एवइया हाति नायव्वा ॥ ७४४ ॥ अर्थ.—प्रथमना त्रण सामायक तेने सहस्र पृथक्त्व एटले बेहजारथी मामीने नवहजार सुधी एकनवमां आकर्ष थाय. इहां पहेलोज सामायक पडिवजे, अथवा प्रथम लीधोछे ते मूक्यो अने फरी लेवो ते आकर्ष कहिये. अने विरईएके० सर्व विरतिनो आकर्ष तो शतपृथक्त्व एटले ब सेथी मांमीने नव से सुधि एक नवमां थाय. ॥ ७४४ ॥

हवे नाना नव आश्री कहेछे. मूलः— तिण्हमसंखसहस्सा, सहसपुहुत्तंच हो इ विरईए ॥ नाणानव आगरिसा, एवइया हुति नायव्वा ॥ ७४५ ॥ अर्थः— प्रथम ना त्रण सामायकना आकर्ष असंख्याता सहस्र जाणवा. केमके ए त्रणे सामा यकना आकर्ष एक नवमां सहस्र पृथक्त्व होय ते गुणाकार कर्याथी असंख्या

सर्वनो अतिक्रम थाय. मूलगुण आश्री एक अतिक्रमे तो पांचेनो अतिक्रम थाय. ए कारणथी दश प्रायश्चित्त सफल थाय व्यवहार नय मत आश्री चारित्रियाने अति चारनो संभव छे,अने निश्चे नयमतो भंगेज. यडुक्तं.एउइमंविन्नेयं,अइदं पज्जंतु बुद्धिमं तेहिं॥एक्कंपि सुपरिसुद्धं, सीलंगं सेससप्नावे ॥ एनो अर्थ करे छे ईहां शीलांगना अधिकारने विषे अइदंपर्य के०ए रहस्य बुद्धिमंते जाणवु. जे कारण माटे एक सुपरिसुद्ध शीलांग समस्तने सद्भावे होय, पण श्रावकनी परे हायावे. तेथी भंगे वर्त्ततो श्रावक कहिये, तेम ए न समजवुं. जो समस्त भंगे सहित होय तो सर्व विरति कहिये, पण एकादि भंगे वर्त्ततो सर्वविरति न कहेवाय. तेमाटे शीलांगना भांगा श्रावकने न थाय. मननी स्थिरता राखवाने अर्थे श्रावक गुणे तो भले गुणो

मूलः— जोए करणे सन्ना, इंदिय भोमाइ समणधम्माय ॥ सीलंगसहस्साणं, अढारसगस्स निप्पत्ती ॥ ८४३ ॥ अर्थः—योगत्रण, करणत्रण, संज्ञाचार, इंद्रियपांच, भोमाइके० पृथ्वीकायादिकदश, श्रमणधर्मदश, एरीते शीलांगना जे अढार हजार भेद तेनुं नि.पत्तीके० निपजवुं थाय. तेज कहेछे. ॥८४३॥

हवे विशेषे एनी संख्या देखाडेछे मूल·— करणाइ तिन्निजोगा, मणमाईणी हवंति करणाई ॥ आहाराईसन्ना, चउ सोयाइंदिया पंच ॥ ८४८ ॥ अर्थः—इहां प्रथम योग पछी सूत्रना बंध सारु बीजा वखाणियेछे. योग त्रण, ते मनोयोगादिक जाणवा. इहा गाथाने धुरे करणाइ एटले करवुं जेनी आदिमांछे एवा त्रण करण तथा आहारादिक चार संज्ञा जाणवी. अने सोयाके० श्रोत्रादिक पांचइंद्रिउ जाणवी.

मूल — भोमाई नव जीवा, अजीवकाउय समण धम्मोय ॥ खंताइ दस पयारो, एवं ठिई भावणा एसा ॥ ८४९ ॥ अर्थः—भोमाइके० पृथवीकायादिक नव जीव अने अजीव साथे दश थाय. श्रमण धर्म ते खांत्यादिक दश प्रकारे एवके० ए रीते ठिइके० यंत्र पटादिक उपर लखवो. भावनाते एसाके० आगल कहेशे ॥८४९॥

तेहिज देखाडेछे. मूल —न करइ मणेण आहार सन्नविप्पजढगोउनियमेण ॥सोइंदिअ संवरणे, पुढविजिए खंति संजुत्तो॥८५०॥इय मद्दवा इजोगा, पुढवीकाए हवंति दसभेया ॥ आउक्कायाईसुवि,इय एए पिन्डिअं तु सयं ॥८५१॥सोइंदिएण एवं, सेसेहिंवि जइमं तउ पंच ॥ आहारसन्नजोगा, इय सेसाहिं सहस्सदुगं ॥८५२॥ एवंमणेण वयसाइएसु एव तुउ सहस्साइं ॥ नकरे सेसेहिं पिअ, एए सव्वेवि अढारा ॥ ८५३ ॥ अर्थः— इहा नकरइके० करण लक्षण प्रथमयोग त्रिकालो छे, ते मनसा ए प्रथम करणछे. आहारसन्न विप्पजढ गोउत्तिके० आहारसंज्ञा विरहित यताज प्रयम

सज्ञा तथा आवश्यताए करी निरोधन कर्योछे रागादिक गुण जेनो, एवी श्रोत्रेंद्रि यनी प्रवृत्ति तेथी प्रथमेद्रिय कहेली छे एवीरीतीए शु न करे? ते कहेछे पृथ्वी काय जीवारन्न करे नही एदु तात्पर्यछे एणे प्रथम जीवस्थान क्षमायुक्तके० शी तिसपन्न एणेकरी प्रथम श्रमण धर्मभेद जाणवो ए प्रकारे करी एक शीलाग आविर्भा वित छे एटले मने करी आहार सज्ञा रहित थको श्रोत्रेंद्रियनो सवर करी क्षमायु क पृथ्वीकाय जीवारन्न करे नही ए शीलनु प्रथम अग आविर्भावित एटले प्रग टछे हवे शेष छे ते पण अतिदेशे करी देखाडेछे ॥ ८५० ॥

एज प्रकारना पूर्वोक्त अभिलापे करी मार्दवादियोगात्के० मार्दव आर्जवादि दश पद सयोगेकरी, एटले जेम पूर्वे क्षमायुक्त एक भेद थयो तेम मार्दवने सयो ग बीजा भेद, तेमज आर्यवने सयोगे त्रीजा भेद, एरीते पृथ्वी कायनो आश्रयक री एटले पृथ्वी कायारन्न एवा अभिलापे करी, दश यतिधर्मेकरी, दश भेद ते दश शी लविकल्प थायछे ते वली अप्पकायादि नव स्थाननेविपे पण अपि शब्दे करी दश मा स्थाननीपेरे आक्रमण करीए, तेवारे सर्व भेद प्राकृतपणेकरी एकत्र कर्यायीए कशो सख्या थायछे ॥८५१॥ ते मात्र श्रोत्रेंद्रियने सो भेद थाय छे तेमज वाकीनी चक्षुरादिक इद्रिनना पण ए पूर्वोक्त रीतिये शो शो भेद थायछे ए एम सर्व सख्या एकठी करिये तेवारे पाचशें थायछे केमके इद्रियोना पाच प्रकार छे माटे पाचशें थाय ते मात्र एक आहार सज्ञा योगेकरी आ भेद थयाछे हवे शेष नय सज्ञादिक त्र णेना पण पांचशे पाचशें भेद ए पूर्वोक्त रीतेज थाय एम सर्वना मलीने बे हजार भेद थायछे ॥८५२॥ ए बे हजार तेमात्र मनोयोगन प्राप्त थएला छे तेमज वचन अन काय एना पण ब बे हजार भेद थाय छे एम एकदर सख्या छ हजार थायछे ए छ हजार मात्र न करोति ए मर्यादाये प्राप्त थया तेमज शेष न करावे तेनापण छ हजार अने अनुमति न आपे एना पण छ हजार भेद छे ए सर्व मेलविये त्यारे शीलना भेद एकत्रकर्या छता अढार हजार थायछे ॥ ८५३ ॥ एक योगेकरी अ ढार हजारज थायछे एम काइ नथी, पण बे इत्यादिक सयोगजन्य भग जो आ स्थले लीधा होय तो एना घणाज भेद थायछे एटले एक बे इत्यादिक सयोग करी सयोगनेविपे सातविकल्प थायछे एवाज करणने विपे, सज्ञाने विपे इंद्रि योने विपे, पृथ्वीकायादि विगेरेनेविपे एक हजार तेवीस भग थाय ए प्रमाणे क्ष मादिकने विपे पण आ राशीनो परस्पर गुणाकार कर्यो होयतो त्रेवीश अवज चोराशी करोड एकावन लाख त्रेसठ हजार बेशोने पासठ २३८४५१६३२६५

नेद थाय ठे. तो पठी अढार हजारज केम कह्या? एवुं कोइ पुछे तेने उत्तर कहे ठे के जो श्रावक धर्मनी पेठे बीजा नंग करी सर्व विरतिनी प्रतिपत्ति थाय तो ते गणना योग्यठे. एक पण सीलांगना नंगना शेप सद्भाव ठे एटले नेद थता नथी एवुं नजाणवुं. कारण अन्यथा सर्व विरतीज थनारनही.एना यंत्रनीस्थापना करियेठे

नेनोकरंति ६०००	नेनोकरावंति ६०००	नेनाणुमवंति ६०००							
मणसा २०००	वयसा २०००	तणुणा २०००							
निज्जिआ हारसन्ना ५००	निज्जिअभय सन्ना ५००	निज्जिअपरि ग्रह सन्ना ५००	निज्जिअमेहु नसन्ना ५००						
श्रोतेंद्री १००	चक्षुरिंद्री १००	घ्राणेंद्री १००	जीव्हाइंद्री १००	स्पर्शेंद्री १००					
पुढवीका यारंभ १०	आपकाया रंभ १०	तेउकाया रंभ १०	वाउका यारंभ १०	वनस्पति कायारंभ १०	बेंद्रिया रंभ १०	तेंद्रिया रंभ १०	चौरेंद्रि यारंभ १०	पंचेंद्रि यारंभ १०	अजीवा रंभ १०
खंतिजुआ तेमुणी वंदे १	ममद्दवाते मुणीवंदे २	मज्जवजुआ तेमुणीवंदे ३	मुत्तिजुआ तेमुणीवंदे ४	तवजुआते मुणीवंदे. ५	संजमाते मुणीवंदे ६	सच्चजुआ तेमुणीवंदे ७	सोयजुआ तेमुणीवंदे ८	आकिंचणा तेमुणीवंदे ९	बंभजुआते मुणीवंदे १०

अवतरण.– नयसत्तगंति एटले सात नयनुं एकशो ने चोवीसमुं द्वार कहेठे.

मूलः– नेगम संगह ववहार उज्जुसू चेव होइ बोधव्वे ॥ सद्देय समभिरूढे, एवंभूए यमूलनया ॥ ८५४ ॥ अर्थ.– त्यां प्रथम नय शब्दनो अर्थ आवीरीते ठे के अनंत धर्मात्मक वस्तु अवधारण पूर्वक एकादि कोइक नित्यत्वादिक धर्म कहीने पोतानी बुद्धि प्रत्ये पमाडे तेने नय अभिप्रायनो विशेष कहिये. इहां जे नय नयांतरने सापेक्षपणे आपणपाने अभिप्रेत धर्म स्याद्वादपूर्वक वस्तु पडिवजे ते परमार्थ वृत्ते संपूर्ण वस्तुपामे अने प्रमाण माहे अंतर्भवे.

एमज जे नयने निरपेक्षपणे आपणपाने अभिप्रेत धर्म अवधारण पूर्वक वस्तुनुं जाणपणुं वाठे; तेज वस्तुना एकदेश ग्राहकपणा थकी नय कहिये. परंतु ते मिथ्यादृष्टी अयथावस्थितार्थ वस्तुना ग्राहकपणा थकी जाणवो. एज कारणे कह्योठे के सव्वेनयामिठावाइणोइत्ति जे कारणे नयवाद ते मिथ्यावाद ठे,

ते कारणे जिनप्रवचनना जे जाण ते मिथ्यावाद परिहारनी वांछाये सव स्या
द पूर्वकज बोले अने यद्यपि लोक व्यवहारे साक्षात् स्याद्वाद प्रयुंजे तथापि व
पण तेनु ग्रहण करवुज जोइये उक्तंच अप्रयुक्तोपि सर्वत्र स्यात्कारार्थात्प्रतीयते
विधौनिषेधेन्यत्रापि, कुशलश्चेत्प्रयोजक ॥ १ ॥

अनुवाद वचन अने अतिदेशवचनने विषे पण ते नैगमादिक सात नयने
तिहां नेकके० घणा प्रमाणे एटले महासामान्य अवांतर सामान्य विशेषादि
यिक ए प्रमाणे करी वस्तुनु विशेषपणु ते मिणीतेके० मिणिये एटले जाणि
तेने नैगम कहिये अथवा निश्चितने ज्या गम एटले माहोमाहे जूदीजूदी जाण
न्यादिक वस्तुनु ग्रहण ते नैगम कहिये अथवा गमके० मार्ग ते जेनेविषे
नथी तेने गम जाणवो एटले घणाप्रकारे करी वस्तुनु ग्रहणके० अंगीकार करे ते
यानीरीते – सत्तालक्षण महासामान्य, अवांतर सामान्य, द्रव्य गुण कर्मत्वादि
अत्यविशेष सकल असाधारण स्वरूप अवांतर विशेष रूप थकी निवर्त्तन क्षम, ए
सर्व माहो माहे विंगकलित स्वरूप माने तेमाटे नैगम कहिये

इहां शिष्य चालना करेछे के जो ए सामान्य विशेषना अंगीकारक कह्या परंतु
सामान्य ते द्रव्य अने विशेष ते पर्यायने कहिये तो ए द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक
नय मतना अवलंबनपणा थकी तेने सम्यक्दृष्टि प्रतिपन्न जिनमतनी प
कहिये तोज रूडु पण मिथ्या दृष्टी केम कहिये?

हवे एना उत्तर कहेछे ए मिथ्या दृष्टि ते सामान्य विशेषने माहामाहे जूदा जू
दा मानेछे जेमगुण अने गुणी अवयव ने अवयवी क्रिया ने कारक जेम एना भेदतत
त्या पण भेद माने तेमाटे कणादनीपरे एने मिथ्यादृष्टिज कहिये ए नैगम नय कह्या

बीजो संगृह्नाति अशेष विशेषने परिहारे करी जगत्रयने सामान्यरूप पणे
जिये ते संग्रह नय कहिये

त्रीजो व्यवहरिये ते व्यवहार अथवा विशेषे करी अवहरिये निरा करिये ए
ते व्यवहारे करी सामान्य पणे निरा करिये तेथी एने व्यवहार नय कहिये
भमरने विषे छता पांचेवर्णछे, तथापि लोक व्यवहारे करी तेने काला वर्णज कहिये
नय जे छे ते अनेरावर्ण छता पण तेने न माने मात्र एकनीज मुख्यता क
चोथा ऋजु शब्दे सरल ते अतीत अनागत वक्र ने परिहारे वर्त्तमान क्षण व
वृत्ते निष्टंकितपणे वस्तु दखाडे, ते ऋजु सूत्र अथवा ऋजुसूत्र एटले ऋजु
पूर्वोक्त वक्रना परित्याग थकी सन्मुख थयुं छे जे श्रुतज्ञान तेणे ऋजुसूत्र न

श्रुत ज्ञान ग्रहण एटले अंगीकार करी शेषनुं अग्रहण कर्युं ए नय अतीतनो विनष्ट अने अनागतना अनुत्पन्नपणाथकी अलब्धात्म लाभपणा ने लीधे अर्थ क्रियाने विषे असमर्थपणाना सद्भाव थकी वर्त्तमानज माने. वली जे पारकी वस्तु ते पण परमार्थ वृत्तिये अछता समान निःप्रयोजनपणाने लीधे जेम परनुं धन काम न आवे तेनीपेरे माने. वली लिंग, वचन, भिन्न पणे छतां एकज माने अने निक्षेपाचारे माने. ते ऋजुसूत्रनय जाणवो.

पांचमो शब्यते के० पडिवजिये शब्द वाच्येज जेनो अर्थ ते शब्द जाणवो. ते सांप्रत वस्तुना आश्रवा थकी साम्प्रतपणे एनुं नाम छे. ए नय पण ऋजुसूत्रनी पेरे अतीत अनागतने परिहारे सांप्रत वस्तु माने. अने ए पारकी वस्तु पण न माने तथा चार निक्षेपामांहे एक भाव निक्षेपोज माने. पण नाम, स्थापना, ने द्रव्य ए त्रण निक्षेपा पटादिकनी पेरे घटादि कार्यना करनार न थाय. माटे माने नही. वली ए नय ते लिंग तथा वचनना भेद थकी वस्तुनो पण भेद माने. जेम तटी ते जूदो अर्थ कहे अने तट ते जूदो अर्थ बोले. एमज वली एकवचन तथा बहुवचनादिक शब्दे भेद जाणवो. अने जे शक्र पुरंदरादिक शब्द ते पण सुरपतिप्रमुख शब्दने अभिन्न लिंग वचनपणाथकी तेनो अर्थ पण अभिन्नज कहे. तेथी ए एकार्थ जाणवो. ए पांचमो शब्दनय कह्यो.

छठ्ठो सं एटले एकीभावे शब्दनी प्रवृत्तिने विषे जे आरूढ थयो छे, प्रवर्त्यो छे ते समभिरूढ कहिये. ए नय पर्याय शब्दना जूदा जूदा अर्थ माने छे ते आवीरीतेः—घटनात् घटः स्त्रीना मस्तकने विषे अरोह लक्षण चेष्टा करे तेवारे घट तेमज कुट एटले कौटिल वाचक छे. इहां नीचे पहोलो, उपर सांकडो एवा आकारनो धरनार ते कुट. एमज उभ अने उंभ धातु पूरणार्थ छे. तेवारे कुके० पृथ्वी तेने विषे रह्यो थकोउंभके० पूरिये ते कुम्भ कहिये. जेवारे भूमिकानेविषे रह्यो छतो पाणी प्रमुख साथे पूरिये तेवारे कुम्भ कहिये. एम समस्त पर्याय शब्दनी साथे नानाप्रकारे पडिवजे अने वली एवुं कहे पण शब्दांतरे जे अभिधेय ते द्रव्यने पर्यायपणे अन्य शब्द वाच्य वस्तुरूपपणुं न पडिवजे. अने एकपणाने पडिवजे. तेथी सकल लोक प्रसिद्ध व्यवहारनो उच्छेद थाय. जेम शब्दनय लिंग वचनादिकने भेदे भेद कह्यो तेम एने पण पर्याय शब्दनो भेद अंगीकार कर्यो. ए छठ्ठो संमभिरुढनय कह्यो.

सातमो एव शब्द प्रकारनुं वचन छे ते जेहवो व्युत्पत्तिनो प्रकार तद्रूप पणे भूत के० पहोंचे ते एवंभूत नय कहिये. एवंभूत शब्द कहिये. ते साथवाने जे नय सम

थवान थाय तेने पण एवंभूत कहिये ए नय शब्दने अर्थ साथे विशेषित करेछे अर्थना वशथकी शब्दनुं निश्चितपणुं थाय घट शब्दे तत्वथकी तेज के जे चेष्टावंत शब्दना वशथकी ते शब्द वाच्य निश्चितपणुं थाय शेष ते आपणे अनिर्वेये शून्यपणा थकी न कहिये एमज पांचइंद्रिय, त्रिविध बलादिक दशविध प्राणने जे धारण करे ते प्राणीनेज संसारी जीव कहिये पण शेष प्राण धारण व्युत्पत्तिये रहित सूत्रोक्त सिद्धनेविषे आत्मा कहिये जे कारणे अतीतके० ज्ञान दर्शन सुखादिक पर्याय प्रते जाय तेथी आत्मा कहिये एवी शब्दनी व्युत्पत्ति त्यांज छे ए सात मूल नय कह्या

हवे ए नयोना भेदोनी संख्या कहेछे मूल —एक्केक्काय सयविहो, सत्तनय सया हवंति एवंतु ॥ बीउविय आएसो, पंचेव सया नयाणंतु ॥८५५॥ अर्थ —नैगमादिक जेनुं प्रथम स्वरूप कह्युं ते सात नय मूल जाणवा तेवारपछी नैगमनयना शोभेद एमज संग्रहना पण शो भेद एरीते एकेका नयना शो शो भेद करतां सात नयना सात शो भेद थायछे अने बीजोपण आदेश एटले आदेश शब्दे मतछे त्यां पंचव के० पांचज नयना शो शो भेद थायछे ते आवीरीते के समभिरूढ ने एवंभूत ए बे नय शब्दपणाथकी शब्द नयमां अवतरे तेवारे त्रण नय मली एकनी विवक्षा करिये तो पांच मूल नय थाय तेना प्रत्येके शो शो भेद करतां पांच शो भेद थाय अने अपिशब्दथकी छ शो तथा चार शो अने ब शो भेद पण थायछे ते आवीरीते जो सामान्य ग्राहि नैगम नय संग्रह ने विषे प्रक्षपिये अने शेष विशेष ग्राही नैगम जे छे ते व्यवहारमां प्रक्षपिये तेवारे सातमांथी नैगमनो नाश कर्यो तथी छ नयना छ शो भेद थाय एम ज नैगमनो नाश तथा समभिरूढ ने एवंभूत ए बे नय पूर्वे शब्द नयमां सम वतार्या छे तेथी बाकीना संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र ने शब्द ए चारमूल नयना शो शो भेद करतां चारशो भेद थाय तेमज द्रव्यार्थिक ने पर्यायार्थिक ए मूल बे नयज छे तेनी अपेक्षाये बशो भेदज थाय तेमां नैगम, संग्रह ने व्यवहार ए त्रण नय द्रव्यार्थिकमां अंतरभवेछे अने शेष ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ ने एवंभूत ए चार नय पर्यायार्थिक नयमां अंतरभवेछे अथवा सात नयना असंख्याता भेदपण थायछे जावइया वयण पहा, तावइयाहुंति नयवाया इत्यादिवचनात

वस्तु अनंत धर्मात्मक छे, तेमां एक धर्म माने बीजा धर्म न माने जेमके एकांते अनित्यज माने तेने दुर्नय जाणवा अने सर्वनय स्याद्वाद दीठा ते नित्यानित्य माने ए प्रमाण छे इति गाथा द्वयार्थ॥८५५॥ सात नयनुं द्वार समाप्त थयुं.

अवतरण – वत्थग्गहण विहाणंति एटले वस्त्र लेवानी विधिनुं एकशो ने पची शमुं द्वार कहेछे. मूल – जन्न तयट्ठकीयं, नेयचुयं नेयगहिय मच्छेत्तिं ॥ आहड पामिच्चचिय कप्पए साहुणोवत्थं ॥ ७०६ ॥ अर्थ – प्रथम वस्त्र त्रण प्रकार नाछे. एकतो एकेंद्रियना अवयवथी उत्पन्न थयां, जेम खुमो कपास थकी थयो ते जाणवो बीजा विकलेंद्रियना अवयव थकी थया एवा कौशेयादिक एटले कृमी जे जीवमा तेमांथी उत्पन्न थनारा, जेवा के रेशमादिक जाणवा. त्रीजा पंचेंद्रियना अवयव थकी निष्पन्न थयां जे कंबल लोंबडि प्रमुख वली एक यथाकृति, एटले जेमाहे सीववानुं काम पडे नही जेवुमल्युं तेवुज उपयोगमा आवे, बीजुं अल्प परिकर्म ते जेमा एकज सीवणी थाय. त्रीजुं बहुल परिकर्म ते जेमा सीवणी वणी थाय अने ते घणा कटका करीने सीवेलुं होय. इत्यादिक भेद जाणवा. ॥७०६॥

तेमा पहेलुं यथाकृत मले तो अल्प परिकर्म न लेवु. अने अल्प परिकर्म मलतुं होय तो बहुल परिकर्म न लेवु. एम वेहने अभावे बहुल परिकर्म लेवु. जेम जेम सयमनो व्याघात न थतो होय तेम तेम लेवु ए गच्छवासि जिये त्या जे न तयट्ठा के० ते वस्त्र साधुने अर्थे क्रीत एटले वेचातु मूल आपी लीधुं न होय. वली यतिने अर्थे वण्युं पण न होय. तथा नयगहिय के० जे वस्त्र आपणा पुत्र कलत्र कर्मकरादिक पासेथी छीनवी लीधेलुं न होय. वली अहड शब्दे अभ्याहृत ते स्वग्राम ने परग्रामना भेदे करी बे प्रकारनुं छे.

त्या जे हाटे वस्त्र थाय. पछी मनमां जाणे के यति वस्त्र वोहोरवा आवशे एम जाणी घेरे लावी राखे ते स्वग्राम अभ्याहृत जाणवुं. अने परग्राम अभ्याहृत ते बीजा गामथकी लावी आपे ते परग्राम अभ्याहृत थाय.

प्रामित्य ते जे बीजा पासेथी उच्छीनुं लेइ साधुने आपे इहां पिंड विशोधिना दोष समस्त. वली विशोधि कोटी अविशोधि कोटी जाणवी. त्या जे साधुने अर्थेज वस्त्र वणाव्यु होय ते अविशोधि कोटी. अने जे धोवरावबु प्रमुख साधुने अर्थे करावे ते विशोधिकोटी इत्यादिक दोष रहित जे वस्त्र होय ते साधुने लेवु कल्पे

हवे कल्पनीय वस्त्रमा पण जे वस्त्र लेता सारु नगारुं थाय ते देखाडेछे. मूल – अंजण खंजण कद्दम, लित्ते मूस भक्खिय अग्गिविदड्ढे ॥ तुसिय कुट्टिय पज्जवलीढे होइ विवागु सुह असुहोवा ॥ ७०७ ॥ अर्थ – अंजन ते सुरमो, खंजन ते दीपमल, अने कर्दम एटले कादव अथवा गाडाप्रमुखनी मली ते प्रसिद्ध छे. तेणे करी लित एटले खरडायलु वस्त्र होय, अथवा उंदरे करडेलुं होय,

थैवान थाय तेने पण एवंभूत कहिये ए नय शब्दने अर्थे साथे विशेषित करे छे अर्थना वशथकी शब्दनुं निश्चितपणुं थाय घट शब्दे तत्वथकी तेज के जे चेष्टावंत शब्दना वशथकी ते शब्द वाच्य निश्चितपणुं थाय शेष ते आपणे अभिधेये शून्यपणा थकी न कहिये एमज पाचेंद्रिय, त्रिविध बलादिक दशविध प्राणने जे धारण करे ते प्राणीनेज संसारी जीव कहिये पण शेष प्राण धारण व्युत्पत्तिये रहित सूत्रोक्त सिद्धनेविषे आत्मा कहिये जे कारणे अतीतके० ज्ञान दर्शन सुखादिक पर्याय प्रते जाय तेथी आत्मा कहिये एवी शब्दनी व्युत्पत्ति त्याज छे ए सात मूल नय कह्या

हवे ए नयोना भेदोनी संख्या कहे छे मूल —एक्केक्कोय सयविहो, सत्तनय सया हवंति एवंतु ॥ बीउविय आएसो, पंचेव सया नयाणंतु ॥८४८॥ अर्थ —नैगमादिक जेनुं प्रथम स्वरूप कह्युं ते सात नय मूल जाणवा तेवारपछी नैगमनयना शोभेद एमज संग्रहना पण शो भेद एरीते एकेका नयना शो शो भेद करतां सात नयना सात शो भेद थायछे अने बीजापण आएसा एटले आदेश शब्दे मतछे त्या पंचव के० पाचज नयना शो शो भेद थायछे ते आवीरीते के त्रण नय मली एकनी विवक्षा करिये तो पाच मूल नय थाय तेना प्रत्येके शो शो भेद करता पाच शो भेद थाय अने अपिशब्दथकी छ शो तथा चार शो अने व शो भेद पण थायछे ते आवीरीते जो सामान्य ग्राहि नैगम नय संग्रह विषे प्रक्षेपिये अने शेष विशेष ग्राही नैगम जे छे ते व्यवहारमा प्रक्षेपि तेवार सातमाथी नैगमना नाप कर्या तेथी छ नयना छ शो भेद थाय एम नैगमना ज्ञाप तथा समभिरूढ ने एवंभूत ए बे नय पूर्वे शब्द नयमा समाव्या छे तेथी बाकीना संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र ने शब्द ए चारमूल नयना शो भेद करता चारशो भेद थाय तेमज द्रव्यार्थिक ने पर्यायार्थिक ए मूल नयज छे तेनी अपेक्षाये बशो भेदज थाय तेमा नैगम, संग्रह ने व्यवहार ए नय द्रव्यार्थिकमा अंतरभावे छे अने शेष ऋजुसूत्र, शब्द समभिरूढ ने एवंभूत ए चार नय पर्यायार्थिक नयमा अंतरभावे छे अथवा सात नयना असंख्याता पण थायछे जावइया वयण पहा, तावइयाहुति नयवाया इत्यादिवचनात् वस्तु अनंत धर्मात्मक छे, तेमा एक धर्म माने बीजा धर्म न माने नमदावा अनित्यज माने तेने दुर्नय जाणवा अने सर्वनय स्याद्वाद दीवा ते नित्या माने ए प्रमाण छे इति गाथा द्वयार्थः॥८४८॥ सात नयनुं द्वार समाप्त थयुं.

अवतरण — वस्त्रग्रहण विस्तारणनि एटले वस्त्र लेवानी विधिनुं एकशो ने पची शमुं द्वार कहेने. मूल — जत्र नयछाकीयं, नेयचुय नेयगहिय मत्रेनिं ॥ आहड पामिच्चिय कण्वण मादुणोवत्तं ॥ ७५६ ॥ अर्थ — प्रथम वस्त्र त्रण प्रकार नाले एकतो एकेंद्रियना अवयवथी उत्पन्न थयां. जेम सुमो कपास थकी थयां ते जाणवो. बीजा विकलेंद्रियना अवयव थकी थया एवा कोशेयादिक एटले कुमी जे जीवमा तेओथी उत्पन्न थनारा. जेवा के रेशमादिक जाणवा त्रीजा पचेंद्रियना अवयव थकी निष्पन्न थयां जे कवल लोवड़ि प्रमुख वली एक यथाकृति, एटले जेमांहे सीववानुं काम पडे नही. जेवुमल्युं तेवुज उपयोगमा आवे. बीजुं अल्प प रिकर्म ते जेमा एकज सीवणी थाय. त्रीजुं बहुल परिकर्म ते जेमा सीवणी घणी थाय अने ते घणा कटका करीने सीवेलुं होय. इत्यादिक भेद जाणवा. ॥७५६॥

तेमा पहेलुं यथाकृत मले तो अल्प परिकर्म न लेवुं. अने अल्प परिकर्म मल तुं होय तो बहुल परिकर्म न लेवुं. एम वेवने अनावे बहुल परिकर्म लेवु. जेम जेम संयमनो व्याघात न थतो होय तेम तेम लेवु ए गच्छवासि जिये त्या जे न तयछा के० ते वस्त्र साधुने अर्थे क्रीत एटले वेचातु मूल आपी लीधुं न होय. वली यतिने अर्थे वण्युं पण न होय. तथा नयगहिय के० जे वस्त्र आपणा पुत्र कलत्र कर्मकरादिक पासेथी ठीनवी लीधेलुं न होय. वली अहड शब्दे अन्याहृत ते स्व ग्राम ने परग्रामना भेदे करी वे प्रकारनु छे.

त्या जे हाटे वस्त्र थाय. पछी मनमा जाणे के यति वस्त्र वोहोरवा आवशे एम जाणी घेरे लावी राखे ते स्वग्राम अन्याहृत जाणवु अने परग्राम अन्याहृ त ते बीजा गामथकी लावी आपे ते परग्राम अन्याहृत थाय.

प्रामित्य ते जे बीजा पासेथी उछीनुं लेइ साधुने आपे इहां पिंड विशोधिना दोप समस्त. वली विशोधि कोटी अविशोधि कोटी जाणवी. त्यां जे साधुने अर्थेज वस्त्र वणाव्युं होय ते अविशोधि कोटी. अने जे धोवरावबुं प्रमुख साधुने अर्थे करावे ते विशोधिकोटी. इत्यादिक दोप रहित जे वस्त्र होय ते साधुने लेवु कल्पे

हवे कल्पनीय वस्त्रमा पण जे वस्त्र लेतां सारु नठारुं थाय ते देखाडेछे. मूलः— अंजण खंजण कद्दम, लित्ते मूस नक्किय अग्गिविदड्ढे ॥ तुन्निय कुट्टिय पज्जवलीढे होइ विवागु सुह असुहोवा ॥ ७५७ ॥ अर्थ—अंजन ते सुरमो, ख जन ते दीपमल, अने कर्दम एटले कादव अथवा गाडाप्रमुखनी मली ते प्रसि द्ध छे. तेणे करी लिप्त एटले खरडायलुं वस्त्र होय, अथवा उंदरे करडेलुं होय,

तथा उदेइए करडेलुं होय, तथा आगमां बळ्युं होय, तूणेलु होय अथवा पाणी ये फूटता थका काकरी साथे कूटाणु होय, छिद्र पड्यु होय, वनी पक्कार के० पु राणादिक पर्याये करी एटले जीर्णपणाए जे युक्त्ते एवा वस्त्रना ग्रहण थकी विपाक जे परिणाम ते नलो अथवा नूमो जेवो होय ते विधि विशेष देखाडे छे

पहेलो जेवारे वस्त्रनो आपनार वस्त्र वहोरावंवा आवे तेवारे ते वस्त्र त्यान उखेडी जोइये जो तेने छेडे काइ सुवर्णादिक बाध्यु होय तो गृहस्थने कहे के आ गाठ उखेडी जूओ तेवारे ते गृहस्थ पातेज जोइने ते गाठमा बाधेली चीज लइ लीये अने पोते साधु देखे तो पोतेज तेने आपे यद्यपि गृहस्थने कहेता पण अधिकरण दोष थाय ते थोडु समजवु, पण जो नज कहे तो सबल उड्डाहादिक दोष प्राप्त थाय अने सुवर्णादिक न होय तो अंजनादिक जोइ गुण दोष विचारणा करे

मूल —नवनाग कए वत्थे, चउरो कोणाय दोन्नि अंताय ॥ दोकसा वट्टीउ, म ज्झेनवस्स एक्कतु ॥ ७५८ ॥ अर्थ — नवनाग वस्त्रना करिये तेमा चार खूणा, अने दोन्निके० बे छेहडा, तेमज बे नीचे तथा उपरनी किनारीना नाग अने एक मध्ये के० वस्त्रनो माहेलो नाग एरीने नवनाग करिये ॥७५९॥

मूल — चत्तारि देवयानागा, छुवेनागाय माणुसा ॥ आसुराय छुवेनागा, एगाय ण जाण रक्खसो ॥७५९॥ अर्थ —चारकुणाना चारनाग ते देवताना नाग जाण वा, बे छेडाना नाग ते मनुष्यना जाणवा बे कीनारीना नाग ते असुर देवना जाणवा अने वचमानो एक नाग ते राक्षसनो जाणवा ॥७५९॥

हवे एनु फल देखाडवा मूल —देवेसु उत्तमा लाभो माणुस्सेसु य मज्झिमो ॥ आ सुरेसु य गेलन्न, मरण पुण जाण रक्खसे ॥७६०॥ अर्थ —चार देवताना नागने विषे जो कदाचित् पूर्वोक्त अंजनादिक लाग्याहोय तो त्या उत्तम लाभ जाणवा अने मनुष्यना नागमा जा पूर्वोक्त अंजनादिक लाग्या होय तो सारूपण नहीं न मातु पण नही मध्यम फल जाणवु अने असुरना नागमा अंजनादिक लाग्यां होय तो ते वस्त्र वोहोरवा थकी ग्लानत्व रोगनी उत्पत्ति थाय अने राक्षसना नागमा अंजनादिक आवे तो मरण प्राप्ति जाणवी ॥इति गाथा पचकार्थ ॥७६०॥

अवतरण — ववहारा पचत्ति एटले पाच व्यवहारनु एकशो ने छवीसमु द्वार कहेछे मूल —आगमसुय आणा धारणाय जीयच पच ववहारा ॥ केवल मणोह चउदस, दस नव पुव्वाइ पढमाइ ॥ ७६१ ॥ अर्थ — ववहरिये जीवादिक जेणेक रीने तेने व्यवहार कहिये अथवा साधुने प्रवृत्ति निवृत्ति रूप ते व्यवहार तेना

ण जे ज्ञान विशेष तेपण व्यवहार कहिये. ते व्यवहार पांच प्रकारेछे. ते
आगम व्यवहार ते आगम्यतेके० जाणिये जेणेकरीने पदार्थोने तेने
कहिये. बीजो जे सांजलीये ते श्रुतव्यवहार जाणवो. त्रीजो जेणेकरी आ
देश आपिये ते आज्ञाव्यवहार जाणवो. चोथो धारिये ते धारणाव्यवहार
. पांचमो जीत शब्द आचार ते जीत व्यवहार जाणवो.

प्रथम जे आगम व्यवहार ते केवलज्ञानी मनःपर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चउ
र, दशपूर्वधर. अने नवपूर्वधर एनो व्यवहार ते एज छ प्रकारनो छे. तेमां प्रथम
वलीना ग्रहण थकी आलोचना केवली पासेथी लेवी केवलीने अजावे मन प
नी पासेथी आलोचना लेवी. एम पाछला पाछलाने अजावे आगला आग
ासेथी आलोचना लेवी. त्यां केवली प्रमुख जे छे ते आगम व्यवहारी समस्त
चार पोतेज जाणे, तेनी पासे गया छतां ते पोतेज अतिचार प्रगट करी आ
ना आपे किवा अन्यथा प्रकारे एवी आशंका चित्तमांहे आणे ते कहेछे.

लः—कहेहिं सव्वं जो वुत्तो, जाणमाणो विगूहई ॥ नतस्सदिति पछित्तं, वितिअ
उसोहय ॥८६१॥ अर्थः—किंवा अन्यथा प्रकारे एवी आशंका चित्तमाहे लावीने
आगम व्यवहारी पुरुष जे आलोचनानो आपनार ते आलोचना लेनारने कहे
तुं तारा सर्व अतिचार कहे पण ते जाणमाणोके० पोताना दोष सर्व जाणतो
को पण जो मायाये करी विगूहईके० गोपवी राखे तो तेने प्रायश्चित्त आपे नही.
ने वितिके० एवु कहेके अन्यत्र स्थानके जइ प्रायश्चित्तनी शुद्धि करो ॥८६१॥

मूल.—न संजरेइ जे दोसे, सझावा नय मायउ ॥ पच्चरकी साहए तेउ, मायणोउन
ाहए ॥ ८६२ ॥ अर्थः— वली जेने दोसके० अतिचार ते नसंजरइके० सांजरे
नही, चित्तमा आवे नही सझावाके० सजावेज न संजारे, परतु नयमायउके०
माया एटले कपटे करीज नथी केतो; एम नथी. तो तेवाने पच्चरकीके० केवल ज्ञान
ना धरनार ते लागेलां दूषण सर्व वर्णन करीने साहाएके० कहे, अने माया
वंतने कहे नही. केमके ते एवुं जाणे जे एने कहीश तो पण पछी व्यर्थ थशे. तेमाटे मा
यावतने कहे नही अने सजावे जेने विसर्जन थया होय पण निष्कपटी होय तेने
कहे. इहा चउद पूर्वधरने यद्यपि परोक्ष ज्ञान छे तोपण उपयोग दीधाथी जेटलुं
केवली कहे तेटलुं ए पण कहे. इहा कोइ एवु कहेशे के आगम व्यवहारी जाणे तो
तेने एटलुंज कहिये जे मने आलोयणा आपो. पछी आपणा प्रायश्चित्त ते पोता

नी मेले आपणने कहीने ते माफक आलोयणा पण आपशे, माटे आगम
हारीने लागेला दोष विस्तारीने कहेवानी जरूर नथी ॥ ८६३ ॥
एने उत्तर कहेछे के, ते रुडु कह्यु परतु आलोयणाथी घणा गुणछे ए
सम्यक् आराधना थाय अने आलोयणहारने उत्साहने अर्थे गुरु एम कहे के
वत्स, तु धन्य नाग्यवत छे के, एम मानने हणीने पाताना आत्माना हितने
थे पोतेज रहस्य प्रगट करेछे ए वात महाउर्जनछे एम कहे तेथी ते समस्त प्रक
नि शल्य थइने जे गुरु प्रायश्चित्त आपे ते दर्पवत छतो करे एम करतो थको थ
ल्प कालमां निर्वाणपद पण पामे ए प्रथम आगम व्यवहार कह्यो
हवे बीजो श्रुत व्यवहार कहेछे मूल –आयारपकप्पाई, सेस सव सुय विणिद्दिठ्ठ॥
देसतरठियाण, गूढपयालोयणाआणा ॥ ८६४ ॥ अर्थ – आचारप्रकल्प ते नि
सीथ सूत्रछे आदे जेने, एवा व्यवहारसूत्र, बृहत्कल्प, दशश्रुतस्कध, अग्यार अग,
अने नवपूर्वथकी शेष पूर्व पण श्रुतव्यवहारमाहेज छे ए सर्व विनिर्दिष्टके० कह्याछे
हवे श्रूतव्यवहारी जे थाय ते प्रगटपणे आगलाना अनिप्राय जाणवान
अर्थे तेना मुख थकी त्रणवार दूषण कहेवरावे, पण एकवार न कहेवरावे केम
के श्रुतव्यवहारी जे होय ते एवु पण न जाणे के आ जुग मनथी आलोचेछे
किंवा साचा मनथी ए आलोचेछे, एवो तेनो अनिप्राय जाणी शके नही तेथी ए
कज वार न कहेवरावे पेहेली वारे कहे छते एम कहेके मने निद्रा हती माटे सान
ल्युनही तेथी बीजीवार कहेवरावे तेवारे फरी कहेके मे बराबर हैयामा धार्यु
नही माटे फरी त्रीजीवार कहेवरावे ते समये बरोबर कहेतो पछी ए निर्मायछे, अने
जो विपरीत कहेतो समजवु के आ परिणामे करी कुटिलछे त्यारे तेना पाच दिवसह
वास कर्यो छतां आ मायावीछे के नथी ? तेनी खातरी करी जो मायावी छे एम जणाय
तो अथवा जो जुदु कहेतो प्रथम तेने जुदानु प्रायश्चित्त आपी पछी आलोयणा आपे
हवे त्रीजु आज्ञाव्यवहार कहेछे देसतरके०जे बेहु आचार्य अने सूत्र अर्थना आते
थवा थकी महागीतार्थ होय, पण जघावलना क्षीणपणाथकी विहारक्रम करी
शकता नथी, अने दूर देशातरे रह्या छे पण माहोमाहे मली शकता नथी अने
- बेमा एक प्रायश्चित्त लेवा वाछे छे, अने तेवा गीतार्थ शिष्यने अनावे धारणा
कुशल अगीतार्थ शिष्यने सिद्धांतनी नाषाये गूढार्थ अतिचार आसेवनाना पद
ही बीजा आचार्य पासे मोकले पछी ते आचार्य तेना अपराध श्रवण करी
य, क्षेत्र, काल, नाव तथा सघयण धृति बलादिक विचारी पोते त्या जाय

अथवा तथाविध गीतार्थ शिष्य तेनी साथे कहेवरावी मोकले, अथवा तेना आवे जे आव्योछे तेनेज फरी अतिचार विशोधि कहीने मोकले, ए आज्ञाव्यवहार जाणवो.

हवे चोथो धारणाव्यवहार कहेछे. मूल.— गीयछेणं दिन्नं, सुद्धि अवराहिऊण तह चेव॥दिंतस्स धारणा तह, उद्धियपयधरण रूवावा॥७६५॥ अर्थः—कोइक गीतार्थ संविज्ञ आचार्य कोइएक शिष्यादिकने कोइक अपराधने विषे द्रव्यादिक चारे जोइने जे विशुद्धि दीधि होय, पछी ते शिष्य गुरुनी आपेली शुद्धि मनमांहे धारीने बीजा कोइकने तेवाज अपराधे तेज शुद्धि आपे. एम देता थकां धारणा व्यवहार कहेवाय. तहके० तेमज उद्धतपद धरणरुप अथवा धारणा ते आवी रीते. कोइएक वेयावच्चनो करनार शिष्य छे, पण ते समस्त छेद श्रुत योग्य नथी, ते वारे तेने आचार्य प्रसाद करीने केटला एक प्रायश्चित्तना पदनो उद्धार करीने कहे, पछी ते पदने ते शिष्य धारी राखीने अन्यने तेज पद माहेली आलोयणा आपे. ते धारणाव्यवहार कहिये. ॥ ७६५ ॥

हवे पांचमो जीत व्यवहार कहेछे. मूलः—दव्वाइ चितिऊणं, संघयणाईणि हाणिमासज्ज ॥ पायच्छित्तं जीयं, रूढंवा ज जहिंगछे॥७६६॥अर्थः—जे अपराध उपन्याथी पूर्वे साधुओ घणुं तप करीने तेनी शुद्धि करता हता तेज अपराध उपन्या छतां सांप्रत एटले हमणाने काले द्रव्यादिक चारने चिंतवी संघयण धृति तथा बलनी हाणी जाणी जे योग्य तपनुं प्रकार प्रायश्चित्त आपे, तेने समय जाणाये जीत एवो गीतार्थ महंत पुरुषो कहे छे. अथवा जे प्रायश्चित्त जे आचार्यना गछमां सूत्रथकी अधिक न्यून प्रवर्त्युं होय अने ते बीजा अन्य घणा गीतार्थोने मान्य होय तेने रुढ जीत व्यवहार कहिये. ए पाच व्यवहार मांहेला कोइ पण व्यवहारे सहित गीतार्थ थाय. तेनी पासेथी प्रायश्चित्त लहिये, परंतु अगीतार्थ पासेथी प्रायश्चित्त लेवा थकी दोषनी उत्पत्ति थायछे, उक्तंच, अगीउ नवियाणाइ, सोहि चरणस्स देइऊणहियं ॥ तो अप्पाण आलोयगंच पाडेइ संसारे ॥ १ ॥ इतिषट्गाथार्थः ॥७६६॥

अवतरणः— अहाजायंति एटले पाच प्रकारना यथाजात कहिये. तेनुं एकशो ने सत्तावीसमुं द्वार कहेछे. मूलः— पंच अहाजायाई, चोलगपट्टो तहेव रयहरणं ॥ उण्णिय खोमिय निस्सेज्ज, जुअलयं तहय मुहपत्ती ॥७६७॥ अर्थः—यथाजात पणु जन्म श्रमण पणा आश्रयी ने जाणवु. त्या जेवारे चारित्रनुं ग्रहण करे तेवारे ए पांच वानां थाय ते कहेछे. पहेलो चोलपटो, ते प्रसिद्धछे तेमज बीजो रजोहरण, त्रीजो उर्णिक, एटले ऊनसंबंधी, चोथो क्षौमीक एटले रुतसंबंधी अने नसीजनो युगल तेमां एक

नसीज तो उनिमाहे थाय. दांमी उपर त्रण विटलीजेनीवले ते पहेजी नसीन अने बीजी हाथने त्रीजे नागे थ्रापाम दसीये करी सहित ते रजोहरण कहिये थागल दामीये दसी न हती ते उपरे वली बीजी सूत्र नसीज ते एक हाथ फाफेरु प्रमाण थायामे थाय ते त्रीजी जाणवी अने ते उपर एक हाथ अने चार अगुज प्रमाणे पणी वीटली वले ते वेसवाने काम आवे तेने चोथु पादप्रोठन रूढीथी कहिय तेमज पांचमी मुहपति ते मुखने ढांके जे पोतके॰ वस्त्र ते मुखपोतिका एएक रत ने चार आंगल प्रमाणनी जाणवी ए पांच यथाजातकह्या ॥ ८६७ ॥

अवतरण – निसिजागरणविहत्ति एटले रात्री जागरण करवानी विधिनुं एक शन अवतारीसमु द्वार वखाणेछे मूल –सव्वेवि पढमजामे, दोन्निवि वसहाणआयमा जामा ॥ तइउ होइ गुरूण, चउत्थ सव्वे गुरुसुयइ ॥८६८॥अर्थ –सर्व साधुउ पेहेना पहारने विषे सज्झायादिक करतां जागे, अने पेहेली रातनो बीजो एक पहोर अने पाछली रातना पहेना पहार, एवे पहोर ते वृषभना जाणवा त्यां जे वृषभनी परे वृष न एवा साधु गीतार्थ तेमां जे सूत्रना धरनार होय ते शयन करे, अने अर्थना जा णनार ते जागे पन्नवणादि सूत्रार्थे परावर्त्तन करे त्यां त्रीजे पहोरे वृषभ शयन कर, तेवारे गुरुनु जागवु थाय ते वखत गुरु उठी सूत्रार्थ गुणे, चिंतवे अने चोथा पहोरे ना वनी सव्वेविके॰ सर्व उठीने वैरात्रिक एटले परोढीयानो काल मइण करी कालिक श्रुत परावर्त्त, तेवारे वली गुरु शयन करे इहां ए कारणछे कु वनाते निद्राप्रीणित नेत्रथका गुरु भव्यजीवाने उपदेश प्रमुख आपी शके नहीं, माटे ते गुरु चोथे पहोर शयनकरे ॥ ८६८ ॥

अवतरण.– अजोयणदायगन्नसत्ति एटले आलोयणाना देनार जे गुरु तेन एना इकोतेरसमु द्वार कहेछे मूल –सल्लुद्धरणनिमित्त गीयस्सण्णेस लाव उक्कोस॥जोयण सयाइ सत्तउ, बारसवासाइ कायवा॥८६९॥अर्थ –मल्लुधर णनिमित्तके॰ सल्लउद्धरवासारु आलोयणा लेवाने अर्थ गीतार्थ गुरुनी गवेषणा करवा लाउ नाग निस्तनु ते उत्कृष्ट क्षेत्र सातशे योजन सीम फरवु अने वरस बा श्री बारवर्ष सीम शोध करवी एम आलोचना लेवाने अर्थे गुरु शोधवा सारु प्र मण करता कदापि मरण पामे तोपण ते आराधक कहवाय उक्तंच आलोय ण परिणउ, सम्मं संपट्ठिउ गुरूसगासे ॥ जइ अंतरावि कालं करेज्ज आराहउ तहवि ॥ १ ॥ हवे जो समस्त गुण सहित गुरु न पामे तो संविज्ञ गीतार्थ मा नने पास आलोयण कहवी जे कारण पणा माटे कह्युंछे के अपवाद पद गीता

ये संविज्ञ पाक्षिक सिद्ध पुत्र प्रवचन देवताने अन्नावे सिद्धने पण आलोचना आपवी. परतु सशल्य मरणते संसारनुं कारण छे. उक्तंच. संविग्गोगीयच्छे, असई पासछमाइ सारुवी ॥ इतिगाथार्थः ॥ ७६९ ॥

अवतरण — गुरुपमुहाण कीरइ असुद्धसुद्धेहिजेत्तियं कालंति एटले गुरुजे आचार्यादिक तेनी अशुद्ध ते आधाकर्मादिक दोषे दूषित अने शुद्ध ते समस्तालीस दोषे रहित एवा अशनादिके जेटला काल सुधी प्रति जागरणा करीये तेना अर्थनुं एकशो ने त्रीशमुं द्वार कहेछे. मूल — जावज्जीवंगुरुणो, सुद्धमसुद्धेहिवाविकायव्वं ॥ वसहे बारसवासा, अट्ठारस भिरकुणो मासा ॥ ७७० ॥ अर्थ — जावजीव सुधी चारे अशनादिक औषध प्रमुख सुजतां लेवां अथवा ते न मले तो असुजता अहारादिक पंचक परिहाणे लेइने पण समस्त गछने आधारभूत सूत्रार्थना निर्णयना करनार एवा श्रीआचार्यनी प्रति जागरण जाव जीव सुधी श्रावके करवी.

एमज वृषभके० उपाध्यायनी बारवर्ष लगी प्रति जागरणा करवी. केमके एटला काल पछी बीजो वृषभ गछभार धारक थाय. तेमज सामान्य साधुनी अढार मास प्रति जागरणा करवी. पछी ते अनशननुं ग्रहण करे. ए रोगादिक कारणे प्रति जागरणा कही. अन्यथा आरोग्य शरीर छता न करवी, ॥७७०॥ए व्यवस्था व्यवहार नाष्यने विषे सामान्य ग्लाननी क्रियाने अधिकारे कहीछे, तेज कहेछे.

उक्तंच छम्मासे आयरिउं, कुलंच संवछराइं तिन्नि भवे ॥ संवछरगणोखलु, जावज्जीव भवे सघो अर्थ.—इहा ए भावछे के छ महीनासुधी आचार्य चिकित्सा करावबा वाछे. पछी अनशन लइ शके तो ले अने एटलामां साजो न थाय तो ते कुलने आपे. पछी ते कुल तेनी त्रण वर्ष परिचर्याकरे. तेम छता पण निरोगी न थाय तो वली संवछर सीम तेनी गण परिचर्या करे. तेथी पण निरोगता न थाय तो ते गण सघने आपे पछी ते सघ तेनी जाव जीव पर्यंत परिचर्या करे. इतिगाथार्थ

अवतरण — उवहिधोयण कालोत्ति एटले उपधि धोवाना काल माननुं एकशो ने एकत्रीसमुं द्वार कहेछे मूल —अप्पत्तेवि अवासे, सव्वं उवहिं धुवंति जयणाए असईएउदगस्सउ जहन्नउ पायनिज्जोगो ॥ ७७१ ॥ अर्थ.—अप्पत्तेके० वर्षाकाल आव्याविना जो पाणीनो योग मलेतो सव्वके०सर्व उपधि जेटलुं उपकरण थाय. ते जयणाये करीने धोवु अने उदकने अन्नावे जघन्यथी पात्रानां वस्त्र ते तो जरूर धोवाज.

इहा विशेष देखाडेछे मूल.— आयरिय गिलालाणं, मइलामइला पुणोवि धोइज्जा ॥ माहुगुरूण मवन्ना, लोगमि अजीरणं इयरे ॥ ७७२ ॥ अर्थ.— आचार्य,

सिद्धांत अने अर्थना वखाणनार अनेक गुण सहित होय, जेमनी पासे देशनादिक सांनळवा सारु घणा लोक आवे, एना उपलक्षण थकी उपाध्यायादिक पण लइए एवाने जो मलीन वस्त्र होय तो तेथी लोकमां अप्लाघा थाय. तेमज ग्लानने मलीन वस्त्रना योग थकी टाढ वापराने योगे शीत उपजे, तेथी आहार पाचक थाय नही घणी रोग वृद्धि थाय ए कारणथकी वस्त्र मलीन होय तो अवर्णवाद टाळवाने अर्थे वस्त्र धोवा जोइये शेष यतिना वस्त्र शेष काले धोवा थकीप्राणीना विनाश तथा बकुश पणानो संनव थाय इत्यादिक दूषण जाणी धोवा नही एमकोइ कहेशे तो वर्षाकाल आव्या थका पण ए दोष छेज एटले मूलथी धोवाज नही.

तेना उत्तर कहने के त्यां जो न धाइये तो वर्षा काले मलने योगे फूलणी थाय तथी घणा दूषण लागे अने श्रीजिनेश्वरनी आज्ञा पण एमजछे यद्यपि प्राणीउनु उपमर्द थाय तोपण जे सूत्रना वचन मान्य करी सूत्रोक्तमार्गे प्रवर्त्तता तेना जपणाये प्रवर्त्तनारने दूषण नथी जाजयमाणस्सजने इत्यादि जगवत जाणे इति गाथा द्वयार्थे ॥ ८७२ ॥

अवतरण — नोयणनायत्ति एटले नोजनना नागनु एकशो ने बत्रीसमुं द्वार कहेने मूल — बत्तीस किर कवला, आहारो कुच्छिपूरउ नणिउ ॥ पुरिसस्स महिलियाए, अठावीस नवे कवला ॥ ८७३ ॥ अर्थ — बत्रीश कवल ते निश्चे ए मध्यम निरूत्रो एटले कोइ दरिद्री घणु खाय अने कोइ अल्प आहारना धणी थोडा कवल करे, तथी इहां ए कूखना पूरनार प्रमाण कह्या ते पुरुषने प्राण करन अने महिलियाए० स्त्रीने अठावीस कवल प्रमाण थाय ॥ ८७३ ॥

हवे एना नाग आश्री गत थाय कहने. मूल — अद्धमसणस्स सवंजणस्स कुज्जा दवस्स दो नाए ॥ वायपवियारणठा छप्नाये कणयं कुज्जा ॥८७४॥ अर्थ — छ नाग उदरना करी तमाह अर्ध एटले त्रण नाग तो अशन मग कूर प्रमुखना तथा सव्यंजनस्स० सालणा अने शाक करी सहितना कुज्जा० करवा अने द्रव्य० पाणीना बे नाग करवा, तथी वायुना प्रतिचार एटले संचारवा नने अर्थ एक नाग ते उणा करवा ॥ ८७४ ॥

हवे ए गत कालविशेषे देखाडे छे मूल — सीउ उसिणो साहारणोय कालो तिहा मुणेयव्वो ॥ साहारणंमि काले, तत्थाहार इमा मित्ता॥८७५॥अर्थ — शीत उष्ण साधारण एवा कालना बहारर्यो काल त्रण प्रकार छे त्यां साधारण कालने विषे आहारनो ए मात्रा कहीछे ॥ ८७५ ॥

मूलः—सीए दवस्स एगो, जत्ते चत्तारि अहव दो पाणो॥उसिणे दवस्स डुन्नी, तिन्नि विसेसाउ जत्तस्स ॥ ७७६ ॥ अर्थः— अति शीतकालनेविषे दवस्सके० पाणीनो एक जाग, अने जत्तेके० जक्तना चार जाग, मध्यम शीतकालनेविषे पाणीना बेजाग अने जक्तना त्रण जाग, तेमज मध्यम उष्णकालनेविषे पाणीना बे जाग अने जक्तना त्रण जाग, अति उष्णकालनेविषे पाणीना त्रण जाग अने जक्तना बे जाग मलीने पांच जाग जक्त अने पाणी, एणे पूर्णकरी बहो जाग वायुसंचारने अर्थे मुकवो ॥ ७७६ ॥

हवे अवस्थित जाग कहेते. मूलः—एगो दवस्स जागो, अवठिओ जोयणस्स दो जागा, वड्ढंति वहायंतिव दोदो जागाउ एक्केक्के ॥ ७७७ ॥ अर्थ.— एक इव्य एटले पाणीनो जाग,तथा अवस्थित निश्चित जोजनना बे जाग, अने बीजा बे जागठे ते वधे, अने हायंतिके० घटे एटले पानकमां वधे तो जोजनमां घटे अने जोजनमां वधे तो पानकमां घटे. इति गाथा पंचकार्थ. ॥ ७७७ ॥

अवतरणः— वसहिसुद्धित्ति एटले वस्तिजे उपाश्रय तेनी सुद्धिनुं एकशो ने तेत्रीशमुं द्वार कहेठे मूल.— पठीवसो दो धारणाउ चत्तारि मूलवेलीउ ॥ मूलगुणेहि विसुद्धा, एसा हु अहागडावसही ॥७७८॥ अर्थ.— पृष्टीवंस शब्दे आमसर कहिये, अने दोधारणा शब्दे थुणी जेना उपर आमसर धरायठे. तेवी बेथूणी जाणवी. अने वली चत्तारिके० चारे खूणे मूलवेलिउके० न्हानी थूणीओ चार होय. ए सात वानां गृहस्थे पोताने अर्थे कस्या होय तो मूलगुणविशुद्धि कहिये. अने जे गृहस्थ साधु आश्रि यतिने उद्देसे करे ते वस्ति निश्चयकी आधाकर्म कृत थाय.

हवे उत्तर गुणविशुद्धि कहेठे मूलः— वसग कडगो कंबण, ठायण लेवण डुवारजूमीय ॥ परिकम्म विप्पमुक्का, एसामूलुत्तरगुणेसु॥ ७७९॥ अर्थ.—उत्तरगुण बे जेदे ठे. एक मूलोत्तरगुण अने बीजा उत्तरोत्तरगुण. त्यां प्रथम मूलुत्तरगुण ते जे न्हानी थुणी उपर आडी आपिये ते वसग कहिये. अने आमा वरा आपिये ते कडग कहिये. वली उपर बांधवाने अर्थे काब आपिये ते कंबण, तथा ठायण ते उपर आठादन करवासारु जे माजादिक शिण आपिये; ए सर्वने ठादन कहिये. अने उपर गारा प्रमुख साथे लेपन एटले लीपण करवुं, तथा द्वार पठवाडे ढांकवा सारुं नानु मोटुं बारणानुं करवुं. पठी जूमीके० उंची नीची जूमी जागीने आगणुं समुं करवु. ए सात मूलोत्तरगुणनी परिक्रमणाये रहित उपाश्रय ते मूलोत्तर गुणनेविषे विशुद्धि कहिये. ॥ ७७९ ॥

र्व काम गुणित आहार लिये. ते वार पठी वीजा चार वर्ष सीम. वली विचित्र तप करे परतु पारणे विगइ रहित निवी करे, उत्कृष्ट रस वर्जे. ती वे वर्ष लगी चतुर्थ करे. पारणे आंविल करे. एवी रीते दश वर्ष पुरां ठी वे वर्षमां जे करे ते कहेछे. ॥ ८८२ ॥
।.– नाइविगिठोय तवो, ठम्मासे परिमियंच आयामं ॥ अवरेविय ठम्मासे, गिठं तवो कम्मं ॥ ८८३ ॥ अर्थः– हवे अग्यारमा वर्षना ठ मास सुधी च ाट तप करे, अने पारणे आंविल करे. परंतु कांइक ऊणो आहार लिये. व ागला ठ मासमां अष्टम, दशम अने द्वादशादिक तप करे अने पारणे आंवि पूर्ण करे. एटले अग्यार वर्ष पूरण थाय. ॥ ८८३ ॥
हवे वारमा वर्षनी करणी कहे ठे. मूलः– वासंकोडी सहियं, आयामं कट्ठु ाुपुवीए ॥ गिरिकंदरंच गंतुं, पाउवगमं पवज्जेइ ॥ ८८४ ॥ अर्थः– वासंके० मा वर्ष सीम कोटीसहित निरंतर आंविल करे. जे कारणे निसीथनी चूर्णि कह्यु ठे. डुवालसमंवरिसं निरंतरहायमाणं, उसिणोदएण आयंविलं करेइ कोमीसहियं नवति जेणं आयंविलस्स कोडी कोडीएमिलइत्ति. एक आचार्य ती एम कहेछे के वारमे वर्षे चतुर्थ करीने पारणे आंविल करे, इहां वारमा वर्ष वंधी घणा मत ठे; परंतु ग्रंथगौरवना नय थकी इहां लखता नथी. ॥ ८८४ ॥
हवे वारमे वर्षे आंविल करे तेवारे नोजननो कवल न्यून करतो ज्यां सीम ठे हलो एक कवल थाय त्यां सीम करीने पठी ते कवलमां पण कवलना कणिया ठंठा करतो जाय.ते ज्यां सीम एक सीथे एटले एक कणीये आवे त्यां सीम जाणवी. एनुं उदाहरण कहेछे. जेम दीपकमां समकाले तेल ने वाटनो क्षय थाय तेम इहांपण शरीर अने आयुष्यनो क्षय समकाले थाय.
फरी वारमा वर्षना जेवारे ठेहेला चार महिना रहे तेवारे एकांतरे तेलनो कोगलो नरी घणो वखत मुखमांहे राखी राखमांहे नाखि दिये. पठी उन्हा पाणी साथे कोगलो करे. जो एम न करे तो ठेहेडे मोढुं लुखुं थाय मिलीजाय अने तेथी नवकार मात्रनो उच्चार न थाय. एरीते वार वर्ष संलेषणा करी पठी गिरिशब्दे पर्व त तेनी गुफामां जइने अथवा षट्काय जीव रहित एवा एकांत स्थानके जइ त्यां पादोपगमने नक्त परिज्ञाइ अथवा गिनी मरणादिक पडिवजे. इहा मध्यम थकी जे एक वर्ष कह्यो ते एकवर्षना वार महिना थाय; त्या पण वारवर्षनी क्रिया ते महिनाउने अनुक्रमे वार महिनामाज पूरण करे. ठ मासे वार पक्ष जाणवा.

अवतरण – वसहेण वसहिगहणंति एटले ग्रामादिकने विषे उपाश्रय लेवु ते वृषभ ने आकारे लेवु तेनु एकशोने पांत्रीसमु द्वार कहेछे मूल – नयराइएसु धिप्पइ, वसही पुव्वामुह ठविय वसहं ॥ वामकडीइ निविठ्ठ, दीहीकय अग्गि मिक्करं ॥७७५॥ अर्थ.–नगरादिकने विषे जे वस्ति एटले उपाश्रय लेवु ते पूर्वाभिमुखे वेठना वृषभ अने मावे पासे कुक्षिना जोरे निविष्टके० रह्योछे वली दीर्घपणे जनाइनां जेनो आगलनो एक पग करेलो होय एवी भूमिनी कल्पना करी उपाश्रय लेवु

एवी वस्ति लेवा थकी जे फल थाय ते देखाडेछे मूल – सिंगक्कोडे कलहो, ठाणं पुण नेव होइ चलणेसु ॥ अहिठ्ठाणे पुटरोगो पुछम्मिय फेडण जाण ॥७७६॥ मुह मूलम्मिय चारी, सिरेयकउहेय पूयसक्कारो ॥ खंधे पिठ्ठीयभरो, पुट्टम्मिय धायउं वसहो ॥ ७७७ ॥ अर्थ – सींगडाने स्थानके वेसता थका साधुने माहोमाहे क्लेश थाय अने ते स्थाने यतिने वसवु पण न थाय एमज चरणने विषे तथा अधिष्ठान एटले पश्चिम गुरु प्रदेशने विषे वसता यतिने पेट रोग थाय अने पुछडानेविषे वसतां फेडणके० उपाश्रयनु पडवु थाय एटले उपाश्रय तूटी पडे एम तु जाणके० जाण ॥७७६॥ मुहमूलम्मिके० मुखस्थाने वस्ता थका चारे आहारादिकनो घणो लाभ थाय सिरेके० वली सिंगडानी वचाले अने ककुद थूनी त्या जो वसे तो पूजा वस्त्रादिकनो सत्कार, अन्युत्थानादिक थाय तथा कांधे अने पुठने स्थानके वसता कां भर एटले आवता जता यतिओनी वस्तिए व्यास थाय अने पेट स्थानके वसता थकां जेम वृषभ धरायो होय एटले खुब खाइने पेट भर्यु होय तेम यतिपण आहारादिके तृप्त थको रहे एरीते कल्पना करीने उपाश्रयमा रहवु इतिगाथात्रयार्थ

अवतरण – उसिणस्स फासुयस्स, जलस्स सच्चित्तया कालोत्ति एटले उष्ण अने प्रासुक जल ने सचित्तपणाना कालनु एकशो ने छत्रीसमु द्वार कहेछे मूल – उसिणोदग तिदंडु, क्कलिय फासुयजलंति जइकप्प ॥ नवरि गिलाणाइ कए पहरतिगोवरि वि धरियव्व ॥ ७७८ ॥ अर्थ – उष्ण एटले ज्या त्रण उकाला वाल्या होय, तेमा पहेले उकाले थोडाक जीव प्रासुक थाय, पण घणा रही जाय अने बीजे उकाले घणा प्रासुक थाय अने थोडाज सचित्त रही जाय तथा त्रीजे उकाले तो सर्व जीव अचित्त थाय परंतु एवा त्रण उकाला वाल्या विना यतिने पान अग्राह्यछे अने प्रासुक ते जे स्वकाय परकायादिक शस्त्र परिणाम थया एवा यतिने कल्पनीय होय, ते त्रण पहोर सुधी राखवु पण उपरांत कालातिक्रांत दोषना स

जव थाय माटे न राखवुं. कदाचित अपवादे राखे तो नवरके० एटलुं विशेषछे के ग्लानादिकने अर्थे त्रण पहोर उपरांत पण राखवुं. ॥ ८८८ ॥

मूलः— जायइ सचित्तया से, गिम्हंमि पहरपंचग स्सुवरिं ॥ चउपहरुवरि सिसिरे, वासासु पुणोति पुहरुवरिं ॥ ८८९ ॥ अर्थः— गिम्हम्मिके० ग्रीष्मकाल उनालाने विषे अतिरुक्ष पणाने लीधे पांच पहोर उपरांत ते पाणी सचित्त थाय. अने सिसिरेके० सीतकालने विषे कालना सस्निग्धपणा थकी चार पहोर उपरांत सचित्त थाय. अने ए कहेला काल पछी राखवुं पडे तो तेमां खार नाखीने राखवुं के जे थकी ते सचित्त न थाय. इति गाथा द्वयार्थ ॥ ८९ ॥

अवतरणः— तेरिच्छीउ माणवीउ देवीउय तिरिय मणुयदेवाणं जगुणातय मत्ताहियाउत्ति एटले तिर्यंच, मनुष्य, अने देवतानी स्त्रीउ ते जेना थकी जेटला गुणी अधिकछे तेनुं एकशो ने साडत्रीसमुं द्वार कहेछे. मूलः— तिगुणा तिरूवअहिया, तिरियाणं इत्थिया मुणेयव्वा ॥ सत्तावीस गुणा पुण, मणुयाणं तदहिआ चेव ॥ ८९० ॥ वत्तीसगुणा वत्तीसरूव, अहिआय तहय देवाणं ॥ देवीउ पन्नत्ता, जिणेहिं जिअरागदोसेहिं ॥ ८९१ ॥ अर्थः— त्रिगुणा एटले त्रणरुपे अधिक तिर्यंच थकी तिर्यंचनी स्त्री जाणवी. सत्तावीश गुणी सत्तावीशे अधिक मनुष्य थकी मनुष्यनी स्त्री जाणवी. ॥ ८९० ॥ वत्रीश गुणी वत्रीशे अधिक देवतायकी देवतानी स्त्री जाणवी, एरीते राग द्वेषना जीतनार श्री जिनवरे कह्युछे. इतिगाथा द्वयार्थ.८९१

अवतरणः— अछेरयाण दसगंति एटले दश आश्चर्यनुं एकशोने आडतरीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—उवसग्ग गप्नहरणं, इत्थीतित्थं अन्नाविया परिसा ॥ कण्हस्स अवरकंका, अवयरणं चंदसूराणं ॥ ८९२ ॥ अर्थ.— उपसृज्यतेके० धर्म थकी प्राणीने चलायमान करीये. इएके० एटला माटे उपसर्ग कहिये. देवमनुष्यादिकना करेला उपद्रव ते ज्यां श्रीतीर्थंकर नगवान विहार करे त्यां सवाशो योजनमांहे रोग मारी नय प्रमुख उपशमावे. समस्त सुर नर नागेंद्रने वंद्य एवा श्री महावीर परमेश्वर. तेना छद्मस्थ कालने विषे अने केवली कालने विषे. जे प्राकृत गोवालिया प्रमुख तेणे पण महोटा मरणांत उपसर्ग कर्या. ए प्रथम आश्चर्य जाणवुं.

वीजुं. एज श्री महावीर नगवानने देवानंदाना उदरमांथी व्यासी दिवस व्यतिक्रमे थके इंद्रना आदेशथकी हरणीगमेषी; देवे गर्न हरण करी त्रिसला राणीनी कुखे संक्रमाव्यो. ए पण वीजुं आश्चर्य जाणवुं.

त्रीजुं. इत्थी तित्थंके० स्त्रीने तिर्थंकरपणुं उपन्युं एटले इहां ए नावछे के ती

पछी घेर आवी प्रधाने आत्रेयिकानामे परिव्राजिकाने बोलावी सर्व वात समजावी वनमालानी पासे मोकली. तेपण त्यां जइ जुएछे तो वनमाला पण विरहविव्हल थकी मुखे निश्वास नाखती क्षणेक बेसे, क्षणेक उठे, क्षणेक पडे एरीते महा विरहणी देखी तेने ते परिव्राजिका केहेवा लागी के हे वत्से, तुं आज एम दुःखितके म देखायछे? ताहरु दुःख मने कहे तो हुं ते दुःखथी तने पार उतारुं. ते सांभली वनमालाये गुह्यनी वात कही. तेवारे परिव्राजिका बोली के हुं तने राजानी साथे काले मेळवीश, तुं कांइ चिंता करीश नही, पछी ते परिव्राजिकाये हर्षवंत थकी त्यांथी जई सर्व वात प्रधानने कही. प्रधाने जई राजाने सर्व वृत्तांत संभळाव्यो.

तेवार पछी प्रभाते परिव्राजिका वनमालाने राजा पासे तेडी आवी. राजाये हर्षवंत थइ अंतःपुरमां तेने राखी अने तेनी साथे ते पंच विध विषय सुख भोगववा लाग्यो. हवे वीरककुविंद घेर आव्यो ते वारे तेणे स्त्रीने दीठी नही. पछी पडोसी प्रमुखने पूछतो थको भार्याना विरहथी घेलो थयो थको आखा गाममां फरतो फरतो एक दिवसे राजाना प्रासाद नीचे आवी उभो रह्यो. तेवामां राजा अने वनमाला ए बन्ने जणां पण गोखमा आवी बेठां. राजाये वीरककुविंदने देखीने मनमां विचार्युंजे में अत्यंत लोकविरुद्ध अनार्यकार्य कीधुं. माटे मने धिक्कारछे. एम मनमां घणीज पोतानी निंदा करवा लाग्यो. तेवामां अकस्मात् उपरथी वीजळी पडी तेथी बेउ जणां शुभ ध्याने मरण पामि हरिवर्ष क्षेत्रे युगलिया पणे उपन्यां. त्यां समस्त मनोवांछित कल्पवृक्ष पूरण करेछे तेथी सुखे रहेछे.

पछी वीरककुविंद ते बेहुनुं मरण जाणी अज्ञान तपस्या करी सौधर्म देवलोके किल्बिषया देवमां उपन्यो. अवधिज्ञाने ते युगलने देखी मनमां चिंतववा लाग्यो के ए युगलिया इहां तो मरशे नही अने ज्यारे मरण पामशे तेवारे पण देव लोके जाशे. माटे एने इहांथी उपाडीने अन्य स्थानके लइ जाउं. एम चिंतवी त्यां थकी अपहरण करी चंपानगरिये ते युगलने लाव्यो. त्यां राजा अपुत्रीउ मरण पाम्यो हतो तेथी ते देव, त्याना लोकोने केहेवा लाग्योके हुं तमारा वास्ते राजाने लाव्योछुं. एने मांस मद्यनो आहार करावजो. एम कही तेने राजपणे स्थापन करी ते देव पोतानी शक्तिये करी तेमनुं आयुष्य तथा देह मान घटाडीने पोताने स्थानके गयो. पछी ते युगल थकी हरिवंश कुलोत्पत्ति थइ. ए आश्चर्य जाणवुं.

सातमुं पातालवासी चमरेन्द्रनो उत्पात एटले उंच जवुं थयुं. ते आश्चर्य भरतक्षेत्रे विभेलनामा ग्रामने विषे पूरणनामे महा धनाढ्य [illegible]

क दिवसे रात्रे चितववा लाग्यो के, मे पूर्वभवे पुण्य कर्यांछे, तेथी हमणां थव त ऋद्धिनो धणी महासुखी थयोछु हवे गृहवास गमी तपस्या करु तो वली न वातरे विशेष फल पामु. एवु चितवी प्रभात समये स्वजन सबधीने पूछी पोता नो पुत्र पाटे स्थापी प्राणायाम नामा तापसी दीक्षा लेइ ते दिवसथकी जावजी व लगी छठ तपस्या करवानी प्रतिज्ञाकरी अने पारणु करवाने दिवसे एक लाक डानो चारपुडो गमडो राख्यो ते गमडामा मध्यान्हसमये फरी भिक्षा लेइ तें मांयी पहेला पुडमा पडेली भिक्षा पथीउने आपे, बीजा पुडमा पडेली भिक्षा काग प्रमुख पक्षिउने आपे, तथा त्रीजा पुडमा पडेली भिक्षा जलचर मछ प्रमुख जी वोने आपे अने चोथा पुडमा पमेली भिक्षा पोते रागद्वेषरहित थको आरोगे एरीते बार वर्ष पर्यंत तपस्या करी अते मासनी सलेषणाये काल करी चमरचचा राजधानीने विषे भुवनपति देवोनो इद्र चमरेद्र पणे उपन्यो ते पोताना उप र सौधर्म इद्रने देखी आमर्ष थकी देवोप्रत्ये बोल्यो के कोण दुरात्मा मारा मस्तकउ पर रहीने शोभेछे? ते समये देव बोल्या के, पूर्व जन्मने विषे सपादन करेला पुण्ये क री सर्वना करता अतिशय छे समृद्धि अने पराक्रम जेनु एवो आ सौधर्माधिप छे ते सांभली अतिशय क्रोधयुक्त थई बोल्यो के मारा परिवारे मारु जो पण निवारण कर्यु तो पण युद्ध करवाने माटे इछा करनारो हु अपराध करनारा आ इद्रने शिक्षा करीश एवु बोली हाथमां परिघ धारण करी विचार करवा लाग्यो के आ इ पण प्रकारे ते इद्रे मारो पराभव कर्यो छता हु कोने शरणे जाउ? एवा विचा र करी सुसुमारनगरने विषे प्रतिमास्थित श्री महावीरनी समीप जई वदनपूर्वक बो ल्यो के हे भगवन्, तमारा प्रसादथी हु इद्रने पण जीतीश ए प्रमाणे प्रार्थना करी लाख योजन प्रमाण विस्तीर्ण शरीर करी परिघायुध फेरवता गर्जना करी देवोने त्रासउत्पन्न करतो गर्व करी अथ थइ सौधर्मेद्र सन्मुख धायो पछी पोताना एक पग सौधर्मा वतंसक विमाननी वेदिकाने विषे अने बीजो पग सुधर्म सभानी उपर राखी परि घ करी इद्रकीलउपर ताडन करी अनेक प्रकारे इद्रने आक्रोश करवा लाग्या सौधर्मेद्रपण अवधिज्ञाने तेने जाणीने कोपे करी देदीप्यमान एवु वज्र मू कयु चमरपण पोतानी पाछल आवनारा वज्रने जोइ असमर्थ थइ विस्तार करेला पोताना शरीरना उपसहार करी शरण शरण एवु बोली सूक्ष्म थइ श्रीमहावीर स्वामिना चरणनो वचमां प्रवेश करतो हवा सौधर्मइद्रपण अरहत चरणने प्रवेश करता जाणी त्वराथी आवी ज्यासुधि त्या वज्र प्राप्त थयु नथी

एटलामां वज्रनो उपसंहार करी श्रीमहावीर स्वामिनी पासे क्षमा मागी चम रेंड्प्रत्ये बोल्योके, में तारा उपर वज्र मूक्युं ठतां पण तुं श्रीमहावीर स्वामिने शरण आव्यो तेमाटे में वज्रनो उपसंहार कस्यो. श्रीमहावीर स्वामिनी कृपाये त ने हवे नय नथी. एवीरीते ते चमरेंड्नुं आश्वासन करीने पठी महावीरस्वामिने वंदन करी आज्ञा लेइ पोताना स्थानप्रत्ये गयो. पठी चरमेंड् पण नाना प्रका रे करी श्रीमहावीरस्वामिनी स्तुति करी अने आज्ञा लेइ पोतानी चमरचंचाराजधा नीप्रत्ये गयो. ए आठमुं चमरोत्पात नामा आश्चर्य जाणवुं

नवमुं. उत्कृष्टी अवगाहना वाला नवाणु दीकरा अने आठ पौत्रा तथा एक पोते श्रीआदीश्वर नगवान. एरीते बधा मली एकशो ने आठ. ते एक समये अ निजित् नक्षत्रमां सिद्ध थया. ते एकज समये उत्कृष्टी अवगाहनावाला एकशो आठ त्यां सिद्धि पाम्या ते नवमुं आश्चर्य जाणवुं.

दशमुं. असंयति आरंनी परिग्रहवंत अब्रह्मचारी गृहस्थना वेषे रहेला, तेनो पूजा सत्कार. ते असंयति पूजा नामे दशमुं आश्चर्य. ते आवीरीते ठे. श्री सुविधि नाथना निर्वाण पठी केटलोक काल व्यतिक्रम्यानंतर हुंमावसर्प्पणीना दोषने ली धे साधुउनो विछेद थयो. तेवार पठी जे स्थविर श्रावको हता; तेमनी पासे जई बीजा लोको धर्म पूठवा लाग्या. तेपण जेवुं जाणता हता तेवुं तेउने कहेवा लाग्या. तेथी लोकपण तेमने धनवस्त्रादिक देवा लाग्या. तेथी तेउ गर्वित थया थका पोता ना मनकल्पित नवीन शास्त्र बनावी कहेवा लाग्या के, जे कोइ पृथ्वी, सद्म, मंदिर, सुवर्ण, रूपुं, लोह, कपास, गाय, कन्या, अश्व अने गज अमने आपे, ते आ लोके तथा पर लोके महा फल पामे. अने अमेज सुपात्र ठइये. एवो उपदेश सांनली लोके तेमने गुरु करी मान्या. एवी असंयतिनी पूजा चाली. प्रथम सदासर्वदा संयतिनी पूजा थती हती. तेथी विपरीतपणाये करीने श्रीशीतलनाथजिनना तीर्थसुधि आश्चर्य थयुं. एरीते ए दश आश्चर्य आ चोवीसीमां थयां वली अनंते काले थशे.॥८ए३॥

हवे जे तीर्थकरना वखतमां जे आश्चर्य थयुं ते कहेठेः— मूलः— सिरिरि सहसीयलेसुं, एक्कक्कं मल्लिनेमिनाहोय ॥ वीरजिणिंदे पंचउ, एगं सव्वेसु पाएणं ॥८ए४॥अर्थः—श्रीरुषनदेव अने श्रीशीतलनाथनी वारे एकेक आश्चर्य थयुं. तथा श्रीमल्लीजिनेश्वरने वारे एक थयुं अने एक श्रीनेमिनाथने वारे एक थयुं. अने श्री वी रजिनेंड्ने वारे पाच थया. वली असंयतिनी पुजा लक्षण तो श्रीआदिनाथना वखत मां मरीचि कपिलादिकनी सांनलीये ठेए. एम घणुकरीने बीजा तीर्थकरोना वा

रामां पण प्रवाहे थाय छे. तेनो स्पष्ट रीते करी आगळनी गाथामा खुलासो कहेछे

विशेषे नाम पूर्वक एज वात कहेछे मूल – रिसहे अठहियसयं, सिद्धि सीय लजिणंमि हरिवंसो नेमि जिणे अवरकंका गमण कन्हस्स संपत्त ॥ ८९५ ॥ इ त्थी तित्थं मल्ली, पूआ अस्संजयाण नवम जिणे ॥ अवसेसा अछेरा वीरजिणिंद स्स तित्थंमि ॥ ॥ ८९६ ॥ अर्थ श्रीऋषभदेवना वखतमां एकशोने आठ सिद्ध थया श्रीशीतळजिनना वखतमा हरिवंशकुळनी उत्पत्ति थई श्रीनेमिनाथना वख तमां अपरकंकानगरिये श्रीकृष्णनुं गमन थयुं ॥ ८९५ ॥ अने स्त्रीनुं तीर्थ मल्ली नाथना वखतमा थयुं नवमा जिनना वारामा असयतिनी पूजा थई, अने अव शेष थाकता आश्चर्य श्रीवीरपरमेश्वरना वारामा थया इति गाथा पचकार्थ ८९६

अवतरण – चउराजासाउत्ति एटले चार जापानुं एकशोने ओगणचालीस मुं द्वार कहेछे मूल – पढमाजासासच्चा, बीयाउ मुसा तयक्किया तासिं ॥ सच्चामु सा असच्चा, मुसापुणा तह चउत्थित्ति ॥ ८९७ ॥ अर्थ – त्यां प्रथम जाषा ते सत्या कहिये त्यां सतके० मूळुत्तरगुणयतिने सर्व विश्वने मुक्तिपद प्रापकपणा थ की अथवा सतविद्यमान जे जीवादिकपदार्थ तेना हेतुये जे बालवी ते सत्या जा षा जाणवी बीजी ए थकी जे विपरीत जाषा ते मृषा जाषा जाणवी त्रीजी ए मां हेला सत्यने पण मळे अने मृषाने पण मळे, ते उजय स्वजाव सत्यामृषा जाषा जा णवी चोथी असत्याअमृषा ते जे पूर्वोक्त त्रणे जाषाने न मळे ते चाथी जाषा जाणवी

हवे सत्यादिक चार जाषाना जेद कहेणहार छतो तेमा प्रथम सत्याना जेद कहेछे मूल – जणवय समय ठवणा नामेरूवे पडुच्चसच्चेय ॥ ववहार जाव जोगे, दसमे उवम्मसच्चेय ॥ ८९८ अर्थ – ज देशमा जे वस्तुनुं जेवुं नाम रूढी थी कहेवातुं होय अने तेज नाम परदेशमां जइने पण कोइ कहे ता तेने ज नपदसत्य कहिये जेम कोंकणदेशमां पाणीने पिच्च नीर इत्यादिक कहछे

बीजुं समयके० ते जे समस्त लोकने सम्मत ते आवीरीते के कुमुद, कुवलय उत्पल अने तामरस इत्यादिकने विषे सरखे पकज शब्दने सजवे पण गावा लादिक अरविंदनेज पकज केहेछे परंतु अन्यशब्दने सम्मत नही तेनी पर बी जाने न कहिये ए बीजुं सम्मतसत्य जाणवुं

त्रीजुं ठवणाके० स्थापनासत्य. ते आवीरीते के जेम एकडो मामीन तना आगळ एक मींडुं मांमीये तेवारे दश थाय, तेमज बे मींमा मांमिये तेवारे एक शो थाय, त्रण मींमा मांमिये तो हजार थाय ए पण स्थापना जाणवी तमज मु

डा. मापो. तोल प्रमुख स्थापिये छे. आ अमुक पाचशेर छिया दश शेरछे. ते पण स्थापना छे, अथवा आचार्यनी स्थापना करिये ते सर्व स्थापना सत्य जाणवुं

चोथुं नामसत्य. ते नाम तथा कुळनी वृद्धि न करतो होय तोपण कोइकनुं कुळवर्द्धन एवुं नाम होयछे. एमज धननी वृद्धि न करता छता पण धनवर्द्धन नाम होयछे इत्यादिक सर्व नामसत्य जाणवुं.

पांचमुं रूवे॰ रूपसत्य. ते कपट करी साधुनो वेष लीधो होय तोपण तेने साधु कहिये. एटले नाटकीया प्रमुख जनो वेष धारण करे तेवारे ते वेषनुं रूप जोइने तेने ते नाम कहेछे ते रूपसत्य जाणवुं.

छठुं पडुच्चस॰ प्रतीत आश्रीने सत्य कहेवायछे जेम पांच अंगुली मांहेली अनामिकाने देखी मध्यमा अंगुलीने तेनी अपेक्षाये महोटी कहियेछेए तेमज कनिष्टिका आश्री अनामिकाने मोटी कहियेछेए. एम जेने जे आश्री कहिये ते प्रतीतसत्य जाणवुं.

सातमुं व्यवहारसत्य ते पर्वत उपर तृणादिक बळता देखीने एवुं कहेवामा आवे छे के पर्वत बळेछे. तेमज पाणीना गाळणमांथी पाणी श्रवतु देखीने कहेछे के पाणीनुं गाळण श्रवेछे. इत्यादिक व्यवहारसत्य कहेवायछे.

आठमुं भावसत्य. ते ज्यां पांचे वर्णनो संभव छतां जे वर्णनी अधिकता होय ते वर्ण कहेवो. जेम भ्रमरमां पांचे वर्ण छतां श्याम कहेवायछे. तेमज बगला दिकने उज्ज्वळ कहेवाय छे. ए भाव सत्य जाणवो

नवमुं योगसत्य ते जेम दंडना योगथकी दंडी कहेवाय. छत्रना योगथकी छत्री कहेवाय. लिंगना योगथकी लिंगी कहेवाय. तेना अभावे तथा अछते पण एज कहेवाय. ते योगसत्य जाणवुं.

दशमुं उपमासत्य. ते जेम महोटुं तळाव देखीने कहिए के ए समुद्र जेवुं महोटुं तळाव छे. ते उपमासत्य कहेवायछे. ए दश प्रकारनी भाषा सत्य कही.॥८९८॥

हवे मुसत्ति एटले मृषाभाषाना दश प्रकार कहेछे. मूल:–कोहे माणे माया, लोहे पेज्जे तहेव दोसेय ॥ हास भये अक्खाइय, उवघाए निस्सिया दसहा ॥ ८९९ ॥
अर्थ – मृषाभाषा दश प्रकारे ते आवी रीते छे. एक क्रोधनिसृत, एमज माना दिक शब्दोनी साथे निसृत शब्द सर्वत्र जोडवो. ते आवीरीते क्रोधेकरी अदासने दास कही बोलावे. क्रोधनिःसृत आश्रयो थको जो बीजो कोइ सत्य भाषण करे तोपण ए जुठुंज माने तेमज बीजुं माने करी पोते अधन थको धनवंत कहे ते माननिसृत जाणवुं. त्रीजुं बीजाने वचवाने अर्थे इंद्रजालि[illegible] [illegible]हे ते

प्रत्येकमिश्र भाषा जाणवी. नवमी अद्धा ते कालविशेष रात्र दिवस प्रमुख जाणवी. त्यां कोइएक बीजा कोइने उतावलथी दिवसछते एवुं कहेके, उठ उ ठ रात्र पडी. अमुक काम करवानुं छे, अथवा रात्रि छतां कहेके, उठ उठ ज लदी दिवसोदय थई चूक्यो. ए अद्धामिश्र नामे नवमी भाषा जाणवी. दशमी ते मज दिवस अथवा रात्री तेनो एक देश ते अद्धद्धामिश्रित भाषा जाणवी. जेम प्रथम पहोर वर्त्तमान छते कहेके, मध्यान्ह थयो. इत्यादिक जाणवी. ॥ ९०० ॥

हवे असच्चा मोसत्ति ए चोथी भाषा बार प्रकारे कहेछे. मूलः—आमंतणि आणव णी, जायणि तह पुछणीय पन्नवणी ॥ पच्चख्काणी भासा, भासा इच्छाणु लोमाय ॥ ९०१ ॥ अर्थ.— आमंत्रण करिये के, हे देवदत्त इहां आव. इत्यादिक जे आ मंत्रण ते त्रण प्रकारे छे. प्रथम, जे कोइने न मले; पण केवल व्यवहार मात्र प्रवृत्तिने माटेज छे. ते साची पण नही; ने जुठी पण नही, ते असत्य अमृषा जाणवी. बीजी आज्ञा आपिये ते आज्ञापनी. त्रीजी जायणीके०कोइ एक कोइ पासेथी मागे. चोथी आगलाने पूछीये ते पूछणी पांचमी भव्यजीवोने उपदेश देतांथकां एम कहेवाय के, जे प्राणी प्राणवध थकी निवृत्ते, ते भवांतरे सुखपामे. एवुं नाम प्रज्ञापनी. छठी निषेध वचन बोले ते प्रत्याख्यानी भाषा जाणवी. सातमी कोइएक कोइ कार्य करवाने प्रवृत्त अने कोइ एकने पूछे तेवारे ते कहेके, मारे पण ते मान्य छे माटे तारी इच्छा आवे तेम तुं कर. ए इच्छा अनुलोमभाषा जाणवी. ॥ ९०१ ॥

मूल – अणभिग्गहियाभासा, भासाय अभिग्गहंमि बोधव्वा ॥ संसयकरणी भासा, बोयड अबोयडा चेव ॥ ९०२ ॥ अर्थः— आठमी, घणां कामो करवानां होय अने कोइ पूछे के कयुं काम करुं? तेवारे कहेके तारे गमे ते काम कर. एम ज्या काइ कदाग्रह न होय ते अनभिग्रहितभाषा जाणवी. नवमी, जे निश्चे य की वचन बोलिये तेज करिए ए भाषा अभिग्रहिने विषे जाणवी. दशमी, सं शयिक एटले कोइये कोइने कह्यु के सैंधव लई आव अने सैंधव शब्दे लवण, वस्त्र, पुरुष, अश्व, प्रमुख कहेवायछे एम विचारी सामाने संशय उत्पन्नथाय ते संशयकरणीभाषा जाणवी. अग्यारमी, ज्या बोलवा थकी वर्ण एटले अक्षर अ ने तेनो अर्थ तेपण प्रगट होय ते व्याकृत जाणवी. बारमी, तेमज जे अप्रगटप णे बोलिये ते अव्याकृत भाषा जाणवी इति गाथा षट्कार्थ. ॥ ९०२ ॥

अवतरण.— वयण सोलसगंति एटले वचन सोलप्रकारनां तेनुं एकशोने चा लीसमुं द्वार कहेछे. मूल.—कालतियं वयणतियं, लिंगतिअं तह परोक्ख पच्चक्खं ॥

सो, चउवीस सएण ठेएण ॥ ए०६ ॥ अर्थ— ऋतुमास ते संपूर्ण त्रीसदिवस प्रमाणनो जाणवो. तथा आदित्यमास ते त्रीस दिवस अने उपर एक दिवसना साठिया त्रीस जाग करिये तेटला प्रमाणनो जाणवो. अने अनिवर्द्धित मास ते चउवीसे अधिक एकशत नेद एटले जाग. तेज देखाडेछे ॥ ए०६ ॥

मूल.— जागाणिग वीससयं, तीसाएगाहिया दिणाणच ॥ एए जह निप्पत्तिं, लहंति समयाउ तह नेयं ॥ ए०७ ॥ अर्थ.— ते पूर्वोक्त एकशोने चोवीस जाग एक अहोरात्रना करिये तेवा एकशो एकवीस जाग अने एक दिवसे अधिक त्रीस एटले एकत्रीस दिवस. अर्थात् एकत्रीस दिवस ने एक अहोरात्रीना एकशो चोवीस जागमाहेला एकशोने एकवीस जाग उपर, एटलुं अनिवर्द्धित मासनुं प्रमाण जाणवुं. एरीते ए पांचमासनी जेम नि प्पत्ति एटले प्राप्ति थायछे ते समय के० सिद्धांत थकी जाणवी. इतिगाथा चतुष्टयार्थ. ॥ ए०७ ॥

अवतरण.— वरिसाण पंचनेयत्ति एटले वर्षना पांच नेदनुं एकशोने वेतालीसमुं द्वार कहेछे. मूल.— संवछराउ पचउ, चदेचंदेनिवड्ढिए चेव ॥ चंदेनिवड्ढिए तह, बिसछिमासेहिं जुगमाणं ॥ ए०७ ॥ अर्थ.— चंद्रादिक संवत्सर पांच कह्याछे. तेमा पूर्वोक्त चंद्रमासे जे नीपन्यो ते चंद्र संवत्सर जाणवो. तेनुं प्रमाण त्रणशे चोपन दिवस अने एक दिवसना वासठ जाग करिये तेवा वार जाग उपर जाणवा. तेमज वीजा चंद्रसंवत्सरनुं पण मान जाणवुं. हवे चंद्रसंवत्सरथी एक अधिक मास थाय एटले तेने अनिवर्द्धित संवत्सर जाणवो. तेनुं प्रमाण त्रणसे त्र्यासी दिवस अने एक दिवसना वासठ जाग करी तेमांना चुमालीश जाग एवो एक अनिवर्द्धितसंवत्सर जाणवो. एकत्रीश अहोरात्र अने एक दिवसना एकशो चोवीस जाग करिये ते माहेला एकशो एकवीस जाग उपर, ए अनिवर्द्धित मासनुं मान जाणवु. हवे पूर्वोक्त माने अनिवर्द्धित संवत्सर वे अने चंद्रसंवत्सर त्रण एवा पाच संवत्सरे एक युगमान थायछे. ते वासठ चंद्रमास प्रमाणक छे. सारांश. एक युगमां त्रण चांद्र संवत्सर ते चांद्रसवत्सरना प्रत्येक वारमास मलीछत्रीश चांद्रमास अने वे अनिवर्द्धित संवत्सर. तेमा एक अनिवर्द्धित संवत्सरना तेर चांद्रमास. ए प्रमाणे वीजा वरसना पण तेर मली एकंदर छवीस मास अने पूर्वोक्त चांद्रमास छत्रीश मलीने वासठचांद्रमासे एक युगनु मान थाय. ॥ए०७॥

अवतरण.— लोगसरूवत्ति एटले लोकना स्वरूपनुं एकशो ने तेतालीशमुं द्वार प्रगट करतो कहेछे मूलः— मायवईइतलाइ, ईसीपप्भा उवरिमतलंजा ॥

एटले वे पमखामां एक एक. पठी एक एक पंक्तिमां वली आव खांमूआ, त्यां बन्ने पासे वे वे खांकुआ वध्या. तेथी पठी वली दसयके० दश खांकुआ थया. त्यां वेहुपासे त्रण त्रण वध्या, ए एकेक पंक्तिये वध्या. पठी वली वार थया. वेउ पंक्तिने विषे चार चार खांकुआ वेउ पासे वध्या. पठी वेउ पंक्तिने विषे शोल शोल, त्यां ठ ठ वध्या. पठी चार पंक्तिने विषे वीस वीस खांकुआ त्यां चारे पंक्तिने विषे आव आव वाहेर वध्या. एम ऊर्ध्वलोकने विषे चउद पंक्तिये यथा तंजवे वधता खांकुआ कह्या. ॥ ए१४ ॥

मूलः– पुणरवि सोलस दोसुं, वारस दोसुं पि होइ नायवा ॥ तिसु दस तिसु अठ वाय दोसुं दोसुंपि चत्तारि ॥ ए१५ ॥ अर्थ.– वली उपरली वे पंक्तिउने विषे सोल सोल. वली वेउ पंक्तिने विषे वार वार होय ते जाणवा. पठी त्रण पंक्तिने विषे दश दश, वली त्रण पंक्तिने विषे आव आव तथा ठठदोसुं के० वे पंक्तिनेविषे ठ ठ. वली वे पंक्तिनेविषे नाडीमां रहेला चार चार खांकुआ जाणवा. एटले ऊर्ध्व लोकनी वात कही. ॥ ए१५ ॥

हवे अधोलोके सात नरक पृथ्वीने विषे ऊर्ध्व अने अधोनागे जे खांकुआ ठे ते कहेठे. मूल.– उवरिय लोय मज्ज, चउरो चउरोय सवहिं नेया ॥ तिग तिग डुग डुग एकेक गोय जा सत्तमी पुढवी ॥ ए१६ ॥ अर्थ.– उवरिट के० नीचे रुचकना मध्यनागथकी आरनी चार चार खांकुआ सर्व साते पृथ्वी त्रसनाडीनी मांहे ऊर्ध्व अधोनागे जाणवा. त्रसनाडीनी वाहेर द्वितीयादिक पृथ्वीने विषे अनुक्रमे त्रण त्रण वे वे अने एक एक खांकुआ जाणवा. ते ज्या सुधी सातमी पृथ्वी प्राप्त थाय, त्यांसुधी जाणवा. रत्नप्रनाये त्रसनाडीनी वाहेर खांकूआनो अनाव ठे. त्यारपठी वीजी शर्कराप्रनाये उपरना तलनो आरन्न करी दक्षिण वाम नागनेविषे प्रति पंक्ति तीर्यक एवा त्रण त्रण खाकुआ ऊर्ध्व अधोनागे करी जाणवा. ते सातमी पृथ्वीना अधोनागसुधी जाणवा.

त्रीजी वालुकाप्रनाना ऊर्ध्वनागनो आरन करी वंने वाजुने विषे खांकुआ त्रण त्रणनी आगल वली त्रण त्रण खाकुआ जाणवा. ते सातमी पृथ्वी पर्यंत. पठी पंकप्रनाना ऊर्ध्वनागनो आरंन करी वंने वाजुने विषे पुर्व खांकुआनी आगल वे वे खाकुआ जाणवा. ते सातमी पृथ्वी पर्यंत पठी धूम प्रनाना ऊर्ध्वनागनो आरंन करी वंने वाजुने विषे बबे खांकुआ जाणवा ते सातमी पृथ्वी पर्यंत. पठी तम·प्रनानो आरन करी वंने वाजुने विषे एक एक खाकुआं जाणवां ते ना

हवे त्रण प्रकारना रज्जूनी संख्या देखाडेछे.मूल -तिन्निसया तेयाला घणरज्जू...
गवन्ना॥सुइरज्जु पणसहस्सा,चत्ता रिसया यअडसीया॥ए२१॥अर्थ.-त्रणसें तेता...
घनरज्जु थाय,एकावन प्रतररज्जु थाय. पांच हजार चारशेने अठ्यासी शुचिरज्जु...
मूल – सुइरज्जू चउहि खंमगेहिं सोलसयपयर रज्जूअ ॥ चउसट्ठि...
रज्जू होइ विन्नेउ ॥ ए२२ ॥ अर्थ.– शुचिरज्जु चार खांमूए थाय. सोल...
रज्जु थाय. अने चोसठ खाडुएकरी घनरज्जु थाय. एवा प्रकारे विन्नेयां...
घनरज्जु कहेवाने अर्थे प्रकार देखाडेछे मूलः– दाहिणपासि दुन्नि...
ज्ञ विहिअ विवरीय ॥ नाडीजुआ ति रज्जू, उड्ढाहो सत्तउजाया ॥ ए२३ ...
त्रसनाडीनी दक्षिण पासे बे खंमछे. ब्रह्मलोकना मध्यथकी नीचला...
ए बेउ लेई विपरीतपणे नीचेनो नाग उपरकरी उपरनो नाग नीचे...
डावे पासे संधिकीके० साधिये पछी ते बंने खंम राजने विन्नागे...
करिये. तेवारे सर्व त्रणराज विस्तारे थाय; अने उंचपणे ...
कस्या थका सातराज थाय ॥ ए२३ ॥

मूल.– हेठाउ वामखमं, दाहिणपासंमि ठवसु विवरीयं ॥ ...
वामे ठाणमि संधेज्ञा ॥ ए२४ ॥ अर्थः– अधोलोके त्रसनाडी...
खंमछे ते लेइने विपरीतपणे जमणी बाजु जोडीये, अने ...
खंम ते मावीपासे जोडीये. इहां ए नावनाजे लोक ...
माणछे तेमा नीचे विस्तारे देशे उणा सातराज प्रमाण...
ध्य एक राज प्रमाण छे. ब्रह्मलोकने मध्य पांच राज प्रमा...
एकराज प्रमाणछे अने बीजे ठेकाणे विस्तारनो नियम...
करवाने अर्थे प्रथम अर्द्ध संवर्त्त ते आवीरीते ...
डीछे, तेनी जमणी बाजु ब्रह्मलोकना मध्यथकी ...
त्रसनाडीनी मावी पासे विपरीतपणे जोडिये. ... ...शे
स्तारेथाय अने उंचपणे सातराज माठेरा थाय. ...वो ते

हवे अधोलोके त्रसनाडीनी मावी बाजु... ...यराके०
णी बाजुए जोडिये. एम करवाथी अधस्त... ...॥ए३२॥
विस्तारे थाय. अने उंचाइमां सातराज ... , जो इय
लेइ नीचे मावी बाजुए जोडिये. एम ... ...क काम
थाय छे. अने उंचपणे क्याएक सात... ...ा त्रण

हत्तंके० वेंचिये एटले नाग आपिये तेवारे वर्गो ने उंगणचालीस थाय एम. जो कनेविषे एटला घनरज्जु थाय. एटले तिरियचउरो ए गाथामां जे खांकुआ कह्या छे. तेहनो वर्ग करिये. तेवारे ए गाथार्थ जाणवो. ॥ ए२ए ॥

रुचकप्रदेश थकी जे देवलोक जेटलो दूरछे ते देखाडेछे. मूलः—छसु खंमगेसु यडु गं, चउसु डुगं दस सुहुंति चत्तारि॥चउसु चउक्कं गेविज्ञ णुत्तराइं चउक्कंमि ॥ए३०॥ अर्थ.— रुचकथकी उंचे मुखे छ खांमूए दोढराज थाय; त्यां सौधर्म ने ईशान ए वे देवलोकछे. ते थकी उपर चार खांमूए एकराज प्रमाणे खेत्र, तेमां वली सनतकुमार ने माहेंद्र ए वे देवलोकछे. आगल दश खांकुये अढीराजमां ब्रह्म. लांतक, शुक्र, ने सहस्रार लक्षण चार देवलोक छे. तेवार पछी वली चारखांकुए आनत,प्राणत, आरण ने अच्युत ए चार देव लोकछे, ते पछी वली नवग्रैव्यक पंचानुत्तर विमान सिद्ध सिद्धा ए सर्व चार खांकुए छे. ए सातराजमां सौधर्मादिक देवलोक कह्या. ॥ए३०॥

तिरछो राजमान देखाडतो लोक प्रमाण कहेछे. मूल.— सयंजुपुरिमंताउ, अ परंतो जाव रज्जुमाईउ ॥ एएण रज्जुमाणेण लोगो चउदसरज्जूउ॥ए३१॥ अर्थ.—स यंजुरमण समुद्रनी पूर्वदिशियकी मांमीने अवरांतके० ज्यां सुधी पश्चिम दिशिनो प्रांत छे त्यांसुधी एक राजनो मान जाणवो. ए राजने प्रमाणे लोक चउदराज प्रमाणछे. इतिगाथा त्रयोविंशतिकार्थ. ॥ ए३१ ॥

अवतरण — सन्नाउतिन्निति एटले त्रण संज्ञानुं एकशोने चुमालीसमुं द्वार कहेछे. मूल —सन्नाउतिन्नि पढमे च दीहकालोवएसियानाम ॥ तह हेउवाय दिट्ठी, वाउ वएसा तदियराउ ॥ए३२॥ अर्थ.— संज्ञा त्रण कहिछे. त्यां जे सम्यक्प्रकारे ज्ञानपणु ते संज्ञा कहिये. तेमां पढमाके० पहेली ते इहां दीर्घके० अतीत अनागत वस्तु विषयिक उपदेश कहेवोछे जेने विषे, ते दीर्घकालोपदेशिका एवे नामे संज्ञा जाणवी. तहके० तेमज वली बीजी हेतुके० कारण निमित्त तेहनो वदन के० कहेवो ते विषयिक उपदेशनी प्ररूपणा करवीछे जेने विषे ते हेतुवादोपदेशिका नामे संज्ञा जाणवी. त्रीजी ज्या दृष्टी शब्दे सम्यक्त्वादिकनो वाद कहेवो ते विषयिक ज्या उपदेशछे ते दृष्टिवादोपदेशिकी नामे संज्ञा जाणवी. ते तदियराके० तेथकी इतर जाणवी. एनुं स्वरूप केहेनार छतो सूत्रकार गाथा कहेछे. ॥ए३२॥

मूल.—एयं करेमि एयं, कयंमए इम महं करिस्सामि॥ सोदीहकालसन्नि, जो इय तिकालसन्निधरो ॥ ए३३ ॥ अर्थः— आ अमुक काम हुं करुंछुं, आ अमुक काम मे कर्युं अने ए अमुक हुं करीश. एरीते जे वर्त्तमान, नूत अने नविष्य एवा त्रण

ण होय तेने पण प्रतिनियत इष्टानिष्ट विषय प्रवृत्ति निवृत्ति एवुं दर्शन छे ते कारण माटे बेइंद्रियादिक जीवोने हेतुवादोपदेशिकी संज्ञाये संज्ञीपणु प्राप्त थायछे. वली आहारादिक दश संज्ञा पृथिव्यादिकने पण आगल कहेशे. ते श्रीपन्नवणा मां कहिछे. पण ते अत्यंत अव्यक्तरूप मोहोदयथकी होयछे; अने वली अशोजन छे, तेनी अपेक्षाये त्यां पृथिव्यादिकने संज्ञीपणुं कहेवुं नही. लोकमा पण कोइक पासे थोडुं एक कार्षापण एटले सुवर्ण मात्रना अस्तित्वे करी ते धनवंत कहेवाय नही.

हवे दृष्टिवादोपदेशसंज्ञाये संज्ञी अने असंज्ञी ते कहेछे मूलः— सम्मद्दिट्ठी सन्नी संमे नाणे खउवसमिएय ॥ असन्निमिच्छत्तम्मि, दिट्ठीवाउवएसेण ॥ ए३६ ॥ अर्थ.— जे क्षायोपशमिकज्ञानेकरी वर्त्तमान सम्यक्ज्ञानपणाथकी सम्यक्दृष्टि जाणवो. अने सम्यकज्ञानसंज्ञारहितपणा थकी मिथ्यादृष्टिअसंज्ञी जाणवो. यद्यपि मिथ्यादृष्टि पण घटादिक वस्तुने घटादिकपणेज जाणे छे अने केहेवामांपण घटने घटज कहेछे; तथापि तेने निश्चे नय अज्ञानी कहिये. केमके ते जगवंत जाषित यथावस्थित वस्तुनो अंगीकार करता नथी, इहां शिष्यपूछेछे के जो विशिष्टसंज्ञाये सहित सम्यक्दृष्टिने संज्ञी कहिये तो क्षायोपशमिक ज्ञान सहित केम कह्यो? क्षायिकज्ञाने तो विशिष्टतर संज्ञा होय छे तो ते केम न लीधो?

इहां उत्तर कहेछे के जे अतीत अर्थनुं स्मरण करवु अने अनागतनी चिंतवना करवी तेने संज्ञा कहिये. अने श्रीकेवलीजगवानतो सदासर्वदा सर्वजाव जाणे ज छे. तो ते केवलीने कांई अतीत अर्थनुं स्मरण अने अनागतनुं चिंतन नथी. अने एनेतो स्मरण चिंतनछे. तेमाटे क्षायोपशमिकज्ञानी तेज सम्यक्दृष्टिसंज्ञी कह्यो.

वली शिष्य पुछेछे के प्रथम हेतुवादोपदेशे करी संज्ञी कहेवाने योग्यछे. कारण हेतुवादोपदेशे करी अल्पमनोपलब्धिसंपन्न एवा जे बेइंद्रियादिक तेने अविशुद्धतरपणुं छे माटे संज्ञीपणाए करी अंगीकार छे. पछी दीर्घकालोपदेशे करी हेतुवादोपदेशसंज्ञानी अपेक्षाए दीर्घकालोपदेशसंज्ञाना मनपर्याप्तियुक्तपणाथकी अतिशुद्धपणु छे. माटे पछी कहेवी. तो शावास्ते उत्क्रम उपन्यास करेछे?

तेनो उत्तर कहेछे. अहीयां समस्त सूत्रोनेविषे कोइ ठेकाणे पण संज्ञी अथवा असंज्ञी ग्रहण करेछे त्यां प्राये सर्व ठेकाणे दीर्घकालोपदेशे करी ग्रहण करेछे; पण हेतुवादोपदेशे करी अने दृष्टिवादोपदेशे करीने ग्रहण करता नथी. तेनी खातरी थवा सारुं प्रथम दीर्घकालोपदेशेकरी संज्ञीनुं ग्रहण कर्युं. उक्तंच सन्निन्ति असंनित्तिय सव्व सुयकालिउव एसेण; पायंसं ववहारो कीरइतेणाइउ सकउ. पछी

तेना अनंतरे अप्रधानत्वे करी हेतूपदेशे करी असंज्ञीनुं ग्रहण कर्युं ते पछी सर्व प्रधानत्वथी छेवट दृष्टिवादोपदेशसंज्ञानुं ग्रहण छे इति गाथापंचकार्थ ॥९२६॥
अवतरण – सन्नाउ चउरोत्ति एटले चार प्रकारनी संज्ञानुं एकत्रीशमुं द्वार कहे छे मूल – आहार भय परिग्गह, मेहुण रूवाउ हुंति चत्तारि॥ सत्ताण सण्हाउ, आससार समग्गाण ॥ ९२७ ॥ अर्थ – एक क्षायोपशमिकी अने बीजी उदयिकीना भेदे करी बे प्रकारे संज्ञा जाणवी तेमा क्षायोपशमिकी अनंतर कही आव्या अने बीजी उदयिकी, सामान्यपणे चार प्रकारे छे, ते आहारादिक जाणवी तेमा प्रथम क्षुधा वेदनीयना उदयथकी तथाविध आहारादिकनुं लेवुं ते प्रथम आहारसंज्ञा जाणवी ए आहारसंज्ञा उपजवाना श्रीठाणांगमां चार कारण कह्यां छे यदुक्तं चउहिंठाणेहिं आहार सन्ना समुप्पज्जइ तं जहा उमकोठयाए खुहा वेयणीयस्सकम्मस्सउदएण मइए तदट्ठोवउगेण प्रथम उमके० खाली कोठे आहारादिकनी कथा सांभळीने आहार उपर इच्छा थाय, बीजी क्षुधावेदनीय कर्मने उदये थाय, त्रीजी वळी आहारनी वातो सांभळवानी मति उपजे. ते म तिना योगेकरी निरंतर पणे आहारनी चिंता थाय, अने चोथी भय मोहनीयना उदय थकी दृष्टि वदन रोमांचादिकनो विकार ते भय संज्ञा तेना उपजवाना चार स्थानक छे हीणसत्तयाए, भयवेयणीयस्सकम्मस्स उदएण, मईए तदट्ठोवउगेण, अर्थ – एक हीनसत्वे करी एटले बळना अभावे, बीजुं भयसूचक कर्मना उदये करी, त्रीजुं भयनी वात सांभळवी अने भयकर दर्शनादिकथी उत्पन्न थएली बुद्धिए करी अने चोथुं आ लोकनेविषे भय लक्षण जे अर्थ तेना पर्यालोचने करी. चउहिंठाणेहिं परिग्गहणा समुप्पज्जइ, अविमुत्तयाए लोभवेयणी० मइए० तदट्ठो लोभना उदयथकी संसारनेविषे आसक्त प्राणी सचित्त अचित्तादिक वस्तु ग्रहण करे इत्यादिक लोभसंज्ञा जाणवी आलावाना अर्थ सुगम छे बीजी मैथुनसंज्ञा ते पुरुषवेदना उदयथकी मैथुनने अर्थे स्त्रीने देखवान प्रसन्नवदन वेपथु प्रमुख सात्विक आठगुणोनुं करवुं तेना चार कारण छे चियमससोणियाए १ मोहणिज्जस्सकम्मस्सउदएण २ मइए ३ तदट्ठो० ४ अर्थ – उपचित एटले पुष्ट पणे थयाछे एक मांस अने बीजो शोणितके० लोही ते जेना शरीरने विषे तेना योगे सुरत कथादिक सांभळी मैथुननुं चिंतन करे शेष पूर्ववत् जाणवा एहवुं छे सरूप जेनुं ते चार संज्ञा समस्त एकेंद्रियादिक प्राणीने आ संसारमां ज्यां सुधी रहे त्यांसुधी थाय एकेंद्रियादिकने ए प्रत्यक्ष देखायछे उदाहरण, जेम वनस्प

ात्यक्ष प्राणी आहारने योगे नवपल्लव थायछे, नही तो सुकाइ जायछे;
ज्ञा. वली वेलो प्रमुख हस्तादिकने स्पर्शे पोताना अवयव संकोचेछे
. अने वीज पलाशादिक ज्यां धन होय त्यां जड मूके ते परिग्रह
कुरुवक, अशोक, अने तिलकादिकना वृक्षो ते स्त्रीना आलिंगने, पग
कटाक्षे अने विक्षेपादिके फूलेछे. ए मैथुनसंज्ञा जाणवी. ॥ ए३७ ॥
ग.— सन्नाउदसत्ति एटले दशसंज्ञानुं एकशो ने छेतालीसमुं द्वार क
- आहार जय परिग्गह, मेहुण तह कोहमाण मायाय ॥ लोनोह
, दसन्नेया सव्व जीवाणं ॥ ए३ए ॥ अर्थः— जेणेकरी जाणिये उल
ा जीवछे ते संज्ञा कहिये. ते वेदनीय तथा मोहनीय आश्रित, ज्ञाना
ावरण क्षायोपशम आश्रित विचित्र आहारादिकनी प्राप्तिनी क्रिया
रे छे. तेमां चार तो आहारादिक पूर्वेजे कहि आव्या तेज जाणवी.
धेकरी मुख नयन होठनुं स्फुरवुं इत्यादिक चेष्टाकरे ते क्रोधसंज्ञा जाणवी.
करी जे अहंकारनुं उच्चकपणुं ते मानसंज्ञा जाणवी. सातमी मायाये
ोजवुं ते मायासंज्ञा जाणवी. आठमी लोनेकरी सचित्तादिक द्रव्यनी
वी ते लोनसंज्ञा जाणवी. नवमी मतिज्ञानना आवरणरूप कर्म तेना
थकी शब्दार्थगोचर सामान्यावबोधक्रिया ते उघसंज्ञा जाणवी अने दश
वेशेषाववोध क्रिया ते लोकसंज्ञा जाणवी.
प्राय गणांगनीटीकानो छे. अने आचारांगनी टीकामांहे एम कह्युं छे के
उपयोगे वेलिनी परे विस्तरवुं, उंचे चडवुं, ते उघसंज्ञा जाणवी. अ
ा ते जे पोतानी मतिये योग्य विकल्पनारूप लौकिकाचरित. जेम अ
ाति न होय. श्वान ते यक्ष. ब्राह्मण ते देवता. काग ते पितामह,
वाहे गर्नसंनवे इत्यादिक. ए दशसंज्ञा सर्व संसारी जीवोने थाय. बीजा
. ज्ञानोपयोग ते उघसंज्ञा अने दर्शनोपयोग ते लोकसंज्ञा. आ द
ा छे ते आ अमुकजीव छे एवा ज्ञाननुं कारणरूप छे. एवी आ दश सं
सारीजीवोने जाणवी. अने सुख प्रतिपत्तिने अर्थे आ दश संज्ञा स्पष्ट
वी. पंचेंद्रियोने अनधिकृत्ये करी व्याख्यान करेलीछे अने आ दश सं
यादिकने तो अव्यक्तरूप जाणवी. इति गाथार्थ ॥ ए३ए ॥
ण — सन्नाउपन्नरसत्ति एटले पन्नर संज्ञानुं एकशोने सडतालीशमुं
. मूलः— आहारजय परिग्गह, मेहुणसुह डुःख मोहवितिगंछा ॥ तह

कोहमाणमाया, लोहे लोगेय धम्मोघे ॥ ए३ए ॥ अर्थ – ए पन्नर सज्ञामां दश स ज्ञा तो पूर्व कहीजे तेज जाणवी अने अग्यारमी शातानु जे अनुभववु ते सुख सज्ञा बारमी अशातानु जे वेदवु ते दुःखसज्ञा, तेरमी मोहसज्ञा ते मिथ्याद र्शन रूप जाणवी चउदमी विचिकित्सासज्ञा ते चित्त अविप्लुत लक्षण जाणवी पन्नरमी धर्मसज्ञा ते क्षमादिकनु सेवन करवु ए सज्ञाउ पण ससारी जीवोने जाणवी, तथा श्री आचारांगने विषे वली विप्रलाप वैमनस्यरूप शोकसज्ञा सोल मी पण कहिजे इतिगाथार्थ ॥ ए३ए ॥

अवतरण – सत्तसहित्तरकण भेय विसुद्ध सम्मत्त एटले सडसठ लक्षण भेदेकरी विशुद्ध सम्यक्त्वनु एकशो ने अडताळीसमु द्वार कहे छे मूल – चउ सद्दहणतिलिंग, दसविणय तिसुद्धि पचगयदोसु ॥ अडपभावण भूसण, लक्षण पचविह सजुत्त ॥ ए४० ॥ छव्विह जयणा गार, छभावणा भाविय च छठाण ॥ इय सत्तसठिलक्खण भेयविसुद्धच सम्मत्त॥ए४१॥ अर्थ – चार सद्दहणा, त्रण लिंग, दश प्रकारना विनय, त्रणशुद्धि, पांचदूषण, आठ प्रभावक, पांचभूषण अने पां च लक्षण तेणेकरी सयुक्त करिये, ॥ए४०॥ वली छ प्रकारनी जयणा, छ आगार, छ भावनाउ अने छ स्थानक ए सडसठ लक्षण भेद करी विशुद्ध सम्यक्त्व जाणवु

हवे अनुक्रमे ए समस्त द्वार वखाणनार छतो प्रथम चार सद्दहणानु द्वार वखाणे छे मूल – परमत्थ सथवोवा, सुदिठ परमत्थ सेवणावावि ॥ वावन्न कुदसणवज्ज, णाय सम्मत्त सद्दहणा ॥ ए४२ ॥ अर्थ – परमके० तात्विक जे जीवादिक अर्थ तेहने विषे सस्तव के० जाणवु एटले त्या अभ्यास करे, ए प्रथम श्रद्धान जाण वु तेमज बीजु सुदृष्ट के० रूडीरीते जेणे जीवादिक परमार्थ दीठाछे एवा ज आचार्यादिक गुरु तेनु सेवा पर्युपासनान करवु ॥ बीजु जाणवु

पूजा, ते गंध, माल्य, वस्त्र, पात्र, अन्न पानादिकनुं आपवुं त्रीजुं वर्णके० श्लाघा तेनुं जनन एटले ज्ञानादिक गुणना गणनुं बोलवुं चोथुं अवर्णवाद, ते अश्लाघा तेनुं नासणके० गमाववुं परिहरवुं पांचमुं आशातना, ते मन वचन काया सबंधीनी, तेनोपरिहार एटले वर्जवुं ए दशे प्रकारे दर्शन कहेता सम्यक्त्वनो विनय ते समासेणके० संक्षेपे कह्यो ॥ ए४५ ॥

हवे त्रण शुद्धि कहेछे मूल — मुत्तूणजिणमुत्तूण, जिणमयजिणमयछिएमोत्तु॥ससारकत्तवारे, चिंतज्जंत जग सेसं ॥ ए४६ ॥ अर्थ — एक श्री वीतराग तथा बीजा जिनमत स्याद्वादरूप तीर्थंकर प्ररुपित जीवाजीवादिक तत्वरूप प्रवचन, तथा त्रीजा तेज परमेश्वरना प्रवचन जेणे अंगीकार कर्याछे एवा सुसाधु ए त्रणने मूकीने बाकी जगतना सर्व पदार्थोने ससारना कचवर तुल्य असार समान चिंतवे एवुं जाण थाय

पांच दूषण रहितपणुं कहेछे मूल — संकाकखविगछा, पसस तह सथवा कुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्स इयारा, परिहरियव्वा पयत्तेण ॥ ए४७ ॥ अर्थ — प्रथम शंका, ते वीतरागना वचन उपर संशयनुं करवुं बीजो कांक्षा, ते अन्य दर्शननो अभिलाप करवो. त्रीजो विगछा, ते साधुनी निंदाकरवी चोथो अन्य दर्शननी प्रशंसा, ते श्लाघानुं करवुं पांचमो, बौध शाक्यादिक परदर्शनीउं साथे संस्तव परिचय करवो ए सम्यक्त्वना पांच अतिचार ते मलिनताना कारण जाणी प्रयत्ने परहरवा

हवे आठ प्रभाविक कहेछे मूल — पावयणी धम्मकही, वाईनेमित्तिउ तवस्सी य, विया सिद्धोयकवी, अठ्ठेवपभावगा भणिया ॥ ए४८ ॥ अर्थ — प्रथम प्रवचन जे द्वादशांगीरूप ते जेने छे, तेने प्रावचनिक कहिये ते युगप्रधान जाणवो

बीजो आगमधर्म कथी चार प्रकारे कथन करे, एक आक्षेपणी, बीजी विक्षेपणी, त्रीजी सवेगणी, अने चोथी निर्वेदनी तेमां जे सांभलनारने तत्वप्रत्ये आक्षेप्यते एटले आकर्षिये तेने आक्षेपणी कहिये तेना चारभेद छे एक, आचार लोच अस्नानादिक तेना प्रकाशवा थकी आचाराक्षेपणी बीजो, प्रमादने लीधे जे दूषण लाग्यां होय तेना विनाशने अर्थे प्रायश्चित्त लेवुं ते व्यवहार तेने कहेवे आक्षेपे ते व्यवहाराक्षेपणी त्रीजी, सांभलनारने संशय उत्पन्न थयाथी तेनो मधुर वचने करी संशय नाश पमाडवो तेने आक्षेपे ते प्रज्ञप्त्याक्षेपणी कहिये अने चोथी, सांभलनारने गमती नयने अनुसारे पदार्थोनी प्ररुपणा करवी ते दृष्टिवादाक्षेपणी ए आक्षेपणीना चार भेद कह्या

हवे विक्षेपणीना चार भेद कहेछे विक्षु ते भलामार्ग थकी माठ मार्ग प्रव

र्त्ताविये; अथवा मार्ग मार्ग थकी नज्ञामार्गे प्रवर्त्ताविये ते विक्षेपणी. तेना चार भेद छे. तेमां प्रथम, स्वसमय कहेतो परसमय कहे. बीजी, परसमय कहेतो स्व समयंगावडत्तानवति. त्रीजी, समवायकहेतो मिछावायं कहे. अने चोथी, मिछा वाय कहेतो समवायंगविता जवति कहे.

हवे संवेगणीना चार भेद कहेछे. जेना सांनळवायकी सांनळनारने संवेग उत्प न्न थाय ते संवेगणी. तेना चार भेदछे. एक इहलोक संवेगणी, बीजी परलोक सं वेगणी, त्रीजी परशरीर संवेगणी अने चोथी आत्मसंवेगणी.

जे सानळवायकी सानळनारने संसारयकी निर्वेद उपजावे ते निर्वेद. तेना चार भेद छे. प्रथम, इहलोगडुच्चिसुाकम्मा इहलोग डुहफल विवागसंजुत्तानवति. बीजी, इहलोग डुच्चिसुकम्मा परलोग डुहफल विवागसंजुत्तानवति. त्रीजी, परलोगडुच्चिसुकम्मा इह लोग डुहफल विवाग संजुत्ता नवति अने चोथी, परलोक डुच्चिसुकम्मा परलोग डु हफल विवाग संजुत्ता नवंति. जेम ए चतुर्भंगी यइ तेमज सुख संबंधीनी चतुर्भंगी थाय, ते आवीरीते. प्रथम, इहलोग सुच्चिन्नाकम्मा इहलोग सुहफल विवाग संजुत्ता नवंति, बीजी, इहलोग सुच्चिन्नाकम्मा परलोग सुहफल विवाग संजुत्ता नवंति. त्री जी, परलोग सुच्चिन्नाकम्मा इहलोग सुहफल विवाग संजुत्ता नवंति अने चोथी, पर लोग सुच्चिन्नाकम्मा परलोग सुहफल विवाग संजुत्ता नवंति. हवे एनो अर्थ करेछे. इह लोकने विषे डुश्चीर्ण कर्यां जे चोरी प्रमुख कर्म ते इह लोकने विषेज डुःकर्म रूप वृक्षयकी उत्पन्न थयां, माटे आ नवेज डुःखनां आपनार थाय. ते चोर प्रमु खने थाय. एमज बीजो, परलोके नारकी जीवोने डुःख थाय; ते बीजो नंग.

त्रीजो, परलोकनां करेला कर्म इहां नोगवे, जेम कोइ एक जन्मथी मां मी व्याधि दारिद्र प्रमुखे पीडित होय तेने जाणवो. चोथे नंगे नरक योग्य आयु पना बांधनार काक गृध्रादिकनी परे नावना करवी.

एमज सुच्चिन्न ते प्रथम तीर्थंकरने दानना देनार, बीजा सुसाधु, त्रीजा तीर्थंकर, अने चोथा देवना नावने विषे रह्या तीर्थंकरादिकनी पेरे नावना करवी. एवी क्षीराश्र व मध्वाश्रवादि लब्धे सहित सजल जलधरनी ध्वनिये करी समस्त लोकने प्रमोद नी करनार कथा करे, ते धर्मकथा जाणवी. ते धर्मकथिक बीजो प्रनावक जाणवो.

त्रीजो. वादी, प्रतिवादी, सन्ना, अने सन्नापति प्रमुख चार प्रकारनी पर्षदाने विषे जे प्रतिपक्षीनुं वचन उथापीने पोताना पक्षनुं वचन स्थापन करे; तेने निरू पवाद लब्धे संपन्न एवो वादी त्रीजो प्रनावक जाणवो.

चोथो त्रिकाल विषयिक, लाभालाभ, सुख, दुःख, जीवितव्य मरणनो ज्ञान वालो, ते निमित्ति प्रभावक चोथो जाणवो.
पांचमो विकृष्ट अष्टमादिकथी मांडी वर्ष पर्यंत तपनो करनार, ते तपस्वी प्रभा
छठो विद्या प्रज्ञप्ति प्रमुख शासनदेवता ते जेने सहाय छे ते विद्यावंत प्रभाव
सातमो, अंजन, पादलेप, तिलक, गुटिका, सर्वभूताकर्षण इत्यादिक सिद्धि जेने, ते सिद्ध प्रभावक जाणवो
आठमो संस्कृत प्राकृतादिक छए भाषाये करी गद्य पद्यादिकना नवो बनव ते कवि प्रभावक जाणवो ए आठ प्रभावक श्री जिनशासननी प्रभावनाना करनार छे
अथवा एज आठ प्रभावक प्रकारांतरे शास्त्रांतरथी कहिये छए उक्तंच अइस स इढि धम्म कहि, वाइ आयरिय खवगनेमित्ति ॥ विद्यारायगण सम्मत्त तित्थ पभाविति ॥ १ ॥ अर्थ – अतिशय प्राप्तपणे थइने जेने जंघा चारण विद्याचारणनी ऋद्धि तथा आशीविषजलौषधि, ते ऋद्धि अने अवधि मन पर्यवज्ञानादिक, ते अ तिशेषर्द्धि इत्यादिक ऋद्धिये सहित, बीजो राजा जेने माननिक ते राजासम्मत अने महाजनने माननिक ते गणसम्मत्त जाणवो शेष सुगम ॥ ९४८ ॥
हवे सम्यक्त्वना पांच भूषण कहेछे मूल – जिणसासणे कुसलया, पभावणा यपणसेवणाथिरया ॥ भत्तीयगुणासम्मत्त दीवया उत्तमापंच ॥ ९४९ ॥ अर्थ- जिनशासनने विषे कुशलता महापणपणु, ते अनेक प्रकारे करी आगलाने प्रतिबोधि ने श्रीजिनशासनने विषे दृढकरे बीजु प्रथम कह्यु ते रीते श्रीजिनशासननी प्रभाव ना करे त्रीजु, आयतन ते द्रव्य अने भावना भेदे करी बे प्रकारेछे तेमा द्रव्यथी तो जिनभवनादिक अने भावथी ज्ञानादिकना धरनार साधुप्रमुख तनी सेवना पर्युपासनातु करवु चोथु थिरयते श्री अरिहंतना शासनने विषे चलचित्त थय लाने स्थिर करे अने पोते पण परतीर्थिनी समृद्धि देखी स्थिरपणे रहे पण भ्र लायमान न थाय पांचमु, भत्तिके० प्रवचननो विनय व्यावृत्तरूप प्रतिपत्ति ए स म्यकिना पांच गुण ते प्रभासकके० उत्तम प्रधान गुण आभरण लक्षण पांच प्र कारना छे तेणे करी सम्यक्त्व दीपेछे, शोभेछे ॥ ९४९ ॥
हवे सम्यक्त्वनां पांच लक्षण कहेछे मूल – उवसम संवेगाविय निव्वेअ तहय होइ अणुकंपा॥अत्थिक्किचियएए, सम्मत्ते लक्खणा पंच ॥९५० ॥ अर्थ – जनवि पे रसुयक्त सम्यक्त्वपणु इये एटले लखिये, ते कारणे तेने लक्षण कहिये तमा प्रथम उपशम लक्षण छे ते कोइये घणोज अपराध कर्यो होय तोपण तना उप

र क्रोध करे नही ते उपशम, ते वे रीते छे. कोइकतो कषायना परिणामने विचारी कटुफल जाणी उपशम पामेछे अने कोइकने तो सहज स्वभावे उपशम थायछे. बीजो, मनुष्य तथा देवताना सुखने दुःखरूप जाणीने मोक्षसुखनो अभिलाप धरे. ते संवेग नामा गुण. त्रीजो, नारकी अने तिर्यंचादिक दुःखित प्राणी देखी संसार छांडवानी इच्छा करे, ते निर्वेद सम्यग्दर्शी. एटले दुःखादिके करी गहन एवा संसार कारागृहमां मोटा कर्मदंडपाशे करी नाना प्रकारे पीडित थकां तेनो परिहार करवा विषे समर्थ थई ममत्वरहित पणाना योगे करी निर्वेद युक्त थाय छे; ते निर्वेद. केटलाक ग्रंथकार संवेग के० वैराग अने निर्वेद के० मोक्षाभिलाप एवो विपरीतपणे अर्थ कहेछे. चोथो अनुकंपा, ते दुःखित प्राणिउने विषे पक्षपात रहितपणे करी तेना दुःख निवारण करवानी जे इच्छा ते अनुकंपा. तेमा पक्षपाते करी पुत्रादिकने विषे अनुकंपा, अथवा आत्मरक्षणार्थे व्याघ्रादिकनुं नसेवन करवुं; तेपण पक्षपात अनुकंपा. ते, द्रव्य अने भावथीबे प्रकारनी छे तेमां. शक्ति छतां पारकाना दुःखना प्रतिकारने अर्थे जे अनुकंपा ते द्रव्यानुकंपा. अने धर्मथी हीण थयेलाने दुःखी जोइने हृदयमां दया आणवी ते भावानुकंपा जाणवी. पांचमो आस्तिक्यके० पोताने सदगति छे एवी मति जेने छे ते आस्तिक, तेनो जे धर्म ते आस्तिक्य. ते अन्यतत्वनुं श्रवण थयुं छतां पण जिनेश्वरभाषित तत्वमां निराकांक्ष प्रतिपत्ति जाणवी. आ उपशमादिक पांच सम्यक्त्व विषय लक्षणो जाणवां. एणे करी परोक्ष सम्यक्त्व उत्तम प्रकारेकरी उपलक्षित थायछे

हवे यत्ना छ प्रकारनी कहेछे, मूल – नो अन्नतिछिए अन्नतिछि, देवेय तह सदेवेवि ॥ गहिए कुतिछिएहिं, वंदामि नवा नमंसामि ॥९५१ ॥अर्थः–अन्य तीर्थि ते परदर्शनी परिव्राजकभिक्षु भौतिकादिक तथा तेना देव जे रुद्र, विष्णु, अने सौगतादिक. तेम जे स्वदेव ते श्री अरिहंत देवनी प्रतिमा, ते कुतीर्थिउं जे सौगतादिक दिगम्बर अथवा बीजा कोइ पण दर्शन वाले ग्रहण करी होय तेने जे एम केहेके हुं वांदु नही, तथा मस्तके करी प्रणाम मात्र पण करूं नही बीजो, नमस्कार ते प्रणामपूर्वक गुणनुं बोलवुं ते पण करुं नही. ॥ ९५१ ॥

मूलः– नेवअणालित्तो, आलवेमि नोतंलवेमि तह तेसिं ॥ देमि न असणाईय पेसेमि न गंधपुप्फाइ ॥९५२॥ अर्थः–त्रीजुं, तेमज अन्य तीर्थिउंना बोलाव्या विना बोलवुं नही. तेमा जे अल्पमात्र एक वखत बोलवुं तेने आलाप कहिये. तथा चोथो. वारवार बोलावबु तेने संलाप कहिये. ते पण करुं नही अने पहेलो मिथ्यात्वी बोलावे तो तेनीसाथे अल्प बोलवुं पण घणो परिचय करवो नही. केमके

घणो परिचय करवाथी मिथ्यात्वनो उदय थाय पांचमो, अन्य तीर्थिकने अ
क ते अन्न पान खादिम स्वादिम वस्त्र पात्रादिकनु दान जे आपवु ते
पाए आपु पण अनुकम्पा टालीने धर्मबुद्धिये आपु नही उक्तंच यत सवेहि
णेहि. कुझयजिय रागदोस मोहेहि ॥ सत्ताणुकंपणठा, दाणन कहिंच पडि
॥ १ ॥ छट्ठो, ते अन्य तीर्थिकना देवोने तथा अन्य तीर्थिकए ग्रहण करेली
प्रतिमाने पण पूजाने अर्थे गंध पुष्प यात्रा स्नात्रादिक करु नही ए छ यत्न
यत्नवंत थको ते जीव सम्यक्त्वने उलंघे नही ॥ ७७२ ॥

हवे छ आगार वखाणेछे मूल – रायाभिओगोय गणाभिओगो बलाभिओगो
सुराभिओगो॥कंतारवित्ती गुरुनिग्गहोय छछिआगारा जिणसासणमि ॥७७३॥ अ
र्थ – प्रथम राजा देशनो धणी तेनो अभियोग एटले बलात्कार तेणे करी कांइ
अकार्य करवु पडे, बीजो गण ते स्वजनादिकनो समुदाय तेनो अभियोग, त्रीजो,
बलवान थकी बलवान होय तेना अभियोग, चोथो देव, कोइक शरीर अधिष्ठी काइ
करण नगाड ते सुराभिओग कहिये, पांचमो, कांतार शब्दे अरण्य अटवी, तेमां नि
र्वाह करवाने अर्थे अथवा कांतार शब्दे बाधा जाणवी ते बाधा उपन्या थकी
प्राणना वर्तन एटले निर्वाह करवा ते कांतारवृत्ति जाणवी छठो गुरु, ते माता
पिता प्रमुख वडेरा जाणवा यदुक्तं माता पिता कलाचार्यो एतेषां ज्ञातयस्तथा॥
वृद्धा धर्मोपदेष्टारो गुरुवर्गः सतां मत ॥ १ ॥ तेना निग्रह आग्रह थकी कांइ
अकार्य करवु पडे ए छ छिंडी जिनशासनने विषे अपवादे कहिये ॥ ७७३ ॥

हवे छ भावना कहे छे मूल – मूल द्वार पइठाण आहारो भायणनिही॥ दुछ
क्कस्सावि धम्मस्स सम्मत्तं परिकित्तिय ॥ ७७४ ॥ अर्थ – प्रथम जेम मूलरहित
वृक्ष होय ते प्रचंड वायुये कंपायु थकु पृथ्वीने विषे पडी जाय तेम समकि
त रहित धर्मरूप वृक्ष ते ना सम्यक्त्वरूप मूल वडेथी रहित होय तो कुतीर्थरूप वायु
ये करी प्रेर्युथकु स्थिर रहे नही एवी भावना भाववी बीजी जेम नगरने पाक
प्रमुख द्वार थाय तेम धर्म रूप नगरने सम्यक्त्व ते द्वार समानछे ए सम्यक्त्वरूप
द्वार विना धर्मरूप नगरमा प्रवेश थाय नही त्रीजी पइठाण एटले समकित ते
प्रासादने प्रतिष्ठान ते पीठिका समान सम्यक्त्व छे जेम पर वायुना नाक मजब वि
पीठिका द्वार ने उपर पर चायु होय तो ते पण निश्चल थाय तेम समकित ते
सम्यक्त्वरूप पीठिकाय करी निश्चल थाय एम भावना भाववी चोथी आहार
एटले आधारनो भेद आधार जेम समस्त जगतने पृथ्वी आधार छे तेम ध

रूप जगतने सम्यक्त्वरूप पृथ्वीनो आधारछे, एम जाववुं. पांचमी, भाजननीपरे भाजन. जेम भाजन जे ठामडो तेमां क्षीरादिक वस्तु रही शकेछे; तेम सम्यक्त्व रूप भाजनमां धर्मरूप वस्तु रही शकेछे. छठी जेम निधीके० निधानजे भंडार ते थकी मणि मौक्तिक कनकादिक सर्व पामियें; तेम सम्यक्त्वरूप निधानथकी ज्ञानादिक रत्नत्रय स्वर्गापवर्गादिक सुख सामग्री पामियें, बारव्रतरूप श्रावकनो धर्म, तेहनुं सम्यक्त्व ते श्रीतीर्थंकरे एवु कह्युंछे. हवे ए भावियें सम्यक्त्व मूलसमान, द्वार समान इत्यादिक तेथी ए भावना कहियें. ॥ ९७४ ॥

हवे ठ स्थानक कहेछे. मूल —अत्थि अनिच्चो कुणई, कयच्च वेएइ अत्थिनिव्वाण॥ अत्थिअमोक्को वाउं, ठसम्मत्तस्सठाणाई ॥ ९९७ ॥ अर्थ.— चेतना लक्षण ते जीवछे. एवु कहेवा थकी नास्तिकना मतनुं निराकरण कर्युं. ते प्रथम स्थानक. वली ते जीव नित्य उत्पत्ति विनाश रहित छे; ते बीजुं स्थानक कुणईके० ते जीव मिथ्यात्व अविरति कषाय योगेकरी ज्ञानावरणीयादिक कर्मनो कर्त्ताछे; ते त्रीजुं स्थानक ते जीव पोताना कर्यंके० करेला शुभाशुभ कर्मने वेदेछे, अनुभवेछे; ते चोथुं स्थानक. ते जीवने निरवाण ते सर्व राग द्वेष मद मोह जन्म जरा रोगादिक दुःख क्षयरूप जे अवस्था विशेष मोक्ष लक्षण पण छे; ए पांचमुं स्थानक जाणवु. ते जीवने मोक्ष पामवानो उपाय सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्ररूप साधन, ते पण छे, ते छठुं स्थानक. ए ठ सम्यक्त्वना स्थानक जाणवा. एरीते चार सद्दहणादिक बार द्वारे करी सडसठ भेदे विशुद्ध सम्यक्त्व वखाण्युं. इतिगाथार्थ

अवतरणः— एगविहाइ दसविहंसम्मं एटले एकविध आदेदेइने दशप्रकारना सम्यक्त्वनुं एकशोने उगणपचासमुं द्वार कहेछे. मूल.— एगविह दुविह तिविहं, चउहा पंचविह दसविह धम्मं ॥ दव्वाइ कारगाइ, उवसमभेएहि वासम्मं ॥९९६॥ अर्थ.— एकविध ते तत्वार्थश्रद्धान लक्षण सम्यक्त्व सामान्ये जाणवुं. द्विविध ते द्रव्य अने भावना भेदेकरी जाणवु. तेमां जे विशोधिने विशेषे करी मिथ्यात्वना पुद्गल निर्मलकरे ते द्रव्यथी जाणवुं. अने श्री जिनोक्त तत्व सद्दहे तेने विषे रुचि करे ते भावथी जाणवु, तथा आदिशब्दथकी प्रकारांतर जाणवो, ते निश्चय अने व्यवहारना भेद थकी पण बे प्रकारे सम्यक्त्व थायछे. तेमा देश काल अने संघयणने अनुमाने यथाशक्तिए साधुना अनुष्ठानरूप ते निश्चयिक जाणवो अने जे जिनशासनने विषे प्रीतिनुं करवु एवोजे आत्मानो शुभ परिणाम, ते व्यवहार सम्यक्त्व कहियें. तेथकी पण परंपराये मोक्ष पामियें. [illegible]

ने सहित करिये तेवारे चार थाय, परतु ते सम्यक्त्व जेवारे अंतरकरणे उपशमि क सम्यक्त्वथकी पडेछे, अने हजी मिथ्यात्व पाम्योनथी, त्यांसुधीमा जघन्यथी तो एक समय अने उत्कृष्टो छ आवलि प्रमाण सास्वादन सम्यक्त्व कहिये पछी ते जीव मिथ्यात्वे जाय तेमाटे ज्यासुधी मिथ्यात्व पाम्यो नथी, त्यासुधी जघन्ये मि थ्यात्वनी आपत्तिके० पामवुं तद्रूप ए थायछे ॥ ए६१ ॥

हवे पांचविध सम्यक्त्व कहेछे मूल — वेययसमत्त पुण, एयचिय पचहा विणि द्दिठ ॥ सम्मत्तचरमपोग्गल, वेयणकाले तय होइ ॥ ए६२ अर्थ — पूर्वोक्त चार स म्यक्त्व, तेमां वेदक सम्यक्त्वनु उमेरण करवाथकी पांच प्रकारनु सम्यक्त्व थायछे, ते वेदक सम्यक्त्व ते सम्यक्त्वनु पुज तेनु चरमके० छहेलु पुद्गल वेदे, तेवारे थाय ते आवीरीते छे, जे क्षपकश्रेणी पडिवज्याने अनतानुबधीनी चोकडी तथा मिथ्यात्व ने मिश्र पुज खपावीने सम्यक्त्वना पुद्गना पुद्गल उदीरी उदीरीने अनु नरे तेनिर्जरावतो छहेले जे सम्यक्त्वना पुद्गल वेदे, तेवारे वेदक सम्यक्त्व कहिये

इहां काइ केहेशे के क्षायोपशमे अने वेदके पण सम्यक्त्वना पुद्गल वेदता एमां शु विशेषछे ? तेनो उत्तर आमछे के, क्षायोपशमे समस्त काल सम्यक्त्व पुद्ग ल वेदे अने वेदक सम्यक्त्वतो चरमके० छेला सम्यक्त्व पुद्गल वेदे पण परमार्थ ता क्षायोपशमिकेज छे चरम पुद्गलनो ग्रास छे, ने शेष पुद्गलना क्षयछे चरमग्रा स वर्जीने ता मिथ्यात्वनावनु अपगम एवा उपशमनो सद्भावछे ॥ ए६२ ॥

हवे दश प्रकारनु सम्यक्त्व कहेछे —मूल —एए चिय पचविह, निस्सग्गा निगम नेयउ दसहा ॥ अहवा निसग्गरुई इच्चाइजमागमेजणिय ॥ ए६३ ॥ अर्थ — ए पूर्वोक्त पाच नद जे कह्या, तेने एकेकना एक निसर्ग, अने बीजा अनिगम एवा बे बे नेद करता दश प्रकार थायछे अथवा निसर्ग रुचि, उपदेश रुचि इत्यादिक दश प्रकारनु सम्यक्त्व जे आगम पन्नवणा प्रमुखनेविषे कह्युछे तज दशप्रकार

मूल — निसग्गुवएसरुई, आणारुइ सुत्त बीय रुइमेव॥अनिगम विज्ञाररुई, कि रिया सखेव धम्मरुई ॥ ए६४ ॥ अर्थ — इहां रुचि शब्द सर्वत्र जोडवा तमां प्रथ म निसर्ग, ते स्वनाव रुचि एटले श्रीजिनोक्त तत्वनविषे जे अजिनाय ते निसर्ग रुचि जाणवी बीजी, गुरुप्रमुखना जे उपदेश, तेनाथी जेने रुचि हाय ते उपदेश रुचि जाणवी. त्रीजी, आज्ञा ते सर्वज्ञना वचन उपर रुचि ते आज्ञारुचि चोथी सूत्र ते आचारागादिक अग प्रविष्ट अने अगबाह्य ते आवश्यक दशवैकालिकादिक तेना उपर रुचि ते सूत्ररुचि पाचमी, बीजनी पर जे हाय ते बीज, एटले एकवचन ने

अनेक अर्थनो उपजावणहार थाय ते बीजरुचि. छट्ठी अभिगम विशिष्ट परिज्ञान, त्यां जे रुचि ते अभिगमरुचि. सातमी, समस्त द्वादशांगीने नयेकरी विचारी; तेथकी उपनी जे रुचि ते विस्ताररुचि. आठमी, संयमनुं जे अनुष्ठान, त्यां जे रुचि ते क्रियारुचि. नवमी, संक्षेपनेविषे रुचि, पण विस्तारार्थ न जाणे ते संक्षेपरुचि जाणवी. दशमी, श्रुतधर्म उपर रुचि ते धर्मरुची. ए दश रुचि,संक्षेपथी शब्दार्थ मात्रेकही.

हवे ए दश रुचिने विस्तारेकरी सूत्रकार कहेछे. मूलः—जो जिणदिट्ठे भावे, चउ व्विहे सद्दहाइ सयमेव ॥ एमेवनन्नहत्तिय, निस्सग्गरुइत्ति नायव्वो ॥ ९६५ ॥ अर्थः— जे कोइ जिनेश्वरना दीठेला भाव जे जीवादिक पदार्थ तेने द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावना भेदथकी चारप्रकारे अथवा नाम, स्थापना, द्रव्य, अने भाव ए चार प्रकारे ते कोइना उपदेशविना सयमेवके० पोतानी मेलेज जातिस्मरणेकरी अथवा पोतानी बुद्धियेकरी श्रीभगवते दीठा जे भाव; ते तेमज छे, पण अन्यथा नथी. एवी रीते सद्दहे. ते प्रथम निसर्गरुचि जाणवी. ॥ ९६५ ॥

मूलः—एए चेवउ भावे, उवइट्ठे जो परेण सद्दहइ ॥ छउमत्थेण जिणेणव, उवएसरुइत्ति नायव्वो ॥ ९६६ ॥ अर्थः— एज पूर्वोक्त चउद जीवादिक पदार्थ तेने छद्मस्थ अथवा केवलीभगवानना कहेला उपदेश थकी सद्दहे, ते बीजी उपदेशरुचि जाणवी इहां सूत्रमां प्रथम छद्मस्थ कह्यु. तेनुं कारण के केवलीपण प्रथम छद्मस्थ होय, पछी केवली थाय. तेथी प्रथम छद्मस्थ कह्यु. अथवा उपदेशना आपनार छद्मस्थ घणा होय, तेथी प्रथम तेनो उपदेश सांभलीने सद्दहे. ॥ ९६६ ॥

मूलः—रागो दोसो मोहो, अन्नाणं जस्स अवगयं होइ॥आणाएरोयंतो, सो खलु आणारुईनाम ॥ ९६७ ॥ अर्थः—राग, द्वेष, मोह, शेष मोहनीयनी प्रकृति अज्ञान मिथ्यात्वरूप ते जेने देशथकी अपगतके० गया होय पण सर्वथा गया न होय; एवो जे होय ते श्रीजिनेश्वरनी आज्ञाये कुग्रहना अभावथकी जिनोक्त वचन सत्यकरी माने. ते त्रीजी आज्ञारुचि जाणवी. ॥ ९६७ ॥

मूलः—जो सुत्तमहिज्जंतो सुएणओगाहई उ सम्मत्तं॥अंगेण बाहिरेणव, सोसुत्तरुइत्ति नायव्वो ॥९६८॥ अर्थः-जेप्राणी आचारांगादिक अंगप्रविष्टश्रुत अने आवश्यकादिक अंगबाह्यश्रुतने जाणता थका ते श्रुतेकरी सम्यक्त्व पामे. ते चोथी सूत्ररुचि जाणवी.

मूलः — एगपएणेगाई, पयाइ जो पसरई उ सम्मत्तं ॥ उदएव्व तिल्लबिंदू, सो बीयरुइत्ति नायव्वो ॥ ९६९ ॥ अर्थः— जे जीवादिक एक पद जाणीने तेने जाणता पदेकरी अनेकपद जेने सम्यक्त्वने विषे पसरे. जेम उदकने विषे तेलनुं बिंदु पस

रे तेनीपरें प्रसारने पामे, ते पांचमी बीजरुचि सम्यक्त्वनेविषे जाणवी
मूल – सो होइ अनिगमरुई सुअनाण जस्स अहउ दिठ ॥ एक्कारस
पयन्नगा दिठि वाउंय ॥ ८७० ॥ अर्थ – जेणे श्रुतज्ञानने अर्थ थकी द्वा
णुछे, एटले अग्यार अगरूप तथा पयन्ना उतराध्ययनादिक दृष्टिवाद इहां
ते सूत्रथकी जुदा कह्या ते प्रधानपणु जणाववाने अर्थे कह्यां वली च
की उववाइ प्रमुख उपाग, तेनो पण अर्थ जाण्योछे ते छठी अनिगमरुचि
मूल – दवाण सवनावा, सवपमाणेहि जस्स उवलद्धा ॥ सवाहि नयवि
विहाररुई मुणेयवो॥८७१॥अर्थ – द्रव्य जे धर्मास्तिकायादिक छ, तेना सम
र्यायादिक जे नाव, तेनो प्रत्यक्षादिक समस्त प्रमाणे करीने जेने उपलब्ध के०
णपणु थयुंछे, तथा सर्व नयोनु विधिये करीने जाणपणु थयुछे, ते विस्ताररुचि जाण
मूल –नाणे दसणचरणे, तवविणए सवसमिइगुत्तीसु ॥ जो किरियानावरुई,
खलु किरियारुईनाम ॥ ८७२ ॥ अर्थ – ज्ञान, दर्शन, चारित्रनेविषे अने तप,
वार नेदनु, विनय ते आचार्यादिक सवधी, समिति ते इर्यादिक पाच, गुप्ति ते
मनोगुप्त्यादिक त्रण, तेने विषे जे किरिया, त्या जेनी नावथी रुचिछे, ते खलु
के० निश्चये क्रियारुचि नाम जाणवु गाथामा चारित्र थकी तप प्रमुख जुदा था
ल्या ते विशेषे ए मोक्षागछे एवु जणाववाने अर्थे आप्याछे ॥ ८७२ ॥
मूल – अणनिग्गहियकुदिठी, सखेवरुइत्ति होइ नायवो ॥ अविसारउपवय
णे, अणनिग्गहिउंय सेसेसु ॥ ८७३ ॥ अर्थ – जेणे कुदृष्टि के० सागतादिकनी
दृष्टि ते अनगिगृहीत एटले अगीकार करी नथी, तथापि श्रीवीतरागना प्रवचनने
विषे अविशारद एटले अजाणछे, किंतु माह्यो नथी तेमज शेष कपिलादिकप्रणीत
प्रवचन, तेनेविषे पण अननिगृहीत छे शेष ए बोलथकी सर्व दर्शनांतरनु ज्ञान
पेक्षु अनिके० अनिमुखपणे उपादेयपणे जे ग्रहणके० ज्ञान तेज्या नथी तने
ननिगृहीत कहिये एम कुदृष्टिरूप समस्त दर्शनांतरना अगीकारने ज जिना
पुत्रनी पेरे निषेध्यो ए सक्षेपरुचि जाणवी ॥ ८७३ ॥
मूल –जो अहिकाय धम्म सुअधम्म खलु चरित्तधम्म च ॥ सद्दहइ जिणाभिहिय,
म्मरुइत्ति नायवो ॥८७४॥ अर्थ –जे जीव अस्तिकायादिकनो धर्म जे गति उ
ादिक, अने श्रुतधर्म जे अगप्रविष्टादिक आगमनु स्वरूप तेमज चारित्रधर्म न
यिकादिक जे जिणके० श्रीतीर्थंकरदेवनो अनिहित के० कहेला तेने सर्दह
री माने, ते दशमी धर्मरुचि जाणवी ए दशनेद जे कह्या ते शिष्यना परि

ज्ञानने अर्थे जेदेकरी देखाड्या. अन्यथा निसर्गरुचि, उपदेशरुचि, अने अधिगम रुचिने विषे ए सर्वबोलनो समावेश थायछे ॥ ९७४ ॥

हवे पूर्वोक्त क्षायिकादिक त्रण सम्यक्त्व, ते इहां प्रसंगथकी नरकादिक जीवोने विषे कहेछे. मूलः—आइपुढवीसु तीसं, खयउवसमवेयगं च सम्मत्तं ॥ वेमाणिय देवाणं पणिंदितिरियाण एमेव ॥ ९७५ ॥ सेसाण नारयाणं, तिरयछीणंच तिविह देवाणं ॥ नत्थिहु खइयं सम्मं, अन्नेसिं चेव जीवाणं ॥ ९७६ ॥ अर्थः— आदिके० पहेली रत्नप्रजादिक त्रण पृथ्वीमा क्षायिक, उपशमिक, अने वेदक ए त्रण सम्यक्त्व थाय. जे शुद्धसम्यक्त्व पुंजना पुज्जलने वेदे ते वेदक सम्यक्त्व जाणवो. अने तेनेज क्षायोपशमिक कहिये, अने उपशमिक क्षायिके उपशमिकत्वने विषे पुज्जल वेदवानो सर्वथा अजावछे. तेमाटे वली त्रण पृथ्वीने विषे क्षायिक, उपशमिक अने क्षायोपशमिक ए त्रणज संजवे एनो संजव जेरीते होय तेरीते कहेछे.

जे नारकी अनादि मिथ्यादृष्टि प्रथम सम्यक्त्व पामे तेने अंतकरण काले अंतरमुहूर्त्तसुधी उपशमिक सम्यक्त्व होय. पछी सम्यक्त्वना शुद्धपुंज संबंधी पुज्जल वेदतो छतो क्षायोपशमिक सम्यक्त्व पामे. अथवा मनुष्य तिर्यंच क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टि नारकीमां उपजे तेने पारिजाविक क्षायोपशमिकना लाजथकी विराधित सम्यक्दृष्टि, छठी नरक पृथ्वीये ग्रहण करेला सम्यक्त्वे जाय. ए सिद्धांतिकनो मतछे.

अने कर्मग्रंथिकनो तो आवीरीते मत छे के, वैमानिक देव थकी अनेरा मनुष्य तिर्यंच तेज क्षायोपशमिक सम्यक्त्वे उपजे. परंतु ग्रहण करेला सम्यक्त्वे न उपजे. वली कोइक मनुष्य, नरक योग्य आयुष्य बांधी पछी क्षपकश्रेणी मांमे, ते बद्धायुष्कपणा माटे पुरी करे नही; मात्र दर्शन सप्तक खपावी क्षायिक सम्यक्त्व पामे; ते हवे मनुष्यना आयुष्य त्रूटयाथी मरण पामीने नरकमा उपजे. तेवारे प्रथमनी त्रण नरक पृथ्वीये क्षायिक सम्यक्त्व लाजे, ते ताजविक मनुष्यनेज होय. मनुष्यना जवमां तेनो प्रारंज होय. जेम नारकीने तेम वैमानिक देवताने अने असंख्यात वर्षना आयुष्य वाला तिर्यंचने पूर्वोक्त त्रण सम्यक्त्व जाणवां.

त्यां वैमानिक देवोने उपशमिक अने क्षायिक ते नारकीनीपरे क्षायोपशमिक अने उपशमिक सम्यक्त्व पछी थाय. अथवा तिर्यंच मनुष्य क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टि थकां जो वैमानिकमां उपजे तो तेने पारजविक होय. मनुष्य बे प्रकारनां, एक संख्यातावर्षनां आयुष्यवालां अने बीजां असंख्यातावर्षनां आयुष्यवा

ता, तेमां सख्यातावर्षने श्रायुष्ये मनुष्यने उपशमिक नामा प्रथम सम्यक्त्वने
होय अथवा उपशम श्रेणीये होय पछी क्षयोपशमिक तात्विक होय
क्षायोपशमिक सम्यकदृष्टि देवता मनुष्यमा उपजे, तेवारे पारत्नविक क्षाया
म होय क्षपकश्रेणिये तात्विक क्षायिक होय श्रने देवता तथा नारकी
यिकसम्यकदृष्टि मनुष्यमा उपजे, तेवारे पारत्नविक क्षायक होय, श्रने श्रसख्यात
वर्ष श्रायुष्क मनुष्यने उपशमिक क्षायक, ते देव तथा नारकीनी परे जाणवु
श्रने क्षायोपशमिक तेवार पछी होय ते तात्विक जाणवो यने तिर्यच तथा
मनुष्य क्षायोपशमिक सम्यक् सहित वैमानिकमा जाय पण श्रन्य स्थानके न जा
य श्रने जेणे मिथ्यादृष्टि थकी श्रायुष्य बाध्युछे, पछी क्षायोपशमिक सम्यक्त्व पा
म्यो ते एमाज उपजे, तेवारे श्रवश्य मरण समये मिथ्यात्वे जइने उपजे पारत्न
विक क्षायोपशमिक एमा न उपजे श्रने क्षायोपशमे सहित देवतामा उपने एह
मैग्रथिकनु मत कह्यु

सिद्धांतिक मते क्षायोपशम सहित पूर्वबद्धायुष्क थकाज क्षायोपशमिक तीरे
एमा उपजे, तेवारे पारत्नविक पण लाभे श्रसख्यातावर्षायुष्क तिर्यचने त्रणे स
म्यक्त्व होय श्रसख्याता वर्षायुष्क मनुष्यनीपरे जाणवो सेसाएकें० ग्रेर त्र
ण पृथ्वी विना बाकीना नारकीनो श्रसख्यातावर्षायुष्क सज्ञी पचद्रिय तिर्यच
तेनी स्त्रीने, तथा तिनिदुके० त्रण प्रकारना देव जे नवनपति व्यतर तथा ज्यो
ती तेने नत्तिके० नहोय, क्षायिक सम्यक्त्व एने तात्विक नहोय केमके सख्या
वर्षायुष्क मनुष्यनेज तेनो प्रारच होय, श्रने पारत्नविकपणे नहोय क्षायक सम्यक्दृष्टि
एमां नउपजे पण उपशमिक क्षायोपशमिक उपजे श्रन्य जीवोने सम्यक्त्व नहोय

एकेंद्रियादिक चार तथा श्रसज्ञी पचद्री एमने तात्विक श्रने पारत्नविक ए त्र
माहेनो कोइ न होय, श्रने सास्वादन सम्यक्त्व वर्जी बादर पृथ्वी, श्राप वनस्पति,
इंद्रि, तेंद्रि, चउरिंद्रि, श्रसज्ञीपचद्रि, सज्ञीपचद्रि एटलाने श्रपर्याप्तावस्थाय पार
नविक होय पर्याप्ति सज्ञीपचद्रिने तात्विक पण लाभे सूक्ष्मएकेंद्रिय श्रने बाद
र तेउ, वायुमांहे सम्यक्त्वनो लेश जेने छे, तेने उपजवानो श्रनावछे तमाट ए
मां सास्वादन न थाय ए कर्मग्रंथिकनु मत जाणवु श्रने सिद्धांतिक मतना एक
इय सर्वमांहे सम्यक्त्व कहे नही जे कारणे श्रीपन्नवणा उपागमा कह्युछे पुढ
काइयाणपुजगायमा पुढविकाइया नो समदिठ्ठिनो सम्मामिछा न्दिठिमिछा दिठि
एर जावयणस्सइकाइया इतिएकविंशति गाथार्थ ॥ ७३५ ॥ ७३६ ॥

अवतरणः— कुल कोडीणं संखा जीवाणति एटले जीवोनी कुलकोटीनी संख्या तेनुं एकशोने पचासमुं द्वार कहेछेः मूलः— बारस सत्तय तिन्निय, सत्तय कुलकोडिसय सहस्साइ ॥ नेया पुढवि दगा गिणि, वाऊणं चेव परिसंखा॥९७७॥ कुलकोमिसयसहस्सा, सत्त छय नवय अठवीसंच ॥ बेइंदिय तेइंदिय, चउरिंदिय हरियकायाणं ॥ ९७८ ॥ अर्थः— बारलाख कुलकोटी पृथ्वीकायमाहे जाणवी. सातलाख कुलकोटी अपकायमांहे जाणवी. एरीते सतसहस्त्रलाख सर्वत्र जोडीये. तेवारे त्रणलाख तेउकायमांहे. सातलाख वायुकायमांहे, कुलकोडीना सतसहस्र लाख ते अनुक्रमे सातलाख बेंड्रियमांहे, आठलाख तेड्रियमाहे, नवलाख चउरेंद्रिमांहे अने अठावीस लाख सर्व वनस्पतिकायमांहे जाणवी. ॥ ९७७ ॥ ९७८ ॥

मूलः— अद्धत्तेरस बारस, दस दस नवचेव सय सहस्साइं ॥ जलचर पक्खि चउप्पय, उर भुय सप्पाण परिसंखा ॥९७९॥ अर्थः—साडाबारलाख कुल कोडी जलचरमा, बारलाख कोडी खेचर पक्षीने विषे जाणवी, दशलाख चतुष्पद एटले हस्ति, तथा घोडा प्रमुखमांहे जाणवी, दशलाख उरपरिसर्प ते परड कालंदर प्रमुखमां जाणवी तथा नवलाख भुजपरिसर्प गोह नोलियादिक माहे जाणवी. ए रीते कुलकोडी लाख ए बे बोल सर्वत्र केहेवा. ॥ ९७९ ॥

मूल.— छवीसा पणवीसा, सुर नेरइयाण सयसहस्साइं ॥ बारसयसयसहस्सा, कुलकोडीणं मणुस्साणं ॥९८०॥ अर्थ.— छवीसलाख देवतामां, पचीसलाख नारकीमां अने बारलाख कुलकोडी मनुष्यमां जाणवी. ॥ ९८० ॥

हवे ए सर्वमली जेटला कुलकोडीना लाख थाय ते कहेछे. मूल.— एगाकोडाकोडी, सत्ताणउई नवेसयसहस्सा ॥ पन्नासं च सहस्सा, कुलकोडीणं मुणेयव्वा ॥ ॥ ९८१ ॥ अर्थ.— एककोडाकोडी सत्ताणुं सतसहस्र पचासहजार. सर्व मली एटली कुलकोडी थाय. एकक्रोडने साडीसताणुंलाख कुलकोडीनी संख्या थाय. इतिगाथा पंचकार्थ. ॥ ९८१ ॥

अवतरणः— हवे जोणिलक्खाचुलसीइत्ति एटले चोराशी लाख योनीनुं एकशो एकावनमुं द्वार कहेछे. मूल — पुढविदग अगणि मारुय, एक्केक्क सत्तजोणि लक्खाउ ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणिलक्खाउ ॥ ९८२ ॥ अर्थः— पृथ्वी, आप, तेज, वायु ए चारमाहे एकेकने सात सात लाख योनिछे. अने प्रत्येक वनस्पतिमाहे दशलाख योनिछे. अनंत एटले साधारण वनस्पतिमांहे चउदलाख योनिछे.

मूल.— विगलिंदिएसु दोदो, चउरो चउरोय नारय सुरेसु ॥ तिरिएसु हुंति चउरो,

चउदसलरकाउ मणुएसु ॥ ९७३ ॥ अर्थ — विकलेंद्रिय जे बेंद्रियादिक तेमाहे प्रत्येके बे बे लाख योनिछे अने चारलाख नारकीने, तथा चारलाख देवोने, तथा शेष तिर्यंचमांहे चारलाख योनी जाणवी वली मनुष्यनेविषे चउदलाख योनी जा एवी योनी शब्दनो ए अर्थछे के, यु मिश्रणे यु धातु मिश्रणे अर्थ, तेथी एवो अर्थ थायछेके, जीव नवांतरे संक्रमे तेवारे तेजस कार्मण शरीरवत थको औदारिक शरीर योग्य पुद्गलनी साथे मिश्र थाय ते योनी कहिये. ॥ ९७३ ॥

इहां कोई कहेशे के अनंताजीवोने उत्पत्तिस्थानक पण अनंता जोइये अथवा जीवोने सामान्य आधारनूत जे असंख्यात प्रदेशात्मक लोकछे, तो असंख्याता उत्पत्ति स्थानक थाय, एमपण न कहेवु केमके केवलीनगवान केवलदृष्टे करी घणा स्थानक पण वर्णादिक धर्मे सरखा जाणी तेने एक योनी कहेछे ते कारण माटे अनंताजीवोनी पण चउरासी लाखज योनी जाणवी तेज गाथाये करी कहेछे

मूल — समवन्नाइ समेया, बहुवोविय जोणि लरक नेयाउ ॥ सामन्ना निप्पत्ति उ, एकग जोणीय गहणेण ॥ ९७४ ॥ अर्थ — समके० सरखे वर्ण प्रमुखेकरी एटले वर्ण, गंध, रस स्पर्शादिकना समपणाथकी समेयाके० सहित एवा बहुवाके० घणाजे योनीना लाख तेना नेदथकी सामान्यपणे निप्पतिके० घणा सरिखे वर्णादिके पण एक योनीनु ग्रहण करी लइये, योनी ते उत्पत्तिस्थानक समजवु जेम वृश्चिकादिकने गोवर, तेम ए जाणवु अने एक योनीनेविषे घणा कुल होय एवा विशेषपणाने लीधे योनी अने कुल ए बे जूदा जाणवा इति गाथात्रयार्थ ९७४

अवतरण — तिक्कालाई वित्तउ विवरणत्ति एटले त्रकालि इत्यादिक वृत्तिना अर्थनो विवरोकरवो एवु एकशोने बावनमु द्वार कहेछे मूल —स्रग्धरा वृत्त त्रैकाल्य द्रव्यषट्कनवपदसहितं जीवषट्कायलेश्या, पंचान्ये चास्तिकाया व्रतसमितिगतिज्ञानचारित्रनेदा ॥ इत्येते मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः, प्रत्येति श्रद्धाति स्पृशति च मतिमान् य स वै शुद्धदृष्टि ॥९७५॥ अर्थ —त्रणकाल ते अतीतादिक, द्रव्यषट्क ते धर्मास्तिकायादिक, नवपदते जीवादिक नवतत्व करी सहित एकेंद्रियादिक पांच अनिंद्रिय नेला करवा थकी जीव षट्क थाय, एमज पृथ्व्यादिक काय छ, लेश्या ते कृष्णादिक छ, पांच अनेरा धर्मास्तिकायादिक अस्तिकाय जाणवा वली व्रतते प्राणातिपात विरमणादिक पांच, समिति ते इर्यादिक पांच गतित नारकादिक चार, अने तेनी साथे सिद्धमोक्ष नेळिये तेवारे पांच थाय ज्ञान ते मत्यादिक पांच, चारित्र ते सामायिकादिक पांच, ए प्रत्येके पांच पांच नेद इति एणे सहित

करी, पूर्वोक्त त्रणकालादिक पदार्थ मोक्षनुं मूल ते त्रिभुवन के० त्रणलोकने म हित के० पूजनिक एवा श्रीअरिहंत तीर्थंकर ते केवाछे? स्वनाविक कर्मक्षय सुरकृ त एवा अतिशये आठप्रातिहार्ये विराजमान, एवा ईशैः के० आश्चर्यवंते कह्युंछे. ते कारणे एने प्रत्येति के० स्वरूपथकी जाणे, जाणीने पछी श्रद्धयातिके० सर्दहे. पो ताना आत्माने रुचावे. तेनुं स्पृशतिके० सम्यक्प्रकारे सेवन करे, ते जीव स्फुटके० प्रगटपणे शुद्धदृष्टि मिथ्यात्वमूलथी रहित पणाथकी शुद्ध सम्यक्त्ववंत जाणवो.

हवे एज सूत्रकार वखाणे छे. मूलः— एयस्स विवरण मिणं, तिकाल मईय व टमाणेहिं ॥ होइ नविस्स जुएहिं, दवछक्कं पुणो एयं ॥ ९७६ ॥ अर्थः— ए वृत्तिनुं विवरणके० व्याख्यान करवुं; ते आवी रीते, त्रणकाल, तेमां अतीत जे थई गयो. वर्त्तते वर्त्तमान, होइके० थाय, अने त्रीजो नविष्य ते थाशे, तेणेकरी युक्त ए काल त्रिक अने द्रव्यनुं षट्क. वली तेज हवे आगली गाथाये कहेछे. ॥ ९७६ ॥

मूल — धम्मछिकायदवं, दवमह म्मछिकायनामंच ॥ आगास काल [illegible] जीवादवस्सरुवंच ॥ ९७७ ॥ अर्थः— जीव अने पुज्जल जे पोतानी गति[illegible] रिणीत छे, तेने तेज स्वनाव धरे, तेथी धर्मकहियें. अने अस्ति शब्द [illegible] य जे संघात, ते धर्मास्तिकाय द्रव्य कहियें; तेमज ए जीव तथा [illegible] त जे स्थिति क्रियापरिणीत द्रव्य छे, तेने स्थिति आपनार [illegible] काय कहियें. त्रीजुं, समस्त लोकालोक व्यापी अनंत प्रदेश[illegible] प आकाश द्रव्य जाणवुं. चोथुं, समस्त वस्तुना [illegible] की थायछे, ते कालद्रव्य जाणवुं. अथवा कल्पिये [illegible] प्रकारे करी सर्व सचेतन अने अचेतन वस्तु [illegible] पांचमुं जे पूराय अने गलि जाय ते पुज्जल [illegible] जीवशे; ते जीव जाणवो. तेज अस्तिकाय [illegible]

इहां ए नावछे के, जो धर्मास्तिकाय [illegible] नहोय, अने जो अधर्मास्तिकाय द्रव्य [illegible] तथा जो आकाशास्तिकाय द्रव्य न [illegible] वली जो कालद्रव्य न होयतो [illegible] तथा जो पुज्जलद्रव्य न होय [illegible] द्रव्य न होय तो प्राणी [illegible]

हवे नवपदनुं स्व[illegible]

णा ॥ बंधो मुक्खो इमाइ, नवपयाइ जिणमयंमि ॥ ७८८ ॥ अर्थ – जे सुखदुःख ने जाणे ते जीव, बीजु तेथकी विपरीत ते धर्मास्तिकायादिक अजीव जाणवा त्रीजु शुभप्रकृतिरूप कर्मते पुण्य, चोथु तेथकी विपरीत कर्म ते पाप जाणवु पांचमुं जेणेकरी शुभाशुभ कर्मरूप जल, ते जीवरूप सरोवरमां प्राप्त थाय, ते आश्रव जाणवो छठु गुप्त्यादिके करी ते पूर्वोक्त आश्रवनु जे रुंधन करवु ते संवर कहियें सातमु विपाके अथवा तप प्रमुखेकरी, देशथकी जे कर्मोने खपाविये ते निर्जरा जाणवु आठमु कर्मोने जीवनीसाथे एकमेक करिये ते बंध जाणवु नवमु समस्त कर्मोनो क्षयकरीने ज्या जीव पोताना स्वरूपमा स्थित थाय, ते मोक्ष कहियें एरीते ए नवपद श्रीजिनशासनने विषे कह्याछे

इहां आश्रव, बंध, पुण्य अने पाप ए चार ते मुख्य संसारनां कारणछे, तेने हेयपणे जाणवा अने संवर, तथा निर्जरा एबेते मुख्य मोक्षनां कारणछे अने मोक्ष ते मुख्यपणे साध्यछे, तेमाटे ए त्रण उपादेय जाणवा

एम शिष्यने हेय उपादेय जणाववाने अर्थे नवपदार्थ कह्या अन्यथा तत्त्व अपेक्षायेंता जीवाजीवने विषे पुण्यपापादिकनो अंतर भाव संभवे. छित्व सत्वार्थ श्री स्थानांगने विषे कह्युछे "उक्तच जदत्थि वण लोए, तं सव दुप्पडायार" नवहाजीवाचेव अजीवाचेवत्ति एना विस्तारे उत्तरोत्तर भेद करे तो अनंता थाय

हवे जीव अजीवने विषे पुण्य पापनु शी रीते अंतरभावे? ते कहेछे पुण्यपाप रूप कर्मना जे बंधछे ते पुद्गल परिणामछे अने पुद्गल अजीवछे ने आश्रव मिथ्या दर्शनरूप ते जीवनु परिणामछे वली संवरपण आश्रव निरोध लक्षण देश अने सर्वना भेदकरी आत्मानु परिणाम छे निर्जरा ते कर्मना परिसाट एटले ज आत्मा पोतानी शक्तियेंकरी कर्म दूर करे ते जाणवु तथा मोक्षपण समस्त कर्मरहित, तेथी आत्मानेज जाणवु वली अन्यत्र स्थानके पुण्य अने पाप ए बे बंधन विषे अंतर भवेछे तेवारे सात पदार्थ थायछे ॥ ७८८ ॥

हवे जीव षट्क कहेछे मूल – जीव एक इग बिति चउ पंचिंदिय अणिंदियतरू च छकाया पुढविजला निल गाउ वणस्सइ तसेहिं ॥ ७८९ ॥ अर्थ – एकेंद्रियादिक पांच छहो अनेंद्रियने समस्त कर्मेंकरी रहित, वली शरीर अने इंद्रियादिक रहित नथी एवो निरूप जाणवो, ए जीव षट्क कह्यो अने छकाय ते पृथ्वीकाय आदि देइने अनुक्रमे त्रसनं थायछे ते जाणवी. ॥ ७८७ ॥

हवे लेश्या छ कहेछे मूल – कृष्णमार्त कन्हा, नीला काऊय तेयपम्हसुक्का ।

कालविहीणं दव्वं, छक्कं इह अत्थिकायाउ॥९९०॥अर्थः—जेणेकरी जीवने अने कर्मने मांहोमांहे आश्लेशाय तेने लेश्या कहिये; जेम स्फटिकने कृष्णादिक द्रव्य साथें जोडिये तो तेवोज वर्ण देखाय, तेम जीवने पण जाणवुं. अन्य वली कृष्णादिक द्रव्यने योगांतर्गत द्रव्य कहेछे. एक वली समस्त कर्मनी प्रकृतिनुं निस्पंदरूप कहेछे. वली कांइकतोकार्मण शरीरनी परें जुदा आठकर्मथकी कार्मण वर्गणा थकी नीपन्या कृष्णादिक द्रव्य, तेने लेश्या शब्दे कहेछे. इहां तत्व केवली जाणे. इहां जीवने कृष्ण परिणामे कृष्णलेश्या जाणवी. एम बीजी नीलादिक लेश्याउ पण जाणवी.

कालविहीणंके० एक कालद्रव्येकरी रहित जे द्रव्यनो षट्क ते इहां अस्तिकाय जाणवो. एटले छ द्रव्यने एक कालद्रव्य रहित करिये, तेवारे पंचास्तिकाय थाय; अने एक कालद्रव्यने अस्तिकाय न कहिये. केमके प्रदेशनो समूह कालनेविषे नथी, जे कारणे कालनो अतीत समयते विनिष्ट, अने अनागत समय ते अनुत्पन्नपणे करीने प्रज्ञापक समय एक होय, एम कहेशोतो शिष्य कहेछे के; आवली, मुहूर्त्त दिवसादिकनी प्ररूपणा ते मिथ्या थाशे अने आवलिका कहेशो तो असंख्याते समये एक आवलिका थायछे; तेवारे घणा प्रदेशनी उत्पत्ति थाशे तेनो उत्तर आमछेके, यद्यपि ए वात सत्यछे, तथापि आवलिकादिक जे छे, ते व्यवहार नय आश्री कह्योछे पण निश्चे नय नथाय. ॥ ९९० ॥

हवे व्रत कहेछे. मूलः— पाणिवह मुसावाए, अदत्त मेहुण परिग्गहेहिं इमं ॥ पंचवयाइं भणिया पंचसमिईउ साहेमि ॥ ९९१ ॥ अर्थ.— एक प्राणातिपात बीजुं मृषावाद, त्रीजुं अदत्तादान, चोथुं मैथुन; पांचमुं परिग्रह. ए पांचेने विरमण रूपे लेवा, ए पांच महाव्रत इहां श्री जिनशासनने विषे कह्यांछे. हवे पाच समिति कहुंछुं.

मूल — इरिया भासा एसण, गहण परिठ्ठवण नामिया ताउ ॥ गंच गईउ नारय, तिरिय नर सुर सिद्धिनामाउ॥९९२॥अर्थः—ईर्यांभाषादिक पांच समिति जाणवी. न[illegible] के० तेनु स्वरूप व्रत तथा समितिनुं स्वरूप ते पेहेलां पासठ, छासठ तथा [illegible] द्वारमा सविस्तरपणे वखाण्युंछे तेथी इहां नाममात्र कह्यु, अने पाच, [illegible] त्यांगम्यते एटले पोताना कर्मरूप दोरडे खेचीने, प्राणीने जे स्थानपन्न [illegible] णवी ते एक नारकी संबंधीनी, बीजी तिर्यंच संबंधिनी, त्रीजी [illegible] थी देवता संबंधीनी, अने पांचमी ज्यां सर्वकर्मनो क्षय थाय ते [illegible]

ज्ञान पाच कहेछे. मूल.—नाणाइं पंच मइ सुय [illegible]
सामाइय छेय परिहारे सुहुम अहखाय चरणाइं ॥ [illegible]

त्रे. मूलः— दंसण वय सामाइय, पोसह पडिमा अबंभ सचित्ते ॥
र उद्दिठ वज्जए समणभूएय ॥ ९९४ ॥ अर्थः— एकदंसणप्रतिमा. बीजी
मा. त्रीजी सामायक प्रतिमा. चोथी पोषध प्रतिमा. ते अष्टम्यादिक पर्वे दि
ष्टानविशेष जाणवी. पांचमी पडिमा के० काउस्सग्गनुं करवुं. ए पांचनेवि
ा अनियद्द जाणवो. उठी अब्रह्मसेवा ते नियमे करी करवी. सातमी सचित्त व
मा, आठमी कृषिप्रमुख आरंभ वर्जन प्रतिमा. नवमी प्रेष्य ते अनेरा भृ
पासेथी आरंभ करावावानुं वर्जन करवुं. ते प्रतिमा जाणवी. दशमी उद्दिष्ट
ावक उद्देशीने जे अशनादिक करवुं. तेनुं वर्जन करवाथी प्रतिमा थाय.
ारमी प्रतिमानां तो श्रमणभूत एटले साधुवत् साधुनीपरे रहे, ते प्रतिमा
इहां सूत्रमांहे दंसण इत्यादिक सर्वपदो आगल प्रतिमा शब्द जोडिये.
पे श्रीदशाश्रुत स्कंधमां ए प्रतिमाउनो कालमान साक्षात्कारे देखातो
थापि उपासकदशागमांहे आणंद श्रावकने अधिकारे साडापांचवर्षे क
ाथी तेज कालमान अनुष्टान विशेषे सहित देखाडेछे. ॥ ९९४ ॥
:— जस्संखा जो पडिमा, तस्संखा तीए हुंति मासावि ॥ कीरतिसुवि कज्जा
पुव्वुत्तकिरियाउ ॥ ९९५ ॥ अर्थ.— जे संख्याये जे प्रतिमा छे, तेज संख्या
ंपे मास पण तेटलाज होय. जेम प्रथम प्रतिमा एक मासनी, बीजीबेमास
जी त्रणमासनी. एम यावत् अग्यारमी अग्यार मासनी जाणवी. एम ए स
ारे प्रतिमानुं कालमान एकठुं करिये तो साडा मास थाय. तेम पूर्वोक्त
ाणवुं. कीरंती सुविकज्जाउके० प्रतिमानेविषे करवी, तेनेविषे ते पूर्वोक्त क्रि
ा दर्शन प्रतिमानेविषे दर्शन पालवुं. तथा बीजी व्रत प्रतिमाछे तो त्यां पे
तिमानो वीधि जे दर्शनछे: ते दर्शन पण पालवुं. अने व्रत पण पालवां. एरीते पे
हेली प्रतिमानी क्रिया ते पण आगली आगली प्रतिमानेविषे करता जवुं.
प्रतिमानुं विशेष अनुष्टान देखाडे छे. मूलः— पसमाइगुणविसिठं, कुग्ग
सलपरिहीणं ॥ सम्मदंसण मणहं, दंसण पडिमा हवइ पढमा. ॥९९६॥
प्रसम शब्दे उपशम अने आदिशब्दथकी संवेद, निर्वेद, अनुकंपा आस्ति
हण ए पाच सम्यक्त्वना गुण, तेणेकरी विशिष्टके० सहित थाय. तेमज कुग्रह
ा एवा सम्यक्त्वने विषे जे कदाग्रह तथा शंकादिक पांच अतिचार, तद्रूप
परिहीणके० रहित थाय. एवुंजे सम्यक् दर्शन. ते पापरहित जाति यो
अपवाद रहित पाळे, ते दर्शन प्रतिमा पहेली थाय. ॥ ९९६ ॥

हवे अनुक्रमे बीजी प्रमुख कहेछे मूल — वीया णुव्वयधारी, सामाइ कडा होइ तइयाए ॥ होइ चउत्थी चउद्दिसि, अट्ठमिमाईसु दिवसेसु ॥ ९९७ ॥ अर्थ — बीजी प्रतिमाने विषे अणुव्रत ते स्थूल, प्राणातिपात विरमणादिक पाच, तथा नां उपलक्षणथकी त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत ते पण वध बधादिक अ तिचारे करी रहित, अपवादे वर्जित, सम्यक्प्रकारे पेहली प्रतिमामा ग्रहण करेला सम्यक्त्व सहित धारण करे, ते बीजी प्रतिमा जाणवी

सामायिक जे सावद्ययोग वर्जन अने निरवद्ययोग सेवनरूप पोषधविना दर्श न तथा व्रत सहित छतां सदासर्वदा उभयकाल सामायिकनो करनार ते, त्रीजी प्रतिमानेविषे थाय हाइचउत्थी के० चोथी प्रतिमा थाय चतुर्दश अष्टमी प्रमुख तिथिना दिवसानेविषे पोसह करे तेना प्रकार आगली गाथाये कहेछे ॥९९७॥

मूल —पोसह चउविह पिय पडिपुन्न सम्म सोउ अणुपाले ॥ बधाई अइयारे, पयत्त उ वज्जइ इमासु ॥९९८॥ अर्थ —पोसह चार प्रकारनाछे एक आहारवर्जनरूप पोसह, बीजु शरीरसत्कारवर्जनरूप पोसह, त्रीजु अब्रह्मसेवावर्जनरूप, अने चोथु सावद्य व्यापारपरिवर्जनरूप ए चार पोसह ते परिपूर्ण सम्यक्प्रकारे पाले तु शब्द अवधा रणेछे एटले एरीते पालण करेछे ते वध बधादिक सात अतिचार अने पाच सम्य कना अतिचार, ते प्रयत्न एटले उद्यमेकरी आ चारने विषे वर्जे ॥ ९९८ ॥

मूल — सम्ममणुव्वय गुणवय सिरकावयवथिरोय नाणीय ॥ अट्ठमि चउद्दसीसुप डिमठा ए गराईय॥९९९॥अर्थ —एक सम्यक्त्व, बीजा अणुव्रत, गुणव्रत ने शिक्षाव्रत वत थको तथा उपनाउपसर्गे पण स्थिर रहे, अविचल सत्व वतहोय वली ज्ञानी होय प्रतिमाना कल्पानो जाण होय ते अष्टमि चतुर्दिशिने विषे प्रतिमा का उसग्गे रहे, एकरात्री दिवशें पोसह लेइने रात्रे शून्य गृहे चतु पथादिके प्रतिमाए रह

मूल — असिणाण वियडभोई, मउलियकडो दिवसबभयारीय ॥ रत्ति परिमाणक डो, पडिमारजेसु दिवसेसु ।।१०००॥अर्थ —अस्नान एटले स्नाननु परिवर्जन करनारा, अने विकटभोजी एटले दिवसे प्रकाशयुक्त स्थानने विषे भोजन करेछे त एमा पूर्वे रात्री भोजन विषे नियम कहेला न हतो, ते सारु आ रीते कह्यु मउलियडा नि एटले अबद्ध परिधान कछ एवो अर्थ तेमज दिवसनेविषे ब्रह्मचारी एवा जना सनार ते दिवस ब्रह्मचारी ते रात्रीने विषे रति करछे परिमाण क० स्त्रीउना अने तेउना भोगनु जेणे एक किंवा बे वखत एवु प्रमाण करेलुछे त परिमाणक त जाणवु हवे तेना काल कहेछे पडिमा वज्जेसुदिवसेसु के०काउसग्ग रहित अ

ने पर्वादिक रहित एवा दिवसोने विषे रति करे. ते चोथी पोसह पडिमा कही.

मूल.– झायइ पडिमाइठिओ, तिलोयपुज्जे जिणे जियकसाए ॥ नियदोसपच्च णीयं, अन्नं वापंच जामासा ॥ १ ॥ अर्थः– हवे पांचमी काउसग्ग प्रतिमा कहेछे. ए प्रतिमाने विषे स्थित थको काउस्सगमां, त्रणभुवनना पूज्य वली जितकषाय एवा जिनेश्वरनुं चिंतन करे. अथवा निजदोष एटले जे पोताना काम क्रोधादिक दोष छे तेना प्रत्यनिक एटले प्रतिपक्षीभूत, एवा जे क्षमाप्रमुख तेने ध्यावे, एम पांच मास सुधी करे तेवारे. ते पांचमि प्रतिमा थाय. ॥ १ ॥

मूलः– सिंगार कहविभूसुक्करिसं इत्थीकहंच वज्जिंतो ॥ वज्जइ अबंभमेगं, तउंय छट्ठाइ छम्मासे ॥ २ ॥ अर्थ – छठी ब्रह्मचर्यप्रतिमा कहेछे. शृंगारनी कथा अने विभूषानो तथा स्नान, विलेपन धूप प्रमुखनुं उत्कर्ष एटले अधिकपणुं वर्जे. तथा स्त्रीनी कथा ते आवीरीते के, स्त्री एकली होय, तेनी साथे सराग वातो करवी; तेपण वर्जवुं, एक अब्रह्ममैथुन ते वर्जे. प्रथम तो दिवस वर्जिने, रात्रे स्त्री सेवननुं प्रमाण कह्युं हतुं; तेपण इहां पांचमी, पछी छठी प्रतिमाने विषे छमहीना सुधी त्याग कर्युं. तथा कामकथा चित्तविकारनी करनार, तेनो पण इहां प्रतिषेध कर्यो. एम जाणवुं. ए छ मासनी छठी प्रतिमा कही. ॥ २ ॥

सातमी प्रतिमा कहेछे. मूल.– सत्तमिसत्तउमासे, नवि आहारइ सचित्त माहार ॥ जंज हेछिल्लाणं, ततो चरिमाणसव्वंपि ॥ ३ ॥ अर्थ.– सातमी प्रतिमा, सातमाससुधी सचित्त आहारने आहारेनहीं एटले सचित्त वस्तुनुं भोजन करे नहीं. अने जजंहेछिल्लाणंके० जे जे पाछली पूर्वोक्त प्रतिमानुं अनुष्टान, तेते आगले आगले सर्व जाणवुं. एटले आगली प्रतिमानी क्रिया पण करतो रहे. ॥ ३ ॥

आठमी नवमी प्रतिमा कहेछे. मूल.– आरंभ सयं करणं, अट्ठमिया अट्ठ मास वज्जेइ ॥ नवमा नवमासे पुण, पेसारंभेवि वज्जेइ ॥४॥ अर्थः– आठमी प्रतिमाये आठमास सुधी पोते आरभनुं करवु वर्जे. इहां शिष्यपूछेछे के, आरंभने करण करावणे सरखो दोषछे. माटे करावणनो दोष तेने थाय. तेने उत्तर कहेछे के; ए वात सत्यछे, तथापि करवा करता कराववामां अल्प दोषछे; माटे थोडीपण आरंभनी निवृत्ति ते भलीज जाणवी. जेम महोटी व्याधि थइ छतां तेमा किंचित् मात्र पण उपशमे तेवारे सुख थाय छे; तेम इहां पण जाणवुं. तथा नवमी प्रतिमाये पहेलो घरनो कारभार वधो पुत्रादिकोने स्थापिन करी, नवमहीना सुधी प्रेष्य दासादिकनो करेलो आरंभ पण वर्जे. दासादिक पासेने पण आरंभ करावे नहिं, इतिभाव ॥४॥

इहां आवश्यकनी चूर्णिमा आगलो सात प्रतिमामांहे विशेषता कहिछे; ते आ रीतेंछे. राइभत्त परिन्नाएत्ति पंचमी. सचित्ताहारपरिन्नाएत्ति छट्ठी. दिया बंभयारि राओपरिमाणकडेत्ति सत्तमी. दियाराओविबंभयारी असिणाणएवा सिट्ठी केस मंस रक्ख रोमणहेत्ति अट्ठमी. आरंभ परिन्नाएत्ति नवमी. पेसारंभ परिन्नाएत्ति दसमी. उद्दिठभत्त समण भूएत्ति एकादशमी. ॥ ८ ॥ इतिगाथापंचदशकार्थ.

अवतरणः— धन्नाणं सचीत्तत्ति एटले धान्यना अचीतपणानुं एकशो ने चो पनमुं द्वार कहेछे. मूल.—जव जवजव गोहुम सालि वीहियधन्नाण कोठयाईसु ॥ खि विकर्णं पिहियाणं. लित्ताणं मुद्दियाणंच ॥ ९ ॥ अर्थः—एक यव, बीजा यवयव. ते ए यवनोज विशेष जे गोधूम. त्रीजो शाली कलमशाली प्रमुख, चोथु व्रिहि ते सामान्य चोखा, एटला जातना धान्यने कोठप्रमुखमांहे नाखीने. ढांकणाथी ढां की छाण प्रमुखथी लेपनकरी. उपरांत माटी साथे मुद्रि मुक्या होय तो तेनी.॥९॥

मूलः—उक्कोसेणठिइहोइ तिन्निवरसाणि तयणुएएसिं॥ विद्धंसिज्जइजोणी तत्तोजायइ अवीयत्तं ॥१०॥ अर्थ—उत्कृष्टि स्थिति त्रणवर्षनी थाय. तेवार पछी अंकुर उपज वानुं कारण विद्धंसिज्जइके० विध्वंसथाय विणसीजाय,पछी तेमां अबीजपणुं थइजाय.

मूल.—तिल मुग्ग मसूर कलाय मास चवलय कुलत्थ तुवरीणं ॥ तह कसिणचण यवल्लाण कोठयाईसुखित्तिकणं ॥११॥ अर्थ.—तिल, मग. पंचवर्णक प्रसिद्धछे, मसू र ते वाटलाकारे धान्यविशेष. अने कोइक चनकिका कहेछे, कलायते त्रिपुटनामा धान्यनो विशेष कलायशे, अथवा चवला ते प्रसिद्धछे. कुलत्थते, चोलाने आका रे ते चिपट लीना थायछे. तुंवरी ते तुअर, कसिण, चणयके० सिसरे रहित वाट ला चणा जाणवा. वाल प्रसिद्धछे. एटली जातिनां धान्यने कोठी प्रमुखमां नाखी.

मूलः— कुलित्ताणं पिहियाणं लंछियाणंच मुद्दियाणंच ॥ उक्किठठिइ वरिसाण, पं चगंतो अवीयत्तं ॥ १२ ॥ अर्थ.—ए पूर्वोक्त कोठीने पिहितके० ढांकणाथये ढां कीने पछी ढांकणुं तथा कोठीनुं बारणुं बेउने गोबरादिक साथे लीपीने लांछन के० लीटी प्रमुखनुं चिन्ह कर्युं होय. एवीरीते जे मुद्रयाछे. एवा धान्यनी उत्कृष्ट स्थिति पांचवर्षसुधी जाणवी. तेवारपछी तेमां अबीज पणुं थाय. ॥ १२ ॥

मूल·—अयसी लट्टा कंगू कोमूसगसण वरट्ट सिद्धत्था ॥ कोद्दव रालगमूलग बी याणंकोठयाईसु ॥ १३ ॥ अर्थः— अलसी, जेनुं तेल थायछे. लट्टाते कसुंबो. कं गूते पीलाचोखा, कोमूसग ते कोद्रा विशेष. सण ते शणरासहित धान्यनो विशेष वरटी ते लपाट लक्षादिकनेविषे प्रसिद्धछे. सिद्धाथे ते सरिसव, कोद्रव ते प्रसिद्धछे

णगोणाइणं च गाउएहं ॥ नोमाहारछे,उ उवक्कमेणं तु परिणामो ॥ १७ ॥
लवणादिकने गाममां ऊंटप्रमुख उपरे आरुहणेके० चडावतां, तेमज उरुह
तेना उपरथी उतारतां; तेउपर वली वेसतां ते गोणके० वृषन प्रमुखनी गात्रो
एटले शरीरनी उष्णता एटले वाफे करीने किंवा जे स्थानके पड्या हता, ते
संबंधी आहारना विछेदथकी उपक्रमजे; घणाकालनुं पोतानुं आयुष्य ते छेदी, घ
कालमां पूरण करे; तेणेकरी परिणामे स्वकाय शस्त्रादिके करी अचित्त थाय. ते
वीरीते जेम खारुं पाणी ते मीठापाणीनो गुण नाश करनार छे ते स्वकाय शस्
अने अग्नि, वृक्षनो नाश करनार छे ते परकाय शस्त्र, अने जेम मोहोलाएलुं पाण
शुद्ध पाणीनो नाश करेछे; ते उन्नय शस्त्र. ए शस्त्र ते सचेत्तपणांने अचित्ततापणा
ना कारण थायछे. ॥ १७ ॥

अवतरणः–धन्नाइ चउवीसंति एटले चोवीस धान्यना नेदोनो एकशो ने छप्पन्न
मुं द्वार कहेछे. मूल –धन्नाइ चउव्वीसं, जव गोहुम सालि वीहि सठीय ॥ कोद्दव
अणुआ कंगू रालय तिल मुग्ग मासाय ॥ १८ ॥ अयसी हरिमंथ तिउगम
निप्फाव सिलिंद रायमासाय ॥ इक्कू मसूर तूवरी, कुलछ तह धन्नय कलाय ॥
॥१९॥ अर्थ.–जव, गोहुम, सालि, व्रीही, साठ दाहाडे नीपजे ते साठी, कोद्रव,
जुआर, कांगुणी, राल, तिल, मग, अडद, अलसी, चणा, त्रिपुट, निप्फाव, वाल,
मठ, इक्कु, मसूर, तुअर, कुलछ, करडी अने कलायरो. ॥ १८ ॥ १९ ॥

अवतरणः–मरणं सतरस नेयंति एटले सत्तर प्रकारनां मरणनो एकशोने स
त्तावनमुं द्वार कहेछे. मूल.–आवीइ उहि अंतिअ, वलायमरणं वसट्टमरणं च
अंतोसल्लं तप्नव; वालं तह पंमियं मीसं ॥ २० ॥ छउमछमरण केवलि, वहाण
सगिद्धपिठिमरणं च ॥ मरणं नत्तपरिन्ना, इंगिणि पाउवगमणं च ॥ २१ ॥ अर्थ –
आविचि, अवधि, आत्यंतिक, वलाय, वसार्त्त, अंत शल्य, तद्भव, वाल, पंमित, मि
श्र, छद्मस्थ, केवली, वेहायस, गृद्धपृष्ट, नक्तपरिज्ञा, इंगिनी अने पादोपगमन. ए
आवीचि प्रमुख शब्द आगल मरण शब्द प्रत्येके जोडवो; तेवारे आवीचिमरणादि
क अनुक्रमे जे नाम कह्या ते जाणवां. ॥ २० ॥ २१ ॥

हवे एनुं वखाण करेछे. मूल.–अणुसमय निरंतर माविसन्नियं नणंति पंच
विहं ॥ दव्वे खित्ते काले, नवेय नावेय संसारे ॥ २२ ॥ अर्थ –अनु समय समय
त्ये निरंतरपणे मरे. इहां शब्दार्थ आमछे केः–आके० समस्त प्रकारे करी वीचि
० कल्लोल तेनीपरे, समयसमयने विषे जे आयुष्यने अनुनविये छइये, तेने अनुनो

जे निमग्न एटले बूडथाठतां, पोताना दर्शन ज्ञान चारित्रना, अपराधरू
ते, आचार्यादिक आगल कहे नही. त्यां वांदणादिकआपता तेना कहे
नने करतो तेमां साता रहे नही; एवो थको जे मरण पामे तेने सशल्य मरण

मूल.– मुत्तुं अकम्म नूमिय. नरतिरिएसुरगणेसु नेरइए ॥ सेसाणं
तप्नवमरणं तु केसिंचि ॥ २६ ॥ अर्थः– अकर्मनूमिना उपन्या मनुष्य
तिर्यंच अने चतुर्विध देवगण, तथा नारकी. एटला मूकी शेप जीवोने तन्न
सातमुं कोइएकने जाणवुं. ए गाथानो नावार्थ इहा टीकामां सम्यक्रीते पा
यी अने उतराध्ययननी चूर्णीमा पण न वखाण्यो माटे गीतार्थ विचारजो. ॥

मूल.–मोत्तूण उहिमरणं, आवीइयं तिथ्यं तिथ्यं इचेव ॥ सेसा मरणा सवे, तप्न
ऐण नायवा॥ २७ ॥ अर्थ.– अवधि, आवीचि अने आत्यंतिक ए त्रण म
मूकीने शेप समस्त जे मरणछे; ते तन्नवमरण जाणवां. ॥ २७ ॥

हवे वाल मरणादिक त्रण कहेछे. मूल.–अविरयमरण वालं, मरणं विरयाण पं
य विंति ॥ जाणाहि वालपंमिय, मरण पुण देसविरयाणं ॥ २८ ॥ अर्थ.–
सादिक थकी जे विरम्या नथी ते अविरति, तेने वालनी परे मरण जाणवु, एमज
वली सर्व सावद्यनी निवृत्ति जेणे अंगीकार करीछे, ते विरति, तेनुं मरण तेपंमितनी
परे जाणवुं माटे; ते पंमितमरण कहिये. एरीते वितिके० तीर्थंकर कहेछे. वली वाल
पंमितमरण. ते जे देश थकी विरतिछे; एवानुं जे मरण ते मिश्रमरण जाणवुं. ॥२८॥

हवे छद्मस्थ अने केवली मरण कहेछे. मूलः–मणपज्जवोहिनाणी, सुअमइ
नाणी मरति जे समणा ॥ छउमछ मरणमेयं, केवलिमरणं तु केवलिणो ॥ २९ ॥
अर्थ.–अतिविशुद्धपणा थकी, प्रथम मनपर्यवज्ञान, तेमज अवधिज्ञान, श्रुतज्ञा
न ने मतिज्ञानना धरनार; एवा जे श्रमण तपने विपे जे श्रम करेछे, ते श्रमण कहि
ये. अने छद्मके० ज्ञानावरणादिक जे कर्म, तेनेविपे जे रहे ते छद्मस्थ जाणवो;
तेनुं जे मरण ते वारमुं छद्मस्थ मरण जाणवुं. तेरमुं केवली मरण ते समस्त कर्म
पुज्जलनो परिसाटन करीकेवलज्ञान पामी जे मरण करे, ते केवलि मरण जाणवु.॥२९॥

मूल –गिद्धाइ नरकणं गिद्धि, पिछिउब्बंधणाइ वेहासं ॥ एए दोन्निवि मरणा, का
रणजाए अणुन्नाया ॥ ३० ॥ अर्थ – गृद्ध ए प्रसिद्धछे, ते गृद्ध जेने आदिछे, एट
ले समली, शियाल प्रमुख, तेने जे, आपणा देहादिकनुं नक्षण एटले ते समली शि
याल प्रमुखने अनिवारणादिके करी, तेणे नक्षण करवा योग्य जे हाथी उंट प्रमु
खना कलेवरमां प्रवेश करी, जे नक्षण ते गृद्धादिनक्षण. हवे गृद्धादिकोनो स्पर्श

जेने ठेकाणे छे, ते गृध्रस्पर्श, अथवा गृध्रनो नद एटले पृष्ट अने उदरादिक तथा कोणीए लगाडी तेमने खवरावयु ऊर्ध्व एटले उंचे वृक्षनी शाखादिकने विषे जे ब धन ते उद्बधन छे, आदि जेने एवो तरु, गिरिशिखर तथा भृगुपातादिक ने पो तेज पोतानाज मरणने माटे करेलु छे, ते उद्बधनादिक वेहायस मरण आकाश नेविषे जे ऊपापात करी मरण पामीए, ते वेहायस उद्बधने जे पूर्व कह्यु, ते जो आकाशनेविषे थयु होयतो, वेहायस जाणवु

इहा कोइ चालना करे छे के, गृध्रपृष्ट जे पूर्वे कह्यु, तेने पण आत्मघात पलछे माटे वेहायसने ठेकाणेज तेनो अतर्भाव छे तेनो उत्तर ते सत्य छे पण केवल आ वेहायस मरणनु अल्प धैर्यवाला पुरुषे, निश्चय करवाविषे अशक्यत छे, ते कहेवा सारु, गृध्रपृष्ट अने वेहायस, ए बे जुदाजुदां कह्या वली शंका क रेछे नाविय जिणवयणाण ममत्तरहियाण नविदु विसेसो ॥ अप्पाणमि परमि तो वज्जे पीड मुमुक्खवि ॥ १ ॥ एवो आगमछे अने आ बे कहेला मरण अ त्यत आत्मपीडा करनाराछे, पछी आगमने विरोध केम नथी? एजमाटे भक्त प रिज्ञानादिकने विषे पीडा परिहार सारु चत्तारि विचित्ताइ विगइनिज्जू हियाइचत्तारि॥ इत्यादि सलेषणाविधि, अने पानकादि विधि त्यां त्यां कहेलीछे अने बने ठेकाणे दर्श नतु मलिनपणु प्राप्त थशे एवी शका छतां, तेनो उत्तर ए कहेला गृध्रपृष्ट वेहाय स नामा मरण, दर्शन मलिन परिहारादिक कारण थयु छता अथवा कारण प्राप्त र छता उदायी राजाये जेम पूर्वे कर्यु तेम गीतार्थ आचार्ये जिन शासननी मलिन ता परिहरवा सारु कीधु एमाटे पूर्वे कहेला मरणने शकारूप दोष नथी ॥२०॥

हवे भक्तपरिज्ञातादिक त्रण मरण कहेछे मूल —भत्तपरिन्ना इगिणि पायवगम ण च तिन्नि मरणाइ॥ कन्निस मज्झिमजेट्ठा धिइसघयणेणउ विसिट्ठा॥२१॥ अथ भक्तके० भोजन परिज्ञाछे ज्या ते भक्त परिज्ञा बे प्रकारेछे एक ज्ञपरिज्ञा बी जी प्रत्याख्यानपरिज्ञा तेमा ज्ञपरिज्ञा ते ज्या एवु जाणेके ए अशनादिक जीवे घणा वखत घणा अराग्याछे उक्तच हिमवत मलय मदिर, दीवादहि धरणि सरि स राशीउ ॥ अहियपरो आहारो, भुहिएणाहारिउहुज्जा ॥१॥ इत्यादिक जाणीने आहारनो पच्चखाण करे, एमज प्रथम ज्ञपरिज्ञाये स्वरूप जाण्यु अने पछी तने पच्च खाण परिज्ञाये चतुर्विध आहारनो पच्चखाण कर्यो, ए बे भेद कह्या, पछी जे मरण करे तेने भक्त परिज्ञा नामे पन्नरमु मरण कहिये सोलमु इगितेके० प्रतिनियत दश ने विषे चतुर्विध आहारनो त्यागकरी, अनेरानी करेली परिक्रमणान वजतो थका

जे गिरी गुंफादिकने विषे, उद्वर्त्तनादिक पोतेज करतो रहे, ते सोळमुं इंगिनी मरण कर सत्तरमुं पादपके० वृक्ष तेनीपरे, उपगमनके० रहेवु एटले जेवारे, अनशननो उच्चार करी, शयन करे. तेवारे जेरीते छेदेलुं वृक्ष जेम पड्युं, तेमनु तेम पडी रहेछे, तेम ए पण उंची निचि भूमिकाये जे हाथ पगादिक ज्यां जेरीते प्रथमथी राख्या ते त्यां तेजरीते पड्या रहे; परंतु हाथ पगादिकने चलावे नहिं; एम जे मरण करे, ते पादोपगमन नामा सत्तरमुं मरण जाणवुं. ए त्रणे कनिष्ट, मध्यम अने उत्कृष्ट अनुक्रमे थायछे. यद्यपि धृति संयमने विषे, चित्तनुं स्थिरतापणुं संहनन वज्र रुषभनाराचादिक, तेणेकरी त्रणे मरणने धीरपुरुष पडिवजे छे, एनुं फलपण वैमानिक तथा मुक्ति लक्षण त्रणेने सरखुं थायछे. उक्तंच यत.—सव्वाविय अज्जाउ, सव्वेविअपढम संघयणवज्जा ॥ सव्वेवि देसविरया, पच्चक्खाणेण उ मरंति ॥ १ ॥ आ ठेकाणे प्रत्याख्यान शब्दे भक्त परिज्ञा कहिये, ए विशेष धृतिमंत पुरुषने थाय; अने इंगिनी मरण ते वली विशिष्टतर धृति संघयणवतने थाय परंतु साध्विने न थाय. एम पादोपगमन ते वली विशिष्टतम, धृतिवत वज्र, रुषभनाराच संघयणवालाने थाय. उक्तंच. पढमंमि असंघयणे, वट्टंते सेलकुट्टसामाणे ॥ तेसिंपि अवोछेउ चउदस पुव्वीण वोछेए ॥ १ ॥ तीर्थंकर पादोपगमन सेवे तेथी ए उत्तमछे. अने बीजा विशिष्ट साधु सेवे, यदुक्तं. सव्वेसव्वद्धाए, सव्वन्नू सव्वकम्मभूमीसु ॥ सव्वगुरु सव्वमहियासव्वेमेरुंमि अभिसित्ता ॥१॥ सव्वाहिंल द्धीहिं, सव्वेवि परिसहेपराजित्ता सव्वेविद्द अतिछयरा पाउवगयाउसिद्धिगया ॥ २॥ अवसेसा अणगारा, तीयपडुपन्नणागयासव्वे ॥ केईपाउवगया, पच्चक्खाणिंगिणी केई ॥ ३ ॥ तेमाटे भक्तपरिज्ञा कनिष्ट छे तेथी ए जघन्य जाणवो. अने इंगिनी मध्यम जाणवो. तथा पादोपगमन ते ज्येष्ट सर्वोत्तम जाणवो. इतिगाथा दशकार्थ.

अवतरण.—पलिउवमंति एटले पल्योपमनां स्वरूपनुं एकशोने अठावनमुं द्वार कहेछे. मूल.—पलिउवमं च तिविहं, उद्धारद्ध च खेत्तपलियंच॥एक्केकं पुण डुविहं बायरसुहुमं च नायव्वं ॥३२॥ अर्थ —पल्य एटले जेमां धान्य नाखिये, तेनी जेने उपमा छे, तेने पल्योपम कहिये; ते उद्धार, अद्धा अने खेत्रना भेद थकी, तिविहं के० त्रण प्रकारेछे. वली ए उद्धारादिक, एकेक ते बादर अने सूक्ष्मना भेदेकरी बे बे प्रकारेछे. एटले बादर उद्धार, पल्योपम, अने सूक्ष्म उद्धार, पल्योपम, तेमज अद्धा अने क्षेत्र ए बे पण बादर अने सूक्ष्म केहेवा. ॥ ३२ ॥

पल्योपमनुं स्वरूप कहेछे. मूलः—जं जोयण विछिन्नं, तं तिउणं परिरएण सवि

सेन ॥ तावइय उव्विद्ध, पल्लं पलिओवम नामा ॥ ३३ ॥ अर्थ –जे एक योजन वि स्तारे ताटले आकारे कहेवाय, ते सविशेष त्रण योजन अने एक योजननो त्र भाग काइक न्यून, एटले परिरएणकें० परीधिए थाय, अने तेटलोज उविद्धकं० ऊं पणे पण थाय एवो पल्य एटले पालो तेनी जेने उपमाछे तेने पल्योपम जाणवु

हवे पल्योपम कह्या पछी तेनु कर्तव्य देखाडेछे मूल –एगाहिय वेहिय त दियाण उक्कोस सत्तरत्ताण ॥ सम्मठ सनिचिअ, नरिय वालग्ग कोडीहिं॥ ३४॥ अर्थ –एक दिवसनो, बे दिवसनो, त्रण दिवसनो, उत्कृष्टे सात दिवस सवी करणाकें० लाम, तेनी साथे ते पूर्वोक्त पल्य संपूर्ण भरवो, पछी ते सनिचित गृ निचित पणे एवो कह्या के, ते पल्य, जेम वायरे उडेनही, अग्निए वलेनही, पा णीये भीजे नही, एवी रीते वालाग्रनी कोटीये भरवो ॥ ३४ ॥

मूल –तत्तो समए समए, एक्केके अवहियंमि जो कालो ॥ संखेज्जा खलु सम या बायरउद्धार पल्लम्मि ॥ ३५ ॥ अर्थ –तत्तोकें० तेवार पछी समय समयनवि षे तेमांथी एकेक वालाग्र अपहरिये ते खाली करता जेटलो काल थाय, तेना समय निश्चेथी बादर, उद्धार पल्योपमने विषे थाय, अर्थात् संख्याता समय थाय

मूल –एक्केकमओलोम, कट्टुमसंखेज्ज खंममदिस्स ॥ समछेयाण तपए, सियाण पल्ल भरेज्जाहि ॥३६॥ अर्थ –ते करणानो रोम, ते एकेक रोमना वली असंख्याता न्हाना न्हाना खंड करिये ते ज्या सुधी अदृश्यते एटले, जे मनुष्यमांहे निर्मल लोचन वाला, छद्मस्थ अतिसूक्ष्म पुद्गलद्रव्य पोतानां चक्षुये देखीशके तेना अस स्थानमो भाग मात्र जाणवा,जे न देखी शकाय, एवा सूक्ष्म खंड करे अन क्षेत्र थी ना सूक्ष्म पनकनु शरीर जेटला क्षेत्रनेविषे रहीशके तेथकी असंख्यातगुण क्षेत्रनु अवगाहनार जे द्रव्य तेने प्रमाणे खंडकरे वडेरा वली एम वखाणे छे बादर, पर्याप्त, पृथ्वीकायिक जीवना शरीर सरखा खंडकें० खंड जना वली अनंत परमाणुए जे नीपन्या त्र एवा वालाग्र ते पल्य भरिये ॥३६॥

मूल –तत्तो समए समए एक्केके अवहियंमि जो कालो॥संखेज्ज वास कोडी सु हुमे उद्धारपल्लम्मि ॥ ३७ ॥ अर्थ –तत्ताकं० त्यारपछी समये समय [illegible] वालाग्रने अपहरता ज खाली थाय, ते काल कहवे असंख्याता वरस [illegible] सूक्ष्म उद्धार पल्योपमनविषे थायछे ॥३७॥

मूल –[illegible] [illegible] [illegible] बायर अद्धाइ यम्मि ॥ बायर अद्धा [illegible] य, संखेज्जा वास कोडिओ ॥ ३८ ॥ अर्थ –ते पल्यमांथी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

केक वादर खंम काहाडीये; तोवादर अद्धा पल्योपममां संख्याता वरसनी कोडि थाय.

मूलः—वाससए वाससए, एकेके अवहियम्मि सुहुमंमि ॥ सुहुमं अद्धापलियं हवंति वासा असंखेज्जा ॥ ३९ ॥ अर्थः—शो शो वर्षे एकेक सूक्ष्म खंम काहाडीये, तो सूक्ष्म अद्धा पल्योपम असंख्याता वर्षनो थाय. ॥ ३९ ॥

मूलः— वायर सुहुमायासे, खेत्तपएसाणु समय मवहारे ॥ वायर सुहुमं खेत्तं उसप्पणीउ असंखिज्जा ॥ ४० ॥ अर्थः—ते पल्यना जे आकाशप्रदेश ते वाला ग्रे करी स्पृष्ट ले; ते आकाश प्रदेशने अनुसमय समय प्रत्ये काहाडतां, जेटले काले ते पालो खाली थाय, तेटला काले वादर खेत्र पल्योपम जाणवुं. अने तेज पल्यना वालाग्रे करी स्पृष्ट तथा अस्पृष्ट जेटला आकाश प्रदेश ले, ते प्रतिसमय समय काहाडतां जेटलो काल थाय, ते सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम थाय. असंख्याति उत्सर्पिणी प्रमाणे तेना कालनुं मान जाणवुं. ॥ ४० ॥ इति गाथा नवकार्थ. ॥

अवतरण.—आयरत्ति एटले सागरोपमना प्रमाणनुं एकशो ने उंगणसाठमुं द्वार कहेले. मूलः— उद्धार पल्लगाणं, कोडाकोडी नविज्ज दसगुणिया ॥ त साग रोवमस्सउ, एकस्स नवे परीमाणं ॥ ४१ ॥ अर्थः—दशकोडाकोडी उद्धारपल्योपमे, एक सागरोपम थाय. जेने समुद्रनी उपमा ले तेने सागरोपम कहिये, अने तेवा एक सागरोपमनुं प्रमाण जाणवुं. ॥ ४१ ॥

मूल.—जावइउउद्धारो, अड्डाइ याण सागराण नवे ॥ तावइया खलु लोए, हवंति दीवा समुद्दाय ॥ ४२ ॥ अर्थ.—अढी उद्धार सागरोपममां जेटला समय थाय; तावइया के० तेटलाज माने. खलुइति निश्चे लोकनेविषे द्वीप अने समुद्रथाय.

मूलः— तह अद्धा पल्लाणं, कोडाकोडी हविज्ज दसगुणिया ॥ त सागरोवमस्सउ परिमाणं हवइ एगस्स ॥ ४३ ॥ अर्थ.—तेमज दशकोडाकोडी अद्धा पल्योपमे एक अद्धा सागरोपमनुं परिमाण थायले. ॥ ४३ ॥

मूल— सुहुमेणाउ अद्ध सागरस्स माणेण सव्वजीवाण ॥ कम्मठिई कायठिई नवठिई होइ नायव्वा ॥४४॥ अर्थ—सूक्ष्म अद्धासागरोपमना समय तेने मानेकरी सर्व जीवोनी कर्मस्थिति, कायस्थिति अने नवस्थिति होय एम जाणवु. ॥ ४४ ॥

मूज.— इहखेत्तपल्लगाण, कोडाकोडी हविज्ज दस गुणिया ॥ त सागरोवमस्सउ, एकस्सनवेपरीमाण ॥ ४५ ॥ अर्थ.—दश कोडाकोडी क्षेत्र पल्योपमे एक क्षेत्र सागरोपमनुं प्रमाण थायले. ॥ ४५ ॥

मूलः— एएण खेत्त सागर, उवमाणेणं हविज्ज नायव्वं ॥ पुढविदग अगणि मा

रुय, हरियत साण च परिमाण ॥ ४६ ॥ अर्थ –ए क्षेत्र सागरोपमन
पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति अने त्रसजीवोनु परिमाण जाणवु
दृष्टिवादमा बहुलपणे कही ठे तेमाथी लगारेक देखाडी ठे इति गाथा

अवतरण – अवसप्पिणित्ति एटले अवसर्पिणीनु एकशोने सातमु द्वा

मूल – दसकोडा कोडीओ, अद्धा अयराण हुति पुन्नाओ ॥ अवसप्पिण
नाया ठच्चेव कालस्स ॥४७॥ अर्थ –अद्धासागरोपमनी दश कोडाकोडी पूर
तेवारे अवसर्पिणीथाय अवसर्पिणी एटले आरानी घटती दशा तेनी
आयुष्य, शरीर, कल्पवृक्षादिक शुन नावोनी हाणी थाय, एम सर्वनी घटति
थाय, माटे अवसर्पिणी कहिये तेनेविषे कालना नाग ठ होयठे, तेना नाम क

मूल – सुसम सुसमाय सुसमा, तईयापुण सुसम दुसमा होइ ॥ सुसम
मा चउठी, दूसम अइ दूसमा ठठी ॥ ४८ ॥ अर्थ –एक सुषमसुषमा, बीजा
पमा, त्रीजो सुषमदुषमा, चोथो दुषमसुषमा, पाचमो दूषमा अने ठठो दुषमदु
मा ए अवसर्पिणीना ठ आराना नाम अनुक्रमे कह्या ॥ ४८ ॥

हवे ए ठ आरानु कालमान कहेठे मूल – सुसमसुसमाऽ कालो, चउरो
हवति कोमि कोमीओ ॥ तिन्नि सुसमाइ कालो, दोन्निभवे सुसम दुसमाए ॥ ४९ ॥
प्रथम सुषमसुषमानेविषे, चार कोडाकोडी सागरोपम, बीजा सुषमानेविषे त्र
ण कोडाकोडी सागरोपम, अने त्रीजा सुषमदुषमानेविष व कोडाकोडी सागरोपम

मूल – एका कोडाकोडी, बायालीसाए जा सहस्सेहि ॥ वासाण होइ ऊण
दुसमसुसमाण सो कालो ॥ ५० ॥ अर्थ – एक कोडाकोडी बेतालीस हजार
वर्ष कणु चोथा दुषमसुषमानु एटलु काल मान जाणवु ॥ ५० ॥

मूल – अह दूसमाइ कालो, वास सहस्साइ एक्कवीस तु ॥ तावइओ चेव
कालो अइ दूसमाएवि ॥ ५१ ॥ अर्थ – अथके० हवे पाचमा दुषम आराना
काल, एकवीश हजार वर्ष अने तावइओ के० तेटलुज एकवीश हजार वर्षनु म
लमान ठठा अतिदुषमानु पण जाणवु ॥ ५१ ॥ इतिगाथा पचकार्थ

अवतरण – उसप्पिणित्ति एटले उत्सर्पिणीनु एकशो ने एकशठमु द्वार कहे

मूल – अवसप्पिणीइ नागा, हवतिउस प्पिणीए वि ठएए ॥ पडिलोमा परिवाडी
नवरि विनाएसु नायवा ॥ ५२ ॥ अर्थ – जेरीते अवसर्पिणीना ठ नाग कह्या
ते रीते उत्सर्पिणीना पण ठज नाग जाणवा मात्र एटलु अधिकठे, न पडिलोम
के० उपराठी, परिवाडी अनुक्रमे विनागे आराने विषे करवो ते जेम अवसर्पिणि

ये प्रथम सुषमसुषमा अने घटता कालने योगे, छठो आरो दुषमदुषमा थाय. तेम उत्सर्पिणीमां वधता कालने योगे, पेहेलो दुषमदुषमा आरो थाय. अने छेहे डे, सुषमसुषमा छठो आरो थाय. ॥ ५२ ॥ इतिगाथार्थ.

अवतरणः—दव्वे खेत्ते काले भावे पुग्गलत्ति एटले चार प्रकारना पुद्गल परावर्त्तनुं एकशोने बासठमुं द्वार कहेछे. मूलः—उस्सप्पिणी अणंता, पुग्गल परियट्टो मुणेय व्वो ॥ तेणंतातीअद्धा आणगयद्धा अणंतगुणा ॥ ५३ ॥ अर्थः—अनंति उत्सर्प्पिणीअने आ स्थले उपलक्षणथी अनंति अवसर्प्पिणी पण लेवी. एटले अनंति उत्सर्प्पिणी अने, अनंति अवसर्प्पिणीये, एक पुद्गल परावर्त्त जाणवो. तेवा अनंता पुद्गल परावर्त ते, अतीत अद्धाके० अतीतकालनेविषे थाय. अने तेथी अनंतगुणा वली अनागताद्धा के० अनागत कालनेविषे थाय. ॥ ५३ ॥

त्यां शिष्य आशंका करेछे के; श्रीभगवतिमां एम कह्युछे के "एणागयद्धाणंती यद्धाउ समयाह्यित्ति," तो अतीतकालथकी, अनागत अद्धासमय अधिक कह्या. अतीत, अनागत ए बन्ने काल, अनादिने अनंतपणा थकी समानछे. अने भगवंतनो प्रश्न पण तेमांछे; ते अविनिष्ट समय अतीतकालमां, प्रवेश करेनहीं; किंतु अनागत अद्धामांहेज प्रक्षेपीये; तेमाटे अतीतकाल थकी समयाधिक अनागताद्धा थायछे. अने इहां तो अतीताद्धाथकी अनागताद्धा अनंतगुणा कह्या तो शीरीतें विरोधता नथी? अर्थात् विरोधताज थायछे.

उत्तर कहेछे के; जेम अनागताद्धा अंतरहितछे, अने जेम अतीताद्धानी आदि नथी, एटले ते बन्नेने अंतना अभाव थकी सरखापणुं थयुं; हवे वर्त्तमान समये, अतीताद्धा, अने अनागताद्धा सरखा थायछे. त्यारपछीसमयने अतिक्रमे अनागताद्धा उणी थाय, एम बे त्रण समय प्रमुखनुनोअतिक्रम करतां समपणु थायनहीं, तेमाटे अतीताद्धा थकी अनागताद्धा अनंतगुणी कही. जे कारणे अनंतोकाल गये छते पण अनागताद्धानो क्षय न थाय; अने वर्त्तमाने एक समयरूप वर्त्तमानाद्धा पण छेज, ते सूक्ष्मपणाथकी, आंहि जूदो कह्यो नथी.

मूलः—पुग्गल परियट्टोइह, दव्वाइ चउव्विहोमुणेयव्वो ॥ थूलेयरभेएहि, जह होइ तहा निसामेह ॥ ५४ ॥ अर्थः—ए पुद्गल परावर्त्त ते इहां, द्रव्य क्षेत्र, काल अने भावना भेदथकी चार प्रकारे जाणवो. ते वली एकेको थूलेयरके० स्थूल अने सूक्ष्मना भेदथकी जेरीते थाय, तेरीतें कहुंछुं ते सांभलो. ॥ ५४ ॥

प्रथम बादर, द्रव्य, पुद्गल परावर्त कहेछे. मूल — उरालविउव्वातेय कम्म भा

साणपाणमणगोहि ॥ फासेवि सवपोग्गल, मुक्काअहवायरपरट्टो ॥ ५५ ॥
एक औदारिक, बीजी वैक्रिय, त्रीजी तेजस, चोथी कार्मण, पांचमी ना,
आनपान (श्वासोश्वास) सातमी मन ए औदारिकादिक साते वर्गणायको
राज संबंधी समस्त पुद्गल, ते जेटले काले एकजीव स्वनावे नोगवी नोगवीने मू
तेटने काले एक बादर पुद्गल परावर्त थायचे ॥ ५५ ॥

मूल – अहव इमो दवाई, उराल विउवि तेयकम्मेहि ॥ नीसेस दवग
बायरा होइ परियट्टो ॥ ५६ ॥ अर्थ – अथवा इमोके० ए इव्यादिक एटले पु
शब्द जे पुद्गल परावर्तने आदेठे, ते इव्यादिक कहिये त्या उरालके० औदारिक,
क्रिय, तेजस अने कार्मण ए चार वर्गणायेकरी एक जीवते नीसेसके० सम
धीउराल लोक संबंधी, इव्य ग्रहणने विषे एटले पुद्गल नोगववानेविषे, पण आ
इव्य, पुद्गलपरावर्तन मतांतरे कह्योठे ॥ ५६ ॥

इव्यथी सूक्ष्म पुद्गल परावर्त्त कहेठे मूल – दवे सुहुम परट्टो, जाहव
तरससरीरेण ॥ फासेवि सवपोग्गल, अणुकम्मेण नणु गणिज्जा ॥ ५७ ॥ अथवा
प्रकारे सूक्ष्म पुद्गल परावर्त्तन आवी रीते थायठे के, जेवारे एक औदारिक
शरीरपणे करी, समस्त लोकाकाश नावी पुद्गलने स्पर्शे नोगवे, ते पठी अनुक्र
त्रीजो वैक्रिय, ते पठी त्रीजो, इत्यादिक गणिये तेवारे सूक्ष्म इव्य पुद्गल परावर्त प

हवे क्षेत्रथी बादर पुद्गल परावर्त्त कहेठे मूल – लोगागासपएसा जय
तेण एगजीवेण ॥ पुट्ठा कमुक्कमेण, खेत्तपरट्टो हवइ थूलो ॥ ५८ ॥ अर्थ – ला
ठकार प्रमाणठे, तेमां जे आकाश प्रदेशठे, ते सर्व एक जीवे मरती वखत,
पण शरीर ग्रहण करती वखते, एठके० आ लोकमांहे फरस्या पण त कर्म
कर्मे अथवा उत्क्रम करस्या, तेवारे बादर क्षेत्र पुद्गल परावर्त्त थाय ॥ ५८ ॥

हवे सूक्ष्म क्षेत्र पुद्गल परावर्त्त कहेठे मूल – जीवो जइया जत्थ गयणपएसंमि ठि
इ विस्सरइ ॥ पुणरवि तस्साणतर, बीयपएसंमि जइ मरइ ॥ ५९ ॥ एवमणंतर अ
प तत्तो निरंतरमुड्ढोइ ॥ सुहुमो खेत्तपरट्टो, अणुक्कमेण नणु गणिज्जा ॥ ६० ॥
अर्थ – जीव जेवारे कोइ एकज अविगतके० निरुहितप्रदेशनाविषे मरण क
प्राण त्याग करे, वली गण्यतरे आयुष्यनी परिसमाप्ते, ते प्रदेशथकी अनंतर
एज तदनंतर बीजा प्रदेशने फरसीने बीजा आकाश प्रदेश नजीक मरण पामे ॥
इ इत्यादिकनो प्रदेश त्रीजा त्रीजा आकाश प्रदेश मरण पामे एवीज रीते स्पर्शे निश्चयो ज्यां सुधी समस्त आकाश प्रदेश

काशना प्रदेशो निश्रेथी अनुक्रमे मरण पामी तूटे, तेवारे सूक्ष्म क्षेत्रपुद्गलपरावर्त्त था

हवे बादर काल पुद्गल परावर्त कहेछे. मूलः—उसप्पिणीइसमया, जावइया तेइनि यमरणेण ॥ पुढाकमुक्कमेणं, कालपरट्टो नवे थूलो ॥६१॥ अर्थः—इहां अवसर्पिण नां उपलक्षणथकी, उत्सर्पिणी पण लेवी; एटले उत्सर्पिणी, तथा अवसर्पिण ए वेउना जेटला समय थाय, तेटला सर्व समय एक जीव नियमके० पोताने मरणे करी, आगल पाछल करतां पुढाके० फरसे, तेवारे बादर काल पुद्गल परावर्त्तथाय.

हवे सूक्ष्म काल पुद्गल परावर्त कहेछे. मूल:—सुहुमो पुणउसप्पिणि पढमे सम यंमि जइ मउहोइ ॥ पुणरवि तस्साणंतर, बीए समयंमि जइ मरइ ॥ ६२ ॥ एवंतरतम जोएण सव्वसमएसु चेव एएसु ॥ जइ कुणइ पाणचायं, अणुक्कमेणं नणुगणि ज्जा॥६३॥ अर्थ —सूक्ष्मकाल पुद्गलपरावर्त वलीआवीरीते थाय, के अवसर्पिणीने उत्सर्पिणीना समय मांहेला पहेला समयनेविषे जे एक जीव मरण पाम्यो होय, तेज जीव, पुणरविके० वली जेवारे ते समयथकी अनंतर बीजा समयनेविषे मरण पामे. तेमज त्रीजा समयनेविषे, एम तरतमयोगे करी, सर्व समयोनेविषे, जे जीव प्राण त्यागकरे; इहां पण समयनुं अनुक्रम गणिये, तेवारे सूक्ष्म काल पुद्गल परावर्त थाय.

हवे भावथी बादर अने सूक्ष्म ए बन्ने पुद्गल परावर्त्त कहेनार छतो, प्रथम अ नुभाग बंधस्थाननुं, परिमाण कहेछे. मूल.— एगसमयंमि लोए, सुहुमगणिजिया उजे उपविसंति ॥ ते हुंतिसंखलोय, पएसतुल्ला असंखिज्ञा ॥ ६४ ॥ तत्तो असंखगुणि या, अगणिकायाउतेसिकायठिउ॥ तत्तो सजम अणुभाग बंधठाणाणसंखाणि॥६५॥ अर्थ – एक समयनेविषे लोक शब्दे, जगत्रयमा, पृथ्वी कायिकादिक जीवो; अ ने बादर तेऊकाय जीव पण, सुहुम गणिजीयाउ. इहां प्रथमा विभक्ति ते सप्त मीने अर्थे छे, तेथी सूक्ष्म अग्नि कायिक जीवोनेविषे, जेटला पविसतिके० उपजे, तेने हवे असंख्येयपणुं कहेछे तेहुंतिके० ते असंख्येय लोकाकाश प्रदेश राशी प्रमाण थाय. इहां जे कोइ पृथ्व्यादिक थकी अथवा बादर तेऊकाय थकी, सूक्ष्म तेऊकायपणे, उपजे ते लेवुं. परतु प्रथम उपन्या जे तेऊकाय तेज, वली तेवा पर्यायपणे उपजे, ते पूर्वप्रविष्टपणा थकी लेवा नही. सर्वस्तोक इहां एक समयोत्पन्न सूक्ष्म, अग्निकाय जीवो, तत्तोत्ति एटले ते एक समयने विषे उपना सूक्ष्म अग्निकाय जीवो तेथकी वली असंख्यात गुणे अधिक सुक्ष्म, अग्निकाय जीवो, पूर्वोत्पन्न जाणवा. केमके एक समये असंख्याता उपजे, तेथीवली अंतर मुहूर्त्तना समय जोइये तो एक समयथकी अतर मुहुर्त्तोत्पन्न अग्नि कायिया जीवो.

अर्थ –तउके० त्या असप्रासमाहे प्रथम नेद ते अर्थी जे अणदीठेनी स्त्रीन
पर गुणने सानरवे करी अनिलाप मात्र थाय बीजो नेद चिताठे ते सा
पादिक गुण कहेवा, एवा अनुरागेकरी चितवे ते चिता जाणवी त्रीजो नं
शा ते तेना सगमनो अनिलाप, चोथो सनरण ते जेनी साथे प्रीतिनाव थाय
रूप आलेखी जुवे तेम तेम मनने प्रमोद उपजे, ते सस्मरण जाणवु पा
नेद विक्रय, ते तेना विरहथी उत्पन्न थयला डु:खेकरी आहारादिक उपर वि
फरणु थाय छठो उद्भासो, एटले गुरु माता पितादिकना समक्षे पण तन
गनु गणन करे सातमो प्रमाद, ते तेनेज अर्थे सर्वकार्यनेविषे प्रवर्त्तवु आ
उन्माद, ते शून्यचित्तपणे करी बोलवु नवमो तद्भाव, एटले जे थावनो मु
रीन जाणेके ए तेज स्त्री छे एवा नावथी तेने आलिंगन आपे ॥ ९९॥
मृत –मरण च होइ दसमे, सपत्त पिय समासउ बोद्ध ॥ दिठीए सपाउ, दिठीग
पगनासा ॥ ३८ ॥ अर्थ –दशमो मरण एटले सर्वथा प्राणत्यागलक्षण ह
इहां न कहेवु केमके तेना कहेवा थकी शृंगाररसना नगनो प्रसग थावे ता
इहां मरणता नही पण मरणतुल्य अवस्था ते निश्चेष्टपणेकरी कांइ जाणे
एवा पद रहने ए दशमो नेद जाणवो हवे सप्राप्तपणे तेना समा के० सक्षेप
थकी नेद कहेवु तेमा प्रथम, दिठके० लोचन तेनो सपात ते आवीरीते ज, सर
नयन रहर इत्यादिक तेनी सराग दृष्टिये तेनी सन्मुख जोवु ते दृष्टिसपात, बी
दृष्टिगत ते स्त्रीना वार वार तेणेकरी प्रधानपणे स्त्रीनो दृष्टिसाथे पाताना
नावु श्रीना गनामा ते उचितकानननेविषे स्त्रीनीसाथे स्पर्शनी वाता
नेन –तहनिय ननितर गुहिय दत नहनिवाय चुवण चव॥ आलिंगण
म दसनेवणा पगहीउाय ॥ ३७ ॥ अर्थ –त्रीजो हसिय ते वक्रोक्ति पूर्वक
नेनु हसवु चोथो ननित एटले पासा प्रमुखे करी रमत करवी
स्त्रे अवग आलिंगन आपवा सातमो दतपात एटले अधरनेविषे
हवा सातमा नहनिवाय एटले स्तनने विषे नखदान करवा नवमो
ते चुबनाये चुबनु करवु दशमा आलिंगन ते जगारेक स्पर्श करवा
अग्यार एटले स्तनादिकनु ग्रहण करवु बारमा कर नाद सुरतना आसन
करणी वह न वात्स्यायनशास्त्रमां प्रसिद्ध छे ते करवा तरमा आसनन
आसन करवो चउदमा अनग ते क्रीडा प्रमुख सनाग टाळीने अन्य अंग
क्रिडानु करवु ॥ ३९ ॥ इतिगाथा चतुष्टयार्थ

तानावणछए ॥ ८३ ॥ अर्थ —इहां दीप, ज्योति ने चित्र ए त्रणेने आगळ
शब्द जोडिये, तेवारे दीपांग ज्योत्यंग ने चित्रांग एवा शब्द थाय तेमां
थायछे, ते कहेछे दीप शब्दे प्रकाशनो करनार पदार्थ जाणवो जेम सुवर्ण
सुवर्णमय घणा तेजथी अने शबलवाटे करी दीपती देखायछे तेम तिम
नामे करी प्रबल अजवाळु करतां रहे ते वृक्ष दीपांग नामे जाणवां, एक थाकार
दीवानी शिखानीपरे रह्यां थकां दीपतां देखायछे तेने दीपशिख वृक्ष [illegible]
[illegible] पांचमा ज्योति शब्दे अग्नि तेतो सुषमसुषमाने विषे थाय नहीं [illegible]
[illegible] प्रकाशक वस्तु सूर्यना मांडलानी परे पोताना तेजे करी प्रकाश
ज्योत्यंग नामे कल्पवृक्ष जाणवु छठो चित्र शब्दे विचित्र प्रधानपणाथी
[illegible] तेना जे अंग एने विषे माळा ते अनेक प्रकारना सरस सुरभि कुसुमे करी
[illegible] थाय तथी ॥ चित्रांग नामा कल्पवृक्ष जाणवु सातमा चित्रांग
[illegible] नाना प्रकारना रस जे मधुरादिक, ते अति विशिष्ट दाल शालि, घृत,
[illegible] अने विविध प्रकारना पाक प्रमुख अपरिमित स्वादिष्टगुणेकरी सहित
[illegible] तेने कारणे थाय एटले इंद्रियोने बल अने पुष्टिनी वृद्धिना करनार
[illegible] नाना प्रकारना खाद्य पदार्थ तेणेकरी जरेला जे फलना मध्यभागा तेणे करी
[illegible] विद्यमान [illegible] सहेज रहेछे, तेनु नाम चित्ररस कल्पवृक्ष कहिये ॥ [illegible]

[illegible] —मणिपगसुयनूमण [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ८४ ॥ अर्थ —आठमा मणीशब्द [illegible] अणियणाम [illegible]
[illegible] अनेक प्रकारना अंग जे कारण [illegible] जेनविषे [illegible]
[illegible] आनरणना [illegible] अनेक प्रकारना [illegible]
[illegible] विशेष विस्रसा परिणामन [illegible] थाय [illegible]
[illegible], एवे नाम [illegible] वृक्ष त्यां विद्यमान परिणाम [illegible]
[illegible] वर्त्तमान अथ [illegible] विचित्र [illegible]
[illegible] गानि [illegible] नानि [illegible] मकर [illegible]
[illegible] नावकरी गानापमानने [illegible]
[illegible] तेमज दशमा अणियणाम [illegible]
[illegible] सर्व [illegible] प्रमुख अनेक [illegible]
[illegible] विस्रसा परिणाम अतिसूक्ष्म सुकुमार [illegible]

एोकरी नारकी माहोमाहे वढवाड करे ते, महरणनी करेली वेदना पाचमी नरक पृथ्वीसुधी थाय. अने बीजी शरीरनी करेली वेदना, ठठी नरकपृथ्वीसुधी हाय अने आदिमके० धुरली त्रण पृथ्वीनेविषे परमाधामिक देवोनी करेली वेदना पण थायछे इतिगाथार्थ ॥ ८८ ॥

अवतरण –आउत्ति एटले नारकीना आयुष्यनु एकशोने पचोतेरमु द्वार कहेछे मूल –सागरमेगतिअसत्त दसय सत्तरस तहय बावीसा ॥ तेत्तीस जाव ठिई, सत्तसु पुढवीसु उक्कोसा ॥८९॥ अर्थ –प्रथम नरकपृथ्वी रत्नप्रभा छे त्या एक सागरोपमायु बीजीये त्रण सागरोपम, त्रीजीये सात सागरोपम, चोथीये दशसागरोपम पाचमीये सत्तर सागरोपम, तेमज ठठीये बावीस सागरोपम, अने सातमीये तेत्रीश सागरोपमायु जाणवु ए स्थिति सात नरक पृथ्वीने विषे उत्कृष्टि कही॥८९॥

मूल –जा पढमाए जेठा, साबीआ एक एठिआ नणिआ॥तरतमजोगोएगो, दसवास सहस्स रयणाए ॥९०॥ अर्थ –जे प्रथम नरके उत्कृष्टि स्थिति एकसागरोपमछे, ते बीजी नरके कनिष्ट एटले जघन्य जाणवी एम आगली नारकीओनेविषे पण पाछलीए उत्कृष्टि स्थिति ते आगलीये जघन्य जाणवी ए तरतम योग्य जाणवो अने पहेली रत्नप्रभापृथ्वीए जघन्य स्थिति दशहजार वर्षनी जाणवी

अवतरण –तणुमाणति एटलेशरीरना माननु एकशोने ठोत्तेरमु द्वार कहेछे मूल –पढमाए पुढवीए नेरइयाण तु होइ उच्चित्त॥सत्तधणु तिन्निरयणी ठच्चेवय अंगुला पुसा ॥ ९१ ॥ अर्थ –पहेली नरक पृथ्वीये नारकीओनु उच्चपणु एटले देहमान, सात धनुष्यने त्रण रयणीके०हाथ, तथा ठ आगुल उपर एटलु देहमान थायछे अने अतिदेशे बीजी नरकपृथ्वीए पन्नर धनुष्य, बे हाथ ने बार आगल त्रीजीए, एकत्रीश धनुष्य ने एक हाथ, चोथीए साडीबाशेठ धनुष्य, पाचमीए सवासो धनुष्य, ठठीए अढीसे धनुष्य ॥ ९१ ॥

मूल –सत्तमपुढवीए पुण, पचेव धणुस्सयाइ तणुमाण ॥ मज्झिमपुढवीसु पुणा, जोगहा मज्झिम नेय ॥ ९२ ॥ अर्थ –सातमी नरक पृथ्वीए वली पाचसे धनुष्य मानछे अने मध्यमपृथ्वीए तो वली जे पहेली पहेली पृथ्वीए देहमानछे तथी आगली आगली पृथ्वीए बमणु बमणु करता उत्कृष्ट शरीर मान थाय एम म अनेक प्रकारेछे ते प्रथम गाथाए देखाड्यु ॥ ९२ ॥

उत्तर वैक्रिय शरीर कहेछे मूल –जा जम्मि होइ नव धारणिज्ज अवगाहणा [illegible]सु ॥ सा डुगुणा बोधवा, उत्तरवेउव्वि उक्कोसा ॥ ९३ ॥ अर्थ –जे नरक पृ

ध्वीए जे नवधारणिय अवगाहना थाय, तेने बमणी करीए तेवारे ते ते नरकने विषे उत्तरवैक्रिय तेटली जाणवी. ॥ ९३ ॥

मूलः—नवधारणिज्जरूवा, उत्तरवेउव्वियायनरएसु ॥ उगाहणाजहन्ना, अंगुलअ संखनागोय ॥ ९४ ॥ अर्थः—नवधारणीयरूप थकी, उत्तरवैक्रिय नरक नरकने विषे जघन्य अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो नाग ते उत्पत्ति समयनेविषेज होय.

अवतरणः—उप्पत्तिनासविरहोत्ति एटले उत्पत्ति नाश अने विरह कालनुं एक शो ने सीतोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—चउवीसयंमुहुत्ता, सत्त अहोरत्त तह य पन्नरस॥ मासोय दोय चउरो, छम्मासा विरहकालोउ ॥ ९५ ॥ अर्थ.—प्रथम नरक पृथ्वीए चोवीश मुहूर्त्त विरहकाल जाणवो. एटले एक नारकी उपन्या पछी बीजो उपजे तेनी वचमां विरह पडे, तो एटलो पडे. एम बीजी नरके सात अहोरात्री, त्रीजी ए पन्नर दिवस, चोथीए एक, मास, पांचमीए बे मास, छठीए चारमास अने सा तमीए छमासनो विरह काल जाणवो. ॥ ९५ ॥

मूलः—उक्कोसो रयणाइसु, सव्वासु जहन्नउ नवे समउ ॥ एमेवयउवट्टण, संखां पुण सुरसवरातुल्ला ॥ ९६ ॥ अर्थः—ए उत्कृष्टथी रत्नप्रनादिकने विषे विरहकाल कह्यो, अने सव्वासुके० सर्व पृथ्वीने विषे जघन्यथी एक समय विरह काल थाय. एमेवके० एप्रकारे उद्धर्त्तना विरह तेपण एक नारकी उद्धर्यो पछी विरहपडे तो; एटलोज जाणवो. अने ए उत्पत्ति तथा उद्धर्त्तनानी जे संख्या ते देवोनी परे जाण वी. ते इगडुति संखमसंखा, एगसमये हुंतिहुचवंति इत्यादिक जाणवुं. ॥ ९६ ॥

अवतरण.—लेसाउत्ति एटले नारकीनेविषे लेश्यानुं एकशोने अठोत्तरमुं द्वार कहेछे. मूलः—काऊकाऊ तहकाऊनील नीलायनील कन्हाय ॥ कण्हाय तहा एवं, सत्तसु पुढवीसु लेसाउ ॥९७॥ अर्थः—पहेली पृथ्वीए कापोत लेश्या, अने बीजीए पण कापोत लेश्या, त्रीजीए उपरले नरकावासे कापोत लेश्या, अने नीचले नरकावासे नील लेश्या जाणवी. चोथीए नील लेश्या, पांचमीए उपरना नरकावासे नील अने नीचेना नरकावासे कृष्ण लेश्या, छठीये तथा सातमीए कृष्ण लेश्या छे; परतु छठी थकी सातमीए अत्यंत कृष्ण लेश्या जाणवी. एरीते सात पृथ्वीने विषे लेश्या जाणवी.

अवतरणः— अविहित्ति एटले नारकीने विषे अवधिज्ञाननुं एकशो ने उगणए सीमु द्वार कहेछे. मूल.—चत्तारि गाउ आई, अद्धुठाइंति गाउअं चेव ॥ अड्ढाइ ज्जा दोणिवि, दिवड्ढमेगंच नरएसुं ॥९८॥ अर्थ.—पहेली पृथ्वीये चार गाउ अवधि ज्ञान थाय, एम बीजीए साडात्रण गाउ, त्रीजीए त्रण गाउ, चोथीए अढीगाउ,

पांचमीए बेगाउ, छठीए दोढगाउ, अने सातमीए एकगाउ. ए सात पृथ्वीए अ वधिज्ञान जाणवु एम बार गाथाए करी सात द्वार कह्या ॥ ९८ ॥

अवतरण —परमाहम्मित्ति परमाधामिकना सरूपनुं एकशोने एसीमुं द्वार कहे छे. मूल —अवे अवरिसीचेव सामेया सवलेइय ॥ रुद्दाव रुद्दकालेय, महाकालेत्ति आवरे ॥९९॥ असिपत्ते धणू कुंभी, वालुवेयरणीइय ॥ खरस्सरे महाघोसे, पन्नरस परमाहम्मिआ ॥ १०० ॥ अर्थ —अंब आदेदेइने पन्नर परमाधामिकना नामछे, ते क्रियाने अनुसारे जाणवा ते आवीरीते पहेलो अंब-ते नारकीउने हणे, नीचा पाडे, उंचा आकाशे उछाले ए अंब कहिये बीजो जे नारकीने हणीने कातरणी समासी प्रमुखनी साथे कडका करी, भट्ठीमा पकववा योग्य करे ते, अंबरीस, इहा आंबरीख ते भठी कहिये, तेना सयोग थकी एनु नाम पण अंबरीस छे त्रीजो, जे राढू प्रमुखने प्रहारेकरी सातन पातनादिक करे, अने ते वर्ण श्या म छे तेमाटे एनु नाम पण श्याम छे चोथो जे आतरडू काढे, हैया अने कलेजानु विदारण करे अने वर्ण सबल कावरो थाय ते सबल नामे जाण वु. पांचमु जे शक्ति कुंत अने तोमर तेणेकरी नारकीउने परोवे ते रौद्रपणाना योगे तेनु नामपण रौद्र जाणवु. छठो जे नारकीउना अगोपाग भांगी नाखे, ते वली अत्यत रौद्रपणाथकी, एनु नाम उपरौद्र जाणवु सातमु, जे कडाइ मा तावडी प्रमुखमा नारकीउने पकावे, तेमज एनो वर्णपण कालो होय, ते थी एनु नाम काल कहिये आठमु अपरके० बीजा नारकीना न्हाना त उकरी खवरावेय ने वर्णपण महाकाला होय तेमाटे एनु नामपण महाकाल जाणवु नवमो असि शब्दे खड्ग तेना आकारे पत्र, तेने वनके० विकुर्वि पछी तेनेविषे रह्याजे नारकी, तेने ते असिपत्रने पातेकरी तिलतिल जेटला खण्डकरे, तेमाटे एनु नाम पण असिपत्र छे दशमु, जे धनुष्य साथे मूकी अर्द्धचंद्रादिक बा णेकरी नारकीना कान नाक प्रमुखनु छेदन करे, तेथी एनु नाम पण धनुष्य छे इहा श्री भगवतिमांहे महाकाल पछी असिपत्र पछी कुंभ कह्योछे तेमा जे खड्गकरी तेउने छेदे ते असि, अने जे कुंभादिकमां पकवे ते कुंभ, बारमा जे कदंब कुसु ने आकारे अने वज्रना आकारना भाजनो तेमा वैक्रिय तप्तवेलुनेविषे वणानी परे नारकीने शेके, माटे एनु नामपण वालुक छे तेरमु, जे विरूपके० मातु छे तर ण जेनु, ते त्रांबु जेवु तपाव्यु होय ते थकी पण महाकलकलति रक लोहिये भ रेली नदी विकुर्वि तेमां नारकीउने जे कदर्थना करे, तेथी एनु नाम पण वेतरण

नाणेणउ विहीणा ॥१०४॥ अर्थ –छठी नरकपृथ्वीथकी उद्धर्त्या थका जे तेनी इहां अनंतर जवनेविषे मनुष्यजन्म संजवि जज्ञाके० जजना करवी। कोइक मनुष्यपणु पामे अने कोइक न पण पामे कदाचित् मनुष्य थाय तो संयम पामे नही ॥ १०४ ॥ इतिगाथा चतुष्टयार्थ

अवतरण –तेसु जेसि उववाउत्ति एटले नारकोनेविषे जे जीवोनुं उपजवु थ य तेनु एकशोने ब्यासीमुं द्वार कहेछे मूल –असन्नी खलु पढमो दोच्च तिरिनि वात इयपक्की ॥ सीहा जंति चउत्थि, उरगा पुण पंचमी पुढवी ॥१०५॥ अर्थ–अ सज्ञी मरण पामी पहेली पृथ्वीए जाय पखी त्रीजीए जाय गर्नज सरीसृप गाह नोलियादिक बीजी पृथ्वीए जाय पखी त्रीजीए जाय सिंह तथा तेना उपलक्षणथकी सर्व चतुष्प चोथी पृथ्वीसुधी जाय उरग सर्पप्रमुख ते वली पांचमी पृथ्वीसुधी जाय ॥१०५॥

मूल –छठ्ठिंच इत्थियाउ, मछा मणुयाय सत्तमि पुढवि ॥ एसो परमुववाउ, ना वो नरयपुढवीसु ॥ १०६ ॥ अर्थ –छठी पृथ्वीसुधी स्त्रीनुं जावुं छे मछ अ मनुष्य जे कोइ अत्यंत क्रूर अध्यवसायना धरनार होय ते सातमी नरक पृथ्वी सुधी जायछे ए सात नरकपृथ्वीनु परमके० उत्कृष्ट उपपातके० उपजवु जाणवु

मूल –वालेसुय दाढेसु, पक्कीसुय जलयरेसु उववन्ना ॥ संखिज्जा उठिइया, पु णोवि नरयाउया हुंति ॥१०७॥ अर्थ –व्याल ते सर्पादिक तेनेविषे, तथा दाढ़ी ते सिंहादिकने विषे, अने पक्कीसुके० खेचरने विषे, अने जलचर ते मछादिकने विषे जे नरकथकी आवीने उपन्या होय, तेपण जे संख्याता वर्षायुष्यनी स्थिति वाला होय ते क्रूर अध्यवसायना वशथकी पंचेंद्रियना वधपणाने यागे वली नरकनु आयुष्य बांधी नरकमांज उपजे ॥१०७॥ इतिगाथा त्रयार्थ

अवतरण –संखाउप्पजऊताणत्ति एटले एक समयने विषे केटला नारकी उपजे ते नु एकशो ने त्राशीमु द्वार, तेमज उवट्टमाणाणत्ति एटले एक समयनेविषे उर्द्वतमान ते नरकथकी एक समयनेविषे निकलतानी संख्यानु एकशो ने चोराशीमु द्वार ए बे द्वार नारा अने विरह कालनी गाथामां कह्याछे, तेथी इहां कह्यां नथी

अवतरण –एगिंदियविगल सन्नि जीवाण कायठियत्ति एटले एकेंद्रिय, विक लेंद्रिय, अने सन्नीजीव, ते पोतानीज कायनेविषे जेटलो काल रहे तेने कायस्थि ति कहिये जेम, पृथ्वीकाय जीव मरणपामिने वली पृथ्वीकायमांज उपजे ए कायस्थितिनु एकशो ने पच्याशीमुं द्वार कहेछे मूल –असंखो सप्पिणि सप्पिणीउ एगिंदियाणय चउन्ह॥ताच वऊ अणंता वणस्सईएउ बोधवा॥१०८॥अर्थ–इहां साव

स्थिति ते संव्यवहारिक जीव आश्री जाणवी. असंव्यवहारिकजीवोने तो अनादि एकज कायस्थिति होय तेथी मरुदेवादिकनी साथे व्यभिचार जाणवो नही. तथाच क्षमाश्रमण.॥ तहकायठिइकाला दुविह नेते पहुच्च किर जीवो॥ नाणाइ वणस्सइणो, जे संववहार बाहिरिया ॥ १ ॥ अर्थ —जे असंव्यवहारिक जीवोने अनादि कायस्थितिछे, ते पण कोइक जीवने अनादि अपर्यवसान थाय. ते आवीरीते. जे जीव असंव्यवहारिक राशिथी निकळीने सव्यवहाराशिमा न आवे; अने कोइकने अनादि पर्यवसान, ते आवी रीते के, जे असंव्यवहाराराशियकी निकळीने संव्यवहारराशिमा आवे ते जाणवा.

इहां शिष्यपूछेछे के कहाने केवी रीते असंव्यवहारराशि मूकी संव्यवहारराशिमा पण आवे? तेने गुरु कहेछे के आवे. केमके, विशेषणवतीमां कह्युछे. यदुक्तं सिद्धंति जेत्तियाकिरइह सववहार जीवरासीउ ॥ इत्तियणाइवणस्सइ, रासीउ तत्ति आतम्मि ॥१॥ इहा ए भावछे के, जे जीव असंव्यहारराशिमूकीने संव्यवहार राशिमां आवी मीजे; परन्तु तोपण संव्यवहारराशिमाहे तेटलाज. जेने पृथ्व्यादिकनो व्यवहार प्राप्त थयो ते व्यवहारिक. अने जेओने एवो व्यवहार न होय ते जीव असंव्यवहारिक जाणवा. अने जे व्यवहारराशिमां एकवार आवी वळी निगोदमा जाय ते व्यवहारराशिमा पडया तेथी तेने संव्यवहारिकज कहिये.

हवे सूत्रार्थ कहेछे. असंख्याता लोकाकाश, प्रदेश, अपहार, प्रमाण क्षेत्रे असंख्याति उत्सर्प्पिणीने अवसर्प्पिणी प्रमाण एकेंद्रिय पृथ्वी, अप, तेज वायु रूप चारेने कायस्थिति थाय. ताचेवक के० तेज उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी ते अनंति वनस्पतिनी पण कायस्थिति जाणवी. इहां चेव ए पद पूर्णार्थेछे.॥१०८॥

मूल — वास सहस्सा संखा, विगलाणठिइउ होइ बोधव्वा ॥ सत्तठभवाउ भवे. पणिंदितिरिमणुय उक्कोसा ॥ १०९ ॥ अर्थ —संख्याता सहस्रवर्ष विकलेंद्रियनी कायस्थिति थाये तथा सात आठ भव ते पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्यने कायस्थिति थाय. ए उत्कृष्टथी कायस्थिति कही ॥१०९॥ इतिगाथा द्वयार्थ.

अवतरण.—एगिंदियविगलसन्नी ए भवठियत्ति एटले एकेंद्रियादिक जीवोनी भवस्थितिनु एकशोने ठ्याशीमुं द्वार कहेछे. मूल.—बावीसइ सहस्सा, सत्तेव सहस्स तिन्नि होरत्ता ॥ वाए तिन्नि सहस्सा, दसवाससहस्सिया रुक्खा॥११०॥ अर्थः—बावीशसहस्र वर्ष पृथ्वी कायिकजीवनी भवस्थिति जाणवी. अने अपकायिक जीवनी सातहजार वर्ष, अग्निकायनीत्रण अहोरात्री, वायुकायजीवने त्रण हजार वर्ष, अने वनस्पतिकायने दशहजारवर्ष भवस्थिति जाणवी. ॥११०॥

मूत्र – सवछराइ बारस, राइंदिय हॉति अउणपन्नास॥
पुढवाईण वि उक्कोसा ॥१११॥ अर्थ –बारवर्ष त्रइंद्रियने, राइंदियक
ते ओगणपचाश दिवश तइंद्रियने जाणवा चउरइंद्रियने ठ महीना,
तथा मनुष्यने त्रण पल्योपम ए पृथ्वी आदेदेइ सर्व जीवानी उत्
ति कही, परंतु ए निरूपइव्य स्थानके जे रह्याछे प्रवाहे तेने नाणवी
पृथिविकायने विषे श्लक्ष्णादिकने जूदो जुदा विशेष देखाडेछे –
सुद्ध बालुय, मणोसिला सक्कराय खरपुढवी ॥ एक्क बारस चउदस, ले
बावीसा ॥ ११२ ॥ अर्थ –श्लक्ष्ण नाम पृथ्वी जे सपाट मारवाड
तेने एक हजार वर्ष अनुक्रमे ठ वोलने ठवोल जगाडवा शुद्ध शब्दे,
जी अने कामल माटी तेने बारहजारवर्ष वालुका शब्दे वलु तना
वर्ष, मणसिलने सोलहजारवर्ष, अने शर्करा शब्दे नानी काकरी तेना
हजारवर्ष खर पृथ्वी मोटी जे शिला पटादिक तेनी बावीसहजार व
नाणवी ॥११२॥ इतिगाथा त्रयार्थ
अवतरण –एएसितणु माणति एटले एना शरीरना माननु एकहजार
धार कहेछे मूत्र – जोयण सहस्स महिय, उहिय एगिंदिए तरुगणु।
अने सहस्स, उरऐसुय गब्भजाईसु॥११३॥अर्थ –हजारयोजन झाझेरु
एकइंद्रियनेविषे अने विशेष चिताए तरुगणेसु के० प्रत्येक वनस्पतिनविषे
रण ते समुद्रमांगो तीर्थादि गत वेल्ली कमल अधिकरीन नाणवु
स्थानके एटला उदारिकशरीरनो असंभवछे माटे
तेमज मच्छनु युगल जे गर्भज संमूर्छिम लक्षण तेनेविषे पण हजार
वाय उरगपरिसर्पनेविषे एक हजारयोजन शरीरमानछे पण न
उत्तु शरीरमान उत्सेधांगुले कह्युछे अने समुद्र पद्मद्रहादिकमांहेना
मान ते प्रमाणांगुले थाय तेवारे प्रमाणांगुलने उत्सेध
अन्यत्र गोतिपणु नाय एवी आगका निवारवाने अर्थे सूत्रकार
मूत्र –उस्सेहंगुल गुणिअं, जलासयकमलि जोयण सहस्स ॥
ल, विसेस नलिय माणति ॥ ११४ ॥ अर्थ –उत्सेधांगुलकरी
न हजारयोजन प्रमाण जलाशय, तेनेविषे जघन्यु न नलिन
जिनमान हजारयोजन झाझेरु जाणवु एटले हजार योजन
स्मन ऊंडेर रहे तेटलु झाझेरु कह्यु ॥११४॥

मूलः—जंपुण जलहि दहेसुं, पमायण जोयण सहस्समाणेसुं॥उप्पज्जइवर पउ मं, तं जाण सुन्नूविया रंति ॥११५॥ जे कारणे समुद्र द्रहादिकनेविषे प्रमाणांगुले करी हजारयोजन प्रमाण पाणीमांहे उपजे जे वरप्रधान कमल, तेम श्रीदेविनो निवास कमल. ते तुं जाण, चूके० पृथ्वीनो विकार पण, वनस्पतिकाय न थाय. अनेरां पाणीनां जे आश्रय, जेनेविषे उपद्रव नथी,एवा कोइकस्थानकनेविषे कह्या जे वेलि लता प्रमुख ते यथोक्त मान हजारयोजन फाफेरा तेणेकरी सहित जाणवा.

मूलः—वणणंतसरीराणं, एगनिल सरीरगं पमाणेणं ॥ अनलोदग पुढवीणं, अ संखगुणिया नवे वुड्ढी ॥ ११६ ॥ अर्थः—सूक्ष्म वनस्पतिनां अनंतां शरीर ए कठां करिए; तेवारे एक वायुकायनुं शरीर थाय. एम अनल शब्दे, तेउकायिक, दग ते अपकायिक पृथ्वीकायिकनी असंख्यात गुणि वृद्धि थाय. ते आवीरीतेः— असंख्यातां वायुकायनां शरीर एकठां करीए; तेवारे एक तेजसकायिक थाय. अ संख्याता तेजसकायिक प्रमाणे एक अपकायिकनुं शरीर थाय. असंख्याता अपका यिके एक पृथ्वीकायिकनुं शरीर थाय. ॥११६॥

हवे बेंद्रियादिकनुं देहमान कहेछे. मूलः—विगलिंदियाण वारस, जोयणा णि तिन्निचउरको साय ॥ सेसाणोगाहणउ, अंगुल नागो असंखिज्जो ॥ ११७ ॥ अर्थ—विकलेंद्रियमां, बेंद्रियने बार योजननी अवगाहना; अने तेंद्रियने त्रण को शनी अवगाहना, चउरेंद्रियने चार कोशनी अवगाहना, अने शेषाण एटले शेष शब्दे पृथ्वी, अप, तेज, वायु साधारण वनस्पति, समूर्छिम मनुष्य, समस्त अपर्या सा. तेने उत्कृष्टे आंगुलनो असंख्यातमो नाग अवगाहना देहमान जाणवु.॥११७

हवे पंचेंद्रियनुं देह मान कहेछे. मूल.—गप्न चउप्पय छग्गाउ आइ नुयगेसु गाउय पुहुत्तं ॥ पक्कीसुधणुपुहुत्तं, मणुएसुय गाउआ तिन्नि ॥ ११८ ॥ अर्थः—ग र्भज पंचेंद्रिय चतुःपद गाय, बलद, घोडा, हाथीनुं शरीर छ गाउ मान थायछे, अने नुजगपरिसर्प्प जे गोह नोलियाप्रिक तेने वे गाउथी मांमी नव गाउसुधी एटले गाउ पृथक्त्व शरीर मान थाय. तेम पंखी जे खेचर तेने धनुष्य पृथक्त्व शरीर थाय अने मनुष्यने विषे त्रण गाउनुं देह मान थाय. इति गाथा ससकार्थ॥

अवतरणः— इंदिय सरूव विसयत्ति एटले इंद्रियनुं स्वरूप अने इंद्रियनो विष य तेनुं एकशो ने अठ्यासीमुं द्वार कहेछे. मूल—कायंव पुप्फगोलय, मसूर अ इमुत्तयस्स कुसमंव ॥ सोप चक्खूघाणं, खुरप्प परित्तविच्चं रस्नण ॥ ११९ ॥ अर्थ—

पणे पण एमेवके० एटलुंज जाणवुं. नवरंके० रसनेंद्रियने स्पर्शनेंद्रियनो विशेष ते सूत्रकर्त्ता पोतेज आगली गाथाये देखाडेछे. ॥ १२० ॥

मूलः—अंगुल पुहुत्तरसणं, फरसंतु सरीरविछडंन्नणिय ॥ बारसहिं जोअणेहि सोयं परिगिएहए सदं ॥ १२१ ॥ अर्थ.—अंगुल पृथक्त्व रसनेंद्रिय कही छे अने स्पर्शनेंद्रिय शरीरने विस्तारे कहीछे, हवे ए इंद्रिउनो विषय कहेछे, बारसहिंके० बारयोजननो आवेलो शब्द मेघनी गर्जना प्रमुखनो ते श्रोत्रेंद्रिय परिगिएहएके० सांजले, पण एथी अधिक सांजलवानुं श्रोतेंद्रियमां बल नथी. ॥१२१॥

मूलः—रूवं गिएहे चक्कू, जोयणलस्काउ सायरेगाउ॥गंधं रसंच फासं, जोयणनव गाउसेसाण ॥१२२॥ अर्थ.—सातिरेक लाखयोजन एटले लाखयोजन फाफेरामा रहेलुं रूप ते कट कूटयादिकने अनावे चक्कुइंद्रिय जोइ शकेछे, ए अनासुर इव्य आश्रीने कहिये. अने नासुर इव्य प्रमाणांगुले नीपन्या ते एकवीशलक्षयोजन त्यांथकी दूर जे होपा आक ते सर्व देखेछे. उक्तंच. इगवीसं खलु लरका चवतीसंचेव त ह सहस्साइं ॥ पंच सया नणिया सत्त त्तीसाए अइरित्ता॥इइ नयण विसयमाणं पुरकरदीवड्ढवासिमणुआणं ॥ पुवेणय अवरेणय पिहंपिहं होइनायवं ॥जेम पुष्कर वरद्वीपनेविषे मानुषोत्तर पर्वतने नजीक रहेलाछे जे मनुष्य, ते कर्क संक्रांते सूर्य नुं मांमलो देखेछे. अने गंधके० घ्राणेंद्रिय, रसनेंद्रिय अने स्पर्शेंद्रिय ए त्रणेइंद्रि यो ते सातिरेक एटले नवयोजन फाफेराना आव्या गंधादिक लइ शकेछे ॥१२२॥

हवे इंद्रिउनो जघन्य विषय कहेछे. मूलः—अंगुल असंखनागा,मुणंति विसयं जह मुत्तमोत्तुं ॥ चकुं त पुण जाणे, अंगुलसंखेज्जनागोउ ॥१२३॥ अर्थ.—चक्कुरिंद्रिय मु कीने बाकीनी चार श्रोतादि इंद्रियो जघन्यतो अंगुलना असंख्यातमा नागथकी पोतपोताना विषय जे शब्दादिक तेने जाणे, अने चक्कु इंद्रिय ते अंगुलना संख्या तमा नागथकी. जाणे इहां पृथक्त्व प्रमाण ते चार इंद्रियने आत्मांगुले करी जाणवो, अने स्पर्शेनेंद्रियने उत्सेधांगुले जाणवुं अने विषय परिणाम सर्व इंद्रि यनो आत्मांगुले जाणवुं. ॥ १२३ ॥

अवतरणः—लेसाउत्ति एटले लेश्या संबंधी एकशोनेव्यासीमो द्वार कहेछे. मूलः— पुढवीआउवणस्सइ, बायरपत्तेसु लेस चत्तारि॥गप्नयतिरियनरेसु,छल्लेसा तिन्नि सेसा णं ॥ १२४ ॥ अर्थः—इहां बादरशब्द प्रत्येके जोडिये. प्रत्येक वनस्पतिनुं स्वरूप जणाववाने अर्थे अने व्यनिचार न आववा सारुं वली पर्याप्त एवुं विशेषण तेपण सामर्थ्यथकी जाणवुं. अन्यथा प्रकारे तेजोलेश्यानो अनावछे; तेकारणे

बादर पर्याप्त पृथ्वीकाय, अपकाय, वली प्रत्येक वनस्पतिमाहे धुरली चार लेश्या थाय तथा गर्भज तिर्यंच अने नरके॰ मनुष्यनेविषे ठ ए लेश्याउं जाणवी, अने शेष तेऊकाय, वाऊकाय, सूक्ष्म, पृथ्वी, साधारण वनस्पति, अपर्याप्ता बादर पृथ्वी, अप, प्रत्येक वनस्पति, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय, समूर्छिम पचेंद्रिय, जे मनुष्य तथा तिर्यंच तेने धुरली त्रण लेश्या थाय इति गाथार्थ ॥ १२४ ॥

अवतरण –एयाणजत्थगइति एटले ए पूर्वोक्त जीवोनी ज्या गतिथाय तेवु ए स्थोने नेवुमु द्वार कहेछे मूल –एगिदिअजीवाण, जंति नरति रिक्खेसुजु अलरुकेसु श्रमण तिरियाविएव, नरयमिवि जंति ते पढमे ॥१२५॥ अर्थ –एकेंद्रियजीवो त युगलिया वर्जीने बाकीना मनुष्य तथा तिर्यंचमाहे जाय पण युगलियामां नजाय. अने श्रमणके॰ मनरहित एवा जे समूर्छिम तिर्यंच, ते पण एमज जाणवां पण मात्र ते ते असंज्ञी प्रथम नरकपृथ्वीसुधी जाय छे ॥ १२७ ॥

मूल –तह समुछिम तिरिया,भवणाहिव वतरेसु गच्छति॥ज तेसि उववाउं,पलिश्र संखिज्जआउसु॥१२६॥ अर्थ –तेमज समूर्छिम तिर्यंच ते भवणाहिवके॰ भवनपति अने व्यंतरनेविषे जाय,केमके तेनु उपपातके॰ उपजवाने स्थानके पल्योपमना असंख्यातमा भाग जेटलु आयु थयु जोइये, ते तेनेविषे थाय पण ज्योतिषमान नाव

मूल –पचेंदियतिरियाण, उववाउ क्कोसउ सहस्सारे॥ नरएसु समग्गेसुवि, विगलाय उयजतिरिनरेसु ॥१२७॥ अर्थ –पचेंद्रिय तिर्यंचनु उपपातके॰ उपजवु ते उत्कृष्ट आठमा सहस्रार देवलोक सुधीथाय तेथी आगल्ले यायताना अभाव थकी उपजवु थाय नही तथा नरएसुक॰ सात नारकीनेविषे पण जाय अने विकलेंद्रिय तथा युगलिया वर्जीने बाकीना बीजा तिर्यंच तथा मनुष्य तेमाहे पण उप

मूल –नरतिरियअसंखजीवी, जाइसवज्जेसु जंति देवेसु॥नियआउयसमहीणाउएसु इसाणअंतेसु ॥ १२८ ॥ अर्थ–मनुष्य तथा तिर्यंच जे असंख्याता वर्षना आयुष्य वाला होयते इहा विशिष्ट खेचर जे तिर्यंच पचेंद्रिय ते अंतरद्वीपना तिर्यंचने मनुष्य युगलिया जाणवा ते ज्योतिषि वर्जीने शेष देवोमां उपजे, एटले ज देवनाक मा एना आयुष्य जेटलुंज आयुष्य होय, अथवा तेथी न्यून आयुष्य होय एवा देवलोकमा उपजे पण अधिक आयुष्य वाला देवलोकमां उपजे नहीं. ते ईशान देवलोक सुधी उपजे पण आगल न उपजे ॥ १२८ ॥

मूल –उववाउ तावसाण, उक्कोसेण तु जाव जोइसिआ ॥ जावति भवनाग चरग परिवाय उववाउ ॥ १२९ ॥ अर्थ –तापसाउं उपपातके॰ उपजवु ते

त्कृष्टे ज्योतषी सुधी थाय. पण आगळ न थाय. अने चरक ते धाडीनी निक्षाना लेनारा, अने त्रिदंमि अथवा चरक अने कछोटीआ ते परिव्राजका अने कपिल मुनिना संतानिया जे चरकने परिव्राजकछे तेओनुं उत्कर्षथी उपजवुं यावत् पांच मा ब्रह्मदेवलोक सुधी थाय. ॥ १२९ ॥

मूलः—जिणवय उक्किट्ठ तवे, किरियाहिं अनव्व नव्व जीवाणं ॥ गेविज्जेणुक्कोसोगई जहन्ना नव तिवइसु ॥१३०॥ अर्थः—श्रीवीतरागना वचनने अनुसारे साधुगुणे करी सहित समस्त समाचारी अनुष्टाने युक्त, पण सम्यक्त्वथी रहित मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंग ना धरनार, अनव्य अने नव्य जीव तेने केवल क्रियाना प्रमाण थकी उत्कृष्टे ग्रैवेय कनेविषे उपजवुं थाय, अने जघन्यथी नुवनपतिनेविषे उपजवुं थायछे. ॥१३०॥

मूल.—उउमत्थ संजयाणं, उववाउक्कोसउ य सव्वट्ठे ॥ उववाय सावयाणं, उक्को सेणं चुउ जाव ॥ १३१ ॥ अर्थ.—छद्मस्थ यतिनो उत्पात उत्कष्टथी सर्वार्थसिद्धि नेविषे थाय. श्रावकनुं उत्कृष्टथी अच्युत नामा बारमा देवलोकनेविषे उपजवुं थाय.

मूल.—उववाउ लंतगंमी, चउदस पुव्विस्स होइउ जहन्ना ॥ उक्कोसो सव्वट्ठे, सिद्धिगमो वा अकम्मस्स ॥ १३२ ॥ अर्थ.—चौदपूर्वधरनो उपपात जघन्यथी छ ठा लांतक देवलोके थाय; अने उत्कृष्टथी सर्वार्थसिद्धिमा थाय. अथवा अकर्मक जे कर्मकरी रहित थाय तेने मोक्षनी गति प्राप्त थाय. ॥ १३२ ॥

मूल.—अवराहिअ सामन्नस्स साहुणो सावयस्सविजहन्नो ॥ सोहम्मो उववाउ, व यनंगे वणय राईसु ॥१३३॥ अर्थ.—चारित्र ग्रहणना दिवसथी मांमीने जेने लगा रमात्र पण चारित्रनी विराधना थई न होय, एवा अविराधित श्रमणने, अने तेमज श्रावक पण जे दिवसथी देशविरतिपणुं पाम्यो छे; ते दिवसथी पोताना ग्रहण करे ला व्रतने शुद्ध पाल्युं होय ते श्रावकने पण जघन्यथी सौधर्मदेवलोके उपपात थाय; तथा पोतपोताना व्रतनंग थएला साधु तथा श्रावकने जघन्यथी नुवनप ति अथवा व्यंतरमां उपपात थाय; अने उत्कृष्टे ज्योतषिमां उपजवुं थाय. ॥१३३॥

मूल.— सेसाण तावसाईण, जहसेवंतरे सुउववाउ ॥ नणिउजिणेहि सो पुण नियकिरिय ठियाण विसेउ ॥१३४॥ अर्थ.—शेष जे तापसादिक छे तेओनो जघन्ये व्यंतरनेविषे उपपात थाय. एम श्रीतीर्थंकरदेवे नणिउके० कह्युछे. ते वली नि जके० पोतपोतानी क्रिया जे मोक्षनुं अनुष्ठान, तेनेविषे जे निरत होय तेने थाय. परंतु हीणाचारीने न थाय; एम जाणवुं ॥ १३४ ॥ इति गाथादशकार्थ.

अवतरणः—एएसिंउत्तो आगइत्ति एटले ए जीवोनी ज्यांथकी आगति एटले आव

तु थाय तत्नु एकशो ने एकाणुमु द्वार कहेछे मूल –नेरइय जुयल वज्जा ॥ एगिंदि सु इति अवरगइ जीवा॥विगलत्तेण पुण ते, हवंति अनिरय अमर जुयला॥१३४ अर्थ – नारकी अने जुगलिया वर्जी अनेरी गतिना जीवो एकेंद्रियनेविष आर तनी ते सर्व विकलेंद्रियपणे उपजे, परंतु नारकी, देवता अने युगलिया वर्जीने बाकीना सर्व जीवो उपजे पण ए त्रणनो त्यां उत्पात न थाय ॥ १३५ ॥

मूल –हुति कुअमण तिरिया, नर तिरिया जुअल धम्मिए मोत्तु॥गब्भ चउप्पय नार पावंति असुयज चउगइया ॥१३६॥ अर्थ –हुतिके० होय असंज्ञीमनुष्य ने तिर्य ने मनुष्य तथा तिर्यंच युगलिया मूकीने गर्भज चतुःपद, एने ग्रहणे बीजा ण तिर्यंच पंचेंद्रियपणु युगलिया मूकी चारेगतिना जीव पामे ॥१३६॥

हवे मनुष्य मनधी कहेछे. मूल –नेरइया अमराविअ, तेरच्छा माणवा य पावंति॥ मणुयत्तेणरहिय जुअलधम्मियनरतिरिच्छे ॥१३७॥ अर्थ –नारकी, देवता, गर्भज तिर्यंच अने मनुष्य, चारे ए मनुष्यपणे उपजे पण युगलधर्मि वर्जीने बाकीना पने अने युगल धर्मि मनुष्य तथा तिर्यंच देवगतिमां उपजे॥१३७॥इतिगाथात्रयार्थ

अवतरण –उप्पत्ति मरण विरहाणि एटले उपजताने अने मरताने एक सामयि कादिक विरहकालनु एकशो ने बाणुमु द्वार अने जायत मरत सरवाउत्ति एन्हे उपजता ने मरतानी सख्यानु एकशो ने त्राणुमु द्वार, ए बे द्वार साथे कहेछे मूल– विय मुहुत्त विगलेंदियाण सम्मुछिमाण य तहेव ॥ बारस मुहुत्त गब्भे, सत्तु त्तहुत्तंगमत्तं ॥ १३८ ॥ अर्थ –भिन्नके० कांइएक मावरा अंतर मुहूर्त गत त विगलेंद्रिया निरंतर उपजताना विरह पडे तो एटला विरह पडे संमूर्छिम पण तेमज जाणवु तथा बार मुहूर्त गर्भज पंचेंद्रिय तिर्यंचने उपजतां विरह पडे अने बीजा सर्वजीवोने जो उपजतां अथवा मरतां विरह पडे तो जघन्यथी एक समयनो विरह पडे ॥ १३८ ॥

मूल – उववज्जणा वि एवं, संखा समएण सुरवराणुछा ॥ नर निरिय सव्व सं मु इ नि सुर नारया गब्भ ॥१३९॥ अर्थ –उद्वर्तनानी पण उत्पत्तिनीपरे सर्वा जाणवी एक सामयिकसमुह देवतानी पर जाणवी मनुष्य तथा तिर्यंच संख्याना आउवाला जा सर्वनेविषे अमर देवता नारकी गर्भजनेविषे देवता एकडिमां पण आर नार

मूल –बारस मुहुत्त गब्भे मुहुत्त सम्मुछिमसुचउवीसं॥उक्कोस विरहकाला दंडु रियवइगउत्त ममत्तं ॥१४०॥ अर्थ–बारमुहूर्त गर्भजने उपपात विरह जाणवो अने चोवीशमुहूर्त संमूर्छिमनविषे उपपात विरह जाणवो ए उत्कृष्ट विरहकाल

कह्यो. अने जघन्यथी तो गर्भज संमूर्छिमनेविषे एक समय उपपात विरह थाय.

मूल –एमेवय उव्वट्टण. संखासमएण सुरवरतुल्ला ॥ माणुएसुं उववज्ज. नत्थाउ यमोत्तूणसेसाउ ॥१४१॥ अर्थ.–उद्वर्त्तना पण एमेवके० एमज. जेम उपपात कह्यो तेनीपरेज जाणवी. एक समय आदिनी संख्याते देवताने तुल्य देवतानी परे मनुष्य तेविषे सर्व उपजे. असंख्यातायुष्क मनुष्य तथा तिर्यंचना उपलक्षणथकी सात मी पृथ्वीना नारकी, तेउकाय अने वायुकाय, मूकी शेष उपजे. इतिगाथार्थ. चतुरूघार्थ

अवतरण.–नवण, वइवाण मंतर, जोयसिय. विमाण, वासि, देवाण, ठिइत्ति, एटले चतुर्विध देव निकायनी स्थितिनुं एकसो ने चोराणुमुं द्वार कहेछे. मूल – नवणवइवाणमंतर, जोइसियविमाणवासिणो देवा ॥ दसअठपंचवीस, संखजुत्ता कमेणइमे ॥१४२॥ अर्थ.–नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषि अने वैमानवासि देव तेणे पूर्वनवने विषे कीधांजे पुण्यनो समूह, तेना योगथीपाम्याजे विशिष्ट नोगसुख, तेणे करी जे दिव्यंतके० शोने, तेने देव कहीए. एना अनुक्रमे नेद कहेछे. दशनुवनपतिना, एम आठ व्यंतरना, पांच ज्योतिषिना, छवीश वैमानवासीनाजेद. ए संख्याये सयुक्त होय.

हवे दशप्रकारे नुवनपतिछे तेनां नाम कहेछे. मूल –असुरा नागा विज्जू, सुवण्ण अग्गीय वाउथणियाय ॥ उदही दीवदिसाविय, दसनेयानवणवासीण ॥ १४३ ॥ अर्थ –ए नुवनपतिने कुमारनीपरे क्रीडा प्रियछे, तेथी ए सर्व असुरादिक शब्दनी आगल कुमार शब्द जोडिये. तेवारे एक असुरकुमार, बीजो नागकुमार, त्रीजो विद्युत्कुमार, चोथो सुवर्णकुमार, पांचमो अग्निकुमार, छठो वायुकुमार, सातमो स्तनितकुमार, आठमो उदधिकुमार, नवमो द्वीपकुमार अने दशमो दिशिकुमार ए दशनेद नुवनवासीना कह्या. ॥ १४३ ॥

हवे व्यंतरना नेद देखाडेछे. मूल.–पिसाय नूया जक्खा, रक्खसा किन्नरा यकि पुरिसा ॥ महोरगागंधव्वा, अठविहावाणमंतरिआ ॥ १४४ ॥ अणपन्निपणपन्नि, इसिवायनूइयवाइएचेव ॥ कंदीय महाकंदी, कोहंमेचेव पयगेय ॥ १४५ ॥ अर्थ – एक पिशाच, बीजा नूत, त्रीजा यक्ष, चोथा राक्षस, पाचमा किन्नर, छठा किपुरिस, सातमा महोरग, अने आठमा गंधर्व, ए आठ प्रकारना वाणमंतर देव छे. त्या एम ने मनुष्यपणाथकी विगतके० गयोछे अंतर, तेमाटे व्यंतर कहिए. अने वनना आतरानेविषे थया ते वाणमंतर जाणवा, मकार अलाक्षणीक छे, वली ए आ ठ नेद व्यंतरना अणपन्नी इत्यादिक नाम प्रगटछे. ॥ १४४ ॥ १४५ ॥

मूल – इमपढम जोयणसए, रयणाएअठवतरा अवरे ॥ तेसुइहसोलसेदा, रु

यगन्धर्वहोदाहिणुत्तरउ ॥ १४६ ॥ अर्थ –ए पिशाचादिकथी जुदा आठ निकाय, इयके० इहां रत्नप्रभाना प्रथमना शो योजनमां होयछे, तेनेविष श इ छे, ते मेरुने नीचली गोस्तनाकार रुचकछे तेने नीचले दक्षिण उत्तरने वि जाणवा ॥ १४६ ॥

हवे ज्योतषिनु स्वरूप कहेछे मूल –चंदा सूरा य गहा, नरकत्तातारयायपंचर एगेमलजोइसिया, घटायाराथिरा अवरे ॥ १४७ अर्थ –चंद्रमा, सूर्य, ग्रह, न त्र अने तारा ए पांच ज्योतषि जाणवा तेमा एक जे मनुष्यक्षेत्रथी बाहेरछे, ते घाघियाघाट, जेम एकस्थानके रहेछे तेनीपरे एकस्थानके रहेछे, ते माटे ते स्थिरज्योतिषी जाणवा ॥ १४७ ॥ तषि जाणवा बीजा जे मनुष्यक्षेत्रमाछे, ते चरच

हवे वैमानवासी देवो, चार गाथायेकरी कहेछे मूल –सोहम्मीसाणसण, कुमार माहिंद बंभलोयतहा ॥ लंतयसुक्कसहस्सार, आणयपाणयाकप्पा ॥ १४८ ॥ तह आरणअच्चुअविहु, इगिहगेविज्ज वरविमाणाइ॥पढमसुदंसणतस्स, बीइयसुप्पबद्धति ॥ १४९ ॥ तइयमणोरमतह, विसालनामचसव्वउनद ॥ सोमणससोमाणस, मह पीइकरच आइच ॥ १५० विजयचवजयतं, जयतअपराजियंचसव्वठ ॥ एचमणुत्तर पणग, एएसिचउव्विहसुराण ॥ १५१ ॥ अर्थ –सौधर्म, ईशान सनत्कुमार, माहें इ, ब्रह्म, लातक, शुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत आरण अने अच्युत ए बारने विषे कल्प एवी संज्ञाछे, इहां जे देवता उपजे तेने इंद्र, सामानिक अने त्राय त्रिंसक इत्यादिक समस्त ठकुराईनोकल्पछे, तेथी इहा उत्पन्न थया जे देव, तेने कल्पो पपन्न कहिये अने हवे इगिहके० ग्रैवेयकना, वर प्रधान विमाणकहुंचु तेलोकना मा पुरुषनेविषे ग्रीवाके० कठने स्थानकेछे, माटे ते ग्रैवेयक कहिये तेमां प्रथम सु दर्शन, बीजो सुप्रबद्ध त्रीजो मनोरम तेमज चोथो विशाल, पांचमो सर्वतोभद्र छठो सोमनस, सातमो सोमाणस, आठमो प्रीतिकर अने नवमो आदित्य हवे पांच अनुत्तर विमान कहेछे –एकविजय, बीजु विजयंत, त्रीजु जयंत चोथु अपराजि त अने पांचमु सर्वार्थसिद्ध ए अनुत्तर एटले समस्तमाहे उत्कृष्ट पांच विमान जा एवां एएसिके०ए चतुर्विध देवनिकायना नाम कह्या ॥१४८॥१४९॥१५०॥१५१॥

हवे स्थिति कहेछे मूल – चमर वलिसार महिय, सेसाण सुराण आउअ बोध ॥ दाहिण दिवड पलिय, दोदेसूणुत्तरिल्लाण ॥ १५२ ॥ अर्थ –चमरइंद्र दक्षि णदिशिनो अने वलिइंद्र उत्तरदिशिनो इंद्र तेने अनुक्रमे चमरइंद्रने एक सागरोपम अने वलिइंद्रने पल्योपमने असंख्यातमे भागे अधिक एक सागरोपमस्थिति जा

दसचउदससत्तरेवअयराइ ॥ सोहम्माजासुक्को, तडुवरिएक्केकमारोवे ॥१५३॥ अर्थ –सौधर्मदेवलोके बे सागरोपम, ईशाने साधिक बे सागरोपम, सनत्कुमारे सातसागरोपम, महेन्द्रे साधिक सातसागरोपम, इहां साधिक अथवा न्यून थावे तेम सर्वत्र पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अविशेष जाणवो पांचमा ब्रह्मदेवलोके दश सागरोपम, छठे चउद, सातमे सतर, एटले सौधर्मदेवलोकथी मांमीने सातमा शुक्रदेवलोकसुधी आयुस्थिति कही तेथकी उपरांतना देवलोके एकेक सागरोपम वधारीये ते आवी रीते जे, आठमे अढार, नवमे ओगणीश, दशमे वीश, अग्यारमे एकवीश ने बारमे बावीश, प्रथमग्रैवेयके त्रेवीश, द्वितीयग्रैवेयके चोवीश, तृतीयग्रैवेयके पचीश, चतुर्थ ग्रैवेयके छवीश, पंचम ग्रैवेयके सत्तावीश, षष्ठग्रैवेयके अठ्ठावीश, सप्तमिये ओगणत्रीश, अष्टमीये त्रीश, अने नवमीये एकत्रीश सागरोपम आयुस्थिति जाणवी तेवारपछी विजयादिक चार अनुत्तर विमाननेविषे बत्रीश सागरोपम आयुस्थिति उत्कृष्ट जाणवी ॥ १५३ ॥

मूल –तित्तीसयरुक्कोसा, विजयाइसुठिइजहन्न इगतीस ॥ अजहन्नमणुक्कोसो, सवट्ठेअयर तेतीस ॥ १५८ ॥ अर्थ –तेत्रीश सागरोपम सर्वार्थसिद्धिनी उत्कृष्ट स्थिति कही छे हवे जघन्य अजघन्योत्कृष्ट स्थिति सर्वत्र देखाडेछे विजय, विजयंत, जयंत ने अपराजित ए चारविमाने जघन्य एकत्रीश सागरोपम अने सर्वार्थसिद्धिविमाने तेत्रीश सागरोपम ते अजघन्योत्कृष्टस्थिति जाणवी ॥१५८॥

मूल –पलिअअहियसोहम्मी, साणेसुजहन्नकप्पठिई ॥ उवरिल्लमिजहन्ना, कमेणजावेकतीसयरा ॥ १५९ ॥ अर्थ –सौधर्मे जघन्यस्थिति एक पल्योपम ईशाने पल्योपम काझेरी, तउके० तेवार पछी अधके० नीचेना देवलोके जे उत्कृष्ट स्थिति छे, ते आगले देवलोके जघन्यस्थिति जाणवी एम क्रमके० अनुक्रमे त्रीजे देवलोके बे सागरोपम साधिक जघन्य स्थिति चोथे सातसागरोपम पांचमे साधिक सात सागरोपम, एम यावत् विजयादिक चारनेविषे एकत्रीश सागरोपम जघन्य स्थिति जाणवी अने सर्वार्थ तो जघन्य स्थिति नथी ॥ १५९ ॥

हवे देविनी स्थिति कहेछे मूल –सपरिग्गहेयराणं, सोहम्मी साणपलिअसाहीयं ॥ उक्कोससत्तपन्ना, नवपण पन्नायदेवीणं ॥ १६० ॥ अर्थ –देवि बे प्रकारनी छे एक तो परिगृहित, ते एकज धणीनी स्त्री जाणवी अने बीजी अपरिगृहित ते वेश्यानीपरे कोइना पण उपभोगमां आवे हवे सौधर्म देवलोके परिगृहित देविनुं आयुष्य उत्कृष्टुं एक पल्योपम, अने ईशानदेवलोके परिगृहितनुं साधिक पल्योपम ए

मूल —पचास चत्त उच्चेव, सहस्सा लंत सुक्क सहसारे ॥ सय चउरा श्राण प्पा, एएसु तिसारणच्चुयउं ॥ १६६ ॥ अर्थ —पचाशहजार लांतके, चालीशहजार शुक्रे, ठ हजार सहस्रारे, चारशे श्रानत तथा प्राणत ए बेनेविषे, त्रणशें श्रारण ने श्रच्युत ए बेनेविषे ॥१६६॥

मूल —इक्कार सुत्तरहिठिमेसु, सत्तुत्तरच मच्चिमए ॥ सयमेग उवरिमए, पत्र श्रणुत्तर विमाणा ॥ १६७ ॥ अर्थ —एकशो ने अग्यार विमान नीचला त्रण ग्रैवेयकनेविषे, अने एकशो ने सात विमान मध्यना त्रण ग्रैवेयकनेविषे, अने एकशो उपरना त्रण ग्रैवेयकनेविषे, तथा पांच विमानज, पांच अनुत्तर सबधी जाणवा

ए सर्व विमानोने एकठा कर्याथी जेटला थाय ते कहेछे मूल —चुलसीय य सहस्सा ॥ सत्ताण उईनवे सहस्साइ, तेवीस चविमाणा, विमाण सखाजवे सा ॥ १६८ ॥ अर्थ —चोराशीलाख सत्ताणुहजार ने त्रेवीश ए समस्त विमान वासी देवोना विमानो, सख्याये थायछे ॥ १६८ ॥ इतिगाथाष्टकार्थ

अवतरण —देहमाणत्ति एटले देहमाननु एकशो ने अठ्ठमु द्वार कहेछे मूल—जवण वण जोइसोहम्मी, साणे सत्तहुति रयणिउं ॥ एक्केक्क हाणि सेस, डुडुगे डुग चउक्केय॥१६९॥अर्थ —नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषि,सौधर्म अने ईशान, एटलामा सात रयणीशब्दे हाथनु शरीर मान होय तेवारपछी एकेक हाथनी हाणी करी ए ते आवी रीते सनत्कुमार अने माहेंद्र ठ हाथ ब्रह्म अने लांतके पाच हाथ, तेपछीना वली बे देवलोकनेविषे चार हाथ, आनतादिक चारनेविषे त्रण हाथ

मूल —गेविज्जेसु दोन्निय, एगारयणी श्रणुत्तरे सुनवे ॥ नवधारणिचिएसा, उक्कोसाहुति नायवा ॥ १७० ॥ अर्थ —नव ग्रैवेयकनविषे बे हाथ अने पचानुत्तर विमाननेविषे एक हाथनु शरीर जाणवु ए नवधारणीय अवगाहना उत्कृष्टे जाणवी

हवे सर्व देवोनो उत्तरवैक्रिय अवगाहना कहेछे मूल —सवसुक्कोसा, जोयणाण वेउविया सय सहस्सा ॥ गेविज्जणुत्तरेसु, उत्तर वेउवियानत्थि ॥ १७१ ॥ अर्थ — सर्वदेवोनेविषे उत्तरवैक्रिय लक्षयोजन होय अने ग्रैवेयक तथा अनुत्तरविमाने उत्तरवैक्रिय न थाय केमके जे उत्तरवैक्रिय ते तो गमनागमनन अथ अने परिवारने अर्थे करवी पडे, तेनु प्रयोजन ए देवोने नथी, तेथी तने उत्तरवैक्रियनो अनाव कह्योछे ॥१७१॥

हवे जघन्यथी कहेछे मूल —अगुल असखनागो, जहन्ना नवधारणि यपारंन्ने सावेया अवगाहण, उत्तरवेउविया सावि ॥ १७२ ॥ अर्थ —जघन्यथकी नव

मूल –पंचास चत्त छच्चेव, सहस्सा लंत सुक्क सहस्सारे ॥ सय चउरो आण प्पा, एएसु तिआरणचुयर्उ ॥ १६६ ॥ अर्थ –पचाशहजार लांतके, चालीशहजार शुक्रे, छ हजार सहस्रारे, चारशे आनत तथा प्राणत ए बेनेविषे, त्रणशें आरण ने अच्युत ए बेनेविषे ॥१६६॥

मूल –इक्कार सुत्तरहिट्ठिमेसु, सत्तुत्तरच मज्झिमए ॥ सयमेग उवरिमए, पंच अणुत्तर विमाणा ॥ १६७ ॥ अर्थ –एकशो ने अग्यार विमान नीचला त्रण ग्रैवेयकनेविषे, अने एकशो ने सात विमान मध्यना त्रण ग्रैवेयकनेविषे, अने एकशो उपरना त्रण ग्रैवेयकनेविषे, तथा पांच विमानज पांच अनुत्तर संबंधी जाणवा ए सर्व विमानोने एकठा कर्याथी जेटला थाय ते कहेछे मूल –चुलसीइ त य सहस्सा ॥ सत्ताणउइंनवे सहस्साइ, तेवीस चविमाणा, विमाण सखानवेइ सा ॥ १६८ ॥ अर्थ –चोराशीलाख सत्ताणुहजार ने त्रेवीश ए समस्त विमान वासी देवोना विमानो, सरव्याये थायछे ॥ १६८ ॥ इतिगाथाष्टकार्थः

अवतरण –देहमाणंति एटले देहमानंनु एकशो ने छन्नुमु द्वार कहेछे मूल –भवण वण जोइसोहम्मी, साणे सत्तहुंति रयणिउ ॥ एक्केक्क हाणि सेस, दुदुगय दुग चउक्केय॥१६९॥अर्थ –भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषि,सौधर्म अने ईशान, एटलाने सात रयणीशब्दे हाथनु शरीर मान होय तेवारपछी एकेक हाथनी हाणी करी ए ते आवी रीते सनत्कुमार अने माहेंद्रे छ हाथ, ब्रह्म अने लांतके पांच हाथ, तेपछीना वली बे देवलोकनेविषे चार हाथ, आनतादिक चारनेविषे त्रण हाथ

मूल –गेविज्जेसु दोन्निय, एगारयणी अणुत्तरे सुत्तरे ॥ भवधारणिज्जएसा, उक्कोसाहुंति नायव्वा ॥ १७० ॥ अर्थ –नव ग्रैवेयकनेविषे बे हाथ अने पंचानुत्तर विमाननेविषे एक हाथनु शरीर जाणवु ए भवधारणीय अवगाहना उत्कृष्टे जाणवी

हवे सर्व देवोना उत्तरवैक्रिय अवगाहना कहेछे मूल –सयसुक्कोसा, जाव णाए वेउव्विया सय सहस्सा ॥ गेविज्जणुत्तरेसु, उत्तर वेउव्वियानत्थि ॥ १७१ ॥ अर्थ – सर्वदेवोनेविषे उत्तरवैक्रिय लक्षयोजन होय अने ग्रैवेयक तथा अनुत्तरविमाने उत्तरवैक्रिय न थाय केमके जे उत्तरवैक्रिय ते तो गमनागमनने अर्थ अने परिवारने अर्थे करवी पडे, तेनु प्रयोजन ए देवोने नथी, तेथी तेने उत्तरवैक्रियनो अभाव कह्योछे ॥१७१॥

हवे जघन्यथी कहेछे मूल –अंगुल असंखभागो, जहन्न भवधारणि ज्जपारंभे सखेया अवगाहण, उत्तरवेउव्विया सावि ॥ १७२ ॥ अर्थ –जघन्यथकी भव

धारणीय शरीर प्रारंभ काले अंगुलनो असंख्यातमो भाग होय, अने अंगुलनो संख्यातमो भाग शरीरनी अवगाहना ते उत्तर वैक्रियनी थाय. इतिगाथा चतुष्टयार्थ

अवतरण.– लेसाउत्ति एटले लेश्यानुं एकशोने सत्ताणुमुं द्वार कहेछे. मूलः– किण्हा नीला काऊ, तेऊलेसाय भवण वंतरिया ॥ जोइस सोहम्मीसाण, तेउ लेसा मुणेयवा ॥ १७३ ॥ अर्थः–कृष्ण, नील, कापोत अने तेजो; ए चार लेश्या वाला भवनपति तथा व्यंतरदेवो होय तथा ज्योतिषि, सौधर्म ने ईशान ए तेजो लेश्यावंत जाणवा. ॥ १७३ ॥

मूलः–कप्पेसणं कुमारे, माहिंदे चेव बंभलोएय ॥ एएसुपम्हलेसा ॥ तेणपरं सुक्क लेसाउ ॥ १७४ ॥ अर्थः–सनत्कुमार, माहेंद्र ने ब्रह्म; ए त्रण देवलोकनेविषे पद्मलेश्या होय, अने तेथी आगले बीजा बधा देवलोके शुक्ललेश्या होय. इ ति गाथा द्वयार्थ. ॥ १७४ ॥

अवतरणः–उहिनाणंति एटले अवधि ज्ञानना माननुं एकशो ने अठाणुमुं द्वार कहेछे. मूलः–सक्कीसाणापढमं, दोच्चंचसणंकुमार माहिंदा ॥ तच्चंव बंभ लंत ग, सुक्कसहस्सार चउत्थि ॥ १७५ ॥ अर्थः–सौधर्म अने ईशानना देवता, नीचे प्र थमनरकपृथ्वीसुधी देखे. अने सनत्कुमार तथा माहेंद्रना देवो, बीजी पृथ्वी सुधी देखे. अने ब्रह्म तथा लांतक देवलोकना देवो, त्रीजीनरकपृथ्वीसुधी देखे, अने शुक्र तथा सहस्रारना देवता, चोथी नरक पृथ्वी सुधी देखे. ॥१७५॥

मूलः–आणय पाणय कप्पो, देवा पासंति पंचमिं पुढविं ॥ तंचेव आरण च्चु य, उहीणाणेण पासंति ॥ १७६ ॥ अर्थः–आनत अने प्राणत देवलोकना देव पांचमी नरकपृथ्वीसुधी देखे. वली तंचेवके० तेज पांचमी पृथ्वीसुधी आरण्य ने अच्युत विमानवासी, देवो अवधिज्ञाने करी देखे. ॥१७६॥

मूल·– छट्ठिहिट्ठिम मज्झिम, गेविज्जा सत्तमिं चउवरिल्ला ॥ संभिन्न लोग ना लिं, पासंति मणुत्तरादेवा ॥ १७७ ॥ अर्थः–छठी नरकपृथ्वीसुधी हेठिमित्रक अने मध्यमत्रिक, ए वे त्रिक एटले छठी ग्रैवेयकसुधीना देवता देखे, अने सातमी नरक पृथ्वीसुधी उपरली त्रण ग्रैवेयकना वासी देवो देखे. तथा अनुत्तरविमानवासी जे देवो छे, ते सभिन्नके०कांइक मात्रेरी पोताना विमाननी ध्वजाथी उपरांत न देखे. तेमाटे ध्वजाथी उपरांते ऊणी बाकी समस्त चउदराजलोकनी नालीसुधी देखे.

मूलः–ए ए सिमसंखिद्या, तिरियं दीवाय सागरा चेव ॥ बहुयर उवरिमग्गा, उड्ढंच सकप्पथूभाई ॥ १७८ ॥ अर्थः–एएसिंके० ए देवोने असंख्याता द्वीप अ

ने समुद्रसुधी तिर्छो अवधिज्ञान होय बहुलतरके० अत्यत अधिक, ते जेम म उपरना देवो तेम तेम ते बहुलतर एटले घणु देखे, अने उचो पाताना विमाननी ध्वजा सुधीज देखे ॥१७८॥

मूल —सखिज्ज जोयणा खलु, देवाण अद्धसागरेऊणे ॥ तेण परम सखिज्ज जहण्ण यंपणवीसतु ॥ १७९ ॥ अर्थ — जे देवोनु अर्द्धसागरोपम माठेरु आयु होय ते देवोने सख्याता योजनसुधी अवधि थाय, अने तेथकी अधिक आयु होय, तेने असख्याता योजननु अवधिज्ञान थाय जघन्यतो पच्चीश योजन अवधिक्षेत्र थाय ॥१७९॥

मूल —नवणवइ वणयराण, उड्ढ बहुउ अहोय सेसाण ॥ जोइस नेरईयाण तिरियं उरालिउचित्तो ॥ १८० ॥ अर्थ —नवनपति अने व्यतरने उचु अवधि घणु होय, अने शेष दिशिए अवधिनो विषय अल्प होयछे अने शेष जे वमानिक देवोछे, तेने नीचु अवधि घणु होय, अने ज्योतषि ने नारकीओने तिर्छा घणु होय, अने शेष दिशाओनेविषे थोडो होय वली औदारिक तिर्यंच अने मनुष्यने अवधि ते नानाके० अनेक प्रकारे होय कोइकतो नीचु घणु देखे, कोइक उचु घणु देखे, कोइक तिर्छो घणु देखे, इत्यादिक जाणवु ॥१८०॥ इतिगाथा पट्कार्थ

अवतरण — उप्पत्तिए विरहोत्ति एटले उत्पत्तिना विरहनु एकशा न नवाणुं द्वार कहेछे मूल —नवण वण जोइ सोहम्मी, साणे चउवीसइ मुहुत्ताउ ॥ उक्कोस विरहकालो, सवेसु जहन्नउ समउ ॥ १८१ ॥ अर्थ —नवनपति, व्यतर ज्योतषि सौधर्म अने ईशानना अतसुधीना देवोने उत्कृष्ट चोवीश मुहूर्त्तना उत्पत्ति विरह थायछे अने जघन्यतो ए समस्त देवोने एक समय विरह काल होय ॥१८१॥

हवे सनत्कुमारादिकने उत्कृष्ट विरहकाल कहेछे मूल —नवदिण वीसमुहुत्ता, वारस दस चेव दिण मुहुत्ताउ ॥ वावीसा अद्धचिय, पणयाल असीइ दिवस सयं ॥ १८२ ॥ अर्थ —नवदिवस ने वीसमूहुर्त्त, सनत्कुमारे, वारदिवस ने दशमुहूर्त, माहेद्रे साडीवावीश दिवस ब्रह्मदेवलोके, पिस्तालीश दिवस, लांतकदेवलोके, एशी दिवस शुक्रदेवलोके, एकशो दिवस सहस्रार देवलोके विरह काल जाणवो

मूल —सखिया मासा आणय, पाणएसु तह आरण अच्चुए वासा ॥ सखियासुया, गेविज्जेसु अउवोछ ॥ १८३ ॥ अर्थ —आनत प्राणतनेविषे सख्याता मास एटले अग्यारमास ने ओगणत्रीश दिवस सुधी सख्याता मास कहिए वली आरण अने अच्युतनेविषे सख्याता वर्षनो उत्पत्ति विरहकाल निश्चयकी थाय

वो. ज्यांसुधी शो वर्ष पुरां न थाय. त्यांसुधी संख्यातां वर्ष कहेवायछे. ॥ १७३ ॥
हवे ग्रैवेयकने विषे विरहकाल कहेवुं.

मूलः—हिठिमवास सयाइं, मझिम सहस्साइं उवरिमेलक्खा ॥ संखिज्जाविसेया जाह्या संखेणतिसुंपि ॥ १७४ ॥ अर्थ.—हेठिमत्रिकने विषे वर्षनां शेकमा संख्याता जाणवां, मध्यमत्रिकनेविषे संख्यातां हजारवर्ष जाणवा. उपरली त्रिकने विषे संख्यातां लाख वर्ष जाणवां. एम यथा संख्यपणे त्रणेनेविषे जाणवा.॥१७४॥

मूल.—पल्लिया असंख जागो, उक्कोसो होइ विरह कालोओ ॥ विजयाइ सुनिद्दिठो, सव्वेसुजहण्णउ समउ ॥ १७५ ॥ अर्थ.—पल्योपमनो असंख्यातमो जाग उत्कृष्ट विरहकाल ते विजयादिक चार विमाननेविषे होय. अने सर्वार्थसिद्धि नामा पांचमा विमाननेविषे पल्योपमनो संख्यातमो जाग कह्योछे. एमज ए सर्व देवोने जघन्य तो एक समय जगवंते कह्योछे. ॥ १७५ ॥ इतिगाथा चतुष्टयार्थ ॥

अवतरणः—उवट्टणाए विरहोत्ति एटले उद्वर्त्तनानेविषे विरहकालनुं बशोमुं द्वार कहेछे. मूल—उववाय विरहकालो, ए सोजह वण्णिउंय देवेसु॥ उवट्टणाविएवं, सवेसिं होइ विसेया॥१७६॥ अर्थः—उपपात विरहकाल ए देवोनेविषे जेम पूर्वोक्त वर्णव्यो, तेमज उद्वर्त्तना पण एवीज रीते सर्व देवोनेथाय एम जाणवुं. इति गाथार्थ.

अवतरणः—इमाण संखत्ति एटले ए देवता एकसमयमा केटला उपजे अने केटला चवे तेनी संख्यानुं बशोने एकमुं द्वार कहेछे. मूल.—एकोवि दोवि तिन्निव संखमसंखाय एग समएणं ॥ उववयं तेवइया ॥ उवट्टंतावि एमेव॥१७७॥अर्थ.—एक अथवा बे अथवा त्रण एमज संख्याता असंख्याता पण एक समयनेविषे उपजे. अने उवट्टंताके० चवता पण एज रीते जाणवा. ॥ १७७ ॥ इतिगाथार्थ ॥

अवतरण.—जम्मि ए पाणं गइत्ति एटले ज्यां ए देवो चविने जाय ते गतिनुं बशोने बीजुं द्वार कहेछे. मूल—पुढवी आउ वणस्सइ, गप्ने पज्जत संख जीवीसु सग्गचुआणवासो, सेसा पडिसेहिया ठाणा ॥ १७८ ॥ अर्थ.—पृथ्वी, अप, वनस्पति, अने गर्भज, पर्याप्ता, मनुष्य तथा तिर्यंच जे कोइ संख्याता आयुष्य वाला होय तेनेविषे स्वर्गथकी चविने देवो आवे, ए देवोने आववानां स्थानक छे. शेष थाकता स्थानक प्रतिषेध्याछे; माटे तेमा न उपजे. ॥ १७८ ॥

एज वात विशेषे देखाडेछे. मूलः—बायर पजत्तेसुं, सुराण जूदग वणेसु उप्पत्ति ॥ ईसाणं ताणं चिय, तह विनउड्ढ गाणंपि ॥ १७९ ॥ अर्थ.—बादर पर्याप्ता पृथ्वी अप वनस्पतिमांहे जुवनपति आदे देइ ईशानदेवलोकसुधीना देवो

नी उत्पत्ति थाय वली उद्धगके० सनत्कुमार आदेदेइ सहस्रारदेवलो ना देवतानी, पचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्यमां उत्पत्ति छे पण पूर्वोक्त पृथि कमां उत्पत्ति न थाय ॥ १८८ ॥

मूल –आणय पनिईहितो, जाणुत्तरवासिणो च वेऊण ॥ मणुएसि नि यदि, नियमा सखेयजीवीसु ॥ १९० ॥ अर्थ –आनत देवलोक आदेदेइने त्तरविमानवासी पर्यंतना देवो चवीने सख्याता आयुष्यवाला मनुष्योनेविषे यमेके० निश्चेयकी उपजे ॥ १९० ॥ इति गाथा त्रयार्थ

अवतरण –जत्तो आगईए सति एटले ज्याना आव्या, देवता थाय ते आ गति कहिये तेनु वर्णोने त्रीजु द्वार कहेछे मूल –परिणाम विसुद्धिए, देवाउ कम्मबध जोगाए ॥ पचदियाउगछे, नरतिरिया सेस पडिसेहो ॥ १९१ ॥ अर्थ परिणाम ते मननो व्यापार जाणवो, ते विशुद्धपणे थाय अने अविशुद्धपण थाय त्यां जे विशुद्ध परिणाम ते देवगतिनु कारण छे तेमाटे सूत्रमां परिणाम विसुद्धिए एवो कह्यो वली जो कदाचित् अतिविशुद्धमननो परिणाम थाय तो, ते परिणाम मोक्षने पमाडनारो थायछे तेमाटे वली परिणामनी विशुद्धिनु वि पण, देवाउके० देवताना आयुष्यने योग्य जे कर्मबध तेने योग्य जे विशुद्धि तेणेकरी पंचेंद्रियमनुष्य ने तिर्यंच तेज देवतामां जाय पण शेष दरुकना जीव न जाय तेने जवानो अनाव छे ॥ १९१ ॥

मूल –आईसाणाकप्पा, उववाउ होइ देव देवीण॥तत्तोपरतु नियमा,देवीणनत्थि ववाउ॥१९२॥अर्थ –नवनपति आदेदेइनै ईशानदेवलोकसुधी देव देविनी उत्पत्ति थाय. पण तेथी आगल निश्चेयकी देविनु उपजवु न थाय अने देविनु गमनाग मन सहस्रार देवलोक सुधी छे ते दो कप्पकाय सेवी इत्यादिक जाणवु इति॥१९२॥

अवतरण –विरहो सिद्धिगइएत्ति एटले सिद्धगतिनेविषे उपजताने विरहनु व शेने चोथु द्वार कहेछे मूल –एकसमउ जहन्नो, उक्कोसेण तुजावछम्मासा। विरहो सिद्धिगईए, उवट्टण वजिया नियमा ॥ १९३ ॥ अर्थ –समय समय सि द्धगतिमां जीवो जायछे, परतु जो विरहपडे तो जघन्यथी एक समयनो विरह पडे ने उत्कृष्टथी तो ६ महीनासुधी पण कोई सिद्धगतिए जाय नही ए सिद्धगति विरह कह्यो अने सिद्धगतिमां निश्चेयकी सिद्धोने उद्वर्तना न होय इतिगाथार्थ

अवतरण –जीवाण आहार गहण उसासत्ति एटले जीवोने आहार ग्रहण श्वासोश्वासनो प्रकार कहेवानु वर्णो ने पांचमु द्वार कहेछे मूल –सच्चित्त

आहारो, तयाइ फासेण लोम आहारो ॥ पक्खेवाहारोपुण, कावलिउ होइनायव्वो ॥ १९४ ॥ अर्थः—केवल तेजस कार्मण शरीरे, विग्रहे अथवा अविग्रहे उत्पत्ति देशनेविषे गयोथको प्राणी प्रथमसमय तो औदारिकादिक शरीर योग्य पुद्गल आहारे. बीजे समये औदारिकादिक मिश्र आहारे. ज्यांलगे शरीर निस्पत्ति, त्यांलगे आहारे, अथवा उज शब्दे पोताना जन्मस्थानकने योग्य शुक्रमिश्रशोणितना पुद्गलनुं संघात, तेनो जे आहार ते उजा आहार जाणवो. तयाइके० त्वचाने स्पर्शे शीतल पवनादिकनी प्राप्तिए जेम तृषा उपशम पामे, ते लोमआहार कहिये. प्रक्षेप शब्दे मुखमांहे नाखवुं. ते कावलिक आहार होइके० होय. नायव्वोके० जाणवो.

मूल.—उयाहाराजीवा,सव्वेवि,अपज्जत्ता मुणेयव्वा॥पज्जत्त गायलोमे,पक्खेवो होइ न इयव्वा॥१९५॥अर्थः—जे गतिमां जीव जाय त्यां गयाछता तेज समयनेविषे उजा आहारी सर्व जीव अपर्याप्तावस्थाए जाणवा. अने जेवारे पर्याप्ता थाय तेवारे सर्वजीव सर्व काल वायु प्रमुखना स्पर्शेने करी निरंतर लोम आहारी होयछे अने प्रक्षेपाहारे तो भजना करवी. केमके जेवारे कोलिउ ग्रहण करे तेवारेज कावलिक कहेवाय छे. ए रीते भजना जाणवी. एटले कावलिक कोइ वखतहोय पण, ने न पण होय.॥१९५॥

मूल.—रोमाहारा एगिंदियाय नेरइय सुरगणाचेव ॥ सेसाणं आहारो, रोमे पक्खेवउ चेव ॥ १९६ ॥ अर्थ.—ते कारणे एकेंद्रिय लोमाहारी होय, तेमज नारकी अने चतुर्विध देवनिकाय पण लोमाहारी होय अने शेष समस्त जीवोने लोमाहार तथा प्रक्षेपाहार पण थाय. ॥१९६॥

मूलः—उयाहारामण भिक्खणोय सव्वेवि सुरगणा हुंति ॥ सेसाहवंति जीवा लोमाहारा मुणेयव्वा ॥ १९७ ॥ अर्थः—एमज देवताने अपर्याप्तावस्थासुधी उजाहार होय, अने पर्याप्ता थया छतां मनमां चिंतवन करे तेवो आहार पामे. देवोना समूह एवा थाय, अने शेष जीवो लोमाहारी थाय एम जाणवुं. ॥ १९७ ॥

मूल.—अपज्जत्ताण सुराणं,णाभोगनि व्वत्तिउय आहारो॥पज्जत्ताणं मण भक्खणेण आभोगनिम्माउ ॥ १९८॥ अर्थः—ज्यांसुधी अपर्याप्तास्थितिए देवता होय त्यांसुधी अनाभोगे निर्वर्त्तित एटले अनाभोगे नीपन्यो आहार थाय, अने पर्याप्ता थया पछी तो मनने वांछित आहारने ग्रहणे आभोगे निपन्यो आहार होयछे. ॥१९८॥

हवे उश्वासनी वात कहेछे, मूलः—जस्सजयसागराइं, विइत्तस्सय तेत्तिएहिंपक्खेहिं ॥ ऊसासोदेवाणं, वास सहस्सेहि आहारो ॥१९९ ॥ अर्थः—जे देवताने जेटला सागरोपम आयुस्थिति होय; ते देवताने तेटला पखवाडियां गयेछते श्वासोश्वासनुं

ग्रहण अने तेटलाज हजार वर्ष गया ठतां ते देवोने आहार लेवानो अभिल
मूल –दसवास सहस्साइ, जहन्नमाउ धरतिजेदेवा ॥ तेसिचउत्थाहारा,
थोवेहि ऊसासो ॥ २०० ॥ अर्थ –दशहजार वर्ष प्रमाण जघन्यायुने
धारण करेठे, तेहने चतुर्थ आहारनु ग्रहण जाणवु अने ते सात स्तोक
प्रमाणे श्वासोश्वास लियेठे ॥२००॥

मूल –दसवास सहस्साइ, समयाहिय जाव सागर ऊण ॥ दिवसमुहुत्त पहु
आहारूसास सेसाण ॥२०१॥ अर्थ –दशहजार वर्ष ते समयादिके अधिक हत
ज्यासुधी सागरोपमथी उंचु आयुष होय, तेवा देवाने दिवस पृथक्त्वे आहार हाय अ
ने मुहूर्त्त पृथक्त्वे श्वासोश्वास लिये एरीते शेष समस्तने जाणवु इति गाथाद्वयार्थ

अवतरण –तिन्निसयातेवठा पासण्डीणत्ति एटले त्रणशे ने त्रेशठ पाखण्डीनु अ
ने ठनु द्वार कहेठे मूल –असिअसय किरियाण, अकिरिय वाईण होइचुलसीइ।
अन्नाणिय सत्तठी, वेणइयाणच बत्तीस ॥ २०२ ॥ अर्थ –प्रथम कर्त्ताविना क्रिया
जे पुण्यबंधादि लक्षणठे ते सनवे नही तेमाटे एवु जाणीने जे क्रिया, आत्मत
वायनी कहेठे, एवु जेनु शीलठे ते क्रियावादि आत्मानु अस्तित्वपणु मानेठे एव
क्रियावादि ते एकशो ने एसी थायठे ॥२०२॥

एमज बीजा उत्पत्तिने अनतरे जे वस्तुना विनाशनो सनव, ते कारणे क्रियानो
पदार्थथकी क्रिया सनवे नही आत्मादिकने नास्तिपणाना करनार ते एम कहे
के क्षणिका सर्वसंस्कारा अस्थिराणांकुत क्रिया ॥ इत्यादिकना बालनार ते अक्रि
यावादि ते चुलसि के० चाराशी नेदे थायठे

त्रीना जे अन्नाणियके० कुत्सित मातु जे ज्ञान तेने अज्ञान कहिय तेने अद
ण करी जे प्रवर्त्ते ते अज्ञानी कहेवाय एवा अज्ञानी ते चितव्याविना बधनी वि
फलताना करनार ठे,ते एवु कहेठे के, ज्ञान ते नलु नथी केमके, ज्ञान ठत माहाना
हे विवादना योगथकी चित्त कलुषित थायठे, तेणेकरी दीर्घ ससारनी प्रवृत्ति था
, ते आवीरीते जे, कोइक पुरुष अन्यथा प्रकारे प्ररूपणा कीधी ठता काइक वि
क्षित ज्ञानी ज्ञाननावे गर्वाध्मात चित्तथको तेना उपर चित्तना कलुष नाव
रण करी वाद करवा ममी जाय, ते वाद करता करता ता चित्तना कलुषता
व वृद्धि पामेठे तेथकी अहकारनी वृद्धि थाय तेथकी अशुनकर्मना बधपर
तेना योगे दीर्घ ससार थायठे, अने जा ज्ञान न जाणिय अने अज्ञाननन आ
ाए तेवारे ते अज्ञानना योगथकी अहकारनो सनव थाय नही तथी अन्य

पे अवस्थायीछे पण कालवादिने मते तो कालवादि ते कहिये के जे आ सम स्त जगत्रयते कालनो करेलो छे एवु कहेछे, केमके कालविना आत्रा चपक अ शोकादिक फूलनो उद्गम न थाय वली फलबध, हिमपात, नक्षत्र, गनाधान, वा दिक ते पण कालविना होय नही तेमज बाल, कुमार, यौवन, पलीनो आगम वा अवस्थाना विशेष जे थायछे तेपण नियमित कालने विनागेज थायछे पण ए सघलु अवस्थाएज थाय वली हाम्रली प्रमुख घणी सामग्री छती होय तापण प्र म समयनेविषेज मग प्रमुख सीजता देखाता नथी किंतु काले करीज सीजेछे थी जे कृतक ते सर्व काल कृत्येज जाणवु, यदाहु न कालव्यतिरेकेण, गर्भवाल शुन्नादिक ॥ यत्किंचिज्जाय ते लोके, तद सौकारणकिल ॥ १ ॥ किंच कानाहतेन व, मुग पक्ति परीक्षते ॥ स्थाल्यादि सन्निधानेपि, तत कालादसीमता ॥ २ ॥

बीजो नग आवीरीतेछे—अस्तिजीव स्वतो अनित्य कालत एरीते बीना पण नगछे ते कहेछे एवपरतत्ति अस्तिजीव परतोनित्यत कालत समस्त पदार्थ परपदार्थने स्वरूपे जाणपणु जेम दीर्घनी अपेक्षाए ह्रस्वपणु अने ह्रस्वनी अपेक्षा ए दीर्घपणु, तेम आत्माने स्तन कुनादिक देखी तेथकी अनेरो वस्तु विशग स्था थात्मानी बुद्धि प्रवर्त्ते ते कारणे आत्मानु स्वरूप ते पर थकी अवधारिए एसते वे नग, तेम परते वे नग लाध्या, तेवारे काल पदे चार नग लाध्या, एम स्वनाव प्रमुखे पण चार चार नेद पामिए, तेवारे वीश नग प्रत्येके जीवे लाध्या एम अ जीवादिके वीश वीश करता नवपदे एकशो ने एंशी थाय तेनो उच्चार आवीरीते करीये

एक अस्तिजीव स्वतोनित्य स्वनावत बीजु, अस्तिजीव स्वतो अनित्य स्वनाव त त्रीजु, अस्तिजीव परतोनित्यस्वनावत चोथु, अस्तिजीव परतो अनित्य स नावत ॥ एनो अर्थ आमछे.—ते स्वनाववादी कहेछेके जे जे नाव ससारमां थाय छे ते स्वनाव थकी थायछे, जेम माटी थकी घट थाय छे, तंतु थकी पट थायछे, पण माटी थकी पट थतु नथी अने तंतुथकी घट थतो नथी एवु निश्चेपूर्वक ज हातुछे ते स्वनावविना होतु नथी वली बीजा तो सर्व कार्य रह्यां पण जे मग प्रमुखने स मस्त छती सामग्रीए पण करमू एटले कांगडु मग सीजे नही एटले चडे नही तेनो तेज स्वनावछे तो एम जाणिये जे समस्त वस्तु स्वनाव कृतज होयछे एम अ स्तिजीव स्वतोनित्योनियतित

हवे नियतवादि एम कहेछे के, नियति तत्वांतरे जेना वशथकी समस्त स्वनाव नियतरूपपणे प्रगट थाय ते आवीरीते, जे जेवारे जे थकी थाय ते तवारे त

थकी नियतरूपपणे थयो देखायछे. अन्यथा प्रकारे कार्यकारणजावनी नि
व्यवस्था प्रति नियतरूप व्यवस्थाना प्रेरकने अनावथकी न थाय तो एवी नि
कार्य नियतथकी कोण निवर्त्तावी शके?

ईश्वरवादी कहेछे. अस्तिजीव स्वतो नित्यः ईश्वरतः इत्यादि चार जंग ईश्वरवा
आवीरीते कहेछे. समस्त जगत्रय ईश्वरकृतछे. अने ईश्वरने सर्व कोई माने. ईश्वर स्व
त.सिद्ध, ज्ञान वैराग्य, धर्म, ऐश्वर्यवान्, वळी प्राणीउने स्वर्ग अने अपवर्गनो प्रेरक छे.

हवे आत्मवादी कहेछे. अस्तिजीवः स्वतोनित्य. आत्मनः इत्यादि चार जंग आत्मवा
दी विश्व परिणतरूप एक आत्माज माने. ते एवुं कहेछे के एकज आत्मा जूत
जूतनेविषे रह्यो छतो तेज एक प्रकारे पण देखायछे, अने अनेक प्रकारे पण
देखायछे. जेम पाणीमां चंद्रमा देखाय तेनी परे जाणवुं. यडुक्तं. एकएव हि जूतात्मा
जूतेजूते व्यवस्थित.॥ एकधा बहुधा चैव दृश्यते जलचंद्रवत् ॥१॥ एरीते क्रियावा
दीना एकशो ने एंसी जेद देखाड्या ए क्रियावादीना यंत्रनी स्थापना.

जीवः	अजीवः	पुण्यः	पापः	आश्रव.	संवरः	निर्जरा.	बंधः	मोक्षः
स्वतः	परतः	स्वतः	परतः	स्वतः	परत.	स्वतः	परत.	स्वतः
नित्यः	अनित्यः	नित्य.	अनित्यः	नित्यः	अनित्य.	नित्यः	अनित्य	नित्य.
कालतः	स्वजावतः	नियतितः	ईश्वरतः	आत्मन	एवा	पांच	पद	जाणवा

हवे अक्रियावादीना चोराशी जंग आणवानो उपाय कहेछे. मूल.—इह जीवाइ
याई, पुन्नं पावविणा ठविज्जंति॥तेसिमहो जायम्मि, ठविज्जएस परसद्दडुगं॥२००॥
सवि अहो लिहिज्जइ, कालज लिच्चाय पयडुगसमेय ॥ निश्य सहाव ईसर,
प्पत्ति इमं पयचउक्कं ॥ २०ए ॥ पढमे जंगे जीवो, नत्थि सउ कालउ तयणु वी
परउवि नत्थि जीवो, कालाइय जंगगा दोन्नि ॥ २१० ॥ एवं जइआई हिवि
हि जंग डुगं डुगं पत्तं ॥ मिलीया विते डुवालस, संपत्ता जीवतत्तेण ॥२११॥
जीवाइ हिवि, पत्ता जाया तउय चुलसीई ॥ जेया अकिरिय वाई ण हुंति मे
संखाए ॥ २१२ ॥ अर्थ.—इहके० इहां ए अक्रियावादीना जेद आणवाना
विषे पुण्य अने पाप विना बाकीना जीवादिक सा[illegible] पन क

रीए, तेने नीचे वली स्वत. ने परत ए बे शब्द स्थापीए, अने आत्माना अनावथकी नि
त्य अने अनित्य शब्द मांमीए नही वली स्वपर शब्दने नीचे कालत ५८ १
पद ते सहित नियत, स्वनाव, ईश्वर आत्मालक्षण चार पद लखिये, इहां
दृच्छावादी ते अक्रियावादी सर्व जाणवा हवे विकल्पनो अनिलाप देखाडे
पढमेके० पहेला नगनेविषे नास्तिजीव स्वत कालत बीजो नास्तिजीव प
त कालत ए बे नग, कालेकरी लाध्या एम यदृच्छादिक पांच बोल ते प्रत्येके
विकल्प पामे, त्यारे सर्वमली बार नेद थाय ठे एनो अर्थ पहेलानीपरे जाणवा।
खु एटलु विशेष जे यदृच्छावादीने मते ते एम प्ररूपणा करेठे के, इहां पदार्थ
संताननी अपेक्षाए प्रतिनियत कार्यकारणनाव न होय किंतु यदृच्छाएन थाय
तेवा प्रमाणना अनावथकी जाणवु ते आवीरीते जे, कीडाना विशेषथकी कीडा
थाय एम गणायकी पण कीडो थाय, तेमज अग्निथकी अग्नि थाय, तेम अरणी
थकी पण अग्नि उपजे, धूम्रथकी धूम्र थाय अग्नि ते नीला इंधणने सयोगे
ए थायठे तेमाटे निश्चित कार्य कारण नाव ते क्यांए न होय यदृच्छाथकीज
एक कांइएक थाय एमज अंगीकार करवु पण एम नही जे दाहियारठे ते वस्तु
सनाव अनेरी रीते देखी अनेरी रीते पोतानो आत्मा सक्लेश करे तेकरे नही एम य
च्छावादीना मते तो सर्व यदृच्छानु करेलुज थायठे एटले जेम जीवपदे बार नग
लाध्या, तेम बीजा अजीवादिक ठ पदनेविषे पण प्रत्येके बार बार नग करता
बार सत्तं चोराशी नग थाय ठे ए अक्रियावादीनी सर्व सख्या जाणवी॥२११
हवे अज्ञानीकना सडसठ नग आणवानो उपाय देखाडवाने अर्थे त्र गाथा क
हेठे मूल —सतमसत सता, सतमवत्तवसय अवत्तव्व॥असय अवत्तवसय,सयवत्तव्व
सत्तपया ॥ २१३ ॥ जीवाइ नवपयाण, अहोकमेण इमाइ ठविऊण ॥ जइ कीर
अहिलावो, तह साहिज्जइ निसामेह ॥ २१४ ॥ अर्थ —पहेलो सत्व, बीजो असत्व
त्रीजो सदसत्व, चोथी अवक्तव्य, पांचमी सदवक्तव्य, ठठी असद् वक्तव्य, सात
मी सदसद्वक्तव्य, ए साते पदे सातनग थया एनो आम अर्थने —सत्व ते पोतानरूपे
विद्यमान, असत्व ते पररूपे अविद्यमान, सदसत्व ते पोतानेरूपे अने पररूपे पण वि
द्यमानपणु तथा अविद्यमानपणु, त्या यद्यपि ए समस्त वस्तुस्वरूपेकरी सदाए स
दसत त्रे तोपण क्याएक कांइएक किवारेक प्रगटपणे प्रमाणना जाण कहने ते
थी ए त्रीजो विकल्प जाणवो हवे तेज सत्व ने असत्व ते समकाल एक शब्द वा
लिए एजोतेनो केहेवावालो शब्द कोई नथी तेमाटे अवक्तव्य अने जेवारे एकनाग

सत, बीजो जाग अवक्तव्य. समकाले ए बेहु बोलिये तेवारे सदवक्तव्य थाय अने जे वारे एक जाग असत् अने बीजो जाग अवक्तव्य एवी समकाले विवक्षा करिये तेवारे असदवक्तव्य ठ्ठो जंगथाय. तथा जेवारे एक जाग सत्, बीजो जाग असत्, अपर वली अवक्तव्य. तेवारे सदसदवक्तव्यत्वं जंग थाए. ए सातविकल्प थकी बी जा विकल्प संजवे नही, बीजा सर्व विकल्पनो ए सातमांज अंतर्जाव जाणवो.

एनी कांइक जावना, एक घटपदार्थ आश्री देखाडिये ठइयें. मुख, ग्रीवा, कपाल, कुक्षि बुध्नादिक ते पोताने पर्याए विद्यमान जावे करी विशेषित जे कुंज तेने कुं ज कहिए, एटले सत्घट ए प्रथम जंग जाणवुं. तेम पटादिगत शरीरने ढांकवादि परपर्याएकरी असत्वपणे विवक्षित कुंज थाय नही. समस्त घटादिक पदार्थ परप र्याए करी जेवारे असत्वपणे विवक्षिए तेवारे सत्घट ते असत् घट थाय. ए बीजो जंग. वली ते घट स्वपर्याए, परपर्याए सद्जावे, असद्जावेकरी विशेषे समकाल क

हेवाने इष्ट एवुं, त्रीजुं जंग अनिष्ट अवक्तव्यः पोताने पर्याए अने परपर्याए सत्व असत्व पणे करी, एके असंशयोत्पन्न वचने करी तेने समकाले कही न शकिये, ते अव क्तव्य. ए अवक्तव्य नामें चोथुं जंग. एम एकदेशे पोताने पर्याए करी सत्वपणे विव क्षिए, अने परजजय पर्याएकरी सत्व असत्वपणे समकाल असांकेतिक एक शब्दे कहेवासारु विवक्षा करीए, तेवारे ते कुंजसत् अवक्तव्य कहीए. ए पांचमुं जंग. एकदेशे घटपणायकी सत् अन्यदेशे कहि न शकिये, तेवारे सत् अवक्तव्य. ए ठ ठुं जंग. एक देशे परपर्याए असत्वपणे विवक्षीये. अन्यस्थानके स्वपर्यायें परप र्याय अने एम उजय पर्याये सत्वपणे विवक्षिए. अन्य वली एकदेशे परपर्याए असत्वणे विवक्षिये, एवो कुंज सदसदवक्तव्य घट अघट अवक्तव्य थाय. ए सा तमु जंग. एरीते सातजेद घटना कह्या, तेम पटादिकनी जावना पण करवी, ए सा तपद पट्टकादि उपर स्थापन करी ते उपर जीवादिक नवपद स्थापिये. ॥२१३॥२१४॥

हवे अजिलाप कहेले. मूल.—संतोजीवो कोजाण ईहवाकिंच तेण नाएण ॥ सेसपएहि विजंगा, इय जाया सत्त जीवस्स ॥ २१५ ॥ एवमजीवा ईणवि, पत्तेयं सत्त मिलिय तेसठी ॥ तह अन्ने विठुजंगा, चत्तारि इमे उ इह हुंति॥२१६॥ अर्थः— सन्जीवः कोवेत्ति किंवा तेनज्ञानेन ए प्रथम जंग जाणवुं. एनो अर्थ कहेले. कोई कने विशिष्ट ज्ञान नथी, जे अत्येंडिय आत्माने जाणशे. तोपण शुं ने न जाणशे तो पण शुं? तथाहि जे नित्य सर्वगत अमूर्त्तिक ज्ञानादिक गुणोपेत होय, तो पण शुं?

अथवा एवा गुणोयकी रहित आत्मा छे तोपण शुं? अथवा तेना जाणवाथकी कया पुरुषार्थनी सिद्धि थवानी छे? तेथी अज्ञानपणामा रहेवुज नक्कु छे. असनजीव कोवे त्ति किंवा तेनज्ञातेन इत्यादिक शेप ठ पदछे, तेणेकरी सात भंग जीव पदार्थना थाय, एरीते बीजा अजीवादिक आठपदनेविषे पण सात सात भंग करतां त्रेसठ भंग थाय

तेम वली अज्ञाननी प्ररूपणाविषे अनेरा पण चारभंग थाय तेआवी रीते मूलः- सती भावुप्पत्ती कोजाणइ किंच तीइनायाए, एवमसती भावुप्पत्ती सदसतिया चेव ॥२१७॥ तद अवत्तवाविहु, भावुप्पत्तीइमेहिंमिलिएहिं ॥ भंगाण सत्तसठी, जाया अन्नाणियाणइमा ॥२१८॥ अर्थ -सतीभावोत्पत्ति कोजानाति किंवा नयाज्ञातया. १ असतीभावोत्पत्ति कोवेत्ति किंवा नया ज्ञातया २ सदसतीभावोत्पत्ति कोवेत्ति किंवा नया ज्ञातयान् ३ तद्रूके० तेमज चोथा भंगने विषे अवक्तव्यभावोत्पत्ति किंवा नयाज्ञातया४

ए चार भंगनो तात्पर्यार्थ कहेछे इहां भाव पदार्थनी सती कहेतां छतां विद्यमान उत्पत्तिके० उपजवानो प्रकार ते कोणजाणे? अने तेना जाणवाथी पण शुं? शेषविकल्प ते अछति भाव पदार्थनी उत्पत्ति २ एम छती अछती भावनी उत्पत्ति ३ चोथे भंगे अवक्तव्य जे कहेवाय नही, आगलो अर्थ प्रथमनो समस्त पद आगल कहिये. परंतु त्रण विकल्प तेज पदने अवयवनी अपेक्षाए होय, ए कारणपणामाटे इहां सभवे नही एटले पूर्वोक्त त्रेसठमां आ चार भंग प्रक्षिप्त कीये त्यारे अज्ञानीना भंग सडसठ थायछे ॥ २१७ ॥ २१८ ॥

हवे विनयवादीना बत्रीश भेद बे गाथाये करी कहेछे मूल -सुर निवइ जइ न्नाई, थविरा वम माइ पियसु एएसि ॥ मणवयण काय दाणेहिं चउविहो कीरए विणओ॥२१९॥अठवि चउक्क गुणिया, बत्तीस हवंति वेणइय भया॥ सव्वेहिं पिंडिएहिं, तिन्नि सया हुंति तेवट्ठा ॥ २२० ॥ अर्थ - १ सुर शब्दे देवता २ निवइ शब्दे राजा ३ यति ते साधु ४ ज्ञाति ते स्वजन ५ स्थविर ते वडेरा ६ अवमके० अनुकंपनीय कापडी प्रमुख ७ माता ८ पिता ए बे प्रसिद्ध ए आठनुं एक मन, बीजुं वचन, त्रीजुं काया, अने चोथु दान ए चार प्रकारे करी विनय करवा ए आठने चारे गुणता विनयवादीना बत्रीश भेद थायछे ते विनयवादी एम जाणे छे के स्वर्ग अने अपवर्गना ज मार्ग छे ते केवल विनयथीज थायछे अने ए विनयते नम्रवृत्ति करवी, तेमज अनुसेकपणुं जाणवुं एरीते पूर्वोक्त देवादिक आठने विषे करता थका जीव स्वर्ग अने अपवर्गना सभागी थाय ए सर्व विकल्प एकठा करवाथी त्रणसें ने त्रसठ पाखंडी थायछे. इति एकानविंशति गाथार्थ

अवतरण.—अठपमायत्ति एटले आठ प्रमादनुं वर्णने सातमुं द्वार कहेछे. मूलः—पमाउय मुणिंदेहिं, जणिउ अठनेयउ ॥ अन्नाणं संसउचेव, मिछानाणं तहेवय ॥ २२१ ॥ अर्थः—मुनिजे साधु, तेना इंद्र जे श्रीतीर्थंकर देव तेणे प्रमाद आठनेदे जणिउके० कह्योछे. तेमां पहेलो अज्ञान शब्दे मूढपणुं, बीजो आ वात एमज छे किंवा अन्यथा प्रकारेछे? एवो जे संदेह ते संशय कहिए. त्रीजुं मिथ्या ते उपरांठु ज्ञान, तेना उपर प्रतिपत्ति होय. तहेवयके० तेमज. ॥ २२१ ॥

मूल.—रागो दोसो मइब्नंसो, धम्मंमिअ अणायरो ॥ जोगाणं डुप्पणीहाणं, अठहा वज्जिअवउ ॥ २२२ ॥ अर्थ.—चोथु राग ते अनिष्वंग लक्षण जाणवुं, पांचमुं द्वेष ते अप्रीतिरूप, छठुं स्मृतिभ्रंश ते विस्मरण शीलपणुं, सातमुं धर्मने विषे अनादरपणुं, एटले आलसनुं करवुं, आठमुं योग ते मनोयोगादिकने डुष्टपणे धरवा. ए आठ प्रकारना प्रमादनुं वर्जन करवुं. ॥ २२२ ॥ इतिगाथा द्वयार्थ.

अवतरण.—जरहाहिवत्ति एटले जरतक्षेत्रना अधिपति जे चक्रवर्त्ती तेना नामोनुं वर्णने आठमुं द्वार कहेछे. मूल.—जरहो सगरो मघवं सणंकुमारोय रायसद्दूलो ॥ संती कुंथूअ अरो, हवइ सुजूमोय, कोरवो ॥२२३॥ नवमोय महापउमो हरिसेणो चेव रायसद्दूलो ॥ जय नामोय नरवई, बारसमो बंजदत्तोय ॥ २२४ ॥ अर्थ.—एक जरत, बीजो सगर, त्रीजो मघवा, चोथो सनत्कुमार. ते राजाओमांहे शार्दूल समान, पांचमो श्रीशांति, छठो श्रीकुंथु, सातमो श्रीअर, आठमो सुजूम कौरव गोत्रमां उत्पन्न थयो, नवमो महापद्म, दशमो हरिषेण. राजाओमां शार्दूल एटले सिंहसमान, अग्यारमो जय एवे नामे मनुष्यनो पति, बारमो ब्रह्मदत्त. ए बार चक्रवर्त्तिनां नाम जाणवां. इति ॥ २२३ ॥ २२४ ॥ गाथा द्वयार्थ.

अवतरण.—हलहरत्ति एटले बलदेवोनुं वर्णने नवमुं द्वार कहेछे. मूलः— अयलेविजयजद्दे, सुप्पजेयसुदंसणे ॥ आणंदे नंदणेपउमे, रामेआविअपछिमे ॥ ॥ २२५ ॥ अर्थ.—एक अचल, बीजो विजय, त्रीजो जद्र, चोथो सुप्रज, पांचमो सुदर्शन, छठो आनंद, सातमो नंदन, आठमो पद्म, नवमो राम वली छेहेलो अपश्चिम शब्द मांगलिक्य वाची छे. ॥२२५॥ इति गाथार्थ.

अवतरण.— हरिणोत्ति एटले वासुदेवोनुं वर्णने दशमुं द्वार कहेछे. मूलः—तिविठूय डुविठूय सयंजू पुरिसोत्तमे पुरिस सीहे, तह पुरिस पुंमरीए, दत्ते नारायणेकिएहे ॥ २२६ ॥ अर्थ.—एक त्रिपृष्ट, बीजो द्विपृष्ट, त्रीजो स्वयंजू, चोथो पुरिसोत्तम

पांचमो पुरुषसिंह, तेमज छठो पुरुषपुंडरीक, सातमो दत्त, आठमो नारा
नवमा कृष्ण, ए नव वासुदेवोनां नाम कह्यां ॥२२६॥ इति गाथा द्वयार्थ.

अवतरण –पडिवासुदेवेत्ति एटले प्रतिवासुदेवोनुं वर्णन ने अग्यारमुं द्वार क
मूल –आसग्गीवे तारय, मेरय महुकेटके निसुंभेय ॥ बलिपह्राए तह रावणेय
यमे जरासिंधू ॥ २२७ ॥ अर्थ –पूर्वे जे त्रिपृष्ठादिक नव वासुदेव कह्या, तेना ए
पाकमे अश्वग्रीवादिक प्रतिशत्रु. ते सर्व चक्रयोधी पोतानाज चक्रथी मरण पा
तेथी ते प्रतिवासुदेव एटले पोतानुज चक्र वासुदेवने हणवा सारु नाखे, अ
चक्र ते वासुदेव, प्रतिवासुदेव उपर नाखे, तेथी ते मरणपामे ते प्रतिवासुदेवना न
म कहेछे एक अश्वग्रीव, बीजो तारक, त्रीजो मेरक, चोथो मधुकैटभ, पांचमो नि
शुंभ, छठो बली, सातमो प्रह्लाद, आठमो रावण, नवमो जरासिंधु इतिगाथार्थ ॥

अवतरण –रयणाइ चउदसत्ति एटले चक्रवर्तिना चौद रत्नना नामोनुं वर्णन ने
बारमुं द्वार कहेछे मूल –सेणावइ गाहावइ, पुरोहि गय तुरय वड्ढई इत्थी ॥ चक्क
छत्त चम्म, मणिकागिणिखग्ग दंडोय ॥ २२८ ॥ अर्थ –सेनापत्यादिक जे पात पो
तानी जातीमां उत्तम होय तेने रत्न कहिए एमां साततो एकेंद्रियछे ते जेवारे ते
चक्रवर्त्ती होय, तेवारे ते चक्रवर्तिना आत्मांगुले थाय अने सात पंचेंद्रिय ते तं
न कालना जे पुरुष तेने उचित प्रमाणे होय

तेमां प्रथम सेनापति ते समस्त सेनामांहे मुख्य होय ज्यां चक्रवर्त्ती न जाय तं
सम्न सेनासहित साध्य करे चक्रवर्तिना खड्गप्रमुख हथीयार लाने अश्वरत्न उपर
चढे इत्यादिक काम ए सेनापतिनां जाणवां बीजो गाथापतीत कौटंबिक
समस्त सेनामांहे जे धान्य घृत प्रमुख वस्तु ते एना स्वाधीनमां रहेछे ते चक्रवर्ति
ना हुकमथी सर्वने आपे ए भंडारीने स्थानक जाणवा त्रीजो पुरोहित ते शांति
कर्म जे चक्रवर्त्तिने करवुं ते करे, तेथी समस्त विघ्न उपशम पामे चोथुं गजरत्न ते
जेवारे तमिस्रा गुफागमन प्रपातगुफा मांहे पेसवानुं काम पडे तेवारे गजरत्न कुं
भस्थले मणिरत्न राखे बीजुं पण जेवारे इहांमां आवे तेवारे तेना उपर चढे पांचमुं
अश्वरत्न ते ज्यारे गुफाने बारणे जाय त्यारे कमाड खडकाय ते तानउतार आ
वानमुखी खडग दंड सदा करे अनेरा अश्व हांफता नडती गुफानी बारु दही
नो नम्न थाय, उम छत्रिम अश्वरत्नेकरी काणी राजा अणसक मार्थान पुरुन
जाणे नरन पचा तनो दर जाणवुं छठो वार्द्धकरत्न ते सूत्रधारना कामना द्द

नार उन्मग्न जलातिमग्नजलानाम नदी ते गुफामां जतां आडी आवे, त्यां पूल बांधे. तेम बीजा पण गृह नगरादिक करवाने अर्थे ते प्रवर्त्ते. सातमुं स्त्रीरत्न ते चक्रवर्त्तिना शरीर साथे संजोगना काममां आवे पण बीजी स्त्री तेनुं पराक्रम सहन करी शके नही. बीजी चोशठहजार अंतेउर तथा सवालाख पिंक विलासणी तेनी साथे वैक्रिय शरीरे संजोग करे. ए सात पंचेंद्रिय रत्न जाणवा.

हवे एकेंद्रिय कहेछे. आठमुं चक्र ते एक वाम प्रमाण होयछे. ते वामनुं स्वरूप आमछे के ज्या पुरुष बंने बाहुप्रसारे तेने प्रमाणे. एवुं लोक प्रसिद्धछे. अने हजार यक्षे अधिष्ठित सर्व शत्रु निवारक सर्व वांछित कारक एवुं चक्ररत्न जाणवुं. नवमुं छत्र रत्न पण एक वाम प्रमाण जाणवुं. दशमुं चर्मरत्न ते बे हाथ प्रमाण. ए नवमुं छत्ररत्नने अधोभागे चर्मरत्न ए बन्नेने चक्रवर्त्तिना हाथनो स्पर्शथाय तो बारयोजन सुधी विस्तार पामेछे, अने तेमां चर्मरत्न उपर पहेले पहोरे साली वावे ते पाछले पहोरे जमे; ए चर्मरत्ननो महिमाछे. अग्यारमुं मणीरत्न ते चार अंगुल लांबु अने बे अंगुल पहोलुं. वैडूर्य रत्नमय उपर त्रणहांस होय, अने नीचे छ हांस होय. ते छत्र अने चर्मरत्नना मध्य छत्रने तुंबे मूक्यो छतो बार योजन सुधी कटकमांहे उद्योत करे. अने गुफामां प्रवेश करतां गजरत्ननी जमणी बाजुना कुंभस्थले बांध्योथको उद्योत करे, हाथीने मस्तके बांध्यो थको तिर्यंच अने मनुष्यना करेला सर्व उपद्रव हरण करे छे. अने सर्व रोगनो नाश करे. अने काने बांध्यो थको संग्राममा जय करावे सदा अवस्थित यौवन होय. बारमुं कांगणीरत्न आठसौवर्णिक प्रमाण समचउरस्र विषापहारी, ज्यां चंद्रसूर्यनी प्रभा प्रसार न करे त्यां गुफामांहे ए प्रकाश करेछे. वली चक्रवर्त्ति ओगण पचाश मांकला लखे ते ज्यांसुधी चक्रवर्त्ती त्यांसुधी रहे. तेरमुं खड्गरत्न बत्रीश अंगुल प्रमाण जाणवुं. चउदमुं दंडरत्न ते एक वाम प्रमाण. ते महायत्ने वापर्यो होयतो हजार योजन ऊंडो जाय. भूमिकानुं विदारण करे. ए चउद रत्न कह्यां. ते एकेक हजार यक्षे अधिष्ठित जाणवां॥ २२८॥

मूल— चक्कं खग्गं च धणू, मणिय माला तहा गया संखो; एए सत्तउ रयणा सव्वेसिं वासुदेवाणं ॥२२९॥ अर्थः—एक चक्र अने बीजुं खड्ग प्रसिद्धछे, त्रीजुं मणी ते प्रसिद्धछे, चोथुं सारंग धनुष्य, पांचमी माला ते आभरण विशेष, छठी गदा कौमोदकीनामे, सातमो पांचजन्यनामे संख, तेनो ध्वनि बारयोजनमां थाय, ए सात रत्न सर्व वासुदेवोने होयछे. ॥ २२९॥

मूल —चक्कं छत्तं दंडं, तिन्निवि एयाइं वाममित्ताइं ॥ चम्मं दुहत्थदीहं, बत्तीसं अं

गुजाइ थसी ॥२३०॥ चउरगुलो मणीपुण, तस्सद्ध चेव होइ विछिन्नो ॥ चउरंगुल प्पमाणा, सुवन्नवरकागिणी नेया ॥ २३१ ॥ ए बे गाथा प्रमाणनीले ते प्रमाण पूर्वे कही थाव्या माटे इहां वखाणता नथी थने वासुदेवना रत्नसंबंधी महात्म शास्त्रांतरथी जोइ लेजो. ॥ २३० ॥ २३१ ॥ इतिगाथा चतुष्टयार्थः

श्रवतरण —नवनिहीउत्ति एटले नवनिधाननुं बगेरे तेरमुं द्वार कहेले मूल—नेसप्पे पमुयए, पिंगलए सव्वरयणमहापउमे ॥ कालेय महाकाले, माणवग महानिहीसखे ॥ २३२ ॥ अर्थ —एक नैसर्प्प, बीजुं पांडुक, त्रीजुं पिंगलक, चोथुं सर्वरत्न, पांचमुं महापद्म, उठुं काल, सातमुं महाकाल, आठमुं माणवकनामे महानिधानने नवमुं संख ए नवना सामान्य पणे नाम कह्या ॥ २३२ ॥

हवे जे निधानमां जे थाय ले ते कहेले मूल —नेसप्पमि निवेसा, गामागर नगर पट्टणाणच ॥ दोणमुहमडंबाण, खंधाराण गिहाणच ॥ २३३ ॥ अर्थ —नैसर्प्पनामा निधाननेविषे निवेसाके० स्थापवानो प्रकार पण ते केनुं तोके ग्राम थाकरादिकनुं तेमां ग्रामते जेने फरति वाडीओ थाय ते जाणवुं थने आकरते ज्यां लूण प्रमुख नीपजे ते जाणवुं तथा नगरते ज्यां राज्यधानी थाय ते जाणवुं पाटणते ज्यां जलने स्थलना मार्ग होय ते जाणवुं द्रोणमुख मडंब ते ज्यां जलमार्ग होय थने अढी गव्यूतमां कोइ ग्राम न थाय ते जाणवुं स्कंधार शब्दे कटक जाणवुं जेम ते चक्रव्यूह गरूडव्यूहादिकनी रचनाये उतरे थने गिहके० घरनी मांडणी जेणे करी राजादिकना घर मांडीये, ए सर्वे प्रकार नैसर्प्प निधानमांहे होयछे

मूल —गणियस्सय बीयाण, माणुम्माणस्स ज पमाणच ॥ धन्नस्सय बीयाण, उप्पत्ती पमुए भणिया ॥ २३४ ॥ अर्थ —गणित ते दीनार एटले सोनामोहोर, नाळियेर, सोपारी प्रमुख तेनी गणित एटले संख्यानुं करवुं अथवा गणित ते संकलित व्यवकलितादिक प्रकार जेम गुणाकार भागाकारना भेद जे अकरिया, ते सर्व जाणवुं तेमज गीत जे स्वर करणादिक गावाना प्रकार थने मानते मणप्रमुखे नाळकी धान्यनुं माप करियें उन्मान तुलाकर्ष प्रमुख जे धरिम तेना प्रकार प्रमाणना विशेष तथा धान्य चोवीस प्रकारना बीज समस्त तेना उपजवाना प्रकार ते पांडुकनामा निधाननेविषे भणितके० कह्यांछे ॥ २३४ ॥

मूल —सव्वा आहरण विही, पुरिसाण जाय जाय महिलाण, आसाणय हत्थीणय, पिंगलगनिहिम्मि सा भणिया ॥ २३५ ॥ अर्थ —पुरुष अने स्त्री सर्वनी

समस्त आजरण, तेम अश्व जे घोडा तथा हाथी ने योग्यआजरणनो विधि ते सर्व पिंगलकनामा निधानने विपे कह्योछे. ॥ २३५ ॥

मूल.— रयणाइ सव्वरयणे, चउदस पवराइ चक्कवट्टीणं ॥ उप्पज्जंती एगेंदियाइं पंचेंदियाइंच ॥ २३६ ॥ अर्थ.— सर्व रत्ननाम निधानने विपे चक्रवर्त्तिना महा प्रधान चउद रत्न थाय. एमां सात एकेंद्रिय ने सात पंचेंद्रियनी उत्पत्ति वर्णवीछे. अनेरा कहेछे के एने प्रजावे महादीप्तिवंत थाय. ॥ २३६ ॥

मूलः—वत्थाणय उप्पत्ती, निप्पत्ती चेव सव्व जत्तीणं ॥ रंगाणय धाऊण य, सव्वा एसा महापउमे ॥ २३७ ॥ अर्थ.—जेटलां वस्त्रछे ते सर्वनी उत्पत्ति, तेम ज वली वस्त्रगत जे जक्तिके० विशेप तेनी निप्पत्ति एटले नीपजवाना प्रकार, तथा रंग जे मजीठ कृमिराग कसुंबो प्रमुख, तेनी उत्पत्ति. तथा धातु जे लोखंम त्रांबु प्रमुख सात धातु अथवा धोऊणय एवा पाठ थकी वस्त्रादिक धोवानी जे रीति ते आम के खुमो वस्त्र आवीरीते धोवुं. अने रेसमी वस्त्र एम धोवुं, उननुं वस्त्र आम धोवु; इत्यादिकसर्व महापद्मनिधानने विपे जाणवां. ॥ २३७ ॥

मूल.—काले कालन्नाणं, नव्वपुराणं च तिसुवि वंसेसु ॥ सिप्पसयं कम्माणिय, तिन्नि पयाए हियकराइं ॥ २३८ ॥ अर्थ.—कालनामा निधानने विपे समस्त काल ज्ञान ज्योतिपसंबंधि जे ज्ञान कह्युछे ते. अने जव्यके० जे थशे; पुराणके० जे थयुं. एना उपलक्षणथकी वर्त्तमानकालसंबंधी तीर्थंकरना वंश, चक्रवर्त्तिना वंश, बलदेव वासुदेवना वंश, ए त्रणे वंश तेनेविपे जे वक्तव्यता अने तिसुविवसेसु ए पाठथकी अनुक्रमे थयो, थशे अने वर्त्तमानकालना वर्पनी वातनुं कथन. अने क्यांएक नव्व पुराण च तिसुकालेसु एवो पाठ छे; तेथी थशे, थयु अने वर्त्तमान कालनुं शुजाशुज ज्ञाननुं कहेवुं. तेमज सिप्पसयं एटले घट, लोखंड, चित्र, वस्त्र, नापित शिला ए पाचना प्रत्येके वीश वीश जेद छे. तेवारे एकशो प्रकारनुं शिल्प, अने कर्म ते कर्पण तथा वाणिज्यादिक, ते जघन्य मध्यम अने उत्कृष्टना जेदथकी जे प्रजालोकना हितने अर्थे करवु; ते सर्व कालनामा निधानने विपे जाणवुं. ॥ २३८ ॥

मूलः—लोहस्सय उप्पत्ती, होइ महाकाल आगराणंच ॥ रुप्पस्स सुवन्नस्सय, मणि मोत्ति सिलप्पवालाणं ॥२३९॥ अर्थः—लोह अनेक प्रकारनुं छे; तेनी उत्पत्ति. वली रुपुं ने सोनुं प्रसिद्धछे. मणी ते चंद्रकातादिक अने मुक्ता ते मोती. शिला स्फटिक प्रवाला ते विद्रुम तेना आकर ते सर्व महाकालनामा निधानने विपे जाणवा.

मूल.—जोहाणय उप्पत्ती, आवरणाणंच पहरणाणंच ॥ सव्वाय जुद्ध नीई, मा

णरगे दमनीईय ॥ २४० ॥ अर्थ—योद्धा जे शूरवीर पुरुषो छे तेनी उत्पत्ति
ने आवरण, सन्नाह एटले खेटक प्रमुख, प्रहरण तरवार, कटारी, नाना, भाले
इत्यादिक हथीयारना विशेष वली समस्त जे युद्धनी सामग्री तेनी नीति तथा
दमनीति ते साम, दाम भेद ने दंम एरीते चार प्रकारनी जे राजनीति कही छे
सर्व माणवकनामा निधाननेविषे जाणवी ॥ २४० ॥

मूल—नट्टविहि नाडय विही, कव्वस्स चउव्विहस्स निप्पत्ती ॥ संखे महानिहि
म्मिउ, तुडिय गाणच सव्वेसि ॥ २४१ ॥ अर्थ—नाट्य जे भरतादिक संबंधी
तेना विधि, अने नाटकविधि तेने कहिये जे अभिनय बत्रीशादिकनो प्रकार
अने जेमां धर्म, अर्थ, काम ने मोक्षनुं वर्णन करेलुं होय, एवी चार प्रकारनी
य, अथवा संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश संकीर्ण लक्षण तेनी भाषाए निबद्ध अथवा
गद्य, पद्य, गेय, चौर्ण्य, तेमां गद्य ते छूटा समराजिर इत्यादिक अने पद्य ते अनेक
जातिए करी पद रचना तथा गेय ते गीतगांधिदादिक गीत, अने चौर्ण्य ते
तनी रितिए स्वरवाना प्रकार ते संखनामा महानिधानमां छे तथा तेमां वली
तिंगक० त्रुटित वादित्र, तेना अग जेटला प्रकारनां छे तेनी उत्पत्ति वखाण
ना गानो नम्मान थाय एक आचार्य एम कहते के जे जे निधानमांहे
वस्तु कहिने ते ते वस्तु साक्षात् तेज निधानमांहेथी उपजते ॥ २४१ ॥

हवे ए नव निधाननुं स्वरूप समस्त साधारणपणे कहे छे मूल—चक्कट्ठ
हाणा, अट्ठुस्सेहाय नवय विक्खंभ ॥ बारस दीहा मंजूस संठिया जण्हवी
मुहे ॥ २४२ ॥ अर्थ—चक्र शब्द पइनुं ते आठ पइड तनुं प्रतिष्ठानक० रहेवुं
अने अठुस्सेहाय क० आठयोजननो उत्सेध एटले उंचपणुं छे जेनुं तथा नव
न विक्खंभ एटले विस्तारछे जेना वली बार योजन दीर्घक० लांबपणुं मंजूस
संठाने एटले आकार, ते जान्हवी जे गंगा तेने मुखे सदा सर्वदा रहे छे
चक्रवर्तीना उदय ते भरतखंड साधी पाछा फरे तेवारे चक्रवर्तीना साथ
चक्रवर्तीनी नगरीए आवीने पातानमां रहे ॥ २४२ ॥

वली ते केहवां होय ते कहे छे मूल—वरुलीयमणिकवाडा कणय मया
विविहरयणपडिपुन्ना ॥ ससिसूरचक्क लक्खण, अणु समवयणा जुवलाया ॥ २४३ ॥
अर्थ—वइडूर्यरत्नमय कमाड छे जेना कनकमय एटले सुवर्णमय विविध
ने विविध प्रकारना रत्न तेणे करी परिपूर्ण एटले सहित छे जेना अने

यंनी परे चक्रने आकारे लक्षण एटले चिन्हछे जेने, वली अनुसमके० समी. वदनके० वारणांनी उपपत्तिके० घटनाछे ज्यां, अथवा अणुवम वइणो एवा पाठ थकी ज्यां उपमाये रहित वचननी घटना छे, एटले जेनुं स्वरूप वर्णन करवासारु वचननी रचना पण थाय नहीं, अर्थात् स्वरूप वर्णवी शकीये नहीं इतिभाव अ थवा अनुसमय समयप्रत्ये पुजलनुं जावुं. अने उपपत्तिके० आववुछे एतावता स मय समयनेविषे जेवा पुजल जायछे तेवा वली आवेछे. परतु तेमां कांइ घटता नथी.

अने श्रीठाणांगमां अणुसमयुगवाहुवयणत्ति एहवो पाठछे. ते अणुसमयके० अविषम, जुगके० जुसर तेने आकारे वाटलापणे करीने वाहके० वारसाख मुख नेविषे ज्या. ते अनुसमय जाणवो. ॥ २४३ ॥

मूल.—पलिउवमठिईया, निहिसिरि नामाय तछ ते देवा ॥ जेसिं ते आवासा, अक्केया आहि वच्चाया ॥२४४॥ अर्थः—पल्योपमआयुनी स्थितिए अने जे निधाननुं जेवुं नाम तेवेज नामे ते निधाननेविषे त्या देवता वासकरेछे. तेदेव अन्य कार्यरहित थका जेमनुं अधिपतिपणुं मूल्ये पण लाजे नहीं, एतावता ज्यां ठकुराइ अमोलिकछे.

मूल.—एए ते नव निहिणो, पनूयधण रयण संचय समिद्धा ॥ जेवस मुवग छंती, सव्वेसिं चक्कवट्टीणं ॥२४५॥ अर्थः—एएके० ए पूर्वेजे नवे निधानोनुं स्वरूप व खाण्युं ते नवे निधान प्रजतके० घणुं एवुं जे धन; अनेरत्ननो संचय तेनी समृद्धिएकरी सहितछे, ते सर्व चक्रवर्त्तिउने नवे निधान प्राप्त थायछे॥२४५॥इतिगाथा चतुर्दशकार्थी॥

अवतरण – जीव संखाउत्ति एटले जीवनी संख्यानुं वर्णने चउदसुं द्वार कहे छे मूलः—नमिउं नेमिएगाइ जीवसंखं जणामि समयाउ ॥ चेयण जुत्ताएगे, ज वछ सिद्धा इहाजीवा ॥ २४६ ॥ अर्थ.—श्रीनेमिनाथप्रत्ये नमस्कार करीने एक आदेदेइने जीवनी जे संख्या ते श्रीसिद्धांतथकी जणामिके० कहुंछुं. तेमां चेतना ए युक्त जीव ए प्रथम प्रकार जाणवो. ससारमां रहेते जवस्थ अने जे निर्वाण पद पाम्या तेसिद्ध. एरी ते बे प्रकारना जीवो जाणवा. ॥ २४६ ॥

मूल —तसथावराय डुविहा, तिविहा थीपुंनपुसग विन्नेया ॥ नारय तिरिय नरामर, गइ नेयाउ चउप्नेया ॥ २४७ ॥ अर्थ.—अथवा त्रसने थावरना नेदेकरी बे प्रकारे जाणवा. स्त्री पुरुष ने नपुंसकना नेदे करी त्रण प्रकारे जाणवा. नार कादिक गतिना नेदे करी चार प्रकारे जाणवा. ॥ २४७ ॥

मूलः—अहवातिवेय अविगय, सरूवउवा हवति चत्तारी ॥ एग विति चउपणिं दिय रूवा पंचप्पयारा ते ॥ २४८ ॥ एएच्चियछअणिंदिय जुत्ता अहवा उन्नू

जलग्गि निला ॥ वण तस सहिया छप्पिय, ते सत्त अकाय सवलिया ॥ १४९॥ अथवा त्रण वेद ने चोथु अवेद ते सिद्धना जीवो मली चार प्रकार थाय एकेंद्रि दिकना नेदे करी पाच प्रकार थाय छे, ॥२४०॥ एज पांच प्रकारमां अनेंद्रिय सिद्धना जीवोछे ते नेलिये तेवारे छ प्रकार थायछे अथवा पृथिव्यादिक पाच त्रस जीवो सहित करता छ नेद थायछे वली ए छ कायने साथे सातमा अकाय सिद्धना जीवो मेलव्याथी सात नेद थायछे ॥ २४९ ॥

मूल –अमय रसय जराउय, ससेयय पोयया समुछिमया ॥ उब्निय तह्वाय इय, नेएण अछहा जीवा ॥२५०॥ अर्थ –अमज एटले जे इमायकी उपजे ए पखी प्रमुख, बीजा, रसथकी उपजे ते रसज, सूक्ष्मजीव तक्रादिकना उपन्या जाण वा. त्रीजा, जरायुज जे जरामा उपन्या मनुष्यादिक जाणवा, चाथा, ससेद अ परसेवो तेयकी जे उपन्या ते ससेदज पूका छप्पई प्रमुख जाणवा, पाचमा, पोतजा ह स्ती प्रमुख जाणवा, छठा, सम्मूर्छिम मक्षिका प्रमुख, सातमा उन्नेद जे नूमिका फोडीने उपजे ते उन्नेदज ते तीडप्रमुख जाणवा, तेम आठमा उत्पाते उपज ते उत्पातज ते देव नारकी जाणवा एरीते आठ प्रकारे जीवो जाणवा ॥२५०॥

मूल –पुढवाइ पच वि तिचउ, पणिंदि जुत्ताय नवविहा हुति ॥ नारय नपुंस तिरि नर, तिवेय सुरथी पुमेवच ॥ २५१ ॥ अर्थ –पृथ्व्यादिक पाच अने बेंद्रिया त्रिक चार तेणे युक्त नव प्रकारे जीवो थायछे अथवा नारकी ते एक नपुंसक वे देज थाय छे अने तिर्यंच तथा मनुष्यना पुरुष स्त्री ने नपुसक एवा त्रण त्रण वे छे ए सात थया तथा देवता स्त्री ने पुरुष वे प्रकारेज एमपण नव नेदज थायछे

मूल –पुढवाइ अठ असन्नि, सन्नि दस ते ससिद्ध इगदसउ ॥ पुढवाइ यातसता अपज्ज पज्जत्त बारसहा ॥२५२॥ अर्थ –पृथ्व्यादिक पाच अने विकलेंद्रियादिक त्र ण ए आठ थया, नवमा असन्नी, दशमा सन्नी ए दशप्रकार थया, तमज एनी साथे सिद्ध नेना करिए तेवारे अग्यार नेद थायछे तथा वली पृथ्वीथी माकान त्रस प र्यंत छ प्रकारना पर्याप्ता तथा छ प्रकारना अपर्याप्ता करिए तेवार बारनद थायछे

मूल –बारस ति यतणुज्जुत्ता, तेरस सुहुमियरगिंदि य इदा ॥ तिय चउ असन्नि सन्नी, अपजत्त पजत्त चउदसहा ॥ २५३ ॥ अर्थ –पुर्वोक्त बार नद त अ तनु जे सिद्ध तेणे सहित करता तेर नेद थायछे एक सूक्ष्म ने बीना बादर ए बे नेद एकेंद्रियना तथा बेंद्रि, तेंद्रि, चउरिंद्रि, असन्नी, ने सन्नी ए सात पर्याप्ता ने सात अपर्याप्ता मली चउद नेद थाय ॥ २५३ ॥

मूलः–चउदस वि अमल कलिआ, पनरस तह अंमगाइ जे अठ ॥ ते अपजत्तग पज्जत्त जेदउ सोलस हवंति ॥ २५४ ॥ अर्थः–पूर्वे चउद प्रकार कह्या ते अमलके० मलरहित जे सिद्धना जीवो छे ते सहित करता पंदर प्रकार थायछे, तेमज अंमजादिक जे आठ प्रकार प्रथम कह्या हता तेना पर्याप्ता ने अपर्याप्ताना जेदे करी शोल प्रकार थायछे. ॥ २५४ ॥

मूल.–सोलसवि यकायजुत्ता, सतरस नपुमाइ नव अपज्जत्ता ॥ पज्जत्ता अठारस, अकम्म जुअ ते इगुणवीसं ॥२५५॥ अर्थ.–पूर्वोक्त शोल ने अकाय एटले कायरहित सिद्ध जीवोयुक्त करतां सत्तर जेद थायछे. अने नपुमाइके० पूर्वे नारकी नपुंसकादिक नव जेद कह्या हता ते नवने पर्याप्ता ने अपर्याप्ताना जेदे करतां अढार जेद थया, एनेज अकर्मक सिद्ध सहित करतां ओगणीश जेद थया.

मूल.–पुढवाइ दस अपज्जा, पज्जत्ता हुंति वीस संखाए ॥ असरीर जुएहि ते हि वीसई होइ एगहिया ॥ २५६ ॥ अर्थ.–पूर्वेजे पृथ्व्यादिक दश जेद कह्या तेनेज पर्याप्ता अपर्याप्ता करतां वीश संख्याए थायछे. तेने अशरीर जे शरीररहित सिद्धना जीवो छे तेना सहित करतां एकवीश जेद थायछे. ॥२५६॥

मूल.–सुहुमियरजूजलानिल, वाउवणाणंत दस सपत्तेआ ॥ वितिचउ असन्नि सन्नी, अपज्ज पज्जत्त वत्तीसं ॥ २५७ ॥ पृथ्व्यादिक पांच ते सूक्ष्म तथा बादरना जेदे करी दश थायछे, एमां अणंतकाय आवी अने अग्यारमो प्रत्येक वनस्पति तथा बेंद्रियादिक त्रण अने असंज्ञी तथा संज्ञी मली शोल जेद ने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ताना जेदे करी बत्रीश थायछे. ॥२५७॥

मूलः–तह नरय जवण वण जोइ कप्पगेविज्जणुत्तरु प्पन्ना ॥ सत्तदस अठपण वारस, नवपण छप्पन्न वेउव्वा ॥ २५८ ॥ अर्थ.–नारकी रत्नप्रजादिकना सात जेद, जवनपति असुरादिकना दश जेद, व्यंतर यक्षादिक आठ, अथवा अणपन्नी आदिक आठ ए बे मांथी एक अष्टक गणीए. ज्योतिष चंद्रादिक पांच, कल्प ते सौधर्मादिक बार. ग्रैवेयक हेठिमादिक नव अने अनुत्तर ते विजयादिक पांच विमान. ए छप्पन्न जेद वैक्रियना थया. ॥ २५८ ॥

मूल.–हुंति अडवन्न संखा, तेनर तेरिछ संगया सव्वे ॥ अपज्ज पज्ज तेहिं, सोलसउत्तर सय तेहिं ॥ २५९ ॥ अर्थ.–ते पूर्वोक्त वैक्रियना छप्पन्न जेदनी संख्या मा नरके० मनुष्य अने तिर्यंच मेलवीए तेवारे सर्व अठावननी संख्या थायछे. ए नेज पर्याप्ता अपर्याप्ता करता एकशो ने शोल जेद थाय. ॥२५९॥

मूल –सन्नी इग हीण वत्तीस सगयं तेसयं ठयत्ताज ॥ तंनवा नवगदूर आसन्न नवच ॥ २६०॥ अर्थ –प्रथम सुहुम्मियर गाथाए करी वत्रीश नेद कह्या हता तेमांथी सज्ञी ने असज्ञी ए वे हीन करिए तेवारे त्रीश नेद थाय ते शो ने शोल वैक्रियनी साथे मेलवता एकशो ने तेतालीश नेद थायछे एमा कोइ नव्य, कोइ अनव्य, अने कोइ दूरनव्य ते गोशालादिक जाणवा, अने जे तेज नवे अथवा वीजे त्रीजे नवे मोक्ष जवानाछे ते आसन्ननव्य जाणवा ॥२६०

मूल –ससारनिवासीण, जीवाण सय इम ठएताल ॥ अप्पच पानियव, व सुहकखीहि जीवेहि ॥ २६१ ॥ अर्थ –ससारनिवासी जीवोना ए एकशो ने तालीश नेद जाणवा ते अप्पचके० पोताना आत्मानीपरे जहममपिय इत्यादिक जाणीने ए एकशो ने तेतालीश प्रकारना जीवोने जे कोइ शिव सुखनी वांछना करनार जीवोछे तेणे पोतानी आत्मानीपरे पालवा ॥ २६१ ॥

हवे ए कुलक एज शास्त्रकारनो करेलो एवो जणाववाने अर्थे गुरुना नाम सहित पोतानु नाम जणावेछे ते प्रयोजन पूर्वक गाथा कहेछे मूल –सिरियम्म एव मुणिवइ, विणेय सिरिनेमि चदसूरीहि ॥ सपरहियत्थ रइय कुलयमिण जीव सखाए ॥ २६२ ॥ अर्थ –श्रीआम्रदेव नामे मुनिपति जे आचार्य तेना विनेयके० शिष्य श्रीनेमिचदसूरि तेणे पोताने तथा परने अर्थे ए जीव सख्याना कुलकनी रचना करीछे, एटले सत्तर गाथाए करी कुलक वखाण्यो ॥ २६२ ॥

अवतरण –कम्माइ अठति एटले आठकर्मनु वशोने पन्नरमु द्वार कहेछे मूल –पढम नाणावरण, वीयं पुण दसणस्स आवरण ॥ तइ यच वेयणीय, तहा चउथ च मोहणिअ ॥२६३॥ पचममाउ गोयं, छठ सत्तमगमतरायमिह ॥ वहुत म पयडित्तेण, नणामि अठम पए नाम ॥ २६४ ॥ अर्थ –पहेलु ज्ञान ज मत्या दिक तेने जे आवरे ते ज्ञानावरण कहिए वीजु दर्शन जे लोचन तेने आवरे दर्शनावरण कहिए त्रीजु जेणे करी सुख अने दुःख वेदिये तेने वेदनीय कहिए तेम ज चोथु जेणेकरी आत्मा मोह पामे तेने मोहनीय कहिए पाचमु आयु आयुनु अवश्य उदय आवे तेथी तेने आयुकर्म कहीए छठु गोत्र ते नाना मोटा शब्दकरीने कहिये ते गोत्र कर्म जाणवु, सातमु जे विघ्न करे ते अतराय कर्म जाणवु इहां नि नशासननेविषे, हव जेनी घणी प्रकृतिछे तेणे करीने नणामिके० कहीशु आठमा स्यानकनेविषे जे नमपतिके०नमाइ तेनाम कर्म इति गाथा द्वयार्थ ॥२६३॥२६४॥

अवतरण –तेतिउत्तर पयडीण अडवन्न सयति एटले आठकर्मनी उत्तर प्र

तिनुं वर्णे ने सोलमुं द्वार कहेछे. मूलः--पंचविह नाण वरणं, नवभेया दंसण स्स दोवेए॥अठावीसं मोहे, चत्तारिय आउए हुंति ॥ २६५ ॥ गोयम्मि डुन्निपंचं तराय तिगहियं सयं नामे ॥ उत्तर पयडीणेवं, अठावन्नं सयं होइ ॥२६६॥अर्थः-- मतिज्ञानादिक पाच ज्ञानने आवरे तेथी पांच प्रकारे ज्ञानावरणीय जाणवुं. बीजुं चार प्रकारना दर्शनने जे आवरे तथा पांच प्रकारनी निद्रा जेनायकी उदय आ वे ते नवप्रकारे दर्शनावरणीय कर्म जाणवु. त्रीजुं साता अने असाताना भेद यकी बे प्रकारे वेदनीय कर्म जाणवुं. चोथु सोल कषाय अने नव नोकषाय तथा त्रण दर्शन मोहनीय मली अठावीस प्रकारे मोहनीय कर्म जाणवु. नरकादिक गतिना भेद यकी आयुकर्म चारभेदे जाणवुं. उंच नीचना भेद यकी गोत्र कर्म बे भेदे जाणवु. दानांतरायादिकना भेद यकी अंतराकर्म पाचप्रकारे जाणवु. अने नाम कर्म एकशोने त्रण प्रकारे जाणवुं. ॥ २६५ ॥ २६६ ॥

हवे उत्तर प्रकृतिना प्रत्येक नाम कहेछे. मूलः--मइसुय उहीमण केवलाणि जीवस्स आविरिज्जंति ॥ जस्स प्पभावउत, नाणावरणं भवकम्मं ॥२६७॥ अर्थः-- चारप्रकारनो व्यंजनावग्रह अने अर्थावग्रह, ते पांचइंद्रिय अने छठुं मन ते अवग्रह, इहा, अपाय ने धारण ए एकेकना चार चार भेद करता छ चोक चोवीश भेद यायछे, तेनी साये चार व्यंजनावग्रह भेला करिये तो मति ज्ञानना अठावीश भेद यायछे. अक्षरश्रुत, अनक्षरश्रुत, सज्ञीश्रुत, असंज्ञीश्रुत, सम्यक्श्रुत, असम्यक्श्रुत, सादिश्रुत, अनादिश्रुत, सपर्यवसितश्रुत, अपर्यवसितश्रुत, गमिकश्रुत, अगमिकश्रु त, अंगप्रविष्टश्रुत, अनंगप्रविष्टश्रुत, एरीते चउदप्रकारनां श्रुतछे. अथवा पर्यायइत्या दिक वीशप्रकारना श्रुत ने आवीरीतेछे. पर्यायश्रुत, पर्यायसमासश्रुत, अक्षरश्रुत, अक्षरसमासश्रुत, पदश्रुत, पदसमासश्रुत, संघातश्रुत, संघातसमासश्रुत, प्रतिप त्तिश्रुत, प्रतिपत्तिसमासश्रुत. अनुयोगश्रुत. अनुयोगसमासश्रुत, प्राभृतश्रुत, प्राभृ तसमासश्रुत, प्राभृतप्राभृतश्रुत, प्राभृतप्राभृतसमासश्रुत, वस्तुश्रुत, वस्तुसमासश्रुत, पूर्वश्रुत, पूर्वसमासश्रुत. एरीते वीशभेद श्रुतज्ञानना जाणवा, तथा अनुगामि, अननुगामि, वर्द्धमान, हीयमान, प्रतिपाति ने अप्रतिपाति ए छ भेद अवधिज्ञानना जाणवा. तथा ऋजुमति अने विपुलमतिना भेद यकी बे प्रकार मनपर्यवज्ञानना जाणवा, अने केवल ज्ञाननो एकज भेद छे. अन्य ज्ञानोनेविषे जेटलुं क्षयोपशम होय तेटलुं ज्ञान थायछे. अने सर्वथा ज्ञानावरणीयना क्षययकीज जेनु उपजवुं थाय ते केवलज्ञान. ए पाच ज्ञानना भेद सामान्ये कह्या. हवे गाथार्थ कहेछे. जीवस्स०

जीवने ए ज्ञानने आवरिये रुधिये जेना प्रनावथकी ते ज्ञानावरणीय कर्म
मूल –नयणे यरोहि केवल, दसण आवरण य नवे चउहा, निद्दाय डरुत्त थीणद्धी ॥ २६८ ॥ अर्थ –नयन शब्दे चक्षु तेनु आवरण निद्दापय
लोचन तेने आवरे ते चक्षुदर्शनावरणीय, अने इतर जे बीजी अन्य इंद्रियतु
हणे ते अचक्षुदर्शनावरणीय अवधिदर्शनने आवरे ते अवधिदर्शनावरण
वाय एम केवलदर्शनने आवरे ते केवल दर्शनावरण एरीते दर्शनावरणीय
नेदे थाय हवे पांच निद्रा कहेछे त्या प्रथम सुखे चीपटीना वजाडवा थकी
उठे ते निद्रा, बीजी घणा धका थकी जागृत थाय ते निद्रानिद्र, त्रीजी डुरुका
एक निद्रा बीजो निद्रानिद्रा एम इहांपण द्विरुक्त प्रचला ते वेग अने
निद्रा आवे ते प्रचला समजवी, तथा चोथी चालता हालता निद्रा आवे ते प्र
ला प्रचला जाणवी पांचमी स्त्यानर्द्धि ते जे दिवसे वात चितवी होय ते रात्रि
करे, राजाना हस्तिना दंतुसल काढनार शिष्यनीपरे जाणवु ए निद्रामां वासुदेवना
वलथकी अर्ध बल होय छे ए नव प्रकार थया ॥ २६८ ॥

मून –एयमिह दरिसणा वरण मेयमा वरइ दरिसण जीवे ॥ सायमसाय
उहा, वेयणिय सुह डुहनिमित्त ॥ २६९ ॥ अर्थ –ए नव प्रकारनु दर्शनावरण
जीवनो पूर्वोक्त दर्शनगुणछे तेने आवरे ढाकी मूके वली शाता अने अशाताना
वे करी वे प्रकारे वेदनीय कर्म ते सुख तथा दुखनु निमित्त कारण छ ॥ २६९ ॥

हवे मोहनीयकर्म कहेछे मून –कोहो माणो माया नानोणताणुबंधिणा
उरो ॥ एरमपच्चरकाणा, पच्चरकाणाय सजलणा ॥ २७० ॥ अर्थ –क्रोध, मान
माया अने लोन ए चार जे अनता ससारनु अनुबध करे ते जेने उत्पन्न थया
ज्यांसुधी ते प्राणी जीवतु रहे त्यासुधी तेनीसाथे रहे, अने नरकगतिना कारण थाय
म्यक्त्वनु रुधन करे एटले सम्यक्त्व आववा न आपे तेमां अनतानुबधी क्रोध ते
वेतनी स्फुट समान जाणवो अने अनतानुबधी मान ते पाखाणना थानना
मान जाणवु तथा अनतानुबधी माया ते महानिबड वांशना मूल समान जाण
वी, तथा अनतानुबधि लोन ते क्रमिना रग समान जाणवो ॥ २७० ॥

एवरं० एरीते वली अप्रत्याख्यानीयानावरण जे अणुव्रतरूप पच्चखाणन
वरे एना उदयथी जीव कोइ पच्चखाण करी शके नही ए उपना थका एकवर
धी रहेछे, तिर्यचनी गतिना कारण थाय तेमा अप्रत्याख्यानी क्रोध ते पृथ्वीना
स्फुट समान जाणवा, अने अप्रत्याख्यानी मान ते अस्थि समान जाणवु वना

अप्रत्याख्यानी माया ते मेंढाना शिंगडा समान जाणवी. तथा अप्रत्याख्यानी लोन ते कादव समान जाणवो.

हवे जे जीवना सर्व विरतिरूप गुणने आवरे ते प्रत्याख्यानावरण जाणवुं, ए उपन्या ठतां चार मास सुधी रहेठे, ए मनुष्यनी गतिनुं कारण थाय ठे. तेमां प्रत्याख्यानी क्रोध ते वेलुनी रेखा समान जाणवो, अने प्रत्याख्यानी मान ते काष्ट समान जाणवुं. तथा प्रत्याख्यानी माया ते गोमूत्रिका समान जाणवी. वली प्रत्याख्यानी लोन ते खंजन समान जाणवो.

हवे संज्वलन ते किंचितमात्र दीपे, उपरांत उपशमि जाय. ते उपन्या ठतां घणामां घणो रहे तो पन्नर दिवससुधी रहे ठे. देवनी गतिनुं कारण थाय, यथाख्यात चारित्रनुं रुंधन करे. तेमां संज्वलनो क्रोध ते पाणीनी रेखासमान जाणवो. अने संज्वलन मान ते नेत्रनी लाकमी समान जाणवुं; अने संज्वलननी माया ते वृक्षनी अवलेहिका समान जाणवी अने संज्वलननो लोन ते हलद्दना रग समान जाणवो.

मूल.—सोलस इमे कसाया, एसो नव नोकसायसंदोहो ॥ इत्थी पुरिस नपुंसग, रूवं वेयत्तयं तंमि ॥२७१॥ अर्थः—ए सोल कषाय कह्या. हवे वली नव नोकषायनो संदोहके० समूह देखाडेठे. इत्थी शब्दे स्त्री, तेनो जे वेद ते स्त्रीवेद जाणवो. जेना उदयथकी पुरुषप्रत्ये अनिलाप थाय ठे. बीजो पुरुषवेद ते, जेना उदयथकी स्त्रीप्रत्ये अनिलाप थाय ते जाणवो. त्रीजो नपुंसकवेद, जेना उदयथकी पुरुष तथा स्त्री बंने प्रत्ये अनिलाप थाय. कारिस, तृण, ने नगर दाह समान अनुक्रमे एवे स्वरूपे ए त्रणे वेद जाणवा. ॥२७१॥

मूल·—हासरइ अरइ नय सोयं डुगंठ त्तिहास ठक्कमिमं ॥ दरसिण तिगंतु मिछ,त्त मीस संमत्त जोएण ॥ २७२ ॥ अर्थः—कारण उपन्ये अथवा कारण उपन्या विना नयन विकार उपजे, हास्य आवे, ते हास्यमोहनीय जाणवी. तेमज कोइक सुखनुं कारण उपन्ये अथवा कारण उपन्याविना स्वनावे सुखनुं वेदवुं ते बीजुं रतिमोहनीय कर्म जाणवुं. त्रीजुं ए थकी विपरीत ते अरतिमोहनीयकर्म जाणवु. चोथुं इह लोकादिक सकारण अथवा कारण विना मनमां नय उत्पन्न थाय ते नयमोहनीयकर्म जाणवुं. पांचमुं इष्टवियोगादिक जनित अश्रुपात शोक उपजे ते शोकमोहनीयकर्म जाणवुं. ठहुं बीनत्सगंधने योगे प्राणीने जुगुप्सा उपजे ते जुगुप्सामोहनीयकर्म जाणवुं. ए हास्य षट्क जाणवुं. हवे दर्शन त्रिक ते, मिथ्यात्व मिश्र ने सम्यक्त्वरूप अविशुद्ध अर्द्धविशुद्ध ने शुद्ध पुंजत्रिक रूप जा

एना अनुक्रमे मिथ्यात्व ते श्रीवीतराग प्रणीत तत्वने सर्दहे नही, अने मिश्र
प्रनावे श्रीजिनोक्त तत्व उपर राग पण न होय अने द्वेष पण न होय सम्यक्त्व
ते जीवादिक तत्वनेविषे रुचिनु करवु एसमकितने योगे मत्या त्रण थाय ॥२३२॥

मूल —इयमोह अठ्ठावीसा, नारय तिरि नर सुराउय चउक्क ॥ गोयं नीर उच्च,
अतरायंतु पचविह ॥ २७३ ॥ अर्थ —एरीते मोहनीयकर्मनी अठ्ठावीश उत्तर प्र
कृति कही अने नारकी, तिर्यंच, मनुष्य तथा देवताना आयुष्यना नेद सत्तावीश,
युकर्मनी उत्तरप्रकृति चार कहीछे उच अने नीचना नेदथकी गोत्र कर्मनी उत्त
प्रकृति वे प्रकारेज जाणवी अने अतराय पाच प्रकारेछे तेज सूत्रकार कहेछे ॥२३३॥

मूल —दाउ नलहे लाहो, न होइ पावइ न नोग परि नोगो ॥ निरउविय तत्त
होइ अतराय प्पनावेण ॥ २७४ ॥ अर्थ —छति सामग्रीए तथा छता पात्रने तथा
गे दान आपी शके नही ते दानातराय जाणवु छति वस्तुए आपनार आपना
होय पण जेना उदयथी प्राणीने ते वस्तुनी प्राप्ति न थाय ते लानातराय जाणवु
नोगनी छति सामग्रीये पण नोगवी शके नही ते नोगातराय जाणवु तेमन म
जी गृहणी प्रमुख उपनोगनी सामग्री छतिए पण उपनोगवी न शके ते उपनोगां
तराय जाणवु शरीरे गाढो निरोगी पुष्ट छतो पण अशक्त, तृण मात्र नानी न श
के ते वीर्यांतरायनो प्रनाव जाणवो ॥२७४॥

हवे नामकर्मनी प्रकृति जेटले प्रकारे थाय ते अनुक्रमे देखाडेछे मूल —नामे
वायालीसा, नेयाण अहव होइ सत्तठी ॥ अहवा तिहु तेणउई तिग अहिय स
यं हवइ अहवा ॥ २७५ ॥ अर्थ —नामकर्मनेविषे वेतालीश उत्तरप्रकृतिना नेद
अथवा सडसठ थायछे, अथवा वली त्र्याणु पण थायछे अथवा एकशोन त्रण
पण थायछे, तेमां प्रथम वेतालीश प्रकृति कहेछे ॥ २७५ ॥

मूल —पढमा वायालीसा, गइ जाइ सरीर अंगुवगेय ॥ व धण सघायण सघ
यण सगण नामच॥२७६॥अर्थ —प्रथम वेतालीश प्रकृति ते आजीवीने गति जाति
तु ते, औदारिकादिक, अगोपाग, वधन, सघातन, सघयण सस्थान नाम

मूल —तह वन्न गध रस फास नाम अगुरु लहुअच वोधव्व ॥ उवघाय पर
घा, णुपुव्विऊसास नामच ॥ २७७ ॥ आयावुज्जोयविहाय गई तसथावराभिहाण
॥ वायर सुहुम पज्जत्ता पज्जत्तच नायव्वं ॥२७८॥ पत्तेय साहारण, थिर मथिर
सुहुनच नायव्व ॥ सूनगदूनगनाम, सुसर तह दूसरचेव ॥ २७७ ॥ आएज्जम
ज्ज, जसकित्ती नाम अजस कित्तीय ॥ निम्माण तित्थयर, नयाणवि दुनिवन

या ॥ २०० ॥ अर्थ.—तेमज वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, पराघात, आनुपूर्वी, श्वासोश्वासनाम, आतप, उद्योत, विहायोगति, त्रस, थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, जाणवा. प्रत्येक, साधारण, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, जाणवु. सुभग, दुर्भगनाम, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यश.कीर्त्तिनाम, अयश.कीर्त्तिनाम, निर्माण अने तीर्थंकरनामकर्म, ए बेतालीश भेदनां नाम कह्यां ॥२००॥

हवे ए बेतालीश भेदना वली प्रतिभेद थाय ते कहेछेः—मूल.—गइ होइ चउ पयारो, जाईविय पंचहा मुणेयव्वा ॥ पंचय हुंति सरीरा, अगोवगाइ तिन्नेव ॥२०१॥ अर्थ.—गम्यते एटले जवुं प्राणी ए जे एनेविषे एटला माटे एने गति कहिये. ते देवादिकना भेदथकी चार प्रकारे छे. जाति ते एकेंद्रियादिकना भेद थकी पांच प्रकारे जाणवी शरीर ते औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस ने कार्मण एपांच जाणवां. अंगोपाग ते तेजस तथा कार्मण ए बे शरीरने होतां नथी, माटे औदारिकादिक त्रण शरीरनांज होय छे तेथी त्रणज जाणवां. ॥२०१॥

मूल.—छस्संघयणा जाणसु, संठाणा विय हवंति छच्चेव ॥वन्नाईण चउक्कं, अगुरुलहु वघाय परघायं ॥ २०२ ॥ अर्थः—संहनन ते वज्रऋषभ नाराच, ऋषभनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलिका, अने सेवार्त्तरूप ए अस्थि रचना विशेष जाणवा. संस्थान ते समचतुरस्र, न्यग्रोध, सादि, वामन, कुब्ज अने हुंडक एवे नामे छ होयछे. वर्णादिक चार ते आवीरीते. वर्ण, गंध, रस ने स्पर्श. अगुरुलघु ते जेना उदयथकी प्राणीनुं शरीर भारी अने हलवुं पण न थाय तेअगुरु लघु. अने उपघात नाम कर्म तेने कहिए, जेना उदयथी जीव उपघात एटले विनाश पामे ते विनाश पण पोतानाज शरीरे करी थाय. जेम पडजीभप्रमुख निकले, ते जाणवु. पराघात नाम कर्म ते जेना उदयथी पोतायकी बलवंत जे होय तेने पण दुर्निरीक्ष्य होय; कोइ सन्मुख जोइ शके नही, कोइ सामो बोली शके नही ॥२०२॥

मूल —अणुपुव्वी चउभेया, उस्सासं आयवच उज्जोयं ॥ सुहअसुहा विहगगई, तसाय वीसंच निम्माणं ॥ २०३ ॥ अर्थ.—आनुपूर्वीपण गतिनीपरे चार प्रकारे जाणवी. पण एटलुं विशेषछे के जीवे जे गतिनुं आयुष्य बांध्युं होय ते गतिनेविषे दोरिए बाधि वृषभादिकने जेम खेंची लइ जइए तेम खेंचीने लइ जाय ते चारगति आश्री चार अनुपूर्वी जाणवी. जेना उदयथकी जीव श्वासोश्वास लेवानी समर्थाइए करी सहित थाय ते उश्वास नाम कर्म जाणवुं. जेना उदयथकी पोते अतापवंत थको पण अनेरा जीवोने ताप उपजावे. जेम सूर्यनुं मांमलुं

पृथ्वी कायिक जीव ते पोते शीतलथका परने ताप उपजावे छे, तेनी परे ता उपजावे ते आतप नाम कर्म जाणवुं, जेना उदयथकी जीवना अंग उद्योत थाय, जेम देवता यतिने उत्तरवैक्रिये ज्योतिषि तथा खजुआ प्रमुखना अंग दीपे ते उद्योत नाम कर्म जाणवु शुभने अशुभ विहायो गति तेमा शुभ विहाय गतिना उदय थकी गज वृषभादिकनी परे नली गति थायछे अने अशुभ विह योगतिना उदयथकी खर शूकरादिकनी परे माठी गति थायछे

त्रसादिक वीश ते त्रस दशक तथा स्थावर दशक तेमा त्रसनाम कर्मना उ दयथकी प्राणी बे इंद्रियादिक नाव पामे, बादरना उदयथकी जीव बादरपणु हे जे पोतपोतानी पर्याप्ति पुरण करे ते पर्याप्तनाम कर्म, प्रत्येक नाव प्राणी पा ते प्रत्येकनामकर्म, जेना उदयथकी दांत प्रमुखने स्थिरपणु थाय ते स्थिर नाम कर्म, जेना उदयथी नानीनी उपरना अंगने शुनपणु होय ते शुननामकर्म जेना उदयथकी समस्त प्राणीने इष्टथाय ते सौनाग्यनाम कर्म, जेना उदयथी मनोहर स्वर थाय ते सुस्वरनाम कर्म, जेना उदयथकी तेनु वचन समस्त लोकने ग्राह्य थाय ते आदेयनाम कर्म अने जेना उदयथकी यश कीर्त्ति प्रगट थाय ते यश नाम कर्म ए त्रस दशको कह्यो ए थकी विपरीत स्थावर दशक छे जेना उदयथकी जीव पृथ्व्यादिकपणु पामे ते स्थावर नामकर्म एम सर्व दशकना विपरीतपणे जाणवा एटले सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण अस्थिर, अशुन ते ना नीथकी नीचे पादादिक, अवयव, अशुन होय दौर्नाग्य ते डुर्नाग्यना उदयथकी जीव डुर्नाग्य थाय, डुस्वर, अनादेय, अयश ते काइनु घणुं हित करवा छतां पण यश मले नही ए थावर दशक कह्यो निर्माण ते सूत्रधारनी परे अवयवना पणा अंग जे ठामो ठाम रहे ते जाणवु ॥ २०३ ॥

मूल —तित्थयरेण सहिया, सत्तठीए हवंति पयडीउ ॥ सम्मामीसरहिविणा तेवन्ना सेस कम्माण ॥ २०४ ॥ अर्थ —ए पूर्वोक्त प्रकृतिने तीर्थंकरनाम कर्म करी सहित करिए तेवारे नामकर्मनी सडसठ प्रकृति थायछे तथा शेष सात कर्मनी त्रेपन प्रकृति छे तेमाथी सम्यक्त्व अने मिश्र विना शेष कर्मनी त्रेपन प्रकृति थायछे ॥ २०४ ॥

मूल —एव वीसुत्तरसय, बंधेपयडीण होइ नायव ॥ बंधण संघायाविय गहणेण इह गहिया ॥ २०५ ॥ अर्थ —एम सडसठ तथा त्रेपन मेलव्यायकी आठ कर्मनी एकशो ने वीश प्रकृति बंधनेविषे थायछे ते जाणवी इहां कोइ कहेशे के ज्यारे न जेवारे बेताळीश प्रकृति कही तेवारे तेमां बंधन अने संघातन प्रकृति कहा

अवतरण—कम्मठिई साबाहत्ति एटले कर्मनो अबाधाकाल तेणेकरी स कर्मनी स्थितिनु वर्णने अढारमु द्वार कहेछे मूल—मोहे कोडाकोडी, सत्तरी स नामगोयाण ॥ तीसयराण चउण्ह, तेत्तीस यराइ आउस्स ॥ २७४ अर्थ—मोहनीयकर्मनी स्थिति सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी तथा नाम अ गोत्रनी वीश कोडाकोडी, अने इतरके० बीजा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, नीय अने अंतराय ए चार कर्मनी प्रत्येके त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थि जाणवी अने आयुकर्मनी तेत्रीश सागरोपमस्थिति जाणवी ॥ २७४ ॥

मूल—एसा उक्कोस ठिई, इयरा वेयणिय बारसमुहुत्ता ॥ अठ्ठनाम गोत्ते सुसे ए सुमुहुत्ततो ॥ २७५ ॥ अर्थ—ए आठकर्मनी उत्कृष्ट स्थिति कही अने इयराके इतर ते जघन्य स्थिति तो वेदनीय कर्मनी बार मुहूर्त्त, अने नाम तथा गोत्रकर्मन आठ आठ मुहूर्त्त शेष ज्ञानावरणीय, दर्शनावरनीय, मोहनी, आयु ने अंतराय ए पांचकर्मनी जघन्यस्थिति एक एक अंतर्मुहूर्त्तनी जाणवी ॥ २७५ ॥

मूल—जस्स जइ कोडिकोडीउ तस्स तेत्तिय सयाणि वरसाणि ॥ होइ अबाहा लो, आउंमि पुणो नवति नागो ॥२७६॥ अर्थ—जे कर्मनी जेटली कोडाकोडी स्थि ति तेने तेटला वर्षना शेकडा अबाधाकाल होय, अने आयुकर्मना अबाधाकाल जवनो त्रीजो नाग होय केमके आयुष्यना बंध वर्तमान आयुष्यने त्रीजे नागे थाय यद्भक्तं ॥ सोवक्कमाउ आपुणा, सेसति नागे हवा नवमनागे ॥ सत्तावीसे भवा, अंत मुहुत्तति मेवावि ॥ २७६ ॥ इति गाथा त्रयार्थ

अवतरण—बायालीसाउ पुन्नपयडीउत्ति एटले बतालीश पुण्यप्रकृतिनु वर्णने ओगणीशमु द्वार वरणवेछे मूल—साय उच्चागोय, नरतिरि देवाउ नाम एयाउ॥ मणुयदुग देवदुग, पचिंदिअ जाइ तणुपणग ॥ २७७ ॥ सातावेदनीय उच्चगोत्र, म नुष्यायु, तिर्यंचायु, अने देवायु, हवे एमा नाम कर्मनी जेटली प्रकृति छे ते कहेछे मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, देवगति, देवानुपूर्वी, पचइंद्रियजाति औदारिक वैक्रि य, आहारक, तेजस ने कार्मण ए पांच शरीर जाणवा ॥ २७७ ॥

मूल—अंगावंगतिगंपिय, संघयण वज्जरिसहनाराय ॥ पढमंचिय संठाण, वन्नाइ चउक्क सुपसत्थ ॥२७८॥ अर्थ—आयना त्रण शरीरना अंगोपांग, वज्र ऋषभनाराच संघयण, समचतुरस्र संस्थान, सुप्रशस्त के०नलो वर्ण, गंध, रस ने स्पर्श ॥२७८॥

मूल—अगुरुलहु पराघाय, उस्सास आयवंच उज्जोयं ॥ सुपसत्था विहगगइ तसाइ दसगंच निम्माण ॥ २७९ ॥ अर्थ—अगुरुलघु, पराघात श्वासोश्वास

आतप, उद्योत, सुप्रशस्त, शुनविहायोगति, त्रसदशक, ते आवीरीते. त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुन, शुनग, सुस्वर, आदेय, ने यश ए त्रसदशक अने निर्माण.

मूल —तिछयरेणं सहिया, पुन्नप्पयडीउ हुंति बायाला ॥ सिवसिरि कडकियाणं, सयावि सत्ताण मेयाउं ॥ ३०० ॥ अर्थः—तीर्थंकरनाम कर्म सहित बेतालीश पुण्य प्रकृति होयछे ते मोक्ष लक्ष्मीए जेनेसन्मुख जोयुंछे. एवा प्राणी तेने ए सदा थायछे.

अवतरणः—बासीई पाव पयडिउत्ति एटले ब्यासी पाप प्रकृतिनुं वर्णोने वीशमुं द्वार कहेछे मूल.—नाणंतराय दसगं, दंसण नवमोह पयइ छव्वीसा ॥ अस्सायंनिर याउ, नीयागोएण अडयाला ॥ २०१ ॥ अर्थ.—मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनपर्यवज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, दानांतराय, लाभांतराय, नोगांतराय, उपनोगातराय, वीर्यांतराय, तथा चार दर्शन ने पाच निद्रामली नवप्रकारे दर्शनावरण कर्म. तथा सम्यक्त्वने मिश्रटाली शेष छव्वीश प्रकृति, मोह नीयनी असातावेदनीय, नरकायु, ने नीचैर्गोत्रेकरी सहित अडतालीश नेद थया.

मूल —नरयडुगं तिरियडुगं, जाइ चउक्कंच पंच संघयणा ॥ संगणा विय पंचउ वन्नाइ चउक्क मपसछं ॥ २०२ ॥ अर्थ.—नरकगति, नरकानुपूर्वी, तिर्यंचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, एकेंद्रियजाति, बेइंद्रियजाति, त्रेंद्रियजाति, चउरेंद्रियजाति, रुषन नाराचादिक पांच संघयण, न्यग्रोधादिक पाच संस्थान, अप्रशस्त वर्णादिक चार.

मूल.—उवघाय कुविहयगई, थावर दसगेण हुंति चउतीसा ॥ सव्वाउ मिलियाउ, बासीई पावपयमीउ ॥ २०३ ॥ उपघातनाम, अशुनविहायोगति, थावर दशक कहे छे, थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अथिर, अशुन, दौर्नाग्य, डुःस्वर, अनादेय अने अयश ए दश मेलविए तेवारे नरकद्विकादिथकी मांमी इहां सुधी चोत्रीश थायछे. अनेअडतालीश प्रथमनी सर्व मेलवता ब्यासी पाप प्रकृति थायछे इतिगाथात्रयार्थः

अवतरण.—नाव छक्कंच पडिनेय एटले प्रतिनेदे करी सहित छ नावनुं वर्णन एकवीशमुं द्वार कहेछे. मूल —नावाछ ब्रोवसमिय, खइय खउवसम उदय परिणा मा ॥ डुनवट्ठारिगवीसा, तिगनेया सन्निवाउय ॥ २०४ ॥ अर्थ —विशिष्टहेतुथकी स्वनावथकी अथवा प्राणीने ते ते स्वरूपे होय ते नाव परिणामनुं विशेष जाणवु. अथवा ए उपशमादिक पर्याये जे होय ते नाव जाणवो. इहा च शब्द अवधारणने अर्थे छे, त्या पहेलो नसम छन्न अग्निनीपरे जे अवस्था प्रदेशे होय पण उदयनो अनाव एवो उपशम ते मोहनीयनोज थाय पण शेष कर्मने उपशम न थाय. ते का रणे मोहनीयने उपशमे थयो ते उपशमिकनाव जाणवो. बीजो मोहनीयना क्ष

थयकी थयो ते क्षायिक नाव त्रीजो केटलाक कर्मनो क्षय अने केटलाकना उप
म तेणे करी थयो ते क्षायोपशमिकनाव चोथो आठ कर्मने पोताना उदयनविष
पहोंच्योठे तेनो पोताना स्वरूपे करी अनुनववो ते उदय, तेणेकरी निपन्या न
उदयिकनाव जाणवो पाचमो परिणमवु ते कोइक रीते प्रथमनी अवस्थान मू
की आगली अवस्थानेविषे जावु ते परिणाम तेने विषे जे निपन्यो ते परिणामिक
नाव जाणवो ठठो सम्यक्प्रकारे करी निपतन के० एकठो मलवा ज्याहे त तत्र
पात, घणा नाव एकठा मल्याठता ए ठठोनाव निष्पन्न थायठे एमा पाच नावना
अनुक्रमे वे, नव, अढार, एकवीश ने त्रण ए नेद जाणवा, अने ए सर्व नाव
एकठा मलवायकी ठठो सन्निपातनाव केहेवायठे ॥ ३०४ ॥

उपशमिकना वे नेद अने क्षायिकना नव नेद कहेठे मूल —सम्मचरणाणि
पढमे, दसणनाणाइ दाण लानाय ॥उवनोग नोग वीरिय, सम्मचरित्ताणि य विय
॥३०५॥ अर्थ —दर्शन सप्तकना उपशमथकी सम्यक्त्व थाय अने चारित्र मोहनीयन
उपशमे चारित्र थायठे ए वे नेद पढमेके०पहेलो उपशमिकनावनेविषे थायठे त
या दसण नाण ए सूत्र ते सूचकमात्र तेथी दर्शननाण शब्दे केवल दर्शन न केवल
ज्ञान लेवु तथा दानादिक पाच प्रकारनी लब्धी ते पचविध अतरायना क्षयथकी था
यठे एम क्षायिकसम्यक्त्व पण सप्तकना क्षयथी थायठे, एम क्षायकचारित्र त
पण चारित्रमोहनीयना क्षयथकी थायठे ए नव बोल वीजे क्षायक नावे थायठे

हवे क्षायोपशमिकना अढार नेद कहेठे मूल —चउनाणा नाणतिग, दसणतिग
पचदाण लद्धीउ ॥ सम्मत्त चारित्त,च सजमा सजमो तइए ॥३०६॥ अर्थ —मत्या
दि चार ज्ञान तथा मत्यादिक त्रण अज्ञान, दर्शनत्रिक ते चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन
ने अवधिदर्शन लक्षण जाणवु तथा दान, लाज, नोग, उपनोग ने वीर्य ए पाच
लब्धी, इहा ए विशेषठे के क्षायिकनावनेविषे कोइ कहेशे के दानादिक पाच लब्धि
पूर्वे क्षायिक नावे कही, तो इहा वली क्षायोपशमिक नावे केहेता थका विरोध उ
पजेठे त्या ए उत्तर जे, दानादिक लब्धी वे प्रकारे ठे, अतराय कर्मना क्षय थवाथी
क्षायकलब्धी केवलीने थाय तथा क्षायोपशम लब्धि जे कही ते ठद्मस्थने थायठे
ए पन्नर थया अने सोलमु सम्यक्त्व पण सप्तकने क्षायोपशमे थायठे अने सत्तरमु
क्षायोपशमे चुरला चारित्र सामायिकादिकचार थायठे, तेमज अढारमु सयमासय
म रूप देशविरतिचारित्र ते अप्रत्याख्यानावरण कषाय मोहनीयने क्षयोपशमे था
य ए अढारनेद त्रीजा क्षायोपशमिक नावना थया ॥३०६॥

हवे उदयिक नावना एकवीश नेद कहेछे. मूलः—चउगइ चउक्कसाया, लिंगनि यं लेसळक्क मन्नाणं ॥ मिछत्तम सिद्धत्तं, असंजमो तह चउत्थंमि ॥२०१॥ अर्थ.—गतिप्रमुख सर्वे चोथे उदयिक नावे थायछे. त्यां गतिचार ते नामकर्मना उदयथकी जीवने होय. अने चार कषाय ते कषायमोहनीयना उदयथी थाय, लिंग त्रण पण मोहनीयना उदयथी संनवे, अने लेश्या ळ ते जे कहेशे के योगपरिणाम ते लेश्या तेने मते तो योग त्रणनुं उपजावनार जे कर्म तेना उदयथी लेश्या समजवी. अने जे कहेशे के कर्म निष्पंद लेश्याछे तेने अनिप्राये तो आठकर्मना उदयथकी ले श्या समजवी. जेम संसारीने असिद्धपणु ते आठ कर्मना उदयथकी होयछे. एक वली कषायनो निष्पंद ते लेश्याछे एम कहे छे; तेना अनिप्राये तो कषाय मोहनी यना उदयथकी थायछे. ए सत्तर थया अने अढारमुं अज्ञान, ओगणीशमुं मिथ्यात्व वीशमुं असिद्धपणु अने एकवीशमुं अविरति असंयमपणुं. तेमां अज्ञान ते विप रीत बोधरूप जे मति अज्ञानादिक त्रण ते ज्ञानावरण मिथ्यात्व मोहनीयना उदयथकी थाय. अने प्रथम जे अज्ञानत्रिक क्षायोपशमिक नावे कह्यो हतो ते वस्तुना अवबोध मात्रनी अपेक्षाये समस्त वस्तुनुं जाणपणुं विपरीत नावे तथा अविपरीत नावे ते ज्ञानावरणी कर्मने क्षयोपशमेज थाय. अने जेने समस्तपणे विपर्यस्त लक्षण अज्ञानपणु होय ते ज्ञानावरण. अने ते मिथ्यात्व मोहनीय कर्मनाज उदयथी संनवे. एटला माटे अज्ञाननेविषे क्षायोपशमिक अने उदयि क ए बंने नाव संनवे छे, तेमां विरोध न जाणवो. मिथ्यात्व मोहनीयना उदयथ की असिद्धत्वपणुं, अने आठकर्मना उदय थकी असंयम, अविरतिपणु, ते अप्र त्याख्यानावरण कषायना उदयथकी थाय; एटला बोलना उपलक्षणथकी निद्रा पांच अशातावेदनीय हास्य रति अरति प्रमुख अनेरा पण पोतपोताना कर्मने उ दयिक नावे चोथा नावनेविषे संनवता जाणवा. ॥ २०१ ॥

हवे पारिणामिक नावना त्रण नेद कहेछे. मूल.—पंचमगंमिय नावे, जीवो नवत्त नवया चेव ॥ पंचएहवि नावाणं, नेया एमेव तेवन्ना ॥२०७॥ अर्थ.—पांचमा नावनेविषे जीवत्वपणु अनादि पारिणामिक नावेछे. एमज बीजुं अनव्यत्वपणु अने त्रीजुं नव्यत्वपणुं पण अनादि पारिणामिक नावे छे. एनां उपलक्षणथकी घृत गोल सालिप्रमुख ने तेमज मदिरादिकने नव पुराणादिक अवस्थानाविशेष, तेमज वर्षधर, पर्वत, नवन, विमान, कुट, रत्नप्रनादिकना पुजलनुं विघटवुं. नवा पुजलनुं लागवुं इत्यादिक सर्व तथा वली गंधर्व नगर, हसितहसता सरखो देखाय. उल्का

पात कपिके० वानर, गाज, धूद्दरि, दिग्दाह, वीजली चड्माने सूर्यने फ
देखाय ग्रहणे इड्धनुष्य थाय ते सर्व सादि पारिणामिकनावे ठे थने लोक
स्थिति धर्मास्तिकायादिक ए सर्वअनादि पारिणामिकनावे जाणवा एरीते
के० पांचे नावना बे, नव, अढार, एकवीश ने त्रण मब्यायी त्रेपन नेद हु
हवे ठहो सांनिपातिक नाव ते प्रथम पाच नाव कह्या तेने बेनारे
गे, त्रणने सयोगे, चारने सयोगे इत्यादिक आगमोक्त प्रकारे करी पाच
जे नाव ते मब्या ठता ठवीश नेद थायठे ते आवीरीते –द्विकसयोगे
कसयोगे दश, चतु सयोगे पांच अने पचसयोगे एक मली ठवीशजग थाय
द्विकसयोगे दश थाय तेनीरीत कहेठे एक उदयिक ने उपशमिक, वीजो
यिक ने क्षायिक त्रीजो उदयिक ने क्षायोपशमिक, चोथो उदयिक ने पारिणामि
पाचमो उपशमिक ने क्षायिक, ठहो उपशमिक ने क्षायोपशमिक, सातमा उप
मिक ने पारिणामिक, आठमो क्षायिक ने क्षायोपशमिक, नवमो क्षायिक ने परि
णामिक, दशमो क्षायोपशमिक ने पारिणामिक हवे त्रिकसयोगे दश जग कहे
ठे एक उदयिक, उपशमिक ने क्षायिक, वीजो उदयिक उपशमिक ने क्षायो
मिक, त्रीजो उदयिक, उपशमिक ने पारिणामिक, चोथो उदयिक क्षायिक ने क्षा
योपशमिक, पाचमो उदयिक, क्षायिक ने पारिणामिक, ठहो उदयिक क्षायोपशमि
क ने पारिणामिक, सातमो उपशमिक, क्षायिक ने पारिणामिक आठमो उप
क, क्षायिक ने पारणामिक, नवमो उपशमिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक
दशमो क्षायिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक हवे चतु सयोगे पाच जग कहे
ठे एक उदयिक, उपशमिक, क्षायिक ने क्षायोपशमिक वीजो उदयिक, उ
शमिक, क्षायिक ने पारिणामिक त्रीजो उदयिक, उपशमिक, क्षायोपशमिक ने
पारिणामिक चोथो उदयिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक पाचमो उ
पशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिकने पारिणामिक ए सर्व मली पचीश जग थया
ठवीशमो पंचकसयोगे एक जग थाय ते सुप्रसिद्धठे, ए ठवीश ता जगनी रचना
मात्रे देखाड्या, परतु जे सनवी नांगा एमा परमार्थिक ठ ठे ते आवीरीते –एक द्वि
क सयोगे, बे त्रीक सयोगे, बे चतुष्क सयोगे, एक पचसयोगे एना प्रकारांतर
पन्नर जग थायठे ते सूत्रनो करनार देखाडेठे ॥३०८॥

मूल –उदयय खाउवसमिय, परिणामेहि चउरो गइ चउके ॥ खइय जुएहि च
उरो, तदनावे उवसमजुएहि ॥ ३०९ ॥ एक्केक्को उवसमसिढि, सिद्धकेवल सुएवन

विरुद्धा ॥ पन्नरस सन्निवाइय, जोयावीसंअसंजविणो ॥ ३१० ॥ अर्थः—उदयिक क्षायोपशमिक ने पारिणामिक ए त्रणे जांगे निपन्यो जे सांनिपातिक ते गतिना जेदथकी चिंतवतो चार प्रकारे थाय. ते आवीरीतेः—तेमां उदयिकादिक त्रण जेद ते प्रथम तो नरकगति साथे देखाडेछे. नारकीनी गतिनेविषे योजना करवी ते आम, उदयिक नारकीपणुं. क्षायोपशमिक इंडियादिकजाणवुं. अने पारिणामिक ते जीवत्वादिक. एम शेष त्रण गतिनेविषे पण योजना करवी. हवे खइय जुएहिं ए टले एज उदयिकादिक क्षायिके सहित सांनिपातक जेद जे थायछे तेपण गतिना जेदथकी चार प्रकारे बोलिये.ते आवीरीतेः—उदयिकीतोनारकगति छे.तथा क्षायिक सम्यक्त्वछे,अने क्षायोपशमिके इंडियादिकछे,तथा पारिणामिक जावे जीवत्वादिक छे, एम वली शेष त्रण गतिनेविषे जावना करवी. प्रकारांतरे वली चतुष्कसंयोगे चार जेद कहेछे. तदजाव इति ; एक क्षायिकने अजावे उपशमजावयुक्त उदयिकनो सांनिपातक चतुष्कसंयोगे एम अजिलापछे. उदयिक, उपशमिक, क्षायोपशमिक पारणामिक ए पण पहेलानी परे गतिना जेदथकी चार प्रकारे जाववुं, नवरं एटलुं विशेष जे उपशमिक ते सम्यक्त्व जाणवुं. हवे जे एक संख्याये सांनिपातिक जेद उपजे. उपशमश्रेणी सिद्धकेवलीनेविषे अविरुद्ध होय. ते देखाडेछे. एक उदयिक, बीजो उपशमिक, त्रीजो क्षायिक, चोथो क्षायोपशमिक, पांचमो पारिणामिक. एने संयोगे निपन्यो एक जेद जे कोइ क्षायिक सम्यक्दृष्टिछतो उपशमश्रेणी पडिवजे तेने उदयिक मनुष्यपणुं, अने उपशमिक चारित्र, तथा क्षायिक सम्यक्त्व वली क्षायोपशमिक इंडियादिक जाणवा; अने पारिणामिकजावे जीवत्वपणु जाणवुं. अने सिद्धनेविषे द्विकसंयोगलक्षण एक जेद सांनिपातिक होय ते आवीरीतेः—क्षायिक ने पारिणामिक तेमां क्षायिकजावे सम्यक्त्व अने केवल ज्ञानादिकजाणवा, तथा पारिणामिक जावे जीवत्वादिकजाणवुं,तथा केवलीने एक त्रिकसंयोगलक्षण सांनिपातिक जेद होय ते आवीरीतेः—उदयिक क्षायिक ने पारिणामिक,त्या उदयिके मनुष्यत्वादिक जाणवु, अने क्षायिके केवलज्ञानादिक जाणवुं, पारिणामिके जीवत्व जव्यत्वपणुंछे. एम गति प्रमुखनेविषे छ संयोगनी चिंताने प्रकारे अविरोध मांहोमाहे विरोधने अजावे पन्नर सांनिपातिक जेद छछजावना विकल्प थाय अने बाकीना वीश जंग ते असंजवी संयोग मात्रे होय, परंतु जीवनेविषे ते क्यारे पण पामिये नही.

हवे एज छ जंग, जे जे जीवनेविषे संजवे ते सूत्रकार कहेछे. मूलः— डुगजोगो सिद्धाणं, केवलि संसारियाण तिगजोगा ॥ चतुजोगजुअं चउसुवि, गईसुमणुआ

अथवा उपशमिक सम्यक्त्वरूप होय अने तिन्निसेस एटले त्रण जाव ते शष गुण
गणा जे मिथ्यादृष्टि, सास्वादन, मिश्रदृष्टि, सयोगी अने अयोगी लक्षणनविषे हा
य, त्यां मिथ्यादृष्टि आदेदेइने त्रण गुणठाणानेविषे उदयिक, क्षायोपशमिक पारि
णामिक ए त्रण जाव होय अने सयोगी तथा अयोगीनेविषे उदयिक, क्षायिकने
पारिणामिक ए त्रण जाव होय ए त्रण प्रमुख जाव जे कह्या ते एकजीवनी अपेक्षा
ए जाणवा, पण नाना प्रकारना जीव आश्री कहीए तेवारे सनवी सर्व जाव हाय

अवतरण – जीवचउ दसत्ति एटले जीवना चउद स्थानकनु बश ने बावीशमु
द्वार कहेने मूल –इह सुहुम बायरेगिदि बि ति चउर असन्नि सन्निपचिंदि ॥ प
ज्जत्तापज्जत्ता, कम्मेण चउदस जियठाणा ॥ ३१४ ॥ अर्थ – ए जिनशासननवि
पे एकेंद्रिय ते सूक्ष्म ने बादरना जेदथकी बे प्रकारे कहीने त्रीजु बेंद्रिय, चाथु ते
द्रिय, पाचमु चउरिंद्रिय, छठु जेने मन नही ते असन्नीपचेंद्रिय अने सातमु ज
मन सहितने ते सन्नीपचेंद्रिय ए बे जेद पचेंद्रियना जाणवा ए सात पर्याप्ता ने
सात अपर्याप्ता मली अनुक्रमे चउद जीवनां स्थानक होयछे ॥३१४॥इतिगाथार्थ

अवतरण –अजीव चउदसगति एटले अजीवना चउद जेदोनु बश ने त्रेवीश
मु द्वार कहेने मूल –धम्माधम्मागासा, तियतिय जेया तहेव अद्धाय॥खधा दत
पएसा, परमाणुअजीव चउदसहा॥३१५॥अर्थ –धर्मास्तिकायादिकनु स्वरूप त्रैवा
जतना वखाणमाहे इव्य षट्कने अधिकारे कह्यु ने इहा जेद कहियछये एक धर्मास्ति
काय, बीजो अधर्मास्तिकाय,त्रीजो आकाश ए त्रणेना स्कंध देश ने प्रदेश एवा त्रण
त्रण जेद करता नव जेद थाय ने दशमो अद्धाके०काल जे समय आवली मुहूर्त
त्यादिक समस्त वस्तुनी कलनानो करनार जाणवु अने स्कंध देश प्रदेश तथा प
रमाणु ए पुद्गलना चार जेद मली अजीवना चउद जेद थया ॥३१५॥इति गाथार्थ

अवतरण –गुणठाण चउदसगोत्ति एटले चउद गुणठाणानु बश न चावीशमु
द्वार कहेने मूल –मिच्छे सासणमिस्से, अविरयदेसे पमत्त अपमत्ते॥नियट्टि अनिय
ट्टि सुहुम उवसम खीणसजोगि अजोगिगुणा ॥ ३१६ ॥ अर्थ –इहा ससारमा वर्त
ता जीवने अनादि मोहलक्षण, मिथ्यात्व सदा सर्वदा छेज, परंतु जेवार व्यक्त
ी सदा, ए प्रगट मिथ्यात्वनो जे उदय थाय ते गुणस्थानकपणे जाणवा ए
मिथ्यात्वगुणस्थानक कह्यु

बीजु सास्वादन ते आवीरीते के, जीवने पोते अनादि मिथ्यात्व मोहनीयना प

रनु जेवारे तेनो उपशम थाय, तेवारे जीव उपशम, सम्यक्त्व, प्रथम पामे, अने वली इहां जे अनंतानुबंधिया कषाय उपशमाव्या हता; तेना उदयथी उपशमिक सम्यक्त्वथकी पडताने हजी जीव मिथ्यात्वे गयो नथी, एवुं छ आवली सुधी सास्वादन नामे बीजुं गुणस्थानक होय.

त्रीजुं मिश्रगुणस्थानक, ते आवीरीते के, मिश्रमोहनीय कर्मना उदयथकी सम्यक्त्व अने मिथ्यात्व उपर सरखी बुद्धि होय, जेम घोडी अने गर्दभना संयोगथकी वेसरनी जाती उत्पन्न थाय. अथवा जेम गोल अने दहीना संयोगथकी वे रस होयछे तेम श्री वीतरागना धर्मनेविषे अने अन्यदर्शनीना धर्मनेविषे पण श्रद्धा होय; ए अंतरमुहूर्त्त काल सुधी रहेछे, एने विषे वर्तमान छतो जीव परभवनुं आयुष्य पण बांधे अने मरण पण पामे नहीं. पण सम्यक्त्वे अथवा मिथ्यात्वे आवी पोताना पूर्वबद्धायुष्यने अनुसारे परभवे जाय. ए त्रीजुं मिश्रगुणठाणुं कह्युं.

चोथुं अविरतिगुणस्थानक ते आवीरीते छे:—श्रीवीतरागना भाषिततत्वनेविषे रुचि थाय, ए उपशमादिक गुणेसहित अपार्द्ध पुद्गल परावर्त्त संसार छते भव्य जीव पामे; देव गुरु अने संघनी भक्ति अने उन्नति जेम थाय तेम करे, तेत्रीश सागरोपमसाधिक एनी स्थिति छे. अने अप्रत्याख्यान नामे जे कषाय तेना उदयथकी थोडीपण विरति करी शके नहीं अने सम्यक्त्व पण होय, तेथी ए चोथुं अविरतिसम्यग्दृष्टिगुणस्थानक कहिये.

पांचमुं देशविरतिगुणस्थानक छे, ते आवीरीते के, ए गुणठाणानेविषे प्रत्याख्यानावरण कषायना उदयथकी जीव सर्वविरतिपणुं करी शके नही. अने देशथकी विरति होय, इहा श्रावक संबंधी छ कर्म, प्रतिमा व्रत एनेविषे तत्पर थाय, आर्त्त ने रौद्र ध्यान घणुं होय, अने धर्म ध्यान थोडुं होय. देशेऊणी पूर्वकोडी ए गुणठाणानी स्थिति जाणवी. ए देशविरति नामे पांचमुंगुणस्थानक जाणवुं.

छठ्ठा प्रमत्तगुणस्थाननुं लक्षण आमछे के, इहा संज्वलन कषायना उदयथकी प्रमाद संभवेछे, एनेविषे रह्योथको जे यति ते प्रमत्तयति कहेवाय छे, अने वली नोकषायना उदयथकी आर्त्तध्यान घणुं होय, अने धर्मध्यान थोडुं संभवे छे. प्रमादना बहुलपणाये करी मिथ्यात्वे मोहितथको श्रीजिनोक्तआगम पूर्ण वेदे नहीं, एनी अंतरमुहूर्त्तनी स्थिति छे. ए प्रमत्त यतिनुं छठुं गुणठाणुं जाणवुं.

सातमुं अप्रमत्तगुणस्थानक देखाडेछे. इहां संज्वलन कषायना मंद उदयपणे करीने प्रमादहीन होय, तेथी ए गुणठाणे वर्तमान छतो बंने श्रेणीनो आरंभ

करे एने अप्रमत्त यति कहिये इहां कालमान वळी प्रमत्तादिक गुणठाणाथी जेहने बारमासुधी साते गुणस्थानकनेविषे अंतरमुहूर्त्त होय, इहां आवश्यकना अनादरथकी पण ए सदा शुद्धात्मा जाणवु

आठमु निवृत्तिगुणस्थानक एटले इहांथकी वळी पाछुं निवर्त्ते, तेथी ए निवृत्तिगुणस्थानक समजवु अने नवमाथकी निवर्त्ते नहीं तेथी एवु नाम अनिवृत्ति छे. दशमु सूक्ष्मलोभना विद्यमानपणाये करीने एवु नाम पण सूक्ष्मसंपराय छे अग्यारमु उपशांतमोह गुणस्थानक, एनेविषे उपशमश्रेणीनुं पडिवज्जनार आवीने घणी नरस्थिति छते वळी इहांथी पाछु पडयुथकु मिथ्यात्वे जाय, अने जेने थोडी नरस्थिति होय तथा तद्भव मोक्षगामि होय ते पाछो पडयो थको सातमा गुणठाणा सुधी आवे अने क्षपकश्रेणीवाळो ते दशमाथकी बारमे जाय पण अग्यारमे गुणठाणे आवे नहीं

क्षीणपणे थयाछे मोह ज्या ते क्षीणमोह नामा बारमु गुणठाणु जाणवु

तेरमु सयोगी नामे गुणठाणु ते इहां मन, वचन अने काययोगना सद्भावथकी सयोगीगुणठाणु कहेवाय छे एनु कालमान देशोन पूर्वकोटी प्रमाण जाणवु ए केवलीनु गुणठाणु कहेवाय छे

चउदमु अयोगी गुणठाणु ते आवीरीते अ इ उ ऋ लृ एवा पांच ह्रस्व अक्षरना उच्चार करता जेटलु वखत थाय तेटलु एनु कालमान जाणवु तेने इहां वृत्तिकायाए कायाना नाश छे तो पण तेने आगले तुरत कायाना क्षय थशे, ते कारणे एने काया सर्व थी कार्यना अनादरथकी ए अयोगी कहेवाय छे एनविषे वर्त्ततां ध्यानना चोथा भेद ध्याता छेहेला समयनेविषे वेदनीयादिक तेर प्रकृति खपावी सिद्ध गमन थाय ए चउदगुणठाणा कह्या ॥ ३१६ ॥ इति गाथार्थ ॥

अवतरण —मग्गण चउदस गोनि एटले चउदमार्गणाना स्थानद्वं अने चोत्रीसमु द्वार कहे छे मूल —गइ इंदिएय काए, जोए वेए कसाय नाणेय ॥ संजम दंसण लेसा, भवसम्मे सन्नि आहारे ॥३१७॥ अर्थ —एक, गतिचार ते देव नर, तिर्यंच, ने नारकी, बीजी इंद्रिय, पांच, तेमां स्पर्शन लक्षण इंद्रिय जेने ते एकेंद्रिय बेइंद्रिय, तेंद्रिय, चउरेंद्रिय, पंचेंद्रियलक्षण पांच जाणवी त्रीजी काय ते पृथ्वी, अप, तेउ, वायु, वनस्पति ने त्रस लक्षण छ जाणवी चोथी योगमार्गणा ते मन वचन ने काय लक्षण त्रण, वेदरूप पांचमी वेदमार्गणा ते पुरुष, स्त्री ने नपुंसकना भेदथकी त्रण छठी कषायमार्गणा ते क्रोध, मान, माया ने लोभरूप जाणवी सातमी ज्ञान

र्गणा ते मति, श्रुत, अवधि, मनपर्यव ने केवल ए पांच ज्ञान तथा मतिअज्ञा श्रुतअज्ञान ने विभंगज्ञान ए त्रण अज्ञान मली आठ भेदे छे; आठमी संयम र्गणा ते सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, संयम ने असंयमना भेदे सात प्रकारेछे. नवमी दर्शनमार्गणा ते चक्षुदर्श अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन ने केवलदर्शनना भेदे करी चार प्रकारे जाणवी. मी लेश्यामार्गणा ते कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म ने शुक्ल रूप छ प्रकारे जा वी. अग्यारमी भवमार्गणा ते भव्य ने अभव्य लक्षण बे प्रकारे जाणवी. बारमी म्यक्त्वमार्गणा ते उपशम, सास्वादन, मिश्र, क्षायोपशमिकने क्षायक ए पांच भेदे णवी. तेरमी सन्निमार्गणा ते संज्ञी ने असंज्ञीना भेदे जाणवी. चउदमी आहार मा णा ते आहारक अने अनाहारक रूप बे भेदे जाणवी. ज्यां जीवपदार्थनुं शोध करवुं मार्गणा मूल चउद जाणवी.तेना प्रतिभेद करिये तेवारे बाशठ थाय ते कह्या. इति॥

अवतरण.–उवउगा बारसत्ति एटले बार उपयोगनुं वर्णने छवीशमुं द्वार क छेः–मूलः–मइ सुअ उही मण केवलाणि मइ सुअ अन्नाण विभंगा ॥ अचक्खु क्खु अवही, केवल चउदंसणुवउगा ॥ ३१८ ॥ अर्थः–मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, वधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभंगज्ञान, क्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, अने केवलदर्शन. ए चार दर्शन अनाकार पछे ते मेल्यां थका बार उपयोग थायछे. ॥ ३१८ ॥ इति गाथार्थ. ॥

अवतरणः–जोगा पन्नरसत्ति एटले पन्नर योगनुं वर्णने सत्तावीशमुं द्वार कहे . मूल.–सच्चं मोसं मीसं, असच्च मोसं मणो तह वईय ॥ उरल विउव्वा हारा, ोल कम्मयग मिय जोगा ॥३१९॥ अर्थः–सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, मिश्र नोयोग, असत्यामृषामनोयोग, जेम ए चार मनना, तेमज चार वचनना योगछे ते हेवे. सत्यवाग्योग असत्यवाग्योग मिश्र ते सत्य, असत्य, वाग्योग, असत्यामृ ावचनयोग. एवं आठ थया , अने सात औदारिकादिक कायना ते आवीरीते. ौदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रिय, वैक्रियमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र, कार्मण ोग. ए सात भेला करिए तेवारे पन्नर योग थाय. ॥ ३१९ ॥ इतिगाथार्थ ॥

अवतरणः–परलोयगई गुणठाणगेसुत्ति एटले जे गुणस्थानकनी साथे जीव प लोके जाय अने जे गुणस्थानक अहीयां होय पण जीवनी साथे परलोके न जाय ते ं वर्णे ने अठ्यावीशमुं द्वार कहेछे. मूल.–मिछे सासाणेवा, अविरयभावम्मि अहिगए अहवा ॥ जंति जिआ पारलोयं, सेसेक्कारस गुणे मोत्तुं॥३२०॥ अर्थः–मिथ्यात्वगुणठा

एम वृद्धिये करतां अग्यारमी वेलाए ११०४४३६०७७१९६११५३३५६९५७६९५ एटला थाय ए संख्याए पांचमी देवकुलिका जाणवी.

ए पांचे देवकुलिका कही ते पांचे खंमदेवकुलिका जाणवी. सांप्रत संपूर्ण देव कुलिकानो अवसर त्यां व्रत व्रत प्रत्ये एकेक देवकुलिकाने सन्नावे करी पम्नंगी प्रमुख नेविषे प्रत्येके प्रत्येके बार बार देवकुलिका उपजे तेवारे बारपंचां शाठ सर्वे म ली देवकुलिका थाय. ते सर्व देवकुलिका इहां कहिये, तो घणो विस्तार थाय; तेथी लगारेके देशमात्र देखाडवासारुं पम्नंगीनेविषे बारमी देवकुलिका कहेनार ठतो ग्रंथकार एक द्विकादि संयोगना कहेनार जे पहेली त्रण राशी कही हती ते मांहे ली गुणाकारक राशी आणवा सारु उपाय कहेले.

मूल.—एगाईएगुत्तर, पत्तेयपयंम्मि उवरिपरकेवो ॥ एक्केकहाणिअवसाण संखया हुंति संयोगा ॥३४७॥ अर्थः—जेटला पदोनो एक द्विकादिक संयोग आणवा वांछि ए, तेवे प्रमाणेज एक आदेदेइने एकोत्तर वृद्धिए करीने उपर उपर क्रमे क्रमे स्थापना स्थापिये. एम आंकनी स्थापनाकरी प्रत्येके व्रत बारनेविषे उपरे परखेवोके० उपरला जे आंक तेमां नीचला घालिये एरीते एकेकहाणि एटले एकेक उपरना आंकनी हाणी करतां वृद्धि कहिये; ते जेम थाय तेम आंकने घालवे करवी, ते ज्यांलगे अवसाणसंखयाके० छेहेडे समस्त आंकनुं प्रक्षेपरूप एतावता सर्वे आंक पूरा घाल्या तेवारे जे आंक थाय तेटला अनुक्रमे एक बे त्रण प्रमुखपदनुं मेलववुं त द्रूप थाय तेसंयोग कहिये. ते आवीरीतेः—

पहेलो एक आगल बीजो ते ज्यांसुधी छेहेडे बार आंक आवे, हवे एको, बग डामा प्रक्षेपे तेवारे त्रण थाय. ते त्रण उपरला त्रण मांहे घालिये तेवारे ठ था य, ते उपरला चारमाहे घालिये तेवारे दश थाय. एम दशने पांचमां घालतां पन्नर थाय, पन्नरने ठमा नाखतां एकवीश थाय, तेने सातमां नाखतां अठावीश थाय. तेने आठमां नाखतां ठत्रीश थाय. तेनेनवमां नाखतां पिस्तालीश थाय,तेने दशमां ना खतां पंचावन्न थाय, तेने अग्यारमां नाखतां ठासठ थाय. हवे उपरे बार छेहेडे आ व्या ते तेमज राखिये. जेकारणे कह्यु के एक्केकहाणि एवा वचनथकी ए गुणका रक राशीनी स्थापनाले.

वली प्रकारांतरे करी देखाडेले. उन्नयमुहंरासिडुगं एनुं वखाण करेले. इहां य द्यपि बारमी देवकुलिका कहेवा मांडी तो पण संक्षेपने अर्थे पंच अणुव्रत आश्री नावना एम ठे उन्नयमुहंके० बेहुए करी बे राशी मांडिये, ते आवीरीते. एक

ल पण श्रावकना नंग जे ठ पहेला अने पठी ठत्रीश, एम वशेने सोल इत्यादिक
ारमी देवकुलिकाने अनुक्रमे करीने गुणाकारक राशी जाणवी ॥ ३५१ ॥
हवे गुण्यराशि कहेठे. मूल.—ठव्वेवय ठत्तीसा, सोल डुगं चेव ठ नव डुगमिक्कं॥ठ सत्त
त्तसत्तय, ठप्पन्न ठसठि चठठठे॥३५२॥ठत्तीसा नवनउई,सत्तावीसाय सोलठन्नउई॥
त्तय सोलस नंगा, अठमगणे वियाणाहि ॥३५३॥ ठणउई ठाहत्तरि, सत्तडुसुन्नि
द हुंति नवमंमि ॥ ठाहत्तरि इगसठी, ठयालासुन्न ठ चेव ॥३५४॥ ठप्पन्न सुन्न सत्तय,
नवसत्तावीस तहय ठत्तीसा ॥ ठत्तीसा तेवीसा, अडहत्तरि ठहत्तरिगवीसा ॥३५५॥
अर्थः—ए चार गाथाए करी कहिये ते आवीरीतेः—पहेला ठ, बीजा ठत्रीस त्रीजा
वशोने शोल, चोथा वारशें ठन्नुं, पांचमा सातहजार सातशो ने ठहोत्तेर, ठठा ठेता
लीश हजार ठशें ने ठपन्न, सातमा बे लाख उंगणाएंशीहजार नवशो ने ठत्रीश, आ
ठमा शोललाख उंगणाएंशिहजार ठशो ने शोल, नवमा एकक्रोड सित्तोतेर हजार
ठशेने ठन्नु, दशमो ठक्रोड चार लाख वासठहजार एकशोने ठहोत्तेर, अग्यारमा
ठत्रीशक्रोम सत्तावीशलाख सत्ताणुहजार ने ठपन्न, वारमा बे अब्ज सत्तर क्रोड
सम्सठलाख व्याशी हजार त्रणशोने ठत्रीश. ॥ ३५२ ॥ ३५३ ॥ ३५४ ॥ ३५५ ॥

हवे ए राशिने आणवानो उपाय देखाडेठे. उक्तंच पढमवएठप्नंगा, ठहिंगुणि
याय वारसवेळाणा ॥ संजोगेहिय गुणिया, सावयवयनंगया हुंति ॥ १ ॥ अर्थः—
पहेला व्रतनेविषे ठ नंग तेने ठ गुणा करिये तेवारे ठत्रीश थायठे; वली ठत्रीशने
ठ गुणा करिए तेवारे वशोने शोल थाय. एम वारवार ज्यासुधी वारगुण्य राशि सपू
र्ण थाय, त्यांसुधी करिये. ते हवे ठ ने ठत्रीश प्रमुख गुण्यराशि अनुक्रमे वार ठास
ठ प्रमुख वारसवेळाणा एटले वारे स्थानक गुणाकारक राशिसाथे गुणतां ठतां
७२,१,२३७६,२४७५२०,३,२६४१०७५२०,४,६१५०७७२७,४३११०१४०६,२
२१७०७३१२,७,८३१४०७७२०,८,२२१७५७३१२०,७,३७७०७६७६१६,१०,
४३५३५६४६६७२,११,२१७६८२३३६,१२,एरीते श्रावकने व्रतना नंग थायपण
विस्तारना नयथकी सूत्रकारे कह्या नथी. अने व्रतिनो करनार शिष्यना अनुग्रहने अर्थे
चार गाथाये देखाडे ठे वाहत्तरी १ ठसत्तरि, २ तेवीसा २ सुन्नडपणसीयाला ३ बी
सा पनरसचउसवि ४ डुनवपणसीइपन्नरठय ५ ॥ १ ॥ चोयालसपंदसइक्कतीसचउ
६ वारतिनवसयराय ॥ इगडुड ७ वीसानवनव, चालीसा एगतेयासी ८ ॥२ ॥ बी
सइगवीसनवसयरि एगवावीस ए सोलठगसत्त ॥ ठसन्नसुन्ननवनव, तिन्निय्दसम
म्मि ठाणम्मि १० ॥३॥ वाहत्तरिठायाला, ठप्पन्नतिपन्नतिचउ ११ ठत्तीसा॥तेवीसाय

लोयप्पियउअकूरो,जिरू असढो सदक्खिन्नो ॥२७०॥ अर्थः—परतीर्थीकना प्रणीत जे अनेरा धर्म ते धर्मोमांहे प्रधानपणायकी जे रत्ननीपरे रत्न तेने धर्मरत्न कहिये, ते श्रीजिनेंद्रनो प्रणीत देशविरति प्रमुख जे धर्म तेने योग्य एवा लक्षणे सहित जे थाय तेहिज देखाडेछे.—एक अखुद्दो तेमां क्षुद्र शब्दे उछसनाव कहिए; ते जेमा न होय ते अक्षुद्र. गंजीर होय तेनी सूक्ष्ममति होय. तेणेकरीने ते सुखे धर्मनो प्रतिबोध पामे, बीजुं रूववं ते संपूर्ण अंगोपांगपणायेकरीने मनोहर आकारनो धरनार ते रूडे आचारे प्रवर्त्ते; तेरीते प्रवर्त्ततो थको जव्यजीवोने धर्मनेविषे गौरव उपजावतो प्रजावक थाय. इहा कोइ कहेशे के नंदिषेण हरिकेशीबल प्रमुख ने कुरूप उतां पण धर्मनी प्रतिपत्ति सांजलियेठइये; तो केम तमे रूपवतनेज अधिकारी कहोछो? तेनो उत्तर कहेछे. इहा रूपवत बे प्रकारेछे. एक सामान्य रूपवंत ने बीजो अतिशय रूपवत; तेमां जे संपूर्ण अंगोपांग पांचेइंद्रिये परवमो होय ते सामान्य रूपवंत कहिए, तेवुं नदिषेणादिकने विषे पण हतुं तेथी अविरोधछे, तथा वली शेष गुण होय तो मात्र एक कुरूपपणानो दोष न जाणवो. अतिशयरूपना धरनार तो श्री तीर्थंकरज होय, यत ॥सवसुराजेरूवं, अंगुठपमाणयंविउविज्जा ॥ जिणपायंगुठपइ. नसोहए जह तहिंगालो ॥ १ ॥ एवा वचन यकी यद्यपि श्रीजगवंत समस्त रूपनिधान थाय तोपण जे रूपे देशकाल वयने विषे वर्त्तमान उताने जेने लोक रूपवंत कहे ते इहां लेवो,त्रीजुं पगइसोमोके० प्रकृति एटले स्वजावेज सौम्य अ निपण आकारनो धरनार होय, जेने देखवाथी लोकोने विश्वास उपजे, प्रवाहे एवाने विषे पाप व्यापार संजवे नही अने तेवा प्राणीनो सुखेथी बीजा पण आश्रय करे. चोथुं लोगप्पियउ एटले इहलोक अने परलोकनेविषे जे विरूद्धाचरण तेना वर्जवा थकी दानादिक गुणेकरीने लोकने प्रिय होय ते धर्मनेविषे बहु मान उपजावे, पाचमुं अकूरो एटले त्यां जे माठा अध्यवसायनो धरनार होय ते पारका छिद्र जोय ते पुरूषनुं सपाप चित्त होय अने तेना करेला अनुष्ठान पण सफल नथाय, माटे ते अकूरज होय. ठहुं जीरू एटले इहलोक तथा परलोकना अपाययकी बीहितो रहे एवो जे होय ते कारण उते पण नि शंकपणे पापनेविषे प्रवर्त्ते नही, सातमुं असढ एटले कपटे करी रहित उतो अनुष्ठाननो करनार होय. केमके जे प्राणी कपटे करी सहित होय ते परने वंचवानेविषे चतुरपणाने लीधे सर्व लोकोने अविश्वासनुं स्थानक थाय, आठमुं सदक्खिन्नो एटले पोताना कार्यने परिहारे पारका कार्य करवाने विषे रसिक चित्त होय ते सकल लोकने अनुवर्त्तनीय थाय. ॥ २७० ॥

मूल —लज्जालुउ दयालू, मज्झत्थो सोमदिट्ठि गुणरागी॥सक्कहसपक्खजुत्तो, सुदीह
सी विसेसन्न ॥ ३७१ ॥ अर्थ —नवमो लज्जानो धणी ते अकार्य करवानी वातन
लज्जा पामे, पोतेजे व्रत नियम अंगीकार कर्याछे ते ठामे नहीं, दशमो दयालु ए
ले दयावंत होय दुःखी प्राणियोने देखी तेनां दुःख जागवाने विषे अनिवार
रे केमके जे दयाछे ते धर्मनुं मूलछे यत दीनहीन जन दृष्ट्वा, दया यस्य न जायते
सर्वज्ञनापितोधर्म्मः स्तस्य चित्ते न विद्यते ॥ १ ॥ अग्यारमो मज्झत्थो एटले मध्यस्थ होय
राग द्वेषे करी रहित छे जेनी बुद्धि, एवो जे होय ते अरक्तअद्विष्टपणा थकी त
वैने वल्लभ होय,बारमो सोमदिट्ठि एटले कोइने पण उद्वेगना करनार न होय एवा
जे होय ते प्राणीउने दर्शनमात्रे करी प्रीति उपजावे तेरमो गुणरागी एटले गुण
जे गांभीर्यपणुं, थिरतापणुं धैर्यपणुं, औदार्यपणुं इत्यादिकनेविषे राग करे एवो
होय ते गुणना पक्षपातपणाने लीधे जे ज्ञानादिक गुणे सहित गुणवंत होय
तेनेविषे रागकरे, निर्गुणनी उपेक्षा करे, चउदमो सक्कहसुपक्खजुत्तो एटले सद्धा
रीपणाये करी नलीज वात करे पण भूंडी वात मात्र नज करे ते सक्कह एवा उ
मित्र तेणे सहित अथवा धर्मबाधानो परिहरणहार जे परिवार तेणे करीयुक्त
होय एवाने कोइ उन्मार्गे पमाडी शके नहीं एक भली भली कथानो करनार ए
जुदो गुण कहेछे अने सुपक्खयुक्त एटले भला विनयादिक गुण सहित एवा परि
वारे युक्त ए जूदो गुण मानेछे, अने तेने बदले मध्यस्थ अने साम्यदृष्टि ए बे न
एक गुणकरी मानेछे, पन्नरमो सुदीहदंसी एटले घणा विचारकरी ज काय परिणामे
रुडुं होय तेवा कार्यना करनार परिणामिकी बुद्धिय सहित थका इह लोक तथा
धी जे कार्यकरे ते पण विचारीने करे,सोलमो विसेसन्नु एटले सार न मारना वि
भागनो जाण होय पण जे गुण दोषना विभागना जाण न थाय ते आपन गुण
पणे करे, अने गुणने दोष पण करे ॥ ३७१ ॥

मूल —वुड्ढाणुगो विणीउ, कयन्नुउ परहियद्धकारीय॥तहचेव लद्धलक्खो इगवीस
गुणो हवइ सड्ढो ॥३७२॥ अर्थ —सत्तरमो वृद्धानुग एटले वृद्ध ते जनी गुण उपानवा
ते अर्थे परिणत मतिछे तेनो अनुग एटले सेवनार एटले वडेरांना सेवनार तना स्थ
कारी जे होय तेने आपदा न आवे, यत यदेक स्थविरा धत्त नतत्तरुणकोट्य ॥ना
लज्जया हति, वृद्धाभ्यात्सप्रजित ॥१॥ ए दृष्टांत जाणवुं अढारमो विणीउ ए
विनीत गुरुजनने गौरवना करनार एवा विनीतने सर्व समीहित सप्राप्ति होय त
विनीतने नयाय यत वीणीउ थावहइसिरि लहइ विणीउ जसच किनिच ॥ न

कयाइ डुविणीउं सकज्ज सिद्धिं समाणेइ ॥१॥ उंगणीशमो कयन्नुउ एटले कृतगुण नो जाण. एटले कोइके थोमो पण इहलोक संबंधी अथवा परलोक संबंधी उप कार कीधो होय तो तेनो करेलो उपकार उलवे नही अने जे कृतघ्नी होय ते इहां सर्वत्र निंदा पामे. वीशमुं परिहियच्चकारिय एटले परने कारणे हितार्थनां कामनो कर नार होय अने पहेलुं जे सदाक्षण कह्यु ते अनेराना कह्याथी काम करे अने इहांतो परने हीतार्थकारी ते पोतेज बीजाना हितने अर्थे प्रवर्त्ते. एटलो ए वे ने मांहोमाहे नेदछे जे स्वनावेज परना कह्याविना परहितार्थकारी थाय ते निरीह पणाये करीने अन्यने धर्मने विषे स्थापे, एकवीशमुं तहेवके० तेमज वली लक्ष्ल क्खोके० लब्ध, लक्ष एटले लाध्योछे लक्ष जेणे एटले शिखवाने योग्यजे अर्थ अनु ष्टान विशेष ते लब्ध लक्ष. एतावता पूर्वान्यिस्तनी परे सर्व धर्मकृत्य तत्काल आ दरे एवो जे होय ते एवाने वांदणो पमिकमणो पमिलेहण प्रमुख शिखावी शकिये. एवा ए एकवीशगुणेकरी सहित श्रावक थाय. ॥२७२॥ इतिगाथात्रयार्थ ॥

अवतरणः—तेरिच्छीणुक्किछगप्नठियत्ति एटले तिर्यंचने उत्कृष्टे गर्नस्थितिनुं वसोने चालीशमुं द्वार अने माणुस्सीणुक्किछगप्नठिइति एटले मनुष्यनी स्त्रीनी उत्कृष्टीगर्नेस्थि तिनुं वसोने एकतालीशमुं द्वार तथा तग्गप्नस्सकायठिइत्ति एटले ते मनुष्यनीस्त्रीना गर्ननी कायस्थितिनुं बशोने बेतालीशमुं द्वार ए त्रण द्वार दोढगाथाये कहेछे. मूलः— उक्किछगप्नठिई, तिरियाणं होइ अछवरिसाइं॥गप्नठिई मणुस्सीणु क्किछा होइ वरिसबा रसगं॥२७३॥ गप्नस्सयकायठिई,नराण चउवीसवरिसाइं॥२७४॥अर्थः—तिर्यंचने उ त्कृष्टथी गर्ननी स्थिति आठ वर्ष थाय अने आठ वर्ष उपरांत पछी खरी पडे अथ वा प्रसव थाय, अने मनुष्यनी स्त्रीने गर्न संनव थाय;तेकोइक जीवने वणीज पापनी राशिने उदये एवा वात पित्तादिकने दोषे अथवा देवताए मंत्रादिके थंन्यो थको गर्न माहे वार वर्ष उत्कृष्टे स्थिति होय; जेम सिद्धराय जेसिंघदेने वार वर्ष गर्नमांहे सावकि माताये मंत्रे करी वांधी राख्यो सांनलिये छेये, पछी एक योगिये उपाय करीने छोडाव्योछे तेथी नामने आदे सिद्धि ए बे अक्षर नाखीने सिद्धराज जे सिंघदे नाम दीधुं. ए नवस्थिति जाणवी.

अने कायस्थिति ते गर्नमाहे मनुष्यमां कोइ जीव आवी उपन्यो ते पूर्वोक्त प्रकारे वार वर्ष जीवीने त्याज मरण पामि वली कर्मना वशथकी तेज कले वरमांहे गर्नावासे ते जीव उपन्यो. वली पण त्या वार वर्ष जीवतुं रहे ए काय स्थिति उत्कृष्टे चोवीश वर्षनी नावना जाणवी. इति सार्द्धगाथार्थ.॥२७३॥२७४॥

अवतरण –गप्नठिय जीव आहारोत्ति एटले गर्भने विषे रह्यो थको जीव जे आ
हारनु ग्रहण करे तेनु वशोने तेतालीशमु द्वार कहेछे मूल –पढमे समए जीवा
उप्पन्ना गप्नवासमप्नमि ॥ उय आहारती, सव्वप्पणयाइअ पूयव्व ॥२७०॥ अर्थ –पहे
ले समये जीव गर्भावासमा उपन्या थता जे मातानु शोणित अने पितानु वी
ए उज आहारनु ग्रहणकरे ए वात दृष्टांत पूर्वक देखाडेछे सर्वात्मनाके० समस्त
आत्माना प्रदेश तेणेकरीने पूयवके० पुडानीपरे जेम पुडाने तेलेजरी कढाइमां
नाखिये पछी ते पुडो समस्त प्रदेशे तेलनु ग्रहण करे तेम जीव पण आहार नि
मूल –उयाहारा जीवा, सव्वे अपज्जत्तगा मुणेयव्वा ॥ पज्जत्ताउण लोमे, पक्खेवे हुंति
नई पवा ॥२७६॥ अर्थ –उजाआहारी जीव ते सर्व अपर्याप्ता थता जाणवा अने प
र्याप्ता थया पछी लोमाहारी होय अने प्रक्षेपाहारनी भजना जाणवी इति गाथार्थः॥
अवतरण –रिउरुहिरसुक्कजोए जत्तियकालेण गप्नसन्नूईति एटले स्त्रीनु रति
रुतु संबधी अने पितानु शुक्र वीर्य तेने योगे जेटले काले गर्भनो संभव थाय ते
नु वशोने चुमालीशमु द्वार कहेछे मूल –रिउसमयाहायनारी नरोवनोगेण गप्न
सनूई॥वारसमुहुत्तमप्ने, जायइ उवरि पुणो नेय ॥२७७॥ अर्थ –महिनामहिनानेप्रांते
त्रण दिवस सुधी निरंतरपणे स्त्रीने योनिद्वारे लोही अवेछे तेने रुतु कहि
ये, ते त्रण दिवस रुतु समय कहिए ते थकी उपरांत शुद्धिने अर्थे स्त्री स्नान क
रे तेवार पछी पुरुषनी साथे संयोग मलवाथी गर्भनी सनूति एटले उपजवु थाय,
ते वार मुहूर्त एटले चोवीश घडी सुधी होय, केमके वार मुहूर्त सुधी शुक्र न शोणि
त नेहु अविध्वस्त पणे थाय पछीविध्वंस पामे तेथी उपरांत न मलवे इति गाथार्थः॥
अवतरण –जित्तियपुत्तागप्नति जेत्तियपुत्तोयपियरोय पुत्तस्सत्ति एटले जेटना पुत्र
गर्भने विषे थाय तेनु वशाने पिस्तालीशमु द्वार अने जेटना पिता पुत्रने थाय तेनु
वशाने छेतालीशमु द्वार एवा अर्थ जणावतो एक गाथाये करी बे द्वार कहेछे
मूल –सुय लक्खपुहुत्त होइ एगनरभुत्तनारिगप्नमि ॥ उक्कोसेण नवसय, नरभुत्ती
इ एगसुत्त ॥२७८॥ अर्थ –सुतके० बेटा ते लाख पृथक्त्व थाय पण ते क्या थाय
के एक नरे नागवी जे नारी तेना गर्भनेविषे थाय तेमा एकबे अथवात्रण जीवना रहे
बीना थोडासा कालमा विनाश पामे उक्कोसेणति एटले कोइएक दृढ संघयणनी धरना
मदा कामातुर स्त्री होय अने ते वार मुहूर्तमा नवशा पुरुष नोगवे ना त स्त्रीनेविषे
पुत्र थाय तेना नवशा पिता जाणवा, एटले ते नवशा पितानो एक पुत्र जाणवो
अवतरण –महिना गप्नअनवण कानात्ति पुरिस अवीयकानात्ति ए

महिला जे स्त्री तेने गर्भ न होवानो काल अने पुरुषने अबीजपणाना काल तेवं थी वर्शो ने लडतालीशमुं द्वार कहेछे मूल:—पणपन्नाऽ परेणं,जोणीपमिलाऽएमहिलि याणं ॥ पणहत्तरीयपरउ,होइ अबीउ नरोपायं ॥ २७७ ॥ वासमयाउयमेयं,परेण जा होइ पुव्वकोडीउ॥तस्सद्ध अमिलाया,सव्वाउयवीसनागोय ॥२७०॥ अर्थ —पंचा वन्न वर्ष उपरांत स्त्रीनी योनी पमिलाए एटले संकोच पामे. त्यां पणी स्त्रीने योनि संकोच पामता पहेलां पण ऋतु बंध थई जायछे; तथापि कोइने बंध थइ न जाय. तोपण पंचावन्नमे वर्षतो अवश्य बंध थायछे. ऋतु आवे तोपण तेथी गर्भोत्पत्ति न थाय अने पंचावन्नमा वर्षथी उपरांत तो ऋतु पण न आवे ने गर्भ पण नथा य. तेमज पणहत्तरिके० पंचोत्तेर वर्ष उपराते प्राय अबीज नर थाय ॥ २७७ ॥

हवे ए केटला वर्षना प्रमाणना आउखावालाने थाय? ते बीजी गाथाए देखाडेछे. एकशो वर्षना आयुष्यना धणी हमणांना कालना जे मनुष्यछे तेने ए कालमान गर्भसंभवनुं कसुं; अने जे सो वर्षना आयुष्यथी उपरांत बसो अथवा चारसोथी मांरुो ज्यांसुधी उत्कृष्टे पूर्वकोडी सुधी जो आयुष्य होय तो तेने अर्धे अर्धा आ युष्यसुधी अम्लान एटले स्त्रीनी योनी गर्भधारण करवाने समर्थ होय, पछी गर्भ धरवाने समर्थ न होय. अने जेने एकवार प्रसव छे, एवी युगलियानी स्त्री तेने स दासर्वदा अवस्थितयौवनपणुज होय. सव्वाउयके० सर्व पुरुषोने एटले पूर्वकोडी आयु ष्यना धणी अथवा तेथी उंगा आयुष्यना धणी जे होय; एवा पुरुषोने जेने जेटलुं आयुष्य तेने ते आयुष्यनो वीशमो भाग टाली वाकीना कालमा सबीजपणु जा णवु अने वीशमे भागे अबीजपणु होय ॥ २७० ॥ इति गाथाद्वयार्थ ॥

अवतरण:—सुक्काइण पमाणति एटले शुक्रादिकना माननुं बसोने अडतालीश मुं द्वार कहेछे. मूल:—बीयंमुसुक्कंतहसो णियंचगणंतुजणणिगप्भंमि ॥ उयंतुउवत्तं स्स कारणंतस्सरूवंतु ॥२७१॥ अर्थ:—बीज कहिये कारण, ते शरीर ते संबंधी पिता नुं शुक्र तेमज शोणित एटले मातानुं लोही ए वेउ; तेमज स्थानक ते क्षेत्र भूमिकानी परे माताने गर्भ उदरमांहे, त्या जे शुक्रने शोणितनो समुदाय ते उज कहिये. एवो उज ते शरीर उपजनो हेतुके० कारण जाणवु. तस्सरूवतुके० ते शरीरनुं स्वरूप ते आगली गाथाए देखाडेछे. ॥ २७१ ॥

मूल:—अ घारसपिष्करंमयस्स संधीउहुंतिदेहम्मि ॥ वारसयं सुलियकरंकया इह तहछपंसुलिए ॥२७२॥ होइकडाएसत्तंगुलाइं जीहापलाइ पुण चउरो॥अछीउदोप लाइ, सिरतु भणियं चउकवालं ॥२७३॥ अर्थ:—मनुष्यना शरीरनेविषे पृष्ट करम्क

एटले रसपृष्टादिक गती रूपते अढार थायछे, अनेसा [illegible] पण अढार था[illegible]
[illegible] गाउ थाय तेम जाणवा हवे जे अढार सांधाछे तेथकी चार पाग[illegible]
त बेन्ने पास आगरी हैराने मध्ये लागी ने पाञाने आकारे परिणमे, ए[illegible]
कहते तद्उपसुनीए जेम चार पासलीरूप करमकें० वासो थाय तेम [illegible]
पासुनी० [illegible] कमाहो ते जेय ठ सा [illegible] थकी थाय. तेन वे [illegible]
त्यारे रउ पसराडे हैयाथकी नीची ढनी कुग्वथकी उपर मांहोमांहे थ[illegible]
ती थाय ते कडाह कहिये

हवे जीन जे वे ते जातपणे आत्मांगुले सात अंगुल प्रमाण थाय, [illegible]
[illegible] तगारे मगध्देश प्रसिद्ध पन तेरा पलने माने चार पन थाय, अने [illegible]
[illegible] त [illegible] प्रमाण थाय अने सिरकें० मस्तक ते [illegible]के०थी [illegible]
[illegible] [illegible]कारक०चार रूपाने हाफने मर्द करी निपज ॥३०३॥ ॥३०[illegible]

मूल—[illegible] [illegible], बत्तीस दसण [illegible]॥ [illegible] समग, [illegible]
[illegible] ॥ ३०४ ॥ अर्थ—[illegible]के० [illegible] प्रमाण [illegible] थाय [illegible]
[illegible] बत्रीश [illegible] दांतना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] समयपाक० सिद्धांतमाह पच्चाश [illegible] मान कहते ॥३०५॥

मूल—[illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible]
[illegible] ॥ ३०५ ॥ अर्थ—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रमाण [illegible]
[illegible] आंगुल। [illegible] [illegible] स्थान [illegible]
[illegible] मान अधिक थाय ॥ ३०७ ॥

मूल—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ३०८॥ अर्थ—[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] अनुग्रह [illegible]
[illegible] ॥ ३०९ ॥

मूल—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] ॥३०१॥ अर्थ—[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] अनुग्रह [illegible]

मातुं होय. जेम ए ऊर्ध्वगामिनी कही तेमज नहिसयकं० एकसोने सात अनेरी पण नसो ते अधोगामिनी जाणवी ॥ ३८७ ॥

मूल —पायतलमुवगयाण, जंघाबलकारिणीणणुवघाए ॥ उवघाएसिरिविंयणं, कुणंतिअंधत्तणच तहा ॥ ३८८ ॥ अर्थ —जे पादतलप्रत्ये नीचो गइछे तेउने अनुपघाते विनाश थएहुंते जंघानु बल थाय पीडा प्रमुखने बलनी करनार थाय अने तेनेज उपघाते शिरपीडा, अनेचक्षुने अंधपणु प्रमुखनी करनार थाय.॥३८८॥

मूल —अवराणगुदपइठाण होइ सक्लंयंतहसिराण ॥ जाणवलेण पवत्तइ, वा ऊमुत्तं पुरीसंच ॥ ३८९ ॥ अर्थ —अपरकं० बीजी वली गुदनेविषे जे रहीछे तेपण एकसोने सात होयछे, जेना बलेकरी वायु, मूत्र अने पुरीषकं० वडिनीति प्रवर्त्तेछे.

मूल —अरिसाउ पंडुरोगो वेगनिरोहोय ताणयविघाए ॥ तिरियगमाणसिराणं, सहिसय होइ अवराणं॥३९०॥ अर्थ.—एने उपघाते हरस थाय, पांडूरोग, वेगकं० मूत्र वडिनीतिनुं रुंधन थाय.तेम तिर्यगामिनी नस ते वली एकसो ने सात थाय.

मूल —बाहुबलकारिणीउ, उवघाए कुच्छिउयरवियणाउ ॥ कुर्वंति तहन्नाउ, पण वीसं सिंभधरणीउ ॥ ३९१ ॥ अर्थ.—ते बाहुने बलनी करनार अने एनाज उपघाते कुक्षी उदर तथा पेटनी वेदना थाय, तेम बीजी पच्चीश नसो ते सिभकं० श्लेष्मनी धरनार छे अने तेनेज उपघाते श्लेष्म थाय ॥ ३९१ ॥

मूल —तह पित्तधारिणीउ, पणवीस दसय सुक्कधरणीउ ॥ इयसत्तसिरसयाइं, नाभिप्पभवाइं पुरिसस्स ॥३९२॥ अर्थ.—तेमज पित्तनी धरनार पच्चीश नस थायछे. वली दश नसो ते शुक्र एटले वीर्यनी धरनार. एरीते सातसो सिराकं० नसो ते नाभीथकी प्रभवकं०उपजवुंछे जेउनु. ते पुरुषने जाणवी ए पुरुष आश्री नसो कहीछे.

हवे स्त्री तथा नपुंसकना शरीरमाहे पुरुष जेटलीज होय किंवा विशेष होय? ते कहेछे. मूल —तीसूणाइ इत्थीण वीसकणाइ हुंति संढस्स ॥ नवएहारूणसयाइ, नवधमणीउंन देहंमि ॥ ३९३ ॥ अर्थ —त्रीशे ऊणी सातशे नसो ते स्त्रीना शरीरनेविषे होय, अने वीशे हीन सातसो नसो नपुंसकना शरीरे थाय छे; वली नवसो स्नायुकं० न्हानी नसो जेनी साथे अस्थि बांध्याछे ते जाणवीयो. अने नवधमणी कं० रसवह नाडी एटले जेना प्रभावथकी रस गामो गामे परिणमे एवीछे. ३९३

मूल.—तहचेव सव्वदेहे, नवनउइलक्ख रोमकूवाणं ॥ अद्धुट्ठाकोडीउ, समंपुणो केसमंसूहिं ॥ ३९४ ॥ अर्थ —तेम वली सर्वमली देहनेविषे नव्वाणुलाख रोम कूपछे अने साडात्रण क्रोड, नव्वाणु लाख, केश मस्तकना निमाला, तेणे सहित

जाण अने स्मश्रुके० दाढी तथा मुछना निमाला तेणे पण सहित जाणवा ॥३०४
मूल —मुत्तस्स सोणियस्सय, पत्तेय आढयवसाएउ ॥ अध्धाढयनणितिय, पउम
लयवच्चस्स ॥ ३०५ ॥ अर्थ —मूत्र अने शोणित ते लोहीनु मागध देश प्रति
मान विशेषरूप आढो थाय, ते आवीरीते —समो हाथ धान थकी नखो तेने थल
कहीए, एवी बे असइए एक पसइ थाय, तेवी चार पसइए एक सेइ थायछे, तेवी
चार सइए एक कुलव थाय, अने चार कुलवे एक पाथो थायछे, अने चार पत्थे
आढो थाय, चार आढे डोण थाय, इत्यादिक एवो आढा वशानो ते श्रुतना ग
ण कहेछे, पत्थके० एक पाथा प्रमाणे मस्तुलक नाम मायानु भेजु जाणवु, अन
एक वली एम कहेछे के मेद फेफसादिने मस्तुलक कहिये ॥ ३०५ ॥
मूल —असुइ मलपउ छक्क, कुलउं कुलउंय पित्त सिनाण ॥ सुकस्स अद्ध कु
उ, दुछ हीणा हिय होज्जा ॥३०६॥ अर्थ —अशुचि जे मल तेना छ पाथा जाणवा
तथा पित्त अने श्लेष्मनु प्रत्येके कुलव कुलव जाणवु वली शुक्र जे सातमी धातु तना
अर्धा कुलव जाणवो इहां आढ प्रस्थादि मान जे कह्यु ते बाल कुमार पुरु
न ते आश्री दोयसईउं इत्यादिक क्रमे पोत पोताने हाथ प्रमाणे जाणवु हवे न
मान थकी शुक्र शोणितादिक ज्या उंगा अधिका थाय त्यां ते वातादिके दूषित जाणवां
हवे स्त्री पुरुषना शरीरने विषे श्रोत्र सख्या कहीने उपसहार कहेछे मूल —एक्का
रसइत्थीए, नवसोयाइ हवंति पुरिसस्स ॥ इयकि सुइत्तण अहिमम मनरुहिर सत्त
ए ॥३०७॥ अर्थ —बे कान, बे आंख, बे नाकना द्वार एकमुख बे स्तन एक प
यु एटले गुदस्थान अने उपस्थ ते योनि, ए अग्यार स्त्रीने मनुष्यगति आश्री
श्रोत सख्या जाणवी, अने तिर्यंचणीमा जे बकरीप्रमुख बे थान वाली हाय तेने
अग्यार होय, तथा गाय प्रमुख चार थान वालीने तेर होय शूकरी प्रमुख आठ
थान वालीने सत्तर श्रोत होय ए निर्व्याघाते एक थानवाली वाना दश होय प्र
थान वली गायने चार होय बे स्तन टालीने नव पुरुषने होय गाय प्रमुख जाणवु
एरो अस्थिके० हाड मास लोहीना सघातके० समूहने जनविष एवा नरमन वि
वे शु शुचिपणु कहवाय? अपितु कांइज नही ए अपवित्रने छे इति गाथसमस्तार्थ
अवतरण —सम्मत्ताइ उत्तम गुणाण लाहतरनु उक्कोस एटल सम्यक्त्वादिक उ
मगुणातरना लाभांतर उत्कृष्टे केटले काले थाय, तेनु वमान आगणपत्र
र कहेछे मूल —सम्मत्तमिउलद्धे, पलियपुहुत्तेण सावउं होइ ॥ चरणो वसम
ण, सायरसखतरा हुति ॥ ३०८ ॥ अर्थ —सम्यक्त्व लाध्या पछी पल्योपम

थक्त्वे श्रावक थाय. इहां ए नाव के जेटली कर्मनी स्थिति छतिये सम्यक्त्व लब्ध मान थयुं होय,तेवार पछी अप्रतिपत्ति सम्यक्त्वे देवता ने मनुष्यमांहे उत्पत्ति थाय ते कहेछे. यतः-एवअप्परिवडिए,सम्मत्तेदेव मणुअजम्मेसु॥ अनयरसेढिं वज्जं, एग नवेणच सव्वाइं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व सहित नव पल्योपम स्थितिक, देवतामांहे उप न्यो जीव जेटली स्थिति खपावे तेटली वली बीजीकर्मनी स्थितिनवी बांधे; तेमाटे देशविरतिपणु देवतामा न पामे, अने पल्योपम पृथक्त्व लक्षण कर्मनी स्थिति ख पावी छते, देशविरति पामे. अथवा तीव्र शुन परिणामना वशथकी जेणे कर्मनो घणी कर्मनी स्थिति खपावीछे एवा जीवने एक नवनेविषे पण अन्यतर श्रेणीवर्जी शेष सर्व थाय, इहां श्रेणी वर्जी कह्यु ते सिद्धांतने मते एक नवनेविषे बे श्रेणी न था य. कोइ उपशमश्रेणी कोइ क्षपकश्रेणी पडिवजे. ए नावार्थ छे.

हवे चरण शब्दे सर्व विरतिरूप ते देशविरति पाम्या पछी संख्याता सागरोपम पूर्वकर्मस्थितिमाथी क्षय जाय तेवारे सर्वविरतिपणु पामे. एम चारित्र पाम्या पछी संख्याता सागरोपम पूर्वली कर्म स्थितिमांथी क्षय थए छते उपशमश्रेणी करे, तेवारपछी संख्याता सागरोपम कर्मस्थिति खपावे थके क्षपकश्रेणी पडिवजे,ते कारणे कह्यु जे चारित्र, उपशमश्रेणी ने क्षपकश्रेणी ए सर्व प्रत्येके संख्याता संख्याता सागरोपम कर्मस्थिति खपाव्याने आंतरे थाय. ॥ ३९८ ॥ इतिगाथार्थ. ॥

अवतरणः-नलहंतिमाणुसुत्तं सत्ताजेणतवुवट्टत्ति एटले ज्यांथकी निकल्याथका जीव मनुष्यपणु न लहेके० नपामे तेनुं वखोने पच्चाशमुं द्वार कहेछे. मूलः-सत्तमि महि नेरईया, तेऊवाऊ अणंतरुवट्टा ॥ नलहंति माणुसुत्तं, तहा असंखाउ आ सव्वे ॥ ३९९ ॥ अर्थ -सातमी नरकपृथ्वीना नारकी त्यांथकी उद्धर्या छतां मनु ष्यपणुं पामे नही, एमज तेऊकाय अने वाउकाय थकी निकल्याछता अनंतर मनु ष्यपणुं न पामे, तेमज असंख्यातावर्षना आउखावाला मनुष्य तथा तिर्यंच जेटला छे ते सर्व अनंतर नवे मनुष्यपणु न पामे. ॥ ३९९ ॥ इतिगाथार्थ. ॥

अवतरणः-पुव्वंग परिमाणंति एटले पूर्वांगना परिमाणनुं वखोने एकावन्नमुं द्वा र कहेछे. मूलः-वरिसाणं लक्खेहिं, चुलसी संखेहिं होइ पुव्वंगं ॥ एयंचिय एयगुण, जायइ पुव तयंतु इमं ॥ ४०० ॥ अर्थः-चोराशीलाख वर्षे एक पूर्वांग थाय. तथा एज चोराशीलाखने एज चोराशी लाख गुणा करिये तेवारे एक पूर्व थाय. तयं तुइमंके० ते ए आगलि गाथाए देखाडेछे. ॥ ४०० ॥

अवतरणः-माणं पुव्वस्सत्ति एटले पूर्वना माननुं वखोने बावनमुं द्वार कहेछेः

मूल –पुव्वसउ परिमाण,सयर खलुवासकोडि जरकाउ ॥ उप्पन्न च सहस्सा, वास कोडीण ॥ ॥ ४०१ ॥ अर्थ –पूर्वनु परिमाण खलु इति निश्चे साये सि ख कोडी छपन्नहजार कोडी एटली वर्षनी कोडी जाणवी ॥ ४०१ ॥ इतिगाथ

अवतरण –लवण सिहमाणति एटले लवणशिखाना परिमाणनु वर्णन नमु कार कहेले मूल – दस जोयणाण सहसा नवणसिहा चक्रवालउ स्रा सोलस सस्सहस उच्चा, सहस्समेग तु उगाढा ॥४०२ ॥ अर्थ –लवणसमुद्रनी शि ते लवणसमुद्रनो वे लाख योजन पट पहोलाइए ल, त्या पचाणु हजार योजन धीपनी जगती थकी परहा जइये अने लवणसमुद्रनी जगतियकी पचाणु हजार योजन उरहा आवीए वचमा दशहजार योजन प्रमाण नाची ए शिखाले त स्फटिकनो पाटो होय, तेम चक्रवालनी परे एटले पडडान आकार रहेके० वि रे छे अने उचपणे सोलहजार योजनले तथा अवगाहक० उमपणे एकहजा योजन धरतिमाहेले ॥४०२॥ इतिगाथार्थ ॥

अवतरण –उस्सेहगुल मायगुल पमाणगुल पमाणति एटले उत्सेधागुल, आ त्मागुल ने प्रमाणागुलना प्रमाणनु वर्णने चापन्नमु द्वार कहले मूल –उस्सेहगुलमा य, गुलच तइय पमाणनामच ॥ इयतिन्निअगुलाइ वाग्हिति समयमि ॥४०३॥ अर्थ –उत्सेध शब्देकरी देवादिकना शरीरनु उचपणु तना निर्णय करवासारु प्र सिद्ध जे अगुल तेने उत्सेधागुल कहिय, अथवा उत्सेध शब्द अणताण सुहुम प रमाणु पोग्गलाण, समुदय समिइ समागामण एगववहार परमाणू इत्यादिक क्रमे करी जे उत्सेधके० वृद्धि ते थकी थयोजे अगुल ते उत्सेधागुल जाणवु अने वक्ष्माण लक्षणे सहित पुरुषनु पोतानु जे अगुल ते बीजु आत्मागुल जाणवु त्रीजु पमाणके० प्रमाणागुल ते आवीरीते –परम प्रकर्षरूप ज प्रमाण प्राप्त अगुल ते प्रमाणागुल जाणवु ए थकी बीजु कोइ आगुल महोटु नथी अथवा ना कने व्यवहारे राज्यादिकनी स्थिति प्रमाण तेनु प्ररूपणहार प्रमाणभूत था अवसर्प्पिणी काले श्री आदिदेव भरत चक्रवर्ति एना प्रमाणभूत पुरुष तनु अगुल ते प्रमाणागुल जाणवु भरतने आत्मागुलने अने प्रमाणागुलने सरखापणु जाणवु, ए रीते त्रणे अगुल सिद्धातनेविष वापरिये छे समस्त प्रमाणनो आ दि कहेले, जेणे अगुल जाणता सुजन थाय, त रीत आगल कहले ॥ ४०३ ॥

मूल –सत्थेण सुति खेणवि छेत्तुभत्तु च ज किरनसक्का ॥ त परमाणु सि आ वयति आइ पमाणाण॥४०४॥ अर्थ –अत्यत तीक्ष्ण शस्त्रकरी पण न काइ रीत

छेदाय नही, कटको पण त्रोडीने जूदो करी शकाय नही, नेदाय नही, तेनेमांहे नेव
बीजे पासे कोइ काढी शके नही एवाने सिद्धपुरुष जे ज्ञानना धणी ते परमाणु
कहेछे. ते केहेतु छे समस्त जेटला प्रमाण छे तेनी आइके० आदि एटले धुरे जाणवुं.
हवे आगल प्रमाणना विशेष देखाडेछे मूलः—परमाणू तसरेणू,रहरेणू,अग्गयंचवा
लस्स॥लिक्खाजूयाय जवो, अठगुण विवढिआ कमसो ॥४०५॥ अर्थ—एवा अनंते
सूक्ष्म परमाणुए एक बादर परमाणु जाणवुं. तेवा आठ बादर परमाणुए एक त्रसरेणु,
आठ त्रसरेणुए एक रथरेणु, आठ रथरेणुए एक वालाग्र, आठ वालाग्रे एक लीख,
आठ लिखे एक जुका,आठ जुकाए एक यव एम अनुक्रमे आठगुणा परमाणुआ थकी
करिये, एटले एम सातवार आठगुणा करता जेटला बादर परमाणुआ थाय ते कहेछे.
मूल—वीस परमाणु लक्खा, सत्ताणउई भवे सहस्साइं ॥ सयमेगं बावन्नं, एग
मित्ते अंगुले हुंति ॥४०६॥ अर्थ—वीशलाख सत्ताणुहजार, एकशोने बावन, एटला
परमाणु एक आगुलनेविषे होय. अर्थात आठयवे एक उत्सेधांगुल थायछे. ४०६
मूल—परमाणुं इच्चाइं, कमेण उस्सेह अंगुलं भणिअं॥ जं पुण आयगुलमे रि
सेणतं नात्थि विहिणा ॥ ४०७॥ अर्थ—धुरापरमाणु इत्यादिक अनुक्रमे करी उ
त्सेधागुलनु मान श्रीतीर्थंकर देवे कह्यु, अने बीजुं वली जे आत्मागुल कह्युछे ते
आम थाय. तेज विधि देखाडतो गाथा कहेछे. ॥ ४०७ ॥
मूल—जे जम्मि जुगे पुरिसा, अठन्नयगुल समूसियाहुंति ॥ तेसिं जं नियमंगुल,
आयंगुलमेठनं होइ ॥४०८॥ अर्थ—जे युगनेविषे जे पुरुष पोताना आंगुले करी
एकसोने आठ आगुल उंचो होय ते पुरुषना पोताना अंगुल ते इहा आत्मागुल थाय.
हवे जे अधिका उछा थाय तेनी कइरीते वातछे ? ते कहेछे. मूल—जे पुणएय
[illegible]णा. ऊणा अहियाय तेनिमेयतु ॥ आयंगुलं नजणइ, किंतुतदा नास मेवजि
४०९ ॥ अर्थ—जेकोइ पुन के० वली ए प्रमाणथकी उछुं अथवा अधिकुं हो
तेनु जे अंगुल ते आत्मागुल न कहवाय; किंतु ते आत्मांगुल आभास जाण
हा व्याकरणमां आभास प्रत्यय कुत्सादने एटले निंदाने अर्थे छे. एतावता ए
काइ गणनामांहे न होय. ॥ ४०९ ॥
रीते आत्मागुल कहीने हवे प्रमाणागुलनुं स्वरूप जणावतो गाथा कहेछे
उस्सेहगुलमेगं, हवइपमाणंगुलसहस्सगुण ॥ उस्सेहगुलदुगुणं, वीरस्सा
णियं ॥ ४१० ॥ अर्थ—उत्सेधागुल एक थकी सहस्र के० हजार, प्रमाणांगु
गुणो थायछे. ते आवीरीते.—चउसयगुणं पमाणं एवां वचनथकी चारसे

गुणो विस्तारे थाय, अने अढी गुणो जाडपणे होय ते चारसे अढी गुण
तेवारे सहस्रगुणके० हजार गुणु प्रमाणांगुल थाय, अने उत्सेधांगुलथी व
वर्द्धमान स्वामिनु अंगुल कह्युंछे,ए गाथानो अर्थ मात्र देखाड्यो इहां उत्सेध
प्रमाणांगुलनी वक्तव्यता टीकामां घणीछे, परंतु भय वधे माटे भावना मात्र
डियेछैये अढी उत्सेधांगुले जेनुं विष्कंभ एवा प्रमाणांगुलने विषे त्रण श्रेणि क
तेमां पहेली उत्सेधांगुले एक अंगुल विष्कंभ, ने चारसे आंगुल दीर्घ एटले न
करिये एवीज बीजी पण पंक्ति एटलाज प्रमाणनी करिये अने त्रीजी श्रेणी दीर्घ
चारसो अंगुल प्रमाण अने विष्कंभे अर्द्धअंगुल प्रमाण करिये,एना दीर्घपणाथ
बे भाग करी तेने परस्पर मेलविये तेवारे एक अंगुल प्रमाण विष्कंभ थाय, अन
वसो अंगुल दीर्घ एवी त्रीजी श्रेणी थइ तेवारपछी ए त्रणे राशीने जोडाइ एमनो
वता एक हजार उत्सेधांगुले दीर्घपणे थाय अने एक उत्सेधांगुल विष्कंभ थाय
प्रमाणांगुलनी शुद्ध सूची जाणवी ए सूचि आश्रयी उत्सेधांगुलथकी प्रमाणांग
हजार गणु जाणवु, अने तत्ववृत्ते चारसो गुणुज थाय ॥ ४१० ॥

मूल —आयगुलेण वत्थु, उस्सेहपमाणओमिणसुदेह ॥ नगपुढविविमाणाइ, मिणसु
माणगुलेण तु ॥ ४११ ॥ अर्थ —जे आंगुलेकरी जेनु प्रमाण करायछे ते कहेछ आ
त्मांगुलेकरी वस्तुनु प्रमाण करायछे ते वस्तु त्रण प्रकारनीछे एक खात, बीज
उच्छ्रित एटले उंची करनी अने त्रीजी उभय तेमा खात ते कूप भूमि गहना तलाव
दिक त टांका जाणवा उच्छ्रित ते मंदिरगढादिक अनेउभय एटले भूमि अनुरूप
दिक पुन धरगृहादिक मपायछे अने उत्सेधांगुलेकरी देवादिकना शरीरनु मा
पायछे, अने नग एटले मेरु इत्यादिक पर्वत अने पृथ्वी तथा वैमानिकोनां विमान
ने सौधर्मावतंसकादिक आदि शब्द थकी भुवन नरकावासा द्वीप समुद्रादिक
नु प्रमाणांगुलेकरी परिमाण थायछे ॥ ४११ ॥ इतिगाथार्थः ॥

अवतरण—तमस्काय सरूपति एटले तमस्कायना सरूपनु प्रमाण चलावे
वार कहेछे मूल —जंबुद्दीवाउ असंखेज्ज इमा अरुणवर समुद्दाउ ॥ बायालीस सह
स्से जगईउजल विमुत्तुं ॥ ४१२ ॥ अर्थ —ए जंबुद्वीपथकी तिरछा असंख्य
बीजा समुद्र अतिक्रमि जातां त्यां अरुणवर समुद्र छे तेनी जगतीथकी ब
स हजार योजन अवगाहिये तेणे प्रदेशे अरुणवर समुद्रनां पाणी उपरथी
मेवा अपकायरूप अंधकारमय तमस्काय निकले छे ॥ ४१२ ॥

मूल —समसेढीएतत्तरस एकवीसाइजोयणसयाइ ॥ उड्ढमित्तिनमक्कउ स

यागारोअवक्काउ ॥ ४१३ ॥ अर्थः—ते तमस्काय समश्रेणीये सरखी, जीतने आ कारे सत्तरशेने एकवीश योजन प्रमाण उल्लस्योके० विस्तर्यो छे. अंधकाररूप व लयाकारे अपकाय विस्तर्योछे. ॥ ४१३ ॥

मूलः—तिरियं विल्लरमाणो, आवरयंतो सुरालय चउक्कं ॥ पंचमकप्पे रिट्ठंमि पत्तडे चउदिसिं मिलिउ ॥ ४१४ ॥ अर्थः—ते तमस्काय तिर्छो विस्तरतो अने व ली सौधर्मादिक चार देवलोक आवरतो उंचो निकल्यो, ते पांचमा ब्रह्मनामा देवलो कना रिष्टनामा त्रीजा पाथडासुधी जइ त्यां चारे दिशाए मल्यो आवरी रह्योछे.

हवे ते तमस्काय केवा आकारेछे ? ते कहेछे. मूलः—हेठामल्लय मूलट्ठिइ विउ उवरि बंजलोयंजा ॥ कुक्कड पंजरगागार संठिउसो तमक्काउ ॥ ४१५ ॥ अर्थः— हेठाके० हेठे मल्लकके० सरावलुं जेवुं थाय तेने आकारे नीचे सांकडो अने उपर ब्रह्मदेवलोक सुधी कूकडाना पांजराने आकारे रह्योछे, ते तमस्काय एटले तम शब्दे अंधकार, ते संबंधी पुद्गल जे काय कहिये राशि समूह तेने तमस्काय कहिये

हवे एनो विष्कंभ ने परिधनुं प्रमाण कहेछे.मूल.—डुविहो सेविरकंभो, संखिज्जो अहि तह असंखिज्जो ॥ पटमंमिय विरकंभो, संखेज्जा जोयण सहस्सा ॥४१६॥ परिहिए ते असंखा, वीए विरकंभ परिहि जोएहिं ॥ हुंति असंख सहस्सा, नवरमि होइ विहारो॥ ॥४१७॥ अर्थ—'डुविहोके०बे प्रकारे तेनो विष्कंभ, संख्यातोछे तेमज असंख्यातो पण छे; त्यां पहेलो विष्कंभ ते संख्याता सहस्र योजन प्रमाण छे, अने उपरे यावत् असंख्या ता सहस्र योजन प्रमाण छे अने परिहिएके०परिधिए मूलथकी आरंभी सर्वत्र ते संख्या ता सहस्र योजन प्रमाण छे.इहा संख्यातपणु ते त्यांसुधी जाणवुं; ज्यांसुधी वलयनेआ कारे छे. अने बीजो विष्कंभ अने परिधीनो योग वलयाकारथकी उंचो ए तमस्का य विस्तरेछे. तेवारे नवरके० केवल असंख्याता सहस्र योजन एनो विस्तार होयछे.

हवे टीकाकार एनुं महत्व आगमार्थवेदीना मुखथकी एवीरीते जणावेछे के, जे देवता त्रण चपटी वगाडतां जेटली वार थाय तेटली वारमां जंबुद्वीपने एकवीश वखत प्रदक्षणा देतो फरे तेवो देवता छ महीने संख्याता योजन विस्तारसुधी जाय, परतु ते आगल जइ शके नही तो बीजानी शी वात? जेवारे परछेविना सेवणहार अथवा रत्ना दिकनी चोरी प्रमुख अपराध करे तेवारे ते देवता बीजा बलवंत देवताथकी बीही ता थका नाशीने त्या पेसे. ते त्या गया पछी बीजा देवता त्यां बीकनेलीधे जइ शके नही; केमके त्यां जतां तेने गतिनो वियात थाय ॥४१७॥ इतिगाथा षट्कार्थः ॥

अवतरणः—अणंत छक्कत्ति एटले छ अनंतानुं यंत्रोने उपन्नमुं द्वारकहेछे. मूलः

सिद्धा निगोय जीवा, वणस्सई काल पोग्गलाचेव ॥ सव्वमलोगागास, छप्पेए. नेया ॥ ४१८ ॥ अर्थ –एकतो सिद्धना जीवो जे पूर्वे अनंते काले अनंता सि थया अने अनंते आगामिक काले अनंता सिद्ध थशे ते जाणवा तेमज बी… गोदना जीव ते पण अनंता छे त्रीजा वनस्पति ते निगोद अने साधारण… स्पतिकायिक जीवो ते पण अनंताछे चोथो काल जे छे ते पण अनंति उत्सर्पि णी तथा अवसर्पिणिरूप थइ गयो अने अनागत काले पण अनंतो थशे… ज पांचमा पुद्गल परमाणुआ पण अनंताछे एम छठु सर्व अलोकाकाश तेने अनंतुं छे ए छ रानां अनंतां जाणवां ॥ ४१८ ॥ इतिगाथार्थ

अवतरण –अठ्ठनिमित्ता एति एटले आठ प्रकारना निमित्तनुं वर्णन… नमुं द्वार कहेने मूल –अंग सिविण च सरं, उप्पायं अंतरिक्ख भोम च ॥ वंजण… लक्खणमेव, अठ्ठपयारइहनिमित्तं ॥४१९॥ अर्थ –एक अंग बीजु स्वप्न, त्रीजु स्व… चोथुं उत्पात, पांचमु अंतरिक्ष, छठु भोम सातमु व्यंजन, अने आठमुं लक्ष… ए आठ प्रकारना निमित्त जाणवां इहां निमित्त जे अतीत अनागत ने वर्तमा… नाथ तेने जाणपणाना कारण तेने निमित्त कहिए एरीते ए आठ निमित्तना… न कही रहे सूत्रकार अंगादिक आठ बोल गाथाये करी वखाणेछे ॥ ४१९ ॥

मूल –अंगप्फुरणा एहिं, सुहासुहं जमिह नज्जइ नमग ॥ तह सुविणाण… सिरिणगं वत्तिरिण पत्तितयं ॥ ४२० ॥ अर्थ –अंगने स्फुरणे इहां अंगना… पर रण नरा त अंगना अवयवने फरकने करी शुभाशुभ अतीतादिक वि… निमित्त जाण, ते जाणीने जीवाने कहे के मस्तक फरकेना पृथ्वीना लाभ… अने निलाड फरकता स्थानकनी प्राप्ति थाय इत्यादिक शरीरना जे जे अवयव… ने प्रकार विचारणा करे ते पुरुषने नमणे पसवाड अने स्त्रीने डाबे पसवाड… हना रना कहिये, नहीं तो माठा कहिये ता ए पहेलुं अंगनिमित्त जाणवुं बीजुं… स्वप्ननिमित्त ते आवीरीते के, देव, गुरु, गाइ, बटा, उत्सव कमलनुं… करे नेमन काट ते गढ, हाथी, वृक्ष, मेरु, पर्वत प्रासादादिक उपर चढ… एन स्वप्नमां दग तमन समुद्रनुं तरवुं, मदिरा, अमृत, दहि, दूधनुं पान… अने चइना सूर्यना ग्रहण देखीने जागृत थाय ता एम जाणवुं के ए स्वप्न… तुरत मुक्ति थशे. इत्यादिक ए सर्व स्वप्न करी कहिये ए बीजुं स्वप्ननिमित्त… हवे त्रीजुं स्वरनिमित्त कहेछे मूल –छम्मणिछ जमर विसमत्तं… सिद्ध… नागइ नक्खर तमुप्पाय ॥ ४२१ ॥ अर्थ –…

अने अनिष्ट जे मातुं इत्यादि जे स्वरना विशेषथकी जाणिए ते स्वर, एक षड्ज बीजो ऋषभ, त्रीजो गांधार, चोथो मध्यम, पांचमो धैवत, छट्ठो पंचम, सातमो निषाद ए भेदो थकी साते प्रकारे छे. ते सांभळी विचारणा करे. जेम षड्जना सांभळवा थकी सुखे निर्वाह थाय. जे कार्य करीए ते विनाश न पामे. गाय प्रमुख चतुःपद मित्र, पुत्र, स्त्री प्रमुखने वल्लभ होय. इत्यादिक जाणी करी कहे अथवा जे शकुन जूए छे ते ना स्वर उपर सारु मातुं कहे ते त्रीजुं स्वरनामे निमित्त जाणवुं. हवे चोथुं उत्पातनिमित्त कहेछे. रुधिर शब्दे लोहि वसो आदि शब्द थकी हाड, मांस, मज्जा, धान्य, अंगार प्रमुखनी वृष्टि ज्यां थाय, ते देखी कहेके इहां नय प्राप्त थशे. इत्यादिक बीजापण उत्पात देखीने निमित्त कहे ते चोथुं उत्पातनिमित्त जाणवुं. ॥ ४२१ ॥

मूलः—गहवेयभूयअट्टहासपमुहं जमंतरिक्खं तं ॥ भोमं च भूमिकंपा, इएहिनज्जइ वियारेहिं ॥४२२ ॥ अर्थः—ग्रहनो वेध जेवारे थाय, चंद्रमानुं मांडलुं बृहस्पति प्रमुख भेदे, एमज भूतनुं हास्य अकस्मात् आकाशे कळकळाट शब्द उठे; एमज प्रमुखना ग्रहण थकी गांधर्व नगरादिक देखाय त्यां जो कालोवर्ण देखाय तो दुःकाल थाय, लाल देखाय तो गायने कष्ट थाय, अव्यक्तवर्ण होय तो कटकनो भंग थाय, अने महा स्निग्ध सप्राकार सतोरण उत्तर दिशि आश्री थाय तो गाम तथा राजाने जयकारी थाय. इत्यादिक अंतरीक्ष एटले आकाश ते संबंधी कोइ लक्षण देखीने सारु माठुं कहे ते पांचमुं अंतरीक्षनिमित्त जाणवुं. छठुं भौम ते भूमिकंपादिके करी. ते आवीरीते. भूमिकामांहेथी अत्यंत महोटो शब्द निकळे, निर्घात पडे, भूमिकंप थाय. इत्यादिक देखाय त्यां जाणवुंके ते देशना राजा प्रधान सेनापति अने देशने भय थशे. ते छठुं भौमनिमित्त जाणवुं. ॥ ४२२ ॥

मूलः—इह वंजणं मसाई, लंछणपमुहं तु लक्खणं भणियं ॥ सुहअसुहसूयगाइं, अंगाइआइअहवि ॥४२३॥ अर्थः—इहके० आ शास्त्रनेविषे व्यंजन शब्दे मसा प्रमुख ते देखीने एम कहेके एने अमुक स्थानके मसो अथवा तल पड्योछे, माटे अमुक शुभाशुभ थशे. तेमज लांछन ते [illegible] मुख लक्षण कह्युछे ते आवीरीते. लांछन ते कंकुना पाणी सरखुं [illegible] होय तो अथवा मसो होय तो ते घणुज सारु. एवा [illegible] कहे ते व्यंजननामा सातमुं निमित्त अने लक्षण [illegible] वुं. इहां व्यंजन ते मसा तिला प्रमुख अने स्वस्तिक [illegible] एम ए शुभाशुभना कर नार अंग [illegible] ४२३ ॥

शेने थोगणसाठमुं द्वार कहेछे. मूलः—सुउदणो जवन्नं,तिन्निय मंसाइ गोरसो जूसो ॥ नरकाखुलजावणिया, मूलफला हरियगं माको ॥४२५॥ अर्थः—एक सूप शब्दे दाल, बीजो उदन शब्दे कूर, त्रीजो जवन्न शब्दे यवनी खीर अने तिन्नियके० त्रण प्रकारनु मांस, ए ठ थयां, अने सातमुं गोरस शब्दे दुध तथा दही प्रमुख, तथा जूलादि चार ते आठ नव दश ने अग्यार थया, अने बारमुं हरिअंग, तेरमुं माको. ४२५

मूलः—होइरसालूय तहा, पाणं पाणीय पाणगं चेव ॥ अठारसमोसागो, निरुवहउ लोइउ पिंमो ॥४२६॥ अर्थः—चउदमुं रसालुं, तेमज पन्नरमुं, सोलमुं सतरमुं ने अढारमुं ए सूत्रकार सूत्रमांहेज वखाणशे; तेथी नाम इहां लख्यां नथी. निरुपहतके० निर्दोष, लोइयोके० जे निर्विवेकी लोकोछे तेउमां ए प्रसिद्ध पिंमके० आहार जाणवो.

हवे मांसादिक वखाणेछे. मूलः—जल थल खयहरमंसाइ तिन्निजूसो उजीरयाइ जुउ ॥ मुग्गरसोजरकाणिय,खंमीखजूयपमुरकाणि ॥४२७॥ अर्थः—जलचर ते माछलां प्रमुख, अने थलचर ते हरणादिक, खेचर ते तेतर प्रमुख. ए त्रण जातनां मांस अने जूशब्दे जीरुं प्रमुख कटुकद्रव्य, तेणे करी सहित. मगनो रस ते जूष जाणवुं. अने नरकाणिके० नक्ष ते खाजादिक दहीथरां प्रमुख, जे उपर पांत खांमनी देखाय ते जाणवी. ॥ ४२७ ॥

मूलः—गुलजावणिया गुलपप्पलडीउ गुलहाणियाउवा नणिया ॥ मूल फलंएक्कपयं, हरिय मिह जीरयाईयं ॥ ४२८ ॥ अर्थः—गुललावणी शब्दे जे पूर्वदेशने विषे प्रधान गोलेकरी नीपनी एवी गोलपापडी, अथवा गोले मिश्रपणे कीधी जे धाणी ते गोलधाणी जाणवी. वली मूल अने फलनो एकज नेद ए अग्यारमो जाणवो. तेमां मूल शब्दे अश्वगंधा प्रमुख,फल ते आंबा प्रमुख,तथा हरित शब्दे इहां जीरादिकनां पान तेणे करी नीपजाव्युं ते जीरकादिक.आदि शब्द थकी एवा बीजा पदार्थो पणलेवा

मूल.—माउंबलुल राईण,नज्जियाहिंगु जीरयाइ जुया ॥ सायर साजू जामज्जियत्ति तल्लरकणं चेयं ॥४२९॥ अर्थ:—माक शब्दे,मांना, वल्लुज राजिकाके० राजगरा प्रमुखनी नाजीते हींग अने जीरा प्रमुखे करीने जे नजीपरे संस्कारी होय,साके० ते नाजी रसाला कहिए;अने लोकनेविषे मार्जिता एवी प्रसिद्धछे. तेनुं लक्षण आगल देखाडेछे.

मूलः—दो घयपला महुपलं, दहिय स्सद्धाढयं मिरिय वीसा ॥ दसखंम गुलप लाइ, एसरसालू निवइ जोगो ॥ ४३० ॥ अर्थः—बे पल घृतना, मधनुं एक पल, दहीनुं अर्धो आढो, वीश मरी वाटेलां, दश खांम अथवा गोलनां पल जाणवां. एटला पदार्थो मलेथके रसालु कहेवायछे, पण ते केवो होय ? निवइके० नृपति

एटले राजा तेने योग्य. एना उपलक्षणथकी मोटामोटा ईश्वरने पण उचित द्र

मूल –पाणसुराईयं, पाणियं जलं पाणगं पुणोइत्थ ॥ वरक्त वाणिय पमु सागो सोतक सिद्धल ॥४३१॥ अर्थ –पान ते सुरा मदिरा आदे देइने बीजा पण सर्व मद जाणवा पानक ते इहां द्राखवाणी साकरनो पाणी एलची वासित पाणी सुरभि सीतल, कपुरवासित एवा स्वादवंत जाणवा अने सागोके० शाक, साकर ते जे तक्रके० छासथी नीपन्यां वडां प्रमुख जाणवां ॥४३१॥ इतिगाथा सप्तकार्थ ॥

अवतरण –छठाणवुड्ढिहाणित्ति एटले छ स्थानकनी वृद्धि तथा हाणीनुं ने सातमुं द्वार कहेछे मूल –वुड्ढी वा हाणी वा, अणंत असंख संख भागेहिं ॥ व वणासंख असंख अणंतगुणणेण यविन्नेया ॥४३२॥ अर्थ –वृद्धि अथवा हाणि ते छ स्थानकमाहे त्रण स्थानक भागाकारे वृद्धि अने हानी हाय तथा त्रण स्थानक गुणा कारे वृद्धि अने हानी होय अणंतके० त्यांपहेला भागाकारे एम छे के अनंतभाग वृद्धि, असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि अने गुणाकारे पण वस्तु एम संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, अनंतगुणवृद्धि जेम वृद्धि तेम हानी पण केहेवी इहां सर्वोत्कृष्ट देशविरतीनी विशुद्धि स्थानकथकी सर्व जघन्य सर्व विरतिनुं विशुद्धिनुं पहेलुं स्थानक अनंत गुणे अधिक जाणवुं [illegible] एम अनंतगुणे वृद्धि करवी एनुं विस्तरार्थ कर्म प्रकृति प्रमुख ग्रंथना पटथकी [illegible] [illegible]याखोणवुं इतिगाथार्थ ॥४३२॥

अवतरण –अवहरिउंजाइ नेवतीरतित्ति एटले [illegible] पटिकुं [illegible] ते जन काइ अपहरि न शके तेनुं वशेने एकशठमुं द्वार कहेछे मूल –समणी तुलेन्मरे[illegible] च ॥ चउदसपूवि आहारगच नकयाइ सदएक तर[illegible] भागवयाय परिहार पुलाय मपमत्त निरतिचार चारित्रनी धरनारीउं होय ते, बीजुं [illegible] ॥४३३॥ अर्थ –एक साध्वीउं जे होय एवां केवली, त्रीजा परिहारविशुद्धि [illegible] सूत्तित॥ अपगतराग, एटले जेणे वेद खपाव्यो ना धणी, पांचमा अप्रमत्त सयतगुणठाणानो एक[illegible] चारित्रना धरनार चोथा पुलाकनी चउदपूर्वना जाण,अनेसातमा आहारक शरीरने मस्त[illegible] न रहेता होय न वळा सपूर्व

अवतरण –अंतरदीवत्ति एटले अंतर द्वीपनीश अ[illegible] धरनार ए सातने काइ सहरेनहीं [illegible] कहेछे मूल –चुल्लहिमवंत पुव्वा, वरेण विदिते चा[illegible] लवणसतानुं बशने वासठमुं द्वा [illegible]वा, तिन्निसए हुंति विच्छिन्ना ॥ ४३४ ॥ अर्थ[illegible] तेना [illegible]तानु सागर तिसए ॥ गतूण तर [illegible]हानो तेथी चूल जे हिमवंत नाम पर्वत ने [illegible] जंबु[illegible] मदा हिमवंत पर्वतनी अपरेहाय [illegible]मुद्रना पाणीनो ज्यां स्पर्श थायछे, तेपाणीना स्पर्शथकी [illegible] द्वीपनी जगति अन नवण [illegible]

जन समुद्रमां जइए, ज्यां बे बे गजदंताने आकारे दाढ निकलीछे, ते उपर चार अंतरद्वीप त्रणशे योजनने विस्तारेछे. ॥ ४३४ ॥

द्वीपनी परिधीनुं प्रमाण अने नाम कहेछे. मूलः—अउणावन्ननवसए, किंचूणे परिहि तेसिमे नामा॥एगो रुअ आनासिअ,वेसाणी चेवनंगूली ॥४३५॥ अर्थः—नवशें उंगणपच्चाश योजन कांइक मारेरा एटली परिधीनुं प्रमाण छे. अने तेसिके० तेनां नाम आवीरीतेछे. एक रुचक, बीजो आनापिक. त्रीजो वेषाणिक, चोथो लांगुलिक.

मूलः—एएसिं दीवाणं, परउ चत्तारि जोयणसयाइं ॥ उंगाहिकण लवणं, सपडिदी संचउसयपमाणो ॥ ४३६॥ अर्थः—ए जे पूर्वे चार द्वीप कह्या तेथकी आगल चारशे योजन लवण समुद्र अवगाहिये, त्यारे सपडिदिसंके० तेनीजपरे प्रत्येके पूर्वादि विदिशिनेविषे चारसे योजनने प्रमाण. ॥ ४३६ ॥

मूलः—चत्तारंतरदीवा, हयगयगोकन्नसंकुलीकन्ना ॥ एवं पंचसयाइं,छसयसत्तठनवचेव ॥४३७॥ अर्थः—चार अंतर द्वीपछे तेनां नाम,हयकर्ण, गजकर्ण, गोकर्ण अने संकुलीकर्ण एटले बे चतुष्क थया. हवे त्रीजा आदेदेइ पांच अंतर द्वीपना चतुष्क जगती थकी जेटलो लवणसमुद्र अवगाहि रह्याछे ते कहेछे. एवंके० एमज लवणसमुद्र मां पांचशे योजन जगतीथकी आगल जइये त्या त्रीजुं चतुष्क जाणवुं, एम छशे योजन जइए त्यां चोथुं चतुष्क छे, अने सातसे योजन अवगाहिये त्यां पांचमुं चतुष्क छे, तथा आवशे योजन अवगाहिये त्यां छठुं चतुष्क छे; अने नवशे योजन अवगाहिये त्यां सातमुं चतुष्क छे. ॥ ४३७ ॥

मूलः—उंगाहिकणलवणं, विरकंभो गाहसरिसया नणिया ॥ चउरो चउरो दीवा,इमे हि नामेहि नायवा ॥ ४३८ ॥ आयंसमिंढगमुहा,अयोमुहागोमुहायचउरेए ॥ अस्समुहा हत्थिमुहा,सीहमुहा चेव वग्घमुहा॥४३९॥ अर्थः—अनुक्रमे पांचशे प्रमुख योजन लवणसमुद्र अवगाहीए त्यां विष्कंभ, तेनो जेटलो समुद्र अवगाहिये तेटलोज तेनो विस्तार पण जाणवो.एवा चार चार द्वीपो ते एवानामे करी जाणवा. एकआयंस ते आदर्शमुख, बीजो मेंढमुख, त्रीजो अयोमुख, चोथो गोमुख.ए त्रीजा चतुष्कनां चारनाम कह्यां, एटले बार द्वीप थया. तथा एक अश्वमुख,बीजो गजमुख,त्रीजो सिंहमुख चोथो व्याघ्रमुख. ए चोथा चतुष्कनां नाम जाणवां. एटले सोल थया.

मूलः—तत्तोयआसकन्ना, हरिकन्नअकन्नकन्नपावरणा ॥ उक्कमुहामेहमुहा, विज्जुहाविज्जुदंताय ॥४४०॥ तेवार पछी एक अश्वकर्ण, बीजो हरिकर्ण, त्रीजो अकर्ण चोथो कर्णप्रावरण, एवानामे पांचमुं चतुष्कछे एटले वीश थया. तेवार पछी उल्का

सद्याय करिये अने महतेगाके० महत महोटी शेरी होय तो एकज वर्जवी अथवा नगरनी शेरी महोटी थाय, केमके ज्यां थइने राजा चतुरंग सेना सहित जाय एवी एक शेरीने अंतरे सद्याय करवो अने जो ते गाम सर्वत्र मासे व्याप्त पण होय, अने शेरी त्रण पण न जाणे तेवारे गामस्ससवाहिंतुके० गामने बाहेर जइ सद्याय करे एटले द्रव्य अने क्षेत्रनी वात कही ॥ ४३८ ॥

हवे काल अने भावनी वात कहेछे मूल –कालेति पोरिसितिग, भावे सुत्तं तु नंदिमाईयं ॥ सोणियमंस चम्म, अठीवि य अहव चत्तारि ॥ ४३९ ॥ अर्थ–कालथकीतो लोही प्रमुख दीठा थका त्रण पहोर सुधी असद्याइ कह्याछे. ए अल्प लोही प्रमुखे जाणवुं अने उदर प्रमुख बिलाडीए मार्यो होय त्यां आठ पहोर असद्याइ थायछे तथा भावथी तो नंदिप्रमुख सूत्र गुणिये नही एम द्रव्यादिकना भेद थकी चार प्रकारनो असद्याइ कह्यो अथवा एम पण चार प्रकारेछे ते देखाडेछे सोणिय एटले एक शोणित शब्दे लोही. बीजुं मांस त्रीजुं चर्म्म ए प्रतिछने चोथुं अस्थि ते हाड एवा भेदथकी पण चार प्रकारछे एटले लोही मांस चर्म्म ने हाड ए चारे पूर्वोक्त असद्याइमा लेवां, मात्र एक लोहीज लेवुं बीजां न लेवां एम समजवुंनही ॥ ४३९ ॥

हवे विशेष देखाडेछे मूल –अंतोबहिंचधोयं, सठीहत्थाउ पोरिसी तिन्नि ॥ महकाइअहोरत्त, रत्ते वूढेयसुद्धंतु ॥ ४४० ॥ अर्थ –जे अंतोके० साठहाथमाहे कांइ पण स्थानके मांस रांधु होय अने धोइने बाहेर नाख्युं पण तेना कांइक अवयव पड्या होय तो त्रण पहोर सद्यायनेविषे परहरवा एम मांस पकवे त्यां पण असद्याइछे, पण साठ हाथ थकी बाहेर मांस धोयुं राध्युं पकव्युं होय तो असद्याइ न थाय हवे आठ पहोर कह्या हता तेनी भावना देखाडियेछैये महकाइ अहारत एनो अर्थ प्रथम कह्योछे इहा एक आचार्य वली एम कहेछे के मांजार उदर लीधो अने फाडया विनाज तेने मात्र मारीनाखीने अन्य स्थानके लइगया अथवा त्यांज गलि गयो तो असद्याइ न थाय

अनेरा वली ए वात मनमाने कहेछे के कोणजाणे कांइ फाडयो अथवा न फाडयो लइगयो एक वली एम कहेछेके, ज्यां माजारादिक विना पोतानी मळेज मरण पाम्यो अथवा कोइएक मार्यो परंतु अभिन्न रह्या, ज्यांसुधी ते जदाय नही अने तेनुं रुधिरादिक पृथ्वीउपर पडेनही त्यांसुधी असद्याइ नहोय एम कहेछे परंतु ते पक्ष

नजो नथी. केमके लोणियमंतं इत्यादिक चार प्रकारनी अतसाइ कही तेथी अनिन्न तोपण कलेवर पडे तसाय करवो नही.

रत्तवूढेयके० ज्यां ताठ हाथमांहे लोही पड्युं होय ते स्थानक उपर पाणी नो प्रवाह वह्यो होय तेणे करी ते लोही धोवाइ जाय पठी तो त्यां त्रण पहोरमां पण नूमिका शुद्ध्यइ; माटे सझाय करिए. ॥ ४७० ॥

इहां तिर्यंचनी अतसाइनो प्रस्तावने तेथी बीजीपण असझाइ देखाडेछे. मूलः— अंमगमुन्नियकप्पे, नयनूमि खणंति इयरहा तिन्नी ॥ असझाइयप्पमाणं, मछियपाया जहिवुड्ड ॥ ४७१ ॥ अर्थः—ताठ हाथमांहे इंडुं पडे ते इंडुं हजी फुट्युं नथी तो उपाडी परठवीने सझाय करिये. अने ते इंडुं जो पडतांवारज फुट्युं अने तेनुं कलल नूमिकाये पड्युं ने नूमिका खणी नही तो सझाय न करिये. अने इयरहा त्तिन्निके० अन्यथा प्रकारे नूमि खणी जे लाग्युंहतुं ते दूर कर्युं तो पठी त्रण प होर तीन असझाइ जाणवो.

हवे कप्पे ए बोल वखाणेछे. कल्पके० वस्त्र ते उपर पड्युं जे इंडुं ते पडतांने फुटी पड्युं. तेनुं कललके० विंडु ते वस्त्रने लाग्युं ते ताठ हाथ बाहेर जइ धोइये तो असझाइ नथाय, अने ताठ हाथनी मांहेली कोरे धोइये तो असझाइ जाणवो.

इंडाने विंडुनुं लोही केटलुं पडेतो असझाइ थाय? एवुं प्रमाण कहेछे. मछि यके० माखीना पग ज्यां बुडे एटले पण असझाइ जाणवो. ॥ ४७१ ॥

वली असझाइनो नेद देखाडेछे. मूल.—अजराउनिन्निपोरिलि, जराउआणंजरे पडिएतिन्नि ॥ रायपहविंडुपडिए, कप्पेवूढेपुणोनत्रि ॥ ४७२ ॥ अर्थ —अजरायुके० हाथणी प्रमुख तेने प्रसवे जरा पडे नही त्यां त्रण पहोर असझाइ जाणवो, अ ने जरायुनी जरा पडी ए पण त्रण पहोरज जाणवा. अने वली जो लागी र हेतो अहो रात्र नंदी पठी त्रण पहोरसुधी असझाइ जाणवो.

रायपहके० राजमार्गनेविषे रक्तनुं विंडु पडे तो पण सझाय करवो कल्पे ने. इहांकार ण एछे जे आवता जता मनुष्यादिक तेने पगेकरी तत्काल उपडीजाय अने इहां जगवं तनी आज्ञाये पण प्रमाण छे तेथी दोष नथी अने राजमार्गविना ताठ हाथनां विंडु पडे तो उपर वर्षादिकना योगेकरी धोवाइजाय. अथवा उपलक्षण थकी अग्निनायो गेकरी बले एटले नथायने माटे शुद्ध थाय. एटले तिर्यंचसंबंधी असझाइ वखाण्यो.

हवे मनुष्य संबंधी असझाइ वखाणेछे. मूल.—माणुस्सयं चउछा, अठिंनुत्तू सयमहोरत्ति ॥ परियावन्नविवन्नं, सेसं तिय सत्तअठेव ॥ ४७३ ॥ अर्थः—मनुष्य

सबधी असद्याइ ते द्रव्य थकी तो पूर्वोक्त मास चर्म लोही अने हाडना भेद थकी चार प्रकारेछे त्यां अट्ठिमोत्तूणके० अस्थि जे हाड ते मूकीने शेष त्रणने क्षेत्रथकी एकशोहाथ सुधीमा अने काल थकी एक अहोरात्रसीम सद्याय करवो नही.

अने जो मनुष्य अथवा तिर्यंच सबधी असद्याइनु कोइ कारण जो क्या पडयु होय ने परियावन्नके० परिणामांतर प्राप्तपणे करीने स्वभावेज विवरणभूत खेरना काठनी परे वर्णांतरने प्राप्त थयो तो त्या असद्याइ न थाय अने ए परियावन्नमूकी शेष त्रण दिवस सात दिवस आठ दिवस असद्याइछे ॥ ४८३ ॥

एहज वात सूत्रकार देखाडेछे मूल —रत्तुक्कडाउ इत्थी, अट्ठदिणे तेण सत्तसुक्किए ॥ तिन्निदिणा नपरेण अणुउगत महोरत्त ॥ ४८४ ॥ अर्थ —गर्भना आगमनना कालनेविषे जो कदाचित् स्त्री रक्तोत्कट थाय तो ते स्त्रीये पुत्रिका प्रसवे छते आठदिवस असद्याइ जाणवी, पण नवमे दिवसे सद्याय करवो अने दारक जे स्त्री ते शुक्रादिकपणे होय ने ते पुत्र प्रसव करे तेवारे त्या सात दिवस असद्याइ जाणवो अने आठमे दिवसे सद्याय करिए

स्त्रीने महीने महीने ऋतुआवे ते सबधी लोही दीठा पछी त्रण दिवससुधी असद्याइ जाणवो अने त्रणदिवस उपरांत लोही न रहे तो त्यां असद्याइ न थाय जे कारणे ते अणउगके० ऋतुनु लोही केवाय नही किंतु ते महारक्त कहिये त्रण दिवस जेवु लोही थाय तेवु लोही पछी न थाय ते पोताने स्वभावेज परियावन्न होय ते माटे सद्याय कालने न हणे ॥ ४८४ ॥

हवे प्रथम जे अट्ठिमुत्तूण एटले हाड मूक्यु होय एम कह्यु हतु तेनी वात कहेछे मूल —दंतेदिट्ठिविगिचण, सेसट्ठीवारसेववरिसाइ ॥ दड्ढोसुनचउइ कीरइ सद्यायपरिहारो ॥ ४८५ ॥ अर्थ —दांतदीठे एटले बालकादिकनु दांतपडयु ते दांत सो हाथथकी बाहेर विगिचणके० परठवो अथवा दांत पडयो अने दीठामा नही तो ए स्थानक रुडीरीते जोइए तेम जोता थका दांत लाधे नही तो ए स्थानक शुद्ध छे एवी कल्पनाए करी सद्याय करिये अन्य वली एम कहेछे के तेना कायोत्सर्ग करीने पछी सद्याय करवो हवे दांत टालीने शेष अस्थिनी वात कहेछे बार वर्षो जो हाड शो हाथमां पडया थका त्या बार वर्षना असद्याइ जाणवा अने ते हाड जो बल्या होय तो त्या असद्याइ थाय नही ॥ ४८५ ॥ इति गाथार्थ ॥

अवतरण —नदीसर दीवठिइत्ति एटले नंदीश्वर द्वीपनी स्थितिनु बशें ओगणसाठमु द्वार कहेछे मूल —विक्खभेकामिमय तिसठकोडीउ लक्खचुलसीइ । नंदीसर

पमाणं, गुलेणइयजोयणपमाणं ॥ ४ ७ ६ ॥ अर्थ.—नंदि शब्दे समृद्धि ते उदार जिनमंदिर उद्यान पुष्करणी पर्वत प्रमुख जे घणा पदार्थ तेना सार्थने अद्भुतपणेकरी ईश्वर तेने नंदीश्वर कहिए. ते नंदीश्वरद्वीप आ जंबुद्वीपथकी आठमो द्वीपछे. ते वलयने आकारेछे. विष्कंभे एनुं प्रमाण एकशो त्रेसठ कोडी चोराशी लाख योजन एटला योजन प्रमाणांगुले करी एनुं प्रमाण छे. ॥ ४ ७ ६ ॥

हवे इहां अंजनगिरि प्रमुखनी वक्तव्यता कहेछे. मूल.—एयंतोअंजणरयण सामकरपसरपूरिअंवंता ॥ वालतमालवणामलि, जुयघणपमलकलियव्व. ॥४ ७ ७॥ अर्थ.—एयंके० ए नंदीश्वरद्वीपमांहे जे अंजनगिरि छे ते केवाछे? तो के श्यामवर्णे जे रत्नना विशेष तेनांजे करपसरके० किरणना समुद्र तेणेकरी पूरिअके० पूर्याछे उपांतके० छेहेडा जेना. वली वालके० नवां एवां जे तमाल नामा वृक्ष तेना वननी आवलीके० श्रेणी तेणेकरीने सहित. वली घनके० मेघ तेनां पटल तेणे करी कलितके० सहितनीपरे सहितछे. ॥ ४ ७ ७ ॥

मूल.—चउरो अंजणगिरिणो, पुव्वाइदिसासु ताणमेक्कोक्के॥चुलसीसहस्सउच्चो, उगाढो जोयण सहस्सं ॥४ ७ ८॥ अर्थः—पूर्वली गाथाए जे विशेषण कह्यां ते विशेषणेकरीने विशेषित एवा चार अंजनगिरि एवे नामे पर्वतछे. ते पूर्वादिक चारदिशिनेविषेछे. ताणंके० ते अंजनपर्वतोनुं एकेकनेविषे प्रमाण चोराशीहजार योजन उंचपणे छे अने अवगाह भूमिकाने विषे एक हजार योजनछे ॥ ४ ७ ८ ॥

मूल.—मूलेसहस्सदसगं, विक्खंभेतस्सउवरिसयदसगं ॥ तेसु वणमणिमयाइं, सिद्धाययणा इंचत्तारि ॥४ ७ ९॥ अर्थ.—मूलमां दश हजार योजन प्रमाण विष्कंभ छे अने तेना उपर दश सय जोजन छे. वली त्यां अंजनगिरिने विषे वणमणिके० घणां नाना प्रकारनां रत्न तेणे करी नीपजाव्याएवा सिद्धायतन चार प्रासाद छे.

हवे ए सिद्धायतननुं प्रमाण कहेछे. मूल.—जोयण सयदीहाइं, बावत्तरि ऊसियाइ रम्माइं ॥ पन्नास विच्छडाइं, चउदुवारगइं सधयाइं ॥ ४८० ॥ अर्थ—ते प्रासाद एकशो योजन दीर्घके० लांबपणे अने बहोंत्तेर योजन ऊसियके० उंचपणे वली रम्मके० महा मनोहर अने पन्नासके० पच्चाश योजन विस्तारेछे. वली जेनेविषे चार बारणांछे तथा सधयाइके० ते प्रासादोध्वजाएकरी सहित छे. ४८०

मूल.—पइदार मणि तोरण, पेढा मंमव चिराय माणाइं ॥ पंचधणुस्सय ते सिअ, अठोत्तर सयजिण जुआइं ॥४ ९ १॥ अर्थ—ते एकेका प्रासादनां चार चार बारणाजे ते एकेकुं बारणुं सोल योजन उंचुछे, अने आठ योजन पहोलुंछे.ते प्रति द्वार एट

ले वारणा वारणाप्रत्ये मणीचङ्कांत प्रमुख तेना तोरणछे अने प्रेक्षामण्डप नाटक करवाने अर्थे जे मण्डप तेणेकरी विराजमान एटले शोभनिक, एवा प्रासाद वली जेतु पांचसे धनुष्य उंचपणुं देहमानछे, एवा एकशोने आठ जिन तेणेकरी युक्तछे इहां जिन अने जिनप्रतिमाने भेद समजवो नही तेमाटेज सूत्रकारे मूल पाठमा जिनयुक्त कह्याछे ॥ ४७१ ॥

मूल.—मणिपेढिया महिदम्म यायपुक्करिणि पायपासेसु ॥ कंकेल्लि सत्तवन्नय, च पय चुयवन्नजुत्ताउ ॥ ४७२ ॥ अर्थ— वली ते सिद्धायतन मणिपेढियाके० रत्नमय वेदिका तेणेकरी मांहेलीकोरे सहित छे, अने प्रासाद उपर महाध्वजो छे तेणे करी सहित छे वली पुष्करणी वापि ते पसवाडानेविषे ककेल्लिके०अशोक सप्तपर्ण, सहकारनी जाति,चापो प्रसिद्धछे, तथा च्यूत ते आंबा तेना वन तेणेकरी प्रयुक्तके० सहित एवी वापियोछे तेनां नाम कहेछे ॥ ४७२॥

मूल —नडुत्तरायनदा, आणदानदिवद्धणानामा ॥ पुक्करिणीउ चउरा, पुव्वाए चकदिसीसत्ति ॥ ४७३ ॥ अर्थ—हवे चारदिशिने विषे चार वापिछे तेमना नाम कहेछे पूर्वदिशिये नदोत्तरानामे वापीछे, तेमज दक्षिणे नदा, पश्चिमे आनदा अने उत्तरदिशिए नदिवर्द्धना ए चार पुष्करणी ते इहा पूर्वदिशिनो जे अजनगिरिछे तनी चारे दिशाए जाणवी वली ए वापिनु विशेष कहेछे ॥ ४७३ ॥

मूल —विक्खंभायामेहिं, जोयणलक्खपमाणजुत्ताउ ॥ दस जोयणू सियाउ, चउदि सि तोरण वणजुयाउ॥ ४७४ ॥ अर्थ —विष्कभे अने आयामे लाख योजन प्रमाण युक्तछे अने दश योजन उमपणेछे चार दिशिए तोरण अने वन तेणेकरी सहितछे

हवे वापिमांहे दधिमुखछे तेनी वात कहेछे मूल— तासिमज्झ दहिमुह महीहरा फुड दहि असियवन्ना ॥ पुक्करिणी कल्लोला, हणणुव्वफेण पिंडुव ॥ ॥ ४७५ ॥ अर्थ—ते वापिनीमांहे दधिमुख एवे नामे करी पर्वतछे ते स्फटिकना छे तेणे कारणेज कहेछे,फुड अने दहीनीपरे सितक०धवले वर्ण छे इहा उपमा कहाछे ए पुष्करणी वापि सबधी जे पाणीना कल्लोल तेना आहणवा थकी उपन्या जे फीण तेना पिंडनीपरे ॥ ४७५ ॥

मूल —चउसठि सहस्सुच्चा, दसजोयण सहस्सविच्छमा सव्वे ॥ महस्स मज्झोगा ढा, उवरि यहो पल्लया गारो ॥ ४७६ ॥ अर्थ—चोसठ हजार योजन उंचा अने दश सहस्र योजन प्रमाण विस्तार सघला दधिमुख एक हजार योजन पृथ्वीमां

हे उवगाढके० रह्याछे. तथा उपर अने नीचे सरखा, तेणे कारणे पल्लगके०पालो जे धान्य नाखवानुं ठाम विशेष, तेने आकारेछे. ॥ ४९६ ॥

हवे प्रासादनी वक्तव्यता अने रतिकरनी वक्तव्यता कहेछे. मूलः—अंजणगिरि सिहरेसुय, ते सुविजिण मंदिराइ रुंदाइ ॥ वावीणमंतरालेसु पव्वयडुगं डुगं अ त्थि ॥४९७॥ अर्थ.—प्रथम कह्या जे अंजनगिरि पर्वतो, तेमना शिखरोनेविषे अने ते सुविके० दधिप्रमुख पर्वतोनेविषे जिणके०श्रीवीतरागनां मंदिरके० प्रासाद ते रुंद के० विस्तीर्ण; ते आम जे. एकशो योजन लांबां अने पच्चाश योजन पहोलां,तथा बहोत्तेर योजन ऊंचां. वली तेनां चार बारणांछे,ते एकेक बारणुं सोल सोल योजन ऊचुं अने आठ आठ योजन पहोलुं,एनुं घणुं कथन शास्त्रांतरथकीजाणवुं ॥४९७॥

हवे वापि वापिना आंतरानेविषे बे बे पर्वतोछे तेमनां नाम अने स्वरूप कहेछे. मूल.—ते रइकरानिहाणा, विदिसिठिआ अठ पउमरायाला ॥ उवरि ठियजिणं दसिणाण घुसिण रस संगपिंगव्व॥ ४९८ ॥ तेरतिकर एवेनामे पर्वतो वापिने आंतरे दिशि विदिशिनेविषे रह्या एकेक दिशि आश्रयी बे बे करतां आठनी संख्या थाय छे. पण ते केवाछे? तोके पद्मरागशब्दे राते वर्णे जे मणी तेनीपरे छे आलाके० कांति जेमनी. इहां उपमा कहेछे. उवरिठिअके० ते रतिकरनामा बत्रीश पर्वतो नी उपर रह्याछे जे शाश्वत जिनेंद्र, तेनुं जे स्नान, तेणेकरी कुंकुम जल तेने संगे करी जाणे गुलाबी रगना थयाछे. ॥ ४९८ ॥

वली ते केहेवाछे? मूल—अच्चंतमसिणफासा, अमरेसरविंदविहियआवासा ॥ दसजोयणसहस्सुच्चा, उव्विठागाउअसहस्सं ॥ ४९९ ॥ अर्थः—अत्यंत मसृणके० सुकुमालछे स्पर्श जेनो अने अमरेसरके० देवोना ईश्वर एवा जे इंद्र तेने विहित के० कर्युंछे आवासके० रहेवापणु ज्यां, एटले अनेक इंद्र ते देवना समुदाये पर वरायका त्यां आवी प्रासादनी वदनाकरी क्रीडा करेछे. तेनुं प्रमाण ते दश ह जार योजन ऊंचा अने एक हजार गाऊ भूमिमाहे उद्विद्ध. ॥ ४९९ ॥

हवे तेनु संस्थान कहेछे. मूलः—झल्लरिसंठाणठिआ, उच्चत्तसमाणविछडासव्वे॥ते सुवि जिणनवणाइ, नेयाइं जहुत्तमाणाइ ॥५००॥ अर्थ.—झालरने संस्थाने ठिआ के० रह्याछे. ते सर्वेनो विस्तार ऊंचपणे करी सरखोछे अने तेनेविषे पण श्री वीतरागना भुवनछे तेनु यथोक्त जेवुं पूर्वे मान कह्यु तेहज मान इहा पण जाणवु.

हवे जेम पूर्वदिशिना अंजनगिरिनी वाव्य नंदोत्तरादिक नामे कही, तेम शेष त्रणदिशिना अंजनगिरिनी वापिनां नाम पण कहेनार थको दक्षिणनी चार वा

व्यना नाम कहेले सूत्र –दाहिण दिसाइ नद्दा, विसालवावीअ कुमुयपुक्करणी
तह पुंडरीगणीमणि, तोरणआरामरमणीआ ॥ ५०१ ॥ अर्थ –दक्षिणदिशिए पू
नी वाजुए नंदानामे वाव्यले, एम अनुक्रमे दक्षिणनी दक्षिणे विसाल नामे वाव
ले, अने दक्षिणनी पश्चिमे कुमुदानामे वाव्यले, अने दक्षिणनी उत्तरदिशिए पुंडरि
णी नामे वाव्यले परतु ए समस्त वाव्य मणिमय, तोरण, आराम, वन-तेणे
करी रमणीय महामनोहर ले ॥ ५०१ ॥

पश्चिमदिशिना अंजनगिरिनी वाविना नाम पूर्वादिक चार दिशिना क्रमेकरी
खाडेले सूत्र –पुक्करिणिनदिसेणा, तहाअमोहायवाविगोथूना ॥ तहयसुदंसणत्त
वी, पतिमअंजणचउदिसासु ॥ ५०२ ॥ अर्थ –पश्चिमदिशिनो जे अंजनगिरि तं
नी पूर्वदिशिए नंदिसेना नामे पुष्करणी वाव्यले, दक्षिणे अमोघानामे वाव्यले, पश्चि
गोथूनानामे वाव्यले तेमज उत्तरदिशिए सुदर्शना नामे वाव्यले ए पश्चिम
शिनो जे अंजनगिरि–तेनी चारेदिशिने विषे वाविउले तेमना नाम कह्या ॥५०२॥

हवे उत्तरदिशिना अंजनगिरिनी चारेदिशानी वाविना नामो कहेले सूत्र–वि
जयायवेजयंती, जयंतिअपराजिआउवावीउ ॥ उत्तरदिसाइपुत्त वाविमाणान्न
रसवि ॥ ५०३ ॥ अर्थ –पूर्वदिशिए विजयानामे वाविले, दक्षिणदिशिए वैजयंती,
पश्चिम दिशिए जयंती अने उत्तर दिशिए अपराजिता एरीते उत्तरदिशिनो अं
नगिरि–तेनेविषे ए पूर्वोक्त वाविने प्रमाणे ए सर्वमली वार थइ ॥ ५०३ ॥

हवे समस्त वाविउनु सरखु विशेषण कहेले सूत्र –सव्वाउवावीउ दहिमुह
लाणगाणजुयाउ अंजणपमुहगिरिते, रसगविज्ञाइचउदिसपि ॥ ५०४ ॥ अर्थ–
सर्व वाविउ ते दधिमुख प्रमुख जे पर्वतो तेमने स्थानकभूत ले ए एकेक दिशिए
एक एक अंजनगिरि, चार चार दधिमुख अने आठ आठ रतिकर मली तर ले ए
नपर्वत प्रमुख विज्ञाइके० वर्त्तेले, ते सुद्धा तेर तेर पर्वतो चारेदिशाए ले ॥५०४॥

हवे सर्व उपसंहार देखाडेले सूत्र –इय वावन्नगिरीसर सिहरठिअवीयरायचे
ए ॥ पूयणकएचउविह, देवनिकाउ समेइसया ॥५०५॥ अर्थ –एम तरन चार
दिशिएकरी चार गुणा करिए तेवारे वावन्न पर्वतो थाय तेमनां ज शिखर–ऊ
र रह्यांले जे श्री वीतरागना विंव तेनी पूजाने अर्थे भुवनपति प्रमुख चतुर्विध
निकायना देवा ते समेइके०आवेले, सयाके० सदा सर्वदा आवेले एम जाणवु
हा जीवाभिगम द्वीपसागरपन्नत्ति अने सरयण प्रमुख ग्रंथ माय अन्यद
दरनापले ते मतातर जाणवु यडुक्त ॥ अंजणगिरीसुदासु माननसुं दहिमुहउ

लेसेसु ॥ बत्तीनरइकरेसु, नंदीसरदीवमप्पंमि ॥ १ ॥ जोयणसयदीहाइं, पन्नासंवि च्छडाइसत्ताइं ॥ बावन्नरुसियाइं, बावन्नोहोंतिजिणनवणा ॥ २ ए बे गाथा शास्त्रो क्त सोपयोग नणो लखीछे. ॥ ५०५ ॥ इति गाथा विंशतिकार्थ.

अवतरण –लद्धीउत्ति एटले अठावीश लब्धीनुं बशेने सीतेरमुं द्वार वखाणेछे मूल.–आमोसहिविप्पोसहि, खेलोसहिजल्लओसहीचेव॥ सव्वोसहि संनिन्ने उही रि उविउलमइलद्धी॥५०६॥ चारणआसीविसकेवलीयगणधारिणोयपुव्वधरा ॥ अरहंत चक्कवट्टी, बलदेवावासुदेवाय॥५०७॥ खीरमहुसप्पिआसव, कोठयबुद्धी पयाणुसारी य ॥ तह बीयबुद्धितेयग, आहारगसीयलेसाय ॥५०८॥ वेउव्विदेहलद्धी, अरकीणम हाणसीपुलायाय ॥ परिणामतववसेसं, एमाइ हुंति लद्धीउ ॥ ५०९ ॥ इत्यादिक ए चारे गाथा सुगम छे, नवर एटलुं विशेष जे, एमाइके० इत्यादिक शब्द थकी अने री पण शुन, शुनतर, शुनतम परिणामना विशेष थकी अने तपना प्रनावे करी ल ब्धीउ थायछे. एनां नाम मात्र गाथाए करी कहीने हवे एनुं स्वरूप वखाणनार बतो

प्रथम पाच लब्धीनु स्वरूप बे गाथाये करी कहेछे. ॥५०९॥ मूलः–संफरिसणमा मोसु मुत्तपुरीसाणविप्पुसोवावि ॥अन्नेविडित्तिविठा, नासतिपइतिपासवणं॥५१०॥ एएअन्नेअवहू जेसिं सव्वेवि सुरहिणोवयवा ॥ रोगोवसमसमत्था, ते हुंति तउसहिपत्ता ॥५११॥अर्थ –संस्पर्शना शब्दे करी आमर्ष हाथ प्रमुखनुं स्पर्शवु तेहज उसह, ते आम र्षोषधि एहज लब्धि जाणवी इहां लब्धि अने लब्धिवंतने माहो मांहे नेद जाणवो नही. अने लब्धिशब्द प्रत्येके जोडिए. ए आमर्षोषधि ए संपदा यतिनीछे, एम सर्वत्र जाणवु. इहां ए नाव छे के ज्या यतिने हाथने स्पर्शवे करीने अनेक प्रकारना रोग उपशमे. एम मूत्रने पुरीस ते वडीनीति कहिये,तेना विप्पुसोके०अवयव,ते पण रोग हरवाने समर्थ होय, ते वर्प्योषधि नामा बीजी लब्धि जाणवी. हवे आगलाबे पद ते पाठांतरछे, तेनो ए अर्थ जे अन्नेके०अनेरा वली एम कहेछे विडत्तिके०विष्टा कहेछे अने पइत्तिके० प्रश्रवण ते मूत्र कहेछे. एएके० जेम ए बे कह्यां तेम त्रीजी अनेरा पण खेल शब्दे श्लेष्म तेहज छे जेनुं औषध ते त्रीजी खेलौषधि लब्धि जाणवी. चोथी जलशब्दे मल ते दात, कान, नासिका, नेत्र,जीन तथा शरीरनो मल ते सुगन्धीयुक्त होइने रोग उपशमावे छे.ए जेनुं औषध ते चोथीजलोषधिलब्धि जाणवी एमज पाचमी नख केश प्रमुख शरीरना कहेला अणकहेला जे अवयव ते पण जेना उसहके०औषध समानछे, ते पाचमी सर्वोषधि नामा लब्धि जाणवी. एम ते तदौषधि प्राप्त कहिये. वली एनु ए विशेषछे जे वरसादनुं पाणी तथा जेना अंग

कही अने दशमी चारणलब्धि ने तेनुं स्वरूप प्रथम जंघाचारण ने विद्याचारणना द्वारमा वखाण्युंछे माटे इहां वखाणता नथी. ए दशमी जंघाचारणलब्धि थई.५१४॥

हवे अग्यारमी आसीविष लब्धि कहेछे. मूल.—असीदाढातग्गय, महाविसासीवि साडुविहजेया ॥ ते कम्मजाइजेएण णेगहाचउविहविगप्पा ॥ ५१५ ॥ अर्थः—आसी शब्दे दाढ कहिये, तग्गयके० ते दाढने विषे जेने गतके० रह्युंछे विष ते आसी विष, ते कर्म अने जातिना नेदेकरी बे प्रकारेछे. त्यां पेहेलु कर्मेकरी ते पंचेंद्रिय, तिर्यंच, मनुष्य अने सहस्रार देवलोकसुधीना देवता तेमने ए तपश्चर्यादिक अनुष्ठा ने करीने अथवा अनेरे गुणे करीने आसीविषादिक साध्य क्रिया करे, शापे करी मारे, देवता अपर्याप्तावस्थाये ते लब्धिए सहित होय. केमके पहेला मनुष्यना न वनेविषे आसीविषलब्धिवंत होय, पछी तेना संस्कार लगीने ते लब्धिमंतज कहिए; परतु पर्याप्तावस्थाए तेने ते लब्धि न कहिए. यद्यपि देवता शापेकरी, बीजानेमारे छे तो पण ते लब्धि न कहेवाय. ए तो स्वनावे नवप्रत्येक समर्थाइ समस्त देवोने छेज, परंतु गुणप्रत्येक समर्थाइ थाय ते विशेष जाणवी. तेनेज शास्त्रमा लब्धि कहिये.

हवे बीजो जातिना नेद थकी कहियेछे तेए. ते अनेक प्रकारेछे, पण तेना चउ विहके० चार प्रकारना विकल्प नेद होय ते आवीरीते. एक वृश्चिक, बीजो मेडुक त्रीजो सर्प ने चोथुं मनुष्य एना नेद थकी ते बहु,बहुतर,बहुतम अने अतिबहुतम तेनु वली विशेष आमछे. वीछीनुं विष अर्द्ध नरत खेत्र प्रमाण शरीर व्यापे, बी छुं मेडुकनुं विष संपूर्ण नरतखेत्र प्रमाण व्यापे, सापनुं विष जंबुद्वीप प्रमाण व्या पे अने मनुष्यनु विष सर्व मनुष्यखेत्रसुधी व्यापे. ए अग्यारमी लब्धी कही॥५१५

हवे बारमी केवलीनी लब्धि, तेरमी गणधरनी लब्धि, चउदमी पूर्वधरनी ल ब्धि, पन्नरमी अरिहंतनी लब्धि, सोलमी चक्रवर्त्तिनी लब्धि, सत्तरमी बलदेवनी लब्धि, अने अढारमी वासुदेवनी लब्धि. एटली लब्धिउ प्रसिद्धछे

हवे खीराश्रवादिक लब्धि कहियेछेए. मूल.—खीरमहुसप्पिसाउ, वमाणवयणा तयासवा हुंति ॥ कोठयधन्नसुनिग्गल, सुत्तठाकोछबुद्धीया ॥ ५१६ ॥ अर्थ.—खीर शब्दे दूध ते इहा चक्रवर्त्तिनी लाख गायने अर्द्ध अर्द्ध अनुक्रमे जे एक गाय तवं धी दूध ते सर्करा ने चतुर्जातक साथे मिश्रित ते जेम जमता थका मनने अने शरी रने सुख उपजावे,तेम ए खीराश्रवलब्धिवंतनुं वचन पण खीरनीपरे आके०समस्त प्र कारे श्रवे ते खीराश्रवलब्धि कहिए. एमजे मधुके०साकर प्रमुख मधुर द्रव्यनीपरे श्रवे ते मध्वाश्रवलब्धि जाणवी; तथा जे चक्रवर्त्तिनी गाय तेनु घृत तेनीपरे व



क्ति, अनेक योजनने आश्रीत ... , चोथी
कुल्मासना बाकुलानी एक मुठी ... गहार.
लेश्या लब्धि उपजे, ते अवांतर ...
चोवीशमी आहारकलब्धि ... तीर्थ
ए शरीर तीर्थंकरनी ऋद्धि ...
पचीशमी शीतलेश्यालब्धि ...
प्रत्ये शीत एवुंजे तेजनुं ... सू
छवीशमी वैक्रियलब्धि ... तेरस
अणुत्व, बीजुं महत्व, त्रीजुं ...
ईशित्व, आठमी वशित्व, नवमुं ... नो पृ
त्यादिकना भेदथकी अनेक ...
महत्व जाणवी. त्रीजी ...
णवी. चोथी वज्रादिक ...
समान तेने पण ...
श्रमने सुर्यना माण्डला ...
मे भूमिवाली परे ...
जल निमज्जन ...
पेरें पक्रामे ...

महिलाणं ॥ ५२० ॥ अर्थः—एक अरिहंत, बीजी चक्रवर्त्ति, त्रीजी वासुदेव, चोथी बलदेव, पांचमी संभिन्नश्रोता, छठी विद्याचारणादिक, सातमी पूर्वना धरणहार, आठमी गणधर, नवमी पुलाक, दशमी आहारक शरीर करवानी लब्धि. ए दश ल ब्धि भव्य स्त्रीने नथाय शेष अढार लब्धि थाय. अने श्रीमल्लिनाथने स्त्रीपणे तीर्थ करपणुं जेप्राप्त थयुं. ते तो अछेरु जाणवुं. ॥ ५२० ॥

हवे अभव्य पुरुष तथा स्त्रीने जे लब्धि थाय ते बे गाथाए करी कहेछे. मू लः—अभविय पुरिसाणं पुण, दसपुव्विल्लिउकेवलित्तंच ॥ उज्जुमई विउलमई, तेरस एआउ न हु हुंति॥५२१॥ अभविय महिलाणं पुण, एयाउ न हुंति भणीय लद्धीउ॥म हुखीरासवलद्धी, विनेय सेसाउ अविरुद्धा॥५२२॥ अर्थः—अभव्य पुरुषोने दश तो पू र्वोक्त अरिहंतादिक जे कही ते, अने अग्यारमी केवली लब्धि, बारमी ऋजुमतिलब्धि तेरमी विपुलमति लब्धि. ए तेर लब्धि नथाय. ॥५२१॥ अने अभव्य स्त्रीने पण, एहज तेर लब्धि नथाय; तथा मधुआश्रव अने खीराश्रव ए पण नथाय. अने शेष लब्धिउ ते अविरुद्धछे. थायतो थाय. ॥ ५२२ ॥ इति गाथा सप्तदशकार्थ ॥

अवतरणः—तवत्ति एटले तपनुं वर्णने एकोतेरमुं द्वार कहेछे. मूल.—पुरिमड्ढे कासण निव्विगइय आयंबिलोववासेहि ॥ एगलया इय पंचाहि, होइ तवो इंदियजउत्ति ॥ ५२३ ॥ अर्थ.—तपावेके० अशुभकर्मने बाले तेने तप कहीए. ते अनेक प्रकारे छे; तथापि तेमां मूल इंद्रियजय नामा तपछे. केमके श्रीवीतरागनो धर्म पण एवेज नामेछे; तेथी ए तप पण एज नामे जाणवुं. ते कहेछे. पेहेला दिवसे पुरिमड्ढ, बी जे दिवसे एकासणु, त्रीजेदिवसे नीवी, चोथेदिवसे आंबिल अने पांचमेदिवसे उपवास. ए पांचे पच्चख्खाणे करी एकलता श्रेणी परिपाटी. ए सर्व शब्दो एकार्थिकछे. एवी पांचेलताए पांच इंद्रियोने दमन करवुं माटे इद्रियजय नामा तप थाय. इहां ए भाव जे पांच दिवसे एक इंद्रियनो जय करनार होय, तेमाटे एम पच्चीश दिवसे पांच इंद्रियोनो जय थाय. इहां श्री जिनशासननेविषे जे तप करीए ते सर्व इंद्रिय ना जयनुं करनार थाय छे, परंतु पूर्वाचार्ये एने एज नामे कह्युं छे. ॥ ५२३ ॥

हवे इंद्रियजय कह्या उपरांते योगशुद्धि करवी जोइए तेज तप कहेछे. मूल.—निव्वि गइयमायामं, उपवासो इय लयाइ तिहिं भणिउ॥ नामेण जोगसुद्धी.नवदिणमाणो त वो एसो ॥ ५२४ ॥ अर्थः—पेहेले दिवसे नीवी, बीजे दिवसे आंबिल, त्रीजे दिवसे उपवास, ए एकलता एवी त्रण लताए योग शुद्धिनामा तप भणिउके० कह्युंछे. त्यां

...ग ते मनोयोगादिक त्रण तेनो व्यापार विशेष, तेनी जे शुद्धि निरवद्यपणुं जे
...की थाय ते योगशुद्धि जाणवी एनुं तप नव दिवस मान होय छे ॥ ५२४ ॥
... हवे योगशुद्धि थइ छता ज्ञानादिक त्रणनी प्राप्ति थाय तो जली जाणवी ते
... ते ज्ञानादिक त्रणनुं तप कहेछे मूल —नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमिअ तिन्नि
...पत्तेय ॥ उववासातप्पूआ, पुव्वतन्नामग तवंमि ॥ ५२५ ॥ अर्थ —ज्ञाननेविषे,
...नेविषे अने चारित्रनेविषे प्रत्येके त्रण त्रण उपवास करवा, अने तेनी पूजा
... करतां तेतेज नामे तप थाय छे ते आवी रीते पेहेलुं ए त्रणमां मुख्य ज्ञानने,
...आराधवाने अर्थे त्रण उपवास अने तेनी पूजा पूर्वक करता ज्ञान नामे तप
... तेमां सिद्धांतनी पूजा पुस्तकने पहेरामणी वीटणा प्रमुख ज्ञान साधनोपा
...रीए अने ज्ञानवंत पुरुषने एषणीय वस्त्र, पात्र, अन्न, पानादिके पूजा क
...मज दर्शन आराधवाने अर्थ त्रण उपवास करवा त्यां दर्शन प्रभावक ने
...दिक ग्रंथ अने सद्गुरुनी पूजा करवी एमज चारित्रनेविषे पण चारित्रवंत
... करीए एरीते करतां ज्ञानतप, दर्शनतप ने चारित्रतप थाय ॥ ५२५ ॥
...दिक त्रिकनो धणी कषाय जय करे तो भलुं तेमाटे कषायजय नामा
...छे मूल —एक्कासणग तह, निव्विगइयमायंबिल अभत्तट्ठो ॥ इय होइलयव
...यविजये तव चरणे ॥ ५२६ ॥ अर्थ —एकासणुं, नीवी, आंबिलने उप
...वार एकलताए थाय एम क्रोधादिक चार कषायना जयनेअर्थे चार लता
... चारु सोल दिवस पर्यंत कषायविजयनामा तपश्चरण करीए हवे ज्ञा
...रणी कषायना जय करी पछी विविध प्रकारनां तप करे, तेथी तेना प्रकार
...को अपकार प्रथम चार गाथाये करी कर्मसूदन नामा तप कहेछे ॥ ५२६॥
...मण एक्कासणग, एक्कगसित्थंच एगठाणंच॥एक्कगदत्ति निव्विय, मायंबिल
... ॥ ५२७ ॥ एसा एगावलिया अट्ठहिलईयाहि दिवसचउसट्ठी ॥ इय अ
... तवंमि भणिया जिणिंदेहिं ॥५२८॥ अर्थ —पहेले दिवसे उपवास,
...एकासणुं त्रीजे दिवसे एकलसित्थो चोथे दिवसे एकठाणुं पांचमे दिव
...छट्ठे दिवसे नीवी, सातमे दिवसे आंबिल, आठमे दिवसे आठ कवल
...पणे एकलता थइ एरी आठ लताए एटले आठ अविर्यु चासठ दि
... स्नात्रपूजा श्रीजिनराजने पहेरामणी प्रमुख आपीए आगळे

वली विशिष्ट वलीमांहे सुवर्णमय कुहाडी ते कर्मरूपीयां तरुवर छेदवाने अर्थे होइवो एरीते कर्मनुं सूदनके० विनाश थायछे. ॥ ५२७ ॥ ५२८ ॥

हवे न्हानु सिंहनिःक्रीडितनामा तप कहेछे. मूलः—इगडुगइगतिगडुगचउ, तिग पणचउछक्कपंचसत्तछगं ॥ अठगसत्तगनवगं, अठगनवसत्तअठेव ॥ ५२९ ॥ छगस त्तगपणछक्कं, चउपणतिगचउरडुगतिगंएगं ॥ डुगएक्कगउववासा, लहुसीहनिकीलिय तवम्मि ॥ ५३० ॥ अर्थ.—एक उपवास करी पारणु करे, एम वे उपवास करी पारणु करे, एम सर्व उपवासे आगल पारणु जाणवुं. पछी एक उपवास, त्रण, बे, चार, त्रण, पाच, चार. छ, पांच, सात, छ, आठ, सात, नव, आठ, नव, सात, आठ, छ, सात, पांच, छ, चार, पांच, त्रण, चार; वे, त्रण, एक, वे, एक, उपवास, ए आगले जे कहेछे तेनी अपेक्षाए न्हानुं, अने सिंहना निःक्रीडितके० गमननी परे ए होय, तेथी ए तपपण सिंहनि क्रीडित जाणवुं, जेम सिंह जतो थको दूर जइने वली पाछो ते प्रदेशे जुएछे, तेनी पेरे जे तपने विषे पच्चखाण कस्यो तेहज वली पण करीने पारणुं करी वली आगला तपनुं आसेवन करे तेथी ए न्हानुं सिंहनिः क्रीडिततप—तेने विपे हवे उपवासना दिवसो अने पारणाना दिवसोनी संख्या कहेछे,

मूलः—चउपन्नं खमणसयं, दिणाणि तह पारणाणि तेत्तीसं ॥ इहपरिवाडिचउक्के, वरिसडुगं दिवसअडवीसा ॥ ५३१ ॥ अर्थः—एकशोनेचोपन्न उपवासना दिवस अ ने तेत्रीश पारणा, एम ए एक परिपाटी एटले श्रेणी थइ, एवी जेवारे चार परि पाटी थाय तेवारे तेनेविपे वे वर्ष अने अठावीश दिवस थायछे. ॥ ५३१ ॥

हवे ए चार परिपाटीने विपे पारणानुं स्वरूप कहेछे. मूलः—विगईउ निव्विगइ यं तहा अलेवाडयंच आयामं ॥ परिवाडिचउक्कमिय, पारणएसुं विहेयव्वं ॥ ५३२ ॥ अर्थ.—पहेली श्रेणीए विगइ जमे ते दिवशे सर्व कामगुणित रसोपेत जमे. बीजी श्रेणीएनीवी अने त्रीजी श्रेणीए अलेपकारी वाल चणादिक जे जमतां थकां हस्त पात्र प्रमुखने लेप लागे नही. चोथी श्रेणीए आंबिल करे. एम चारे श्रेणीनेविपे पारणाने दिवसे करवुं एटले लघुसिंहनिःक्रीडित तप कह्यु. ॥ ५३२ ॥

हवे महासिंहनिःक्रीडितनुं स्वरूप कहेछे. मूलः—इगडुगइगतिगडुगचउ, तिगप णचउछक्कपंचसत्तछगं ॥ अमसत्तनवडदसनव, एक्कारसदसयबारसगं ॥ ५३३ ॥ अर्थः—इहां पण एकादिक उपवासनी संख्या कहेछे. एक उपवास, वेउपवास, एक उपवास, त्रण उपवास, वे उपवास, चार उपवास, त्रण उपवास, पांच उपवास, चार उपवास, छ उपवास, पाच उपवास, सात उपवास, छ उपवास, आठ उप

णु एम पाठा आवतां ठहेछे एक उपवास ने उपर पारणु करीए, एम एक उप वासने आंतरे वधता उतरता उपवास थाय ते सोल सुधी चमतां अर्ध मुक्काव ली थाय; अने प्रतिलोमे पूरण मुक्तावली थाय त्यारे सर्व मली त्रणशे उपवास थायछे. ॥ ५३७ ॥ हवे वीजी गाथाए पारणाना दिवसोनी संख्या अने सर्व दिव सोनी संख्या कहेछे. पारणयाणंसठीके० साठ पारणां एक परिपाटीनेविषे थायछे, एरीते चार परिपाटीनेविषे चार वर्ष संपूर्ण थाय. एटले ए मोतीना हारनी परे मुक्तावली तप छे ते कह्यु. ॥ ५३८ ॥

हवे रत्नावली तप कहेछे. मूलः—इग डु तिकाहलियासुं, दाडिमपुप्फेसु हुंति अठ तिगा ॥ एगाइसोलसंता, सरिआजुअलंमि उववासा ॥ ५३९ ॥ अंतम्मि तस्स पय गं, तचं कठा णमिक्क मह पंच ॥ सत्तयसत्तयपणपण, तिन्निक्कं तेसुतिगरयणा ॥५४०॥ पारणय दिणछासी, परिवाडिचउक्कगे वरिसपणगं ॥ नवमासा अठारस, दिणाण रय णावलितवम्मि ॥५४१॥ अर्थ.—जेम रत्नावलिने आजरण विशेष कहेछे, तेम रत्ननी पंक्ति सरखुं जे तप ते रत्नावलीतप कहीये. जेवी रत्ननीपंक्ति ते बंने जणीनी वाजूए प्रथम सूक्ष्म अनेपछी स्थूल एवा विजागे करी काहलिका नामे सुवर्णना वे अवयवे क री युक्त होयछे, तेमज ते दाडमनां पुष्पोए करी बंने वाजुए शोजित. त्यारपछी सरल बंने तरफनी वाजुनी जे सेरो तेणेकरी शोजनारी अने नीचेना जागनेविषे स्थापन करे ला पदके करी अत्यंत अलंकृत होयछे एवुं जे तप, पट्टादिकनेविषे वतावेला आकारने धारण करेछे, तेने रत्नावली कहेछे. त्यां एक, बे, त्रण एनीमध्ये अर्था जागना अनुक्रमे काहलिका स्थापन थायछे. त्यारपछी बंने दाडिम पुष्पना जणी नी वाजुए प्रत्येके आठ त्रिक अने ते बंने जणीनी वाजुए रेखा चतुष्टे करी नव नव कोष्टक करवा, मध्ये शून्य करी नीचे नीचे अंक स्थापन करेछे. त्यारपछी पंक्तिनेविषे सरिकायुगलने विषे एक छे आदिजेमा, अने सोल जेमां छेवटे छे एवां स्थान कर वां, ते सरिकायुगलनेनीचे पदक ते आठ पंक्तिए चोतरीश अंकना स्थान एवुं कोष्टक थायछे. तेमां पहेली पंक्तिनेविषे एक अंकस्थान, बीजी पंक्तिनेविषे पाच अंकस्था नो, त्रीजी पंक्तिनेविषे सातअंकस्थानो, चोथी पंक्तिनेविषे पण सात अंकस्थानो, पाचमी पंक्तिनेविषे पाच अंकस्थानो, छठी पक्तिनेविषे पांच अंकस्थानो, सातमी पंक्तिनेविषे त्रण अंकस्थानो, आठमी पंक्तिनेविषे एकज अंकस्थान, एवां ए चोतरी शे कोष्टकनेविषे त्रण त्रण अंक स्थापन करवा. हवे स्थापन कहेछे.

अहीयां आ जावार्थछे के रत्नावली तपनेविषे प्रथम एक [illegible] रप

छी बे उपवास करेछे, त्यारपछी त्रण उपवास करेछे ए एक काहलिका ए मध्ये त वे ठेकाणे पारणां जाणवां त्यारपछी आठ ठेकाणे बने तरफनी बाजुए त्रण त्रण उपवास करेछे, एणे करी काहलिकानी नीचे दाडिमपुष्प उत्पन्न थायछे त्यार पछी एक उपवास करेछे त्यार पछी बे उपवास करेछे, त्यारपछी त्रण उपवास करेछे, त्यारपछी चार उपवास करेछे, त्यारपछी पांच उपवास करेछे, त्यारपछी छ, सात, आठ, नव, दश, अग्यार, बार, तेर, चौद, पंदर, सोळ उपवास करेछे एवी दाडमनापुष्पनी नीचे एक सरिका थायछे, त्यारपछी चोतरीश अट्ठम करेछे ए एणेकरी पदकउत्पन्न थाय छे त्यारपछी सोळ उपवास करेछे त्यारपछी पंदर, चौद, तेर, बार, अगीआर, दश, नव, आठ, सात, छ, पांच, चार, त्रण, बे अने एक पर्यंत उपवास करेछे ए बीजी सरिका (सेर) थायछे त्यारपछी वळी आठ अट्ठम थायछे एणेकरीने पण बीजा दाडमनां पुष्प उत्पन्न थायछे त्यारपछी त्रण उपवास करेछे, त्यारपछी बे उपवास करेछे अने त्यारपछी एक उपवास करेछे, एणेकरी बीजी काहलिका उत्पन्न थायछे एवु थयु छता परिपूर्ण रत्नावली सिद्ध थायछे आ रत्नावलीतपनेविषे काहलिकाना तपना दिवसो बार अने दाडमना पुष्पना बने जणीनी बाजुना मळी अडतालीश दिवस तथा बने सेरने विषे बे बाजुना सोळनी सकलनाए दिवस बसे बोतेर अने पदकनेविषे चोतरीश अट्ठमोना दिवस एकसोने बे थायछे ए सर्व एकत्रकर्या छतां चारसे चोतरीश दिवस थायछे अने अट्टासी पारणाना दिवस थायछे बनेने एकत्र कर्या छतां पाचसें बावीस दिवस थायछे एनी वर्षसख्या करीए तो एक वर्ष पांच मास बार दिवस थायछे ए तप पण पूर्व सरखा चोपट्टे करी युक्त थायछे ते चारे गुण्या छतां पाच वर्ष नव मास अने अढार दिवस थायछे ॥ ५३९ ॥ ५४० ॥ ५४१ ॥

हवे कनकावली तप देखाडेछे मूळ —रयणावलीकमेण, कीरइ कणगावलीतवो नवर ॥ कज्जा डुगाइ तिगपए दाडिमपुप्फेसु पयगेय ॥५४२॥ अर्थ —कनकावली एटले सुवर्णमय मणीओथी उत्पन्न थएलु भूषण ते कनकावली, तेना आकारनी स्थापनाए करी जे तप तेने कनकावली एवु कहेछे ए कनकावली तप, रत्नावली तपना क्रमेकरीने करेछे, परतु केवळ दाडमपुष्पना अने पदकनेविषे त्रिकोनी स्थापनाने विषे बे उपवासनी सूचना करनारा द्विक करवा वाकी सपूर्ण रत्नावली सरखुज जाणवु

हवे पारणा सबधी विधि कहेछे मूळ —परिवाडिचउक्के वरि, सपंचगदिणडुगूणमास तिग॥ पढमतिवुत्तो कज्जो, पारणयविहीतवप्पणगे ॥५४३॥ अर्थ —परिवाडिके० श्रेणी

तेना चोकडाने विषे पांच वरस अने उपर बे दिवसेकरी उणा त्रण महीना थाय ते, प ढमके० प्रथम कह्युं जे लघुसिंहनिःक्रिम्ति तथा महासिंहनिःक्रीडित नामा तप तेने विषे कह्योछे जे पारणानो विधि, तेमज मुक्तावली, रत्नावली कनकावली एने विषे पण जाणवी. ए पांचेने ए सरखोज पारणानो विधि जाणवो. ए रत्नावली कनकावली कही

हवे नद्रादिक तप कहेछे. मूलः—नद्दाइतवेसु तहा, इयाजया इगडुगतिन्निचउपं च ॥ तह तिचउपंचइगदो, तह पणइगदोन्निंतिचउक्कं ॥५४४॥ अर्थः—नद्रा आदेदेइ नें तपनेविषे लतादिक एमज थाय. प्रथम एक उपवास एमज बे, त्रण, चार, पांच, एटले एकलता थइ. ते थकी बीजी लता ते त्रण, चार, पांच, एक, बे. ए बीजी उ ली थइ, वली पांच, एक, बे, त्रण, चार, ए त्रीजी उली जाणवी. ॥ ५४४ ॥

मूलः—तह डुतिचउपणगेगं, तह चउपणगेगडुन्नितिन्नेव ॥ पणहत्तरिउववासा, पारणयाणंतु पणवीसा ॥५४५॥ अर्थः—तहके० तेथकी वली चोथी पंक्ति बे, त्रण, चार, पांच ने एक, वली ते थकी पांचमी पंक्ति ते चार, पांच, एक, बे ने त्रण, ए पांच उली कही. ते एकेकी उलीनेविषे पन्नर पन्नर उपवास थायछे. एम पंचोतेर उ पवास अने एक ओलीए पांच पारणां करतां पच्चीश पारणाना दिवसो थायछे.॥५४५॥

हवे महानद्रप्रतिमा कहेछे. मूलः—पनणामि महानद्दं, इगडुगतिगचउपण छ सत्तेव ॥ तह चउपणछगसत्तय, इगडुति तह सत्तइक्कंदो ॥ ५४६ ॥ तिन्निचउपंचछ क्कं, तह तिगचउपणछसत्तगेगंदो ॥ तह छगसत्तगइगदो, तिगिचउपणतहडुगंतिचउ ॥ ५४७ ॥ पणछगसत्तिक्कंतह, पणछगसत्तिक्कदोन्नितियचउरो ॥ पारणयाणिगुव न्ना, छन्नउअसपंचउछाणं ॥५४८॥ अर्थः—एक, बे, त्रण, चार, पांच, छ ने सात, तथा शब्द थकी इहां पण उलीनुं धुर जाणवुं. ए प्रथम उली. चार, पांच, छ, सात, एक बे, त्रण. ए बीजी उली. सात, एक, बे, त्रण, चार, पांच, छ, ए त्रीजीउ ली. त्रण, चार, पांच, छ, सात एक, बे, ए चोथी उली. छ, सात, एक, बे, त्रण, चार ने पांच ए पांचमी उली. बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात ने एक ए छठी उली. तेम ज पांच, छ, सात, एक, बे, त्रण ने चार ए सातमी उली थइ. एरीते सात उली त पनी करीए. ते साते उलीमां उगणपच्चाश पारणांना दिवसो थायछे. अने एके की उलीमां अठावीश अठावीश उपवास थाय छे. साते उलिमां एकशोने छनुं चउ छके० उपवास थाय छे. ॥ ५४६ ॥ ५४[illegible] ५४८ ॥

हवे नद्रोत्तर प्रतिमा कहेछे. मूलः—न[illegible]पडिमाए, पण[illegible]नव तहा सत्त॥ अडनवपंचछ तहा, नवपणछगसत्तअ[illegible]४९॥ तह [illegible]नव पण. तह छन्

वपणठसत्तनत्तद्दा ॥ पणहत्तरिसयसखा, पारणगाणतु पणवीसा ॥५५०॥ अर्थ-पांच, ठ, सात, आठ ने नव, एटला उपवासे प्रथम उंली जाणवी इहां पणतथा शब्दथकी उंलीनो प्रारन जाणवो .सात, आठ, नव, पाच ने ठ, ए वीजी उंली जाणवी तथा नव, पांच, ठ, सात ने आठ, ए त्रीजी उंली जाणवी ठ सात आठ नवने पाच, ए चोथी उंली जाणवी आठ, नव, पाच,ठ ने सात ए, पाचमी उंली थायजे इहां एकेकी उंलीए पात्रीश उपवास थायठे, तेवी पांच उंली करवी, तेवारे अनुक्रमेके० उपवास ते एकशोने पचोतेरनी सख्या थायठे तथा एकेकी उंलीए पांच पांच पारणा करता पांचे उंलीए पच्चीश पारणानी सख्या थायठे ॥५४९॥५५०॥

हवे सर्वतोनइ प्रतिमा कहेठे मूल -पडिमाइसव्वनद्दाए पणठसत्तठनवदसिक्कारा ॥ तहअडनवदसइक्कारस पणठसत्तयतहिक्कारा ॥ ५५१ ॥ पणठगसत्तगअड नव, दस तह सत्तठनवदसेक्कारा ॥ पणठ तहा दसइक्कार पणठसत्तठनवयतहा ॥ ॥५५२॥ ठगसत्तडनवदसग, इक्कारसपचतहनवगदसग ॥ इक्कारसपणठक्क, सत्तठय

नद्रा तपनु यत्र

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

नद्रोत्तर प्रतिमानु यंत्र

५	६	७	८	९
७	८	९	५	६
९	५	६	७	८
६	७	८	९	५
८	९	५	६	७

महानद्रप्रतिमा स्थापना

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	२
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	७	१	२	३	४

सर्वतोनद्रप्रतिमानु यंत्र

५	६	७	८	९	१०	११
८	९	१०	११	५	६	७
११	५	६	७	८	९	१०
७	८	९	१०	११	५	६
१०	११	५	६	७	८	९
६	७	८	९	१०	११	५
९	१०	११	५	६	७	८

रत्नावली नामा तपनुं यंत्र.

काहलिका. दाडिमपुष्प. सरिका.

१	२	३	३	३	३	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

३	०	३
३	३	३

३	३	३
३	०	३

ए रत्नावली तपनी स्थापना; एम कनकावली तपनेविषे पदके त्रणने ठेकाणे बगडा करवा. अने अंतगडदशामाहे रत्नावलीनुं पदक बगडे अने कनकावलीनुं त्रगडे कह्युंछे. ए रत्नावलीनी स्थापनाछे.

१	२	३	३	३	३	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

काहलिका. दाडिमपुष्प. सरिका.

३ ३
३ ३ ३ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३ ३
३ ३ ३ ३ ३
३ ३

पदक.

इह तवे होंति ॥५५३॥ तिन्निसया बाणउया, इत्थुववासाण होंति सव्वाए॥ पाण
यागुणवन्नाए भद्दाइतवा इमे भणिया ॥५५४॥ अर्थ —सर्वतोभद्रनामा प्रतिमाने
विषे पण पांच, छ, सात, आठ, नव, दश ने अग्यार ए एक पंक्ति, इहां सर्वत्र तद्
भद्दयकी पंक्तिनुं धुर जाणवुं तथा आठ, नव, दश, अग्यार, पांच, छ, सात ए
बीजी पंक्ति जाणवी तथा अग्यार, पांच, छ, सात, आठ, नव, दश, ए त्रीजी पंक्ति
जाणवी तथा सात, आठ, नव, दश, अग्यार, पांच ने छ ए चोथी पंक्ति जाणवी,
तथा दश, अग्यार, पांच, छ, सात, आठ ने नव ए पांचमी पंक्ति जाणवी तथा छ,
सात, आठ, नव, दश, अग्यार ने पांच ए छट्ठी पंक्ति जाणवी तथा नव, दश, अग्या
र, पांच, छ, सात ने आठ ए सातमी श्रेणी जाणवी इहां एकेकी श्रेणीए उपव
उपवास करतां सात श्रेणीमां त्रणसेने बाणुं उपवासनी संख्या थाय छे
अने एकेकी श्रेणीए सात सात पारणां करतां ओगणपच्चाश पारणां थायछे, ए
भद्रादिकतप श्रीतीर्थंकरदेवे भणियाके० कह्यांछे परंतु ए भद्रादिकतपनेविषे पार
णां पूर्वोक्त पांच तपनी परे प्रत्येके जाणवां, अने चतुर्विधपणुं पण प्रत्येके जाणवुं

हवे जेथकी समस्त सुखनी संपदाओ थाय अथवा ए तपना आसेववाथकी
एवी वस्तु कोइपण नथी के जे एनुं सेवन कर्याथी न संपजे अर्थात् सर्व वस्तुनी सं
पत्ति थाय, ते कारणे एनुं नाम पण सर्वसंपत्तिसुख नामा तप छे तेज कहेछे मूल—
पडिवइयाएगविय, दुग उवकाए जाव पन्नरस ॥ खमणेहमावसाओ, हाइ तवा सव्वसं
पत्ती ॥ ५५५ ॥ अर्थ —ए तप पक्षवायकी आरंभीने पडवानो एक उपवास करीए
बीजना दिवसथी बे उपवास करीए, बीजा पक्षना त्रीजना दिवसथी त्रण उपवा
स करीए, ते ज्यां सुधी छेहेला पुनेमना अथवा अमावास्याना दिवसथी पन्नर उ
पवास करीए त्यांसुधी पन्नर पक्ष थायछे अने एकशोने वीश उपवास थाय ए त
प कृष्णपक्षमां अथवा शुक्लपक्षमां करायछे एमकरतां सर्वसंपत्तिनामा तप थायछे

हवे रोहिणीतप कहेछे मूल—रोहिणिरिक्खदिणेसु, रोहिणीतव सत्तमासवरिसा
[illegible]सया, पुव्व कीरइ अजनत्ता ॥५५६॥ अर्थ —सत्तावीश नक्षत्र तेमां
[illegible]पकी रोहिणी नामा नक्षत्र थायछे, ते नक्षत्र जे दिवस
[illegible]नामक देवताविशेष, तेना आराधवान अर्थे सात व
[illegible]श्रीवासुपूज्यजिनेश्वरनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा पूजापूर्वक

वट्ठोहिं सुअदेवीपूअणापुव्वं ॥५५७॥ अर्थ.—अग्यार एकादशीसु
श्रुतदेवीनी पूजापूर्वक मौनपणु धारण करी चउत्थ तपे करी श्रुतदेवी आरा
वाने अर्थे शुक्ल एकादशीए निरंतर ए तप करीए. उजमणे रुपाना घंट अगीयार
तथा जातजातनां फल आपीए. ॥ ५५७ ॥

हवे सर्वांगसुंदर नामा तप कहेछे. मूल—सव्वंगसुंदरतवे, कुणंति जिणपूअखं
तिनियमपरा ॥ अट्ठुववासे एगंतरं त्रिलेधवलपक्खंमि ॥५५८॥ अर्थः—ए तपना क
रवाथकी समस्त अंगनेविषे प्रधान सुंदरपणु होय, ते कारणे एनुं नाम पण स
र्वांगसुंदरनामा तप छे; अने एनेविषे आठ उपवास अने एकांतरे आंबिल ते धव
लके॰ चांदरणापक्षनेविषे श्रीवीतरागनी पूजापूर्वक करे, अने क्षांतिके॰ क्षमा मा
र्दव आर्जवादिक नियमनेविषे पण परिचय करे. ॥ ५५८ ॥

हवे निरुजसिख तप कहेछे. मूलः—एवं निरुजसिहोविहु, नवरं सो होइ सामले प
क्खे ॥ तम्मिय अहिउंकीरइ, गिलाणपडिजागरणनियमा ॥५५९॥ अर्थः—एम निरु
जसिह एटले निरोगपणानेविषे शिखा समान, एटले ज्यां ए तप होय त्यां रोग
नहोय, अथवा निरुज एटले निरोगपणु तेहज छे प्रधान फलनी विवक्षाए शिखा
के॰ चोटलीनी परे ज्यां, ते निरुजशिख एवे नामे तप जाणवुं. ए तपनेविषे पण पूर्वोक्त
सर्वांगसुंदर नामा तपनी परे आंबिल अने उपवास एकांतरे करीए. नवरके॰ एटलुं
विशेषजे ए तप सामलेके॰ अंधारे पखवाडीए थाय, अने वली एने विषे ग्लानना प्रति
जागरणा वैयावच्च लक्षण, तेनुं अभिग्रह होय एटलुं अधिक जाणवुं. ॥ ५५९ ॥

हवे परमभूषणतप कहेछे. मूलः—सो परमभूसणो होइ जस्स आयंबिलाणि व
त्तीसं ॥ अंतरपारणयाइं, भूसणदाणंच देवस्स ॥५६०॥ अर्थ.—ए तपना करवाथकी
...क चक्रवर्त्ति आदिकनेविषे योग्य जे भूषण एवा हार कुंमल केयूरादिक अनेक
...भरण पामीए, तेथी ए तपनुं नाम पण परमभूषणछे. एनेविषे बत्रीश आंबि
... करवा, ते जो लागट करवानी समर्थाइ नथाय तो एकांतरितपणे पारणा क
... एम संपूर्ण तप करी पोतानी शक्तिने अनुसारे श्रीवीतरागदेवने योग्य
...ट तिलकादिक भूषण चढावीए. ॥ ५६० ॥

हवे आयतिजनकतप कहेछे. मूल—आयइजणगो चेव, नवरसव्वासु धम्मकिरि
... ॥ अणिगूहियबलवीरिय, पवित्तिजुत्तेहि सो कज्जो ॥ ५६१ ॥ अर्थ.—आयति
...करी परभव जाणवो. त्या जे विशिष्टफलनो जनकके॰ उपजावणहार तेथी
...म आयतिजनक कहीए. एमां पण पूर्वोक्त रीते बत्रीश

की

री शके नही तो एक दिवस आंबिल करी पारणु करीए नवरके० एटलु विशेष जे समस्त जे वदनक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, साधु साध्वीनु वैयावच्च, ते धर्मक्रिया नेविषे बल अने वीर्यनी प्रवृत्तिने जेणे अणिगूहियके० गोपवी नथी, पण तेणे करी सहितछे एरीते ए तप करवु ॥ ५६१ ॥

हवे सौभाग्यकल्पवृक्ष नामा तप कहेछे मूल —एगतरोववासा, सव्वरस पारणय चित्तमि ॥ सोहग्गकप्परुक्को, होइ तहादिज्जए दाण ॥५६२॥ अर्थ —कल्पवृक्षनीपरे कल्पवृक्ष सौभाग्य फलनादाननेविषे कल्पवृक्ष समान ते सौभाग्यकल्पवृक्ष कहीए ए कांतर उपवास, एकाशणाने दिवसे सर्व रस पारणु कामगुणित जमवु ए चैत्र महि नानेविषे सौभाग्यकल्पवृक्ष एवे नामे तप होय छे त्यां साधु साध्वीने दान आपवु

वली कहेछे मूल —तवचरणसमत्तीए, कप्पतरू जिणपरोसत्तीए ॥ कायव्वो नाणाविह, फलविलसिरसाहियासहिउ ॥ ५६३ ॥ अर्थ —ए तपनु चरणके० आसेववु तेने समाप्ते एटले ए तप पूर्ण थये थके पोतानी शक्तिने अनुसारे एक थाल मां चोखानु कल्पवृक्ष करीने श्रीवीतराग आगल मूकीए, पण ते केहेवु के नाणाविहके० नानाप्रकारना फल तेणेकरीने विलसति जे शाखा तेणे युक्त होय॥५६३॥

हवे तीर्थंकर मातृतपनीविधि कहेछे मूल —तित्थयरजणणिपूआ पुव्व इक्कासणाइ स त्तेव॥ तित्थयरजणणिनामग, तवमि कीरति नद्दवए॥५६४॥अर्थ —तीर्थंकरनी माता तेनी पूजापूर्वक भाद्रवाशुद सातमथकी मांडीने तेरश सुधी सात एकाशणां करवां ते सात वरस सुधी,कोइक कहेछे के त्रण वरस लागट सात सात एकाशणां करवां, पछी उजमणु करवु, तेमां प्रधान चोवीश पकवानना थाल आपवा, सपुत्र एटले जे पुत्र सहित होए तेवी चोवीश श्रावकाने जमाडवु, पीला वस्त्र करी आपीए, उत्सव करीए ए जिनमातानामा तप ते भाद्रवा महीनामा करीए ॥५६४॥

हवे समवसरण तप कहेछे द्वारकाइति प्रसिद्धनाम छे मूल —एक्कासणाइएहिं, नद्दवयचउक्कगमिसोलसहि ॥ होइ समोसरणतवो, तप्पूआपुव्वविहिएहिं ॥ ५६५॥ अर्थ —ए तप एकाशणादिके करीने एटले चार एकाशणां, चारनिवी, चार आंबिल, चार उपवास अने त्या एक ओलीए एक एकाशणु, उपर निवी, उपर आंबिल, पछी उपवास करवो एम एक श्रेणी थाय एवी चार ओली करीए तेवारे सोल दिवस थाय तेमां छेल्लो उपवास पर्यूषणाने दिवसे आवे तेवीरीते ए तप करवु एवीरीत समवसरण तप होयछे तप्पूआके० ते समवसरणनी पूजापूर्वक चारवर्षपर्यंत कीधे छते ए तपनेविषे सर्व मली चोशठ दिवस थाय ए तप ते समवसरणना

एकेका द्वारनो आश्रय करीने प्रत्येक द्वारने स्थानके चारचार दिवसनुं तप करे छे, तेथी द्वारका एवी एनी प्रसिद्धि छे ॥ ५६५ ॥

हवे नंदीश्वरतप कहेछे. मूलः—नंदीसरपडपूआ, नियसमयसरिसतवचरणा होइ अमावस्सतवो, अमावसावासरद्दिहो ॥५६६॥ अर्थः—नंदीश्वर द्वीपसंबंधी जे प्रासाद ते पट उपर लखीने नंदीश्वरना पटनी पूजापूर्वक निययके० पोतानी समयांइ सरखुं तप करवु; अने दीवालीनी अमावास्यायकी आरनी उपवास करीए; ए अमावास्याए तप उपवास लक्षण करवुं; तेथी ए अमावासी लक्षण तप कहेवाय छे. ए तप सातवर्षपर्यंत थायछे. अमावास्यानो वासरके० दिवस तेनेविषे उद्दिष्टके० कह्युंछे. एनेविषे बावन उपवास, उजमणे बावन वस्तु फल देवां, नंदीश्वर द्वीपनी पूजा करवी. ॥ ५६६ ॥

हवे पुंमरीकतप कहेछे. मूलः—सिरिपुंमरीयनामग, तवम्मि एकासणाइ कायवं॥ चित्तस्स पुन्निमाए, पूएअव्वासप्पडिमा ॥ ५६७ ॥ अर्थः—श्री पुंमरीक नामे जे तप तेनेविषे एकाशणादिक तप करीए. ते चैत्री पूनेमना दिवसे करीए. एम एकाशणु आदेदेइने उपवासपर्यंत बारवर्ष लगण लागट करीए. एक कहे छे के सात वरस करीए; ते वरसो वरस बार उपवास अने तिहां पुंमरीकने केवलज्ञान उपन्युं, ते कारणे तेनी प्रतिमा पूजवी. ॥५६७॥

हवे अक्षयनिधितप कहेछे. मूलः—देवग्गठवियकलसो, जो पुन्नो अक्खयाणमुठीए ॥ जो तयसरिसदिवसो, तवो समक्खयनिहिंविंति ॥ ५६८ ॥ अर्थ.—श्रीजिनदेव आगले शुभ मुहूर्ते कलश थापी दर दिवसे मूठीभर चोखा नाखतां जे दिवसे कलश पुराणो, ते दिवस पोतानी शक्तिने अनुसारे एकाशणु व्यासणु करीए. ए तपने अक्षयनिधितप, एवुं गीतार्थ कहेछे. इहां ए आम्नायछे के पर्यूषणायकी पन्नर दिवस आगल ए तप मांमीए; पछी अथवा अधिके दिवसे मुहूर्त जोइने पारणां करवां. पछी वासक्षेपादिक विधिपूर्वक अविछिन्नधाराए संपूर्ण कलश करी उपाडीए, अने जिन आगल धरीए. ॥५६८॥

हवे चंद्रायणतप ते यवमध्य वज्रमध्यना भेदे करी बे प्रकारे कहेछे. मूलः—वढ्ढइ जहाकलाए, एक्काश्रा एगुवासर चंदो॥ तंपुसोलसुक्के, जासपजकलाइ पवंनि ५६९ अर्थ.—जेम चंद्रमा एकेक कलाए करीने वृद्धि पामेछे, पडवाए बीजे, त्रीजे, एम कलाए वधतो जाय, ते ज्यांसुधी ससस कलाए करी पूरो पूनेमने दिवसे थाय.

मूलः—तह पडिवयाएढ़ो, कवलो विड्याइसुक्किना जाव॥ ६. कवलबुढी, जा

तेसि होइ पन्नरसग ॥५७०॥ अर्थ –पूर्वोक्त चद्रमानी वृद्धि पामती कलानी पेरे पडवाए एक कवल, बीजना दिवसे बे कवल, एम वधारता पूनेमना दिवसे पन्नर कवल, एरीते चाइणे पखवाडीए एकेका कवलनी वृद्धि करता ज्यांसुधी पन्नर कवल थाय

मूल –एक्केक्कहिएहमिय, परकमि कल जहा ससी मुयइ॥ कवलोवि तहा मुयइ, जामावस्साइसोएक्को ॥ ५७१ ॥ अर्थ –अधारा पखवाडीआनेविषे चद्रमा एकेक कलाए दररोज हीन थतो जाय छे, तेम अधारा पक्षमाहे पडवाना दिवसे पन्नर कवल लेइ बीजनादिवसे चउद कवल लीए, एम त्रीजे तेर कवल, एरीते दररोज एकेक कवल मूकता अमावास्याए एक कवलनो आहार करे ॥५७१॥

मूल –एसा चदप्पडिमा, जवमज्झा मासमित्तपरिमाणा ॥ एपिहतु वज्जमज्झ, मासप्पमिम पवरकामि ॥ ५७२ ॥ ए चद्रनामे प्रतिमा जे यवमध्य, ते मात्र एक मास प्रमाण कही एपिह्रके० हवे वज्रमध्य मास प्रतिमा कहीशु यवमध्य चद्रायणने उजमणे रूपानो चद्रमा अने सोनाना बत्रीश यव आपीए ॥५७२॥

हवे वज्रमध्य चद्रायण ते आवी रीते मूल –पन्नरसपडिवयाए, एकगहाणीइ जावमावस्सा॥एकेण कवलेण, जाया तह पडिवयावि सिआ ॥५७३॥ अर्थ –अधारे पखवाडे पडवाना दिवसे पन्नर कवल, पछी बीजना दिवसे चउद कवल, त्रीजना तेर कवल एम एकेकनी हाणी करता ज्यां अमावास्या थाय त्या एक कवल होय तेम आगल चांदरणे पखवाडे पडवाने दिवसे एक कवल होय ॥ ५७३ ॥

मूल –बीयाइयासु इक्कग, वुड्ढी जा पुन्निमाइपन्नरस॥ जवमज्झवमज्झाउ, दोविपडिमाउजणियाउ ॥ ५७४ ॥ अर्थ –पछी बीज आदेदेइने जे तिथीउ आवे त्यां एकेक कवलनी वृद्धि करता जवु, ते जेवारे पूनेमनो दिवस आवे तेवारे पन्नर कवलनो आहार थाय एटले यवमध्य ने वज्रमध्य ए बेउ प्रतिमा जणियाके० कही ए वज्रमध्यने उजमणे रूपानो चद्रमा अने वज्र आपवा ॥५७४॥

हवे दाति सख्या प्रतिमा त्रण गाथाए करी कहेछे मूल –दिवसे दिवसे एगा दत्ती पढममि सत्तगे गिस्ता ॥ वड्ढइ दत्तीसहस त्तगेण जा सत्तसत्तमए॥५७७॥ अर्थ –दिवसदिवसनेविषे एकेक दाती ते पढमके० पहेला सातकाने विषे गिस्ताके० लेवी एम अन्नना ग्रहणथकी पाणीनी दाती पण एकेकज सात दिवस सुधी लेवी, पछी सातका सातकासाथे दातीनी पण वड्ढइके० वृद्धि करवी एटले बीजे सातक दिवसे दिवसे बे बे दाती लेवी एम त्रीजे सात के सातदिवससुधी त्रण त्रण दा

ती लेवी, ते ज्यांसुधी सातमे सातके सात सात दाती दिवसे दिवसे लेवाय, त्यांसुधी जाणवी. ॥ ५७५ ॥

मूलः—इगुवन्नवासरेहिं, होइ इमा सत्तसत्तमीपडिमा ॥ अठ्ठमियानवनव मियायदसदसमिया चेव ॥ ५७६ ॥ अर्थः—सातो सत्तीयुं उंगणपचाश दिवसे सप्तमी प्रतिमा होय. हवे आगल अठमअठमिआ, नवमनवमिया अने दसमदसमिया एवेनामे त्रण प्रतिमानेविषे जे होय ते कहेछे. ॥५७६॥

मूलः—नवर वड्डइ दत्ती, सट्ठअठ्ठगनवगदसगवुड्ढीहिं ॥ चउसठीइक्कासी, सयंचदिवसाणिमासुकमा ॥ ५७७ ॥ अर्थः—नवरंके० एटलुं विशेष जे इहां दाती ते वड्डइ के० वधे ते आवीरीते के सट्ठअठ्ठगके० आठका नवका ने दशका साथे जेम एनी वृद्धि तेम दातीनी पण वृद्धि थाय, तेमां आठमी प्रतिमाए छेला आठे दिवसे आठ आठ दाती लेवी, एम नवमनवमिकाए छेला नवे दिवस सुधी नव नव दाती लेवी तथा दसमदसमिकाए छेला दश दिवससुधी दश दश दाती लेवी. ॥५७७॥

हवे एनेविषे दिवसनी संख्या केटली थाय? ते कहेछे. आगो अठ्युं चोसठ दिवस अष्टअष्टमी प्रतिमानेविषे थाय. एम नवे नवे एक्यासी दिवस नवम नवमिका प्रतिमानेविषे थाय, अने दशम दशमिकाना एकशो दिवस पूर्ण अनुक्रमे थाय. ए दातीनी संख्या सूत्रकारे अंतगमदशांगने अभिप्राये कहीछे. त्यां पण एमज कह्युंछे, अने व्यवहार जाप्यना न्यायथी तो सित्तेर प्रमुख दिवस थायछे; अने दातीनी संख्या वृत्तिकारे एम कहीछे. सत्तसत्तमिआ ए पहेली प्रतिमाए एकशोने छन्नु दाती थाय, एम बीजीए बशेने अठाशी थाय, त्रीजीए चारशेने पांच थाय, चोथीए पांचशेने पच्चाश थायछे. अने ए चारे प्रतिमाना मली नवमास ने चोवीश दिवसनी संख्या थायछे, अने चउदशेने उंगणचालीश दातीनी संख्या थायछे. यदुक्तं॥चउवीसदिवस अहिआ, नवमासासवइहदिवसाणि॥चउदसयागुण याला, दत्तीण हवइ इहसंखा॥१

हवे वर्द्धमानआंबिल नामा तप बे गाथाए करी कहेछे. मूलः—एगाइयाणिआ यंबिलाणि इक्किक्कवुड्डिमंताणि ॥ पयंतयअन्नत्तठाणि जाव पुन्नं सयं तेसिं ॥५७८॥ एयं आयंबिलवद्धमाण नामं महा तवच्चरणं ॥ वरिसाणि इउ चउदस, मासतिगं वीसदिवसाणि ॥ ५७९ ॥ अर्थ.—एक आदेदेइने आंबिल एकेक वृद्धिमंतके० वधता होय. इहां ए भावछे जे प्रथम एक आंबिल, पछी एक उपवास, पछी बे आंबिल वली एक उपवास, पछी त्रण आंबिल वली एक उपवास; एम वधतां छेहले एकसो आंबिल करीने तेने पारणे एक उपवास करे; एम सर्वमली एकशो उपवास थाय

अने पांच हजार ने पच्चाश आंबिल थाय ए वर्द्धमानआबिल नामा महातपनु आसेवन करवु, ते चउदवर्ष त्रण मास ने उपर वीश दिवसे पूर्ण थायछे ॥५७०॥

हवे गुणरत्नसवत्सरनामा तप ते सात गाथाए करी कहेछे मूल –गुणरयण वच्छरमि सोलसमासा हवंति तवचरणे ॥ एगतरोववासा, पढमे मासमि का यव्वा ॥ ५७० अर्थ –गुणरत्नसवत्सर नामा तप ते सोल माससुधी आसेववु, त्या पहेला महीनानेविषे एकांतरे उपवास करवा ॥५७०॥

मूल –गायव उक्कडआसणेण दिवसे निसाइ पुण निच्च॥ वीरासणिएण तहा,हायव मवावडेणच ॥५७१॥ अर्थ –गायवके०रहेवु, उकडू आसणे दिवसनेविषे अने वली रात्रीने विषे तो सदाइ वीरासणिके०वीरासने रहेवु अने अप्रावृतके०वस्त्ररहित थयु

मूल –वीयाइसुमासेसु, कुड्ढाएगुत्तराइवुड्ढीए ॥ जा सोलसमेसोलस, उपवासा हु ति मासम्मि ॥ ५७२ ॥ अर्थ –हवे वीजा महीना प्रमुखनेविषे जे करवु ते कहे छे एकोत्तरादिकनी वृद्धिए उपवास करवा ते ज्यासुधी सोलमे महीने सोल उप वास थाय त्यांसुधी करवा इहां ए जावार्थ छे के पहेलामासे एक एक उपवास करीने उपर पारणु करीए, वीजा मासे वे वे उपवास ने पारणु, त्रीजा मास त्रण त्रण उपवास ने पारणु करीए, चोथा मासे चार चार उपवासने पारणु करीए, तेवारे चोथा आखा महीनामा चोवीश उपवास ने छ दिवस पारणाना थायछे, एम मासेमासे चढताचढता उपवासने उपपारणु ते यावत् सोल मासपर्यंत करवा

हवे उपवासनी सख्या अने दिवसनी सख्या ते अन्य कर्तृकी गाथाये बतावे छे उक्तच ॥ पन्नरस वीस चउवीस चेव चउवीसपन्नवीसाय ॥ चउवीसएगवीसा, चउवीसासत्तवीसाय ॥ १ ॥ अर्थ –पन्नर, वीश, चोवीश, चोवीश, पचीश चावी श, एकवीश चोवीश, सत्तावीश, ॥ १ ॥ उक्तच ॥ तीसातित्तीसावय, चउवीसछव्वी सअछ्वीसाय ॥ तीसावत्तीसाविय, सोल समासेसु तवदिवसा ॥ २ ॥ अर्थ –त्रीश, तेत्रीश, चउवीश, छवीश, अछावीश, त्रीश, ने बत्रीश ए अनुक्रमे सोल महीना नेविषे एटला तपना दिवसो थायछे ॥२॥ हवे पारणाना दिवसो महीना महीना आश्री कहेछे वक्तच ॥ पन्नरसदसछप्पं चचउरपचसुयतिन्निन्निति ॥ पचसु दो दोय तहा, सोलसमासेसु पारणगा ॥३॥ अर्थ –पन्नर, दश, आठ, छ, पाच, चा र, त्रण, त्रण, त्रण, त्रण, त्रण, वे, वे, वे, वे, वे, ए सोल महीनाना पारणा जाणवा जे महिने अष्टमादिक तपना दिवस पूराय नही तेवारे आगना मही नाना दिवसो लेवा ॥ ३ ॥

हवे अनुष्ठान प्रकारे सर्व दिनमान कहेछे. मूलः—जं पढमगंमि मासे, तमणुष्ठा णं समग्गमासेसु ॥ पंचसयाइदिणाणं, वीसूणाईइमम्मि तवे ॥५७३॥ अर्थः—जे प्रथ ममासनेविषे अनुष्ठान कर्युं तेहज अनुष्ठान समग्रमासनेविषे थाय पांचशे दि वस वीशे उणा, तेवारे चारशो एंसी दिवस ए गुणरयणसंवत्सरतपनेविषे थायछे. इहा गुणरत्न एवुं नामसार्थकज छे परतु निरर्थक नथी, केमके निर्जरादिक जे गुण—तद्रूप जे रत्न—ते जेनेविषेछे; माटे गुणरत्नसंवत्सर ते सत्रिहाइ संवत्सरे एट ले एक संवत्सरने तेना उपर वली एक संवत्सरनो त्रीजो जाग एटले वधा मली सोल महीने पूर्ण थाय. तेथी गुणरयणसंवत्सर कहीए. ॥ ५७३ ॥

हवे प्रवचनरूप समुद्र ते अपारछे, त्यां जे तप कह्यांछे तेपण घणां कह्यांछे, अने तेना आसेवनार पण खंदक प्रमुख पुरुष विशेष घणा सांजलीए छइए, ते जूदा जूदा केटला कहिए? परतु दिशि मात्र देखाडीने हवे शेष तपो विशेषनुं अतिदेश कहीएछैए

मूलः—तह अंगोवंगाणं, चिइवंदणपंचमंगलाईणं ॥ उवहाणाइ जहाविहि, ह वंति नेयाणि तह समया ॥५७४॥ अर्थः—तथा शब्द समुच्चयने अर्थेछे, अंग जे आ चारांगादिक अने उपांग जे उववाई प्रमुख, चेत्यवदना, इरियाविहि, शक्रस्तव, स्था पना, अरिहंतनी स्तवना, नामार्हतनी स्तवना, श्रुतस्तव, सिद्धस्तव रूप पंचमंगला दिकना उपधानादिक, आदि शब्द थकी अनेरा पण तपना विशेष जे छे ते जे वि धिए होय ते सर्व सिद्धांत थकी जाणवा. एम त्रेसठ गाथाए करी तपना जेद वखाण्या, तथा विधिप्रपाते योगविधि तपोरत्नमालिका, इत्यादिक शास्त्रांतरथकी अनेरां तपो जाणवां. ॥ ५७४ ॥ इति गाथा त्रिषष्टिकार्थ ॥

अवतरणः—पायालंकलसत्ति एटले पाताल कलशनी वक्तव्यतानुं वशेने वहोते रमुं द्वार कहेछे. मूलः—पण नउइ सहस्साइं, उगाहित्ताचउदिसिं लवणं ॥ चउरो लिंजरसंगाण संठिया हुंति पायाला ॥ ५७५ ॥ अर्थः—लवणसमुद्र वे लाख योज न विस्तारेछे, ते लवणसमुद्रनी चारेदिशाए जंबुद्वीपनी जगतिथकी पंचाणु हजार योजन अवगाहिए, त्यां बहु मध्यदेशे चार आलिंजरके० महोटुं मटकुं—तेना संस्थाने संस्थितके० रह्यांछे, एवा चार पातालकलश होयछे. ॥ ५७५ ॥

हवे ए चारेना नाम ने ठींकरी एनुं जाडपणु कहेछे. मूलः—वलयमुहकेयूरे जुयगे तह ईसरेय वोधवे ॥ सववईरायाणं, कुड्डाएएसिदससइया ॥५७६॥ जोयण सहस्सदसगं, मूले उवरिंच होइ विच्छिन्ना ॥ मझेयसयसहस्सं, तित्तियमित्तंच ऊगाढा ॥५७७॥ अर्थः—एक वलयमुख अथवा वडवामुख, वीजुं केयूर, त्रीजुं युतक, तेम

चोथु इश्वर एवे नामे चार कलशछे ते बोधवा के० जाणवा सर्व वज्ररत्नमय एवी एनी ठीकरी ते हजार योजन जाडीछे, एवुं प्रमाण कहेछे एक प्रदेशनी श्रेणीवडी विष्कंने वधता वधतां मूलमा अने उपरे दश हजार योजन, एम वधता वधता मध्यविचाले शतसहस्र एटले लाख योजन प्रमाण, अने तित्तियमित्तके० तेटली मात्राए लाख योजन प्रमाण नूमिकामाहे कगाढके० खूल्याछे उपरे पण दश हजार योजनने विस्तारे छे ॥५०६॥५०७॥

हवे एने आश्रित देवो जे छे तेमनी स्थिति अने तेमना नाम कहेछे मूल -पलिउवमहिईआ, एएसि अ हवईसुराइणमो ॥ कालेयमहाकाले, वेलंवपन्नजणेचेव॥ ॥५०८॥ अर्थ -एक पल्योपमनी स्थितिना धरनार एना अधिपति ते इणमोके० हवे कहीए छैए तेमा पूर्वदिशाए काल, दक्षिणदिशाए महाकाल, पश्चिमे वेलंब, अने उत्तरे प्रजजन ए पाताल कलशाना धणी जे चार देवता छे तेमनां नाम कह्यां

हवे लघुपाताल कलशानी वक्तव्यता कहेछे मूल -अन्ने विय पायाला, खुड्डालिंजरगसंठिआ लवणे ॥ अट्ठसया चुलसीआ,सत्तसहस्साय सव्वेसि ॥५०९॥ अर्थ-अनेरा पण पाताल कलशछे ते खुड्ड के०न्हाना आलिंजरके०मटका तेना सस्थाने लवण समुद्रनेविषे छे इहा ए नावजे जेम पचाणुहजार योजन जंबुद्वीपनी जगतीथकी आघा जइये तेम लवणसमुद्रनी जगतिथकी पण पचाणुहजार योजन उरहा आवीए, त्यां वचमा दशहजार योजन विस्तारे चक्रवाल प्रदेशे महोटा कलश कह्या ते वेहुने आंतरे वली न्हाना कलशछे एटले ए चारे कलशाए जेटली नूमिका रुधी छे ते मूकीने वचमां सर्व सातहजार आवशेने चोराशी कलशा छे हवे एनी नव पंक्ति महोटा कलशाना मुखथकी बीजा मुखसुधी छे, तेमां पहेली पंक्तिए वशेने पन्नर, बीजी पंक्तिए वशेने शोल एम परिधि जेम जेम वधे तेम तेम एकेक कलश पण पंक्तिए वधे, ते ज्यासुधी नवमी पंक्ति त्यासुधी वसने त्रेवीश थया ए नवे पंक्तिनो सरवालो करता एकेक महोटा कलशनेविषे उगणीशने एकोत्तेर कलश थायछे ए चार कलशे करी चउगुणा कस्याथी पूर्वोक्त सात हजार आवसेने चोराशी थाय ए न्हाना कलशोना अधिपति जे देवता, तेमनी आउ स्थिति अर्ध्दी पल्योपम होयछे ॥ ५०९ ॥

हवे एना विस्तारनु प्रमाण कहेछे मूल -जोयणसयविच्छिन्ना, मूलुवरिं दससयाणिमज्झमि ॥ उगाढायसहस्स, दसजोयणियायसिंकुड्डो ॥५१०॥ अर्थ -महोटा जे चार कलशा कह्या तेथकी ए न्हाना कलशा शोमा अशे होय,तेवारे शो योजन

ने विस्तारे मूले अने उपरे छे, तथा एक हजार योजन विचाले; एम भूमिमांहे हजार योजन अवगाढ छे, अने दश योजननी कुड्यके० ठीकरी जाणीछे. ॥५९०॥

हवे समस्त कलशनेविषे वायुप्रमुखनी स्थिति कहेछे. मूल.—पायालाणविभागा, सव्वाणवि तिन्नितिन्नि बोधव्वा ॥ हिठिमभागे वाऊ मझेवाऊअउदगंच ॥५९१॥ उवरिं उदगं भणिअं, पढमगवीएसु वाउसंखुभिउ ॥ उड्ढंवामे उदगं, परिवड्ढइ जलनिही खुभिउ ॥५९२॥ अर्थ – सर्व पाताल कलशाना त्रण त्रण विभाग बोधव्वाके० जाणवा. त्यां महोटा पाताल कलशा तेने एकने भागे तेत्रीश हजार त्रणसे तेत्रीश योजन अने एक योजननो त्रीजो भाग उपर, अने न्हाना कलशने त्रणसे तेत्रीश योजन अने उपर एक योजननो त्रीजो भाग, एटली जग्यामां समस्त कलशोनेविषे अनेक प्रकारना वायु संमूर्छाएछे, अने क्षोभ पण पामेछे. जेम मनुष्यादिकना उदरमां श्वास वात संमूर्छेछे अने क्षोभ पण पामेछे, तेम त्यांपण जे वारे महोटा कलशानेविषे वायु क्षोभ पामे तेवारे जगना स्वभावथकी न्हाना कलशानेविषे पण वायु क्षोभ पामे, अने ते वारे वेली, गाउ गाउ उंची वधे. एम समस्त कलशानेविषे पूर्वोक्त त्रण भागमांहेला हेठला भागनेविषे वायु होय अने मझेके० विचला भागमां पूर्वोक्त योजनना प्रमाणनेविषे वायु अने जल होय, तथा उपरला त्रीजा भागनेविषे केवल पाणी भणियंके०कह्यु छे. पहेला भाग अने बीजा भागनो वायु जेवारे खोभ्यो एटले उछल्यो थको उड्ढंके० उंचो चाले तेवारे पाणीने वमेके० नाखे तेथी जलनिधिके०समुद्र पण क्षोभ्यो थको समुद्रनु जल पण वधे.॥५९२

हवे उपशमे वाये जे थाय ते कहेछे. मूल.—परिसंठिअंमि पवणे, पुणरवि उदगं तमेव संठाण ॥ वड्ढइ तेण उदही, परिहा यणु कमेणंवा ॥५९३॥ अर्थ.—परिसंठियतके० वली समस्त प्रकारे वायु उपशमे तेवारे वली तेहीज उदक तेज संस्थाने ते फरी कलशामांहे पाछुं प्रवेश करे; ते कारण माटे अनुक्रमे करी हियमान तथा थये त्यारे जल क्षोभ पामे ते अहोरात्र नियत काले बे वखत अने पक्षमांहे चतुर्दशी प्रमुख तिथीनेविषे पण अनुक्रमेकरीने वृद्धि हानी थाय. ॥५९३॥ इति गाथा सप्तकार्थ.

अथतरप —आहारगसरूवंति एटले आहारक शरीर करे तेना स्वरूपनु वली ने तदंतरनुं द्वार कहेछे. मूल —समउ जहन्नमंतर, मुक्कोसेणं तु जावछम्मासा ॥ आहारसरीराणं, उक्कोसेणं नवसहस्सा ॥५९४॥ अर्थ —आहारक शरीर एकवार कीधुं अने वली कार्यना वशथकी करे तो जघन्यथी एक समयनो आंतरो पडे, अने उत्कृष्ट तो ज्यां लगे छमहीना अने जीवलोकमांहे [illegible]

ठे ते मतांतर जाणवु आहारक शरीरवाला करनार उत्कृष्टे सम काले नव हजा
र लन्यमान थाय अने जघन्यथी एक वे त्रण होय, ॥ ५९४ ॥

हवे ससारमा वसतो जीव जेटला वखत आहारक शरीर करे ते कहेठे मून
चत्तारिय वाराउ, चउदस पुव्वीकरेइ आहारे ॥ ससारमि वसतो, एगजवे डुन्निवाराउ
५९५ अर्थ –चार वखत चउदपूर्वनो धारक मुनिराज आहारक शरीर करे. शेष श्रुत
ना धरनारने ए आहारक शरीर करवानी शक्ति न होय, तेथी चउदपूर्वधरनु ग्रहण
कह्यु, अने ससारमा वसतो एक जवनेविषे बे वखत आहारक शरीर करे हवे आ
न्हियतेके० प्रयोजनना वशथकी करीए, नवु शरीर नीपजावीए ते आहारक कहीए
तेथी तेज प्रयोजन देखाडेठे मूल –तित्थयररिद्धिदसणठमहोवगहणहेउवा
ससयवुछेयत्र, गमण जिणपायमूलमि ॥ ५९६ ॥ अर्थ –समस्त लोकने आश्चर्य
नी उपजावणहार अष्ट महाप्रतिहार्य प्रमुख श्री तीर्थंकरनी ऋद्धि ते जोवाने
अर्थे आश्चर्य उपन्याथका अथवा तेवा तेवा नवा अर्थ तेना लेवाने कारणे अ
थवा कोइ एक अति गहनार्थनो सदेह उपन्ये थके तेनो निश्चे करवाने अर्थे का
इएक महाविदेहनो वासी श्री वीतरागना चरणकमलने आगल आहारक शरीर
करी पहोंचे, पठी जगवतने देखी समस्त पोतानु कार्य कीधे ठते वली ते पूर्व प्र
देशे जे औदारीक शरीर थापणनीपरे मूक्यु हतु ते, पोताना प्रदेशनी जालीवड
तेज अवस्थाए थको मागी लीधेला उपकरणनीपरे आहारक शरीर मूकी मूलगा
प्रदेशना समूहनेविषे प्रवेश करे एना प्रारन अने मूकवाना कालसुधी अतरमुहू
र्त्त जाणवु, ॥५९६॥ इति गाथा त्रयार्थ ॥

अवतरण –देसाअणारियत्ति एटले अनार्यदेशोना नामोनु बसे ने छुमालीसमु
द्वार कहेठे मूल –सगजवणसवरवव्वर, कायमुरुडुड्डगोणपक्कणया ॥ अरवागहो
णरोमय, पारसखसखासिआ चेव ॥ ५९७ ॥ डुंबिलयलउसबुकस, निह्लंधपुलिंद
कुचनमररूआ ॥ कोपावचीणचचुअ, मालवदविडाकुलछाय ॥५९८॥ केक्कयकिरा
यहयमुह, खरमुहगयतुरयमिढपमुहाय ॥ हयकन्नागयकन्ना, अन्नेवि अणारिया व
हवे ॥ ५९९ ॥ पावायचमकम्मा, अणारियानिग्घिणा निरणुतावि ॥ धम्मुत्तियसला
इ, सुइणेविननज्जएताण ॥ ६०० ॥ अर्थ –शकदेश, यवनदेश, शवरदेश, वव्वर
देश, काय, मुरुम, उड्ड, गोण, आख्यानक,हुण, रोमक, पारस, खस, कोशीक, डु
विल, लकुश, बुकस, जिह्ल,अध्र, पुलिंद, कौंच, भ्रमररुची, कपोत, चीण, चचु
क, मालव, द्रविड, कुलार्य, कैकेय, किरात, हयमुख, खरमुख, गजमुख, तुरगमु

ख, मिंढमुख, हयकर्ण, गजकर्ण, ए सिवाय बीजा पण अनार्य आयातके० एय एटले धर्म थकी जे दूर थया एटले आर्य थकी विपरीत ते अनार्य जाणवा. ए अपेय वस्तुना पान करनार. अजक्ष्यना जक्ष करनार, अगम्य गमनना करनार. शास्त्रमांहे जे निषेध एवी वेष जाषा आचारादिकना करनार एवा अनार्य देश ते वहवेके० घणाछे, वली ते केवाछे? तोके महा पापना करनार, प्रचंम रौड्कर्मने विषे तत्पर एवा अनार्य निग्घणाके० अत्यंत निर्दय, पाप करीने पछी अनुताप न करे, जेने धर्म एवा अक्षर पण सांजल्यामां आव्या नथी. इतिगाथाचतुष्टयार्थ ॥

अवतरण —आयरियदेसत्ति एटले आर्य देशोना नामोनुं वसेने पंचोतेरमुं द्वार कहेछे. मूल.—रायगिहमगह चंपा, अंगा तह तामलित्तवंगाया ॥ कंचणपुरं कलिंगा, वाणारसिचेवकासीआ ॥६०१॥ अर्थः—एक राजगृहनगर ने मगधदेश, बीजी चंपानगरी ने अंगदेश, तेमज त्रीजी तामलिप्तानगरी ने वंगदेश, चोथुं कांचनपुरनगर ने कलिंग देश, पांचमुं वाणारसीनगर ने काशीदेश. ॥६०१॥

मूल.—साकेय कोसलागय, पुरच कुरुसोरियं कुसट्टाय ॥ कंपिल्लं पंचालं, अहिछत्ता जंगला चेव ॥ ६०२ ॥ अर्थ.—छही साकेतनगरी ने कोशलदेश. सातमुं गजपुरनगर ने कुरुदेश, आठमुं सौरीपुरनगर ने कुशावर्त्तदेश, नवमी कंपिलनगरी ने पंचालदेश, दशमी अहिछता नगरी ने जंगलदेश. ॥६०२॥

मूल'—बारवईय सुरठा, महिल विदेहाय वछकोसंवी ॥ नंदिपुरं संमिल्ला, जद्दिल पुरमेव मलयाय ॥ ६०३ ॥ अर्थः—अग्यारमी द्वारावतिनगरी ने सोरठदेश, बारमी मिथुलानगरी विदेहदेश, तेरमी कोसंबीनगरी ने वछदेश. चउदमुं नंदनपुरनगर ने शामिल्यदेश, पन्नरमुं जद्दिलपुरनगर ने मलयदेश. ॥ ६०३ ॥

मूल'—वइराड मछ वरुणा, मछा तह मुत्तियावइदसन्ना ॥ सुत्तीमईयचेई, वीयजयं सिंधुसोवीरा ॥६०४॥ अर्थः—सोलमुं मछनगर ने वैराटदेश. सत्तरमी वरुणनगरी ने अछदेश, अढारमी मृत्तिकावतीनगरी ने दशार्णदेश, उंगणीशमी शुक्तिमतिनगरी ने चेदिदेश, वीशमुं वीतजयनगर ने सिंधुसौवीरदेश. ॥ ६०४ ॥

मूल.—महुराय सूरसेणा, पावा जंगीयमासपुरिवट्टा ॥ सावछी अकुणाला, कोडी वरिस च लाढाय ॥६०५॥ अर्थ —एकवीशमी मथुरानगरी ने सूरसेनदेश, बावीशमी पापानगरी ने जंगीदेश, त्रेवीशमी मासपुरीनगरी ने वर्त्तादेश, चोवीशमी श्रावस्तिनगरी ने कुणालादेश, पचीशमु कोटीवर्षनगर ने लाटदेश. ॥ ६०५ ॥

मूलः—सेयंवियायिनयरी, केइय अद्धं च अयरियं जणियं ॥ जत्थुप्पत्तिजिणाणं,

चक्कीण रामकिएह्ण॥ ६०६ ॥ अर्थ –पठी श्वेतंबिकानगरी ने कैकेयदेश, ए यर्द्ध आर्यदेश कह्योछे, ज्या जिनके० तीर्थंकर, चक्रवर्त्ति, बलदेव, वासुदेव प्रमुख उत्तम पुरुषोनु उपजवुछे ते आर्यदेश जाणवा ते साडीपचीश देशछे तेमनां नाम कह्यां ए बहुश्रुत सपदाए प्रमाणछे, अने आवश्यकनी चूर्णिमा एवी व्यवस्था कहीने के जे जुगलीआना खेत्रे हकारादि नीतिथाय ते आर्य, एटले नरतखेत्रवर्त्ति तेहन आर्य अने उपलक्षणथकी महाविदेहना अंतर्वर्त्ति विजय मध्य खडादिकनेविषे छे ते पण आर्य जाणवा ॥ ६०६ ॥ इति गाथा पट्कार्थ ॥

अवतरण –सिद्धएगतीसगुणात्ति एटले सिद्धना एकत्रीशगुणोनु बशेने गोतेरमु द्वार कहेछे मूल –नवदरसणमि चत्तारिआउए पचआइमे अंते ॥ सेसे दोदो जेया खीणनिलावेणइगतीस ॥ ६०७ ॥ अर्थ –नवदर्शनावरणीयना नेद, चार प्रकारनु आयु, पाच प्रकार ज्ञानावरणीयना, पाच प्रकार अंतके० छेल्लु जे अंतरायकर्मछे तेना जाणवा शेष थाकता चारकर्म तेमा वेदनीयना वे नेद, अने मोहनीय ते द र्शन तथा चारित्र मोहनीयरूप बे प्रकारे, अने नामकर्म ते शुन अशुन नाम रूप, तथा गोत्रकर्म ते उच नीच गोत्ररूप ए सर्व मली एकत्रीश नेद थाय ते जेवारे क्षीण अनिलाप ए बधाने क्षीण शब्द धुरे आपीने बोलीए एटले क्षीण चक्षुदर्शना वरणीय, क्षीण अचक्षुदर्शनावरणीय एम सर्वत्र कहेवु ते ज्यासुधी क्षीण नीच गोत्र कहिए त्यासुधी एकत्रीश गुण सिद्धना थायछे ॥ ६०७ ॥

अथवा प्रकारातरे वली बीजा पण सिद्धना एकत्रीश गुण कहेछे मूल –पडिसेह णसठाणे यवन्न गंध रस फास वेएय ॥ पण पण डुपणठतिहा, एगत्तीसमकाय सग ह हा॥६०८॥अर्थ –एटलानो प्रतिषेध करवा थकी एटले तेमा एक लावो, बीजा वाट नो, त्रीजो पहोलो, चोथु त्रिखुणु, पाचमु चउखुणु ए पाचतो संस्थान जाणवा अने गंध बे, कृष्णादिक वर्ण पाच, रस पाच, स्पर्श आठ, वेद त्रण, ए अठावीशना निषेध करवाथी अठावीश गुण उपन्या उगणत्रीशमु अकाय ते शरीररहितपणु, त्रीशमु असंग ते स्वजनादिके रहितपणु, एकत्रीशमु अरु के० जन्मेकरी रहित, ए एकत्रीशगुण श्री आचारागमाहे संस्थानादिक एमज कह्याछे यदुक्त सेनदीहे न वट्टे नतंसे इत्यादिक एटले ए सिद्धना एकत्रीशगुण कह्या ए सिद्धना एकत्रीश गु णोनु प्रतिपादक द्वार कहेवा थकी अत्यत मगल शिष्य प्रशिष्यादिकने अविछेदादिकनु कारण कह्यु ए अंत मगलिक कहीने बशेने बहोतेरमु द्वार समाप्त कर्यु ॥६०८॥

हवे ए प्रकरणनो करनार पोताना वंश प्रकटन पूर्वक पोतानुं नाम देखाडतो वली ए प्रकरणनेविषे कारण अने पोताने अनुद्धतपणुं कहेनार थको एवुं कहेछे.

मूल'—धम्मधरुद्धरणमहा,वराह जिणचंदसूरिसीसाणं ॥ सिरिअम्म एवसूरीण पाय पंकयपराएहिं ॥६०९॥ सिरिविजयसेनगणहर; कणिठ जसदेवसूरिजिठेहिं ॥ सिरिने मिचंदसूरिहिं सविणयंसिस्सजणिएहिं ॥६१०॥ अर्थः—धर्म जे श्री वीतराग देवनो ज्ञापित तेज जीवा जीवादिकना धरवाथकी धरा जे पृथ्वी तेनुं उद्धरणके० विना शने परिहारे यथावस्थितपणे राखवुं. त्यां महावराह समान श्री जिनचंदसूरि तेना शिष्य श्री अम्रादेवसूरि तेना चरणकमलना पराग समान ॥ ६०९ ॥ श्री विजयसेन नामा गणधर ने न्हाना श्रीयशोदेवसूरि तेना महोटा गुरुजाइ एवा श्रीनेमिचंद्र सूरि तेणे सविनयपणे पोताना शिष्यना कथन थकी ॥६१०॥

मूल.—समयरयणायराउ; रयणाणंपिवसमुद्धदाराइ ॥ निउणनिहालणपुव्वं; ग हिउं संजत्तएहिंवा ॥ ६११ ॥ अर्थ'—समय जे सिद्धांत तेज अलब्धपारपणा थकी रत्नाकरके० समुद्र कहीए, ते सिद्धांतरूप समुद्र थकी रत्ननीपरे जेम समु द्रमाथी रत्न लइए तेम सिद्धांतरूप समुद्रथकी अर्थे करी सहित वळीने छोत्तेर द्वार निपुणमतिपूर्वक लेइने संयात्रिकके० नाखुदानी परे. ॥ ६११ ॥

मूलः—पवयण सारुद्धारो, रइउसपरा विवोह कज्जंमि ॥ जं कंचि इह अजुत्तं' वहुस्सुआ त वि सोहंतु ॥ ६१२ ॥ अर्थ.—ए प्रवचन सारोद्धार रच्यो सारके० प्रधान पद तेनो उद्धारके० एकठा करीने रचना कीधी. पोताने तथा बीजाने अ ववोधने अर्थे द्वारने अनुक्रमे करी प्रवचनना प्रधान पदने एकठा कर्याछे. इहां जे कांइ अयुक्त कहेवाणु होय ते वहुश्रुत गीतार्थ विसोहंतुके० शोधजो. शो धीने निर्दोष करजो. ॥ ६१२ ॥

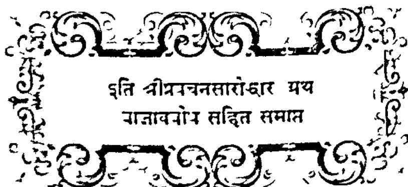
हवे जे वात जेम थवानी होय ते तेमज थाय तोपण जला आशयथकी फल छे. तेथी जला अर्थने विषे आशंसा करवी एवुं देखाडवाने अर्थे आशंसाकहेछे.

मूल.—जावजइ जुवणत्तय, मेयंरवि ससिसुमेरुगिरिजुत्तं॥ पवयणसारुद्धारो, तानंदउ वहु पढिज्जंतो ॥ ६१३ ॥ अर्थ.—ज्यालगे स्वर्ग मृत्यु ने पाताल लक्षण ए त्रण जुवन जयवत वर्त्ते, एने केवे सूर्य चंद्रमा ने सुमेरु पर्वत समस्त ने मध्यवर्त्ति सुदर्शननामे मेरुपर्वत तेणेकरी सहित ते ज्यांलगे जयवता वर्त्ते त्यां लगे ए प्रवचन सारोद्धार प्रकरण ते नंदउके० सर्व समृद्धि पामो. वहु घणा एवा

जे साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका तेमणे नणतो थको उपलक्षणथकी नणाव
तो थको चितवतो थको सांनलतो थको समृद्धि पामो ॥ ६१३ ॥ इतिगाथार्थ

अथ प्रशस्ति

अर्ह॥विनिहितदोष सततं, नव्यत्रजवारिजातकृतबोध ॥ गोनि सकलपदार्थप्रका
विता जयति वीररवि ॥ १ ॥ गौतमसुधर्ममुख्या प्रख्या आसनूगणाधिपा गुरव ॥
तक्रमवर्ती श्रीजिनचङ्श्वङ्इतियुगप्रवर ॥२॥ तस्मिन् गणपे विजयिनि विल्लीनायप्रतो
पतपनिष्ठे ॥ श्रीमति जिनसिंहाभिध सूरिवरे जयति युवराज्ये ॥ ३ ॥ श्रीमत्सागर
चङ्सूरयइतिख्याता क्षितौ धीग्ना पचानां परमेष्ठिनामिह चये प्राप्तास्तृतीय पद॥
दत्त श्रोजिननङ्सूरिसुगुरा सूरे पद यैरचूत्तेषा शुद्धगुणान्वये विजयिना व्यक्ता इमर
शिरे ॥ ४ ॥ श्रीमद्विराज सुदयो दयोदयासागरावराविङ्शा ॥ श्रीज्ञानमदिराव्हाव
पाप्यमी वाचकवतंसा ॥ ५ ॥ श्रीदेवदेवतिलकोपाध्यायाश्चक्रवर्तिनोऽज्ञानां ॥ त
शिष्यानूचाना श्रीमतो विजयराजाव्हा ॥ ६ ॥ वाचयमजननिकरे कोटीरसमा स
मागमार्थज्ञा त-शिष्यपद्ममदिरगणिरर्थप्रदीपमिम ॥ ७ ॥ बालावबोधमकरार्ष
युपयोगाय निजकवि हृर्ष्य ॥ यदशुद्धमत्रकिचित्तज्ञ शोध्य घृणावनि ॥ ८ ॥ सुगुण
गणिकनकसारोमेहाजलसाधुसाधुरिणमह्यां ॥ लिखनसुशोधनकर्मण्येते साहाय्यक
तार ॥९॥ विषमपदार्थे पूर्वं साहमीरोपरोपतश्चके ॥ ततएतहि समग्रान्यर्थनपा
लेखि साध्वीनां ॥ १० ॥ वर्षेशशिवाणरसात्रिदृग्जमाने सह सिते पक्षे, लक्ष्मीराष
वारेयुरौ च पूर्णीकृतोग्रंथ ॥ ११ ॥



इति श्रीप्रवचनसारोद्धार ग्रंथ
बालावबोध सहित समाप्त

॥ श्रीमद्गुरुभ्योनमः श्रीमदिष्टदेवतायैनमः ॥

॥ अथ श्री श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत वीरस्तुतिरूप ॥
ढुंढिनुं स्तवन प्रारंभ,

॥ प्रथम अर्थकर्त्तानुं मंगलाचरण अनुष्टुप् वृतम् ॥

प्रणम्यश्री महावीर ॥ शंकरं शिवसौख्यदं ॥
धीर वीरं प्रकुर्वेहं ॥ श्रीवीरस्तववार्त्तिकं ॥ १ ॥

ए स्तवनमां प्राये (घणु करीने) पद आघां पाछां होय, तेनो अन्वय करीने अर्थ करवो. ते अर्थ अमे अन्वय करीने लखशुं. ते अन्वय पद आघां पाछां होय, ते पोतानी मेले जोइ लेजो. यद्यपि श्रीमद्यशोविजय उपाध्यायजीएज आलावा लखवारूप वार्तिक तो कर्युंछे; पण सर्व पदनो अर्थ सर्वनी नजरमां न आवे, ते माटे पोताने संभारवा सारुं तथा जे कोइ माराथी अल्प बुद्धिवाला छे, तेउना उपकारने अर्थे ए अर्थ लखुं छुं. त्यां प्रथम गाथामां मंगलाचरण, प्रयोजन, संबंध अने अभिधेय देखाडेछे.

॥ ढाल पहेलो ॥ भविका सिद्धचक्रपद वंदो ॥ एदेशी ॥

प्रणमी श्रीगुरुना पयपंकज ॥ थुणशुं वीर जिणंद ॥ ठवणनिक्षेप
प्रमाण पंचांगी॥ परखी लहुं आणंदरे ॥ जिनजी तुज आणा शिर वही
ए ॥ तुजशासननय शुद्धपरूपण॥ गुणथी शिवसुख लहिएरे ॥जि० १॥

अर्थः—हवे प्रणमी कहेतां प्रणाम करीने, श्री गुरुके० तत्वने जे कहे तेने गुरु कहीए. ते गुरु श्रीके० लक्ष्मी ज्ञानादिक गुणनी, तद्वंत् जे गुरु, तेना पयपंकजके० चरणकमल, ते गुरुपदपंकजने नमीने हवे उत्तरक्रिया कहेछे. थुणशुंके० स्तविशु वीरजिणंदके०वीरनामा चोवीशमा परमेश्वर. जिनके०जेणे राग द्वेष जीत्याछे, एटले सामान्य केवली तेमां इंद्रसरखा एटले तीर्थंकरते स्तवीशुं तेपण शीरीते स्तवीशुं ? ते कहेछे. पंचांगी प्रमाण ठवण निक्षेप परखीने आनंद लहुं. इत्यन्वयः पंचांगी जे एक सूत्र, बीजी निर्युक्ति, त्रीजी भाष्य, चोथी टीका अने पांचमी चूर्णि

ए पचागी प्रमाणे थापना निक्षेपो परखीने आनद पासु इति प्रथमगाथार्थ ॥१॥ हवे भावार्थ–एमा एम कह्यु जे पचागी मानवाने योग्यछे, प्रतिमा पण मानवा ने योग्यछे तेसर्व वात आगल कहेशे, एटले ए गाथामा प्रथम पदे मगलाचरण कर्यु १ बीजु पद तथा पचागी प्रमाण ठवण निक्षेप परखी, ए पदे अभिधेय देखा डयु जे माटे वीरस्तवीछु, ए पण अभिधेय तथा पचागी स्थापन करवु, तथा स्था पना निक्षेपो स्थापशो ए पण अभिधेय जाणवु २ तथा पचागी प्रमाणे ए पदमां सबध देखाडयो, जे माटे पचागीना परूपक परपराए सर्वज्ञछे, तेवारे गुरुपर्व क्रम सबध आव्योज ३ तथा आनद पासुं, ए पदेकरी प्रयोजन देखाडयु तेमां कर्ताए ग्रथ कर्यो, एटले परोपकार थयो तरत आनद उपन्यो, ए अनतर प्रयो जन आनद जे मोक्ष ते पासु एहने परपर प्रयोजन जेमां इति एटले श्रोताने अर्थ ज्ञान ते अनतर प्रयोजन अने सिद्धि वरवी ए परपरं प्रयोजन ॥४॥ एरीते चारवानां प्रथम गाथामां देखाडयां हे जिनजी तुजआणा शिर वहिए के० तमा री आज्ञा मस्तके धरीए एटले ए पदमां एम देखाडयु जे आज्ञा तेज प्रमाण छे, पण कुयुक्ति करशो ते प्रमाण नथी जे माटे ते ढुढक लोको एम कहे छे के, द या ए धर्म, हिंसा हिंसाए धर्म एवु भोला लोकोने कहीने समजावेछे तेहने पा छो उत्तर आपवा ए पद कह्यु यथा एम कहे तेने पाछु पूछिए जे दयाए धर्म कि आज्ञा ए धर्म इति, एटला माटे हे प्रभुजी, तुजशासन के० तमारी आज्ञा, तेहनी, नय के० नीति तने शुद्ध परूपण गुणथीके० यथार्थ परूपवारूप गुणथ की निरमुक्त जहिएके० मोक्षसुख पामीए इतिप्रथम गाथार्थ ॥ १ ॥

हवे ते थापना निक्षेपा देखाडवा माटे सिद्धांतनी साख देखाडे छे ए साब मा ढुढीया बत्रीश सूत्र मानेछे यथा अगीआर अग, बार उपांग, एक नदी, एक अनुयोग द्वार, एक दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, निशीथ, बृहत्कल्प, व्यवहा र, दशाश्रुतस्कध, अने आवश्यक ए बत्रीश तेमांनीज साख देखाडशे इति

श्रीअनुयोगद्वारे भाख्या ॥ चारनिक्षेपा सार ॥ चार सत्य
दश मत्या भाख्या ॥ ठाणांगे निरधाररे ॥ जिनजी ॥ तु०॥२॥

अर्थ –श्रीअनुयोगद्वारनेविषे भाख्याके० कह्याछे, चार निक्षेपासारके० प्रव करशे. एटले वचना निक्षेपा न करी शके; तोपण चारनीतो प्रधानताए अवश्य करवा एवु देखाडवा सारु कहेले यत ॥ जत्थ जं जाणिज्जा निक्खेव निक्खे

निरवसेसं ॥ जच्छविय नजाणिज्जा चउक्कयंनिक्खिवेतच्छ ॥ १ ॥ इति अनुयोग द्वारे ॥ अर्थः- अधिका निक्षेपा न जाणिए; तोपण चार निक्षेपा सर्व ठामे करवा. वली चार प्रकारनी सत्यभाषा चोथे ठाणे तथा दश प्रकारनी सत्यभाषा दशमे ठाणे; ठाणांगे निरधारके० श्रीठाणांग सूत्रनेविषे निश्चयपणे कहीछे. यतः ॥ चउविहे सच्चे पन्नत्ते नाम सच्चे ठवणसच्चे दव्वसच्चे भावसच्चे ॥ ए चोथे ठाणे तथा दस विहे सच्चे पन्नते तंजहा ॥ जणवय, सम्मय, ठवणा, नामे, रूवे, पडुच्चसच्चेय, ववहार, भाव, जोए, दसमे उवम्म. सच्चेय ॥ इति ठाणांगमध्ये दशमे ठाणे छे. एनो अर्थः- कोंकणदेश प्रमुखनेविषे पयने पिच्च कहेछे; पाणीने उदक कहेछे. इत्यादिक जनपद सत्य कहीए. १ कुमुद कुवलयादिक पण पंकथी उपजेछे; पण पंकज ते अरविंदनेज सम्मत छे. ए सम्मतसत्य २ तथा लेप्यादिकनेविषे अरिहंत प्रतिमा, एककादिक अंकविन्यास, कार्षापणादिकनेविषे मुद्राविन्यासादिक; ते सर्व थापनासत्य. ३ तथा कुलनी वृद्धि न करतो होय, तोपण कुलवर्द्धन नाम होय ते; नामसत्य. ४ व्रतना गुण न होय तो लिंगमात्रे पण व्रती कहीए ते; रूपसत्य. ५ तथा अनामिकांगुलि, कनिष्ठाने आश्रीने दीर्घ कहीए अने मध्यमाश्रीने ह्रस्व कहीए, ए प्रतीतसत्य. ६ पर्वत उपर तृणादिक बलतां छता पर्वत बलेछे, पाणी ऊमेछे तोपण कहियुं के घडो ऊमेछे, अने पेट छतां पण कन्याने अनुदरा कहेछे, इत्यादिक सर्व व्यवहारसत्य छे. ७ वर्णादिक जे भाव ते भावसत्य. यथा बगलां उजलां छे. यद्यपि बगलांमां पांचे वर्णछे; तोपण शुक्लवर्ण उत्कटछे माटे उजलां बगलां एम कहेछे. एमज भमरो कालो, इत्यादिक सर्व भावसत्य जाणवुं.८ तथा दंडने जोगे जे दंडी कहीए. इत्यादिक योगसत्य कहीए. ए अने समुद्रसरखुं तलावछे. इत्यादिक उपमासत्य. १० ए दश सत्यमां स्थापना सत्य आव्युं, तथा पूर्वोक्त चार सत्यमां पण स्थापना सत्य आव्युं; तेमाटे स्थापना ते सत्यछे; एम श्री ठाणांगनी साखे देखाडयुं. ए गाथा पन्नवणा सूत्रे भाषा पदमां पण छे. इति द्वितीय गाथार्थ. ॥ २ ॥

एतो सामान्य प्रकारे थापना पण साची छे, एम कह्युं. हवे कहेछे जे वीतरागतो चारेनिक्षेपे साचाछे. ते देखाडेछे.

जास ध्यान किरियामांहि आवे ॥ तेह सत्य करी जाणुं ॥श्री
आवश्यकसूत्र प्रमाणे ॥ विगते तेह वखाणुंरे ॥ जि० ॥तु० ३ ॥

अर्थ —जास ध्यानके० जे वीतरागनु ध्यान, किरियामां आवेके० क्रिया जे आव श्यकनी क्रिया तेमां आवे, तेह सत्य करी जाणुके० साचु करी मानु, जे माटे आव श्यकनी करणी ते चारित्रियानी छे, माटेते जे क्रियामां बोले ते साचुज बोले, तो चारित्र रहे, अन्यथा चारित्र विराधे नापासत्य ते साचु बोलतां थायछे ते विचा री जोजो हवे श्री आवश्यकसूत्रप्रमाणे विगतेके० जिन्न जिन्न पणे, तेहके० ते नामादिक सत्य वखाणवु इति तृतीय गाथार्थ ॥ ३ ॥

चोवीशत्थयमांहि निक्षेपा ॥ नाम द्रव्य दोय जावु ॥ काउ
सग्गआलावे ठवणा ॥ जाव ते सघले जावुरे ॥ जिनजी ॥ तु०॥४॥

अर्थ —चोवीशत्थयके० चोवीश जिननी स्तवना एटले लोगस्सउज्जोअगरे ए पाठ उच्चारतां रुषजादिक चोवीश नाम प्रगटपणे कहेछे, ते नाम निक्षेपो जाण वो तथा द्रव्यनिक्षेपो जेअइआसिद्धा ए गाथामां छे, पण ए गाथा, कुमति मा ने नही, तेने चोवीशत्थामांहेज देखाडेछे नामद्रव्यके० नामनिक्षेपो अने द्र व्यनिक्षेपो दोय जावुके० ए बने निक्षेपा जावुं. ते द्रव्यनिक्षेपो एम जे रुषजा दिक तीर्थंकरने वारे जे प्रजु विचरता ते जावतीर्थंकर जाणवा, पण बीजा त्रवी श प्रजु रह्या, ते चोवीशत्थामां द्रव्यनिक्षेपे वखाणा यत जूतस्य जाविनोवा जावस्य हिकारणयल्लोके। तद्रव्यतत्वज्ञैः सचेतना चेतना कथितं? इतिवचनात् ॥ तथा व ली हमणां ने चोवीशत्थो कहेछे, तेने अरिहंतकित्तइस्स अथवा तिज्थयरामपसी यंतु इत्यादिक पाठ कहेतां मृषावाद लागेछे, जे माटे हमणां तो चोवीश जावजि न हवे सिद्धछे, ते माटे पूर्व जावना उपचार लेइ द्रव्यनिक्षेपे वांदतां सत्य थाय ते विचारी जोजो, एटले चोवीसत्थामांहे नाम अने द्रव्य ए बे निक्षेपा कह्या. हवे थापनानिक्षेपो कहेछे काउसग्ग आलावेके० काउसग्गकरवाना आलावा जे अरिहंतचेइआणं करेमिकाउस्सग्गं वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए ॥ इत्यादि पाठ उच्चारतां ठवणाके० थापनानिक्षेपो जावुं अर्थ—अरिहंतनी प्रतिमाने वं दन पूजनथी जे फल होय, ते फलने अर्थे काउसग्गके० काउसग्ग करवु ए ढुंढीआ टुंढीआ एम कहेछे जे, अमे ए आलावो मानता नथी तेना उत्तर ए, आवश्यक सूत्रमाना आलावा रुहित थाय, तो पांचमु काउसग्ग नाम आवश्य क केम थाय! तथा आवश्यकसूत्र आज छे, तमां ए पाठ छे ते कम उत्तराय? व ने जे उतरे तेने माथे आज्ञानाकर गच्छ्रमना पात पडे तथा आ काननं व

नुमानें जाणीए ठैए, जे पूर्वें ढुंढीआ आ आलावो मानता दीसेठे, पण हमणांज ना कहेठे; बाकी जो पूर्वे न मानता होय तो तेनी साख ए स्तवनमांज केम होय? इतिजाव. एम त्रीजा निक्षेपानुं ध्यान क्रियामांहे आव्युं अने जाव ते सघले जा वुंके० जावनिक्षेपो तीर्थंकरनो, जे केवल ज्ञानादि गुणरूप, ते तो ध्यान द्वाराए सर्वत्र क्रियासमाप्ति यावत् हृदयमांहे लावुंठुं. इति चतुर्थ गाथार्थ ॥ ४ ॥

एव चार निक्षेपा आवश्यक क्रियामांहे देखाड्या. हवे केटला एक ढुंढीआ एम कहेठे जे "अमे आवश्यक सूत्र मानीए ठैए पण ते आ तमे कहो ठो ते आ वश्यक ठे नही." तेने उत्तर देठेजे; "तमोने कोणे कह्युं के ते आवश्यक नही? ते विषेनो तो केवलीविना निरधार थाय नही." तेवारे ढुंढीआउ कहेके, "त मने कोणे कह्युं जे आवश्यक तेनुं तेजठे?" तेनो उत्तर जे "अमे तो आगम प्रमाणे मान्युं.' तेज आगली गाथाए देखाडेठे.

पुस्तकलिखित सकल जिम आगम ॥ तिम आवश्यक एह ॥
जगवई नंदी साखे सम्मत ॥ तेहमां नही संदेहरे ॥ जि० ॥ तु० ५

अर्थ.—पुस्तकलिखित जेम समस्त आगमके० सिद्धांतठे; तेम ए आवश्यक पण पुस्तकलिखितठे; तथा जगवई साखेके० श्रीजगवतीसूत्रमांहे आवश्यक नी जलामणठे. यथा जहा आवस्स ए इति तथा वली नंदीसाखेके० नंदीसूत्रम ध्ये पण सर्व सूत्रनां नाम कह्या, त्यां अकालिआ सूत्रमां आवश्यकनुं नाम प्रगट पणे कह्युठे; तेमाटे अमे मानीए ठैए; तेम अवश्य तमारे पण मानवुं पडशे. नही मानो तो जगवती तथा नंदी ए बे सूत्र विराधशो ते माटे सम्मतके० ए बे सूत्रनी साखे मानवा योग्य ठे, तेमां कांइपण संदेह नथी; इति गाथार्थ ॥ ५ ॥ हवे ढुंढक कहेठे के "आवश्यक सूत्रतो घरघरनुं जुडुठे; एक नथी' तेने शिक्षा कहेठे.

सूत्र आवश्यक जे घरघरनुं ॥ कहेशे ते अज्ञानी ॥ पुस्तक
अरथ परंपर आव्युं ॥ माने तेहज ज्ञानीरे ॥ जि० ॥ तु० ६ ॥

अर्थः—सूत्र आवश्यक जे घरघरनुं जिन्न जिन्न ठे, एम जे कहेशे तेतो अज्ञानी अथवा मूर्ख जाणवा. शामाटे मूर्ख? ते कहेठे. पुस्तकके० पाना मां लख्युं ठे ते ना केम कहेवाय? जेमाटे श्रीअनुयोग द्वारमध्ये कह्यु ठे के ॥ नो आगम उदव्वावस्सयं जंपत्तय पोठय लिहियं ॥ इति ॥ तथा अर्थ पण ठ

आवश्यकरूप चाल्यो आवेछे एमां त्रण प्रकारना आगम देखाड्या, यत ॥ सु त्तागमे, अत्थागमे, तदुभयागमे ॥ इति॥ तथा परंपर आव्युके० परंपराए चाल्यु आव्युछे, ते पण मानवु एमां पण त्रण प्रकारनां आगम देखाड्याछे यत अत्तागमे, अनंतरागमे, परंपरागमे इति ॥ तेथी जे आवश्यक न माने तेणे एटला आगमना उत्थाप्या, माटे तेने मूर्ख कहीए ते माटे माने तेहज ज्ञानीके० जे ए वात माने तेज ज्ञानी पुरुषछे, एम कहीए इति षष्ठी गाथार्थ ॥ ६ ॥

वली जे एकलो भावनिक्षेपो वांदवा योग्य मानेछे, तेने स्थापना तथा द्रव्य निक्षेपो वांदवायोग्य छे एम बतावेछे.

> भंभीलिपी श्रीगणधरदेवे ॥ प्रणमी भगवई आदे ॥ ज्ञानतणी
> ते ठवणा अथवा ॥ द्रव्यश्रुत अविवादेरे जि० ॥ तु० ॥७॥

अर्थ—भगवइ आदेके० श्री भगवतीसूत्रने धुरे श्री गणधरदेवेके० सुधर्मा स्वामिए भंभीलिपीके० ब्राह्मीलिपीने प्रणमीके० प्रणाम कर्यो छे नमोबंभीएलिविए ए सूत्रे करीने अने ब्राह्मीलिपीके० अक्षरविन्यास कहीए ए अर्थ आगली गाथाए स्पष्ट थशे ते अक्षरविन्यास तो ज्ञाननी स्थापना छे यत अनुयोगद्वारे आगस्सपवि ठवणाठविज्जइ तथा वली सब्भावठवणा असब्भावठवणा ए बे भेद पण अनुयोग द्वारमध्येज कह्याछे तेमाटे तेके० ते ब्राह्मीलिपि ज्ञानतणी ठवणाके० ज्ञाननीथापना जाणवी अथवाके० पक्षांतरे जो थापना न गणीए अने भयरूप ब्राह्मीलिपि लेइए तो द्रव्यश्रुतके० द्रव्यनिक्षेपे द्रव्यश्रुत कहिये अविवादेके० विवादरहितपणे एटले एमां कोइ झघडो नथी यत दव्वसुअं पत्तय पो त्थय लिहियं ॥ इत्यादि अनुयोगद्वार वचनथी जाणवु एटले ए भाव जे, नमोबंभीए लिवीए ॥ ए सूत्रप्रमाणे ज्ञाननो थापनानिक्षेपा, अथवा द्रव्यनिक्षेपा साधुने वांदवायोग्य छे तो श्रीतीर्थंकर देवना स्थापना तथा द्रव्य ए बे निक्षेपा वांदवा योग्य केम न थाय? इति भावार्थ ॥ इति सप्तम गाथार्थ ॥ ७ ॥

आ ठेकाणे कोइ ब्राह्मीलिपिना अर्थ करछेछे, तेने शिखामणदीएछे

> भेद अढारछ बंभीलिपिना ॥ समवायांगे दीठा ॥ शुद्ध अरथ
> मरडी भल रडुला ॥ भमशे कुमति धीठारे ॥ जि० ॥ तु० ॥ ८ ॥

अर्थ—भेद अढारछ बंभीलिपिनाके० ब्राह्मीलिपिना अढार भेद, श्रीसमवायां

ग सूत्रमां दीठाके० देखाड्याछे. यथा ॥ बंभीएणंलिविए अढार विहेलिवि
णे पन्नत्ते इत्यादि. ब्राह्मीलिपि अढार प्रकारनीछे. ते ब्राह्मीलिपि ते अक्षरन्
रूप कहेछे. ते ब्राह्मीलिपिने पंचमांगने धुरे श्रीगणधर देव प्रणम्या, ते वाको अ
केम थाय? तेमाटे ए शुद्ध अर्थ मरडीने कुमतिके० कुबुद्धिना धणी धीठाके
वांको अर्थ करवाने धर्यवंत, गणधर तथा तीर्थंकरनी पण बीक नही धरतां,
वचबुला नमशेके० घणो संसार रझलशे. ते माटे तमे संसार दीर्घथी शुं नथी
बीहीता? इतिभावार्थ. इतिअष्टम गाथार्थ ॥ ८ ॥

हवे पूर्वे कह्यु जे कुमतिओ, अर्थ मरडे छे. ते शुं मरडेछे? ते कहेछे.

बंभीलिपि जो तेहनो करता ॥ तो लेखक पण आवे ॥ गुरुआ
णाविण अरथ करे जे॥ तेहनो बोल न भावेरे॥जि० ॥तु०॥९॥

अर्थ—बंभीलिपिके० ब्राह्मीलिपि तेना करनारा ऋषभ परमात्मा, तेने गण
धर नम्या. जे माटे ब्राह्मीलिपि श्रीऋषभदेवजीए बतावी ते माटे एम आशंका प
रनी करीने उत्तर देछे. बंभीलिपिके० पालाने दृष्टांते ब्राह्मीलिपिना कर्ता श्री ऋष
भदेव लेइए. अहींया ए भाव जे, सूत्रधारने, पालो घडवा काष्टलेवा जतो देखी को
इके पूछ्युं के क्यां जशो? तेवारे अशुद्धनैगमनयनी अपेक्षाए सुतार बोल्यो जे पालो
लेवा जइशु. " तेम अहींयां पण ऋषभदेवजीनो अर्थ करे छे. इतिभाव. तेहने
उत्तर—तो लेखकपण आवेके० तो लहिउ—पुस्तकनो लखनारो पण आवशे इहां
ए भाव जे नैगमनये ऋषभदेव लीधा पण अशुद्धनैगमनी अपेक्षाछे ते थकी ढुंकडो
ते शुद्धनैगम कहीए. तेम इहां ढुंकडो तो ब्राह्मीलिपिनो कर्ता लहिउ छे, जेम कोरी
ने अने ठोलीने चोखो कर्यो एवो जे पालो तेने पालो कहे, ते शुद्धनैगम कहेवा
य. तेम अहींयां पण जाणवुं. ए नयनी अपेक्षाए ढुंकडो ते शुद्ध अने वेगलो ते
अशुद्ध इतिभाव. तेवारे लहिउ, वांदवायोग्य तमारे थयो १ तथा वली केहेशोके
ब्राह्मीनो आदि कर्ता लेइशुं, तो ते मिथ्याछे; जे माटे ए बंभीलिविए ए पदनो अ
नहि, ए तो उपचार करीने अर्थ खेंची लेइए तेवारे आवे ते तो नि प्रयोजन
चार करीए तो सूत्र लोप थाय. २ तथा वली नमोबंभीएलिविए ए पद भ्राति
करणहार कह्युं. तेवारे नमोसिप्पसयस्स एवुं पण भ्रांतिरहित पद थाय. ते कां
ह्यु? जे समवायांगसूत्र अढारलिपिनुं ते साथे विरोध पडेज नही ३ त
वली नमो अरिहंताणं ए पदमां शुं ऋषभदेव आव्या नही? जे वली बंभीएलि

विए ए पद कहीने अलगा देखाड्या ४ तथा वली बंजीनो कर्तातो निविए ए प द कहेवानु शु काम ? तथा एम कहेशोके " ब्राह्मीलिपिनी क्रिया एमणेज बतावी ते क्रियागुणे वादवा योग्य " तेनो उत्तर के, रुषनदेव वाद्या तेवारे ब्राह्मीलिपिता पहेलां वादीज. जे माटे क्रियानो कर्तावय तो क्रिया वयजथइ इत्यादि घणा उत्तर छे माटे गुरु आणाविणके० गुरु जे परमगुरु श्रीतीर्थंकर, तेनी आज्ञाविना जे अर्थ करेके० खोटो अर्थ करे, तेनो बोल, आज्ञाबाह्यपणा माटे न नावेके० नावतो नथी इति नाव अथवा गुरुके० शुद्ध परपराए आव्या जे गुरु तेनी आणा इति हवे ब्राह्मीलिपि द्रव्यश्रुतछे,माटे वदना करवायोग्य एवु कह्यु ते उपर दृष्टांत बतावेछे

जिनवाणी पण द्रव्यश्रुत छे ॥ नदीसूत्रने लेखे ॥ जिम ते तिम
बंभीलिपि नमिये ॥ नाव ते द्रव्य विशेषेरे ॥ जि० ॥तु०॥१०॥

अर्थ –जेम जिनवाणी पण नदीसूत्रने लेखे द्रव्यश्रुतछे ते के० तेने जेम नमीए छए तेम बंभीलिपिके० ब्राह्मीलिपिने पण नमीए "इति पदत्रय अक्षरार्थ' नावार्थ तो ए छे जे श्रीनगवतीने धुरे नमो सुअदेवयाए ए सूत्रे जिनवाणीने गणधरे नमस्कार कर्यो अने जिनवाणी तो, नदीसूत्रमा द्रव्यश्रुत कही बोलावीछे त थाच तत्पाठ ॥ केवलनाणणुछे णाउजे तछपसुवणजोग्गे तेनासइ तिछयरो वइजो गसुय हवइसेस ॥१॥ अर्थ –केवल ज्ञानेकरी अर्थ जे पदार्थो तेने जाणीने ज अर्थ प्रज्ञापना योग्य प्ररूपवा योग्य ते त्या तीर्थंकरो नापे एटले जे अनिलाप्य होय ते बोले, अने अननिलाप्य होय ते जाणेछे, पण वचन गोचर न थावे तथी अननि लाप्य वचने कहेवा तो नयी ते परमात्मानु वचन योग शेषश्रुत थाय एटले द्रव्य श्रुत थाय इति एटले ए नावार्थ, तीर्थंकरनो वचनयोग ते शेषश्रुतक०द्रव्यश्रुत जाणवो एवो अर्थछे एवु जाणी द्रव्यश्रुत जिनवाणी वदीएता द्रव्यश्रुत बंभलि पि केम न वांदीए? ए वे मा फेर नयी, तेनो हेतु कहेछे नावक० आपणानाव ते द्रव्यविशेर के० द्रव्यना विशेषकरे इति अक्षरार्थ नावार्थ ता एज क, द्रव्य पणेतो सर्व वस्तु सरखीछे जेम ब्राह्मीलिपि अक्षररूपे द्रव्यछे, तेम जिनगणधर नाचारांगणाना पुस्तकरूप द्रव्यछे ए वेमा तो काइ विशेष नयी पण आत्मा ज्ञानादिक नावना साधनपणे प्रणम्यायकी ते द्रव्यविशेष पाम्या कहीय त मा ए वादवायोग्य छे एम सद्दहु इतिदशमगाथार्थ ॥ १० ॥

कोइ कहेशेके अजीवरूप थापनाथी थापणने शा गुण थाय? तने कहीए,ज्ञ

जेम अजीव संयमनुं साधन ॥ ज्ञानादिकनुं तेम ॥ शुद्ध
व आरोपे विधिसुं ॥ तेहने सवले खेमरे ॥ जि० ॥तु०॥ ११

अर्थ—जेम अजीव संयमनुं साधनके० जेम वस्त्रपात्रादिक अजीवछे; प
संयम के० चारित्रनां साधनछे. एथी चारित्र सधायछे. ज्ञानादिकनुं तेमके० ते
थापना जे ब्राह्मीलिपि, तथा जिनप्रतिमा प्रमुख ज्ञाननो तथा दर्शनशुद्धि प्रमु
नो हेतु थाय; ते माटे शुद्धभाव आरोपे विधिसुंके० विधिपूर्वक पोतानो जे
भाव्यवसाय, तेनुं आरोपण सामी वस्तुनेविषे करे; तेहनेके० ते प्राणीने सव
खेमके० सर्व ठेकाणे मंगलीकछे. इतिभाव. इतिगाथार्थ ॥ ११ ॥

ते उपर सूत्र लखीएछैयेः—तं महाफलं खलु अरहंताणं भगवंताणं नामगोयम
स्स विसवणयाए ॥ अहींयां, ए आलावे नामनिक्षेप ते महाफलदायक कह्यो.
तथा ॥ धंनाणं ते गामागर नगर खेड कवड मंमव द्रोण मुहपट्टणा समसन्निवेसा
जध अरिहंता भगवंता विहरति ॥ ए आलावामां ग्रामादिकने धन्य कह्या. ते प
ण श्रीअरिहंतनीज प्रशंसा थइ. तथा वली श्रीश्रमणसूत्र प्रमुख घणा सूत्रोमां तेत्री
श आशातना मध्ये गुरुसंबंधी पाटी पीठ संथारे पग संघटतां आशातना लागे, ए
सर्व वस्तुउ अजीवछे, तोपण पोताने विशेषे आराधवा योग्य कहीउ, तेतो तुं पण
मानेछे; तो पछी जिनप्रतिमा ब्राह्मीलिपि प्रमुख अजीव केम नथी मानतो? त
था वली श्री अंतगडदशागमां सुलसाना अधिकारे हरिणेगमेषीनी प्रतिमा आ
राधने ते हरिणेगमेषी आराध्य हतो; तेथी ते हरिणेगमेषी संतुष्ट थयो; तेम
वीतरागनी प्रतिमा आराधने वीतराग आराध्य केम न थाय? थायज. अहींयां
कोइ कहेशे के "जेम हरिणेगमेषी संतुष्ट थयो तेम श्रीवीतराग पण ए दृष्टांते तो संतु
ष्ट थया जोइशे." तेनो उत्तर जे "दृष्टांत होय ते तो एक देशे होय; तेमाटे अहीं
या आराध्यरूप देश लीधोछे. एटले ए भाव जे वीतराग छे माटे काइ संतुष्ट न थाय
पण आराध्यतो थायज. एवुं सम्यक्दृष्टिए विचारवुं. वली भावजिन पण आराध्य
फल देछे. तेमां पण बे वात छे. जे भावजिनने देखेछे ते पण पुद्गलपिंड, आकार
रूप देखेछे; तेतो थापना छे, ए पण उंडो आलोच करी विचारजो. बीजुं भाव
जिन छता होय त्यांपण पोतानो भाव, निर्मल होय तो फल आपे. जो पोताना
भावविना फल आपे तो अभव्य अने दूरभव्यनेज फल आपवुं जोइए, ते माटे
निजभाव तेज प्रमाण छे. तेम थापना जिनने विषे पण जाणवुं.

अहीयां पोतानो नाव प्रमाण कह्यो, तेमां कोइकने आशंका उपजे के "ता मी वस्तु जेवी होय तेवी हो पण पोतानो नावज प्रमाण ठे" तेने कहेठे के एम नही, ते उपर गाथा कहेठे

शुद्धनाव जेहनो ठे तेहना ॥ चार निक्षेपा साच ॥ जेहमा नाव अशुद्ध ठे तेहना ॥ एक काचे सवि काचरे ॥ जि० तु० ॥ १२ ॥

अर्थ –शुद्धनाव जेहनो ठे के० जे वस्तुनो नावनिक्षेपो शुद्ध ठे, तेहना चारे निक्षेपा साचा ठे गौतमादिकनी परे एटले ए नाव जे, गौतमजीनो नावनिक्षेपो आराध्य साचोठे, तो नामादिक पण गौतमना आराध्यठे परम मगनीकरूप ठे तथा जेमा नाव अशुद्ध के० जे वस्तुनो नावनिक्षेपो अशुद्ध ठे, तेहने क० ते वस्तुने, एक काचे सवि काच के० एक नावनिक्षेप काचे करीने चारे निक्षेपा काचा जाणवा अगारमर्दकाचार्यनी परे जेम तेहनो नाव अशुद्धठे, तो तेनां नामादिक पण परम पापरूपठे, माटे आराध्य नही तेथी नाव तेहज सत्यठे माटे पापी जीवनी अजीवस्थापना पण आराध्य नही इति नाव इति गाथार्थ १२

हवे व्यतिरेक दृष्टांते साध्य साधे ठे

दश वैकालिके दूषण दाख्यू ॥ नारीचित्रने ठामे ॥ तो केम जिन प्रतिमा देखीने ॥ गुण नवि होय परिणामेरे ॥ जि० ॥ तु० ॥ १३ ॥

अर्थ –जेम दशवैकालिकसूत्रनेविषे नारीचित्रने ठामे के० स्त्रीनुं रूप चित्र्यु होय, आलेख्यु होय, तेने ठेकाणे जोता एटलु पद अर्थगम्यथी लेवु दूषण दाख्यु के० कदर्प्पविकार उपजे एह दोष देखाड्यो ठे यत ॥ चित्त नित्त न णिज्झाए नारें वासु अल किय नक्कर पिव दट्ठूण दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥ १ ॥ ए गाथानो अर्थ एके चित्रामणनी नितिप्रत्ये न णिज्झाए के० न जोइए तेनेविषे नारिक० स्त्री प्रतिते अलंकृत होय माटे एवी प्रत्ये न जोवु विकार उपजवानो हेतु माटे नक्कर के० सूर्य सामु जोइने, जेम दिठ के० दृष्टि सहरी लेइए, तेनी परे चित्रामण देखीने दृष्टि सहरी लेवी इति नाव इति दशवैकालिके दृष्टांते जिनप्रतिमा देखीने परिणामे के० पोताने नावे केम गुण न होय? एटले स्त्रीनु रूप देखी दोष कह्यो, तो जिनप्रतिमा देखीने गुण केम न थाय? थायज इति नाव ॥ १३ ॥

एतो सामान्यपणे स्थापनानिक्षेपो वंद्य देखाड्यो. हवे जिनप्रतिमा को
वांदी? ते देखाडे छे.

रुचकद्वीपे एक फगले जातां ॥ पडिमा नमिय आणंदे ॥ आवतां
एक फगले नंदीसरे ॥ बीजे इहां जिन वंदेरे ॥ जि० ॥ तु० ॥१४॥

अर्थ – "अहींयां जंघाचारण मुनिनो अधिकार छे. आगली गाथामां जंघाचा
रण एहवुं पदछे" ते जंघाचरण मुनि रुचकद्वीपे के० रुचक नामा तेरमो द्वीप,
मतांतरे एकवीशमो द्वीप. तेहनेविषे एक फगले जाता के० एकज फग भरी उ
त्पत्या ते त्यां उतर्या. उतरीने पडिमा नमियके० जिन प्रतिमा, तेने आनंदे के०
हर्षे नमीने, आवताके० पाछा वलतां, एक फगले नंदीसरेके० एकफगले नंदीसरनामा
आठमो द्वीप, त्यां उतरे, त्यां उतरी विसामो लई त्यां जिनप्रतिमा वांदे. बीजेके०
बीजे फगले अहींया आवे. अहींया जिनप्रतिमा वांदे. ए अहींयांना जिन ते
अशाश्वती प्रतिमा वांदे एम जणाव्युं. इति चतुर्दश गाथार्थः ॥ १४ ॥

त्रिण गतिए भगवई भाखी ॥ जंघाचारणकेरी ॥ पंडगवन
नंदन इहां पडिमा ॥ ऊर्ध्व नमे वणेरीरे ॥ जि०॥तु० ॥१५॥

अर्थ.—त्रीण गतिए भगवई भाखी के० श्रीभगवतीसूत्रनेविषे ए तीणगति क
ही. एकवार भगवतीनुं नाम दीधुं, एटले जंघाचारण तथा विद्याचारणनो अधि
कार सवलो भगवतीसूत्रमां छे; एम समजवुं. जंघाचारणकेरी के० जंघाचारण
ी तीरछी गति कही. हवे ऊर्ध्वलोकनी वात कहेछे. एक फगले उंचा मेरुपर्वत
माथे पंडक वन के० पांडुकवननेविषे जाय, त्यां चैत्यवांदे; त्यांथी पाछा व
ा एक फगले नंदन के० नंदनवन, समभूतलापृथ्वीथी पांचसें योजन उंचु छे;
आवे. त्यांनां चैत्य वांदे. त्यांथकी बीजे फगले इहां पडिमाके० अहींयां घर
उपरे अशाश्वतीप्रतिमाने वांदे. एम ऊर्ध्व नमे वणेरी के० ऊर्ध्वलोके वणी
ा वांदे. इति पंचदश गाथार्थः ॥ १५ ॥

हवे विद्याचारणमुनिनो संबंध कहेछे.

विद्याचारण ते एक फगले ॥ मानुषोत्तरे जाय ॥ बीजे नंदीस
जिनप्रतिमा ॥ प्रणमी प्रमुदित थायरे ॥ जि०॥तु० ॥ १६ ॥

—विद्याचारणमुनि ते प्रथम एके फगले मानुषोत्तरे जाय के० अढी द्वी

पनी मर्यादा करीने रह्यो, एवो जे मानुष्योत्तरपर्वत, ते पर्वते जाय, त्यांना चैत्य वांदे त्यहांथी बीजे के० बीजे फगले नदीश्वर द्वीपे जाय त्यां जिनप्रतिमाप्रत्ये प्रण मीके० प्रणाम करीने प्रमुदित थाय, एटले हर्षवंत थाय इति गाथार्थ ॥ १६ ॥

तिहांथी पडिमा वंदण कारण ॥ एक फगले इहां आवे ॥ ऊर्ध्व पणे जाता बे फगले ॥ आवता एक स्वभावेरे ॥ जि० ॥ तु० १७ ॥

अर्थ –तिहांथी के० ते नदीसर द्वीपथी, पडिमावंदण कारण के० प्रतिमा वं दणने हेतुए, एक फगले ईहां आवे के० एक उत्पाते अहींयां आवे आवीने अ हींयांना चैत्य वांदे ए तीर्छा लोकनी वात कही, हवे ऊर्ध्वलोकनी वात कहे छे ऊर्ध्वलोके पण जातां बे फगलां अने आवतां एक फगलु एटले ए भाव जे, जातां एक फगले नंदनवने जइने चैत्य वांदे अने बीजे फगले पांडुकवने जइने चैत्यवांदे त्यांथी एक फगले अहींया आवी अहींयांनी प्रतिमा वांदे स्वभावके० ए गतिना, एस भाव छे वचमां बीजा विसामा करी शकाए नहीं इति भाव इति गाथार्थ ॥ १७ ॥

हवे पूर्वे "भगवती सूत्रमां ए पाठ छे" एवु तो कह्युहतु, पण कीए ठामेछे? ते कहेछे

शतकवीशमे नवम उद्देशे ॥ प्रतिमा मुनिवर वंदी ॥ इम देखीने अवला भाजे ॥ तस मति कुमति फंदीरे ॥ जि० ॥ तु० ॥ १८ ॥

अर्थ –शतक वीशमे नवम उद्देशे के० शतक वीशमु अने उद्देशो नवमो, तेमां प्रतिमा मुनिवर वंदी के० मुनिराजे प्रतिमा एरीते वांदी छे इम देखी के० एवो पाठ देखीने, जे अवला भांजे के० जे प्राणी अवला वाका जायछे, तस मति के०तेउनी जे बुद्धि, ते कुमति फंदी के०कुगुरुनी भोलवी थकी कुमतमां फंदाई रहे छे एटले जो मिथ्यात्वने जोरे कुमति फंदमां पडयाछे,तो एवा प्रगट पाठ देखीने पण अवला भाजे छे कुमतिनी जालमा गुंथाय छे इति भाव ॥ इति गाथार्थ॥ १८ ॥

हवे ते पाठ लखे छे कइविहाण भंते चारणा पन्नत्ता गो० डुविहा चारणा पन्न त्ता " तंजहा विज्जाचारणाय जंघाचारणाय सेकेणठेणंभंते एवं वुच्चइ विज्जाचार णा गो० तस्सणं छठ्ठंछठ्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणंविज्जाए उत्तरगुणलद्धि खममाणस्स विज्जाचारणलद्धि नामं लद्धि समुप्पज्जइ सेतेणठेणं जावविज्जाचारणा विज्जा चारणस्सणं भंते कहंसीहागइ कहंसीहेगइविसए पन्नत्ता, गो० अयणं जंबुद्दीवे दीवे जावकिंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं महिड्डिए जावमहासोक्खे जावइणामे

व तिकट्टु जंबुद्दीवंदीवं तिहिं अच्छराणिवाएहिं तिरकुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्व मागच्छिज्जा विज्जाचारणस्सणं गो० तहासीहागइ तहासीहेगइ विसए पन्नत्ता. वि ज्जाचारणस्सणं भंते तिरियंकेवइएगइविसए पन्नत्ता गो० सेणंएगेणंउप्पाएणं मा णुसोत्तरेपव्वए समोसरणं करेइ माणुसोत्तर तहिं चेइआइं वंदइ वंदइत्ता बीए णं उप्पाएणं नंदीसरवरदीवे समोसरणं करेइ करेइत्ता तहिं चेइआइं वंदइ वंदइ त्ता तउ पडिनियत्तइनियत्तइत्ता इहमागच्छइ गच्छइत्ता इहं चेइआइं वंदइ विज्जा चारणस्सणं गो० उड्ढं एवइ एगतिविसए पन्नत्ता सेणं तस्सगणस्स अणालोइय पडिक्कंते कालं करेइ नछितस्स आराहणा सेणं तस्सठाणस्स आलोइअ पडि क्कंते कालं करेइ अछितस्स आराहणा सेकेणठेणंभंते एवं वुच्चइ जंघाचारणे गो० तस्सणं अठमं अठमेणं अणिखित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावे माणस्स जंघाचारणलद्धीनामं लद्धी समुप्पज्जइ सेतेणठेणं एवं वुच्चइ जंघाचारणे जंघा चारणस्सणंभंते कहंसीहागइ कहंसीहेगइविसए पन्नत्ता गो० अयणं जंबुद्दीवे दीवे जहेव विज्जाचारणस्स णवरतिसत्तरकत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छिज्जा जंघा चारणस्सणं गो० तहासीहागइ तहासीहेगइविसए पन्नत्ता; सेसंतंचेव जंघाचारण स्सणंभंते तिरियं केवइए गतिविसए पन्नत्ता गो० सेणं इत्तो एगेणं उप्पाएणं रुअ गवरेदीवे समोसरणं करेइ करेइत्ता तहिं चेइआइं वंदइ वंदइत्ता तउ पडिनि यत्तमाणे बीइएणं उप्पाएणं णंदीसरेदीवे समोसरणं करेइ तहिं चेइआइ वंद इ वंदइत्ता इहमागच्छइ इहं चेइयावदई जंघाचारणस्सणं गो० तिरियंएवइएगतिवि सए पन्नत्ता० जंघाचारणस्सणंभंते उड्ढं केवइए गइविसए पन्नत्ता गो० सेणंइतोएगे णं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेइ करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ वंदइत्ता तउ पडि णियत्तमाणे बितिएण उप्पाएण नंदणवणे समोसरणं करेइ करेइत्ता तहिं चेइयाई वंदइवदइत्ता इहमागच्छइ मागच्छइत्ता इहचेईयाइं वदइ जघाचारणस्सणं गो० उड्ढं एवइए गतिविसए पन्नत्ता० सेणतस्स ठाणस्स अणालोइअ अप्पडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा सेणंतस्स गणस्स आलोइय पडिक्कंत काले करेइ अथितस्स आराहणा सेवंभंते सेवभंते जाव विहरइ इति भगवती सूत्रे श तक वीशमे उद्देशे नवमे ए पाठ छे.

हवे कुमति, नवनवा अभिप्राय लावी ए आलावानो अर्थ मरडे छे. ते प्रगटकरी दूषवे छे. अहियां ढुंढक कहे छे जे " चैत्य शब्दे अमे जिनप्रतिमा नथी मानता अने एम करतां तमे चैत्य शब्दे जिनप्रतिमा कहोछो तो कहो, पण ते वादता लाभ हो

ततो सूत्रमां "तस्सगणस्स अणालोइअ" इत्यादिक पाठे केम कह्यु जे ते स्थान ने अणआलोए, अण पडिकमे काल करेतो विराधक थाय? इति तेनो उत्तर कहेछे.

आलोअणनु ठाण कह्यु जे ॥ तेह प्रमाद गतिकेरो ॥ तीरग ते जे जात्र विचाले ॥ रहे ते खेद घणेरोरे ॥ जि० तु० ॥ १७ ॥

अर्थ –ते ठाणनु आलोअण कह्युके० ते स्थानक जे चैत्यवंदनामां प्रमा स्थानक तेहनु जे आलोववु, तेज देखाडेछे ते प्रमाद गतिकेरोके० प्रमाद गति तेनु आलोववु छे जे कारणमाटे लब्धि उपजीवन ते प्रमाद गतिछे कोइ पूछे जे गणनु आलोअण कह्यु एहवो अन्वय क्यांथी कर्यो ?' तेने कहीए छैए जे ॥ तस्स गणस्स आलोअणालोइअ इत्यादिक सूत्रपाठथकी एवो अन्वय कर्यो इति तथा वली प्रमादस्थान बीजु देखाडेछे तीरगतिके० तीरना वेगनी पेरे ... गतिए जे चाल्या जाय, ते जातायका जात्रविचालेके० वचमांतीर्थयात्रा ... शाश्वतां देहरामधुरा रहेके० रही जाएछे ते खेद घणेरोके० घणो खेद चित्तमां उपजेछे एटले तीरना वेगनी परे गया ते आलोअणस्थानक कहीए इति ... इति एकोनविंशतितम गाथार्थ ॥ १७ ॥

हवे आलावानो अर्थ कइविहाण के० केटला प्रकारना हे भगवन्, चारण मुनि कह्याछे? प्रभुनी कहेछे हे गौतम, वे प्रकारना चारणमुनिछे तंजहा ... ते कहेछे एक विद्याचारण बीजा जघाचारण सेकेणट्ठेण के० शाकारणथी विद्याचार ण? प्रभुनी कहेछे हे गोयम, छठ छठ्ठने अणिक्खित्तेणके० अविश्रामपणे ... रतर तप करता विज्जाएके० विद्याए करी पूर्वगतश्रुत विशेष करीने ... लब्धि समुप्पण्णेत्तके० पिण्ड विशुद्धादिकनेविषे तप, तेहने खमता सहेता ... करता, इतिन्याय विद्याचारणलब्धि उपजे छे सेतेणट्ठेण के० ते कारणे विद्याचार ण कहीए हे स्वामिन्, विद्याचारणनी कहसीहागइके० केवी शीघ्रगतिछे? ... हेगइविसएके० शीघ्रगतिविषय केवोछे एटले गमनविना पण शीघ्रगति विषय ... हतु केवडो? इति न्याय प्रभुजी कहेछे हे गौतम, अयण्णंके० आ जंबूद्वीप ... योजननो यावत् ३१६२२७ योजन, ३ गाउ, १२८ धनुष्य १३ अंगुल ... हली परिक्खेवणके०परिधिछे महर्द्धिक यावत् महासुखनो धणी देवता, ... तालिवाएहिंके० त्रणचपटी-वगाडीए एटली वारमा तिक्खुत्तोके० त्रणवार ... प करी आवे ... तादिया ... नी शीघ्रगतिछे एवी शीघ्रगतिना विषय ...

मान्यप्रकारनी गति कही. हवे त्रीजीगतिविषय पूछेछे. विज्जाचारणस्सणं इत्यादि
क सुगमछे, तिरियंकेवइगइविसएके० त्रीजी गतिनो विषय केटलोछे ? प्रभुजी कहेछे.
हे गौतम, एगेणंउपाएणंके० एके मगले माणुसोत्तरेपव्वएके० मानुषोत्तर पर्वतनेविषे स
मोसरणंके० समवतार करे. करीने तत्थचेइयाइवंदइके० त्यहां चैत्यवांदे. बितीएणं उ
प्पाएणं के० बीजे मगले नंदीसरवरदीवेके० नंदीश्वर द्वीपनेविषे, समोसरणंकरेतिके०
समवतार करे. करीने तहिंचेइआइवंदइके० त्यां चैत्यने वांदे. ततोपडिनियत्तइके०
त्याथी पाछा निवर्ते. इहमागच्छइके० अहींयां आवे. इहचेइआइवंदइके० अहींयांनां
चैत्यवांदे, विज्जाचारणस्सणंगो० तिरियंएवइएगतिविसएके० हे गौतम विद्याचारण
नो तीर्छि गति विषय एटलोछे. विद्याचारणस्सणंउड्ढं केवइए गइविसएपन्नत्ता के० ते
वैद्याचारणनो ऊर्ध्वगतिविषय केटलोछे? प्रभुजी कहे छे. हे गौतम सेणंके० ते, इ
तोके० अहींयांथी, एगेणं उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेतिके० एकेमगले नंदन
वननेविषे समवसरण करे; करीने तहिं चेइआइवंदइके० त्यां चैत्यवांदे; बितीएणं उ
प्पाएणंके० बीजे मगले, पंडगवणेके० पांडुकवन मेरुने मस्तके समवसरण करे. त
हिंचेइआइवंदइके० त्यहां चैत्यवांदे. ततो पडि नियतइके० त्याथी पाछा निवर्त्ते. इह
मागच्छइके० अहिंया आवे इहं चेइआइ वंदइके० अहींयांना चैत्यवांदे. विज्जाचार
णस्सणं इत्यादि सुगमछे सेणंतस्सठाणस्सके० ते स्थानकने एटले लब्धि फोरवी ते
स्थानकने, अणालोइअ अप्पडिकंतेके० अणआलोए, अणपडिक्कमे, कालंकरइ के०
काल करे. तोनत्थितस्स आराहणाके० आराधना तेने नथी. सेणंतस्सठाणस्सके० ते
स्थानकने,आलोइय पडिक्कंते कालंकरइके० आलोचीने अने पडिक्कमीने काल करे. तो
अत्थि तस्सआराहणाके० तेने आराधनाछे एटले ए नावाथी लब्धिउपजीवन ते प्रमाद
छे. ते प्रमाद आलोयाविना चारित्रनी आराधना न थाय अने विराधक चारित्रनुं फल
न पामे. सकेणठेणंभंते, इत्यादिक जंघाचारणना आलावानो पण एज अर्थछे, पण
एटलो फेरछे के अठम अठमना पारणां करता ए लब्धि उपजे.॥ जंघाचारणस्सणंभं
ते कहंसीहागइ॥ इत्यादिक पण विद्याचारणनी परेछे. पण एटलो फेर जे कोइ देव
ता तिसत्तखुत्तोके० एकवीसवार जंबुद्वीपने फरी आवे, एवी शीघ्रगति जंघाचारण
नी छे. जंघाचारणस्सणंभंते तिरियं इत्यादिक सुगम छे, पण एटलो फेरजे. सेणंएगेणं
उप्पाएण रुयगवरेदीवे समवसरणं करेइके० एके मगले रुचकवर जे तेरमो द्वीप,
तेनेविषे समवसरण करे करीने तहिं चेइआइं वंदइके० त्यहांचैत्यवांदे, वांदीने, तओ
पडिनियत्तमाणेके० त्याथी पाछां निवर्तता बितीएणं णंदीसरवरेदीवे समवसरणं करे

इके० नदीश्वरद्वीपनेविषे समवसरण करे. तहिंचेइआइंवदइके० त्यां चैत्यने वंदे. इहमागच्छइके० अहियां आवे इह चेइआइं वदइके० अहियां चैत्यवांदे, जवाचारणनो कर्ध्वगति विषय एटलो छे यावत् सपूर्ण लगी सुगमछे सेवजतेके० गौतमस्वामि कहेछे ॥तहत्तिइति॥ अहींया विद्याचारणने जावु वे मगले अने आववु एके मगले, तथा जवाचारणने जावु एके मगले अने आवता वे मगलां, ते लब्धिनो स्वजाव छे तथा कोइ कहेछेके, विद्याचारणने आवता विद्या स्पष्टतर थाय, माटे एक मगले आवे अने जातां तेवी न होय माटे वे मगले जाय अने जवाचारणने लब्धिथी उपजे माटे आवतां अल्पसामर्थ होय, तेथी आववु वे मगले अने जावु एक मगले इतिवृत्ति

हवे ते आलोववा उपर सिद्धांतसाखे दृष्टांत कहेछे

करी गोचरी जिम आलोए ॥ दशवैकालिक साखे ॥ तिम ए
ठाम प्रमाद आलोए ॥ नही दोष ते पाखेरे ॥ जि०॥तु०॥२०॥

अर्थ —करी गोचरीके० गोचरी करीने जेम उपाश्रये आवीने साधुपद अथवा लिए लइए, ते साधु, जिम आलोएके० प्रमादने आलोवेछे, पण नही दोष ते पाखेके० ते प्रमादविना बीजो दोष नथी इति अक्षरार्थ जावार्थ तो ए छे के श्री दशवैकालिके एम कह्यु जे, साधु,गोचरी करी आवीने गुरुपासे आलोवे ते जनीरीते न आलोयुं होय तो फरी पडिक्कमे एम कह्यु तेमां ए पडिकम्यु ते दोष लाग्या तन पडिकम्युं पण गोचरी करी ते पडिक्कम्यो नथी, तेम अहींयां पण चैत्यवदना पडिक्कमी नथी दोष लाग्यो ते पडिकम्योछे. इतिजाव एटले कोईपूछे जे "आलोया पडिक्कम्याविना काल करेतो विराधक थाय, एम करतां श्रीजगवतीसूत्रमां तेहनो शा जवाब बतायो"? तेने कहीए जे हे देवाणुप्रिय, अमे जवाब वाल्यो, पण तु जलो समज्या नथी" फरीसांजल गोचरी करीने साधु,उपाश्रये आवतां मार्गमध्ये आलोया पडिक्कम्याविना काल करे तो आराधक कहीए, किंवा विराधक कहीए? ते विचारी जोजो. यत श्री दशवैकालिके पचमाध्ययने॥विणएण पविसित्ता सगासे गुरुणोमुणी । इरिया वहीयमायाय, आगाओ अपडिक्कमे ॥१॥ आजोइत्ताणणीसेस अइयारजहक्कम गमणागमणेचेव जत्तपाणे असजये ॥ २ ॥ उज्जुप्पन्नो अणुविग्गो, अवरकिणण चेयसा। आलोए गुरुसगासे, जजहा गहियं जवे ॥३॥ णसम्ममा लोइयं हुज्जा, पुव्विंपच्छा जंकम । पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसिठ्ठो चितए इम ॥ ४ ॥ अर्थ —विणएणके० विनय करी, पविसित्ताके० पेशीने, सगासेगुरुणोके० गुरुनी समीपे मुणीके० मुनि,

आगउ एटले आव्यो थको, इरियावहीयं पडिक्कमेके० इरियावही पडिक्कमे, आ दायके० ग्रहीने. १ पठी काउसग्गमांहे आलोइत्ताके० उपयोग देइने, नीसेसंके० सघलाए, अइआरके० अतीचारने, जहक्कमंके० यथा अनुक्रमे अतीचारने चिंतवे गमणागमणेके० जातां आवतां, चेवके० निश्चये, ज्ञत्तपाणेअके० ज्ञात पाणीने विषे, संजएके० मुनि. २ उज्जुपन्नोके० सरल प्रज्ञावालो, अणुव्विगोके० उद्वेग रहित, अव्वक्खित्तेणचेइसाके० सावधान मने करी काउसग्ग पालीने, आलोए गुरु सगासेके० गुरुनी समीपे आलोए. जंजहागहियंके० जे जेम लीधो होय ते तेम. ॥३॥ एम करता कदाचित् एसम्ममालोइयहुज्जाके० रुडी पेरे आलोयुं न होय, पुव्विं पच्छाविजं कडंके०पूर्वे आहारादिक ग्रह्यु होय तेने,अथवा पठीग्रह्यु होय ते पूर्वे कहेवा एुं होय अथवा पछे कहेवाएुं होय,जकडंके० जे एम कीधां तथा पूर्वे कर्म दोष पश्चात् कर्मदोष लाग्या होय, तेने पुणो पडिक्कमेके० फरी पडिक्कमे. तस्सके० ते सूक्ष्मअतीचारने वोसिहोके० ते कायाने वोसिरावतो,चिंतएइमंके० एम चिंतवे. एचार गाथानो अर्थ.

हवे एवो ज्ञगवतीसूत्रनो पाठ सांज्ञलीने कुमति बोल्यो

कहे कोइ ए कहेवा मात्रज ॥ कोई न गयो नवि जाशे॥ नहीतो ल वणशिखामांहे जातां ॥ केम आराधक थाशेरे?॥ जि०॥ तु० २१ ॥

अर्थः– कोइक कुमति एम कहेठे जे, कहेवामात्रज के० ए ज्ञगवतीसूत्रमां चारणऋषिनुं नाम देइने कह्युं, पण ते कहेवारूप जाणवुं. पण कोइ न गयो के० एरीते कोइ अतीत काले गयो नथी, तथा नविजाशे के०अनागत काले कोइ जाशे पण नही तेनो हेतु कुमति देखाडेठे. नहीतो के० जे में कह्युं तेम न होय तो लवणशिखामांहे जातां के०लवणसमुद्रनी शिखामां थइने जातां केम आराधक थाशे के० अपकायनी विराधना करीने जता आराधक केम थाशे? इति गाथाअक्षरार्थ हवे ज्ञावार्थ कहेठे, जे जंबूद्वीपने पठवाडे बे लाख योजन एक दिशाए पहोलो एवो चारे दिशाए फरतो लवणसमुद्र ठे, ते वचमा सोल हजार योजन पाणी उंचुं चोफेर ठे; ते पाणीमांथी थईने मुनि केम जाय? अने जाय तो आराधक केम थाय? तथा बीजो पण कोइ मार्ग जवानो नथी, ते माटे कहीएठेए के चारणमुनिनी वात ते ज्ञगवतीसूत्रमां कहेवा रूपठे, पण करवा रूप नथी ॥ २१ ॥

हवे कुमतिने आगली गाथामा उत्तर वेछे.

सत्तर सहस्स जोयण जई उंचा ॥ चारण तीर्छा चाले ॥ समवायगे
प्रगट पाठ ए ॥ शु कुमति भ्रम घालेरे ? ॥ जि०॥ तु० ॥ २२॥

अर्थ —सत्तर सहस्स जोयण के० सत्तर हजार योजन, जई उंचाके० ऊंचा जईने, चारण तीर्छा चाले के० ते चारणमुनि तीर्छा जाए छे एम ए रीते श्रीसमवायांगसूत्रमा प्रगट पाठ छे तो, शु कुमति भ्रमघालेके० हेकुमति, कुत्सित मतिना धणी, नोलालोकने खोटी खोटी वातो कही शु भ्रम घाले छे? संशयमां शुंपाडेछे? जे तु कहेछे तेम कहेवा मात्र होय तो समवायांगसूत्रमा एवो पाठ केम कह्यो? तिनाव यथा ॥ लवणेण समुद्दे सत्तरजोयण सहस्साइ सव्वग्गेण पन्नत्ता इमीसेण रयणप्पनाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाउ नूमिनागाउ साइरेगाइ सत्तर जोयणसहस्साइ उड्ढ उप्पइत्ता तउ पच्छाचारणाण तिरियगई ॥ इति समवायांगे॥ एनो अर्थ —लवणसमुद्द सत्तर जोयण सहस्साइ के० सत्तरहजार जोजन, सव्वग्गेण के० सर्व थइने कह्यो छे एकहजार उमो, सोल हजारनी उपर शिखा एम १७००० इमीसेण रयणप्पनाए पुढवीएके० ए रत्नप्रनापृथ्वीथकी बहुसमरमणिज्जाउ नूमिनागाउ के० घणी सरखी एटले बराबर रमणीक नूमिनागथकी, एटले मेरुनी धरतीथकी, साइरेगाइ सत्तरजोअणसहस्साइ उड्ढ उप्पइत्ता के० सत्तरहजार जोजन जाजेरा ऊर्ध्व जईने पच्छा के० पछी चारणाण तिरियगई के० चारणमुनिनी तीर्छा गति प्रवर्त्ते ते माटे नगवतीसूत्रनो पाठ करवारूप छे, पण कहेवारूप नथी इति नाव इति द्वाविंशतिम गाथार्थ ॥ २२ ॥

हवे ए आलावामा चेइआइ वंदे कह्यु, ते उपर कुमति चैत्यशब्दनो अर्थ ते ज्ञान कहे छे, तेह आशाका जाणीने उत्तर वालता गाथा कहे छे

चैत्यशब्दनो ज्ञान अरथ ते ॥ कह्यो करवो कुण हेते ॥ ज्ञान
एक ने चैत्य घणां ॥ नूले जड संकेतेरे ॥ जि०॥तु० ॥२३॥

अर्थ —चैत्य शब्दनो जे ज्ञान अर्थ करोछो ते शा हेतुए करवो? पाधरा अर्थ चैत्यशब्दे जिननु घर अथवा जिनप्रतिमा यत॰ ॥ चैत्य जिनौकस्तांबिंब चैत्या जिन सनातरू ॥ " इत्यनेकार्थसंग्रहे" एवो अर्थ मूकीने चैत्यके० ज्ञान एवो अर्थ शामाटे करवा पडे? इतिनाव ज्ञान एकने चैत्य घणाके० ज्ञानतो एक छे, अने चैत्य घणा, तेमाटे तुं

के० तेअर्थ करतां जूलेछे. शामाटे जूलेछे? ते कहेछे. जडसंकेतेके० मूर्खसंकेते, एटले शुद्धगुरुपरंपरा आवी होयतो निपुणसंकेत होय; पण निगुरुना संकेत ते मूर्खज होय. इतिगाथा अक्षरार्थः अथ जावार्थ. ते कुमति एम कहेछे जे, "विद्याचारण जंघाचारण मुनिए, नंदीश्वर प्रमुखनी वातो सिद्धांतमां सांजली; ते सांजली हृदयमां कौतुक उपन्युं, जे एवात केम हशे? आपणी नजरे जोइए" एम विचारीने नंदीश्वरादिकनेविषे जोवा गया. त्यां जेम आगममां सांजल्युं तेम नजरे दीठुं; तेवारे प्रजुना ज्ञाननुं बहुमान जाख्युं; जे "धन्य प्रजुना ज्ञानने" एम कहीने प्रजुना ज्ञानने पगे लागे. चेइआइं वंदइनो ए अर्थछे;" एम कुमति कहेछे. तेनो उत्तर वाल्यो; जे मूर्ख, व्याकरण प्रमुख जण्याविना शुं समजे? चेइआइंके० चैत्यानि ते द्वितीयानुं बहुवचन छे, हवे जो ज्ञानने पगे लाग्या होय तो बहुवचन सूत्रकार शाने माटे कहे? ज्ञान तो एक छे. एवी वातो मूर्ख शुंजाणे? इति

अहींयां केटलीक वातो, स्तवनमां नथी आणी पण कांईक विशेषे वात लखीएछैए. त्यांजइ ज्ञानने पगेलाग्या; एम कहे तेवारे वाटमां जातां चमत्कार उपजे एवा पहाड पर्वत समुद्रप्रमुख घणा आव्याहशे; तो तेने देखीने प्रजुना ज्ञानने वंदना कां न करी? ते विचारजो. वली एम चैत्य शब्दे ज्ञान कहीए तो; ॥ नाणं पंचविहं पन्नत्तं ॥ इत्यादिक, सूत्रमां ज्ञानना आलावा घणाछे, त्यां सघले ॥ चेइयं पंचविहं पन्नत्तं आनिणि बोहिय चेइयं, सुयचेइयं. उहिचेइयं, मणपज्जवचेइयं, केवलचेइयं. इत्यादिक पाठ लखत, पण तेतो क्यांए दीसता नथी; तथा वली एवो अर्थ करे जे, आगममांथी वात सांजली निर्णय करवा गया, तेवारे शंका तो हृदयमां उरी अने जिन वचनमां शंका उपजे; तेवारे साधुपणुं केम रहे? यतः ॥ पय मक्खरंपि एकंपि जोनरो एइ सुत्त निदिठं संसरोयं तोविहु मिछदिठि जमालिव ॥१॥ ते माटे मूर्खसंकेतनो अर्थ छांमी, निपुणसंकेत अर्थ करीए तो सर्व समुं थाय. ए जवाबना उत्तर घणा छे; तेहनो खप होयतो प्रतिमाशतकग्रंथ उपाध्यायजीनो करेलो छे ते जोज्यो. ए विस्तारे सर्युं. ॥ २३ ॥

हवे वली कुमति एम कहे छे जे, "चैत्य के० प्रतिमा हो तो पण जले हो पण ते शाश्वतीप्रतिमा हती अने तमेतो अशाश्वती मानोछो." एम कहेनारने, एज आलावामांथी अशाश्वती देखाडेछे.

रुचकादिकना चैत्य नम्या ते ॥ सासय पडिमा कहिए ॥ जेह इहां
ना तेह अशाश्वत ॥ बेउमां जेद न लहिएरे ॥ जिण॥तुण॥२४॥

अर्थ –रुचकादिकना के० रुचक आदि देई आदि शब्दथकी नंदीश्वरादिक लइए तेह चैत्यने मुनि जे नम्या, ते सासयपडिमा के० ते शाश्वतीप्रतिमा कहीए तथा जेह इहाना के० अत्रे भरतना चैत्य वांद्या, इहा॥ चेइयाइ वदइत्ति पाठात् ते अशाश्वता जाणवा ते माटे मूर्ख होय ते शाश्वतीमां अने अशाश्वतीमां पूज्यापूज्य नो फेरपाडे तेज माटे आगल कहेवाशे जे द्रोपदीनो अधिकार, तेमां केवल अशाश्वतीनेज पूज्यपणु कह्यु छे, अने जिनघर कही बोलाव्युंछे; ते कारणे वेदमां भेद न लहीए के० शाश्वतीमा अने अशाश्वतीमां अशमात्र भेद नथी' इति गाथार्थः॥२४॥

हवे ए अधिकार पूरो थयो माटे उपसहार करे छे

जे उपर साहेब तुज करुणा ॥ शुद्ध अरथ ते भाखे ॥ तुज आगमनो शुद्धपरुपक ॥ सुजश अमियरस चाखेरे ॥जि०॥तु०॥२५॥

अर्थ –जे उपर साहेब तुज करुणाके० हे साहेब, जे प्राणीउपर तमारीक रुणा एटले कृपाछे, शुद्ध अरथ ते भाषेके० ते प्राणी यथार्थ व्याख्या कहे अहींयाए आ ष्याए, एक उपर करुणाछे अने एक उपर करुणा नथी एवो अर्थ थाय, त वीतराग ने केम घटे? अत्र उत्तर जेम एक बापना बे दीकरा होय, बापनु ते बेउ उपर हेत सरखुछे; पण एक आज्ञाकारीछे, बीजो आज्ञाकारी नथी तेमां जे आज्ञाकारीछे ते उपर हेत, लोक प्रगटपणे देखे छे, अने जे आज्ञाकारी नथी ते उपर यद्यपि पितानुं हेतछे; तोपण लोको, ते प्रगटपणे देखता नथी, तेम अहींयापण तीर्थंकरने यद्यपि सर्व प्राणीउं उपर करुणाछे, पण जेउ आणाना आराधकछे तेउ उपर प्रगटपणे दीसेछे, ते माटे एम कह्यु जे उपर साहेब इत्यादि० अहींयां सर्वथा करुणा नथी एम कहछे ते निवारवु, जे माटे वीरस्वामिने छद्मस्थपणे भगवतीमां ग[illegible] र पन्नरमानी वृत्तिमध्ये श्री अभयदेव सूरिजीए लख्युछे जे॥ स्नेहगर्भानुकपासद्भा तु॥ तेसार केवलीने स्नेहरहित अनुकपा छरी, अन्यथा स्नेहगर्भ पदनु शु प्रयोजन इत्यादिक बहु चर्चाछे, ते ग्रथ वधे माटे नथी लखता तेमाटे तुज आगमना शुद्धपरूपक होय ते प्राणी सुजशके० भला यशरूप, अमियरसके० अमृतना रस ते, चाखेके० आस्वाद करे एटले कविए पोतानु नाम पण सूचव्यु इति पंचवीशतिगाथार्थ ॥ २५ ॥ ए प्रथम ढाल थयो ग्रथा ग्रथ ४०३ अक्षर १४

हवे बीजो ढाल कहेछे तेहेनो सबंध जे प्रथम ढाले प्रतिमा स्थापन करी प्रतिमाने वदना कही; हवे केटलाक मूढ एम कहेछे जे ' प्रतिमा वांदीए पण पूजा

ए नही." तेमने समजाववा माटे बीजो ढाल पूजानो कहेछे. तेनी प्रथम गाथा

महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ एदेशी ॥

तुज आणा मुज मनवसी ॥ जिहां जिनप्रतिमा सुविचार ॥ लालरे ॥ रायपसेणीसूत्रमां ॥ सूरिआन्नतणो अधिकार ॥ लालरे ॥ तुज० ॥ १ ॥

अर्थः—तुजआणाके० तमारी जे आज्ञा, प्रस्तावथी वीरनी जे आज्ञा ते, मुज मन वसीके० म्हारा चित्तनेविषे रहीछे. एटले श्रीजिनशासनमांहे आज्ञाए धर्मछे पण आज्ञाग्राह्यमा युक्ति न करवी एम देखाड्युं. ते आज्ञा केवीछे? जिहा जिनप्रतिमा सुविचारके० जे आज्ञामां जिनमुद्रानो जलो विचारछे तेहिज आगम साखे देखाडेछे. रायपसेणीसूत्रमाके० रायपसेणीनामे बीजुं उपांग; तेमा सूरियाजतणो अधिकारके० सूर्याजनामे देवता, जे परदेशी राजानो जीव प्रथम देवलोके उपन्या तेनो अधिकार विस्तारेछे; एटले ए अर्थ जे, सूर्याज देवताए प्रतिमानी पूजा करी, तेनो विस्तारे अधिकारछे. इतिनाव इति प्रथम गाथार्थ ॥ १ ॥

तेहिज विस्तारे देखाडेछे.

ते सुर अभिनव उपन्यो ॥ पूछे सामानिक देव ॥ लालरे ॥ शुं मुज पूरव ने पछी ॥ हितकारी कहो ततखेव ॥ लालरे ॥ तु० ॥ २ ॥

अर्थ — ते सुरके० ते देवता अभिनव उपन्योके० नवो जेवारे उपन्यो तेवारे पूछे सामानिकदेवके० सामानिक जे पोताने सरखी ऋद्धिना धणी ते देवताउने पूछेछे. शुं मुज पूरव ने पछी हितकारीके० म्हारे पूर्वे अने पछी हितकारी आ विमानमां शुं छे! ते कहो ततखेवके० तत्काल कहो. इति द्वितीय गाथार्थ ॥ २ ॥

ते कहे एह विमानमां ॥ जिनपडिमा दाढा जेह ॥ लालरे ॥ तेहनी तमे पूजा करो ॥ पूर्व पछाहित एह ॥ लालरे ॥ तु० ॥३॥

अर्थः—ते कहेके० हवे ते देवताउ उत्तर कहेछे जे, एह विमानमांके० एहनुं आ प्रत्यक्ष विमान, तेहमा, जिनपडिमा दाढा जेहके० जिनेश्वरनी प्रतिमाछे; तथा जिनेश्वरनी दाढाउ जे छे, तेनी तमे पूजा करो. इतिस्पष्टं ॥ पूरव पछाहित एहके० पूर्वे तथा पछी, जिन प्रतिमा तथा जिन दाढा ए बे वस्तुनी पूजा, तेज हितकारीछे. एरीते सामानिक देवताए उत्तर वाल्यो. इति तृतीय गाथार्थ ॥ ३ ॥

अहियां जिनदाढा शब्दे जिनअस्ति जाणवां अन्यथा सूर्याभदेवना ननेविषे जिनदाढा सनवे नही. जे कारण माटे, एक सौधर्मेंद्र, बीजो ईशानेंद्र, चमरेंद्र, अने चोथो बलींद्र, ए चारे इन्द्रनेज दाढा लेवानो अधिकार छे, माटे जंबुद्वीप पन्नत्तीनी वृत्तिमां शांतिचंद्र उपाध्यायजीए जिनसकहा ॥ जिनास्थिनी ॥ एवुं लख्युंछे. जेम अहियां रायपसेणीमां पण ॥ सकहा ॥ एवो छे, तेमाटे दाढा शब्दे अस्थि कहिए. इतिनाव तथा पूर्व पन्नानो अर्थ अनेक रीते करशे, माटे अमे नथी लख्यो

ए त्रण गाथा कही तेमां सूत्र पाव हतो, ते प्रमाणे गाथामां अर्थ तथाचतत्सूत्र ॥ तएण तस्स सूरियाभस्स देवस्स पंचविहाए पयत्तिए पयत्ति वगयस्स समाणस्स इमेयारूवे अवहिए पहिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जिश पुव्वं करणिज्जं किंपच्छा करणिज्ज किमेपुव्विसेय किमेपच्छासेयं किमेपुव्वि पच्छा पाए सुहाए खमाए णिसेसाए आणुगामियत्ताए नविस्सइ तएण तस्स सूरि स्सदेवस्स सामाणिय परिसोववण्णगादेवा सूरियाभस्स इमेयारूव अज्झ पन्न समभिजाणित्ता जेणेव सूरियाभेदेवे तेणेव उवागच्छति सूरियाभाव ल परिगाहिय दसनहं सिरसावत्त मत्थए अजलं कट्टु जएण विजएण वद्धावें वेना एवंवयासी एवं खलु देवाणुप्पियाण सूरियाभेविमाणे सिद्धायतणे जिणपडि ण जिणुस्सेहप्पमाणमेत्ताण सन्नत्तसयं सन्निखित्ताणचिट्ठइ सनाएण सुहमाएण माण चेइयखंने वइरामएसु गोलवट्ट समुग्गएसु बहुइंउ जिणसकहाउ सन्निखित्ताउचिट्ठ ताउण देवाणुप्पियाण अन्नेसय बहुण वेमाणियाण देवाणय देवीणय अवि उ नारपशुरासणियाउ तंएयण देवाणुप्पियाण पुव्विकरणिज्जं एयण देवाणु पाण पच्छाकरणिज्ज एयण देवाणुप्पियाण पुव्विपच्छावि हियाए सुहाए खमाए स्सेसाए आणुगामियत्ताए नविस्सइ ॥ इति रायपसेणीउपांगे ॥ अस्यार्थ —तएणत सूरियाभस्सदेवस्सकें० तेवारे ते सूरियाभदेवताने, पंचविहाए पयत्तीए पयत्ति गयस्स समाणस्सकें० पांच प्रकारनी पर्याप्तिए पर्याप्तिनाव पाम्या थका देवताने नाषा अने मन ए बे पर्याप्तिसाथे नीपजेछे, माटे पांच कही इमेयारू एवा प्रकारनो अवहिए पहिएकें० मनमां आव्यो मणोगए सकप्पे समुप्पज्जि मनगत संकल्प उपन्यो ते कहेछे, किमेपुव्विसेयकें० शुं माहारे पूर्व श्रेयकारी। किमेपच्छासेयकें० शुं माहारे पछी श्रेयकारी? किमे पुव्विपच्छाविकें० शुं माहारे पूर्व अने पछी हियाएकें० हितकारी पथ्य आहारनी पेरे, सुहाएकें० सुखने अर्थ, समर्थ

संगतने अर्थे, खेमने अर्थे, निस्सेसाएके० निश्रेयस जे मोक्ष तेने अर्थे, आणुगामि
अत्ताएके० अनुगमन करे? एटले परंपराए शुनानुबंधी नविस्सइके० थशे? तए
णं सूरियानस्सदेवस्स सामाणिय परिसोवन्नगादेवाके० तेवारे ते सूरियानदेव
ना सामानिक पर्षदामां उपन्या देवता ते, सूरियानस्सइमेया रूवं अज्जत्थियं स
मुप्पन्नं समनि जाणित्ता के० सूर्यानदेवतानो एवो अनिप्राय उपन्यो जाणी
ने, जेणेव सुरयानदेवेके० ज्यां सूर्यानदेवताछे. तेणेव उवागछंतिके० त्यां आवे.
सूरियानंदेवंके० सूर्यानदेवने, करयल परिगाहियंके० बे हाथ जोडीने, दसनहं
सिरसावत्तं मछए अंजलं कट्टुके० दशनख नेलाकरी, मस्तके आवर्त करी अंजली
करीने, जएणंके० जये करीने स्वपक्षनो जय विजएणंके०परपक्षनो जय ते विजय
ते विजय करीए. तेणे वधावे; वधावीने, एवंवयासीके० एम कहे. एवं खलु देवा
णुप्पियाणं के० खलु नाम निश्चये ए देवानुप्रियाना सूरयानेविमाणेके० सूर्या
न नामा विमाननेविषे सिद्धायतणेके० सिद्धनुं घर एटले देहेरुं, ते देहेरानेविषे
जिनपडिमाणंके० जिनेश्वरनी प्रतिमाने, ते प्रतिमा केवी छे? जिणुस्सेहपमाणमि
त्ताणंके० तीर्थंकरना उत्सेधअंगुल प्रमाण मात्रछे. अट्ठसयंसंणिखित्तंचिट्ठइके० ए
कशोने आठ थापनाछे; तथा सन्नाएणं सुहम्माएणंके० सुधर्मानामा सन्नानेविषे
माणवए चेइयखंनेके० माणवकनामा चैत्यस्तंनछे; ते स्तंननेविषे वइरमएसु गोल
वट्ट समुग्गएसुके० वज्रमय गोलवृत्त माबडाछे. तेमां बहुइउके० घणां, जिणस्स
कहाउके० जिनना सकहा शब्दे अस्थि छे. सन्निखित्ताउचिट्ठंतिके० थापनाएछे,
ताउणंके० ते जिनप्रतिमा तथा जिणसकहाउ ते देवाणुप्पियाणंके० हे देवानुप्रिय
तमने तथा अन्नेसिंके० बीजापण सम्यग्दृष्टि, वेमाणियाणं देवाणं देवीणयके०
वैमानिक देवता देवीउने, अच्चणिज्जाउके० अर्चवा योग्यछे. जावपज्जुवासणिज्जा
उके० यावत् सेवा करवा योग्यछे. अहींयां यावत् शब्दे वंदणिज्जाउ सम्माणणि
ज्जाउ इत्यादिक कहेवुं. तएयणं देवाणुप्पियाणं इत्यादिक सुगमछे. नावार्थ ए छे.
के, ए तमने पूर्वे करवा योग्यछे, पछी करवा योग्यछे, ए तमने पूर्वे तथा पछी हित
कारी सुखने अर्थे, क्षेमने अर्थे, मोक्षने अर्थे अने शुनानुबंधने अर्थे थाशे.

अहियां केटलाएक कुमति कहेछे के, "ए देवतानी स्थितिछे." तेहनो उत्तर
जे, सूत्रपाठमां ॥ अन्नेसिंबहूणं वेमाणियाणं ॥ इति बहु पद शुं करवा कह्युं? ॥ नवि
सिं वेमाणियाणं ॥ एवो पाठ कां न कह्यो? तेज माटे जाणिएछेए जे, ए सर्व देवता
नी स्थिति नहिं, ए स्थिति ते सम्यग्दृष्टिनीज दीसेछे. तथा वली सिद्धायतन

कहेतां गणधरजीने मृपावाद केम न थाय? पण जिनप्रतिमा सिद्ध जगवान व रे तो सिद्धायतन कहेतां मृपावाद न लागे ते विचारी जोज्यो वली एश्रा लावे एवा जिनप्रतिमा वाद्याना फल कह्या, तेवाज फल, वर्त्तता जिनने वांदवानां कह्याछे जेम ए रायपसेणीमांहेज पावछे ॥ तं महाफलं खलु तहारूवाणं अरह ताणं नगवताणं नामगोयस्स विसवणयाए किमग पुण वदण नमंसण पडिपुच्छ पज्जुवासणयाए एगस्सवि आरियस्स सवणयाए किमग पुणविउलस्स अठस्स ग हणयाइ तंगच्छामिणं समणं जगवं महावीरं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्मा णेमि कल्लाणं मंगलं चेइयं देवयं पज्जुवासामि एयंमे पेच्चाहियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए अणुगामियत्ता नविस्सइ इत्यादि ॥अस्यार्थ॥ तं महाफलं खलुके० निश्च ये तेहनु महाफलछे शानु फल छे? ते कहेछे, तहारूवाण अरहंताणं जगवंता णंके० तथा रूप अरिहंत जगवंतनां, नाम गोयस्स विसवणयाएके० नामगोत्र सां नल्या थकां पण, किमगपुणके० तो तेह शु शुं कहेवु? वदण नमंसणके० वंदना करीए, नमस्कार करीए, पडिपुच्छणके० प्रतिपृच्छा करीए, पज्जु वासणयाएके० सेवा करे एगस्सवि आरियस्स सवणयाएके० एकपण आर्यवचन सांजलीए तो महा फल थाय तो, किमगपुण विउलस्स अठस्स गहणयाएके० विपुल अर्थनु ग्रहण क रीए तेहना फलनु शु कहेवु? तंगच्छामिणके० ते कारणमाटे, जाउ समणजगवं महावीरं वंदामि नमंसामिके० श्रमणजगवंत महावीरने वंदणा करु, नमस्कार करु सक्कारेमि सम्माणेमिके० सत्कार करु, सन्मान करु, कल्लाणके० कल्याणका री, मंगलके० मंगलीकनु करणहार चेइयदेवयके० देवतासबधी चैत्य जे प्रतिमा ते प्रतिमानीपरे, पज्जुवासामीके० सेवा करे एयमे० ए मुजने पेच्चाके० परन वे, हियाए सुहाए इत्यादिकनो अर्थ पूर्वनी परे जाणवो एमां पण देवतानां चै त्यनी पेरे सेवा करु एम कह्यु नित्य पोताना गुरुने वांदता पण कल्लाण इत्यादि क पाठ कहेछे, पण मूर्ख कांई विचारता नथी ए तो प्रसगे कह्यु, पण ए पाठ दे खे थापनाजिन अने नावजिन ए बेउना फल समान बताव्या तथा वली न्नाव जिनथी थापनाजिन अधिक पणछे ते, डौपदीने आलावे प्रगट करी देखाडछु व या एज आलावामां देहेराने सिद्धायतन गणधरजीए कह्यु, ते सिद्धनु घर कह एटले जिनप्रतिमा सिद्धस्वरूप बलात्कारे ठरीज, तेवारे नावजिनथी जिनप्रतिमा अधिकी थईज, एमां कांई विवाद नथी एटलाज माटे शक्रस्तवमां जिनप्रतिमा आगलछे॥ गाथा सप्तमी॥ कहीए छेए अने नावजिन आगल ॥ गाथा सप्तमीविवरण॥

एवा पावछे तो मूर्ख एटलुं न विचारे के सिद्धस्थानक पाम्या ते अधिक; के सि द्धस्थानक पामवानो इच्छा करे ते अधिक? इत्यादिक घणी चर्चाछे; पण ग्रंथ वधे माटे लखता नथी. ए प्रसंगे लख्युं ॥ ३ ॥

हवे कुमतिउनी आशंकाउ उपाडी उपाडीने एज आलावामांथी गुप्त अर्थ प्रग ट करी उत्तर दे छे. त्या प्रथम कोइक कुमति कहेछे; के " सूर्याभदेवता जे वेला उपन्यो ते वेला पूजा करी पण पछीतो यावजीवपर्यंत नथी करी. तेवारे एतो लौ किक आचारनी पेरे थयुं. पण धर्म अर्थे थयुं नही " इति. तेने उत्तर कहेछे.

पूरव पछा शब्दथी ॥नित्यकरणी जाणे सोय ॥लालरे॥ सम
कितदृष्टि सद्दहे ॥ ते द्रव्ययकी क्यम होय?॥लालरे ॥ तुज ०॥४॥

अर्थ.—पूरवपछा शब्दथी के० पूर्व अने पछी हितकारी शुं? एवुं पूछयुं अने तेउए "पू रव अने पछी एज हितकारी छे" एवुं कह्युं, तेवारे पूजाविनानो शेष कालकीयो रह्यो? ते माटेज, सोय के० ते सूर्याभदेवता एम जाणे जे माहारे नित्यकरणी सदा कर्तव्य छे. एटले सदाकाल पूजा करी,एम लख्युं. इति भावार्थ.वली कोइक कुमति बोल्योके, "एतो द्रव्यथी बाह्यथी पूजा करी पण भावथी नथी करी." इति. तेहने उत्तर देछे जे, समकितदृष्टि जे होय ते सद्दहे के० धर्म एहवुं सद्दहे; ते द्रव्यथी केम होय? एटले समकिती द्रव्यथी करे तो शुं श्रद्धामा न होय? जेम पुत्रविवाहादिक. इति भाव. इति तूर्यगाथार्थ ॥ ४ ॥ तेज हवे स्पष्ट करी देखाडे छे.

द्रव्ययकी जे पूजीयां ॥ प्रहरण कोशादि अनेक ॥ लालरे ॥ तेह
यी वेउ जूदां कह्यां ॥ ए तो साचो भाव विवेक ॥लालरे॥ तुज० ॥५॥

अर्थ.—द्रव्ययकी जे पूज्यां. प्रहरण के० शस्त्र, कोश के० भंमार. आदि शब्दथी अनेक पूज्यां; पण ते सर्वथी बेउ जे जिनप्रतिमा अने जिन दाढा, ते जुदांज कह्यां छे. जे कारणे प्रणाम, अथवा शक्रस्तवादिक बीजा कोइ स्थानके कह्या नथी. तथा सामा निक देवे उत्तर बाल्यो,तेवारे पण प्रतिमा तथा दाढाज पूजवापणे बताव्यां,अने फल पण एनाज बताव्यां. ते माटे प्रगटपणे बे जुदांज कह्यां छे; एतो साचो भाव के० ए भाव ते साचो विवेक के० वहेंचीने भिन्न भिन्न पणे कह्योछे. इति गाथार्थ. ॥५॥

ते उपर द्रव्यभावनुं दृष्टांत कहेछे

चक्ररयण जिन नाणनी ॥ पूजा जे भरते कीध ॥ लालरे ॥ ज्यम ते
त्यम अंतर इहां ॥ समकितदृष्टि सुप्रसिद्ध ॥ लालरे ॥ तुज०॥ ६ ॥

पन्ना पेन्ना शब्दनो ॥ जे फेर कहे ते दुष्ट ॥ लालरे ॥ शब्द
तणी रचना घणी ॥ पण अरथ एक छे पुष्ट ॥ लालरे ॥तु०॥१०॥

अर्थ –पन्ना अने पेन्ना ए बे शब्दनो जे फेर कहेके० अर्थ शब्दगम्य मानेछे माटे जे फेर अर्थ करेछे, ते दुष्टके० दुष्ट जाणवा जेमाटे, शब्दतणी रचना घणीके० श ब्दरचना यद्यपि घणीछे, पण अर्थ तो एकजछे एवकार गम्यमान छे पुष्टके० पुष्ट अर्थछे. इति गाथा अक्षरार्थ हवे भावार्थ जे पेन्नानो अर्थ जेम परभवछे, तेम पन्नानो अर्थ पण परभवजछे एम जाणवु, पण शब्दफेर रचनाए भूलवु नहीं जेम वंदनानाज अधिकारमा क्यहाकतो॥ पेन्नाहियाए ॥एम कह्युछे, तथा क्यहाकता॥ इह भवेवा परभवेवा आणुगामियत्ताए भविस्सए ॥ एवो पाठछे, तेमाटे परभव अर्थ पे न्ना, ए बे शब्दमां जेम फेर नथी, तेम पन्ना पेन्ना शब्दमा पण फेर न जाणवो तेप न्ना शब्दे पन्ना कडुअ विवागा इत्यादिक ठामे परभवनो अर्थसंभव देखाडयोछे ॥१०॥

ए रायपसेणी सूत्रनो पाठ हतो, तेना चर्चायुक्तिना उत्तर वाल्या हवे सूरिया भ देवता आगल शु करे? ते कहेछे

वाची पुस्तक रत्नना ॥ हवे लेइ धरम व्यवसाय ॥ लालरे ॥ सिद्धा
यतने ते गयो ॥ जिहां देवछंदनो ठाय ॥ लालरे ॥ तु० ॥ ११ ॥

अर्थ –वाची पुस्तक रत्नना के० शाश्वता रत्नना पुस्तक वांचे ते वाचीने, हवे लेइ धरमव्यवसाय के० धर्मना व्यवसाय शब्दे उपकरण लेइने, सिद्धायतन के० सिद्धनु आयतन जे घर, तेनेविषे ते गयो के० ते सूरियाभ देवता गयो ज्यां देवछंदनु स्थानक छे त्यांगयो इति गाथार्थ ॥ ११ ॥

जिनप्रतिमा देखी करी ॥ करे शिर प्रणाम शुभ बीज ॥ लालरे ॥
पुष्पमाल्य चूर्ण करी ॥ वस्त्राभरणे वली पूज ॥ लालरे ॥तु०॥१२॥

अर्थ –जिनप्रतिमा देखीने करे शिर परणाम के० मस्तके प्रणाम करे शुभ बीज के० ते प्रणाम शुभ जे पुण्य, तेनु बीज छे, एटले पुन्यनु बीज छे पुष्प के० फूले करी तथा माल्य के० मालाए करी तथा चूर्ण करी तथा वस्त्रकरी तथा आभरण के० घरेणांए करी, वली पूज के० पूजा करी इति गाथार्थ ॥१२॥

फूल पगर आगे करी ॥ आलेखे मंगल आठ ॥ लालरे ॥ धूप दे
ई काव्य स्तवी ॥ करे शक्रस्तवनो पाठ ॥ लालरे ॥ तुज० ॥१३॥

अर्थः—तेवारपछी फूलपगरके० फूलना ढगला, आगल करी, आलेखे मंगल आठ के० अष्ट मंगलीक ते आलेखे. यथा स्वस्तिक १ श्रीवत्स २ कलश ३ नद्रासन ४ शरावसंपुट ५ मत्स्ययुग्म ६ दर्पण ७ नंदावर्त ८ एव अष्ट मंगल, धूप देइ के० अनेक जातीना धूप देईने, काव्यस्तवीके० तेवार पछी अपुनरुक्त एकसो आठ काव्ये स्तवीने, करे शक्रस्तवनो पाठके० ठेहेली वारे नमोत्थुणंनो पाठ कहे. इति गाथार्थ.

ए वली सूत्र प्रमाणे गाथा बांधी. तथाच तत्सूत्रं ॥ तएणं से सूरियान्नेदेवे पोछयर यणं गिएहइ पोछयरयणं गिएिहइत्ता पोछयरयणं विहडित्ति विहडितित्ता पोछयरय णं वाएइ वाएइत्ता धम्मियं ववसायं गिएहइ गिएहइत्ता पोछयरयणं पडिनिरकवेइ पडि निरकवेइत्ता सीहासणाउ अप्नुठेइ अप्नुठेइत्ता ववसाइ सनाउ पुरिमछिल्लेणं दारेणं प डिनिखमइ पडिनिरकमइत्ता जेणेव णंदापुस्करणी तेणेव उवागछइ उवागछइत्ता हछ पायं परकालेइत्ता आचंते चोरके सूइनूए एगं महं सेयं रययामयं विमल सलिल पुन्नं निगारं गिएहेइ गिएहेइत्ता जाइंतछ उप्पलाइ जावसय सहस्स पत्ताइं ताइं गिएहइ गिएहइत्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेछगमणाए तएणं सूरियान्नं देवं बहवे आनिउगिया देवाय देवीउय अप्पेगइया कलस हछ गया जाव अप्पेगइआ धूवकडुछय हछगया सूरियान्नंदेवं पिछउ समणु गछंति गछंतित्ता तएणं सूरियान्नेदेवे चउहिं सामाणिअ साहसीहिं जाव अन्नेहिं देवेहिं देवीहिंय सद्दिंसं परिवुंमे सव्वब्ले हिं जाव वाइअ रवेणं जेणेव सिद्धायतणे तेणेव उवागछइ उवागछइत्ता सिद्धायतणं पुरिछिमेणं दारेणं अणुपविसइ पविसइत्ता जेणेव देवछंदए जेणेव अछसयं जिणपडि माउ तेणेव उवागछइ उवागछइत्ता जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेइ करेइत्ता लो महछय गिएहइ गिएहइत्ता लोमहछेणं परामुसइ परामुसइत्ता गंधोदएणं एहावेइ एहावेइत्ता गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिपइ अणुलिपइत्ता जिणपडिमाणं अहयाइं देवदूस जुअलाइं निअंसेइ निअंसेइत्ता पुप्फारुहणं १ मल्लारुहणं २ चुसारुहणं ३ वछा रुहणं ४ आनरणारुहणं ५ करेइ करेइत्ता आसत्तो उसत्त विउल वट्ट वग्घारिय मल्लदाम कलाव करेइ करेइत्ता करयल पडिग्गहियं करयल पन्नठ विप्पमुक्केणं दसद्धवणेणं कुसु मेणं मुक्क पुप्फ पुंजो वयार कलियं करेइ करेइत्ता जिणपडिमाणं पुरउ अछिहिं सस्से हिं रययामएहिं अछरारिं तंडलेहिं अछछमगले आलिहइ तजहा सछिय जाव दप्प णं तयाणं तरकणं चंदप्पन्नरयण वयर वरुलिय विमलदंमं कंचण मणिरयण नत्तिचि त्तं कालागुरु पवर कुंडरुक्क तुरुक्क मझंत धूवमघमघंत गंधुधुआनिरामं गंधवट्टि वि णिम्मुअंत्तं वेरुलियमय कडुछुयं पग्गहिऊणं धूवंदाऊण जिणवराणं अछसयं विसुद्ध

जुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं महावित्तेहिं संथुणइ संथुणइत्ता पच्छा सत्तपयाइं पच्चोसक्कइ॥ वामजाणुं अंचेइ अंचेइत्ता दाहिण जाणु धरणितल सिसाहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं ध रणितलं सिणिवेसेइ सिणिवेसेइत्ता एगसाडिअं उत्तरासंग करइ करइत्ता जाव करि यल परिगाहियं दसणहं सिरसावत्त मत्थए अंजलि कट्टु एववयासी नमोत्थुणं अर हंताणं नगवंताणं ॥ इत्यादि रायपसेणीउपांगे

अहींयां कुमति कहे छे के "देवतानी करणीहु मानुनही ' तेनेपूछीए जे देवता, जे करणी करे तेमां पुण्य तथा पाप वधाय के नहीं? जो कहेशो के वधाय तो, ए पू जाप्रमुख करतां पुण्य वधाएु के पाप? तेनो उत्तर देजो त्यारे कहेशो के कांइ न वधाय तेवारे जीव समयमात्र सात कर्म बांध्या विना रहे नहीं, ते केम मे लवशो? ते कहो तथा कोइक कुमति कहेछे जे, देवता तो नोधम्मिया छे" तेनो उ त्तर जे चारित्रनी अपेक्षाए तो नोधम्मिया सुखे कहो पण श्रुत समकितनी अपेक्षाए नोधम्मिया केम कहेवाशे? ते विचारजो वली श्री नगवतीसूत्रने विषे अविरती देवताने कहीए तो ॥ निठुरवयणमेयं ॥ एम कह्युछे इत्यादिक युक्ति, उपाध्याय श्रीयशो विजयजीकृत नोधम्मियानिषेध ग्रंथथी जाणवी

वली देव करणी मानवीज घटेछे ते देखाडेछे

जेहना स्वमुखे जिन कहे ॥ नवसिद्धि प्रमुख
छ बोल॥ लालरे ॥ तास नगति जिनपूजना ॥
नवि माने तेह निटोल ॥ लालरे ॥ तु० ॥१४॥

अर्थ –जेहनाके० जे सूरियानदेवताना, स्वमुखे जिन कहेके० जिनेश्वर अथा त् श्रीवीरस्वामि पोताने मुखे कहेता हवा नवसिद्धि प्रमुखके० नवसिद्धि प्रमुख, प्रमुख शब्द बीजा अनवसिद्धि १ समकिती मिथ्यात्वी, २ परित्त ससारी अणंत स सारी ३ सुलनबोधी दुर्लनबोधी ४ आराधक विराधक ५ चरम अचरम ६ ए छ बोल लइए इति नावार्थ जे, देवताना ए छ बोलमां जे रुडा बोल ते प्रत्ये उत्ताव्या तु नव्यछे १ तु समकिती छे, २ परित्त संसारी छे ३ सुलन बोधीछे ४ आराधक छे ५ चरमछे ६ एम बताव्यु, इतिनाव तासनगति जिनपूजनाके० ते सूरियाननी नक्ति श्रागल कहियु ते, तथा जिनपूजना जे पूर्व कही, तेने नवि मानेके० ने मूर्ख मानता नही, ते पुरुष, निटोलके० अटोलकाढ्यु जाक प्रसिद्ध कहेवाय छे; तेहवा जाणवा इतिगाथार्थ ॥१४॥

एके० ज्यां देवछंदोछे, जेणेव अठ्ठसय जिणपडिमाउके० ज्यां एकसो आठ जि नप्रतिमाउछे, तेणेव उवागछइके० त्यां आवे आवीने जिनपडिमाए आलोएके० जिनप्रतिमाने दीठां थकां, पणाम करेइके० प्रणाम करे प्रणाम करीने, लोमहछ्य गिएहइके० मोरपीछी ले लेइने, लोमहछेण परामुसइके० ते मोरपीछीए पूजे, पूजीने गधोदएण एहावेइके० सुगध पाणीए नवरावे नवरावीने गोसीसचदणेण गायाइं अणुलिपइके० गोशीर्षचदन जे बावनाचदन, तेणे करीने गात्र जे प्रतिमानु शरीर, तेहने विलेपण करे करीने, जिनपडिमाएके० जिनप्रतिमाने, अहयाइंके० अक्षत, देवदूसजुवालाइके० देवदूष्यनो युगल एटले जोडो नियसेइके० पहेरावे पेहेरावीने, पुप्फारुहणके० फूलनु आरोपण करे मल्लारुहणके० फूलनी मालानु आरोपण करे चूसारुहणके० वास बरास प्रमुख सुगधी चूर्णनु आरोपण करे वत्थारुहणके० वस्त्रनु आरोपण करे आजरणारुहणके० मुकुटप्रमुख आजरणनु आरोपवु करे, करीने आसत्तोके० नूमिए लाग्यो उसत्तके० उपर लाग्यो विउलके० विस्तीर्ण, वट्टके० गोल, वग्घारियके० लवायमान एवो मल्लदामकलावके० माल्यदाम जे माला तेनो समूह करे करयल पडिग्गहियके० हस्ततलनेविष ग्रह्या करयल पन्नठ विप्पमुक्केणके० हस्ततलथी नृष्ट थया मूक्या, एहवा दसद्धवणेण कुसुमेण के० पचवरणी फूले, मुक्कपुप्फ पुजोवयारकलियके० मूक्याछे पुष्पना पुंज, तेहने उपचारे सहित करे करीने जिणपडिमाणपुरउके० जिनप्रतिमानी आगल अछेहि के० निर्मल सएहहि के० सुकोमल, रययामएहि के० रूपमयी अठराहि के० ढुकडी वस्तुना प्रतिबिंबा पडे, एहवा निर्मल, तंडुलेहि के० एवे चोखे करीने, अठ्ठमगले आलिहइ के० अष्टमगल आलेखे तंजहाके० ते कहेछे सत्थियके० स्वस्तिक, जादप्पण के० यावत् दर्पण कहेवु यावत् शब्दे श्रीवत्स प्रमुख जेवा, तयाण तस्कणके० तेवारपछी चदप्पजरयणके० चद्रप्रज रत्न, वयरके० वज्र, वेरुलियके० वैडूर्यरत्नमयी, विमलदम के० निर्मल छे दम जेनो, वली कचणमणीरयणजत्तिचित्त के० कनक मणीरत्ननी जाति विचित्रछे कालागुरु के० कृष्णागुरु, पवर के० प्रधान, कुदरुक ते प्रसिद्ध, तुरुक्कनामा गधद्रव्य विशेष डज्झत धूव के० दह्यमान जे दशांगादि धूप, तेहनो मघमघत के० महमहाट गंध धूआनिराम के० प्रगट थयो गधल तेणे अजिराम गधवट्टि विणिमुयतके० गध,द्रव्यगुटिका सरखो सुगध मूकते, वेरुलियमय कडुछयके० वैडूर्यरत्नमय कडछा, पगाहिकण के० लेइने, धूव दाऊण जिणवराण के० जिनवरने धूप देइने, अठ्ठसय

अचरम नथी एम छ बोल रुडा कहेवा बीजा निषेध करवा इति गाथार्थ ॥१४॥

हवे सूर्याभनी भक्ति देखाडे छे

प्रभु आगल नाटक कर्युं ॥ भगति सूरियाभने सार ॥लालरे॥ भ
गतितणा फल शुभ कह्यां ॥ श्री उत्तराध्ययनमोझार ॥लालरे॥ तु० १५॥

अर्थ –प्रभु आगल नाटक कर्युं ए स्पष्ट छे तेमाटे भक्ति सूरियाभने सारके० सूरि
याभ देवताने सार एटले प्रधान भक्ति छे तथाचतत्सूत्र ॥ अहण्णं भंते देवाणु
प्पियाणं भत्तिपुव्वयं गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं बत्तीसइबद्धं नट्टविहिं उवदंसे
मि ॥ अर्थ० ॥ अहण्णंभंते देवाणुप्पियाणं भत्तिपुव्वयंके० सूर्याभ, प्रभुजीने कहे छे
हुं देवाणुप्रियनी भक्तिपूर्वक, गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणंके० गौतमादिक श्रमण
निग्रंथने, बत्तीसइ बद्धनट्टविहिं उवदंसेमिके० बत्रीशविधि नाटक देखाडुं? इति रा
यपसेणीमध्ये ए सूत्रमां भक्तिपूर्वक एवो पाठ छे माटे जाणीए छैए जे सूरियाभ
ने भक्ति, प्रधान छे अने भक्तिनां फल तो शुभके० उत्तम कह्यां छे श्री उत्तरा
ध्ययन मोझारके० श्री उत्तराध्ययनमध्ये अध्ययन ओगणत्रीशमे छे तथाचतत्पाठ ॥
गुरु साहम्मिय सुस्सूसणयाएणं भंते जीवे किं जणइ गुरु साहम्मिय सुस्सुसणयाए वि
णयपडिवत्ति जणइ विणयपडिवन्नेण जीवे अणच्चासायण सीले नेरइय तिरिक्खजोणि
य मणुस्स देवदुग्गईओ निरुंभइ वण्णसंजलणभत्ति बहुमाणयाए माणुस्सदेव सुगईओ नि
बंधइ सिद्धि सुगइंच विसोहेइ पसत्थाइंच णंविणय मूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ अन्नेय
बहवे जीवे विणइत्ता भवइ ॥ अस्यार्थ गुरु साहम्मियके० साधर्मिकनी, गुरुनी
सुस्सूसणयाएणंके० सेवा करतो भंतेके० हे भगवन्, किंजणइके० शुं उपार्जे?
गुरु उत्तर कहे छे गुरु साहम्मिय सुस्सूसणयाएके० गुरु अने साधर्मिकनी सेवा
करता, विणयपडिवत्तिके० उचित कार्य अंगीकार करे विणयपडिवन्नेण जीवके०
विनयप्रतिपन्न जीव, अणच्चासायणसीलेके० गुर्वादिकना अवर्णवाद न बोले, त
वार नारकी तिर्यंचनी योनि तथा मनुष्य देवतानी दुर्गतिने रुंधे, वण्णके० प्रशंसा संज
लणके० गुणनुं प्रगट करवुं भत्तिके० अंजली प्रमुख करवी बहुमान ते अंतर
प्रीति–एटला वाना करतो मनुष्यनी अने देवतानी सुगइओ निबंधइके० सदगतिओ बांधे
सिद्धिसुगइंच विसोहेइके० सिद्धिरूप सदगति ते रत्नत्रय तेहने विशुद्ध करे परम
मुक्ति मार्ग वळी अन्ने बहवे जीवेके० बीजा घणा प्राणीओने, विणइत्ता भवइके०
विनयवंत करे उक्तंच ॥ [illegible] इति गाथार्थ ॥ १५ ॥

ए सूरियाजनो अधिकार एकज ए स्तवनमां देखाडयो. एम केटला कहीए? सूत्रमांतो गामे गामे कह्यांछे, माटे अति देश करेछे.

अंग उपांगे घणे कही ॥ एम देव देवीनी भक्ति ॥ लालरे ॥ आरा
धकता तेणे थई ॥ इहां तामली इंद्रनी युक्ति ॥लालरे ॥तु०॥१६॥

अर्थः—अंगके० ज्ञातासूत्र प्रमुखनेविषे देवीउ अनेक भवनपतिमां उपनीउ छे. त्यां पण सूर्याभनीज रीति कहीछे. तथा भगवतीमां इंद्रादिकनां नाटक घणां वखाण्यांछे. तथा उपांगके० जीवाभिगमादिकमां विजयप्रमुख देवतानो तथा रीते बीजा पण त्रण दरवाजाना धणी एमज कह्याछे. घणे कहीके० एरीते घणे अंग उपांगे कहीछे. कहीक तो करी एवो पाठछे. त्यां भक्ति करी, एवो अर्थ करी ए. एम देव देवीनी भक्ति ए स्पष्टछे वली ठाणांगमध्ये चोथेठाणे नंदीश्वर द्वीपे घणा सुर असुरादिकोए पूजा भक्ति प्रमुख कर्यांछे. तथा ते देवता देवीउने आराधक कही बोलाव्यांछे. ते आराधकपणु तो तेणे थइके० ते वीतरागनी भक्तिएज थइछे. अहींयां आराधकतानी अपेक्षाए थइ एम कह्युंछे; अहीया कोइ कहेशेके ए जिन भक्तिए आराधकता नथी. एतो पाछले भवे करणी करीछे, ते अपेक्षाए आराधक कह्याछे." एम कहेनारने उत्तर देछे. इहा तामली इंद्रके० तामली नामा तापस ते बीजा ईशानदेवलोके इंद्र थया; तेहनी युक्ति जाणजो. इति गाथाक्षरार्थ.

भावार्थ तो ए छे के तामली नामा तापस,पोताने तपने कष्टे करी बीजा देवलोकने विषे इंद्र थया; तेमणे प्रभु आगल नाटक करी पूछ्वुं जे हुं आराधकछुं किंवा विराध कछुं? इत्यादिक छ बोलनी पृछा श्रीभगवतीसुत्रमां कहीछे. तेमा कह्यु जे "आराधक छो" एम कह्यु छे; माटे पूछीए छैए जे परभवनी अपेक्षाए आराधक होततो एतो परभवे तापस हता, तेथी केम परभव कहेवाशे? ते माटे आ भवनी प्रभुभक्तिज आराधकता कहीछे. इतिभावः इतिगाथार्थ ॥ १६ ॥

ए जिनेश्वरनो थापनानिक्षेपो पूजवा योग्यछे. एम कह्युं. हवे कोइ कहेछे, "ए अचेतनछे. एमां शो गुणछे?" तेनो उत्तर करे छे जे, जिनदाढा पण अजीवछे तेमां शो गुणछे? अने पूजवा योग्यतोछे. ते देखाडेछे.

भक्ति जीतधर्मे करी ॥ लीए दाढा अवर जिन अंग॥ लालरे ॥
थूंभ रचे सुर भ्रण ते ॥कहे जंबूपन्नत्ती चंग॥ लालरे ॥ तु०॥१७॥

अर्थ –नक्ति के० कोइक देवता नक्ति जाणी लेछे जीत के० अपरदेवता पो तानो जीतव्यवहार जाणी ले छे धर्म करी के० कोइक धर्म करी लेता हवा, एटले धर्म जाणी लेता हवा लीए के० एटले प्रकारे ले दाढ के० दाढा, अवर के० वली बीजा देवता, जिनअंगके० हाड दंत प्रमुख ले तेवार पछी सुर के० देव ता, त्रण थून, रचे के० करे, कहे जंबूपन्नत्तीके० जंबूद्वीप पन्नत्ती एम कहेछे था यात ग्रहणे मध्यग्रहणमिति न्यायात् जंबूपन्नत्ती शब्दे जंबूद्वीपपन्नत्ती लेइए, ए ले जंबूद्वीपपन्नत्तीमध्ये एम कहे छे चंग के० मनोहर इति तथाच तत्पाठ ॥ तएण सक्के देविंदे देवराया उवरिल्ल दाहिण सकहं गिण्हइ ईसाणे देविंदे देवराया उवरिल्ल वाम सकहं गिण्हइ चमरे असुरिंदे असुरराया हिछिल्ल दाहिण सकहं गि ण्हइ बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया हिछिल्ल वाम सकहं गिण्हइ अवसेसा नव णवई जाव वेमाणियादेवा जहारिहं अवसेसाइ अगमगाइ गिण्हइ केइ जिणन त्तिए केई जीयमेयंति कट्टु केई धम्मोत्ति कट्टु गिण्हंति तएण सक्के देविंदे देवराया नवणवइ जाव वेमाणियादेवा एववयासी खिप्पामेव नोदेवाणुप्पिया सव्वरयणाम ए महइमहालए तउ चेइय थूने करेह एग नगवतोतित्थगरस्स एग गणहराण एग अव सेसाण अणगाराणा तएण वहवे जाव करेत्ति तएण तेवहवेनवणवइजाववेमाणिया देवा तित्थगरस्स परिनिव्वाण महिम करति जेणेव णंदीसरेदीवे तेणेव उवागछति॥ व्या ख्या–तएण सक्केदेविंदे देवराया के० तेवारे शक्र देवेंद्र देवतानो राजा, उवरिल्ल दाहि ण के० जमणी उपरली, सकहं के० दाढा, गिण्हई के० ग्रहे, ईशाणे देविंदे देवरा याके० ईशान देवेंद्र देवतानो राजा, उवरिल्ल वाम सकहं गिण्हइ के० मावी ऊप रनी दाढा लीए चमरे असुरींदे असुराया के० चमर असुरकुमारनो इंद्र, असुर कुमारनो राजा, हिछिल्ल दाहिण सकहिं गिण्हइके० जमणी हेठली दाढा लीए व ली वइरोयणिंदे वइरोयणरायाके० वली नामा वैरोचन देवनो इंद्र वैरोचनराजा, हिछिल्ल वाम सकहं गिण्हइके० मावी हेठली दाढा लीए अवसेसा के० बीजा शेष, नवणवइ जाव वेमाणियादेवा के० जवनपति यावत् वैमानिकदेवता जहारिहं के० जेम जेने योग्य होय ते, अवसेसाइ के० शेष थाकतां, अगमगाइ गिण्हइ के० अंगोपांग लीए, केइ जिणजत्तीए के० कोइक देवता जिननी नक्ति जाणी लीए केइ जिय मेयंति कट्टुके० कोइ जीतआचारछे, एम करीने लीए, केइ धम्मोति कट्टु गिण्हइके० कोइक धर्म छे एम करीने लीए तएण सक्के देविंदे देवरायाके० तेवार पछी शक्र देवेंद्र देवराजा, नवणवइ जाव वेमाणियादेवा एव वयासी

के० नवनपति प्रमुखने एम कहे. खिप्पामेव नोदेवाणुप्पियाके० शीघ्र शीघ्र हे दे वानुप्रिय, सव्व रयणमएके० सर्व रत्नमयी, महइ महालएके० अति मोटा, तउ चेइ अथूने करेहके० त्रण चैत्यस्तून करो. एगं नगवउ तिडगरस्सके० एकतो नगवान तीर्थकरनी, एगं गणहराणंके० एक गणधरनी, एगं अवसेसाणं अणगाराणंके० एक शेप अणगारनी. तएणके० तेवारपठी वहवे जाव करेतिके० घणा नवनपति या वत् चार निकायना देवता थून त्रणकरे तएणंके० तेवारेते नवनपति प्रमुख देवता, तिडगरस्सके० तीर्थंकरनो परिनिव्वाण महिमं करंतिके० निर्वाण महोत्सव करे. जेणेव णंदीसरेदीवेके० ज्यां नंदीश्वर द्वीपठे. तेणेव उवागछंतिके० त्यां आवे. इत्या दिकपाठठे. इतिजंवूद्वीपप्रज्ञप्ति पाठः इतिगाथार्थः ॥ १७ ॥

वली एज वात विशेपे कहेठे.

शतक दशमे अंग पांचमे ॥ उद्देशो ठठे इंद ॥ लालरे ॥ दाढतणी
आशातना ॥ टाले ते विनय अमंद ॥ लालरे ॥ तुज० ॥१८॥

अर्थः—शतक दशमे अंग पांचमेके० पांचमुं अंग श्री नगवतीसूत्र—तेनुं दशमुं शतक—तेने उद्देशो ठठेके० ठठा उद्देशानेविपे, इंदके० चमरेंद्रप्रमुख इंद्र ते, दा ढतणी आशातना टालेके० दाढानी आशातनाउ टालेठे. ते विनय अमंदके० ए तीव्र आकरो विनय जाणवो. इति गाथाऽक्षरार्थः नावार्थ तो ए ठे जे, चमरेंद्र प्र मुख सुधर्मासनामध्ये विपयप्रमुख नथी सेवता, ते सुधर्मासनामध्ये परमेश्वरनी दाढाउठे; तेनी आशातना टालवामाटे नथी सेवता. इति नावः ॥ १८ ॥

इहां ए स्तवननेविपे तो दशमा शतकना ठठाउद्देशानी साख लखी; अने श्री नगवतीसूत्रमां जोतां तो दशमा शतकना पांचमा उद्देशामां ए पाठठे; तेमाटे जाणीए ठए जे कोइ धुरथीज लखनारनो दोप ठे; अन्यथा उपाध्यायजी एम आपे नही; एहवी प्रतीति ठे. अथवा रासनवृत्तिए अनानोगे उपाध्यायजीए एम आप्युंठे. यत ॥ नहि नाम मान नंग ठद्मस्थस्येह कस्यचिन्नास्ति "ज्ञानावर णीयोहिं ज्ञानावरणं प्रकृतिकर्म्म ॥ १ ॥ हवे ते पाठ लखीए ठए. चमरेणंते नते, असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणिए सनाए सुहम्माए चमरसी सिंहा सणंसिं तुम्हियणं सार्द्धि दिवाइंनोग नोगाइ नुंजमाणे विहरित्तए णोइणठे समठे सेकेणठेणंनंते एव वुञ्चइ नोपनूजाव विहरित्तए गो० चमरस्सणं असुरिंदस्स असु रकुमाररन्नो चमर चमरचंचाए रायहाणीए सनाए सुहम्माए माणवए चेइअसंने

वइरामएसु गोलवट्ट समुगाएसु बहुइओ जिणसकहाउ सन्निक्खित्ताउ चिठ्ठंति जा उण चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररणो अन्नेसिच बहूण असुरकुमाराणं देवा ण देवीणय अच्चणिज्जाउ वंदणिज्जाउ नमंसणिज्जाउ पुयणिज्जाउ सक्कारणिज्जाउ सम्माणणिज्जाउ कल्लाण मंगल देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जाउ नवंति सेतेणठेणं अज्जो एव वुच्चइ णोपनूजाव विहरित्तए पनूएणं नंते चमरे असुरिंदे असुरराया चमर चंचाए रायहाणीए सनाए सुहम्माए चमरंसि सिंहासणंसि चउसठिए सामाणिय साहस्सीहिं तायत्तीसाए जाव अन्नेहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिय सिद्धिं संप रिवुडे महया हयनट्ट जाव भुंजमाणे विहरित्तए हंता केवलपरियारिद्धीए नाचवण मेहुणवत्तियाए ॥ व्याख्या॰चमरेण नंतेके॰हेनगवन्,चमरो, असुरिंदेके॰असुरदेवना इंद्र, असुरकुमाररायाके॰ असुरकुमारनो राजा, चमरचंचाए रायहाणीएके॰ चमर चंचानामे राजधानीनेविषे, सनाए सुहम्माएके॰ सुधर्मानामा सनानेविषे, चमरंसि सिंहासणंसिके॰ चमरनामना सिंहासननेविषे रह्यो तुडिएणसाद्धिंके॰ त्रुटित जे इं द्राणीनो समुह ते साथे, दिव्वाइंके॰ देवसबंधी, नोगाइंके॰ नोग, भुंजमाणेके॰ नो गवतो थको, विहरित्तएके॰ विचरे प्रभुजी कहेछे णो इणठे समठेके॰ ए अर्थ स मर्थ नही एटले नोग न नोगवे, सेकेणठेणनंते एव वुच्चइके॰ हे नगवन्, शामाट एम कहोछो? णोपनूजाव विहरित्तएके॰ न समर्थ नोग नोगवतो विचरवाने एम पूछे थके नगवान कहेछे हे गोयम. चमरस्सणं असुरिंदस्स असुर कुमाररन्नोके॰ चमरो असुरेंद्र असुरकुमार राजानी, चमरचंचाए रायहाणीएके॰ चमरचंचा राजधानीमां, स नाए सुहम्माएके॰ सुधर्मासनानेविषे, माणवए चेइयखंनेके॰ माणवकनामा चैत्यस्थ ननेविषे वइरामएसुके॰ वज्रमयी, गोलवट्ट समुगएसुके॰ घणा गोल मावडाछे तद नेविषे, जिणसकहाउके॰ जिनेश्वरनी दाढाओ, सन्निक्खित्ताउ चिठंतिके॰ थापीय कीने जाउणके॰ जे दाढाओ, चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नोके॰ चमरा, अ सुरेंद्र, असुरकुमार राजाने तथा अन्नेसिच के॰ बीजापण देवताने, बहुण अ सुर कुमाराणके॰ घणा असुरकुमार, देवाणके॰ देवताने, देवीणयके॰ देवीने, अच्चणिज्जाउके॰ अर्चवा योग्यछे वंदणिज्जाउके॰ वांदवा योग्यछे णमसणिज्जाउ के॰ नमस्कार करवा योग्यछे पूयणिज्जाउके॰ पूजवा योग्यछे सक्कारणिज्जाउके॰ सत्कार करवायोग्यछे सम्माणणिज्जाउके॰ सन्मान करवा योग्यछे कल्लाण मंग लके॰ कल्याणकारी, मंगलकारी देवयं चेइयंके॰ देवताना चैत्यनी परे पज्जुवास णिज्जाउके॰ सेवा करवायोग्य, नवंतिके॰ छे सेतेणठेण अज्जो एव वुच्चइके॰ ह

आर्य, तेमाटे एम कहीए ढेये. णोपनूजाव विहरित्तएके० नथी समर्थ, यावत् देवीउं साथे नोग नोगववाने. फरी पूछ्युं जे, चमरो असुरकुमार चमरचंचा राजधानीनेविषे सुधर्मासनामां चमरसिंहासननेविषे बेगो. चउसठिए सामाणिय साहस्सीहिंके० चोसठ हजार सामानिक देवतासाथे, तायत्तीसाएके० तेत्रीश त्रायत्रिंशकसाथे, जावअन्नेहिं असुरकुमारेहिं इत्यादिक सुगमढे. इत्यादि नगवतीसूत्रे शतक दशमे उद्देशे पांचमे. इहां परिचारणऋद्धिके० नाटय पूजामांहे स्त्रीशब्द श्रवणादिक परिचारण करे; पण मैथुनसंज्ञाए सुधर्मासनामां शब्दादिक न सेवे. ए रीते जेम चमरेंद्रने कह्यो तेम सौधर्मेंद्रलगे एटले नवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिक तथा तेहना लोकपालना आलावाढे. ते सर्व अर्थी होतो जो ज्यो.

हवे अहींयां कोइ पूढे जे "नगवतीसूत्रमां तो एटलुं कह्युं जे "सुधर्मासनामां दाढाउढे, माटे विषय वात न करे पण ते करतां आशातना थाय; एम क्यां कह्युंढे?" एवी मूर्खनी आशंका धरीने लखीए ढै ए जे, सांजल, श्री उववाइ प्रमुख सूत्रमांहे अनाशातनाविनय कह्योढे; ते सर्व परमारथथी जोतां अरिहंतनोज विनय जाणवो.

हवे एवा अधिकार सांनलीने ते कुमति बोल्या जे "देवता तो अविरति, अपच्चखाणीढे, नोधम्मियाढे. ए देवतानी करणी कोण लेखामां गणेढे? ते माटे ए देवताए एटलां वानां कर्यांढे; पण अमे तो एनी करणी मानता नथी." एम देवताने नोधम्मिआ कही कहीने निंदेढे तेने शिखामण दिएढे.

> समकितदृष्टि सुरतणी ॥ आशातना करशे जेह ॥ लालरे ॥ डुर्लनबोधि ते थशे ॥ ठाणांगे नाख्युं एह ॥ लालरे ॥ तु० ॥ १ए ॥

अर्थ —सम्यक्दृष्टि सुरतणी के० सम्यग्दृष्टि देवतानी, आशातना करशे जेह के० जे प्राणी आशातना करशे, अवर्णवाद बोलशे, डुर्लनबोधि ते थशेके० ते प्राणी डुर्लनबोधि थाशे. एटले आगल बोधिबीजनी सामग्री दोहली मलशे. इतिनाव. ठाणांगे नाख्युं एहके० एवी वात ठाणांगसूत्र जे त्रीजुं अंग तेमां कहीढेः यडुक्तं ॥ पंचहि ठाणेहिं जीवा डुल्लहबोहियत्ताए कम्मं पकरेति तंजहा अरिहंताणं अवसं वयमाणे १ अरिहंत पन्नत्तस्स धम्मस्स अवसं वयमाणे २ आयरियउवज्झायाण अवसं वयमाणे ३ चाउवन्नस्स संघस्स अवसं वयमाणे ४ विवक्क तव बंनचेराणं देवाणं अवसं वयमाणे ५ व्याख्या—पंचहिठाणेहिंके० पंचस्थानके जीवाके० जीवने, डुल्लहबोहियत्ताएके० डुर्लनबोधिपणु एटले परनवे जिनधर्म

प्राप्ति दोहिली होय कम्म पकरेतिके० कर्म बाधे तंजहाके० ते पांच प्रकार ?
खाडेछे अरिहताण अवस्रु वयमाणेके० अरिहतना अवर्णवाद बोलतो १ अरि
त पणत्तस्स धम्मस्स अवण वयमाणके० अरिहतना परूप्या धर्मना अवर्णवाद
ने बोलतो २ आयरिय उवज्ञायाण अवस्रु वयमाणके० आचार्य उपाध्यायना
अवर्णवाद बोले ३ चाउवस्रुस्स सघस्स अवस्रु वयमाणेके० चतुर्विध सघना अ
वर्णवाद बोलतो ४ पाचमा बोलनो अर्थ आगल लख्योछे, पण एटलो फेर जे अ
वर्णवाद बोलतो डुर्लनबोधिपणुं करे तथा वर्णवाद ते जश बोलतो थको उल
सुलन बोधिपणु करे इतिगणांगे ॥ इतिगाथार्थ ॥ १ए ॥

ए जेम समकिती देवताना अवर्णवाद बोलतां डुर्लनबोधि थाय तेम एनो
जश बोलतां सुलनबोधि पण थाय ते देखाडेछे

तेहने जश बोले कह्यु ॥ वली सुलनबोधत थाय ॥ लालरे ॥ तेणे
पूजादिक तेहना ॥ करणी शिवहेतु कहाय ॥ लालरे ॥तु०॥२०॥

अर्थ –तेहनेके० ते समकितदृष्टि देवतानो जशबोलेके० वर्णवाद बोलतां कह्यु
के० श्री गणांगमध्येज कह्युछे गणांगमध्ये एटलो अर्थ गम्यथी लइए वली क०
ते डुर्लनबोधिनी अपेक्षाए, सुलनबोधत थायके० आगल बोधिबीजनी सामग्री
तरत मले यत ॥ पचहिगणेहि जीवा सुलहबोहित्ताए कम्म पकरेति तंजहा
अरिहताण वस्रुवयमाणे जाव विवक्क तववजचेराण देवाण वस्रु वयमाणे ॥ अहीं
यां कोइ पूछेजे "ए सूत्रना आलावामा समकिती क्या कह्या ? जे तमे कहाछो स
मकितीना अवर्णवाद बोले ते डुर्लनबोधि थाय' तेतो एमां न आव्यां एम कह
छे, तेने सूत्रमांथी आम्नाय देखाडी समकिती ठरावेछे अहींयां आचार्य उपाध्या
य इत्यादिक नावनिक्षेपे प्रसिद्धछे तेमाटे तेहने बीजा विशेषण पद न कह्यां, अ
ने देवपदनो अर्थतो मुख्यताए क्रीडादिक वाचक उदयिक नावपुष्टिपणे प्रसिद्ध
छे, ते माटे विशेषण कह्यु विवक्कके० पाकां तप ब्रह्मचर्य, तेथी उपन्या पुण्य कर्म
जेने एवा देवनो अवर्णवाद बोलतो एतावता सम्यग्दृष्टि आव्याज इतिनाव
तेणेके० ते कारण माटे ए सम्यग्दृष्टि छे ते माटे तेहनांके० ते देवतानां पूजादि
कके० पूजा आदिशब्दथी जन्म महोत्सव समवसरणादिक गमन समवसरणादि
कनु रचवु लेइए एहवी जे करणी ते शिवहेतु कहायके० मोक्षनां हेतु कहीए ए
टले देवतानी जे पूजादिक करणी ते मोक्षहेतु जाणवी इतिनाव गाथार्थ ॥२०॥

वली जेउ देवतानी करणी नथी मानता तेमने उपको देखे. ते जैनशैलीना अजाणछे एम देखाडेछे.

तप संयम तरुसम कह्यां ॥ फलसम ते सुर शिव
शर्म॥ लालरे ॥ सुरकरणी माने नहीं ॥ नवि जा
ण्यो तेणे ए मर्म ॥ लालरे ॥ तुज० ॥ २१ ॥

अर्थ.—तप संयम तरुसम कह्यांके० तपस्या तथा संयम—तेतो वृक्ष समान कह्यांछे. अने तेहनां फल समान ते सुरके० देवतानां सुख, शिवके० मोक्षना, शर्मके० सुख कह्यांछे. एटले एनाव जे, तप संयम ते कारण थयां अने देवताना तथा मोक्षनां सुख ए कार्य थयां. हवे विचारो जे, कारण अने कार्य मध्ये अधिक शुं कहीए? एतावता कार्य अधिक कहिए. केइच्च देवलोएसुं केइ सिज्झंति नीरया ॥ इतिवचनात्. ते माटे सुरकरणीके० देवतानी जे करणी ते माने नहीके० न माने, तेणेके० ते मूर्ख, ए कारण कार्य नावना संबंधनो जे, मर्मके० गुह्यार्थ, ते नवि जाण्योके० नथी उल ख्यो. एटले निपट मूर्खछे. इति नावः इतिगाथार्थ ॥ २१ ॥

हवे कोइकने शंका उपजे जे “देवतामां समजण काची हशे ते पूजा करे तो सुखे करो, पण अमे समजु थइने पूजा केम करीए? तेने उत्तर देछे.

दशवैकालिके नरथकी ॥ सुर अधिक विवेक जणाय॥ लालरे ॥ द्रव्य
स्तव तो तेणे करयां ॥ माने तस सुजश गवाय॥ लालरे॥ तु० ॥ २२॥

अर्थः—दशवैकालिके नरथकीके० दशवैकालिकने लेखे मनुष्यथकी पण सुरके० देवताने, अधिक विवेक जणायके० अधिको विवेक जणाय छे. तथाच तत्सूत्रं ॥ धम्मो मंगल मुक्कठं अहिंसा संजमोतवो. देवावित्तं नमंसंति जस्स धम्मे सयामणो॥ ए गाथानेविषे एम कह्युजे धर्मनेविषे जेनुं सदा मन वर्तेछे; तेने देवता पण नमस्कार करे. अपिशब्दे एम सूचवेछे जे, मनुष्य करे तेमां कहेवुंज शुं? ए लेखे मनुष्यथकी अधिक विवेक हयोज; अने द्रव्यस्तवतो तेणे कस्यांके० द्रव्यस्तव जे, प्रजुपूजा, अने परमेश्वरनी नक्ति ते देवताए कस्यांछे. मानेके० ते द्रव्यस्तव कस्यां ते माने; प्रतीति करे, श्रद्धा करे. तसके० ते प्राणीनो सुजशके० नलो जे जश ते गवाय. एटले ए नाव जे देवतानां कस्या द्रव्यस्तव मान्या; एटले आगम प्रमाणे श्रद्धा थइ. ते श्रद्धावतना गुणग्राम नव्यप्राणी करेज. इति

गुण चितिए के० प्रतीतमा आणीए. तेहज चैत्य पत्तीजो के० तेमने चैत्य प्रती
तमां आणो इति गाथार्थ ॥३॥ अने चैत्य कहेतां ज्ञान कहीए तो अन्य तीर्थंक
प्रभु जे अरिहंतनुं ज्ञान ते केम संजवे? तथा ज्ञान एक छे अने चेत्य अनेक छे॥
चेइयाइं॥ए गामे बहुवचन छे इत्यादिक शब्दार्थनी वातो मूर्ख शुं जाणे? व्याकरणा
दिक विना व्युत्पत्ति शुं जाणे? अने ज्यां शब्दशुद्धि न होय तो, ते विना बीजुं महा
व्रत न आराधे श्रीप्रश्नव्याकरणांगमा कह्युं छे के नाम रकाय निवाय उवसग्ग
तद्धिय समास सधिय हेउ जोगिय उणाइ किरिया विहाण धातु सर विजत्ति वन्न
जुत्तति कह्न दसविहंपिसच्च जह जणिय तहकम्मुणाहोइ डुवाल विहाइ विहाइ
जासावयण पियहोइ सोलसविह एव अरिहंत मणुन्नाय समिक्खिय संजएण कालंमि
वत्तव ॥ अस्यार्थ नाम ते देव, घट, वृक्षइत्यादिक विजक्तिरहित शब्द ते नाम कहीए
आख्यात ते क्रियापद, जेम जवति, करोति, तनोति, पचति, पठति इत्यादिक,
निपात ते अनेक अर्थनेविषे पडे यथा च, वा, खलु, अहो, एव, एव, नून, विना
इत्यादिक, उपसर्ग ते उपसमीपे धातुने करीए ते उपसर्ग प्र, परा, अप, स,
अव, निर्, डुर्, वि, आङ्, अधि, अजि इत्यादिक तद्धित तेने हित ते तद्धित
यथा नाजेरपत्य नाजेय तवइद तावक, ममइद मामक इत्यादिक समास ते, अ
व्ययीजाव प्रथम, तत्पुरुष बीजो, द्वंद्व त्रीजो, बहुव्रीहि चोथो, कर्मधारय पांच
मो, द्विगु छठो अने एकशेष सातमो, ए साते समास जाणवा उपनगरं ग्राम
ए अव्ययी जाव १ अर्हतांचैत्यानि अरिहंतचेइआणि ए तत्पुरुष २ ग्रामनगर
नगर खेडकबड इत्यादि द्वंद्व ३ बहुधन यस्य सबहुधन बहुधणो ए बहुव्रीहि४नील
चतडत्पल नीलोत्पल नीलुप्पल. एकर्मधारय. ५दशाना पुराणां समाहारो दशपुर,ए
द्विगु६माताचपिताच पितरौ ए एकशेष ७एम समास जाणवा सधिके० बे पद एकठा
मेलेते सधि कहीए यथा दधि इद दधीद,गुणाकार इत्यादि पदके० विजक्तिअंत थाय
ते पद कहीए तथा हेतु पचावयव अनुमाननो अग, तर्क, शास्त्र प्रसिद्ध यौगिक त
वेत पदने योगे निष्पन्न हरिषेण, श्रीषेण, पद्मनाज इत्यादि, उणादि अनेक प्रत्य
यछे यथा. अतसातत्यगमने इतिधातु अतति गछतिइति आत्मा,अहीयां औणा
दिक प्रत्ययछे एणीपरे औणादिक प्रत्ययथकी अनेक शब्द नीपजेछे क्रिया वि
हाणके० क्रियाविधि क्रियाए करी पद नीपजेछे यथा पठतीतिपाठक पचतीति
पाचक इत्यादिक धातु ते जूसत्तायां पापाने घ्रागधोपादाने ध्माशब्दाग्निसयायः
इत्यादि अनेक धातुछे. सर अकारादिक यथा इई उऊ ऋॠ लृॡ एऐ ओऔ ६

त्यादिक. विन्नक्तिके० स्यादित्यादि वर्ण ते अक्षर क ख ग घ ङ च छ ज ञ ञ इत्यादिक व्यंजन ते वर्ण कहेवाय. एटले करी युक्तके० सहित तथा तिकल्लंके० त्रिकालविषय अतीत अनागत वर्तमान काल विषउं वचन, यथाविधि बोलवुं. दसविहं पिसच्चं जहन्नणिय के० दश प्रकारनुं सत्य ते जेम पूर्वे जणवयसम्मय ठवणा इत्यादिक कह्यां ते तेम कम्मुणाहोइके० अक्षर लखनादिक क्रिया करे ते पण सत्य जाणवुं. एटले ए नाव. जेम वचन सत्य बोलवुं, तेम बीजुं हस्तादिक कर्म पण सत्ये करवु. कोइ एम जाणशे जे में जुतुं बोलवानो नियम कीधो ने पण लखवानो तथा मस्तक नयनादिक संज्ञानो नियम नथी कीधो एमन जाणवु. जेम वचनसत्य तेम कर्म पण सत्यज करवुं. इत्यर्थः डुवालसहा विहोइनासा के० नाषाना बार नेद जाणवा. ते कोण? तो के एक संस्कृत, बीजी प्राकृत, त्रीजी सौरशेनी, चोथी मागधी, पाचमी पैशाचिकी, उठी अपभ्रंशका. ए नाषा गद्य पद्य बेउ नेदे करतां नाषाना बार नेद थाय. तथा वयणं पियहोइ सोलसविहंके० वचन पण शोल प्रकारे जाणवुं ते शोल नेद कीया? ते ग्रंथांतरथी कहीए ठए. वयणतियं ३ लिंगतियं ३ कालतियं ३ तहपरोरक पच्चरकं ११ उवणीयाइं चउक्कं १५ अस्तंचेव १६ सोलसमं. अस्यार्थ एक वचन, द्विवचन अने बहु वचन, वृक्षः घटः पटः ए एक वचन वृक्षौ, घटौ पटौ ए द्विवचन अने वृक्षाः घटाः पटाः ए बहु वचन ए वचन त्रिक. पुरुष, स्त्री, नपुंसकलिंग, देवः नरः ए पुलिंग. कुमारि, नदी, नगरी, गंगा यमुना ए स्त्री लिंग. कमलं, मुखं, नयनं, ए नपुंसक; ए लिंगत्रिक ६. अतीत, अनागत, वर्तमान ए कालत्रिक ए. अकरोत् अनूत्, अपठत् ए अतीतकाल. करिष्यति, नविष्यति, पठिष्यति ए अनागत काल. करोति, नवति, पठति ए वर्तमान काल, एवं ए परोक्ष वचन ते ए कार्य तेणे कीधुं इत्यादिक १० प्रत्यक्ष वचन ते ए एम करेछे इत्यादिक ११ उपनीत अपनीत ते पहेलो गुण, पठी अवगुण. जेम, ए स्त्री सुशीलछे पण कालीछे. १२ अपनीत उपनीत ते पहेलो अवगुण अने पठीगुण. जेम, ए पुरुष कुशीलछे पण पंमितछे. १३ उपनीत उपनीत ते पहेलो गुण कहेवो अने पठी पण गुण कहेवो. यथा, ए स्त्री रूपवतीछे अने सुशीलछे १४ अपनीत अपनीत वचन ते पहेलु वखोडवु अने पठी पण वखोडवु. यथा, स्त्री कुरूपीछे अने कुशीलछे १५ अध्यात्म वचन ते हैयामा गोपवीने काइक कहेवुं होय अने हैयामा होय तेज कहेवाय. यथा, कोइक रूनो वेपारी वाणिउ रू मोंघु जाणी कोइक गामे रू लेवा गयो. हवे तृषालागी. मनमां

जाणेछे जे रूनीवात कोइने कहेवी नथी हवे ते वाणीयो पाणी पीवा कोइकने घरेगयो त्या तेणे ते घरवाली स्त्रीने कह्यु के रू पा हवे ते स्त्री विचिक्षण छे माटे जाण्यु जे एहने पाणी पीवुछे, अने एम कह्यु जे रू पा, माटे रू मोटुं दीसेछे पछी पोताना नरतारने कहीने रूपोते लेवराव्युं, त्या जगी ते स्त्रीए रूनावेपारी वाणियाने आगता स्वागता स्त्री नोजन करावी पछी विसर्जन कर्यो ए अध्यात्म वचन कहीए १६ एहवा सर्व पूर्वोक्त प्रकार समजीने वोले ते सत्य नाषा, अने फाइकने गामे काइक कहे तो श्री वीतराग नी आज्ञा नग करे एवके० एरीते अरिहत मणुन्नायके० अरिहते आज्ञा करीछे एम जाणी पूर्वे कह्यु तेहवु सत्य वोलवु समिक्कियके० सम्यक्प्रकारे वुद्धि आलोची विमा सी सजएण कालेवत्तवके० सयमवत्त चारित्रिए अवसरी वोलवु इति गाथार्थ ॥३॥

एमज आलावे आणदने ॥ जिनप्रतिमा नति दीसेरे ॥
सप्तम अगना अर्थथी॥ ते नमता मन हींसेरे ॥ शा० ॥४॥

अर्थ –एमज आलावे आणदने के० एज रीते जेम अवडने कह्यु तेम आण दने आलावे पण जिनप्रतिमानु नतिके० नमवु दीसेछे सप्तम अगना अर्थथी के० ए सातमा अगनो अर्थ छे एटले श्री उपासकदशागमध्ये आणद श्रावक जिनप्रतिमाने नम्याछे ते कारणथी ते के० जिनप्रतिमा नमता थका मनहींसे के० मन हर्षे इति गाथार्थ ४ ते आणदनो आलावो श्री उपासकदशागसूत्र मध्येछे, ते लखीए छैए ॥ नोखलु मे नते कप्पइ अज्ञप्पनिइचण अन्न उत्थियावा अन्नउच्छियदेवयाणिवा अन्नउछिए परिग्गहियाइ वा चेइयाइ वदित्त एवा नमसित्त एवा पुंवि यणालित्तेण आलवित्त एवा सलवित्तएवा तेसि असणवा पाणवा खाइमवा साइमवा दाउवा यणुपदाउवा नन्नछरायानिउंगेण गणानिउंगेण वलानिउंगेण दवा निउंगेण गुरुनिग्गहेण वित्तिकतारेण कप्पइमे समणे निग्गथे फासुए सणिज्जेण असे ण पाण खाइम साइमेण वछ पडिगाह कवाल पाइपुछणेण पाडिहारिय पीढ फल गसेज्जा सथारएण उसह नेसज्जेण पडिलाजे माणस्स विहरित्तएइ तिकट्टु एवं एयारू व अनिग्गह अनिगिण्हइ ॥ अस्यार्थ नोके० नही, खलुके० निश्चे, मेके० मुजने नतेके० हे नगवन्, कप्पइके० कल्पे एटले हे नगवन् मुजने नहीज कल्पे इतिना व यु न कल्पे ? ते कहेछे अज्ञप्पनिइचण के० आजथी मांडीने, अन्नउत्थियावा के० अन्य तीर्थिमध्ये वाशब्द पक्षांतर सूचकछे अन्नउछियदेवयाणिवाके० अन्य ती र्थानादेव हरिहरादिक, अन्नउत्थिय परिग्गहियाइ वा चेइयाइके० अन्य तीर्थिए ग्र

ह्यां जे चैत्य जिनप्रतिमा एटलाप्रत्ये वंदित्तएवाके० वंदना करवी, नमंसित्तएवा के० नमस्कार करवो, पुव्विं अणालित्तेणंके० आगलथी वगर बोलावे, आलवित्ति एवाके०बोलाववुं. संलवित्तएवाके०वारंवार बोलाववुं. ए सर्व न कल्पे. एम संबंध करवो. वली तेसिंके० तेह्ने, असणंवाके० अशन उदनादिक, पाणंवाके० पाणी इक्षुपानादिक, खाइमंवाके० खादिम सुखडी प्रमुख, साइमंवाके० तंबोल प्रमुख, दाउंवाके० देवुं, अणुपदाउंवाके० वारंवार देवुं न कल्पे, एम अहींयां पणजोडिए. पण ए ठ कारण टालीने नकल्पे ते कहेठे. नन्नठके० एटला कारण विना, रायानिउगेणंके० नगरादिकनो स्वामि ते राजा कहीए, तेह्नो अभिउग ते शासन, एटले राजानी आणाए करतां दोष नही. कार्तिकशेठनी परे १ गणाभिउगेणंके० लोकनो समुदाय ते गण कहीए. तेह्नी आणाए. २तथा बलाभिउगेणंके० बलवंत चोर परम ऐश्वर्यवंत ते पोताना आग्रहे करावे. ३ देवाभिउगेणंके० जैनप्रतिकुल कुइ देवता तेह्नी आणाए. ४ गुरुनिग्गहेणंके० गुरु ते माता, पिता, भर्ता, कलाचार्यादिक ते शाक्यादिकना भक्तिवंत मिथ्यात्वी होय तेह्ना आग्रहथी वंदनादि करवुं पडे; ते गुरुनिग्गहेणं कहिए. ५ वित्तिकंतारेणंके० वृत्ति जे आजीविका-तेह्ज कांतार जे भीष्म अटवी; तेह्ने एटले अन्यत्र आजीविकाने अनावे मिथ्यात्वीनी आजीविका होय; तेणे करी करवुं पडे ६ ए ठ वर्जीए पूर्वे कह्या तेमने वंदनादिक करतां दोष न लागे. इतिभाव. ए न कल्पे ते कह्युं. हवे कल्पे ते कहेठे. कप्पइमेके० मुजने कल्पे. समणेनिग्गंथेके० जैन श्रमणनिर्ग्रंथप्रत्ये अशन, १ पान, २ खादिम, ३ स्वादिम, ४वठके०वस्त्र पडिह्के०पमग्रो,पात्र कंबलके० उणामय वस्त्र, पायपुछणेणंके० रजोहरण, पाडिहारियके० वावरीने पाठां आपवां. एह्वां पीटके० बाजोठ, फलकके० पाटला, सेज्जाके० वसती, संथारएणंके० तृणादिक संथारो. उसह भेसज्जेणंके० औषधने भेसज्ज करी पडिलाभ माणस्सके०पडिलाभतां थकां विहरित्तके०विचरवुं. इति कट्टुके०एम करीने,एवं एयारूवंके० एह्वो ए तद्रूप अभिग्गहं अभिगिण्हइके० अभिग्रह ते ले. इत्यादिक पाठले.

हवे ढुंढक, ए आलावामां वांकु बोलेठे, तेमने उत्तर बालवा माटे आगली गाथा कहेठे. ते ढुंढक एम कहेठे जे परतीर्थी तेह्ना देवनी प्रतिमाने वंदवानो निषेध कर्यो; पण जिनप्रतिमाने वांदी तो नथी. एम कहेठे. तेह्ने उत्तर दिए ठे.

परतीर्थी सुर तेह्नी ॥ प्रतिमानी नति वारीरे ॥ तेणे मुनि
जिनप्रतिमातणी ॥ वंदन नति निरधारीरे ॥ शा० ॥ ५ ॥

सपाविउकामे॥ एहवा पाठछे माटे सिद्ध स्थानक पाम्या छो एम जिन प्रतिमाने सिद्ध गएया माटे नावतीर्थकरथी पण ए अपेक्षाए अधिकीछे, माटे लौकिक पूजा द्रौपदीए नथी करी एतो विशेषे प्रत्यक्ष पाठ जणाय छे आंख उघाडी जुए तेह खे वली कोइ कुमति एम कहेछे जे जिनघर ते अवधिजिननु घर एटले शा यक्षनु देहेरु हतु शामाटे जे अवधिजिन ठाणांग मध्ये कह्याछे एम कहेछे ते खोटु जे माटे अवधिजिन आगल कोइए शक्रस्तव नथी कह्यु इति

धर्म विनय अरिहतनो ॥ एम ए लोग वयारोरे ॥ सन
वे सर्वने जाणिए ॥ समकित शुद्ध आचारोरे ॥शा०॥२१॥

अर्थ –धर्म विनय अरिहतनो एम ए लोगवयारोके० एम ए पूजा, अरिहत नो लोकोपचार विनय धर्मछे, एम अन्वय करवो सनवे सर्वने जाणिए के० जे हने जे सनवे तेहने ते जाणीए एटले जे साधु एणी पेरे करे, देश विरति एणी पेरे करे अने समकिती एणी पेरे करे, एम जेहने जेवो पाठ सनवे तेहने यद्यपि सूत्रकारे न कह्यो होय तोय कहेवो समजवु जे जिनपूजा ते समकितनोज शुद्ध आचारछे, पण मिथ्यात्वीनो आचार नथी इति गाथार्थ ॥ २१ ॥ ते उपर दृष्टात कहेछे

आणदनो विधि नवि कह्यो ॥ राय प्रदेशीने पाठेरे ॥ सन
व सर्व न मानशे ॥ वीटाशे तेह आठेरे ॥ शा० ॥ २२ ॥

अर्थ –आणदनो विधि नवि कह्यो के० सातमा अगमा आणदश्रावकना विधि कह्यो, तेरीते नथी कह्यो क्यहा नथी कह्यो ? ते कहेछे राय प्रदेशीने पाठके० रायपसेणीमा प्रदेशी राजाना पाठमा नथी कह्यो तेमाटे शु आणदे जेम व्रत समकित उचर्यां तेम प्रदेशीए शु नथी उचर्या ? तेमाटे जेने जे सनव होय ते मानगा तथा, सनव सर्व न मानशेके० सघलो ए सनव नही माने, वीटाशे तेह आठके० ते आठे कर्मे वीटाशे, एटले घणो ससार रझलशे तथा वली एहज सनव देखाडेछे

पडिकमणादिक क्रम नही ॥ पाठे सत्तम अगेरे ॥ पटम अणु
उगथी प्रकरणे ॥ सर्व कह्यो विधि रगेरे ॥ शा० ॥ २३ ॥

अर्थ –पडिकमणादिक क्रम के० पडिकमणादिकनो अनुक्रम, ते पाठ सत्तम अग नही के० उपासक दशागमा पाठ नथी एटले ए नाव जे साधुने पडिक्कमणानो अनुक्रमतो थोडाएक श्री उत्तराध्ययन सामाचारी अध्ययनमा कह्या छे, पण

श्रावकने तो सातमा अंगमां आणंदादिकने कांइए बताव्यो नही; तेवारे श्राविक, प डिकमणादिक कोण सूत्र उपर करे? तेमाटे ए नगुरांने उत्तर देवानुं ठेकाणुं नथी. इहां शिष्ये पूछ्युं के हे स्वामिन, तेवारे श्रावक स्याथी करे छे? तेहने करुणाए पाठो जवाब कहेछे. पढमअणुउंगथी के० प्रथमानुयोग जे दृष्टिवादना चोथा नेदनो प्रथम नेद, तेहमा थकी प्रकरणमां पूर्वाचार्य सर्व विधि कह्यो छे. रगेके० पर उ पकारने रगे कह्यो छे. यतः श्रीसमवायांगसूत्रे ॥ सेकिंत अणुउंगो अणुउंगे डुविहे पन्नते तंजहा, मूल ॥ पढमाणुउंगेय गंमियाणुउंगेय ॥ इत्यादि. अर्थः—बारमा दृ ष्टिवादना नेद पांचछे. एक परिकर्म, बीजो सूत्र, त्रीजो पूर्वानुगत, चोथो अनुयो ग, अने पांचमो चूलिका—तेमां चोथो अनुयोग ते डुविहे पन्नते के० ते बे प्रकारे छे. तेमां मूल प्रथमानुयोगमां घणी वातो सूत्रकारे लखी छे, पण ते कहेतां ग्रंथ वधेछे माटे नथी कहेता. इति गाथार्थ ॥ २३ ॥

हवे कोइक कहेशे जे प्रदेशी प्रमुखना अधिकारमां विशेषे वात कां न कही? तेने उत्तर करेछे जे ए सिद्धांतनी शैलीजछे; ते उपर गाथा कहेछे.

किहां एक एक देशज ग्रहे ॥ किहां एक ग्रहे ते अशेषोरे ॥ किहां
एक क्रम उतक्रम ग्रहे ॥ ए श्रुतशैली विशेषोरे ॥ शा० ॥ २४ ॥

अर्थः—किहां एक एक देशज ग्रहे के० कोइक स्थानके तो वस्तुनो देशज एक ग्रहे, जेम श्री नगवतीसूत्रमध्ये रथ मुसल संग्राम तथा महा शिलाकंटक संग्रा म कह्यो, तेम, किहां एक ग्रहे ते अशेषो के० कोइक स्थानके समस्त ग्रहे, जेम निरयावलीमध्ये एहज संग्राम विस्तारे कह्या छे. किहां एक क्रम के० कोइक स्थानकनेविषे अनुक्रमे कहे. जेम पन्नवणा प्रमुखनेविषे धर्मास्तिकायादिक अनुक्र मे कह्या छे. उतक्रम ग्रहे के० कोइक स्थानके पश्चानु पूर्वीए ग्रहे जेम कल्पसू त्रनेविषे वीरस्वामिथकी ऋषनदेवजी लगे अधिकार कह्यो ए श्रुतशैली विशेषो के० ए सिद्धांतनी शैली विशेषछे. यतः ॥ कब्रइदेसग्गहणं कछइ घिप्पंतिनिरवसेसा इ उक्कमइ वइक्कमाइ सहावबसउ निरुत्ताइं ॥१॥ इति कल्पनाष्ये सुगमा ॥ ए वातो नजरमा राखे तो सूत्रनो खरो अर्थ थाय. ते देश प्रमुख सूत्रे ग्रह्या होय ते संपूर्ण तो निर्युक्ति टीका प्रमुखमा पामीए.इति गाथार्थ. ॥ २४ ॥ हवे उपसंहार करेछे.

शासननी जे प्रनावना ॥ ते समकितनो आचारोरे ॥ श्री जि
नपूजाए जे करे ॥ ते लहे सुजश नंमारोरे ॥ शा० ॥ २५ ॥

सपाविर्ककामे॥ एहवा पाठछे माटे सिद्ध स्थानक पाम्या छो एम जिन प्रतिमा सिद्ध गएया माटे जावत्तीर्थंकरथी पण ए अपेक्षाए अधिकीछे, माटे लोकिक पू र्डीपदीए नथी करी एतो विशेपे प्रत्यक्ष पाठ जणाय छे आख उघाडी जुए त वे वली कोइ कुमति एम कहेछे जे जिनघर ते अवधिजिननु घर एटले का यस्तु देहेरु हतु शामाटे जे अवधिजिन गणाग मध्ये कह्याछे एम कहेछे खोटु जे माटे अवधिजिन आगल कोइए शक्रस्तव नथी कयु इति

धर्म विनय अरिहतनो ॥ एम ए लोग वयारोरे ॥ सत्त
वे सर्वने जाणिए ॥ समकित शुद्ध आचारोरे ॥शा०॥२१॥

अर्थ –धर्म विनय अरिहतनो एम ए लोगवयारोके० एम ए पूजा, अरिह ना लोकोपचार विनय धर्मछे, एम अन्वय करवो सत्तवे सर्वने जाणिए के० जे हने जे सत्तरे तेहने ते जाणीए एटले जे साधु एणी पेरे करे, देश विरति एणी पेरे करे अने समकिती एणी पेरे करे, एम जेहने जेवो पाठ सत्तरे तेहने यद्यपि सूत्रमा न कह्यो होय तोय कहेशो समजवु जे जिनपूजा ते समकितनोज शुद्ध आचारछे, पण मिथ्यात्वीनो आचार नथी इति गाथार्थ ॥ २१ ॥ ते उपर दृष्टात कहेछे

आणदनो विधि नवि कह्यो ॥ राय प्रदेशीने पाठेरे ॥ सत्त
व सर्व न मानशे ॥ वांटाशे तेह आठेरे ॥ शा० ॥ २२ ॥

अर्थ –आणदना विधि नवि कह्यो के० सातमा अगमां आणदश्रावकना वि धि कह्या, तेरीते नथी कह्यो क्यहा नथी कह्यो ? ते कहेछे राय प्रदेशीने पाठहे रायपसेणीमा प्रदेशी राजाना पाठमां नथी कह्यो तेमाटे शु आणदे जेम व्रत सम कित उचर्या तेम प्रदेशीए शु नथी उचर्या ? तेमाटे जेने जे सत्तरे होय ते मानशे त था सत्तरे सर्व न मानशेके० सत्तरा ए सत्तरे नही माने, वांटाशे तेह आठरे के आठे कर्म वांटाशे, एटले घणा ससार रक्लशे तथा वली एहज सत्तरे दृष्टातरे

पडिक्कमणादिक क्रम नही ॥ पाठ सत्तम अगेरे ॥ पटम अनु
उगथी प्रकरणे ॥ सर्वे कह्यो विधि रगेरे ॥ शा० ॥ २३ ॥

अर्थ –पडिक्कमणादिक क्रम के० पडिक्कमणादिकना अनुक्रम, ते पाठ सत्तम अ ग नही के० उपासक दशागमां पाठ नथी एटले ए जाव ज साधुने पडिक्कम णा नो अनुक्रमतो याडाएक श्री उत्तराध्ययन सामाचारी अध्ययनमा कह्या छे, ए

श्रावकने तो सातमा अंगमा आणंदादिकने कांइए बताव्यो नही; तेवारे श्राविक, प डिकमणादिक कोण सूत्र उपर करे? तेमाटे ए नगुराने उत्तर देवानु ठेकाणुं नथी. इहा शिष्य पूछयु के हे स्वामिन, तेवारे श्रावक स्याथी करे ने? तेहने करुणाए पाठो जवाब कहेछे. पढमअणुउगथी के० प्रथमानुयोग जे दृष्टिवादना चोथा नेदनो प्रथम नेद, तेहमां थकी प्रकरणमां पूर्वाचार्य सर्व विधि कह्यो छे रगेके० पर उ पकारने रगे कह्यो छे. यतः श्रीसमवायांगसूत्रे ॥ सेकिंत अणुउगो अणुउगे डुविहे पन्नते तंजहा, मूल ॥ पढमाणुउगेय गंमियाणुउगेय ॥ इत्यादि. अर्थः—बारमा दृ ष्टिवादना नेद पाचछे. एक परिकर्म, बीजो सूत्र, त्रीजो पूर्वानुगत, चोथो अनुयो ग, अने पांचमो चूलिका—तेमा चोथो अनुयोग ते डुविहे पन्नते के० ते बे प्रकारे छे. तेमां मूल प्रथमानुयोगमां घणी वातो सूत्रकारे लखी छे, पण ते कहेतां ग्रंथ वधेछे माटे नथी कहेता इति गाथार्थ ॥ २३ ॥

हवे कोइक कहेशे जे प्रदेशी प्रमुखना अधिकारमां विशेषे वात कां न कही? तेने उत्तर करेछे जे ए सिद्धांतनी शैलीजछे; ते उपर गाथा कहेछे.

किहां एक एक देशज ग्रहे ॥ किहां एक ग्रहे ते अशेषोरे ॥ किहां
एक क्रम उतक्रम ग्रहे ॥ ए श्रुतशैली विशेषोरे ॥ शा० ॥ २४ ॥

अर्थ.—किहां एक एक देशज ग्रहे के० कोइक स्थानके तो वस्तुनो देशज एक ग्रहे, जेम श्री नगवतीसूत्रमध्ये रथ मुसल संग्राम तथा महा शिलाकंटक संग्रा म कह्यो, तेम, किहां एक ग्रहे ते अशेषो के० कोइक स्थानके समस्त ग्रहे, जेम निरयावलीमध्ये एहज संग्राम विस्तारे कह्या छे. किहां एक क्रम के० कोइक स्थानकनेविषे अनुक्रमे कहे. जेम पन्नवणा प्रमुखनेविषे धर्मास्तिकायादिक अनुक्र मे कह्या छे. उतक्रम ग्रहे के० कोइक स्थानके पश्चानु पूर्वीए ग्रहे. जेम कल्पसू त्रनेविषे वीरस्वामिथकी रुषनदेवजी लगे अधिकार कह्यो ए श्रुतशैली विशेषो के० ए सिद्धांतनी शैली विशेषछे. यतः ॥ कछइदेसग्गहणं कछइ घिप्पंतिनिरवसेसा इ उक्कमइ वइक्कमाइ सह्यावसउ निरुत्ताइं ॥१॥ इति कल्पनाष्ये सुगमा ॥ ए वातो नजरमां राखे तो सूत्रनो खरो अर्थ थाय. ते देश प्रमुख सूत्र ग्रह्या होय ते संपूर्ण तो निर्युक्ति टीका प्रमुखमां पामीए.इति गाथार्थ. ॥ २४ ॥ हवे उपसंहार करेछे.

शासननी जे प्रनावना ॥ ते समकितनो आचारोरे ॥ श्री जि
नपूजाए जे करे ॥ ते लहे सुजश नंमारोरे ॥ शा० ॥ २५ ॥

सपाविचकामे॥ एहवा पाठछे माटे सिद्ध स्थानक पाम्या छो एम जिन प्रतिमान सिद्ध गएया माटे नावतीर्थकरथी पण ए अपेक्षाए अधिकीछे, माटे लोकिक पूजा द्रोपदीए नथी करी एतो विशेषे प्रत्यक्ष पाठ जणाय छे आख उघाडी जुए ते ह खे वली कोइ कुमति एम कहेछे जे जिनघर ते अवधिजिननु घर एटले का यक्षनु देहेरु हतु शामाटे जे अवधिजिन ठाणाग मध्ये कह्याछे एम कहेछे त खोटु जे माटे अवधिजिन आगल कोइए शक्रस्तव नथी कह्यु इति

धर्म विनय अरिहतनो ॥ एम ए लोग वयारोरे ॥ सन

वे सर्वने जाणिए ॥ समकित शुद्ध आचारोरे ॥शा०॥२१॥

अर्थ –धर्म विनय अरिहतनो एम ए लोगवयारोके० एम ए पूजा, अरिहत नो लोकोपचार विनय धर्मछे, एम अन्वय करवो सनवे सर्वने जाणिए के० जे हने जे सनवे तेहने ते जाणीए एटले जे साधु एणी पेरे करे, दश विरति एणी पेरे करे अने समकिती एणी पेरे करे, एम जेहने जेवो पाठ सनवे तेहने यद्यपि सूत्रमा न कह्यो होय तोय कहेवो समजवु जे जिनपूजा ते समकितनोज शुद्ध आचारछे, पण मिथ्यात्वीनो आचार नथी इति गाथार्थ ॥ २१ ॥ ते उपर दृष्टात कहेछे

आणदनो विधि नवि कह्यो ॥ राय प्रदेशीने पाठेरे ॥ सन

व सर्व न मानशे ॥ वीटाशे तेह आठेरे ॥ शा० ॥ २२ ॥

अर्थ –आणदनो विधि नवि कह्यो के० सातमा अगमा आणदश्रावकनो वि धि कह्यो, तेरीते नथी कह्यो क्यहा नथी कह्यो ? ते कहेछे राय प्रदेशीने पाठके० रायपसेणीमा प्रदेशी राजाना पाठमा नथी कह्यो तेमाटे शु आणदे जेम व्रत समकि त उचर्या तेम प्रदेशीए शु नथी उचर्या ? तेमाटे जेने जे सनव होय त मानवा त था, सनव सर्व न मानशेके० सघलो ए सनव नही माने, वीटाशे तेह आठके० त आठे कर्मे वीटाशे, एटले घणो ससार रझशे तथा वली एहज सनव देखाडे छे

पडिकमणादिक क्रम नही ॥ पाठे सतम अगेरे ॥ पढम अणु

व्रतथी प्रकरणे ॥ सर्व कह्यो विधि रगेरे ॥ शा० ॥ २३ ॥

अर्थ –पडिकमणादिक क्रम के० पडिकमणादिकनो अनुक्रम, ते पाठे सतम अ गे नही के० उपासक दशागमां पाठ नथी एटले ए नाव जे साधुने पडिकमणा नो अनुक्रमतो थोडोएक श्री उत्तराध्ययने सामाचारी अध्ययनमा कह्या छे, पठ

श्रावकने तो सातमा अंगमां आणंदादिकने कांइए बताव्यो नही; तेवारे श्राविक, पडिकमणादिक कोण सूत्र उपर करे? तेमाटे ए नगुरांने उत्तर देवानुं ठेकाणुं नथी. इहां शिष्ये पूछ्युं के हे स्वामिन्, तेवारे श्रावक क्यांथी करे छे? तेहने करुणाए पाठो जवाब कहेछे. पढमअणुउगथी के० प्रथमानुयोग जे दृष्टिवादना चोथा जेदनो प्रथम जेद, तेहमां थकी प्रकरणमां पूर्वाचार्ये सर्व विधि कह्यो छे. रंगेके० पर उपकारने रगे कह्यो छे. यतः श्रीसमवायागसूत्रे ॥ सेकिंत अणुउगो अणुउगे डुविहे पन्नत्ते तंजहा, मूल ॥ पढमाणुउगेय गंमियाणुउगेय ॥ इत्यादि. अर्थः—बारमा दृष्टिवादना जेद पांचछे. एक परिकर्म, बीजो सूत्र, त्रीजो पूर्वानुगत, चोथो अनुयोग, अने पांचमो चूलिका—तेमां चोथो अनुयोग ते डुविहे पन्नत्ते के० ते बे प्रकारे छे. तेमां मूल प्रथमानुयोगमां घणी वातो सूत्रकारे लखी छे, पण ते कहेतां ग्रंथ वधेछे माटे नथी कहेता. इति गाथार्थ ॥ २३ ॥

हवे कोइक कहेशे जे प्रदेशी प्रमुखना अधिकारमां विशेषे वात कां न कही? तेने उत्तर करेछे जे ए सिद्धांतनी शैलीजछे; ते उपर गाथा कहेछे.

किहां एक एक देशज ग्रहे ॥ किहां एक ग्रहे ते अशेषोरे ॥ किहां एक क्रम उतक्रम ग्रहे ॥ ए श्रुतशैली विशेषोरे ॥ शा० ॥ २४ ॥

अर्थः—किहां एक एक देशज ग्रहे के० कोइक स्थानके तो वस्तुनो देशज एक ग्रहे, जेम श्री जगवतीसूत्रमध्ये रथ मुसल संग्राम तथा महा शिलाकंटक संग्राम कह्यो, तेम, किहां एक ग्रहे ते अशेषो के० कोइक स्थानके समस्त ग्रहे, जेम निरयावलीमध्ये एहज संग्राम विस्तारे कह्या छे. किहां एक क्रम के० कोइक स्थानकनेविषे अनुक्रमे कहे जेम पन्नवणा प्रमुखनेविषे धर्मास्तिकायादिक अनुक्रमे कह्या छे. उतक्रम ग्रहे के० कोइक स्थानके पश्चानु पूर्वीए ग्रहे. जेम कल्पसूत्रनेविषे वीरस्वामिथकी रूषजदेवजी लगे अधिकार कह्यो. ए श्रुतशैली विशेषो के० ए सिद्धातनी शैली विशेषछे. यत. ॥ कच्छइदेसग्गहणं कच्छइ घिप्पंतिनिरवसेसा ऽ उक्कमऽ वक्कमाइ सहावबसउ निरुत्ताइं ॥ १ ॥ इति कल्पजाष्ये सुगमा ॥ ए वातो नजरमां राखे तो सूत्रनो खरो अर्थ थाय. ते देश प्रमुख सूत्र ग्रह्या होय ते संपूर्ण तो निर्युक्ति टीका प्रमुखमां पामीए.इति गाथार्थ. ॥ २४ ॥ हवे उपसंहार करेछे.

शासननी जे प्रजावना ॥ ते समकितनो आचारोरे ॥ श्री जिनपूजाए जे करे ॥ ते लहे सुजश जंमारोरे ॥ शा० ॥ २५ ॥

अर्थ —शासननी के० जिनशासननी, जे प्रनावना के० शासन उजलु देखाडवु, जे देखी लोक प्रशंसा करे, ते समकितनो आचारो के० ते समकितनो आचारने यत ॥ श्रीउत्तराध्ययन अगवीशमे अध्ययने छे ॥ निस्संकिय निक्कंखिय निव्वितिगिछा अमूढ दिठीय उववूह थिरीकरणे, वच्छल पनावणेअठ ॥ अर्थ —निस्संकियके० देशथी सर्वथी शंका न करवी १ निक्कंखियके० अन्यदर्शननी वांछा न करवी २ निव्वितिगिछा के० फलनो संदेह न राखवो अथवा मल मलीन गात्रदेखीने साधुनी डुगंछा न करवी ३ अमूढदिठीय के० कुदर्शनीना विद्या चमत्कार देखे तोपण जिनशासन रूडं जाणे पण मतिमूढ न थाय ४ ए चारे श्रद्धारूप अंतरआचार छे. हवे बाह्यक्रियारूप चार आचार कहेछे उववूहके० प्रशंसा करीने गुणवंतना ते ते गुणनु वधारवु ५ थिरीकरणके० धर्मानुष्ठानमां सीदाताने थिर करवा ६ वत्सल्यके० साधर्मिकोने जातप्रमुखे उचित प्रतिपत्तिनु करवु ७ पनावणाके० जेथकी जिनशासननी उन्नति थाय एवी चेष्टाए वर्तवु ८ तेमाटे प्रनावना ते समकितनो आठमो आचारछे ते श्रीजिनपूजाए जे करे के० श्रीजिनेश्वरनी पूजाए जे प्राणी शासननी उन्नति करे, ते ताहे सुजश नगारो के० ते प्राणी पूजा करीने शासननी प्रनावनानो करणहार नलो जशनो नगार पामे एटले पूजा तीर्थ यात्रा, सत्र प्रमुखे शासननी प्रनावना थायछे एम देखाड्यु, तथा जश एवु पोतानु नाम पण कविए सूचव्यु इति पंचविंशतमी गाथार्थ ॥ २५ ॥ एम त्रीजी ढाल संपूर्ण थया ग्रंथाग्रंथ५१३अक्षर१ दसर्व ग्रंथाग्रंथ मलीने १५२४अक्षर-१०

हवे चोथी ढाल कहेछे तेहने पूर्व ढालसाथे ए संबंध छे, जे त्रीजी ढालमां पूजानाअधिकार कह्या हवे ते कुमति, पूजामां हिंसा माने छे, तेहने जवाब देवा चोथी ढाल कहेछे ए संबंधे आव्या चाथी ढाल तेहनी ए प्रथम गाथा कहेछे

॥ढाल चोथी॥ काकंदिया मुनिवर धन धन तम अवतार ए देशी ॥

कोइ कहे जिन पूजतांजी ॥ जे षटकाय आरंज ॥ ते केम श्रावक आचरे जी ॥ समकितमां थिरथंज ॥ सुख दायक तोरी आणा मुज सुप्रमाण ॥ टेक ॥ १ ॥

अर्थ —कोइ कहे जिन पूजतांके० कोइक तो ढुंढीया एम कहेछे जे परमेश्वरनी पूजा करतां थकां जे षटकाय आरंभ के० छ कायनी जे हिंसा थाय छे, तेहने ते केम, केम श्रावक आचरेके० श्रावक केमकरे? समकितमां थिरथंभके० समकित

दृढ छे ते श्रावक छ कायनी हिंसानो हेतु जे जिनपूजा ते, धर्मवास्ते केम करे
प्रथम गाथार्थ. सुखदायकके० हे सुखदायक, सुखना देणहार, तोरीआणाके०
री आज्ञा ते, मुज सुप्रमाणके० म्हारे प्रमाण छे. अथवा प्रभुजीनी स्तवन
करेज छे माटे प्रभुजीने कहे छे जे सुखदाइ जे तमारी आज्ञा ते, मारे प्रमाण
एटले ए भाव जे तमारी आज्ञा ते प्रमाणछे, पण कुयुक्ति करवी ते प्रमाण न

हवे उत्तर वाले छे.

तेहने कहीए जतना भक्ति ॥ किरियामां नहीं दोष ॥ पडिकमणे
मुनिदान विहारे ॥ नहींतो होय तस पोष ॥ सु० ॥ २ ॥

अर्थः– तेहने कहीए के० जे पूजामां हिंसा बतावे छे तेहने कहीए, शुं क
हीए? ते कहेछे. जतना भक्ति के० एक जतना, बीजी भक्ति, किरियामाके०
जे क्रियामां होय एटले जे क्रियामां जतना तथा भक्ति होय; नहि दोष के० ते
क्रियामां दोष नथी. तथा कदाचित् तेहमां पण हिंसा कहीने दोष देखाडीए तो
पडिकमणे के० पडिकमणामां, मुनिदान के० मुनिने दान देतां, विहारे के० मुनि
ने विहार करतां, नहींतो के० जतना भक्तिए पण करतां दोष कहीए तो; होय
तस पोष के० ते प्रतिक्रमण प्रमुखमां पण हिंसानी पुष्टि थाशे. एटले ए भाव
जे, प्रतिक्रमण करतां उठ बेस करतां वायुकाय हणाय, मुनि दानमां पण उन्ही
बाफ नीकळे. तथा दान देवा उठतां पण जीवघात थाय, वळी मुनिने विहार क
रता पण पृथ्वी, पाणी वायु, वनस्पति वळी त्रस बेंद्रियादिकनो पण घात थाय;
ते माटे ए पण न करवां; एम कहेवुं पडशे. तेमाटे जतना भक्तिए क्रियामां दोष नथी.

हवे ते उपर दृष्टांत देखाडेछे.

साहमी वछल पक्खिय पोसह ॥ भगवइअंग प्रसिद्ध ॥ घर
निर्वाह चरण लिए तेहनां ॥ ज्ञातामांहे हरि कीध ॥ सु० ॥ ३ ॥

अर्थ –साहमी वछलके० साधर्मिकनां वात्सल्य कर्यां, तथा पक्खिय पोसह
पारकीनो पोसो कर्यो ए अर्थे सूचव्यो. एहवो शंख पुष्कलीनो अधिकार भ
अंग प्रसिद्धके० श्री भगवतीसूत्रमा प्रसिद्धछे. तथाच तत्पाठः ॥ तएणं ते सं
णोवासए एवंवयासी तुम्हेणं देवाणुप्पिया विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं
डावेह तएणं अम्हे विउलं असण पाण खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाए

माणा परिजाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरिस्सामि इति भगवतीसूत्रे शतक बारमे उद्देशे पहेले ॥ अर्थ तएणंके० सावत्थीनगरीने बाहेर वीरस्वामि समोसस्था, त्यां शंख श्रावक प्रमुख घणा श्रावक, देशना सांभळीने पाछा घरभणी आवे छे तेवारे, से संखेके० ते शंख श्रावक, समणोवासए के० बीजा श्रमणोपासकोने, एववयासीके० एम कहेछे तुम्हेण देवाणुप्पिया के० हे देवाणुप्रिय, तमे, विउलंके० विपुल असनादिक, उवक्खडावेहके० रंधावो तएणंअम्हेके० तेवारे आपण,विउलं असणं इत्यादिक सुगम छे तेहने आसाद न करतां थकां थोडुं खाधुं, घणुं तजवुं, ते आस्वाद कहीए, शेलडीनी पेरे, तथा विसाएमाणाके० विशेषे स्वाद करतां खजूर प्रमुखनी पेरे घणुं खातां थोडुं काढी नाखतां, परिजाएमाणाके० अन्योन्य देतां, परिभुंजेमाणाके० अन्नादिकनी पेरे सर्व वावरतां पाखीसबधी पोसह पडिजागरमाणाके० पाळतां थकां, विहरिस्सामि के० विचरशुं इति एम ठराव करीने पछे वधते परिणामे घेर जइ शंखेतो निराहार पोसह कर्यो ते सुदक्खुजागरिका एम भगवते वखाण्यो तेमाटे बीजा श्रावकना पक्खिय पोसह वखोडया न कहीए जेम धना अणगारनो तप वखाण्यो एटले बीजा अणगारनो तप वखोडयो न कहीए जिनशासनमां सर्व करणी शक्तिप्रमाणे लेखवे छे, ते माटे ए साहमिवछल करतां हिंसा तमारे लेखे थइ जोइए, पण जतना तथा भक्ति होय त्यां दोष न लागे एम मानीए तो सूत्रमां सहु लागे तथा थावच्चा घरनिर्वाह करण लिए तेहनाके० जे चारित्र लीए तेना घरना निर्वाह, हरिकीधोके० कृष्ण कर्यो छे ते ज्ञातामांहेके० ज्ञाता सूत्रमध्ये कह्युं छे ते हिंसा, कृष्णने कम नहीं लागे? अहीयां तो जतना पण नथी तथाच ज्ञातासूत्र ॥ तएण से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेण एव वुत्तेसमाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइत्ता सद्दावेत्ता एव वयासी गच्छह णं देवाणुप्पिया बारवइए नयरीए सिंघाडग तिग जाव पहेसु हत्थिखधवरगया महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसणं करेह एव खलु देवाणुप्पिया थावच्चापुत्ते ससारभउव्विग्गे भीए जम्मण मरणाणं इच्छइ अरहउण अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए तं जो खलु देवाणुप्पिया राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोडुंबिय माडबिय इब्भ सेट्ठि सेणावइ सत्थवाहे वा थावच्चापुत्तं पव्वयंतमणु पव्वयति तस्सणं कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ पच्छातुरस्सा वियसे मित्तनाइ जोगखेम वट्टमाण पडिवहइत्ति घोसणं घोसेइ जाव घोसेति तएणं थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं पुरिससहस्स णिक्खमणाभिमुहं ण्हाय सव्वालंकारविभूसियं पत्तेयं पत्तेयं पुरिससहस्सवाहिणी सु सिवियासु दुरूढं समा

णं मित्तणाइ परिवुंमं यावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भयं तएणं कण्हेवासुदेवे
सहस्समंतियं पाउब्भवमाणं पासइ कोमंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावेइत्ता ए
सी जहामेहस्सणिक्कमणाभिसेउ तहेव सेयापीएहिं एहावेइ जाव अरहाउ अ
नेमिस्स छत्ताइछत्तं पमागाइ पमागं पासेइ विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता सीय
पच्चारुहइ तएणं कन्हेवासुदेवे यावच्चापुत्तं पुरउ काउं जेणेव अरहा अरिठ्ने
स्सवं तंचेवइ ॥ इति ज्ञाता सूत्रे अध्ययन पांचमे ॥ अस्यार्थः तएणं से कन्हेवा
देवेके० तेवारे ते कृष्णवासुदेव, यावच्चापुत्तेणं एवं वुत्तेसमाणेके० यावच्चापुत्रे एम
कहे थके एटले कृष्णने यावच्चापुत्रे कह्यु; जे मरणथी रखवालो तो रहुं एम कहे
थके कोमंबिय पुरिसे सद्दावेइके० कौटंबिक पुरुषने बोलावे. बोलावीने एवंवयासी
के० एम कहे.गच्छहणं देवाणुप्पियाके० हे देवानुप्रिय, जाउ. बारवइएनयरीएके०
द्वारकांनगरीनेविषे, तिंवाडगति गजाव पहेसुके० सींगोडाने आकारे मार्ग, एम
त्रिक चोक मार्ग. यावत् राजपंथनेविषे, हत्थिखंधवरगयाके० हाथीना स्कंधने
विषे बेसीने, महया सद्देणंके० मोटे शब्दकरी, घोसमाणाके० घोसणो करता,
उग्घोसणं करेहके० उद्घोषणा करो एटले लोकने एम जणावो. एवं खलुदेवाणुप्पि
याके० हे देवानुप्रियो, एवीरीते यावच्चापुत्ते स्संसार भउव्विगोके० यावच्चापुत्र
संसारना भयथी उद्वेग पाम्याछे. भीए जम्म मरणाणंके० जन्म मरणथी बीही
न्याछे. इछइ अरहउणं अरिठ्नेमिस्स अंतिएके० अरिष्टनेमि अरिहंतने पासे, इ
छे छे. मुंडे भवित्ता पव्वइत्तएके० मुंड थइने प्रवर्ज्या लेवाने, तंजो खलु देवाणुप्पिया
के० हे देवानुप्रिय, जे कोइ रायावा जुवरायाके० राजा अथवा युवराज, देवीवा
के० राणीप्रमुख, कुमारोवाके० कुमार, ईसरोवाके० ईश्वर, तलवरेवाके० कोट
वाल, कोमंबियके० कुटुंबना स्वामि, सेठी सेणावइके० शेठ सेनापति, सत्थवाहेवा
के० सार्थवाह, यावच्चापुत्तं पव्वय तमणुपव्वयतिके० यावच्चापुत्र दीक्षा लेताने प
छे दीक्षा लीए, एटले यावच्चापुत्र साथे दीक्षा लीए, तस्सणं कन्हेवासुदेवे अणु
जाणइके० तेहने कृष्णवासुदेव आज्ञा आपेछे. पच्छाके० ते राजा, दीक्षा लीधं
पछवाहे, आउरस्सावियके० आतुर जे धनादिकने अभावे दुःखी हशे, तेके०
मित्तणाइके० मित्र ज्ञाति एटले पोतातंबंधी परिजनने, जोग खेमं वट्टमाण
जोग क्षेम वर्तमान वहेशे. एटले जेहनीपासे नही होय तेहने आपशे; ते
लीए; अने जेहनी पासे हशे तेहने पालशे तेहने क्षेम कहीए, ते योग
क्षेम वर्तमानकाले जेम घटशे तेम राजा कृत्य करशे. एटले ए भाव जे जे

कोइ थावच्चापुत्रसाथे दीक्षा ले तेहने पठवाडे तेना घरना निर्वाहनी चिंता क
रा करशे–ते अटकावे कोइ रहेशो नही इतिनाव घोसण घोसेहके० धारणाकरी
जावघोसेइके० ते कौटंबिक पुरुष तेमज उद्घोषणा करे तएण थावच्चापुत्तस्स
अणुराएणके० थावच्चापुत्रने रागे, पुरिससहस्सके० एक हजार पुरुषे, णिक्खमणा
निमुहेके० दीक्षा लेवा सन्मुख थया एहायके० स्नानप्रमुख करी, सव्वालंकार विभू
सियंके० सर्व अलंकारे शोजित थइ, पत्तेयं पत्तेयके० प्रत्येके जिन्न जिन्न, पुरिसह
स्स वाहिणीसु सिवियासुके० हजारु पुरुष उपाडे एवी शिबिकाने विषे, दुरूढ स
माणके० बेठा थका, मित्तणाइ परिवुमके० मित्र ज्ञाते परिवख्या, थावच्चापुत्तस्स अं
तियं पाउप्नयके० थावच्चापुत्रने समीपे प्रगट थाय एटले थावच्चा पुत्रने पासे
आवे तएण कन्हेवासुदेवे पुरिस सहस्समतिय पाउप्नवमाण पासइके० ते कृष्ण
वासुदेव, हजारे पुरुष आव्या देखे कोमबिय पुरिसे सद्दावेइके० कोटंबिकपुरुष
ने बोलावे बोलावीने एववयासीके० एम कहे जहामेहस्स णिक्खमणाभिसेउ
के० जेम मेघकुमारनो नि क्रमणाजिषेक ते दीक्षा लेवानो अनिषेक कर्यो, तहे
वके० तेमज, सेयापीएहिके० श्वेत पीला एटले कनक रूपाने कलशेकरी, एहावे
तिके० नवरावे, जाव अरहउ अरिठ्नेमिस्स ठत्ताइठत्त पडागाइ पडाग पासइके०
अहींयां यावत् अरिहा अरिष्टनेमिना ठत्राति ठत्र पताका देखे, विज्ञाहर चारणे
जाव पासित्ताक० विद्याधर चारण जृंनक देवता आकाश थकी उतरता देखीने
सीयाउपच्चारुहइके० शिबिका थकी उतरे तएण कण्हे वासुदेवे के० तेवारे कृष्ण
वासुदेव, थावच्चापुत्त पुरउकाककें० थावच्चा पुत्रने आगले करीने, जेणेव अरहाअ
रिठ्नेमिके० ज्या अरिहा अरिष्टनेमिठे, सवतचेवके० बाकी सर्व मेघ कुमारनी पेरे
कहेबु अहींयां कृष्ण महाराजे लोकनां घर निर्वाह कर्यां, तेमां हिंसा लागे क
नही? ते विचारजो इतितृतीय गाथार्थ ॥ ३ ॥

कुणिक राय उदायन कीधा ॥ वंदन मह सुविवेक ॥ एहाया
कय वलि कम्मा कहिया ॥ तुंगीय श्राद्ध अनेक ॥ सु० ॥ ४ ॥

अर्थ – वली कुणिकराय के० कुणिकराजाए, वंदनमह के० घणे आमंबरे
वांदवाना महोछव कर्या एटले प्रज्ञुजीने सामइयां कर्या, ते श्री उववाइसूत्रमां
विस्तार घणो ठे, ते लखता ग्रंथ घणो वधे माटे लखता नथी वली उदायन
के० उदाइ राजाए पण सामइया कर्यां ते श्री नगवतीसूत्रमां शतक तेरमे उद्दे

शे ठडे अधिकार ले. तथाच तत्पाठः ॥ तएणं उदायणे राया इमीसे कहाए ल द्धठे समणे हठ्ठतुठ कोमंबियपुरिसे सद्दावेति सद्दावेतित्ता एवंवयासी खिप्पामेव नो देवाणुप्पिया वीत नयं नगर मभितर बाहिरियं जहा कोणीउ उववाईए जावपक्कू वासेइ ॥ अस्यार्थः तएण उदायणेरायाके० तेवारे उदाइराजाए, इ मीसे कहाए लद्धठे समाणे के० वीरस्वामिने आव्यानी कथा पामे थके, हठ्ठतु ठके० हर्ष पामे. संतोष पामे. कोमंबिकपुरिसे सद्दावेइके० कौटंबिकपुरुषने बो लावे. बोलावीने, एवं वयासी के० एम कहे. खिप्पामेव नो देवाणुप्पियाके० नो देवानुप्रिय, शीघ्र–वीतनयं नयर मभितर बाहिरियके० ए वीतजयनगर, मध्ये त था बाहेर शणागारो. इत्यादिक. जहा कोणिउ उववाईए के० जेम कुणिक राजा, उववाइ सूत्रमा कह्या ले तेम कहेवुं. जाव पज्जुवासेइ के० यावत् प्रजुजीनी सेवा करे. एम कूणिकने, उदाइने, सामईयामां हिंसा लागे के नही? ते विचारजो. तथा एहाया कय बलिकम्माके० करयाले बलिकर्म पूजाकर्म जेणे एहवा तुगीय श्राद्ध अनेक के० तुगीया नगरीना अनेक श्रावक वखाण्या ले. ते जगवतीसूत्रना शतक बीजे उद्देशे पांचमे ले; ते श्रावक पूजा करे ते अरिहंत विना बीजा कोण देव नी करे? ते विचारजो जी. तथा बलिकर्म ते पूजाज ले. शामाटे जे ज्ञातासूत्र मध्ये॥ तएणं मल्ली विदेह वर रायकन्ना एहाया जाव पायछित्ता सव्वालंकार विजूसिया बहू दिखुज्जाहिं जाव परिखित्ता ॥ अहिंयां बे वार सरखो पाठ ले; ते माटे म ल्लिए कय बलिकम्मा के० बे वार देव पूजा करी अप्पणो पडिमं कारेइ के० पो तानी प्रतिमा जरावी. वली नित्य आहार कवल मूक्यो. तेहमां पण जीवनी उ त्पत्ति थाय. पण ते हिंसामा नही. वली यतिना पडिकमणसूत्रमांहे ॥ मंफि पा हुडियाए बलि पाहुडियाए ॥ ए पाठले. मंफिपाहुडियाए के० जीखारीने माटे ढा कणीमांहे धान घाल्युं ते लेवुं नही. बलिपाहुडियाए के० नैवेद्यनुं धान वहोरवुं नही. अजाणतां वहोरी खाधुं तो ॥ मिछामि डुक्कमं ॥ वली नाममाला मध्ये–पू जार्हणा सपर्यार्चा उपहार बलीसमौ ॥ एम महा निशीथ आवश्यक निर्युक्ति मध्ये पण बलि ते नैवेद्य ले. वास्तुक शास्त्रनेविषे पण तथा ज्योतिषशास्त्रे घर दे वतानी पूजा करीने नूतने बलि देइने पेसवुं कह्यु ले. यतः ॥ गृह प्रवेशं सुविनीत वेषः सौम्यायने वासर पूर्वजागे कुर्याद्विधायालय देवतार्चा कल्याणजू नूतबलिक्रि यांच ॥ १ ॥ एम अनेक गामे बलि शब्दे नैवेद्य पूजा ले. इति तूर्य गाथार्थ ॥ ४॥

हवे ए क्रिया ते समकितनी करणीले ते कहेले.

॥समकित संवरनी ते किरिया ॥ तेम जिनपूजा उदार ॥ हिंसा होय तो अरथ दंममां ॥ कहे नही तेह विचार ॥ सु० ॥ ५ ॥

अर्थ —समकित सवरनी ते किरियाके० ए समकित नामे सवर, तेहनी क्रिया छे जे माटे श्रीठाणागनेविषे ठाणे पाचमे कह्यु छे ॥ पचसवरदारा पन्नत्ता तंजहा सम्मत्त१ विरई २ अपमादो३ अकसायया ४ अयोगया ५ इत्यर्थ पचसवर द्वार कह्याछे समकित ते सवर कहीए एम विरति तथा अप्रमादीपणु तथा अकसायीपणु तथा अयोगीपणु तेहमा साहमीवछल तथा घर निर्वाह चारित्र लीए तेहनां, तथा सामैया कर्या ए सर्व समकित सवरनी करणीछे तेम जिनपूजा उदारके० उदारपणे जिनपूजा करवी, ते पण समकित सवरनी करणीछे एहमा हिंसा नथी. एहमा एम पण कहेवाणु जे समकिती देवताछे ते समकित सवरना धणी छे तेहने अधर्मी केम कहीए? तथा देवतानी करणी अधर्ममां कहीए तो देवता, तीर्थकरने, साधुने अने श्रावकने कोइक परीसह करे, कोइक सेवा करे, ते बेउन फल केवा होय? वली कोइक शिष्य देवता थयो होय ते गुरुने चारित्रथी पडिवाइ देखीने गुरुने ठेकाणे आणे तेहने अधर्मी केम कहीए? तथा गुरुए काल कर्या होय ते तमारे मते देवता थयो न जोइए शामाटे जे देवतामा बे जातीछे समकिती तथा मिथ्यात्वी तेमा जो समकिती थाय तो सूरियाभनीपरे जिनप्रतिमा पूजे, अने मिथ्यात्वी कहेता तमारी जीभ चाले नही मनुष्य पण थाय नही शामाटे जे तमे तमारा गुरुने चारित्रिया मानोछो, ते मरीने मनुष्य थाय नही. सिद्धिपण पचमकालमाहे हमणा वरे नही माटे अमने सदेहछे जे, तमारा गुरु मरीने केइ गतिए जाय? वली तमारा गुरुए काल कर्यो तेहने तमे केम वदना करोछो? ते समजावजो. ते माटे देवताने अधर्मी न कहेवाय वली उत्तराध्ययने हरिकेशी अणगारनु जक्षे वैयावच्च कर्यु, ब्राह्मणोने लोहि वमता कर्या, तेहने हिंसा पाप लाग्यो के नही? तथा सूत्रकारे तो वैयावच्च कही बोलाव्यु ॥ जक्खाहु वया पडिय करेति ॥ इति पाठात् ते वैयावच्चना करणहारने अधर्मी केम कहेवाय? तथा वली ज्ञातामाहे पोटिलाए तेतलीपुत्र समजाव्यो तथा वली सौधर्मेद्र भगवतना अवग्रह आज्ञाकरी, ते धर्म कहीएके अधर्म कहीए? वली लोकातिक देव, प्रभुनीने प्रतिबोधवा आवे ते अधर्ममां केम गणाय? इत्यादि शु शु लखीए? ए प्रसगे सयु

हवे वली पूजामांहे हिंसा कहेछे, तेहने पूछीए जे ज्ञातासूत्रमध्ये सुबुद्धिप्रधा

न, राजाने प्रतिवोधवा निमित्ते खाइनुं पाणी लाव्या; ते हिंसाथइ के नहीं
विचारजो. तथा जंबूद्वीप पन्नतीमांहे प्रजुजीनो जन्माभिषेक वर्णव्योठे; ते ते
इसरखा पाणीना प्रवाह चाल्या; तेहमां पृथ्वी, पाणी, तेउ, वाउ, वनस्पती
सकायमां केइ काय उगरी हशे? तो पण परमेश्वरनो जन्माभिषेक ते हिंसा
कहेवाय नक्तिप्रवजनठे माटे. तेम पूजामां पण हिंसा न गणवी. एटलाज म
प्रश्नव्याकरणमध्ये दयानां नाम कह्यांठे. तेहमां पूजाप्रमुखना नाम कह्या
ते पूजा ते दया कहीते; पण हिंसाना नाममां पूजा नथी. इत्यादिक घणी चच
ठे. केटली लखाय? आत्मार्थी होतो मध्यस्थ थइने जोज्यो. हिंसा होय तोके०
जिनपूजामां हिंसा होय तो, अर्थ दंममां कहे नही तेह विचारके० श्री सूयग
डांगसूत्रना वीजा श्रुतस्कंधना वीजा अध्ययनमां तेर क्रिया चालीठे तेमां प्रथम अ
र्थदंमके० अर्थें, प्रयोजने हिंसा करे ते अर्थदंम कहीए. जो पूजा करतां हिंसा
होय तो अर्थदंममा पूजा कहे नही. अने न कही तेवारे जाणीए ठैए जे पूजा
मां हिंसा नथी इति पंचम गाथार्थ ॥ ५ ॥

हवे कोइकना मनमा एम आवे जे अर्थदंममां पूजानो अधिकार नथी आव्यो
माटे नथी कह्यो. तेहने उत्तरदिए ठे.

नाग नूत जक्षादिक हेते ॥ पूजा हिंसा उत्त ॥ सूगडां
गमां नवि जिन हेते ॥ वोले जे होए जुत्त ॥ सु० ॥ ६ ॥

अर्थ.—नाग नूत जक्षादिक हेतेके० नागने हेते नूतने हेते, जक्षने हेते, पूजा हिंसा
उत्त के० पूजा ते हिसा कहीठे. सूगडांगमां के० सूगडांगमध्ये, नवि जिन हेते के०
जिनेश्वरने हेते पूजा ते नथी कही. एटले ए नावजे ते सूगडांगमध्ये अर्थदंममां
नागादिकनी पूजा ते हिंसामा गणीठे; पण जिननी पूजा नथी गणी, ते माटे पू
जानो अधिकार कह्यो. अने जिनपूजा शे न कही? ते कहेठे—वोले जे होए जुत्तके०
मा जे जुक्त होय तेहज वोले, अयुक्ति न वोले. तथा उलटा सिद्धांतमां चैत्य
उत्सव चाल्याठे ॥ चेइयमहेराइवा ॥ इत्यादिक आचारांग प्रथम श्रुतस्कंध प्र
अध्ययन प्रथम उद्देशेठे. एम जमाली प्रमुखने अधिकारे एवा गाम गाम पावठे.
पण उववाइसूत्रमध्ये चंपानगरी वर्णववाने अधिकारे, पाडे पाडे कह्यांठे,
गामे गामे नगरीउनो वर्णव उववाइसूत्रने नलाव्योठे. तेवारे सर्व नरगमध्ये
पाडे चैत्य ठरयांज. इत्यादिक घणो विचारठे. केटलो लखाय? ॥ ६ ॥

हवे कुमति कहेछे, पूजामां हिंसाछे माटे ज्यां हिंसा होय त्यां जिनेश्वरनी आ ज्ञा केम होय? ते उपर गाथा कहे छे

ज्यां हिंसा तिहां नहीं जिनआणा ॥ तो केम साधु विहार ॥ क र्म्मबंध नहीं जयणा जावे ॥ ए छे शुद्ध व्यवहार ॥ सु० ॥ ७ ॥

अर्थ कुमति बोलेछेके, ज्यां हिंसा के० ज्यां हिंसा होय, तिहां नहीं जिनआ णा के० त्यां प्रभुआणा न होय तेनो उत्तर करेछे तो केम साधुविहार क० तो मुनिने विहारनी आज्ञा परमेश्वरे केम करी? वली विहार करतां नदीमां ॥ ए ग पाय जले किच्चा ॥ एग पायं थले किच्चा ॥ एहवा पाठ आचारांगे तथा कल्प सूत्रे केम कह्या? वली नदी उतरता सूर्य अस्तंगत थाय तो पाणीमांने पाणीमां चारे पहोर साधु उभा रहे एम दशाश्रुतस्कंधमां केम आज्ञा करी? वली वरसाद वरसतां पण वहोरवा जवाना अधिकार कल्पसूत्रनी सामाचारीमां केम कह्या? वली वरसाद वरसतां एक साधु अने एक साध्वी, ए एकांते वृक्षादिक गामे जतां पामतां उभां न रहे, वरसतामां पण चाल्यां जाय ए आज्ञा केम कीधी? वली कुरुदत्त प्रमुख प्रभुने वांदवा गया तिहां-धम्मियं जाणपवरं ॥ एम कह्यु ते रथ ने धर्मयान केम कह्यु? ए रथ, मार्गमध्ये शी दया पालशे? तथा धर्मयान अने पापयान ए बे प्रकार जुदा पण दीसे छे माटे पापयान कां न कह्यु! वली श्रावक आणंदा दिकने उपासगदशागमध्ये व्रत उचराव्या, तेवारेप्रथम व्रतमां "बारणे ढोर बांध्यां ता तं नातपाणीनो विछेद करे तो अतीचार लागे ए अतीचार जाणवा पण आचरवा नहीं" एम आज्ञा केम कीधी? तथा वली आचारांगमां कह्यु जे गृहस्थ लूण गृह । पाछु न लेता पाते गाचर सानागिकन वहुची आपे ते लुण वापरतां हिंसा था रुटनी थाय? पण एटली विराधना करता आराधक कह्या ज्यां हिंसा त्यां [illegible] नहीं एम कही तेवारे सवलां ए सूत्र देखाड्यां तेह्थी बीजां पण घणां केटलाक न्याय छे ते सघनाए व्यर्थ थाय, ते माटे ते तं ठकाणे हिंसाय अने आज्ञा पण करीछे ए विचारजो.

हवे शिष्य पूछे छे " हिंसा पण छे अने आज्ञा पण छे, तवारे ए कम म [illegible] " हवे उत्तर करता श्रीगुरु सानन, नाइ कर्मबंध नहीं जयणा ज के० जतनानाते कर्म बंध नथी एटले ए नाव छे, जतनाए छे तिनआज्ञा करवी करी तेहना यद्यपि हिंसा होय तो पण कर्मबंध न थाय इति भाव

ए छे शुन व्यवहार के० एहज नलो व्यवहार छे. इति सप्तमी गाथार्थ. ॥ ७ ॥

हवे कोइ कहेशे जे, "पूजामां हिंसा तो थायछे, तेहनो बंधपण प्रथम थाय छे." एम कहेछे तेहने कोइक वचमां उत्तर वालेछे.

प्रथम बंध ने पछी निर्जरा ॥ कूपतणोरे दिष्टंत ॥ कही
कोइ जोडे बुध नापे ॥ नाव ते शुचि जल तंत ॥ सु० ॥ ८ ॥

अर्थः—प्रथम बंध ने पछी निर्जराके० प्रथम फूल, जल, न्हावुं, धूप, दीपे जीव हींसाए बंध थाय; पछी नावना स्तवनाए अल्हादताए निर्जरा थायछे. कूपतणोरे दिष्टंतके०कूआने दृष्टांते जेम कूवो खोदे तेवारे ते माटी प्रमुखे मेलो थाय. मजूरीकरतां तरसपण लागे, थाक पण चढे. पछी पाणी आवे तेवारे मेल जाय, तरस नागे, थाक पण उतरे, बीजा लोक पण पाणी पीए तेमाटे ए दृष्टांते प्रथम बंध थाय; पछी निर्जरा थाय. यतः आवश्यकनिर्युक्तौ ॥ अकसिण पवत्तगाणं, विरया विरियाण एस खलुजुत्तो ॥ संसार पयणु करणे दवछए कूवदिष्टंतो ॥ १ ॥ व्याख्या. अकसिण पवत्तगाणके० समस्तपणे न प्रवृत्या एहवा, विरया विरियाणके० विरता विरतिश्रावक, देशविरति, जे कारण माटे श्रावक देशथी प्रवृत्याछे. सर्वथी तो मुनि प्रवृत्याछे. ते श्रावकने एसके० ए, दवछएके०द्रव्यस्तव, खलुके० ते निश्चय, जुत्तोके० युक्त घटमानछे. एटले श्रावकने द्रव्यस्तव घटमानछे. संसार पयणु करणेके० संसार पातलो करवाने, कूवदिष्टंतोके० कूआनुं दृष्टांत जाणवुं. इति उक्तगाथार्थः १ ते कूआनुं दृष्टांत कह्युं तेरीते, कहीने कोइ जोडेके० कोइक ए रीते कहीने जोडेछे. पण तेहने निषेधेछे. बुधनापेके० पंमित लोको तो एम कहेछे. नाव ते शुचिजल के० नाव जे अध्यवसाय शुनछे. ते शुन अध्यवसायरूप पाणीए अशुनबंधरूप मेले मेलो थतोज नथी. इतिनाव. अहींया शिष्य पूछे छे जे कूआनुं दृष्टांत केम मलशे ? तेहने उत्तर दीएछे जे दृष्टांत होय ते देशिक होय, माटे अहींयां बंधरूप मेल, शुन अध्यवसायरूप पाणी. एटली सरखासी लीजीए. हवे एहज वात दृढ करेछे.

उपादानवशे बंधन कहियुं ॥ तस हिंसा शिर उपचार ॥ पुण्या
दिक आरंनतणो एम ॥ होय नावे परिहार ॥ सु० ॥ ए ॥

अर्थः—उपादान के० आतमानो अध्यवसाय, तेहने वशे बंधन कहियुं के० बंध कह्यो. एटले जेवो आतमानो अध्यवसाय थाय तेहवो बंध पडे. यतः ॥ जं जं समयं

जीवो आविस्सइ जेण जेण जावेण ॥ सो तंमि तंमि समए सुहासुह बधए कम्म ॥ १ ॥ इति उपदेश मालाया ॥ व्याख्या – जे जे समये जीव, जे जे भावे आश्रमा आवे, ते प्राणी ते ते समये शुभाशुभ कर्म बांधे इति तस के० तेहने अध्यवसाय विना जे हिंसा छे ते उपचारेज छे एटले पूजामा फूल पाणी प्रमुखनी हिंसा कहेवाय छे, ते उपचारे कहेवायछे जे माटे हिंसाना अध्यवसाय नथी माटे एहने माथे हिंसा ते उपचारे छे पुष्पादि आरंभतणो के० फूल प्रमुखना आरंभनो, एम के० ए उपचार प्रकारे, होय भावे परिहार के० अध्यवसाय ए परिहार थाय एटले अध्यवसाय विशेषे पुष्पादिकनो आरंभ टले, आरंभ न लागे इति भाव इतिगाथार्थ ॥ ए ॥ वली दृष्टांते करी दृढ करेछे

जल तरता जल ऊपर मुनिने ॥ जेम करुणारे रग, ॥
पुष्पादिक श्रावकने तेम ॥ पूजामाहे चग ॥ सु० ॥ १० ॥

अर्थ –जल तरतां के० पाणी तरता, जल ऊपर मुनिने जेम करुणानो रंग के० जेम मुनिने पाणी उपर दयानोज रंग छे, पण अंश मात्र हिंसानो परिणाम नथी पुष्पादिक उपर श्रावकने तेम पूजामा के० श्रावकने तेहज रीते एटले मुनिनी रीते, पूजामा फूल धूप दीप प्रमुखमा जाणवु चग के० मनोहर-एटले श्रावकने फूल प्रमुख उपर दया भाव छे, पण हिंसानो परिणाम अंशमात्र नथी अहींया जलतरता कह्यु तेहमा एम सूचव्युं जे पाणी, उतरे ता खरा, अने पाणी तरे पण खरा जे कारण माटे ठाणांग मध्ये पाचमे ठाणे पांच ठाम थाहा न उतर तेमा साध्वी तणाती देखीने तरीने पण साधु काढे एमथाहा करीने माटे पाणी तरता एम पाठ कह्या इति दशमी गाथार्थ ॥ १० ॥

हव कुमति कहेछे जे 'मिथ्यात्वगुणठाणे पूजा करे तेहने शु फल थाय छे?' ते उपर दृष्टांत देइने देखाडे छे पात्र दानथी इत्यादि

पात्र दानथी शुभ विपाक ज्यम ॥ लह्यो सुबाहुकुमार ॥ पहेले
गुणठाणे नरक पण ॥ त्यम जिनपूजा उदार ॥ सु० ॥ ११ ॥

अर्थ–पात्र दानथी के० सुपात्रने दान दीधाथी शुभ विपाक ज्यम के० जेम शुभ विपाक, लह्यो के० पामे सुबाहुकुमार के० श्री विपाकसूत्रमा सुबाहुकुमार, पहेले गुणठाणे के० मिथ्यात्वगुणठाणे छता, नरक पण के० नरक सारु

स्वजावपणे हता. एटले ए जाव जे, सुबाहुकुमार, जद्रक हता, मिथ्यात्वगुण ठाणे हता; पण सुपात्रदाने करी पुन्य बंधाणुं, संसार परित्त कस्यो अने शुज विपाक पाम्या. त्यम जिनपूजा उदार के० एज रीते मिथ्यात्वी होय अने उदार जक्ति ए जिनपूजा करे ते शुज विपाक पामे. इति एकादशमी गाथार्थ. ॥ ११ ॥

वली कुमति बोल्यो जे "दाननुं फल कह्युं पण पूजानुं फल क्यां कह्युं ने?" तेहने उत्तर करे ठे. उपलक्षणथी इत्यादि.

उपलक्षणथी जेम शीलादिक ॥ तेम जिनपूजा लीध ॥ मनुज आयुबंधे ते सुबाहु ॥ तेणे समकित न प्रसिद्ध ॥ सु० ॥ १२ ॥

अर्थः—उपलक्षणथी जेम शीलादिक के० दानना उपलक्षणथी जेम शील तप प्रमुख लीजीए, तेम जिनपूजा लीध के० तेम उपलक्षणथी जिनपूजा लीधी ठे. अन्यथा महानिशीथसूत्रमां तो प्रगटपणे पूजानां फल कह्यांठे. पण महानिशीथसूत्र, कुमति न माने, माटे उपलक्षण बताव्युं ठे. वली कुमति बोल्यो. "सुबाहुकुमार मिथ्यात्वी क्यां कह्योठे." तेहने उत्तर दीएठे. मनुज आयुबंधे ते सुबाहुके० ते सुबाहुकुमारे मनुष्यनुं आउखु बांध्युंठे. समकिती होय ते नियमावैमानिकनुं आउखु बांधे. तेणे समकित न प्रसिद्धके० ते कारणे एहने समकित प्रसिद्ध नथी.

वली मिथ्यात्व गुणठाणे पुण्यकरणी करतां शुजविपाक पामे ते उपर बीजुं दृष्टांत कहेठे. मेघजीव इत्यादि ॥

मेघ जीव गज शश अनुकंपा ॥ दान सुबाहु विचार ॥ पहेले गुणठाणे पण सुंदर ॥ जेम जिनपूजा प्रकार ॥ सु० ॥ १३ ॥

अर्थः—मेघ जीव गज शश अनुकंपा के० मेघकुमार श्रेणिकनो पुत्र, ते पाठले जवे गज हतो. तेणे ससलानी अनुकंपाए पग हेठो न मूक्यो; अने महा वेदना खमी. ते वेलाए पण तेने मिथ्यात्वहतुं. तेम दान सुबाहु विचारके० सुबाहुकुंवरनुं दान तेहनो पण विचार करवो. ते पहेले गुणठाणे पण सुंदरके० रूडा अध्यवसायवंत हता. तेम जिनपूजा प्रकारके० जेम दया कही, दान कह्यु, तेम जिनपूजानो प्रकार पण एम जाणवो. एटले मिथ्यात्वगुणठाणे एवडो गुण करेठे, तो समकित देशविरति वालाने ए पूजा गुणकारी थाय; एमां पूठवुंज शुं? सासुं एहथी अधिक गुण करे. इति त्रयोदशमी गाथार्थ ॥ १३ ॥

हवे एम कहे थके कुमति बोल्यो जे "पूजामां गुण मानोछो तेवारे साधु कां न करे? जेहमां गुण होय ते सहुए करे " एम कहेछे तेहने उत्तर वालेछे

दान देव पूजादिक सघलां ॥ द्रव्यस्तव कह्या जेह ॥ असदारंभी तस अधिकारी ॥ मामी रहे जे गेह ॥सु० ॥ १४॥

अर्थ —दान देव पूजादिक सघला द्रव्यस्तव कह्या जेह के० दान, देव पूजा आदि शब्दथी साह्मिवच्छल, प्रभावना, तीर्थ यात्रा, अने रथ यात्रा प्रमुख ते वां ए सर्व द्रव्यस्तव कह्यांछे असदारंभी के० हीणा आरंभना धणी, तस अधिकारीके० ते द्रव्यस्तवना अधिकारीछे ते असदारंभी केवाछे? मामी रहे जे गेहके० जेओ घरमामी रह्याछे, एवाछे एटले ए भावजे—आरंभ बे प्रकारेछे एक सदारंभ अने बीजो असदारंभ तेमां दान, देवपूजा, साह्मिवच्छल प्रमुखमां जे आरंभ—ते सदारंभ कहीए, अने घरबार करावतां तथा छेयां छोकरां परणावतां जे आरंभ—ते असदारंभ कहीए. जे असदारंभी होय ते सदारंभनो अधिकारी होय पण निरारंभी मुनिराजने सदारंभ पण केम होय ! इति भाव

हवे ते उपर एक दृष्टांत कहीए छेए—चोमासामां कोइएक गृहस्थ, धर्मशाला मां सामायक करी बेठो एवामां वरसाद आव्यो, तेणे करी ते धर्मशालामां चूआ लाग्युं तेवामां कोइ छूटो गृहस्थ त्यां आव्यो, तेणे चूवास्थानके कुंडु मांड्युं. ते कुंडु पाणीए भराणु एवामां ते कुंडामां माखी पडी ते तडफडेछे हवे ते सामायक वाला गृहस्थ, ते माखी काढे के न काढे? जो काढेता असंख्याता अपकायना घात थायछे, सचित्तनो स्पर्श पण थायछे जो न काढे तो बीचारी माखी मरेछे अने तेथी दया रहेती नथी हवे कोइ बीजो छूटा गृहस्थ आवे ते माखीने सुख काढे तेवारे गृहस्थ गृहस्थमां, विरति तथा अविरतिमां पण एटलो फेरछे ता, पूजा करवामां अने साधु तथा गृहस्थमां फेर केम न होय? इति गाथार्थ ॥ १४ ॥

सदारंभमां गुण जाणीजे ॥ असदारंभ निवृत्ति ॥ अरमणी कतां त्यागे भावी ॥ एमज प्रदेशी प्रवृत्ति ॥ सु० ॥ १५ ॥

अर्थ० सदारंभमां गुण जाणीजे के० असदारंभमां बेठो होय तने सदारंभनां गुण जाणीए शो गुण जाणीए? ते कहेछे असदारंभ निवृत्तिके० असदारंभनो त्याग थाय एटले ज्यांलगी सदारंभमां प्रवर्त्ते त्यांलगी असदारंभ न करेज त्यां

सदारंनमां इव्यमूर्छा उतारे, ते इव्ये असदारन न सेवे. इति नाव. ते ऊपर, सूत्र साख देखाडेछे. अरमणिकता त्यागेके० अरमणिक न थाजे. ए प्रकारे, नापीके० कही. प्रदेशी एमज प्रवृत्तिके० प्रदेशी राजाने प्रवृत्ति बतावी. एटले ए नाव के, केशीस्वामिए, प्रदेशी राजा धर्म पाम्या तेवारे कह्यु के हे राजन्, रमणिक थइने अरमणिक म थाजे. तेवारे रमणिक थाजे एम कह्युज. इति गाथार्थ. ॥ १५ ॥ हवे सूत्रपाठ लखीए छैए. माणं तुमं पएसी पुव्वि रमणिज्जेनवित्ता पछा अरमणिये न विज्जासि ॥ इत्यादि. अस्यार्थ. माणंतुमंके० मत थाजेतु. पुव्विरमणिज्जेनवित्ताके० पूर्वे अन्यने दान देनारो थइने पछी, अरमणिये नविज्जासिके० हवे धर्मपाम्या पछी अदाता थइश मा अन्यथा अमने अंतराय बंधाय. वली जिनधर्मनी अपन्ना जना थाय. इति. वली आगले आलावे प्रदेशीए कह्युछे के, हुं पूर्वे रमणिक थइने अरमणिक नही थाउं. हुं सात हजार गामना चारनाग करीश एक नाग हाथी घोडा प्रमुख वाहनमां देइश, एक नाग कोठारमा नाखीश, एकनाग अंत पुरने दइश, अने एकनाग दानशालाए विपुल चार अशनादिक रवावीने घणा श्रमण,माहण,नि क्षु, पंथीप्रमुखने आपीश. इत्यादि पाठ तो छे. जो सदारंनमा गुणछे तो. इति ॥१५॥

वली सूत्रसाखे बीजु दृष्टांत देखाडेछे.

लिखन शिल्पशात गणित प्रकाश्यां ॥ त्रण प्रजा हित हेत ॥
प्रथम राय श्री ऋषनजिणंदे ॥ तिहां पण ए संकेत ॥सु० ॥१६॥

अर्थ –लिखनके० अढार लिपि गणित पद अर्हाया जोडीए. एटले गणित ते एकं, दशं, शतं, सहस्त्रां इत्यादिक शिल्पशतके० सो शिल्प, ए प्रकाइयाके० कह्या. त्रसुके० ए त्रण लिखनादिक जाणवा. उपलक्षणथी बहोतेर पुरुषकला १ चोसठ स्त्री नी कला, २ अने सो शिल्पकला ३ प्रजाहित हेतके० प्रजाना हितने कारणे, प्रथमरा यके० प्रथमराजा श्रीऋषनजिनेश्वरे देखाड्या त्यांपण ए संकेतके० त्यां श्रीऋषन देवने पण एज संकेतछे. एटले ऋषनदेवजीने पण उन्मार्ग तजीने मार्ग लोक प्रवृत्ते एवोज संकेतछे. अन्यथा ऋषनदेवजी त्रणज्ञानना धणी एम बतावेज केम? इतिनाव. ते सूत्रपाठ कहेछे. ॥ लेहाइयाउ गणिय प्पहाणाउ सउणरुय पज्जवसाणाउ बावत्तरि कलाउ चउसट्ठि महिलागुणे सिप्पसयच कम्माणं तिन्निविपयाहियाए उवदिसि३ उवदि सिइत्ता॥इति. व्याख्या० लेहाइयाउके०लिखन आदेदेइ,गणिय प्पहाणाउके० गणि

तठे प्रधान जेह्मां, सउणरुय पञ्जवसाउके० शकुनरुत ठेहेडेठे जेने, वावत्तरि कला उके० एवी बहोतेर कला १ चउसठि महिलागुणे के० चोसठ स्त्रीनागुण २ सिप सयंचकम्माणके० कर्म जे कृषि वाणिज्यादिक तेह्मा सो शिल्प ३ तिन्निविके० ए त्रणे, पयाहियाएके० प्रजाना हितने अर्थे, उवदसइके० देखाडेठे इति अहींयां कोइ पूठेजे 'ए कलाप्रमुख, प्रजुजी केम देखाडे?" तेनो उत्तर कहीए ठेए एकलाप्रमुख उपायेकरी सुखे आजीविका निर्वाह थाय तेवारे चोरीप्रमुख व्यसनपण न करे ते सांजली शिष्य बोल्यो के "बहु सारु ए हेतुए कलादिकनु देखाडवु थाउ, प ण राज्य प्रवृतावबु केम घटे?" गुरु कहेठे उत्तमना उपकारने अर्थ, दुष्टना निग्र हने अर्थे तथा धर्मस्थिति ग्रहेवाने अर्थे ते राज्यस्थितिए रुडी रीते प्रवृत्तता अ नुक्रमे महापुरुषने उपदेशे चोरी प्रमुख व्यसन निवर्ते, तेथी नारकीप्रमुखनी गति निवर्ते, आ जव परजवना सुख साधवा समर्थ, माटे राज्यस्थिति प्रशस्त तथा म हापुरुषनी प्रवृत्ति ते सघले परउपकारी होय बहुगुण, अल्प दोष कार्य कारण विचारणा पूर्वक ज होय वली ठाणांगना पंचमाध्ययने पण कह्युठे ॥ धम्मेण चरमा णस्स पंचनिस्साठाणा पन्नत्ता तंजहा ठक्काया १, गणो २, राया ३, गाहावइ ४, सरीरं ५, इत्यादि एमां एम कह्युजे धर्म आचरता पंचनेआ स्थानकठे तेह्मां राजानी न आए धर्म पाली शके टीकामां कह्युठेके, राजा ठेते, धर्मने सहायकारीठे दुष्टथकी साधुनी रक्षा करे, एम कह्युठे वली परम करुणावंत, परमधर्मना प्रवर्त्तावनार अने त्रण ज्ञानना धणी—तेणे राज्यधर्म प्रवर्त्ताव्यो तेमां कांइ अनुचित नथी युक्ति ए घटती वात ठे तेहनो विस्तार जिनजवन पंचाशकना सूत्रवृत्तिमां यतनाद्वार व्यक्तपणे देखाड्या ठे त्याथी जाणजो अहींयां ग्रंथगौरवना जय थकी लखता नथी. एणे करीने ॥ राज्यवृद्धिनरकांतस्या यदिराजान धार्मिक ॥ एह उक्ति पण दूर थइ तथा त्रीजा आराने ठेडे राज्यस्थिति उपन्ययक धर्मस्थितिना उत्पाद थयो अने पांचमा आराने ठेडे श्रुत, आचार्य, सघने धर्म—ए पूर्वाह्न वि ठ जाशे तथा विमलवाहनराजा, मंत्री, न्यायमार्ग मध्याह्ने विठेद जाशे, अ ग्नि सायाह्ने विठेद जाशे यत ॥ सूय सूरि संघ धम्मा पुव्वण्हे ठिज्जिहि अगणिसायं निव विमलवाहणो सुहुम मंतीनयधम्ममज्झण्हे ॥ १ ॥ ए लेखे धर्मस्थितिविठे दथी पठी राज्यस्थितिविठेद थया तेवारे राज्यस्थिति ते धर्मस्थितिना हेतु, एम कह्युं ते माटे प्रवर्तीन राज्यस्थिति स्थापना कांइ अनुचित नथी ॥१४४

हवे अहींआ वली कोइ पर जीदया के' मुनि ठाय ते पूजा प्रमुख [हिंसाना

उपदेश केम करे? " ते उपर ॥ मुनि उपदेश दिए ॥ एम सूत्रसाखे देखामे छे.

यतनाए सूत्रे कह्युं मुनिने ॥ आर्य करम उपदेश ॥ परि
णामिक बुद्धि विस्तारे ॥ समजे श्राध अशेष ॥ सु० ॥ १७॥

अर्थ.—यतनाए के० मुनिने सूत्रनेविषे,अर्थात् उत्तराध्ययनसूत्रनेविषे कह्युंछे, एट ले मुनि,आर्यकर्मनो उपदेश दीए. इतिनाव. पछी श्राद्ध,परिणामिक बुद्धिए करी वि स्तारे, अशेष समजे. इत्यन्वय. श्राध के० श्रावक, परिणामिक बुद्धि के० बुद्धि प रिणमी जाए एवी बुद्धिए करीने, विस्तारे. अशेष समजे के० सर्व समजी जाय. ते सूत्र पाठ एछे. ॥ जइ तंसि नोए चइउं असत्तो अज्ञाइंकम्माइ करेहिरायं धम्मे छिउं सव्वपयाणु कंपीतो होहिसि देवोइउ विउव्वी ॥ १ ॥ व्याख्याः—चित्रमुनिए ब्रह्मदत्तने उपदेश घणो दीधो, पण प्रतिवोध न पाम्यो. तेवारे चित्रमुनि कहेछे.जइ के० जो, तंसि के०तुंछे नोए चइउं असत्तो के० नोग छांमवा असमर्थ; तो अज्ञा. इंकम्माइं के० आर्यकाम, उत्तम लोकने उचित, एहवां कार्य जे अनुष्टान, करे हिरायं के० हे राजन्, करजे. धम्मेछिउं के० धर्मनेविषे रह्यो. प्रस्ताव थकी गृह स्थ धर्म लइए एटले गृहस्थ धर्ममां रह्यो. सव्वपयाणुकंपी के० सर्व प्रजा जे प्रा णी—तेमनीअनुकंपावंत थको तो के०ते आर्य कार्य करवाथी होहिसिके०थाइश.देवो के० देवता, इउ के० आ मनुष्यना नवथकी, विउव्वीके० वैक्रिय शरीरवत थइश.

अहीयां कोइक कहेछे जे " आर्य काम ते पोसह सामायिक लीजीए पण पूजा नही " तेने कहीए जे नोग छांमवा असमर्थ कह्यो छे अने पोसह सामा यिकमां तो नोग छमाय छे; माटे पूजा, प्रनावना, अने साह्मिवच्छल प्रमुखज आवे.

आर्यकार्य श्रावकनां जेछे ॥ तेहमां हिंसा दिठ ॥ हेतु स्व
रूप अनुबंध विचारे ॥ नाशे देई निज पिठ ॥ सु०॥१८॥

अर्थः—आर्यकार्य श्रावकनां जे छे के० जे जे श्रावकनां आर्य काम छे, ते हमां हिंसा दिठ के० तेहमा एटले आर्यकाममां हिंसा दीठी छे. ते हिंसा त्रण प्रकारे छे. ते त्रण प्रकार देखाडे छे. हेतु के० एक हेतुहिंसा, सरूप के० बीजी सरूपहिसा अने अनुबंधके०त्रीजी अनुबंधहिंसा. विचारेके०ए त्रण नेद, हिंसाना विचारे तो, नाशे देइ निज पिठ के० ते पूजा प्रमुखमां हिसा प्ररूपनारा कुमति, पोतानी पूठ देइने नाशे पण युक्तिए टकी शके नही. इति अष्टादशमी गाथार्थ. ॥१८॥

हवे एज त्रण प्रकारनी हिंसानो अर्थ देखाडे छे

हिंसाहेतु अयतना भावे ॥ जीव वधे ते स्वरूप ॥ आणा
भंग मिथ्यामति भावे ॥ ते अनुबंध विरूप ॥ सु० ॥ १९ ॥

अर्थ –हिंसाहेतुके० हेतुहिंसा ते कहीए जे, अयतनाभावेके० अनाउपयो
ग प्रमादे प्रवर्त्तवु, तेहमां यद्यपि जीवहिंसा न थाय तो पण हेतुहिंसा कहीए
हवे स्वरूपहिंसा कहे छे ते स्वरूपके० तेहने स्वरूपहिंसा कहीए कोने? ते कहे
छे जीव वधेके० प्राणीनो घात थाय, तेवारे एटले मुनिराज पण उपयोगे चाल
ता हालता होय अने कोइ जीवनो घात थयो, तो मुनिने स्वरूपहिंसा लागे, पण
ते स्वरूपहिंसा, हीणा फल देवानो एकांत नही हवे अनुबंधहिंसा कहे छे आ
णाभंगके०प्रभुजीनी आज्ञानो भंग करे, आज्ञा लोपे, मिथ्यामति भावेके०मिथ्या वि
परीत एहवी जे मति, ते भावे करीने एटले विपर्यास श्रद्धाए करीने जेटलुं प्रवर्त्त
न करे, कष्ट अनुष्ठान करे ते यद्यपि बाह्यथी हिंसा न करतो होय तोपण, पोतानो
आत्मा हणाय छे, माटे अनुबंध ते सततरभावे परंपराए हिंसानुं फल आपे छे माटे
अनुबंधहिंसा कहीए ते विरूपके०पूर्वे बे हिंसा कही, तेथी ए महाविरूप छे, विप
रीत स्वरूप छे इति उगणीशमी गाथार्थ ॥ १९ ॥ वली एहज स्पष्ट करे छे

हेतु स्वरूप न हिंसा सेवी ॥ सेवी ते अनुबंध ॥ तो जमा
लि प्रमुखे फल पाम्या ॥ कडुआ करी बहु बंध ॥ सु० ॥ २० ॥

अर्थ –हेतुस्वरूपके०हेतुहिंसा, तथा स्वरूपहिंसा, न हिंसा सेवीके० ते हिंसा
सेवी न कहीए एटले दुष्टविपाक फल तेवा न आपे अने सेवी ते अनुबंधके० अनुबं
हिंसा ते हिंसाज सेवी जे माटे महा विपरीत, परभवे दुष्टविपाक फल ते ए आपे छे त
उपर दृष्टांत देखाडे छे तो जमालिप्रमुखे फल पाम्या कडुआके० ते अनुबंधहिंसावंत
हतो तो जमालि प्रमुखे कडुआ फल पाम्यो करी बहु बंधके० घणा बंध कर्म
करीने काया कष्ट करी वली बीजाने पण मिथ्याश्रद्धानी वासनारूप बंध करीने
एटले एभाव जे, जो आणाविना एकली दयाथीज जो धर्म पामे तो श्री भगवतीसूत्र
ना नवमा शतकमध्ये जमालीनो अधिकार विस्तारे छे, तेहमां जमालिए शुद्धचारि
त्र पाल्युं छे माखीनी पांख सरखी डुहवी पण नथी, पण एक प्रभुवचन लोप्यु
बीजुं सर्व साधु मानतो हतो पण फल ते हिंसानां आप्यां, पण अहिंसाना न

आप्यां. तो रे कुमतिओ, एना सरखी तो तमाराथी दया पलती छे नही. मात्र मुखे दया दया पोकारोछो. माटे आणाविना तमारो निस्तार केम थशे? ते जमा लीनो अधिकार घणोछे माटे अहींयां लखता नथी आत्मार्थी होतो त्यहां जोज्यो.

सरूपथी हिंसा न टले छे ॥ समुद्रजले जे सिद्ध ॥ वली अपवा दपदे जे वरते ॥ पण तेणे शिवपद लीध ॥ सु० ॥ २१ ॥

अर्थः—सरूपथी हिंसा न टलेके० नथी टलती, समुद्रजले जे सिद्धके० लव णसमुद्र तथा कालोदधि. तथा जलशब्दे गंगाप्रमुख नदीना पाणीमां सिद्धि थया एटले अढीद्वीप, बे समुद्रमध्ये सूचिअग्र जेटली जग्या, सिद्ध नथी थया एहवी नथी. तेवारे पाणीमा सकल कर्मक्षय करतां पाणीना जीवोनी सरूपथी हिंसा थायछे. वली के० बीजुं उदाहरण कहेछे. अपवादपदे जे वरतेके० अपवादपद ते कारणे करवुं पडे, त्यां वर्त्तता हिंसा थायछे, पण तेणे शिवपद लीधके० पण ते अपवादना सेवको, मोक्षपद पाम्याले. श्री आचारांगसूत्र द्वितीयश्रुतस्कंध प्रथ मअध्ययन दशमे उद्देशे. ॥ से भिरकूवा भिरकूणिवा जावसमाणेसिया सेपरो अ भिहट्टुं अंतोपडिग्गहए बिलंवा लोणंवा उब्भियंवा तोणं परिया भाएत्ता नीहट्टु दलए ज्जा तहप्पगार पडिग्गहगं परहत्थंसिवा परपायसिवा अफासुअं जाव नो पडिग्गाहे ज्जा आहच्चा पडिगाहएसिया तंचनातिदूरंगए जाणिज्जा सेत्तमायाए तत्थगच्छिज्जा पुव्वामेवआलोएज्जा आउसोत्तिवा भगिणीत्तिवा इमंतेकि जाणयादिन्नं उदाहु अजा णया सेयभणिज्जा नो खलु मे जाणयादिन्नं अजाणया इमं खलु आउसो इदाणिं नि सिरामि भुंजहवाणं परिभाएज्जा तं परेहिं समणुन्नाय समणुसिठ ततो संजयामेव भुंजेज्जवा पिएज्जवा जंच नो संचाएत्ति भोत्तएवा पायएवा साहम्मिया तत्थवसति सं भोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया समणुन्नाया तेयत्तवंसिया नो जत्थ सा हम्मिया जहेवं बहुपरियावन्नं कीरति तहेव कायव्वंसिया एवं खलु तस्स भिरकुस्स भिरकूसामग्गियं ॥ व्याख्या० से भिरकूवा भिरकूणीवाके० ते साधु अथवा साध्वी जाव समाणे के० यावत् गृहस्थने घेर गोचरी पेठा. सियाके० कदाचित्, सेपरो के० ते गृहस्थ, अभिहट्टुअंतो के० माहे पेशीने, पडिग्गहए के० पात्रनेविषे गला नादिकने काजे खारुं प्रमुख याच्ये थके, बिलं वा लोण के० खाण विशेषे उत्पन्न लुण, उब्भियवा के० लुणना आगारना उपन्यु, तोणं के० तेवारे, दाताए परिया भाए त्ता के० पोताना भाजनमध्येथी थोडुंक ग्रहीने, निहट्टु के० बहार नीकलीने, द

लएज्जा के० साधुने आपे तहप्पगारं के० तथा प्रकारनु, पडिग्गहगं के० जाजन हजी, परहत्थंसिवा के० परना हाथमां छे परपायंसिवा के० परनाजननेविषे, अ फासुअ के० एहवु सचित्त जाव नो पडिग्गहेज्जा के०यावत् न पडयावे, न लिए निषेध करे,आहच्चा के०सहसात्कारे,पडिगाहएसिया के०पडघाव्यु होय, लीधु होय तंचनातिदूरगया जाणिज्जा के० ते दातार घणो समीपे जाणीने, सेत्तमायाए के० ते भिक्खु, लवणादिक लेइने, तत्थगच्छिज्जा के० ते दातार पासे जाय जइने, पुव्वामे व आलोएज्जा के० प्रथमथी ते लवणादिक देखाडे, पछी एम कहे आउसोत्तिवा के० हे आउषावत, जगिणीत्तिवा के० हे बहेन, इमतेकिं जाणयादिन्न के० आ लुण प्रमुख तमे जाणते आप्यु? उदाहु अजाणया के० अथवा अजाणे आप्यु? सेयजणिज्जा के० ते एम कहे नो खलु मे जाणयादिन्न के० मे जाणीने न थी आप्यु अजाणया के० अजाणे आप्यु छे एव खलु आहेसो के० हे आउ षावत साधु, इदाणि निसिरामि के० हवणा मे आप्यु तं भुंजहवाण परिजाएज्जा के० ते तमे जोगवो, अथवा तमारा साधुने वहेंची आपो तं परेहिं समणु न्नाय समणु सिठ के० ते परे एम जाणीने आज्ञा आपे थके ततो सजयामेवके० तेवारे साधु पोते कारणे, भुंजेज्जवा पीएज्जवा के० खाय अथवा पीए जइ नो सचाएत्ति जोत्तएवा पायएवा के० जो न जोगवी शके अथवा न पान करी श के, साहम्मिया तत्थ वसतिके० त्या साधर्मिक साधु वसता होय, सनोइया सम णुन्ना अपरिहारिया के० एक सामाचारी वाला जाणे तप न कर्यो होय, अदूरग या समणुन्नायाके० टुकडा जाणीने, तेवत्तव सिया के० तेहने कहे एटले तेहन वहची आपे, नो जत्थ साहम्मियाके० ज्या एवा साधु न होय जहेव बहु परिया वन्ने कीरति के० बहु पर्यापन्न विधि करे, ते विधि आचारागमा पूर्वे कह्यो छे, त हेव कायव्वसियाके० तेम करे एव खलु तस्स भिक्खुस्स सामग्गिय के० ए भि क्खुनु सामग्र्य जाणवु ए मुनिने लूण वावरता स्वरूप हिंसा क्यां टली? अने मु नि उत्कृष्ट कह्या माटे शिव पद पण लीधु वली अर्हाया पण विचारज्यो, आज्ञा प्र माण के दया प्रमाण! इति

॥ से भिक्खूवा भिक्खूणीवा गामाणुगाम दूइज्जमाणे अतराले वप्पाणिवा फलि हाणिवा पागाराणिवा तोरणाणिवा अग्गलाणिवा अग्गलपासगाणिवा गड्डाउवा दरिउवा सइ परक्कमे सजयामेव परक्कमेज्जा नोउज्जु अग गच्छेज्जा केवलिबूया आ याणमेय सेतत्थ परक्कममाणे पयलेज्जवा पवडेज्जवा सेतत्थ पवलमाणे रुक्खाणिवा

हिंसा नथी एटले एम कह्यु जे साधु विहार करेछे, तेह्मां यद्यपि वायुकायादिक कोइ क अवसरे त्रसकायनी पण अथवा नदी प्रमुख उत्तरतां बीजी अपकायादिकनी पण हिंसा, स्वरूपेछे, पण अनुबधे मुनीने हिंसा नथी तेम श्रावकने जिनपूजा मां हिंसा नथी इति जाव एम जे मानेके० एरीते आगमनी रीतिए जिनपूजामां हिंसा नथी एम जे पुरुषमाने, तेहनी वाधेके० ते पुरुषनी वधे, सुजश आग शक्तिके०सुख तथा जश तेह्ने आगमके०आववानी शक्ति एटले ते प्राणीने सुखयाये, जश आवे एटले एमां जश एवु कविए पोतानु नाम पण सूचव्यु इति गाथार्थ॥१०॥ ए ढाल पण सपूर्ण थयो ग्रथाग्रथ ४०ए अक्षर, २० सर्व ग्रथाग्रथ२०१४अ०६

हवे पांचमो ढाल कहेछे ए ढालने पूर्वना ढाल साथे ए सबधछे पूर्वढालमां पूजा करतां हिंसा न थाय, एम ठराव्यु ते तो जिनप्रतिमा ठरे तेवारे पूजा ठरे, माटे जिनप्रतिमानो वर्णव सिद्धातमां विस्तारेछे ते कहेछे

॥ ढाल पाचमी ॥

॥ मारी सहीरे समाणी ॥ एदेशी ॥

सासय पडिमा अडसय माने ॥ सिधायतन विमानेरे ॥ धन धनजिन वाणी॥टेक॥प्रभु ते जापी अग उवगे ॥ वरणव शुतेम रगेरे॥धन०॥१॥

अर्थ –सासयपडिमा अडसयमानेके० शाश्वतीप्रतिमा एकसो आठ प्रमाणे, सिद्धायतनके० सिद्धनु घर एटले देहेरा, विमानेके० विमाननेविषे, धन्य धन्य जि नवाणीछे एटले मुखनी वात नथी, ए तो परमेश्वर कहीगयाछे हे प्रभो तें, अग जे ठाणाग प्रमुख अने उपाग ते जीवाभिगम प्रमुखनेविषे भाखीके० कहीछे अ हीयां भक्ति ए तुकारो छे तेह्मां दोष नथी जेम तमे अग उवगे कहीछे तेम अमे रगेके० हर्षे वर्णवशु ॥ इति प्रथम गाथार्थ ॥ १ ॥

कचनमय कर पद तल सोहे ॥ भविजनना मन मोहेरे ॥ध०॥अ करतनमय नख ससनेहा ॥ लोहिताक्ष मधि रेहारे ॥ ध० ॥ २॥

अर्थ –कचनमयके० सुवर्णमय, करपदतलके० हाथ पगनां तलीयां, सोहे के० शोभेछे भवप्राणीनां मन, मोह पामे एहवाछे अकरत्नमयी नख ते पण ससनेहाके० स्निग्ध स्नेहवताछे, एटले उजलाछे लोहिताक्षरत्ननी, मध्ये रेहा के० रेषाछे एटले नखमध्ये राती रेषाछे इति द्वितीय गाथार्थ ॥ २ ॥

गात्र यष्टि कंचनमय सारी ॥ नाभि ते कंचनक्यारीरे ॥ ध० ॥ रि
ष्टरतन रोमराजि विराजे ॥ चुचूक कंचन गाजेरे ॥ ध० ॥ ३ ॥

अर्थ.—गात्र जे शरीर, तद्रूपयष्टि, ते कंचन के० सुवर्णमय, सारीके० मनोहर छे. इति भाव. नाभि ते जाणीए, कंचननी क्यारीज होयना! एवी महा मनोहर छे. रिष्टरतनके० श्यामरतनमयी रोमराजि विराजेछे. चुचूक के० स्तनप्रदेश ते कंचनमयी गाजेछे. इति तृतीय गाथार्थ ॥ ३ ॥

श्रीवच्छ ते तपनीय विशाला ॥ होठ ते लाल प्रवालारे ॥ ध० ॥ दं
त फटिकमय जीह दयालु ॥ वलि तपनीयनुं तालुरे ॥ ध० ॥४॥

अर्थ.—श्रीवच्छ हृदयना मध्यभागे ते तपनीय के० लगारेक रातासुवर्णमय छे. विशालाके० विस्तीर्णछे. होठ ते लाल के० रातापरवाला सरखा छे. एटले सुंदर छे. दंत फटिकके० दांत ते फटिकरत्नमयीछे. एवा उज्वल सफेदछे. जीहके० जीव्हा, दयालुके० दयावंतछे. तथा तालुके० तालवु, तपनीयके० रक्तसुवर्णमय छे. एटले जीभ तथा तालवु ए बेउ वानां रातांछे. इति तूर्य गाथार्थ ॥ ४ ॥

कनक नाशिका तिहां सुविशेषा ॥ लोहिताक्षनी रेषारे ॥ध०॥ लो
हिताक्ष रेखित सुविशाला ॥ नयन अंक रतनालारे ॥ ध० ॥५॥

अर्थः—कनक के० सुवर्णमय, नाशिका सुविशेषा के० घणुं विशिष्टाकारे छे, एटले महा मनोहर नाशिका छे. लोहिताक्षरत्ननी नाशिकामां रेषाछे एटले ला ल रेखाछे. लोहिताक्षरतननी रेखाए रेक्षित एवा सुविशाल के० विशाल, नयन के० नेत्रछे. वली अंक रतनालां के० अंकरत्नमयी छे. एटले उज्जल अने मध्ये राती टसरो छे. ॥ इति पंचम गाथार्थ. ॥ ५ ॥

अछिपत्ति भमुहावली कीकी ॥ रिष्टरतनमय नीकीरे ॥ ध० ॥
श्रवण निलाडवटी गुणशाला ॥ कंचन झाकझमालारे ॥ ध०॥६ ॥

अर्थ.—अछिपत्ति के० पापणो. भमुहा के० उपर वांकी भापणी. कीकी प्र सिद्धछे. ए त्रण वस्तु, रिष्टरतनमय, के० श्यामरतनमय, नीकी के० मनो हर छे. श्रवण के० कान, तथा निलाडवटी के० भाल. ते गुणशाला के० गुणनी शाला—स्थानक छे. ते कंचनना छे. झाक झमाला के०देदीप्यमान एहवां छे. ॥ ६ ॥

वज्ररतनमय अतिहि सोहाणी ॥ शीशघमी सुखखाणीरे ॥ध०॥
केशनूमि तपनीय निवेशा ॥ रिष्ठरतनमय केशारे ॥ ध० ॥ ७ ॥

अर्थ –वज्ररतनमयी अतिहि सोहाणी के० अत्यत मन गमती, एहवी शीश घडी के० मस्तकनी घडी ठे, सुखनी खाण ठे केशनी नूमिका ते तपनीय के० ता वेला सुवर्ण सरखी किंचित् रक्त ठे रिष्ठरतनमय के० श्यामरत्नमयी केश ठे एटले काला ठे ॥ इति सप्तमी गाथार्थ ॥ ७ ॥

हवे ते एकसो आठ प्रतिमाने प्रत्येके एक एक प्रतिमाने, अगीयार प्रतिमाउ बीजीठे ते शु काम करे ठे ? ते कहेठे

पूठे ठत्र धरे प्रत्येके ॥ प्रतिमा एक विवेकेरे ॥ ध० ॥ दोय पा
से दोय चामर ढाले ॥ लीलाए जिनने उवारेरे ॥ ध० ॥ ८ ॥

अर्थ –पूठे एक प्रतिमा विवेके सहित ठत्र धरे ठे बेउपासे, दोय के० बे मूर्ति, प्रनुजीने चामर ढाले ठे ते लीलाए करीने जाणे जिनेश्वरने, उवारे के० उ वारणाज करती होयना ' इति अष्टमीगाथार्थ ॥ ८ ॥

नागनूत यक्ष ने कुन्नधारा ॥ आगे दोय उदारारे ॥ ध० ॥ ते
पडिमा जिनपडिमा आगे ॥ मानु सेवा मागेरे ॥ ध० ॥ ९ ॥

अर्थ –वली जिनप्रतिमा आगल बे मूर्ति, नागदेवतानी ठे, बे मूर्ति, नूतदेवतानी ठे, बे मूर्ति यक्षदेवतानी ठे अने बे मूर्ति कुन्नधारा के० आज्ञाधारकनीठे ते घणी उदार प्रधान ठे कवि कहे ठे के हु एम मानु ठु जे ते प्रतिमाउ, जिन प्रतिमा आगल, सेवा के० चाकरी मागेठे इति नवमी गाथार्थ ॥ ९ ॥

घट कलश नृगार आयसा ॥ थाल पाइ सुपइठारे ॥ ध० ॥
मनगुलिया वायकरग प्रचम्म ॥ चित्ता रयण करम्मरे ॥ध० ॥ १० ॥

अर्थ –घट एकसो आठ, कलश एकशो आठ, नृगार ते पण कलश विशेष जाणवा ते एकसो आठ, आयसा के० दर्पण एकसो आठ, थाल एकसो आठ पात्री नाजन विशेष ते एकसो आठ, सुप्रतिष्ठ नाजन विशेष ते एकसो आठ, अने मनोगुलिका पिटिकाविशेष ते एकसो आठ, वातकरक कहेतां जलशून्यकुन एकसो आठ–ते प्रचम्म के० अत्यत शोननीक ठे चित्ता के० विचित्र नाना प्रकारना करमीया एकसो आठ ठे ॥ इति दशम गाथार्थ ॥ १० ॥

हय गय नर किन्नर किंपुरिसा ॥ कंठ उरग वृष सरिपारे ॥ ध० ॥
रयणपुंज वली फूल चंगेरी ॥ माल्य ने चूर्ण अनेरीरे ॥ध०॥१२॥

अर्थः—हय के० हयकंठ, गय के०गजकंठ, किन्नरके० किन्नरकंठ, किंपुरिसा के० किंपुरसकंठ, उरग के० उरगकंठ, अने वृषसरिपा के० वृषभकंठ—इत्यादिक कंठ शब्द सघले जोमीए. सरिपाके० सरखा— ए सर्व एकसो आठ कहेवा. रत्नना पुंज एकसो आठ, वली फूलनी चंगेरीके० ठावडी, माल्यके० फूलमालानी चंगेरी तेमज चूर्णके०सुगंधी चूर्णनी, अनेरीके०बीजी ठावडी. ए पण एकसो आठ कहेवी.

गंध वस्त्र आन्नरण चंगेरी ॥ सरसव पुंजणीकेरीरे ॥ ध० ॥ एम
पुष्पादिक पमल वखाण्यां ॥ आगे सिंहासन जाण्यांरे॥ध०॥१३॥

अर्थ.—वली गंधनी चंगेरी, वस्त्रनी चंगेरी, आन्नरणनी चंगेरी अने सरसवनी चंगेरी, वली पुंजणीकेरीके०पुंजणीनी चंगेरी ए सर्व एकसो आठ जाणवां. एम पुष्पादिक के०फूल प्रमुखनां, पमल के० वस्त्र, वखाण्यांके० जीवान्निगम प्रमुखने विषे वखाण्यां छे. वली आगल सिंहासन जाण्यांछे, सिद्धांत वचने करीने. ॥ १३॥

छत्र ने चामर आगे समुग्गा ॥ तैल कुष्टन्नृत जुग्गारे ॥ध०॥ न्नरि
या पत्र चोयग सुविलासे ॥ तगर एला शुचि वासेरे ॥ध०॥ १३॥

अर्थः—छत्र एकसो आठ, चामर एकसो आठ, वली आगल समुग्गा के० मा वडा. तैलन्नृत के० सुगंधी तेलना न्नखा, कुष्टके० सुगंध वस्तुना न्नखा. जुग्गा के० योग्य. ए सर्व एकसो आव आठ जाणवा. वली मावडा, पत्रे करी न्नखा छे. चोयगके० सुगंध द्रव्ये न्नखा छे सुविलासवंत छे. तगरे करी न्नखा छे. एला के० एलचीए न्नखाछे. शुचिवास के०पवित्रवासे छे. इति त्रयोदश गाथार्थ ॥ १३ ॥

वलि हरताल ने मनसिल अंजन ॥ सवि सुगंध मनरंजनरे ॥ ध०
ध्वजा एक शत आठ ए पूरां ॥ साधन सर्व सनूरांरे ॥ ध०॥१४॥

अर्थ.—वली हरतालना मावडा छे, मनसिलना मावडा छे अने अंजनना मावडा छे. सवि सुगंधके० सर्व सुगंधिवंत छे. मनरंजन के० मनने रीफ उपजावे एवा मावडा छे. ध्वजाके० नाहानी ध्वजाउ छे, ए सर्व एकसो आठ पूरा छे. ए सर्व साधन छे. सनूरा के० नूरसहित छे. ॥ इति चौदमी गाथार्थ ॥ १४ ॥

सुर ए पूजा साधन साथे ॥ जिनपूजे निज हाथेरे ॥ ध० ॥ सि
द्धायतने आप विमाने ॥ थूनादिक बहु मानेरे ॥ ध० ॥ १५ ॥

अर्थ –सुर जे देवता–ते ए पूजानां साधन सहित, जिनेश्वरनी पूजा पोताने हाथे करे छे आप विमानेके० पोताना विमाननेविषे, सिद्धायतनेके० सिद्धनु घर–तेहनेविषे पूजा करेछे वली थूनादिकनेविषे बहुमान करे इति गाथार्थ॥१५॥

त्यां देवता नावना नावे, तेशीरीते नावे! ते कहेछे

एह अपूरव दरिशण दीठु ॥ सुरतरुफलथी मीठुरे ॥ध० ॥ ए
ससार समुद्रे नावा ॥ तारण तरण सहावारे ॥ ध० ॥ १६ ॥

अर्थ –एह अपूर्व दर्शन दीठु एटले कदापि काले ससारमां नमतां, नावथकी प्रभुदर्शन नथी थयुं, माटे अपूर्व, सूरतरुके० कल्पवृक्षना फल करतां पण मीठु वली ए प्रभुनक्ति, ससार समुद्रनेविषे नावा के० जहाज बराबरछे जेम नाव पोत तरे अने बीजाने तारे तेम प्रभुजी पोते तरया अने नक्ति,लोकने तारक स्वनावछे नक्ति अथवा जिनप्रतिमानु विशेषण छे,माटे स्त्रीलिंगे नाप्युछे इति षोडश गाथार्थ

एम विस्मय नवनय गुणरागे ॥ कीले तेह अतागेरे ॥ ध० ॥
राचे माचे ने वलि नाचे ॥ धरमध्यान मन साचेरे ॥ ध०॥१७॥

अर्थ –एम विस्मयके० प्रभुगुणनी अदभुतता तथा नवनो नयके० ससारनी बीक, तथा गुणरागेके० प्रभुगुणना रागनेविषे पण ते राग कहेवोछे? अताग के० जेहनो ताग नथी, अपारछे तेहमां देवता कीले तेहमां राचे, माचे, मग्न थाय अने नाचेके०नाटक करे धर्मध्यानमा जेमनु साचु मनछे सप्तदशगाथार्थ॥१७॥

थेइ थेइ करता दे ते नमरी ॥ हर्षे प्रभुगुण समरीरे ॥ ध० ॥ योग
निरालंबन लय आणी ॥ वश करता शिवराणीरे ॥ ध० ॥ १८ ॥

अर्थ –थेइथेइ करता नमरी दीएके० नमरी देतां हर्ष थकी प्रभुना गुण समरी के०संनारीने, निरालंबन जोग ते सिद्धस्वरूपनी लय आणीके०तल्लीन थइ, शिवराणीके० मोक्षराणीने वश करता थका छे इति अष्टादश गाथार्थ ॥ १८ ॥

एम नंदीश्वर प्रमुख अनेरा ॥ शाश्वत चैत्य नलेरारे ॥ ध० ॥त्यां
जिनपूजे ते अनुमाने ॥ जनम सफल निज मानेरे ॥ ध० ॥॥१९॥

अर्थ —एम नंदीश्वर प्रमुख अनेरांके० बीजां नलां रुडा शाश्वत चैत्यछे अहींयां प्रमुखशब्दे रुचकनां, कुंमलना, नवनपति प्रमुखना लेइए. त्यां जिनेश्वरनी पूजा करे ते अनुमाने पोतानो जन्म सफल मानेछे. एटले देवताने जन्म सफल थयानुं ठेकाणु जिनराजनी नक्तिछे. बीजुं नथी. इति एकोनविंशति गाथार्थ ॥ १९ ॥

कल्याणक अठाइ वरषी ॥ तिथि चउमासी सरषीरे ॥ ध० ॥ तेह निमित्ते सुर जिन अरचे ॥ नित्य नक्तिपणे विरचेरे ॥ ध० ॥२०॥

अर्थः—कल्याणकके० जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान, अने मोक्ष ए कल्याणके तथा वरषीके० संवत्सरी तथा चोमासानी अठाइ—ए दिवसे घणा देवताउ नेला मली अठाइ महोत्सव करेछे. सरषीके० ए सर्व सरखी तिथिउछे. ते कल्याणक प्रमुख निमित्त पामीनें, सुरके० देवताउ, जिनेश्वरनी पूजा करेछे. नित्य नक्तिके० निरंतरपणे प्रजुनक्ति रचेछे. ते पूर्वे पूर्वपक्ष शब्दनी युक्तिमा कह्युंछे. इति गाथार्थ ॥२०॥

नाव ते अक्षयनावे मलियो ॥ ते नवि जाए टलियोरे ॥ ध० ॥ फरि त्रांबू नवि होय निषेधे ॥ हुं हेमरस वेधेरे ॥ ध० ॥ २१ ॥

अर्थ.—नावके० पोतानो नाव, अक्षयनावेके० प्रजुनो नाव—ते साथे मल्यो थको ते नवि जाए टलियोके० ते टली जाय नही ते उपर दृष्टांत कहेछे. पदनो अर्थ जेलोछे जे, रसवेधे त्रांबानुं हेम थयुं. ते हेम, निषेधके० त्रांबाने निषेधपणे थयुछे. ते फरी त्रांबु नवि होयके० न थाय; तेम पोतानो नाव, अक्षयनावे मल्यो टली जाय नही ॥ इति गाथार्थ ॥ २१ ॥ वली दृष्टांत कहेछे.

एके जललव जलधि नलाए ॥ तो ते अक्षय थाएरे ॥ध०॥ आपनाव जिनगुणमांही आणे ॥ तेम ते अखय प्रमाणेरे॥ध० ॥२२॥

अर्थ.—एके जललवके० पाणीनुं बिंडु एक पण जलधिके० समुद्रमाहे, नलाएके० नले तो ते अक्षय थाय. एटले सुकाय नही, तेम आपनावके० पोतानो नाव, जिनेश्वरगुणमाहे आणे तो अक्षय थाय. प्रमाणेके० पूर्वे जे युक्ति कही अथवा दृष्टांत कह्यु ते प्रमाणे करीने अक्षय थाय. ॥ इति गाथार्थ ॥ २२ ॥

अपुणरुत्त अडसय वड वृत्ते ॥ एम सुर नावे चित्तेरे ॥ ध० ॥ एम जिन पूजी जे गुण गावे ॥ सुजश लील ते पावेरे ॥ ध० ॥ २३ ॥

अर्थ –ते पूजा करीने अपुणरुत्तके० जे एकवार कह्यु ते वीजी वार न आवे तेहने अपुणरुत्त कहीए एवे अडसय वडवृत्तेके० एकसो आठ मोटां काव्योक री सुर जे देवता–तेउ चित्तनेविषे नावे एरीते जिनेश्वरने पूजीने एटले अहींया वाख्यानथकी जिनप्रतिमा पूजीने जिनना गुणगावे, ते प्राणी, सुजशलीनके० न ला जशनी लीला पामे कविए जश शब्दे जशविजय एवु पोतानु नाम पण सूचव्यु

हवे जिन प्रतिमानो वर्णव तथा चोमासी सवत्सरी तथा निनज मासि कल्याणके पूजा अष्टाइ महोछव जेम जीवानिगमसूत्रनेविषे कह्योछे ते पाठ ल खीए छैए ॥ तस्सण सिद्धायतणस्स वहु मज्झदेसनाए एछण एगा मणिपेढिया पन्न त्ता दो जोयणा आयाम विस्कन्नेण जोयण वाहल्लेण सव्व मणिमया अच्छा तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एछण एगेमहं देवछंदए पन्नत्ते दो जोयणाइ आयाम विस्कन्न ण साइरेगाइ दो जोयणाइ उढं उच्चत्तेण सव्व रयणामए अछे ॥ अर्थ ते सिद्धा यतनके० सिद्धनुघर–तेहना वहुमध्य नागे, एछणके० अहींयां, मणिपेढियाके० मणीनी पीठिकाछे ते पीठिका वे योजन आयाम लांबी अने विस्कनके० पोहोनीछे जोयणके० एक जोजन, वाहल्लेणके० जाडपणेछे सर्व मणिमयीछे अछके० नि र्मलछे–इत्यादिक वर्णववी तीसेण मणिपेढियाए उप्पिके० ते मणीपीठिका उप र, एछणके० अहींया, एगेमहंके० एक महोटो, देवछंदएके० देवछंदो छे ते प्र भुने वेसवानु घर विशेष पन्नत्तेके० कह्युछे ते वे योजन लांबु पहोळु छे, ने यो जन जाफेरु ऊचुछे सर्व रत्नमयी अछके० निर्मलछे सूत्र ॥ तछण देवछंदए अछसयं जिणपडिमाण जिणुस्सेहप्पमाणमेत्ताण सन्निखित्ते चिछइ तासिण जिण पडिमाण अयमेयारूवे वस्णावासे पन्नत्ते ॥ अर्थ –तछणके० ते देवछंदानेविषे अछसय जिणपडिमाणके० एकसो आठ जिनेश्वरनी प्रतिमा, ते केवीछे? जिणुस्से हप्पमाणमेत्ताणके० जिनेश्वरना शरीरनु उस्सेह जे ऊचपणु ते प्रमाण मात्र छे ए टले पांचशे धनुष्य प्रमाणेछे सन्निखित्तके० रूडीरीते थापनाए रह्योछे तासिण जिण पडिमाण के० ते जिनप्रतिमानो, अयमेयारूवेके० ए एहवा स्वरूप वस्णावास के० वर्णावास वर्णव पन्नत्तेके० कह्योछे सूत्र ॥ तंजहा तवणिज्जमइया हछतला पायतला अंकामयाइ णखाइ अतो लोहियस्क परिसेयाइ कणगामया पादा कण गामया गोप्फा कणगामइउ जंघाउ कणगामया जाणु कणगामया उरू कणगाम ईउ गायलठीउ तवणिज्जमइउ णाजीउ रिठमइउ रामराजीउ तवणिज्जमया चुचुया तवणिज्जमया सिरिवछा कणगमइउ वाहाउ कणगमयाउ गीवाउ रिठमयमंसू

सिलप्पवालमयाउठा फलिहमया दंता तवणिज्जमयीउ जीहाउ तवणिज्जमया तालुया कणगमइउ णासाउ अंतो लोहिअरक्क परिसेआउ अंकामयाइ अच्छीणि अंतो लोहिअरक्क परिसेआइं पुलगामइउ दिठिउ रिठामईउतारगाउ रिठमयाइ अछिपत्ताइं रिठामईउ नमुहाउ कणगामया कवोला कणगामया सवणा कणगामया निलाडवट्टा वइरामइउ सीसवडीउ तवणिज्जमइउ केसंत केसजूमिउ रिठामया उवरि मुद्धाया ॥ अर्थ -तंजहा के० ते वर्णव करेछे. तवणिज्जमयाके० तपाव्या सुवर्णमयी, हथतलाके०हाथ तलीआछे. पायतलाके०पगनां तलीयांछे; एटले हाथ पगनां तलीयां रातांछे. अंकामयाइंके० अंकरत्नमयी नखछे; एटले सफेदछे. अंतो के० मध्ये, लोहिअरक्क परिसेयाइ के० लोहिताक्षरत्ननी राती रेखाउछे. कणगामया पादाके० सुवर्णमय पगछे, कणगामया गोप्फाके० सुवर्णमय गुल्फ एटले घुंटीउछे. कणगामइउ जंघाउके० सुवर्णमयी जंघाउछे, ढींचणथी हेठली ते जंघा कहीए. कणगामया जाणुके० सुवर्णमयी ढींचणछे. कणगामयाउरुके० कनकमय सांथलछे. कणगामई गायलठीउके० कनकमयी गात्रयष्ठिछे; एटले शरीरछे. तवणिज्जमईउ णाभिउके० तपाव्या सुवर्णमयी नाभिछे एटले रातीछे. रिठमईउ रोमराईउके० श्यामरत्नमय रोमराजी शरीरनीछे. तवणिज्जमया चुच्चयाके० तपाव्या सूवर्णमय चुंचुकछे, एटले स्तनाग्रदेश राता छे. तवणिज्जमया सिरिवच्छाके० तपाव्या सुवर्णमयी श्रीवच्छछे एटले रातांछे. कणगमई बाहाउके० सुवर्णमयी बांहछे. कणगमयाउ गीवाउके० सुवर्णमय ग्रीवाके० कंठछे. रिठमये मंसूके० रिष्टरत्नमय दाढी मूछछे. सिलप्पवालमयाके० परवालामय, उठाके० होठछे. फलिहमय दंता के० स्फटिकरत्नमय दांतछे. तवणिज्जमयाउ जीहाउके० तपाव्यासुवर्णमय जीव्हा एटले जीभछे. तवणिज्जमया तालुआके० तपाव्या सुवर्णमय तालवुंछे. एटले जीभ अने तालवुं ए बंने रातांछे. कणगमईउ नासीउके० सुवर्णमय नाशिकाछे. अंतो लोहियरक्क परिसेयाउके० ते नाशिकामध्ये लोहिताक्षरत्ननी रेखाछे. अंकामयाइं अछिणिके० अंकरत्नमयी आखो छे; एटले उज्वल छे. अंतो लोहिअरक्क परिसेयाउके० ते नेत्रमध्ये लोहिताक्षरत्ननी रेखाउछे. पुलगामइउ दिठिउके० पुलकरत्नमयी दृष्टिछे. ए पदसूत्रमध्येछे, पण वृत्तिकारे अर्थ नथी कह्यो, माटे अमे पण सामान्ये लख्युंछे. रिठामईउ तारगाउके० रिष्टरत्नमयी तारा एटले कीकीछे रिठमयाइं अछिपत्ताइंके० रिष्टरत्नमयी आंखनी पापण छे. रिठामयीउ भमूहाउके० रिष्टरत्नमय भापणिछे कणगामया कवोलाके० कनकमयी कपोल

एटले गल्लस्थलने कणगामया सवणा के० कनकमय श्रवण एटले कानने क णगमया निलाडवट्टाके० सुवर्णमय निलाडपट्टले, एटले कपालने वइरामइ तीन घडीउके० वज्ररत्नमयी शीर्षघडीने तवणिज्जमईउ केसत केसनूमिउके० तपाव्या सुवर्णमय केशनी अतनूमिने एटले केशनूमि रक्तने. रिठमयाके० श्याम रत्न मय, उवरिमुद्धयाके० कपर मुर्द्धजा केशने अथ सूत्र ॥ तासिण जिण डिमाण पिठउ पत्तेय पत्तेय ठत्तधारगपडिमाउ पन्नताउ ताउण ठत्तधारपडि माउ हिमरइय कुदेंडुप्पगासाइ सकोरिंटमल्लदामाइ धवलाइ श्रायवत्ताइ स लील उहारे माणीउचिठति तासिण जिणपडिमाण उनउ पासि पत्तेयं पत्त चामरधारपडिमाउ पन्नत्ताउ ताउण चामरधारपडिमाउ नाणामणि कणगरयण विमल महरिह तवणिज्जुज्जल विचित्त दमाउ चिल्लियाउ सख ककुद दगरय अमयमहिय फेणपुज सन्निगासाउ सुहुमरययदीह वालाउ धवलाउ चामरा सलि लउहारे माणीउ माणीउ चिठति तासिण जिणपडिमाण पुरउ दो दो नागपडिमा उ दो दो जरकपडिमाउ दो दो नूयपडिमाउ दो दो कुमधारपडिमाउ विणउयणयाउ पायवडियाउ पजलीउमाउ सन्निरिकत्ताउ चिठति सव रयणामइउ अवाउ जाव पडिरूवाउ ॥ अर्थ –तासिण जिणपडिमाण पिठउके० ते जिनप्रतिमाने पूठ पत्तेय पत्तेय ठत्तधारपडिमाउ पन्नताउके० प्रत्येके एकेक ठत्रधरनी प्रतिमा कही ठे ताउण ठत्तधारपडिमाउ के० ते ठत्रधरप्रतिमा एहवे ठत्रे सहित ठे हीमके० शीतकाले हिम पडेठे, एहवु रयय के० रूपु, कुंदके० मचकुंद ए ले मचकुंदनु फूल, इडुके० चद्रमा, पगासाइ के० ए सर्व जेवां उजला ढाय त वाठे सकोरिंटमल्लदामाइके०कोरिंटवृक्षना फूलनी माला सहित, धवलाइ श्राय वत्ताइके० उज्वल जे ठत्र, सलीलके० लीलासहित मनोहर, उहारे माणीउ चिठतिके० धरतीयकी रहेठे एटले प्रजुजीने ठत्र धरेठे तासिणके० ते जिनप्रति माने, उनउपासिके० वेहु पासे, पत्तेय पत्तेयके० प्रत्येके प्रत्येके एटले एकक जिनप्रतिमाने, चामरधारपडिमाउके० चामरनी धरनारी वे वे प्रतिमाने ताउ णके० ते चामरधारप्रतिमाउ केवीने? ते कहेने नाणामणि कणगके० नानाप्र कारना मणी तथा सुवर्ण–तेणे करी विमलके० निर्मल, महरिहके० महर्घ, तवणिज्जुज्जलके० तपाव्या सुवर्णमय उज्वल अत्यत देदीप्यमान, विचित्तके० वि चित्रप्रकारना, दमाउके० चामरना दमने चिल्लियाउके० देदीप्यमान शरद प्रतिद्ध कुंदके० मचकुंदनु फुल, दगरयके० पाणीना कण, अमयफेणपुजके० अमृतमंद

क्षीरसमुद्र—तेहनुं फेण, तेहनो पुंजके० समूह, सन्निगासाउके० ते सरखा उज्वल सुहुमके० सूक्ष्म, रययके० रुपाना, दीहवालाउके० दीर्घ लंबायमान वालने; ए हवा धवल चामरछे. ते सलीलं उल्लारे माणीउ माणीउ चिठ्ठतिके० लीलाए जिनने उंचारतीथकी एटले वींजतो थकी रहे. तासिणं इत्यादि वली ते जिनप्रतिमानी आगल दोदो नागपडिमाउ के० बे बे नागदेवतानी प्रतिमाछे, वली दो दो ज रकपडिमाउके० बे बे यक्षदेवनी प्रतिमाउछे, वली दोदो नूयपडिमाउ के० बे बे नूतनी प्रतिमाउ छे; वली दोदो कुमधारपडिमाउके० बे बे आज्ञाधारदेवनी प्रतिमाउ छे. ते सर्व प्रतिमाउ केहेवीछे? विणउयणयाउ के० विनयेकरी उपन तके० नमीउ छे. पायवडियाउ के० पगे लागतीछे. पंजलिउमाउके० प्रांजलिपुट कस्योछे; एटले हाथ जोड्याछे. एवी सन्निखित्ताउ चिठ्ठंतिके० रुडी रीते रहीछे. सव्व रयणामईउ के० सर्वरत्नमयी, अछाउइत्यादिक वर्णववी यावत् प्रतिरूपछे. सूत्रं ॥ तासिणं जिणपडिमाणं पुरउ अठसयं घंटाण अठसयं चदणकलसाणं अ ठसयं निंगाराण एव आयंसगाणं थालाणं पातीण सुपइठगाणं मणगुलियाणं वा तकरगाण चित्ताणं रयणकरमाण हयकठगाणं पुप्फचगेरीणं पुप्फपडलगाणं अठस यं तेल्लसमुग्गाणं जावधूवकडुछुगाणं सन्निखित्त चिठ्ठंति अर्थ—तासिणं इत्या दि ते जिनप्रतिमाने आगल, अठसयं घंटाणके० एकसो आठ घंटाछे. अठसयं चं दणकलसाणं के० एकसो आठ चदनना कलशछे; अठसयं निंगाराणं के० एकसो आठ निंगार—ते पण कलश विशेषछे. एवके०एरीते जे आगल कहीए, तेपण एक सो आठ आठ कहेजो. आयंसगाणके० आरिसाछे, पात्रीउछे, थालछे, सुप्रतिष्टकके० नाजनविशेषछे. ए शब्दना अर्थ ढालना टवामा लख्याछे तेहथीजाणवा. मनोगुलिका वातकरक चित्ररत्नना करन्डियाछे, हयकंठ प्रमुख कंठ कहेवा, फूलप्रमुख चगेरी कहेवी, एम पुप्फ प्रमुखना पमल कहेवा. अठसयं तेल्लसमुग्गाणके० एकसो आ ठ, तेलना माबडाछे. यावत् छेडे एकसो आठ, धूपना कडछा कहेवा. सन्निखित्ता ण चिठ्ठंति के० रुडी रीते रह्याछे. वली आगल नंदीश्वरद्वीपना अधिकार मध्ये सिद्धायतननो अधिकार कहीने ए पाठ लख्यो छे.

॥ तत्थण बहवे नवणवइ वाणमंतर जोइस वेमाणिया चाउम्मासिय पाडिवए सु संवछरेसुय अन्नेसु बहुसु जिणजम्मण निरकमण नाणुप्पाय परिनिव्वाणमा दिएसुअ देवकज्जेसुय देवसमितीसुअ देवसमुदएसुअ देवसमावाएसुय देवपर्उय णेसुय एगंतउ सहिया समाणा पमुहिय पक्कीलिया अठाहियाउ महामहिमाउ

कारेमाणा सुहसुहेण विहरति ॥ अर्थ –तत्थणके० ते सिद्धायतननेविषे, बहवे के० घणा, एटले सम्यग्दृष्टि होय ते नवणवइ के० नवनपति, वाणमतर के० व्यंतरदेवता, जोइसके० ज्योतिषी, वेमाणियाके० वैमानिक, एटले चारे निकायना देवता, चाउम्मासिय पाडिवएसु के० चोमासाना पडवाना दिवसे एटले कार्त्तिकी प्रमुख चोमासे, तथा संवछरेसुके० संवछरीनेविषे बीजापण बहुसुके०घणां जिण जम्मणके० जिनेश्वरने जन्मकल्याणके तथा, निरकमणके० दीक्षाकल्याणक, नाणुप्पायके० केवलज्ञान उपजे ते कल्याणके, तथा, निवाणमादिएसुअके० मोक्ष ए आदे देइ बीजापण, देवकज्जेसुयके० देवकार्यनेविषे, देव सम्मितीसुअके० देवताउना समुदाय मल्या होय तेनेविषे एहज वे पदना पर्याय, वे पदे कहे छे देवसमुदएसु देवसमवाएसु ए बे पदनो पण एहज अर्थ देवपयउयणेसुय के० देवताना प्रयोजननेविषे एटले कार्य करी, एगउ सहिया समाणा के० एकठा मल्यां थका, पमुदिय पक्कीलियाके० प्रमुदित एटले हर्षवंत, क्रीडावंत, अठाहियाउ महामहिमाउके० अठाइरूप महा महोछव एटले आठ दिवस लगी महा महोछव करता थकां सुखे सुखे विचरे छे एरीते जीवाभिगम प्रमुखे पाठ छे बीजा एकसो आठ काव्ये स्तवतु, सूर्याभ देवना अधिकारमां कह्यु छे एटले ए ढाल संपूर्ण थयो ग्रंथाग्रंथ २२० अक्षर ४ सर्वाग्र मलीने ग्रंथाग्रंथ २२३४ अ० १०

हवे छठी ढाल कहे छे तेहनो पूर्व ढाल साथे ए संबंध छे जे एक तो पूर्वे कह्यु छे जे " पचांगी प्रमाणे स्थापना निक्षेपो परखीने आनंद पामु " ते स्थापना निक्षेपो सूत्र प्रमाणे देखाडे वली ते सूत्रमां योग वहेवा कह्या छे ते ढुंढीआ मानता नथी ते योग, सूत्र साखे देखाडेछे, तथा पचांगीपण सूत्र साखे देखाडछे अथवा पूर्वे एम कह्यु हतु जे "तमारी आज्ञा पालवी, पण कुयुक्ति न करवी" तेथाज्ञा तो योग तथा पचांगी माने तेवारे पाली कहेवाय, अने समकितपण तेवारेज थाय माटे ए ढालमा योग तथा पचांगी देखाडे छे ते ढालनी ए प्रथमगाथा लखीए छैए

॥ ढाल छठी ॥ नोलीडा हसारे विषय न राचीए ॥ ए देशी ॥

समकित सूधूरे तेहने जाणीए ॥ जे माने तुज आण ॥ सूत्र ते वाचेरे योगवही करी ॥ करे पचांगी प्रमाण ॥ स० ॥ १ ॥

अर्थ –ते प्राणीने शुद्ध समकित जाणीए, जे तमारी आज्ञा माने ते आज्ञा बतावे छे जे प्राणी योगवहीने सूत्र वांचे तथा पचांगी प्रमाण करे एटले सूत्र,

निर्युक्ति, नाष्य, टीका, अने चूर्णि, एह्मां जे कह्युंठे ते सर्व सत्य करी माने. ॥१॥

उद्देशादिक नहीं चउनाणनां ॥ ठे सुअनाणनां तेह ॥ श्री अ
नुयोगदूवारथकी लही ॥ धरीए योगसुं नेह ॥स० ॥ २ ॥

अर्थः—उद्देशादिकके० उद्देश १, आदिशब्दे समुद्देश, २ अनुज्ञा ३, अने अनुयोग ४, ए चारे, नहि चउनाणनां के० चारे ज्ञान जे मतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान अने केवलज्ञान ए चारनां नथी. ठे सुअनाणनां तेह के०, ते उद्देशादिक श्रुतज्ञाननां ठे ते माटे नणुं नणावुं अर्थ कह्यो ते श्रुतज्ञाननोज थयो. श्रीअनुयोग द्वारथकीलही के० पामीने योग साथे स्नेह धरीए. ते अनुयोग द्वारनो पाठ लखीए ठेए.

अथ सूत्रं०—नाणं पंचविहं पन्नत्तं तजहा आनिणिवोहियनाणं १ सुअनाणं २ उहिनाणं ३, मणपज्जवनाणं ४, केवलनाणं ५, तह चत्तारि नाणाइ ठप्पाई ठवणिज्झाइं णोउद्दिसिज्झंति णोमुसद्दिसिज्झंति णोअणुन्नविज्झंति सुअनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुन्ना अणुउंगो ४ पवत्तइ जइसुअनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुन्ना अणुउंगो पवित्तइ किंअंगपविठस्स उद्देसो ४ पवत्तइं अंग वाहिरस्स उद्देसो ४ अंगपविठस्स विउद्देसो ४ इमं पुण पठवणं पडुच्च अंग वाहिरस्स ॥ इत्यादि अनुयोग सूत्रादौ ॥ अर्थ—नाणं पंचविहं के० ज्ञान पांच प्रकारे, पन्नत्तं के० कह्यु ठे. तंजहा के० ते कहे ठे. आनिणिवोहियनाणं के० मतिज्ञान, सुअनाणं के० श्रुतज्ञान, उहिनाणंके० अवधिज्ञान, मणपज्जवनाणं के० मनपर्याय ज्ञान अने केवलनाणं के० केवलज्ञान. तउके० तेह्मां, चत्तारि नाणाइंके० चार ज्ञान, ठप्पाइं के० थापी मूकीए. ठवणिज्झाइं के० स्थापवा योग्य ठे. णोउद्दिसिज्झंतिके० उद्देश ते सामान्य कथन, ते चार ज्ञानने नथी. णोसमुद्दिसिज्झंतिके० समुद्देश तेविशेषे कथन नथी. णोअणुन्नविज्झति के०अनुज्ञा पण न थाय. एटले उद्देश समुद्देश अनुज्ञानी क्रिया ठे ते न थाय; जे कारणमाटे मतिज्ञानादिक चार ज्ञान अपातुं लेवातुं नथी: तेमाटे सुअनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुन्ना अणुउंगो पवत्तइ के० श्रुतज्ञाननो उद्देश समुद्देश अनुज्ञा अने अनुयोग ते अर्थ कथन प्रवर्त्ते ठे. जइ सुअनाणस्स उद्देसो समुद्देसो अणुन्ना अणुउंगो पवत्तइके० जो श्रुतज्ञाननां उद्देशादिक चारवाना प्रवर्त्ते ठे. किंअंग पविठस्स उद्देसो४पवत्तइके०तो शुं अंगप्रविष्टना उद्देशादिक चार प्रवर्त्ते ठे के अंग वाहिरस्स उद्देसो४पवत्तइके० अंग बाह्यना उद्देशादिक चार प्रवर्त्ते ठे? जे माटे श्रुतज्ञाननो अंगप्रविष्ट आचारांगा

दिक पण ठे, अगबाह्य आवश्यकादिक पण ठे, माटे पूठधुं जे अगप्रविष्टनो के अंगबाह्यनो ठे? अंगपविठस्स विउद्देसो ४ के० अगप्रविष्टनो पण ठे अने अ गबाह्यनो पण ठे इम पुण पठवण पडुच्च अग बाहिरस्सके० ए आश्रीने ता अ गबाह्यनो ठे जे शिष्यने जेहनो उद्देशादिक प्रवर्त्ततो होय तेहनु नाम दीजीए ए आ लावो अनुयोगद्वारने धुरे विस्तारे ठे, अहींयां सक्षेपे लख्योठे माटे तिहां जोइ लेना

उद्देशादिक क्रमविण जे नणे ॥ आशाते तेह नाण ॥ नाणा
वरणी रे बाधे तेहथी ॥ नगवइ अग प्रमाण ॥ स० ॥ ३ ॥

अर्थ –उद्देशादिक के० उदेश समुद्देशादिकनां, क्रमविण के० अनुक्रमविना जे सूत्रनणे, आशातना करे ठे तेह के० ते प्राणी, तेहथी के०ते ज्ञानना आशात नाथी, नाणावरणी के० ज्ञानावरणी कर्म बाधे नगवइ अग प्रमाण के० नगव ती नामे पाचमुं अग, ते प्रमाणे -एटले नगवतिसूत्रमां कह्यु ठे ते लखी ठेए ॥३॥

॥ नाणावरणिज्जकम्मसरीरपगउगबधेण नते कस्सकम्मस्स उदएण गोयमा नाणपडिणीयाए नाणनिएह्वणयाए नाणतराए नाणप्पउसेण नाणासायणाए नाणविसवायणायोगेण नाणावरणिज्ज कम्म सरीरप्पउग बधइ ॥ इति ॥अथ– नाणावरणिज्ज इत्यादि– ज्ञानावरणि कर्म शरीरनो जे प्रयोगसाबध ते कस्स क म्मस्स उदएण के० कोण कर्मना उदये करीने, एटले ज्ञानावरणी साथी बधा य? इति नाव प्रन्नुजी कहे ठे हे गौतम, नाणपडिणीयाए के० ज्ञाननु प्रत्यनीक पणु ते अनिष्टनु आचरण करे नाणनिएह्वणयाए के० ज्ञाननु उलववु करे ए टले ज्ञान अने ज्ञानी कोइरीते अन्नेद ठे माटे ज्ञान जे पासे नण्यो तेहने उलव नाणतराएण के०, ज्ञानना अंतराय करवे एटले ज्ञान नणनारने नात पाणी व स्त्र उपाश्रयना लाननु निवारण करे तथा नाणप्पउसेण के० ज्ञानने प्रद्वेष करीने एटले अंतर प्रीति ज्ञान ज्ञानी उपर न राखे तथा नाणासायणाए क० ज्ञानना आशातना करे ने ज्ञानीनी जाति हीले नाणविसंवायणाजोगेणक० ज्ञानना विसवाद विपरीत प्ररूपणा करे नाणावरणिज्ज इत्यादि एम करता जीव ज्ञानावरणी कर्म बांधे इति नगवती सूत्रे वली नगवती प्रमुख अगन उद्दे तपयोगविधि लेशथी कह्योज ठे तेहनो लेश लखीए ठेए ॥ पन्नत्तीए आ इमाण अठएह सयाण दो दो उद्देसगाउद्दिसिज्जति णवर चउठसय पढमे दि वसे अठ त्रितीय दिवसे दोउद्दिसिज्जति एवमाउ सयाउ आरब्जावइपाव

तावइयं उद्दिसिय्वइ उक्कोसेणं सय एगदिवसेणं मज्झिमेणं दोहिं दिवसेहिंसयं ज हन्नेणं तिहिं दिवसेहि सयं एवं जाव वीसइमं सयं णवर गोसालो एगदिवसेणं उद्दिसिज्जंति जइ सो विउ एगदिवसेणं अणुन्न विज्जइ अहनविउ आयंबिल डुगे णं अणुस्स विज्जंति ॥ अर्थ.–पन्नतीएके० नगवती सूत्रनेविषे, आइमाणं अठएहं सयाणके० धुरना आठ शतक ते दो दो उद्देसगाउद्दिसिज्जंतिके० बे बेउद्देसा उद्देशीए, णवरके० एटलुं विशेष जे, चउहसयं पढमे दिवसे अठके० चोथा शतकना पहेले दिवसे आठ उद्देशा, बितीय दिवसे दो उद्देसा उद्दिसिज्जंतिके० बीजे दिवसे बे उद्देशानो उद्देश करीए. हवे णवमाउ सयाउ आरम्भके० नवमा शतकथी मांमीने जावइयं पावे के० जेटलुं नणे. तावइयं उद्दिसिज्जइके० तेटलो उद्देशीए. उक्कोसेणं सयं एगदिवसेणं के० उत्कृष्टुं एक दिवसे शतक, मझिमेणं दोहिं दिवसेहिं सयंके० मध्यम बे दिवसे शत क, जहन्नेणं तिहिं दिवसेहिं सयंके०जघन्यथी त्रणदिवसे शतक उद्देशीए एवं जाव वी सइमं सयंके० एम यावत् वीशमा शतक लगे कहेवुं. णवरके० एटलुं विशेष जे, गोसा लो एगदिवसेणं उद्दिसिज्जंतिके० गोशालानुं पन्नरमुं शतक एक दिवसे उद्देशीए. जइ सो विउके० जो ते बुद्धिवंत होय तो एगदिवसेणंअणुन्न विज्जंतिके० एकेदिवसे अनुज्ञा क रीए. अहनविउके० जो बुद्धिवंत न होय तो आयंबिल डुगेणं अणुस्स विज्जंतिके०बे आंबिले अनुज्ञा करीए. एटले ए नाव जे पूर्वे जेटलुं नणता तेटली क्रिया करावीने नणावता, ते माटे एम कह्यु जे बे दिवसे बे आंबिलनी क्रिया करावीने अनुज्ञा करावे. सूत्रं ॥ एगवीस बावी तेवीसइमाइं सयाइं एकेक दिवसेणं उद्दिसिर्यंतिके० एकवी शमुं, बावीशमुं, ने तेवीशमुं शतक ते एकेक दिवसे उद्देशीए. इत्यादिक सर्व वातो योग विधियो जणाय. हवे पाठ अधूरोछे, ते सूत्र लखीए ठेए. जे माटे कोइ सामाचारी नेदे तथा काल नेदे आधुनिक क्रिया फेर दीसेछे माटे अर्थ नथी लखता. ॥

चउवीस इमंसयं दोहिं दिवसेहिं छछ उद्देसगा बंधरायाइ अठसयाइं एगेणं दिवसे णं सेढीसयाइं बारस एगेणं एगिंदिय दसहिं जुम्म सयाइं बारस एगेणं दिवसेणं एवं बेंदियाणं बारस्स तेंदियाणं बारस चउरिंदियाणं बारस असन्नि पंचिदियाणं बारस सन्निपंचिंदिय महा जुम्म सयाइं एगवीसं एगदिवसेणं उद्दिसिबंति रासि जुम्मसयं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जइ ए त्रीजी गाथानो अर्थ ॥ ३ ॥

श्री नंदी अनुयोगडुवारमां ॥ उत्तराध्ययनेरे योग ॥ काल
ग्रहणनोरे विधि सघलो कह्यो ॥ धरिए ते उपयोग ॥ स० ॥४॥

त्र, गयण चउप्भाग साव सेसंमिके० आकाशनो चोथोभाग, सावसेसंके० थाकतो रहे तेवारे, वेरत्तियंपिकालं पडिलेहित्ताके० वेरती काल ग्रहण पण, कुज्जाके० करे एटले ग्रहे. ॥ पोरसीए चउप्भागे वंदित्ताण तउ गुरुं अप्पडिक्कमित्ता कालस्स भाय णं पडिलेहए ॥ १ ॥ अर्थ.—पोरसीए चउप्भागेके० पोरसीनो चोथो भाग बाकी रह्यो. पहेला पहोरनो एटले ७ घडी दिवस चढे. वंदित्ताण तउ गुरुं के० गुरुने वंदना करीने, अप्पडिकमित्ता कालस्सके० कालविरतित् पडिकमे. भायणं पडिले हएके० भाजन पडिलेहे. शामाटे जे सज्झाय पाछली पोरसीए करवो छे; माटे काल न पडिकमे. अहीयां पाभाइ काल बोल्यो. पोरसीए चउप्भागे, वंदित्ताण तउ गु रुं पडिक्कमित्ता कालस्स सिज्झंतु पडिलेहए ॥ १ ॥ अर्थः— पोरसीए चउप्भागे के० पोरसीने चोथे भागे, अर्थात् दिननी चोथी पोरसीने चोथे भागे गुरुनेवंदना करीने पडिक्कमित्ता कालस्सके० काल पडिकमीने. सिज्झंतु पडिलेहएके० सिज्झा जे वसति ते पडिलेहे. एटले प्रात.काले पाभाइ काल पडिकम्यो न होय तो ते सां जे पडिक्कमे. तथा वसती पडि लेहे ते बीजा काले, कालग्रहणना मांमला करे. इति ॥ पारिय काउसग्गो वंदित्ताणं तउ गुरु थुइ मंगलं चउकाउं कालं संपडिले हणए ॥१॥ अर्थ.— पारिय काउसग्गो के० पडिक्कमणानी विधिने छेडे काउसग्ग करीने गुरुने वांदीने, थुइमंगलं चउकाउंके० स्तुति, परमेश्वरना गुणनी—तद्रूप मंगल करीने, कालंसंपडिलेहए के० काल पडिलेहे. एटले कालग्रहण लीए. अ हींयां वाघाइ काल आव्यो. ॥ पोरसीए चउभ्भीए कालंतु पडिलेहया ए सज्झायं त उकुज्जा अबोहंतो असंजए ॥ १ ॥ पोरसीए चउछीएके० रातनी चोथी पोरसी, कालंतु पडिलेहयाएके० काल जे वेरती काल ते लीए. पछी सज्झायं तउ कुज्जाके० सज्झाय करे. अबोहंतो असंजएके० असंजमीने अणजगावतो. पोरसीए चउप्भा गे वंदित्ताण तउ गुरुं पडिक्कमित्ताकालस्स कालंतु पडिलेहए ॥ १ ॥ अर्थ.—पोर सीए चउप्भागे के० पोरसीने चोथे भागे. एटले पाछली बे घडीराते गुरुने वंदना करीने पडिकमित्ता कालस्स के० काल जे वेरतीकाल पडिकमीने, कालंतु पडिले हएके०काल जे पाभाइ काल ते पडिलेहे. एरीते सूत्रमा जोगविधि साक्षात् बता व्यो छे. तेहनो विधि ए मूढा, केवल सूत्र उपर केम जाणे? वली उत्तराध्ययनम ध्ये अध्ययन ओगणीशमे कह्यु छे. ॥ यथा ॥ काल पडिलेहणाएणं भंते जीवे किं जणइ कालपडिलेहणाएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ १ ॥ अर्थ.—कालके० वाघाइकाल, अढरतिकाल, वेरतिकाल, अने पाभाइकाल—एनी पडिलेहणाएणं

तंजहा ॥ अंणिदाणयाए १, दिठिसंपन्नाए २, जोगवाहियत्ताए ३, खंत्ति खमणयाए. ४, जितेंदियत्ताए ५, अमाइल्लयाए ६, अयासत्थयाए ७, सुसामणयाए ८, पवयण वच्छल्लयाए ९, पवयण उन्नावणाए १० ॥ अर्थ.—दशहिंठाणेहिं के० दशे स्थान के, एटले दशे कारणे जीव, आगमेसिनदा कत्ताए के० आगल आवते नवे, न इ एटले कल्याण छे जेहने, सुदेव, सुमनुष्यपणुं पामे तथा मोक्षरूप नद्र पामे. तंजहाके० तेहज दश कहेछे. अनिदान १, दृष्टिसंपन्न २, योगवाही ३, ए त्रण पूर्वे कह्या तेम खंतिखमणयाए के० क्षमाए खमता पण असमर्थपणे नही. ४ जित इंदियत्ताए के० इंद्रियनो निग्रह करतां ५, अमाइल्लयाएके० अमाइपणे करीने ६, अपासत्थयाएके० ज्ञानादिकने पासे वसे. एटले ज्ञानादिक मध्ये न वसे, ते पासत्थो, कहिए. ते पण देशपासत्थो सर्वपासत्थो. ते पासत्थापणुं ज्या नही ते अपासत्थो कहीए. तेणे करीने, ७ सुसामणयाएके० मूलोत्तरगुण सहित साधुपणुं करते. ८ पवयणवच्छल्लयाए के० प्रवचन जे द्वादशांगी अथवासंघ तेहनुं वात्सल्य ते हितकारपणुं एटले प्रत्यनीकने शिक्षा देवे करी ९ पवयण उन्नावणाए के० ते द्वादशांगीनो अथवा संघनो उन्नावन धर्म कथावाद लब्धि जशवाद बोलवे करीने १० एहमा जोग वहिवा कह्या ते माटे साधु तथा श्रावक पोताने उचित नणे पण तपक्रिया विशेष करीने नणे. ते आगली गाथामां देखाडे छे. ॥ ५ ॥

योग वहीने रे साधु श्रुत नणे ॥ श्रावक ते उपधान ॥ तपउप
धाने रे श्रुत परिग्रह कह्या ॥ नंदीए तेह निदान ॥ स० ॥ ६॥

अर्थः—योगवहीने साधु ते श्रुत नणेके० साधु ते योगवहीने सिद्धांत नणे; श्रावक ते उपधान के० श्रावक, उपधान वहीने सूत्र नणे. तप उपधाने के० तप उपधाने करीने श्रुत परिग्रह कह्या के० श्रुतनुं परिग्रहण के०; ग्रहण करे. एम कह्यु छे. ते एम श्रावक क्या कह्या छे? ते कहे छे. नंदीएके० श्रीनंदीसूत्रमध्ये कह्यु छे. तेह निदान के० तेमाटे योग उपधान कहीएछेए. यतः ॥ सुअपरिग्गहा तवो वहाणाइ इति. अर्थ—सुअपरिग्गहा के० श्रुतनो परिग्रह करे. तवो वहाणाइ के० तपउपधान सहित, इतिश्री नंदीसूत्रे. इति षष्ठी गाथार्थ ॥ ६ ॥

इरियादिकनां रे पट उपधान छे ॥ तेणे आवश्यक शुद्ध ॥ गृहि
सामायिक आदि श्रुत नणे ॥ दीक्षा लेइ अशुद्ध ॥ स० ॥ ७ ॥

श्री दशवैकालिक मध्ये केम कह्यु जे ॥ पढम नाण तओ दयाके० प्रथम ज्ञान ने पछी दया ज्ञानविना दया केम पाले? माटे श्रावक ए लेखे सूत्र जणे ते उत्तर वाळेछे प्रथम ज्ञान ने पछी दया कहीछे ते कोने कहीछे? तेउपर थागनु पद कह्युछे तिहां सजत गुण रेहके० त्यहां सजत कह्याछे गुणनी रेखासरला मुनि एवा होय यत ॥ पढमनाणं तओ दया एव चिठ्ठइ सव्व सजए ॥ एम दश वैकालिकनो पाठ छे माटे श्रावकने केम जोडोछे? पण सव्व सावए एवु नथी कह्यु तो एह वचनथी शो सदेह उपजेछे' इत्यष्टमी गाथार्थ ॥ ८ ॥

नवमे अध्ययनेरे वीजा अंगमा ॥ घरमा दीव न दीठ ॥ वलिय

चउदमेरे कह्यु शिक्षा लहे ॥ ग्रथ तजे ते गरिठ ॥ स० ॥ ९ ॥

अर्थ – नवमे अध्ययनेरे वीजा अगमाके० वीजु अग जे सूगडाग सूत्र तेहना नवमा अध्यननेविषे एम कह्युछे घरमा दीव न दीठके० घरमा गृहस्थे दीवो न दीठो, माटे दीक्षा लेछे ॥ यत ॥ गिहे दीव म पासता पुरिसा दाणिया नरा ते धीरा वधणु मुक्का नावकखति जीविय ॥ १ ॥ इति सुगडाग सूत्रे नवमे अध्ययने अर्थ –गिहे दीवम पासता के०घरनेविषे सूत्ररूप दीवो नथी देखता, ते माटे पुरिसा दाणिया नरा के० पुरुषो आदेय नामना धणी, एह्वा पुरुष, सूत्ररूप दीवा देखवाने ते धीराके० ते धीर, वधणमुक्का के० ससार वधन छाडे एटले दीक्षा आदरे छे नावकखति जीवियके० असयम जीवितव्ये जीववु नथी वांछता ए गाथार्थे पण सूत्र घरमां जणता नथी दीसता वलिय चउदमे कह्यां के० वली सूगडांग सूत्रनाज अध्ययन चौदमे कह्यु शिक्षा लहे के० शिक्षा पामे एटले सूत्र जणवारूप शिक्षा पामे कोण पामे? ते कहे छे ग्रथ तजे के० परिग्रह छांडे ते गरिठ के० गुण गरिष्ठ होय ते एटले निर्ग्रंथ थाय ते शिक्षा सूत्रनी पामे इति गाथार्थ–हवे चौदमा अध्ययननी गाथा लखीए छेए॥ गथविहाये हच सिक्खमाणे उठायसु वभचरेव सिक्खा उवायकारी विणयतु सिक्खे जे छेय सेविप्पमायं न कुज्जा ॥ १ ॥ अस्यार्थ, गथविहाय के० परिग्रह छाडीने इह सिक्खमाने के० सूत्र जणतो थको उठायके० चारित्रमा सावधान थइने सुबभचरेवसिक्खा के० जनी रीते ब्रह्मचर्यनेविषे वसे उवायकारी के० उपायनो करणहार एटले रत्नत्रयनो आराधक, विणयतु सिक्खे के०, विनयप्रत्ये शीखे जे छेएके० जे निपुण छे तेवि

नये करीने मानले एटले ए समुदाय अर्थ जे प्रभुजीए साधु साध्वीने कह्यु जे श्रावक थका उपसर्ग खमे छे, तो तमे द्वादशांगी प्रमुखना जाणनारा छो, माटे तमा रे तो विशेषे उपसर्ग सहेवा इति जाव एहमां एम कह्यु जे, श्रावक वगर जण्या विना सद्दहवताछे. इति तात्पर्यार्थ तएणसे कामदेवे के० तेवार पछी ते कामदेव समण जगव पसिणाइ पुच्छइ के० श्रमण जगवानने प्रश्न पूछे इति सूत्रार्थ-न जी उपासगदशांगमध्येज कुंमकोलिया नामा जगवानना श्रावकनो अधिकार छे यथा ॥ कुंमकोलियाइ समणे जगव महावीरे कुंमकोलियं एवं वयासी सेनूण कुं मकोलिया कल्लं तुज्भ पुव्वावरण्ह काल समयंसि असोगवणियाए एगेदेवे अंति य पाउ जविछा तएणं सेदेवे णाममुद्दं च तहेव जाव पडिगए सेनूण कुंमको लि या अछेसमछे हंताअछित धन्नोसिणं तुमं जहाकामदेवे ॥ व्याख्या -कुंमकोलि याई के० हे कुंमकोलिया, एहवु आमंत्रण करीने. समणे जगव महावीरे के० श्रमण जगवान महावीर, कुंमकोलियाय के० कुंमकोलियाश्रावकप्रत्ये, एवं वयासी के० एम कहेता हवा सेनूणं कुंमकोलिया के० हे कुंमकोलिया ! निश्चे, क ल्लं के० गइ काले, तुज्भके० तुजने, पुव्वावरण्हकाल समयंसि के० मध्यान्ह सम यनेविषे, असोगवणियाए के० अशोकवाडीनेविषे, एगेदेवे अंतिय पाउ जविछा के० एक देवता प्रगट थयो तएणं सेदेवे के० तेवारे ते देवता, णाममुद्दंच के० ताहरी नाममुद्रा, तहेव जाव पडिगए के० तेमज यावत गयो, एटले यावत् श ब्दे एम सूचव्यु नाम मुद्रा वस्त्र देवताए लीधा, प्रश्न पूछया तेना ते जवाब उ त्तर कह्या अनुक्रमे निपृष्ट व्याकरण कर्ये थके, देवता पाछो गयो सेनूण कुं कोलिया के० ते निश्चे हे कुंमकोलिया अछेसमछे के० ए अर्थ साचो हंता अ छि के० प्रभुजीने कहे छे हे जगवन् सत्य तंधन्नोसिणंतुमं के० प्रभुजी कहे छे, धन्य छो तमे, जहा कामदेवे के० जेम पूर्वे कामदेव कह्या छे तेम कहेता एम साधुने बोलावीने प्रभुजीए कह्यु जे, घरमां रह्या श्रावक पण एम करे छे, तो तमे तो द्वादशांगीना धरनारा छो तमने विशेषे एम जोइए इति जो श्रावक, हुं जाणता होत तो एम कहेत नहीं इतिजाव

अहींया कोइक एम कहेजे " द्वादशांगीना जाणनारा कह्याछे ते द्वादशांगी ज णी न शके पण थोडु घणु जाण्या होशे " तेहने उत्तर देछे— नवि आचार ए दिक ते कह्या के० आचारांगादिकना धरनारा श्रावक नथी कह्या एटले ए अ जे ॥ अप्पेगइया आयारधरा अप्पेगईया सूयगडधरा ॥ एम एकादशांगादि अ

नायव्वो ॥ १ ॥ व्याख्या –जोसुत्तमहिज्जंतो के० जे सूत्र जणतो, सुएण उंगाहइ उ सम्मत्त के० श्रुते करीने सम्यक्तने अवगाहे अगेण के० अगे करी, वके० अ थवा बाहिरेण के० अंगबाह्ये करी, सोसुत्तरुइत्ति नायव्वो के० ते सूत्ररुची जा णवो इति उत्तराध्ययने अध्ययन अठ्ठावीशमे

हवे एनो उत्तराध्ययननी गाथाथी पण श्रावकने सूत्र जणवु नावे, जे मने सूत्रजणे समकित अवग्गहे ते त्रापइजल अवग्गहे ए दृष्टांत जाणवु एटले उउ ठतुठे तेहने अवग्गाहे ए दृष्टांत ठता समकितनेज साधुने अवगाहवु आवु पण मिथ्यात्वीथको सूत्र जणीने सम्यक्त्व पामे एम तो पेलो वादेजो हाय, ॥ पण न कहे काङ्क्षा मोहनीय कर्मना उदयथी शंकित नावठे, ते साधु जणतो नि शंकित करे, पठी नि शंकित सूत्ररुची नामे सम्यक्त्व अवगाहे, ए सुधो अर्थ मान वो वली मिथ्यात्वी ते अन्यतीर्थी कहीए, अने अन्यतीर्थीने सूत्र जणावे ता च रमासनु प्रायश्चित्त आवे एम अहींयाज आगल कहेवाशे, तो जणवु तो वेगलु रह्यु, ते विचारजो इति एकादशमी गाथार्थ ॥ ११ ॥

सूत्रे दीधुरे सत्य ते साधुने ॥ सुर नरने वलि अठ ॥ सवर
द्वारेरे बीजे एम कह्यु ॥ अंग दशमे समरठ ॥ स० ॥ १२॥

अर्थ –सूत्रे के० सूत्रथी, दीधु के० आप्यु सत्य के० साधु बीजु व्रत साधुने के० मुनिने एटले परमेश्वरे मुनिने सूत्रथी सत्य आप्यु सुर नरने वलि के० व ली देवता अने मनुष्यने, अठ के० अर्थथी सत्य आप्यु सवरद्वारे बीजे एम कह्युठे अग दशमे के० श्रीप्रश्नव्याकरणनेविषे, समरठ के० समर्थपणे कह्युं ठे तथाचतत्पाठ ॥ तं सच्च नगवत तिठगर सुनासिय दशविह चउदसपुव्वीहिं पाहुमठ वेइय महरिसीणय समयप्पदिन्न देविंद नरिंदे नासियठ्ठ ॥ इति व्याख्या०–जे सत्य, पूर्वोक्त नगवतपूज्य, बीजु व्रत तीर्थंकरनु सुनाष्यु दशवि ह के० दश प्रकार, जिणवयस्सम्मय ठवण इत्यादि पूर्वे कह्याठे, ते सिद्धांत प्रसि द्ध जाणवा तथा चौदपूर्वधर, पाहुमठ विदिय के० पाहुडो जे पूर्वगत ग्रंथ विशेष जेम अध्ययन उद्देशादिक कहीए तेम–तेहने अर्थ विदित जाणवु तथा महरिसीण के० उत्तम साधु –तेहने, समय के० सिद्धांत, पदिन्न के० दीधु ए तावता सिद्धांत वीतरागे साधुनणी दीधुं सत्यवचन जाणे नाषे ते माटे ए अर्थ एम जाणीए ठैए जे, श्रीवीतरागनी आज्ञाए साधुनेज सूत्र जणवु, पण सूत्र गृ

एव समणस्सा सवयसा सकायसा पडिजागरमाणे निग्गथे महाणिज्जरे पज्जव-
सणे जवई ॥ व्याख्या —तिहिंठाणेहिं समणे निग्गथेके० त्रणे स्थानके श्रमण निग्गंथ
प महाणिज्जरे के० मोटी कर्मक्षपणा, महापज्जवसाणे के० अत्यंत पर्यवसान
न एटले समाधिमरण करे माटे फरी मरवु नही माटे ए मोटो अंत, नवसारी
होय—ते कयाण अहं के० केवारे हुं, अप्पवा बहुवासुअं अहिज्जिस्सामि के०
थाडु घणु श्रुत जणीश? १ कयाण अहं एकल्लविहार पडिमं उवसंपज्जित्ता
विहरिस्सामिके० केवारे हुं, एकलविहार प्रतिज्ञा अंगीकार करीने विचरीश? २ क-
या अहं अपच्छिममारणंतिएके० छेली मरण संबंधी संलेहणा झूसणा झूसिए के०
संलेखणा जे तप—ते तपनी झूसणा जे सेवा—ते सेवाए करी झूसिए के० सहि-
यथा छे, जत्तपाण पडियाइक्खिएके० जात पाणीना पच्चक्खाण करीने जहने-पाउ-
वगए के० पादपोपगम अणसण करी कालमणवकखमाणे विहरिस्सामि के०
मरण अणइच्छतो हुं केवारे विचरीश? ३ एव के० एरीते, सक० ते साधु, समणस्स
के० मने करी सहित, सवयसाके० ते साधु, वचने करी, सकायसा के० तथा
पु कायाए करी— एटले त्रिकरणे करी, पडिजागरमाणे के० प्रतिजागरण करतो,
थको, निग्गथेके० निग्रंथ, महाणिज्जरे महापज्जवसाणे जवइ एहना अर्थ पूर्वनी पे-
रे साधुना त्रण मनोरथ कह्या हवे श्रावकना कहीए छैए ॥ तिहिंठाणेहिं सम-
णोवासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे जवइ तंजहा, कयाण अहं अप्पवा बहुवा प-
रिग्गहं चइस्सामि? कयाण अहं मुंडे जवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइस्सामि ?
कयाण अहं अपच्छिममारणंतिय संलेहणा झूसिय जत्तपाण पडियाइक्खिए पा-
ओवगए कालमणवकखमाणे विहरिस्सामि ३ एव समणस्सा सवयसा सकायसा
पडिजागरमाणे समणोवासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे जवइ ॥ अस्यार्थ—
त्रण स्थानके समणोवासए के० श्रावक महा निर्जरा महापर्यवसान करे ?
तंत्र त्रण स्थानक कहे छे केवारे हुं थोडो घणो परिग्गह के० धन धान्यादिक
नव प्रकारनो परिग्रह छांडीश? केवारे हुं, मुंडे जवित्ता के० मुंड थइ, अ-
णगारियं पव्वइस्सामि के० अगार जे घरवास छांडीने अणगारवास अंगीकार
करीश? त्रीजो मनोरथ मरणनो पूर्वनी पेरे जाणवो ऽनि ठाणांग त्रीजे ठाणे ॥
ए वली कह्यु छे ॥ सत्तुंजया ठवणाए तया गाहाणुगीया नरगणनन्द
सहुणा मंत्र गुणा वंदया ऽल्लहयने समणासिजाउं ॥ १ ॥ अस्या मल्ल-
ऽल्लहरने त्रिजुवनिकहेन सत्तुंजया के० मालादो ते अर्थ तेना

या के० वचनअल्पनृत एवी गाथा. एटले धर्मोपदेशनी गाथा. अणुगीया के० अनुकूलपणे कही. तित्थयरे के० तीर्थंकरे कही; एटलुं वाहेरथी लेइए-नर संयमम्झे के० मनुष्यना संयमध्ये कहीछे. ज के० जे गाथा सांजलीने-एटलुं वाहेरथी लेइए. जिक्कुणो के० मुनि. सीलगुणोववेया के० शील ते क्रिया. गुण ते ज्ञान-तेणे उववेया के० युक्त यइने इहज्जयंते के० जिनप्रवचननेविषे यत्न करेछे. वाहारथी अर्थ लेइने सूत्र व्याख्यान करवु माटे एम कहीए में पण ते गाथा सांजलीने. समणोमिजाउ के० हुं श्रमण थयो. इति-ए उत्तराध्ययनने तेरमे अध्ययनने मेले पण साधुनेज सूत्र जणवुं इति त्रयोदशमीगाथार्थ ॥ १३ ॥

हवे जे ग्रहस्थने जणावे तेहने दोष देखाडेछे,

वाचन देतांरे गिहिने साधुने ॥ पायछित्त चउमास ॥ कह्युं निशीथेरे तो शुं एवडी ॥ करवी होंस निराश ॥ स० ॥ १४ ॥

अर्थ – वाचन देतांरे गुरुने साधुने एहवो पाठ कोइ लेखकना दोषथकी जणायछे. शामाटे जे निशीथनो तादृश अर्थ वेसतो नथी. माटे वाचना देतांरे गिहिने साधुने ॥ एवो पाठ प्राये हशे. एम गुरुनो उपदेशछे. हवे अर्थः– वाचना देतां गिहिनेके० ग्रहस्थने वाचना देतां एटले ग्रहस्थने सूत्र जणावतां साधुने पायछित्त चउमासके० साधुने चतुर्मास प्रायश्चित्त आवे कह्यु निशीथेके० निशीथसूत्रमां कह्यु छे. तो शुं एवडी करवी होस निराशके० तो एवडी आशा विना होस शी करवी? एटले कोइ छेकाणानी सूत्रसाखनी आशाविना शी वात करवी? यत ॥ से जिक्कूवाणिउत्थियंवा गारछियवा वाएइवायंत वासाइज्जइ तस्सणं चाउम्मासिय ॥ व्याख्या– सेजिक्कूके० जे मुनि अणउछियंवाके० अन्य तीर्थने गारछियवाके० गृहस्थने वाएइके० वाचना आपे. वायंतवासाइज्जइके० वाचना आपता सहाय दीए, तस्सणं चाउम्मासियंके० तेहने चार मासनुं प्रायश्चित्त ॥ इति निशीथसुत्रे ओगणीशमे उद्देशे अहीयां मूर्ख ढुंढिआ गृहस्थ ते अन्यतीर्थीना गृहस्थ कहेवा जाय पण अन्यतीर्थमां ते तो आवी गया. इति चउदमी गाथार्थ.

वली कोइक कहेशेजे पोतानी मेले सूत्र वाचीने जणतां शो दोष? तेहने कहीए जे ॥ गुरुवायणे वागयं ॥ एवु अनुयोगद्वारमध्ये कह्यु छे. त्या गुरुवाचनोपगत गुरुवाचनाए आव्युं. इति तथा वली जे ॥ आयरिय उवज्झायाणं अदिणं गिर आइअइ आयायंत वासाइज्जइ ॥ इति-आचार्य उपाध्यायनुं अदिणंके० अ

खाण करीने आहार करे एम कह्यु, अने सिद्धांतमा तो व्रतभंगे महादोष ना एम कह्यु ए केम? १९ पन्नवणामा अढारमा कायस्थितिपदे स्त्रीवेदनी कायस्थि तिना पांच आदेश कह्या, ते सर्वज्ञमतमा पाच वातशी? ए केम? २० ठाणां पांचमे ठाणे उद्देशे बीजे राजपिंड न लेवो एम कह्यु, अने अंतगड वर्ग छठ्ठे अ ध्ययन पांचमे गौतमजीए श्रीदेवीने घेर आहार लीधो ए केम? २१ समवायां मां ज्यां प्रभु विचरे त्यां चारे दिशाए इति न होय एम कह्यु छे, अने विपाक सू त्रमां तो पोते समोसर्या थका अन्यप्रसेन प्रमुख केम मार्या गया? २२ एम वि पाकमां अध्ययन बीजे पण छे ते केटला लखाय? एम श्रीभगवतीमां सुनक्षत्र अने सर्वानुभूति समोसरणमां बळ्या, पोताने लोहीखणवाडो थयो ए केम? २३ तथा समवायांगमां उपासकनो बोध छे, तेमां श्रावकनां चैत्य कह्यां छे अने उपासकमां तो नथी ए केम? २४ भगवतीमां शतक आठमे उद्देशे छठ्ठे साधुने अप्रासुक अनेषणीक वहोरावतो घणी निर्जरा करे, अल्प पापकर्म बांधे, एम क ह्युं छे, अने ठाणांगे ठाणे त्रीजे उद्देशे पहेले साधुने अप्रासुक आपतो अल्प आ युष बंधाय ए केम? २५ ठाणांगे ठाणे पांचमे उद्देशे बीजे पांच महानदी उत रवी ना कही, अने वळी बीजा भगवता सूत्रमां हा कही ए केम? २६ वळी व ळी ज वर्षाकाळे रह्या तेहने ग्रामानुग्राम विचरवु न कल्पे, वळी कह्यु जे पांच का रणे कल्पे ए केम? २७ दशवैकालिके तथा आचारांगे त्रिविधे प्राणातिपात वा रे, तथा समवायांग दशाश्रुतस्कंधे नदी उतरवी कही ते मोकळी राखी ते केम समरे? ए केम? २८ कल्पसूत्रमां वर्षाकाळमां नियमने नवविगइ वार वार ले वी न कल्पे, एटले कोइक वेला लीए एम कह्यु छे, अने सूयगडांगना बीजा श्रु तस्कंधमां अध्ययन बीजे साधुवर्गने कह्यु जे न कल्पे ए केम? २९ तेम कल्प सूत्रे कह्यु छे तथा भगवती सूत्रना शतक आठमे उद्देशे नवमे कुरमाहार नाखीनु आ दर्शन? ए केम? ३० दशवैकालिके अध्ययन त्रीजे लुण प्रमुख अनाचीर्ण कह्यु अने आचारांगना द्वितीय श्रुतस्कंध अध्ययन पहेले उद्देशे दशमे लुण वहोराव्युं होय तो ते खावे, मानातिक्रने वहेची आपे एम कह्युं ए केम? ३१ भगवती सूत्रे भग वंतने नीच तीन कह्यां अने उत्तराध्ययनना छत्रीशमे अध्ययने नीच कह्यां ए केम ३२ आचारांगना द्वितीयश्रुतस्कंधे ईर्याध्ययनमां जाणता थका पण नदी नावने, तथा दशवैकालिके त्रिविधे मृषावाद वर्जे ए केम! ३३ भग वतीमां केवळ तीर्थंकरने सूर्योदय काळे केवळज्ञान उपन्यु कह्यु छे ने दशाश्रुत

मां नेमि स्वामिने पाछले पहोरे केवलज्ञान उपन्युं. ए केम? ३४ वली समवा यांगे तेमज ज्ञातामां मल्लिनाथने दीक्षादीनने पाछले पहोरे केवलज्ञान उपन्युं कह्युं. ए केम? ३५ उत्तराध्ययन बारमे अध्ययने जक्षे ब्राह्मणने हण्या कह्युं छे ने उववाइमां दशप्रकारनुं वेयावच्च कह्युं तो हण्या तेहने वेयावच्च कह्युं ए केम? ३६ ज्ञातामां कह्युं जे मल्लिनाथे त्रणसे स्त्रीउं, त्रणसें पुरुषो तथा आठ ज्ञातकुमार–ए लेखे छसे आठ साथे दीक्षा लीधी, अने ठाणांगमां सातमे ठाणे तो पोते सातमां एटले छ पुरुष साथे दीक्षा लीधी. एम कह्युं छे ए केम? ३७ ठाणांगमा कह्युं जे छ मित्र साथे दीक्षा लीधी, अने ज्ञातामां केवलज्ञान उपन्या पछी छ मित्रोए दीक्षा लीधी ए केम? ३८ उत्तराध्ययन सोलमे पशुपंमगरहित वसति सेवेतो ठाणांगे पाचे स्थानके साध्वीभेला वसे कह्युं. ए केम? ३९ सूयगडांग सूत्रमा द्वितीय श्रुतस्कंधे पांचमे अध्ययने कह्युं जे दानने प्रशंसे ते प्राणी वृद्धिने पामे छे. तथा निषेध करतो सामानी वृत्ति छेद थाय माटे न बोलवुं. एम कह्युं; अने भगवतीना शतक आठमे उद्देशे छठे श्रमणोपासकने असंजतने आपतो एकांते पापकर्म करे, पण निर्जरा काइ नथी ए लेखे मूलगी ना कही. ए केम? ४० जंबुद्वीपपन्नत्तीमा योजन पांचसेनुं नंदनवन तेहमां हजार योजननो बलकूट पहोलो मूले छे. ए केम? ४१ एम समवायांगे गजदंता उपर हजार योजन पहोला तेमां हरि तथा हरिस्सहकूट केम समाया? ए केम? ४२ जंबुद्वीपपन्नत्तिमां रूषभकूट मूले आठ जोजन विस्तारे कह्यो, आगल एमांज पाठांतरे बार योजन कह्यो सर्वज्ञना भाष्यामां पाठांतर शो? ए केम? ४३ जंबुद्वीपपन्नत्तीमां भरतार्द्धनी जीवा नव हजार सातसे अडतालीश ने उगणीआ बार भाग कही अने समवायांगे नवहजार कही एटलो फेर केम? ४४ समवायांगे विजयादिक चारनी स्थिति जघन्ये बत्रीश सागरोपम, उत्कृष्ट तेतरीश सागरोपम, कही छे अने पन्नवणाना चोथा पदे जघन्ये एकतरीश, अने उत्कृष्टे तेतरीश कह्या ए केम? ४५ समवायांगे रूषभदेवजीने तथा महावीरने एक कोडाकोडीनो आंतरो कह्यो; तथा दशाश्रुत स्कंदमां रूषभजी काल करी गया पछी नेव्यासी पखवाडीयां गया पछी त्रेतालीस हजार वर्ष अधिक नेव्यासी पखवाडीआं उणां एक कोडाकोडी सागरोपमे वीर मोक्षे गया ए केम? ४६ सूयगडांगसूत्रमां कह्युजे आधाकर्मी आहार करतो कर्मे लेपाय पण खरो, तथा न लेपाय ए एक गाथामां बे वात. ए केम? ४७ वली एहज सूत्रे कर्मे न लेपाय कह्युं, अने भगवतीमां शतक पहेले उद्देशे नवमे

आधाकर्मी आहार करतो सातकर्म बांधे सिथिल होयतो गाढ करे इत्यादि ए
केम? ४८ समवायांगे तेतरीश हजार योजन काइक ऊणु चक्षुस्पर्शे सूर्य आवे ए
म कह्यु, अने जंबुद्वीपपन्नतीमां बतरीश हजार एक योजन झाझेरा चक्षुस्पर्शे
सूर्य आवे ए केम? ४९ समवायांगे मेरुनी तलेटी दशहजार योजन पहोंनी ते
एम कह्यु छे, अने जंबुद्वीपपन्नतीमां दश हजार नेवु झाझेरी कहीछे ए केम? ५०
भगवतीसूत्रना शतक आठमे उद्देशे दशमे जीवने पुद्गल कहीए तथा पुद्गली क
हीए एम कह्यु छे ए केम? ५१ समवायांगे मेरुना सोल नाम कह्या छे, तेमा
आठमु प्रियदर्शन कह्यु छे तथा चौदमु उत्तर कह्युछे, अने जंबुद्वीपपन्नतीमां सा
ज नाम छे तेमां आठमु शिलोच्चय कह्युछे अने चौदमु, उत्तम कह्युछे ए केम? ५२
पन्नवणामां अठावीशमे पदे छद्मस्थने अणाहारी उत्कृष्ट बे समय कह्याछे
ने भगवतीमां उत्कृष्टा अणाहारीना त्रण समय कह्याछे ए केम? ५३ एमज जीवा
भिगमे बे समय भगवतीए समय त्रण ए केम? ५४ समवायांगे समण भगवान
महावीरने बतालीश वरस झाझेरो साधुपर्याय कह्यो, अने पर्युषणाकल्पमां बे
तालीश पुरा कह्या ए केम? ५५ जीवाभिगमे रुचकद्वीपथी असंख्यातु मान कह्यु
अने जीवाभिगमने लेखे ठाण वमणा गणता एक निखर्व चार अबज पचाशी क
रोड छतेर लाख मान आवे वली त्रिप्रत्ययावतार गणे तो रुचकद्वीपनु मा
न ११००८२२३४३५३६००००० थाय, अने भगवती सूत्रमां शतक छठे उद्दे
शे सातमे तथा अनुयोगद्वारे एकसो चोराणु आंक लगे ता संख्यातु गण्यु, वली
पलनाने माने संख्यातु तो वेगलु रह्यु, पण असंख्यातु आवे ता रुचकद्वीप अ
संख्यनो केम थया? ५६ समवायांगे आठतरीशमे समवाए मेरुना बीजा कांड
आडत्रीश हजार योजन उंचो कह्यो, तथा सोलमे समवाये प्रथम कांड एक
ठ हजार योजननो उंचो कह्यो, जंबुद्वीपपन्नतीमां हेठलो कांड एक हजार
योजनना बाहुल्यं कह्योछे, मध्य कांड त्रेसठहजार योजननो बाहुल्य कह्यो, ऊप
रलो कांड छत्रीशहजार योजननो बाहुल्य कह्यो, एम सर्व पूर्व अपर द
क्षिण लाख योजन बाहुल्य छे ए लाख योजन बाहुल्यपणे जंबुद्वीपमां कह्या ते
थारे बीजा नदीओ, पर्वत अने सात क्षेत्र ए सर्व केम माया? ५७ तथा ह
जी के बाहुल्य ते वेचपणु हशे तो पूर्व अपरनो शो अर्थ? तथा उपरनु ह
ठेना एम समवायांगे नवाणु हजार योजन ते भागे कर्ह्यो तेमा प्रथम एक
हजार अने बीजो आडत्रीश हजारनो कह्यो जंबुद्वीपपन्नतीमां काडा सहित त्रण

गे वहेंच्यो; तेमां प्रथम एकहजारनो. वीजो त्रेसठहजारनो अने त्रीजो ठत्री शहजारनो· ए सर्व केम? ५८ समवायांगे नंदनवननुं विष्कंभ नवहजार न वसे योजननुं कह्युं. अने जंबुद्वीपपन्नतीमां नवहजार नवसे चोपन जाकु कह्यु. ए केम? ५९ प्रश्नव्याकरणे तथा समवायांगे भवनपति वीश, चंद्र सूर्य वे, अने सोधर्मादिक दश एवं वत्रीश इंद्र कह्या, अने जंबुद्वीपपन्नत्तीमां रूपभ निवार्णे सौधर्मादिक दश. भवनपति वीश, व्यंतर सोल अने चंद्रसूर्य वे–एव अड तालीश इंद्र कह्या. ए केम? ६० ठाणांगे ठाणे वीजे इंद्र चोसठ कह्या. ए केम? ६१. उववाइमां जघन्यथी सात हाथनी कायावाला मोक्षे जाय· वली कह्युं जे जघन्यथी वत्रीश अंगुल सिद्धनी अवगाहना होय. ए लेखे वे हाथनी जघन्य थ ई. ए केम? ६२. भगवतीसूत्रना शतक चउदमामां उद्देशे आठमे सिद्धशिला थी अलोकदेशे उणु योजन कह्युं, अने उववाइमां संपूर्ण योजन कह्युं. ए केम? ६३. समवायांगे ठठ्ठा नरकना मध्यभागथी ठठ्ठा घनोदधिनो चरमांत ओगणा एंसीहजार योजन कह्यो, जिवाभिगमे पृथ्वी उपरना घनोदधिनो चरमांत एक लाख ठत्रीश हजार योजन अंतर कह्यो तो जिवाभिगमे एक लाख ठत्रीश ह जारनुं अर्धकरतां अडसठ हजार योजन थाय. ए केम? ६४. समवायांगे अठ्ठा णुमे समवाये रेवती नक्षत्रथी जेष्ठा लगी ओगणीश नक्षत्रना तारा अठ्ठाणुंछे; अने समवायांगमांज भिन्न भिन्न भेला करतां सत्ताणु थायछे. ते एम के. रेवती नक्षत्र ना वत्रीश. अश्वनीना त्रण, भरणीना त्रण, कृत्तिकाना ठ, रोहिणीना पांच, मृग शिरना त्रण. आर्द्रानो एक. पुनर्वसुना पांच. पुष्यना त्रण, अश्लेषाना ठ, मघा ना सात, पूर्वाफाल्गुनीना वे, उत्तराफाल्गुनीना वे, हस्तना पांच, चित्रानो एक, स्वातिनो एक. विशाखाना पांच. अनुराधाना चार अने जेष्टाना त्रण–एव सत्ताणुं ए केम? ६५. पन्नवणामा पंदरपदे घाणइंद्रियनो नवयोजननो उत्कृष्टो विषय कह्यो, अने गयपसे णीमा वारसे तथा पांचसेनो कह्यो. ए केम? ६६ भगवतीसतक ठठे उद्देशे सातमें प ल्योपमनुं मान कह्युं, तेम अनुयोग द्वारेपण कह्यु; पण भगवतीमां असंख्याता खंमविना कुछ नथी. तेणे करी आरानां मान कह्या सप्रयोजन कह्युं, अने अनुयोगद्वारे भगव तीउक्त ते निःप्रयोजक कह्युं. सूक्ष्म अद्धापल्योपम सप्रयोजक कह्युं. तेणे नारकी प्रमुखना आयु मविए. इत्यादिक घणी वातोछे. ए केम? ६७. [illegible] तेत्री शमे पदे असुरकुमार जघन्यथी पच्चीश योजन अवधि तथा [illegible] अन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग कह्यो. ए केम? ६८ [illegible] बादर

मनुष्य क्षेत्रमा होय तो उत्तराध्ययन उंगणीशमे नरकमा अग्निकाय कह्यो ए केम? ६९ वली उत्तराध्ययनना बावीशमा अध्ययनमां शौरीपुरमा धुरे श्री नेमिनाथ कह्या, दीक्षा लेतां द्वारिकानगरीमाथी नीकल्या तथा रामकृष्ण वंदना करी द्वारिकामां गया, तो शोरीपुर पूर्वमा अने द्वारिका पश्चिममा—ए केम? ७० ठाणांगे ठाणे सातमे, अतीतउत्सर्पिणीमा आ जरतनेविषे सात कुलगर थया, वली ठाणे दशमे कह्यु के दश कुलगर थया ए केम? ७१ वली एमज आवती उत्सर्पिणीमा ठाणे सात थशे, अने दशमेठाणे कह्यु के दश थशे ए केम? ७२ जीवाभिगमे सौधर्म ईशान देवलोक बरावर रह्याछे अने जगवतीसूत्रना एकत्रीसमा शतके सौधर्मथकी ईशान देवलोक लगारेक उंचुछे ए केम? ७३ जगवतीसूत्रमा शतक त्रीजे उद्देशे बीजे असुरकुमारनो तीर्छोगतिविषय, असंख्याता द्वीपसमुद्रनो कह्यो नंदीसर लगे गया अने जशे एम कह्य तथा शतक बीजे उद्देशे सातमे चमरनी सुधर्मसजानेविषे पुछ्यु, त्यां कह्यु जे, मेरु पर्वतथी दक्षिणदिशा तीर्छा असंख्याता द्वीपसमुद्र उलंघीए त्या अरुणवरद्वीपनी बाहेरनी वेदिकाथी अरुणवरसमुद्र बेतालीश हजार योजने तिगिच्छकुडनामे उत्पात पर्वत आवे इत्यादि—एमा असंख्याता द्वीपसमुद्र उलंघी अहीया आवे ए केम? ७४ श्री जगवतीसूत्रना शतक पहेले उद्देशे बीजे सम्यक्दृष्टि नारकीने महावेदना कही अने जगवतीसूत्रना शतक अढारमे उद्देशे पांचमे समकिती नारकीने अल्पवेदना कही ए केम? ७५ अंतगडे कृष्णने नेमिनाथे बारमो अमम नामे तीर्थंकर थइश, एम कह्यु, अने समवायागनेविषे चोवीश तीर्थंकरना पूर्वजवना चोवीश नाम कह्यां तेमा श्रेणिक १, सुपार्श्व, २, उदय ३, इत्यादिक गणनाए कृष्ण वासुदेव तेरमा कह्या ते केम? ७६ जगवतीना शतक आठमे उद्देशे नवमे पचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्यने विकुर्वणा काल अंतर्मुहूर्त्तनो कह्यो, अने जीवाभिगमे चार मुहूर्त कह्या एकेम? ७७ जगवतीसूत्रना शतक आठमे उद्देशे दशमे जघन्य, ज्ञान दर्शन चारित्रनी आराधना वालो, त्रीजेजवे मोक्षे जाय सात आठ जवतो न उलंघे तथा शतक बारमे उद्देशे नवमे नरदेवनो आंतरो जघन्यथी सागरोपम काजेरो, उत्कृष्टो अपार्द्धपुद्गलपरावर्त्त होय, नरदेवपणु तो सम्यग्दृष्टि चारित्रिया नीपजावे एकेम? ७८ जगवतीसूत्रना शतक पांचमे उद्देशे चोथे ऊंघतो थको सात आठ कर्म बांधे, उत्तराध्ययनना अध्ययन छवीशमे त्रीजे पहोरे रात्रे निद्रा करे एकेम? ७९ उत्तराध्ययनना उंगणीशमा अध्ययने कह्यु जे, मांस पोताना शरीरमाथी नरकमा खवराव्यां

जीवाभिगममां असंघयणी कह्या तो संघयणविना मांस क्यांथी! एकेम? ८०
पन्नवणामां बीजे पदे ॥ छिवेणं संघयणेणं ॥ एम कह्युं अने जीवाभिगमे देवता
असंघयणी कह्या. ए केम? ८१ भगवतीसूत्रना शतक पांचमे उद्देशे आठमे समू
ऊँम मनुष्यने अडतालीश मुहूर्त अवस्थित काल कह्यो; अने पन्नवणामां चोवी
श मुहूर्तनो उत्कृष्टो विरह कह्यो. एटले कोइ ऊपजे पण नहीं अने कोइ चवे प
ण नहीं, अने भगवतीने लेखे चोवीश मुहूर्त लगे ऊपजे एटला चवे; एम अवस्थि
त काल कह्यो, ते अंतर्मुहूर्तआउखावालाने केम घटे? ८२ भगवती तथा सम
वायांगे शक्रस्तव पाठफेर केम? ८३ ठाणांगमां त्रीजे ठाणे उद्देशे पहेले पांच देव
नोके त्रणवर्ण कह्या. कृष्ण, नील. अने रक्त. जीवाभिगमे. लोहित, पीत अने
शुक्ल एकेम? ८४ पन्नवणामां प्रथम पदे पुद्गलना भेद पांचसे त्रीश थायछे; उत्त
राध्ययनमां चारसे व्यासी भेद थायछे. एकेम? ८५ प्रज्ञापनामां वीशमे पदे कि
ल्विपिआने जघन्यथी सौधर्मे अने उत्कृष्टे लांतके जाय. भगवतीमां किल्विपिया
जघन्यथी भवनपति. उत्कृष्टा लांतके जाय एकेम? ८६ कल्पसूत्रमां संहरता वी
प्रभु न जाणे, अने आचारांगमां कह्युं संहरतां जाणे, एकेम? ८७ आचारांगे
कह्युं जे प्रथम देवताने धर्म कही पछी मनुष्यने कहे, अने ठाणांगमां दश अछेरामां
अभाविया अप्पुरिसा ते शु? ८८ उववाइमां शुभ मन वचन काया उदेरयां क
यां अने भगवतीमा ए जतो कंपतो हिंसा करे कह्युं. एकेम? ८९ उपासकदशां
मध्ये आणंदश्रावके भगवंतने कह्युं जे हुं बारव्रत उचरीश; एम कहीने भातव्र
उचर्या, वली अतीचार बारे व्रतना कह्या एकेम? ९० इत्यादिक केटला लख्यां
य. ए सर्व टीका निर्युक्ति चूर्णिविना केवल सूत्रे मेलवी आपो, तो तमे शक लख्या
मेलवी जाणो? कोइ पाठांतर, कोइ अपेक्षा. कोइ उत्सर्ग, कोइ अपवाद. कोइ
कोइ विधिवाद. कोइ चरितानुवाद प्रमुख सूत्रना गंभीर आशय समुद्र भरखी
ना धणी टीकाकार प्रमुख जाणे. ते टीका प्रमुख तो तमे एक प्रतिमा छपे सर्व
यां. ए प्रसंगे लख्युं. ॥१६॥ हवे सूत्र अनुसरीए छए. पूर्वे भगवतीनी साखे त्रण
नो अनुयोग कह्यो हतो. वली निर्युक्तिना अक्षर देखाडेछे. गाथा कहेछे.

सूत्र निज्जुत्तिर भेक भेदे कह्ये ॥ त्रीजुं अनुयोगद्वार ॥ कूडा
कपटीरे जे माने नहीं ॥ तेहने कवण आधार ॥ म०॥१७॥

—सूत्र तथा निर्युक्ति—ए बेक भेदे त्रीजो अनुयोगके॰ त्रीजा अनुयोग हो

रमा कहेले एटले ए नाव जे श्री अनुयोगद्वार सूत्रनेविषे चार अनुयोग द्वार कह्याले. उपक्रम १, निक्षेप २, अनुगम ३ अने नय ४, तेमा त्रीजु अनुगम नाम अनुयोगद्वार तेहमां सूत्रानुगम, तथा निर्युक्तिअनुगम ए वे प्रकारना अ नुगम कह्योले तथाच तत्सूत्र ॥ अनुगमे डुविहे पन्नत्ते तजहा सुत्ताणुगमेय नि जुत्ति अणुगमेय ॥ एनो अर्थ तो पूर्वे आवी गयोले वली निर्युक्तिअनुगम त्रण प्रकारे कह्योले तेमज निक्षेपनिर्युक्तिअनुगम १ सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्तिअनुगम २, उपोद्घातनिर्युक्तिअनुगम ३ तेमा उपोद्घातनिर्युक्तिअनुगम २ मूलगाथाए कह्यो ले ॥ उद्देसे निद्देसे निग्गमे खेत्तकाल पुरिसेय ॥ कारण पच्चय लरकण णए समोया रणाणुमए ॥ १ ॥ किकइविहकस्सकहि, के सुकह के चिर हवइ कान ॥ क्ष सतरमविरहिय, नवागरिसफोसण निरुत्ति ॥ २ ॥ व्याख्या. उद्देशे के० . नाममात्र कहीवु जेम अध्ययन एवु नाम ? समुद्देशे के० विशेषे कहेवु सामायक अध्ययन २ तथा निग्गमेके० निर्गम कहेवो यथा सामायक क्याथी नीकट्यु ? ३ तथा क्षेत्र कहेवु ४ तथा काल कहेवु ५ यथा सामायिक कोणक्षे त्र कोण काले, नीकट्यु ? ६ महासेन वनमा वैशाखशुद ११ ने दिने पहेले पहो रे तथा पुरिसेअके० कोण पुरुषथी नीकट्यु ? ते कहेवु तथा, कारण के० शाका रणे गोतमादिक नगवतपासे सामायक सानलेले ? ते कहेवु तथा, पच्चयके० प्र त्यय कहेवो श्ये प्रत्यये नगवते कह्युं ? तथा गोतमादिके सानट्यु ? जेम केवल ज्ञानी ढु माटे कहुढु गणधरजीनेपण प्रत्यय सर्वज्ञनो थयो माटे सानन्ने ६ तथा, लरकणके० लक्षण कहेवु यथा समकित सामायिके श्रद्धाकरे ए लक्षण श्रुत सामायिके जाणे ए लक्षण देशविरतीसामायिके देशथी त्याग थाय सर्व विरती सामायिके सर्वथी त्याग करे इत्यादिक लक्षण ए नए के० नय क हेवा १० तथा, समोयारणा के० समवतार कहेवो अनुयोग नेला हता तेवारे समवतार हता आर्यरक्षितजीए अनुयोग निन्न कर्या पढी समवतार नथी ११ अणुमए के० कोणने कोण सामायिक अनुमत्त ले ? १२ इति प्रथम गाथार्थः ॥ किं के० सामायिक ते शु ? ते कहेवु तथा द्रव्यार्थिकनये जीवगुण प्रतिपन्न ते सामायिक १३ कइविह के० केटला प्रकारनु सामायिक ? यथा त्रण प्रकारे समकितसामायिक १ श्रुतसामायिक २, चारित्रसामायिक ३, इत्यादिक कहेवु १४ कस्स के० कोण पुरुषने सामायिक होय ? तेहनो उत्तर कहेले जेहने आ त्मा समतानावे परिणम्यो, तेहने सामायिक १५ कहि के० कोइनेविष सामा

यिक, तेह्मां तो क्षेत्र दिशि प्रमुख घणां द्वार कह्यां छे. १६ केसुं के० कोण सामायिक इव्यपर्यायने कहिए? १७ कहं के० केम सामायिक पामीए? त्यां मनुष्य, क्षेत्र, जाति कुल इत्यादिक विस्तार घणो छे. १८ केच्चिरंहवइकालं के० कोण सामायिक केटलो काल रहे? ते कहेवुं. १९ कइ के० केटला जीव कोण सामायिकना समकाले नवा पामता तथा पूर्व प्रतिपन्न पामे? ते कहेवुं. २० संतर के० ए त्रण सामायिकनुं अंतर कहेवुं; जे फरी पामे तो केहुं सामायिक केटले काले पामे ते कहेवुं? २१ अविरहियं के० ए त्रण सामायिक संततर रहेतो केहुं सामायिक केटलाकाललगे रहे? ते कहेवुं. २२ नवके० केटला नवमां उत्कृष्ट केहुं सामायिक आवे? ते कहेवुं. २३ आगरिस्स के० आकर्ष—एक नवमां कोण सामायिक केटली वार आवे अने जाय? तथा नाना नवमा कोण सामायिक केटलीवार आवे अने जाय? ते कहेवुं. फोसणाके० कोण सामायिकवंत केटलुं क्षेत्र फरसे? ते कहेवुं. २५ निरुत्ति के० निरुक्ति कहेवी. यथा सम्यग्दृष्टि कहीए. अमोह कहीए. जेम शोधीसद्भाव, दर्शनबोधि, अविपर्याय अने सुदृष्टि. ए समकितनी निरुक्ति. एम चारित्रनी निरुक्ति पण कहेवी. २६ ए बेउ मूल गाथा अनुयोग द्वारमध्ये छे. तेह्नो संक्षेपअर्थ कह्यो. एह्ना उत्तर सर्व, विस्तारथी तो आवश्यक निर्युक्ति तथा टीका तथा विशेषावश्यक थकी जाणवो. पण निर्युक्ति तथा टीका तथा नाष्य न माने तेह्ने ए बे गाथाना अर्थनुं ठेकाणु कीयुं? ए बे गाथाए निर्युक्ति मानवी कबुल थइछे. मूर्खलोक कदाग्रहे न माने तो शुं थयुं? पण मध्यस्थने तरत नजरमां आवे. ते माटे निर्युक्ति न माने तो सर्व सूत्र न माने. सूत्रनो अनुयोग निर्युक्तिने हाथे छे. कूडा के० ते कुमति, कूडाछे. जूठा छे. जे माटे सर्व सूत्रना पाठमां वांकु बोले छे. कपटी के० मायावी छे. जे माटे टीका प्रमुखने जोइने सूत्रना अर्थ बंध बेसारे, अने पूछीए तेवारे कहे शे जे, अमें टीका प्रमुख न मानीए. इत्यादिक कपटना करणहार छे. जे माने नहीं के० एवा जे कुडा कपटी निर्युक्ति प्रमुख न माने, तेह्ने कवण आधार के० ते प्राणीने संसारसमुद्रमां पडतां कोण आधार थाशे? कोइ नहीं थाय. इतिनाव. इति सप्तदशमी गाथार्थ ॥ १७ ॥ वली निर्युक्तिना पाठ देखाडे छे.

बद्ध ते सूत्रेरे अर्थ निकाचिया ॥ निजुत्तिए अपार ॥ उपधिमां
न गणणादिक किहां लहे ॥ ते विणु मार्गविचार ॥ स० ॥ १८ ।

अर्थ –वद्दते के० बाध्या ते सूत्र जाणवा अर्थ के० अर्थ, निकाचिआ के० निकाच्या, ते निज्जुत्तिए के० निर्युक्तिनेविषे, अपारके० घणा अर्थ–एटले ए नाडे नदीसूत्रनेविषे ॥ णिवद्द णिकायया जिणपन्नत्तानावा ॥ एवु सूत्रछे तेहमा णिब के० सूत्रे गुथ्या जे, नावके० अर्थ तथा, णिकाययाके० ते अर्थ निकाच्या ते नि र्युक्तिनेविषे ए अर्थ छे तो निर्युक्ति केम न माने? वली ॥ असखिज्जाउ निज्जुत्ति एहवा समवायाग प्रमुखमा पाठ ठामे ठामे छे उपधिमान गणणादिक्के० मा धिनु प्रमाण, तथा गणती इत्यादिक, किहा लहेके० क्या पामे? विणु मार्गविचा रके० निर्युक्तिविना जिनशासनना मार्गनो विचार, एटले ए नाव जे निर्युक्तिविना उपधिमान ते एवडा महोटा पह्योला ते क्या पामीए? तथा गणतीए केटला ग सवा? इत्यादिक घणी वातो मार्गनीछे, ते सर्व निर्युक्तिविना न लाने इति एवे एवु देखाडयु जे, लाबा लाबा रजोहरण राखेछे, तथा मुगटी पहेरेछे, इत्यादि कीआ सूत्रउपर करेछे? मुखे मुहपत्ति बाधी मार्गमा हीडेछे ते कीआ सूत्रउपर बांधेछे? उलटु सिद्धातमा तो न बाधवी जणायछे जेमाटे श्रीगौतमनी, मृग पुत्रने जोवा गया, तेवारे राणीए कह्यु के मुख बाधो जो बाध्यु होय तो बाधवा एम शु करवा कहे? वली मूर्खोने पूछीए छैए जे, नाक उघाडु राखाग तमा वा युकायनो घात थायछे तेवारे कहेछे जे दशवैकालिके ॥ मूहेणवा ॥ एवा पाठ छे पण नक्केणवा ॥ एहवो पाठ नथी तेमाटे मुखने वायरे वायुकाय हणाय पण नाकने वायरे न हणाय एम कहेछे तेने कहीए जे, मुख कह्यु तेमा नाक थावी गयु नहीतर मृगाराणीए कह्युं जे मुख बाधो, तेवारे नाक बांधवा का न कह्यु? काम तो नाशिकानु छे डुर्गंध थावे माटे कह्युछे ते माटे दशवैकालिक मध्ये पण मुख कहेता नाशिका थावी गइ जाणवी हवे ते कुमतिने निर्युक्ति जबाब देवानु ठेकाणु रह्यु नही, तेवारे बूडतो फेणना बाचका नर ए न्याये ज्यो के निर्युक्ति मानु तो खरी सूत्रमा कही ते ना केम कहेवाय? पण ते विछा गइ एम कहेछे ॥ १८ ॥ तेहने उत्तर बाजवा गाथा कहेछे

जो निर्युक्ति गइ कुमति कहे ॥ सूत्र गया नहीं केम ॥ जेह बाच
नाए आव्यु ते सवे ॥ माने तो होए खेम ॥ स० ॥ १९ ॥

अर्थ –जो निर्युक्ति गइ एम कुमति कहेछे तेहने उत्तर करेछे, तो सूत्र गयां न कहे केम के० तेवारे सूत्र गयां केम न कहे? जेमाटे ठाणांगसूत्रमां अनगारद्र

तथा अनुत्तरोववाइ तथा प्रश्नव्याकरण–ए त्रणनां अध्ययन कह्यांछे. ते हमणां नी वाचनाए नथी जणाता वली श्री समवायांगसूत्रमां प्रश्नव्याकरणनी हुंमी कहीछे; तेमांनुं प्रश्नव्याकरणमध्ये आज कांइ नथी. तेमाटे जेह वाचनाए आ व्युंके० जे पुस्तकारूढ वाचनाए जे गुरुपरपराए आव्यां सूत्र, ते मानीए तो नि र्युक्ति पहेला मानीए. चारित्र क्रियाना सर्व विशेष नाव निर्युक्तिमध्ये छे. तेमाटे वा चनाए आव्युं ते मानीए तो खेमके० कुशल वर्ते. एटले आत्माने हित थाय. ॥१९॥

एरीते शास्त्रवाते समजाव्या जाण पुरुष होशे ते समजशे; बाकी तो जेहवुं थाय तेहवु कहेछे.

आंधा आगल दरपण दाखवो ॥ बहेरा आगल गीत ॥ मूरख आगेरे कहेवुं युक्तिनुं ॥ ए सवि एकज रीत ॥ स० ॥ २० ॥

अर्थ.–आंधलाना मुख आगल दर्पण देखाडवुं, बहेराना मुख आगल गीतज्ञान करवुं अने मूर्खना आगल युक्ति कहीने समजाववुं. एसर्व एकज रीती जाणवी॥२०॥

मारग अरथीरे पण जे जीवछे ॥ नद्रक अतिहि विनीत ॥ तेहने ए हित शिख सोहामणी ॥ वली जे सुनय अधीत ॥ स०॥ २१ ॥

अर्थ.–पण जे मार्गना अर्थीलोकछे. एटले जे लोक जाणेछे जे शुद्ध मार्ग समजीए वली जे लोक नद्रकछे एटले कुवासनाए वासित नथी, वली अति वि नीतछे, तेहने ए सोहामणी के० मनोहर हितशिक्षाछे. वली जे सुनय के० न ले नये करी नण्याछे; एटले नद्रक अथवा समजुछे तेहने माटे कह्युछे पण अर्द्ध दग्धने माटे नथी कह्युं ॥ इति गथार्थ ॥ २१ ॥

प्रवचनसाखेरे एम ए नापिया ॥ विगते अरथ विचार ॥ तुज आ गमनीरे ग्रहिय परंपरा ॥ लहिए जग जयकार ॥ स० ॥ २२ ॥

अर्थ.–प्रवचन के० सिद्धांत साखे एम नाष्या, विगते के० प्रगटपणे अर्थना विचार, तमारी आगमनी परपराए ग्रहीए, तो जगतनेविषे जयकार पामीए.॥२२॥

गुण तुज सघलारे प्रनु कोण गणी शके ॥ आणा गुण लव एक ॥ एम में थुणतांरे समकित दृढ कर्युं ॥ राखी आगम टेक ॥ स० ॥ २३ ॥

अर्थः–हे प्रभु, तमारा सघला गुणो कोण प्राणी गणी शके? अनंताछे मा टे न गणाय. पण तमारी आणा कबुल करवी, तद्रुप जे गुण–तेहनो जे लेश, ते

कवलाहार मान्या विना ए सूत्र दिगबरने मिलतु नथी, ते माटे ए सर्व बूडते ब
उले वलगवुछे चोरासी बोलविचार मध्ये में लिख्युछे "सूत्रनमे परिसह कहे ग्यां
लिठे नकार, जो ससो उपजत नही, सो तुफ भ्रमको जार ॥ १ ॥ मोहन
विना वेदनीयकर्म स्वविपाक न देखावे, इस्यो कहेछे ते पण युक्ति शून्य एम
हेतां नामकर्मोदयज नित्त विहार देशनादिक केवलीने किम घटे? जो कहशो
नियतदेश नियतकाल फेवलीने स्वभावेज होए, पण इच्छाए न होए ते माटे म
हनीय कर्मनी अपेक्षा नथी उक्तच प्रवचन सारे—"ठाणणिसेय विहारा, धम्मुव
सोय णिय दिणा तेसि, अरिहताण काले, माया चायोव इत्थीण"

तो कवलाहार नियत देशकाले इच्छा विना केवलीने मानता शु जाएछे? क
कहेशो के, घाती मध्ये गणिया माटे, घाती समान वेदनीयकर्मज कह्यु छे ते घाती
कर्म गया पछी केवलीने स्वविपाक केम देखावे? उक्तच कर्मकांडे—"घादिव वे
यणीय, मोहस्सुदयेण घाददे जीव "इदिजादीणमझे, तम्हा गणिद कुवेदणि"

ते पण युक्ति शून्य जाणवु जे माटे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय म
ध्ये न्यु वेदनीय कह्यु त्यु आयुर्नाम गोत्रकर्म पण मोहअतराय मध्येज कह्यां, तेथी
ते पण घातवत् होइ जावे ते माटे ए सर्व पक्षपात कल्पना जाणवी इण री
वली जे वडी सरखा चार कर्म केवलीने कहेने ते पण परमार्थेरा अजाण कहेवा
एम कहेता तीर्थंकर नामकर्मविपाक पण तिम्यो हुइ जावे वेदनीय कर्मने केवलन
दग्ध रज्जुसमए पक्षपात मात्र शास्त्रविरुद्ध छे उक्तच सूत्रकृतांगवृत्ती "यदपि द
रज्जु स्थानक्मुच्यते वेदनीयस्य तदप्यनागमिकमयुक्ति सगतंच, आगमे ह्युद
दय सातस्य केवलिन्यभिधीयते सातासात योश्चांतर्मुहूर्त्त परिवर्त्तमानतया यदन्य
तोदय एव सातोदयोपीति"

केवलीने क्षुधा तृषा मानीएतो अनत सुखनो व्याघात थाए इस्या कहे ते
पण शून्य वचन जे माटे अनतसुख स्वस्थ केवलीने तो केवलज्ञान ह्र क्ष
याग्ग व्याघात उपचारी कह्युछे "जादसय समत्त, नाणमण तछ विछिद विन
रहिदेहु उगाहाइहि सुहति एय निय ग्वाणिदति"

पण परमार्थथी क्षायक अव्याबाध सुखगुण तो सिद्धनेज हुवे, उक्तच—"अ
ते सुखवीर्यं जवेचनि क्ष्यात् क्रमात्" जे प्रवचनसार मध्ये—"पुसफना धम्मी
ता, तसि किरिया पुणोहिदे दाय ईगा माहादीहि विरहिदा तह्मा सारगदिसिनिस
अस्ट पुण्यफलरूप अरिहत छे तेहने स्थान निषद्या विहारादि क्रिया स्वभ

नावनी जे कही छे, ते मोहादिक रहित; माटे क्षायिकज करी गणीये. इसी परि नाषा कही छे. ते भुक्ताहार क्रियामांहे पण बाधती नथी. जे कोइ कहे छेजे अनंतवीर्य केवली ने तेहने क्षुधा न बाधे. तेहने कहियें क्षुधादिकें वीर्यहाण न होय; पण बलापचय होय, माटे कवलाहार उदय नियत करेज. "बल शारीर वीर्यंचांतरः शक्ति विशेष" इति शास्त्रसिद्ध. आहार प्रमादरूपने. ते माटे छठागुण ठाणा लगेज हुवे. एहवुं जे कहेने, तिणे स्थाननिषद्या विहारादिक्रिया केवलीने केम करी कहेवी? आहार होएत्यां निद्रा होएज. ए व्याप्ति नथीज. वेदनीयकर्मउदयथी निद्रा क्वलाहार हुस्ये. अने दर्शनावरणीय कर्म गयाथी निद्रा नही हुवे. तस्मा द्विपरीति बाधक तर्का नावान्न व्याप्ति. कोइ कहेशे आहारसंज्ञा सातमे गुणठाणे नथी तो आगल किहांथी? आहार संज्ञाविना आहार केवलीने किम हुवे? ते जूठुं; जे माटे आहारसंज्ञा "खल्वाहाराभिलाष." इस्यो गोमटसार टीकाधुरे सातमे पन्नेज छे. ते माटे अभिलाषारहित आहार, अप्रमत्त साधुने होय, तिहां दूषण नथी. किंबहुना आवश्यकादिक क्रिया पण अप्रमत्तसाधुने विकल्परहित असंगक्रियारूप ने. पण वीतराग वचन प्रणिधान संकल्प पूर्व वचनक्रियारूप नथी तो आहारक्रिया प्रमत्तसाधुथी विलक्षण होए तेहनुं कांइ कहेवुं' अतएव विहार नादि क्रिया पण केवल व्यवहारानुगत छद्मस्थ व्यवहारथी भिन्न देखी चन्नाम न करवो. वचना असंगानुष्ठान भेद जाणवा. षोडशकग्रंथमध्ये श्रीहरिभद्रसूरिए आर्या कहीछे. "चक्रभ्रमणं दंडात्तदभावेचैव यत्परं भवति वचनासंगानुष्ठा नयोस्तु तद्ज्ञापकं ज्ञेयं." ए योगदृष्टि ग्रंथ श्रोताने अगोचर न रहे ते ग्रंथगं नाव सजा यरूपे बांध्यांछे. ते पण मोकलशुं

वली वाट्मात्र अध्यात्मी कहे छे के. सातावेदनीयनी उदीरणा सातमा गुणठाणाथी टली छे. तो केवलीने कवलाहार किम हुवे? तेहथी तो साता उदि राए छे. ते मिथ्या जेमाटे उदीरणा करण अंतरशक्ति विशेष छे बाह्ययोगानु गत नथी. नहीं तो स्थान निषद्यादि क्रियायें पण सातावेदनीयनी उदीरणा हुइ जाए. ते केवलीने स्वभावे छे; उदीरणारूप नथी ए वचन तो कवलाहार समान पण केवल स्वभाववाद मानियें तो बोधमत थाए. तेहनो केवलज्ञाननिर्धा न सानुपाक्षु विधिनेच स्वनाव वर्णनानंदमदये नियतश्च. इत्यादि स्या द्वादम जरि ग्रंथे उदयनाचार्यें निषेध्यां छे. इणने अर्थे —अस्मन्नानु यायं सरत्नि—इस्यो बोध करे छे. निरानें स्नाचार्य यदे छे. ए शब्दनो इण अर्थ ? सकल नतिरे द्वां

[illegible] केο [illegible] ते सूत्र जाणवा अर्थ केο अर्थे, [illegible]
[illegible] निर्युक्ति [illegible] अपारकेο घणा [illegible]
[illegible] जिनवचनना [illegible] ॥ एवु सूत्रे [illegible]
[illegible] तथा [illegible] केο ते अर्थ [illegible]
[illegible] केम न माने? [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] पाम्या पामे पामे छे [illegible] गणिमान [illegible]
[illegible] स्यादिक, [illegible] तेο क्यां पामे! [illegible]
[illegible] मार्गनो [illegible], [illegible]
[illegible] ते क्यां पामीए? तथा [illegible]
[illegible] मार्गनो, ते [illegible] निर्युक्तिना [illegible]
[illegible] तथा [illegible]
[illegible] मार्गमां [illegible] ते [illegible]
[illegible] जेमाटे [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

तथा अनुत्तरोववाइ तथा प्रश्नव्याकरण–ए त्रणनां अध्ययन कह्यांछे. ते हमणां नी वाचनाए नथी जणाता. वली श्री समवायांगसूत्रमां प्रश्नव्याकरणनी हुंमी कहीछे; तेमांनुं प्रश्नव्याकरणमध्ये आज काइ नथी. तेमाटे जेह वाचनाए आ व्युं के० जे पुस्तकारूढ वाचनाए जे गुरुपरंपराए आव्यां सूत्र. ते मानीए तो नि र्युक्ति पहेलां मानीए. चारित्र क्रियाना सर्व विशेष भाव निर्युक्तिमध्ये छे. तेमाटे वा चनाए आव्युं ते मानीए तो खेमके० कुशल वर्ते. एटले आत्माने हित थाय ॥१९॥

एरीते शास्त्रवाते समजाव्या जाण पुरुष होशे ते समजशे; बाकी तो जेहवुं थाय तेहवु कहेछे.

आंधा आगल दरपण दाखवो ॥ बहेरा आगल गीत ॥ मूरख
आगेरे कहेवुं युक्तिनुं ॥ ए सवि एकज रीत ॥ स० ॥ ७० ॥

अर्थः–आंधलाना मुख आगल दर्पण देखाडवुं, बहेराना मुख आगल गीतगान करवुं अने मूर्खना आगल युक्ति कहीने समजाववुं. एसर्व एकज रीती जाणवी॥२०॥

मारग अरथीरे पण जे जीवछे ॥ भद्रक अतिहि विनीत ॥ तेहने
ए हित शिख सोहामणी ॥ वली जे सुनय अधीत ॥ स०॥ ७१ ॥

अर्थ–पण जे मार्गना अर्थीलोकछे. एटले जे लोक जाणेछे जे शुद्ध मार्ग समजीए. वली जे लोक भद्रकछे एटले कुवासनाए वासित नथी. वली अति वि नीतछे, तेहने ए सोहामणी के० मनोहर हितशिक्षाछे. वली जे सुनय के० भ ले नये करी भण्याछे, एटले भद्रक अथवा समजुछे तेहने माटे कह्युंछे पण अर्द्ध दग्धने माटे नथी कह्युं ॥ इति गथार्थ ॥ २१ ॥

प्रवचनसाखेरे एम ए भाषिया ॥ विगते अरथ विचार ॥ तुज आ
गमनीरे ग्रहिय परंपरा ॥ लहिए जग जयकार ॥ स० ॥ ७२ ॥

अर्थ–प्रवचन के० सिद्धांत साखे एम भाष्या, विगते के० प्रगटपणे अर्थना विचार, तमारी आगमनी परंपराए ग्रहीए, तो जगतूनेविषे जयकार पामीए.॥२२॥

गुण तुज सघलारे प्रभु कोण गणी शके ॥ आणा गुण लव एक॥ एम
मे थुणतांरे समकित दृढ करचुं ॥ राखी आगम टेक ॥ स० ॥ ७३ ॥

अर्थः–हे प्रभु, तमारा सघला गुणो कोण प्राणी गणी शके ? अनंताछे मा टे न गणाय. पण तमारी आणा कबुल करवी, तद्रुप जे गुण–तेहनो जे लेश, ते

स्तवतां थकां में समकित दृढ कर्यु एटले कदापि काले चलुं नहीं एम ऋने आगमनी टेक राखी ॥ इति गाथार्थ ॥ २३ ॥

आणा ताहरीरे जो मे शिरधरी ॥ तो शु कुमतिनु जोर ॥ जिहा नवि पसरेरे बल विपधरतणुं ॥ किगारे ज्यहां मोर ॥ स० ॥ २४ ॥

अर्थ —तमारी आज्ञा जो में मस्तके धरी तो कुमति कदाग्रहीनु शु जोर चाले ते दृष्टांते दृढ करेछे त्यां विपधर जे सर्प—तेनु बल विस्तार न पामे के ज्यां मोर किंगारे के० केकारे शब्द करे ॥ इति गाथार्थ ॥ २४ ॥

पवित्र करीजेरे जीहा तुज गुणे ॥ शिर धरीए तुज आण ॥ दिल थी कहीएरे प्रभु न विसारीए ॥ लहीए सुजश कल्याण ॥ स० ॥ २५ ॥

अर्थ – तमारा गुण गाइने जीव्हा पवित्र करीए अने मस्तके तमारी आज्ञा धरीए एटले आज्ञाए मस्तक पवित्र करें दिलथी प्रभुने कदीए विसारीए नहीं ए रीने हृदय पवित्र करीए एम करता सुजश कल्याण पामीए एटले जना यशरूप कल्याण पामीए एमां कर्ताए पोतानु जशोविजय एवु जे नाम—ते पण सूचव्यु ॥२५॥

कलश ॥ राग धनाश्री ॥ वर्त्तमान शासननो स्वामि ॥ चामीकरसम देहोजी ॥ वीरजिनेश्वर मे एम थुणिउ ॥ मन धरी धर्म सनेहोजी॥एह तवन जे भणशे गणशे ॥ तस घर मगल मालाजी॥ समकितभाण होशे घट तेहने ॥ परगट झाक झमालाजी ॥ १ ॥

अर्थ —वर्त्तमान शासनना धणी श्रीवीरस्वामि, चामीकर के० सोना सरखी जेनी कायाछे एवा श्रीवीरस्वामि, जिनेश्वरके० सामान्यकेवलीमां ईश्वर एटले तीर्थंकर स्तव्यो मनमा धर्मस्नेह आणी भक्ति माटे एकवचनछे ए स्तवन जे प्राणी भणशे गणशे, तेहने घरमा मगलीकनी माला थशे तेहना घटनेविषे प्रकाशमान करतो थको, सम्यक्त्वरूप सूर्य प्रगट थाशे ॥ १ ॥

अर्थ एहना छे अति सूक्ष्म ॥ ते धारो गुरु पासेजी ॥ गुरुनी सेवा करता लहीए ॥ अनुभव नित्य अभ्यासेजी ॥ जेह बहुश्रुत गुरु गीतारथ ॥ आगमना अनुसारीजी ॥ तेहने पूछी सदाय चालो ॥ ए हित शिख छे सारी जी ॥ २ ॥

अर्थः–एहना अर्थ घणा सूक्ष्म छे. ते गुरुपासे आम्नाय धारी जोज्यो. गुरुनी सेवा करतां पामीए. शुं पामीए? ते कहे छे. अनुजव पामीए. शुं करतां? ते कहे छे. ए तवननो नित्य अन्यास करतां. जे बहुश्रुत होय, गीतार्थ होय आगमना अनुसारी होय, एटले पापन्नीरू, सत्यन्नाषी होय; तेहने पूछी संशय टालो. ए अमारी रुडी हितशिक्षा छे. इति द्वितियगाथार्थ ॥ २ ॥

इंदलपुरमां रहिय चोमासुं ॥ धर्मध्यान सुख पायाजी ॥ संवत सत्तर तेत्रीशा वरसे ॥ विजयदशमी मन न्नायाजी ॥ श्री विजयप्रन्नसूरि सवाया ॥ विजयरतन युवरायाजी ॥ तस राजे न्नविजनहित काजे ॥ एम में जिनगुण गायाजी ॥ ३ ॥

अर्थः–इंदलपुर अहम्मदावादनुं परु, त्यां चोमासुं रहीने धर्मध्याननुं घणुं सुख पाम्या. संवत १७३३ मे वर्षे विजयदशमी ते आशोशुद दशमे मन न्नायाके० मनने विषे न्नाव्या. हवे कवि पोताना आचार्यनी प्रशस्तिकहे छे. श्रीविजयप्रन्नसूरि तप गच्छनायक सवाइ थया. तेहने पाटे विजयरत्नसूरि युवराज पदे वर्त्तता एटले विजयप्रन्नसूरि थकां आचार्यपदे वर्त्तता न्नवजनना हितने काजे एम में जिन गुण गाया. इति तृतीय गाथार्थ ॥ ३ ॥ हवे पोतानी प्रशस्ति कहे छे.

श्री कल्याणविजय वर वाचक ॥ तपगछ गयणदिणंदाजी ॥ तास शिष्य श्रीलान्नविजयबुध ॥ न्नविजनकैरवचंदाजी ॥ तास शिष्य श्रीजीतविजय बुध ॥ श्री नयविजय मुणिंदाजी॥ वाचक जशविजये तस शिष्ये ॥ थुणीया वीरजिणंदाजी ॥४॥

अर्थः–श्री कल्याणविजयउपाध्याय तपगच्छरूप गगनने विषे दिनेंद्र के० सूर्य सरखा, तेउना शिष्य श्री लान्नविजय थया. बुध के० पंमित थया. न्नव्यप्राणी रूप, कैरव के० चंद्रविकासी कमल–तेहने विषे चंद्रमा सरखा. तेमना शिष्य बे थया. एक श्रीजीतविजय पंमित अने बीजा श्रीनयविजय–ते मुनिमां इंद्र सरखा. तेमना शिष्य वाचक उपाध्याय यशोविजय थया. तेणे वीर जिणंद स्तुव्या.॥४॥

दोसीमूलासुत सुविवेकी ॥ दोसी मेघा हेतेजी ॥ एह तवन में कीधुं सुंदर ॥ श्रुत अक्षर संकेतेजी ॥ ए जिनगुण सुरतरु

नो परिमल ॥ अनुभव तो ते लेशेजी ॥ भमर परे जे अ

रथी होइने ॥ गुरुआणा शिर वहेशेजी ॥ ७ ॥

अर्थ —दोसी मूलानो पुत्र घणो विवेकी जे दोसी मेघो तेने माटे कर्युं ए१
दग तवन एटले मेघजी दोसी ढुंढिया हता ते उपाध्यायजीए प्रतिबोध्याने ए
श्रद्धा रुपी—सिद्धांतने अक्षर संकेते ए जिनेश्वरना गुणरूप सुरतरु केº क
वृक्ष तेहनो परिमल एटले सुगंधतानोज अनुभव ते लेशे, के जे प्राणी भमरन
पेरे अर्थी थइने गुरुनी आज्ञा मस्तके वहे छे ॥ इति पंचम गाथार्थ ॥ ५ ॥
॥इति श्रीमहोपाध्यायश्री जशोविजयविरचित श्रीवीरजिनविचारस्तवन संपूर्ण ॥

अगमदिति अथ प्रशस्ति

गहिविजय देवाख्य स्तपोगच्छाधि नायक ॥ विख्यातस्त्रिजगत्यासीद्विद्यया गु
णसिंध ॥ १ ॥ तस्यपट्टोदयाद्रौश्री विजयप्रभसूरिराट् ॥ आदित्यइवतेजस्वी नि
रागवराक्रमी ॥ २ ॥ य सत्यविजयस्तस्या तेवासीत्यजिनायक ॥ क्रियोद्धा ह
नायेन प्राप्यानुज्ञागुरोरपि ॥ ३ ॥ विनेयस्तस्य कर्पूरो विजय स्तारिक सुधीः ॥
कीर्तिः स्फूर्जतियस्य प्रासरयेत्र विश्रुता ॥ ४ ॥ क्षमादिगुणसदनं क्षमाविजया
ह्वयः ॥ तस्यशिष्यो विनीतात्मा शिष्यानेकसमन्वित ॥ ५ ॥ शब्दशास्त्रादिशास्त्र
ज्ञा निजगणान्वित ॥ जिनादिविजयाह्वान स्तस्यशिष्य सुरूपवान् ॥ ६ ॥ ध
र्मविद्भक्ति शास्त्रतत्वविचारवित्॥ उत्तमाविजयस्तस्य शिष्यानूढगिरिधर ॥ ७ ॥
तत्प्रसादपुणानाऽत तृणतुल्येनधीमता ॥ पद्मविजयशिष्येण स्वपरानुग्रहार्थं ॥ ८ ॥
वर्णेरिदंमयानात चङ्गविनिचयन्मया ॥ संवत पंचमीरसे विक्रमादनुवत्सरे ॥ ९ ॥
मया वीरस्तवस्यायं स्तवार्थानाववोधक ॥ गुरुप्रसादत सम्यग् गतीर्थपाप्रसिद्ध
॥ १० ॥ विनिर्मितोयक ॥ श्रीविनयजिनेंद्रास्य स्मरेराज्येस्तोयम ॥ स्थिरवा
सिनायकस गतवन्यपुरेवरे ॥ ११ ॥ यत्किंचिद्दित्वयंप्रोक्त मतिमांद्यादजानता ॥
सद्भिर्विबुधैः शोध्यं विधायमयिसत्कृपा ॥ १२ ॥ वीरस्यशासन यावत् वर्तते वि
श्वे ॥ तावद्ज्ञानावबोधोय नित्तनातुध्यासन ॥ १३ ॥

इति श्री वीरजिनस्तुति गर्भित हुंडकमति निराकरणरूपा वीरस्तुति मू
लभाषार्थ १३० अक्षर ७ सर्व बालावबोध मेलवीने सर्वाग्रंथ ३०३१ अक्षर ११
मूल सर्वाग्रंथ ३३० अक्षर ७ टबाथी मेलवीने सर्वाग्रंथ २३०० अक्षर १४

अथ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायनो लखेलो कागल

॥ श्री जिनायनमः ॥ स्वस्तिश्रीस्त्तनकपार्श्वजिनं प्रणाम्य श्रीस्तंनतार्थनगरतः श्री जेसलमेरुमहादुर्गेन्यायाचार्योपाध्याय श्रीजगविजयगणयः सपरिकराः सुश्रावक पुण्यप्रनावक, श्रीदेवगुरुनक्तिकारक, श्रीजिनाज्ञाप्रतिपालक, गीतार्थपरंपराप्राप्तसा माचारीरुचिधारक, आगमाध्यात्मविवेककारक, मोक्षैकतान सर्वावसरसावधान, ना. हरराज शा. देवराज योग्यं धर्मज्ञानपूर्वकं लिखितं अत्रे धर्मकार्य सुखे प्रवर्त्तेते. अपर थारा कागद समाचार पाया, वाची बहुत सुख पाया, थारी नक्ति विनयप्रति पत्ति कागदरी सुणी चतुर श्रोता सना बहुत सुख पाइ. अत्र ज्ञानगोष्ठी गरिष्ठ ऐसी सनाठे. जे देखी थां सरखा ज्ञानप्रिय लोकने घणुं सुख उपजे ते प्रीठजो. तथा थें लिख्योठे के केवली कवलाहार करे, तिणरी युक्ति केम नथी लीखी? ते लखतां ग्रंथांतर थाए तेनणी नथी लिखी हुती बीजा सर्व प्रश्नरी युक्ति तो थानें पहोती. थांहरो दिल प्रसन्न हुउ. हवे ते युक्ति जाणवारी इहाठे तो शा० गदाधर महाराज हस्ते अध्यात्ममतपरीक्षारो बालावबोध लखावी आपस्यां तेथी सर्व प्रीठजो युं मति जाणांजे श्रीजिननद्रगणिक्षमाश्रमण, श्रीउमास्वातिवाचक, प्रमुखे दिगंबर मत निषेध्यो नथी श्रीहेमाचार्य प्रमुख अवार्चीन आचार्येज निषेध्युंठे. जे माटे श्रीविशे षावश्यक मध्ये सात निन्नव सर्व विसंवादी दिगंबर कह्युंठे उक्तंच॥ ठव्वास सएहिं नवु, त्तरेहिं सिद्धिं गयाउ वीरस्स. तो बोडियाण दिठ्ठी, रहवीर पुरे समुप्पन्ना ॥ १ ॥

इत्यादिक उपपत्ति कहीठे. ते विशेषावश्यक श्रीजिननद्रगणीक्षमाश्रमणकृतठे. तथा श्रीउमास्वातिवाचके प्रशमरति ग्रंथमध्ये साधुने धर्मोपकरण थाप्याठे. किं बहुना श्रीसूत्रमध्ये घणी स्त्री दीक्षा लेइ मोक्षे गइ कहीठे श्रीमल्लिनाथ स्त्रीपर्या य जे कह्याठे, चोराशी हजार स्याद्वादरत्नाकर ग्रंथ हतो. ते मध्ये बेतालीश ह जार ग्रंथ, महा तर्क युक्ति सहित स्त्रीमुक्ति उपरज हुतो. हवणां सर्व श्वेतांबर त र्कग्रंथ दिगंबरमत निर्दलकठे. ए मोहोटो अंतरठे. इणमें जो संदेह कीजे के ए श्वेतांबर युक्तठे के, दिगंबर युक्तठे? पठे जिन जाणे; तो परीक्षक लोकने वडी खामीठे. तेथी जो पण रागद्वेषी नाम धरावणो टलेठे, तो पण मिथ्यात्व आवेठे उगमपनयत. कमेलक प्रवेश न्यायः ॥ उक्तंचश्रीहेमाचार्येरयोगव्यवछेद द्वात्रिंशका

या ॥ सुनिश्चितमत्सरिणोजनस्य ननाथ मुद्रामति शेरते ते ॥ माध्यस्थमास्था गीरुकास्ते मणोच काचेच समानुबन्धा ॥ १ ॥

अर्थ –हे नाथ श्रीवीतराग देव! एमा सुनिश्चितछे, ते लोका मत्सरीने कु अतिक्रमता नथी एतावता मत्सरीजछे जे माध्यस्थ कहिये मध्यस्थपणा आम्याय के० श्रद्धा न करी तो परीक्षक छता मणिमा अने काचमां समानुबंधा मग्रे परिणामेछे काच रत्नरो अतर न देखावे मध्यस्थ रहे परीक्षक नाम पर अर्थ तिनने जनावे बीजो जितरो निर्णय थाए इतरो निर्णय करी परीक्षा गीतार्थनी आज्ञा प्रमाण करे अनिश्चित अर्थ साचोइ कहे, तो परीक्षक थाय मा पडे उक्तं सम्मतिमहातर्के–एयता सपृथ सन्नूयमणिन्निपच वयमाणो ना य परयाण रयणिकासद्दे पडइजाइ ॥ १ ॥

अर्थ –असत सन्नूत अर्थ दूर रहो सन्नूत अर्थ पण जो अनिश्चित के० मो रायान करे ता वादी लौकिक अने परीक्षिक लोक तेहनो वचनीय पथ के० प्र दा मार्ग तेहमां पडे, त माटे सदेह न करवो इति

बीजो जेय निग्रंथछे लाभांतराय कर्मना क्षयथी केवलीने दिव्य परमाणु घण लाभ लाभ हुइ रह्याछे ते माटे आहार कह्योछे केवलीने पण कवला नथी एतला थाय निर्माल्य किछ पेसे न आहार तो क्षायक नाइ जाय क्षा कार्य मिटे पणन क्षयग कार्य अने पुरुष विपाकी इमडो तो दिगंबर पूर्व न सरदे बीजु ज्ञानांतरायकर्मक्षयथी लाभज हुए, तो उपचयज हो ॥ त इ करइ ॥ ज्ञानावरणादिक कर्म जो छीजे हाय, तो तिणगे क्षय चयोपचय हो का बीजो गमाहार करन तेणे दिगंबर प्रक्रिया पण समजी नथी दिगंबर आ नाग्न्यविना केवलीने मर्मग आहार लेवा न माने 'शरीर दह उपग्राहाति इय प्रवचनसार वचनात् केवलीनामनयत ज्ञाना आकारनास्ननरतिमुक्तनभाग हा नत्वनमहिम्नामननापर्नीना गवाढारवर्गणा(छिपोदापिल्यइनितन मनानि श्रात वैक्रियवर्गणानुगनानामव नाणां श्रवणाजगयत्यांदार्गिक शरीरानुगता य र्रकरपत्त इति चन् किमर्थं नगरज्ञेगिष्यति वृछगायमिनिचर्नोगरि हिंदा उछराम करनाहार निमित्तायाप्य स्यल्पादल्पपरिस्पनायां प्रमाणानांग चन्दगागेरिम्दनिन्दास्नत्रेपिन छनिचागन करनदानानग नगरज्ञानग्रि नानछन्नेनानरनन्नगग मयागिनिनगागिर्यता इयमनाननानननि गानुगननननग्य्विग्निरद करनदानोनर प्रनिदग नायमानन्द नगर

नियमे मानानावादेतेन परमौदारिकत्वावच्छिन्नं हेतुत्वमप्यपास्तं अन्योन्याश्रया
किंचैवमन्वयव्यतिरेकाभ्यां केवलज्ञानस्यैवदिव्याहारहेतुत्व प्रसक्तौकारणकार्योपच
रादिनामतिज्ञानादेरिवपौद्गलकत्वप्रसंग इति न किंचिदेतत् इत्यादिकं अस्मत्कृत
शास्त्रवार्त्ता समुच्चयवृत्तौस्याद्वादकल्पलता नाम्न्यांदवार्थीः

केवलज्ञान वले मनेज आवी आहार वर्गणा जो केवल शरीरवृद्धि पोष हेतु
कहीश तो छुटुंछे. एहवो तो मनोभक्षीदेवतानेज होए. केवलीने एम कल्पीए तो
अदृष्ट परिकल्पना थाए. जे माटे औदारिक शरीरनी स्थिति पहेलां वृद्धि पुष्टता
कवलाहारेज दीठीछे. भगवंतमां औदारिक शरीरनी थति पहेलां तेह विनाश
छे, माटे व्यभिचार थाए केवलज्ञान पछी जे औदारिक शरीर स्थित्यादिक तिहा
दिव्याहार वर्गणाने हेतुपणु कहीए तेह न घटे. जे माटे निरंतर आव दिव्याहा
र परमाणु शरीरछे तिहांताइ चउदमे गुणठाणे पण लागी जाए एणेकरी पर
मौदारिक शरीरे ते हेतु ते पण निराकर्युं,जे माटे दिव्याणु संक्रमसिद्धि परमौदारि
कनी सिद्धि अने तेहनी सिद्धि दिव्याणु संक्रमसिद्धि ए अन्योन्याश्रय दोष था
ए. तथा एम करतां अन्वय व्यतिरेके केवलज्ञाननेज दिव्याहारपणु होए तेवा
केवलज्ञान पौद्गलिक हुइजाए; तो नियतकाल वेदनी उदयजनित कवलाहार
वलीने मानता शुं जायछे? जे सर्वं तत्र विरुद्ध अदृष्ट कल्पना कीजे. उक्तंच रत्ना
रावतारिकायां–"आहार पर्याप्ति नामकर्मोदय वेदनीयोदय प्रबल प्रज्वलजठर्य
ज्ञनोपतप्यमानोहि पुमानाहारमाहारयतीति"
अने केवलज्ञान उपन्या पछी मंदाग्निपणानो दोष थाए, एहवुं तो भगवे
केवलीने अग्यार परीसह श्रीभगवतीसूत्रमध्ये पण कह्याछे. तथा श्रीतत्वा
थे पण कह्याछे एकादशजिने इम्यो सूत्रछे. पण 'एकादश जिनंन' इम्यो
थी अने श्रीसिद्धसेनाचार्यकृतटीकामध्ये इम्यो व्याख्यान पण नथी. दिगं
सर्वार्थसिद्धटीकामांहे 'नसंति' इस्यो बाहिरथी लेवो कह्योछे ते सूत्रविरुद्ध
नकर्त्ता तो कुमतग्राहीमांछे ते लोकमां उपहासनीयछे. बीजो ए इत्तरो वि
वो के बादरसंपराये १७, सूक्ष्मसंपराये १४. इत्यादि अनुक्रमे "एकादशजि
सूत्र चाल्यो, तो विधि अधिकारे निषेध व्याख्यान पंडित होए ते केम करे?
वासनायें दिगंबर प्रमेय कमल मार्तंड ग्रंथ मध्ये इस्युं व्याख्यान कर्युंछे.
माधिकान दश एकादश' एतावता एक नही दश नही ने? ? ए परीसह नही
समास व्याकरण विरुद्धछे. ते श्रीस्याद्वादरत्नाकर मध्ये कह्युंछे. केवलीने

कवलाहार मान्या विना ए सूत्र दिगंबरने मिलतु नथी, ते माटे ए सर्व सूत्रे अ
चले वलगवुछे चोरासी बोलविचार मध्ये में लिख्युछे " सूत्रनमें परिसह क्
त्रिर्ड नकार, जो ससो उपजत नही, सो तुम भ्रमको नार ॥ १ ॥
विना वेदनीयकर्म स्वविपाक न देखावे, इस्यो कहेछे ते पण युक्ति शून्य छे
हेता नामकर्मोदयज नित विहार देशनादिक केवलीने किम घटे ? जो कहेशो
नियतदेश नियतकाल केवलीने स्वभावेज होए, पण इच्छाए न होए ते माटे
हनीय कर्मनी अपेक्षा नथी उक्तंच प्रवचन सारे-" ठाणाणिसेय विहारा, धम्मु
सोय णिय दिणा तेसि, अरिहताण काले, माया चायोव इत्थीण "
तो कवलाहार नियत देशकाले इच्छा विना केवलीने मानता शु जाएछे
कहेशो के, घाती मध्ये गणिया माटे, घाती समान वेदनीयकर्मज कह्यु छे ते
कर्म गया पछी केवलीने स्वविपाक केम देखावे ? उक्तंच कर्मकाण्डे-" घादिंव
यणीय, मोहस्सुदयेण घाददे जीव " इदिजादीणमज्झे, तम्हा गणिद इवेदणि
ते पण युक्ति शून्य जाणवु जे माटे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय म
ध्ये ज्यु वेदनीय कह्यु त्युं आयुर्नाम गोत्रकर्म पण मोहअंतराय मध्येज कह्या
ते पण घातवत् होइ जावे ते माटे ए सर्व पक्षपात कल्पना जाणवी
वली जे वडी सरखा चार कर्म केवलीने कहेछे ते पण परमार्थथी अजाण
एम कहेता तीर्थंकर नामकर्मविपाक पण तिम्यो हुइ जावे वेदनीय कर्मज
दग्ध रज्जुसम ए पक्षपात मात्र शास्त्रविरुद्ध छे उक्तंच सूत्रकृतांगवृत्तौ " यदपि
रज्जु स्थानकमुच्यते वेदनीयस्य लवप्यनागमिकमयुक्ति संगतच, आगमे ह्य
दय सातस्य केवलिन्यविधीयते सातासात योश्रातर्मुहूर्त परिवर्त्तमानतया
तोदय एव सातोदयोपीति "
केवलीने क्षुधा तृषा मानीएतो अनंत सुखनो व्याघात थाए इस्यो कहेछे,
पण शून्य वचन जे माटे अनंतसुख जवस्थ केवलीने तो केवलज्ञान रूप
योगा व्याघाते उपचारी कह्युछे " जादसय समत्त, नाणमण तह विछिद विमल
रहिदेहु उगाहाइहि सुहति एप जिय खाणिदति "
पण परमार्थथी क्षायक अव्याबाध सुखगुण तो सिद्धनेज हुवे, उक्तंच-' अ
ते सुखवीर्य जवेद्यविघ्न क्षयात् क्रमात् " जे प्रवचनसार मध्ये-" पुण्णफला अ
ता, तेसि किरिया पुणोहिदं दाय ईगा मोहादीहि विरहिदा तह्मा साखाइगित्तिमदा
प्रकृष्ट पुण्यफलरूप अरिहंत छे तेहने स्थान निपद्या विहारादि क्रिया उद

नावनी जे कही ने, ते मोहादिक रहित, माटे क्षायिकज करी गणीये. इसी परि नाषा कही ने. ते नुक्ताहार क्रियामांहे पण बाधती नथी जे कोइ कहे नेजेअ नंतवीर्य केवली ने तेहने क्षुधा न बाधे. तेहने कहिये क्षुधादिकें वीर्यहाण न होय; पण बलापचय होय, माटे कवलाहार उदय नियत करेज. "बल शारीरं वीर्यचांतर' शक्ति विशेष" इति शास्त्रसिद्धं. आहार प्रमादरूपने. ते माटे ठहागुण ठाणा लगेज हुवे. एहवुं जे कहेने, तिणे स्थाननिषद्या विहारादिक्रिया केवलीने कम करी कहेवी? आहार होएत्यां निद्रा होएज. ए व्याप्ति नथीज. वेदनीयकर्मउदयथी निद्रा कवलाहार हुस्ये. अने दर्शनावरणीय कर्म गयाथी निद्रा नही हुवे तस्मा द्विपरीति बाधक तर्का नावान्न व्याप्ति. कोइ कहेगे आहारसंज्ञा सातमे गुणठाणे नथी तो आगल किहांथी? आहार संज्ञाविना आहार केवलीने किम हुवे? ते जूठुं; जे माटे आहारसंज्ञा "खल्वाहाराभिलाष ' इत्यो गोमटसार टीकाधुरे सातमे पन्नेज ने. ते माटे अभिलाषारहित आहार, अप्रमत्त साधुने होए, तिहां दूषण नथी किंबहुना आवश्यकादिक क्रिया पण अप्रमत्तसाधुने विकल्परहित असंगक्रियारूप ने. पण वीतराग वचन प्रणिधान संकल्प पूर्व वचनक्रियारूप नथी तो आहारक्रिया प्रमत्तसाधुथी विलक्षण होए तेहनुं कांइ कहेवुं' अतएव निक्षाट नादि क्रिया पण केवल व्यवहारानुगत ठद्मस्थ व्यवहारथी निन्न देखी उन्नाग न करवो वचना असंगानुष्ठान नेद जाणवा. षोडशकग्रंथमध्ये श्रीहरिनद्रसूरि आचार्य कहीने. "चक्रभ्रमणं दंडात्तदनावेचैव यत्परं नवति वचनासंगानुष्ठानयोस्तु तद्ज्ञापकंज्ञेय " ए योगदृष्टि ग्रंथ श्रोताने अगोचर न रहे ते ग्रंथरो नाव नला वरूपे वांच्योने. ते पण मोकलशुं.

वली वाग्मात्र अध्यात्मी कहे ने के. सातावेदनीयनी उदीरणा सातमा गु णगाणाथी टली ने. तो केवलीने कवलाहार किम हुवे? तेहथी तो साता उदि राए ने. ते मिथ्या. जेमाटे उदीरणा करण अंतरशक्ति विशेष ने. बाह्ययोगानु गत नथी. नही तो स्थान निषद्यादि क्रियाये पण सातावेदनीयनी उदीरणा हुइ जाए. ते केवलीने स्वनावे ने; उदीरणारूप नथी ए वचन तो कवलाहार समान पण केवल स्वनाववाद मानिये तो बोधनन थाए तेहनो कनुफ्तनिषेधो न स्वानुपाक्तविधिर्नच स्वनाव वर्णनानवस्थये नियतत्वत इत्यादि न्याय कुसुमा जलि ग्रंथे उदयनाचार्ये निषेध्यो ने इणनो अर्थ —अकस्मात् शार्ं नवति—इत्यां बोध कहे ने. तिणने आचार्य कहे ने. ए शब्दनो कुण अर्थ ? प्रमाण प्रतिषेध को

कवलाहार मान्या विना ए सूत्र दिगम्बरने मिलतु नथी, ते माटे ए सर्व चूर्णना उले वलगवुछे चोरासी बोलविचार मध्ये में लिख्युछे " सूत्रनमें परिसह कहे जिन लिर्ड नकार, जो ससो उपजत नही, सो तुझ भ्रमको नार ॥ १ ॥ मोहनीय विना वेदनीयकर्म स्वविपाक न देखावे, इस्यो कहेछे ते पण युक्ति शून्य एम कहेता नामकर्मोदयज नित विहार देशनादिक केवलीने किम घटे? जो कहेशो तो नियतदेश नियतकाल केवलीने स्वभावेज होए, पण इच्छाए न होए ते माटे मोहनीय कर्मनी अपेक्षा नथी उक्तच प्रवचन सारे—" ठाणाणिसेय विहारा, धम्मुवदेसोय णिय दिणा तेसि, अरिहताण काले, माया चायोव इत्थीण '

तो कवलाहार नियत देशकाले इच्छा विना केवलीने मानता शु जाएछे? हवे कहेशो के, घाती मध्ये गणिया माटे, घाती समान वेदनीयकर्मज कह्यु छे ते घाती कर्म गया पछी केवलीने स्वविपाक केम देखावे? उक्तच कर्मकाण्डे—" घादिव वेयणीय, मोहस्सुदयेण घाददे जीव '' इदिजादीणमझे, तम्हा गणिद इवेदणि '

ते पण युक्ति शून्य जाणवु जे माटे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय मध्ये ज्यु वेदनीय कह्यु त्यु आयुर्नाम गोत्रकर्म पण मोहअतराय मध्येज कह्यां तो ते पण घातवत् होइ जावे ते माटे ए सर्व पक्षपात कल्पना जाणवी इणे रीते वली जे वडी सरखा चार कर्म केवलीने कहेछे ते पण परमार्थरा अजाण कहेवा एम कहेता तीर्थकर नामकर्मविपाक पण तिम्यो हुइ जाते वेदनीय कर्मने दग्ध रज्जुसम ए पक्षपात मात्र शास्त्रविरुद्ध छे उक्तच सूत्रकृतांगवृत्ती " यदपि दग्ध रज्जु स्थानकमुच्यते वेदनीयस्य तदप्यनागमिकमयुक्ति सगतच, आगमे ह्यन्त्योदय सातस्य केवलिन्यभिधीयते सातासात योश्चातर्मुहूर्त्त परिवर्त्तमानतया यथा सातोदय एव सातोदयोपीति "

केवलीने क्षुधा तृषा मानीएतो अनत सुखनो व्याघात थाए इस्या कहेछे ते पण शून्य वचन जे माटे अनतसुख छद्मस्थ केवलीने तो केवलज्ञान रूप अने योगा व्याघाते उपचारी कह्युछे " जादसय समत्त, नाणमण तछ विछिद विमल रहिदेहु उगाहाइहि सुहति एप जिय खाणिदति "

पण परमार्थथी क्षायक अव्याबाध सुखगुण तो सिद्धनेज हुवे, उक्तच-' अन्ते सुखवीर्ये नरेषग्नि क्षयात् क्रमात् " जे प्रवचनसार मध्ये-" पुण्णफला अरिहता, तेसि किरिया पुणोहिर्द दायईगा मोहादीहि विरहिदा तह्मा सारगतिमिदा

प्रकृष्ट पुण्यफलरूप अरिहत छे तेहने स्थान निषद्या विहारादि क्रिया मद्य

नावनी जे कही छे, ते मोहादिक रहित, माटे क्षायिकज करी गणीये इसी परि नाषा कही छे. ते युक्ताहार क्रियामांहे पण बाधती नथी. जे कोइ कहे छेजेअ नंतवीर्य केवली छे तेहने क्षुधा न बाध. तेहने कहिये क्षुधादिके वीर्यहाण न होय; पण बलापचय होय, माटे कवलाहार उदय नियत करेज. ' बल शारीर वीर्यचांतर. शक्ति विशेष" इति शास्त्रसिद्धं. आहार प्रमादरूपछे, ते माटे छठ्ठागुण ठाणा लगेज हुवे एहवुं जे कहेछे, तिणे स्थाननिषद्या विहारादिक्रिया केवलीने केम करी कहेवी? आहार होएत्यां निद्रा होएज. ए व्याप्ति नथीज. वेदनीयकर्मउदयथी निद्रा कवलाहार हुस्यै. अने दर्शनावरणीय कर्म गयाथी निद्रा नही हुवे. तस्मा द्विपरीति बाधक तर्का नावान्न व्याप्ति. कोइ कहेशे आहारसंज्ञा सातमे गुणठाणे नथी तो आगल किहांथी? आहार संज्ञाविना आहार केवलीने किम हुवे? ते जूठुं; जे माटे आहारसंज्ञा "खल्वाहारानिलाप" इस्यो गोमटसार टीकाधुरे सातमे पत्रेज छे. ते माटे अनिलापारहित आहार, अप्रमत्त साधुने होए, तिहां दूषण नथी किंबहुना आवश्यकादिक क्रिया पण अप्रमत्तसाधुने विकल्परहित असंगक्रियारूप छे. पण वीतराग वचन प्रणिधान संकल्प पूर्व वचनक्रियारूप नथी तो आहारक्रिया प्रमत्तसाधुथी विलक्षण होए तेहनुं कांइ कहेवु' अतएव निक्षाट नादि क्रिया पण केवल व्यवहारानुगत छद्मस्थ व्यवहारथी निन्न देखी उन्नास न करवो. वचना असंगानुष्ठान नेद जाणवा. पोडशकग्रंथमध्ये श्रीहरिनद्रसूरिए आर्या कहीछे. "चक्रभ्रमणं दंडात्तदनावेचैव यत्पर नवति वचनासंगानुष्ठा नयोस्तु तदज्ञापकंज्ञेयं." ए योगदृष्टि ग्रंथ श्रोताने अगोचर न रहे ते ग्रंथरो नाव सना वरूपे बांध्योछे. ते पण मोकलशुं.

वली वाङ्मात्र अध्यात्मी कहे छे के, सातावेदनीयनी उदीरणा सातमा गु णगणाथी टली छे, तो केवलीने कवलाहार किम हुवे? तेहथी तो साता उदि राए छे ते मिथ्या. जेमाटे उदीरणा करण अंतरशक्ति विशेष छे वाह्ययोगानु गत नथी. नही तो स्थान निषिद्यादि क्रियाये पण सातावेदनीयनी उदीरणा हुइ जाए. ते केवलीने स्वनावे छे, उदीरणारूप नथी ए वचन तो कवलाहार समान पण केवल स्वनाववाद मानिये तो बोधमत थाए तेहनो हेतुनूतनिषेधो न स्वानुपाख्य विधिर्नच स्वनाव वर्णनानैवमवधे नियतत्वत इत्यादि न्याय कुसमां जलि ग्रंथे उदयनाचार्ये निषेध्यो छे इणरो अर्थ –अकस्मात् कार्यं नवति–इस्यो बोध कहे छे. तिणने आचार्य कहे छे. ए शब्दरो कुण अर्थ? प्रसज्य प्रतिषेधे को

ऽ कारणथी न होए ए अर्थ एक, केइ होएज नही ए अर्थ बीजो, केइ सा
होए ए अर्थ त्रीजो, केई अनुपाख्यक अनिर्वचनीय कारण तेथी होए ए च
केइ स्वभावथी होए ए पांचमो अर्थ, न संभवे जे, माटे पूर्व पश्चात् भावरूप ना
धि नियत छे ते माटे, अन्यथा सिद्ध नियत पूर्व वर्त्ति कारण अन्यथा सिद्ध
पश्चाद्भावि कार्य ए लक्षण लोक व्यवहारे अवश्य मानवा तो स्वभाववाद मिथ्
या छे ए चिंतामणितर्कनो मार्ग सर्व वस्तु कथंचित् स्वभावजनितछे, कथंचित्
दिजनितछे ए स्याद्वाद तर्क मार्गेणीयानियतत्त' इति श्रीसूत्रकृतांग वचन

ते माटे केवलीनी आहार विहारादि क्रिया कथंचित् कर्मजनितछे कथंचित्
भावजनित पण सद्दहवी केवल स्वभाव माने ते बौद्धमतमांहे सहेने
केवलीने आहार मानता अर्थापत्ति सिद्ध निहारादि विडंबना आवे, ते
वने केम घटे? कर्मजनित भावमा जे एम लाजे छे, तेणे जन्मपर्यंत
ण न मानवु सदा शुद्ध परमेश्वरपणे मान्यो छे, तिहांज मानवा निम
न लागे केवली हुया पछी समधातुरहित परमौदारिक शरीर माने छे,
शरीरज केम न माने? जो शरीरनाम कर्म रह्यु छे, ते माटे शरीरज होए
हनन नाम पुद्गल विपाकी रह्यु छे, ते माटे सप्तधातुरहित किम घटे? '
एमछ निचयोत्ति' वचनात तथा केवलज्ञान महिमाए सात धातु घटे तो मन
ज्ञाने केती धातु घटे? सात धातुरहित जिनशरीर होए तो केता धातुरहित
रशरीर होए? इत्यादि बोलनो किस्यो उत्तर होए? तेमाटे जिस्या कर्म रह्यां
विपाक केवलीने पण सद्दहता सम्यग्दृष्टिने किसी लाज लागती नथी

एम बाधक निराकरीने साधक वचन देखावे छे—श्रीभगवतीसूत्र मध्ये
अणगारे श्रीमहावीरने स्पष्ट आहार पाणी आणी आप्यो छे तथा
अधिकारे कह्योछे 'तेण कालेण तेण समयेण समणे भगवं महावीरे
यट्ट भोइत्ता विहरेइ' इहा वियट्ट भोइ शब्दनो ए अर्थ छे—व्यावृत्त सूर
ऽस्यैव भीनो व्यावृत्त भोजी, प्रतिदिन भोजीत्यर्थ' ए अक्षरथी तो दिन
प्रते कवलाहार केवलीने आवे कारण अभावे आहार निषेध नथी तथा
समवायांग मध्ये चोत्रीश अतिशय केवलीने कह्या छे ते चोत्रीश तेरमे
मिध्ये ते मध्ये आहार निहार विधि अदृश्य ते सहजातिशयमध्ये
ता तेत्रीश अतिशय थइ जाय ते माटे जेहवो आहार निहारनी विधि
तो तेहनो कहेजो तथा देहदे भक्तच्छेद कह्यु छे ते पूर्व भक्तविधि मान्या

म मले? लोमाहार विछेद तो हुतो नथी. कोइ दिगंबर कहे छे छेहडे नियत समाधिना छे ते प्रगट जूठुं. जे माटे समाधि कहेतां ध्यान कहे, ते तो केवलीने एनुं नथी. शुक्लध्यानना बे पाइआ ध्यायापछी ध्यानांतर कांइ केवलज्ञान उपजे! बे पाया रह्या छे. तेतो छेहले अतरमुहूर्त्ते होए. पक्ष मासादिमान न होए. जो कहेशे ताव दिनमान मौन करी बेशे एहज समाधि ते तो प्रयोजन शून्य तादृश कर्म कारणविना केम मनाय? खोटो अर्थ बनावी कह्यु; पण साचो न प्रतिजासे. इहा हेतु सहस्र देखाडे छे. पण आपणी मतिमंदपणे हेतूदाहरण न स्फुरे. तोपण केम सूत्र वचन युक्तिरिक्तं कहीजे! उक्तंच श्रीआवश्यक निर्युक्तं" हेऊणादाहरणा संजवे विसइ सुछ्जंन बुज्जिज्जा सव्वान्नुमयवितहत्तहावितचिंतएमएनंति
केवली केवल व्यवहारे स्वयं जिक्षा करे. तिहां अंतराय न होए. उक्तंच विशेषावश्यक–दीनस्स लजंतस्स वच्चुजंतस्सव जिणस्स एस गुणो ॥ खीणंतराइअत्ते जंसेविग्घं णसंजवइति. यतना पूर्वक छद्मस्थानीत आहार ग्रहण करे ते पण श्रुत व्यवहार प्रामाण्यकारी केवल व्यवहारज छे. द्रव्ये दोष तो दोषज नथी. नही तो समवसरणमध्ये शव्द, रुप, रस, गंध, प्रविचारे ते मैथुनातिक्रम होइ जाए. तेमाटे कवलाहार निमित्त जिक्षा व्यवहारे आगम व्यवहारीने किस्यो दोष न होय.

तथा तुमे लिख्यो छे जे एक समय सिद्धद्रव्यने तथा अलोकाकाशद्रव्यने उत्पाद व्यय ध्रौव्य किम सधाए? तेउपर उत्पाद व्यय बे प्रकारे कह्याछे. एक प्रायोगिक एक वैश्रसिक तिहां प्रायोगिक पुजल जीवद्रव्यनेविषे स्पष्ट लणाएछे वैश्रसिकतो अनुमान गम्यछे. जिवं सर्वं क्षणिकसत्वान्यथानुपपत्ते ए जैनसाधन छे. सिद्धने ज्ञानपर्याय प्रथम समय जे वर्त्तमान विज्ञेयाकारोत्पाद इत्यादि द्वितीय समय तन्नास तिहां प्रायोगिकारोत्पाद अतीत ज्ञेयाकारोत्पाद इत्यादि संजवे अलोकास्तकासे तत्तत् समय संबंधोत्पादिविनाश मानवाज नहितर क्षण शंकर थाए. द्रव्यार्थिक नय काल त्रय संबंधरुपज सत्ता मानेछे पर्यायार्थिक नय मध्यम क्षणरुपज सत्ता मानेछे. उजयमय मीलने त्रयात्मक वस्तु सिद्ध थाए. अत्र संमति गाथा–"दव्वं पज्जव विजुयं, दव्व विउत्ताय पज्जवाणत्थि उप्पाय ठिई जंगा, हंदिद् विय लरकणं एयं. ॥ १ ॥ तह्मामिद्धादिठी, पत्तेयं दोवि मूल णया णयतइउ अछिणउणय समत्तं णत्तेसु पडिपुन्नं ॥ २ ॥ ए ए पुण सगेहउ पाडिक्कम लरकणं दुवेण्हपि जेण दुवे एगंता विजज्जमाणा अणेगंतो. ॥ ३ ॥

अर्थ.–द्रव्य, पर्यायरहित नथी. पर्याय, द्रव्यरहित नथी उत्पाद स्थिति जंग ए

द्रव्यलक्षण एपण प्रत्येकप्रत्येकनुं लक्षण नथी तेमाटे एकएक ग्राहीवे मूननयनिश्च
दृष्टि त्रीजो तो नय नथी तेमाटे वेमा पूर्ण सम्यक्त्व नही इम न कहेवु तेमाटे
वे एकात साक्षात् नजनाक्रात थका अनेकात ए प्रक्रियाए सर्वत्र स्वाभाविक उत्पा
व्यय ध्रौव्य कहेवा आगालाई आण तिण परपञ्च जणियम्माए समति गाथा -प्रत
अकार प्रज्ञेपे अनियमात् ए पण व्याख्यान टीकाकारे कह्युछे तेमाटे पण
य ते पण कथचित् स्वप्रत्यय कहिये युक्तंचेतत्–द्वयोरेकैका नतिरिक्तत्वादिति
स्मत् कृतानेकात व्यवस्थाया आत्माख्यातिमाहि पण ए अर्थ सिद्ध छे इम
सयुक्त युक्ति लौकिक प्रदेशावधिक परार्थादि सख्या पर्याये तत्तद्विषयता पर्याय
अलोकाकाश प्रदेशमाहि शुद्ध उत्पाद व्यय वखाणवा सापेक्ष पर्याय मिथ्या
पण एकात नथी कथचित्सापेक्ष कथचित् निरपेक्ष सर्वमित्यादि व्यवस्थित
रीते एक समये एक द्रव्ये घणा उत्पाद व्यय होवे तदनुमत तावत् द्रव्य
कहेवा तथाच समत्ति–एग समयम्मि एग दवियस्स बहुआविहुति उप्पाया
प्पाय समावि गमा ठिइ अवस्सगउणियमा अगुरु लघु पर्यायनु उत्पादव्यय
तो सर्वत्र आज्ञा सिद्धज छे

तथा जे निख्यो कालद्रव्य समयरूप श्वेतांबर मानेछे, तिहा उत्पाद व्यय ध्रौ
व्य केम सघाय? ते तो उभयरूप कीजे तद्दिज सघाये पर्याय अर्पणाए उत्पा
व्यय द्रव्यार्पणाए ध्रौव्य उभय विवक्षाए धर्म त्रय उक्तच श्रीतत्वार्थ सूत्रे अर्पित
नर्पित सिद्धे रिति हवे कहेशो ते समय किणरे आधारे छे? तो कहिये जीवाजी
द्रव्यने आधारे छे जीवाजीव द्रव्यरो काल ते वर्तनारूप पर्याय छे द्रव्य नयीत
ना पर्यायराजाजन छ द्रव्य जीवाजीवज छे तथाच सूत्र किमय भते कालेत्ति
वुच्चइ गोयमा जीवाजीवेव अजीवोचेवत्ति अतएव पर्याय द्रव्योपचार करी
कालद्रव्य सूत्रे नाख्या तथाच श्री उत्तराध्ययन सूत्र –धम्मो अधम्मो आगास
इक्किक माहिय अणताणिय दव्वाणि कालो पुग्गल जतवोत्ति प्रशमरति प्रक
ण्ये उमास्वातिवाचकैरप्युक्त धर्माधर्म्माकाशाद्येकैकमत त्रिक मनत इति
जीव पुद्गलास्तिकायाद्वा समय लक्षण

कोइ कहेसे जे अवगाहनादि हेतुता गुणे जिम आकाशादि प्रथक द्रव्य
तिम वर्तना हेतुता गुणे कालद्रव्य पण प्रथक होइ किम नजावे? तहने
ये जे अवगाहना हेतुताए अवगाहनाद्यनाश्रय द्रव्य कल्पिये, तिम वर्तना हेतु
वर्तमानाश्रय द्रव्य कल्पाए ते तो नथी अवृत्तद्रव्य शशशृंग प्राय छे तमा

मैकल्पनातो ॥ धर्मकल्पनान्नधीयन्नीति न्याये काल ते जीवाजीवा पर्यायज युक्त. ए अस्मत्तरल सिद्धांत तर्क परिष्कारन्यायालोकादि ग्रंथ प्रसिद्ध छे. जे दिगंबर मंदगति परमाणुने जे आकाश प्रदेश व्याप्ति क्रमण तदवच्छिन्न पर्याय समय तद तुल्य द्रव्य समयाणु लोकाकाश प्रदेश प्रमाण स्वगति समय कहेछे. तेणे प्रदे श व्यतिक्रमणावच्छिन्न दिग्द्रव्याणु पण केम न मानवां. तादृश आगम नथी तो आगम जइने आगम प्रमाण करवो तो परिज्ञां किम न करीए? ते आगम तो जीवाजीवात्मक कालप्रतिपादक देखाडयो छे. काल परत्वा परत्व निमित्त जिम काल तिम दैशिक परत्वापरत्व निमित्त दिगद्रव्य पण तांत्रिक प्रसिद्धज छे. हवे कहेशो द्र व्य शक्ति वैचित्र्यइदिकार्यहेतुता अने अवगाहनाहेतुंना आकाश द्रव्यनेज कल्पिये छे. लाघवात् तथाचगयहस्ती सांप्रिशकायां॥आकाशमवगाहाय तदनन्यादिगन्यथेति.

तो स्वस्व गुणरागी जीवाजीव द्रव्यनेज वर्तना हेतुता कल्पतां कोण निवारे? जिहा सहाय आगमवलित छे बीजुं मंदगति अणु सक्रमानुसारे कालाणु कल्पि ए तो मद परमावगाहनाद्यनुसारे आकाशादि अणुआ पण कल्प्या जोइए सा धारणावगाहनादि हेतुताए आकाशादि स्कंध कल्पनोत्तर तदणु कल्पना जो स्कं ध जद वृत्ति प्रदेश कल्पना पर्यवसन्न होए तो ए कालद्रव्ये पण समान साधार ण वर्तनानुसारे एक काल स्कंध आवे पछी तत् प्रदेश आवे. सिद्धांत विरोधथी जो ए कल्पना करवी तो उक्त सिद्धांत युक्ति सिद्धांत मानो. जे मतांतरे मनुष्य क्षेत्र कालमान द्रव्य कह्युंछे, ते ज्योतिषचक्र चार व्यापक वर्तना पर्याय समूहनेविषे द्रव्यनो उपचार करीने. उक्तंच नयचक्रे पर्याय द्रव्योपचार इति. ए वे मत श्री हरि भद्रसूरिकृत धर्मसंग्रहणीमध्ये छे. तथाचतत्पाठ. जं वत्तणादिरूवो कालो दवस्स चेव पज्जावो; सोचेव ततो धम्मो, कालस्स वज्जस्स जोलोए त्ति ॥ १ ॥

अर्थ – ज के० जे कारणमाटे वर्तनादिरूप कालज छे, ते द्रव्यनोज पर्याय छे. तत के० तेमाटे सोचेवके० ते वर्त्तनारूप पर्यायज कालधर्म कहिये. अथ वा काल जे लोए के० मनुष्य क्षेत्रमाहि ज्योतिश्चाराभिव्यंग्य छे. तेहनो धर्म ते काल, इहां कालद्रव्य ते पर्यायनेज कह्यु. ए द्रव्य अनपेक्षित छे. पृथिव्यादि स मूहरूप एक राजगृह नगरसमान ते परमार्थिक द्रव्य नथी पण कहेवारूप छे. अतएव कालश्चेतेके ए तत्वार्थ सूत्रे, ए मते कालद्रव्य कह्युं. ते अनपेक्षित द्रव्या र्थिक वे प्रकारे वृत्तिकारे जोडयुं छे. अतएव अनादि उपचारे कालद्रव्य लेइने सूत्रे षट षट द्रव्य कह्यांछे; तेमाटे सूक्ष्म पर्याय समयमां उत्पाद व्यय ते प्रथमादि जावे

सहज होए समयध्वयाधाराश जीवाजीव तेहज द्रव्य; इम रूप त्रय नावना कर वी ए अति सूक्ष्म अर्थ ठे द्रव्य गुण पर्याय रासमध्ये श्रमे वखाएयोठे तेमज स हवो एमजे काल द्रव्यना अणु देखाडेठे, तेहने गले दिग्द्रव्यना अणुश्रा पण पडे
चैत्य नक्ति लोचादि श्रातरी चार अर्थ जाएयाने, एम सर्व गमे चार अर्थ ना ववा " अहो णिच्चं तवो कम्म सव्व बुद्धेहि वित्रेय, जाय लज्जा समावित्ती. ए नत्तच नोयणे " एहवु श्रीदशवैकालिक सूत्रे कह्युठे. एकाशनक नित्य तप त पदार्थ, एम उपवासादि नैमित्तिक तप तपे अर्थापत्ति सिद्धि पदार्थ एम कहेता उपवासादिकथी एकाशनक बलवत तथाहि ए वाक्यार्थ ध्यानाध्ययन विनय वेया वृत्त्याय व्याघातकपणे उपवासादिकथी एकाशनकादि तप बलवतज ए महा वा क्यार्थ आज्ञाज धर्मनेविषे सार एव पर्यार्थ
तया जे लिख्योठे थापिये ते थापना ते तो पुरुष व्यापारठे ते श्रादिअंतठे ते शाश्वत प्रतिमा रूषनानन, चड्रानन, वारिषेण वर्द्धमान नामेठे तठे किम स नवे शाश्वत नावमाहि पुरुष व्यापार नथी ते माटे तिणगे उत्तर जे शाश्वत माहि अनादि प्रवाह पुरुष व्यापारठेज अतएव द्वादशांगी पण अवछिन्ति नयार्थतायां शाश्वत कहीठे एलाण डुवाल सगी अवुछित्तिण वय्याए सासयाइति सूत्रात् स्थापन स्थापनाए नाववु नपत्तित्ति अनिप्रायरूप पुरुष व्यापार ते स्थापना ते प्रवाहाना दितोइ अनादि स्थाप्यते इति स्थापना ए कर्म व्युत्पत्ति व्यापाराश्रय ते स्थापना ते सत अनादिव्यापारोपरागे, प्रवाहे अनादि इहा कोइ दूषण नथी विहित तद निप्राय विषय ते तत् स्थापना अतएव गुरुनिप्राय विषयाक्षादि गुरुस्थापना नि नानिप्राय विषय प्रतिमा ते जिन स्थापना कहिये सद्भाव स्थापना असद्भावस्था पना विशेष अनुयोग द्वारसूत्रे प्रसिद्धजठे अशाश्वतस्थले इति कर्तव्यता शुद्धप्रति ष्ठाविधे अनिप्रायाधान होए शाश्वत स्थले पूर्व पूर्वानिप्राय ज्ञानेज कुलानुबंधज 'त होए शाश्वता शाश्वत स्थापना उनय वदन ना
हि चेइयाइ वदेइ' तउं पडिनिय इहमागवइ तइ
दि नामनो विरह पदर कर्म नूमिमा न होए,
निप्राय प्रवाहाविठेद होवे ए परमार्थ एनाम
स्मारकपणे हितावहइ इम घणा कहेछे
जिन इम जाणी श्रातम परमातमानु अनेदध्यान
हित होए हरिनिइ ग्रथानुसारी

बंधे स्थापना इति एनि संबंधे भावसंबंध छे. द्रव्य समवाय संबंधे भाव ते ना श्राइणावन्ते ए चार निक्षेपनी भावना गमे वंदीए जिनीए ए भगवती प्रतीक परमार्थ विचारतां श्रीमंदरजी रुचिने गुण पर्याय. इहां शिष्यजनना हितने अर्थे अस्मत् मत जैन मते भाष्यानुसारे निक्षेप नय योजनिका कहीये. नामादि त्रण निक्षेप द्रव्यार्थिक नयज माने; पर्यायार्थिकनय भावज माने. द्रव्यार्थिक नयना भेद संग्रह व्यवहार ए बे नैगम सामान्य ग्राही संग्रहमां ने अंतर्भवे विशेष ग्राही व्यवहारमां छ. अंतर्भवे तेमाटे त्रीजो भेद नथी. पर्यायार्थिक चार भेद ऋजुसूत्रादिक ए सिद्धसेन मत तथा विशेषावश्यकमां 'ईंणामाइतियंदव्व ट्ठियस्सभावो अपज्जवणियस्ससंगहववहारा पढमगस्स सेसाउइयरस्स'

ए गाथाए स्वमते नमस्कार निक्षेप विचार स्थले कह्यु 'भावचिय सद्दणया सेसाइच्छंति सव्वणिक्खेवे. शब्द नय शुद्धपणा माटे सर्व निक्षेपा वांछे. ऋजुसूत्रांत चार अशुद्धपणा माटे सर्व निक्षेप वांछे. ए एहनो अर्थ. ऋजुसूत्र नाम निक्षेप भावनिक्षेप ए बे वांछे. एम कोइ कहेछे. ते जुठुं, जे माटे ऊज्जु सुयस्स एगे अणु वउत्ते एगं दव्वा वस्सय ए सूत्रेज ऋजु सूत्रनेज द्रव्यान्युपगम देखाड्योछे. अने पिंड अवस्थाए सुवर्णादि द्रव्य आकार नथिष्यति. कुंडलादि पर्याय भावहेतुपणे वांछतो विशिष्ट इंद्रादिनाम इन्दु भूत साकार स्थापनाप्रत्ये ए नय न माने तो ए नय शुद्धदर्शी किम थाए? तथा इंद्रादि शब्द मात्र अथवा तदर्थ रहित इंद्रादि शब्द नाम गोपाल दारकने भाव कारणपणाने अविशेषे नामेंद्र वांछे तो ए नय नाम स्थापना बे निक्षेपने किम न वांछे? जो आगले जइ युक्ति दर्शी थाए. माटेसुं वाच्य वाचक भाव संबंधे संबंध नामथी इंद्रमूर्त्ति लक्षण द्रव्य विशिष्टस्तदाकार स्थापना माने, इंद्र पर्यायरूप भावनेविषे तदात्म्य संबंध रह्या माटे विशेषने तो ए बे निक्षेपा ऋजुसूत्र केम उत्थापे!

वली एहने मनाववा संग्रह व्यवहार ए बे नय स्थापना वर्ज त्रण निक्षेपामाने छे. एहवुं केटलाएक कहेछे ते पण जुठुं. तेमाटे एक संग्रहिक, बीजो असंग्रहिक अथवा अनर्पिक भेद परिपूर्ण भेद ए त्रण नैगम स्थापना वांछे, ते तो अवश्य मानवुं. संग्रह व्यवहारस्य द्रव्यार्थिक नये स्थापना निक्षेपनुं वर्जन नथी तेमाटे आद्य पक्षे संग्रह नय स्थापना निक्षेप वर्जे आवे. जे माटे तन्मत संग्रहिक नैगमथी भिन्न छे. द्वितीय पक्षे व्यवहार नये स्थापनान्युपगम वर्जे आवे. जे माटे तन्मत असंग्रहिक नैगम नयथी अविशिष्ट छे. तृतीय पक्षे निरपेक्ष संग्रह व्यवहार न माने,

तोपण सपूर्ण नैगमरूप समुदित वे नयने स्थापनापक्ष दुर्निवार छे जेमाटे अविनागस्थ नैगमथी प्रत्येके एकेक नाग ग्रहेछे वीजु सग्रह व्यवहार नैगममाहेथी वे तो तन्मतस्थापना सग्रह व्यवहारमाहे किमनावे? उनय विपयकत्वरूप नैगम धर्म एकेकमा न पेशी शके पण स्थापना विपयकत्वरूप नैगम धर्मते सग्रह व्यवहारएवं नयमा प्रवेशे वाधक नथी जिमसहस्त्रपणु शत सख्यामांहे न पेसे पण तगत दशादि सख्या सुखे पेसे. केवल स्थापना सामान्य अने तगत विशेष मानवे सग्रह व्यवहार नयने विशेष जाणवो इत्यादि विशेपावश्यक महा ग्रथानुसारे अमे जैनतर्क नाषामांहि लिख्यु छे तें प्राकृत नापाए लेख मध्ये तुमने जणाव्युछे ए लेखने महा शास्त्रनी जाणवु युक्त छे किं नाम स्मरणेन न प्रतिमया किंवा निदाका नयो सवध प्रतियोग नान सदृशो नावेन किंवा द्यो ॥त द्य द्यमेव वा जड मते त्याज्यं द्यंवा लयात्या त्तर्कादितएव लोपक मुखे दत्तो मखी कूर्चक ॥१॥ अस्मत्कृत प्रतिमा शतके, वीजु स्थाप्यते इति स्थापना ए व्युत्पत्ति निमित्तज छे पण तदाकारत्व ते प्रवृत्ति निमित्त छे माटे शाश्वत प्रतिमामाहे स्थापना शब्दार्थ घटे जिम गछतीति गौ ए शब्द व्युत्पत्ति निमित्त छे इम कहेता वेठी गायमाहे गोपद्थं नावे माटे सास्नायनिय गा गोत्वजाति गोपद प्रवृत्ति निमित्त कहिये छे तिम इहा जाणजो सुधु सद्दहना

वली जे तुमे लिख्यो छे स्पष्ट श्रावक करणीमध्ये जिनपूजा विधि क्यां कही छे? ते तो द्रुपदी प्रमुख पूजा विधि स्पष्ट छे तदीय प्रासादादि कृत्य श्रुतार्थापत्ति सिद्ध ज छे तथा विध वादस्पष्टाक्षर श्री महा निशीथ सूत्र तृतीयाध्ययन मध्ये छे ते लिखीये छे अकसिण पवत्तगाण, विरया विरयाण एस खलु जुत्तो॥ जे कसिण स जम विउ पुप्फाइयं न कप्पए ते सि किं मन्ने गोयमा एस वत्तीसि दाणुछिए ज म्हा तम्हा उनय अणुछेझा वज्जुअसीविए उगमेव ते सि नावउ वास नवो तहा नावन्नणाइ उत्तम दसन्नभद्देण उदाहरण तदेव वक्क ह्रनाणु ससिदत्त मगाईहिं पुछ ते विण दिसे गो तावज सूरिदेहिं फत्तीउ सविछीए अणण सामण पूया न क्कारेकएकार्कितं सव सावज्ज विरएहिं अणुचिंतउया हु सवहा अविरएहिं सुअनी ए पूया सक्कारेकए ता जइ एवतउं वुझ गोयमा णीसत्तय देसविरय अविरयाण तु विणुउंगमुनयंड्वविवणय

ए अक्षर तो चोथा तथा पाचमा गुणठाणे नि सशय द्र्व्यस्तव नावस्तव उन य करवा कह्या. तथा तत्रज द्र्व्यस्तव फल पण देखाडयु छे काउण जिणाय यणेहिं मन्डीय सयल मेइणीवट्टं दाणाइ चउक्केणवि सुट्ठविगछिझ अवुय ॥ १ ॥

उक्कोसमसखगुणं ॥ जहन्नयाउ पय हवइ कितु ॥
नणु तद्दिसि फुसणाउ॥उद्दिसि फुसणा ज्ञवेज्जगुणा॥४॥

व्याख्या–उत्कृष्टपद, जघन्यपदथकु असख्यातगणु केम होय? न होयन जे कारणमाटे त्रणदिशिनी स्पर्शनाथकी छ दिशिनी स्पर्शना बमणीज होय, ते कारणमाटे जघन्यपद थकु उत्कृष्टपद बमणु जोइए असख्यातगुणु न जोइए ॥४॥

हवे गुरु उत्तर कहेछे

थोवा जहन्नयपए ॥ निगोय मेत्तावगाहणा फुसणा ॥ फु
सणा सख गुणता ॥ उक्कोसपए असखगुणा ॥ ५ ॥

व्याख्या–थोडा जघन्यपदे जीवप्रदेश छे तेह अर्थे निगोदमात्र अवगाहनाए जे निगोद रह्योछे, तेहनी स्पर्शना जघन्यपदे छे अधिकानी नहीं. जघन्यपदे सो जीवनी स्पर्शना कल्पी छे तिहा एकेका जीवनो लाख लाख प्रदेश रह्यो छे सघलाए गणता जीवना प्रदेश कोडी थाय तेमाटे जघन्यपदे जीव प्रदेशें जीव प्रदेश थोडा, उत्कृष्टपदे जघन्यपदे जघन्यपद थकी असख्यातगुणो अधिका निगोदनी स्पर्शना छे जेह कारण पूरे गोले असख्याता एक अवगाहना निगोद जे छे अने प्रत्येके असख्याता उत्कृष्टपद अण मूकी प्रदेशपरे वृद्धिहानी रह्या अनेरा निगोद जे छे, ते सर्वे उत्कृष्टपद स्पर्शेछे ते कारणमाटे उत्कृष्टपदे जीवप्रदेश असख्यातगुणा होय उत्कृष्ट कल्पनाए सहस कोडी जीव स्पर्शना छे तिहां एकेका जीवना लाख लाख प्रदेश छे गणता दश कोडाकोडी थाय एम उत्कृष्टपद जीव प्रदेश, असख्यातगुणा थाय ते जाणवा ॥ ५ ॥

उक्कोसपय मुहुत्त ॥ निगोअकुगाहणाइ सव्वत्तो ॥ नि
प्फाइ जूइ गोलो पएस परिवुद्धि हाणी हि ॥ ६ ॥

व्याख्या–पूरा गोलाने मध्यभागे घणा जीवप्रदेशे स्पर्श्यो जे आकाश छे, ते उत्कृष्टपद कहीए तेहने अणमूकते प्रथम निगोदतणी अवगाहनानी सर्वे दिशिए प्रदेश परे वृद्धिहानी रहे अनेरे निगोदे गोलो नीपजावीए ॥ ६ ॥

बीजा अनेरा गोला जेम नीपजे तेम कहेछे

ततुच्चिअ गोलाउ उक्कोसपय मुइत्तु जो अन्नो ॥
होइ निगोउ तमिवि अन्नो निप्फज्जोइ गोलो ॥ ७ ॥

व्याख्या– तेणे गोले उत्कृष्टपद मूकी जे अनेरो निगोद रह्योछे, तेणे निगोदे उत्कृष्टपद अण मूकते सर्व दिशिए प्रदेश परिहरे रहे अनेरे निगोदे अनेरो गोलो नीपजावीए. ॥ ७ ॥

एवं निगोय मेत्ते ॥ खेत्ते गोलस्स होइ निप्पत्ति ॥
एवं निप्पन्नंते लोगे गोला असंखिज्जा ॥ ८ ॥

व्याख्या–एम निगोदमात्र खेत्रे गोलानी निष्पत्ति होय. एम लोकमांहे असंख्याता गोला नीपजे. ॥ ८ ॥

ववहारनएण इमं ॥ उक्कोसपया विइत्ति आचेव ॥
जं पुण उक्कोसपयं निछइ अहोइ तं वुछं ॥ ९ ॥

व्याख्या– व्यवहारनये उत्कृष्टपद जाणवुं. जेह कारणे उत्कृष्टपद एटलां छे, जेटला गोलाए असंख्याता छे; तेहकारणे उत्कृष्टपदे असंख्याता होय एह कारणे उत्कृष्टपदे व्यवहारे जाणवुं ॥ ९ ॥ हवे जे उत्कृष्टपद निश्चयथी ते कहेछे.

बायर निगोअ विग्गह ॥ गइ आई जछ समहिया अन्ने ॥
गोला हुन्न सुवहुआ नेछ इय पयंत हुक्कोस ॥ १० ॥

व्याख्या–ज्यां अनेरा कंदादिक वादर निगोद अधिका होय, अने ज्यां सूक्ष्म निगोद वियहगते अथवा रुजुगते सूक्ष्म वादर निगोदमांहे उपजता अधिका होय, अने वादर निगोद विग्रह गते अथवा रुजु गते सूक्ष्म वादर निगोदमांहे उपजता अधिक होय, अने ज्यां पृथिव्यादिक विग्रहगते अथवा रुजुगते न वांतरे जातां अधिका होय, अथवा सूक्ष्म पृथ्वी कायादिक त्यहां रह्या अधिका होय, अने ज्यां मूलगा गोला थकी अनेरा घणा गोला अधिका होय; ते निश्चय नये उत्कृष्टपद जाणवुं. ॥ १० ॥

इहरा पडुच्च सुहुमे ॥ बहु तुल्ला पाय सो सयल गोला ॥
तो वायराइ गहणं कीरइ उक्कोसय पयंमि ॥ ११ ॥

व्याख्या–जो वादर निगोदादिक अधिका न लीजे तो एमां सूक्ष्म निगोद आश्री प्राय सघला ए गोला समान छे. ए माटे निश्चय तो उत्कृष्टपद कांइ न जाने. ए कारणमाटे उत्कृष्टपदे वादर निगोदादिकनुं ग्रहण करीए ॥ ११ ॥

हवे गोलादिकनुं स्वरूप कहेछे,

गोलाय असंखिज्जा ॥ हुंति निगोया असखया गो
ले ॥ एक्केकोय निगोदे अणतजीवामुणे यवा ॥ १२ ॥

व्याख्या- गोला असख्याताछे एकेके गोले असख्याती निगोदछे एकेको निगोद अनत जीवमय जाणवो ॥ १२ ॥

हवे लोकना जीवना प्रदेश अने निगोदादितणी अवगाहना कहेछे

लोगस्सय जीवस्सय हुंति पएसा असखया तुल्ला ॥ अ
गुल असख भागो निगोय जिअगोल गो नाहो ॥ १३ ॥

व्याख्या- लोक अने जीव ए बेक प्रदेश असख्याता सरखाछे तटला एक जीव प्रदेशछे अधिका उंगा नथी जेह कारणे केवल समुद्घात करतो जीव आपणा प्रदेशे करीने लोक पूरे, तेह कारण माटे बेकना प्रदेश सरखाछे तथा निगोदनी, जीवनी अने गोलानी अवगाहनातो अगुलने असख्यातमे भागेछे एटले ए त्रणेनी अवगाहना सरखीछे ॥ १३ ॥ हवे सरखी अवगाहना समर्थेछे.

जंमि जिउ तम्मेव निगोउनो तम्मि चेव गोलोवि ॥
निप्पज्जंइत खित्ते तोते तुल्लावगाहया ॥ १४ ॥

व्याख्या-जेटला अगुलाऽसख्येय भाग मात्र क्षेत्रे जीवरहे, तेटलेज क्षेत्रे निगोदरहे, तेटलेज क्षेत्रे गोलोरहे तेवार पछी तेहज क्षेत्रे सरखी अवगाहना होय ॥ १४ ॥

हवे शिष्य, त्रण प्रश्न करेछे

इक्कोमपय पएसे किमेग जीवप्पएसरासिस्स ॥ हु
ज्जनिगोअसव गोलसव कि समो गाढं ॥ १५ ॥

व्याख्या- एक आकाश प्रदेशरूप उत्कृष्टपदे, एक जीवना प्रदेशराशिनुं केम रहवुंछे ? अने एक निगोदनु केम रहवुंछे ? तथा एक गोलकनु केम रहवुंछे ? उत्कृष्टपदे एक जीवना प्रदेश, निगोद, गोलो-एत्रणेनु शु शु रहवुंछे? ए त्रण प्रश्ननो उत्तर ॥१५॥

हवे ए त्रण प्रश्ननो जीवआश्री उत्तर कहेछे

जीवम्म लोगमीनस्ससुहुमवगाहणावगाढस्स ॥
एक्कम्मि पएसो हुंति पएसा असखिज्जा ॥ १६ ॥

व्याख्या- जीव लोक प्रमाणछे, ते सकोची सूक्ष्म अवगाहनाए अगुलनो अ

संख्यात नाग मात्र क्षेत्र रहुंछे. ते सूक्ष्मअवगाहनाने एकेके प्रदेशे जीवना प्रदेश असंख्याताछे. कल्पनाए सूक्ष्म अवगाहना दशसहस्र प्रदेश प्रमाणछे. अने कल्पनाए जीवना प्रदेश सो कोटिछे. तेने दश सहस्रनागे देतां एक लाख आवे.॥ १६॥

हवे निगोद आश्री उत्तर कहेछे.

गोलस्स हिये नागे, निगोयठगाहणाइं जंलद्धं ॥
उक्कोसपए तिगयं इत्ति अमिक्किक्क जीवाउ ॥ १७ ॥

व्याख्या—लोकने निगोदनी अवगाहनाए करी नागवाथी जे लाने एटलो एकेका जीव विषयो उत्कृष्टपदे रह्यो कल्पनाए लोकना सोकोडी प्रदेशछे. एक निगोद अवगाहना दशसहस्र प्रमाणछे. दशसहस्रथी सोकोडीने नागीए तो लाखलाने, एटला उत्कृष्टपदे एकेका जीवना प्रदेशछे. ॥ १७ ॥ हवे गोला आश्री उत्तर कहेछे.

एवं दवठाए सवेसिं इक्क गोल जीवाणं ॥ उक्कोस
पयम इगया हुंतिपएसा असंखगुणा ॥ १८ ॥

व्याख्या—एवं के० ए प्रकारे एटले जेम निगोदआश्री कह्यो तेम गोला आश्री कहेछे. असंख्याता प्रदेशात्मक जीव ते एक जीवद्रव कहीए. अहींआं जीवद्रव्यलेवा अने प्रदेश न लेवा; ते माटे एक गोले जेटला जीवद्रव्यछे. ते सर्वथी प्रदेश उत्कृष्टपदे असंख्यात गुणा रह्याछे कल्पनाए गोले लाखनिगोदछे अने निगोदे लाखजीवछे. लाखते लाखनी साथे गुणीए तो सहस्रकोटि थाय. एटला एक गोले जीवछे, तेमां जीवना प्रदेशनुं लाख लाख उत्कृष्टपदे रहुछे. ते लाखने सहस्रकोटि साथे गुणीएतो दश कोडाकोडी थाय. एटले उत्कृष्टपदे जीवना प्रदेश आवे. ॥ १८ ॥

तं पुण केवइ एणं गुणिअम संखिज्जयं नविस्सा हि ॥
नन्नइ दवठाए जावइआ सव गोलत्ति ॥ १९ ॥

व्याख्या—जे उत्कृष्टपदे जीवना प्रदेशनुं प्रमाणछे ते असंख्यातु केटली गणे गुण्युं थकुं थाय? गुरु उत्तर करेछे के, द्रव्य थकुं, जेटला सघला ए गोलाछे ते टली राशिए गुण्युं असंख्यातु थाय. जे सर्व गोलानुं असंख्यातुछे, ते उत्कृष्टपदे एक जीवना प्रदेशनुं असंख्यातु जाणवुं. ॥ १९ ॥

किकारणमोगाहण तुल्लत्ता जिय निगोअ गोलाणं ॥
गोला नकोसपए इक्कज्जिय पएसे हिंतोतुल्ला ॥ २० ॥



संख्यात भाग मात्र क्षेत्र रहुंछे. ते सूक्ष्मअवगाहनाने एकेके प्रदेशे जीवना प्रदे श असंख्याताछे. कल्पनाए सूक्ष्म अवगाहना दशसहस्र प्रदेश प्रमाणछे. अने कल्पनाए जीवना प्रदेश तो कोटिछे. तेने दश सहस्रभागे देतां एक लाख आवे.॥ १६॥

हवे निगोद आश्री कत्तर कहेछे.

गोलस्स दिये भागे, निगोयठगाहणाइ जंलद्धं ॥
उक्कोसपए तिगयं इत्ति अमिक्किक जीवाउ ॥ १७ ॥

व्याख्या—लोकने निगोदनी अवगाहनाए करी भागवाथी जे लाभे एटलो एकेका जीव विषयो उत्कृष्टपदे रह्यो. कल्पनाए लोकना लोकोडी प्रदेशछे. एक निगोद अवगाहना दशसहस्र प्रमाणछे. दशसहस्रवडी लोकोडीने भागीए तो लाखलाभे; एटला उत्कृष्टपदे एकेका जीवना प्रदेशछे. ॥ १७ ॥ हवे गोला आश्री कत्तर कहेछे.

एवं दव्वठाए सव्वेमि इक्क गोल जीवाणं ॥ उक्कोस
पयम इगवा हुंतिपएसा असंखगुणा ॥ १८ ॥

व्याख्या—एवं के० ए प्रकारे एटले जेम निगोदआश्री कह्यो तेम गोला आश्री कहेछे. असंख्याता प्रदेशात्मक जीव ते एक जीवद्रव कहीए. अहींआं जीवद्रव्यलेवा अने प्रदेश न लेवा; ते माटे एक गोले जेटला जीवद्रव्यछे. ते सर्वथी प्रदेश उत्कृष्टपदे असंख्यात गुणा रह्याछे- कल्पनाए गोले लाखनिगोदछे. अने निगोदे लाखजीव छे. लाखते लाखनी साथे गुणीए तो सहस्रकोटि थाय. एटला एक गोले जीवछे, तेमां जीवना प्रदेशनुं लाख लाख उत्कृष्टपदे रहुंछे. ते लाखने सहस्रकोटि साथे गुणीएतो दश कोडाकोडी थाय. एटले उत्कृष्टपदे जीवना प्रदेश आवे. ॥ १८ ॥

तं पुण केवइ एणं गुणिअम संखिकजयं भविस्सा हि ॥
भन्नइ दव्वठाए जावइआ सव्व गोलत्ति ॥ १९ ॥

व्याख्या—जे उत्कृष्टपदे जीवना प्रदेशनुं प्रमाणछे ते असंख्यातु केटली राशे गुण्युं थकुं थाय? गुरु उत्तर करेछे के, द्रव्य थकुं. जेटला सघला ए गोलाछे ते टली राशिए गुण्युं असंख्यातु थाय. जे सर्व गोलानुं असंख्यातुंछे, ते उत्कृष्टपदे एक जीवना प्रदेशनुं असंख्यातु जाणवुं. ॥ १९ ॥

किंकारणमोगाहण तुल्लत्ता जिय निगोअ गोलाणं ॥
गोला उक्कोसपए इक्कजिय पएसे हितोतुल्ला ॥ २० ॥

व्याख्या—जेटला गोळा तेटला उत्कृष्टपदे जीवनाप्रदेश कहीए तेह्नु कारण? ए प्रश्न तेनो उत्तर—जेह कारणे जीव, निगोद, अने गोळा ए त्रणेनी अवगाहना सरखी छे, तेह कारणे गोळा उत्कृष्टपदे एक जीवना प्रदेशने समान छे ॥ २० ॥

एहज अर्थ समर्थेछे.

गोलेहिंहिअ लोगे आगच्छइ जतमेग जीवस्स ॥
उक्कोसपयगयपएसरासितुल्लं हवइ जम्हा ॥ ७१ ॥

व्याख्या—गोळानी अवगाहनाए लोकने भाग हरी जे राशि आवे, ते एक जीवना उत्कृष्टपदे रह्या प्रदेश राशि रहे ते समान होय कल्पनाए जे गोळानी अवगाहना दशसहस्र प्रदेश प्रमाण छे लोकना प्रदेश कल्पना ए कोडीछे तेहने दशसहस्रभागे भागवायी जे सर्व गोळानु प्रमाण लाख लाख आवे, ते उत्कृष्टपदे रह्या एक जीवना प्रदेशने समान होय जेह कारणे एमछे, ते कारणे गोळा उत्कृष्टपदे एक जीवना प्रदेशतुल्य छे ॥ २१ ॥

ए सर्व अर्थ जाणवा वांछता शिष्यने गुरु, प्रीछवानु प्रकारांतर कहे छे

अहवा लोगपएसे इक्किक्के ठवयगोल मिक्किक्क ॥
एव उक्कोसपइक्कजियपएसेसुमायति ॥ ७७ ॥

व्याख्या—अथवा हे शिष्य, एकेका लोकाकाश प्रदेशे एकेको गोळो थापीए एम स्थापतां उत्कृष्टपदे एक जीवप्रदेश जेटला छे, तेटला आकाश प्रदेशे गोळा माय, एटले जेटला उत्कृष्टपदे एक जीवप्रदेश, तेटला सर्व गोळा छे ॥ २२ ॥

हवे सर्व जीव अने उत्कृष्टपदे सर्व जीवप्रदेश ए बेकने तुल्यता कहे छे

गोला जीवायसमा पण्णत्तजच सव्व जीवावि ॥
दुनिसमोगाहणया मज्झिमओगाहणायण्ण ॥ ७३ ॥

व्याख्या — जेटली अवगाहना गोळानी तेटली जीवनी छे, ते माटे अवगाह नाना प्रदेश आश्री गोळो अने जीव ए बने समान छे जेहकारणे दश सहस्र प्रदेश प्रमाण मध्यमअवगाहना आश्री सरजाए सूक्ष्म निगोदना जीवसमान अवगाहना छे कल्पनाए जघन्य अवगाहना पांच सहस्र छे उत्कृष्ट अवगाहना पन्नर सहस्र छे ए बेने एकत्र करी अर्द्ध करतां दश सहस्र मध्यम अवगाहना थाय ए ह कारणे मध्यम अवगाहनाने मेळवतें गोळाने सर्व जीव समान छ ॥ २३ ॥

तेण फुडं विअसिद्धं एगपएसंमिजजियपएसा ॥ ते
सव जीयतुल्ला मुणसुपुसो जह विसेसहिया ॥ २४ ॥

व्याख्या–तेह कारणे उत्कृष्टपदे जे जीव प्रदेश ते सर्व जीवने तुल्य छे. ए वात प्रकट सिद्धी कल्पनाए वेकने सरखा देखाडीए छेए. गोले लाखनिगोद छे; निगोदे निगोदे लाख जीव छे. एकेका जीवना लाख लाख प्रदेश छे. ए उत्कृष्टपदे छे गोलाना निगोदने लाखे, जीवनुं लाख गुणीए तो सहस्र कोडी थाय. जे जीव प्रदेशना लाखे गुणतां दश कोडा कोडी थाय. एटला उत्कृष्टपदे जीव प्रदेश छे. गोले गोले लाख निगोद छे, लोकमांहे लाख गोलाछे; गोले गोले लाख निगोदछे निगोदे निगोदे लाख जीव छे. गोलाने लाखे निगोदना लाखने गुणीए तो सहस्र कोडी थाय. तेणे निगोदे रह्या जीवना लाखे गुणीए तो दशकोडी थाय. एटला सर्व जीव छे. एम उत्कृष्टपदे सर्व जीव ए वंने दश कोडाकोडी प्रमाण–समानज छे.तेम सर्व जीव थकी जीव प्रदेश विशेषाधिक होय तेम नांनज.॥२४॥

सर्व जीवथकी उत्कृष्टपदे जीवप्रदेशो विशेषाधिक देखाडे छे.

जंसंतिकेइ खंधा गोला लोगं तवत्तिणो अन्ने ॥ वायर
विगाहिए हिय उक्कोसपयं जमब्भहियं ॥ २५ ॥

व्याख्या–जेह कारणे केटलाएक लोकांते वर्त्तता अनेरा खंध–गोलाछे. पृथग गोला थकी खंधगोले कल्पनाए कोटी जीव छता. ते कोडी जीव, दशकोडा कोडीरूप सर्व राशीथकी काढीए, एमाटे ते सर्व जीवराशी अति थोडी थाय. उत्कृष्टपदे दशकोडाकोडी प्रमाण जीव प्रदेश राशी पूरीज छे, ते माटे ते जीव प्रदेश, विशेषाधिक थाय. तथा बादर अने विग्रह गतीक जीवने प्रदेशे करीने उत्कृष्टपदे जेह कारणमाटे सर्व जीवराशी थकी अधिका छे, तेह कारणमाटे सर्व जीवथकी उत्कृष्टपदे जीव प्रदेश विशेषाधिक थाय. अत्र भावना. सूक्ष्म निगोदने असंख्यातमे भागे वर्त्तता कल्पनाए कोटी प्रमाण बादर विग्रहगतिक जे जीव छे, ते सर्व जीवराशिमांहे स्थापीए तो. वळी सर्व राशि जीवप्रदेशने तुल्य ज थाय तथापि ते कोडी जीवनो असंख्यातमो भाग कल्पनाए सो जीवनी जीवप्रदेश उत्कृष्ट पदे अधिका होय. तेमाटे सर्व जीवराशी थकी उत्कृष्टपदे. जीव प्रदेशाधिक होय. ॥ २५ ॥

तम्हा सवेहितो जीवेहितो फुडगहेअव्वं ॥ उक्कोस
पयपएसा हुंति विसेसाहिआ निअमा ॥ २६ ॥

व्याख्या–तेह कारणे सर्वे जीव थकी ए प्रगटज जाणवो उत्कृष्टपदे जीव प्रदेश निश्चे विशेषाधिक छे ॥ २६ ॥ एहज अर्थ प्रकारांतरे कहे छे

अहवा जेण बहुसमा सुहुमा एलोवगाहणाएअ ॥
अत्तेण कि किजीव वुड्ढीइ विरल्लए लोए ॥ २७ ॥

व्याख्या–जेह कारणे चउदरजात्मक लोकमाहे गोले सहस्र कोडी कोडी प्रायजीव रह्या छे, तेह कारणे कल्पनाए लक्षप्रमाण सूक्ष्म गोला जीव सख्याए प्रायतुल्यज छे तथा ते सूक्ष्म गोला अवगाहनाए सरखा छे गुरु, शिष्यने कहेछे के, जेह कारणे कल्पनाए दश दश सहस्र प्रदेशरूप अवगाहना सरखीन छे, तेह कारणे सर्व जीवप्रदेश सरखा जाणवा माटे केवली समुद्घातनी परे वधा लोकमाही एकेकोजीव विस्तारे, एम करता एकेके आकाश प्रदेशे दशकोडाकोडी जीव प्रदेश आवे, ते माटे सर्वजीव अने जीवप्रदेश सरखाज जाणवा ॥ २७ ॥

एवपिसमाजीवा एग पएस गयजियपएसेहिं ॥
बायर बाहुल्लापुण हुतिपएसा विसेसहिया ॥ २८ ॥

व्याख्या–ए प्रकारे सर्वे जीव प्रदेशे रह्या, सर्वजीव प्रदेशे समान होय, पण बादर जीवना बाहुल्यथकी जीव प्रदेश विशेषाधिक थाय ॥ २८ ॥

ते सिण पुण रासीण निदरीण मिण जणामि पच्चक्ख ॥
सुहगहणगाहणत्थ ठवणारासिप्पमाणा हिं ॥ २९ ॥

व्याख्या–तेह राशिना दृष्टांते करीने प्रत्यक्ष सुखे जाणवा अने परने जणाववा निश्चर स्थापना राशि प्रमाणे करी जणामिके० कहुछु ॥ २९ ॥

गोलाणलक्खमिक्क ॥ गोले गोले निगोअ लक्खतु ॥
इक्किक्केअनिगोए ॥ जीवाण लक्ख मेक्केक ॥ ३० ॥

व्याख्या–हवे स्थापना राशि देखाडेछे गोलातो लाखछे गोले गोले लाख निगोद छे एकेके निगोदे जीवनो एकेको लाखछे ॥ ३० ॥

कोडिसयमेगजीवप्पएसमाणतमेवलोगस्स ॥
गोल निगोय जिवाणं दसय सहस्सा समो गाढो ॥३१॥

व्याख्या–सो कोडी, एकजीवना प्रदेशनुं मानछे. गोला निगोद अने जीव, ए त्रणथी दश सहस्र परिमाण सरखी अवगाहनाछे. ॥ ३१ ॥

जीवस्सेक्कस्सय दसयसयस्सावगाहिणो लोगो ॥
एक्केकंमियएसे पएसलक्खं समो गाढं ॥ ३२ ॥

व्याख्याः–लोकमांहे दशसहस्र प्रदेश प्रमाण अवगाहनाए रह्यो एकेक जीवना एकेके आकाश प्रदेशे लाख लाख प्रदेश रह्याछे. ॥ ३२ ॥

जीवस्सयस्स जहणं पयमि कोडीजियप्पएसाणं ॥
उगाढाउक्कोसे पयंमिवुड्ढंपएसग्गं ॥ ३३ ॥

व्याख्या–सो जीवना प्रदेश पदे जीवप्रदेश कोडीछे. उत्कृष्टपदे जीवना प्रदेशं प्रमाण कहेछे. ॥ ३३ ॥

कोडि सहस्स जियाणं कोडाकोडी दसप्पएसाणं ॥
उक्कोसेउगाढा सवजियाविक्तियाचेव ॥ ३४ ॥

व्याख्या–सहस्र कोडी जीवना दशकोडाकोडी प्रदेश उत्कृष्टपदे रह्याछे. त थना ए जीव एटला दश कोडा कोडीछे. ॥ ३४ ॥

कोडिउकोसपयंमि ॥ बायर जीअप्पएस परकेवा ॥
सोहणइ मित्तिअंत्रिअ कायवं खंम गोलाणं ॥ ३५ ॥

व्याख्या–उत्कृष्टपदे बादर जीवनी कोडी घालीए, तथा सर्व जीवराशिमांहे थकी खंम गोले जे जीवनी कोडी ऊंणी छे ते काढीए, तेह कारणे सर्व जीव थकी उत्कृष्ट पदे जीव प्रदेशे विशेषाधिक होय. ॥३५॥ हवे गुरु, शिष्यने कहेछे.

ए ए सिजहा संजव महोवयणं करिअ रासीणं ॥ सप्नावउ यजाणे
थते अणंता असंखावा ॥ ३६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

व्याख्या–ए राशिनी जिहां जेम संजवे तिहां तेम अर्थनी घटना करी. परमार्थ थकी ते राशि अनंती अथवा असंख्याती जाणवी. इतिश्री जगवती अंग एकादश शतके दशम उद्देशे निगोदविचार संपूर्ण. ॥ ३६ ॥

॥ इति श्रीनिगोदछत्रीशी बालावबोधसहित समाप्तः ॥



॥ अथ श्रीरत्नाकर पंचवीसी बालावबोध सहित प्रारभ ॥

श्रेय श्रियां मगलकेलिसद्म नरेंद्र देवेंद्र नताग्रिपद्म ॥ स
र्वज्ञ सर्वातिशय प्रधान चिरंजय ज्ञान कलानिधान ॥ १ ॥

व्याख्या–हे नरेंद्र देवेंद्रनताग्रिपद्म, नरेंद्रके० चक्रवर्त्यादिक अने देवेंद्रके० अमरेंद्रादिक एटले मनुष्यना इंद्र ते नरेंद्र अने देवोना इंद्र ते देवेंद्र, तेउए जेना चरणकमलने वदन कर्या छे, एवा हे नरेंद्र देवेंद्रनताग्रिपद्म ! अने समस्त वस्तु ना जाणनारा माटे हे सर्वज्ञ ! अने सपूर्ण जे निरोगादिक अतिशय–तेणे करी प्रधान, ए माटे हे सर्वातिशय प्रधान ! अने ज्ञान के० केवलज्ञान अने कलाके० चद्रांतर कला, तेना निधान के० निधि एवा हे ज्ञानकला निधान ! अने श्रेयस के० मोक्षनी जे श्रीके० लक्ष्मी तेना मगल के०कल्याणनु, केलिसद्म के० क्रीडानु गृह, एवा हे मगलकेलिसद्मके० मोक्षलक्ष्मी कल्याण क्रीडाना मदिर ! चक्र लोकना समस्त सकटना दूरकरनार तु चिरं के०घणाकाल पर्यंत जय के०सर्वोत्कर्षे करीने वर्त्त ॥१॥

जगत्त्रया धार कृपावतार दुर्वार ससार विकारवैद्य ॥ श्री वीत
राग त्वयि मुग्ध भावा द्विज्ञप्रभो विज्ञ पयामि किंचित् ॥ २ ॥

व्याख्या–जगत्त्रयके० स्वर्ग मृत्यु अने पातालरूप, त्रण भुवन तेना आधार के० स्थानभूत एवा हे जगत्त्रयाधार ! कृपाके० दया तेनेविषे अवतारके० उपदेश द्वारे करी जेनो प्रवेश छे, एवा हे कृपावतार, दुर्वारके० दुखे न वारयतिति दुर्वार एटले निवारणकरवामाटे अशक्य एवोजे ससाररूप विकारके० रोग, वियोग, जरा मरणादि लक्षण–तेनेविषे चिकित्साकारीपणाए करीने वैद्य सरखा हे दुर्वारससारविकारवैद्य, वीतके० गयलीछे रागके० रागदशा जेनी अने श्रीके० मोक्षलक्ष्मी तेणे सहित एवा हे श्रीवीतराग ! विज्ञ के० हे चतुर, हे प्रभो, त्वयिके० तारे वि षेथपणे तारीपासे हु मुग्धभावात् के० विशेष ज्ञान विकलपणानेलीधे मुग्ध हु, तेहु किंचित् के० काइक विज्ञपयामि के० विज्ञप्ति करुं ॥ २ ॥

किंबालखीला कलितोन बाल पित्रो पुरो जल्पति निर्विकल्प ॥
तथा यथार्थं कथयामि नाथ निजाशय सानुशयस्तवाग्रे ॥ ३ ॥

व्याख्या—हे प्रभो, जेम बाललीला कलितः के० बालकनी जे लीला के० धूलने विषे खेलवुं इत्यादिक, तेणे कलित के० युक्त अने निर्विकल्प के० जेथी जाणपण अजाणपणरूप भेद गयोछे, एवो जे बाल ते पित्रोःपुरःके० मातपितानी पासे किन जल्पति के० शुं नथी बोलतो? अर्थात् न बोलवानुं पण ते सर्व बोलेछे, तेम हे नाथ के० हे कल्याणकारक, सानुशय. के० बहु पातक संपादन कर्यां ए माटे पश्चात्तापे युक्त एवो हुं, तवाग्रे के० तारा अग्रभागनेविषे, निजाशयं के० पोताना अभिप्रायने, यथार्थं कथयामिके० यथार्थपणे कथन करुंछुं. अर्थात हुं मारो अभिप्राय तारी पासे प्रगट करुंछुं. ॥ ३ ॥

दत्तं न दानं परिशीलितं च न शालि शीलं न तपोऽभितप्तं ॥
शुभो न भावोप्यभवभवेऽस्मिन्विभो मया भ्रांत महो मुधैव ॥४॥

व्याख्या— हे विभो के० हे स्वामिन्! मया दानं न दत्तं के० में कृपणपणाए करी सत्पात्रनेविषे धननो विनियोग कर्यो नही, अने शालिशीलं के० मनोज्ञ एवा ब्रह्मचर्यने न परिशीलितं के० पालन कर्युं नही. तेमज तपः न अभितप्तंके० बाह्य अने अंतरंगरूप बारप्रकारनुं तप कर्युं नही. तेमज शुभ. भावोपिके० कल्याणकारक एवो भाव पण भाभवत् के० मने प्राप्त थयो नही. ए माटे अहो इति खेदे!! में मुधैव के० व्यर्थज अस्मिन्भवे के० आ संसारनेविषे भ्रांतं के० भ्रमण कर्युं. माराहाथथी कांइज सत्कर्म बन्युं नहीं. एवो अर्थ. ॥ ४ ॥

दग्धोऽग्निना क्रोधमयेनदष्टो दुष्टेन लोभाख्यमहोरगेण ॥
ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण मायाजालेन बद्धोऽस्मि कथं भजेत्वां ॥५॥

व्याख्या—हे नाथ, क्रोधमयेन अग्निना दग्ध. के० क्रोधरूप अग्निए अत्यंत ताप पमाडेलो अने दुष्टेनलोभाख्यमहोरगेण दष्ट के० निर्दय एवा लोभ नामे महा सर्पे दंश करेलो, अने अभिमानाजगरेणग्रस्तके० अहंकाररूपी अजगरे गलेलो, अने मायाजालेन बद्धः अस्मि के० कपटरूप जे जाल के० मत्स्यबंधन जाल सरखु बंधनहेतु, तेणे बंध पामेलो हुंछुं, ए माटे त्वां कथं भजेके० तारुं केम सेवन करूं? तो हे प्रभो! तारी कृपाए क्रोध, लोभ, अभिमान अने माया, एटलानो नाश थइने तारूं सेवन करवानो मारो हेतु क्यारे पूर्ण थशे, एवो भावार्थ ॥ ५ ॥

कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह लोकेऽपि लोकेश सुखं न मेऽभूत् ॥
अस्मादृशा केवलमेव जन्म जिनेश जज्ञे भवपूरणाय ॥ ६ ॥

व्याख्या–मया अमुत्र हितनकलके० में परलोकनेविषे एवु पुण्यकृत्य कयु नही, अने हे लोकेश! के० षट्कायना स्वामि एवा हे लोकेश! इहलोकेपि मे सुख ना भूत् के० आ लोकनेविषे पण मने सुख प्राप्त थयु नहीं ए माटे हे जिनेश के० हे केवलिपते! अस्मादृशा जन्म के० अमारा सरखाना अवतार ते, केवल भवपूर णायैव जज्ञेके० केवल अवतार गणनाना पूरणने माटे एटले जेम पूर्वे आपणा घणा अवतार थया तेमज आ पण एक अवतार, जन्म गणनाना पूरण माटेज थयो

मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्त त्वदास्यपीयूषमयूखलाभात् ॥
द्रुतं महानंदरसं कठोर मस्मादृशां देवतदश्मतोपि ॥ ७ ॥

व्याख्या –हे देव के० हे नाथ! हु एवु मानुछु के, यदस्मादृशा मन के० जे अमारा सरखानु मन मनोज्ञ के० सुंदर, वृत्त के० वर्तुल एवुजे त्वदास्य के० ता रू मुख, तेज कोइ एक, पीयूषमयूखके० अमृतकिरण चंद्र, तेना लाभे करीने अथ वा मनोज्ञ के० सारूंछे वृत्त के० शील जेनु, एवा हे मनोज्ञवृत्त, हेवीतराग! तारा मुखचंद्रना लाभे करीने महानंदरस के० सद्योरसास्वादथी उत्पन्न थएली जे पर म प्रीति तेज कोइ एक रस के०उदक तेने न द्रुत के० द्रवीभूत थयु नथी, तदश्म तोपि कठोर के० ते पाषाण करता पण कठण जाणवु कारण, चंद्रना दर्शने क रीने जीवरहित एवो पण चंद्रकांत पाषाण द्रवीभूत थायछे, अने मनने तो तारा मुखरूप चंद्रना दर्शने करी द्रव के० पिगलवु प्राप्त थयु नहीं ते कारण माटे ते मन, पाषाण करता पण कठोर जाणवु एवो भावार्थ ॥ ७ ॥

त्वत्तः सुदुःप्रापमिदं मयाप्तं रत्नत्रयं भूरि भवभ्रमेण ॥
प्रमादनिद्रावशतो गततत्कस्याग्रतो नायक पूत्करोमि ॥ ८ ॥

व्याख्या–हे नायक हेस्वामिन्! त्वत्त के०ताराथी सुदुर्लभ के० अत्यत दुर्लभ एवु इद रत्नत्रय के० ए ज्ञान, दर्शन, चारित्र लक्षण रत्नत्रय, मयाप्त के० में संपादन कर्यु हतु, परंतु ते भूरिभवभ्रमेणके०घणा जन्मनेविषे जे भ्रमके० भ्राति- तेणे करीने अने प्रमादनिद्रावशत के० मद प्रमुख प्रमाद अने पाच प्रकारनी प्रसिद्ध जे निद्रा–तेना माहात्म्ये करी तत्गतके० ते दूर गयु एटले अतर्धान पाम्यु

ए माटे हवे कस्यागतः पूत्करोमि के० ते गयुं एटले हवे कोना आगल पोकारूं? ए तो तारी कृपाएज प्राप्त थाय तो थाय एवी आशाछे. ॥ ७ ॥

वैराग्यरंगः परवंचनाय धर्मोपदेशो जनरंजनाय ॥ वादाय
विद्याऽध्ययनंच मेऽभूत् किय ब्रुवे हास्यकरं स्वमीश ॥ ए॥

व्याख्या–हे ईशके० हे स्वामिन्! हुं स्वंहास्यकरं कियद्ब्रुवे के० मारां हास्यकारक एवां कर्मने केटलां कहुं? जोके सर्व कर्म कहेवा माटे शक्य नथी, तथापि कांइक कहुंछु. मे वैराग्यरंगः परवंचनायाभूत् के० मारा वैराग्यनो जे रंग ते, परवंचनाय के० अन्यना प्रतारण एटले ठगवा माटे थयो, अने मे धर्मोपदेशः जनरंजनायाभूत् के० मे करेलु दानादिनुं जे कथन ते लोकोना रंजनने माटे थयुं. अने मे विद्याध्ययनं के० मारुं विद्या पठन, ते पण वादायाभूत् के० परवादना जयने माटे थयुं ॥ ए ॥

परापवादेन मुखं सदोषं नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणेन ॥
चेतःपरापायविचिंतनेन कृतं भविष्यामि कथं विभो हं ॥ १० ॥

व्याख्या–हेविभो! मया परापवादेन मुखं सदोषं कृतं के० में बीजाना द्वेषादिके करीने सत्य अने असत्य रूप दूषणनी जे उत्पत्ति. तेरूप अपवाद–तेणेकरी पोतानुं मुख दोषयुक्त कर्युं; तेमज पोतानां नेत्र, परस्त्रीजनवीक्षणेन के० परनारीना अव लोकने करी दोषसहित एवां कर्यां; तेमज पोतानुं चित्त, परापायविचिंतनेन के० बीजांनो जे अपाय के० अनर्थ, तेना विचारे करीने दोषसहित कर्युं. ए माटे हे प्रभो, अहं कथ भविष्यामि के० एवां पापकर्माचरणे करी आगल मारी शी गती थशे? एवो भावार्थ. ॥ १० ॥

विडंबितं यत्स्मरघस्मरार्ति दशावशात्स्वं विषयांधलेन ॥
प्रकाशितं तद्भवतोह्रियैव सर्वज्ञ सर्वं स्वयमेव वेत्सि ॥ ११ ॥

व्याख्या–हे नाथ! यत् के० जे, विषयांधलेन के० शब्दादिक विषये करी वि वेकरूप नेत्रो जेणे निमीलन कर्याछे एवो हुं तेणे–स्मरघस्मरार्ति दशावशात्–स्मरके० कामदेव–तेज कोइ एक घस्मर के० भक्षण करनारो, तेनी जे आर्तिके० पीडा–तेनी जे दशा के० अवस्था, तेना स्वाधीनपणा माटे स्वं के० पोतानुं स्वरू प विडंबितं के० निंदता प्रत्ये पमाडयुं. ते सांप्रत ह्रिया के० कथनरूप लज्जाए

भवत एव प्रकाशितं के० तनेज निश्चये करी प्रगट करेलुछे एटले लज्जायुक्त एवा ज हु, तेप्रत्ये अवलोकन करी ते मारां सर्व आचरण जाण्यांछे एवो अर्थ जे कारण माटे हे सर्वज्ञ ! तु सर्व जगत्ने स्वयमेव वेत्सि के० पोताना ज्ञाने करी जाणेछे ॥ ११ ॥

ध्वस्तोन्यमंत्रैः परमेष्ठिमंत्रः कुशास्त्रवाक्यैर्निहितागमोक्तिः ॥
कर्तुं वृथा कर्म कुदेव संगादवांछि हि नाथ मतिभ्रमो मे ॥ १२ ॥

व्याख्या–हे नाथ, ही इति खेदे–मेह्री मतिभ्रमोऽभूत् के० माहरो शा था बुद्धि विपर्यास थयो !! तेज कहेछे मया के० हु जे तेणे–परमेष्ठिमंत्र के० परमपदनेवि पे रहेछे माटे परमेष्ठी–तेनो जे नमस्काररूप नमो अरिहंताणं इत्यादिक नवपदा त्मक मंत्र, ते अन्य मंत्रैर्ध्वस्त के० बीजा मंत्रोए आदररहित कर्यो तेमज में आगमोक्ति के० आगमनी सिद्धांत वाणी, ते कुशास्त्रवाक्यैः के० वात्स्यायनादि वाक्योए करीने, अथवा कुत्सित एवा जे शास्त्रो–तेना वाक्ये करीने निहिता के० नाश पमाडी एटले श्रवण करी नहीं एवो अर्थ तेमज मे कुदेव संगात् के० हरिहरादिक कुत्सित देवोनी सेवनाए करीने कर्म कर्तुं के० ज्ञानावरणीयादिक पाप कर्मनु अपाकरण करवा माटे अवांछि के० इच्छ्यु ॥ १२ ॥

विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं भवंतं ध्याता मया मूढधिया हृदंतः ॥
कटाक्षवक्षोजगभीरनाभीकटीतटीया सुदृशां विलासाः ॥ १३ ॥

व्याख्या–हेजगदीश ! मुढधिया के० जेनी बुद्धि मुढछे एवो हु, तेणे दृग्लक्ष्य गतंके० दृष्टिने गोचरीभूत एवो भवंतं के० चिंतामणी सरखो जे तु–तेने विमु च्य के० परीत्याग करीने हृदंत के० पोताना हृदयनेविषे सुदृशांविलासा के० च पलत्वे करी जेउनी दृष्टि, सुदरछे एवी हरिणाक्षि स्त्रीउना हावभावादिक वि भ्रमज, ध्याता के० चिंतन कर्या ते विलास केवा? तोके–कटाक्षवक्षोजगभीरना भीकटीतटीया के० नेत्रकटाक्ष, स्तन, गभीर एवी नाभी, अने कटीप्रदेश–इत्यादि क अवयवोए मोहनशील चिंतामणि रत्न सरखो एवो जेतु--तेनो त्याग करीने हु कश्मलविषयोनेविषे आसक्त थयो ॥ १३ ॥

लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन यो मानसे रागलवोविलग्नः ॥
न शुद्धसिद्धांतपयोधिमध्ये धौतोप्यगात्तारक कारणं किं ॥ १४ ॥

व्याख्या—हे त्रिकाल वेदिन्! मारा मानसे के० चित्तनेविषे, लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन के० जेनां नेत्रो चंचलछे एवी जे रमणी, तेनुं जे मुख,तेना अवलोकने करीने यःरागलवः के० जे रातारानो अंश, विलग्नः के० विशेषेकरी संलग्न थयो, ते रागलवतारक के० हे संसारपारप्रापक! शुद्धसिद्धांतपयोधिमध्ये के० निर्दोष जे सिद्धांत के० आगम, तेज कोइक समुद्र—तेना मध्यभागनेविषे धौतोपि के० क्षालन कर्युं छतांपण नागात् के० नीकली गयो नही. तत्र किं कारणं के० तेविषे कारण शुं हशे? जे हशे ते हुं जाणतो नथी; परंतु माहारी विषयोनेविषे दृढासक्तता एज एनुं कारण हशे. एवुं मने लागेछे ॥ १४ ॥

अंगं न चंगं न गणो गुणानां न निर्मलः कोपि कलाविलासः ॥
स्फुरत्प्रधान प्रभुता च कापि तथाप्यहंकारकदर्थितोऽहं ॥ १५ ॥

व्याख्या—हे जिनेश, मे अंगं चंगं न के० मारुं शरीर सुंदर नथी, तेमज निर्मल के० मलरहित एवा, गुणानां गणो न के० विनय, औदार्य, गांभीर्य, धैर्य, स्थैर्य अने चातुर्य इत्यादिक गुणोनो समूहपण नथी. तेमज कोपि के० कोइपण कलाविलास के० कलानुं उद्दीपन थवुं अने कापि के० कोइपण प्रकारनी स्फुरत्प्रधान प्रभुता के० देदीप्यमान एवी जे राजाउनी प्रभूता के० चक्रवर्तिपणु अथवा देदीप्यमान एवी प्रधाननी के० अधिकारी पुरुषनी प्रभुता के० ऐश्वर्यता तेपण नथी, तथापी हे प्रभो! अहं अहंकारकदर्थितः अस्मि के० हुं अहंकारे करीने पराभव पामेलो एवो छुं. ॥ १५ ॥

आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि र्गतं वयो नो विषयाभिलाषः ॥
यत्नश्च भैषज्य विधौ न धर्मे स्वामिन्महामोहविडंबना मे ॥ १६ ॥

व्याख्या—हे स्वामिन्! मे के० मारी महामोह विडंबना के० प्रबल जे मोह—तेनी जे विडंबना के० कदर्थना ते केटली कहेवी? ते केवी? तो के मारुं आयु के० आयुष्य, ते आशुगलति के० शीघ्रनाश पामेछे; परतु पापबुद्धिर्न के० जे पाप परिणाम ते नाश पामता नथी. तेमज मारुं वयः गतं के० तारुण्य लक्षण जे वय, ते अतिक्रांत थयुं, परतु विषयाभिलाष न, के० शब्द, रुप, गंध, रस, स्पर्श रुप जे विषय, तेउनो अभिलाष के० इछा, ते हजी पण नाश पामी नथी. अने मारो यत्न के० आदर, ते भैषज्यविधौ के० शरीर निरोगी होवुं, एतदर्थ औषधादिकोना विधानविषे थयो, धर्मे न के० सुकृतनेविषे थयो नहीं. ॥ १७ ॥

भाऽत्मा न पुण्य न नवो न पाप मया विटाना कटुगीरपीय ॥
अधारि कर्णे त्वयि केवलार्के परिस्फुटे सत्यपि देवधिङ्मा ॥१७॥

व्याख्या–हे नगवन्! केवलार्के त्वयिके०केवलज्ञानना प्रकाशक केवल सूर्यज,एवो तु, परिस्फुटे सत्यपि के० अतिप्रगट वता पण, मयाके० हु जे–तेणे विटानांके०नास्ति कादि विटपुरुषोनी,आत्मा न पुण्य न नवो न पापनके०जीव नथी,पुण्य नथी,अवतार नथी,दुष्कृत नथी, इइ कटुगीरपिके० एवी कर्कशवाणीज कर्णे अधारिके० कर्णनेविषे धारण करी एटले श्रवण करी ए माटे हे देव के० हे केवलिपते! मांधिक् के० गुण अने अवगुण एउनो विवेक न करनारो एवो जे हु–तेने धिक्कार हो ॥ १७ ॥

न देवपूजा न च पात्रपूजा न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्म ॥
लब्ध्वापि मानुष्य मिदं समस्त कृत मयाऽरण्यविलापतुल्य ॥१८॥

व्याख्या–हे परमेष्ठिन्, मया के० हु जे–तेणे मानुष्य लब्धापि के० पूजादिक कृत्यो करवा माटे योग्य एवा मनुष्यपणाने पामीने पण देवपूजा न कृता के०अरिहतदेवनी पूजा करी नही, अने पात्रपूजा न कृताके० साधुने जे दान करवु ते पात्रपूजा ते पण करी नहीं उक्तच ॥ अन्न पान तथा वस्त्र मालय शयनासनं॥ शुश्रुषा वदन तुष्टि पूजा नवविधागुरो ॥ १ ॥ तेमज में श्राद्धधर्म न के० सम्यक्तपूर्वक द्वादशव्रत लक्षण धर्म, ते आचरण कर्यो नहीं, अने साधुधर्म न के०साधुनो जे पच महाव्रत लक्षण धर्म, ते पण स्वीकार्यो नहीं एमाटे इद समस्त के० ए अर्हतपूजा न करवी इत्यादिक सर्व, अरण्यविलापतुल्य कृत के० अरण्यनेविषे जे विलाप एटले रूदन तेना सरखु कर्यु एटले मने मनुष्यपणु प्राप्त थयु वतां में सत्कर्म कर्यु नहीं ग व्यर्थ थयु. उक्तच ॥ अरण्यरुदितं कृतं शवशरीरमुद्वर्तितं श्वपुच्छमवनामितं बधिर कर्णे जाप कृत ॥ स्थले कमल रोपण सुचिर मूषरे वर्षण यदध मुखमडन यदबुधेजने नाषितं ॥ इति ॥ १ ॥ १८ ॥

चक्रे मया सत्स्वपि कामधेनुकल्पद्रुचिंतामणिपुस्पृहार्तिं ॥
न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि जिनेश मे पश्य विमूढभाव ॥ १९॥

व्याख्या–हे जिनेश के० हे केवलिपते! मया के० हु जे तेणे असत्स्वपि के० अविद्यमान एवां पण, कामधेनुकल्पद्रुचिंतामणिषु के० मनोरथ पूर्ण करनारी

एवी कामधेनु, कल्पना पूर्ण करनारूं कल्पवृक्ष. अने चिंतितफल देनारूं चिंता मणि रत्न, एउनेविषे स्पृहार्त्ति के० इच्छारूप, पीमा के० प्राप्त थवानो निश्चय चक्रे के० कस्यो, परंतु स्फुटशर्मदेपिके० स्पष्टपणे करीने सुख देनारापण, जैनधर्म के० जिन प्रोक्त एवा धर्मनेविषे धर्माकरणरूप चिंता करी नही ते कारण माटे हे जिनेश! मे विमूढ नावं के० मारूं विशेषे करीने जे मंदपणु, ते प्रत्ये–पश्यके० अवलोकन कर. १९

सन्नोगलीला न च रोगकीला धनागमो नो निधनागमश्च ॥
दारा न कारानरकस्य चित्ते व्यचिंति नित्यं मयकाऽधमेन ॥ २० ॥

व्याख्या–हे पुरुषोत्तम! अधमेनके० अधम एवो मयकाके० हुं जे–तेणे, नित्यं के० निरंतर, सन्नोगलीलाके० उत्तमप्रकारना नोगोनी क्रीडा ते चित्तेके० चित्तनेविषे व्यचिंतिके० चिंतन करी; परंतु रोगकीला न चके० रोगरूप लोहना खीला ते चिंतन कस्या नहीज; तेमज धनागमः के० धननी प्राप्ति चिंतन करी, परंतु निधनागमो नोके० मरणप्राप्ति चितन करीनही, तेमज में दारा.के० स्त्रीनुं चिंतन कस्युं, परंतु नरकस्य काराके० नरक संबधी कारागृहनुं चितन कर्युंनही.

स्थितं न साधोर्हृदि साधुवृत्तात् परोपकारान्न यशोऽर्जितंऽच ॥
कृतं न तीर्थोद्धरणादिकृत्यं मया मुधा हारितमेव जन्म ॥ २१ ॥

व्याख्या–हे जगत्प्रनो! में साधुवृत्तात्के० उत्तम प्रकारना आचारे करीने साधो हृदि न स्थितंके० साधुना हृदयनेविषे रहेगाण करयुं नही. एटले जे सदाचारयुक्त होय, ते साधुने प्रिय थायछे, तेवो हुं थयो नही. एवो नावार्थ-तेमज मे परोपकारान्न यशोऽर्जितके० परोपकारे करीने प्रख्यातिरूप यश संपादन कस्यो नही, तेमज में तीर्थोद्धरणादिकृत्यं न कृतके० पतन पामेलां जिनमंदिरोनुं जे पुनः प्रतिष्ठान रूप उद्धरण–ते जेमां आदिछे; एवुं सत्कार्य कस्युं नही; ते कारण माटे में मारो जन्म, मुधैव अहारिके० व्यर्थज गुमाव्यो. ॥ २१ ॥

वैराग्यरंगो न गुरूदितेषु न दुर्जनानां वचनेषु शांतिः ॥
नाऽध्यात्मलेशो मम कोपि देव तार्यः कथं कारमयं नवाब्धिः ॥ २२ ॥

व्याख्या–हेदेव, मयाके० हुं अयं नवाब्धिके० आ नवसमुद्र, कथं कार तार्यःके० कोणप्रकारे करीने तरवाने माटे योग्यछुं ? जे पुण्यकर्म विना. तरवामाटे

अशक्य, ते पुण्यकर्म तो मे संपादन कर्युं नहीं तेज बतावुवुं मने, गुरु दितेषु के० गुरुए नापण करेला प्रकारनुं श्रवण करवाविषे वैराग्यरंगके० वैरागनी वास ना नाजनिके० उत्पन्न थइ नहीं यदुक्त ॥ धर्माख्याने श्मशाने च रोगिणां यामतिर्न वेत् ॥ यदि सा निश्चलाबुद्धि को न मुच्येत बंधनात् ॥१॥ तेमज दुर्जनानांके० अस ज्जनोना, वचनेषुके० वाक्योनेविषे, शांतिर्नाजूतके० उपशमप्राप्त थयो नहीं तमन मम कोपि अध्यात्मलेश नके० मने कोइपण आत्मबुद्धिए पवनपावनादिक अष्टांग योगनो लव पण प्राप्त थयो नहीं ॥ २२ ॥

पूर्वं नवेऽकारि मया न पुण्य मागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये ॥
यदीदृशोह मम तेन नष्टा नूतोनवन्नाविनवत्रयीश ॥ २३ ॥

व्याख्या०—हे नेत मया पूर्वनवे पुण्यनाकारिके० मे पूर्वजन्मनेविषे सुकृत सं पादन कर्युं नहीं ए केम समजवामा आव्युं ? तो के तेवुं सौख्य प्राप्त थयुं नथी ए उपरथी समजायछे तेमज आगामिजन्मन्यपिके० आगल प्राप्त थनारा जन्म नेविषे पण, नो करिष्येके० पुण्यसंपादन करनार नथी ए केम समजवामा आव्युं? तो के, वर्तमान जन्मना अनुमाने करीने वर्तमानजन्मनेविषे तो, दत्त न दान इ त्यादिके करीने पुण्यसंपादन कर्युं नहीं, ए स्पष्टज प्रतिपादन कर्युंछे आ जन्मने विषे पुण्य कर्युं नहीं, तेमज आगलपण करनार नथी, एवुं सिद्ध थायछे पुण्येन व र्धते पुण्य पाप पापेन वर्धेत इतिवचनात् ॥ यदीदृशोहके० जे कारणमाटे, पुण्योपार्जन रहित एवो हुं छु, तेन के० ते कारणे हे इश, मम नूतोनवन्नाविनवत्रयी न ष्टा के० मारा पूर्व थएला, वर्तमान कालना अने आगल थनारा एवा जन्मनी त्रयी नाश पामी एटले सुकृतसंपादनविना निरर्थक थइ एवो नावार्थ ॥ २३ ॥

किंवा मुधाऽहं बहुधा सुधाभुक्पूज्य त्वदग्रे चरितं स्वकीयं ॥ ज
ल्पामि यस्मात्त्रिजगत्स्वरूप निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ॥२४॥

व्याख्या० हे सुधाभुक्पूज्य के० अमृतने नक्षण करनारा जे देवो—तेउए पूजा करवाने योग्य एवा हे प्रनो! त्वदग्रे के० तारा अग्रनागनेविषे स्वकीय के० मा रा चरितं के० चरित्रोने, मुधा के० व्यर्थ, बहुधा के० नानाप्रकारे करी, अहं किंवा जल्पामि के० हुं शुं शा माटे कथन करुं यस्मात् के० जे कारणमाटे, त्वं त्रिजगत्स्वरू प निरूपकके० तुं त्रैलोक्यना लक्षणोनुं निरूपण करनारोछे, ते कारण माटे अत्र हि

यदेतत् के० तारेविषे ए मारां चरित्र कोण गणतीमांछे ? एटले त्रिभुवनजनोनुं स्वरुप जाणनारो तुंछे, एमाटे मारी पण सर्व स्थिति तने विदितजछे. ॥ २४ ॥

शार्दूलविक्रीडितछंद ॥ दीनोद्धार धुरंधर स्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपापात्रं नात्रजने जिनेश्वर तथाप्येतां न याचे श्रियं ॥ किंत्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नंशिवं श्रीरत्नाकरमंगलैकनिलय श्रेयस्करं प्रार्थये ॥ २५ ॥ इतिश्रीवीतरागस्तोत्र समाप्तं ॥

व्याख्या—हे जिनेश्वर. के० हे केवलीश! त्वदपरः के० ताराविना बीजो पुरुष दीनोद्धार धुरंधर. के० दीनोनो उद्धार करवा माटे तत्पर एवो नास्ते के० नथी. अने अत्रजने के० आलोकनेविषे मदन्यः के० माराथी बीजोपुरुष कृपापात्रं नास्ते के० कृपानुं स्थान नथी. अर्थात् कृपा करवाने अत्यंत योग्य एवुं स्थान ते माराथी बीजुं कोइ नथी. जो एवुं छे तथापि एतां श्रियं न याचे के० हाथी, घोडा कोशादिक सर्व जनमध्ये प्रसिद्ध जे ए संपत्ति, ते मलवा माटे हुं प्रार्थना करतो नथी. किंतु के० शुं तो हे अर्हन् के० हे भगवन्! हे शिवश्रीरत्नाकर के० हे मोक्षलक्ष्मीना समुद्र! हे मंगलैकनिलयके० हे भद्रैकमंदिर! इदं श्रेयस्करं के० ए कल्याणकारक एवुं, सद्बोधिरत्नं के० उत्तम प्रकारना जिनधर्म प्राप्ति माटे जे चिंतामणी सरखुं रत्न, तेनीज केवल हुं निश्चयेकरी प्रार्थना करुंछुं. आ श्लोकमध्ये स्तुति करनारे प्रभुने शिवश्रीरत्नाकर एवुं संबोधन आप्युं. तेमाज पोतानुं नाम श्रीरत्नाकरसूरि एवुं सूचवेलुंछे ॥ २५ ॥

इतिश्री रत्नाकरसूरिकृत रत्नाकरपंचवीसी
बालावबोध सहित समाप्तः

अथश्री सीमंधर स्वामिनी विनतीरूप सवासो गाथानु स्तवन अर्थसहित प्रारंभ ॥

ढाल पहेली- ॥ एक दिन दासी दोडती ए देशी ॥

स्वामि सीमधर वीनती ॥ सांभलो माहरी देवरे ॥ ताहरी आ
ण हु शिर धरु ॥ आदरु ताहरी सेवरे॥ स्वामि सीमधर वीनती॥१

व्याख्या-हे श्री सीमधर स्वामि, तमे माहरी विनती सांभलो हे देव के० देवा धिदेव, हु ताहरी आज्ञा, शिरधरु के० मस्तके धरुछु तथा ताहरी सेवाने आदरु छु सेवकनी विनती स्वामिए सांभलवीज ॥ १ ॥

कुगुरुनी वासना पाशमा ॥ हरिण परे जे पड्या लोकरे ॥ तेहने
शरण तुजविण नही ॥ टलवले बापडा फोकरे ॥ स्वामि० ॥ २ ॥

व्याख्या-कुगुरुनी वासना के० जूठा उपदेशनी धारणा ते रूपी पाशमाहे हरिणनी पेरे जे लोक पड्याछे, पोतानो मत मूके नही एम दृष्टि मोहे मूझाइ रह्याछे, तेहनेके० ते दृष्टिरागी लोकने तुजविना शरण नथी ताहरो सत्युपदेश परिणमे तोज ते पाश तूटे ते बापडा दृष्टि रागना वाह्या टलवलेछे, काइ कष्ट क्रिया करेछे ते फोकट जाणवी पाश तूटे तेज लेखे समजवी ॥ २ ॥

ज्ञान दर्शन चरण गुण विना ॥ जे करावे कुलाचाररे ॥ लूटे
तेणे जन देखता ॥ किहा करे लोक पोकाररे ॥ स्वामि०॥ ३ ॥

व्याख्या-ज्ञान दर्शन चारित्र गुणविना एटले तेणे रहित कोइ जे कुगुरु, कुलाचार करावेछे देशथकी सर्व थकी ज्ञानादिक गुण नथी अने एवी क्रिया करावेछे, शुद्ध अशुद्ध नविचारे, जेम चाल्युं आव्यु तेम करीए, एवी रीते जोडवेछे. तेणे कुगुरु ए जनके० मुग्ध श्रद्धावंत लोक देखता लूटेछे खोटु कहीने लेवु लूटवु, एवो अन्याय तो लोको क्यहा पोकारे? तमे स्वामि तो वेगलाछो, अने प्रभुता अनेरानी अहींयाछे

जेह नवि भव तर्या निरगुणी ॥ तारशे केणी पेरे तेहरे ॥ एम
अजाण्या पडे फदमा ॥ पाप बधे रह्या जेहरे ॥ स्वामि० ॥ ४ ॥

व्याख्या-जेह कपटाचारे निर्गुणी थका,नविके०नहींज भवके० ससार तर्या,तेह केणी पेरे के० केवे प्रकारे बीजा लोकने तारशे? कारण, जहाज तारे पण शिला

न तारे; एम अजाण्या थका दृष्टिरागी मूढ, कुगुरुना फंदमां पडेछे. पापबंधेके० पापसमुदायमां जे रह्याछे आत्मवीर्य उल्लासी थया नथी ॥ ४ ॥

कामकुंभादिक अधिकनुं ॥ धर्मनुं को नवि मूलरे ॥ दोकडे
कुगुरु ते दाखवे ॥ शुं थयुं एह जग सूलरे ॥ स्वामि०॥ ५ ॥

व्याख्या–कामकुंभ के० कामकलश. आदिशब्दे चिंतामणि रत्न अने कल्पवृक्ष लेइए. ते थकी पण अधिको धर्म छे. जे धर्मनुं कोइ मूल नथी कारण, अमूल्य वस्तुनुं शुं मूल्य होय? ते धर्म, कुगुरु दोकडे देखाडेछे. जे आटले द्रव्ये पाप जाय, आटले साहमी थाय. एह सर्व जगने शो सूल थयो जे सर्व आधले आंधला चालेछे.॥५॥

अर्थनी देशना जे दीए ॥ उलवे धर्मना ग्रंथरे ॥ परम
पदनो प्रगट चोरथी ॥ तेहथी केम वहे पंथरे ॥ स्वामि० ॥६॥

व्याख्या–जे कुगुरु अर्थनी के० द्रव्योत्पत्तिनीज देशना, कल्पित कथादिके करी दीएछे, धर्मना ग्रंथ जे श्री दशवैकालिकादिक तेने उलवेछे, शुद्ध प्ररूपता नथी, एवा प्रगट चोरथी परमपदनो मार्ग केम वहे ? अपितु न वहेज. जे मोटे वेसणे वेसी शुद्धपरूपे नही, ते रखवाल नाम धरावी चोर थायछे. एअर्थ छे ॥ ६ ॥

विषयरसमां गृही माचिया ॥ नाचिया कुगुरु मद पूररे ॥ धूम
धामे धमाधम चली ॥ ज्ञान मारग रह्यो दूररे ॥ स्वामि०॥७॥

व्याख्या–गृही के० गृहस्थ ते विषयरसमांहेज राच्या. अनादि अभ्यासछे. अने सुगुरु काने न लाग्या तेवती अने कुगुरुने मदपूरे माच्या अन्न पान दातारना मान माटे निजउत्कर्षे हर्ष्या, एम करतां बहुने धर्मनी खटपट टली ते माटे धूम धामे धमाधम, चली एटले उन्मार्गेज चाल्यो इत्यर्थ ॥ इहां धामधुम के० धकाधक तेणे करी धमाधम के० धींगामस्ती चाली शुद्धक्रिया वेगली रही अने अशुद्धक्रियाना धणी झाक झमाला मार्फे मोटाइमां माची आधा पडे केवल धींगाणुं प्रवर्त्युं. वली पोते गृहस्थने प्रेरणा करे के, गाममां आवता विशेषे साहमां आववुं, विशेष सामैयुं करो, विशेष प्रभावना करो, जेम जिनशासननी उन्नति देखाय ए धूम केमके कुमार्गेनुं वचनछे. जे कारणे पोतेज यशना अर्थि थया त्यां धर्म गयो. केमके साधुनो मार्ग एवोछे जे कांइपण उन्नति वांछे नही, सहेज नावे थाय तो थाउ तेमाटे इहा धूम ते उन्मार्गे पासछादिकनुं पराक्रम अने धाम ते, एना रागी भोला गृहस्थ लोकनुं पराक्रम, तथा धमाधम ते ए बंनेनी करणी जा

एवी वली शरीरनी शुश्रुषा राखे, शरीरनो मेल दूर करे, शरीरशुद्धे सरस आहार करे, नवकल्पि विहार न करे, श्रावक श्राविकानो घणो परिचय करे, श्रावकने घेर जणाववा जाय, श्रावकसाथे घणी मीगसी करे पोताना आत्मानो अर्थ ता सा धेज नही, जला चद्रुआ बधाय तिहा रहे, रेशमी वस्त्रो पहेरे, सान्नुए धाया वस्त्र पहेरे, ऋष्ट पुष्ट शरीर राखे, वस्त्र पात्रना दूपण धरे, गीतार्थनी आज्ञा न माने, अ णजाण्यो मार्ग चलावे, अणजाण्यो कहे, मार्गे हिंसता वात करे, गृहस्थसाथे घणी आलाप सलाप करे इत्यादिक एवी करणी ए पोते साधुपणु पोता माहे सर्दहे अने गृहस्थनेपण साधुपणु सर्दहरावे, दर्शननी निंदा करे पोतापणु वखाणे,पोता नो आमंबर चलाववो, गृहस्थपासेपण पोतानी जक्ति प्रमुखनो आमबर चलावराववा इत्यादिक सर्व गमे धुम १ धाम २ अने धमाधम ३ ए त्रण बोल जाणवा ज्ञानादिक मा र्गे, पुस्तकादिके हतो ते करवा–जाणवा माटे वेगलो रह्यो जुग बोलाज घणाछे ॥७॥

कलह कारी कदाग्रह जर्या ॥ थापता आपणा बोलरे ॥ जिन वचन अन्यथा दाखवे ॥ आज तो वाजते ढोलरे ॥स्वामि० ॥८॥

व्याख्या–कलहके० कलेशना करणहार कदाग्रहे करी जर्याछे, माहोमाहे एकेकना अवर्णवाद बोले जे जेम बोल्या ते तेम पोतनोज बोल थापताथका श्रीजिनवचनके० श्रीवीतरागदेवना वचन आजतो वाजते ढोले अन्यथाके० विपरीत देखाडेछे ॥८॥

केइ निज दोषने गोपवा॥ रोपवा केइ मत कदरे ॥ धर्मनी दे शना पालटे ॥ सत्य जाषे नहीं मंदरे ॥ स्वामि० ॥ ए ॥

व्याख्या–केटला एक कपटक्रियाए पोताना दोषने गोपवाने माटे अपवादपद देखा डता अने केटलाएक प्रतिमा प्रमुखना अण माननार लूपकादिक पोतानामत रूप कद रोपवाने काजे धर्मनी देशना जे मूलछे ते पालटी नाखेछे, पण जेणे करी जीव, धर्म जोडाय ते धर्म देशना देता नथी एवा मद के०मूर्ख पण ते साचु नाखे नहीं ॥ए॥

बहु मुखे बोल एम साजली॥ नवि धरे लोक विश्वासरे ॥ ढूंढता धर्मने ते थया ॥ जमर जेम कमल निवासरे ॥ स्वामि० ॥ १० ॥

व्याख्या–एम बहु मुखे के० घणाने मोढे बोल जूदा जूदा सानलीने लोको वि श्वासने धरे नहीं, अने जेम जमरा, कमलनी वासनानी इच्छाए जमता फरे पण केरमोय ते न पामे, तेम ते लोको धर्मने ढूंढता थया जे कोण साधु पासे धर्म होशे? एवा सच्रमे फरे ॥ १० ॥ एहवी अरदास श्रीप्रजुजी आगल कही

ढाल बीजी राग गोडी ॥ जोजीडा हंसारे विपय न राचीए एदेशी

एम ढूंढतांरे धर्म सोहामणो ॥ मिलिउ सदगुरु
एक ॥ तेहने साचोरे मारग दाखवे ॥ आणी शुद्ध
य विवेक ॥ श्रीसीमंधर साहेब सांभलो ॥ ११ ॥

व्याख्या–एम वाहेरधर्म ढुंढतांथकां हवे धर्म ते केवोछे? सोहामणोके० मनोहरछे. एक सद्गुरु ते ज्ञानी गुरु मल्या. ते ते ढुंढणहारने साचो अंतरंग मार्ग देखाडे ते शुद्ध यमांहे एवो विवेक आणीने के, ए वाह्यदृष्टिने ज्ञानमार्गमांहे अवतारीए तो मूढता टले, ए व्यतिकर हे श्रीसीमंधर स्वामि, तमे सांभलो, अने सत्यवादीना वचनना साखी थाउ. ॥ ११ ॥ हवे तेसद्गुरू जे उपदेश कहेछे, ते देखाडेछे. ॥

पर घरे जोतांरे धर्म तुमे फरो ॥ निज घरे न लहोरे धर्म ॥ जेम नवि
जाणेरे मृग कस्तुरीउ ॥ मृगमद परिमल मर्म ॥ श्री० ॥ १२ ॥

व्याख्या–हे वाह्यदृष्टि लोको! तमे परघरे धर्मने जोता फरोछो, पण निजघरे के० पोताना घटमांहे धर्म नथी पामता. ते ऊपर दृष्टांत–जेम कस्तुरिउ मृग, पोतानी नाभीमांहे जे मृगमद के० कस्तुरी उत्पन्न थइछे, तेना परिमल के० सुगंधना मर्मने जाणे नहीं; तेम तमे पोतानाज घटमांहे धर्मछे तेने नथी पामता॥१२॥

जेम ते भूलोरे मृग दिशि दिशि फरे ॥ लेवा मृगमद गंध ॥ तेम
जगें ढुंढेरे वाहिर धर्मने ॥ मिथ्यादृष्टि रे अंध ॥ श्री० ॥ १३ ॥

व्याख्या–जेम ते कस्तूरि उ मृग मृगमदके० कस्तूरीनी सुगंध लेवा माटे वनमांहे दिशा दिशानेविपे रझलतो फरे, तेम मिथ्यादृष्टि अंधछे तेपण निज आत्माथी अन्य गमे धर्मने ढुंढेछे के० शोधेछे, पण विपर्यासे करी आत्मज्ञानमांहे न रमे ॥१३॥

जातिअंधनोरे दोप न आकरो ॥ जे नवि देखेरे अर्थ ॥ मिथ्या
दृष्टि रे तेहथी आकरो ॥ माने अर्थ अनर्थ ॥ श्री० ॥ १४ ॥

व्याख्या–जातिअंध के० जन्मनो जे अंधछे तेनो दोप तो आकरो नथी, कारण ते ज्यां अर्थ होय त्यां देखतो नथी पण मिथ्यादृष्टि तो छती आंखे जाति अंधना करतां आकराछे. कारण ते अर्थने अनर्थ करी माने, अने अनर्थने अर्थ करी मानेछे. अहींयां दश मिथ्यात्वछे. धम्मे अधम्म सन्ना १ अधम्मे धम्मसन्ना २ उमग्गो मग्गसन्ना ३ मग्गोउमग्ग सन्ना ४ साहुसु असाहु सन्ना ५ असाहुसु साहु

सन्ना ६ जीरे अजीव सन्ना ७ अजीवें जीव सन्ना ८ मुत्ते अमुत्त सन्ना ९ अमुत्तेमुत्त सन्ना १० एदश प्रकार मिथ्यात्वना कह्या ॥ १४ ॥ मिथ्यादृष्टिना लक्षण कहेछे

आप प्रशंसेरे परगुण ठलवे ॥ न धरे गुणनोरे लेश ॥ ते जिन
वाणीरे नवि श्रवणे सुणे ॥ दिए मिथ्या उपदेश ॥ श्री० ॥१५॥

व्याख्या–आप प्रशंसे के० पोताना आत्मानो उत्कर्ष करे अने कांइक दोष काढीने पारकाना गुणने ठलवे के० छुपावे पोतेतो गुणनो लवलेश मात्रपण धरे नहीं वली ते मिथ्यादृष्टि, जिनवाणीके० श्रीवीतरागदेवना वचन ते श्रवणे के० काने, नवि सुणे के० सांभले नहीं जे उपदेश दे ते मिथ्या के० स्वमति कल्पित दिए, थोडो जाणे तो घणो फुलीने कहे उगाठजो होय ॥ १५ ॥

ज्ञान प्रकाशेरे मोहतिमिर हरे ॥ जेहने सदगुरु सूर ॥
ते निज देखेरे सत्ता धर्मनी ॥ चिदानंद भरपूर ॥ श्री० ॥१६॥

व्याख्या–जीव, तुज ताहरो मित्रछे तो शामाटे बाहेर मित्रने वांछेछे? एटले आत्मा समजनारनेछे तो सर्वज मित्रछे जेहने सद्गुरुरूप सूर्य ज्ञान प्रकाशे जे पुरिसा तुममेव तुममित्त किंबहियामित्त मिछसि ईत्यादि आचारांगे. अर्थ व्याख्यान रूप किरणे करी मोहरूप तिमिर के० मिथ्यात्वरूप जे अंधकार ते हरे, ते पोताना आत्मामांहे निज धर्मनी सत्ता देखे ते केवीछे? तोके चिदानद के० ज्ञानसुख तेणे भरपुर, प्रथम सम्यक्त्व पामे तेहने अतिशे आनद उपजे ॥ १६ ॥

जेम निर्मलतारे रतन स्फटिकतणी ॥ तेम जे जीवस्वभाव ॥ ते
जिन वीरेरे धर्म प्रकाशीउ ॥ प्रबल कषाय अभाव ॥ श्री० ॥१७॥

व्याख्या–जेम फटिक रत्ननी निर्मलता ते स्फटिकनो स्वभावछे ते उपाधि विना प्रगटे, तेम जे जीवनोपण कषायादिकना अभावे प्रकटतो स्वभावछे ते श्रीजिनजी के० श्रीवर्धमान स्वामिए धर्म प्रकाश्योछे ते केवोछे? तो के प्रबल जे कषाय तेनो अभाव एटलेनो कषाय प्रबलपणपछे मदकषायनो धर्मपण लाभ्यो ॥१७॥

जेम ते रातेरे फूले रातडु ॥ श्याम फूलथीरे श्याम ॥ पाप
पुण्यथीरे तेम जगजीवने ॥ राग द्वेष परिणाम ॥ श्री० ॥१८॥

व्याख्या–जेम ते स्फटिकरत्न, राते फूल पामेछे तेथी रातुं देखायछे. श्याम फूल पार्श्ववर्तीपणाथी श्याम देखाय, तेम जगत्ना जीवने पापपुण्यरूप द्रव्य कर्म

उपाधिए राग द्वेष परिणाम थायछे. रागे रातां फूल अने द्वेषे श्याम फूल थाय एम समजवुं अने सहज तो ते शुद्ध स्वभावछे ॥ १८ ॥

धर्म न कहिएरे निश्चे तेहने ॥ जेह विभाव वडव्याधि ॥ पहेले
अंगेरे एणीपरे भाषियुं ॥ करमे होए उपाधि ॥ श्री० ॥ १९॥

व्याख्या–ते राग द्वेष प्रशस्त परिणाम रूप होय तो कारणे कार्योपचारथी व्यवहारे धर्म कहीए, पण निश्चयनये धर्म न कहीए. जे रागद्वेष विभावछे, ते महोटी व्याधिरूपछे. एप्रमाणे पहेले अगे एटले श्रीआचारांगे भाष्युंछे के, उपाधि सर्वे, कर्मे होय तो उपाधिने स्वभाव केम कहीए? अकमस्स ववहारो णविज्जइ कमुणा उवाहिजायइ इतिसूत्रं ॥ अध्ययन त्रीजे. अकम्मके० ज्यां कर्मजनित विकार नथी त्यां व्यवहार नथी. उपाधि ते कर्मे करी होयछे. ॥ १९ ॥

जे जे अंशेरे निरुपाधिकपणु ॥ ते ते जाणोरे धर्म ॥ सम्य
क्दृष्टिरे गुणठाणाथकी ॥ जावलहे शिवशर्म ॥श्री०॥२०॥

व्याख्या–जेटले अंश निरुपाधिक पणुके० उपाधिरहितपणु ते ते अंशे धर्म जाणो. जेम सम्यक् दृष्टिने मिथ्यात्व उपाधि टली तेटलोज धर्म विरतिने अविरति टले. तेहज धर्म अकषायीने कषाय टल्यो,तेधर्म अयोगीने योग टल्यो. तेधर्म. एम सम्यक् धर्म जाणो. जेम सम्यग्दृष्टि गुणठाणाथी मांमी ज्यां सुधी शिवशर्मके० मोक्षसुखपामीए, त्यां सुधी अंशेधर्मवृद्धि पामता पूर्ण धर्म तेचौदमा गुणठाणाने छेल्ले समये होय.

एम जाणीनेरे ज्ञान दशा भजी ॥ रहीए आपस्वरूप ॥ पर परि
णतिथीरे धर्म न छांमिए ॥ नवि पडिए भवकूप ॥ श्री० ॥ २१ ॥

व्याख्या–एम जाणीने मिथ्यात्व,अविरति प्रमाद,कषाय अने योग–ए पांच आश्रव, तेमनो निवृत्ति ते पांच संवर;एम अंतरग ज्ञान दशा भजीने आपस्वरूपे रहीए अने शुद्ध परिणामे वर्तिए. परपरिणतिथी पुजल परिणामथी कुग्रहे, मिथ्यात्वादिक आदरी धर्म न छांमीए. भवकूप के० संसाररूपी कूपे न पडीए. ज्ञानदशा विना बाह्यक्रिया ए जमालि प्रमुखने अर्थे न सर्यो. ॥ २१ ॥

बाहर ढुंढवुं मूकी परदोष दृष्टिटाली आत्मानो खोज करे तो धर्म पामे ए बीजी ढालमांहे कह्यु. हवे ते आत्मज्ञाननो उपाय त्रीजी ढालमां कहेछे. ॥

ढाल त्रीजी ॥ हवे राणी पदमावती ॥ ए देशी. ॥

जिहां लगे आतमद्रव्यनुं ॥ लक्षण नवि जाण्यु ॥ तिहां लगे गु
ण ठाण भलू ॥ केम आवे ताण्युं ॥ आतमतत्व विचारीए ॥२१॥

व्याख्या-जिहां लगे आतमद्रव्यनु लक्षणके० शुद्ध स्वरूप ते जाण्यु नहीं, तिहां ल
गे गुणठाणु भलुके० प्रवर्द्धमान स्थानक ते गुणठाणु ताण्युं केम आवे? जे शब्दयोगे
पाम्यानु होय ते उपयोगे न आवे ते माटे आतमतत्व विचारीए एहज निश्चय
लक्षण छे आत्मैव दर्शन ज्ञान चारित्राण्यथवायते ॥ यत्तदात्मक एवैष शरीरमधि
तिष्ठति ॥ १ ॥ अर्थ-अथवा यतिनो आत्माज सम्यक्त्व दर्शन निर्मल ज्ञान अने
चारित्ररूप छे जेह कारण माटे सम्यक्त्वादिरूप ए आत्माज, यतिना शरीरनो आ
श्रयकरी रहेले ॥ १ ॥ आत्मनात्मानमात्मावेत्ति मोहत्यागायदात्मनि ॥ तदेवतस्य
चारित्र तद्ज्ञानं तच्चदर्शन ॥ २ ॥ इति योगशास्त्रे ॥ २१ ॥

आतम अज्ञाने करी ॥ जे भव दुःख लहीए ॥ आतम
ज्ञाने ते टले ॥ एम मन सद्दहीए ॥ आतम० ॥ २२ ॥

व्याख्या- आत्माने अज्ञाने करी पुद्गलमांहे आत्म भ्रम धरतां मिथ्यात्वेण उ
दितेण उत्कृष्ट पयडीउ बधति ए वचनथी, भवदुःखके० संसारभ्रमणनां दुःख
लहीए के० पामीए ते भवदुःख आत्मज्ञानेज टले पण आत्मज्ञानरहित तप
प्रमुखे न टले जेम हिमविकारदुःख,अग्नि ए टले तेम जाणवु ए तत्व मनमां सद्दहि
ए आत्माज्ञानहि विद्वांसात्मज्ञानेन हन्यते॥तपसा प्यात्मविज्ञान हीनैस्तत्तु न श
क्यते॥१॥२२॥ एमतो आत्मज्ञानेज सफर होय तो चारित्रनु शु काम? तेउपरकहेछे.

ज्ञानदशा जे आकरी ॥ तेह चरण विचारो ॥ निर्विकल्प
उपयोगमां ॥ नहीं कर्मनो चारो ॥ आतम० ॥ २४ ॥

व्याख्या-ज्ञानदशा ने आकरी प्रत्याख्यान परिज्ञारूप छे तेहज चरण के०
चारित्र विचारो निर्विकल्प शुद्धज्ञाननो उपयोग ज्यां होय त्यां कर्मनो चारो
यो एतावता निवारे कर्म न आवे ते माटे ज्ञान तेहज स्वभाव चरण छे बाहे
चारित्र कह्यु बाह्य त्यागनो निर्यचादिकने पण छे ॥ २४ ॥

भगवई अंगे भाखीउं ॥ सामायिक अर्थ ॥ सामायि
कपण आतमा ॥ धरो सूधो अर्थ ॥ आतम०॥२५॥

व्याख्या-श्री भगवतीसूत्रे पांचमे अंगे कालासवेसीय प्रश्ने स्थविरे कह्यु ॥

आयासामाईए आयासामाइयस्स अठे ॥ ए वचने आत्मनावरूपज चारित्र कह्युं. इव्यथी त्याग मात्रे जे कह्युं, ते उपचारे कहीए अने मुख्यअर्थे "स्पर्शविना उप चार न संजवे" ए सूधो सूत्रनो अर्थ चित्तमांहे धरो. ॥ २५ ॥

लोकसार अध्ययनमां ॥ समकित मुनी नावे ॥ मुनिना
वज समकित कह्युं ॥ निज शुद्धस्वनावे ॥ आतम०॥२६॥

व्याख्या–लोकसार नामे आचारांगनुं पांचमुं अध्ययन–तेमांहे समकित मुनि नावे अने समकितज मुनिनाव एवु अन्योन्य विना नावे कह्यु ठे ; ते निज शुद्ध स्वनावे करे, तेमाटे शुद्धस्वनाव उपयोग–तेहज आत्मचरण नणी चारित्र कहिए. ए ज्ञानमांहेज रती करिए. यडुक्तं ॥ जं सम्मंतिपासहा तमोणंतिपासहा जं मोणं ति पासहा तंसम्मंतिपासहा ॥ इत्यादि आलावोठे. इति ठवीशमी गाथार्थ ॥२६॥

हवे ज्ञाननो महिमा स्तवे ठे.

कष्ट करो संजम धरो ॥ गालो निज देह ॥ ज्ञानदशा
विण जीवने ॥ नही उःखनो ठेह ॥ आतम० ॥ २७ ॥

व्याख्या–कष्ट के० लोचादि करो, संयम चारित्रक्रिया उग्र धरो, निजदेह के० पोतानुं शरीर मास खमणादिके गालो ; पण ज्ञानदशाविना जीवने उ:खनो ठेह के० ठेडो नथी. तेमाटे अंतर्मुखे थइने ज्ञानदृष्टि दृढ राखवी. ॥ २७ ॥

बाह्यदृष्टि जीवो अंतर्मुख्यज्ञान प्रवर्त्ति अज्ञानेज नथी करता ते देखाडे ठे.

बाहिर यतना बापडा ॥ करतां दूहवाए ॥ अंतर ज
तना ज्ञाननी ॥ नवि तेणे थाए ॥ आतम० ॥ २८ ॥

व्याख्या–बापडा ज्ञाननी शांत बाहेर उग्रविहार यत्ना करतां दूहवायठे. उ:ख मात्र पामेठे पण तेणे ज्ञानयतना अंतर्मुख्य सुख करे ठे ते पण नथी थाती; अ ज्ञानमांहेज जे तुच्छ उपाय करेठे. ते हिताहित जाणता नथी. उक्तंच ॥ अज्ञानं खलु कष्टं क्रोधादिन्योपि सर्व पापेन्य. ॥ अर्थंहित महितंवा नवेत्तियेनावृतो जीवः

राग द्वेष मल गालवा ॥ उपशम जल कीलो ॥ आतम
परिणति आदरी ॥ पर परिणति पीलो ॥ आतम० ॥ २९ ॥

व्याख्या–राग द्वेषरूप मल गालवाने माटे उपशमरूप जलनेविषे कीलो. ने उ पशम आतमज्ञाने आवे; तेमाटे तत्वसंवेदने आत्मपरिणति आदरीने पर परि

जिहां लगे आतमद्रव्यनुं ॥ लक्षण नवि जाण्युं ॥ तिहां लगे गु
ण ठाणुं जलुं ॥ केम आवे ताण्युं ॥ आतमतत्व विचारीए ॥७२॥

व्याख्या–जिहां लगे आतमद्रव्यनुं लक्षण के० शुद्ध स्वरूप ते जाण्युं नहीं, तिहां ल
गे गुणठाणुं जलुं के० प्रवर्द्धमान स्थानक ते गुणठाणुं ताण्युं केम आवे? जे राज्ययोगे
पाम्यानुं होय ते उपयोगे न आवे, ते माटे आत्मतत्व विचारीए एहज निश्चय
लक्षण छे आत्मैव दर्शन ज्ञान चारित्राण्यथवायते ॥ यत्तदात्मक एवैष शरीरमधि
तिष्ठति ॥ १ ॥ अर्थ–अथवा यतिनो आत्माज सम्यक्त्व दर्शन निर्मल ज्ञान अने
चारित्ररूप छे जेह कारण माटे सम्यक्त्वादिरूप ए आत्माज, यतिना शरीरनो आ
श्रयकरी रहेछे ॥ १ ॥ आत्मनात्मानमात्मानेत्ति मोहत्यागायदात्मनि ॥ तदेवतस्य
चारित्र तद्ज्ञान तच्चदर्शन ॥ २ ॥ इति योगशास्त्रे ॥ २२ ॥

आतम अज्ञाने करी ॥ जे भव दुःख लहीए ॥ आतम
ज्ञाने ते टले ॥ एम मन सद्दहीए ॥ आतम० ॥ ७३ ॥

व्याख्या– आत्माने अज्ञाने करी पुद्गलमांहे आत्म भ्रम धरता मिथ्यात्वेण उ
दिण्णेण अठकम्म पयडीउ बधंति ए वचनथी, भवदुःख के० संसारभ्रमणनां दुःख
लहीए के० पामीए ते भवदुःख आत्मज्ञानेज टले पण आत्मज्ञानरहित तप
प्रमुखे न टले जेम हिमविकारदुःख,अग्नि ए टले तेम जाणवुं ए तत्व मनमां सद्दहि
ए आत्माऽज्ञानहिं निदुःखमात्मज्ञानेन हन्यते॥तपसा प्यात्मविज्ञान हीनैस्तुं न श
क्यते॥१॥२३॥ एमजो आत्मज्ञानेज संवर होय तो चारित्रनुं शुं काम? तेउपरकहेछे.

ज्ञानदशा जे आकरी ॥ तेह चरण विचारो ॥ निर्विकल्प
उपयोगमां ॥ नहीं कर्मनो चारो ॥ आतम० ॥ ७४ ॥

व्याख्या–ज्ञानदशा जे आकरी प्रत्याख्यान परिज्ञारूप छे तेहज चरण के०
चारित्र विचारो निर्विकल्प शुद्धज्ञाननो उपयोग ज्यां होय त्यां कर्मनो चारो न
थी एतावता तिवारे कर्म न आवे ते माटे ज्ञान तेहज स्वभाव चरण छे माटे
चारित्र कहीए बाह्य त्यागतो तिर्यचादिकने पण छे ॥ २४ ॥

भगवइ अंगे भाखीउ ॥ सामायिक अर्थ ॥ सामायि
कपण आतमा ॥ धरो सूधो अर्थ ॥ आतम० ॥ ७५ ॥

व्याख्या–श्री भगवतीसूत्रे पांचमे अंगे कालासवेसीय प्रश्ने स्थविरे कह्यु ॥

आयातामाईए आयातामाइयस्स अठे ॥ ए वचने आत्मनावरूपज चारित्र कह्युं. इव्यथी त्याग मात्र जे कह्युं, ते उपचारे कहीए. अने मुख्यअर्थे "स्पर्शविना उप चार न संनवे" ए सूधो सूत्रनो अर्थ चित्तमांहे धरो. ॥ २५ ॥

लोकसार अध्ययनमां ॥ समकित मुनी नावे ॥ मुनिना
वज समकित कह्युं ॥ निज शुद्धस्वनावे ॥ आतम०॥२६॥

व्याख्या–लोकसार नामे आचारांगनुं पांचमुं अध्ययन–तेमांहे समकित मुनि नावे अने समकितज मुनिनाव एवुं अन्योन्य विना नावे कह्युं ठे ; ते निज शुद्ध स्वनावे करे; तेमाटे शुद्धस्वनाव उपयोग–तेहज आत्मचरण नणी चारित्र कहिए. ए ज्ञानमांहेज रती करिए. यडुक्तं ॥ जं सम्मंतिपासहा तंमोणंतिपासहा जं मोणं ति पासहा तसम्मंतिपासहा ॥ इत्यादि आलावोठे. इति ठवीशमी गाथार्थ ॥२६॥

हवे ज्ञाननो महिमा स्तवे ठे.

कष्ट करो संजम धरो ॥ गालो निज देह ॥ ज्ञानदशा
विण जीवने ॥ नही डुःखनो ठेह ॥ आतम० ॥ २७ ॥

व्याख्या–कष्ट के० लोचादि करो, संयम चारित्रक्रिया उग्र धरो, निजदेह के० पोतानुं शरीर मास खमणादिके गालो ; पण ज्ञानदशाविना जीवने डुःखनो ठेह के० ठेडो नथी. तेमाटे अंतर्मुखे थइने ज्ञानदृष्टि दृढ राखवी. ॥ २७ ॥

बाह्यदृष्टि जीवो अंतर्मुख्यज्ञान प्रवर्त्ति अज्ञानेज नथी करता ते देखाडे ठे.

बाहिर यतना बापडा ॥ करतां डूहवाए ॥ अंतर ज
तना ज्ञाननी ॥ नवि तेणे थाए ॥ आतम० ॥ २८ ॥

व्याख्या–बापडा ज्ञाननी शून्य बाहेर उग्रविहार यत्ना करतां डूहवायठे. डुःख मात्र पामेठे पण तेणे ज्ञानयतना अंतर्मुख्य सुख करे ठे ते पण नथी थाती, अ ज्ञानमांहेज जे तुछ उपाय करेठे, ते हिताहित जाणता नथी. उक्तंच ॥ अज्ञानं खलु कष्टं क्रोधादिन्योपि सर्व पापेन्यः ॥ अर्थंहित महितंवा नवेत्तियेनावृत्तो जीवः

राग द्वेष मल गालवा ॥ उपशम जल कीलो ॥ आतम
परिणति आदरी ॥ पर परिणति पीलो ॥ आतम० ॥ २९ ॥

व्याख्या–राग द्वेषरूप मल गालवाने माटे उपशमरूप जलनेविषे कीलो. ते उ पशम आतमज्ञाने आवे ; तेमाटे तत्त्वसंवेदने आत्मपरिणति आदरीने पर परि

जिहां लगे आतमद्रव्यनु ॥ लक्षण नवि जाण्यु ॥ तिहां लगे गु
ण ठाणु नलुं ॥ केम आवे ताण्यु ॥ आतमतत्व विचारीए ॥२२॥

व्याख्या-जिहां लगे आतमद्रव्यनुं लक्षणके० शुद्ध स्वरूप ते जाण्यु नहीं, तिहां ल
गे गुणठाणु नलुंके० प्रवर्द्धमान स्थानक ते गुणठाणु ताण्युं केम आवे? जे राज्ययोगे
पाम्यानु होय ते उपयोगे न आवे, ते माटे आत्मतत्व विचारीए एहज निश्च
लक्षण छे आत्मैव दर्शन ज्ञान चारित्राण्यथवायते ॥ यत्तदात्मक एवैष शरीरमधि
तिष्ठति ॥ १ ॥ अर्थ-अथवा यतिनो आत्माज सम्यक्त्व दर्शन निर्मल ज्ञान अने
चारित्ररूप छे जेह कारण माटे सम्यक्त्वादिरूप ए आत्माज, यतिना शरीरनो आ
श्रयकरी रहेछे ॥ १ ॥ आत्मनात्मानमात्मानेत्ति मोहत्यागायदात्मनि ॥ तदेवतस्य
चारित्रं तज्ज्ञानं तच्चदर्शनं ॥ २ ॥ इति योगशास्त्रे ॥ २२ ॥

आतम अज्ञाने करी ॥ जे नव दुःख लहीए ॥ आतम
ज्ञाने ते टले ॥ एम मन सद्दहीए ॥ आतम० ॥ २३ ॥

व्याख्या- आत्माने अज्ञाने करी पुद्गलमांहे आत्म भ्रम धरतां मिथ्यात्वेण व
हिरात्म अष्टकर्म पयडीउ बंधति ए वचनथी, नवडुःखके० संसारभ्रमणनां दुःख
लहीएके० पामीए ते नवदुःख आत्मज्ञानेज टले. पण आत्मज्ञानरहित तप
प्रमुखे न टले जेम हिमविकारदुःख,अग्नि ए टले तेम जाणवु ए तत्व मनमां सद्दहि
ए आत्माऽज्ञानजं दुःखमात्मज्ञानेन हन्यते॥तपसा प्यात्मविज्ञान हीनैस्तत्तु न श
क्यते॥१॥२३॥ एमजो आत्मज्ञानेज संवर होय तो चारित्रनुं शु काम? तेउपरकहेछे.

ज्ञानदशा जे आकरी ॥ तेह चरण विचारो ॥ निर्विकल्प
उपयोगमां ॥ नहीं कर्मनो चारो ॥ आतम० ॥ २४ ॥

व्याख्या-ज्ञानदशा जे आकरी प्रत्याख्यान परिज्ञारूप छे तेहज चरण के०
चारित्र विचारो निर्विकल्प शुद्धज्ञाननो उपयोग ज्यां होय त्यां कर्मनो चार न
थी एतावता निवारे कर्म न आवे ते माटे ज्ञान तेहज सनार चरण छे माटे
चारित्र कहीए बाह्य त्यागनो निर्यवादिकने पण छे ॥ २४ ॥

भगवइ अंगे नाषीउ ॥ सामायिक अर्थ ॥ सामायि
कपण आतमा ॥ धरो सूधो अर्थ ॥ आतम० ॥ २५ ॥

व्याख्या-श्री भगवतीसूत्रे पांचमे अंगे कालासवेसीय प्रश्ने स्थविर कह्यु ॥

आयातसामाईए आयासामाइयस्स अठे ॥ ए वचने आत्मभावरूपज चारित्र कह्युं. द्रव्यथी त्याग मात्रे जे कह्युं, ते उपचारे कहीए. अने मुख्यअर्थे "स्पर्शविना उपचार न संभवे" ए सूधो सूत्रनो अर्थ चित्तमांहे धरो. ॥ २५ ॥

लोकसार अध्ययनमां ॥ समकित मुनी भावे ॥ मुनिभा
वज समकित कह्युं ॥ निज शुद्धस्वभावे ॥ आतम०॥२६॥

व्याख्या–लोकसार नामे आचारांगनुं पांचमुं अध्ययन–तेमांहे समकित मुनिभावे अने समकितज मुनिभाव एवुं अन्योन्य विना भावे कह्युं छे; ते निज शुद्धस्वभावे करे; तेमाटे शुद्धस्वभाव उपयोग–तेहज आतमचरण भणी चारित्र कहिए. ए ज्ञानमांहेज रती करिए. यदुक्तं ॥ जं सम्मंतिपासहा तंमोणंतिपासहा जं मोणंति पासहा तंसम्मंतिपासहा ॥ इत्यादि आलावोछे. इति छवीशमी गाथार्थ ॥२६॥

हवे ज्ञाननो महिमा स्तवे छे.

कष्ट करो संजम धरो ॥ गालो निज देह ॥ ज्ञानदशा
विण जीवने ॥ नही दुःखनो छेह ॥ आतम० ॥ २७ ॥

व्याख्या–कष्ट के० लोचादि करो, संयम चारित्रक्रिया उग्र धरो, निजदेह के० पोतानुं शरीर मास खमणादिके गालो; पण ज्ञानदशाविना जीवने दुःखनो छेह के० छेडो नथी. तेमाटे अंतर्मुखे यत्ने ज्ञानदृष्टि दृढ राखवी. ॥ २७ ॥

बाह्यदृष्टि जीवो अंतर्मुख्यज्ञान प्रवर्त्ति अज्ञानेज नथी करता ते देखाडे छे.

बाहिर यतना बापडा ॥ करतां दूहवाए ॥ अंतर ज
तना ज्ञाननी ॥ नवि तेणे थाए ॥ आतम० ॥ २८ ॥

व्याख्या–बापडा ज्ञाननी शांभ बाहेर उग्रविहार यत्न करतां दूहवायछे. दुःख मात्र पामेछे. पण तेणे ज्ञानयतना अंतर्मुख्य सुख करे छे ते पण नथी थाती; अज्ञानमांहेज जे कुछ उपाय करेछे, ते हिताहित जाणता नथी. उक्तंच ॥ अज्ञानं खलु कष्टं क्रोधादिभ्योपि सर्व पापेभ्यः ॥ अर्थंहित महितंवा नवेत्तियेनावृतो जीवः

राग द्वेष मल गालवा ॥ उपशम जल झीलो ॥ आतम
परिणति आदरी ॥ पर परिणति पीलो ॥ आतम० ॥ २९ ॥

व्याख्या–राग द्वेषरूप मल गालवाने माटे उपशमरूप जलनेविषे झीलो. ते उपशम आतमज्ञाने आवे; तेमाटे तत्वसंवेदने आत्मपरिणति आदरीने पर परि

जिहां लगे आतमद्रव्यनुं ॥ लक्षण नवि जाण्युं ॥ तिहां लगे गु
ण ठाण भलूं ॥ केम आवे ताण्युं ॥ आतमतत्व विचारीए ॥२२॥

व्याख्या-जिहां लगे आतमद्रव्यनु लक्षणके० शुद्ध स्वरूप ते जाण्युं नहीं, तिहां ल
गे गुणठाणु भलुंके० प्रवर्द्धमान स्थानक ते गुणठाणु ताण्युं केम आवे? जे राज्ययोगे
पाम्यानु होय ते उपयोगे न आवे ते माटे आत्मतत्व विचारीए एहज निश्चय
लक्षण छे आत्मैव दर्शन ज्ञान चारित्राण्यथवायते ॥ यत्तदात्मक एवैष शरीरमधि
तिष्ठति ॥ १ ॥ अर्थ-अथवा यतिनो आत्माज सम्यक्त्व दर्शन निर्मल ज्ञान अने
चारित्ररूप छे जेह कारण माटे सम्यक्त्वादिरूप ए आत्माज, यतिना शरीरनो आ
श्रयकरी रहेने ॥ १ ॥ आत्मनानमात्मावेत्ति मोहत्यागाद्यदात्मनि ॥ तदेवतस्य
चारित्र तद्ज्ञान तच्चदर्शन ॥ २ ॥ इति योगशास्त्रे ॥ २२ ॥

आतम अज्ञाने करी ॥ जे भव दुःख लहीए ॥ आतम
ज्ञाने ते टले ॥ एम मन सद्दहीए ॥ आतम० ॥ २३ ॥

व्याख्या- आत्माने अज्ञाने करी पुद्गलमांहे आतम भ्रम धरता मिथ्यात्वेण उ
दिरोण अवकम्म पयडीउ बंधति ए वचनथी, भवदुःखके० संसारभ्रमणनां दुःख
लहीए के० पामीए ते भवदुःख आत्मज्ञानेज टले. पण आत्मज्ञानरहित तप
प्रमुखे न टले जेम हिमविकारदुःख,अग्नि ए टले तेम जाणवु ए तत्व मनमां सद्दहि
ए आत्माज्ञानहि भिदुःखमात्मज्ञानेन हन्यते॥तपसा प्यात्मविज्ञान हीनैस्तु न श
क्यते॥१॥२३॥ ए मज्ञो आत्मज्ञानेज सवर होय तो चारित्रनु शु काम? तेउपरकहेछे.

ज्ञानदशा जे आकरी ॥ तेह चरण विचारो ॥ निर्विकल्प
उपयोगमां ॥ नहीं कर्मनो चारो ॥ आतम० ॥ २४ ॥

व्याख्या-ज्ञानदशा जे आकरी प्रत्याख्यान परिज्ञारूप छे तेहज चरण कें०
चारित्र विचारो निर्विकल्प शुद्धज्ञाननो उपयोग ज्यां होय त्यां कर्मनो चार न
थी एतावता निराश्रवे कर्म न आवे ते माटे ज्ञान तेहज स्वभाव चरण छे माटे
चारित्र कहीए बाह्य त्यागतो निर्यंचादिकने पण छे ॥ २४ ॥

भगवई अंगे भाखीउं ॥ सामायिक अर्थ ॥ सामायि
कपण आतमा ॥ धरो सूधो अर्थ ॥ आतम० ॥ २५ ॥

व्याख्या-श्री भगवतीसूत्रे पांचमे अंगे कालासवेसीय प्रश्ने स्थविरें कह्यं

आयासामाईए आयासामाइयस्स अठे ॥ ए वचने आत्मस्वनावरुपज चारित्र कह्युं. इण्यथी त्याग मात्रे जे कह्युं. ते उपचारे कहीए. अने मुख्यअर्थे "स्पर्शविना उप चार न संनवे" ए सूधो सूत्रनो अर्थ चित्तमांहे धरो. ॥ २५ ॥

लोकसार अध्ययनमां ॥ समकित मुनी नावे ॥ मुनिना
वज समकित कह्युं ॥ निज शुद्धस्वनावे ॥ आतम०॥२६॥

व्याख्या–लोकसार नामे आचारांगनुं पांचमुं अध्ययन–तेमांहे समकित मुनि नावे अने समकितज मुनिनाव एवुं अन्योन्य विना नावे कह्युं वे; ते निज शुद्ध स्वनावे करे; तेमाटे शुद्धस्वनाव उपयोग–तेहज आतमचरण नणी चारित्र कहिए. ए ज्ञानमांहेज रती करिए. यदुक्तं ॥ ज सम्मंतिपासहा तंमोणंतिपासहा जं मोणं ति पासहा तसम्मंतिपासहा ॥ इत्यादि आलावोछे. इति उवीशमी गाथार्थ ॥२६॥

हवे ज्ञाननो महिमा स्तवे वे.

कष्ट करो संजम धरो ॥ गालो निज देह ॥ ज्ञानदशा
विण जीवने ॥ नही डुःखनो वेह ॥ आतम० ॥ २७ ॥

व्याख्या–कष्ट के० लोचादि करो, संयम चारित्रक्रिया उग्र धरो, निजदेह के० पोतानुं शरीर मास खमणादिके गालो ; पण ज्ञानदशाविना जीवने डुःखनो वेह के० वेडो नथी. तेमाटे अंतर्मुखे थइने ज्ञानदृष्टि दृढ राखवी. ॥ २७ ॥

बाह्यदृष्टि जीवो अंतर्मुख्यज्ञान प्रवर्त्ति अज्ञानेज नथी करता ते देखाडे वे.

बाहिर यतना बापडा ॥ करतां डूहवाए ॥ अंतर ज
तना ज्ञाननी ॥ नवि तेणे थाए ॥ आतम० ॥ २८ ॥

व्याख्या–बापडा ज्ञाननी शांत्र बाहेर उग्रविहार यत्न करतां डूहवायछे. डुःख मात्र पामेछे. पण तेणे ज्ञानयतना अंतर्मुख्य सुख करे वे ते पण नथी थाती; अ ज्ञानमांहेज जे तुच्छ उपाय करेछे, ते हिताहित जाणता नथी. उक्तंच ॥ अज्ञानं खलु कष्टं क्रोधादिन्योपि सर्व पापेन्यः ॥ अर्थंहित महितंवा नवेत्तियेनावृत्तो जीवः

राग द्वेष मल गालवा ॥ उपशम जल जीलो ॥ आतम
परिणति आदरी ॥ पर परिणति पीलो ॥ आतम० ॥ २९ ॥

व्याख्या–राग द्वेषरूप मल गालवाने माटे उपशमरूप जलनेविषे जीलो. ते उ पशम आतमज्ञाने आवे; तेमाटे तत्वसंवेदने आत्मपरिणति आदरीने पर परि

जिहां लगे आतमद्रव्यनुं ॥ लक्षण नवि जाण्यु ॥ तिहां लगे गु
ण ठाण भलूं ॥ केम आवे ताण्युं ॥ आतमतत्व विचारीए ॥२२॥

व्याख्या–जिहां लगे आतमद्रव्यनु लक्षणके० शुद्ध स्वरूप ते जाण्यु नहीं, तिहां ल गे गुणठाणु नलुंके० प्रवर्द्धमान स्थानक ते गुणठाणु ताण्युं केम आवे? जे राज्ययोगे पाम्यानु होय ते उपयोगे न आवे, ते माटे आत्मतत्व विचारीए एहज निश्चय लक्षण छे आत्मैव दर्शन ज्ञान चारित्राण्यथवायतेः ॥ यत्तदात्मक एवैष शरीरमधि तिष्ठति ॥ १ ॥ अर्थ–अथवा यतिनो आत्माज सम्यक्त्व दर्शन निर्मल ज्ञान अने चारित्ररूप छे जेह कारण माटे सम्यक्त्वादिरूप ए आत्माज, यतिना शरीरनो आ श्रयकरी रहेछे ॥ १ ॥ आत्मनात्मानमात्मावेत्ति मोहत्यागाद्यदात्मनि ॥ तदेवतस्य चारित्र तद्ज्ञान तच्चदर्शन ॥ २ ॥ इति योगशास्त्रे ॥ २२ ॥

आतम अज्ञाने करी ॥जे भव दुःख लहीए ॥ आतम
ज्ञाने ते टले ॥ एम मन सद्दहीए ॥ आतम० ॥ २३ ॥

व्याख्या– आत्माने अज्ञाने करी पुद्गलमाहे आत्म भ्रम धरता मिच्छत्तेण उ दिण्णेण अट्ठकम्म पयडीउ बंधति ए वचनथी, भवदुःखके० संसारभ्रमणना दुःख लहीए के० पामीए ते भवदुःख आत्मज्ञानेज टले पण आत्मज्ञानरहित तप प्रमुखे न टले जेम हिमविकारदुःख,अग्नि ए टले तेम जाणवु ए तत्व मनमां सद्दहि ए आत्माऽज्ञानहि विदुःखमात्मज्ञानेन हन्यते॥तपसा प्यात्मविज्ञान हीनैस्तत्तु न श क्यते॥१॥२३॥ एमजो आत्मज्ञानेज सवर होय तो चारित्रनु शु काम? तेउपरकहेछे.

ज्ञानदशा जे आकरी ॥ तेह चरण विचारो ॥ निर्विकल्प
उपयोगमा ॥ नहीं कर्मनो चारो ॥ आतम० ॥ २४ ॥

व्याख्या–ज्ञानदशा जे आकरी प्रत्याख्यान परिज्ञारूप छे तेहज चरण के० चारित्र विचारो निर्विकल्प शुद्धज्ञाननो उपयोग ज्या होय त्यां कर्मनो चारो न थी एतावता तिवारे कर्म न आवे ते माटे ज्ञान तेहज स्वभाव चरण छे माटे चारित्र कहीए बाह्य त्यागतो तिर्यंचादिकने पण छे ॥ २४ ॥

भगवइ अंगे भाषीउ ॥ सामायिक अर्थ ॥ सामायि
कपण आतमा ॥ धरो सूधो अर्थ ॥ आतम०॥२५॥

व्याख्या–श्री भगवतीसूत्रे पांचमे अंगे कालासवेसीय प्रश्ने स्थविरे कह्या ॥

आयातमार्गए आयानामाऽयस्स अठे ॥ ए वचने आत्मज्ञानरूपज चारित्र कह्युं. ऽथ्यथी त्याग मात्र जे कह्युं. ते उपचारे कहीए. अने मुग्ध्यअर्थे "स्पर्शविना उप चार न संजवे" ए तृथो सूत्रनो अर्थ चित्तमांहे धरो. ॥ २५ ॥

लोकसार अध्ययनमां ॥ समकित मुनी जावे ॥ मुनिजा
वज समकित कह्युं ॥ निज शुद्धस्वजावे ॥ आतम०॥२६॥

व्याख्या—लोकसार नामे आचारांगनुं पांचमुं अध्ययन—तेमांहे समकित मुनि जावे अने समकितज मुनिजाव एवुं अन्योन्य विना जावे कह्यु ठे; ते निज शुद्ध स्वजावे करे; तेमाटे शुद्धस्वजाव उपयोग—तेहज आत्मचरण जणी चारित्र कहिए. ए ज्ञानमांहेज रती करिए. यडुक्तं ॥ लं सम्मंतिपासहा तमोणंतिपासहा जं मोणं ति पासहा तसम्मंतिपासहा ॥ इत्यादि आलावोठे. इति ठवीशमी गाथार्थ ॥२६॥

हवे ज्ञाननो महिमा स्तवे ठे.

कष्ट करो संजम धरो ॥ गालो निज देह ॥ ज्ञानदशा
विण जीवने ॥ नही डुःखनो ठेह ॥ आतम० ॥ २७ ॥

व्याख्या—कष्ट के० लोचादि करो, संयम चारित्रक्रिया उग्र धरो, निजदेह के० पोतानुं शरीर मास खमणादिके गालो; पण ज्ञानदशाविना जीवने डुःखनो ठेह के० ठेडो नथी. तेमाटे अंतर्मुखे यत्ने ज्ञानदृष्टि दृढ राखवी. ॥ २७ ॥

बाह्यदृष्टि जीवो अंतर्मुख्यज्ञान प्रवर्त्ति अज्ञानेज नथी करता ते देखाडे ठे.

बाहिर यतना बापडा ॥ करतां डुहवाए ॥ अंतर ज
तना ज्ञाननी ॥ नवि तेणे थाए ॥ आतम० ॥ २८ ॥

व्याख्या—बापडा ज्ञाननी आंच बाहेर उग्रविहार यत्ना करतां डुहवायठे. डुःख मात्र पामेठे. पण तेणे ज्ञानयतना अंतर्मुख्य सुख करे ठे ते पण नथी थाती; अ ज्ञानमांहेज जे तुच्छ उपाय करेठे, ते हिताहित जाणता नथी. उक्तंच ॥ अज्ञानं खलु कष्टं क्रोधादिन्योपि सर्व पापेन्यः ॥ अर्थंहित महितंवा नवेत्तियेनावृतो जीवः

राग द्वेष मल गालवा ॥ उपशम जल जीलो ॥ आतम
परिणति आदरी ॥ पर परिणति पीलो ॥ आतम० ॥ २९ ॥

व्याख्या—राग द्वेषरूप मल गालवाने माटे उपशमरूप जलनेविषे जीलो. ते उ पशम आतमज्ञाने आवे; तेमाटे तत्वसंवेदने आत्मपरिणति आदरीने पर परि

जिहां लगे आतमद्रव्यनुं ॥ लक्षण नवि जाण्युं ॥ तिहां लगे गु
णठाणुं भलुं ॥ केम आवे ताण्युं ॥ आतमतत्व विचारीए ॥२२॥

व्याख्या–जिहां लगे आतमद्रव्यनुं लक्षणके० शुद्ध स्वरूप ते जाण्युं नहीं, तिहां ल गे गुणठाणुं भलुंके० प्रवर्द्धमान स्थानक ते गुणठाणुं ताण्युं केम आवे? जे राज्ययोगे पाम्यानुं होय ते उपयोगे न आवे, ते माटे आत्मतत्व विचारीए एहज निश्चय लक्षण छे आत्मैव दर्शन ज्ञान चारित्राण्यथवायते ॥ यत्तदात्मक एवंष शरीरमधि तिष्टति ॥ १ ॥ अर्थ–अथवा यतिनो आत्माज सम्यक्त्व दर्शन निर्मल ज्ञान अने चारित्ररूप छे जेह कारण माटे सम्यक्त्वादिरूप ए आत्माज, यतिना शरीरनो आ श्रयकरी रहेले ॥ १ ॥ आत्मनात्ममात्मावेत्ति मोहत्यागायदात्मनि ॥ तदेवतस्य चारित्र तद्ज्ञान तच्चदर्शन ॥ २ ॥ इति योगशास्त्रे ॥ २२ ॥

आतम अज्ञाने करी ॥जे भव दुख लहीए ॥ आतम
ज्ञाने ते टले ॥ एम मन सद्दहीए ॥ आतम० ॥ २३ ॥

व्याख्या– आत्माने अज्ञाने करी पुद्गलमांहे आत्म भ्रम धरता मिथ्यात्व उ दिसेण अठकम्म पयडीउ बंधति ए वचनथी, भवदुखके० संसारभ्रमणना दुख लहीए के० पामीए ते भवदुख आत्मज्ञानेज टले पण आत्मज्ञानरहित तप प्रमुखे न टले जेम हिमविकारदुख,अग्निए टले तेम जाणवुं ए तत्व मनमा सद्दहि ए आत्माऽज्ञानहि विदुषामात्मज्ञानेन हन्यते॥तपसा प्यात्मविज्ञान हीनैस्तत्तु न श क्यते॥१॥२३॥ एमजो आत्मज्ञानेज संवर होय तो चारित्रनु शु काम? तेउपरकहेछे.

ज्ञानदशा जे आकरी ॥ तेह चरण विचारो ॥ निर्विकल्प
उपयोगमा ॥ नहीं कर्मनो चारो ॥ आतम० ॥ २४ ॥

व्याख्या–ज्ञानदशा जे आकरी प्रत्याख्यान परिज्ञारूप छे तेहज चरण के० चारित्र विचारो निर्विकल्प शुद्धज्ञाननो उपयोग ज्यां होय त्यां कर्मनो चारो न थी एतावता तिवारे कर्म न आवे ते माटे ज्ञान तेहज स्वभाव चरण छे माटे चारित्र कहीए बाह्य त्यागतो तिर्यंचादिकने पण छे ॥ २४ ॥

भगवई अंगे भाषीउं ॥ सामायिक अर्थ ॥सामायि
कपण आतमा ॥ धरो सूधो अर्थ ॥ आतम०॥२५॥

व्याख्या–श्री भगवतीसूत्रे पांचमे अंगे कालासवेसीय प्रश्ने स्थविरे कह्यु ॥

आयासामाईए आयानामाइयस्स अट्ठे ॥ ए वचने आत्मभावरूपज चारित्र कह्युं. इव्यथी त्याग मात्र जे कह्यु, ते उपचारे कहीए. अने मुख्यअर्थे "स्पर्शविना उपचार न संभवे" ए सूधो सूत्रनो अर्थ चित्तमांहे धरो. ॥ २५ ॥

लोकसार अध्ययनमां ॥ समकित मुनी भावे ॥ मुनिभाव समकित कह्युं ॥ निज शुद्धस्वभावे ॥ आतम०॥२६॥

व्याख्या–लोकसार नामे आचारांगनुं पांचमुं अध्ययन–तेमांहे समकित मुनि भावे अने समकितज मुनिभाव एवुं अन्योन्य विना भावे कह्युं छे; ते निज शुद्ध स्वभावे करे; तेमाटे शुद्धस्वभाव उपयोग–तेहज आत्मचरण भणी चारित्र कहिए. ए ज्ञानमांहेज रती करिए. यदुक्तं ॥ जं सम्मंतिपासहा तंमोणंतिपासहा जं मोणंति पासहा तसम्मंतिपासहा ॥ इत्यादि आलावोछे. इति छवीशमी गाथार्थ ॥२६॥

हवे ज्ञाननो महिमा स्तवे छे.

कष्ट करो संजम धरो ॥ गालो निज देह ॥ ज्ञानदशा विण जीवने ॥ नही दुःखनो छेह ॥ आतम० ॥ २७ ॥

व्याख्या–कष्ट के० लोचादि करो, संयम चारित्रक्रिया उग्र धरो, निजदेह के० पोतानुं शरीर मास खमणादिके गालो; पण ज्ञानदशाविना जीवने दुःखनो छेह के० छेडो नथी. तेमाटे अंतर्मुखे थइने ज्ञानदृष्टि दृढ राखवी. ॥ २७ ॥

बाह्यदृष्टि जीवो अंतर्मुख्यज्ञान प्रवर्त्ति अज्ञानेज नथी करता ते देखाडे छे.

बाहिर यतना बापडा ॥ करतां दूहवाए ॥ अंतर जतना ज्ञाननी ॥ नवि तेणे थाए ॥ आतम० ॥ २८ ॥

व्याख्या–बापडा ज्ञाननी शांच बाहेर उग्रविहार यत्न करतां दूहवायछे. दुःख मात्र पामेछे. पण तेणे ज्ञानयतना अंतर्मुख्य सुख करे छे ते पण नथी थाती; अज्ञानमांहेज जे तुच्छ उपाय करेछे, ते हिताहित जाणता नथी. उक्तंच ॥ अज्ञानं खलु कष्टं क्रोधादिभ्योपि सर्व पापेभ्यः ॥ अर्थंहित महितंवा नवेत्तियेनावृतो जीवः

राग द्वेष मल गालवा ॥ उपशम जल झीलो ॥ आतम परिणति आदरी ॥ पर परिणति पीलो ॥ आतम० ॥ २९ ॥

व्याख्या–राग द्वेषरूप मल गालवाने माटे उपशमरूप जलनेविषे झीलो. ते उपशम आतमज्ञाने आवे; तेमाटे तत्वसंवेदने आत्मपरिणति आदरीने पर परि

जिहां लगे आतमद्रव्यनुं ॥ लक्षण नवि जाण्युं ॥ तिहां लगे गु
ण गण नलूं ॥ केम आवे ताण्युं ॥ आतमतत्व विचारीए ॥२२॥

व्याख्या–जिहां लगे आतमद्रव्यनु लक्षणके० शुद्ध स्वरूप ते जाण्यु नहीं, तिहां ल गे गुणगण्णु नलुके० प्रवर्द्धमान स्थानक ते गुणगणु ताण्यु केम आवे? जे राज्ययोगे पाम्यानु होय ते उपयोगे न आवे, ते माटे आत्मतत्व विचारीए एहज निश्चय लक्षण छे आत्मैव दर्शन ज्ञान चारित्राण्यथवायते ॥ यत्तदात्मक एवैष शरीरमधि तिष्ठति ॥ १ ॥ अर्थ–अथवा यतिनो आत्माज सम्यक्त्व दर्शन निर्मल ज्ञान अने चारित्ररूप छे जेह कारण माटे सम्यक्त्वादिरूप ए आत्माज, यतिना शरीरनो आ श्रयकरी रहेछे ॥ १ ॥ आत्मनानमात्मावेत्ति मोहत्यागायदात्मनि ॥ तदेवतस्य चारित्र तद्ज्ञान तच्चदर्शन ॥ २ ॥ इति योगशास्त्रे ॥ २२ ॥

आतम अज्ञाने करी ॥ जे नव दुःख लहीए ॥ आतम
ज्ञाने ते टले ॥ एम मन सद्दहीए ॥ आतम० ॥ २३ ॥

व्याख्या– आत्माने अज्ञाने करी पुद्गलमाहे आत्म भ्रम धरता मिथ्यात्वेण उ दिसेण अठकम्म पयडीउ बधति ए वचनथी, नवदुःखके० ससारभ्रमणना दुःख लहीए के० पामीए ते नवदुःख आत्मज्ञानेज टले पण आत्मज्ञानरहित तप प्रमुखे न टले जेम हिमविकारदुःख,अग्नि ए टले तेम जाणवु ए तत्व मनमा सद्दहि ए आत्माऽज्ञानहि विदुःखमात्मज्ञानेन हन्यते॥तपसा प्यात्मविज्ञान हीनैस्तत्तु न श क्यते॥१॥२३॥ ए मजो आत्मज्ञानेज सवर होय तो चारित्रनु शु काम? तेउपरकहेछे

ज्ञानदशा जे आकरी ॥ तेह चरण विचारो ॥ निर्विकल्प
उपयोगमा ॥ नहीं कर्मनो चारो ॥ आतम० ॥ २४ ॥

व्याख्या–ज्ञानदशा जे आकरी प्रत्याख्यान परिज्ञारूप छे तेहज चरण के० चारित्र विचारो निर्विकल्प शुद्धज्ञाननो उपयोग ज्या होय त्यां कर्मनो चारो न थी एतावता तिवारे कर्म न आवे ते माटे ज्ञान तेहज स्वभाव चरण छे माटे चारित्र कहीए वाह्य त्यागतो तिर्यचादिकने पण छे ॥ २४ ॥

नगवइ अंगे नापीउं ॥ सामायिक अर्थ ॥ सामायि
कपण आतमा ॥ धरो सूधो अर्थ ॥ आतम० ॥ २५ ॥

व्याख्या–श्री नगवतीसूत्रे पाचमे अगे कालासवेसीय प्रश्ने स्थविरे कह्यो ॥

आयासामाईए आयासामाऽयस्स अठे ॥ ए वचने आत्मनावरूपज चारित्र कह्युं. इव्यथी त्याग मात्रे जे कह्युं. ते उपचारे कहीए. अने मुख्यअर्थे "स्पर्शविना उपचार न संनवे" ए सूधो सूत्रनो अर्थ चित्तमांहे धरो. ॥ २५ ॥

लोकसार अध्ययनमां ॥ समकित मुनी नावे ॥ मुनिन्नावज समकित कह्युं ॥ निज शुध्दस्वन्नावे ॥ आतम०॥२६॥

व्याख्या—लोकसार नामे आचारांगनुं पांचमुं अध्ययन—तेमांहे समकित मुनि नावे अने समकितज मुनिनाव एवुं अन्योन्य विना नावे कह्युं ठे ; ते निज शुद्ध स्वनावे करे; तेमाटे शुध्दस्वनाव उपयोग—तेहज आतमचरण नणी चारित्र कहिए. ए ज्ञानमांहेज रती करिए. यडुक्तं ॥ जं सम्मंतिपासहा तंमोणंतिपासहा जं मोणं ति पासहा तंसम्मंतिपासहा ॥ इत्यादि आलावोठे. इति ठव्वीशमी गाथार्थ ॥२६॥

हवे ज्ञाननो महिमा स्तवे ठे.

कष्ट करो संजम धरो ॥ गालो निज देह ॥ ज्ञानदशा विण जीवने ॥ नही डुःखनो ठेह ॥ आतम० ॥ ७७ ॥

व्याख्या—कष्ट के० लोचादि करो, संयम चारित्रक्रिया उग्र धरो, निजदेह के० पोतानुं शरीर मास खमणादिके गालो ; पण ज्ञानदशाविना जीवने डुःखनो ठेह के० ठेडो नथी. तेमाटे अंतर्मुखे थइने ज्ञानदृष्टि दृढ राखवी. ॥ ७७ ॥

बाह्यदृष्टि जीवो अंतर्मुखज्ञान प्रवर्त्ति अज्ञानेज नथी करता ते देखाडे ठे.

बाहिर यतना बापडा ॥ करतां दुहवाए ॥ अंतर जतना ज्ञाननी ॥ नवि तेणे थाए ॥ आतम० ॥ ७८ ॥

व्याख्या—बापडा ज्ञाननी शोन्न वाहेर उग्रविहार यत्ना करतां दुहवायठे. डुःख मात्र पामेठेः पण तेणे ज्ञानयतना अंतर्मुख सुख करे ठे ते पण नथी थाती, अ ज्ञानमांहेल जे तुठ उपाय करेठे. ते हिताहित जाणता नथी उक्तंच ॥ अज्ञानं खलु कष्टं क्रोधादिन्योपि सर्व पापेन्यः ॥ अर्थहित नहिनंवा नवेत्तियेनावृतो जीवः

राग द्वेष मल गालवा ॥ उपशम जल जीलो ॥ आतम परिणति आदरी ॥ पर परिणति पीलो ॥ आतम० ॥ ७९ ॥

व्याख्या—राग द्वेषरूप मल गालवाने माटे उपशमरूप जलनेविषे जीलो. ते उपशम आतमज्ञाने आवे ; तेमाटे तत्त्वसंवेदने आत्मपरिणति आदरीने पर परि

णति जे पुद्गलतणा, तेहने पीजो ॥ २९ ॥ तेहनो उपाय नेदज्ञान छे ते कहे छे

हुं एहनो ए माहरो ॥ ए हु एणि वुद्धि ॥ चेतन जड
ता अनुनवे ॥ न विमासो शुद्धि ॥ आतम० ॥ ३० ॥

व्याख्या–हु एहनो पुत्रादिक, ए माहरा तातादिक, ए शरीर तेहज हु–इत्यादिक ममकार–अहंकार बुद्धिए चेतन, जडताने अनुनवे छे शुद्ध विमासतो नथी शु?

वाहिर दृष्टि देखता ॥ वाहिर मन धावे ॥ अंतरदृ
ष्टि देखता ॥ अक्षयपद पावे ॥ आतम० ॥ ३१ ॥

व्याख्या–वाहरदृष्टि ते, कनक कामिनी सर्वंध प्रमुख उपाय देखता वाहेर मन धावे छे अंतरदृष्टि ते, सर्व पुद्गल सवध हेय जाणी चित्त चमत्कार मात्र विश्राम थाता सर्व नागे अने अक्षयपद पामे छे. ॥ ३१ ॥

चरण होय लज्जादिके ॥ नवि मनने नगे ॥ त्रीजे अध्य
यने कह्युं ॥ एम पहेले अगे ॥ आतम० ॥ ३२ ॥

व्याख्या–तेमाटे ज्ञानकृत मन शुद्धि, तेज चारित्र लक्षण अने तेज मोक्ष कारण छे, एम सद्दहवु–तेहज इष्ट छे द्रव्यक्रिया करता थका पण मनने नगे के० मनने असमाधाने चरणके० चारित्र न होय , एवु पहेले अगे त्रीजे अध्ययने कह्यु छे. जमिण अन्नतन्न वितिगिछाएण करेइ पावकम्म कितच्च मुणिकारण सीयाए

अध्यातम विण जे क्रिया ॥ ते तनुमल तोले ॥ ममका
रादिक योगथी ॥ एम ज्ञानी वोले ॥ आतम० ॥ ३३ ॥

व्याख्या–अध्यात्मविण के० अपुनर्बंधकादि नावनी आत्मदृष्टि, ते विना जे क्रिया छे, ते तनु के० शरीरनो मल, तेहने तुल्य छे ममकारादिक के० ममता दिक दोषना योगथी एम ज्ञानी वोले छे आशय नेदाए तत्संवेपि हितावहाऽ वर्गतव्या नावो ममतेनविना चेष्टा द्रव्यक्रिया तुच्छा इति षोडशके ॥ ३३ ॥

हु करता परनावनो ॥ एम जेम जेम जाणे ॥ तेम तेम
अज्ञानी पडे ॥ निज कर्मने घाणे ॥ आतम० ॥ ३४ ॥

व्याख्या–हु परनावनो के० पुद्गलनावनो कर्त्ता हु , एम जेम जेम जाणे छे, तेम तेम ते अज्ञानी जीव, निजके० पोताना कर्मने घाणे पडे छे एटले कर्तृत्वाभिमानजनित कर्मे वधाय छे ॥ ३४ ॥ ते अज्ञान, नयविनागे टले ते देखाडे छे

गुणी कर्मादिकतणो ॥ करता व्यवहारे ॥ करता चे
तन करमनो ॥ निश्चय सुविचारे ॥ आतम० ॥ ३५ ॥

व्याख्या—व्यवहारनयनी अपेक्षाए ज्ञानावरणीयादिक पुद्गल कर्मादिक नावन
कर्ता चेतन छे. तिहां अनूप चरितासद्भुत व्यवहारे कर्मनो कर्ता, अने उपचरिता स
द्भुत व्यवहारे गृहादिकनो कर्त्ता, ए विशेष. तथा स्वजात्यूपचरितासद्भुत व्यवहारे पुत्रा
दिकनो कर्ता. अने विजात्युपचरिता सद्भुत व्यवहारे धनादिकनो, स्वजातिविजात्युप
चरिता सद्भुत व्यवहारे नगर प्राकारादिकनो; इत्यादिक भेद जाणवो. निश्चयनये
सुविचारे चेतन कर्म जे रागद्वेष, तेहनो कर्ता छे. जे माटे अशुद्ध निश्चयनये अ
शुद्ध स्वभाव कर्ता माने. द्रव्यकर्म ते ए नये अनुषंगे आवे छे. जेम तैलाऽभ्यंग क
र्ता पुरुषने रज तैलाभ्यंगने अनुषंगे आवेछे. उक्तंच॥तैलाभ्यंगे शरीरस्यैत्यादि॥३५

कर्ता शुद्ध स्वभावनो ॥ नयशुद्धे कहीए ॥ कर्ता पर
परिणामनो ॥ बेउ किरिया ग्रहीए ॥ आतम० ॥ ३६॥

व्याख्या—शुद्ध निश्चयनये शुद्धस्वभावनोज कर्ता आत्मा कहीए. परपरिणामनो
कर्ता मानतां बे क्रिया ग्रहीए. बे क्रिया आवी जाय, एक जीव क्रिया अने बीजी अ
जीवक्रिया. एम मानता तो अपसिद्धांत थाय, तेमाटे शुद्धस्वभावनोज कर्तामानीए.

ढाल चोथी ॥ " वीरमती प्रीतिकारणी " एदेशी ॥

शिष्य कहे जो परभावनो॥ अकर्त्ता कह्यो प्राणी॥
दान हरणादिक केम घटे ॥ कहे सद्गुरु वाणी ॥
शुद्ध नय अर्थ मन धारीए ॥ ए आंकणी ॥ ३७ ॥

व्याख्या—शिष्य पूछे छे के, जो परभावनो अकर्ता प्राणी कह्यो तो; अमुक दाता,
अमुक हर्ता; इत्यादिक व्यवहार केम घटे? तथा दान हरणादिकनुं फलपण केम घटे?
सद्गुरु वाणी वदेछे. जे शुद्ध निश्चय नयनो अर्थ अमे कह्यो, ते मनमांहे धरो.
केवल व्यवहार बाध थातां दोष नथी दान हरणादिक फलतो आत्मनिष्ठि
लागे. पर तो निमित्तमात्रछे तेहज विवरी देखाडेछे. ॥ ३७ ॥

धर्म नवि दिए नवा सुख दिए ॥ परजंतुने देतो ॥ आप
सत्ता रहे आपमां ॥ एम हृदयमां चेतो ॥ शुद्ध० ॥ ३८ ॥

व्याख्या—परजंतुने देतो थको प्राणी, आपणो धर्म वाके० तथा आपणुं सुख

न देइ शके जे माटे आपसत्ता के० आपणो नाव आपमाज रहे, परने केम आ पाय? एम हृदयमांहे चेतो व्यवहारदृष्टि जीव समजो ॥ ३८ ॥

हवे कोइ कहेशे जे, आत्मनावनो परने केम दाता हर्ता न होय? अने पुज लना नावनोज दाता हर्ता होशे? ते उपर कहे ठे

जोगवशे जे पुजल ग्रह्या ॥ नवि जीवना तेह ॥ तेहथी
जीवठे जूजूउ ॥ वली जूजूउ देह ॥ शुद्ध० ॥ ३९ ॥

व्याख्या–योगवशेके०मन वचन काय वलेजे पुजल ग्रह्याठे, ते पुजल, जीवनान नथी तेह पुजलथी जीव जूजूउठे, वली जीवथी देह पण जूजूउ ठे कोने कोण ग्रहे?

नक्त पानादि पुजलप्रते ॥ न दिए ठति विना पोते ॥ दान
हरणादि परजंतुने ॥ एम नवि घटे जोते ॥ शुद्ध०॥ ४० ॥

व्याख्या–एम नक्तपानादिक पुजलप्रत्ये पोते ठति विना परने पर न दीए त्रिकाले जीवना असंसर्गि पुजल ठे, ते केम देवाए? एम सूक्ष्मरीते जोता परने दान हरणादिक केम घटे? नज घटे ॥ ४० ॥ तो कर्मबंध केम थाय ठे? ते कहे ठे

दान हरणादिक अवसरे ॥ शुन अशुन संकल्पे ॥ दिए
हरे तु निज रूपने ॥ मुखे अन्यथा जल्पे ॥ शुद्ध ॥ ४१ ॥

व्याख्या–परने दान देवानो तथा परधन हरणनो अध्यवसाय जेवारे करेठे, ते अवसरे दानरूप शुन संकल्पे हरणरूप जीवना पुजल नथी निजहरणरूप अशुन संकल्पने निजरूपने, आत्मधर्मने, आत्मानेदीएठे, अने मुखे अन्यथा जल्पेठे जे,हुपरने देकहुं, परन्तु चोरु हु, परोपकार कर्ता हु ए प्रमाणे मन, निमित्त कर्म तु बांधेठे

अन्यथा वचन अनिमानथी ॥ फरी कर्म तु बांधे ॥ ज्ञा
यकनाव जे एकलो ॥ ग्रहे ते सुखसाधे ॥ शुद्ध० ॥ ४२ ॥

व्याख्या–ए अन्यथा वचने अनिमाने फरी कर्तृत्वानिमत्त कर्म तु बांधे ठे जे कर्तृत्वानिमान रहित एकलो ज्ञायक स्वनाव ग्रहे ते सुख साधे कर्मबंधनिमित्त दुःखने न जोडाय उक्तचान्यत्रापि कर्मण्य कर्मय पश्येदकर्मणिच कर्म य सबुद्धिमान् मनुष्येषु सयुक्त कृत्स्नकर्मकृत् ॥ १ ॥ ४२ ॥

शुन अशुन वस्तु संकल्पथी ॥ धरे जे नटमाया ॥ तेटले
सहज सुख अनुनवे ॥ प्रनु आतमराया ॥ शुद्ध० ॥ ४३ ॥

व्याख्या–शुन्न के० प्रशस्त, अशुन्न के० अप्रशस्त जे वस्तुनो संकल्प, तेह्थी नटमाया के० विन्नाव स्वरूप विचित्रता धरे ठे. टंकोत्कीर्णज्ञ स्वन्नाव परिज्ञाने ते टले, तेवारे प्रन्नु आत्मराजाने, ते सह्जसुख अनुन्नवे ठे. सुख ते आत्मस्वन्नाव ठे. उपाधिजनित विन्नाव कल्पनाए सुख दुःखरूप विचित्र कर्मफल चेतना अनुन्नवे ठे. राग द्वेषरूप कर्मचेतना १ सुखदुःख न्नोग कर्मफल चेतना २ ए वे विचित्र ठे. ज्ञान चेतना ते एक स्वन्नाव ठे. तेह्नो अनुन्नव ते आत्मराजाठे. ॥४३

परतणी आश विषवेलडी॥ फले कर्म बहु न्नांति ॥ ज्ञानद
हने करी ते दहे ॥ होए एक जे जाति ॥ शु॰ ॥ ४४ ॥

व्याख्या–परतणी आशा ठे ते विषवेलडीरूप ठे, ते बहु न्नांति के० बहुप्रकारे कर्मने फलेठे. संक्लेश विशुद्धांगे शुन्नाशुन्न अनेक कर्मरूप फल प्रसवेठे. ए परआशारूप विषवल्लिने ज्ञानरूप दह्नके० अग्नि, तेणेकरी ते दहे, जे जाते एकज ज्ञान स्वन्नाव रहे.

राग दोषे रहित एक जे ॥ दया शुद्ध ते पाले॥ प्रथम अंगे
एम न्नाषियुं ॥ निज शक्ति अजुआले॥ शु॰ ॥ ४५ ॥

व्याख्या–राग द्वेषादिक दोषे रहित जे एक थाए ते शुद्ध आत्मदया पाले; एम प्रथम अंगे श्री आचारांगसूत्रे न्नाष्युं के० कह्युं ठे. ते निजशक्ति के० आत्मशक्ति, तेह्ने अजुआले. पासह एगे सर्वि दिएहिं परिगिलायमाणेठए दयं दयंति सूत्र ॥४५॥

एकता ज्ञान निश्चयदया ॥ सुगुरु तेहने न्नाषे ॥ जेह अ
विकल्प उपयोगमां ॥ निज प्राणने राखे ॥ शु॰ ॥ ४६ ॥

व्याख्या–आत्माने जे एकताज्ञान, तेह निश्चयदया जाणवी. ते सुगुरु ते पुरुषने न्नाषे. जेह अविकल्प उपयोगमां निर्विकल्प समाधिमां रह्या. इंद्रिय बलोग्ग सासु प्रकृतिन्नूत ज्ञानवीर्य सदाश्वास नित्यस्थितिरूप निज प्राणने राखे. ॥ ४६ ॥

जेह राखे पर प्राणने ॥ दया तास व्यवहारे ॥ निजदया
विण कहो परदया ॥ होए कवण प्रकारे ॥ शु॰ ॥ ४७ ॥

व्याख्या–जेह कीटकादिक परप्राणने राखे, तास के० तेने परदया होए; ते व्यवहारे कहीए. ज्ञानरूप आत्मदयाविना, कहो बाह्यप्राणरक्षणरूप दया केम होय? न होय. उक्तंच जइआणएणचत्तं अनणयं नाण दंसण चरित्तं ॥ तइआ तस्स परेसु अणुकंपानहि जीवेसु ॥ १ ॥ इति उपदेश मालायां ॥ ४७ ॥

लोकविण जेम नगरमेदिनी ॥ जेम जीवविण काया ॥ फोक
तेम ज्ञानविण परदया ॥ जिसी नटीतणी माया ॥ शुद्ध०॥४८॥

व्याख्या–लोकोविना जेम नगरनी मेदिनी के० पृथ्वी उजडरूप, अने जीव विना जेम काया फोककेे० अकाजरूप दीसे, तेम ज्ञानरूप आत्मदया विना पर दया, ते जेह्वी नाटकीयानी माया फोकट, तेम फोकट जाणवी ॥ ४८ ॥

सर्व आचारमय प्रवचने ॥ भण्यो अनुभवयोग ॥ तेह्थी
मुनि वमे मोह्ने ॥ वली अरति रति शोग ॥ शुद्ध० ॥४९॥

व्याख्या–श्री प्रवचने सिद्धाते अनुभव योगके० ज्ञान योग सर्व आचारमय भण्यो यत सर्वे सुवितेण कय इति वचनात् तेह अनुभवयोगथी मुनि, माह ने के० कषाय मोहनीयने वमे वली अरति रति, अने शोक इत्यादिक नोक षाय मोह्नीयने वमे ते माटे ज्ञानयोगनोज दृढ आदर करवो ॥ ४९ ॥

सूत्र अक्षर परावर्त्तना ॥ सरस शेलडी दाखी ॥ तास र
स अनुभव चाखीए ॥ जिह्वा एकछे साखी ॥ शुद्ध०॥ ५० ॥

व्याख्या–सूत्र अक्षरनी परावर्त्तना एटले कर्म योग, ते सरस शेलडी सरखो दे खाडयो तास के० तेह्नो रस ते अनुभव, ते चाखीए जिह्वा एक आतम साखी छे स्थान वर्ण (२) कर्म योग अर्थ (२) आलंबन निरालवन ए ज्ञान योग ॥५०

आतमराम अनुभव भजो ॥ तजो परतणी माया ॥ एह
छे सार जिनवचननो ॥ वली ए शिवछाया ॥ शुद्ध० ॥ ५१ ॥

व्याख्या–आत्माने आराम के० रमावे एवो अनुभव तेने भजोके० सेवा परतणीके० पुद्गलतणी माया तजो–छाडो एह्ज जिनवचननो सार छे वली ससार तापनी टालणहार एवी एह्ज शिवतरुनी छायाछे ॥ ५१ ॥

ढाल पाचमी ॥ प्रभु चित्त धरीने अवधारो मुज वात ॥ एदेशी ॥

एम निश्चयनय सांभलीजी ॥ बोले एक अजाण ॥ आ
दरशु अमे ज्ञाननेजी ॥ शु कीजे पच्चखाण ॥ सोभा
गीजिन सीमधर सुणो वात ॥ ए आकणी ॥ ५२ ॥

व्याख्या–एम एहवो शुद्ध निश्चयनय साभली एक अजाण मतना अध्यात्मी बोलेछे के, अमे एकला ज्ञाननेज आदरशु–अंगीकार करशु, पच्चखाण प्रमुख व्यव

हारतो देखी वखानो ठे: तेहने शुं करीए ? ॥ ५२ ॥ हे सोजागी जिनश्री सीमंधर स्वामि ! ए वात जरतक्षेत्रना लोकनी सुणो-अवधारो-

किरिया उथापी करीजी ॥ ठंडी तेणे लाज ॥ नवि जाणे
ते ऊपजे जी ॥ कारण विण नवि काज ॥ सो० ॥ ५३ ॥

व्याख्या-किरिया अनुष्ठानादिक रूप. तेहने उथापी नाखी ते कुमतिए ला ज ठोडी, लाजनो धर्म वांमयो. ते न जाणे जे, कारणविना कार्य केम उपजे? व्य वहार विना निश्चय केम आवे? अने आव्यो पण केम रहे? ॥ ५३ ॥

निश्चयनय अवलंबतांजी ॥ नवि जाणे तस मर्म ॥ ठोडे
जे व्यवहारनेजी ॥ लोपे ते जिनधर्म ॥ सो० ॥ ५४ ॥

व्याख्या-निश्चयनये अवलंबतां के० निश्चयनयनो पक्ष ग्रहेतां थकां तस के० तेहनो मर्म नथी जाणता जे, व्यवहारने ठोडे ठे ते जिन धर्मने लोपेठे. व्य वहारपरिणतिविना निश्चय आवेज नहिं. उक्तंच उंघनिर्युक्तौ ॥ निठयमवलंबंता णिठयउ णिठयं अयाणंता ॥ णासंति चरण करण वाहिर करणालसाकइति.

निश्चय दृष्टि हृदय धरीजी ॥ पाले जे व्यवहार ॥ पुण्यवं
त ते पामशेजी ॥ जवसमुज्नो पार ॥ सो० ॥ ५५ ॥

व्याख्या-निश्चयनयनी दृष्टि हृदय धरीने एटले तद्धेतु अमृतजाव अवलंबी ने जे व्यवहार पाले, ते पुण्यवंत प्राणी, जवसमुज्नो पार पामशे. निश्चयदृष्टि व्यवहारक्रिया, ते हेतु, निश्चयजाव पक्ष, ते स्वरूप, निश्चयआत्मा शुद्ध प्रवृत्ति, ते निश्चय अनुबंध जाणवो. ॥ ५५ ॥

तुरंग चढी जेम पामिएजी ॥ वेगे पुरनो पंथ ॥ मार्ग तेम
शिवनो लहेजी ॥ व्यवहारे निर्ग्रंथ ॥ सो० ॥ ५६ ॥

व्याख्या-तुरंगके०घोडा उपर आरोहीने जेम वेगे पुरनो पंथ पामीए, तेम व्यवहारे करी निर्ग्रंथ, शिवनो मार्ग लहे. एटले हेतु निश्चय ते व्यवहारज ठहेराणो,॥५६॥

फलसिद्धिकाले साधननी अपेक्षा नथी, ए माटे साधननुं अलावन प णु न होय, ते देखाडे ठे.

महोल चढंतां जेम नहींजी ॥ तेह तुरंगनुं काज ॥ सफल न
ही निश्चय लहेजी ॥ तेम तनु किरिया साज ॥ सो० ॥ ५७ ॥

व्याख्या-महोल चढला जेम तेह तुरगनु काज नही, तेम निश्चय लहे पके त तुक्रियानो माज सफल नहीं काव्य मालिनी छंद व्यवहरण नय स्याद यदि प्राक् पदव्या मिह निहित पदाना हत हस्तावलंब ॥ तदपि परम मर्थ चित्चम त्कार मात्र पर विरहित मत पश्यतेनैप किंचित् ॥ १ ॥ ५७ ॥

निश्चय नवि पामी शकेजी ॥ पाले नवि व्यवहार ॥ पुण्यर हित जे एहवाजी ॥ तेहनो कुण आधार ॥ सो० ॥ ५८ ॥

व्याख्या-निश्चयभाव पामी न शके, जे व्यवहार पाले नहीं, एहवा जे पु ण्यरहित जीव, तेहनो कोण आधार ? अर्थात् कोइ नहीं एभाव ॥ ५८ ॥

हेम परीक्षा जेम हुएजी ॥ सहत हुताशन ताप ॥ ज्ञानदशा तेम परखीएजी ॥ जिहा बहु किरिया व्याप ॥ सो० ॥ ५९ ॥

व्याख्या-हेम के० सोवर्णनी परीक्षा जेम हुताशन के० अग्निनो ताप सहेतां ज थाय, तेम ज्ञानदशा तिहां परखीए के, ज्यां बहु क्रियानो व्याप होय ज्ञानिने क्रिया खेदादिरहित असंग भूषणरूपज छे ॥ ५९ ॥

आलंबन विण जेम पडेजी ॥ पामी विषमी वाट ॥ मुग्ध पडे भवकूपमांजी ॥ तेम विण किरिया घाट ॥ सो० ॥ ६० ॥

व्याख्या० आलंबनविना जेम विषमवाट गर्त्तादिकनी पामी, तेनेविषे पुरुष पडे, तेम क्रियाना घाटविना मुग्ध के० अज्ञानी जीवो भवकूपमा पडे, माटे क्रि पाले ते दुष्ट भविकजनोने आलंबन-आधारभूतछे ॥ ६० ॥

चरित भणी बहु लोकमांजी ॥ भरतादिकना जेह ॥ लोपे शुभ व्यवहारनेजी ॥ बोधि हणे निज तेह ॥ सो० ॥ ६१ ॥

व्याख्या० घणा लोकमाहे भरतादिकना चरित्र भणीने के०कहीने एटले भरता दिके शा क्रिया व्यवहार पाल्या ? केवल आत्मशुद्धिएज केवलज्ञान पाम्या, तो व्य वहारनो शो परमार्थ ? एवु प्रकाशी, जे शुभ व्यवहारने लोपे तेनिज के० पोतानी बोधिने हणे आत्म भाव कहणे, पचहिंगाणेहिं पासत्था इति वचनात् ॥ ६१ ॥

बहु दल दीसे जीवनांजी ॥ व्यवहारे शिवयोग ॥ छींडी ताके पाधरोजी ॥ छोडी पंथ अयोग ॥ सो० ॥ ६२ ॥

व्याख्या-बहुदल के० घणां द्रव्य जीवनां व्यवहारे शिवयोग्य दीसे छे, तेने

करी व्यवहारक्रिया ते राजमार्ग छे. ए पाधरो मार्ग छांडीने जे छींडी ताके एटले ग ली गोचीनो रस्तो शोधवा जाय ते अयोग्य कहीए. भरत मरुदेव्यादिकनुं आलं बन सामान्य न करवुं. उक्तंचः गिहिसंयत्त महत्तो ॥ इत्यादि. ॥ ६२ ॥

आवश्यकमांहे भाषियोजी ॥ एहज अर्थ विचार ॥ फल
संशय पण जाणतांजी ॥ जाणीजे संसार ॥ सो० ॥ ६३ ॥

व्याख्या-एहज अर्थनो विचार आवश्यकमांहे भाष्योछे के जे, भरतादिक आलं बन लेइ क्रियाने उथापेछे. ते क्रिया अदृष्टव्य मुख्ये छे. क्रिया करतां फल होशे के नही होय? ए संशय केम टले? ते उपर कहेछे. जे फल संशय जाणतां पण सं सार जाणीए. उक्तंच श्री आचारांगे. संसयं परिजाणंतो संसारे परित्ताते भवति संसयं अपरि जाणंतो संसारे अपरित्ताते भवति. इति कृष्यादौफलं संशयेपि यथो पायत्व निश्चयात् प्रवृत्तिस्तथा धर्म्मेपि इति न्यायानुसारिणः ॥ १ ॥ ६३ ॥

ढाल छठी ॥ मुनि मन सरोवर हंसलो अथवा कुपनगो वंश रयणायरु॥ए देशी॥

अवर इस्यो नय सांभली ॥ एक ग्रहे व्यवहारोरे ॥ मर्म
द्विविध तस नवि लहे ॥ शुद्ध अशुद्ध विचारोरे ॥ ६४ ॥
तुजविण गति नही जंतुने ॥ तुं जगजंतुनो दीवोरे ॥ जीवी
ए तुज अवलंबने ॥ तुं साहेब चिरंजीवोरे ॥ तुज० ॥ ६५ ॥

व्याख्या-अवर के० वीजो कोइ एक मतवादी पुरुष, एहवो व्यवहार स्थाप क नय सांभलीने एक व्यवहारनेज ग्रहे, पण तेहना द्विविध मर्म न पामे के, एक शुद्धव्यवहार छे अने एक अशुद्धव्यवहार छे. ए बे भेद न प्रीछे ॥ ६४ ॥ हे भगवंत! तमारविना जीवने गति नथी. तु जगजतुनो दीवो छे, तुज अवलंबने एटले ताहरी स्याद्वादवाणीने पक्षे जीवीए छैए. श्लाघ्यता जीवने वर्त्तेछे. माटे तु साहेब, अमारे माथे चिरजीवी वर्त्तो ॥ ६५ ॥

जेह न आगम वारीउ ॥ दीसे अशठ आचारोरे ॥ तेहज
बुध बहु मानिउ ॥ शुद्ध कह्यो व्यवहारोरे ॥ तुज० ॥ ६६ ॥

व्याख्या-जेह आगमके० सिद्धांतमांहे नथी वार्यो अशठ परिणामीनो आचार दीसेछे तेहज बुधबहुके० घणा पंडिते मान्यो. शुद्ध व्यवहार कह्यो. उक्तंच ॥ मग्गो आगमणाई अहवा संविग्गबहु जणाईन्नं ॥ उभयाणु सारिणीज्जा भावमग्गाणु सा

रिणि किरिया ॥१॥ इत्यादि तथा असढेण समाइन्नं जकत्तइ केणई असावज्जं ॥ ण णिवारियं मन्नेहिं जबहुमणुमयमेयमायरियं ॥ २ ॥ तथा-वत्तणु वत्त पवत्तो बहु सो आसेविउं महाणेण एसोउ जियकप्पो पंचमकणाम ववहारो ॥ ३ ॥६६॥

जेहमा निज मति कल्पना ॥ जेहथी नवि भव पारोरे ॥ अंध परंपरा बांधिउं ॥ तेह अशुद्ध आचारोरे ॥ तुज० ॥ ६७ ॥

व्याख्या-जेहमां निजमतिनी कल्पना अतएव जेहथी भवनो पार न पामीए, तथा जे अंध परंपराए बांध्यो ते अशुद्धआचार जाणवो उक्तंच ॥ जहसद्दे सु समत्त सद्दाइ असुद्ध उयहिं नत्ताइ ॥ णिदिम्भवसाहिं तूला मसूरमा इण परिनो गो ॥ १ ॥ एमाईयसमंजस मणे महावुह चिंतिय लोए बहुएहिंविआयरियं णए पमाणं सुद्ध चरणाणं ॥ २ ॥ ६७ ॥

शिथिल विहारीए आचरया ॥ आलंबन जे कूडारे ॥ नियत वासादिक साधुने ॥ ते नवि जाणीए रुडारे ॥ तुज० ॥ ६८ ॥

व्याख्या-शिथिल विहारी पासत्थादिक, तेणे नियत वासादिक जे कुडा आलंबन आचर्यां ते साधुने रूडां न जाणीए यत नीआवासविहार चेइय भत्तिं अ ज्जिया लाभ विगइ सुअपडिबद्ध णिद्दोस चोईआ बिंती ॥ १ ॥ इत्यादिक आ इपत्रे एहना उत्तर सर्व तिहां छे आलंबनतो कल्पना मात्र छे उक्तंच ॥ आल बणाण लोगा भरिउं जीवस्सअजउ कामे ॥ जं जं पासइ लोए तंतं आलंबणकुणइ

आज न चरण छे आकरु ॥ संहननादिक दोषेरे ॥ एम निज अवगुण उलवी ॥ कुमति कदाग्रह पोषेरे ॥ तुज० ॥ ६९ ॥

व्याख्या-आज, चरणके० चारित्र नथी संहननादिक दोषे करीने, जेमाटे चारित्र अनि आकरूं छे ते पांचमे आरे होये न आरे एम निजअवगुण उलवीने कुम ति, पासत्थादिक कदाग्रह पोषेछे पण अमे हिणाछिए अने कालोचित यथा अनुष्ठान जे करे ते साधु पूज्य होय एम कही न शके पण पोतामां साधुसत्ता थापेछे ॥६९॥

उत्तरगुणमांहि हीणडा ॥ गुरु कालादिक पाखेरे ॥ मूल गुणे नही हीणडा ॥ एम पंचाशक भाखेरे ॥ तुज० ॥ ७० ॥

व्याख्या-कालादिकपाखे उत्तरगुणमांहे हीणा साधु होय, पण मूलगुणे ही

णा न होय; एम पंचाशक शास्त्र नापे ठे. तथाहि गुणगण रहिउ अइपरव्वो मूलगूण विउत्तो ॥ जोणाउ गूणमित्त विहूणोत्ति चंडरुद्दो ॥ उदाहरणं–तथा गीतार्थआज्ञाए साधु व्यवहार करतां आजपण चारित्र अखंम होय. उक्तंच धर्मरत्न प्रकरणे गीयठपासवंताना डुविहं मग मणूसरंतस्स ॥ नाव जइतं जुत्तं डुप्पसहंतं जउ चरणं ॥ १ ॥ तथा गुरु आज्ञा पालन तेहज रत्नत्रय प्राये ठे. उक्तंचः पंचासक नामा ग्रंथे–गुरुपारतंत नाणं सद्दहणं एय संगयंचेव ॥ इत्तो उ चारित्तेण सासउ सार्ईणेणिद्दिठं ॥ १ ॥ तेमाटे पांचमे आरे कालोचितयतना गुरु आज्ञाए करे तेहने चारित्रीयाज सद्दहवा. तरतम नावना दृष्टांततो नृपगोपादि व्यवहारादिक प्रसिद्ध ठे. अर्थात् सर्वत्र प्रसिद्धज ठे. ॥ ७० ॥

परिग्रह ग्रह वश लिंगीया ॥ लेइ कुमति रज माथेरे ॥ निज
गुण पर अवगुण लवे ॥ इंद्रिय वृषन्न न नाथेरे॥तुज० ॥७१॥

व्याख्या–परिग्रह ग्रहवशवर्त्ति जे लिंगी थायठे, ते कुमतरूप रज माथे लेइने निजके० पोताना गुण अने परके० पारकाना अवगुणनी लव के० लवारी करेठे; पण पोताना इंद्रियरूप वृषनने नाथता नथी. तेवारे सम्यक्त्वथी ज्रंश पामेठे.

नाणरहित हित परिहरी ॥ निज दंसण गुण लूंसेरे ॥ मुनिज
नना गुण सांन्नली ॥ तेह अनारज रूसेरे ॥ तुज० ॥ ७२ ॥

व्याख्या–एम ते पोतानुं हित परिहरी ज्ञानरहित थका निज दर्शनगुणने लूंटेठे, अने मुनिजनना के० साधु चारित्रियाना गुण सांनलीने तेह अनार्य रूसेठे. उक्तंच ॥ गुणहीणोगुणरयणा यरेसु जोकुणइनुल्ल मप्पाणं ॥ सुयतवस्सिणोहीलइ सम्मत्तं कोमलं तस्स ॥ इति उपदेशमाला ग्रंथनेविषे कह्योठे ॥ ७२ ॥

अणुसम दोष जे परतणो ॥ मेरुसमान ते बोलेरे॥ जेहसुं
पापनी गोठडी॥ तेहसुं हियडलुं खोलेरे ॥ तुज० ॥ ७३ ॥

व्याख्या–अणुसम के०परमाणु मात्र जे परतणो के० पारकानो दोष होय तेह प्रते ते अनार्य, द्रोह बुद्धिए, मेरु समान करीने बोलेठे जेहसुं पापनीज गोठडी बांधेठे तेहसुं हैडुं खोलेठे. तेहनीसाथे अंतर न राखे. अने साधुनी साथे अंतर राखेठे;

सूत्र विरुद्ध जे आचरे ॥ थापे अविधिना चालारे ॥ ते अति
निविड मिथ्यामति ॥ बोले उपदेशमालारे ॥ तुज० ॥ ७४ ॥

व्याख्या—इत्यादिक जे इनी माया मृषावादे पोतानु पारकु गणवे करी, हु रुडो, ए चुमो, एम ममत्वबुद्धिए करी जे सूत्रविरुद्ध आचरण करे, तथा अवधिना चालाके सूत्रविरुद्ध उन्मार्गने चलावे दृष्टिरागीने जूठा उपदेश देइने माया गाला उन्मार्गने थिर करावे, ते अति निविड मिथ्यामति कहीए एम उपदेशमाला बोलेले पन जोजहवायनकुणइ मिछादिठीतउर्डकोयन्नो ॥ वद्देईमिछत्त परस्ससकजणमाणो

पामर जन पण नवि कहे ॥ सहसा जूठ सशूकोरे ॥ जूठ कहे मुनिवेष जे ॥ ते परमारथ चूकोरे ॥ तुज० ॥ ७५ ॥

व्याख्या—धर्मना अजाण एवा अनार्य लोक पण सहसात्प्रकारे जूठु बोले नही पामरके० गमार लोक ते पण हैयामा नास्तिक होय नही अने साधुवेश पहेरी जे जूठु बोले तेहने परमार्थे सुगो जाणवो तेतो अणबोलोज भलो ॥ ७५ ॥

निर्दय हृदय छ कायमा ॥ जे मुनिवेषे प्रवर्त्तेरे ॥ गृह यति धर्मथी बाहेरा ॥ ते निर्धन गति वर्त्तेरे ॥ तुज० ॥ ७६ ॥

व्याख्या—जे छकायमांहे निर्दय हृदय थका मुनिवेषे करी प्रवर्तेछे, ते गृही के० गृहस्थना अने यतिना धर्मथी बाहेरा छे यतिधर्म विराधता नथी अने गृहस्थ जे माटे धुरथी वेष लीधो त्यहाथी मांगी साधुधर्म पाम्याज नथी, ता ते यतिधर्म स्पर्शावी गिरावे? अने वेष लेइ मागी खाणछे, ते माटे गृहस्थमां पण नही एटला माटे निश्चय इत्यर्थे श्राद्धधर्म अप्रतिपन्नथी नथी, ते बन्नो निर्धन गति वर्ते नीगारीना टानामाहे गणाय ॥ ७६ ॥

साधुभगति जिनपूजना ॥ दानादिक शुभ कर्मरे ॥ श्रावक नि न कह्यो अति भलो ॥ नहि मुनिवेष अधर्मरे ॥ तुज० ॥ ७७ ॥

व्याख्या—साधुनी भक्ति, श्रीजिनराजनी पूजा, ए दानादिक चार शुभ धर्म इत्यादि शब्दथी शील तप भावना लेउं तेणे शुभकर्मा श्रावक जन, अति भला कह्यो, पण मुनिवेषे, अधर्मा जना कह्या नही यत अक्खित चउत्थाण गुरु आरुडु ठाणागे ॥ सुन्नावउ उग तर न साहुवेसेण चुअ धम्माति ॥ १ ॥

केवल लिंगधारीतणो ॥ जे व्यवहार अशुद्धोरे ॥ आदरी ए नवि सर्वथा ॥ जाणी धर्म विरुद्धोरे ॥ तुज० ॥ ७८ ॥

व्याख्या—एहवो जे केवल ज्ञानादिकगुणविना लिंगधारीनो जे आचार ते धर्म

व्यवहार जाणपणानो होय तोए न प्रमाणीए; अने सर्वथा आदरीए नहीं, तेने धर्म विरुद्ध जाणिए ए ढालनो परमार्थ निश्चय योग व्यवहार ते शुद्ध निश्चय प्रतिकूल ते अशुद्ध एवो विवेक राखवो. एम उपदेशमालामां कह्यु छे ते इहां कह्यु ॥ ७८ ॥ हवे त्रीजो संवेगपक्षीनो मार्ग देखाडवा आगल ढाल कहे छे.

ढाल सातमी आगे पूरव वार नवाणु ए देशी ॥

जे मुनिवेष शके नवि छंडी॥ चरण करण गुणहीणाजी॥ ते पण मारग मांहे दाख्या ॥ मुनिगुण पक्षे लीणाजी ॥ मृषावाद भवकारण जाणी॥ मारग शुद्ध परूपेजी॥वंदे नवि वंदावे मुनिने॥आप थइ निज रूपेजी७ए

व्याख्या–जे चरण करण गुणे हीणा थइ लज्जादिके मुनिवेष नथी छांडीशकता, यत जइतारसि धारीउं मूल गूण तरस उत्तर गुणंच ॥ मुत्तुण तोति भूमि सुत्ताव ग छवरत्तरागं. इत्यादिक उपदेशमालायां ग्रंथोपदेशिति क्रम न साचवे तेपण मारगमाहे देखाड्याछे. पण जो मुनीगुणपक्षे लीणा होय, शुद्ध आचार भाखे. मृषावाद ते भवके० संसारनुं कारण जाणीने शुद्धमारग प्ररूपे. मुनिने पोते भाव वंदे; पण आप निजरूप थइने वांदवा न दे. अत्र गाथा–संवेग पक्खियाणं लक्खणमेयं समासउ भणियं उसन्न चरणकरणा विजेण कम्मं विसोहंती ॥ १ ॥ सुद्धं सुसाहुधम्मं कहेइ निंदेइ नियथमायारं सुतवस्सि आणपुरउ हवइ अमव्वो पगयणिउ ॥ २ ॥ वंदइनवंदावइ कियकम्मंकुणइ कारवेणेह अत्तठा नवि दिक्खइ देइ सुसाहुण बोहेउं ॥ ३ ॥ उसन्नो अत्तठा परमप्पाणं चहणइ दिक्खंतो तवुहइ डुगाईए आइ अयरं वुहइ सयंच ॥ ४ ॥ उपदेशमालायामिति. शोधी, ॥ जइ विणलके कावसम्मं जिणभासियं अणुठाणं तो सम्मं भासिज्जा जह भणीयं खीण रागेहिं ॥ १ ॥ उसन्नो विविहारे कम्मं सोहेइ सुलहबोहीअ ॥ चरणं करण विसुद्धं उववहं तो परूवंता ॥ २ ॥ सुद्धं सुसाहु धम्मं कहमाणो छवइतइपक्के अप्पाणं इअरो पुण गिहछ धम्माउ चुकंति ॥ ३ ॥ इति गछाचारे ॥ ७ए ॥

मुनि गुण रागे पूरा शूरा ॥ जे जे जयणा पालेजी ॥ ते तेह थी शुभ भाव लहीने ॥ कर्म आपणां टालेजी ॥ आप हीनता जे मुनि भाखे ॥ मान सांकडे लोकेजी ॥ ए दुर्धर व्रत एहनुं दाख्युं ॥ जे नवि फूले फोकेजी ॥ ८० ॥

तु-तो गिरियोगे जिन पूजता पण शिव कारणके० मोक्ष हेतुबे ए वातमां जन के० हे लोको ! मत त्रुजो ॥ इत्यर्थ ॥ ८६ ॥

विषयारंभतणो ज्यां त्याग ॥ तेहथी लहिए भवजलताग ॥
जिनपूजामां शुभ भावथी ॥ विषयारम्भतणो भय नथी ॥ ८७ ॥

व्याख्या-जेह करणीमां विषयारम्भनो त्याग होय, तेहथी भवजलनो ताग लहे जिनपूजा माहे वीतराग गुण प्रणिधानरूप शुभभावथी विषयारम्भनो भय नथी ते माटे जिनपूजादिक सदारम्भ कहीए एमां असदारम्भनिवृत्ति मोहोटो गुणछे

सामायिक प्रमुखे शुभ भाव ॥ यद्यपि लहिए भवजल नाव ॥
तोपण जिनपूजाए सार ॥ जिननो विनय कह्यो उपचार ॥ ८८ ॥

व्याख्या-यद्यपि श्रावकने सामायिक प्रमुखादिक अनुष्ठाने आरम्भनिवृत्तिरूप शुभभाव रहतो होय, तोपण जिनपूजाए जिननो उपचार वीर्य उल्लास थाय विनय पामे एम तो कह्यो ते ते विना केम होय? विनय ते अतरंग तपछे शु श्रा धर्मने दान देव पूजादिक सामायिक प्रमुखे ठेली नाखवाने अवसरे सौ पर्योचित सारवांन आज्ञा प्रमाण होय ॥ ८८ ॥

आरम्भादिक शंका धरी ॥ जो जिनराज भक्ति परहरी ॥ दान मान वंदन आदेश ॥ तो तुज मयलो पड्यो कलेश ॥ ८९ ॥

व्याख्या-आरम्भादिकनी शंका धरीने जो जिनराजनी भक्ति पूजादिक परहरी तो तुजने दान, मान, वंदन, आदेश सर्व क्लेश पड्यो छे, त्यां पण साधुगमनादिक विराधना अवर्जनीय छ परिणाम प्रमाण करता तो पूजामांहे निकाराजछे ॥८९

स्वरूपथी दीसे सावद्य ॥ अनुबंधे पूजा निर्वद्य ॥ जे कारण जिनगुण बहु मान ॥ जे अवसरे वरते शुभ ध्यान ॥ ९० ॥

व्याख्या-स्वरूपथकी पृथ्व्यादि जीवाने करी सावद्य दीसे छे, पण अनुबंध ते भवांतर भावशुद्धि, तेणे पूजा क्रिया निर्वद्यछे जेहकारणे ते पूजा अवसर श्री जिनगुण बहुमानथी शुभध्यान वर्तेछे भलोभावनीने असदारम्भनिवृत्ति अभिप्रायित रूपे निरवद्यछे ॥ ९० ॥

जिनवर पूजा देखी करी ॥ भविअण भावे भवजल तरी ॥ छ कायना रक्षक हो वली ॥ एह भाव जाणे केवली ॥ ९१ ॥

व्याख्या–ए श्रीजिनवरदेवनी पूजा, अर्चा, सेवना देखी करी बीजा ध्यानादि
के नावे. नव्यप्राणी नवजल तरीने ठ काय. रक्षक कहीए. एहवो नाव सम्यक्दृष्टि
ने पूजामांहे वर्ते ठे; ते केवली जाणेठे. अतएव कायवचन मनोयोग प्रधानपणे
समंतनद्रा, सर्वमंगला, सर्वसिद्धिफला–ए त्रिविध पूजा होय. तेहमां चरण
ज परमश्रावकने कहीए ठेए. ॥ ए१ ॥

जल तरतां जल ऊपर यथा ॥ मुनिने दया न होए वृथा ॥ पुष्पा
दिक ऊपर तिम जाण ॥ पुष्पादिक पूजाने ठाण ॥ ए२ ॥

व्याख्या–यतिने कारणे जल तरतां जल जीवउपर दया परिणाम जेम फोक
नथी; तेम पुष्पादिक पूजाने ठामे श्रावकने पुष्पादि जीव उपर दयाना परिणाम
नो अनुबंध नाजतो नथी एम जाणीए ॥ ए२ ॥

तो मुनिने नहिं किम पूजना ॥ एम तुं शुं चिंते शुन मना ॥ रो
गीने औषध सम एह ॥ निरोगी ठे मुनिवर देह ॥ ए३ ॥

व्याख्या–जो निरवद्य जिनपूजा कही तो यति केम न करे? एम तुं शुनमना
मुग्धनावयको शुं चिंतवे ठे? जेह माटे ए जिनपूजा, रोगीने औषध समान
ठे. गृही तो मलीनारंन रोगवंत ठे, ते उपशमाववानुं ए मुख्य औषध ठे. अने मु
निवर तो सर्व सावद्यनिवृत्त ठे; ते रोगरहित, रोगनु औषध केम करे? ॥ ए३ ॥

ढाल नवमी ॥ प्रथम गोवालातणे नवेजी ॥ ए देशी ॥

नावस्तव मुनिने नलोजी ॥ वेउ नेदे गृही धार ॥ त्री
जे अध्ययने कह्योजी ॥ महा निसीथ मकार ॥ शुणो
जिन तुक विण कवण आधार ॥ ए आंकणी ॥ ए४ ॥

व्याख्या–मुनि–साधुजनने नावस्तवनादिक करवो ते नलो ठे. नाव चरण म
ग विहा रणय दव्व वणंतु जिण पूआ पटमा जईणं डुएह विगिहाण पढमत्ति
य पासत्ता ॥ १ ॥ एवुं श्रीमहानिशीथसूत्रमध्ये त्रीजे अध्ययने कह्यु ठे. सांनल
हे;जिन श्रीसीमंधर देव, तारा विना कोण आधार? ॥ ए४ ॥

वली तिहां फल दापियुंजी ॥ इव्यस्तवनुंरे सार ॥ स्वर्ग बार
मुं गेहिनेजी ॥ एम दानादिक चार ॥ शुणो० ॥ ए५ ॥

व्याख्या–वली तिहां महा निशीथमांहे इव्यस्तवनुं फल गेहिने के०गृहस्थने ब

मु स्वर्ग दाग्लु एम दानादिक चारनु पण तेहज फल कह्यु तेमाटे द्रव्यस्तव अणु व्रतादिक तुल्यज गृहस्थधर्म जाणजो काकण जिणायतणेहि मल्यिप सयन मेरुरा रह ॥ दाणाउ चउक्कण निसुकु विगछिज्ज असुयणपरउगायामा इत्यादि वचनात् ॥९५

छठे अंग द्रौपदीजी ॥ जिनप्रतिमा पूजेय ॥ सूरियाभ

परे भावथीजी ॥ एम जिनवीर कहेय ॥ गुणो० ॥ ९६ ॥

व्याख्या–छठे अंगेश्री ज्ञाताधर्म कथाए अवदात प्रसिद्ध छे, जे द्रौपदीए श्री जिनप्रतिमा सूर्याभ देवतानी परे भावथी पूजी, एम श्रीवीरपरमेश्वर कहेछे, कारणके जे द्रौपदी श्राविका नथी ते उपर कहे छे ॥ ९६ ॥

नारद आव्ये नवि थइजी ॥ उभी तेह सुजाण ॥ ते कारण

ते श्राविकाजी ॥ भाखे आल अजाण ॥ गुणो० ॥ ९७ ॥

व्याख्या–नारद आव्या तेहने असयति जाणीने उभी न थइ एह दृढ धर्मपणाने गुणे द्रौपदी शुद्ध श्राविका छे. ए कारण माटे ते श्राविकाज जाणवी तथापि जे ते आल आपे छे जे द्रौपदी श्राविका नथी ॥ ९७ ॥

जिनप्रतिमा आगल कह्योजी ॥ शक्रस्तव तेणे नार ॥ जाणे कु

ण विण श्राविकाजी ॥ एह विचार हृदय विचार ॥ गुणो० ॥ ९८ ॥

व्याख्या–वळी ते नारी द्रौपदीए जिनप्रतिमानी आगल शक्रस्तव क० नमोत्थुणं नामस्तवनाए कह्यो, तो हवे श्राविकाविना एह जिनप्रतिमा पूजवानी विधि कोण जाणे? माटे हृदयमा विचारी जुओ के जो ए मिथ्यादृष्टि होय तो नागादिक प्रतिमा आगने दक्तत करी पुत्रादिकनी याचना करे ॥ ९८ ॥

पूजे जिनप्रतिमाप्रतेजी ॥ सूरियाभ सुरराय ॥ वाची पुस्तक रत्नना ॥ लेइ धर्मव्यवसाय ॥ गुणो० ॥ ९९ ॥

व्याख्या–सूर्याभ सुरराज, जिनप्रतिमाने रत्नना पुस्तक धर्मशास्त्ररूप छे ते वाची. धर्म व्यवसाय करीने पूजे ॥ ९९ ॥

रायपसेणीसूत्रमाजी ॥ मोटोटा एह प्रबंध ॥ एह वचन

अणमानतानी ॥ करे कर्मनो बंध ॥ गुणो० ॥ १०० ॥

व्याख्या–रायपसेणीसूत्रमांहे एह मोटोटा प्रबंध कह्यो छे एह वचन नथी मानता ते जेवाने ते तो धर्मिमत्रा करीने चीकणां कर्म बांधे छे ए

पंचहिं ठाणेहिं जीवा डुल्लहबोहियत्ताए कम्मंपकरंती इति. अरहंताणं आसाय णाए १ अरहंत पन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए २ केवलीणं आसायणाए ३ चाउवण्णस्स समण संघस्स आसायणाए ४ विविक्कबंनचेराणं देवाणंआसायणाए

विजय देव वक्तव्यताजी ॥ जीवाभिगमेरे एम ॥ जो थिति
छे ए सूरतणीजी ॥ तो जिनगुण थुति केम ॥ शुणो० ॥ १०१ ॥

व्याख्या–श्रीजीवाभिगमसूत्रमध्ये विजयदेवनी वक्तव्यता पण ए रीतीएज छे. जो कहेशो के ए देवतानी स्थिति छे तो बारशाखा प्रमुख पूजे तेम जिन प्रतिमा पूजी जोइए. तो इहां, जिनगुणनी स्तुति केम करे छे? ॥ १०१ ॥

सिद्धारथराये कर्याजी ॥ याग अनेक प्रकार ॥ कल्पसूत्रे
एम भाषियुंजी ॥ ते जिनपूजा सार ॥ शुणो० ॥ १०२ ॥

व्याख्या–श्रीकल्पसूत्रमध्ये जाएअ भाएअ दाएअ ए अधिकारे श्रीसिद्धार्थेरा, जाए अनेक याग कराव्या एवुं कह्यु छे, तिहां यागशब्दे जिनपूजा कहीए. श्री कल्पसूत्रमांहे एम भाख्युं वे तेमाटे श्रीजिनपूजा, तेहज सारछे अने आत्माने उत्तम गति तथा उत्तम मतिनी आपनार छे. ॥ १०२ ॥

श्रमणोपासक ते कह्याजी ॥ पहेला अंगमझार ॥ याग अ
नेरा नवि करेजी ॥ ते जाणो निरधार ॥ शुणो० ॥ १०३ ॥

व्याख्या–जे माटे श्रीआचारांगसूत्रे द्वितीय श्रुतस्कंधमध्ये श्रीमहावीर देवनां मातपिता श्रीपार्श्वनाथतीर्थेना शुद्धश्रावक कह्या छे; ते अनेरा पशुयागादिक न करे. तेमाटे यज देवपूजा संगति करण दानेषु ए धातु अर्थे वलि याग ते पूजा भगवतनी ते निरधार के० निश्चये अर्थ विचारणाए भविकजीवने जाणवी. ॥ १०३ ॥

एम अनेक सूत्रे भण्युंजी ॥ जिनपूजा गृहिकृत्य ॥ जे नवि
माने ते सहीजी ॥ करशे बहु भव नृत्य ॥ शुणो० ॥ १०४ ॥

व्याख्या–एम ए कारणे अनेक सूत्रमांहे श्रीजिनपूजा ते श्रावकनुं कृत्यके० करणी भण्युं के० कह्यु छे. जे नही माने ते बहु भवचक्रवालमध्ये नाटक करशे. तेमाटे भविक जीव, भवभीरू होय तेणे श्री जिनपूजा प्रमाण करवी ॥ १०४॥ ढाल दशमी ॥ जंबुर संघा सासुर संघा अथवा एणे पुर कंबल कोइ न लेसी ए देशी॥

अवर कहे पूजादिक ठामे ॥ पुण्यबंध छे शुभ परिणामे ॥ धर्म इ
हां नवि कोइ दीसे ॥ जेम व्रत परिणामे मन हीसे ॥ १०५ ॥

व्याख्या–वली अपरमति कोइक एम कहे छे के पूजादिकने ठामे शुभ परिणा
मे पुण्यनो बंध छे; पण इहां धर्म कोइ दीसतो नथी जेम व्रत परिणामे धर्म कहे
तां चित्त हीसे छे, तेम पुष्पादिक आरंभ जणी पूजा धर्म कहेतां चित्त हीसतुं नथी

निश्चयधर्म न तेणे जाण्यो ॥ जे सैलेशी अंत वखाण्यो ॥ धर्म
अधर्मतणो क्षयकारी ॥ शिवसुख दे जे भवजल तारी॥१०६॥

व्याख्या–एम कहेछे ते मतीए निश्चय धर्म जाण्यो नथी निश्चय धर्म जे सैलेशी
अंत के० चउदमा गुणठाणाने छेहडे वखाण्यो छे ते धर्म केवो छे? अधर्मनो क्ष
यकारी अथवा बीजो अर्थ एम छे जे धर्म अधर्म ए बनेनो क्षय करनारो छे, अ
ने भवजल तारीने शिवसुख के० मोक्षसुख आपे एवो छे उक्तंच धर्म संग्रह
ण्यां–सोउभय खउ हेऊ सेलेसी चरम समय भाविति–निश्चय धर्म जाण्यो होय तो
तेहने विरहे पंचमे छठे गुणठाणे सरखोज कहेछे पण पक्षपात न करे ॥१०६॥

तस साधन तुं जे जे देखे ॥ निज निज गुणठाणाने लेखे ॥ तेह
धरम व्यवहारे जाणो ॥ कारज कारण एक प्रमाणो ॥ १०७॥

व्याख्या–ते शैलीसी चरमसमय भावी निश्चयधर्म तु परंपराए साधन जेहतुं
निज निज के० पोतपोताने गुणठाणे देखे छे तेहने व्यवहारे जाण तद्धुला पचंति
वर्षति पर्जन्य इति वचनात्–कार्य कारण एक करी प्रमाण जे वस्तु स्पर्शी उपचार
पण प्रमाणछे तेहनो निषेध तो पूजामाहे न संभवे, तो केम कहेवुं? जे पूजा
माहे पुण्य होय पण धर्म न होय एम ए विचारी जोजे ॥ १०७ ॥

एवंभूततणो मत भाख्यो ॥ शुद्ध द्रव्य नय एम वलि दाख्यो ॥
निजस्वभावपरणति तेधर्म ॥ जे विभाव ते भावज कर्म ॥ १०८ ॥

व्याख्या–एवंभूतनयनी अपेक्षाए भाख्यो शुद्ध द्रव्यनये वली एम देखाड्योछे जेटला
निज स्वभावनो आविर्भाव ते धर्म, अने जेटलो विभावनो विलास तेभावकर्म जाणवा

धर्म शुद्ध उपयोग स्वभावे ॥ पुण्य पाप शुभ अशुभ विभावे ॥
धर्म हेतु व्यव हारज धर्म ॥ निज स्वभाव परणतिनो मर्म॥१०९॥

व्याख्या–अहीयां शुद्ध द्रव्यनयते शुद्धाशुद्धप्रकृति व्यवहाररूप लेवी अथवा

नैगम अतिशुद्ध द्रव्यार्थिक प्रकृतिसंग्रह नय छे, ते तो सर्व आत्माने धर्मस्वरूप मानेछे. पूजा दयाजनित धर्म कहेतो नथी; ए नयांतर वादीए विचारवुं. ऋजुसूत्रनयनेमते यावत्काल शुद्ध उपयोग स्वभाव, तावत्काल धर्म. यावत्काल शुभाशुभ विभाव परिणाम, तावत्काल पुन्यपाप. ते नय अनुसरी जिनपूजादिक धर्म हेतु जाणी व्यवहारे धर्म कहीए. जेहमांहे योग्यतापादिक निजस्वभाव परिणाम आवे छे. तेमाटे कारण कार्योपचारे करीए. ॥ १०ए ॥

शुभयोगे द्रव्याश्रव थाय ॥ निज परिणाम न धर्म हणाय ॥ यावत् योग क्रिया नहीं थंभी ॥ तावत् जीवछे योगारंभी ॥ ११० ॥

व्याख्या—श्रीजिनदेवनी पूजादिकमांहे यद्यपि शुभयोगे द्रव्याश्रव थाय छे तो पण निजके० पोताना परिणामे धर्म हणाय नही. यावत् के० ज्यहांलगे योग क्रिया थंभी नथी, तावत् के० त्यहां लगे जीव, योगारंभी कह्यो छे. जिहां लगी ए जयी विजयी तिहां लगे ते भणी अंतक्रिया निषेधी छे. ॥ ११० ॥

मलिनारंभ करेजे किरिया ॥ असदारंभ तजीने तरिया ॥ विषय कषायादिकने त्यागे ॥ धर्म मति रहिए शुभ मागे ॥ १११ ॥

व्याख्या—श्रावकतो मलिनारंभी छे. जेजे दान देवपूजादिक धर्मक्रिया करे छे ते असदारंभ छांमीने संसार समुद्रने तरे छे. ते भाव तो पूजामांहे अविरुद्ध छे. विषय कषायादिक प्रमुखनो त्याग थाय तेरीते धर्म बुद्धिए शुभ मार्गमांहे रहीए. ए उपदेश छे ते जाणवो. ॥ १११ ॥

स्वर्गहेतु जो पुण्य कहीजे ॥ तो सराग संयम पण लीजे ॥ बहु रागे जे जिनवर पूजे ॥ तस मुनिनी परे पातक धूजे ॥ ११२ ॥

व्याख्या—स्वर्गनुं कारण, तेमाटे जो द्रव्यस्तव पुण्य कहीए तो सराग संयम पण केम लेइए? ते पण स्वर्गनुं कारण छे. बहुरागे के० घणीए भक्तिए करीने श्रीजिनवरने जे पूजे तेहनां पातक मुनिके० सराग संयम—तेहनीपेरे धूजेके०कंपे.

भावस्तव एहथी पामीजे ॥ द्रव्यस्तव ए तेणे कहीजे ॥ द्रव्यशब्द छे कारण वाची ॥ भमे म भुलो कर्म निकाची ॥ ११३ ॥

व्याख्या—कोइ कहेशे के, द्रव्यस्तव कहेतां अप्राधानस्तव थाय. ते शंका टाले छे. एह पूजादिकथी भावस्तव के० चारित्र पामे. ते कारणे द्रव्यस्तव के० द्रव्य शब्द

अहींयां कारण वाचीछे, अप्रधान वाची नथी माटे कर्मनिकाची तेंनूजो नमीश मां

ढाल अगीयारमी ॥ दान उलट धरी दीजीए ॥ ए देशी ॥

कुमति एम सकल दूरे करी ॥ धारीए धर्मनी रीतरे ॥
हारीए नवि प्रभु बल थकी ॥ पामीए जगतमां जीतरे ॥
स्वामि सीमधर तु जयो ॥ ए आकणी ॥ ११४ ॥

व्याख्या–एम सर्वे कुमति दूर करी व्यवहारतत्व श्रद्धानेज शुद्धात्मनावनारूप धर्मनी रीतिए धरीए अने प्रभुना नामना बल थकी हारीए नही वली जगतमां हे जीत पामीए हे श्रीमधरस्वामि तमेजयवता वर्त्तो इत्यर्थ ॥ ११४ ॥

नाव जाणे सकल जतुना ॥ नव थकी दासने राखरे ॥ बोलिया
बोल जे ते घणु ॥ सफल जो छे तुज साखरे ॥ स्वामि० ॥ ११५ ॥

व्याख्या–सकलके० सर्व प्राणीमात्रना नाव जे स्वरूप ते जाणो–देखोछो, तेमाटे हे स्वामि, नवके० ससारना नय थकी दास के० सेवकने राख जे बोल बोल्याछे ते स फलपणे तो गणु, जो हे जगत्रयना नायक तारी साखे करी कहु छु तो ॥ ११५ ॥

एक छे राग तुज उपरे ॥ तेह मुज शिवतरु कंदरे ॥ नवि गणु तु
ज परे अवरने ॥ जो मिले सुर नर वृदरे ॥ स्वामि० ॥ ११६ ॥

व्याख्या–एक राग मुजने तुज उपरे छे, तेह मुजने मोक्षनोज कद छे तुजने मेलीने अपर कोइ देवने ध्याववानी माहरी मनसा नथी जो देवताना अने मनुष्यना वृद के० समूह मले तोपण तेने ध्यावु नही ॥ ११६ ॥

तुज विना मे बहु दुःख लह्या ॥ तुज मिल्ये ते केम होयरे ॥ मेह
विण मोर माचे नहीं ॥ मेह देखी माचे सोयरे ॥ स्वामि० ॥ ११७ ॥

व्याख्या–हे प्रभु, मे ताहरा ध्यानविना बहु के० घणाज दुःख लह्या, हवे तुजने मले माहरा सर्व दुःख क्षय पाम्या मेघना आगमविना जेम मोर महाले नही, मेह देखीने मोर नाचकला मांडे, तेम तुज दर्शने करी पाप नाश ॥ ११७ ॥

मनथकी मिलन मे तुज कियो ॥ चरण तुज नेटवा साइरे ॥ कीजिए
जनन जिन ए विना ॥ अवर न वांछिए काइरे ॥ स्वामि० ॥ ११८ ॥
तुज वचन राग सुख आगले ॥ नवि गणु सुरनर शर्मरे ॥ कोडि

जो कपट कोइ दाखवे ॥ नवि तजु तोए तुज धर्मरे॥स्वामि०॥१६९॥ तुं मुज हृदयगिरिमां वसे ॥ सिंह जो परम निरीहरे ॥ कुमतमातंग ना जुथथी ॥ तो कशी प्रभु मुज बीहरे ॥ स्वामि० ॥ १७० ॥ को डि छे दास प्रभु ताहरे ॥ माहरे देव तुं एकरे ॥ कीजीए सार सेवकतणी ॥ ए तुज उचित विवेकरे ॥ स्वामि० ॥ १७१ ॥ भक्ति भाव इस्युं भाखीए ॥ राखीए एह मनमांहीरे ॥ दासनां भवदुःख वारिए ॥ तारिए सो ग्रही बांहीरे ॥ स्वामि० ॥१७२॥ बाल जेम तात आगल कहे ॥ विनवुं हुं तेम तूजरे ॥ उचित जाणो तेम आचरुं ॥ नवि रह्यो तुज किस्युं गुजरे ॥स्वामि०॥१७३॥ मुज होजो चित्त शुभ भावथी ॥ भव भव ताहरी सेवरे ॥ याचिए कोडियतने करी ॥ एह तुज आगले देवरे ॥ स्वामि० ॥ १७४ ॥ कलश ॥ हरिगीत छंद ॥ इम सकलसुखकर दुरितभयहर ॥ विमल लक्षण गुणधरो ॥ प्रभु अजर अमरनरिंदवंदित ॥ विनव्यो सीमंधरो ॥ निज नादत र्जित मेघगर्जित ॥ धैर्यनिर्जित मंदरो ॥ श्रीनयविजय बुधचरण सेवक ॥ जशविजय बुध जय करो ॥ १७५ ॥ ॥ ॥ ॥

इतिश्रीमन्महोपाध्याय गणि श्रीयशविजयकृतश्री सी मंधरजिन स्तवनं बालावबोधसहित संपूर्ण.शुभं भवतु

॥ श्रीपरमात्मनेनम ॥

॥ अथ श्रीशोभनमुनिकृत चतुर्विंशति जिनस्तुति बालावबोधसहित प्रारंभ ॥

धनपाल पंडितनो शोभन नामे जे बंधु, तेणे रचेला प्रत्येक जिनना चार चा एवा चोवीस जिननी स्तुतिना छन्नु श्लोक मूल तथा तेनी व्याख्यासहित तेमा थम युगादि जिननी स्तुती शार्दूलविक्रीडितवृत्ते करीने कहेछे

भव्यांभोजविबोधनैकतरणे, विस्तारि कर्मावली ॥ रंभा सामज नाभि नंदन महा, नष्टाप दा भासुरै ॥ भक्त्यावंदितपादपद्म विदुषा, मपा दय प्रोज्झिता ॥ रंभा साम जनाभिनंदन महा नष्टापदा भा सुरै ॥ १ ॥

व्याख्या- हे नाभिनंदन के० हेनाभिराजाना पुत्र ! तु विदुषा के० पंडितने महान के० उत्साहने, संपादयके० संपादन कर-तु केवोछे? तो के भव्यके० भव्य प्राणी, तेज जाणे अंभोज के० कमल तेउना विबोधने के० प्रतिबोध करवा माटे एक के० अद्वितीय एवो तरणे के० सूर्य एवा हे भव्यांभोजविबोधनैकतरणे! एटले सूर्य जेम पोताना किरणसमुदाये करीने अंधकारनो नाश करीने कमलोना समुदायने प्रफुलित करेछे, तेम भगवान तीर्थंकर पण, मिथ्यात्वादिक अज्ञानस मुदायनो नाश करीने पोताना वचनसमुदाये करीने भव्यजंतूउने माटे बोध करे छे इहां एवी शंका थाय छे के, ते भगवान जो भव्यप्राणिउने बोध करेछे, अने अभव्योने बोध करता नथी, तो तेने अभव्यप्राणिउने बोध करवा माटे अ सामर्थपणु प्राप्त थायछे एनो उत्तर कहेछे के, ते भगवंतने असामर्थपणु नथी कारण, सर्व जगने प्रकाश करनारा एवा जे सूर्यना किरण, ते जाके घुग्रड प क्षीउना समुदायनेविषे प्रकाश करनारा थया नहीं, तथापि ते सर्व जगनविषे कि दापि अविद्यमान थता नथी, एवी सर्व जगने प्रेम उत्पन्न करनारी पण भगवंतनी वा णी, निबिडकर्मगुरुवलाए प्रतिबद्ध थएला एवा केटलाएक अभव्यपुरुषोने बो ध करवामाटे समर्थ थइ नहीं, तथापि ते तेनु असमर्थपणु समजवु नही, पण जे पुरुषने ते वाणी गमती नथी तेनुज ते अभाग्य समजवु जोइए कारण, जलनी वृष्टि करनारो मेघ, ऊखर क्षेत्रनेविषे तृण उत्पन्न करवा माटे जो के असमर्थ छे,

तथापि ते लोकोमध्ये निंद्यपणु पामतो नथी. तेम भगवान पण असामर्थ्यवान थता नथी. तेमज आठ कर्मेकरी विस्तारयुक्त जे ज्ञानावरणादि भेदे करीने भिन्न एवी कर्मनी आवलि के० पंक्ति तेज रंभा के० कदली, तेना मर्दनविषे कारण एवो सामज के० गज, एवा हे विस्तारिकर्मावलीरंभासामज! तेमज जेनाथी मोटी पण आपत्तिउ नष्ट थइउंछे एवा हे महानष्टापत्! तेमज भाभासुरैः के०कांति समुदाये आसपास देदीप्यमान एवा असुरैः के० असुरनाम देवविशेषोए भक्त्या के० भक्तिए जेना चरणकमल वंदन कर्याछे एवा हे वंदितपादपद्म! तेमज प्रोज्झित के० अत्यंत तज्या छे आरंभ के० सावद्य व्यापार जेणे, एवा हे प्रोज्झितारंभ! तेमज आम के० रोग, तेणे जे सहित ते साम, तेणे रहित माटे हे असाम के० हे रोगरहित! तेमज जनने आनंद उत्पन्न करनारा हे जनाभिनंदन! अने अष्टापद के० सुवर्ण तेना सरखी भाभा के० कांती जेनीछे एवा हे अष्टापदाभ! तुं पंडितोने माटे उत्साह उत्पन्न कर. एवो भावार्थ. ॥ १ ॥

ते वः पांतु जिनोत्तमाः क्षतरुजो नाचिक्षिपु र्यन्मनो ॥ दारा विभ्रमरोचिताःसुमनसो मंदारवा राजिता ॥ यत्पादौ च सुरोज्झिताः सुरभयांचक्रुः पतंत्यों वरा ॥ दाराविभ्रमरोचिताः सुमनसो मंदारवाराजिताः ॥ २ ॥

व्याख्या—क्षतरुजः के०जेमना रोग क्षीणथयाछे अथवा जेमनाथी रोग नष्ट थयाछे एवा ते जिनोत्तमाः के० सामान्य केवली जिनमध्ये उत्तम एवा जे तीर्थंकर, ते वः के० तमारे माटे रक्षण करो. ते जिनोत्तम केवाछे? ते कहेछे. यन्मनः के०जेना मनने विभ्रमरोचिता के० हावभावादिक विलासे करीने शोभित एवी, अने सुमनस के० जेना शब्दो मधुरछे एवी, अने राजित के० अलंकारादिकोए सुशोभित एवीउ दाराः के० स्त्रीउ, तेउ, नाचिक्षिपु के० क्षोभ करवा माटे समर्थ थइउ नहि, अने यत्पादौ के० जे जिनेश्वरोना चरणोने, सुरोज्झिता. के० देवताउए समवसरणनेविषे नाखेली, अंबरात्पतंत्यः के० आकाशथी पडनारां,अराविभ्रमरोचिताः के० शब्द करनारा जे भ्रमरा, तेउने पराग ग्रहण करवामाटे योग्य एवा,अने मंदारवाराजिता.के०कल्पवृक्षना पण पुष्प समुदायोए पोताना सुगंधिपणाए करीने न जीतेलां एवा, सुमनसः के० पुष्पो, ते सुरभयांचक्रुः के० सुगंधयुक्त करतां हवां. सारांशके; जे जिनेश्वरना मनने उत्तमस्त्रीउ पण नाना प्रकारना हावभावादिके करीने क्षोभ करवा माटे स

मर्थ थइउं नहीं, अने जेना चरणोने देवोए वृष्टि करेला पुष्पो, सुगंधयुक्त करतां हवा, ते जिनेश्वर तमोने रक्षण करो एवो भावार्थ ॥ २ ॥

शांति व स्तनुतान्मिथो नुगमनाद्यन्नैगमाद्यैर्नयै ॥ रक्षोभ जन हे तु ला छितमदोदीर्णागजाल कृतं ॥ तत्पूज्यै र्जगता जिनैः प्रवचन दृप्य त्कुवाद्यावली ॥ रक्षोभजनहेतुलाछितमदोदीर्णांगजाल कृतं ॥ ३ ॥

व्याख्या–हेजन के० हे भव्यजन! जगता के० त्रणे लोकोने पूज्य के० पूजन करवा माटे योग्य एवां, जनै के० तीर्थंकरे कृतं के० करेला जे प्रवचन के० गण पीठरूप जिनमत, ते व के० तमोने अतुल के० निरुपम एवी शांति के० मोह प्रत्ये किंवा उपशमप्रत्ये तनुतात् के० विस्तार करो जे प्रवचन, मिथोनुगमनात् के० परस्पर अनुवर्तनरूप हेतुत्त्व नैगमाद्यैर्नयै के० नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ अने एवंभूत–एवा सात नयोए करीने अक्षोभ के० प रवादी पुरुषोए जीतवाने अयोग्य, अने छितमदोदीर्णागजाज के० जेणे वादी पु रुषोनो दर्प छेदन करेलो छे, अने जेनेविषे आचारादिक अंगनो समुदाय वर्णन कर्यो छे एवा, अने दृप्यत्त के० दर्प धारण करनारा जेउ कुवादी के० मिथ्यावा दी, तेउनी जे आवली के० श्रेणी तेज जाणे रक्ष के० राक्षस, तेनुं भजन के० नाश करनारा जे हेतु के० दृष्टांत, तेणे लांछितं के० शोभित ते दृप्यत्कुवाद्याव लीरक्षोभजनहेतु एवा, अने दीर्णांगजालकृतं के० टाल्यो छे अगज के० मदन जेणे एवा श्रमण पुरुषोए अलंकृत के० अंगीकार करेला अद के० ए प्रवचन तमोने निरुपम एवी शांती प्रत्ये विस्तार करो ॥ ३ ॥

शीतांशुत्विषि यत्र नित्यमदधद्गंधाढ्य धूलीकणा ॥ ना लीकेसरलाल सा समुदिता भ्रामरी भासिता ॥ पायाद् श्रुतदेवता निदधती तत्राब्ज कांतीक्रमौ ॥ नालीकेसरलालसा समुदिता शुभ्रामरी भासिता ॥ ४ ॥

व्याख्या–यत्र के० जे शीतांशुत्विषि के० चंद्र सरखी जेनी कांती छे एवी नाली के० कमलनेविषे, केसरलालसा के० कमलसबंधी पराग सेवन कर वानी इछा धारण करनारी इभालिता के० हाथीना गंडस्थलनेविषे मद प्राशन करवाने माटे सुंदर थइने बेठेली अथवा हस्तीना सरखी नीलवर्ण, आशुसमुदि ता के० शीघ्र एक ठेकाणे मलेली, भ्रामरीआली के० भमराउनी श्रेणी, ते गंधा

द्यधूळीकणान् के० परिमलेयुक्त एवी परागना बिंदूने, नित्यं के० निरंतर अद धत् के० प्राशन करती हवी. तत्र के० ते कमळनेविषे अब्जकांती के० कमळ सरखी जेनी कांती छे, एवा क्रमौ के० पोताना चरणोने निदधती के० धारण करनारी, सरलाळसाके० स्वरूपे अतिसुकुमाळ होवाथी शीघ्रगमनादिकविषे मंदपणु धारण करनारी अने अमरीजाळिता के० शुश्रुषा करवा माटे नजीक प्राप्त थए लीउं जे देवांगना–अप्सराउं, तेउंए शोभायमान एवी अने शुभ्रा के० शुभ्रवर्ण एवी समुदिता के० हर्षयुक्त जे श्रुतदेवता नामक देवी ते वः के० तमोने पाया त् के० रक्षण करो. एटले जे कमळनेविषे भ्रमराउंनी पंक्ति, सुगंधयुक्त परागनुं सेवन करती हवी; ते कमळनेविषे स्वकीय चरण स्थापन करनारी श्रुतदेवता तमोने रक्षण करो. एवो अर्थ ॥ ४ ॥ इति श्रीरुषभस्तुतिः संपूर्णा ॥

अवतरण–हवे अजितनाथ जिनेश्वरनी स्तुति पुष्पिताग्रावृत्ते करीने कहे छे.

तम जित मभिनौमि यो विराजद्वन घनमेरुपराग मस्तकांतं ॥
निजजननमहोत्सवेधितष्ठा वनघन मेरु पराग मस्तकांतं ॥१॥

व्याख्या–यः के० जे अजितनाथ, निजजननमहोत्सवे के० पोताना जन्मकाळना महोत्सवनेविषे अनघनमेरुपरागं–अनघ के० निरवद्य एवुं जे नमेरु के० देववृक्ष, तेना पुष्पोनो छे पराग के० धूळ जेनेविषे एवा, विराजद्वनघनमेरुपरागमस्तकांतं–विराजत् के० शोभायमान एवुं जे वनके० अरण्य, तेणेकरी घन के० निबिड एवो जे मेरु नामक पराग के० मुख्यपर्वत, तेना मस्तकांतं के० शिखराग्रप्रत्ये अधितष्ठौ के० बेसता हवा. तं के० ते अस्तकांतं–अस्त के० अस्तगिरिमंदर तेना सरखो कांत के० सुंदर एवा अथवा अस्त के० परित्याग करी छे कांता के० स्त्री जेणे एवा अजितं के० कोइए पण न जीतेला जे अजितनाथ तेने अभिनौमि के० हुं वंदन करुं छुं एवो भावार्थ ॥ १ ॥

स्तुत जिन निवहं तमर्तितप्ता ध्वनदसुरा मरवेण वस्तुवंति ॥
यममर पतयः प्रगाय पार्श्वे ध्वनदसुरामरवेणव स्तुवंति ॥२॥

व्याख्या–हे भव्यो, यं के० जे जिननिवहं के० जिनना समूहप्रत्ये पार्श्वध्वनदसुरामरवेणव.–पार्श्वे के० पार्श्वभागनेविषे ध्वनंत् के० शब्द करे छे, असुरामराणां के० असुर अने देव एना वेणु के० वंश जेना एटले जेना पार्श्वभागने

विषे देव असुर–एउना वेणु, शब्द करे ठे एवा अमरपतय के० चोसठ ६२–अ तितप्ता ध्वनद सुरामरवेण–अर्ति के० पीडा तेणे जे तप्त के० ताप पामेला, तेउ ने शैत्य उत्पन्न करवा माटे साक्षात् अध्वनद के० मार्गे मध्येज प्राप्त थएनो जे नद के० ह्रद तेना सरखो सुराम के० अत्यंत मनोहर जे रव के० स्तुतिरूप सुस्व र शब्द, तेणे करीने वस्तुवति के० वस्तु नामकठद विशेषपने प्रगाय के० उत्तम प्रका रे गायन करीने स्तुवति के० स्तुति करेछे तके० ते जिनसमूहने स्तुत के० त मे स्तवन करो एटले जेना पार्श्वनागे देव अने असुर, तेउ वेणुना शब्दे स्तुति क रेछे, ते चोशठ ६२ ठदना सुस्वर गायने करी जे जिनसमूहनी स्तुति करेछे, ते जि नसमूहप्रत्ये तमे स्तवन करो एवो नावार्थ ॥ २ ॥

प्रवितर वसाति त्रिलोकवधो गमनय योगतता तिमे पदे हे॥
जिनमत विततापवर्गवीथी गमनययो गततातिमे पदेहे॥ ३॥

व्याख्या–हे त्रिलोकबंधो के० त्रणेलोकना बांधव एवा, अने गमनययोगत त–गम के०समान पाठने आलावे करीने नययोग के० नैगमादिक नयनो जे संबंध तेणे करी तत के० विस्तीर्ण एवी अने विततापवर्गवीथीगमनययो–वितत के० विशा ल एवी जे अपवर्गवीथी के० मोक्षमार्ग, तेने विषे गमन के० जवु, ते विषे यथु के० अश्वसरखा हे जिनमत के० हे जिन सिद्धांत! तु अपदेहे के० शरीररहित एवा अतिमेपदे के० मोक्षरूप लोकाग्रवर्ति स्थानने विषे मे के० हुं जे–तेने वसाति के० वासस्थान प्रत्ये गततातिं के० ग्लानतारहितपणे प्रवितर के० समर्पण कर एटले हे जिनसिद्धांत! तु मने मोक्षस्थानने विषे वास आप एवो नावार्थ ॥३॥

सितशकुनिगताशु मान सी श्वाततति मिर मदन्नासुरा जितारं॥
वितरतु दधती पवि क्षतोद्यत्ततिमिर मदन्नासुराजिता शं॥ ४॥

व्याख्या–ते मानसी के० मानसीनामक देवी, शके० सुखने आशु के० शीघ्र वितरतु के० आपो ते मानसी देवी केवीछे? तो के–सितशकुनिगता–सित के० श्वेतवर्ण एवो जे शकुनिपक्षी अर्थात् राजहंस, तेनेविषे गता के० आरोहण क रनारी अने इरमदन्नासुरा के० विजली सरखी देदीप्यमान अने पोताना हाथनेवि षे ६श्वाततति–६६ के० प्रदीप्त एवी श्वात्त के० ग्रहण करीछे तति के० विस्तार ने पो एवी अने पोतानी कांतीए क्षत के० नाश करोछे, उद्यत् के० उदय पामनारो

तत के० विस्तिर्ण एवो तिमिर के० अंधकार जेणे एवी, अने जिताशं के० जीतीउ ठे आशा के० दिशाउ जेणे. आ त्रण विशेषणे करीने वज्रने सूर्यनी उपमाछे. एवा पविं के०वज्रने दधति के०धारण करनारी अने मदभासुराजिता-मद के०दर्प तेणे करीने जे भासुर के० देदीप्यमान एवा असुरादिकोए अजिता के० न जीता एली एवीने एटले हंसारूढ, विजली सरखी देदीप्यमान, अने सूर्य सरखा वज्र ने धारण करनारी अने दैत्यादिकोए नही जीताएली एवी मानसी नामे देवी, सुखने आपो, एवो भावार्थ. ॥ ४ ॥ इति अजितनाथ स्तुतिः संपूर्णा. ॥ ८ ॥

अवतरणः- हवे शंभवजिनस्तुति आर्यागीति वृत्तेकरीने कहेछे.

निर्भिन्नशत्रुभवभय शं भवकांतारतार तार ममा रं ॥
वितर त्रातजगत्त्रय शंभव कांतारतारता रममारं ॥ १ ॥

व्याख्या- निर्भिन्न के० विदारण कर्याछे आठ कर्मरूप शत्रूथी उत्पन्न थएलो भवभय जेणे एवा हे निर्भिन्न शत्रुभवभय ! अने भव के० संसाररूप जे कांतार के० अरण्य, तेनाथी तार के० पार पमाडनारा एवा हे भवकांतारतार, अने तार के० हे गुणोए करी देदीप्यमान ! अने त्रात के० रक्षण कर्युंछे जगत्त्रय के० त्रैलोक्य जेणे एवा हे त्रातजगत्त्रय, अने कांता के० स्त्री, तेणे सहवर्त्तमान जे रत के० मैथुन, तेने विषे अरत के० अनासक्त एवा हे कांतारतारत, अने शं के० सुख ते जेनाथी उत्पन्न थायछे एवा हे शंभवनाथ ! तुं मम के० मने अरममारं-अरम के० न क्रीडा करनारोछे मार के० मदन जेनेविषे. एटले कामविषयरहित एवा शं के० सुखने अर के० अत्यंत वितर के० आप. एटले हे शंभव जिनेश्वर ! तुं कर्म रूप संसारनो नाशकरीने त्रैलोक्यनुं रक्षण करनारो अने विषयनेविषे विरक्तछे; ए माटे मने विषयवासनारहित एवा सुखने आप. एवो भावर्थ. ॥ १ ॥

आश्रयतु तव प्रणतं विभया परमा रमा र मानमदमरैः॥स्तु
त रहित जिनकदंबक विभया परमार मारमानमदमरैः ॥२॥

व्याख्या- हे विभय के० जेनाथी भय नीकली गयोछे एवा हे विभय, अने पर के० अन्यजीव तेउने न मारनारा एटले नहिंसा करनारा एवा हे अपरमार, अने मारमानमदमरैः-मार के० कंदर्प, मान, के० अभिमान, मद के० आठमद, मर के० मरण एउए करीने रहित एटले जेने कंदर्प, अभिमान, आठमद अने मृत्यु

नथी एवा अने अर के० अत्यत आनमत के० वदन करनारा जे अमर के० देव, तेउंए स्तुत के० स्तुति करेला एवा हे जिनकदवक के० हे जिनसमूह, तव के० तु जे तेने प्रणत के० नम्र एवा पुरुपने, विनया के० कांतीए परमा के० उत्कृष्ट एवी रमा के० लक्ष्मी जे, ते आश्रयतु के० आश्रय करो एटले नयरहित कदर्पादिकोए रहित अने जीवोने अनयदाता अने देवादिकोए स्तुत्य एवा हे जिनसमूह, तारी हु एवी प्रार्थना करुंछुके तारा शरणागत जे पुरुप—तेउंने तारी कृपाए मोक्षलक्ष्मी प्राप्त थाउ ए नावार्थ छे ॥ २ ॥

जिनराज्या रचितं स्ता दसमाननयानया नयायतमान ॥ शिव
शर्मणेमत दध दसमाननयान यानया यतमान ॥ ३ ॥

व्याख्या—अयानया के० नथी छे यान के० अश्वप्रमुख वाहन जेने एटले अश्वादिकवाहनेररहित एवी, परतु असमाननयानया—असमान के० बीजा सरखां नथी छे आनन के० मुख अने यान के० गमन पण जेने, एटले जेनी मुख अने गति निरुपम छे एवी, जिनराज्या के० तीर्थंकरदेवोनी श्रेणीए रचितं क० रचेला, यतमान के० कल्याणमाटे यत्न करनारा अने असमान नयान् के० असाधारण एवा नैगमादिक नयने दधत के० धारण करनारा, अने नयायतमान—नयके० न्याय अर्थात् अनेक शास्त्र, तेउंए करी आयत के० विस्तीर्ण छे मान के० प्रमाण जेनु, एवा जे मत के० सिद्धांतरूप वचन, ते शिवशर्मणे के० अमारा मोक्षसुखमाटे स्तात् के० थाउ एटले अश्वादिक वाहन विनाज निरुपम एवा स्वरूपे अने गतिए शोभनारा तीर्थंकरोनी श्रेणीए रचेला अनेक शास्त्रोए करी विस्तीर्ण जे सिद्धांतवचन ते अमारा मोक्षसुखने माटे थाउ एवो नावार्थ ॥ ३ ॥

शृखलभृत्कनकनिना याता मसमानमानमानवमहिता ॥श्री
वज्रशृखला कजयाता मस मान मानमा नवमहि ता॥ ४ ॥

व्याख्या—हे नव्यजन, तु शृखलनृत् के० साकलरूप नूपणोने धारण करनारी अने कनकनिना के० सुवर्ण सरखी छे कांती जेनी एवी या के० जे अत्यंत प्रसिद्ध ता के० ते कजयाता के० कमल उपर बेसनारी एवी अने असमानमानमानवमहिता—असमान के० निरुपम छे मान के० मान्यता जेनी एवा महाश्रेष्ट मानव के० पुरुषोए महिता के० पूजित एवी, अने अनवमहिता—अनव

के० पापरहित जे भक्तपुरुषो, तेने माटे हितांके० हित करनारी एटले निष्पाप भक्त पुरुषोनुं हित करनारी एवी श्रीवज्रशृंखलां के० श्रीवज्रशृंखला नामे अधिष्ठायक दे वीने असमानं के० निरहंकारपणे आनम के० वंदन कर. एटले शृंखलाने ह पण धारण करनारी, सूवर्णकांती, सत्पुरुषोए पूज्य अने भक्तोनुं हित करना री एवी श्रीवज्रशृंखला देवीने निरहंकारपणे वंदन कर. एवो भावार्थ। ४ इति शंभवजिन स्तुतिः संपूर्णा ॥ सर्व श्लोक ॥ १२ ॥

हवे अजीतजिनस्तुति द्रुतविलंबित वृत्तेकरीने कहेछे.

त्वमशुभान्यभिनंदननंदिता सुरवधूनयनः परमोदरः ॥ क
रकराजविदारणकेसरिन् सुरव धूनय नः परमोदरः ॥ १ ॥

रहित, रोगरहित, धर्माचरणे मृत्युने चूकावनारा अने सर्वजनना हितकर्ता तमे ज छो, एवु सिद्ध थाय छे एमाटे हु नम्रताए एवी प्रार्थना करुछुंके मारु अज्ञानपणु दूर करो एवो नावार्थ छे ॥ २ ॥

असुमता मृतिजात्य हिताययो जिनवरागमनो नव मायत ॥
प्रलघुता नय निर्मथितो ह्यता जिनवरागमनोन्नवमाय त ॥ ३ ॥

व्याख्या—हे निर्मथितोद्यता जिनवरागमनोन्नवमाय–निर्मथितके॰ अत्यत निवारण करीने मदोद्धताके॰ मदे उद्धत एवा पुरुपोसाथे आजिके॰ सग्राम नवरागके॰ इत्यादिको उपर थनारो जे अनिलाप ते, मनोनव के॰ कामदेव अने मायापण जेणे एवा अथवा उद्धत पुरुपोसाथे सग्राम करवामाटे जेने नवीन अनिलापछे एवु जे मन—तेनेविपे उत्पन्न थनारी जे माया ते जेणे अत्यत निर्मथन करीछे, एवा हे जिनवरागमके॰ हे जिनश्रेष्ठना सिद्धात, तु असुमताके॰ जेने प्राणछे एवा सर्वजीवोने य के॰ जे ससार ते मृतिजात्यहितायके॰ मरण अने जन्मरूप अकल्याण माटे थायछे ते तंके॰ ते न के॰ अमारा, आयतंके॰ विस्तार पामेला एवा नवके॰ ससारने प्रलघुताके॰ अत्यत लघुपणाप्रत्ये नयके॰ पमाड एटले तु पोताना सामर्थ्ये अनिलाप, मदन, माया इत्यादिकोनु निर्मथन करनार छे, एमाटे ते अनिलापादिकोए युक्त एवा अमारा ससारनो नाश करजे एवो नावार्थ ॥ ३ ॥

विशिपशंखजुपा धनुपा स्तसत्सुरनिया ततनुन्नमहारिणा ॥
परिगतां विशदा मिहरोहिणी सुरनियाततनु न्नम हारिणा ॥४॥

व्याख्या—हे नव्यजन, तुं इहके॰ आ जगनेविपे हरिणाके॰ मनोहर एवा अस्तसत्सुरनिया—अस्तके॰ नष्ट करीछे सत्सुरके॰ उत्तम देवोनी नीके॰ नीती जेणे एवा अने ततनुन्नमहारिणा के॰ विस्तार पामेला एवा पोताना टणत्कार शब्दे करीने पलायमान कर्याछे महोटा शत्रुउ जेणे एवा अने विशिखशपजुशाके॰ बाण अने शख एउंए सहित एवा धनुपाके॰ धनुष्ये करीने परिगताके॰ नूपितछे हस्त जेनो एवी अने सुरनियाततनुके॰ कामधेनु उपर वेसनारीछे मूर्त्ति जेनी एवी अने विशदाके॰ शुभ्रवर्ण एवी रोहिणींके॰ रोहिणीनामे अधिष्ठायक देवीने नमके॰ वदन कर ॥ ४ ॥ इतिअनिनदनजिनस्तुति सपूर्णा ॥ १६ ॥

अवतरण॰—हवे सुमतिनाथ जिननी स्तुति आर्यागीतिवृत्ते करीने कहेछे

मदमदनरहितनरहितसुमते सुमतेनकनकतारेतारे ॥ दम
दमपालयपालयदरादरातिक्षतिक्षपातःपातः ॥ १ ॥

व्याख्या—मदके० आठमद अने मदनके० कामदेव—एउए रहितके० विरहित एटले आठ कर्म अने कंदर्प—ए जेणे त्याग कर्यांछे. एवा हे मदमदनरहित!—अने पु न्यरुं छे हित जेनाथी. एवा हे नरहित! अने सुमतेनके० हे सुसिद्धांत स्वामिन्! अने कनकके० सुवर्ण तेना सरखा तारके० मनोहर एवा. हे कनकतार! अने इतके० नष्ट थयाछे. अरिके० शत्रु जेनाथी. एवाहे इतारे! अने अप के० छोडयाछे आलय के० ग्रह जेणे. एवा हे अपालय! अने अरातिक्षतिक्षपातः—अराति के० शत्रु. तेना थी जे क्षतिके० उपमर्द—तेज जाणे भयंकरपणामाटे क्षपाके० रात्री तेनाथी हे पातःके० दे रक्षक. हे सुमतेके० हे सुमतिनामक भगवंत! तु दमदंके० उपशमने आपनारा जे पुरुष. तेने दरातके० इह लोकादिक सातभयथी, पालयके० रक्षणकर.

विधुताराविधुतारासदासदानाजिनाजिताघाताऽघाः ॥ त
नुतापानुतापाहितमाहितमानवनवविभवाविभवाः ॥२॥

व्याख्या—विधुतारा—विधुत के० नष्ट कर्या छे आरं के० शत्रुना समूह जेणे. अथवा विधुत के० दूर कर्यु छे अर के० संसारचक्रनेविषे भ्रमण जेणे. एवा अ ने विधुतारा:—विधु के० चंद्रमा तेना सरखा तार के० देदीप्यमान अने सदाना: के० दीक्षासमयनेविषे दानेयुक्त एवा अने जिताघाताघा:—जित के० जीत्युं छे आघात के० घातवर्जित एवुं अघ के० पाप जेणे. एवा अने अपातनुतापा—अप के० नीकली गयो छे, अतनु के० मोहोटो, ताप के० संताप जेनाथी. एवा अने आहितमानवनवविभवा:—आहित के० अत्यंत पूर्ण कर्यु छे मानवके० मान वनुं नव के० नवीन एवुं विभव के० ऐश्वर्य जेणे एवा, अने विभवा: के० नष्ट थ यो छे संसार जेनो, एवा हे जिना: के० हे जिन! तमे सदा के० निरंतर हितं के० अमारी अभीष्ट सिद्धिने तनुत के० विस्तार करो. ॥ २ ॥

मतिमतिजिनराजिनराहितेहितेरुचितरुचितमोहेऽमोहे ॥
मतमतनूनंनूनंस्मराऽस्मराधीरधीरसुमतःसुमतः ॥ ३ ॥

व्याख्या—नथी स्मरके० कामदेवे करीने अधीरके० अस्थिर एवी धीके० बुद्धि जेनी— एवा हे अस्मराधीरधी भव्य प्राणी. तुं असुमतके० जेने प्राण छे एवा सर्व प्राणीमात्र

ने सुमत के० अत्यंत मान्य छे, एमाटे तु जिनराजिके० जिनेश्वरविषे अततुनरे० स्वल्पपणाथी रहित एवु मोटु जे मत के० चारित्रादिक विषयक मत, तेने नूत के० निश्चये करी स्मर के० ध्यान कर ते जिनराज केवा छे ? तोके-मतिमति के० गर्भवासादिक अवस्थानेविषे पण अतिशय बुद्धिए युक्त अर्थात् त्रण ज्ञाने युक्त एवा, अने नराहितेहिते-नर के० मनुष्य, तेनु आहित के० सपावन क्यु छे, ईहित के० वाछित जेणे, एवा अने रुचितरुचि-रुचित के० सर्व जनोने आनदकारक एटले गमनारी छे रुक्के०काति जेनी एवा, अने तमोहेके०अज्ञानना नाश करनारा, अने अमोहेके०मोहरहित एवा छे एवु जिनेश्वरविषे जे मत-तेना स्वीकार कर्यो छता तारु पण अज्ञान जशे ए माटे तु ते मतनु चितन कर ॥३॥

नगदाऽमानगदामामहोमहोराजिराजितरसातरसा ॥
घनघनकालीकालीवतावतादूनदूनसत्रासत्रा ॥ ४ ॥

व्याख्या-अहो ! ! (वत ए वे पद आश्चर्यवाचक छे) काली के० काली नामे जे अधिष्टायक देवी, ते तरसा के० शीघ्र-मा के० हु जे ते प्रत्ये अवतात के० रक्षण करो ते काली देवी केवी छे ? तोके-नगदा-नग के० पर्वत, तेउने दाके० विदारण करनारी, अने अमानगदा-अमान के० सामर्थ्ये प्रमाणरहित एवी छे, गदाके० गदानामक आयुध जेनु एवी, अने महोराजिराजितरसा-महके० तेज-तेनी जे राजि के० श्रेणी, तेणे करीने राजित के० शोभावेली छे, रसा के० पृथ्वी जेणे एवी, अने घनघनकाली-घन के० निविड एवो जे घन के० मेघ, तेना सरखी काली के० कृष्णवर्ण, अने ऊनदूनसत्रासत्रा-ऊन के० धनादिके रहित, दून के० शत्रुए पीडित, अने सत्रास के० दुःखे सहित एवा पुरुषोने त्रा के० रक्षण करनारी एवीछे ॥ ४ ॥ इति सुमतिजिनस्तुति सपूर्ण ॥ १० ॥

अवतरण – हवे पद्मप्रभजिननी स्तुति वसत तिलकावृत्ते करीने कहेछे

पादद्वयीदलितपद्ममृदु प्रमोद, मुन्मुद्रतामरस
दामलतांतपात्री ॥ पाद्मप्रभीप्रविदधातुसता
वितीर्ण, मुन्मुद्रतामरसदामलतांतपात्री ॥ १ ॥

व्याख्या-पाद्मप्रभी के० पद्मप्रभनामे जे जिननाथ, तेनी पादद्वयी-पादके० चरण-तेनी द्वयी के० युग्म, ते प्रमोद के० अत्यत हर्षने, प्रविदधातु के० उत्पन्न

करो. ते पाद ह्यी केवीछे? तो के दलितपद्ममृडः–दलित के० विकसित एवुं जे पद्म के० कमल–तेना सरखी मृड के० कोमल, अने उन्मुद्तामरसदामलतांतपात्री–उन्मुद् के० प्रफुल्लित एवां जे तामरस के० कमलो–तेनी दाम के० माला, अने लतांत के० पुष्पो–तेउनी पात्री के० भाजनरूप एवी, अथवा उन्मुद्तामरसदा अने आमलतांतपात्री एवां बे पद करवां–तेनो अर्थ एवोके विकसित एवी रेखा रूप कमलने रक्षण करनारी अथवा उन्मुत् के० अत्यंत हर्षे करीने जे रत के० मैथुन, तेनो जे आम के० नवीन एवो रस–तेने खंडन करनारी एटले प्रणतज नोने कामवासना रहित करनारी, अने आम के० रोग–तेज जाणे लता के० व ल्ली–तेना अंतनी के० विनाशनी पात्री के० स्थान एवी, अने सतां के० साधुज नोने वितीर्णमुत् के० समर्पण करीछे प्रीति जेणे एवी, अने मुद्तामरसत्–मुत् के० हर्षे, रत के० तत्पर थइछे. अमर के० देवोनी सत् के० सभा जेनेविषे ए वी, अने आमलतांतपात्री के० अत्यंत जे मलके० पाप, तेणे करीने जे तांतके० ग्लान–तेने पात्री के० रक्षण करनारी एवीछे. ॥ १ ॥

सामेमतिं वितनुताज्जिनपंक्तिरस्त मुद्भागताऽमर
सभासुरमध्यगाऽद्यां ॥ रत्नांशुभिर्विदधती गग
नांतराल मुद्भागतामरसभासुरमध्यगाद्यां ॥ २ ॥

व्याख्या–अस्तमुद्रा–अस्त के० गयेलाछे मुद्रा के० प्रमाण जेथी, एटले प्रमाण रहित एवी सा के० ते जिनपंक्ति के० जिनभगवंतनी श्रेणी, मे के० मारी मतिं के० बुद्धिने वितनुतात् के० विस्तार करो. आद्यां के० पूज्यपणाए करीने प्रथम एवी जे जिनपंक्तिप्रत्ये, असुरमध्यगा के० असुरोना मध्यभागे रहेनारी एटले शत्रुसाथे पण मुक्तवैर एवी अमरसभा के० देवोनी सभा ते गगनांतरालं के० आकाशना मध्यभागप्रत्ये. रत्नांशुभि के० रत्ननी कांतीए. उद्भागतामरसभासु–उ द्भागके० उत्कृष्टछे रातात्र जेउने. एवां जे तामरसके० आरक्तकमलो–तेणे करीने भासुरके० देदीप्यमान, एवांने विदधतीके० करनारी होती थकी गता के० प्राप्त थती हवी अने त्यारपछी, जे जिनश्रेणीने गणधरादिक अध्यगात के० आश्रय करता हवा. ते मने बुद्धिआपो. एवो अर्थ. ॥ २ ॥

श्रातिछिदजिनवरागममाश्रयार्थं,मारामममानम
लसतमसगमाना ॥ धामाग्रिमंभवसरित्पतिसे
तुमस्त,मारामममानमलसतमसगमाना ॥ ३ ॥

व्याख्या-हे भव्यजन! तु जिनवरागम के० जिनश्रेष्ठोनो जे आगम, तेने आ नमके० महोटा प्रेमे वदन कर ते जिनश्रेष्ठोनो आगम केवोछे? तोके-श्रांतिछि दे० ससारनेविषे भ्रमणरूप श्रमनो छेद करनार, अने असगमाना के० ससार सगरहित एवा यतिउने आश्रयार्थ के० आश्रय करवामाटे आराम के० उपवन समान लगतके० शोभा पामनार, अने गमानाके० सरिखा पाठना अजावानु अग्रिम के० मुख्य एवु धाम के० घरज एवो, अने भवसरित्पतिसेतु-भव के० ससाररूप जे सरित्पतिके० समुद्र, तेने तरी जवा माटे पूलज होयना एवो, अने अस्तमाराम मानमलतमस-अस्तके० दूर कर्या छे, मारके० कदर्प,आमके० रोग, मान के० अहंकार, मलके० कर्मरूप मल अने सतमसके०अज्ञानरूप तम जेणे एवो छे ॥३॥

गांधारिवज्रमुसलेजयत समीर ॥ पातालसत्कु
वलयावलिनीलभेते ॥ कीर्ता करप्रणयिनी तवये
निरुद्द ॥ पातालसत्कुवलयावलिनीलभेते ॥ ४ ॥

व्याख्या-हे गांधारि के० गांधारी नामे अधिष्ठायक देवी, ये के० जे, तव के० तारा हाथमध्ये धारण करेला वज्रमुसल के० वज्र अने मुसल ए नामना आयुध ते के० ते आयुधो, जयत के० सर्वोत्कर्ष करीने वर्तणुक करे छे ते आयुधो केवा छे? तो के-समीरपातालसत्कुवलयावलिनीलभे-समीरपात के० वायुनु पतन-तेणेकरीने आलमत् के० अत्यत देदीप्यमान एवा जे कुवलय के० नीलकमलनो, तेउनी जे आलि के० पक्ति-तेना सरखी नीलवर्ण छे, भा के० कांती जेउनी, एवा अने जे करप्रणयिनी के० तारा हस्तनेविषे प्रेमधारण करनारा एटले तारा हस्ते पोताने निरतर धारण करे एवी इत्या धारण करनारां, अने तारा हस्तकरी करीने वलिनो के० व अने ब नु शास्त्रमां ऐक्य कह्यु छे एटले बलिनी के० बलवत होता थका जे निरुद्धपातालसत्कुवलया-निरुद्ध के० आवरण कर्यु छे, पातालसत् के० पातालवासी देवादि, कुवलय के० पृथ्वीमड ल ने कीर्तिए, अथवा निरुद्ध के० निरोधन कर्यु छे, पाताल अने सत् के० ग

नित एवुं पृथ्वीमंमल जेणे एवी कीर्तीः के० यश जे, तेने जजेते के० पामे छे; ते तारां वज्रमुसल आयुधो, अत्यंत जयशील छे. ॥ ४ ॥ इति पद्मप्रजजिनस्तुतिः

अवतरण-हवे सुपार्श्वजिनीस्तुति मालिनीवृत्ते करीने कहे छे.

कृतनतिकृतवान्योजंतुजातंनिरस्त, स्मरपरमदमाया
मानवाधायशस्तं ॥ सुचिरमविचलत्वंचित्तवृत्तेः सु
पार्श्वं, स्मरपरमदमायामानवाधायशस्तं ॥ १ ॥

व्याख्या-यः के० जे सुपार्श्वनाथ जगवान्, निरस्तस्मरपरमदमायामान वाधायशः-निरस्त के० दूर करेला छे, स्मर के० कंदर्प, पर के० शत्रु, मद के० आठ मद, माया के० कपट, मान के० अजिमान, वाधाके० पीडा अने अयशके० अपयश जेना एवा जंतुजातं के० प्राणीसमूहने कृतनति के० कर्युं छे वंदन जेणे, एवा कृतवान के० करता हवा. शस्तं के० प्रशंसा करवा माटे योग्य एवा तं सुपार्श्वं के० ते सुपार्श्वनाथने हे मानव के० व अने व एउना ऐक्य माटे हे मानव! परमदमाया.-परम के० उत्कृष्ट छे दमाया के० शम जेनो, एवी चित्तवृत्तेः के० मननी प्रवृत्तिना अविचलत्वं के० अचंचलपणाने सुचिरं के० घणा काल पर्यंत, आधाय के० करीने स्मर के० स्मरण कर. एटले जे पार्श्वनाथे सर्वं प्राणीउना कामादिकनुं निवारण करीने ते प्राणीउकने पोतानुं आराधन कराव्युं, ते सुपार्श्वनाथने पोताना चित्तनी एकाग्रता करीने स्मरण कर. एवो जाव ॥ १ ॥

व्रजतुजिनततिः सागोचरेचित्तवृत्तेः, सदमरसहिता
यावोधिकामानवानां ॥ पदमुपरिदधानावारिजानां
व्यहार्षीत् सदमरसहितायावोधिकामानवानां ॥ २ ॥

व्याख्या-या के० जे जिनश्रेणी, मानवानां के० मनुष्योमध्ये, अधिका के० अत्यंत श्रेष्ठ अने सदमरसहिता-दमके० उपशम, तेनो जे रस ते दमरस तेणे जे सहित ते सद मरस, तेउनी जे हिता के० हितकारिणी, अने या के० जे-सदमरसहिता-सत के० उत्तम एवा जे, अमर के० देवो-तेउए सहित के० युक्त छोडने, वोधिकामा-वोधि के० अन्यपुरुषोने जे धर्मबोधनी प्राप्ति ते विषेजे काम के० इछा जेनी, एवी छतां थकी, अने नवानां के० नवतत्व सख्यायुक्त, अथवा नवीन एवा वारिजानां के० सुवर्ण कमलोना उपरिके० ऊर्ध्वजागनेविषे पोताना, पदं के० चरणने, दधान.

के०, धारण करतीथकी व्यहार्षीत् के० संचार करती हवी साजिनतति के० तेजिनश्रेणी व के० तमारी चित्तवृत्ते, के० मनोवृत्तिना विषयमाटे व्रजतुके० पामो एटले जे जिनश्रेणी, देशेकरीने सर्वेनु हित करवामाटे नवतत्त्वरूप सुवर्णकमल उपर पोताना पाय मूकीने सचार करेछे, ते हे नव्यजनो! तमोने ध्यानगोचर थाउ

दिशतूपशमसौख्यसयतानासदैवो,रुजिनमतमुदारकाममायामहारि ॥ जननमरणरीणान्वासयन् सिद्धिवासे,रुजिनमतमुदारकाममायामहारि ॥३ ॥

व्याख्या–हे जनो, तमे जिनमत के० जिनना मतने मुदा के० हर्षे करीने नमत के० वदन करो ते जिनमत केवुछे ? तो के–सयताना के० यतीउने, उरुके० घणा एवा उपशमसौख्य के० उपशमना सुखने, दिशत्के० देनारु अने सदैव के० निरतर–उदार के० विशाल एवु, अने काममायामहारि–काम के० मदन, माया के० कपट–एउनु महारि के० महाशत्रु एवु, अने अर के० शीघ्र, काम के० अत्यत, आयामहारि के० सर्वविषयोनेविषे विस्तार पामेलु जे मन, तेने हरण करनारु, अने अरुजि के० रोगरहित एवा सिद्धिवासे के० मोक्षरूप वस्तीनेविषे जननमरणरीणान्–जनन के० जन्म, मरण के० मृत्यु–एउए करीने रीण के० गलित होनारा एवा पुरुषोने, वासयत् के० वास करावनारु एवुछे ॥ ३ ॥

दधतिरविसपत्नरत्नमाभास्तभास्व,न्नवघनतरवारिं वारणारावरीणा ॥ गतवतिविकिरत्याशीर्महामान सीष्टा नवघनतरवारिवारणारावरीणां ॥ ४ ॥

व्याख्या–हे महामानसी के० हे महामानसी नामे अधिष्ठायक देवी! तु इष्टान् के० अभिमत एवा मनुष्यादिकोने, अव के० रक्षण कर तु केवीछे ? ताके–आभास्तभास्वन्नवघनतरवारि–आभा के० काती, तेणेकरीने अस्त के० तिरस्कार कर्याछे भास्वत् के० विजलीए प्रकाशमान एवो जे नवघन के० नवीन मेघ, अने तारवारि के० खड्ग जेणे, एवु अने घनतरवारि के० अतिशय जेनु पाणीछे एवु, अने कातिना अधिकपणाए करीने सूर्यनु केवल शत्रु, एवा रत्न के० मणिने दधति के० धारण करनारीछे वाके० अथवा अरीणा के० शत्रुना रणारावरीणां–रणके० सग्रामतत्सबधी जे आराव के० शब्द, तेणेकरी रीण के० क्षयपामेली एवी अर्ली र०

ओने विकिरति के० नाश करनारा एवा वारणारी—वारण के० हस्ती. तेने
ने ओ के० प्रभु सिंह—तेनेविषे गतवति के० आरोहण करनारी एवी छे. (
हृतपृथनो नाश करनारो जे सिंह. ते उपर आरोहण करनारी अने हर्ष
तां धरण तेज पुंज एवा रत्नने धारणकरनारी हे मानवीदेवी: तुं मनोने रहण
. एवो भाव. ॥ ४ ॥ इति सुपार्श्वजिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ ३० ॥

हवे चंद्रप्रभजिननी स्तुति मंदाक्रांतावृत्ते करीने कहेछे.

तुभ्यंचंद्रप्रभजिननमस्तामसोद्भिदितानां ॥ दानेकांतानत
नमदयावंदितायासमान ॥ विद्वत्पंक्तयाप्रकटितपृथुस्पष्टदृष्टां
तहेतु ॥ दानेकांतानतजनमदयावंदितायासमान ॥ १ ॥

व्याख्या—हे चंद्रप्रभजिन के० हे चंद्रप्रभनामे जिननाथ! अने तामसोद्भिदि
तानां—तामस के० अज्ञानरूपं जे अंधकार तेनुं भिदित के० अत्यंतस्फुरण—तेना हानने के०
नाशमाटे. कांत के० मनोहर एवा, अनत के० अभितरसा हे दांतानतजन!
अने हे दयावान! अने दित के० खंडन कर्योछे. आयास के० संसार भ्रमणरूप
प्रयासः अने मान के० अभिमान जेणे, एवा हे दितायासमान! अने प्रकटित के०
स्पष्ट कर्याछे, पृथु के० विस्तीर्ण स्पष्ट के० प्रगट, दृष्टांत के० उदाहरण. हेतु के०
कारण, ऊह के० विचारणा अने कांत के० स्याद्वाद जेणे एवा हे प्रकटित पृथु
स्पष्टदृष्टांतहेतूहानेकांत! अने हे असमान के० उपमारहित एवा हे भगवंत!
नतजनमदया के० नथी, अनत के० आनत अने मद जेने एवी विद्वत्पंक्तया
पंडितनी श्रेणीए वंदिताय के० वंदन करेला एवा तुभ्यं के० तुज कारण
के० नमस्कार थाओ. ॥ १ ॥

जीयादाजीजनितजननज्यानिहानिर्जिनानां ॥ सत्यागारंजय
दमितरुक्सारविद्वावतारं ॥ नव्योधृत्यामुविक्रनवतीयावहन्ने
वक्रं ॥ सत्यागारंजयदमितरुक्सारविद्वावतारं ॥ २ ॥

व्या—जनिजननज्यानिहानि.—जनित के० उत्पन्न करीछे. [illegible]
ज्यानि के० जन—एओनी हानि के० क्षय जेणे एवी. अने [illegible]
के० गंग जेथी. अने सारविंदा के० देवोए
सत्यागा के० दीक्षाकाजनेविषे सुवर्ण [illegible]

जिनोनी, राजिके० जे श्रेणीहो यातुके० जयवत, याके० जे जिनश्रेणी, नव्यार धृत्याके० नव्यप्राणीनो ससारथी उद्धार करवो ए हेतुए नूविके० नूमिनेविषे जयदके० जयने देनारा एवा अवतारने रुतवती के० धारण करनारी होती थकी दारतारके० दावानल सरखु देदीप्यमान अने अमितरुक् के० जेनी महाकांतिले, एवु अने रविके० सूर्यने रजयत् के० अनुरक्त करनारु एवा देवोए करेला धर्म चक्रने अयस्तुके० धारण करती हवी ते जिनश्रेणी जययुक्त हो एवो अर्थ॥२॥

मिद्धांत स्तादहितहतयेस्यापयद्यजिनेंद्र ॥ सद्राजीव सकवि धिषणापादनेकोपमान ॥ दक्ष साक्षाच्छ्रवणचुलकैर्यंचमोदा दिहाय ॥ सद्राजीव सकविधिषणापादनेकोपमान ॥ ३ ॥

व्याख्या—सद्राजीव —सतुके० मुख्य वे, राजीव के० सुवर्णकमल जेवु एवा अने, कविधिषणापादने—कविके० पंडित, तेउने जे धिषणापादन के० बुद्धि नु संपादन, तेविषे दक्ष के० चतुर अने अकोपमान के० क्रोध अने मान, एउरहित, एवा जिनेंद्र के० जिनेश्वरनगवान, य के० जे सिद्धांतने आख्या पयत् के० करता हवा, अने सकविधिषणा—कवि के० शुक्राचार्य अने धिषण के० बृहस्पति—एउए सहित एवी, दिहाय सद्राजी—विहायस् के० स्वर्ग—तेनवि षे सत् के० वास करनारा जे देवो, तेउनी राजीके० श्रेणी, ते श्रवणचुलकै के० कर्णरूप अंजलीए साक्षात् के० प्रत्यक्ष, यके० जे सिद्धांतने, मोदात् के० हर्षकरीने अपात् के० प्राशनकरतीहवी, एवा अनेकोपमान —अनेक के० समुद्र हादिक वे अनेक उपमान जेने एवो सन्निद्धांतके० ते जिनसिद्धांत, व के० तमारा अहितहतये के० कर्मरूप शत्रुनो नाश करवा माटे, स्तात् के० हो ॥ ३ ॥

यत्राकृद्यकुशकुलिशनृद्यनिपत्स्वप्रयत्न ॥ स्वायत्यागेतनु मदवनेहेमतागानिमत्ते ॥ अध्यारूढेशशधरकरश्वेतनासि दिपेंद्रे ॥ स्वायत्यागेतनुमदवनेहेमतागतिमत्ते ॥ ४ ॥

व्याख्या—अमत के० अमान्य वे, अगतिमत्ता के० शत्रुपणु जेने, अथवा शत्रुबुद्धिनो त्याग कराबीने सद्बुद्धि उत्पन्न करावनारी एवी हे अमतागानिमत्ते— अने सुरे० उत्तम प्रकारनाज, आयके० अर्थागमरूप ज्ञान अने त्याग के० दान जेने, एवी हे स्वायत्यागे' अने स्वायत्यागे— स्वके० पोतानी जे आयति के० ॥

त्तार-तेणे करीने अगे के० पर्वत सरखा, अने अतनुमदवने-अतनु के० वणुं वहेनालछे, मदवन के० मदोदक जेनुं एवी, अने शशधरकरश्वेतभाति-शशधर के० चंद्रमा-तेनां जे, कर के० किरण, तेना सरखी श्वेत के० शुभ्रछे, भाके० कांति जेनी एवी, अने अंतिमत्ते के० अतिशये करीने मत्त एवा द्विपेंद्रे के० गजेंद्रनेविषे, अध्यारूढेके० आरूढ थनारी हे वज्रांकुशिके० वज्रांकुशि नामे अधिष्ठायक देवि! हेमतारा के० सुवर्णसरखी उज्वल, अने अंकुशकुलिशभृत्के० अंकुश अने वज्र, एउने धारण करनारी त्वके० तुं तनुमदवने-तनुमान्के० प्राणी, तेउना अवने के० रक्षणमाटे प्रयत्न के० उद्योगने; विधत्स्व के० कर. ॥ ४ ॥ इति चंद्रप्रभजिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ ३७ ॥

अवतरणः-हवे सुविधिनाथनी स्तुति उपजातिवृत्ते करीने कहेछे.

तवाभिवृद्धिंसुविधिर्विधेयात् सभासुरालीनतपादयावन् ॥ यो

योगिपंक्त्याप्रणतोनभःसत् सभासुरालीनतपादयावन् ॥ १ ॥

व्याख्या-हे दयावन् के० हे दयायुक्त एवा भव्यजन! यः के० जे सुविधिनाथ, अवन् के० लोकोने रक्षण करनार अने, नभःसत्सभासुरालीनतपादया-नभःसद् के० देव, तेउनी जे सभा, अने असुरालीके० असुरश्रेणी, एउए नतके० वंदन कस्या छे पादके० चरण जेना, एवी योगिपंक्त्याके० योगीइ पुरुषोनीश्रेणीए प्रणत के० अभिवंदन करेला, अने भासुरालीनतपा-भासुर के० देदीप्यमान एवुं, आलीन के० स्वीकार्युं छे, तप जेणे, एवा सः सुविधिः के० ते सुविधिनाथ, तवके० तारी, अभिवृद्धिके० धनादिकनी वृद्धिने, विधेयात् के० उत्पन्न करो॥१॥

याजंतुजातायहितानिराजी साराजिनानामलपद्ममाला ॥

दिश्यान्मुदंपादयुगंदधाना साराजिनानामलपद्ममाला ॥ २ ॥

व्याख्या-या के० जे, सारा के० श्रेष्ठ एवी, जिनानां के० जिनोनी, राजी के० पंक्ति, जंतुजाताय के० प्राणीउना समूहनेमाटे, हितानि के० हितकारक एवा साधनोने अलपत्के० कथन करती हवी अने राजिनानामलपद्ममाला-राजि के० शोभायमान एवी जे नाना प्रकारनां अमल के० स्वछ एवां पद्म के० कमलो, ते नी छे माला जेनेविषे एवा, पादयुगं के० चरणयुगलने दधाना के० धारण करनारी, साके० ते जिनश्रेणी, मम के० मने, अलं के० अत्यंत, मुदं के० दिश्यात् के० समर्पण करो ॥ २ ॥

जिनेंद्रभंगैः प्रसभंगभीरा शुभारतीशस्यतमस्तवेन ॥ निर्ना
शयंतीममशर्मदिश्यात् शुभाऽरतीशास्यतमस्तवेन ॥ ३ ॥

व्याख्या–रतीशस्य के० कदर्पना, इन के० स्वामिन्, एवा हे जिनेंद्र! के० हे जिनेश्वर! तारी– भारती के० देशनारूप वाणी ते, मम के० मने, शर्म के० सुख ने, दिश्यात् के० आपो ते वाणी केवी छे? तोके–भंग के०-अर्थ विकल्पे करी ने प्रसभ के० अत्यंत गभीरा के० गहन अने शस्यतमस्तवेन–शस्यतम के० अ त्यत श्लाघ्य, एवो जे स्तव के० स्तुति–तेणे करीने शुभा के०-उत्कृष्ट, अने आ शु के० शीघ्र, तम के० अज्ञानने निर्नाशयती के० नाश पमाडनारी एवी छे ॥३

दिस्यात्तवाशुज्वलनायुधाल्प मध्यासिताकंप्रवराळकस्य॥
अस्तेंडास्यस्यरुचोरुपृष्ठ मध्यासिताकंप्रवराळकस्य ॥४॥

व्याख्या–हे भव्यजन! तव के० तु जे तेने, ज्वलनायुधा के० ज्वलनायुध ना मे जे अधिष्ठायक देवी ते,-कके०सुखने–आशु के०-शीघ्र, दिश्यात् के० आपो ते ज्वलनायुध देवी केवी छे? तोके–सिता के०-शुभ्र, अने अल्पमध्या–अल्प के० सूक्ष्म छे, मध्य के० कटी जेनी, एटले कृशोदरी, अने प्रवराळकस्य के० भृकुटी अ ने मस्तकसबंधी वाका छे केश जेनेविषे, एवा आस्यस्य के० मुखनी रुचा के० कातीए अस्तेंदु के० तिरस्कार कर्यो छे चंद्र जेणे एवी, अने अकप्रवराळकस्य के० अकप्र के० स्थिर जे वराळक नामे वाहन, तेना उरुपृष्ठ के० विस्तीर्ण एवा पृष्ठभागप्रत्ये अध्यासिता के० आरूढ थनारी एवी छे ॥४॥इति सुविधिजिनस्तुति

अवतरण०–हवे शीतळनाथनी स्तुति द्रुतविलंबित वृत्त करीने कहे छे

जयतिशीतलतीर्थकृत सदा चलनतामरससदलघनं ॥ नव
कमवरुद्दापथिसंस्पृशः भ्रलनतामरसंसदलंघन ॥ १ ॥

व्याख्या–शीतलतीर्थकृत के० -शीतळ नामे जे तीर्थकर, तेनु चलनतामरस के० पदकमळ ते, सदा के० निरंतर जयति के० जय पामे छे ते केवु छे? तो के, जे पथि के० मार्गनेविषे सचार करतां छतां, अब्रुरुद्दां के० सुवर्णकमळोना नवक के० नवसख्यारूप समुदायने संस्पृशत के० स्पर्श करनारु ते कमळ नु नव क केवु छे? तोके–सदलं के० पत्रसहित अने घन के० निविड, अने–भनननता मरससत्–चल के० चचलपणाए नत के० नम्र छे, अमरसतत के० देवोनी

सना जेनेविषे, एवुं अने अलंघनं के॰ कोइए पण जेनुं उल्लंघन कर्युं नथी एवुं छे. एटले देवोए वंदित अने कोइए पण उल्लंघन करवाने अयोग्य अने निविड, एवा नवसंख्यांक कमलसमूहनेविषे स्पर्श करीने संचार करनारुं जे शीतल नाम क तीर्थंकरनुं चरणकमल, ते निरंतर जय पामे छे. एवो भावार्थ ॥ १ ॥

स्मरजिनान्परिभुन्नजरारजो जननतानवतोदयमानतः ॥
परमनिर्वृत्तिशर्मकृतोयतो जननतानवतोदयमानतः ॥ २ ॥

व्याख्या–हेजन के॰ हे लोक! यत. के॰ जे कारणमाटे ते जिन, परम निर्वृतिशर्मकृत–परम के॰ उत्कृष्ट जे निर्वृतिशर्म के॰ मोक्षसुख, तेने कृतः के॰ उत्पन्न करनारा अने, नतान्के॰ नम्र, एवा, पुरुषोने, अवतःके॰ रक्षण, करनारा छे; अतः के॰ ए कारणमाटे तुं. अदयं के॰ शरीरनी अपेक्षारहित जेवीरीते थाय तेम, आनतःके॰ नम्र होतो थको ते, परिभुन्नजरारजोजननतानवतोदयमान्–परिभुन्न के॰ दूर कर्यां छे, जरा के॰ वृद्धावस्था, रज के॰ कर्मरूप रज, जननतानव के॰ जन्मथी उत्पन्न थनारुं कृशपणु, तोद के॰ पीडा अने यमके॰ मृत्यु जेणे, एवा जिनान् के॰ तीर्थंकरने स्मर के॰ स्मरण कर. ॥ २ ॥

जयतिकल्पितकल्पतरूपमं मतमसारतरागमदारिणा ॥
प्रथितमत्रजिनेनमनीषिणा मतमसारतरागमदारिणा॥३ ॥

व्याख्या॰–अत्रके॰ आभूमिनेविषे, अतमसाके॰ अज्ञानरहित एवा,अने रतरागमदारिणा–रतके॰ मैथुन, रागके॰ राग द्वेष अने मदके॰ आठमद, एउना अरिके॰ शत्रु एवा, अने असारतरागमदारिणा- असारतके॰ अत्यंत असार एवा जे आगमके॰ मिथ्यात्वरूपसिद्धांत, तेउने दारिणा के॰ खंडन करनारा एवा जिनेनके॰ श्रीजिनेश्वरे, मनीषिणांके॰ पंडितपुरूषोने अर्थात् पंडितोना अग्रभागे, प्रथितंके॰ अर्थ व्याख्याने करीने विस्तारकरेलुं, अने कल्पितकल्पतरूपमं- सर्वना मनोरथ पूर्णकरवा ए हेतूए कल्पितके॰ संपादन करीछे, कल्पतरूनी के॰ कल्पवृक्षनी उपमाके॰ साम्य जेणे, एवुं जे मतंके॰ सिद्धांतरूप मत, ते जयतिके॰ सर्वोत्कर्षे करीने वर्त्तेछे. ॥ ३ ॥

घनरुचिर्जयताभुविमानवी गुरुतराविहतामरसंगता ॥ कृतक
राक्षवरेफलपत्रभा ग्गुरुतराविहतामरसंगता ॥ ४ ॥ ४० ॥

व्याख्या–इहनुविके० आनूमिनेविषे, घनरुचि के० मेघना सरखी जेनी कांति छे, एवी अने- गुरुतराविहतामरसगता– गुरुतर के० अतिमहांत, अने अविहत के० बीजा देवोए, अपराजित एवाजे अमर के० देव, तेउंए सगतके० सहित एवी, एने अस्त्रवरेके० प्रधानशस्त्ररूप एवा, फलपत्रनागगुरुतरो–फलो अने पत्रो, एउंने धारण करनारुं जे महावृक्ष, तेनेविषे कृतकराके० कर्यो छे हस्त जेणे एवी एटले फलो अने पत्रो–एउंएयुक्त एवु एक महावृक्ष जेणे पोताना हस्तनेविषे शस्त्ररूपे करीने धारण कर्युछे, एवी अने तामरसके० आरक्तकमलउपर गता के० आरूढ थएली, एवी जे मानवीके० मानवी नामे अधिष्ठायक देवी ते, जयतात् के० जयपामो ॥ ४ ॥ इति शीतलजिनस्तुति संपूर्ण ॥ ४० ॥

अवतरण –हवे श्री श्रेयांसजिननी स्तुति हरिणीवृत्ते करीने कहेछे

कुसुमधनुषायस्मादन्यनमोहवशंव्यधु । कमलसदृशा
गीतारावावलादयि तापित ॥ प्रणमततराङाक्श्रेयांसन
चाहतयन्मन ॥कमलसदृशांगीतारावावलादयितापित ॥१॥

व्याख्या –अयिके० कोमलपणे कहुछुं के हेजनो ! अलसदृशाके० कामातुरपणे स्थिरदृष्टि एवी स्त्रीउंना, गीतारावा के० गायनरूप जे शब्दो, ते यस्मात् के० जे श्री श्रेयांसथी, अन्यं के० बीजा एवा कके० कोण हरिहरादिक देवने बलात्के० बलात्कारे करीने, कुसुमधनुषाके० कामदेवे, तापितंके० पीडित, वाके० अथवा, मोहवशंके० मोहाधीन एवा नव्यधु के० न करताहवा, तो सर्वजनोने मदने पीडित अने मोहाधीनज करताहवा परतु यन्मन के० जे श्री श्रेयांसनाथना मनने कमलसदृशांगीके० कमलसरखुछे अंगके० शरीरजेनु एवी, अने तारके० मनोहर एवी, अने अवला के० बीजाने काममोहित करवामाटे जेना करतां बल नथी, एवी दयिता के० स्त्रीपण नाहत के० न हरण करती हवी, तंके० ते श्रेयांसके० श्री श्रेयांसनामे जिनेश्वरने तमे डाक् के० शीघ्र प्रणमत के० अतिप्रेमेवंदन करो एटले तेहनी कृपाए तमोने पण कामादिकनो जय सुलभ थशे एवो भावार्थ ॥१॥

जिनवरततिर्जीवालीनामकारणवत्सला ॥ समदमहितामा
रादिष्टासमानवराजया ॥ नमदमृतभुक्पंक्त्यानूतातनोतु
मतिंममा ॥ समदमहितामारादिष्टासमानवराजया ॥ २ ॥

व्याख्या–जिनवरतति के० जिनेश्वरनी जे श्रेणी ते, ममके० हु जे तेने, अ

समदमहितां—असमदके० मदरहित एवा पुरुषे महितांके० पूज्य एवी मतिके० बुद्धिप्रत्ये तनोतुके० विस्तारकरो. ते जिनवरतति केवीछे? तो के—जीवालीनांके० जीवोनी जे आलीके० श्रेणी तेना उपर, अकारणवत्सलाके० कारण विनाज वत्सलके० स्नेहयुक्त एवी अने असमदमहिता--असमके० निरुपमछे दमके० उपशम जेउनुं एवा पुरुषोनी हिताके० हितकारिणी अने अमारा के० कामरहित एवी, अने दिष्टासमानवरा—दिष्टके० दीधोछे, असमानके० निरुपम एवो वर जेणे एवी, अने अजयाके० कोइथी जेनो जय थयो नथी एवी एटले पराजय रहित, एवी अने समानवराजया—मानवके० मनुष्य अने राजा--एउए युक्त एवा नमदमृतभुक्पंक्त्या—नमत्के० वंदन करनारा जे अमृतभुक् के० देव, तेउनी जे पंक्तिके० श्रेणी -तेणे नूताके० स्तवन करेली, अने इष्टाके० सर्व जगतने गमनारी एवीछे.॥

भवजलनिधिभ्राम्यज्जंतुव्रजायतपोतहे ॥ तनुमतिमतांसन्नाशानांसदानरसंपदं ॥ समभिजपतामर्हन्नाथागमान तनृपतिं ॥ तनुमतिमतांसन्नाशानांसदानरसंपदं ॥ ३ ॥

व्याख्या—भवके० संसार—तेज जाणे जलधिके० समुद्र, तेनेविषे भ्राम्यत्के०—भ्रमण पामनारो जे जंतुव्रजके० प्राणिसमूह, तेने तरवामाटे आयतपोतके० विस्तीर्ण नौकारूप एवा हे भवजनिभ्राम्यज्जंतुव्रजायतपोत, एवा हे अर्हन्नाथागम के० हे अर्हन्नाथागम! तुं सन्नाशनां—शन्नाके० गइछे आशा जेनी एटले निराश एवा अने सन्नाशाना—सत्के० छे, नाशके० मृत्यु जेने एवा, परंतु सदानरसंके० दानरूप रसे सहित एवा पदंके० स्थानप्रत्ये. समभिजपतां के० इछा करनारा एवा मति मतांके० बुद्धिमंत पुरुषोने, तनुमतिके० रक्षण करवामाटे मतांके० मान्य एवा, अने आनतनृपतिं—आनतके० अत्यंत नम्रछे, नृपतिके० राजाउनेविषे एवी, नरसंपदंके० चक्रवर्ति वासुदेव प्रमुख मनुष्यनी संपतिने तनुके० विस्तार कर. ॥ ३ ॥

धृतपविफलाह्कालीघंटे.करे.कृनबोधित ॥ प्रजयतिमहाकाली मर्त्याधिपंकजराजिभि· ॥ निजतनुलतामध्यासीनांदधत्यपरी क्षितां ॥ प्रजयतिमहाकालीमर्त्याधिपंकजराजिभिः ॥ ४ ॥

व्याख्या—महाकाली के० ते महाकाली नामे अधिष्टायक देवी. प्रजयति के० उत्कृष्टपणे जयवंत रहे छे. ते केवी छे? तोके, जे कजराजिनि—कज के० कमल तेना सरखी छे राजि के० शोभा जेनी. एवी अने धृतपविफलाहालां घंटे—धृत

के० धारण कर्या छे, पवि के० वज्र फल के० नालीएरादिक फलो, अक्षाली के० रुद्राक्षनी जपमाळा अने घटा जेणे एवी. करे. के० चार हाथोए युक्त छे अने अर्त्याधिपंकजराजिनि–आर्ति के० शरीरपीडा, आधि के० मानसीव्यथा, तद्रूप पंक के० कर्दम, जरा के० वृद्धपणु अने आजि के० संग्राम–एणे करीने अपरीक्षितो के० अदूषित एवा अने मर्त्याधिप के० राजा सरखा पुरुष उपर अध्यासीनो के० आरूढ थनारी अने काळी के० नीलवर्ण एवी निजतनुलता के० पोतानी तनुवल्लीने दधती के० धारण करनारी एवी छे अने कृतबोधितप्रजयतिमहा–बोधित के० शास्त्रना उपदेशे करीने बोध करेली छे प्रजा जेणे, एवा जे यति के० साधु तेने जे मह के० उत्साह ते कृत के० कर्योछे जेणे एवीछे ॥४॥ इति श्रेयांसजिन स्तुति

अवतरण –हवे श्री वासुपूज्य नामे जिननाथनी स्तुति स्रग्धरावृत्ते करीने कहेछे

पूज्यश्रीवासुपूज्याऽवृजिनजिनपतेनूतनादित्यकांतेऽ ॥
मायाम्मारज्ञामानवरतरसालीनवालानबाहो ॥ आ
नम्रात्रायताश्रीप्रचयचयजयाद्विभ्रतीभक्तिभाजा ॥ मा
यामम्मारज्ञामानवरतरसालीनवालानवाऽहो ॥ १ ॥

व्याख्या – अहो श्रीवासुपूज्य के० हे श्रीवासुपूज्यनामे जिननाथ, तें भक्तिभाजां के० भक्तिमान पुरुषनी अमोके० प्रत्यक्ष जे आ आळी के० श्रेणी तेनुं, श्रीप्रचयचयजयात्– श्री के० लक्ष्मी तेनाथी छे प्रचय के० उत्पत्ति जेनी–एवोजे शम तेह तेथी चय के० उत्पन्न थयोजे जय–तेनाथी अथवा बीजो अर्थ–हे श्रीप्रचय के० देवस्त्रीना रूपनिस्थान, नरनयात् के० संसारभयथी तरसा के० शीघ्र, त्रा यस्व के० रक्षण करवु तुंरयोने? तोके– (संबोधने करी कहेछे) पूज्य के० त्रिभुवनने पूजन करवामाटे योग्य एवा हे पूज्य' अवृजिन के० पापरहित ने जुग व नमन्नो पति, एवा हे अवृजिनपते ' नूतन के० उदय पामनारो एवो नवीन आ दित्य के० सूर्य– तेना सरखी छेनी कांतिछे एवा हे नूतनादित्यकांते' माय के० कपट, तेणे रहित एवा हे अमाय' जेने समारनेविषे वास नथी एवा अ संसारवास' जयथी रक्षण करनारा एवा हे अवन' अने हे वर के० श्रेष्ठ एवोतुं अने भक्तिमान पुरुषोनी श्रेणी केवीछे ? तोके–आयाम के० प्रयासने निवृत्ती क रनारी अने नम्रा के० नम्र कर्याछे स्तुतिनो जेणे एवा मस्तक के० शुद्धमस्तिक एवी. अने अनवरत के० निरंतर–रसालीनवाला–रसा के० पृथ्वी, तेना

विषे आलीन के० स्पर्शी करेले वालके० केश जेना, एवी आनम्राके० अत्यंतनम्र, एणे करीने नक्तिनुं आधिक्य सूचव्युंछे. अने नवा के० नवीनज प्राप्तथयेलोछे चा रित्र धर्म जेने, एवीछे. ॥ १ ॥

पूतोयपादपांसुः शिरसिसुरततेराचरच्चूर्णशोभां ॥
यातापत्राऽसमानाऽप्रतिमदमवती हारताराजयंती ॥
कीर्त्तिःकांत्याततिःसाप्रविकिरतुतरांजैनराजीरजस्ते॥
यातापत्रासमानाऽप्रतिमदमवतीहारताराजयंती॥२॥

व्याख्या–हेनव्यजन, इहके० आजगतनेविषे पुतके० पवित्र एवा, यत्पादपांसुःके० जे जैनराजीनी पादरज, सुरततेः–सुर के० देवताउनी जे तति के० श्रेणी तेना सि रसि के० मस्तकनेविषे चूर्णशोभां–चूर्ण के० बुक्को, तेनी शोभाने आचरत् के० आचरण करती हवी. अने या जैनराजीके० जे जिनश्रेणी, तापत्रा के० सर्व जन ने संतापथी रक्षण करनारी अने असमाना के० गुणे करीने जेना सरखुं बीजुं कोइ नही एवी! अने अप्रतिमदमवती के० अनुपमछे, दम के० उपशम जेनो, एवी अने कीर्त्ति.के० पोतानी कीर्तिनी कांत्याके० कांतिए हारतारा–हारके० मौक्तिक हार अने ताराके० नक्षत्रमंमल–एउने जयंतीके० जीतनारी, अने यातापत्रसमा ना–यातके० गयांछे आपत्के० आपत्ति, त्रासके० नय अने मानके० अभिमान ए जेनां, एवी अने अप्रतिमदंके० गतमद एवा पुरुपोने, अवतीके० रक्षण करनारीअने अरताके० रागरहित अने राजयंतीके० शोभायुक्त एवीछे. सातति के० ते जिन श्रेणी, तेके० तादृश, रजःके० कर्मरूप रजने, प्रविकिरतु के० अत्यंत विखेरी नाखो.

नित्यंहेतूपपत्तिप्रतिहतकुमतप्रोद्धतध्वांतवंधा ॥ ऽपा
पायाऽसाद्यमानामदनतवसुधासारहृद्याहितानि ॥ वा
णीनिर्वाणमार्गप्रणयिपरिगतातीर्थनाथक्रियान्मे॥ऽपा
पायासाद्यमानामदनतवसुधासारहृद्याहितानि ॥ ३ ॥

व्याख्या– मदन के० कंदर्प, तेणे करीने रहित एवा अमदन, अने अपापाया सादि के० जेउए पापे करी आयासादिक कर्यो नथी, ते अपापायासादि–अने जे मने मान नथी ते अमान, अने जेमने मद नथी ते अमद, एवा जे , तेउ ए नत के० वंदन करेला एवा हे अपापायासाद्यमानामदनत ! ,या के०

[illegible]—[illegible] [illegible] केः प्रधान एवा हे वसुधासार! हे तीर्थनाथ केः हे तीर्थ [illegible]! [illegible] तने आगायमाना केः प्राप्त थएली, वाणी केः पांतरीश गुणो [illegible] विराजमान एवी धर्मोपदेशरूप वाणी ते, मे केः माहरा [illegible] [illegible] केः [illegible] करेला एवा हितानि केः मनोवांछितने क्रियात् केः [illegible] [illegible] करोने? तो के—निरंतर केः निरंतर—हेतूपपत्तिप्रतिहतकुमतो [illegible]—[illegible] केः वस्तु स्थापन करनारो [illegible] अने उपपत्ति केः युक्ति—[illegible] केः निराकरण कर्योने. कुमत केः कुत्सित पुरुषनो मतरूप [illegible] केः [illegible] एवो [illegible] केः अंधकाररूप अर्थात् अज्ञानरूप [illegible] जेणे एवी [illegible]—[illegible] गयोने, अपाय केः क्लेश जेथी एवी, अने [illegible] [illegible] केः [illegible], तेनी जे आरा केः वेगयुक्तवृष्टि, तेना [illegible] [illegible]. [illegible]—निर्वाणमार्ग केः मोक्षमार्ग—तेनेविषे [illegible] एवा थती, तेउए परिगत केः अंगीकार करेली एवी

[illegible]दयप्रकाशितनिर्दलितशमिनीवांछितश्वेतजास्य ॥ रसना
[illegible]प्रदानापविक्रमुदितामाक्रमालाजनंत ॥ शुभ्राश्री
[illegible]निविनपनाकुम्भिकाजातियस्याः ॥ सम्रा
[illegible]प्रदातापविक्रमुदितामाक्रमालाजनंत ॥ ४ ॥

[illegible]—हे भव्यजन! [illegible] केः जे श्रीशांतिदेवीना [illegible] केः [illegible] [illegible] [illegible] केः [illegible] पामेनी अने थात केः प्राप्त थनी एवी [illegible] केः [illegible] ते [illegible] केः निरंतर, नाति केः शोभेछे, [illegible], [illegible] केः श्रीशांतिदेवी नामे अधिष्ठायक देवी, जगति केः जगत्मांहे, [illegible] केः [illegible], [illegible]—[illegible] केः [illegible], तेनोछे [illegible] [illegible] [illegible] केः [illegible], तेनोछे [illegible], [illegible] जनयतात् केः [illegible] [illegible] केः [illegible]दयप्रकाशितनिशमिनि! [illegible] केः [illegible] [illegible] अने [illegible] [illegible] [illegible], तेनी शमिनी केः [illegible] [illegible] केः [illegible] करोने, [illegible] [illegible] केः [illegible] [illegible] [illegible] केः [illegible] [illegible] केः [illegible] [illegible] अने [illegible]

जटा मंमलादिक साहित्ये हर्ष पामेली, अने शुभ्रा के० वर्णे श्वेतवर्ण एवी, अने सन्नालीका—सन्न के० नष्ट थयुंछे, अलीक के० असत्य जेथी, एवीछे. ॥ ४ ॥ इति श्रीवासुपूज्यजिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ ४८ ॥

अवतरण—हवे श्रीविमलनाथजिननीस्तुतीपृथ्वीवृत्तेकरीने कहेछे.

अपापदमलंघनंशमितमानमामोहितं ॥ नतामरसन्नासुरं विमलमालयामोहितं ॥ अपापदमलंघनंशमितमानमा मोहितं॥ नतामरसन्नासुरंविमलमालयाऽमोहितं ॥ १ ॥

अर्थः—अमे विमलं के० श्रीविमल नामक जिनेश्वरने, आनमामः के० अत्यंत नमस्कार करीएछैए. ते विमलनाथ केवाछे ? तो के, अपापदं—अप के० गएलीछे, आपदा के० आपत्ति जेथी एवा. अने अलंघनंशंऽतं के० अत्यंत कर्मक्षयथी उत्पन्न थएलुं जे निविडसुख. तेने प्राप्त थएला. अने हितं के० सर्व प्राणी मात्रना हितकारी.अने नतामरसन्नाऽसुरं—नत के०नम्र छे,अमर के० देव अने सन्नाऽसुर के० कांतियुक्त असुर जेने एवा, अने विमल के० निर्मल एवी जे माला के० पुष्पमाला—तेणे करीने मोहित के० सुगंधयुक्त करेला, अने अपापदं के० पापने देनारा न ही;एवा अने अलंघनं के० कोइ पण जेनी आज्ञानुं उलंघन करे नही. एवा. अने श मितमानं के० शमन कर्युंछे मान के० अभिमान जेणे एवा.अने नआमोहितं के० कोइ पण विषये करीने किंचित पण मोहने न पामेला, अने तामरसन्नासुरं के० आरक्त क मल सरखा देदीप्यमान अने. आलयामोहितं—आलय के० गृह. तेनी प्राप्तिए अने नाशे, अमोहितं के० प्राप्त थनारो जे हर्ष किंवा खेद, तेणे रहित. एवाछे. ॥ १ ॥

सदानवसुराजिताअममराजिनाजीरदाः॥क्रियासुरुचिता सुतेसकलसारतीरायताः ॥ सदानवसुराजिताअसमरा जिनाजीरदाः॥ क्रियासुरुचितासुतेसकलसारतीरायता ॥२॥

व्याख्याः—हेभव्यजन ! जेजिन. सदानवसुराजिता —सदानव के० असुरसमा रोसहित जे, सुर के० देव, तेउए अजित के० न जीतेला. अने असमरा के० सं ग्रामरहित. अने सकलसारतीराः—सकल के० संपूर्ण जे. सार के० संसारसार. ते ना तीरा.के० तटनेविषे रहेनारा एटले संसारे अजित एवा अने यता. के० यत्न करनारा, अने सदानवसुराजिता- सदान के० दानसहित. एवुं जे वसु के० सुवर्ण ने

णे करी राजित के० शोभित– अने असमराजिनाभीरदा – असम के० निरूपमपणे राजि के० शोभितछे नाभि अने रद के० दतजेना एवा, अने सकलना-कल के० सुदर एवी जे भाके० काती, तेणेसहित, अथवा सपूर्णकातीए युक्त एवा, अने भीरदा के० भयनो नाश करनारा एवा ते जिना के० तेतीर्थंकर तेके० तने अर्चितासुके० करवा माटे योग्य एवी अने रुचितासुके०पण्डितपुरूषोने मान्य, एवी क्रियासुके० धर्मानुष्ठान क्रियानेविषे–आयता के० विस्तृतएवी रती के० सतोषने क्रियासु के० करो ॥ २ ॥

सदायतिगुरोरहोनमतमानवैरचितं ॥ मतवरदमेन सारहितमायताभावत ॥ सदायतिगुरोरहोनमतमान वैरचितं॥ मतंवरदमेनसारहितमायताभावत ॥ ३ ॥

व्याख्या – अहो के० हेलोको, यतिगुरो के० यतीना गुरु एवा अने आयताभावत – आयत के० विशाल एवी जे आभा के०काती, ते छे जेने एवा, गुरा के० तीर्थंकरना, मतंके० सिद्धांतमतने तमे भावत के० भक्तिए करीने सदाके० निरतर, नमत के० वदन करो ते मत केवुछे? तोके–मानवै के० मनुष्योए,अर्चितं के० पूजित,अने वरदके० इच्छितवरने आपनारू, अने एनसाके० पापे करीने रहित एवु, अने रह के० रहस्यभूत, अने जेने मानके० अभिमान अने वैरपण मान्यनथी एवु, अने आयता के० वृद्धिपामनारा एवा वरदमे के० श्रेष्ठ एवा आत्मदमे करीने चित के० व्याप्त एवु, अने सारहित के० सर्वजनने अभिमत अने हितकारक एवु, अने सदायति–सत् के० मोहोटीजे आयति के० प्रभुता जेथी एवु, अने मतं के० सर्वजनने मान्य एवुछे ॥ ३ ॥

प्रभाजितनुतामलपरमचापलारोहिणी॥ सुधावसुरभीमना मयिसभाक्षमालेहित ॥ प्रभाजितनुताऽमलपरमचापलाऽरो हिणी ॥ सुधावसुरभीमनामयिसभाक्षमालेहित ॥ ४ ॥

व्याख्या –रोहिणी के०रोहिणी नामे जे अधिष्ठायक देवी ते,अल के०अत्यत,परके० उत्कृष्टपणे प्रभाजिके० भजनशील, एवी, अने क्षमाले के०क्षमावान् एवी, ते मयिके० मारेविषे, अमलके०निर्मल अने हितके०हितकारक एवा ईहितके०वांछितने, तनुतां के०विस्तारकरो ते रोहिणीदेवी केवीछे ? तोके–अचापलाके०चपलपणाए रहित अने सुधावसु –सुधा के०चूनो' तेना सरखीछे, वसुके०काती जेनी, अथवासुधाके०अमृत,

तेजने,वस्तुके०द्रव्य जेनुं एवी.अने अनीमना के०नयरहितछे मन जेनुं एवी,अने सभा क्षमालाके०कांतियुक्तने अक्षमालाके०जपमाला जेनी एवी,अने प्रभाजितनुता–प्रभा के०ते देवीनी कांतीए जे जितके०जीतेला जे लोक,तेउए नुता के०स्तुती करेली,अने परमचापला–परम के० उत्कृष्ट एवुं जे चापके० धनुष्य, तेने ग्रहण करनारी, अ ने सुधावसुरभीके० महोटावेगे करीने दोडनारी जे सुरभिके० कामधेनु, ते प्रत्ये आ रोहिणीके० आरोहण करनारी, अने अनामयिसभा–आमयके० रोग, तेणे रहित एवीने सभाके० पर्षदा जेनी एवीने. ॥४॥ इति विमलजिनस्तुति. संपूर्ण. ॥५२॥

अवतरण०–हवेश्री अनंतजिननाथनी स्तुति, द्रुतविलंबित वृत्तेकरीने कहेछे.

सकलधौतसहासनमेरव ॥ स्तवदिशंत्वभिषेकजलाप्लवाः ॥ म
तमनंतजितःस्नपितोल्लसत् ॥ सकलधौतसहासनमेरवः ॥ १ ॥

व्याख्या–हे भव्यजन, सकलधौतसहासनमेरव.–सकल के० संपूर्ण, धौत के० क्षालन कर्युं छे, सहास के० सप्रकाश–अर्थात् पुष्पादिकोए विकसित एवुं नमेरु के० देवतार्जनुं वृक्ष जेणे एवो, अने स्नपितोल्लसत्सकलधौतसहासनमे रव –स्नपित के० स्नान कराव्युं छे, उल्लसत् के० देदीप्यमान, सकलधौत के० सुवर्णसहित, अने सहासन के० अभिषेक माटे जे सिंहासन. तेणे सहित, एवो मेरुके० मेरुपर्वत जेणे, एवा अनंतजिन के० श्रीअनंतजिननाथनो अभिषेक, ज लाप्लवा. के० मेरुपर्वत उपर जन्माभिषेक करवामाटे प्राप्त थएलो जे उदकनो प्र वाह, ते तवके० तमारा, मतं के० मनोवांछितने, दिशंतु के० आपो. ॥ १ ॥

ममरतामरसेविततेक्षण प्रदनिहंतुजिनेंद्रकदंबक ॥ व
रदपादयुगंगतमज्ञता ममरतामरसेविततेक्षण ॥ २ ॥

व्याख्या–रत के० प्रीतिए तत्पर एवा जे अमर के० देवो, तेउए सेवित के० सेवन करेला, एवा हे रतामरसेवित! अने क्षण के० महोत्साह, तेने प्रद के० उत्तम प्रकारे करीने देनारा, एवाहे क्षणप्रद! अने वर देनारा एवा हे वरद! अने वितत के० विस्तीर्ण छे नेत्रो जेनां, एवा हे वितेक्षण! हे जिनेंद्रकदंबक के० हे जिनेंद्रसमूह, ते के० तमारुं, अमरतामरसे–अमरके० देव, तेउए मांमेलां जे ता मरस के० कमलो, तेनेविषे गत के० प्राप्त एवुं पादयुगं के० चरणयुगल, ते मम के० मारा, अज्ञता के० अज्ञानीपणाने निहंतु के० संहार करो.

परमतापदमानसजन्मन प्रियपदभवतोभवतोऽवतात् ॥
जिनपतेर्मतमस्तजगत्त्रयी परमतापदमानसजन्मन ॥ ३ ॥

व्याख्या–हे भव्यजन ! अस्तजगत्त्रयीपरमतापदमानसजन्मन –अस्त के० वि ध्वस्त कर्यो छे, जगत्त्रयीपरमतापद के० त्रैलोक्यने परम ताप देनारो एवो, मा नसजन्मा के० चित्तनेविषे उत्पन्न थनारो मदन जेणे, एवा जिनपते के० जि नेश्वरनु, मत के० सिद्धांतरूप मत, ते भवत के० तु जे तेने, भवत के० संसा रथी, अवतात् के० रक्षण करो ते मत केवु छे? तोके–परमतापत्–परमत के० बौद्धादिक मत, तेनी छे आपत् के० विपत्ति जेथी, अर्थात् बौद्धादिकोना मतनु खंडन करनारु, अने अमानसजन्मन प्रियपद–अमान के० सख्या रहित एटले जे गण तीमा न आवे, अने सजन् के० परस्पर मलनारा, अने मन प्रिय के० पण्डिताना मनने प्रियकारक एवा छे, पदके० पदो जेनेविषे, एवु छे ॥ ३ ॥

रसितमुच्चतुरगमनायक दिशतु काचनकातिरिताच्युता ॥ धृत
धनु फलकासिशराकरै रसितमुच्चतुरगमनायक ॥ ४ ॥

व्याख्या–अच्युता के० अच्युता नामे जे अधिष्ठायक देवी, ते वके० सुखने दिशतु के० समर्पण करो ते अच्युता देवी केवी छे? तोके–गमनाय के० चालवा माटे अच्चतुर के० अत्यत चतुर, अने रसितं के० हणहणाट शब्द करनारा, अने असितं के० नीलवर्ण एवा, उच्चतुरगमनायक के० अश्वश्रेष्ठ प्रत्ये इता के० आ रोहण करनारी, अने करै के० पोताना हाथे करीने, धृतधनु फलकासिशरा– धृत के० धारण कर्या छे, धनु के० धनुष्य, फलक के० खेटक नामा आयुध, अ सि के० खड्ग अने शर के० बाण जेणे, अने कनककाति –कनक के० सुवर्ण, तेना सरखी जेनी काति छे , एवी छे ॥ ४ ॥ इति श्री अनतजिनस्तुति सपूर्णा

अवतरण–हवे श्रीधर्मनाथजिननीस्तुति अनुष्टुप्वृत्ते करीने कहे छे

नम श्रीधर्मनिष्कर्मोदयायमहितायते ॥
मर्त्यामरेंद्रनागेंडे र्दयायमहितायते॥१॥

व्याख्या–मर्त्यामरेंद्रनागेंद्र –मर्त्य के० मनुष्य, अमरेंद्र के० देवेंद्र, अने नागेंद्र के० पातालवासी देव, तेउए महितायते–महित के० पूजित छे, आयति के० उ त्तरकाल प्रभुता जेनी, एवा हे श्रीधर्म के० श्री धर्मनाथ तीर्थंकर, निष्कर्मोदयाय–नि

ष्कर्म के० कर्मरहित, एवा मोक्षनोछे उदय के० प्राप्ति जेथी, एटले मोक्षदायक एवा अने दयायमहिताय–दया के० जीवदया, अने यम के० व्रत, तेना हिताय के० हितकारक–एटले जीवदया अने पांचमहाव्रतादिकोनी प्रसिद्धि करनारा एवा ते के० तारा माटे, नमः के० नमस्कार थाउ ॥ १ ॥

जीयाज्जिनौघोध्वांतांतं ततानलसमानया ॥
भामंमलत्विषायःस ततानलसमानया ॥ २ ॥

व्याख्या–यः के०जे जिनोनो समुदाय, ततानलसमानया–तत के०विस्तीर्ण एवो जे अनल के० अग्नि, तेना सरखी लसमानया के० देदीप्यमान एवा, भामंमलत्विषा के०कांतीमंमलना समुदाये करीने, ध्वांतांत के० अज्ञानना नाशने, ततानके० करतो हवो, स जिनौघः के० ते जिनसमूह, जीयात् के०जगत्नेविषे जयवंत थाउ.॥२॥

भारतिद्राक्जिनेंद्राणां नवनौरक्षतारिके ॥ सं
सारांभोनिधावस्मा नवनौरक्षतारिके ॥ ३ ॥

व्याख्या– अक्षतारिके–अक्षत के० नथी नाश पाम्या, अरि के० शत्रु जेने विषे, एवा संसारांभोनिधौ के० संसाररूप समुद्रनेविषे, नवनौः के० नवीन नौका रूप थईने, तारि के० तारनारी, एवी हे जिनेंद्राणांभारति के० हे जिनेंद्रोना पांत्रीशगुणोएयुक्त एवी वाणी! तुं अवनौ के० आ भूमिनेविषे, अस्मान् के० अमोने द्राक् के० शीघ्र, रक्ष के० रक्षण कर. ॥ ३ ॥

केकिस्थाव क्रियाछक्ति करालाभानयाचिता ॥
प्रज्ञप्तिर्नूतनांभोज करालाभानयाचिता ॥ ४ ॥

व्याख्या– प्रज्ञप्ति के० प्रज्ञप्ति नामे जे अधिष्ठायक देवी, ते व के० तमारा ज्ञान के० जाणने, क्रियात् के० करो. ते प्रज्ञप्ति देवी केवीछे ? तो के, केकिस्था–केकि के० मोर, तेना उपर आरोहण करनारी, अने शक्तिकरा के० शक्ति नामे आयुध जेना हस्तनेविषेछे एवी. अने अयाचिता के०–कोइए पण याचना न करेली छतां देनारी, अने नूतनांभोजकराला भा–नूतन के० नवीन जे अंभोज के० कमल, तेना सरखी कराल के० उत्कृष्ट्छे आभा के० कांती जेनी, अने नयाचिता के० न्यायेकरी व्याप्त एवीछे. ॥ ४ ॥ इति श्रीधर्मजिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ १५ ॥

अवतरण– हवे श्रीशांतिनाथ जिननी स्तुति शार्दूलविक्रीडितवृत्तेकरीने करेछे.

परमतापदमानसजन्मन प्रियपदं नवतोऽनवतोऽवतात् ॥
जिनपतेर्मतमस्तजगत्त्रयी परमतापदमानसजन्मन ॥ ३ ॥

व्याख्या–हे भव्यजन ! अस्तजगत्रयीपरमतापदमानसजन्मन –अस्त के० विध्वस्त कर्यो छे, जगत्रयीपरमतापद के० त्रैलोक्यने परम ताप देनारो एवो, मानसजन्मा के० चित्तनेविषे उत्पन्न थनारो मदन जेणे, एवा जिनपते के० जिनेश्वरनु, मत के० सिद्धातरूप मत, ते नवत के० तु जे तेने, नवत के० सतारथी, अवतात् के० रक्षण करो ते मत केवु छे? तोके–परमतापत्–परमत के० बौद्धादिक मत, तेनी छे आपत् के० विपत्ति जेथी, अर्थात् बौद्धादिकोना मतनुं खमन करनारु, अने अमानसजन्मन प्रियपद–अमान के० सख्या रहित एटले जे गणतीमा न आवे, अने सजन् के० परस्पर मलनारा, अने मन प्रिय के० पडितोना मनने प्रियकारक एवा छे, पदके० पदो जेनेविषे, एवु छे ॥ ३ ॥

रसितमुच्चतुरगमनायकं दिशतु कांचनकांतिरिताच्युता ॥ धृत
धनु फलकासिशराकरै रसितमुच्चतुरगमनायक ॥ ४ ॥

व्याख्या–अच्युता के० अच्युता नामे जे अधिष्ठायक देवी, ते कके० सुखने दिशतु के० समर्पण करो ते अच्युता देवी केवी छे? तोके–गमनाय के० चालवा माटे अचतुर के० अत्यंत चतुर, अने रसित के० हणहणाट शब्द करनारा, अने असितं के० नीलवर्ण एवा, उच्चतुरगमनायक के० अश्वश्रेष्ठ प्रत्ये इता के० आरोहण करनारी, अने करै के० पोताना हाथे करीने, धृतधनु फलकासिशराधृत के० धारण कर्या छे, धनु के० धनुष्य, फलक के० खेटक नामा आयुध, असि के० खड्ग अने शर के० बाण जेणे, अने कनककाति –कनक के० सुवर्ण, तेना सरखी जेनी काति छे , एवी छे ॥ ४ ॥ इति श्री अनतजिनस्तुति सपूर्णा

अवतरण–हवे श्रीधर्मनाथजिननीस्तुति अनुष्टुपवृत्ते करीने कहे छे

नम श्रीधर्मनिष्कर्मोदयायमहितायते ॥
मर्त्यामरेंद्रनागेंद्रै र्दयायमहितायते॥१॥

व्याख्या–मर्त्यामरेंद्रनागेंद्रै –मर्त्य के० मनुष्य, अमरेंद्र के० देवेंद्र, अने नागेंद्र के० पातालवासी देव, तेउए महितायते–महित के० पूजित छे, आयति के० उत्तरकाल प्रभुता जेनी, एवा हे श्रीधर्म के० श्रीधर्मनाथ तीर्थकर, निष्कर्मोदयाय–नि

ष्कर्म के० कर्मरहित, एवा मोक्षनोछे उदय के० प्राप्ति जेथी, एटले मोक्षदायक एवा अने दयायमहिताय—दया के० जीवदया, अने यम के० व्रत, तेना हिताय के० हितकारक—एटले जीवदया अने पांचमहाव्रतादिकोनी प्रसिद्धि करनारा एवा ते के० तारा माटे, नमः के० नमस्कार थाउ ॥ १ ॥

जीयाज्जिनौघोध्वांतांतं ततानलसमानया ॥
भामंडललिपायःस ततानलसमानया ॥ २ ॥

व्याख्या—यः के० जे जिनोनो समुदाय, ततानलसमानया—तत के० विस्तीर्ण एवो जे अनल के० अग्नि, तेना सरखी लसमानया के० देदीप्यमान एवा, भामंडललिपा के० कांतीमंडलना समुदाये करीने, ध्वांतांत के० अज्ञानना नाशने, ततानके० करतो हवो; सःजिनौघ. के० ते जिनसमूह, जीयात् के० जगत्नेविषे जयवंत थाउ.॥२॥

भारतिद्राक्जिनेंद्राणां नवनौरक्षतारिके ॥ सं
सारांभोनिधावस्मा नवनौरक्षतारिके ॥ ३ ॥

व्याख्या— अक्षतारिके—अक्षत के० नथी नाश पाम्या, अरि के० शत्रु जेने विषे, एवा संसारांभोनिधौ के० संसाररूप समुद्रनेविषे. नवनौः के० नवीन नौका रूप थईने, तारि के० तारनारी, एवी हे जिनेंद्राणांभारति के० हे जिनेंद्रोना पांत्री शगुणोएयुक्त एवी वाणी! तुं अवनौ के० आ भूमिनेविषे, अस्मान् के० अमोने द्राक् के० शीघ्र, रक्ष के० रक्षण कर. ॥ ३ ॥

केकिस्थाव क्रियाछक्ति कराला भानयाचिता ॥
प्रज्ञप्तिर्नूतनांभोज कराला भानयाचिता ॥ ४ ॥

व्याख्या— प्रज्ञप्ति के० प्रज्ञप्ति नामे जे अधिष्ठायक देवी, ते व. के० तमारा ला भान् के० लाभने, क्रियात् के० करो. ते प्रज्ञप्ति देवी केवीछे? तो के, केकिस्था—केकि के० मोर, तेना ऊपर आरोहण करनारी, अने शक्तिकरा के० शक्ति नामे आयुध जेना हस्तनेविषेछे एवी, अने अयाचिता के०—कोइए पण याचना न क रेली छतां देनारी, अने नूतनांभोजकरालाभा—नूतन के० नवीन जे अंभोज के० कमल, तेना सरखी कराल के० उत्कृष्ट आभा के० कांती जेनी, अने नयाचिता के० न्यायेकरी व्याप्त एवीछे. ॥ ४ ॥ इति श्रीधर्मजिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ १५ ॥

अवतरण— हवे श्रीशांतिनाथ जिननी स्तुति शार्दुलविक्रीडितवृत्तेकरीने कहेछे.

परमतापदमानसजन्मन प्रियपदभवतोभवतोऽवतात् ॥
जिनपतेर्मतमस्तजगत्त्रयी परमतापदमानसजन्मन ॥ ३ ॥

व्याख्या–हे भव्यजन ! अस्तजगत्त्रयीपरमतापदमानसजन्मन –अस्त के० विध्वस्त कर्यो छे, जगत्त्रयीपरमतापद के० त्रैलोक्यने परम ताप देनारो एवो, मानसजन्मा के० चित्तनेविषे उत्पन्न थनारो मदन जेणे, एवा जिनपते के० जिनेश्वरनु, मत के० सिद्धांतरूप मत, ते भवत के० तु जे तेने, भवत के० सत्तारथी, अवतात् के० रक्षण करो ते मत केवु छे? तोके–परमतापत्–परमत के० बौद्धादिक मत, तेनी छे आपत् के० विपत्ति जेथी, अर्थात् बौद्धादिकोना मतनु खंडन करनारु, अने अमानसजन्मन प्रियपद–अमान के० संख्या रहित एटले जे गणतीमा न आवे, अने सजन् के० परस्पर मळनारा, अने मन प्रिय के० पंडितोना मनने प्रियकारक एवा छे, पदके० पदो जेनेविषे, एवु छे ॥ ३ ॥

रसितमुच्चतुरगमनायकं दिशतु कांचनकांतिरिताच्युता ॥ धृत
धनु फलकासिशराकरै रसितमुच्चतुरगमनायक ॥ ४ ॥

व्याख्या–अच्युता के० अच्युता नामे जे अधिष्ठायक देवी, ते कं के० सुखने दिशतु के० समर्पण करो ते अच्युता देवी केवी छे? तोके–गमनाय के० चालवा माटे अच्चतुर के० अत्यंत चतुर, अने रसित के० हणहणाट शब्द करनारा, अने असित के० नीलवर्ण एवा, उच्चतुरगमनायक के० अश्वश्रेष्ट प्रत्ये इता के० आरोहण करनारी, अने करै के० पोताना हाथे करीने, धृतधनु फलकासिशराधृत के० धारण कर्या छे, धनु के० धनुष्य, फलक के० खेटक नामा आयुध, असि के० खड्ग अने शर के० बाण जेणे, अने कनककांति –कनक के० सुवर्ण, तेना सरखी जेनी कांति छे, एवी छे ॥ ४ ॥ इति श्री अनंतजिनस्तुति संपूर्ण

अवतरण–हवे श्रीधर्मनाथजिननीस्तुति अनुष्टुपवृत्ते करीने कहे छे

नम श्रीधर्मनिष्कर्मोदयायमहितायते ॥
मर्त्यामरेंद्रनागेंद्रै र्दयायमहितायते॥१॥

व्याख्या–मर्त्यामरेंद्रनागेंद्र –मर्त्य के० मनुष्य, अमरेंद्र के० देवेंद्र, अने नागेंद्र के० पाताळवासी देव, तेउए महितायते–महित के० पूजित छे, आयति के० उत्तरकाळ प्रभुता जेनी, एवा हे श्रीधर्म के० श्री धर्मनाथ तीर्थंकर, निष्कर्मोदयाय–नि

कर्म के० कर्मरहित, एवा मोक्षनोछे उदय के० प्राप्ति जेथी, एटले मोक्षदायक एवा अने दयायमहिताय—दया के० जीवदया, अने यम के० व्रत, तेना हिताय के० हितकारक—एटले जीवदया अने पांचमहाव्रतादिकोनी प्रसिद्धि करनारा एवा ते के० तारा माटे, नम: के० नमस्कार थाउ ॥ १ ॥

जीयाज्जिनौघोध्वांतांतं ततानलसमानया ॥
भामंभलविपायःस ततानलसमानया ॥ २ ॥

व्याख्या—यः के०जे जिनोनो समुदाय. ततानलसमानया—तत के०विस्तीर्ण एवो जे अनल के०अग्नि. तेना सरखी लसमानया के० देदीप्यमान एवा, भामंभलविपा के०कातीमंभलना समुदाये करीने, ध्वांतांत के०अज्ञानना नाशने, ततानके० करतो हवो, स जिनौघ. के० ते जिनसमूह, जीयात् के०जगत्नेविषे जयवंत थाउ.॥२॥

भारतिद्राक्जिनेंद्राणां नवनौरक्षतारिके ॥ सं
सारांभोनिधावस्मा नवनौरक्षतारिके ॥ ३ ॥

व्याख्या— अक्षतारिके—अक्षत के० नथी नाश पाम्या, अरि के० शत्रु जेने विषे, एवा संसारांभोनिधौ के० संसाररूप समुद्रनेविषे. नवनौ: के० नवीन नौका रूप थइने, तारि के० तारनारी, एवी हे जिनेंद्राणांभारति के० हे जिनेंद्रोना पांत्री शगुणोएयुक्त एवी वाणी! तुं अवनौ के० आ भूमिनेविषे, अस्मान् के० अमोने द्राक् के० शीघ्र, रक्ष के० रक्षण कर. ॥ ३ ॥

केकिस्थावःक्रियाछक्ति करालाभानयाचिता ॥
प्रज्ञप्तिर्नूतनांभोज करालाभानयाचिता ॥ ४ ॥

व्याख्या— प्रज्ञप्ति के० प्रज्ञप्ति नामे जे अधिष्टायक देवी, ते व के० तमारा ला भान् के० लाभने, क्रियात् के० करो. ते प्रज्ञप्ति देवी केवीछे ? तो के, केकिस्था— केकि के० मोर, तेना उपर आरोहण करनारी, अने शक्तिकरा के० शक्ति नामे आयुध जेना हस्तनेविषेछे एवी, अने अयाचिता के०—कोइए पण याचना न करेली छतां देनारी, अने नूतनांभोजकरालाभा—नूतन के० नवीन जे अंभोज के० कमल, तेना सरखो कराल के० उत्कृष्टछे आभा के० कांती जेनी, अने नयाचिता के० न्यायेकरी व्याप्त एवीछे. ॥ ४ ॥ इति श्रीधर्मजिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ १५ ॥

अवतरण— हवे श्रीशांतिनाथ जिननी स्तुति शार्दूलविक्रीडितवृत्तेकरीने कहेछे.

परमतापदमानसजन्मन प्रियपदव्रवतोऽवतोऽवतात् ॥
जिनपतेर्मतमस्तजगत्त्रयी परमतापदमानसजन्मन ॥ ३ ॥

व्याख्या–हे भव्यजन ! अस्तजगत्त्रयीपरमतापदमानसजन्मन –अस्त के० वि ध्वस्त कर्यो छे, जगत्त्रयीपरमतापद के० त्रैलोक्यने परम ताप देनारो एवो, मा नसजन्मा के० चित्तनेविषे उत्पन्न थनारो मदन जेणे, एवा जिनपते के० जि नेश्वरनु, मत के० सिद्धातरूप मत, ते नवत के० तु जे तेने, नवत के० सता रथी, अवतात् के० रक्षण करो ते मत केवु छे? तोके–परमतापत्–परमत के० बौद्धादिक मत, तेनी छे आपत् के० विपत्ति जेथी, अर्थात् बौद्धादिकोना मतनु खण्डन करनारु, अने अमानसजन्मन प्रियपद–अमान के० सख्या रहित एटले जे गण तीमा न आवे, अने सजन् के० परस्पर मलनारा, अने मन प्रिय के० पण्डिताना मनने प्रियकारक एवा छे, पदके० पदो जेनेविषे, एवु छे ॥ ३ ॥

रसितमुच्चतुरगमनायक दिशतुकांचनकातिरिताच्युता ॥ वृत
धनु फलकासिशराकरै रसितमुच्चतुरगमनायक ॥ ४ ॥

व्याख्या–अच्युता के० अच्युता नामे जे अधिष्ठायक देवी, ते वके० सुखने दिशतु के० समर्पण करो ते अच्युता देवी केवी छे? तोके–गमनाय के० चालवा माटे अच्चतुर के० अत्यत चतुर, अने रसित के० हणहणाट शब्द करनारा, अने असित के० नीलवर्ण एवा, उच्चतुरगमनायक के० अश्वश्रेष्ठ प्रत्ये इता के० आ रोहण करनारी, अने करै के० पोताना हाथे करीने, वृतधनु फलकासिशरा– धृत के० धारण कर्या छे, धनु के० धनुष्य, फलक के० खेटक नामा आयुध, अ सि के० खड्ग अने शर के० बाण जेणे, अने कनककाति –कनक के० सुवर्ण, तेना सरखी जेनी काति छे, एवी छे ॥ ४ ॥ इति श्री अनतजिनस्तुति सपूर्ण

अवतरण–हवे श्रीधर्मनाथजिननीस्तुति अनुष्टुप्वृत्ते करीने कहे छे

नम श्रीधर्मनिष्कर्मोदयायमहितायते ॥
मर्त्यामरेन्द्रनागेन्द्रै र्दयायमहितायते॥१॥

व्याख्या–मर्त्यामरेन्द्रनागेन्द्रै –मर्त्य के० मनुष्य, अमरेन्द्र के० देवेन्द्र, अने नागेन्द्र के० पातालवासी देव, तेओए महितायते–महित के० पूजित छे, आयति के० उ त्तरकाल प्रभुता जेनी, एवा हे श्रीधर्म के० श्री धर्मनाथ तीर्थकर, निष्कर्मोदयाय–नि

ष्कर्म के० कर्मरहित, एवा मोक्षनोछे उदय के० प्राप्ति जेथी, एटले मोक्षदायक एवा अने दयायमहिताय—दया के० जीवदया, अने यम के० व्रत, तेना हिताय के० हितकारक—एटले जीवदया अने पांचमहाव्रतादिकोनी प्रसिद्धि करनारा एवा ते के० तारा माटे, नमः के० नमस्कार थाउ ॥ १ ॥

जीयाज्जिनौघोध्वांतांतं ततानलसमानया ॥
भाभंभलिपायःस ततानलसमानया ॥ २ ॥

व्याख्या—यः के० जे जिनोनो समुदाय, ततानलसमानया—तत के० विस्तीर्ण एवो जे अनल के० अग्नि. तेना सरखी लसमानया के० देदीप्यमान एवा, भाभंभलिपा के० कांतीभंभलना समुदाये करीने, ध्वांतांतं के० अज्ञानना नाशने, ततान के० करतो हवो, स. जिनौघः के० ते जिनसमूह, जीयात् के० जगत्नेविषे जयवंत थाउ. ॥ २ ॥

भारतिद्राक्जिनेंद्राणां नवनौरक्षतारिके ॥ सं
सारांभोनिधावस्मा नवनौरक्षतारिके ॥ ३ ॥

व्याख्या— अक्षतारिके—अक्षत के० नथी नाश पाम्या, अरि के० शत्रु जेने विषे, एवा संसारांभोनिधौ के० संसाररूप समुद्रनेविषे, नवनौः के० नवीन नौका रूप थईने, तारि के० तारनारी, एवी हे जिनेंद्राणांभारति के० हे जिनेंद्रोना पांत्रीशगुणोएयुक्त एवी वाणी! तुं अवनौ के० आ भूमिनेविषे, अस्मान् के० अमोने द्राक् के० शीघ्र, रक्ष के० रक्षण कर. ॥ ३ ॥

केकिस्थावःक्रियाछक्ति करालाभानयाचिता ॥
प्रज्ञप्तिर्नूतनांभोज करालाभानयाचिता ॥ ४ ॥

व्याख्या— प्रज्ञप्ति के० प्रज्ञप्ति नामे जे अधिष्ठायक देवी, ते वः के० तमारा लाभान् के० लाभने, क्रियात् के० करो. ते प्रज्ञप्ति देवी केवीछे? तो के, केकिस्था—केकि के० मोर, तेना उपर आरोहण करनारी, अने शक्तिकरा के० शक्ति नामे आयुध जेना हस्तनेविषेछे एवी, अने अयाचिता के०—कोइए पण याचना न करेली छतां देनारी, अने नूतनांभोजकरालाभा—नूतन के० नवीन जे अंभोज के० कमल, तेना सरखो कराल के० उत्कृष्टछे आभा के० कांती जेनी, अने नयाचिता के० न्यायेकरी व्याप्त एवीछे. ॥ ४ ॥ इति श्रीधर्मजिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ १५ ॥

अवतरण— हवे श्रीशांतिनाथ जिननी स्तुति शार्दुलविक्रीडितवृत्तेकरीने कहेछे.

परमतापदमानसजन्मन. प्रियपदभवतोभवतोऽवतात ॥
जिनपतेर्मतमस्तजगत्त्रयी परमतापदमानसजन्मन ॥ ३ ॥

व्याख्या—हे भव्यजन ! अस्तजगत्रयीपरमतापदमानसजन्मन —अस्त के० विध्वस्त कर्यो छे, जगत्रयीपरमतापद के० त्रैलोक्यने परम ताप देनारो एवो, मानसजन्मा के० चित्तनेविषे उत्पन्न थनारो मदन जेणे, एवा जिनपते के० निनेश्वरनु, मत के० सिद्धांतरूप मत, ते भवत के० तु जे तेने, भवत के० संसारथी, अवतात् के० रक्षण करो ते मत केवु छे ? तोके—परमतापत्—परमत के० बौद्धादिक मत, तेनी छे आपत् के० विपत्ति जेथी, अर्थात् बौद्धादिकोना मतनु खंडन करनारु, अने अमानसजन्मन प्रियपद—अमान के० संख्या रहित एटले जे गणतीमा न आवे, अने सजन् के० परस्पर मळनारा, अने मन प्रिय के० पंडितोना मनने प्रियकारक एवा छे, पद के० पदो जेनेविषे, एवु छे ॥ ३ ॥

रसितमुच्चतुरगमनायकं दिशतुकांचनकांतिरिताच्युता ॥ धृतधनु फलकासिशराकरै रसितमुच्चतुरंगमनायकं ॥ ४ ॥

व्याख्या—अच्युता के० अच्युता नामे जे अधिष्ठायक देवी, ते कं के० सुखने दिशतु के० समर्पण करो ते अच्युता देवी केवी छे ? तोके—गमनाय के० चालवा माटे अच्चतुर के० अत्यत चतुर, अने रसितं के० हणहणाट शब्द करनारा, अने असितं के० नीलवर्ण एवा उच्चतुरगमनायक के० अश्वश्रेष्ठ प्रत्ये इता के० आरोहण करनारी, अने करै के० पोताना हाथे करीने, धृतधनु फलकासिशराधृत के० धारण कर्या छे, धनु के० धनुष्य, फलक के० खेटक नामा आयुध, असि के० खड्ग अने शर के० बाण जेणे, अने कनककांति —कनक के० सुवर्ण, तेना सरखी जेनी कांति छे, एवी छे ॥ ४ ॥ इति श्री अनंतजिनस्तुति संपूर्ण

अवतरण—हवे श्रीधर्मनाथजिननीस्तुति अनुष्टुप्वृत्ते करीने कहे छे

नम श्रीधर्मनिष्कर्मोदयायमहितायते ॥
मर्त्यामरेंद्रनागेंद्रै र्दयायमहितायते॥१॥

व्याख्या—मर्त्यामरेंद्रनागेंद्रै —मर्त्य के० मनुष्य, अमरेंद्र के० देवेंद्र, अने नागेंद्र के० पातालवासी देव, तेउए महितायते—महित के० पूजित छे, आयति के० उत्तरकाल प्रभुता जेनी, एवा हे श्रीधर्म के० श्रीधर्मनाथ तीर्थंकर, निष्कर्मोदयाय—नि

र्कर्म के० कर्मरहित, एवा मोक्षनोछे उदय के० प्राप्ति जेथी, एटले मोक्षदायक एवा अने दयायमहिताय—दया के० जीवदया, अने यम के० व्रत, तेना हिताय के० हितकारक—एटले जीवदया अने पांचमहाव्रतादिकोनी प्रसिद्धि करनारा एवा ते के० तारा माटे, नम के० नमस्कार थाउ ॥ १ ॥

जीयाज्जिनौघोध्वांतांतं ततानलसमानया ॥

भामंमलत्विषाय स ततानलसमानया ॥ २ ॥

व्याख्या—यः के० जे जिनोनो समुदाय. ततानलसमानया—तत के० विस्तीर्ण एवो जे अनल के० अग्नि. तेना सरखी लसमानया के० देदीप्यमान एवा, भामंमलत्विषा के० कांतीमंमलना समुदाये करीने, ध्वांतांतं के० अज्ञानना नाशने, ततान के० करतो हवो, स जिनौघः के० ते जिनसमूह, जीयात् के० जगत्‌नेविषे जयवंत थाउ. ॥ २॥

भारति द्राक्‌जिनेंद्राणां नवनौरक्षतारिके ॥ सं

सारांभोनिधावस्मा नवनौरक्षतारिके ॥ ३ ॥

व्याख्या— अक्षतारिके—अक्षत के० नथी नाश पाम्या, अरि के० शत्रु जेने विषे, एवा संसारांभोनिधौ के० संसाररूप समुद्रनेविषे, नवनौः के० नवीन नौका रूप थईने, तारि के० तारनारी, एवी हे जिनेंद्राणांभारति के० हे जिनेंद्रोना पांत्री शगुणोएयुक्त एवी वाणी! तुं अवनौ के० आ भूमिनेविषे, अस्मान् के० अमोने द्राक् के० शीघ्र, रक्ष के० रक्षण कर. ॥ ३ ॥

केकिस्थावःक्रियाच्छक्ति कराला भानयाचिता ॥

प्रज्ञप्तिर्नूतनांभोज कराला भानयाचिता ॥ ४ ॥

व्याख्या— प्रज्ञप्ति के० प्रज्ञप्ति नामे जे अधिष्ठायक देवी, ते वः के० तमारा ला भान् के० लाभने, क्रियात् के० करो. ते प्रज्ञप्ति देवी केवीछे? तो के, केकिस्था— केकि के० मोर, तेना उपर आरोहण करनारी, अने शक्तिकरा के० शक्ति नामे आयुध जेना हस्तनेविषेछे एवी, अने अयाचिता के०—कोइए पण याचना न करेली छतां देनारी, अने नूतनांभोजकरालाभा—नूतन के० नवीन जे अंभोज के० कमल, तेना सरखो कराल के० उत्कृष्टछे आभा के० कांती जेनी, अने नयाचिता के० न्यायेकरी व्याप्त एवीछे. ॥ ४ ॥ इति श्रीधर्मजिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ १५ ॥

अवतरण— हवे श्रीशांतिनाथ जिननी स्तुति शार्दुलविक्रीडितवृत्तेकरीने कहेछे.

परमतापदमानसजन्मन. प्रियपदन्नवतोन्नवतोऽवतात् ॥
जिनपतेर्मतमस्तजगत्त्रयी परमतापदमानसजन्मन ॥ ३ ॥

व्याख्या–हे नव्यजन ! अस्तजगत्त्रयीपरमतापदमानसजन्मन –अस्त के० विध्वस्त कर्यो छे, जगत्त्रयीपरमतापद के० त्रैलोक्यने परम ताप देनारो एवो, मानसजन्मा के० चित्तनेविषे उत्पन्न थनारो मदन जेणे, एवा जिनपते के० जिनेश्वरनु, मत के० सिद्धांतरूप मत, ते नवत के० तु जे तेने, नवत के० सतारथी, अवतात् के० रक्षण करो ते मत केवु छे? तोके–परमतापत्–परमत के० बौद्धादिक मत, तेनी छे आपत् के० विपत्ति जेथी, अर्थात् बौद्धादिकोना मतनु खमन करनारु, अने अमानसजन्मन प्रियपद्–अमान के० सख्या रहित एटले जे गणतीमा न आवे, अने सजन् के० परस्पर मलनारा, अने मन प्रिय के० पंडितोना मनने प्रियकारक एवा छे, पदके० पदो जेनेविषे, एवु छे ॥ ३ ॥

रसितमुच्चतुरगमनायकं दिशतुकांचनकातिरिताच्युता ॥ धृत
धनु फलकासिशराकरै रसितमुच्चतुरगमनायक ॥ ४ ॥

व्याख्या–अच्युता के० अच्युता नामे जे अधिष्ठायक देवी, ते कके० सुखने दिशतु के० समर्पण करो ते अच्युता देवी केवी छे? तोके–गमनाय के० चालवा माटे अचतुर के० अत्यत चतुर, अने रसित के० हणहणाट शब्द करनारा, अने असित के० नीलवर्ण एवा, उच्चतुरगमनायक के० अश्वश्रेष्ठ प्रत्ये इता के० आरोहण करनारी, अने करै के० पोताना हाथे करीने, धृतधनु फलकासिशराधृत के० धारण कर्या छे, धनु के० धनुष्य, फलक के० खेटक नामा आयुध, असि के० खड्ग अने शर के० बाण जेणे, अने कनककाति –कनक के० सुवर्ण, तेना सरखी जेनी काति छे , एवी छे ॥ ४ ॥ इति श्री अनतजिनस्तुति सपूर्ण

अवतरण–हवे श्रीधर्मनाथजिननीस्तुति अनुष्टुप्वृत्ते करीने कहे छे

नम श्रीधर्मनिष्कर्मोदयायमहितायते ॥
मर्त्यामरेंद्रनागेंद्रै र्दयायमहितायते॥१॥

व्याख्या–मर्त्यामरेंद्रनागेंद्रै –मर्त्य के० मनुष्य, अमरेंद्र के० देवेंद्र, अने नागेंद्र के० पातालवासी देव, तेउए महितायते–महित के० पूजित छे, आयति के० उत्तरकाल प्रभुता जेनी, एवा हे श्रीधर्म के० श्रीधर्मनाथ तीर्थंकर, निष्कर्मोदयाय–नि

ष्कर्म के० कर्मरहित, एवा मोक्षनोछे उदय के० प्राप्ति जेथी, एटले मोक्षदायक एवा अने दयायमहिताय–दया के० जीवदया, अने यम के० व्रत, तेना हिताय के० हितकारक–एटले जीवदया अने पांचमहाव्रतादिकोनी प्रसिद्धि करनारा एवा ते के० तारा माटे, नमः के० नमस्कार थाउ ॥ १ ॥

जीयाज्जिनौघोध्वांतांतं ततानलसमानया ॥
भामंभलविपायःस ततानलसमानया ॥ २ ॥

व्याख्या–यः के० जे जिनोनो समुदाय, ततानलसमानया–तत के० विस्तीर्ण एवो जे अनल के० अग्नि, तेना सरखी लसमानया के० दैदीप्यमान एवा, भामंभलविपा के० कातीमंभलना समुदाये करीने, ध्वांतांतं के० अज्ञानना नाशने, ततानके० करतो हवो; सःज्ञिनौघः के० ते जिनसमूह, जीयात् के० जगत्नेविषे जयवत थाउ.॥ २॥

भारतिद्राक्जिनेंद्राणां नवनौरक्षतारिके ॥ सं
सारांभोनिधावस्मा नवनौरक्षतारिके ॥ ३ ॥

व्याख्या– अक्षतारिके–अक्षत के० नथी नाश पाम्या, अरि के० शत्रु जेने विषे, एवा संसारांभोनिधौ के० संसाररूप समुद्रनेविषे, नवनौः के० नवीन नौका रूप थईने, तारि के० तारनारी, एवी हे जिनेंद्राणांभारति के० हे जिनेंद्रोना पांत्रीशगुणोएयुक्त एवी वाणी! तुं अवनौ के० आ भूमिनेविषे, अस्मान् के० अमोने द्राक् के० शीघ्र, रक्ष के० रक्षण कर. ॥ ३ ॥

केकिस्थावःक्रियाच्छक्ति करालाभानयाचिता ॥
प्रज्ञप्तिर्नूतनांभोज करालाभानयाचिता ॥ ४ ॥

व्याख्या– प्रज्ञप्ति के० प्रज्ञप्ति नामे जे अधिष्ठायक देवी, ते वः के० तमारा लाभान् के० लाभने, क्रियात् के० करो. ते प्रज्ञप्ति देवी केवीछे ? तो के, केकिस्था–केकि के० मोर, तेना उपर आरोहण करनारी, अने शक्तिकरा के० शक्ति नामे आयुध जेना हस्तनेविषेछे एवी, अने अयाचिता के०–कोइए पण याचना न करेली छतां देनारी, अने नूतनांभोजकरालाभा–नूतन के० नवीन जे अंभोज के० कमल, तेना सरखो कराल के० उत्कृष्टछे आभा के० कांती जेनी, अने नयाचिता के० न्यायेकरी व्याप्त एवीछे. ॥ ४ ॥ इति श्रीधर्मजिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ १५ ॥

अवतरण– हवे श्रीशांतिनाथ जिननी स्तुति शार्दुलविक्रीडितवृत्तेकरीने कहेछे.

परमतापदमानसजन्मन प्रियपदन्नवतोन्नवतोऽवतात ॥
जिनपतेर्मतमस्तजगत्त्रयी परमतापदमानसजन्मन ॥ ३ ॥

व्याख्या–हे नव्यजन ! अस्तजगत्रयीपरमतापदमानसजन्मन –अस्त के० वि ध्वस्त कर्यो ठे, जगत्त्रयीपरमतापद के० त्रैलोक्यने परम ताप देनारो एवो, मा नसजन्मा के० चित्तनेविषे उत्पन्न थनारो मदन जेणे, एवा जिनपते के० जि नेश्वरनु, मत के० सिद्धांतरूप मत, ते नवत के० तु जे तेने, नवत के० सम रथी, अवतात् के० रक्षण करो ते मत केवु ठे? तोके–परमतापत्–परमत के० बौद्धादिक मत, तेनी ठे आपत् के० विपत्ति जेथी, अर्थात् बौद्धादिकोना मतनुं खंडन करनारु, अने अमानसजन्मन प्रियपद–अमान के० संख्या रहित एटले जे गण तीमा न आवे, अने सजन् के० परस्पर मळनारा, अने मन प्रिय के० पंडितोना मनने प्रियकारक एवा ठे, पद के० पदो जेनेविषे, एवु ठे ॥ ३ ॥

रसितमुच्चतुरगमनायकं दिशतुकांचनकांतिरिताच्युता ॥ धृत
धनु फलकासिशराकरै रसितमुच्चतुरंगमनायकं ॥ ४ ॥

व्याख्या–अच्युता के० अच्युता नामे जे अधिष्ठायक देवी, ते वके० सुखने दिशतु के० समर्पण करो ते अच्युता देवी केवी ठे? तोके–गमनाय के० चालवा माटे अच्चतुर के० अत्यंत चतुर, अने रसित के० हणहणाट शब्द करनारा, अने असितं के० नीलवर्ण एवा, उच्चतुरगमनायक के० अश्वश्रेष्ठ प्रत्ये इता के० आ रोहण करनारी, अने करै के० पोताना हाथे करीने, धृतधनु फलकासिशरा– धृत के० धारण कर्या ठे, धनु के० धनुष्य, फलक के० खेटक नामा आयुध, अ सि के० खड्ग अने शर के० बाण जेणे, अने कनककांति –कनक के० सुवर्ण, तेना सरखी जेनी कांति ठे , एवी ठे ॥ ४ ॥ इति श्री अनंतजिनस्तुति संपूर्ण

अवतरण–हवे श्रीधर्मनाथजिननीस्तुति अनुष्टुप्वृत्ते करीने कहे ठे

नम श्रीधर्मनिष्कर्मोदयायमहितायते ॥
मर्त्यामरेंद्रनागेंद्रै र्दयायमहितायते॥१॥

व्याख्या–मर्त्यामरेंद्रनागेंद्रै –मर्त्य के० मनुष्य, अमरेंद्र के० देवेंद्र, अने नागेंद्र के० पातालवासी देव, तेउए महितायते–महित के० पूजित ठे, आयति के० उ त्तरकाळ प्रभुता जेनी, एवा हे श्रीधर्म के० श्रीधर्मनाथ तीर्थंकर, निष्कर्मोदयाय–नि

ष्कर्म के० कर्मरहित, एवा मोक्षनोजे उदय के० प्राप्ति जेथी, एटले मोक्षदायक एवा अने दयायमहिताय—दया के० जीवदया, अने यम के० व्रत, तेना हिताय के० हितकारक—एटले जीवदया अने पांचमहाव्रतादिकोनी प्रसिद्धि करनारा एवा ते के० तारा माटे, नमः के० नमस्कार थाउ ॥ १ ॥

जीयाज्जिनौघोध्वांतांतं ततानलसमानया ॥
भामंडलत्विषायःस ततानलसमानया ॥ २ ॥

व्याख्या—यः के०जे जिनोनो समुदाय. ततानलसमानया—तत के०विस्तीर्ण एवो जे अनल के०अग्नि, तेना सरखी लसमानया के० देदीप्यमान एवा, भामंडलत्विषा के०कांतीमंडलना समुदाये करीने, ध्वांतांतं के०अज्ञानना नाशने, ततानके० करतो हवो; स जिनौघ. के० ते जिनसमूह, जीयात् के०जगतनेविषे जयवंत थाउ.॥२॥

भारतिद्राक्जिनेंद्राणां नवनौरक्षतारिके ॥ सं
सारांभोनिधावस्मा नवनौरक्षतारिके ॥ ३ ॥

व्याख्या— अक्षतारिके—अक्षत के० नथी नाश पाम्या, अरि के० शत्रु जेने विषे, एवा संसारांभोनिधौ के० संसाररूप समुद्रनेविषे. नवनौः के० नवीन नौका रूप थईने, तारि के० तारनारी, एवी हे जिनेंद्राणांभारति के० हे जिनेंद्रोना पांत्रीशगुणोएयुक्त एवी वाणी! तुं अवनौ के० आ भूमिनेविषे, अस्मान् के० अमोने द्राक् के० शीघ्र, रक्ष के० रक्षण कर. ॥ ३ ॥

केकिस्थाव क्रियाद्भक्ति करालाभानयाचिता ॥
प्रज्ञप्तिर्नूतनांभोज करालाभानयाचिता ॥ ४ ॥

व्याख्या— प्रज्ञप्ति के० प्रज्ञप्ति नामे जे अधिष्ठायक देवी, ते व के० अमारा ला भान् के० लाभने. क्रियात् के० करो. ते प्रज्ञप्ति देवी केवीछे? तो के, केकिस्था— केकि के० मोर, तेना ऊपर आरोहण करनारी, अने शक्तिकरा के० शक्ति नामे आयुध जेना हस्तनेविषेछे एवी, अने अयाचिता के०—कोइए पण याचना न क रेली छतां देनारी, अने नूतनांभोजकरालाभा—नूतन के० नवीन जे अंभोज के० कमल, तेना सरखो कराल के० उत्कटछे आभा के० कांती जेनी, अने नयाचिता के० न्यायेकरी व्याप्त एवीछे. ॥ ४ ॥ इति श्रीधर्मजिनस्तुति संपूर्णा ॥ १५ ॥

अवतरण— हवे श्रीशांतिनाथ जिननीस्तुति शार्दूलविक्रीडितवृत्तमां करेछे.

राजत्यानवपद्मरागरुचिभि पादैर्जिताष्टापदा ॥ दे
ऽकोपद्रुतजातरूपविभयातन्वार्यधीरक्षमां ॥ बिभ्र
त्यामरसेव्ययाजिनपतेश्रीशांतिनाथाऽस्मरो ॥ देको
पद्रुतजातरूपविभयातन्वार्यधीरक्षमां ॥ १ ॥

व्याख्या– हे जिनपते के० हे केवलीना अधिपते एवा हे शांतिनाथ के० शांति नाथ नामे हे भगवन् ! तु मां के० मने रक्ष के० पालन कर तु केवोछे? (ते सवो धन करी कहेछे) हे अकोप के० कोपरहित, अने हे आर्य के० हे श्रेष्ठ, अने हे धीर क० परीसहादिके करीने क्षोभ न पामनारा, अने अमरसेव्यया के० देवोए सेवन करवा माटे योग्य एवा, अने द्रुतजातरूपविभया–द्रुत के० तपावेलु ए वु जे जातरूप के० सुवर्ण, तेना सरखीछे विभा के०कांती जेनी, एवी अने क्षमां के० सहनशक्तिने, बिभ्रत्या के० धारण करनारी एवी, अने अतन्वा के० महोटी एवी, अने नवपद्मरागरुचिभि –नव के० नवीन जे पद्म के० कमल, तेनो जे रा ग के० रंग, तेना सरखीछे रुचि के० कांति जेमनी एवा पादै के० चरणोए करी ने राजत्या के० शोभनारी एवी तन्वा के० पोतानी मूर्तिए जिताष्टापदाः–जित के० जीत्योछे, अष्टापदादि के०सुवर्णपर्वत एवो मेरुजेणे एवा, अने हे अस्मरोद्रेकोप द्रुत–स्मर के० कंदर्प, तेनो जे उद्रेक के० वेग–तेणे करीने उपद्रुत के० उपद्रवने पामेला नथी एवा, अने जातरूप–जात के० उत्पन्न थयुछे, जगतकरतां अतिशय एवु रूप के० सौंदर्य जेने एवा, अने विनय के० नीकली गयोछे नय जेथी, एवा अने हे आर्यधी –आर्य के० प्रशंसा करवा माटे योग्यछे, धी के० बुद्धि जेनी एवा, अथवा आर्यधी एवो तुं, मारू रक्षण कर एवो संबंध था श्लोकमां श्रीशांतिना थने मेरुपर्वतनी सादृश देखाड्याछे, ते एम के–मेरुपर्वत पण पद्मरागमणिमय एवा पोताना पादै के० भूउन्नत जे पर्वतो, तेउए करी शोभेछे, अने सुवर्णकांतिने पोतरूपे एवी भूमिने धारण करेछे, अने देवोए सेव्य इत्यादिक सादृश्य जाणवु ॥१॥

तेजीनामुरविद्विपोजिनव्रपामालाढधानारजो ॥ रा
ज्यानेकपपारिजातसुमन सतानकातांचिता ॥ की
र्त्यावृन्दममत्विभेपदपियेनप्राप्तलोकत्रयी ॥ रा
ज्यानेकपपारिजातसुमन सतानकातांचिता ॥ ७ ॥

व्याख्या—येके० जे जिनश्रेष्ठ, प्राप्तलोकत्रयीराज्याः के० प्राप्त थयुंछे त्रैलोक्यनुं राज्य जेने. एवुं छतां पण ऽस्मरपि के० किंचित पण. नमेरु के० मदने न स्वीकारता एवा, ते जिनवृषा. के० ते जिनश्रेष्ठ, जीयासुः के० जयवंत थाओ. ते केवाछे ? तोके, अविद्विषः के० जेमने शत्रुनथी एवा, अने रजोराज्यामेदुरपारिजातसुमन संतानकांतां— रजके० पराग, तेनी जे राजी के० श्रेणी, तेणे करीने मेदुर के० पुष्ट एवा जे पारिजातसुमन.संतान के० कल्पवृक्षोना पुष्पोनो समुदाय, तेणए करीने कांतके० मनोहर एवी, मालां के० पुष्पमालाने दधाना के० धारणकरनारा. अने कुंदसमत्विषा के० कुंदपुष्पसरखी श्वेतवर्ण जेनी कांतीछे, एवी कीर्त्या के० कीर्तिए चिता के० व्याप्त, अने अपारिजातसुमन'कांतांचिता'—अपके० नष्ट थयोछे, अरिजातके० शत्रुसमूह जेथी, एवा जे सुमनस् के० देव अथवा पंडित, तेओनो जे संतान के० समुदाय, तेमनो जे कांतके० मस्तकप्रांत अथवा कांता के० स्त्रीओ, तेमणे अंचित के० पूजित, एवाछे. एमां मस्तक पक्षे अंचितके० वंदन करेला, एवु समजवुं.

जैनेंद्रंमतमातनोतुसततंसम्यक्दृशांसद्गुणा ॥ लीलान्नंगमहा
रिभिन्नमदनंतापापहृद्यामरं ॥ दुर्निर्भेदनिरंतरांतरतमोनिर्ना
शिपर्युल्लस ॥ ल्लीलानंगमहारिभिन्नमदनंतापापहृद्यामरं ॥ ३ ॥

व्याख्याः—जैनेंद्रं के० जिनेंद्रसंबंधी एवुं मत के० सिद्धांतरूप जे मत ते, सम्यक्दृशांके० सम्यक्दृष्टिपुरुषोने सद्गुणालीलाज्नं के० उत्तमगुणोनी जे श्रेणी, तेना लाभने, सततं के० निरंतर, आतनोतु के० विस्तारकरो. ते मत केवुंछे? तोके—गमहारि—गमके० समानपाठना आलावा तेओए करीने हारि के० मनोहर, अने भिन्नमदनं के० भेदन कर्योछे मदन जेणे एवुं, अने तापापहृत् के० संसारसंबंधी तापनो नाश करनारुं, अने यामरं— यामके० महाव्रत, तेने र के० देनारुं, अने दुर्निर्भेद निरंतरांतरतमोनिर्नाशि—दुर्निर्भेद के० भेदन करवामाटे अयोग्य, अने निरंतर के० निबिड एवुं जे आंतरतम के० मनथी उत्पन्न थएलुं मोहरूप तम, तेनो निर्नाशि के० अत्यंतनाश करनारूं, अने पर्युल्लसल्लीलानंगमहारिभित्—पर्युल्लसत् के० अतिशयछे लीला के० विलास जेओनो एवा, अने अनंग के० न नाश पामनारा एवा जे महारि के० महोटा शत्रु, तेओनुं भित् के० भेदन करनारुं, अने नमदनंतापापहृद्यामरं—नमत् के० वंदन करनाराछे, अनंत के० असंख्य, अपाप के० [illegible] हृद्य के० मनोहर, एवा अमर के० देव जेने, एवुंछे. ॥ ३ ॥

दंभत्रकमंडलूनिकलयन्सब्रह्मशांतिःक्रियात् ॥ सं
त्यज्यानिशमीक्षणेनशमिनोमुक्ताक्षमालीहितं ॥
ततातष्टापदपिंडपिंगलरुचिर्योऽधारयन्मूढतां ॥ सत्य
ज्यानिशमीक्षणेनशमिनोमुक्ताक्षमालीहित ॥ ४ ॥

व्याख्या-य ब्रह्मशांति के०, जे ब्रह्मशांति नामक यक्षदेव, शमिन के० उप शमयुक्त एवा कोइपण मुनिने अनिशं के० निरंतर ईक्षणेन के० पोताना अवलो कने करीने, मूढता के० मूर्खपणाने, सत्यज्य के० दूर करीने, ते मुक्ताक्षमाली हितं-मुक्त के० त्यागीने, अक्षमा के० क्रूरता जेणे, एवा जे यति, तेमनी जे आ ली के० श्रेणी, तेने पण, ईहित के० इच्छित, एवा हित के० मोक्षरूप हितने अ धारयत् के० धारण करतो हवो, स के० ते ब्रह्मशांति नामक यक्ष, क्षणेन के० वेगेकरीने श के० सुखने क्रियात् के० करो ते ब्रह्मशांति यक्ष केवोछे ? तो के-मनि के० उत्तम अने अव्य के० नवीन एवा दंभत्रकमंडलूनि-दंभ के० रत्नमय दंभ, छत्र के० सुवर्णनुं छत्र, अने कमंडलू के० पाणीए नरेलुं कमंडल एउने कलयन् के० धारण करनारो, अने शमी के० उपशमे युक्त, अने इन के० श्रेष्ठ अने मुक्ताक्षमाली के० मोतीउनी छे जपमाला जेनी एवो, अने ततातष्टाप दपिंडपिंगलरुचि तत के० तपेलो जे अष्टापदपिंड के० सुवर्णपिंड, तेना सरखी पिंगल के० पीतवर्ण ने रुचि के० कांती जेनी एवोछे ॥ ४ ॥ इति श्रीशांतिजिन स्तुति

अवतरण-हवे श्री कुंथुनाथनीस्तुति मालिनीवृत्तेकरीने कहेछे

नमतुममनम श्रीकुंथुनाथायतस्मा ॥ यमितशमितमोहा
यामितापायहृद्य. ॥ सकलभरतभर्ताभूज्जिनोप्यक्ष
पाशा ॥ यमितशमितमोहायामितापायहृद्य ॥ १ ॥

व्याख्या-य के० जे कुंथुनाथ नगवान, हृद्य के० मनोहर, अने सकलभरत भर्ता के० संपूर्ण भरतक्षेत्रनो धणी एवो, जिनोपि के० जिन छतां पण अमिता पायहृत्-अमित के० पाररहिताना जे अपायके० क्लेश, तेउनो हृत्के० हरण करनारा अनूत् के० होतो हवो तस्मै के० ते, अक्षपाशायमितशमितमोहाय-अक्ष पाश, के० इंद्रियरूप जे पाश तेउए करीने आयमित के० प्रबल एवो शमिन के० समाप्योछे, मोह के० मोहरूप कर्मनो आयामि के० विस्तार पामनारो, उप

के० संताप जेणे. एवा श्री कुंथुनाथाय के० कुंथुनाथ नामक जिनेश्वरने मम के० मारा नमः के० नमस्कार, भवतु के० थाउ. ॥ १ ॥

सकलजिनपतिभ्यःपावनेभ्योनमःस ॥ न्नयनरवर
देभ्यःसारवादस्तुतेभ्यः ॥ समधिगतनुतिभ्योदेववृं
दाद्गरीयो ॥ नयनरवरदेभ्यःसारवादस्तुतेभ्यः॥ २ ॥

व्याख्या–तेभ्यः के० ते, सकलजिनपतिभ्यः के० संपूर्ण एवा तीर्थंकरोने मा हरो नम. के० नमस्कार, अस्तु के० थाउ. ते जिनपति केवाछे? तो के–पावनेभ्यः के० पवित्र, अने सन्नयनरवरदेभ्य.–सत्के० उत्तमप्रकारनां छे, नयन के० नेत्रो, रवके० धर्मदेशना शब्द, अने रदके० दंत जेमना एवा, अने सारवादस्तुतेभ्यः–सार के० उत्तम छे, वाद के० वचन जेमनां, एवा पुरषोए स्तुतेभ्य· के० स्तवन करेला, अने गरीयोनयनरवरदेभ्यः–गरीय के० मोहोटो छे.नय के० नैगमादिक नय नुज्ञान जेउने, एवा नरके० मनुष्योने माटे वरदेभ्य. के० वर देनारा, अने सारवात् के० स्तुति शब्दे युक्त एवा, देववृंदात् के० देवसमुदायथी, समधिगतनुतिभ्यः के० प्राप्त थएली छे स्तुति जेउने, एवा छे. ॥ २ ॥

स्मरतविगतमुडंजैनचंडंचकास ॥ त्कविपदगमभंगंहेतुदंतंकृतांतं ॥
द्विरदमिवसमुद्यद्दानमार्गंधुताऽघै ॥ कविपदगमभंगंहेतुदंतंकृतांतं ॥३॥

व्याख्या–हे जनो, यूयंके० तमे, जैनचंडं के० जिनेश्वरसंबंधी, कृतांतं के० सिद्धांतने, द्विरदमिव के० हस्तिनी साम्यताए स्मरत के० स्मरण करो. ते जिनसिद्धांत अने हस्ति केवाछे? ते क्रमे करी कहे छे. विगतमुडं–विगतके० गयुं छे, मुडाके० प्रमाण जेनुं, एटले अत्यंत विशाल. एवो. तेमज गजपण अत्यंत विशाळ, अने चकासत्कविपदगमभंगं–चकासतके० शोभायमान छे, कविपदानि के० पंमितोए सन्मान करवाने योग्य एवा शब्द गमके० सरखा पाठोना आलावा, अने भंग के० रचना जेने विषे एवो तेमज–गजपक्षे–शोभायमान अने पंमितोए सन्मान करवाने योग्य छे; पद गमभंग के० पायना चालवानी रचना जेनेविषे एवो–अने कृतांततुदंतं के० मृत्युने टाळनारो–गजपक्षे–कृतांतं के० कस्यो छे, पोताना प्रद्युनो अंत के:० मेन्यादिकोनो नाश जेणे, एवा जे कृतांतके० यमतुल्य एवा पण शत्रुने युद्धनेविषे तुदंतं के० व्यथा उत्पन्न करनारो, अर्थात्–मारनारो–अने [illegible] न मुद्यत् के० दैदीप्यमान छे. दानमार्ग के० दाननो क्रम [illegible] देदीप्यमान

ठे दानमार्गके० मदोदके सहित एवो मार्ग जेथी एवो. अने धुतावकविपदग तके० उखेडी नाख्युंछे, अघके० पापथी उत्पन्न थएला एक के० असाधारण पतृके० आपदारूप अगके० वृक्ष जेणे एवो -गजपक्षे, धुतके० नष्ट थयुंछे, अघ के० पापजेनुं, एवो जे पुण्यवान पुरुष, तेनुंज जे एक विपद के० केवल विशिष्ट एवुं स्थान, ते प्रत्ये गके० संचार करनारो एवो- अने अजगके० जगरहित एवो, गज पण शत्रुथी जग रहित एवो–अने हेतुदतके० दृष्टांतरूपछे दांत जेने, एटले दंते युक्त एवा पुरुषज बीजाने स्पष्ट बोध करनारो थायछे, तेमज सिद्धांतपण दृष्टांत रूप दंते युक्त होतो थकोज लोकोने बोध करनारो, एमाटे हेतुदंत जाणवो गज पण शत्रुनो नाश करवा माटे हेतुके० कारण छे दंत जेना एवोछे ॥ ३ ॥

प्रचलदचिररोचिश्चारुगात्रेसमुद्यत्सदसिफलकरामेऽभीमहासेऽरिभीति।
सपदिपुरुषदत्तेतेभवतुप्रसादा ।सदसिफलकरामेऽभीमहासेरिभीति॥४॥

व्याख्या–प्रचलत् के० चलन पामनारी जे अचिर के० विजली, तेनी सरखी जे रोचि के० कांति–तेणे करीने सुंदरछे गात्र के० शरीर जेनुं, एवी हे प्रचलदचि ररोचिश्चारुगात्रे'–अने अभीमके० बीजाने भयोत्पादक नथी, हासके० हास्य जेनुं, एवी हे अभीमहासे ' अने समुद्यत् के० देदीप्यमान एवा, सदसिके० उत्तम खड्ग अने फलक के० खेटक, ए आयुधोए करी रामा के० मनोहर, एवी हे सदसिफलकरामे' अने अरि के० शत्रु तेउथी जे भीके० भय, तेणे करीने इताके० रहित एवी हे अ रिभीते' अने अभी के० भयरहित एवीजे महासैरिभी के० महोटी महिषी, तेन विषे इता के० आरोहण करनारी एवी हे भीमहासैरिभीते ' एवी हे पुरुषदत्ते के० पुरुषदत्ता नामे अधिष्ठायक देवि,तेके० तारो प्रसादा के०प्रसाद, मेके०मने सदसि के० सनानेविषे, सपदिके० त्वरित फलकरा के० मनोवांछित फलने उत्पन्न करनारा, भ तुके० थाउ ॥ ४ ॥ इति कुंथुनाथजिनस्तुति संपूर्णा ॥१७॥ श्लोकसंख्या ॥६८॥

अवतरण–हवे अरनाथ जिननी स्तुति कहेछे

व्यमुंचच्चक्रवर्तिलक्ष्मीमिहतृणमिवयः क्षणेनतं । सन्नमदमरमा नमसारमनेकपराजितामर॥ द्युतकलधौतकांतमानमतानदित नृभिः किनाक।सन्नमदमरमानससारमनेकपराजितामर॥१॥

व्याख्या –इह के० आ जगतकेजनेविषे य के० जे अरनाथ जिनवर, अने कराजि–हनेकप के० हस्ति, तेउए करी राजित के० शोभायमान, एवी चक्रवर्ति

लक्ष्मी के० नवनिधानादिक चक्रवर्त्तिनी संपत्तिने तृणमिव के० तृणनी जेम, व्युत्सृजन् के० छोडतो हवो. हे भव्यजनो! तमे तं के० ते अरं के० श्रीअरनाथ नामे जिनेश्वरने आनमत के० नमस्कार करो. ते अरनाथ केवो छे? तोके—सन्नमदमरमानसंसारं—सन्नके० नाश पामेल छे, मद के० आठ मद, मर के० मरण, मान के० अहंकार, अने संसार के० जन्ममरणरूप संसार जेथी; एवो अने—डुतकलधौतकांत—द्रुत के० गालेलु एवुं जे कलधौत के० सुवर्ण, तेना सरखो कांत के० मनोहर. अने आनंदितभूरिभक्तिभाक्सन्नमदमरमानसं— आनंदित के० आनंद पमाडेला छे, भूरिभक्तिभाक् के० महोटी भक्ति सेवन करनारा एवा सन्नमत् के० उत्तम प्रकारे करी नमस्कार करनारा, अमर के० देव जेणे एवो, अने सारं के० सारभूत एवो अने, अनेकपराजितामरं—अनेक के० घणा पराजित के० पराभव पमाडेला छे अमर के० मागधतीर्थकुमार प्रमुख देव जेणे. एवो छे. ॥ १ ॥

स्तौतिसमंततः समवसरणभूमौयंसुरावलिः ॥ सकल
कलाकलापकलिताऽपमदाऽरुणकरमपापदं ॥ तंजि
नराजविसरमुद्भासितजन्मजरंनमाम्यहं ॥ सकलक
लाकलाऽ पकलितापमदारुणकरमपापदं ॥ २ ॥

व्याख्या—सकलकलाकलापकलिता—सकल के० संपूर्ण जे कलाउ, एटले ज्ञानकला, तेउनो जे कलाप के० समूह— तेणे करीने कलित के० शोभित, एवी अने सकलकला के० स्तुतिरूप कोलाहल शब्दे युक्त एवी अने, कला के० मनोहर एवी सुरावलिः के० चारनिकाय देव, तेनी जे श्रेणी—यंके० जे जिनसमूहने समवसरणभूमौ के० समवसरणभूमिनेविषे समंततः के० चारे तरफ चार वाजुए स्तौति के० स्तुति करे छे; तके० ते अपमदारुणकरं—अप के० गया छे मद के० आठ मद जेथी, अने अरुण के० आरक्त छे. कर के० हस्त जेना एवा, अने अपापदं—अपाप के० पुण्य, तेने देनारा एवा, अने समुद्भासितजन्मजरं—समुद्भासित के० टाल्यां छे, जन्म अने जरा जेणे एवा, अने अपकलितापं—अप के० गयो छे, कलि के० क्लेश अने ताप के० संताप जेथी एवा, अने अदारुणकरं के० नथी जे दारुण के० भयंकर एवुं जे कर्म, तेने करं के० करनारा एवा, अने अपापदं—अप के० गएली छे आपदा जेथी एवा, जिनराजविसरं के० जिनश्रेष्ठोना समूहने, अहं के० हुं नमामि के० नमस्कार करुं छुं. ॥ २ ॥

भीममहाभवाब्धिभवभीतिविभेदिपरास्तविस्फुरत् ॥
परमतमोहमानमतनूनमलंघनमघवतेऽहितं ॥ जिन
पतिमतमपारमर्त्यामरनिर्वृतिशर्मकारणं ॥ परमत
मोहमानमतनूनमलंघनमघवतेऽहित ॥ ३ ॥

व्याख्या–हेभव्यजनो ! तमे जिनपतिमत के० श्रीजिनेश्वरना मतने नूनं के० निश्चये करीने आनमतके०वदन करो ते जिनमत केवु छे? तो के–भीममहा भवाब्धि भवभीतिविभेदि–भीम के० भयकर एवो जे महाभवाब्धिके० महोटो भवसमुद्र,तेथी उपनी जे भवभीति के० जन्म मरणादिकभय, तेनु विभेदिके० भेदन करनारु, अने परास्तविस्फुरत्परमतमोहमान–परास्त के० निराकरण कस्या छे, विस्फुरत् के० प्रगट एवा परमत के० शाक्यादिक मिथ्यात्वमतना मोह के० अज्ञान अने मान के० अहंकार जेणे एवु, अने अतनून के० महोटु,अने अलके० अत्यंत, घनके० निबिड गहन एवु, अने अघवते के० पापी पुरूषमाटे अहित के० अहितकारक एवु, अने अपारमर्त्यामरनिर्वृतिशर्मकारण–अपार के० अनतछे अने मर्त्य के० मनुष्य अने अमर के० देव, तेउंनुजे निर्वृति के० मोक्षसुख, तेनु कारण के० निमित्त एवु, अने परमतमोह–परम के० उत्कृष्ट एवु जे तमके० अज्ञान तेनो नाश करनारु एवु, अने अलंघनमघवता–अलंघनके०कोइ पण उल्लंघन करवामाटे अशक्य एवो जे मघवा के० अच्युतेंद्र, तेणे ईहितंके० श्रवण करवानी इछा करेलु एवुं

याऽत्रविचित्रवर्णविनतात्मजपृष्ठमधिष्ठिताद्भुता ॥
त्समतनुभागविकृतधीरसमदवैरिवधामहारिभि ॥
तडिदिवभातिसाध्यघनमूर्द्धनिचक्रधरास्तुसामुदे॥
समतनुभागविकृतधीरसमदवैरिवधामहारिभि ॥४॥

व्याख्या– अत्र के० आ जगतनेविषे असमदवैरिव–असम के० निरूपम एवो दवैरिव के० दावानलज जाणे होयना ! एवा अने धामहारिभि के० पोताना तेजे करीने मनोहर एवा महारिभि के० मोटा चक्रायुधोए करीने गविके० भूमिनेविषे कृतधीरसमदवैरिवधा–कृतके० कस्योछे,धीरके० धैर्यवान अने समदके० मद सहित एवा शत्रुनो वध जेणे एवी माटेज चक्रधरा के० चक्रधरा नामे करीने प्रसिद्ध एवी याके० जे अधिष्ठायक देवी, साध्यघनमूर्द्धनि के० सध्याकाल सबंधी मेघना

मस्तकनेविषे, एटले मेघ ऊपर तडिदिवं के० विजली सरखी भाति के० शोभेछे; सा के० ते चक्रधरा देवी, मुदे के० हर्षने माटे अस्तुके० थाउ. ते देवी केवी छे? तो के–विचित्रवर्णविनतात्मजपृष्ठमधिष्ठिता–विचित्र के० नानाप्रकारनोछे वर्ण के० शरीरनो रंग जेनो, एवो जे विनतात्मज के० गरुड, तेना पृष्ठ के० पृष्ठभाग प्रत्ये अधिष्ठता के० आरूढ थनारी, अने हुतात्समतनुभाक् के० अग्नि सरखा छे दीप्यमान तनुं के० देहने धारण करनारी, अने अविकृतधी. के० विकाररहितछे बुद्धि जेनी, अने असमतनुभा–असम के० निरुपमछे, तनुभा के० शरीरनी कांती जेनी एवीछे. ॥ ४ ॥ इति अरनाथजिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ १७ ॥ ७२ ॥

अवतरण– हवे मल्लिनाथजिननी स्तुति रुचिरावृत्ते करीने कहेछे.

नुदंस्तनुंप्रवितरमल्लिनाथमे ॥ प्रियंगुरो
चिररुचिरोचितांवरं ॥ विडंवयन्वररुचिमंम
लोज्वलः ॥ प्रियंगुरोऽचिररुचिरोचितांवरं ॥१॥

व्याख्या–हेगुरो के० गुरु एवा हे मल्लिनाथ के० हे मल्लिनाथनामे जिनेश्वर! प्रियंगुरोचिः के० प्रियंगु वृक्ष सरखी जेनी कांति छे एवा अने वररुचिमंमलोज्व लः–वर के० श्रेष्ट एवुं जे रुचिमंमल के० कांतिमंमल तेणे करीने उज्वल के० छे दीप्यमान एवो तुं. अरुचिरोचितां–नथी जे रुचिरके० मनोहर, अने उचितके०योग्य एवा तनुं के० पोताना देहने नुदन् के० क्षय पमाडता थका अने अचिररुचिरोचि तांवरं–अचिररुचि के० विजली, तेणे रोचित के० प्रकाशित एवुं जे अंबर के० आकाश, तेने विडंवयन् के० अनुकरण करतो थको एटले विजलीए युक्त एवा मेघ सरखुं शरीर धारण करतो थको, मेके० मने प्रियके० प्रियकारक एवा वरके० वरने प्रवितर के० समर्पण कर. ॥ १ ॥

नवाजतंजगदवतोवपुर्व्यथा ॥ कदंवकेरवशतपत्र संपदं ॥
जिनोत्तमान्स्तुतदधतःस्रजंस्फुर त्कदंवकेरवशतपत्र संपदं॥२॥

व्याख्या–हे भव्यजनो! तमे वपुर्व्यथाकदंवकं–वपुके० शरीर, तेनी जे व्यथा के०पीडा तेउनो जे कदंव के० समुदाय, तेणे करीने अवतके० रक्षण, अने नवनके० ताप पामनारछे त्रस के० प्राणी जेनेविषे. एवुं जे पदके० स्थान, तेप्रत्ये गतके० प्राप्त थएला एवा जगतके० जगतने जवान के० वेगकरीने अवत. के० [illegible] एवा अने स्फुरत्कदंवकेरवशतपत्रसंपदं–स्फुरत के० प्रकाशित [illegible]

१ त्वमवनतान्जिनोत्तमकृतांतभवाद्विदुषोऽ वसदनुमानसंग
मनयाततमोदयित ॥ शिवसुखसाधकस्त्वभिदधत्सुधि
यांचरण वसदनुमानसंगमनयाततमोदयित ॥ ३ ॥

व्याख्या–सत् के० उत्तम प्रकारनु जे अनुमान के० प्रत्यक्ष १ अनुमान २ उपमान ३ आगम ४ ए चारप्रकारना अनुमान, तेनो छे सगमन के० सगती जे ने एवा हे सदनुमान सगमन ! अने यात के० गएलु छे, तम के० अज्ञान जेनु एवा जे यति, तेउना दयित के० वल्लभ एवा हे याततमोदयित ! अने गम के० सरखा पाठोना अलाप अने नय के० नैगमादिक सातनय, तेउए करी आतत के० विस्तृत एवा हे गमनयातत ! अने मोद के० आनंद उत्पन्न करना रा एवा हे मोदयित ! एवा हे जिनोत्तम कृतान्त के० जिनश्रेष्ठोना सिद्धांत ! त्व के० तु, सुधियां के० पन्डितोना अनुमानस के० मननो अंगीकार करीने वसत के० वास करतो थको अने शिवसुख साधक के० मोक्ष सुखनु साधक एवा चर ण के० चारित्रने समभिदधत्के० देखाडतो थको, अवनतान्के० तमारामाटे अ त्यंतनम्र एवा विदुष के० जिनमत जाणनारा पन्डितोने भवात् के० ससारथी अ व के० रक्षण करो ॥ ३ ॥

अधिगतगोधिकाकनकरुक्तवगौर्युचिता ॥ कमलकरा
जितामरसभास्यतुलोपकृत ॥ मृगमदपत्रभगतिलकैर्व
दनदधती ॥ कमलकराजितामरसभास्यतुलोपकृत॥४॥

व्याख्या–हे भव्यजन! गौरी के० गौरीनामे जे अधिष्ठायकदेवी, ते तव के० ता रा लोपकृत के० नाश करनारो जे शत्रु तेने ते नअस्यतु के० नाश करो ते गौरी देवी केवीछे ? तो के–अधिगतगोधिका–अधिगत के० प्राप्त थइछे, गोधिका के० दे ववाहन विशेष जेने एवी, अने कनकरुक् के० सोनासरखी छे कांती जेनी, अने कमलकरा के० कमल छे हस्तनेविषे जेना एवी, अने जितामरसभा–पोतना स्वरूपसौंदर्य करीने जित के० निष्प्रभ करीछे, अमरसभा के० देवोनी सभा जे णे एवी, अने मृगमदपत्रभगतिलकै –मृगमद के० कस्तूरि, तेनो जे पत्रभगके० पत्ररचना अर्थात् पीअल, अने तिलक, एउए करीने उचिता के० योग्यछे वि न्हो जेनेविषे एवी, अने अलकराजि के० भृकुटी अने वांकडा केश इत्यादिके करीने राजि के० शोभायमान अने तामरसभासि–तामरस के० कमल, तेना स

रखीछे नास के० कांति जेनी एवा, अने अतुलोपकृतं के० अतुल्यछे उपकार के० मौक्तिकादिकोना अलंकार जेनेविषे, एवा वदनं के० मुखने दधति के० धारण करनारी एवीछे. ॥ ४ ॥ इति श्रीमुनिसुव्रत जिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ २० ॥ ८० ॥

अवतरण०–हवे नमिनाथ जिननी स्तुति शिखरिणीवृत्ते करीने कहेछे.

स्फुरद्विद्युत्कांतेप्रविकिरवितन्वंतिसततं ममायासंचारोदितम
दनमेऽघानिलपितः ॥ नमद्भव्यश्रेणीभवभयभिदांह्यव
चसा ममायासंचारोदितमदनमेघानिलपितः ॥ १ ॥

व्याख्या–हे स्फुरद्विद्युत्कांते के० स्फुरण पामेछे विजलिसरखी कांति जेनी एवा, अने हे चारो के० हे मनोहर? अने हे दितमद–दित के० दूर कर्या छे, मद के० आठ मद जेणे एवा, अने हे अमायसंचार के० नथी, मायानो एटले कपटनो संचार जेनेविषे, अथवा जेथी मायानो संचार नथी एवा, अने हे नमद्भव्य श्रेणीभवभयभिदांहृद्यवचसांप्रलपित के० नमन करनारा जे भव्यजनो, तेउनी जे श्रेणी, तेनो जे भवभय के० संसारभय तेनुं भेदन करनारा एवा हृद्य के० मनोहर एवा वचसां के० उपदेशरूप वचनने लपितः के० भाषण करनारा, अने हेदितमदनमेघानिल–दित के० प्रगट एवो जे, मदन के० कामदेव, तेज जाणे मेघ, तेना नाशने माटे अनिल के० वायुसरखा अने पित के० पिता सरखा हे नमे के० हे नमिनाथ तीर्थंकर, त्वं के० तुं, सतत के० निरंतर आयासं के० संसारभ्रमणरूप आयासने वितन्वंति के० विस्तार करनारां एवां मम के० मारां अघानि के० पापोने प्रविकिर के० विखेरी नाख. ॥ १ ॥

नखांशुश्रेणीभिःकपिशितनमन्नाकिमुकुटः सदानोदीनाना
मयमलमदारेरिततमः ॥ प्रचक्रेविश्वंयःसजयतिजिनाधीश
निवहः सदानोदीनानामयमलमदारेरिततमः ॥ २ ॥

व्याख्या–यः के० जे जिनेश्वरसमूह. विश्वं के० जगतने इततमः के० गयुं छे अज्ञान जेनुं एवुं करतो हवो; सोऽयं के० ते आ अत्यंत प्रख्यात एवो जिनाधीशनिवह. के० जिनेश्वरदेवोनो समूह, जयति के० सर्वोत्कर्षे करीने वर्त्तणूक करे छे. ते केवोछे? तो के–नखांशुश्रेणीभि. के० पोताना नखकिरणना समुदाये करीने कपिशितनमन्नाकिमुकुट.–कपिशित के० कपिलवर्ण कर्यो छे, नमंत के० नमन करनारा नाकि के० देवताना मुकुट के० किरीट जेणे एवो. अने नानाऽन

१ त्वमवनतान्जिनोत्तमकृतांतनवाद्विडपोऽ वसदनुमानसग मनयाततमोदयित ॥ शिवसुखसाधकस्वन्निदधत्सुधि याचरणं वसदनुमानसंगमनयाततमोदयित ॥ ३ ॥

व्याख्या–सत् के० उत्तम प्रकारनु जे अनुमान के० प्रत्यक्ष १ अनुमान २ उपमान ३ आगम ४ ए चारप्रकारना अनुमान, तेनो छे संगमन के० संगती जे ने एवा हे सदनुमान संगमन! अने यात के० गएलुं छे, तम के० अज्ञान जेनु एवा जे यति, तेर्डना दयित के० वल्लन एवा हे याततमोदयित! अने गम के० सरखा पाठोना अलाप अने नय के० नैगमादिक सातनय, तेर्डए करी आतत के० विस्तृत एवा हे गमनयातत! अने मोद के० आनद उत्पन्न करना रा एवा हे मोदयित! एवा हे जिनोत्तम कृतान्त के० जिनश्रेष्ठोना सिद्धांत! त के० तु, सुधिया के० पंमितोना अनुमानस के० मननो अंगीकार करीने वसत के० वास करतो थको अने शिवसुख साधक के० मोक्ष सुखनु साधक एवा चर ण के० चारित्रने समन्निदधत्के० देखाडतो थको, अवनतान्के० तमारामाटे अ त्यंतनम्र एवा विद्वप के० जिनमत जाणनारा पंमितोने नवात् के० संसारथी अ व के० रक्षण करो ॥ ३ ॥

अधिगतगोधिकाकनकरुकृतवगोर्युचिता ॥ कमलकरा जितामरसन्नास्यतुलोपकृतं ॥ मृगमदपत्रनगतिलकैर्व दनदधती ॥ कमलकराजितामरसन्नास्यतुलोपकृतं॥४॥

व्याख्या–हे नव्यजन! गौरी के० गौरीनामे जे अधिष्ठायकदेवी, ते तव के० ता रा लोपकृतं के० नाश करनारो जे शत्रु तेने ते नअस्यतु के० नाश करो ते गौरी देवी केवीछे ? तो के–अधिगतगोधिका–अधिगत के० प्राप्त थइछे, गोधिका के० दे ववाहन विशेष जेने एवी, अने कनकरुक् के० सोनासरखी छे काती जेनी, अने कमलकरा के० कमल छे हस्तनेविषे जेना एवी, अने जितामरसना–पोताना स्वरूपसोदर्ये करीने जित के० निष्प्रन करीछे, अमरसना के० देवोनी सना जे णे एवी, अने मृगमदपत्रनगतिलकै –मृगमद के० कस्तूरि, तेनो जे पत्रनगके० पत्ररचना अर्थात् पीअल, अने तिलक, एर्डए करीने उचिता के० योग्यछे वि न्दो जेनेविषे एवी, अने अलकराजि के० नृकुटी अने वाकडा केश इत्यादिके करीने राजि के० शोनायमान अने तामरसनासि–तामरस के० कमल, तेना स

नीते नाम के० कांति जेनी एवा. अने अनुलोपकृत के० अतुल्यते उपकार के० मोक्तिकादिकोना अलंकार जेनेविषे. एवा वदनं के० मुखने दधति के० धारण करनारी एवीने. ॥ ४ ॥ इति श्रीमुनिसुव्रत जिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ २० ॥ ८० ॥

अवतरण०—हवे नमिनाथ जिननी स्तुति शिखरिणीवृत्ते करीने कहेछे.

स्फुरद्विद्युत्कांतप्रविकिरवितन्वंतिसततं ममायासंचारोदितम
दनमेऽघानिलपितः ॥ नमद्भव्यश्रेणीभवभयभिदांहृद्यव
चसा ममायासंचारोदितमदनमेघानिलपितः ॥ १ ॥

व्याख्या—हे स्फुरद्विद्युत्कांते के० स्फुरण पामेले विजलिसरखी कांति जेनी एवा. अने हे चारो के० हे मनोहर ? अने हे दितमद—दित के० दूर कर्या छे. मद के० आठ मद जेणे एवा, अने हे अमायसंचार के० नथी, मायानो एटले कपटनो संचार जेनेविषे, अथवा जेथी मायानो संचार नथी एवा, अने हे नमद्भव्य श्रेणीभवभयभिदांहृद्यवचसांप्रलपित के० नमन करनारा जे भव्यजनो, तेउनी जे श्रेणी, तेनो जे भवभय के० संसारभय तेनुं भेदन करनारा एवा द्य के० मनोहर एवा वचसां के० उपदेशरूप वचनने लपितः के० भाषण करनारा, अने हेदितमदनमेघानिल—दित के० प्रगट एवो जे, मदन के० कामदेव, तेज जाणे मेघ, तेना नाशने माटे अनिल के० वायुसरखा अने पितः के० पिता सरखा हे नमे के० हे नमिनाथ तीर्थंकर, त्वं के० तुं, सतत के० निरंतर आयासं के० संसारभ्रमणरूप आयासने वितन्वति के० विस्तार करनारां एवां मम के० मारां अघानि के० पापोने प्रविकिर के० विखेरी नाख. ॥ १ ॥

नखांशुश्रेणीभिः कपिशितनमन्नाकिमुकुटः सदानोदीनाना
मयमलमदारेरिततमः ॥ प्रचक्रेविश्वंयःसजयतिजिनाधीश
निवहः सदानोदीनानामयमलमदारेरिततमः ॥ २ ॥

व्याख्या—य. के० जे जिनेश्वरसमूह. विश्वं के० जगत्ने इततमः के० गयुं छे अज्ञान जेनुं एवुं करतो हवो; सोऽयं के० ते आ अत्यंत प्रख्यात एवो जिनाधीशनिवह: के० जिनेश्वरदेवोनो समूह, जयति के० सर्वोत्कर्षे करीने वर्तणूक करे छे. ते केवोछे ? तो के—नखांशुश्रेणीभि के० पोताना नखकिरणना समुदाये करीने कपिशितनमन्नाकिमुकुटः—कपिशित के० कपिलवर्ण कर्यो छे, नमत् के० नमन करनारा नाकि के० देवताना मुकुट के० किरीट जेणे एवो, अने नानाऽम

१ त्वमवनतान्जिनोत्तमकृतान्तवाद्विडपोऽ वसदनुमानसग
मनयाततमोदयित ॥ शिवसुखसाधकस्वभिदधत्सुधि
यांचरणं वसदनुमानसंगमनयाततमोदयित ॥ ३ ॥

व्याख्या–सत् के० उत्तम प्रकारनु जे अनुमान के० प्रत्यक्ष १ अनुमान २ उपमान ३ आगम ४ ए चारप्रकारनां अनुमान, तेनो छे सगमन के० सगती जे ने एवा हे सदनुमान सगमन! अने यात के० गएलुं छे, तम के० अज्ञान जनु एवा जे यति, तेउना दयित के० वल्लभ एवा हे याततमोदयित! अने गम के० सरखा पाठोना अलाप अने नय के० नैगमादिक सातनय, तेउए करी आतत के० विस्तृत एवा हे गमनयातत! अने मोद के० आनंद उत्पन्न करना रा एवा हे मोदयित! एवा हे जिनोत्तम कृतांत्त के० जिनश्रेष्ठोना सिद्धांत! त के० तु, सुधियां के० पण्डितोना अनुमानस के० मननो अंगीकार करीने वसत के० वास करतो थको अने शिवसुख साधक के० मोक्ष सुखनु साधक एवा चर ण के० चारित्रने समभिदधत्के० देखाडतो थको, अवनतान्के० तमारामाटे अ त्यंतनम्र एवा विड्डप के० जिनमत जाणनारा पण्डितोने भवात् के० संसारथी अ व के० रक्षण करो ॥ ३ ॥

अधिगतगोधिकाकनकरुक्तवगोर्युचिता ॥ कमलकरा
जितामरसभास्यतुलोपकृत ॥ मृगमदपत्रभंगतिलकैर्व
दनदधती ॥ कमलकराजितामरसभास्यतुलोपकृतं॥४॥

व्याख्या–हे भव्यजन! गौरी के० गौरीनामे जे अधिष्ठायकदेवी, ते तव के० ता रा लोपकृतं के० नाश करनारो जे शत्रु तेने ते नअस्यतु के० नाश करो ते गौरी देवी केवीछे? तो के–अधिगतगोधिका–अधिगत के० प्राप्त थइछे, गोधिका के० दे ववाहन विशेष जेने एवी, अने कनकरुक् के० सोनासरखी छे कांती जेनी, अने कमलकरा के० कमल छे हस्तनेविषे जेना एवी, अने जितामरसभा–पोताना स्वरूपसौंदर्ये करीने जित के० निष्प्रभ करीछे, अमरसभा के० देवोनी सभा जे णे एवी, अने मृगमदपत्रभंगतिलकै–मृगमद के० कस्तूरि, तेनो जे पत्रभंगके० पत्ररचना अर्थात् पीअल, अने तिलक, एउए करीने उचिता के० योग्यछे वि न्हो जेनेविषे एवी, अने अलकराजि के० भृकुटी अने वांकडा केश इत्यादिके करीने राजि के० शोभायमान अने तामरसभासि–तामरस के० कमल, तेना स

रखीने भास के० कांति जेनी एवा, अने अतुलोपकृतं के० अतुल्यछे उपकार के० मौक्तिकादिकोना अलंकार जेनेविषे, एवा वदनं के० मुखने दधति के० धारण करनारी एवीने. ॥ ४ ॥ इति श्रीमुनिसुव्रत जिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ २० ॥ ८० ॥

अवतरण०—हवे नमिनाथ जिननी स्तुति शिखरिणीवृत्ते करीने कहेछे.

स्फुरद्विद्युत्कांतेप्रविकिरवितन्वंतिसततं ममायासंचारोदितम
दनमेऽघानिलपितः ॥ नमद्भव्यश्रेणीभवभयभिदांहृद्यव
चसा ममायासंचारोदितमदनमेघानिलपितः ॥ १ ॥

व्याख्या—हे स्फुरद्विद्युत्कांते के० स्फुरण पामेछे विजलिसरखी कांति जेनी एवा, अने हे चारो के० हे मनोहर? अने हे दितमद—दित के० दूर कर्या छे, मद के० आठ मद जेणे एवा. अने हे अमायसंचार के० नथी, मायानो एटले कपटनो संचार जेनेविषे, अथवा जेथी मायानो संचार नथी एवा, अने हे नमद्भव्य श्रेणीभवभयभिदांहृद्यवचसांप्रलपितः के० नमन करनारा जे भव्यजनो, तेउनी जे श्रेणी, तेनो जे भवभय के० संसारभय तेनुं भेदन करनारा एवा हृद्य के० मनोहर एवा वचसां के० उपदेशरूप वचनने लपितः के० भाषण करनारा, अने हेदितमदनमेघानिल—दित के० प्रगट एवो जे, मदन के० कामदेव, तेज जाणे मेघ, तेना नाशने माटे अनिल के० वायुसरखा अने पितः के० पिता सरखा हे नमे के० हे नमिनाथ तीर्थंकर, त्वं के० तु, सतत के० निरंतर आयासं के० संसारभ्रमणरूप आयासने वितन्वंति के० विस्तार करनारां एवां मम के० मारां अघानि के० पापोने प्रविकिर के० विखेरी नाख. ॥ १ ॥

नखांशुश्रेणीभिः कपिशितनमन्नाकिमुकुटः सदानोदीनाना
मयमलमदारेरिततमः ॥ प्रचक्रेविश्वंयःसजयतिजिनाधीश
निवहः सदानोदीनानामयमलमदारेरिततमः ॥ २ ॥

व्याख्या—यः के० जे जिनेश्वरसमूह. विश्वं के० जगत्ने इततमः के० गयुं छे अज्ञान जेनुं एवुं करतो हवो; सोऽयं के० ते आ अत्यंत प्रख्यात एवो जिनाधीशनिवहः के० जिनेश्वरदेवोनो समूह, जयति के० सर्वोत्कर्षे करीने वर्त्तणूक करे छे. ते केवोछे? तो के—नखांशुश्रेणीभिः के० पोताना नखकिरणना समुदाये करीने कपिशितनमन्नाकिमुकुट.—कपिशित के० कपिलवर्ण कर्यो छे, नमत के० नमन करनारा नाकि के० देवताना मुकुट के० किरीट जेणे एवो, अने नानाऽम

यमलमदारे –नाना के० नाना प्रकारना जे आमय के० रोग अने मल के० व कर्मरूप मल, तद्रूपी जे अरी के० शत्रु तेनो सदा के० निरंतर नाश करनार अने दीनाना के० दीनपुरुषोने माटे सदान के० दीक्षासमये दानसहित ९ अने अलमदारेरिततम –अलम के० अतिशये करीने दार के० स्त्रीउए ईरितत के० जेना धैर्यपणानु चलन कर्युं नथी, एवो ठे ॥ २ ॥

जलव्यालव्याघ्रज्वलनगजरुक्बंधनयुधो ॥ गुरुर्वाहोऽपा
तापदघनगरीयानसुमत ॥कृतांतस्त्रासीष्टस्फुटविकटहेतुप्रमि
तिभा ॥ गुरुर्वाऽहोपातापदघनगरीयानसुमत ॥ ३ ॥

व्याख्या–हे भव्यजनो! अपाताऽपदघनगरीयानसुमत –एटले नथी पात के० अध पात, अपत् के० आपदा, अने अघ के० पाप जेनेविषे, एवी जे नगरी के० मोक्षरूप नगरी, तेनेविषे जे यानके० गमन, तेविषे सुमत के० अत्यंत मान्य एवा, वाह् के० अश्वसरखो गुरु के० मोहोटो, अने स्फुटविकटहेतुप्रमितभाक्–स्फुट के० स्पष्ट एवा विकट के० परस्पर मलनारा जे प्रमाण, तेनो जे हेतु के० साधकदृष्टांत, अने प्रमिति के० उत्कृष्टज्ञान, तेने भजन करनारो एटले तेणेकरी युक्त एवो, अने उरु के० विस्तीर्ण अने पदघनगरीयान्–पद के० अधिकार, तेउए करीने घनके० निविड होवाथी गरीयान् के० श्रेष्ठतर अने पाता के० रक्षण करनारो जे कृतांत के० सिद्धांत ते असुमत के० प्राणीउने जल, व्याल व्याघ्र, ज्वलन गज रुग्बंधनयुध के० पाणी सर्प वाघ दावानल डुष्टगज भगंदरादिक डुष्टरोग कारागृहादिकबंधन अने संग्राम–एउथी त्रासीष्ट के० रक्षण करो

विपक्षव्यूहवोदलयतुगदाक्षावलिधरा ॥ समानालीकालीवि
शदचलनानालिकवर ॥ समध्यासीनाभोभृतघननिभाभोधि
तनया ॥ समानालीकालीविशदचलनानालिकवर ॥ ४ ॥

व्याख्या–हे भव्यजनो, गदाक्षावलिधरा–गदा के० गदानामे आयुध अने अक्षावलि के० जपमाला तेउने धरा के० धारण करनारी अने असमा के० असाधारण अने नालिकाऽलीविशदचलना–नाली के० कमल तेउनी जे आली के० श्रेणी तेना सरखा विशद के० उज्वल ठे चलन के० चरण जेना एवी, अने विशदचल नानालिकवर–विशत् के० लीन थनारा अने अचल के० निश्चल एवा जे नाना[ली]न के० घणा भ्रमर, तेउए करीने मिश्रवर्ण एवा नालिकवर के० श्रेष्ठ

कमजनेविषे नमस्यासीना के० बेसनारी अने अंनोजूतघननिन्ना के० उदके क री पूर्ण एवा मेघतरखी श्यामवर्ण अने अंनोजितनयासमानाऽली के० लक्ष्मीस रखी ने मखी जेनी एवी, काली के० कालीनामे जे अधिष्ठायकदेवी, ते वः के० त मारा विपक्ष के० शत्रुना समुदायने दलयतु के० नाश करो. ॥ ४ ॥ इति श्री न मिनाथजिन स्तुतिः संपूर्णा. ॥ २१ ॥ श्लोकसंख्या॥ ८४ ॥

अवतरण०हवे श्री नेमिनाथ जिननी स्तुति शार्दूलविक्रीडितवृत्तेकरीने कहेने.

चिक्षेपोर्जितराजकंरणमुखेयोलक्षसंख्यंक्षणा ॥ दक्षामंजन
नासमानमहसंराजीमतीतापदं ॥ तंनेमिनमनम्रनिर्वृतिकरंच
क्रेयदूनांचयो ॥ दक्षामंजननासमानमहसंराजीमतीतापदं॥१॥

व्याख्या–य.के० जे नेमिनाथ नगवान्, रणमुखेके० संग्राममुखनेविषे लक्षसं ख्यंके० लक्षने संख्या जेनी, एवा ऊर्जितराजकंके० बलवान् एवा राजाउना सैन्य ने क्षणात् के० वेगे करीने चिक्षेपके० ज्यहां त्यहां पलायमान करतो हवो; च के० अने य.के० जे यदूनां के० यादवोनी दक्षांके० चतुर एवी राजीके० श्रेणी ने अतीतापदंके० गएलीने आपदा जेथी एवी चक्रेके० करतो हवो; हेजनके० हे नव्यजन! तुं तंके० ते नम्रनिर्वृतिकरंके० नमन करनारा प्राणीउने मोक्षसुखने देनारा एवा, अने अंजननासमानमहसं–अंजनके० काजल, तेना सरखुं नासमा नके० देदीप्यमानछे महस्के० तेज जेनुं एवा अने नासमानके० पोताना स्वरूप नी कांतिए करीने शोनायमान एवा, अने अहसंके० हास्यरहित एवा, अने राजी मतीतापदंके० दीक्षाकालनेविषे राजीमतीनामे स्त्रीने विरहतापने देनारा एवा ने मिंके० श्रीनेमिनाथतीर्थंकरने नम. के० वंदनकर ॥ १ ॥

प्राव्राजीज्जितराजकारजइवज्यायोपिराज्यंजवा । द्यासंसारमहो
दधावपिहिताशास्त्रीविहायोदितं॥यस्याःसर्वतएवसाहरतुनोराजी
जिनानांनवा । यासंसारमहोदधावपिहिताशास्त्रीविहायोदितं ॥ २ ॥

व्याख्या–याके० जे जिनश्रेणी, उदितंके० उदय पामेला ज्यायोपिके० अतिप्रौढ एवा पण, राज्यंके० राज्यने रजइवके० तृणसरखुं जवात्के० वेगेकरीने विहायके० तजीने प्राव्राजीत्के० प्रव्रज्याने ग्रहण करती हवी, अने यस्याके० जे जिनश्रेणी छुं, पिहिताशास्त्रीविहायः–पिहिताके० आछादित करीने आशास्त्रीके० दिशारूप स्त्री अने विहायसके० आकाश जेणे एवुं, अने अदितंके० अखंम एवुं सारमहःके०

सारनूत एवु जे तेज ते, सर्वतएवके० सर्व दिशाउनेविषेज दयावके० प्रसार पाम तु हवु साके० ते जितराजकाके० जेणे राजसमूह जीत्योछे एवी, अने संसारम होदधावपिके० ससारसमुद्रनेविषे पण हिताके० हितकारक एवी, अने शास्त्री के० अज्ञजनोने देशनानु शासन करनारी एवी, जिनानांके० जिनोनी रानीके० श्रेणी जे, ते न के० अमारा नवायासके० ससाररूप क्लेशने हरतुके० हरणकरो

कुर्वाणाऽणुपदार्थदर्शनवशा नास्वत्प्रनायास्त्रपा ॥
मानत्याजनकृत्तमोहरतमेशस्तादरिद्योहिका ॥ अ
क्षोन्यातवनारतीजनपतेप्रोन्मादिनांवादिना ॥ मा
नत्याजनकृत्तमोहरतमेशस्तादरिद्योहिका ॥ ३ ॥

व्याख्या–हे तमोहरतम के० अज्ञानने अत्यत हरण करनारा, अने हे ईशके० हे नियमनकरनारा ! अने हे जनकृत्तमोहरत–जन के० लोक, तेओनुं कृत्त के० निराकरण कर्युछे, मोह के० मूढपणु, अने रत के० मैथुन जेणे, एवा हे जिनपते के० हे जिनेश्वर, तव के० ताहारी नारती के० देशनारूप वाणी, मे के० मारा, अ रिद्योहिका के० शत्रूनो द्रोह करनारी अर्थात् नाश करनारी स्तात् के० थाउ तेवा णी केवी छे ? तोके--अणुपदार्थदर्शनवशात्--अणुके० सूक्ष्म जे जीवाजीवादिक नवपदार्थ, तेउना दर्शनवशात् के० अवलोकन योगेकरीने नास्वत्प्रनाया के० सूर्यनी कांतीने त्रपा के० लज्जाप्रत्ये कुर्वाणा के० उत्पन्न करनारी, अने शस्ता के० प्रश स्त अने अदरिद्योहिक–अदरिद्र के० महोटो छे ऊह के० विचार जेनेविषे एवी, अने अक्षोन्या के० कोइथी पण क्षोन न पामनारी, अने प्रोन्मादिनां के० प्रकर्ष करीने उत्पन्न थयो छे उन्माद के० दर्प जेउने एवा, वादिना के० परवादी पुरुषो नुं मानत्याजनकृत--मान के० अनिमान तेनु जे, त्याजन के० मोक्षण करनारीने

दस्तालवितचूतचुंबिलतिकायस्याजनोऽन्यागमत्॥वि
श्वासेविततामपादपरतावाचारिपुत्रासकृत् ॥ सानू
तिंवितनोतुनोर्जुनरुचि सिंहेऽधिरूढोल्लस ॥ द्विश्वा
सेवितताम्रपादपरतावाचारिपुत्राऽसकृत् ॥ ४ ॥

व्याख्या–यस्या के० जे अंबानामक देवीना, विश्वासेविततामपादपरता–विश्व के० त्रिभुवन, तेणे आसेवित के० अत्यत सेवन करेला एवा अने ताम्रके० आर क्त एवा जे पादके० चरण, तेना परताके० शरणपणाने जन के० जे लोक त

अभ्यागमत्के० प्राप्त थता हवा; सा के० ते अंबा के० अंबानामे अधिष्ठायकदे वी. नः के० अमारे माटे, असकृत्के० वारंवार, भूतिंके० ऐश्वर्यने वितनोतुके० विस्तार करो. ते अंबादेवी केवीछे? तोके—हस्तालंवितचूतचुंबिलतिका—हस्तालंबि त के० हस्तनेविषे ग्रहण करेली छे चूतचुंबि के० आंबानेविषे लटकनारी एवी लतिका के० वेल जेणे एवी, अने वाचा के० पोतानी वाणीए रिपुत्रासकृत् के० श त्रुउने त्रास उत्पन्न करनारी, अने अर्जुनरुचिः के० सुवर्ण सरखी छे रुचि एटले कांति जेनी एवी,अने उच्चसद्विश्वासे के० प्रसार पामेछे अचंचलत्व अक्रूरत्वादिक विश्वास जेनो एवा सिंह के० सिंहनेविषे अधिरुढा के० आरोहण करनारी, अने विततामपादपरता—वितत के० विस्तार पामेलुं एवुं जे आम्रपादप के० आम्रवृक्ष तेनेविषे रता के० प्रीति धारण करनारी अर्थात् महोटा आम्रवृक्षना अधोभागे तेल आंबापरथी नीचे लटकनारी वेलीने धारण करीने सिंहनेविषे वेसनारी एवी, अने चारिपुत्रा—चारि के० निरंतर संचार करवानो स्वनावछे जेमनो एवा छे पुत्र जेना एवीछे. ॥ ४ ॥ इति श्री नेमिनाथ जिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ २२ ॥ ८८ ॥

अवतरण—हवे पार्श्वनाथजिननी स्तुति स्रग्धरावृत्ते करीने कहेछे.

मालामालानबाहुर्दधदधदरंयामुदारामुदारा॥ल्लीनाऽलीनामिहाली मधुरमधुरसासूचितोमाचितोमा ॥ पातात्पातात्सपार्श्वोरुचिररुचिर दोदेवराजीवराजी॥पत्राऽपत्रायदीयातनुरतनुरवोनंदकोनोदकोनो॥१॥

व्याख्या—यदीया के० जे पार्श्वनाथ जिननी तनुः के० मूर्ति, देवराजीवराजीप त्रा—देव के० देवोए रचेली जे राजीवराजी के० कमलोनी श्रेणी तेछे पत्र के० वाहन जेनुं, अपत्रा के० आपत्तिथी रक्षण करनारी एवीछे, एवो स. के० ते पार्श्व के० पार्श्वनाथजिन, मा के० मुजने पातात् के० नरकादिकनेविषे जे पात, तेथी पातात् के० रक्षण करो. ते पार्श्वनाथ केवोछे? तो के—आलानबाहुः—आ लान के० हस्तिबंधन करवानो स्तंभ, तेना सरखा पुष्ट छे बाहु जेना एवो, अने यां के० जे मालाने उदारा के० मोहोटी अने मधुरमधुररसा—मधुर के० रम्य युक्त एवुं जे मधु के० मकरंद तेविषे छे रस के० अभिरुचि जेने एवी अलीना के० भ्र मराउनी आली के० श्रेणी, ते मुदा के० हर्षेकरीने आरात् के० समीपभागनेविषे अर के० अत्यंत, लीना के० आसक्त होती थकी अदधत् के० पुष्पगंधने ग्रहण करती हवी; एवी माला के० पुष्पमालाने दधत के० धारण करनारो, अने तृषि

सूचित के० उत्तम योग्य एवी जे क्षमा के० कीर्ति, तेणे करी चित के० व्याप्त, अने इद्ध के० आजूमिनेविषे अतनुरव –अतनु के० एक योजनपर्यंत श्रवण थतो, रव के० देशनाशब्द जेनो, अने नंदक के० हर्ष उत्पन्न करनारो, ने चिररुचिरद –रुचिरके० मनोहर छे रुचि के० काति जेउनी एवा छे, रद के० जेना एवो, अने नोनोदक के० बीजाने दुःख उत्पन्न करनारो नथी एवोछे ॥१॥

राजीराजीववक्त्रातरलतरलसत्केतुरगत्तुरंग ॥ व्याल
व्यालग्नयोधाचितरचितरणेभीतिहृद्यातिहृद्या ॥ सारा
साराज्जिनानाममलममलमतेर्बोधिकामाऽधिकामा ॥ दव्या
दव्याधिकालाननजननजरात्रासमानाऽसमाना ॥ २ ॥

व्याख्या–या के० जे जिनाना के० जिनोनी राजी के० श्रेणी, तरलतरलसत्केतुरगत्तुरगव्यालव्यालग्नयोधाऽचितरचितरणे–तरलतर के० अत्यंत चपल एवो जे केतु के० ध्वज, तेणे, अने रगत् के० नृत्य करनारा एवा जे तुरग अने व्याल के० मदांध एवो जे गज, तेउनेविषे व्यालग्न के० आरूढ थएला जे योध के० वीर, तेउए करीने आचित के० व्याप्त एवु रचित के० रचेलु रण के० संग्राम, तेनेविषे भीतिहृत् के० भयनो नाश करनारी छे, सा के० ते, आरात् के० शीघ्र अधिकामात्–अधिक के० वृद्धि पामेलो जे आम के० रोग, तेनाथी अव्यात् के० रक्षण करो ते जिनराजी केवीछे ? तो के–राजीववक्त्रा–राजीव के० कमलो, तेउना सरखाछे वक्त्र के० मुखो जेमना एवी, अने अतिहृद्या के० अत्यंत मनोहर, अने सारा के० अतिश्रेष्ठ, अने अमलमते –अमल के० स्वछ छे, मति के० बुद्धि जेमनी एवा जीवोनेकारणे अलं के०अत्यंत, बोधिकामा के०बोध करवानी इछा धारण करनारी, अने अव्याधिकालाननजननजरात्रासमान–अ के० नथी, व्याधी के० पीडा, कालानन के० मरण, जनन के० जन्म, जरा के० वृद्धपणु, त्रास के० अकस्मात् उत्पन्न थएलो भय अने मान के० अभिमान जेने एवी, अने असमाना के० अनुपम एवीछे ॥ २ ॥

सद्योऽसद्योगभिद्यागमलगमलयाजैनराजीनराजी ॥
नूतानूतार्थधात्रीढ्ततदृततम पातका पातकामा ॥ शा
स्त्रीशास्त्रीनराणाहृदयहृदयशोरोधिकाबाधिकावाऽ ॥ दे
यादेयान्मुदंतेमनुजमनुजरात्याजयतीजयंती ॥ ३ ॥

व्याख्या—जैनराजी के० जिनराज संबंधिनी एवी जे वाक् के० देशनारूप वाणी ते हे भव्यजन ! ते के० तने मुदं के० हर्षने देयात् के० आपो. ते जैनराजी केवीछे ? तोके—लघु के० शीघ्रः असद्योगभित्—असद्योग के० मन, वचन अने काया एउनो जे निंद्य व्यापार तेनी भित् के० भेद करनारी, अने अमलगमलया अमल के० निर्मल एवा जे गम के० सरखा पाठना आलावा तेउनो छे लय के० ध्यान जेथी एवी, अने इनराजीनूता—इन के० सूर्य तेउनी जे राजी के० श्रेणी, तेणे नूता के० स्तवन करेली अने नूतार्थधात्री—नूत के० नवीन जे अर्थ, तेने धात्री के० धारण करनारी, अने इह के० आ जगत्मध्ये, ततहततमःपातका—तत के० विस्तीर्ण एवुं, हत के० नष्ट कर्युं छे. तमःपातक के० अज्ञानरूप पातक जेणे एवी, अने अपातकामा के० नथी, पात के० नरकादिकनेविषे पडवानो काम के० इछा जेने एवी, अने शास्त्री के० शास्त्रनो छे संबंध जेने एवी, अने नराणां के० मनुष्योने शास्त्री के० सन्मार्गने शिखवनारी, अने अयशोरोधिका के० अपयशने दूर करनारी, अने अवाधिका के० कोइए पण जेने गांजी नथी एवी, अने आदेया के० सर्व लोकोए ग्रहण करवामाटे योग्य एवी, अने मनुजमनु के० मनुष्यना अनुजक्ने करीने जरा के० वृद्धपणाने त्याजयंती के० तजावनारीअर्थात् मनुष्य कने वृद्धपणानो त्याग करावनारी, अने जयंती के० संपूर्ण परवादीपुरुषोने जीतनारी एवी छे. ॥ ३ ॥

यातायातारतेजाःसदसिसदसिभृत्कालकांताऽलकांताऽ ॥
पारिपारिंद्रराजंसुरवसुरवधूपूजितारंजितारं ॥ सात्रा
सात्रायतांत्वामविषमविषभृद्भूषणाभीषणाभी ॥ हीनाऽ
हीनाग्रपत्नीकुवलयवलयश्यामदेहाःमदेहा ॥ ४ ॥

व्याख्या— हे भव्यजन ! सदसि के० सभानेविषे अपारिं के० शत्रुरहित एवो पारिंद्रराजं के० अजगरोनो राजा एवो जे अजगर तेऊपर याता के० आरूढथनारी एवी, याके० जे अहीनाग्रपत्नी—अहीन के० धरणेंद्र, तेनी अग्रपत्नी के० पट्टराणी एवी वैरोटथा नामक अधिष्ठायके देवी, साके० ते जितारंके० जीत्योछे, आर के० शत्रुसमूह जेणे एवी, त्वां के० तने त्रासात् के० संसाररूपभयथी त्रायतां के० रक्षण करो. ते वैरोटथा देवी केवीछे ? तोके—तारतेजाः—तारके० देदीप्यमान

सूचित के० उत्तम योग्य एवी जे उमा के० कीर्ति, तेणे करीचित के० व्याप्त एवो अने इह के० आनूमिनेविषे अतनुरव—अतनु के० एक योजनपर्यंत श्रवण थछे, रव के० देशनाशब्द जेनो, अने नदक के० हर्ष उत्पन्न करनारो, अने चिररुचिरद—रुचिरके० मनोहर छे रुचि के० कांति जेउनी एवा छे, रद के० दंत जेना एवो, अने नोनोदक के० बीजाने दुःख उत्पन्न करनारो नथी एवोछे ॥१॥

राजीराजीववक्रातरलतरलसत्केतुरगत्तुरंग ॥ व्याल
व्यालग्नयोधाचितरचितरणेभीतिहृद्यातिहृद्या ॥ सारा
साराज्जिनानामलममलमतेर्बोधिकामाऽधिकामा ॥ दव्या
दव्याधिकालाननजननजरात्रासमानाऽसमाना ॥ २ ॥

व्याख्या—या के० जे जिनाना के० जिनोनी राजी के० श्रेणी, तरलतरलसत्केतुरगतुरगव्यालव्यालग्नयोधाऽचितरचितरेण—तरलतर के० अत्यंत चपल एवा जे केतु के० ध्वज, तेणे, अने रगत् के० नृत्य करनारा एवा जे तुरग अने व्याल के० मदाध एवो जे गज, तेउनेविषे व्यालग्न के० आरूढ थएला जे योध के० वीर, तेउए करीने आचित के० व्याप्त एवु रचित के० रचेलु रण के० संग्राम, तेनेविषे भीतिहृत् के० भयनो नाश करनारी छे, सा के० ते. आरात् के० शीघ्र अधिकामात्—अधिक के० वृद्धि पामेलो जे आम के० रोग, तेनाथी अव्यात् के० रक्षण करो ते जिनराजी केवीछे ? तो के—राजीववक्रा—राजीव के० कमलो, तेउना सरखाछे वक्र के० मुखो जेमना एवी, अने अतिहृद्या के० अत्यंत मनोहर, अने सारा के० अतिश्रेष्ठ, अने अमलमते—अमल के० स्वछ छे, मति के० बुद्धि जेमनी एवा जीवोनेकारणे अल के० अत्यत, बोधिकामा के० बोध करवानी इछा धारण करनारी, अने अव्याधिकालाननजननजरात्रासमान—अ के० नथी, व्याधी के० पीडा, कालानन के० मरण, जनन के० जन्म, जरा के० वृद्धपणु, त्रास के० अकस्मात् उत्पन्न थएलो भय अने मान के० अभिमान जेने एवी, अने असमाना के० अनुपम एवीछे ॥ २ ॥

सद्योऽसद्योगभिद्वागमलगमलयाजैनराजीनराजी ॥
नूतानूतार्थयात्रीढततहततम पातका पातकामा ॥ शा
स्त्रीशास्त्रीनराणाहृदयहृदयशोरोधिकावाधिकावाऽ ॥ दे
यादेयान्सुदंतेमनुजमनुजरात्याजयतीजयंती ॥ ३ ॥

व्याख्या–जैनराजी के० जिनराज संबंधिनी एवी जे वाक् के० देशनारूप वाणी ते हे भव्यजन! ते के० तने मुदं के० हर्षने देयात् के० आपो. ते जैनराजी केवीछे? तोके–सद्यः के० शीघ्रः असद्योगभित्–असद्योग के० मन, वचन अने काया एउंनो जे निंद्य व्यापार तेनी भित् के० भेद करनारी, अने अमलगमलया अमल के० निर्मल एवा जे गम के० सरखा पाठना आलावा तेउंनो छे लय के० ध्यान जेथी एवी, अने इनराजीनूता–इन के० सूर्य तेउंनी जे राजी के० श्रेणी, तेणे नूता के० स्तवन करेली अने नूतार्थधात्री–नूत के० नवीन जे अर्थ, तेने धात्री के० धारण करनारी, अने इह के० आ जगत्मध्ये, ततहततमःपातका–तत के० विस्तीर्ण एवुं, हत के० नष्ट कर्युं छे. तमःपातक के० अज्ञान रूप पातक जेणे एवी, अने अपातकामा के० नथी, पात के० नरकादिकनेविषे पडवानो काम के० इछा जेने एवी, अने शास्त्री के० शास्त्रनो छे संबंध जेने एवी, अने नराणां के० मनुष्योने शास्त्री के० सन्मार्गने शिखवनारी, अने अयशोरोधिका के० अपयशने दूर करनारी, अने अबाधिका के० कोइए पण जेने गांजी नथी एवी, अने आदेया के० सर्व लोकोए ग्रहण करवामाटे योग्य एवी, अने मनुजमनु के० मनुष्यना अनुलक्षे करीने जरा के० वृद्धपणाने त्याजयंती के० तजावनारीअर्थात् मनुष्य कने वृद्धपणानो त्याग करावनारी, अने जयंती के० संपूर्ण परवादीपुरूषोने जीतनारी एवी छे. ॥ ३ ॥

यातायातारतेजाःसदसिसदसिभृत्कालकांतालकांताऽ ॥
पारिंपारिंद्रराजंसुरवसुरवधूपूजितारंजितारं ॥ सात्रा
सात्रायतांत्वामविषमविषभृद्भूषणाभीषणाभी ॥ हीनाऽ
हीनाग्रपत्नीकुवलयवलयश्यामदेहाःमदेहा ॥ ४ ॥

व्याख्या– हे भव्यजन! सदसि के० सभानेविषे अपारिं के० शत्रुरहित एवो पारिंद्रराजं के० अजगरोनो राजा एवो जे अजगर तेउपर याता के० आरूढयनारी एवी, याके० जे अहीनाग्रपत्नी–अहीन के० धरणेंद्र, तेनी अग्रपत्नी के० पट्टराणी एवी वैरोट्या नामक अधिष्ठायक देवी. साके० ते जितारं के० जीत्योछे, अरि के० शत्रुसमूह जेणे एवी, त्वां के० तने त्रातात् के० संसारभयथी त्रायतां के० रक्षण करो. ते वैरोट्या देवी केवीछे? तोके–तारतेजाः–तार के० देदीप्यमान

ठे, तेजके० कांति जेनी एवी, अने सदसिभृत्के० उत्तम प्रकारनाखड्गने धारण क रनारी, अने कालकालालकांता—कालके० नीलवर्ण, अने कांतके० सुंदरठे अल काके० केशना अग्रभाग जेना एवी, अने सुरवसुरवधूपूजिता— सुके० उत्तमठे रव के० शब्द जेउनो, एवीउं जे सुरवधूके० देवांगनाउं, तेउंए पूजिता के० पूजन क रेली अने अविषमविषभृद्भूषणा—अविषम के० सौम्य, एवो जे विषभृत् के० सर्प, ते ठे भूषण के० आभरण जेने एवी, अने अभीषणा के० भयकरपणाए रहित, अने भीहीना के० भयरहित, अने कुवलयवलयश्यामदेहा—कुवलय के० कमल, तेनु वलय के० जे समूह, तेना सरखो श्यामवर्ण ठे देह जेनो एवी, अने अम देहा के० नथी मदके० गर्वनी इच्छा जेने, एवी ठे ॥४॥ इतिश्रीपार्श्वनाथजिनस्तुति

अवतरण—हवे महावीर जिननीस्तुति यमकवृत्तेकरीने कहे ठे

नमदमरशिरोरुहस्रस्तसामोदनिर्निद्रमंदारमालारजोरंजितांघ्रेध रित्रीकृताऽवनवरतमसंगमोदारतारोदिताऽनगनार्यावलीलापदेहे हिताऽमोहिताक्षोभवान् ॥ ममवितरतुवीरनिर्वाणशर्माणिजाता वतारोधराधीशसिद्धार्थनाम्निक्ष्मालकृता ॥ वनवरतमसंगमोदा रतारोदिताऽनंगनार्यावलीलापदेहेक्षितामोहिताऽक्षोभवान् ॥ १ ॥

व्याख्या—हे नमदमरशिरोरुहस्रस्तसामोदनिर्निद्र मंदारमालारजोरंजितांघ्रे— नमत् के० नमस्कार करनारा एवा जे अमर के० देव, तेउंना जे शिरोरुह के० मस्तकसंबंधी केश, तेउंथी स्रस्त के० गलित, एवी जे सामोद के० सुगंधसहित ए वी निर्निद्र के० टपकती एवी मंदारमाला के० कल्पवृक्षना पुष्पोनी जे रज के० पराग तेणे करीने रंजीत के० रंगयुक्त ठे अंघ्री के० चरण जेना एवा, अने हे ध रित्रीकृतावन—धरित्री के० पृथ्वी तेनु कृत के० करेलु ठे अवन के० रक्षण जेणे एवा, अने हे वरतमसंगम—वरतम के० अतिश्रेष्ठ ठे, संगम के० संगती एवा, अने हे असंगमोद के० नथी संग के० संसारसंग अने मोद के० जेने एवा, अने हे अरत के० मैथुनरहित एवा, अने हे अरोदित के० रहित एवा, अने हे अनगन—अगना के० हे स्त्रीरहित एवा, अने हे आर्याव श्रेष्ठ पुरुषोनु रक्षण करनारा, अने हे हित के० हे हितकरनारा हे वीर के० महावीर, लीलापदे के० क्रीडानु स्थान एवा अने क्ष्माालकृतौ के० पृथ्वीनेविषे

अलंकाररूप एवा धराधीशसिद्धार्थधाम्नि—धराधीश के० पृथ्वीपति एवो जे सिद्धा र्थ के० सिद्धार्थ नामनो राजा. तेना धाम्नि के० गृहनेविषे जातावतारः के० थयो छे अवतार जेनो एवा, अने हितामः—हित के० निवारण कर्योछे आम के० रोग जेणे एवा. अने अक्षोजवान् के० क्षोजरहित एवा. अने उदारतारोदितानंगना र्यावलीलापदेहेहितामोहिताक्—उदार के० विशाल छे, तारा के० कीकी जेउनी. अने उदित के० प्रगट छे. अनंग के० कामदेव जेउने, एवी जे नारी के० मनु ष्य देवादिकोनी तरुण स्त्रीउ, तेउनी जे आवली के० श्रेणी तेना जे लाप के० जा षणो, अने देहेहित के० देहनेविषे कामबुद्धिए अवलोकन, तेउए करीने अमोहित के० मोहने नथी पामी अक्ष के० इंद्रिउ जेमनी, एवा जगवन् के० तमे मम के० मने निर्वाणशर्माणि के०मोक्षसुखने अनवरत के०निरंतर वितर के०समर्पण करो.

समवसरणमत्रयस्याःस्फुरत्केतुचक्रानकानेकपद्मेंडुरुक्चामरोत्सर्पि सालत्रयी॥ सदवनमदशोकपृथ्वीक्षणप्रायशोजातपत्रप्रजागुर्वरा राट्परताहितारोचितं ॥ प्रवितरतुसमीहितंसाऽर्हतांसंततिर्जक्तिजा जांजवांजोधिसंभ्रांतजव्यावलीसेविता. ॥ सदवनमदशोकपृथ्वी क्षणप्रायशोजातपत्रप्रजागुर्वराराट्परेताहितारोचितं ॥ ९ ॥

व्याख्या—अत्रके०आ जगत्नेविषे, यस्याः के० जे अरिहंतश्रेणीनुं समवसर णं के० धर्मदेशनास्थान, आराराट् के० अत्यंत शोजतुं हतुं; साके० ते अस दवनमदशोकपृथ्वी के० अविद्यमान जे सदवन के० संतापसहित, मदके० आठ मद, अने शोक—तेउए करी पृथ्वीके०मोहोटी एटले संताप, मद अने शोक— एउए करी रहित एवी,समवसरण नूमिछे अने जवांजोधिसंभ्रांतजव्यावलीसेविता—ज व के० संसाररूप जे अंजोधिके० समुद्र, तेनेविषे संभ्रांतके० व्याकुल थएला जे ज व्यके० जव्यप्राणिउ, तेउनी जे आवली के० श्रेणी, तेणे सेवित के० सेवन करे ली एवी, अने ईक्षणप्राके०ज्ञानरूप चक्षुने देनारी एवी अर्हतां के० अरिहंतोनी जे संतती के० श्रेणी, ते जक्तिजाजां के० जक्तिवंत एवा पुरुषोनुं समीहित के० वांछि त जे, तेने प्रवितरतु के० उत्पन्नकरो. ते समवसरण केवुंछे ? तो के—स्फुरत्केतुच क्रानकानेकपद्मेंडुरुक्चामरोत्सर्पिसालत्रयीसत्—स्फुरत् के० स्फुरण पामनारो जे केतुके०ध्वज, चक्र के० धर्मचक्र, आनक के० देवडुंडुनि, अनेकपद्म के० देवोए र

चेला एरा घणा कमलो, इडरुक्चामर के० चइसरखी छे कांति जेउनी एव चामरो, अने उत्सर्पि के० ऊंचे प्रसारपामनारी जे सालत्रयी के० त्रणप्राकार, तेण करीने सत् के० प्रधान एवु, अने अवनमदशोकपृथ्वीतुंग नापशोना नागुरु–अवनमत् के० वदन करनारां छे, अशोकवृक्ष जेनेविषे, अने ˆ प्राय के० पृथ्वीनेविषे उत्साहरूप छे शोभा जेनी, एवु जे आतपत्र के० छत्र तेनी जे प्रभा के० कांती, तेणे करीने गुरु के०मोहोटु, अने परेताहितारोचि परेत के० नष्ट थया छे अहित के० शत्रु जेउना, एवा जे पुरुषो, तेउणकरीने रोचित के० अत्यंत शोभित एवु, अने प तपत्रननागुर्वराराट्परेताि त–यशोभात के० यशेकरीने शोभित एवा जे पत्र के० वाहनो, तेउनी जे के० कांती, तेने नाके के० सेवन करनारा जे उर्वराराट् के० भूमिपती, अने के०-पिशाच देवता, अने अहि के० नागदेवता, अने तारा के० नक्षत्र देवता- तेउए करीने उचित के० योग्य एवु छे ॥ २ ॥

परमततिमिरोग्रभानुप्रभाभूरिभंगैर्गभीराभृशंविश्ववर्येनिकाय्येवितीर्यात्तरा ॥ महतिमतिमतेहितेशस्यमानस्यवासंसदाऽतन्वतीतापदानंदधानस्यसाऽमानिन ॥ जननमृतितरागनिष्पारसंसारनीराकरांतर्निमज्जज्जनोत्तारनौर्भारतीतीर्थकृत् ॥ महतिमतिमतेहितेशस्यमानस्यवासंसदातन्वतीतापदानंदधानस्यसामानिन ॥ ३ ॥

व्याख्या–हे अतन्वतीतापत्–अतनुके० महोटी अतीत के०नष्ट थएलीले, पत्के० आपदा जेनाथी एवा, अने हे मतिमतेहितके०बुद्धिमान् एवा पुरुषे लषित एवा, हे तीर्थकृत्के० हेतीर्थंकर देव भगवान्! ईशस्यके० समर्थ एवा मते के०जिनशासनरूप मतनेविषे हिके०निश्चये करीने शस्यमानस्यके० वाने योग्य एवो, अने आनंदधानस्यके० आनंदनु केवल स्थान एवो, अने निन के० मानरहित एवो, अने न के० अमोने सामानिके० प्रियवस्तुने के० देनारो एवो जे तु तेके० तारी भारतीके० देशनारूप जे वाणी, साके० ते श्ववर्यके० जगत्नेविषे मुख्य एवा, अने महतिके० पीसतालीश लाख योजन स्तारयुक्त एवा निकाय्येके० मोक्षरूप घरनेविषे वासके० वसतीने वितीर्यात्तरां समर्पण करो ते वाणी केवीछे? तो– परमत नागुन ११

सनरूप जे तिमिरके० अंधकार, तेना नाश कारणे, अग्रजानुप्रजाके० अग्रसूर्यनी कांति सरखीबे; अने जूरिजंगैः के० घणा जे जंग, तेउए करीने जूरांके० अत्यंत, गजीराके० गंजीर. अने जननमृतितरंगनिष्पारसंसारनीराकरांतर्निमज्जज्जनोत्तारनौः-जननके० जन्म अने मृतिके० मरणरूप बे तरंग के० कल्लोल जेनेविषे एवो जे निष्पार के० पाररहित संसारनीराकर के० संसाररूप समुद्र, तेना अंतः के० मध्यजागनेविषे निमज्जत् के० बुडनारा जे जन के० जविकजनो, तेउने उत्तारे के० उतरवामाटे नौःके० नौकारूप. अने तापदानं के० संतापना बेदनने आतन्वती के० करनारी, अने मानस्य के० जे पूजादिक सत्कार, तेनी संसतूवा के० सजा सरखी अथवा सजाज होयना! एवीबे संसतूवा-अहींयां वा शब्द इव शब्दार्थी अथवा उत्प्रेक्षा वाचक जाणवो. ॥ ३ ॥

सरजसनतनाकिनारीजनोरोजपीठीलुठत्तारहारस्फुरद्रश्मिसारक्रमांजोरुहे ॥ परमवसुतरांगजारावसन्नाशितारातिजाराजितेजासिनीहारताराबलक्षेमदा ॥ क्षणरुचिरुचिरोरुचंचत्सटासंकटोत्कृष्टकंठोत्कटेसंस्थितेजव्यलोकंत्वमंबाऽविके॥ परमवसुतरांगजारावसन्नाशितारातिजाराजितेजासिनीहारताराबलक्षेऽमदा ॥ ४ ॥

व्याख्या- हे सरजसनतनाकिनारीजनोरोजपीठीलुठत्तारहार स्फुरद्रश्मिसारक्रमांजोरुहे- सरजस के० वेगयुक्त एवा, नत के० नमन करनारा जे, नाकि के० देवो, तेउनी नारीजन के० स्त्रीजन, तेमना जे उरोज के० स्तन, तद्रूप जे पीठी के० आसन, तेनेविषे लुठत् के० लुंठन करनारा जे तार के० मनोहर एवा हार के० पुष्पहार, तेउनां स्फुरत् के० देदीप्यमान जे रश्मि के० किरणो तेउए करीने सार के० श्रेष्ठ बे, क्रमांजोरुह के० चरणकमल जेना एवी, अने देव्यजिते के० कोइए पण जेने जीती नथी एवी, अने क्षणरुचिरुचिरोरुचंचत्सटासंकटोत्कृष्टकंठोत्कटे- क्षणरुचि के० विजली, तेना सरखी रुचिर के० मनोहर एवी, अने उरु के० महोटी जे चंचत् के० देदीप्यमान एवी सटा के० जटा, तेणे करीने संकट के० अतिशय जरचक एवोजे उत्कृष्ट कंठ, तेणे करीने उत्कट के० ग्रूर एवो, अने जासिनीहारताराबलक्षे-जासि के० शोजनशील, एवुं जे नीहार के० हिम अने तारा के० तारामंमल, तेना सरखो वलक्ष के० शुन्नवर्ण एवो, गजारो

चेला एवा घणा कमलो, इडुरुक्चामर के० चङसरखी ठे कानि जेउनी एवा चामरो, अने उत्सर्पि के० उचे प्रसारपामनारी जे सालत्रयी के० त्रणप्राकार, ते उंए करीने सत् के० प्रधान एवु, अने अवनमदशोकपृथ्वीकृण प्रायशोजातपत्रप्रजागुरु–अवनमत् के० वदन करनारा ठे, अशोकवृक्ष जेनेविषे, अने पृथ्वीकृण प्राय के० पृथ्वीनेविषे उत्साहरूप ठे शोजा जेनी, एवु जे आतपत्र के० ठत्र अने तेनी जे प्रजा के० कांती, तेणे करीने गुरु के०मोहोटु, अने परेताहितारोचित–परेत के० नष्ट थया ठे अहित के० शत्रु जेउना, एवा जे पुरूषो, तेउएकरीने अरोचित के० अत्यत शोजित एवु, अने यशोजातपत्रप्रजागुर्वराराट्परेताहितारोचित–यशोजात के० यशेकरीने शोजित एवा जे पत्र के० वाहनो, तेउनी जे प्रजा के० कांती, तेने जाके के० सेवन करनारा जे उर्वराराट् के० जूमिपती, अने परेत के० पिशाच देवता, अने अहि के० नागदेवता, अने तारा के० नक्षत्र देवता– तेउए करीने उचित के० योग्य एवु ठे ॥ २ ॥

परमततिमिरोग्रजानुप्रजाजूरिजगैर्गंजीराजृशाविश्ववर्यैनिकाय्येवि
तीर्यात्तरा ॥ महतिमतिमतेह्रितेशस्यमानस्यवाससदाऽतन्वतीताप
दानदधानस्यसाऽमानिन ॥ जननमृतितरागनिष्पारसंसारनीराक
रांतर्निमज्जनोत्तारनौर्जारतीतीर्थकृत् ॥ महतिमतिमतेह्रितेशस्य
मानस्यवाससदातन्वतीतापदानंदधानस्यसामानिन ॥ ३ ॥

व्याख्या–हे अतन्वतीतापत्–अतनुके० महोटी अतीत के०नष्ट थएलीठे, आपत्के० आपदा जेनाथी एवा, अने हे मतिमतेह्रितके०बुद्धिमान् एवा पुरुषे अजिलषित एवा, हे तीर्थरुत्के० हेतीर्थंकर देव जगवान्! ईशस्यके० समर्थ एवा, मते के०जिनशासनरूप मतनेविषे ह्रिके०निश्चये करीने शस्यमानस्यके०प्रशंसावाने योग्य एवो, अने आनदधानस्यके० आनंदनु केवल स्थान एवो, अने अमानिन के० मानरहित एवो, अने न के० अमोने सामानिके० प्रियवस्तुने के० देनारो एवो जे तु तेके० तारी जारतीके० देशनारूप जे वाणी, साके० ते विश्ववर्येके० जगत्नेविषे मुख्य एवा, अने महतिके० पीसतालीश लाख योजन विस्तारयुक्त एवा निकाय्येके० मोक्षरूप घरनेविषे वासके० वसतीने वितीर्यात्तरां समर्पण करो ते वाणी केवीठे? तोके–परमततिमिरोग्रजानुप्रजा–परम०

सनरूप जे तिमिरके० अंधकार. तेना नाश कारणे, उग्रभानुप्रभाके० उग्रसूर्यनी कांति सरखीने; अने भूरिभंगैः के० घणा जे भंग. तेउए करीने भृशंके० अत्यंत, गभीराके० गंभीर. अने जननमृतितरंगनिष्पारसंसारनीराकरांतर्निमज्जज्जनो त्तारनौः—जननके० जन्म अने मृतिके० मरणरूप छे तरंग के० कल्लोल जेनेविषे एवो जे निष्पार के० पाररहित संसारनीराकर के० संसाररूप समुद्र, तेना अंतः के० मध्यभागनेविषे निमज्जत् के० बुडनारा जे जन के० भविकजनो, तेउने उत्तारे के० उतरवामाटे नौःके० नौकारूप, अने तापदानं के० संतापना छेदनने आतन्वती के० करनारी, अने मानस्य के० जे पूजादिक सत्कार, तेनी संसत्वा के० सभा सरखी अथवा सभाज होयना! एवीछे संसत्वा—अहींयां वा शब्द इव श ब्दार्थी अथवा उत्प्रेक्षा वाचक जाणवो. ॥ ३ ॥

सरभसनतनाकिनारीजनोरोजपीठीलुठत्तारहारस्फुरद्रश्मिसारक्र मांभोरुहे ॥ परमवसुतरांगजारावसन्नाशितारातिभाराजितेभासि

नीहारतारावलक्षेमदा ॥ क्षणरुचिरुचिरोरुचंचत्सटासंकटोत्कृष्टकं ठोद्भटेसंस्थितेभव्यलोकेलमंबांऽविके ॥ परमवसुतरांगजारावसन्ना शितारातिभाराजितेभासिनीहारतारावलक्षेऽमदा ॥ ४ ॥

व्याख्या— हे सरभसनतनाकिनारीजनोरोजपीठीलुठत्तारहार स्फुरद्रश्मिसारक्र मांभोरुहे— सरभस के० वेगयुक्त एवा, नत के० नमन करनारा जे, नाकि के० देवो, तेउनी नारीजन के० स्त्रीजन, तेमना जे उरोज के० स्तन, तद्रूप जे पी ठी के० आसन, तेनेविषे लुठत् के० लुंठन करनारा जे तार के० मनोहर एवा हार के० पुष्पहार, तेउनां स्फुरत् के० देदीप्यमान जे रश्मि के० किरणो तेउए करीने सार के० श्रेष्ठ छे, क्रमांभोरुह के० चरणकमल जेना एवी, अने हेअजि ते के० कोइए पण जेने जीती नथी एवी, अने क्षणरुचिरुचिरोरुचंचत्सटासंकटो त्कृष्टकंठोद्भटे— क्षणरुचि के० विजली, तेना सरखी रुचिर के० मनोहर एवी, अ ने उरु के० महोटी जे चंचत् के० देदीप्यमान एवी सटा के० जटा, तेणे करीने संकट के० अतिशय भरचक एवोजे उत्कृष्ट कंठ, तेणे करीने उद्भट के० शूर एवो, अने भासिनीहारतारावलक्षे—भासि के० शोभनशील, एवुं जे नीहार के० हि म अने तारा के० तारामंडल, तेना सरखो वलक्ष के० शुभ्रवर्ण एवो, गजारो

भूमि–तेने विषे सार के० प्रधान एवा हे वसुधासार! हे तीर्थनाथ के० हे तीर्थकरदेव! तव के० तने आसाद्यमाना के० प्राप्त थएली, वाणी के० पांत्रीश गुणोए करी विराजमान एवी धर्मोपलक्षण वाणी ते, मे के० माहरा हृदयनेविषे आहितानि के० स्थापन करेला एवा हितानि के० मनोवांछितने क्रियात् के० करो ते वाणी केवीछे? तो के–नित्य के० निरंतर–हेतूपपत्तिप्रतिहतकुमतप्रोद्धतध्वांतबाधा–हेतु के० वस्तु स्थापन करनारा लिंग अने उपपत्ति के० युक्ति–तेणे करीने प्रतिहत के० निराकरण कर्योछे, कुमत के० कुत्सित पुरुषनो मतरूप प्रोद्धत के० उत्कट एवो ध्वांत के० अंधकाररूप अर्थात् अज्ञानरूप ग्रंथी जेणे एवी, अने अपापाया–अपके० गयोछे, अपायके० क्लेश जेथी एवी, अने सुधासारहृद्या–सुधा के० अमृत, तेनी जे आसारके० वेगयुक्तवृष्टि, तेना सरखी हृद्यके० मनोहर अने, निर्वाणमार्गप्रणयपरिगता–निर्वाणमार्ग के० मोक्षमार्ग–तेनेविषे जे प्रणयीके० स्नेहवाला एवा यती, तेउए परिगत के० अंगीकार करेली एवीछे.

रक्षःक्षुद्रग्रहादिप्रतिहतिशमिनीवाहितश्वेतभास्व ॥ त्सन्ना
लीकासदाप्तापरिकरमुदितासाक्षमालाभवत ॥ शुभ्राश्री
शांतिदेवीजगतिजनयतात्कुंडिकाभातियस्या ॥ सन्ना
लीकासदाप्तापरिकरमुदितासाक्षमालाभवतं ॥ ४ ॥

व्याख्या–हे भव्यजन! यस्य के० जे श्रीशांतिदेवीना परिकर के० हस्तने विषे भूषणवे करी उदिता के० उदय पामेली अने आप्त के० प्राप्त थएली एवी जे कुंडिका के० कमंडल, ते सदा के० निरंतर, भाति के० शोभेछे, सा के० ते, श्री शांतिदेवी के० श्रीशांतिदेवीनामे अधिष्ठायक देवी, जगति के० जगत्नेविषे, भवंतं के० तु जे तेने, क्षमालाभवंतं–क्षमाके० उपशम, तेनोछे लाभके० प्राप्ति जेने एवा अथवा क्षमा के० पृथ्वी, तेनोछे लाभ जेने, एवाने जनयतात् के० उत्पन्न करो ते शांतिदेवी केवीछे? तो के, रक्षःक्षुद्रग्रहादिप्रतिशमिनि! रक्षः के० राक्षस, क्षुद्र के० डाकिनी शाकिनी प्रमुख दुष्ट व्यंतरादिक अने ग्रहके० शनैश्चरादिक जे क्रूर ग्रह, तेउथी जे प्रतिहति के० उपघात, तेनी शमिनी के० उपशम करनारी, अने वाहितश्वेतभास्वत्सन्नालीका–वाहित के० वाहन कर्युंछे, श्वेत के० शुभ्र, भास्वत के० देदीप्यमान एवु सत् के० उत्तम एवु नालीक के० कमल जेणे, एवी अने सदाप्ता–सत् के० साधु, तेउने आप्त के० मान्य एवी अने परिकरमुदिता के०

जदा मंगलादिक साहित्ये हर्ष पामेली, अने शुभ्रा के० वर्णे श्वेतवर्ण एवी, अने सन्नालीका—सन्न के० नष्ट थयुंछे, अलीक के० असत्य जेथी, एवीछे. ॥ ४ ॥ इति श्रीवासुपूज्यजिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ ४८ ॥

अवतरण—हवे श्रीविमलनाथजिननीस्तुतीपृथ्वीवृत्तेकरीने कहेछे.

अपापदमलंघनंशमितमानमामोहितं ॥ नतामरसभासुरं विमलमालयामोहितं ॥ अपापदमलंघनंशमितमानमा मोहितं॥ नतामरसभासुरंविमलमालयाऽमोहितं ॥ १ ॥

अर्थ.—अमे विमलं के० श्रीविमल नामक जिनेश्वरने, आनमामः के० अत्यंत नमस्कार करीएछैए. ते विमलनाथ केवाछे ? तो के, अपापदं—अप के० गएलीछे, आपदा के० आपत्ति जेथी एवा. अने अलंघनंगंऽतं के० अत्यंत कर्मक्षयथी उत्पन्न थएलुं जे निविडसुख. तेने प्राप्त थएला. अने हितं के० सर्व प्राणी मात्रना हितकारी.अने नतामरसभाऽसुरं—नत के०नम्र छे.अमर के० देव अने सभाऽसुर के० कांतियुक्त असुर जेने एवा, अने विमल के० निर्मल एवी जे माला के० पुष्पमाला—तेणे करीने मोहित के० सुगंधयुक्त करेला. अने अपापदं के० पापने देनार न ही;एवा अने अलंघनं के० कोइ पण जेनी आज्ञानुं उलंघन करे नही एवा. अने श मितमानं के० शमन कर्युंछे मान के० अभिमान जेणे एवा.अने नआमोहितं के० कोइ पण विषये करीने किंचित पण मोहने न पामेला, अने तामरसभासुर के० आरक्त क मल सरखा देदीप्यमान अने, आलयामोहित—आलय के० गृह, तेनी प्राप्तिए अने नाशे, अमोहितं के० प्राप्त थनारो जे हर्ष किंवा खेद, तेणे रहित. एवाछे. ॥ १ ॥

सदानवसुराजिताअसमराजिनाभीरदाः॥क्रियासुरुचिता सुतेसकलभारतीरायताः ॥ सदानवसुराजिताअसमरा जिनाभीरदाः॥ क्रियासुरुचितासुतेसकलभारतीरायता॥२॥

व्याख्याः—हेभव्यजन ! जेजिन. सदानवसुराजिताः—सदानव के० अनुक्रमा रोसहित जे, सुर के० देव, तेउए अजित के० न जीतेला, अने असमराः के० सं ग्रामरहित. अने सकलभारतीरा —सकल के० संपूर्ण जे, भार के० संसारनार. ते ना तीरा.के० तटनेविषे रहेनारा एटले संसारे अजित एवा अने यता. के० यत्न करनारा, अने सदानवसुराजिता - के० दानसहित. एवुं जे वसु के० सुवर्ण

णे करी राजित के० शोभित– अने असमराजिनाभीरदा – असम के० निरूपमपणे राजि के० शोभितछे नाभि अने रद के० दंतजेना एवा, अने सकलभाकल के० सुदर एवी जे भाके० कांती, तेणेसहित, अथवा संपूर्णकांतीए युक्त एवा, अने भीरदा के० भयनो नाश करनारा एवा ते जिना के० तेतीर्थंकर तेके० तने उचितासुके० करवा माटे योग्य एवी अने रुचितासुके०पंमितपुरूषोने मान्य, एवी क्रियासुके० धर्मानुष्ठान क्रियानेविषे–आयता के० विस्तृतएवी रती के० संतोषने क्रियासु के० करो ॥ २ ॥

सदायतिगुरोरहोनमतमानवैरचित ॥ मतवरदमेन
सारहितमायताभावत ॥ सदायतिगुरोरहोनमतमान
वैरचितं॥ मतवरदमेनसारहितमायताभावत ॥ ३ ॥

व्याख्या – अहो के० हेलोको, यतिगुरो के० यतीना गुरू एवा अने आयताभावत – आयत के० विशाल एवी जे आभा के०कांती, ते छे जेने एवा, गुरो के० तीर्थंकरना, मतंके० सिद्धांतमतने तमे भावत के० भक्तिए करीने सदाके० निरंतर, नमत के० वंदन करो ते मत केवुछे? तोके–मानवै के० मनुष्योए,अचितं के० पूजित,अने वरदके० इच्छितवरने आपनारूं, अने एनसाके० पापे करीने रहित एवु, अने रह के० रहस्यभूत, अने जेने मानके० अभिमान अने वैरपण मान्यनथी एवु, अने आयता के० वृद्धिपामनारा एवा वरदमे के० श्रेष्ठ एवा आत्मदमे करीने चित के० व्याप्त एवु, अने सारहित के० सर्वजनने अभिमत अने हितकारक एवु, अने सदायति–सत् के० मोहोटीछे आयति के० प्रभुता जेथी एवु, अने मतं के० सर्वजनने मान्य एवुछे ॥ ३ ॥

प्रभाजितनुतामलपरमचापलारोहिणी॥ सुधावसुरभीमना
मयिसभाक्षमालेहित ॥ प्रभाजितनुताऽमलंपरमचापलाऽरो
हिणी ॥ सुधावसुरभीमनामयिसभाक्षमालेहित ॥ ४ ॥

व्याख्या –रोहिणी के०रोहिणी नामे जे अधिष्ठायक देवी ते,अलं के०अत्यंत,परंके० उत्कृष्टपणे प्रभाजिके० भजनशील, एवी, अने क्षमाले के०क्षमावान् एवी,ते मयिके० मारेविषे, अमलंके०निर्मल अने हितंके० हितकारक एवा ईहितंके०वांछितने, तनुतां के०विस्तारकरो ते रोहिणीदेवी केवीछे ? तोके–अचापलाके०चपलपणाएरहित अने सुधावसु –सुधा के०चूनो तेना सरखीछे, वसुके०कांती जेनी, अथवासुधाके०अमृत,

तेजने.वसुके०इव्य जेनुं एवी.अने अन्नीमनाःके०भयरहितछे मन जेनुं एवी,अने सन्ना क्षमालाके०कांतियुक्तने अक्षमालाके०जपमाला जेनी एवी,अने प्रभाजितनुता–प्रभा के०ते देवीनी कांतीए जे जितके०जीतेला जे लोक,तेउए नुता के०स्तुती करेली,अने परमचापला–परम के० उत्कृष्ट एवुं जे चापके० धनुष्य, तेने ग्रहण करनारी, अ ने सुधावसुरभीके० महोटावेगे करीने दोडनारी जे सुरभिके० कामधेनु, ते प्रत्ये आ रोहिणीके० आरोहण करनारी, अने अनामयिसभा–आमयके० रोग, तेणे रहित एवीने सभाके० पर्षदा जेनी एवीने. ॥४॥ इति विमलजिनस्तुति. संपूर्णा. ॥४१॥

अवतरण०–हवेश्री अनंतजिननाथनी स्तुति, द्रुतविलंबित वृत्तेकरीने कहेछे.

सकलधौतसहासनमेरव ॥ स्तवदिशंत्वभिषेकजलाप्लवाः ॥ म
तमनंतजितःस्नपितोल्लसत् ॥ सकलधौतसहासनमेरवः ॥ १ ॥

व्याख्या–हे भव्यजन, सकलधौतसहासनमेरवः–सकल के० संपूर्ण, धौत के० क्षालन कर्युं छे, सहास के० सप्रकाश–अर्थात् पुष्पादिकोए विकसित एवुं नमेरु के० देवताउनुं वृक्ष जेणे एवो, अने स्नपितोल्लसत्सकलधौतसहासनमे रव –स्नपित के० स्नान कराव्युं छे, उल्लसत् के० देदीप्यमान, सकलधौत के० सुवर्णसहित, अने सहासन के० अभिषेक माटे जे सिंहासन, तेणे सहित, एवो मेरुके० मेरुपर्वत जेणे, एवा अनंतजिन के० श्रीअनंतजिननाथनो अभिषेक. ज लाप्लवाः के० मेरुपर्वत उपर जन्माभिषेक करवामाटे प्राप्त थएलो जे उदकनो प्र वाह, ते तवके० तमारा, मतं के० मनोवांछितने, दिशंतु के० आपो. ॥ १ ॥

ममरतामरसेविततेक्षण प्रदनिहंतुजिनेंद्रकदंबक ॥ व
रदपादयुगंगतमज्ञता ममरतामरसेविततेक्षण ॥ २ ॥

व्याख्या–रत के० प्रीतिए तत्पर एवा जे अमर के० देवो, तेउए सेवित के० सेवन करेला, एवा हे रतामरसेवित! अने क्षण के० महोत्साह, तेने प्रद के० उत्तम प्रकारे करीने देनारा, एवाहे क्षणप्रद! अने वर देनारा एवा हे वरद! अने वितत के० विस्तीर्ण छे नेत्रो जेनां, एवा हे वितेक्षण! हे जिनेंद्रकदंबक के० हे जिनेंद्रसमूह, ते के० तमारुं, अमरतामरसे–अमरके० देव, तेउए मानेला जे ता मरस के० कमलो, तेनेविषे गत के० प्राप्त एवुं पादयुगं के० चरणयुगल, ते मम के० मारा, अज्ञता के० अज्ञानीपणाने निहंतु के० संहार करो. एटले नाश करो

णे करी राजित के० शोभित– अने असमराजिनाभीरदा – असम के० निरू पमपणे राजि के० शोभितने नाभि अने रद के० दंतजेना एवा, अने सकलना-कल के० सुंदर एवी जे भाके० काती, तेणेसहित, अथवा संपूर्णकातीए युक्त ए वा, अने भीरदा के० भयनो नाश करनारा एवा ते जिना के० तेतीर्थंकर तेके० तने भवितासुके० करवा माटे योग्य एवी अने रुचितासुके० पमितपुरुषोने मान्य, एवी क्रियासुके० धर्मानुष्ठान क्रियानेविषे–आयता के० विस्तृतएवी रती के० स तोषने क्रियासु के० करो ॥ २ ॥

सदायतिगुरोरह्नोनमतमानवैरचितं ॥ मतवरदमेन
सारहितमायताभावत ॥ सदायतिगुरोरह्नोनमतमान
वैरचित॥ मतंवरदमेनसारहितमायताभावत ॥ ३ ॥

व्याख्या – अहो के० हेलोको, यतिगुरो के० यतीना गुरु एवा अने आयता भावत – आयत के० विशाल एवी जे आभा के०काती, ते छे जेने एवा, गुरो के० तीर्थंकरना, मतंके० सिद्धांतमतने तमे भावत के० भक्तिए करीने सदाके० निरंत र, नमत के० वंदन करो ते मत केवुछे? तोके–मानवै के० मनुष्योए, अचितं के० पूजित,अने वरदके० इछितवरने आपनारुं, अने एनसाके० पापे करीने रहित ए वु, अने रह के० रहस्यभूत, अने जेने मानके० अभिमान अने वैरपण मान्यनथी एवु, अने आयता के० वृद्धिपामनारा एवा वरदमे के० श्रेष्ठ एवा आत्मदमे करीने चित के० व्याप्त एवु, अने सारहित के० सर्वजनने अभिमत अने हितकारक एवु, अने सदायति–सत् के० मोटोटीछे आयति के० प्रभुता जेथी एवु, अने मतं के० सर्वजनने मान्य एवुछे ॥ ३ ॥

प्रभाजितनुतामलपरमचापलारोहिणी॥ सुधावसुरभीमना
मयिसभाक्षमालेहित ॥ प्रभाजितनुताऽमलपरमचापलाऽरो
हिणी ॥ सुधावसुरभीमनामयिसभाक्षमालेहित ॥ ४ ॥

व्याख्या –रोहिणी के०रोहिणी नामे जे अधिष्ठायक देवी ते,अल के०अत्यंत,परके० उत्कृष्टपणे प्रभाजिके० भजनशील, एवी, अने क्षमाले के०क्षमावान् एवी,ते मयिके० मारेविषे, अमलके०निर्मल अने हितंके०हितकारक एवा ईहितके०वाछितने, तनुता के०विस्तारकरो ते रोहिणीदेवी केवीछे ? तोके–अचापलाके०चपलपणाएरहित अने सुधावसु –सुधा के०चूनो तेना सरखीछे, वसुके०काती जेनी, अथवा सुधाके०अमृत,

जछे, वस्तुके० ऽव्य जेनुं एवी, अने अनीमनाःके० नयरहितछे मन जेनुं एवी, अने सना
श्मालाके० कांतियुक्तछे अक्षमालाके० जपमाला जेनी एवी, अने प्रनाजितनुता–प्रना
के० ते देवीनी कांतीए जे जितके० जीतेला जे लोक, तेउए नुता के० स्तुती करेली, अने
रमचापला–परम के० उत्कृष्ट एवुं जे चापके० धनुष्य, तेने ग्रहण करनारी, अ
ी सुधावहुरज्ञीके० महोटावेगे करीने दोडनारी जे सुरनिके० कामधेनु, ते प्रत्ये आ
ोहिणीके० आरोहण करनारी, अने अनामयिसना–आमयके० रोग, तेणे रहित
ीछे सनाके० पर्षदा जेनी एवीछे. ॥४॥ इति विमलजिनस्तुतिः संपूर्णा. ॥५४॥

अवतरण०–हवेश्री अनंतजिननाथनी स्तुति, द्रुतविलंबित वृत्तेकरीने कहेछे.

सकलधौतसहासनमेरव ॥ स्तवदिशंत्वभिषेकजलाप्लवाः ॥ म
तमनंतजितःस्नपितोल्लसत् ॥ सकलधौतसहासनमेरवः ॥ १ ॥

व्याख्या–हे नव्यजन, सकलधौतसहासनमेरवः–सकल के० संपूर्ण, धौत
के० क्षालन कर्युं छे, सहास के० सप्रकाश–अर्थात् पुष्पादिकोए विकसित एवुं
नमेरु के० देवताउनुं वृक्ष जेणे एवो, अने स्नपितोल्लसत्सकलधौतसहासनमे
रव–स्नपित के० स्नान कराव्युं छे, उल्लसत् के० देदीप्यमान, सकलधौत के०
सुवर्णसहित, अने सहासन के० अभिषेक माटे जे सिंहासन, तेणे सहित, एवा
मेरुके० मेरुपर्वत जेणे, एवा अनंतजिन के० श्रीअनंतजिननाथनो अभिषेक, ज
लाप्लवाः के० मेरुपर्वत उपर जन्माभिषेक करवामाटे प्राप्त थएला जे उदकनो प्र
वाह, ते तवके० तमारा, मतं के० मनोवांछितने. दिशंतु के० आपो. ॥ १ ॥

ममरतामरसेविततेक्षण प्रदनिहंतुजिनेंऽकदंबक ॥ व
रदपादयुगंगतमज्ञता ममरतामरसेविततेक्षण ॥ २ ॥

व्याख्या–रत के० प्रीतिए तत्पर एवा जे अमर के० देवो, तेउए सेवित के०
सेवन करेला, एवा हे रतामरसेवित! अने क्षण के० महोत्साह, तेने प्रद के०
उत्तम प्रकारे करीने देनारा, एवाहे क्षणप्रद! अने वर देनारा एवा हे वरद! अने
वितत के० विस्तीर्ण छे नेत्रो जेनां, एवा हे विततेक्षण! हे जिनेंद्रकदंबक के० ह
जिनेंद्रसमूह, ते के० तमारुं, अमरतामरस–अमरके० देव, तेउए मानेला जे ता
मरस के० कमलो, तेनेविषे [illegible] के० प्राप्त एवुं पादयुगं के० [illegible]
के० मारा, अज्ञतां के० [illegible] निहंतु के० संहार करो [illegible]

णे करी, राजित के० शोजित– अने असमराजिनाजीरदा – असम के० निरूप
पमपणे राजि के० शोजितजे नाजि अने रद के० दतजेना एवा, अने सकजना-
कज के० सुंदर एवी जे जाके० काती, तेणेसहित, अथवा सपूर्णकातीए युक्त ए
वा, अने नीरदा के० जयनो नाश करनारा एवा ते जिना के० तेतीर्थकर तेके०
तने जवितासुके० करवा माटे योग्य एवी अने रुचितासुके०पमितपुरूषोने मान्य,
एवी क्रियासुके० धर्मानुष्ठान क्रियानेविषे–आयता के० विस्तृतएवी रती के० स
तोषने क्रियासु के० करो ॥ २ ॥

सदायतिगुरोरह्नोनमतमानवैरचितं ॥ मतंवरदमेन
सारहितमायताज्ञावत ॥ सदायतिगुरोरह्नोनमतमान
वैरचितं॥ मतंवरदमेनसारहितमायताज्ञावत ॥ ३ ॥

व्याख्या – अहो के० हेलोको, यतिगुरो के० यतीना गुरु एवा अने आयता
जावत – आयत के० विशाल एवी जे आज्ञा के०काती, ते वे जेने एवा, गुरो के०
तीर्थकरना, मतंके० सिद्धांतमतने तमे जावत के० जक्तिए करीने सदाके० निरंत
र, नमत के० वदन करो ते मत केवुजे? तोके–मानवै के० मनुष्योए, अचितं के०
पूजित,अने वरदके० इछितवरने आपनारू, अने एनसाके० पापे करीने रहित ए
वु, अने रह के० रहस्यजूत, अने जेने मानके० अजिमान अने वैरपण मान्यनथी
एवु, अने आयता के० वृद्धिपामनारा एवा वरदमे के० श्रेष्ठ एवा आत्मदमे करीने
चित के० व्याप्त एवु, अने सारहित के० सर्वजनने अजिमत अने हितकारक एवु,
अने सदायति–सत् के० मोहोटीजे आयति के० प्रजुता जेथी एवु, अने मतं के०
सर्वजनने मान्य एवुजे ॥ ३ ॥

प्रजाजितनुताममलपरमचापलारोहिणी॥ सुधावसुरजीमना
मयिसजाक्षमालेहित ॥ प्रजाजितनुताऽमलपरमचापलाऽरो
हिणी ॥ सुधावसुरजीमनामयिसजाक्षमालेहित ॥ ४ ॥

व्याख्या –रोहिणी के०रोहिणी नामे जे अधिष्ठायक देवी ते,अल के०अत्यंत,परके०
उत्कृष्टपणे प्रजाजिके० जजनशील, एवी, अने क्षमाले के०क्षमावान् एवी, ते मयिके०
मारेविषे, अमलंके०निर्मल अने हितंके० हितकारक एवा ईहितंके०वांछितने, तनुता
के०विस्तारकरो ते रोहिणीदेवी केवीजे ? तोके–अचापलाके०चपलपणाएरहित अने
सुधावसु –सुधा के०चूनो तेना सरखीजे, वसुके०काती जेनी, अथवा सुधाके०अमृत,

तेजवे.वसुके०द्रव्य जेनुं एवी.अने अमीमनाःके०भयरहितडे मन जेनुं एवी.अने भचा क्षमालाके०कांतियुक्तडे अक्षमालाके०जपमाला जेनी एवी.अने भचाजितनुता–भचा के०ते देवीनी कांतीए जे जितके०जीतेला जे लोक,तेउए नुता के०स्तुती करेली,अने परमचापला–परम के० उत्कृष्ट एवुं जे चापके० धनुष्य, तेने ग्रहण करनारी, अ ने सुधावतुरजीके० महोटावेगे करीने दोडनारी जे सुरभिके० कामधेनु, ते प्रत्ये आ रोहिणीके० आरोहण करनारी, अने अनामयितला–आमयके० रोग, तेणे रहित एवीडे सनाके० पर्षदा जेनी एवीडे. ॥४॥ इति विमलजिनस्तुति. संपूर्णा. ॥५१॥

अवतरण०–हवेश्री अनंतजिननाथनी स्तुति, द्रुतविलंबित वृत्तेकरीने कहेडे.

सकलधौतसहासनमेरव ॥ स्तवदिशंत्वभिषेकजलाप्लवाः ॥ म
तमनंतजितःस्नपिताल्लसत् ॥ सकलधौतसहासनमेरवः ॥ १ ॥

व्याख्या–हे भव्यजन, सकलधौतसहासनमेरवः–सकल के० संपूर्ण, धौत के० क्षालन कर्युं डे, सहास के० सप्रकाश–अर्थात् पुष्पादिकोए विकसित एवुं नमेरु के० देवताउनुं वृक्ष जेणे एवा, अने स्नपितोल्लसत्सकलधौतसहासनमे रव.–स्नपित के० स्नान कराव्युं डे, उल्लसत् के० देदीप्यमान, सकलधौत के० सुवर्णसहित, अने सहासन के० अभिषेक माटे जे सिंहासन. तेणे सहित, एवा मेरुके० मेरुपर्वत जेणे, एवा अनंतजिन के० श्रीअनंतजिननाथनो अभिषेक, ज लाप्लवाः के० मेरुपर्वत उपर जन्माभिषेक करवामाटे प्राप्त थएलो जे उदकनो प्र वाह, ते तवके० तमारा, मतं के० मनोवांछितने, दिशंतु के० आपो. ॥ १ ॥

ममरतामरसेविततेक्षण प्रदनिहंतुजिनेंद्रकदंबक ॥ व
रदपादयुगंगतमज्ञता ममरतामरसेविततेक्षण ॥ २ ॥

व्याख्या–रत के० प्रीतिए तत्पर एवा जे अमर के० देवो, तेउए सेवित के० सेवन करेला, एवा हे रतामरसेवित! अने क्षण के० महोत्साह, तेने प्रद के० उत्तम प्रकारे करीने देनारा, एवाहे क्षणप्रद! अने वर देनारा एवा हे वरद! अने वितत के० विस्तीर्ण डे नेत्रो जेनां, एवा हे विततेक्षण! हे जिनेंद्रकदंबक के० हे जिनेंद्रसमूह, ते के० तमारुं, अमरतामरस–अमरके० देव, तेउए मांभेलां जे ता मरस के० कमलो, तेनेविषे गत के० प्राप्त एवुं पादयुग के० चरणयुगल, ते मम के० मारा, अज्ञतां के० अज्ञानीपणाने निहंतु [illegible] संहार करो. एटले

णे करी राजित के० शोभित– अने असमराजिनाभीरदा – असम के० निरू पमपणे राजि के० शोभितछे नाभि अने रद के० दंतजेना एवा, अने सकलना- कल के० सुंदर एवी जे भाके० कांती, तेणेसहित, अथवा संपूर्णकांतीए युक्त ए वा, अने भीरदा के० भयनो नाश करनारा एवा ते जिना के० तेतीर्थंकर तेके० तने उचितासुके० करवा माटे योग्य एवी अने रुचितासुके०पंडितपुरूषोने मान्य, एवी क्रियासुके० धर्मानुष्ठान क्रियानेविषे–आयता के० विस्तृतएवी रती के० स तोषने क्रियासु. के० करो ॥ २ ॥

सदायतिगुरोरहोनमतमानवैरचित ॥ मतवरदमेन सारहितमायताभावत ॥ सदायतिगुरोरहोनमतमान वैरचित॥ मतंवरदमेनसारहितमायताभावत ॥ ३ ॥

व्याख्या – अहो के० हेलोको, यतिगुरो के० यतीना गुरू एवा अने आयता भावत – आयत के० विशाल एवी जे आभा के०कांती, ते छे जेने एवा, गुरो के० तीर्थंकरना, मतंके० सिद्धांतमतने तमे भावत के० भक्तिए करीने सदाके० निरंत र, नमत के० वंदन करो ते मत केवुछे? तोके–मानवै के० मनुष्योए, अंचितं के० पूजित,अने वरदके० इच्छितवरने आपनारूं, अने एनसाके० पापे करीने रहित ए वु, अने रह के० रहस्यभूत, अने जेने मानके० अभिमान अने वैरपण मान्यनथी एवु, अने आयता के० वृद्धिपामनारा एवा वरदमे के० श्रेष्ठ एवा आत्मदमे करीने चित के० व्याप्त एवु, अने सारहित के० सर्वजनने अभिमत अने हितकारक एवु, अने सदायति–सत् के० मोहोटीछे आयति के० प्रभुता जेथी एवु, अने मतं के० सर्वजनने मान्य एवुछे ॥ ३ ॥

प्रभाजितनुतामलपरमचापलारोहिणी॥ सुधावसुरभीमना मयिसभाक्षमालेहित ॥ प्रभाजितनुताऽमलपरमचापलाऽरो हिणी ॥ सुधावसुरभीमनामयिसभाक्षमालेहित ॥ ४ ॥

व्याख्या –रोहिणी के०रोहिणी नामे जे अधिष्ठायक देवी ते,अल के०अत्यंत,परके० उत्कृष्टपणे प्रभाजिके० भजनशील, एवी, अने क्षमाले के०क्षमावान् एवी,ते मयिके० मारेविषे, अमलके०निर्मल अने हितंके०हितकारक एवा ईहितके०वांछितने, तनुता के०विस्तारकरो ते रोहिणीदेवी केवीछे ? तोके–अचापलाके०चपलपणाएरहित अने सुधावसु –सुधा के०चूनो तेना सरखीछे, वसुके०कांती जेनी, अथवासुधाके०अमृत,

तेजछे,वसुके०द्रव्य जेनुं एवी,अने अनीमनाःके०नयरहितछे मन जेनुं एवी,अने सना क्षमालाके०कांतियुक्तछे अक्षमालाके०जपमाला जेनी एवी,अने भनाजितनुता-भना के०ते देवीनी कांतीए जे जितके०जीतेला जे लोक,तेउए नुता के०स्तुती करेली,अने परमचापला-परम के० उत्कृष्ट एवुं जे चापके० धनुष्य, तेने ग्रहण करनारी, अ ने सुधावसुरनीके० महोटावेगे करीने दोडनारी जे सुरभिके० कामधेनु, ते प्रत्ये आ रोहिणीके० आरोहण करनारी, अने अनामयिसभा-आमयके० रोग, तेणे रहित एवीछे सभाके० पर्षदा जेनी एवीछे. ॥४॥ इति विमलजिनस्तुति. संपूर्ण. ॥५३॥

अवतरण०-हवेश्री अनंतजिननाथनी स्तुति, द्रुतविलंबित वृत्तेकरीने कहेछे.

सकलधौतसहासनमेरव ॥ स्तवदिशंत्वभिषेकजलाप्लवाः ॥ म
तमनंतजितःस्नपितोल्लसत् ॥ सकलधौतसहासनमेरवः ॥ १ ॥

व्याख्या-हे भव्यजन, सकलधौतसहासनमेरवः-सकल के० संपूर्ण, धौत के० क्षालन कर्युं छे, सहास के० सप्रकाश-अर्थात् पुष्पादिकोए विकसित एवु नमेरु के० देवताउनुं वृक्ष जेणे एवो, अने स्नपितोल्लसत्सकलधौतसहासनमे रव-स्नपित के० स्नान कराव्युं छे, उल्लसत् के० देदीप्यमान, सकलधौत के० सुवर्णसहित, अने सहासन के० अभिषेक माटे जे सिंहासन, तेणे सहित, एवा मेरुके० मेरुपर्वत जेणे, एवा अनंतजिन के० श्रीअनंतजिननाथनो अभिषेक, ज लाप्लवा. के० मेरुपर्वत उपर जन्माभिषेक करवामाटे प्राप्त थएला जे उदकनो प्र वाह, ते तवके० तमारा, मतं के० मनोवांछितने, दिशंतु के० आपो. ॥ १ ॥

ममरतामरसेविततेक्षण प्रदभिदंतुजिनेंद्रकदंबक ॥ व
रदपादयुगंगतमज्ञता ममरतामरसेविततेक्षण ॥ २ ॥

व्याख्या-रत्त के० प्रीतिए तत्पर एवा जे अमर के० देवो, तेउए सेवित के० सेवन करेला, एवा हे रतामरसेवित! अने क्षण के० महोत्साह, तेने प्रद के० उत्तम प्रकारे करीने देनारा, एवाहे क्षणप्रद! अने वर देनारा एवा हे वरद! अने वितत के० विस्तीर्ण छे नेत्रो जेनां. एवा हे वितेक्षण! हे जिनेंद्रकदंबक के० हे जिनेंद्रसमूह, ते के० तमारुं. अमरतामर [illegible] उए मांनेला जे ता मरस के० कमलो, तेनेविषे गत के० [illegible] ते मम के० मारा, अज्ञतां के० [illegible]

राजत्यानवपद्मरागरुचिभिः पादैर्जिताष्टापदा ॥ दु
ऽकोपद्रुतजातरूपविभयातन्वार्यधीरक्षमां ॥ बिभ्र
त्यामरसेव्ययाजिनपतेश्रीशांतिनाथाऽस्मरो॥ दुको
पद्रुतजातरूपविभयातन्वार्यधीरक्षमां ॥ १ ॥

व्याख्या– हे जिनपते के० हे केवलीना अधिपते एवा हे शांतिनाथ के० शांतिनाथ नामे हे भगवन्! तु मा के० मने रक्ष के० पालन कर तु केवोछे? (ते सबोधने करी कहेछे) हे अकोप के० कोपरहित, अने हे आर्य के० हे श्रेष्ठ, अने हे धीर के० परीसहादिके करीने क्षोभ न पामनारा, अने अमरसेव्यया के० देवोए सेवन करवा माटे योग्य एवा, अने द्रुतजातरूपविभया–द्रुत के० तपावेलु एवु जे जातरूप के० सुवर्ण, तेना सरखीछे विभा के०कांती जेनी, एवी अने क्षमां के० सहनशक्तिने, बिभ्रत्या के० धारण करनारी एवी, अने अतन्वा के० महोटी एवी, अने नवपद्मरागरुचिभिः –नव के० नवीन जे पद्म के० कमल, तेनो जे राग के० रंग, तेना सरखीछे रुचि के० कांति जेमनी एवा पादै के० चरणोए करीने राजत्या के० शोभनारी एवी तन्वा के० पोतानी मूर्तिए जिताष्टापदाद्रे–जित के० जीत्योछे, अष्टापदाद्रि के०सुवर्णपर्वत एवो मेरुजेणे एवा, अने हे अस्मरोद्रेकाप द्रुत–स्मर के० कंदर्प, तेनो जे उद्रेक के० वेग–तेणे करीने उपद्रुत के० उपद्रवने पामेला नहीं एवा, अने जातरूप–जात के० उत्पन्न थयुछे, जगतकरता अतिशय एवु रूप के० सौंदर्य जेने एवा, अने विनय के० नीकली गयोछे भय जेथी, एवा अने हे आर्यधी–आर्य के० प्रशंसा करवा माटे योग्यछे, धी के० बुद्धि जेनी एवा, अथवा आर्यधी एवो तु, मारू रक्षण कर एवो संबंध आ श्लोकमां श्रीशांतिनाथने मेरुपर्वतनी सादृश देखाड्याछे, ते एम के–मेरुपर्वत पण पद्मरागमणिमय एवा पोताना पादै के० मूलभूत जे पर्वतो, तेउंए करी शोभेछे, अने सुवर्णकरीने पीतवर्ण एवी भूमिने धारण करेछे, अने देवोए सेव्य इत्यादिक सादृश्य जाणवु ॥१॥

तेजीयासुरविद्विपोजिनवृषामालादधानारजो ॥ रा
ज्यामेडुरपारिजातसुमन संतानकांताचिता ॥ की
र्त्याकुंदसमत्विषेपदपियेनप्राप्तलोकत्रयी ॥ रा
ज्यामेडुरपारिजातसुमन संतानकांताचिता ॥ २ ॥

व्याख्या—येके० जे जिनश्रेष्ठ, प्राप्तलोकत्रयीराज्याः के० प्राप्त थयुंछे त्रैलोक्यनुं राज्य जेने, एवुं छतां पण ईश्दपि के० किंचित पण, नमेङ्कः के० मदने न स्वीकारता हवा, ते जिनवृषाः के० ते जिनश्रेष्ठ, जीयासुः के० जयवंत थाउ. ते केवाछे? तोके, अविद्विपः के० जेमने शत्रुनथी एवा, अने रजोराज्यामेङुरपारिजातसुमन संतानकांतां-- रजके० पराग, तेनी जे राजी के० श्रेणी, तेणे करीने मेङुर के० पुष्ट एवा जे पारिजातसुमनःसंतान के० कल्पवृक्षोना पुष्पोनो समुदाय, तेउए करीने कांतके० मनोहर एवी, मालां के० पुष्पमालाने दधाना के० धारणकरनारा, अने कुंदसमत्विषा के० कुंदपुष्पसरखी श्वेतवर्ण जेनी कांतीछे, एवी कीर्त्या के० कीर्तिए चिता के० व्याप्त, अने अपारिजातसुमनःकांतांचिताः—अपके० नष्ट थयोछे, अरिजातके० शत्रुसमूह जेथी, एवा जे सुमनस् के० देव अथवा पंमित, तेउनो जे संतान के० समुदाय, तेमनो जे कांतके० मस्तकप्रांत अथवा कांता के० स्त्रीउ, तेमणे अंचित के० पूजित, एवाछे. एमां मस्तक पक्षे अंचितके० वंदन करेला, एवु समजवु.

जैनेंङंमतमातनोतुसततंसम्यक्दृशांसद्गुणा॥ लीलाभ्नंगमहा
रिच्छिन्नमदनंतापापहृद्यामरं ॥ छुर्निर्भेदनिरंतरांतरतमोनिर्ना
शिपर्युल्लस॥ ल्लीलानंगमहारिच्छिन्नमदनंतापापहृद्यामरं॥ ३ ॥

व्याख्याः—जैनेंडं के० जिनेंद्रसंबंधी एवुं मत के० सिद्धांतरूप जे मत ते, सम्यक्दृशांके० सम्यक्दृष्टिपुरुषोने सद्गुणालीलाभ्नं के० उत्तमगुणोनी जे श्रेणी, तेना लाभने, सततं के० निरंतर, आतनोतु के० विस्तारकरो. ते मत केवुंछे? तोके—गमहारि—गमके०समानपाठना आलावा तेउए करीने हारि के० मनोहर, अने छिन्नमदनं के० छेदन कर्योछे मदन जेणे एवुं, अने तापापहृत् के० संसारसंबंधी तापनो नाश करनारुं, अने यामरं— यामके० महाव्रत, तेने र के० देनारुं, अने छुर्निर्भेद निरंतरांतरतमोनिर्नाशि—छुर्निर्भेद के० छेदन करवामाटे अयोग्य, अने निरंतर के० निबिड एवुं जे आंतरतम के० मनथी उत्पन्न थएलुं मोहरूप तम, तेनो निर्नाशि के० अत्यंतनाश करनारुं, अने पर्युल्लसल्लीलानंगमहारिच्छित्—पर्युल्लसत् के० अतिशयछे लीला के० विलास जेउनो एवा, अने अनंग के० न नाश पामनारा एवा जे महारि के० महोटा शत्रु, तेउनुं छित् के० छेदन करनारुं, अने नमदनंतापापहृद्यामरं—नमत् के० वंदन करनाराछे, अनंत के० असंख्य, अपाप के० निष्पाप, अने हृद्य के० मनोहर, एवा अमर के० देव जेने, —ने. ॥ ३ ॥

दंभत्रकमंडलूनिकलयन्सब्रह्मशांतिःक्रियात् ॥ सं
त्यज्यानिशमीक्षणेनशमिनोमुक्ताक्षमालीहित ॥
ततात्र्टापदपिंडपिंगलरुचिर्योऽधारयन्मूढता ॥ सत्य
ज्यानिशमीक्षणेनशमिनोमुक्ताक्षमालीहित ॥ ४ ॥

व्याख्या–य ब्रह्मशांति के० जे ब्रह्मशांति नामक यक्षदेव, शमिन के० उ
शमयुक्त एवा कोइपण मुनिने अनिश के० निरंतर ईक्षणेन के० पोताना अवल
कने करीने, मूढता के० मूर्खपणाने, सत्यज्य के० दूर करीने, ते मुक्ताक्षमालं
हितं–मुक्त के० त्यागीछे, अक्षमा के० क्रूरता जेणे, एवा जे यति, तेमनी जे अ
ली के० श्रेणी, तेने पण, ईहित के० इच्छित, एवा हित के० मोक्षरूप हितने अ
धारयत् के० धारण करतो हवो, स के० ते ब्रह्मशांति नामक यक्ष, क्षणेन
के० वेगेकरीने श के० सुखने क्रियात् के० करो ते ब्रह्मशांति यक्ष केवोछे? तो
के–सति के० उत्तम अने अज्य के० नवीन एवा दंभत्रकमंडलूनि–दंभ के०
रत्नमय दंभ, छत्र के० सुवर्णनुं छत्र, अने कमंडलू के० पाणीए नरेलुं कमंडल-
एउने कलयन् के० धारण करनारो, अने शमी के० उपशमे युक्त, अने इन के०
श्रेष्ठ अने मुक्ताक्षमाली के० मोतीउनी छे जपमाला जेनी एवो, अने तप्ताष्टापद
पिंडपिंगलरुचि तप्त के० तपेलो जे अष्टापदपिंड के० सुवर्णपिंड, तेना सरखी
पिंगल के० पीतवर्ण छे रुचि के० कांती जेनी एवोछे ॥ ४ ॥ इति श्रीशांतिजिन स्तुति

अवतरण–हवे श्री कुंथुनाथनीस्तुति मालिनीवृत्तेकरीने कहेछे

नवतुममनम श्रीकुंथुनाथायतस्मा ॥ यमितशमितमोहा
यामितापायहृद्य ॥ सकलभरतभर्ताभूज्जिनोप्यक्ष
पाशा ॥ यमितशमितमोहायामितापायहृद्य ॥ १ ॥

व्याख्या–य के० जे कुंथुनाथ भगवान्, हृद के० मनोहर, अने सकलभरत
भर्ता के० संपूर्ण भरतक्षेत्रनो धणी एवो, जिनोपि के० जिन छता पण अमिता
पायहृत्–अमित के० पारविनाना जे अपायके० क्लेश, तेउनो हृत्के० हरण करनारो
अभूत् के० होतो हवो तस्मै के० ते, अक्षपाशायमितशमितमोहाय–अक्ष
पाश, के० इंद्रियरूप जे पाश तेउंए करीने आयमित के० प्रबल एवो शमित के०
समाव्योछे, मोह के० मोहरूप कर्मनो आयामि के० विस्तार पामनारो, ताप

के० संताप जेणे. एवा श्री कुंथुनाथाय के० कुंथुनाथ नामक
के० मारा नमः के० नमस्कार, भवतु के० थाओ. ॥ १ ॥

सकलजिनपतिभ्यःपावनेभ्योनमःस ॥ न्नयनरवर
देभ्यःसारवादस्तुतेभ्यः ॥ समधिगतनुतिभ्योदेववृं
दाज्जरीयो ॥ नयनरवरदेभ्यःसारवादस्तुतेभ्यः॥ २ ॥

व्याख्या—तेभ्यः के० ते, सकलजिनपतिभ्यः के० संपूर्ण एवा ती
हरो नमः के० नमस्कार, अस्तु के० थाओ. ते जिनपति केवाछे? तो के
के० पवित्र, अने सन्नयनरवरदेभ्यः—सत् के० उत्तमप्रकारनां छे, नयन
रवके० धर्मदेशना शब्द, अने रद के० दंत जेमना एवा, अने सारवाद
सार के० उत्तम छे, वाद के० वचन जेमनां, एवा पुरपोए स्तुतेभ्यः के०
रेला, अने गरीयोनयनरवरदेभ्यः—गरीय के० मोहोटो छे,नय के० नैगमा
नुज्ञान जेउने, एवा नरके० मनुष्योने माटे वरदेभ्यः के० वर देनारा, अने
के० स्तुति शब्दे युक्त एवा, देववृंदात् के० देवसमुदायथी, समधिगतनुतिभ्य
ात थएली छे स्तुति जेउने, एवा छे. ॥ २ ॥

स्मरतविगतमुद्रंजैनचंद्रंचकास ॥ त्कविपदगमभंगंहेतुदंतंकृतांतं ॥
द्विरदमिवसमुद्यद्दानमार्गंधुताऽघं ॥ कविपदगमभंगंहेतुदंतंकृतांतं ॥

व्याख्या—हे जनो, यूयंके० तमे, जैनचंद्रं के० जिनेश्वरसंबंधी, कृतांतं
धांतने, द्विरदमिव के० हस्तिनी साम्यताए स्मरत के० स्मरण करो. ते
धांत अने हस्ति केवाछे? ते क्रमे करी कहे छे. विगतमुद्रं—विगतके० गयुं
प्रमाण जेनुं, एटले अत्यंत विशाल, एवो. तेमज गजपण अत्यंत वि
त्त्कविपदगमभंगं—चकासतके० शोभायमान छे, कविपदानि के०
करवाने योग्य एवा शब्द गमके० सरखा पाठोना आलावा, अने
विषे एवो तेमज—गजपक्षे—शोभायमान अने पंडितोए सन्मान
भिभंग के० पायना चालवानी रचना जेनेविषे एवो—अने
ने टालनारो—गजपक्षे—कृतांतं के० कर्यो छे. पोताना
नो नाश जेणे, एवा जे कृतांतंके० यमतुल्य एवा परा
था उत्पन्न करनारो, अर्थात्—मारनारो—अने
प्यमान छे. दानमार्ग के० दानना

छे दानमार्गके० मदोदके सहित एवो मार्ग जेथी एवो अने धुताविकविपदग-धुतके० उखेडी नाख्युछे, अघके० पापथी उत्पन्न थएला एक के० असाधारण विपतके० आपदारूप अगके० वृक्ष जेणे एवो -गजपक्षे, धुतके० नष्ट थयुछे, अघके० पापजेनु, एवो जे पुण्यवान पुरुष, तेनुज जे एक विपद के० केवल विशिष्ट एवु स्थान, ते प्रत्ये गके० सचार करनारो एवो- अने अनगके० नगरहित एवो, गज पण शत्रुथी नग रहित एवो-अने हेतुदतके० दृष्टातरूपछे दात जेने, एटले दंते युक्त एवो पुरुषज बीजाने स्पष्ट बोध करनारो थायछे, तेमज सिद्धातपण दृष्टांत रूप दते युक्त होतो थकोज लोकोने बोध करनारो, एमाटे हेतुदत जाणवो गज पण शत्रुनो नाश करवा माटे हेतुके० कारण छे दंत जेना एवोछे ॥ ३ ॥

प्रचलदचिररोचिश्चारुगात्रेसमुद्यत्सदसिफलकरामेऽभीमहासेऽरिभीते॥

सपदिपुरुषदत्तेतेभवतुप्रसादा ।सदसिफलकरामेऽभीमहासेरिभीते॥४॥

व्याख्या-प्रचलत् के० चलन पामनारी जे अचिर के० विजली, तेनी सरखी जे रोचि के० काति-तेणे करीने सुदरछे गात्र के० शरीर जेनु, एवी हे प्रचलदचिश्चारुगात्रे!-अने अभीमके० बीजाने भयोत्पादक नथी, हासके० हास्य जेनु, एवी हे अभीमहासे! अने समुद्यत् के० देदीप्यमान एवा, सदसिके० उत्तम खड्ग अने फलक के० खेटक, ए आयुधोए करी रामा के० मनोहर, एवी हे सदसिफलकरामे! अने अरि के० शत्रु, तेउथी जे भीके० भय, तेणे करीने इताके० रहित एवी हे अरिभीते! अने अभी के० भयरहित एवीजे महासरिभी के० महोटी महिषी, तने विषे, इता के० आरोहण करनारी एवी हे भीमहासेरिभीने! एवी हे पुरुषदत्ते के० पुरुषदत्ता नामे अधिष्ठायक देवि,तेके० तारो प्रसादा के०प्रसाद, मेके०मने सदसिके० सभानेविषे, सपदिके० त्वरित फलकरा के० मनोवाछित फलने उत्पन्न करनारो, भवतु के० थाउ ॥ ४ ॥ इति कुथुनाथजिनस्तुति सपूर्णा ॥१७॥ श्लोकसख्या ॥६८॥

अवतरण-हवे अरनाथ जिननी स्तुति कहेछे

व्यमुचच्चक्रवर्तिलक्ष्मीमिहतृणमिवय क्षणेनतं । सन्नमदमरमानससारमनेकपराजितामर॥ द्युतकलधौतकांतमानमतानदित नूरिभक्तिभाक्।सन्नमदमरमानससारमनेकपराजितामर॥१॥

व्याख्या -इह के० आ भरतक्षेत्रनेविषे य के० जे अरनाथ जिनेश्वर, अनेकपराजि-इ अनेकप क० हस्ति, तेउए करी राजित के० शोभायमान, एवी चक्रवर्ति

लक्ष्मी के० नवनिधानादिक चक्रवर्त्तिनी संपत्तिने तृणमिव के० तृणनी जेम, व्यसुं चत् के० ठोडतो हवो. हे जव्यजनो! तमे नं के० ते अरं के० श्रीअरनाथ नामे जिनेश्वरने आनमत के० नमस्कार करो. ते अरनाथ केवो ठे? तोके—सन्नमदमर माननंतारं—सन्न के० नाश पामेल ठे, मद के० आठ मद, मर के० मरण, मान के० अहंकार, अने संसार के० जन्ममरणरूप संसार जेथी; एवो अने—डुतकल धौतकांत—द्रुत के० गालेलुं एवुं जे कलधौत के० सुवर्ण, तेना सरखो कांत के० मनोहर. अने आनंदितनूरिजक्तिनाक्सन्नमदमरमानसं— आनंदित के० आनं द पमाडेला ठे, नूरिजक्तिनाक् के० महोटी जक्ति सेवन करनारा एवा सन्नमत् के० उत्तम प्रकारे करी नमस्कार करनारा. अमर के० देव जेणे एवो, अने सारं के० सारजूत एवो अने. अनेकपराजितामरं—अनेक के० घणा पराजित के० परा जव पमाडेला ठे अमर के० मागधतीर्थकुमार प्रमुख देव जेणे. एवो ठे. ॥ १ ॥

स्तौतिसमंततः समवसरणजूमौयंसुरावलिः ॥ सकल
कलाकलापकलिताऽपमदाऽरुणकरमपापदं ॥ तंजि
नराजविसरमुन्नासितजन्मजरंनमाम्यहं ॥ सकलक
लाकलाऽ पकलितापमदारुणकरमपापदं ॥ २ ॥

व्याख्या—सकलकलाकलापकलिता—सकल के० संपूर्ण जे कलाउ, एटले ज्ञान कला, तेउनो जे कलाप के० समूह— तेणे करीने कलित के० शोजित, एवी अ ने सकलकला के० स्तुतिरूप कोलाहल शब्दे युक्त एवी अने, कला के० मनोहर एवी सुरावलिः के० चारनिकाय देव, तेनी जे श्रेणी—यं के० जे जिनसमूहने स मवसरणजूमौ के० समवसरणजूमिनेविषे समंततः के० चारे तरफ चार वा जुए स्तौति के० स्तुति करे ठे; तं के० ते अपमदारुणकरं—अप के० गया ठे म द के० आठ मद जेथी, अने अरुण के० आरक्त ठे. कर के० हस्त जेना एवा, अने अपापदं—अपाप के० पुण्य, तेने देनारा एवा, अने समुन्नासितजन्मजरं—स मुन्नासित के० टाल्यां ठे, जन्म अने जरा जेणे एवा, अने अपकलितापं—अप के० गयो ठे. कलि के० क्लेश अने ताप के० संताप जेथी एवा, अने अदारुणक र के० नथी जे दारुण के० जयंकर एवुं जे कर्म, तेने कर के० करनारा एवा, अ ने अपापदं—अप के० गएली ठे आपदा जेथी एवा, जिनराजविसरं के० जिन श्रेष्ठोना समूहने, अहं के० हुं नमामि के० नमस्कार करुं ठुं. ॥ २ ॥

हे दानमार्गके० मदोदके सहित एवो मार्ग जेथी एवो अने धुतावैकविपदग-धु तके० उखेडी नाख्युछे, अघके० पापथी उत्पन्न थएला एक के० असाधारण वि पत्के० आपदारूप अगके० वृक्ष जेणे एवो -गजपक्षे, धुतके० नष्ट थयुछे, अघ के० पापजेनु, एवो जे पुण्यवान पुरुष, तेनुज जे एक विपद के० केवल विशिष्ट एवु स्थान, ते प्रत्ये गके० संचार करनारो एवो- अने अनगके०नगररहित एवो, गज पण शत्रुथी नग रहित एवो-अने हेतुदतके० दृष्टांतरूपछे दात जेने, एटले दृष्टांत युक्त एवो पुरुषज बीजाने स्पष्ट बोध करनारो थायछे, तेमज सिद्धांतपण दृष्टांत रूप दते युक्त होतो थकोज लोकोने बोध करनारो, एमाटे हेतुदत जाणवो गज पण शत्रुनो नाश करवा माटे हेतुके० कारण छे दत जेना एवोछे ॥ ३ ॥

प्रचलदचिररोचिश्चारुगात्रेसमुद्यत्सदसिफलकरामेऽनीमहासेऽरिन्नीते॥ सपदिपुरुषदत्तेतेभवतुप्रसादा । सदसिफलकरामेऽनीमहासेरिन्नीते॥४॥

व्याख्या-प्रचलत् के० चलन पामनारी जे अचिर के० विजली, तेनी सरखी जे रोचि के० काति-तेणे करीने सुदरछे गात्र के० शरीर जेनु, एवी हे प्रचलदचि श्चारुगात्रे-अने अनीमके० बीजाने नयोत्पादक नथी, हासके० हास्य जेनु, एवी हे अनीमहासे ! अने समुद्यत् के० देदीप्यमान एवा, सदसिके० उत्तम खड्ग अने फलक के० खेटक, ए आयुधोए करी रामा के० मनोहर, एवी हे सदसिफलकरामे! अने अरि के० शत्रु तेउथी जे नीके० नय, तेणे करीने इताके० रहित एवी हे अ रिन्नीते! अने अनी के० नयरहित एवीजे महासैरिन्नी के० महोटी महिषी, तेने विषे, इता के० आरोहण करनारी एवी हे नीमहासैरिन्नीने ! एवी हे पुरुषदत्ते के० पुरुषदत्ता नामे अधिष्ठायक देवि,तेके० तारो प्रसादा के०प्रसाद, मेके०मने सदसिके० सजानेविषे, सपदिके० त्वरित फलक्रा के० मनोवाछित फलने उत्पन्न करनारा, नव तु के० थाउ ॥ ४ ॥ इति कुंथुनाथजिनस्तुति संपूर्णा ॥१७॥ श्लोकसख्या ॥६७॥

अवतरण-हवे अरनाथ जिननी स्तुति कहेछे

व्यमुचच्चक्रवर्तिलक्ष्मीमिहतृणमिवयः क्षणेनत । सन्नमदमरमानससारमनेकपराजितामर॥ ज्जुतकलधौतकांतमानमतानदित भूरिन्नक्निाक्। सन्नमदमरमानससारमनेकपराजितामर॥१॥

व्याख्या -इह के० आ भरतक्षेत्रनेविषे य के० जे अरनाथ जिनेश्वर, अने कपराजि-अनेकप के० हस्ति, तेउए करी राजित के० शोभायमान, एवी चक्रवर्ति

लक्ष्मी के० नवनिधानादिक चक्रवर्त्तिनी संपत्तिने तृणमिव के० तृणनी जेम, व्यमुंचत् के० छोडतो हवो. हे भव्यजनो! तमे तं के० ते अरं के० श्रीअरनाथ नामे जिनेश्वरने आनमत के० नमस्कार करो. ते अरनाथ केवो छे? तोके–सन्नमदमरमानसंसारं–सन्नके० नाश पामेल छे, मद के० आठ मद, मर के० मरण. मान के० अहंकार, अने संसार के० जन्ममरणरूप संसार जेथी; एवो अने–द्रुतकलधौतकांत–द्रुत के० गालेलुं एवुं जे कलधौत के० सुवर्ण, तेना सरखो कांत के० मनोहर, अने आनंदितभूरिभक्तिभाक्सन्नमदमरमानसं– आनंदित के० आनंद पमाडेला छे, भूरिभक्तिभाक् के० महोटी भक्ति सेवन करनारा एवा सन्नमत् के० उत्तम प्रकारे करी नमस्कार करनारा. अमर के० देव जेणे एवो, अने सारं के० सारभूत एवो अने, अनेकपराजितामरं–अनेक के० घणा पराजित के० पराभव पमाडेला छे अमर के० मागधतीर्थकुमार प्रमुख देव जेणे. एवो छे ॥ १ ॥

स्तौतिसमंततः समवसरणभूमौयंसुरावलिः ॥ सकल
कलाकलापकलिताऽपमदाऽरुणकरमपापदं ॥ तंजि
नराजविसरमुभ्भासितजन्मजरंनमाम्यहं ॥ सकलक
लाकलाऽ पकलितापमदारुणकरमपापदं ॥ २ ॥

व्याख्या–सकलकलाकलापकलिता–सकल के० संपूर्ण जे कलाउ, एटले ज्ञानकला, तेउनो जे कलाप के० समूह– तेणे करीने कलित के० शोभित, एवी अने सकलकला के० स्तुतिरूप कोलाहल शब्दे युक्त एवी अने, कला के० मनोहर एवी सुरावलिः के० चारनिकाय देव. तेनी जे श्रेणी–यंके० जे जिनसमूहने समवसरणभूमौ के० समवसरणभूमिनेविषे समंततः के० चारे तरफ चार बाजुए स्तौति के० स्तुति करे छे; तंके० ते अपमदारुणकर–अप के० गया छे मद के० आठ मद जेथी. अने अरुण के० आरक्त छे, कर के० हस्त जेना एवा, अने अपापदं–अपाप के० पुण्य. तेने देनारा एवा, अने समुभ्भासितजन्मजरं–समुभ्भासित के० टाल्यां छे, जन्म अने जरा जेणे एवा, अने अपकलितापं–अप के० गयो छे कलि के० क्लेश अने ताप के० संताप जेथी एवा. अने अदारुणकर के० नथी जे दारुण के० भयंकर एवुं जे कर्म, तेने कर के० करनारा एवा, अने अपापदं–अप के० गएली छे आपदा जेथी एवा, जिनराजविसरं के० जिनश्रेष्ठोना समूहने, अहं के० हुं नमामि के० नमस्कार करुं छुं. ॥ २ ॥

भीममहाभवाब्धिभवभीतिविभेदिपरास्तविस्फुरत् ॥ परमतमोहमानमतनूनमलंघनमघवतेऽहितं ॥ जिन पतिमतमपारमर्त्यामरनिर्वृतिशर्मकारणं ॥ परमत मोहमानमतनूनमलघनमघवतेऽहितं ॥ ३ ॥

व्याख्या—हेभव्यजनो ! तमे जिनपतिमत के० श्रीजिनेश्वरना मतने नून के० निश्चये करीने आनमतके०वदन करो ते जिनमत केवु छे? तो के—भीममहा भवाब्धि भवभीतिविभेदि—भीम के० भयकर एवो जे महाभवाब्धिके० महोटो भवसमुद्र,तेथी उपनी जे भवभीति के० जन्म मरणादिकभय, तेनु विभेदिके० भेदन करनारु, अ ने परास्तविस्फुरत्परमतमोहमान—परास्त के० निराकरण कस्या छे, विस्फुरत् के० प्रगट एवा परमत के० शाक्यादिक मिथ्यात्वमतना मोह के० अज्ञान अने मान के० अहंकार जेणे एवु, अने अतनून के० महोटु,अने अलके० अत्यत, घनके० निविड गहन एवु, अने अघवते के० पापी पुरुषमाटे अहितं के० अहितकारक ए वु, अने अपारमर्त्यामरनिर्वृतिशर्मकारण—अपार के० अनंतछे अने मर्त्य के० मनुष्य अने अमर के० देव, तेउनुजे निर्वृति के० मोक्षसुख, तेनु कारण के० नि मित्त एवु, अने परमतमोह—परम के० उत्कृष्ट एवु जे तमके० अज्ञान तेनो नाश करनारु एवु, अने अलघनमघवता—अलघनके०कोइ पण उल्लघन करवामाटे अशक्य एवो जे मघवा के० अच्युतेंद्र, तेणे ईहितंके० श्रवणकरवानी इछा करेलु एवुछे

याऽत्रविचित्रवर्णविनतात्मजपृष्ठमधिष्ठिताद्भुता ॥ त्समतनुभागविकृतधीरसमदवैरिवधामहारिभि ॥ तडिदिवभातिसाध्यघनमूर्द्धनिचक्रधरास्तुसामुदे॥ समतनुभागविकृतधीरसमदवैरिवधामहारिभि ॥४॥

व्याख्या— अत्र के० आ जगत्नेविषे असमदवैरिव—असम के० निरुपम एवो दवैरिव के० दावानलज जाणे होयना ! एवा अने धामहारिभि के० पोताना तेजे करीने मनोहर एवा महारिभि के० मोटा चक्रायुधोए करीने गविके० भूमिनेविषे कृतधीरसमदवैरिवधा—कृतके० कस्योछे,धीरके० धैर्यवान अने समदके० मद सहित एवा शत्रुनो वध जेणे एवी माटेज चक्रधरा के० ।चक्रधरा नामे करीने प्रसिद्ध ए वी याके० जे अधिष्ठायक देवी, साध्यघनमूर्द्धनि के० सध्याकाल सबंधी मेघना

मस्तकनेविषे, एटले मेघ ऊपर तडिद्दिवं के० विजली सरखी नाति के० शोने छे सा के० ते चक्रधरा देवी, मुदे के० हर्षने माटे अस्तुके० थाउ. ते देवी केवी छे तो के–विचित्रवर्णविनतात्मजपृष्ठमधिष्ठिता–विचित्र के० नानाप्रकारनोछे वर्ण के० शरीरनो रंग जेनो, एवो जे विनतात्मज के० गरुड, तेना पृष्ठ के० पृष्ठनाग प्रत्ये अधिष्ठता के० आरूढ थनारी, अने कुतात्समतनुनाक् के० अग्नि सरखा दे दीप्यमान तनुं के० देहने धारण करनारी, अने अविकृतधी. के० विकाररहितछे बुद्धि जेनी, अने असमतनुना–असम के० निरूपमछे, तनुना के० शरीरनी कांती जेनी एवीछे. ॥ ४ ॥ इति अरनाथजिनस्तुति संपूर्ण ॥ १८ ॥ ७२ ॥

अवतरण– हवे मल्लिनाथजिननी स्तुति रुचिरावृत्ते करीने कहेछे.

नुदंस्तनुंप्रवितरमल्लिनाथमे ॥ प्रियंगुरो
चिररुचिरोचितांवरं ॥ विडंवयन्वररुचिमंम
लोज्वलः ॥ प्रियंगुरोऽचिररुचिरोचितांवरं ॥१॥

व्याख्या–हेगुरो के० गुरु एवा हे मल्लिनाथ के० हे मल्लिनाथनामे जिनेश्वर! प्रियंगुरोचिः के० प्रियंगु वृक्ष सरखी जेनी कांति छे एवा अने वररुचिमंमलोज्व ल–वर के० श्रेष्ट एवुं जे रुचिमंमल के० कांतिमंमल तेणे करीने उज्वल के० दे प्यमान एवो तुं, अरुचिरोचितां–नथी जे रुचिरके० मनोहर, अने उचितके०योग्य तनुं के० पोताना देहने नुदन् के० क्षय पमाडता थका अने अचिररुचिरोचि र–अचिररुचि के० विजली, तेणे रोचित के० प्रकाशित एवुं जे अंवर के० श, तेने विडंवयन् के० अनुकरण करतो थको एटले विजलीए युक्त एवा खुं शरीर धारण करतो थको, मेके० मने प्रियके० प्रियकारक एवा वरंके० वितर के० समर्पण कर. ॥ १ ॥

शतंजगदवतोवपुर्व्यथा ॥ कदंवकैरवशातपत्र संपदं ॥
नोत्तमान्स्तुतदधतःस्रजंस्फुर त्कदंवकैरवशातपत्र संपदं॥२॥

ख्या–हे नव्यजनो! तमे वपुर्व्यथाकदंवकै–वपुके० शरीर, तेनी जे व्यथा तेउनो जे कदंव के० समुदाय, तेउए करीने अवशके०परवश, अनेतपत्के० नारछे त्रस के० प्राणी जेनेविषे, एवुं जे पदके० स्थान, तेप्रत्ये गतंके० प्राप्त जगत्के० जगतने जवात के० वेगेकरीने अवत के० रक्षण करनारा –स्फुरत के० प्रफुल्लित एवा जे

के० कदंब नामक वृक्षनां फूल, कैरव के० चंद्रविकासीकमल, अने शतपत्र के० सो पांखडीना कमळ, एउनी छे सपत् के० संपदा जेनेविषे एवी स्रज के० मालाने दधत के० धारण करनारा एवा जिनोत्तमान के० अढीद्वीपसंबंधी संपूर्ण तीर्थंकरोने स्तुत के० स्तवन करो ॥ २ ॥

ससपदंदिशतुजिनोत्तमागमः । शमावहन्नततनुतमोहरोदिते ॥
सचित्तजूं हतइहयेनयस्तपः । शमावहन्नततनुतमोहरोदिते ॥३॥

व्याख्या–य के० जे चित्तजू के० कामदेव, ते तप समो के० तप अने उपशम, एउने अवहन के० प्रहार करतो हवो, अर्थात नहिसरखा करतो हवो, अने अदिते के० अखंडित एवा मोहरोदिते–मोह के० मूढपणु अने रोदित के० रुदन, एउने अततुत के० विस्तार करतो हवो, स के० ते कामदेव, इह के० आ जगत्नेविषे येन के० जे आगमे, हत के० नष्ट कर्यो, अने जे तनुतमोहर' के० महाअज्ञाननु हरण करनार अने शं के० सुखने आवहन के० उत्पन्न करनार एवो स के० ते जिनोत्तमागम –जिन के० सामान्यकेवली, तेउमध्ये जे उत्तम के० तीर्थंकर, तेउनो आगम के० सिद्धांत, ते सपद् के० संपत्तिने, दिशतु के० समर्पण करो एटले जे कामदेवे तप अने उपशम–एउनो नाश करीने निरंतर मोह अने शोक उत्पन्न कर्यो, ते मदननो नाश करनारो, अने अज्ञाननो नाश करी सुख उत्पन्न करनारो एवो ते जिनसिद्धांत, अमोने मोक्षसंपत्ति आपो एवो नावार्थ ॥ ३ ॥

द्विपगतोहृदिरमतादमश्रिया प्रजातिमेचकितहरिद्विपन्नगे ॥
वटाङ्घ्रयेकृतवमतिश्रयक्षराट् प्रजातिमेचकितहरिद्विपन्नगे॥४॥

व्याख्या–यक्षराट् के० कपर्दिनामे जे यक्षोनोराजा, ते मे के० मारा दमश्रिया प्रजाति के० उपशमरूप लक्ष्मीए शोभनारा एवा हृदि के० हृदयनेविषे रमतां के० रमण करो ते यक्षराज केवो छे ? तो के–चकितहरिद्विप के० पोतानी शोभा, सामर्थ्य, स्थूलपणु इत्यादिक गुणोए जयेकरीचकित कर्योछे इंद्रनो ऐरावत गज जेणे, एवा द्विप के० हस्तिप्रत्ये गत के० आरूढ थनारो अने विपन्नग के० सर्परहित एवा वटाङ्घ्रयेनगे के० वट नामक वृक्षना अधोभागे, कृतवसति के० कर्यु छे वस्थान जेणे एवो, अने प्रजातिमेचकितहरित्–प्रजा के० कांतिए अमेचकित के० अतिशय श्यामवर्ण करीउछे हरित के० दिशाउजेणे एवो छे. ॥ ४ ॥ इति श्री मल्लिनाथजिनस्तुति संपूर्ण ॥१९॥ श्लोक संख्या ॥ ७६ ॥

अवतरण—हवेश्रीमुनिसुव्रत जिनस्तुति नर्दटकवृत्ते करीने कहेछे.

जिनमुनिसुव्रतःसमवताज्जनतावनतः ॥ समुदितमानवा
धनमलोभवतोभवतः ॥ अवनिविकीर्णमादिपतयस्य
निरस्तमनः ॥ समुदितमानवाधनमलोभवतोभवतः ॥ १ ॥

व्याख्या—हे भव्यजनो! जे मुनिसुव्रत नामे भगवान् दीक्षाग्रहणे करीने अ लोभवतः के० लोभपरिणामरहित एवो भवतः के० थवा लाग्यो छतां, ते दीक्षा कालना वर्षदान समये, अवनिविकर्णे के० भूमिनेविषे पसरेला एवा, यस्य के० जे मुनिसुव्रतना धनं के० द्रव्यने समुदितमानवाः—समुदित के० हर्ष पामेला जे भव्यप्राणी तेउ, आदिपत के० ग्रहण करता हवा; अने जे जनतावनतः के० जनसमूहे वदन करेलो, अने निरस्तमनःसमुदितमानवाधनमलः—निरस्त के० टाल्या छे, मनः समुदित के० मननेविषे एक ठेकाणे मलेलां एवां मान के० अ भिमान, वाधन के० रोगादिकनी पीडा अने मल के० आठ कर्मरूप मल जेणे एवो ते जिनमुनिसुव्रतः के० श्रीमुनिसुव्रतनामे तीर्थकरदेव, ते भवतः के० तमोने भवतः के० संसारथी समवतात के० उत्तम प्रकारे करीने रक्षण करो. ॥ १ ॥

प्रणमततंजिनव्रजमपारविसारिरजो ॥ दलकमलानना
महिमधामभयासमरुक् ॥ यमतितरांसुरेंद्रवरयोपिदिला
मिलनो ॥ दलकमलाननामहिमधामभयासमरुक् ॥ २ ॥

व्याख्या—हे भव्यजनो! यंके० जे जिनसमूहने, अपार विसारिरजोदलकमलान ना—अपार के० दूरप्रदेश पर्यंत, विसारि के० प्रसार पामनारी छे, रजके० धूल जेनी, अने विस्तीर्ण छे दल के० पत्रो जेनां एवुं जे कमल, तेना सरखुं छे आन नके० मुख जेनुं एवी अने अरुक् के० रोगरहित एवी, अने इलामिलनोदलकम ला—इला के० पृथ्वी, तेनेविषे जे मिलन के० आलोटवुं, तेणेकरीने उत् के० प्रास थयुंछे, अलकके० केशनेविषे मलके० मलिनपणु जेना एवी, अने हिमधाम भयासमरुक्के० चंद्रनीकांति सरखी जेनी कांति छे एवी, सुरेंद्रवरयोषित्के० देवेंद्र नी श्रेष्ठ स्त्री जे इंद्राणी, ते अतितरां के० अत्यंत प्रेमेकरीने ननाम के० वंदन क रती हवी; तंके० ते महिमधाम के० महिमानुं केवल घर एवा अने भयासं के० सात प्रकारना भयनो नाश करनारा एवा जिनव्रजं के० जिनसमूहने तमे प्रणम त के० वंदन करो. ॥ २ ॥

के० कदंब नामक वृक्षनां फूल, कैरव के० चंद्रविकासीकमल, अने शतपत्र के० सो पांखडीना कमल, एउनी छे संपत् के० संपदा जेनेविषे एवी स्त्रज के० मालाने दधत के० धारण करनारा एवा जिनोत्तमान के० अढीद्वीपसबंधी संपूर्ण तीर्थंकराने स्तुत के० स्तवन करो. ॥ २ ॥

ससंपददिशतुजिनोत्तमागम । शमावहन्नतनुतमोहरोदिते ॥
सचित्तभू क्तदृहयेनयस्तप. । शमावहन्नतनुतमोहरोदिते ॥३॥

व्याख्या–य के० जे चित्तभू के० कामदेव, ते तप समके० तप अने उपशम, एउने अहनके० प्रहार करतो हवो, अर्थात नहिसरखा करतो हवो, अने अदितेके० अखंडित एवा मोहरोदिते–मोहके० मूढपणु अने रोदित के० रुदन, एउने अतनुत के० विस्तार करतो हवो, स के० ते कामदेव, इह के० आ जगत्नेविषे येन के० जे आगमे, कृत के० नष्ट कर्यो, अने जे तनुतमोहर के० महाअज्ञाननु हरण करनार अने शके० सुखने आवहनके० उत्पन्न करनार एवो स के० ते जिनोत्तमागम –जिनके० सामान्यकेवली, तेउमध्ये जे उत्तम के० तीर्थंकर, तेउनो आगम के० सिद्धांत, ते संपद के० संपत्तिने, दिशतुके० समर्पण करो एटले जे कामदेवे तप अने उपशम–एउनो नाश करीने निरंतर मोह अने शोक उत्पन्न कर्यो, ते मदननो नाश करनारो, अने अज्ञाननो नाश करी सुख उत्पन्न करनारो एवो ते जिनसिद्धांत, अमोने मोक्षसंपत्ति आपो एवो भावार्थ ॥ ३ ॥

विपगतोहृदिरमतादमश्रिया प्रभातिमेचकितहरिद्विपन्नगे ॥
वटान्ह्येकृतवमतिश्चयक्षराट् प्रभातिमेचकितहरिद्विपन्नगे॥४॥

व्याख्या–यक्षराट् के० कपर्दिनामे जे यक्षोनोराजा, ते मेके० मारा शमश्रियाप्रभाति के० उपशमरूप लक्ष्मीए शोभनारा एवा हृदि के० हृदयनेविषे रमतां के० रमण करो ते यक्षराज केवो छे ? तो के–चकितहरिद्विप के० पोतानी शोभा, सामर्थ्य, स्थूलपणु इत्यादिक गुणोए नयेकरीचकित कर्योछे इंद्रनो ऐरावत गज जेणे, एवा द्विप के० हस्तिप्रत्ये गत के० आरूढ थनारो अने विपन्नगेके० सर्परहित एवा वटान्ह्येनगे के० वट नामक वृक्षना अधोभागे, कृतवसति के० कर्युं छे वसिस्थान जेणे एवो, अने प्रभातिमेचकितहरित्–प्रभा के० कांतिए अमेचकित के० अतिशय श्यामवर्ण करीउने हरित के० दिशाउजेणे एवो छे. ॥ ४ ॥ इति श्री मल्लिनाथजिनस्तुति संपूर्णा ॥१९॥ श्लोक संख्या ॥ ७६ ॥

अवतरण–हवेश्रीमुनिसुव्रत जिनस्तुति नर्दटकवृत्ते करीने कहेछे.

जिनमुनिसुव्रतःसमवताज्जनतावनतः ॥ समुदितमानवा धनमलोभवतोभवतः ॥ अवनिविकीर्णमादिपतयस्य निरस्तमनः ॥ समुदितमानवाधनमलोभवतोभवतः ॥ १ ॥

व्याख्या–हे भव्यजनो! जे मुनिसुव्रत नामे भगवान् दीक्षाग्रहणे करीने अ लोभवत के० लोभपरिणामरहित एवो भवतः के० थवा लाग्यो छतां; ते दीक्षा कालना वर्षदान समये, अवनिविकर्णी के० भूमिनेविषे पसरेला एवा, यस्य के० जे मुनिसुव्रतना धनं के० द्रव्यने समुदितमानवाः–समुदित के० हर्ष पामेला जे भव्यप्राणी तेउ, आदिपत के० ग्रहण करता हवा; अने जे जनतावनतः के० जनसमूहे वंदन करेलो, अने निरस्तमनःसमुदितमानवाधनमलः–निरस्त के० ...ाख्या छे, मनः समुदित के० मननेविषे एक ठेकाणे मलेलां एवां मान के० अ...मान, बाधन के० रोगादिकनी पीडा अने मल के० आठ कर्मरूप मल जेणे ...ो ते जिनमुनिसुव्रतः के० श्रीमुनिसुव्रतनामे तीर्थंकरदेव, ते भवतः के० तमोने ...तः के० संसारथी समवतात के० उत्तम प्रकारे करीने रक्षण करो. ॥ १ ॥

प्रणमततंजिनव्रजमपारविसारिरजो ॥ दलकमलाननामहिमधामभयासमरुक् ॥ यमतितरांसुरेंद्रवरयोपिदिला मिलनो ॥ दलकमलाननामहिमधामभयासमरुक् ॥ २ ॥

...ख्या–हे भव्यजनो! यंके० जे जिनसमूहने, अपार विसारिरजोदलकमलान ...ार के० दूरप्रदेश पर्यंत, विसारि के० प्रसार पामनारी छे, रजके० धूल ...ने विस्तीर्ण छे दल के० पत्रो जेनां एवु जे कमल, तेना सरखुं छे आन ...व जेनुं एवी अने अरुक् के० रोगरहित एवी, अने इलामिलनोदलकम ...के० पृथ्वी, तेनेविषे जे मिलन के० आलोटवुं, तेणेकरीने उत् के० ..., अलकके० केशनेविषे मलके० मलिनपणु जेना एवी, अने हिमधाम ...हके० चंद्रनीकांति सरखी जेनी कांति छे एवी, सुरेंद्रवरयोपित्के० देवेंद्र ... जे इंद्राणी, ते अतितरां के० अत्यंत प्रेमेकरीने ननाम के० वंदन क...के० ते महिमधाम के० महिमानुं केवल घर एवा अने भयासं के० ... भयनो नाश करनारा एवा जिनव्रजं के० जिनसमूहने तमे प्रणम ... करो. ॥ २ ॥

के० कदंब नामक वृक्षनां फूल, कैरव के० चंद्रविकासीकमल, अने शतपत्र के० सो पांखडीना कमल, एउनी छे संपत् के० संपदा जेनेविषे एवी स्रज के० मालाने दधत के० धारण करनारा एवा जिनोत्तमान के० अढीद्वीपसंबंधी संपूर्ण तीर्थकरोने स्तुत के० स्तवन करो ॥ २ ॥

ससंपदं दिशतु जिनोत्तमागमः । शमावहन्नतनुतमोहरोदितं ॥
सचित्तजं हतइहयेन यस्तपः । शमावहन्नतनुतमोहरोदितं ॥३॥

व्याख्या—य के० जे चित्तज के० कामदेव, ते तप समके० तप अने उपशम, एउने अहनके० प्रहार करतो हवो, अर्थात नहिंसरखा करतो हवो, अने अदितके० अखंडित एवा मोहरोदितं—मोहके० मूढपणु अने रोदित के० रुदन, एउने अतनुत के० विस्तार करतो हवो, स के० ते कामदेव, इह के० आ जगत्नेविषे येन के० जे आगमे, हृत के० नष्ट कर्यो, अने जे तनुतमोहर' के० महाअज्ञाननुं हरण करनार अने शके० सुखने आवहन्के० उत्पन्न करनार एवो स के० ते जिनोत्तमागम —जिनके० सामान्यकेवली, तेउमध्ये जे उत्तम के० तीर्थंकर, तेउनो आगम के० सिद्धांत, ते संपद के० संपत्तिने, दिशतुके० समर्पण करो एटले जे कामदेवे तप अने उपशम—एउनो नाश करीने निरंतर मोह अने शोक उत्पन्न कर्यो, ते मदननो नाश करनारो, अने अज्ञाननो नाश करी सुख उत्पन्न करनारो एवो ते जिनसिद्धांत, अमोने मोक्षसंपत्ति आपो एवो जावार्थ ॥ ३ ॥

विपगनोदहरिमतादमश्रिया प्रजातिमेचकितहरिद्विपन्नगे ॥
वटाह्वयेकृतवमतिश्च यक्षराट् प्रजातिमेचकितहरिद्विपन्नगे॥४॥

व्याख्या—यक्षराट् के० कपर्दिनामे जे यक्षोनोराजा, ते मेके० मारा शमश्रियाप्रजाति के० उपशमरूप लक्ष्मीए शोभनारा एवा हृदि के० हृदयनेविषे रमतां के० रमण करो ते यक्षराज केवो छे ? तो के—चकितहरिद्विपं के० पोतानी शोभा, सामर्थ्य, स्थूलपणु इत्यादिक गुणोए जयेकरीचकित कर्योछे इन्द्रनो ऐरावत गज जेणे, एवा द्विप के० हस्तिप्रत्ये गत के० आरूढ थनारो अने विपन्नगेके० सर्परहित एवा वटाह्वयेनगे के० वट नामक वृक्षना अधोजागे, कृतवसति के० कर्युंछे निस्थान जेणे एवो, अने प्रजातिमेचकितहरित्—प्रजा के० कांतिए अतिशय श्यामवर्ण कर्यांछे हरित के० दिशाउजेणे एवो छे. ॥ ४ ॥ श्री मल्लिनाथजिनस्तुति संपूर्णा ॥१९॥ श्लोक संख्या ॥ ७६ ॥

अवतरण—हवेश्रीमुनिसुव्रत जिनस्तुति नर्दटकवृत्ते करीने कहेछे

जिनमुनिसुव्रतःसमवताज्जनतावनतः ॥ समुदितमानवा
धनमलोभवतोभवतः ॥ अवनिविकीर्णमादिपतयस्य
निरस्तमनः ॥ समुदितमानवाधनमलोभवतोभवत. ॥ १ ॥

व्याख्या—हे भव्यजनो! जे मुनिसुव्रत नामे भगवान् दीक्षाग्रहणे करीने अलोभवतः के० लोभपरिणामरहित एवो भवतः के० थवा लाग्यो हता. ते दीक्षाकालना वर्षदान समये, अवनिविकर्णे के० भूमिनेविषे पसरेला एवा, यस्य के० जे मुनिसुव्रतना धनं के० द्रव्यने समुदितमानवाः—समुदित के० हर्ष पामेला जे भव्यप्राणी तेउ, आदिपत के० ग्रहण करता हवा; अने जे जनतावनत के० जनसमूहे वंदन करेलो, अने निरस्तमनःसमुदितमानवाधनमल—निरस्त के० टाल्या छे, मनः समुदित के० मननेविषे एक ठेकाणे मलेलां एवा मान के० अभिमान, वाधन के० रोगादिकनी पीडा अने मल के० आठ कर्मरूप मल जेणे एवो ते जिनमुनिसुव्रतः के० श्रीमुनिसुव्रतनामे तीर्थंकरदेव, ते भवत के० तमोने भवतः के० संसारथी समवतात के० उत्तम प्रकारे करीने रक्षण करो. ॥ १ ॥

प्रणमततंजिनव्रजमपारविसारिरजो ॥ दलकमलाननाम
महिमधामभयासमरुक् ॥ यमतितरांसुरेंद्रवरयोषिदिला
मिलनो ॥ दलकमलाननामहिमधामभयाममरुक् ॥ २ ॥

व्याख्या—हे भव्यजनो! यंके० जे जिनसमूहने, अपार विसारिरजोदलकमलाननाअपार के० दूरप्रदेश पर्यंत, विसारि के० प्रसार पामनारी छे. रजके० धूलजेनी, अने विस्तीर्ण छे दल के० पत्रो जेनां एवुं जे कमल, तेना सरखुं छे आननके० मुख जेनुं एवी अने अरुक् के० रोगरहित एवी, अने इलामिलनोदलकमला—इला के० पृथ्वी, तेनेविषे जे मिलन के० आलोटवुं, तेणेकरीने नम्र के० मल के० मलिनपणु [illegible] एवी, अने हिमधामप्रात थयुंछे, अलकके० केशनेविषे मलके० मलिनपणु [illegible] एवी, अने हिमधामभयासमरुक्के० चंद्रनीकांति सरखी जेनी कांति छे एवी. सुरेंद्रवरयोषित्के० देवेंद्रनी श्रेष्ठ स्त्री जे इंद्राणी, ते अतितरां के० अत्यंत प्रेमेकरीने ननाम के० वंदन करती हवी; तंके० ते महिमधाम के० [illegible] अने भयाम के० [illegible] नमे प्रणम
सात प्रकारना भयनो [illegible]
त के० वंदन

त्वमवनतान्जिनोत्तमकृतांतभवाद्विदुषोऽ वसदनुमानसग
मनयाततमोदयित ॥ शिवसुखसाधकस्वभिदधत्सुधि
यांचरणं वसदनुमानसंगमनयाततमोदयित ॥ ३ ॥

व्याख्या–सत् के० उत्तम प्रकारनु जे अनुमान के० प्रत्यक्ष १ अनुमान उपमान ३ आगम ४ ए चारप्रकारना अनुमान, तेनो छे संगमन के० संगती ने एवा हे सदनुमान सगमन ! अने यात के० गएलु छे, तम के० अज्ञान जे एवा जे यति, तेउना दयित के० वल्लभ एवा हे याततमोदयित ! अने ग के० सरखा पाठोना अलाप अने नय के० नैगमादिक सातनय, तेवए क आतत के० विस्तृत एवा हे गमनयातत ! अने मोद के० आनंद उत्पन्न का ग एवा हे मोदयित ! एवा हे जिनोत्तम कृतान्त के० जिनश्रेष्ठोना सिद्धांत ! के० तुं, सुधियां के० पण्डितोना अनुमानस के० मननो अंगीकार करीने वस के० वास करतो थको अने शिवसुख साधक के० मोक्ष सुखनु साधक एवा ण के० चारित्रने समभिदधत्के० देखाडतो थको, अवनतान्के० तमारामाटे त्पतनम्र एवा विदुष के० जिनमत जाणनारा पण्डितोने भवात् के० संसारथी व के० रक्षण करो ॥ ३ ॥

अधिगतगोधिकाकनकरुक्तवगौर्युचिता ॥ कमलकरा
जितामरसभास्यतुलोपकृत ॥ मृगमदपत्रभगतिलकैर्व
दनदधती ॥ कमलकराजितामरसभास्यतुलोपकृतं॥४॥

व्याख्या–हे भव्यजन ! गौरी के० गौरीनामे जे अधिष्ठायकदेवी, तें तव के० त रा लोपकृत के० नाश करनारो जे शत्रु तेने ते भक्ष्यस्यतु के० नाश करो ते गौरी देवी केवीछे ? तो के–अधिगतगोधिका–अधिगत के० प्राप्त थइछे, गोधिका के० वाहन विशेष जेने एवी, अने कनकरुक् के० सोनासरखी छे कांती जेनी, अने कमलकरा के० कमल छे हस्तनेविषे जेना एवी, अने जितामरसभा–पोताना स्वरूपसौंदर्ये करीने जित के० निर्भत्स करीछे, अमरसभा के० देवोनी सभा पे एवी, अने मृगमदपत्रभगतिलक–मृगमद के०, कस्तूरि, तेनो जे पत्रभंग के० पत्ररचना अर्थात् पीयल, अने तिलक, एउए करीने उचिता के० योग्य मुखने विषे एवी, अने अलकराजि के० भृकुटी अने वांकडा केश इत्यादि करीने राजि के० शोभायमान अने तामरसभासि–तामरस के० कमल, तना

रखीठे नास के० कांति जेनी एवा, अने अतुलोपकृतं के० अतुल्यठे उपकार के० मौक्तिादिकोना अलंकार जेनेविषे, एवा वदनं के० मुखने दधति के० धारण करनारी एवीठे. ॥ ४ ॥ इति श्रीमुनिसुव्रत जिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ २० ॥ ८० ॥

अवतरण०–हवे नमिनाथ जिननी स्तुति शिखरिणीवृत्ते करीने कहेठे.

स्फुरद्विद्युत्कांतेप्रविकिरवितन्वंतिसततं ममायासंचारोदितम
दनमेऽघानिलपितः ॥ नमन्नव्यश्रेणीनवन्नयन्निदांहृद्यव
चसा ममायासंचारोदितमदनमेघानिलपितः ॥ १ ॥

व्याख्या–हे स्फुरद्विद्युत्कांते के० स्फुरण पामेठे विजलिसरखी कांति जेनी एवा, अने हे चारो के० हे मनोहर? अने हे दितमद–दित के० दूर कर्या वे, मद के० आठ मद जेणे एवा. अने हे अमायसंचार के० नथी, मायानो एटले कपटनो संचार जेनेविषे, अथवा जेथी मायानो संचार नथी एवा, अने हे नमन्नव्य श्रेणीनवन्नयन्निदांहृद्यवचसांप्रलपितः के० नमन करनारा जे नव्यजनो, तेउनी जे श्रेणी, तेनो जे नवन्नय के० संसारन्नय तेनुं नेदन करनारा एवा हृद्य के० मनोहर एवा वचसां के० उपदेशरूप वचनने लपितः के० नाषण करनारा, अने हेदितमदनमेघानिल–दित के० प्रगट एवो जे, मदन के० कामदेव, तेज जाणे मेघ, तेना नाशने माटे अनिल के० वायुसरखा अने पितः के० पिता सरखा हे नमे के० हे नमिनाथ तीर्थंकर, त्वं के० तुं, सतत के० निरंतर आयासं के० संसारन्नमणरूप आयासने वितन्वति के० विस्तार करनारां एवां मम के० मारां अघानि के० पापोने प्रविकिर के० विखेरी नाख. ॥ १ ॥

नखांशुश्रेणीन्निः कपिशितनमन्नाकिमुकुटः सदानोदीनाना
मयमलमदारेरिततमः ॥ प्रचक्रेविश्वंयःसजयतिजिनाधीश
निवहः सदानोदीनानामयमलमदारेरिततमः ॥ २ ॥

व्याख्या–यः के० जे जिनेश्वरसमूह. विश्वं के० जगत्‌ने ऽततमः के० गयुं वे अज्ञान जेनुं एवुं करतो हवो; सोऽयं के० ते आ अत्यंत प्रख्यात एवो जिनाधीशनिवहः के० जिनेश्वरदेवोनो समूह, जयति के० सर्वोत्कर्षे करीने वर्तणूक करे वे. ते केवोठे? तो के–नखांशुश्रेणीन्निः के० ... गाना समुदाये करीने कपिशितनमन्नाकिमुकुटः–कपिशित के० ... के० ...नमन करनारा नाकि के० देवताना ...ऽस

सारनूत एवुं जे तेज ते, सर्वतएवके० सर्व दिशाउनेविषेज दधावके० प्रसार तु दवु. साके० ते जितराजकाके० जेणे राजसमूह जीत्योछे एवी, अने ... सादधावधिके० संसारसमुद्रनेविषे पण हिताके० हितकारक एवी, अने के० अज्ञजनोने देशनानु शासन करनारी एवी. जिनानांके० जिनोनी राजा श्रेणी जे, ते न के० अमारा नवायासके० संसाररूप क्लेशने हरतुके० हरणकरो

कुर्वाणाऽणुपदार्थदर्शनवशाज्ञास्वत्प्रनायास्त्रपा ॥
मानत्याजनकृत्तमोहरतमेशस्तादरिद्रोहिका ॥ अ
क्षोन्यातवनारतीजनपतेप्रोन्मादिनावादिना ॥ मा
नत्याजनकृत्तमोहरतमेशस्तादरिद्रोहिका ॥ ३ ॥

व्याख्या–हे तमोहरतम के० अज्ञानने अत्यंत हरण करनारा, अने हे ईशके० हे नियमनकरनारा! अने हे जनकृत्तमोहरत–जन के० लोक, तेथोनुं कृत्त के० निराकरणकर्युंछे, मोह के० मूढपणु, अने रत के० मैथुन जेणे, एवा हे जिनपते के० हे जिनेश्वर, तव के० ताहारी नारती के० देशनारूप वाणी. मे के० मारा, अ रिद्रोहिका के० शत्रूनो द्रोह करनारी अर्थात् नाश करनारी स्तात् के० थाउ तेम णी केवी छे? तोके–अणुपदार्थदर्शनवशात्–अणुके० सूक्ष्म जे जीवानीवादि नवपदार्थ, तेउना दर्शनवशात् के० अवलोकन योगेकरीने नास्वत्प्रनाया के० सूर्यने कांतीने प्रपा के० लज्जाप्रत्ये कुर्वाणा के० उत्पन्न करनारी, अने शस्ता के० प्रश स्त थएे अदरिद्रोहिक–अदरिद्र के० मलोटो छे ऊह के० विचार जेनेविषे एवी अने अक्षोभ्या के० कोइथी पण क्षोभ न पामनारी, अने प्रोन्मादिना के० प्रकर्षे करीने उत्पन्न थयो छे उन्माद के० दर्प जेउने एवा, वादिना के० परवादी पुरुषो नु मानत्याजनकृत–मान के० अनिमान तेनु जे, त्याजन के० मोक्षण करनारी

हस्तालंबितचूतलुम्बिलतिकायस्याजनोऽन्यागमत्॥वि
श्वासेविततावपादपरतांबाचारिपुत्रामकृत् ॥ साम्बू
तिविननोतुनोर्जुनरुचि सिंहेऽत्रिंरुढांत्तम ॥ विश्वा
सेवितताघपादपरतांबाचा [illegible] ॥ ४ ॥

व्याख्या–यस्या के० [illegible] विश्वासेवितताघपादपरतां–विश्वा
के० विहरन. तेणे [illegible] ... एवा अने ताघके० ...
न एवा जे पारके० [illegible] ... जन के० जे अंह ते

अभ्यागमत् के० आव थता हवा; सा के० ते अंबा के० अंबानामे अधिष्ठायकदे वी. न के० अमारे माटे, अजस्रत् के० वारंवार. भूतिं के० ऐश्वर्यने वितनोतु के० विस्तार करो. ते अंबादेवी केवीछे? तो के—हस्तालंबितचूतलुंबिलतिका—हस्तालंबि त के० हस्तनेविषे ग्रहण करेली छे चूतलुंबि के० आंबानेविषे लटकनारी एवी लतिका के० वेल जेणे एवी. अने वाचा के० पोतानी वाणीए रिपुत्रासकृत् के० श त्रुर्डने त्रास उत्पन्न करनारी, अने अर्जुनरुचिः के० सुवर्ण सरखी छे रुचि एटले कांति जेनी एवी.अने उत्रसद्विश्वासे के० प्रसार पामेछे अचंचलत्व अक्रूरत्वादिक विश्वास जेनो एवा सिंह के० सिंहनेविषे अधिरूढा के० आरोहण करनारी, अने विततास्रपादपरता—वितत के० विस्तार पामेलुं एवुं जे आम्रपादप के० आम्रवृक्ष तेनेविषे रता के० प्रीति धारण करनारी अर्थात् महोटा आम्रवृक्षना अधोनागे तेज आंबापरथी नीचे लटकनारी वेलीने धारण करीने सिंहनेविषे बेसनारी एवी, अने चारिपुत्रा—चारि के० निरंतर संचार करवानो स्वनावछे जेमनो एवा छे पुत्र जेना एवीछे. ॥ ४ ॥ इति श्री नेमिनाथ जिनस्तुति. संपूर्णा ॥ २२ ॥ ८८ ॥

अवतरण—हवे पार्श्वनाथजिननी स्तुति स्रग्धरावृत्ते करीने कहेछे.

मालामालानबाहुर्दधदधदरंयामुदारामुदारा॥ल्लीनाऽलीनामिहाली मधुरमधुरसासूचितोमाचितोमा ॥ पातात्पातात्सपार्श्वोरुचिररुचिर देदेवराजीवराजी॥पत्राऽपत्रायदीयातनुरतनुरवोनंदकोनोदकोनो॥१॥

व्याख्या—यदीया के० जे पार्श्वनाथ जिननी तनुः के० मूर्ति, देवराजीवराजीप त्रा—देव के० देवोए रचेली जे राजीवराजी के० कमलोनी श्रेणी तेछे पत्र के० वाहन जेनुं, अपत्रा के० आपत्तिथी रक्षण करनारी एवीछे, एवो सः के० ते पार्श्व के० पार्श्वनाथजिन, मा के० मुजने पातात् के० नरकादिकनेविषे जे पात, तेथी पातात् के० रक्षण करो. ते पार्श्वनाथ केवोछे? तो के—आलानबाहुः—आ लान के० हस्तिबंधन करवानो स्तंभ, तेना सरखा पुष्ट छे बाहु जेना एवो, अने यां के० जे मालाने उदारा के० मोहोटी अने मधुरमधुररसा—मधुर के० रस युक्त एवुं जे मधु के० मकरंद तेविषे छे रस के० अभिरुचि जेने एवी अलीनां के० भ्र मराउनी आली के० श्रेणी, ते मुदा के० हर्षकरीने आरात् के० समीपभागनेविषे अरं के० अत्यंत, लीना के० आसक्त होती थकी अदधत् के० पुष्परसने प्राशन करती हवी; एवी माला के० पुष्पमालाने दधत के० धारण करनारो, अने सूचितोमाचित—

सारनूत एवुं जे तेज ते, सर्वतएवके० सर्व दिशाउनेविषेज दधावके० प्रसार पाम तु हवु. साके० ते जितराजकाके० जेणे राजसमूह जीत्योछे एवी, अने संसार द्दोदधावपिके० समारसमुद्रनेविषे पण हिताके० हितकारक एवी, अने के० अज्ञजनोने देशनानु शासन करनारी एवी, जिनानाके० जिनोनी राजीके० श्रेणी जे, ते न के० अमारा नवायासके० ससाररूप क्लेशने हरतुके० हरणकरो

कुर्वाणाऽणुपदार्थदर्शनवशा नास्वत्प्रनायास्त्रपा ॥
मानत्याजनकृत्तमोहरतमेशस्तादरिद्रोहिका ॥ अ
क्षोन्यातवन्नारतीजनपतेप्रोन्मादिनांवादिनां ॥ मा
नत्याजनकृत्तमोहरतमेशस्तादरिद्रोहिका ॥ ३ ॥

व्याख्या–हे तमोहरतम के० अज्ञानने अत्यत हरण करनारा, अने हे ईशके० हे नियमनकरनारा! अने हे जनकृत्तमोहरत–जन के० लोक, तेओनुं कृत्त के० निराकरण कर्युछे, मोह के० मूढपणु, अने रत के० मैथुन जेणे, एवा हे जिनपते के० हे जिनेश्वर, तव के० ताहारी नारती के० देशनारूप वाणी, मे के० मारा. अ रिद्रोहिका के० शत्रूनो द्रोह करनारी अर्थात् नाश करनारी स्तात् के० थाउ तेवा णी केवी छे? तोके–अणुपदार्थदर्शनवशात्–अणुके० सूक्ष्म जे जीवाजीवादिक नवपदार्थ, तेउना दर्शनवशात् के० अवलोकन योगेकरीने नास्वत्प्रनाया के० सूर्यनी कांतीने त्रपा के० लज्जाप्रत्ये कुर्वाणा के० उत्पन्न करनारी, अने शस्ता के० प्रश स्त अने अदरिद्रोहिक–अदरिद्र के० महोटो छे ऊह के० विचार जेनेविषे एवी, अने अक्षोन्या के० कोइथी पण क्षोन न पामनारी, अने प्रोन्मादिनां के० प्रकर्षे करीने उत्पन्न थयो छे उन्माद के० दर्प जेउने एवा, वादिना के० परवादी पुरुषो नुं मानत्याजनकृत–मान के० अनिमान तेनु जे, त्याजन के० मोक्षण करनारीछे.

दस्तालंवितचूतचुंविलतिकायस्याजनोऽन्यागमत्॥वि
श्वासेविततांम्रपादपरतावाचारिपुत्रासकृत् ॥ सानू
तिवितनोतुनोर्जुनरुचि सिंहेऽनिरूढोल्लस ॥ विश्वा
सेविततांम्रपादपरतावाचारिपुत्राऽसकृत् ॥ ४ ॥

व्याख्या–यस्या के० जे अंबानामक देवीना, विश्वासेविततांम्रपादपरता–विश्व के० त्रिहुवन, तेणे आसेवित के० अत्यत सेवन करेला एवा अने ताम्रके० आर क एवा जे पादके० चरण, तेना परताके० शरणपणाने जन के० जे लोक ते.

अभ्यागमत्के० प्राप्त थता हवा; सा के० ते अंबा के० अंबानामे अधिष्ठायकदेवी. न. के० अमारे माटे, असकृत्के० वारंवार. भूतिके० ऐश्वर्यने वितनोतुके० विस्तार करो. ते अंबादेवी केवीछे? तोके-हस्तालंबितचूतचुंबिलतिका-हस्तालंबित के० हस्तनेविषे ग्रहण करेली छे चूतचुंबि के० आंबानेविषे लटकनारी एवी लतिका के० वेल जेणे एवी, अने वाचा के० पोतानी वाणीए रिपुत्रासकृत् के० शत्रुउने त्रास उत्पन्न करनारी, अने अर्जुनरुचिः के० सुवर्ण सरखी छे रुचि एटले कांति जेनी एवी,अने उन्नसद्विश्वासे के० प्रसार पामेछे अचंचलत्व अक्रूरत्वादिक विश्वास जेनो एवा सिंह के० सिंहनेविषे अधिरुढा के० आरोहण करनारी, अने विततात्रपादपरता-वितत के० विस्तार पामेलुं एवुं जे आम्रपादप के० आम्रवृक्ष तेनेविषे रता के० प्रीति धारण करनारी अर्थात् महोटा आम्रवृक्षना अधोजागे तेज आंबापरथी नीचे लटकनारी वेलीने धारण करीने सिंहनेविषे बेसनारी एवी, अने चारिपुत्रा-चारि के० निरंतर संचार करवानो स्वनावछे जेमनो एवा छे पुत्र जेना एवीछे. ॥ ४ ॥ इति श्री नेमिनाथ जिनस्तुतिः संपूर्णा ॥ २२ ॥ ८८ ॥

अवतरण-हवे पार्श्वनाथजिननी स्तुति स्रग्धरावृत्ते करीने कहेछे.

मालामालानबाहुर्दधदधदरंयामुदारामुदारा॥ल्लीनाऽलीनामिहाली मधुरमधुरसासूचितोमाचितोमा ॥ पातात्पातात्सपार्श्वोरुचिररुचिरदोदेवराजीवराजी॥पत्राऽपत्रायदीयातनुरतनुरवोनंदकोनोदकोनां॥१॥

व्याख्या-यदीया के० जे पार्श्वनाथ जिननी तनुः के० मूर्ति, देवराजीवराजीपत्रा-देव के० देवोए रचेली जे राजीवराजी के० कमलोनी श्रेणी तेछे पत्र के० वाहन जेनुं, अपत्रा के० आपत्तिथी रक्षण करनारी एवीछे, एवो सः के० ते पार्श्व के० पार्श्वनाथजिन, मा के० मुजने पातात् के० नरकादिकनेविषे जे पात, तेथी पातात् के० रक्षण करो. ते पार्श्वनाथ केवोछे? तो के-आलानबाहु-आलान के० हस्तिबंधन करवानो स्तंन, तेना सरखा पुष्ट छे बाहु जेना एवो, अने यां के० जे मालाने उदारा के० मोहोटी अने मधुरमधुरसा-मधुर के० [illegible] एवुं जे मधु के० मकरंद तेविषे छे रस के० अभिरुचि जेने एवी [illegible] मराठनी आली के० श्रेणी, ते मुदा के० हर्षकरीने आगत् के० [illegible] के० अत्यंत, लीना के० आसक्त होती थकी अदधत् के० [illegible] हती, एवी माला के० पुष्पमालाने दधत के० धारण करनारो, अने [illegible]

सूचित के० उत्तम योग्य एवी जे क्षमा के० कीर्ति, तेणे करी चित के० व्याप्त छते, अने इद्ध के० आजूमिनेविषे अतनुरव –अतनु के० एक योजनपर्यंत श्रवण थ थवे, रव के० देशनाशब्द जेनो, अने नंदक के० हर्ष उत्पन्न करनारो, अने चिररुचिरद –रुचिरके० मनोहर छे रुचि के० कांति जेउनी एवा छे, रद के० दंत जेना एवो, अने नोनोदक के० बीजाने दुःख उत्पन्न करनारो नथी एवोछे. ॥१॥

राजीराजीववक्त्रातरलतरलसत्केतुरगत्तुरंग ॥ व्याल
व्यालग्नयोधाचितरचितरणेभ्नीतिहृत्यातिहृद्या ॥ सारा
साराज्जिनानामममलमतेर्बोधिकामाऽधिकामा ॥ दव्या
दव्याधिकालाननजननजरात्रासमानाऽसमाना ॥ २ ॥

व्याख्या–या के० जे जिनाना के० जिनोनी राजी के० श्रेणी, तरलतरलसत्केतुरगतुरगव्यालव्यालग्नयोधाऽचितरचितरेण–तरलतर के० अत्यंत चंचल एवो जे केतु के० ध्वज, तेणे, अने रगत् के० नृत्य करनारा एवा जे तुरग अने व्याल के० मदांध एवो जे गज, तेउनेविषे व्यालग्न के० आरूढ थएला जे योध के० वीर, तेउए करीने आचित के० व्याप्त एवु रचित के० रचेलु रण के० संग्राम, तेनेविषे भ्नीतिहृत् के० भयनो नाश करनारी छे, सा के० ते, आरात् के० शीघ्र अधिकामात्–अधिक के० वृद्धि पामेलो जे आम के० रोग, तेनाथी अव्यात् के० रक्षण करो ते जिनराजी केवीछे ? तो के–राजीववक्त्रा–राजीव के० कमलो, तेउना सरखाछे वक्त्र के० मुखो जेमना एवी, अने अतिहृद्या के० अत्यंत मनोहर, अने सारा के० अतिश्रेष्ठ, अने अमलमते –अमल के० स्वछ छे, मति के० बुद्धि जेमनी एवा जीवोनेकारणे अल के०अत्यत, बोधिकामा के०बोध करवानी इछा धारण करनारी, अने अव्याधिकालाननजननजरात्रासमान–अ के० नथी, व्याधी के० पीडा, कालानन के० मरण, जनन के० जन्म, जरा के० वृद्धपणु, त्रास के० अकस्मात् उत्पन्न थएलो भय अने मान के० अभिमान जेने एवी, अने असमाना के० अनुपम एवीछे ॥ २ ॥

सद्योऽसद्योगभिद्यागमलगमलयाजैनराजीनराजी ॥
नूतानूतार्थधात्रीहृततहृततम पातका पातकामा ॥ शा
स्त्रीशास्त्रीनराणाहृदयहृदयशोरोधिकावाधिकावाऽ ॥ दे
यादेयान्सुदंतेमनुजमनुजरात्याजयंतीजयंती ॥ ३ ॥

संता एवा यला कमळां, छत्रकचामर के० षट्सम्मी ने रालि तेहनी [illegible] थामग, अने कर्णादि के० कर्ण प्रमाणधामनारी जे गाजयी के० प्रणशासार, [illegible] तेण करीने मत के० प्रयान एतु, अने अयनमदनाकटकस्त्रीहण प्राथ[illegible] नागुन–अनंनमत के० वरन करनारी जे, अशोकवृक्ष तेनेविषे, अने [illegible] प्राय के० छर्दीनिविषे कल्याणरूप जे शोभा तेनी, एवु जे आनपत्र के० छत्र तेनी जे प्रना के० कांती, तेणे करीने गुरु के०मोटाइ, अने [illegible] पंत के० नष्ट थया छे अहित के० शत्रु जेहना, एवा जे पुरुषो, [illegible] गयित के० अत्यंत शोभित एवु, अने [illegible] त–पशानात के० यशेकरीने शोभित एवा जे पत्र के० वाहनो, तेउनी जे के० कांती, तेने नाक के० सेवन करनारा जे करीगाद के० नृपतिनो, अने के० पिशाच देवता, अने अदि के० नागदेवता, अने ताग के० नक्षत्र देवता तेउण करीने उचित के० योग्य एवु छे. ॥ २ ॥

परमततिमिरोग्रतानुग्रताकृत्स्नगंगनीरगंगांतिश्वर्यनिकाध्यि तीर्थंतग ॥ महतिमतिमतंहितेशम्यमानस्यनागंमस्राऽतन्वतीताप दानदधानस्यमाऽमानिनः ॥ जननमृतितरंगनिष्पारमारनीराक गंभीनिमज्जज्जनंतारनोद्यारनीनीर्थहन् ॥ महतिमतिमतंहितेशम्य मानस्यवागंमदानन्वतीतापदानदधानस्यमामानिनः ॥ ३ ॥

व्याख्या–हे अतन्वतीतापत–अतनु के० मोटी अतीत के० नष्ट थानीते, पत के० आपदा जेनाथी एवा, अने हे मतिमतेहित के० बुद्धिमान् एवा पुरुषो चित एवा, हे तीर्थकृत के० तीर्थंकर देव भगवान्! शम्य के० समर्थ एवा, मते के० जिनशासनरूप मतनेविषे हि के० निश्चयं करीने [illegible] तान योग्य एवा, अने आनंदधानस्य के० आनंदनु केवल स्थान एवा, अने निन के० मानरहित एवा, अने न के० अमोने मामानि के० विपरतुने के० देनारो एवो जे तुं तेने के० तारी वाणी के० देशनारूप जे वाणी, मार्ग के० अर्थं के० जगतनेविषे मुख्य एवा, अने महति के० वीतरागीना ताप योग्य मारमुक एवा निर्वाण के० मोक्षरूप वननेविषे मार्ग के० वतीने [illegible] समर्पण करो ते वाणी केवी छे? तोके–परमततिमिर [illegible]

मनरूप जे तिमिर के० अंधकार, तेना नाश कारणे, उग्रभानुप्रभा के० उग्रसूर्यनी कांति सरखी छे; अने भूरिभंगैः के० घणा जे भंग. तेणे करीने गूढार्थ के० अत्यंत, गभीराके० गंभीर. अने जननमृतितरंगनिष्पारसंसारनीराकरांतर्निमज्जज्जनो त्तारनौः—जननके० जन्म अने मृतिके० मरणरूप छे तरंग के० कल्लोल जेनेविषे एवो जे निष्पार के० पाररहित संसारनीराकर के० संसाररूप समुद्र, तेना अंतः के० मध्यभागनेविषे निमज्जत् के० बुडनारा जे जन के० भविकजनो, तेओने उत्तारे के० उतरवामाटे नौ.के० नौकारूप, अने तापदानं के० संतापना छेदनने आतन्वती के० करनारी, अने मानस्य के० जे पूजादिक सत्कार, तेनी संसत्त्वा के० सभा सरखी अथवा सभाल होयना! एवीछे संसत्त्वा—अहींयां वा शब्द इव श ब्दार्थी अथवा उत्प्रेक्षा वाचक जाणवो. ॥ ३ ॥

सरभसनतनाकिनारीजनोरोजपीठीलुठत्तारहारस्फुरद्रश्मिसारक्र मांभोरुहे ॥ परमवसुतरांगजारावसन्नाशितारातिभाराजितेभासि नीहारतारावलक्षेमदा ॥ क्षणरुचिरुचिरोरुचंचत्सटासंकटोत्कृष्टकं ठीकटेसंस्थितेभव्यलोकंत्वमंबाऽविके॥ परमवसुतरांगजारावसन्ना शितारातिभाराजितेभासिनीहारतारावलक्षेऽमदा ॥ ४ ॥

व्याख्या– हे सरभसनतनाकिनारीजनोरोजपीठीलुठत्तारहार स्फुरद्रश्मिसारक्र मांभोरुहे– सरभस के० वेगयुक्त एवा, नत के० नमन करनारा जे, नाकि के० देवो, तेओनी नारीजन के० स्त्रीजन, तेमना जे उरोज के० स्तन, तद्रूप जे पी ठी के० आसन, तेनेविषे लुठत् के० लुंठन करनारा जे तार के० मनोहर एवा हार के० पुष्पहार, तेओनां स्फुरत् के० देदीप्यमान जे रश्मि के० किरणो तेणे करीने सार के० श्रेष्ठ छे, क्रमांभोरुह के० चरणकमल जेना एवी. अने इयजि ते के० कोइए पण जेने जीती नथी एवी. अने क्षणरुचिरुचिरोरुचंचत्सटासंकटो त्कृष्टकंठीकटे– क्षणरुचि के० विजली, तेना सरखी रुचिर के० मनोहर एवी. अ ने उरु के० महोटी जे चंचत् के० देदीप्यमान एवी सटा के० जटा. तेणे करीने संकट के० अतिशय भयचक एवोजे उत्कृष्ट कंठ. तेणे करीने उत्कट के० उग्र एवो अने भातिनीहारतारावलक्ष–भाति के० शोभनशील. एवुं जे नीहार के० हि म अने तारा के० तारामंडल, तेना सरखो वलक्ष के० शुभ्रवर्ण एवो, गजारि

चेला एवा घणा कमलो श्वेतरुक्चामर के० चडसरखी छे कांति जेउनी एवां चामरो, अने उत्सर्पि के० उंचे प्रसारपामनारी जे सालत्रयी के० त्रणप्राकार, तेउए करीने सत् के० प्रधान एवु, अने अवनमदशोकपृथ्वीरुहप्रायशोनातपत्रप्रनागुरु—अवनमत् के० वदन करनारा छे, अशोकवृक्ष जेनेविषे, अने पृथ्वीरुह प्राय के० पृथ्वीनेविषे उत्साहरूप छे शोना जेनी, एवु जे आतपत्र के० छत्र तेनी जे प्रना के० कांती, तेणे करीने गुरु के०मोहोटु, अने परेताहितारोचित—परेत के० नष्ट थया छे अहित के० शत्रु जेउना, एवा जे पुरूषो, तेउएकरीने आरोचित के० अत्यंत शोनित एवु, अने यशोनातपत्रप्रनागुर्वराराट्परेताहि... त—यशोनात के० यशेकरीने शोनित एवा जे पत्र के० वाहनो, तेउनी जे के० कांती, तेने नाके के० सेवन करनारा जे उर्वराराट् के० नूमिपती, अने परेत के०-पिशाच देवता, अने अहि के० नागदेवता, अने तारा के० नक्षत्र देवता-तेउए करीने उचित के० योग्य एवु छे ॥ २ ॥

परमततिमिरोग्रनानुप्रनानूरिनगैर्गनीरानृशविश्ववर्येनिकाय्येवि तीर्यात्तरा ॥ महतिमतिमतेहितेशस्यमानस्यवाससदाऽतन्वतीताप दानंदधानस्यसाऽमानिन ॥ जननमृतितरागनिष्पारसंसारनीराक रार्तानिमज्जज्जनोत्तारनौर्नारतीतीर्थकृत् ॥ महतिमतिमतेहितेशस्य मानस्यवाससदातन्वतीतापदानंदधानस्यसामानिन ॥ ३ ॥

व्याख्या—हे अतन्वतीतापत्—अतनुके० महोटी अतीत के०नष्ट थएलीछे, पत्के० आपदा जेनाथी एवा, अने हे मतिमतेहितके०बुद्धिमान् एवा पुरुषे जपित एवा, हे तीर्थकृत्के० हेतीर्थंकर देव नगवान्! ईशस्यके० समर्थ मते के०जिनशासनरूप मतनेविषे हिके०निश्चये करीने शस्यमानस्यके० वाने योग्य एवो, अने आनंदधानस्यके० आनंदनु केवल स्थान एवो, अने निन के० मानरहित एवो, अने न के० अमोने सामानिके० प्रियवस्तुने के० देनारो एवो जे तु तेके० तारी नारतीके० देशनारूप जे वाणी, साके० श्ववर्येके० जगत्नेविषे मुख्य एवा, अने महतिके० पीसतालीश लाख योजन स्तारयुक्त एवा निकाय्येके० मोक्षरूप घरनेविषे वासके० वसतीने ... समर्पण करो ते वाणी केवीछे? ... ...मतति ...

तनरूप जे तिमिरके० अंधकार, तेना नाश कारणे, उग्रभानुप्रभाके० उग्रसूर्यनी कांति सरखीछे; अने भूरिभंगः के० घणा जे भंग. तेउए करीने भृशंके० अत्यंत, गभीराके० गंभीर. अने जननमृतितरंगनिष्पारसंसारनीराकरांतर्निमज्जज्जनो त्तारनौः-जननके० जन्म अने मृतिके० मरणरूप छे तरंग के० कल्लोल जेनेविषे एवो जे निष्पार के० पाररहित संसारनीराकर के० संसाररूप समुद्र, तेना अंतः के० मध्यभागनेविषे निमज्जत् के० बुडनारा जे जन के० भविकजनो, तेउने उत्तारे के० उतरवामाटे नौःके० नौकारूप, अने तापदानं के० संतापना छेदनने आतन्वती के० करनारी, अने मानस्य के० जे पूजादिक सत्कार, तेनी संसत्वा के० सभा सरखी अथवा सभाज होयना! एवीछे संसत्वा-अहींयां वा शब्द इव श ब्दार्थी अथवा उत्प्रेक्षा वाचक जाणवो. ॥ ३ ॥

सरभसनतनाकिनारीजनोरोजपीठीलुठत्तारहारस्फुरद्रश्मिसारक्र मांभोरुहे ॥ परमवसुतरांगजारावसन्नाशितारातिभाराजितेभासि नीहारतारावलक्षेमदा ॥ क्षणरुचिरुचिरोरुचंचत्सटासंकटोत्कृष्टकं ठेभटेसंस्थितेभव्यलोकंत्वमंबाऽविके ॥ परमवसुतरांगजारावसन्ना शितारातिभाराजितेभासिनीहारतारावलक्षेऽमदा ॥ ४ ॥

व्याख्या- हे सरभसनतनाकिनारीजनोरोजपीठीलुठत्तारहार स्फुरद्रश्मिसारक्र मांभोरुहे- सरभस के० वेगयुक्त एवा, नत के० नमन करनारा जे, नाकि के० देवो, तेउनी नारीजन के० स्त्रीजन, तेमना जे उरोज के० स्तन, तद्रूप जे पी ठी के० आसन, तेनेविषे लुठत् के० लुंठन करनारा जे तार के० मनोहर एवा हार के० पुष्पहार, तेउनां स्फुरत् के० देदीप्यमान जे रश्मि के० किरणो तेउए करीने सार के० श्रेष्ट छे, क्रमांभोरुह के० चरणकमल जेना एवी, अने हेअजि ते के० कोइए पण जेने जीती नथी एवी, अने क्षणरुचिरुचिरोरुचंचत्सटासंकटो त्कृष्टकंठेभटे- क्षणरुचि के० विजली, तेना सरखी रुचिर के० मनोहर एवी, अ ने उरु के० महोटी जे चंचत् के० देदीप्यमान एवी सटा के० जटा, तेणे करीने संकट के० अतिशय भरचक एवोजे उत्कृष्ट कंठ, तेणे करीने उभट के० शूर एवो, अने भासिनीहारतारावलक्षे-भासि के० शोभनशील, एवुं जे नीहार के० हि म अने तारा के० तारामंमल, तेना सरखो वलक्ष के० शुभ्रवर्ण एवो,

के० हस्तिनो शत्रु जे सिंह, तेनेविषे संस्थिते के० बेसनारी एवी, अने शितारातिभाराजिते– शित के० चक्रकाट धरनारूं जे आर के० पीतल, तेना करतां जे अतिभा के०अतिशय कांति, तेणे करीने राजित के० शोभित एवी, अने हे अत्र के० माता एवी, हे अंबिके के०अंबानामाक अधिष्टायकदेवि, त्वके०तु सुतरां के० अत्यत, पर के० प्रधान एवा, भव्यलोक के०भव्यप्राणिउने अव के० रक्षण कर तुं केवी छे ? तोके– परमवसुतरागजा–परम के० उत्कृष्ट, अने वसुतर के० तेजवंत एवा छे अंगज के० पुत्रजेना एवी, अने रावसन्नाशितारातिभारा–राव के० पोताना शब्दे करीने सन्नाशित के० अत्यंत नाश पमाड्योछे, अरातिभार के० शत्रुसमूह जेणे एवी, अने भासिनी के० शोभायमान एवी, अने हारतारा के० हारसरखी तार के० उज्वल एवी. अने बलक्षेमदा–बल के० पराक्रम अने क्षेम के० मंगल, ए उभे आपनार, अने अवसन्ना के० खेदरहित अने अमदा के० मदरहित एवीछे॥ ॥ ४ ॥ इति श्रीमहावीरजिनस्तु सपूर्णा इति श्रीशोभनमुनिकृता चतुर्विंशति जिनस्तुतिश्च बालावबोधसहीत सपूर्णा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति श्रीशोभनमुनिकृत चतुर्विंशति
जिनस्तुति अर्थसहीत समाप्त

अथश्रीनववैराग्यशतकअर्थसहितप्रारंभः

संसारंमि असारे, नत्थि सुहं वाहि वेअणा पउरे ॥ जाणंतो इह जी
वो. नकुणइ जिणदेसिअं धम्मं ॥१॥ अज्जं कल्लं परं परारि, पुरिसा
चिंतंति अछ संपत्तिं ॥ अंजलिगयंव तोयं, गलंतमाउं न पिछंति ॥२॥

व्याख्या–ए संसारमां जे पदार्थ छे ते सर्वे असार पणुं निरस छे; एहवुं भगवं
ते कह्यु छे. ए संसारमां ए जीवने कोइ पण ठेकाणे कोइपण गतीमां एक क्षणमा
त्र सुख नथी. वाहि के० व्याधि अने वेदनाए पउरे के० प्रचूर एटले घणा एवा
साडात्रण कोटि रोगोए करीने ए शरीर पूर्युं छे. ए जीव सर्व पदार्थने असार जा
णतो थको पण, बहुलकर्मि माटे श्रीवीतरागनो उपदेश्यो दयामूल धर्म नथी
करतो, अने संसारनो लोलुपि थको धर्मरत्न खूवे छे. ॥ १ ॥ आज, काल, पलो
र अथवा परार एटले आगले वरसे पुरिसा के० पुरुष. ते शुं चितवे छे? तोके–
अर्थसंपत्ति अर्थ एटले हुं धन पामीश, सुखी थइश. वली ते मूढ मनमांहे एम
विमासे छे जे, हुं धन थशे तेवारे धर्म करीश; पण ते पुरिसाके०पुरुषो, न पिछंति
के० नथी देखता के जेम अंजली के० हाथना खोबामां रहेलुं पाणी गली जाय
छे, तेम आयुष्य गली जायछे. ते देखता नथी. ॥ २ ॥

जंकल्ले कायव्वं, तं अज्जं चिय करेह तुरमाणा ॥ बहुविग्घोहमुहुत्तो
मा अवरण्हं पडिक्खेह ॥३॥ ही संसार सहावं. चरियं नेहाणुराय
रत्तावि ॥ जे पुव्वण्हे दिठा. ते अवरण्हे न दीसंति ॥ ४ ॥

व्याख्या–वली मूर्ख मनमांहे चिंतवेछे जे हुं काले करीश, पण काल कोणे
दीठी छे जे काले शुं थशे? तेमाटे जं के० जे [illegible] के० काले करवा योग्य [illegible]
ते अज्जं के० आज करजे अर्थात् जे धर्मकार्य होय ते तुरमाणा के० [illegible]
पणे करजे. ढील करीश नही. कारण [illegible] [illegible] [illegible] मु
हूर्तमांहे पण बहुविग्घो के० कोटि विघ्न उपजे; [illegible]
[illegible] हे जीव! कालने काले [illegible] [illegible]
[illegible] करीश? ॥ ३ ॥ हीइतिखेदे हे प्राणी. [illegible]
[illegible] अति विषम छे. नेहाणुरागरत्तावि के० [illegible]
[illegible] एवा जे पोताना कुटुंबी ते [illegible]
[illegible] जे पुव्वण्हे के० [illegible]

पहोरे नदीसंति के० नही दीसे एवो संसारनो कारमो राग ने माटे विषम स्ना व छे तोपण जीव, प्रतिबोध पामतो नथी ॥ ४ ॥

मा सुयह जग्गि यव्व, पलाइअव्वमि की सवीसमह ॥ तिणि जणा अणुलग्गा, रोगोअ जराय मच्चूअ ॥ ५ ॥ दिवस निसा घडिमाले आउ सलिलं जिआण घित्तूणं॥चंदाइच्च वइल्ला कालरहट्टं भमाडेइ ॥६॥

व्याख्या–रे आत्मा, प्रमाद करीने मासुयह के० सुइ न जा जग्गिअव्वे के० सदाकाल जागतो रहे कारण, कालरूपी आहेडी फरतो रहे छे. तेमाटे हे जीव! ज्यां थकी पलाइअव्वमि के० पलायन करीजवुल्या कीसवीसमह के० केवो विसामो लेइने निश्चित केम सुइ रहे छु? ज्या चोर लागे त्या जागता रहेवु, सुइ रहेवु नही. जो सुइश तो छेतराइश रे जीव! तारी पूठे त्रण जण दुश्मन लाग्याछे, तो केम निश्चिंत सुवे छे? न सुइ रहे धर्मरूपी जागरण कर ते त्रण जण कोण? तोके-एकतो रोग, बीजी जरा अने त्रीजुं मृत्यु ए त्रण वेरी तारी पूठे लाग्या छतां तु केम सुवे छे? ॥ ५ ॥ आ ससाररूप कूप छे, तेमा दिवस अने रात्री–ए बे घडीमाला एटले घडाउनी श्रेणीछे, ते जीयाण के० जीवोना आयुष्यरूप सलिल के० पाणीने घित्तूण के० लइने एक खाली थायछे एक भराय छे तेने चंद्रमा अने सूर्य ए बे वलदिआ जोतख्या थका ए कालरूप अरहटने भमाडेईके० भमाडे छे आयुषरूप पाणी खुटाडे छे, तो पण प्राणी समताभावने समजतो नथी ॥ ६ ॥

सा नत्थि कलातंनत्थि, उसह तं नत्थि किंपि विन्नाणं॥जेण धरिज्जइ काया खज्जंति कालसप्पेण ॥ ७ ॥ दीहर फणिंदनाले, महिअर केसर दिसा मह दलिल्ले॥उपिअइ कालभमरो जणमय रंद पुहवि पउमे ॥८॥

व्याख्या–ससारमाहे एवी कला पण कोइ दीसती नथी, अने वली एवु औषध पण कोइ नथी देखातु, तथा एवु, किंपिके० कोइ विन्नाण के० विज्ञानपण नथी देखातु के जे कलाए करी, अथवा जे औषधे करी अथवा जे विज्ञाने करी कालसप्पेण के० कालसर्प करीने काया खज्जंति के० खवाय छे, तेने धरिज्जइ के० धरी राखीए एटले बीजा सर्व जातना विष उतरे पण कालरूप सर्पना डसनु विष उतरे नही ॥ ७ ॥ पृथ्वीरूप कमल वखाणे छे दीर्घफणिंद एटले मह्येटो शेषनाग ते रूप जेवो नालके० डांखो जे कमलने नीचे छे, वली जे पृथ्वीरूप कमलनेविषे महिधर ए

दले पर्वतरूप केसरा ते कमलना तलुडंबे, वली दशदिशारूप महोटी पांखडी डे. ऊपियइ कालनमरो के० प्रत्यक्ष देखातो कालरूप नमरो ते आखा लोकरू पीआ मयरं के० मकरंद एटले जीवरूप मकरंद जे कमलनो रस, तेने पान करे बे. जेम कमलनो रस नमरो पीए, तेम अहींयां जीवरूप कमलने तेनो रस कालरूपी नमरो पीएडे. ॥ ८ ॥

गया मिसेण कालो, सयल जिआणं उलंग वेसंतो ॥ पासं कहवि न मुंचइ, ताधम्मे उज्जमं कुणह ॥ ए ॥ कालंमि अणाइए, जीवाणं वि विहकम्मवसगाणं ॥ तं नत्थि संविहाणं, संसारे जं न संनवइ॥१०॥

व्याख्या–जे शरीरनी गंया देखायछे, अने निरंतर जीवनी साथे फरे छे, ते गाया नथी पण एतो गायाने मिषे काल फरे छे, ते जेम वेरी उलनेद ताकतो फरेछे, तेम कालरूप पिशून सकल जीवना उलने शत्रुनी पेरे जुएछे. जेम डर्जन होय ते केडमूके नहीं, तेम ए गंयाने मिषे काल जे छे ते पासंकहविनमुंचइ के० जीवनी क्यारेपण केड मूकतो नथी; ते माटे हे जीव, जिनधर्मना मार्गने अने तीर्थंकरनी वाणीने अंगीकार करीने रुडीपेरे आदर. ए सद्गुरुनो उपदेशछे. ॥ ए ॥ ए अनादिकालनेविषे जीवो क्रोध मान माया अने लोनने योगे विविध प्रकारना कर्मना वश थका संसारमां पड्या नाना प्रकारनां दुःख सही रह्या छे, माटे एवा जीवोने तके० ते नथी संविहाणं के० संविधान एटले एहवो संबंध के जंके० जे नसंसारेसंनवइ के० संसारमां संनवे नही अर्थात् बधा संबंध संनवेछे पुनःजो जिनवरनोधर्म करेतो संसाररूप चक्रमांहे न नमे. ॥ १० ॥

बंधवा सुयणा सवे पिअ माया पुत्त नारिआ ॥ पेअव
णाउ नियत्तंति दाउणं सलिलंजलिं ॥ ११ ॥ विहडं
ति सुआ विहडंति बंधवा, विहडंतिसुसंचिउअगो ॥ इक्को
कहवि न विहडइ, धम्मो रेजीव जिणनणिउ ॥ १२ ॥

व्याख्या–बंधव, के० नाइबंध अने सुयणा के० स्वजन सर्वे पिता, माता, पुत्र, नार्या धन सुवर्ण ए सर्वे आ संसारनेविषे स्वप्न समानछे. ए सर्व जे कुटुंबछे ते जीवने पेयवणाउ के० प्रेतवन जे श्मशान त्यां मूकीने त्यां थकी नियत्तंति के० पाबा वलेछे. शुं करीने पाबा वलेछे? तो के दाऊणके० देइने, सलिलंजलिं के०

ी पसली आपीने पाछा फरे छे ॥ ११ ॥ सुआ के० सुत एटले पुत्रते पण
, एटले विघटेछे वधर के० जाइ पण विछडे छे जगत्मा स्वार्थ करी
हे स्वार्थवश सहुछे अने सुसचिडअछो के० रुडीपरे संचित कर्यु एवु
० द्रव्य एटले सुकृतनी लक्ष्मी पण विछडे, नाशपामे छे कुदिसपवरा
जाणवी मात्र एक वस्तु, हे जीव परनव जाता सखी थाय एवी अने
करनार एवी अविहडछे ते एके केवल धर्म–श्रीतीर्थंकरे नाख्योछे ते कि
जीवनो सखा जाणवो ए कथमपि के० कोइप्रकारे पण विछडे नही ॥१

ाकम्मपासवद्धो जीवो ससारचारएठाइ॥अडकम्मपासमुक्को,आ
सिवमंदिरे ठाइ ॥१३॥ विहवो सज्जणसगो विसयसुहाइ विलास
ल्लिआई ॥ नलिनीदलग्गघोलिर जललवपरिचचल सव्व ॥१४॥

ख्या–ए जीव, निविडबधन के० जेणे करीने तूटेज नही एवा आठकर्म क
ो बधाणो थको ससाररूप चारक के० बधीखानानेविषे ठाम ठाम जन्म
करेछे अने जो ए जीव आठकर्मरूप पाशथी ससारमा मुकायतो मो
नेविषे जइ रहे ॥ १३ ॥ जीवने विहवो के० विनव जे लक्ष्मीना अने
कुटबनो जे सगछे, तेनु फल अशाश्वतुछे, थिर रहे नही, वली विलासे
ललित के० मनोहर एवा छे पाच इंद्रिना विषयसुख एटले स्त्री सबंधीमनो
लास तथा खावु पीवु शृगार खेल ख्याल विनोद ते पण अशाश्वतछे अने
इछे जेम नलिनी के० कमलिनीना दलग्ग के० दल जे पादडा तेने अग्र
अग्रनागे रहेलु जलबिंदु ते जेम घोलिर के० चपलछे तेम आ पण
वजके० चचल जाणवा ॥ १४ ॥

कछ वल त कछ, जुव्वण अगचगिमा कछ ॥ सव्व मणिचंपिछह
ठ नठ कयतेण ॥१५॥ घणकम्मपासवद्धो नवनयरचउपहेसु
विहाउं ॥ पावइ विडंबणाउ जीवो को इछ सरणं से ॥१६॥

ख्या–त कछवलके० ते कायानु बल क्या गयु? ते जोवननु वल क्या गयुं?
अगचगिमा के० शरीरनु मनोहरपणु ते पण क्या गयु? अने ते रूप रगना
यु? अरे वृध्यावस्था आवी हवे चेतो. अगनु उद्योतपणु पण क्या गयु? बुद्धि
ागइ? रेजीव ए सघली वस्तुउ अणिच्चं क० अनित्य अशाश्वत छे, एम पि

इहके० देखो. अहो जीव! दिठुके० ए सर्वे तमासो तें दीठो जे कयंतेणंनठु के० ज मराजाए नष्ट कीधो एवो दीठो, तो पण अज्ञानवशे करी नथी जाणतो के सर्वे अ नित्य वस्तुओ. नजरे देखतां चाली जायछे तोपण जीव समजे नहीज ॥ १५ ॥ ए जीव, घन के० निबिडकर्मना पाशे बंधाणो थको भवरूपी नगरना चारगतिरूप चकटामांहे विविध प्रकारना रूप करतो कर्मना वशे नरक निगोदमांहे अनेक विडंबना पामे छे. इहां जीवने शरण कोण थाय? ॥ १६ ॥

घोरंमि गप्नवासे, कलमल जंबाल असुइ बीभछे ॥ वसिउ अणंत खुत्तो, जीवो कम्माणुनावेणं ॥ १७ ॥ चुलसीइ किरलोए, जोणीणं भव सयसहस्साइं ॥ इक्किक्कमि अजीवो अणंतखुत्तोसमुप्पन्नो ॥ १८ ॥

व्याख्या–एजीव, घोरंमिके० महाघोर बिहामणा एवा गर्भवासनेविषे वस्यो. ग र्भवास केवो छे? तोके कलमलजंबालके० मलरूप कर्दम. तेणे करी अशुचि छे. अपवित्र छे. वली बिभत्स के० गंदो छे. ते गर्भमांहे जीवकम्माणुभावेण के० कर्मना अनुभावे करीने अणंतखुत्तो के० अनंतिवार वस्यो. ॥ १७ ॥ किरके० निश्च यउर्ध्वगज लोकमांहे चोराशीलाख योनि जीवने उपजवानी छे. ते एकेक यो निनेविषे ए संसारी जीवे अनंतीवार अवतार लीधा, केटलाएक सर्वेसी कर्या; तेउनी संख्या पण न पामी ए. ॥ १८ ॥

माया पिय बंधूहिं ॥ संसारछेहिंपूरिउलोगो ॥ बहुजोणिनिवासीहिं नय तेनाणंचसरणंच ॥ १९ ॥ जीवोवाहिविलुत्तो सफरोइवनि [illegible] पकडई ॥ सयलोविजणोपिछइ कोसकोवेअणाविगमे ॥ २० ॥

व्याख्या–व्यवहार राशीमां संसारछेहिंके० संसारनेविषे [illegible] घ णी एवो जे चोराशी लाख जीवयोनी, तेनेविषे निवास [illegible] मात, पिता, भाई, इत्यादिक–तेणे करीने चउदराजलोक पुर्यो छे, [illegible] ने मातापितादिक तेके० तने ताणके० [illegible] नथी. [illegible] के० शरण राखवाने पण समर्थ नथके० नथी ॥ १९ ॥ [illegible] जननी आधि. तेणे करी विलुत के० लोपाणो पीड्यो छे [illegible] नहीं. जेम माछलुं पाणीविना तडफडे–टलवले. तेम [illegible] तडफडे छे. इत्य आव्ये हायवराल घणी करे छे. [illegible] [illegible] के० देवे विलखाए. आलिंग [illegible]

वेदना निवारवाने अर्थे कोण शक्तिवत थाय? अर्थात् कोइ समर्थ
मा जाणसि जीव तुमं ॥ पुत्त कलत्ताइ मन्झसुहहेऊ ॥ निउ
आ॥संसारेसंसरंताणं ॥२१॥ जणणी जायइ जाया ॥ जाया
आय पुत्तोअ ॥ अणवछासंसारे कम्मवसासवजीवाण ॥
व्याख्या–हे जीव! तुं एम माजाणसिके० जाणीश नहीं के,
माता, पिता, बाइ, नाइचंव इत्यादिक सहु सजनवर्ग सुखनां
संसारमां संसरताणंके० परिभ्रमण करतां जीवाने ए माता पितानो
सर्व निउणके० आकरु संसारबंधननुं कारणछे, पण संसार छोडावे नह
माता ते जायाके० स्त्रीपणे थाय, अने स्त्री ते मातापणे थाय, अने
पुत्रपणे थाय, पुत्र पितापणे थाय एम संसारमाहे अणवछाके० अनव
से अनियमितपणुंछे, पण निश्चयपणुं नथी सर्व जीवो कर्मने वश थका
जिएछे, पण तेनी जीवने खबर नथी मोहे करीने माहरू माहरूं करेछे
जीव संसारमाहे परवश थको धर्मनो उद्यम करी शकतो नथी ॥ २२ ॥
न सा जाई न सा जोणी न तं ठाणं न तं कुलं ॥ नजाया न मूआ
जत्थ ॥ सवेजीवाअणंतसो ॥ २३ ॥ तं कपि नत्थि ठाणं ॥ लोए वाल
ग्गकोडिमित्तंपि ॥ जत्थ न जीवा बहुसो सुहदुखपरंपरपत्ता ॥२४॥
व्याख्या–चक्रदराजमा एवी कोइ जाति नथी, एवी कोइ योनि नथी, एवु कोइस्था
नथी, अने एवु कोइ कुल नथी के ज्या जीव, जनम्यो नथी के मुउ नथी ए,
एकएक ठेकाणे एकएक जीव अनंतीवार फरसी संसारमा जन्योछे ॥२३॥ ते चौदरा
जलोकमाहे वालाग्रनी अणीमात्र तेनु कोटी असंख्यातमा नाग जेटलु गाम नथी
के ज्या जीव, बहुसाके० घणीवार सुखदुःखनी परंपरा नथी पाम्यो अर्थात् सर्व ठेका
णे जीव सुखदुःखनी परंपरा पाम्योछे पण कर्मक्षयनी परंपरा पाम्यो नथी॥२४॥
सवाउ रुद्धीउ पत्ता सवेवि सयणसंबधा ॥ संसारेतोविरमसु, तत्तोज
इमुणसिअप्पाणं ॥ २५ ॥ एगोवंधइकम्मं, एगोवहवंधमरणवस
णाइं ॥ विसहइभवंमिभमडइ, एगुच्चिअकम्मवेलविउ ॥ २६ ॥
व्याख्या –हे जीव, तुं सघली चक्रवर्त्ती प्रमुखनी जेरुद्धि संपदा ते संसारमां अ
नती वार पाम्यो, अने सघनां सजनसंबंधी सगपण पण अनंतीवार पाम्यो

जो तुं पोताना आत्मस्वरूपने जाणेछे तो संसारथी विराम पामी दुःखोनो अंत कर, तेवारे आत्मानो निस्तार थाय. ॥७५॥ ए जीव एकलोज पोते कर्म बंधन करेछे. अने वधबंध प्रहार अने मरण इत्यादिक कष्ट ते पोते एकलोज आ संसारमां सहेछे. ए जीव कर्म बंधन करतो थको कर्मनो प्रेर्यो नवमांहे एकलो चिअके० निश्चयथी भ्रमण करेछे, पण जो ते वीतरागना वचन सद्दहेतो संसारसमुद्रमां न भमे.॥७६॥

अन्नोनकुणइअहिअं, हिअंपिअप्पाकरेइनहुअन्नो॥अप्पकयंसुहदुक्खं,भुंजसिताकीसदीणमुहो ॥ ७७ ॥ बहुआरंभविढत्तं,वित्तंविलसंतिजीवसयणगणा ॥तज्जणिअपावकम्मं,अणुहवसिपुणोतुमंचेव॥७८॥

व्याख्या–हे जीव तने अनेरो कोइ अहित करतो नथी, अने हित पण पोतानो आत्माज करेछे, अथवा अहित पण आत्माज करेछे. पण बीजो कोइ करतो नथी. जीव पोतेज पोताने सुख करेछे. अने दुःख करेछे, अने पोतानांज कर्मोए करी चार गतिनां सुखदुःख भोगवेछे. तो हे जीव ! तुं शाकारण माटे दयामणुं मुख करेछे? ॥ ७७ ॥ हे जीव, तुं घणा आरंभे करी वित्तके० द्रव्यप्रत्ये उपार्जन करेछे ते द्रव्यने विलसंतिके० भोगवेछे. कोण भोगवेछे? तो के स्वजनना गण एटले समूह ते भोगवेछे. पण ते द्रव्य उपार्जन करतां पोते आरंभथी उपार्ज्युं जे पापकर्म, तेने तुं भोगवेछे अने भोगवीश. अने जो ए आरंभथी विराम न पामे तो फरी आगामिक काले पण तेनुं दुःख तनेज भोगववुं पडशे, पण बीजो कोइ भोगवशे नहीं॥७८॥

अहदुक्खियाइंतहभुक्खिआइंजहचिंतआइंडिंभाइं ॥ तहथोवंपिन अप्पा विचिंतिअजीवकिंभणिमो ॥ ७९ ॥ खणभंगुरं सरीरं,जीवोअन्नोअसासयसरूवो ॥ कम्मवसासंबंधो, निबंधोइत्थकोतुज्झ ॥ ८० ॥

व्याख्या–अह के० अथ अथानंतर एटले पूर्वे दृष्टांत कह्यु तेम बीजुं कहेछे, जेम डिंभाइ के० बालक दुखीआंछे तेमज ए बालक भुख्यांछे, एम तुं कर्मने वश थको मूढपणाथी वारंवार चिंतवे छे, तेम अरेजीव तुं थोवपि के० थोडीसी पण पोताना आत्मानी चिंता करत तो सुखी थात, पण हे जीव तुं मूढपणे पोते आत्मस्वरूप चिंतवतो नथी तो तने शुं कहीए? ॥ ७९ ॥ हे जीव, आ शरीर क्षणभंगुर छे, अने अशाश्वतुं छे, अने ए जीवतो शरीरथी जुदोछे अने तेनुं शाश्वतुंस्वरूप छे. आ कायादिकनो संबंध जीवने कर्मना वशे करीने छे. अरे तने आ प्रति

वध शो? एटले इहा शरीरनेविषे ताहरे शामाटे प्रतिवध करवो जोइये

कहआयकहचलिअ, तुमपिकहआगउकहगमिही॥अन्नुन्नपि

णाह,जीवकुडुवकउतुम ॥३१॥ खणनगुरेसरीरे, मणुअनवेअ

लसारिछे ॥ सारंइत्तिअमित्त, जकीरइसोहणोधम्मो ॥ ३

व्याख्या–हे जीव, आ ताहरु कुटुब क्याथी आव्यु अने कोण गतिमा

अने तु पण क्याथी आव्यो अने कइ गतिमा जइश? कुटुवनी गतागति अ

री पोतानी गतागतिनी परस्पर जो तने खवर नथी तो हे जीव! तारु ए कुटु

क्याथी अने तु पण ए कुटुवनो क्याथी? जेवु चारे गतिमा मारु कुटुव मारु कुटुव

करतो फर्यो ? ॥ ३१ ॥ मनुष्यनवनेविषे क्षणनगुर एवु जे आ शरीर ते

पमलके० वादलप्राये असार छे एटले वादला जेम घडीमा चढी आवे ने घ

विसराल थाय, तेम मनुष्यनो अवतार पण वीसराल थता वार न लागे सारतो

लोज छे के जे मनुष्यना नवेकरी शोनन एवो रुडो धर्म कराय छे माटे हे जीव

श्रीवीतरागनो धर्म आचरणकर ए विना बीजो काइ आ ससारमा सार नथी॥३

जम्मडुक्कजराडुक्क, रोगायमरणाणिय ॥ अहोडुक्कोहुससारो, ज

छकीसतिजतुणो ॥ ३३ ॥ जावनइंदियहाणी, जावनजररक्कसीप

रिप्फुरइ ॥ जावनरोगविआरा, जावनमच्चूसमुछिअइ ॥ ३४ ॥

व्याख्या–जन्मनु डुःख, जरानु डुःख, रोगेकरीने डुःख अने मरण पामवा

डुःख अहो! इति आश्चर्य, एहवो डुःखमय निश्चेयकी आ ससार छे, त्याजीवो कि

तिके० केम रहे छे? जन्तके० जे ससारनेविषे रह्यो जीव जन्ममरणादिक घणा क्लेश पा

मे छे, तेम छता तेमा आसक्त थइ रहेछे ए आश्चर्य! ॥३३॥ ज्या सुधी इंद्रियनी हाणी

थइ नथी, एटले इंद्रिय पाचे परवडा छे, ज्यासुधी जरारूप राक्षसणी परिस्फुरण

थइ नथी एटले प्रगट थइ नथी, एटले अतिशयपणे स्फुरणा पामी नथी, व्यापी न

थी वली ज्या लगी रोगरूप विकार प्रगट थयो नथी, अने ज्या सुधी मरण उल्लसित

एटले उदय आव्यु नथी त्यासुधी हे जीव! तु वीतरागना धर्मनु आचरण कर

जह गेहमि पलित्ते, कूव खणिउ न सकए कोइ ॥ तहसपत्तेमरणे,

धम्मो कह कीरए जीव ॥ ३५ ॥ रुवमसासयमेय, विज्जुलयाचचल

जए जीअ ॥ सजाणुरागसरिस, खणरमणीअ च तारुन्न ॥ ३६ ॥

व्याख्या–हे जीव. जेम घरमां चारेदिशाए आग लागे ते समये कोइ उद्यमी जीव कूवो खणीने पाणी काढी शकतो नथी. अर्थात् आग लागे तेवारे कूप खोदवा बेसे ते कांइ काम आवे नही–कारण, आग ओलववा तरत पाणी जोइए. तेम हे जीव! मरणकाल प्राप्त थयो छतां तुं धर्मपण शीरीते करी शकशे? एम चित्तमां विचारीने हमणांथीज श्रीवीतरागना धर्मनुं आचरण कर. ॥ ३५ ॥ हे जीव! आ शरीरनुं रूप जे सुंदरपणु छे ते अशाश्वतु छे, अथिर छे विद्युलता के० विजलीनी पेरे जगतमां जीवितव्य चंचल छे. अने रमणीक एवुं जे तारुण्य ते क्षणिकछे. तथा संध्याकालना पंचवर्ण रागना रंग सरखुं छे. ॥३६॥

गयकन्नचंचलाओ, लच्छीओतिअसचावसारिछं ॥ विसयसुहंजीवाणं, बुज्झसुरेजीवमामुज्झ ॥ ३७ ॥ जहसंझाएसउणाण संगमोजहपहे अपहिआणं ॥ सयणाणंसंजोगो, तहेवखणभंगुरोजीव ॥ ३८ ॥

व्याख्या–हे जीव! गयकन्न के० हाथीना काननी पेरे लक्ष्मी के० लक्ष्मी चंचल छे; अने विसयसुहं के० विषयनां सुखछे ते तिअसचाव के० त्रिदशचाप एटले इंद्र धनुष्यना सरखां एटले पहेलां तो अति वल्लभ लागे, अने पछी दुःखदाइ थायछे तथा विनिश्वरछे, एवुं जाणीने हे भव्यजीव, तुं जाण थइने बुज्झ पण मूर्ख थइ मोहनेवि षे मुझाइश मां. श्रीवीतरागना धर्मने आचरण कर. ॥ ३७ ॥ हे जीव! जेम संध्या समये सउणाण के० पंखीओनो संगम एटले संध्या समये जूदी जूदी जातनां पंखीओ वृक्ष उपर एकठां थायछे, ते प्रातःकाले सर्व पोतपोताने मन गमते ठेकाणे चाली जायछे, अने जेम मार्गे जतां पंथीओनो संगम थायछे अर्थात् ए बे संगम क्षणिकछे; तेम संसारनेविषे जे सयण के० सज्जन सगाओनो संयोगछे ते पण क्षणभंगुरछे.॥३८॥

निसाविरामे परिभावयामि । गेहे पलित्ते किमहं सुया मि ॥ डज्झंतमप्पाणमुवरकयामि जंधम्मरहिओ दिअ हा गमामि ॥३९॥ जाजा वच्चइ रयणी, न सा पडिनिअत्तइ ॥ अहम्मं कुण माणस्स, अफला जंतिराइओ ॥ ४० ॥

व्याख्या–जेम निशा के० रात्री विरामपामे थके पाछले पहोरे जागीओछीने प्रमा द न करतां एम परिभावयामि के० चिंतवणा करे जे घरनेविषे अग्नि लाग्योछे तो कहोने केवी रीते निश्चिंतपणे सुइ रहीए? ए दृष्टांते अज्ञात मणाणां के० दाजना एटले

वलता थ्यात्माने केम लेखामां नथी गणतो? केम धर्मरहित दिवस निर्गमुं? हु दाकुं तो पण तेनी केम उपेक्षा करूं? अथवा वृद्धावस्था ए आयुष्यरूपी रात्रीनो पाछलो पहोर जाणवो ए अवस्थानेविषे संसारथी सचेत थया छता अने संसारनी अनेक विम्बनारूप अग्नि लाग्यो छता अने तेणे करी अनेक वेदनाउ सहेवी पडती छता धर्मरहित एटले श्रीवीतरागनाषित धर्मनुं आचरण कर्या विना केम दिवस निर्गमावुं? एवो नावार्थ ॥ ३९ ॥ जे जे रजनी जायछे ते रात्री तथा दिवस पाछा नहीं आवे एटले पडिनियत्त के० निर्वत थता नथी. अधर्मकरणहार माणसनो रात्री दिवस ते अफलाके० निष्फल जायछे ॥ ४० ॥

जस्सत्थि मच्चुणासरक जस्स अत्थि पलायणं ॥ जो जाणे न मरिस्सामि, सोछकखेसुणसिया ॥ ४१ ॥ दम्कलिअकरित्ता, वच्चतिहु राइउय दिवसाय ॥ आउसविल्लता, गयाविन पुणो निअत्तंति ॥४२॥

व्याख्या–जेहने मरण साथे मित्रपणुं छे, अथवा जेने मरणथी दूर पलायन करवानी शक्तिछे, अने जे जाणेछे के हुं मरवानो नथी, ते निश्चे एम करेकेहु के० वाछे जे आगमिक काले हु निचितोयको धर्म करीश पण जेने मरणसाथे मित्रपणु नथी, अने मरणथी दूर पलायन करवानी शक्ति पण नथी. अने जे जाणे छे के हु निश्चे मरवानोज छुतो ते प्राणी एम केम विचारे जे हु आगमिक काले धर्म करीश? तेने तो आज थतु होय तो आवती काल उपर जरोसो राखवोज नहीं ए कारण माटे सर्व नविकजनोए श्रीवीतरागधर्मनुं अप्रमादपणे आचरण करवु ॥ एवो नावार्थ ॥ ४१ ॥ दम्क के० मन वचन कायाना अशुनयोग ते जीवने दमेछे अने कलिके० वढवाड तथा क्लेश करता संताप करतां जीवने जे रात्र दिवस तिके० गया ते पण पाछा आयुष्यमा नियत्ततिके० वधता नथी एटले जे गयाते गयाज

जहे वमी हो वमिय गहाय, मच्चूनर नेइहु अंतकाले ॥ न तस्स माया न पिया न नाया ॥ कालमित्तमि सहरा नवति॥४३॥जीअं जलबिंदुसम, सपत्तीउ तरगलोलाउ॥ सुमिणयसम च पिम्म, जजाणसुतकरिज्ञासु ॥ ४४ ॥

व्याख्या–जेम केसरीसिंहछे ते मृग के० हरिणने यूथमाथी ग्रही म, काजछे ते नर के०मनुष्यने आयुष्यने अंतकाले निश्चये स्वजनादिकना

इजायछे, ते समये तेहने मात, पिता, जाइ. जार्यादिक कोइ सहाय थतां नथी. सहु को इ देखतां काल तेने लइजायछे. तेउ सर्व खेद पामतां थकां बेशी रहेछे, पण तेने काल के० मरणने अवसरे मरणनां विजागी सखा कोइ थातां नथी ॥ ४३॥ए जीवने जीवित व्यछे ते जलबिंदु समान अर्थात् जलबिंदु जेम थोडीवार रहे तेम जीवितव्य पण थोडो वखत रहेछे. संपत्तिउ जेछे ते पाणीना तरंग के० कल्लोलनी समान लोलाउ के० चंचलछे, अने पिम्मं के० प्रेमछे अर्थात् संसारनेविषे पुत्र पुत्रादिक उपर जे स्नेहछे ते सुमिणय के० स्वप्न समानछे. एवुं जाणीने हे जीव! जे कांइ धर्म कर णी करवी घटे ते कर, पण प्रमाद करीश नही. ॥ ४४ ॥

संजराग जलबुब्बुउवमे जीविए जलबिंदुचंचले ॥ जुव्वणेय नइवेगसं निन्ने पावजीव किमियं न बुज्जसे ॥४५॥ अन्नछसुआ अन्नछ गेहिणी परिअणोविअन्नछ ॥ जूअबलिव कुडंबं, पिक्कितंतहयकयंतेण ॥४६॥

व्याख्या—हे जीव ! संध्या समयनी रातास. जलबिंदु अने जलना परपोटानी उपमाछे जेने एवुं जीवितव्य चंचलछे: माजनी अणी उपर रह्यु जे जलबिंदु तेना सर खुं आयुष्य अथिरछे. अने यौवनवयछे ते नदीना पूरना वेग समान जातां वार लागे नही एवुंछे. अर्थात् क्षणिकछे; ए माटे हे पापकर्मना करनारजीव ! तुं केम बूजतो नथी? अर्थात् सर्व क्षणजंगुर जाणतो छतां केम बोधने पामतो नथी ॥ ४५ ॥ हे जीव ! सुअ के०सुत ते पुत्र ते पण अन्नछ के० अनेरेगामे मरीने पहोता, अने गेहिणी के० स्त्री ते पण अनछके० अन्यगामे मरीने पहोती, अने परिआणोवि के० परिजन जे दासदासी प्रमुख कुटुंब परिवार पण मरीने अन्यस्थानके पहोता ए कुटुंब मेलो ते हतइतिखेदे कयंतेणंके० यमराजाये जूयवलिवपिक्किन के० जू तना बाकुलानी परे जूदु जूदु विखेरी नाख्युं. अर्थात् ए सर्व, जूत जेम बलि वा कुला नाखी दीए तेम सर्व सगा संबंधीने देखतां यमराजा ए कुटुंबने गत्यंतर मां नाखी दीएछे. ए सगा कुटुंब सहु पोषणने माटे तने वलगी रह्यांछे. ॥ ४६ ॥

जीवेण जवे जवे, मिल्लिआइ देहाइ जाइ संसारे ॥ ताणं न सागरे हिं, कीरइ संखा अणंतेहिं ॥४७॥ नयणोदयंपि तासि सागर सलि लाउ बहुयरं होइ ॥ गलिअंरुअमाणीणं माऊणं अन्नमन्नाणं ॥४८॥

व्याख्या—आ जीवे जवो जवनेविषे जेटला देह आ संसारने विषे मेल्या, तेउनुं जो लेखुं करीए तो ते अनंता सागरोपमे पण तेनी संख्या न थाय. अर्थात् आ

वळता आत्माने केम लेखामां नथी गणतो? केम धर्मरहित दिवस निर्गमुवु? हु दाळुं तो पण तेनी केम उपेक्षा करूं? अथवा वृद्धावस्था ए आयुष्यरूपी रात्रीनो पाछलो पहोर जाणवो ए अवस्थानेविषे संसारथी सचेत थया वतां अने संसारनी अनेक विमवनारूप अग्नि जाग्यो वतां अने तेणे करी अनेक वेदनाओ सहेवी पडती वतां धर्मरहित एटले श्रीवीतरागनाषितधर्मनुं आचरण कर्या विना केम दिवस निर्गमावुं? एवो नावार्थ ॥ ३९ ॥ जे जे रजनी जायवे ते रात्री तथा दिवस पाछा नहीं आवे. एटले पडिनियत्त के० निवर्त्त थता नथी. अधर्मकरणहार माणसनो रात्री दिवस ते अफलाके० निष्फल जायवे ॥ ४० ॥

जस्सत्थि मच्चुणासक्खं जस्स अत्थि पलायणं ॥ जो जाणे न मरिस्सामि, सोहुकंखेसुएसिया ॥ ४१ ॥ दंभकलिअकरित्ता, वच्चंतिहु राइओय दिवसाय ॥ आउसविल्लंता, गयाविन पुणो निअत्तंति ॥४२॥

व्याख्या—जेहने मरण साथे मित्रपणुं वे, अथवा जेने मरणथी दूर पलायन करवानी शक्तिवे, अने जे जाणेवे के हुं मरवानो नथी, ते निश्चे एम कखेसु के० वांछे जे आगमिक काले हुं निश्चितोथको धर्म करीश पण जेने मरणसाथे मित्रपणु नथी, अने मरणथी दूर पलायन करवानी शक्ति पण नथी, अने जे जाणे वे के हुं निश्चे मरवानोज बुं तो ते प्राणी एम केम विचारे जे हुं आगमिक काले धर्म करीश? तेने तो आज थतुं होय तो आवती काल उपर नरोसो राखवोज नहीं ए कारण माटे सर्व नविकजनोए श्रीवीतरागधर्मनुं अप्रमादपणे आचरण करवुं ॥ एवो नावार्थ ॥ ४१ ॥ दंभ के० मन वचन कायाना अशुनयोग ते जीवने दमेवे अने कलिके० वढवाड तथा क्लेश करता संताप करता जीवने जे रात्र दिवस वच्चंतिके० गया ते पण पाछा आयुष्यमा नियत्ततिके० वधता नथी एटले जे गयाते गयान

जहे वसी हो वमियं गहाय, मच्चूनर नेइहु अंतकाले ॥ न तस्स माया न पिया न नाया ॥ कालमित्तमि सहरा नवंति॥४३॥जीअ जलबिंदुसम, सपत्तीन तरंगलोलाओ॥ सुमिणयसमं च पिम्मं, जजाणसुतकरिज्जासु ॥ ४४ ॥

व्याख्या—जेम केसरीसिंहवे ते मृग के० हरिणने यूथमांथी ग्रही लेइजायवे तेम, कालवे ते नर के० मनुष्यने आयुष्यने अंतकाले निश्चये सजनादिकना यूथमांथी ल

इजायछे; ते समये तेहने मात, पिता, भाइ, भार्यादिक कोइ सहाय थतां नथी. सहु को इ देखतां काळ तेने लइजायछे. तेथी नरे खेद पामतां थकां बेशी रहेछे, पण तेने काळ के० मरणने अवसरे मरणनां विनाशी नरता कोइ थातां नथी ॥४३॥ ए जीवने जीवित व्यछे ते जलबिंदु समान अर्थात् जलबिंदु जेम थोडीवार रहे तेम जीवितव्य पण थोडो वखत रहेछे. संपत्तिओ जेछे ते पाणीना तरंग के० कल्लोलनी समान लोलाओ के० चंचलछे. अने पिम्मं के० प्रेमछे अर्थात् संसारनेविषे पुत्र पुत्रादिक उपर जे स्नेहछे ते सुमिणय के० स्वप्न समानछे. एवुं जाणीने हे जीव! जे कांइ धर्म कर णी करवी घटे ते कर. पण प्रमाद करीश नहीं. ॥ ४४ ॥

संझराग जलबुब्बुउवमे जीविए जलबिंदुचंचले ॥ जुब्बणेय नइवेगसं निभे पावजीव किमियं न बुज्झसे ॥४५॥ अन्नत्थ सुआ अन्नत्थ गेहिणी परिअणोविअन्नत्थ ॥ भूअबलिव कुडंबं. पिक्खितंतढयकयंतेण ॥४६॥

व्याख्या–हे जीव ! संध्या समयनी रातास. जलबिंदु अने जलना परपोटानी उपमाछे जेने एवुं जीवितव्य चंचलछे. माननी अणी उपर रहु जे जलबिंदु तेना सर खुं आयुष्य अथिरछे. अने यौवनवयछे ते नदीना पूरना वेग समान जाता वार लागे नहीं एवुंछे. अर्थात् क्षणिकछे; ए माटे हे पापकर्मना करनार जीव ! तु केम बुझतो नथी? अर्थात् सर्व क्षणभंगुर जाणतो छतो केम बोधने पामतो नथी ॥ ४५ ॥ हे जीव ! सुअ के० सुत ते पुत्र ते पण अन्नछ के० स्वर्गेगतिमें मरीने पहोंता, अने गेहिणी के० स्त्री ते पण अनछके० अन्यगतिमें मरीने पहोंती. अने परिअणोवि के० परिजन जे दासदासी प्रमुख कुटुंब परिवार पण मरीने [illegible] पहोंता ए कुटुंब मेलो ते हतइतिखेदे कयंतेणके० यमराजाये [illegible] के० भू तना बाकुलानी परे जूदु जूदु विखेरी नाख्युं. अर्थात ए [illegible] जेम बलि बा कुला नाखी दीए तेम सर्व सगा संबंधीने देखतां यमराजा ए कुटुंबने गत्यंतर मां नाखी दीएछे. ए सगा कुटुंब सहु पोषणने माटे [illegible] ॥ ४६ ॥

जीवेण भवे भवे, मिल्लिआइ देहाइ जाइ संसारे ॥ [illegible] दि. कीरइ संखा अणंतेहि ॥४७॥ नयणोदयंपि तासि सागर सलि लाउ बहुयरं होइ ॥ गलिअंरुअमाणीणं माऊणं अन्नमन्नाणं ॥४८॥

व्याख्या–आ जीवे भवो भवनेविषे [illegible] ते [illegible], तेटलुं जो लेखुं करीए तो ते अनंता [illegible] अर्थात् आ

जीवे भवोभवनेविषे अनंता देह धारण करी करीने मूक्याछे ॥ ४७ ॥
के० माताना नेत्रना जे पाणी अर्थात्, आंसु एटले जीवने आ संसार
वनेविषे दुःख पामता माताना नेत्रांसु एटला बधा थयाछे के असत
गर समुद्रना पाणी करता पण ते नेत्रोदक बहुतर के० घणुज थाय अ
ड पण अन्नमन्नाणके० अनेरी अनेरी एटले घणी जाणवी ॥ ४८ ॥

ज नरए नेरइआ डुहाइ पावति घोरणताइ ॥ तत्तोअणत गुणि
निगोअमझेडुह होइ ॥ ४९ ॥ तमिविनिगोअमझे वसिउ रे ज
विविहकम्मवसा ॥ विसहतो तिरकडुह, अणतपुग्गल परावत्ते ॥८०

व्याख्या–जे नरकनेविषे नारकीजीव अनंत घोर बीहामणा दुःख पामे
ते नरकनां दुःखथी पण अनंतगुणा अधिक दुःख जीवने निगोदमां जन्म
रणनां तथा अनंता जीवनुं एक शरीरने तेना दुःख थायछे अर्थात् अनंतदु
निगोदमां नागरवा पडेछे ॥ ४९ ॥ एवी तेज निगोदमाहे अनंतकाय वनस्पतीन
धमांहे रे जीव! विविधप्रकारना कर्मवशे करीने तुं तेनेविषे वस्यो घणा अनंता
नवस्थान लगे त्यां अने त्यां वसता थको तें घणा तीक्ष्ण उत्कृष्ट निगोद
नां दुःखो विशेषकरीने सहन कर्यां, ते अनंत पुद्गलपरावर्त्तसुधी एवा दुःखसह्यां

नीहरिअ कहवितत्तो, पत्तोमणुअत्तणपिरेजीव ॥ तहविजिणवरध
म्मो, पत्तोचितामणिसरिछो ॥८१॥ पत्तेवितमिरेजिअ, कुणमिपमा
यनयतुमचेव ॥ जेणभवधकूवे पुणोविपडिओडुहलहसि ॥ ८२ ॥

व्याख्या–रे जीव! अनुक्रमे ते नरक निगोद माहेथी कहवीके०काइएक महत्कष्टेकरी
ने नीकल्या, अने अविरु०निश्चे मनुष्यना अवतार पाम्या अने त्यां वली चिंतामणी
रत्ना समानशिव सुखदायक एवा वीतरागभाषित जिनधर्म तुं पाम्या ॥८१॥ रे जीव!
ते धर्म पाम्या तो हवे तुं प्रमाद करीश नहीं जे प्रमादकरी पुनरपि एटले फरीथी
भवरूप अंधकूपनेविषे पडीने जन्म जरामरणरूप दुःख पामीश माटे प्रमाद करीशनहीं

उवलद्धो जिणधम्मो, नयअणुचिन्नो पमायदोसेण ॥ हा
जीव अप्पवेरिअ, सुबहुपरउ विसूरिहिसि ॥ ८३ ॥
सोअंति ते वराया, पछा समुवठिअमि मरणमि ॥ ...
पमाय वसेण, ...

व्याख्या-हा इतिखेदे रे जीव! जिनधर्म तुं पाम्यो छतां ते प्रमादना दोषेकरी तें आचर्यो नही. तो तेणे करी हे जीव, तुं पोतेज पोताना आत्मानो वैरी समान थयो. तो आगल जतां तुं परवश थको घणां दुःख सोशीश; ने पश्चाताप करीश; माटे प्रमाद करीश नही. अप्रमादपणे धर्म कर॥ ५३॥ जेणे जिनधर्म संपादन कर्यो नही, अर्थात् जिनधर्म पामीने तेनुं आचरण कर्युं नही, पछी वापडा सोचना-पश्चात्ताप करे, ते रांक अने प्रमादी जीव छेहे मरण आवे थके उतावलमां केइ शोचना करे, अने कोने कहे? एवा पापकर्मी जीवो प्रमाद वशे रह्याथका अंत समये सोचना करेछे. ५४

धी धी धी संसारे, देवो मरिऊण जं तिरी होइ॥ मरिऊण रायराया परिपच्चइ नरय जालाए॥ ५५॥ जाइ अणाहो जीवो, डुमस्स पुप्फं व कम्मवाय हओ॥ धण धन्ना हरणाइं, वर सयण कुडुंब मिल्लेवि ॥५६॥

व्याख्या-धिक्क धिक्क धिक्क! आ संसारनेविषे धिक्कार, जे संसारमांहे देवो सरखा उत्तम जीव मरीने वली तिर्यचनी गतिनेविषे उत्पन्न थायछे, अने राजाउनो राजा, जेने शोल हजार यक्षो सेवा करे, एवो चक्रवर्ति पण नरकनी अग्निज्वालामां हे घणुं पचाए छे, तो विशेषेकरीने ए उपरांत वैराग्यनुं बीजुं कयुं ठेकाणुं छे वारु? ॥ ५५ ॥ जाय परलोकनेविषे अनाथ अशरण जीव, डुमस्स के० वृक्षनां पुष्पनीपरे जेम वायरे प्रेर्युं फूल अनाथ थाय छे, तेम जीव कर्मरूपी वायरे प्रेर्यो थको हणायछे. एटले धन धान्य, आभरण अने, घर सज्जन कुटुंब परिवार ए सहु पडतां मेलीने जीव वापडो कर्मनो प्रेर्यो एकलो जाय छे.॥ ५६ ॥

वसियं गिरी सुवसियं, दरी सुवसियं समुद्द मज्झंमि ॥ रुक्खग्गे सुअ वसिअं, संसारे संसरंतेणं ॥ ५७ ॥ देवोनेरइ उत्तिय, कीड पयं गुत्ति माणसोएसो ॥ रूवस्सीय विरूवो, सुहभागी दुक्खभागीय ॥ ५८ ॥

व्याख्या-ए जीव आ संसारनेविषे संसृति के० जन्म मरण, तेणे करीने अनेक वार गिरिके० पर्वतनेविषे वस्यो, दरी के० पर्वतनी गुफानेविषे अनेकवार वस्यो, समुद्दमज्झंमि के० समुद्रनेविषे अनेकवखत वस्यो, अने रुखग्गे के० वृक्षना अग्र भागे घणा वखत वस्यो. एम संसारमांहे आवागमन करतो वस्यो ॥ ५७ ॥ वली ए जीव क्यारेक देवता थयो, क्यारेक नरकनेविषे वस्यो, क्यारेक कीट थयो, क्यारेक पतंग थयो, क्यारेक मनुष्यनो अवतार धर्यो. वली ए जीव, क्यारेक रू

जीने नगोदनवनेविषे अनंता देह धारण करी करीने मूक्याछे ॥ ४१ ॥ नयणोदयं के॰ माताना नेत्रना जे पाणी अर्थात्, आंसु. एटले जीवने आ संसारमा नवन वनेविषे दुःख पामता माताना नेत्रांसु एटला वधा थयाछे के असंख्याता सा गर समुद्रना पाणी करतां पण ते नेत्रोदक बहुतर के॰ घणुज थाय. अने माता उं पण अन्नमन्नाणके॰ अनेरी अनेरी एटले घणी जाणवी ॥ ४८ ॥

ज नरए नेरइआ डुहाइ पावंति घोरणंताइ ॥ तत्तोअणंत गुणिअ निगोअमज्जेडुहं होइ ॥ ४९ ॥ तमिविनिगोअमज्जे वसिओ रे जीव विविहकम्मवसा ॥ विसहंतो तिरकडुहं, अणंतपुग्गल परावत्ते ॥५०॥

व्याख्या—जे नरकनेविषे नारकीजीव अनंत घोर बीहामणां दुःख पामे छे, ते नरकना दुःखथी पण अनंतगुणा अधिक दुःख जीवने निगोदमां जन्मम रणना तथा अनंता जीवनुं एक शरीरछे तेना दुःख थायछे अर्थात् अनंतदुःख निगोदमा नोगववा पडेछे ॥ ४९ ॥ एवी तेज निगोदमांहे अनंतकाय वनस्पतीना घरमांहे रे जीव! विविधप्रकारना कर्मवशे करीने तुं तेनेविषे वस्यो घणा अनंता नंतकाल लगे रह्यो अने त्यां वसतो थको तें घणा तीक्ष्ण अधिक कठण निगोद नां दुःखो विशेषेकरीने सहन कर्या, ते अनंत पुद्गलपरावर्तसुधी एवा दुःखसह्यां

नीहरिअ कहवितत्तो, पत्तोमणुअत्तणंपिरेजीव ॥ तत्थविजिणवरध म्मो, पत्तोचिंतामणिसरिच्छो ॥५१॥ पत्तेवितम्मिरेजिअ, कुणसिपमा यतयंतुमचेव ॥ जेणनवधकूवे पुणोविपडिओडुहंलहसि ॥ ५२ ॥

व्याख्या—रे जीव! अनुक्रमे ते नरक निगोद माहेथी कहवीके॰काइएक महत्कष्टे करी ने नीकल्यो, अने अपिके॰निश्चे मनुष्यनो अवतार पाम्यो अने त्यां वली चिंतामणी सरखो मनोवांछित सुखदायक एवो वीतरागनाषित जिनधर्म तुं पाम्या ॥५१॥रे जीव! ते धर्म पाम्यो तो हवे तुं प्रमाद करीश नहीं जे प्रमादेकरी पुनरपि एटले फरीथी नवरूप अंधकूपनेविषे पडीने जन्म जरामरणरूप दुःख पामीश माटे प्रमाद करीशनही

उवलद्धो जिणधम्मो, नयअणुचिन्नो पमायदोसेण ॥ हा जीव अप्पवेरिअ, सुबहुपरत्तं विसूरिहिसि ॥ ५३ ॥ सोअंति ते वराया, पच्छा समुवट्ठिअम्मि मरणम्मि ॥ पाव पमाय वसेण, नसंचिओ जेहिं जिणधम्मो ॥ ५४ ॥

व्याख्या–हा इतिखेदे रे जीव! जिनधर्म तुं पाम्यो छतां ते प्रमादना दोषेकरी तें आचर्यो नही. तो तेणे करी हे जीव, तुं पोतेज पोताना आत्मानो वैरी समान थयो. तो आगल जतां तुं परवश थको घणां दुःख सोशीश; ने पश्चाताप करीश; माटे प्रमाद करीश नही. अप्रमादपणे धर्म कर॥५३॥जेउए जिनधर्म संपादन कर्यो नही, अर्थात् जिनधर्म पामीने तेनुं आचरण कर्युं नही, पछी बापडा सोचना–पश्चात्ताप करे, ते रांक अने प्रमादी जीव छेडे मरण आवे थके उतावलमां केइ शोचना करे, अने कोने कहे? एवा पापकर्मी जीवो प्रमाद वशे रह्याथका अंत समये सोचना करेछे. ५४

धी धी धी संसारे, देवो मरिऊण जं तिरी होइ॥ मरिऊण रायराया परिपच्चइ नरय जालाए॥ ५५॥ जाइ अणाहो जीवो, दुमस्स पुप्फं व कम्मवाय हऊ॥धण धन्ना हरणाई, वर सयण कुडुंब मिल्लेवि॥५६॥

व्याख्या–धिक्क धिक्क धिक्क! आ संसारनेविषे धिक्कार, जे संसारमांहे देवो सरखा उत्तम जीव मरीने वली तिर्यंचनी गतिनेविषे उत्पन्न थायछे, अने राजाउनो राजा, जेने शोल हजार यक्षो सेवा करे, एवो चक्रवर्ति पण नरकनी अग्निज्वालामांहे घणुं पचाए छे, तो विशेषेकरीने ए उपरांत वैराग्यनुं बीजुं कयुं ठेकाणुं छे वारु? ॥ ५५ ॥ जाय परलोकनेविषे अनाथ अशरण जीव, दुमस्स के० वृक्षनां पुष्पनीपरे जेम वायरे प्रेर्युं फूल अनाथ थाय छे, तेम जीव कर्मरूपी वायरे प्रेर्यो थको हणायछे. एटले धन धान्य, आभरण अने, वर सज्जन कुटुंब परिवार ए सहु पडतां मेलीने जीव बापडो कर्मनो प्रेर्यो एकलो जाय छे.॥ ५६ ॥

वसियं गिरी सुवसियं, दरी सुवसियं समुद्द मज्झंमि ॥ रुक्खग्गे मुञ्च वसिअं, संसारे संसरंतेणं ॥ ५७ ॥ देवोनेरइ उत्तिय, कीड पयं गुत्ति माणसोएसो॥ रूवस्सीय विरूवो, सुहभागी दुक्खभागीय ॥ ५८ ॥

व्याख्या–ए जीव आ संसारनेविषे संसृति के० जन्म मरण, तेणे करीने अनेक वार गिरिके० पर्वतनेविषे वस्यो, दरी के० पर्वतनी गुफानेविषे अनेकवार वस्यो, समुद्दमज्झंमि के० समुद्रनेविषे अनेकवखत वस्यो, अने रुक्खग्गे के० वृक्षना अग्र भागे घणा वखत वस्यो. एम संसारमांहे आवागमन करतो वस्यो ॥ ५७ ॥ वली ए जीव क्यारेक देवता थयो, क्यारेक नरकनेविषे वस्यो, क्यारेक कीट थयो, क्यारेक पतंग थयो, क्यारेक मनुष्यनो अवतार धर्यो. वली ए जीव, क्यारेक रू

पस्वी थयो, क्यारेक कुरूपी थयो, क्यारेक सुखनो जागी थयो अने क्यारेक डुःख नो विजागी पण थयो ॥ ५७ ॥

राजत्तिय डुम गुत्तिअ, एससवा गुत्तिए सवे अविऊ ॥ सा
मी दासो पुज्जो, खलत्ति अधणो धणवइति ॥ ५९ ॥
नवि इह कोइ निअमो, सकम्मविणिविठ सरिस कय चि
ठो ॥ अन्नुन्न रूववेसो, नडुव परिअत्तए जीवो ॥ ६० ॥

व्याख्या–वली ए जीव क्यारेक चक्रवर्त्ति राजा पण थयो, एजजीव क्यारेक डुम के० राक थयो, एज क्यारेक चामाल थयो एज क्यारेक वेदनो जाण एवो थयो, एज क्यारेक स्वामि के० सर्वनो मुख्य एवो थयो, अने क्यारेक बीजाउनो दास थयो, एज जीव क्यारेक सर्व जगतने पूज्य के० पूजन करवा योग्य थयो, अने खलुर तिनिश्चे क्यारेक डुष्ट डुर्जन थयो, एज क्यारेक खलत्ति के० खल एटले दूर्जन थयो, एज जीव क्यारेक अधणो के० निर्धन थयो अने एज जीव क्यारेक या सता रनेविषे धणवइ के० धनवंत पण थयो ॥५९॥ एरीते कोइपण एवो निश्चय नियम नथी. के ए जीव सदा सरखु रूप अने सरखो वेषधारण करे जेवा पोतानां कर्म स्थाप्यांछे एटले जेवी तरेहना कर्म उपार्ज्यां ते प्रमाणे चेष्टा करेछे, अने नटुवानी परे अन्नुन्न के० अनेरां अनेरां रूप अने वेष परावर्त्तछे ॥६०॥

नरए सुवेअणाउ, अणोवमाउ असाअ बहुलाउ ॥
रेजीव तए पत्ता, अणंतखुत्तो बहुविहाउ ॥ ६१ ॥
देवत्ते मणुअत्ते, पराभिउगत्तण उवगएण ॥ जी
सणडुहं बहुविहं, अणंतखुत्तो समणुभूअ ॥ ६२ ॥

व्याख्या–नरकनेविषे अनोपम एटले नथी जेने कोइ उपमा के० बराबरी एवी अनेक वेदनाउ जोगवीउं अशाता वेदनीज नरकमाहे घणी छे एवी या संसारनेविषे अनेक अशाताउं जोगवीउं रे जीव एम बहुविहो के० अनेक प्रकारे अणंतखुत्तोके० अनंति वार पाम्यो छे ॥६१॥ हे जीव तु देवतामाहे अने मनुष्यमाहे पराभियोगके० पारका अभियोगिक एटले चाकरपणाए उपन्यो थको बहु प्रकारनां जीषणके० जयकर एवा छेदन जेदन ताडनादिक डुःखोते अनंतीवार अनुजव्या॥६२

तिरियगई अणुपत्तो, भीम महावेअणा अणेगविहा ॥
जम्ममरणरहट्टे, अणंतखुत्तो परिब्भमिउ ॥ ६३ ॥
जावंति केवि दुक्खा, सारीरा माणसाव संसारे ॥
पत्तो अणंतखुत्तो, जीवो संसारकंतारे ॥ ६४ ॥

व्याख्या—हेजीव, तुं तिर्यंचनी गतिने अनुक्रमे पाम्यो थको, महोटी भयंकर एवी अनेक प्रकारनी वेदनाउ तें सहन करी. त्यां जन्म मरणरूप एवा आ संसाररूपी कूपना अरहटनेविषे अनंतिवार तुं अतिशयपणे परिभ्रम्यो. ॥ ६३ ॥ एम जे कांइ दुःख आ संसारनेविषे जात जातनां कहेवाय छे, एटले केटलांक मनसंबंधी अने केटलांक शरीरसंबंधी—इत्यादिक जे जे दुःख छे ते ते आ संसाररूपी कंतार के० अरण्यने विषे अनंतिवार जीव पाम्यो छे. ॥ ६४ ॥

तण्हा अणंतखुत्तो संसारे तारिसी तुमं आसी॥जं पसमेउं सवो दही ण मुदयं न तीरिज्जा ॥६५॥ आसी अणंतखुत्तो संसारे ते छुहा वि तारिसया ॥ जं पसमेउं सवो, पुग्गल काऊवि न तरिज्जा ॥ ६६ ॥

व्याख्या—हेजीव, आ संसारनेविषे जेवी तण्हाके० तृषा तारिसीके० तादृसी एटले तेवी तुमंके० तने अणंतखुतोके० अनंतिवार आसीके० होती हवी, जपसमेउंसवोके० जे तृषाने सघलाए समुद्रोनुं उदक उपशमाववाने समर्थ न थाय. ॥ ६५ ॥ तेमज हे जीव ! आ संसारनेविषे अनंत क्षुधा तने थती हवी. जे क्षुधाने उपशमाववाने सघलाए पुद्गलना समूहपण समर्थ न थाय. ॥ ६६ ॥

काऊण अणेगाइं, जम्म मरण परिअट्टण सयाइं ॥ दुक्खेण माणुसत्तं, जइ लहइ जहच्छियं जीवो ॥ ६७ ॥
तं तह दुल्लह लंभं, विज्जुलया चंचलंच मणुयत्तं ॥ धम्मंमि जोवि सीयइ, सो काउरिसो न सप्पुरिसो ॥ ६८ ॥

व्याख्या—आ संसारनेविषे जीव, जन्ममरणनां जे परावर्त्तन एटले वारवार उपजवुं अने मरवुं तेना अनेक शेंकडा, ते प्रत्ये काऊणके० करीने अर्थात् जन्ममरणनां अनंतां दुःख भोगवीने पछी दुक्खेणके० दुःखे करीने जइ के० जो जहिछियंके० अकामनिर्जराए करीने जीवोके० जीव ते माणुसत्तंके० मनुष्यपणुं लहइ के० पामे. ॥६७॥ ते दुर्लभ अने विद्युल्लता के० विजलीना जेवुं चंचलके० अनित्य

पसी थयो, क्यारेक कुरूपी थयो, क्यारेक सुखनो नागी थयो अने क्यारेक दुःख नो विनागी पण थयो ॥ ५८ ॥

> रायत्तिय दुम गुत्तिअ, एससवा गुत्तिए सवे अविऊ ॥ सा
> मी दासो पुज्जो, खलत्ति अधणो धणवइत्ति ॥ ५९ ॥
> नवि इत्त कोइ निअमो, सकम्मविणिविठ्ठ सरिस कय चि
> ठो ॥ अन्नुन्न रूववेसो, नडुव परिअत्तए जीवो ॥ ६० ॥

व्याख्या—वली ए जीव क्यारेक चक्रवर्ति राजा पण थयो, एजजीव क्यारेक द्रुम के० राक थयो, एज क्यारेक चामाल थयो, एज क्यारेक वेदनो जाण एवो थयो, एज क्यारेक स्वामि के० सर्वनो मुख्य एवो थयो, अने क्यारेक बीजाउनो दास थयो, एज जीव क्यारेक सर्व जगत्ने पूज्य के० पूजन करवा योग्य थयो, अने खलुइ तिनिश्चे क्यारेक दुष्ट दुर्जन थयो, एज क्यारेक खलत्ति के० खल एटले दूर्जन थयो, एज जीव क्यारेक अधणो के० निर्धन थयो अने एज जीव क्यारेक आ संसारनेविषे धणवइ के० धनवत पण थयो ॥५९॥ एरीते कोइपण एवो निश्चय नियम नथी, के ए जीव सदा सरखु रुप अने सरखो वेषधारण करे जेवां पोतानां कर्म स्थाप्यांछे एटले जेवी तरेहना कर्म उपार्ज्यां ते प्रमाणे चेष्टा करेछे, अने नटुवानी परे अन्नुन्न के० अनेरां अनेरां रूप अने वेष परावर्त्तेछे ॥६०॥

> नरए सुवेअणाउ, अणोवमाउ असाअ बहुलाउ ॥
> रेजीव तए पत्ता, अणतखुत्तो बहुविहाउ ॥ ६१ ॥
> देवत्ते मणुअत्ते, पराभिउगत्तण उवगएण ॥ भी
> सणदुहं बहुविह, अणतखुत्तो समणुभूअ ॥ ६२ ॥

व्याख्या—नरकनेविषे अनोपम एटले नथी जेने कोइ उपमा के० बराबरी एवी अनेक वेदनाउ भोगवीउ अशाता वेदनीज नरकमाहे घणी छे एवी आ संसारनेविषे अनेक अशाताउ भोगवीउ रे जीव एम बहुविहो के० अनेकप्रकारे अणतखुत्तोके० अनति वार पाम्यो छे ॥६१॥ हे जीव तु देवतामांहे अने मनुष्यमांहे पराभियोगके० पारका आभियोगिक एटले चाकरपणाए उपन्यो थको बहु प्रकारनां भीषणके० भयंकर एवा छेदन भेदन ताडनादिक दुःखोतें अनतीवार अनुभव्यां॥६२

तिरियगइं अणुपत्तो, नीम महावेअणा अणेगविहा ॥
जम्ममरणरहट्टे, अणंतखुत्तो परिन्नमिउ ॥ ६३ ॥
जावंति केवि डुक्का, सारीरा माणसाव संसारे ॥
पत्तो अणंतखुत्तो, जीवो संसारकंतारे ॥ ६४ ॥

व्याख्या—हेजीव, तुं तिर्यंचनी गतिने अनुक्रमे पाम्यो थको, महोटी नयंकर एवी अनेक प्रकारनी वेदनाउ तें सहन करी, त्यां जन्म मरणरूप एवा आ संसाररूपी कूपना अरहटनेविषे अनंतिवार तुं अतिशयपणे परिन्नम्यो. ॥ ६३ ॥ एम जे कांइ डुःख आ संसारनेविषे जात जातनां कहेवाय छे, एटले केटलांक मनसंबंधी अने केटलांक शरीरसंबंधी—इत्यादिक जे जे डुःख छे ते ते आ संसाररूपी कंतार के० अरण्यने विषे अनंतिवार जीव पाम्यो छे. ॥ ६४ ॥

तण्हा अणंतखुत्तो संसारे तारिसी तुमं आसी॥जं पसमेउं सवो उदही
ए मुदयं न तीरिज्जा ॥६५॥ आसी अणंतखुत्तो संसारे ते छुहा वि
तारिसया ॥ जं पसमेउं सवो, पुग्गल काऊवि न तरिज्जा ॥ ६६ ॥

व्याख्या—हेजीव, आ संसारनेविषे जेवी तण्हाके० तृष्णा तारिसीके० तादर्सी एटले तेवी तुमंके० तने अणंतखुतोके० अनंतिवार आसीके० होती हवी, जंपसमेउंसवोके० जे तृषाने सघलाए समुड्रोनुं उदक उपशमाववाने समर्थ न थाय. ॥ ६५ ॥ तेमज हे जीव! आ संसारनेविषे अनंत क्षुधा तने थती हवी. जे क्षुधाने उपशमाववाने सघलाए पुजलना समूहपण समर्थ न थाय. ॥ ६६ ॥

काऊण अणेगाइं, जम्म मरण परिअट्टण सयाइं ॥ डु
स्केण माणुसत्तं, जइ लहइ जहिछियं जीवो ॥ ६७ ॥
तं तह डुल्लह लंनं, विज्जुलया चंचलंच मणुयत्तं ॥ धम्मं
मि जोवि सीयइ, सो काउरिसो न सप्पुरिसो ॥ ६८ ॥

व्याख्या—आ संसारनेविषे जीव, जन्ममरणनां जे परावर्त्तन एटले वारवार उपजवुं अने मरवुं तेना अनेक शइकडा, ते प्रत्ये काऊणके० करीने अर्थात् जन्ममरणनां अनंतां डुःख नोगवीने पछी डुस्केणके० डुःखे करीने जइ के० जो जहिछियंके० यकामनिर्जराए करीने जीवोके० जीव ते माणुसत्तंके० मनुष्यपणु लहइके० पामे. ॥६७॥ ते डुर्लन अने विद्युलता के० विजलीना जेवुं चंचलंके० अस्थि

णीने हे गौतम! प्रमाद न करवो. निरंतर धर्मनेविषे उद्यम करवो एम भगवान कहेछे.

संबुज्झह किन बुज्झहा, संबोही खलु पेच्च डुल्लहा ॥ नोहु
वणमंतिराइउ, नो सुलहं पुणरावि जीवियं ॥ ७३ ॥
डहरा वुड्ढाय पासह, गब्भठा वि चयंति माणवा ॥
सेणे जह वट्टयं हरे, एवं आउक्खयं मि तुट्टइ ॥ ७४ ॥

व्याख्या–अहो भव्यजीवो! तमे संबुज्झहके० बुझो. सम्यक्त्व रत्न पामो. केम प्रतिबोध पामता नथी? केमके परभवनेविषे बोधिबीज तेहुके० निश्चये दोहली छे. वारंवार समकित न पामीए. जे रात्री अने दिवस गयां ते फरीने न आवे. वली वारंवार संयम चारित्र सहित जीवितव्य तेपण पामवुं सुलभ नथी. तेमाटे धर्म पामी प्रमाद न करो. ॥७३॥ हे जीव! तुं जो तो खरो के, डहराके० बालको तथा वृद्धो अने गर्भने विषे रह्या एवा जे मनुष्यो ते पण चवे एटले मरण पामे, त्यां कशुं बल चाले नही. सिंचाणो जेम वट्टयंके० वर्तक एटले चिडकली तथा तेतरने हेरीलेइ जाय तेम आयुष्यनो अंत आवे थके आयुष्यपण तूटे. त्यारे जीव मरण पामे. ॥७४॥

तिहुयण जणं मरंतं, दठूण नियंति जे न अप्पाणं ॥ विरमंति न पावा
उ ॥ धिद्धी धिठतणं ताणं ॥ ७५ ॥ मामाजं पह बहुअं, जे बद्धा चिक्क
णेहिं कम्मेहिं ॥ सबेसि तेसि जायइ॥ हिउवएसो महादोसो ॥ ७६ ॥

व्याख्या–स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल–ए तिहुयण के० त्रणे लोकना जनने मरता देखीने पण जे मनुष्य पोताना आत्माने नथी संवरता, अने पाप कर्मथी विरमता के० उसरता नथी, तेना धीठाइपणाने धिक्क धिक्क छे. तेना जेवो कोइ मूर्ख नथी. ॥ ७५ ॥ इहां शिष्य गुरुने कहे छे के. मामा जंपह बहुअं के० घणो उपदेश न आपो; अर्थात् घणुं घणुं न बोलो. केमके जे भव्यजीवो, चीकणा के० कठण एवां जे आठ कर्मो तेमना, बधने करी बंधायाछे, ते सघला जीवोने, हितकारी एवो जे उपदेश अर्थात् धर्मना मार्गनो उपदेश, ते महोटो दोषरूप थइ परिणमे छे. ॥

कुणसि ममत्तं धण सयण विहव पमुहे सुणंत डुक्केसु ॥ सिढिलेसि
आयरंपुण, अणंत सुक्कं मिमुक्कंमि ॥७७॥ संसारोडहहेउ, डुक्कफ
लो डुसह डुक्करूवोय॥नचयंति तंपि जीवा, अइबद्धा नेह निअलेहिं ७८

व्याख्या–अणंतडुक्केसु के० अनंतु छे डुःख जेनेविषे एवा जे धन के० द्रव्य

॰ एवु मनुष्यपणु पामीने जे जिनधर्मनेविषे सीदाय, प्रमादकरे, ते कातरीसो के॰ कापुरुष एटले–कुत्सित पुरुष जाणवो पण,ते न सपुरिसोके॰सत्–उत्तम पुरुष नहीं.

माणुस्सजम्मे तडिलद्धएणं॥ जिणदधम्मो न कउय जेणं॥
तुट्टे गुणे जह धाणुक्क एणं॥ हत्था मलेवाय अवस्स तेण॥६९॥
रेजीव निसुणि चचल सहाव॥ मिल्लेविणुसयल विबज्जाव॥
नवभेय परिग्गह विविहजाल॥ससारि अछि सहु इदजाल॥७०॥

व्याख्या–मनुष्यनो जन्म ते समुद्रना तटसमान लाध्यो अर्थात् नवतसुद्रना तटसमान आ मनुष्यादेह पाम्यो छता जे जीवे जिनेश्वर श्रीवीतरागनो धर्म न कर्यो अर्थात् न आचर्यो, ते जीवने जेम तूटेली पणछे करीने धनुष्य धरनार पुरुषने पछी अवश्य हाथ घसवा पडे, तेम परवश थको पोतानु चितव्यु काम न साधे तो अवश्य हाथ घसवा पडे एटले अते पश्चात्ताप करे ॥६९॥ अरे चचल स्वनाववत जीव! तु निसुणिके॰ साजल के आ, ससारनेविषे समस्त जे आत्मगुण थी बाह्यनाव, ते नवप्रकारना जे धनधान्यादिक परिग्रह ते रूप जे विविध प्रकार ना जाल ते बधनसमानछे ए सर्व इद्रजाल समान देखता मनोहर छे, पण परमा र्थे जोता असारछे, ते प्रत्ये मिल्लेविके॰त्याग करीने तु आत्म धर्मने आदर ॥७०॥

पियपुत्त मित्त घर घरणि जाइ॥ इह लोइय सव नियं सुह सहाय॥
नविअछि कोइ तुह सरणि मुक्क॥ इक्कलतु सहसि तिरि निरयदु
रक॥ ७१ ॥ कुसग्गे जह उसबिंडुए थोव चिठइ लबमाणए॥
एवं मणुआण जीवियं समय गोयम मा पमायए॥ ७२॥

व्याख्या–रे मूर्खजीव! प्रियके॰वल्लन एवा पुत्र, मित्र अने स्वजनादिक तथा घर के॰महोटा महेल, तथा घरणिके॰स्त्रीप्रमुख अने जाइके॰ ज्याति गोत्र प्रमुखाजाति–ए सवलाए इहलोएके॰ आ लोकनेविषे नियके॰ पोताना सुखना सहायके॰सहा इ ते साधनाराछे एटले पोताना सुखने इछनाराछे, पण कोइ तारु शरणहेतु नथी. एटले तने दु ख आवशे तेवारे ते दु खथी तने कोइ राखशे नही अने तु एकलो ज तिर्यच तथा नरकादिकना दु ख सहन करीश ॥ ७१ ॥ जेम कुसग्गे के॰ मा नना अग्रनागनेविषे उसबिंदु के॰ झाकलनु टीपु जे लबायमान अने वायरे हा लतु एवु थोडो काल रहे, ए प्रमाणे मनुष्यनु जीवित के॰ आयुष्य अस्थिर जा

णीने हे गौतम! प्रमाद न करवो. निरंतर धर्मनेविषे उद्यम करवो एम जगवान कहेछे.

संबुद्यह किंन बुद्यहा, संबोही खलु पेच्च डुल्लहा ॥ नोहुं
वणमंतिराइउ, नो सुलहं पुणरावि जीवियं ॥ ७३ ॥
डहरा वुढाय पासह, गप्नठा वि चयंति माणवा ॥
सेणे जह वट्टयं हरे, एवं आउरकयं मि तुट्टइ ॥ ७४ ॥

व्याख्या–अहो जव्यजीवो! तमे संबुज्झहके० बुजो. सम्यक्त्व रत्न पामो. केम प्रति बोध पामता नथी? केमके परजवनेविषे बोधिबीज तेहुके० निश्चये दोहलो छे. वारंवार समकित न पामीए. जे रात्री अने दिवस गयां ते फरीने न आवे. वली वारंवार संयम चारित्र सहित जीवितव्य तेपण पामवुं सुलज नथी. तेमाटे धर्म पामी प्रमाद न करो. ॥७३॥ हे जीव! तुं जो तो खरो के, डहराके० बालको तथा वृद्धो अने गर्जने विषे रह्या एवा जे मनुष्यो ते पण चवे एटले मरण पामे, त्यां कशुं वल चाले नही. सिंचाणो जेम वट्टयंके० वर्तक एटले चिमकली तथा तेतरने हेरीजेइ जाय तेम आयुष्यनो अंत आवे थके आयुष्यपण तूटे. त्यारे जीव मरण पामे. ॥७४॥

तिहुयण जणं मरंतं, दठूण नियंति जे न अप्पाणं ॥ विरमंति न पावा
उ ॥ धिद्धी धिठ्ठतणं ताणं ॥ ७५ ॥ मामाजं पह बहुअं, जे बद्धा चिक्क
णेहिं कम्मेहि ॥ सव्वेसि तेसि जायइ ॥ हिउवएसो महादोसो ॥ ७६ ॥

व्याख्या–स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल–ए तिहुयण के० त्रणे लोकना जनने मरता देखीने पण जे मनुष्य पोताना आत्माने नथी संवरता, अने पाप कर्मथी विरमता के० उसरता नथी, तेना धीठाइपणाने धिक्क धिक्क छे. तेना जेवो कोइ मूर्ख नथी. ॥ ७५ ॥ इहां शिष्य गुरुने कहे छे के. मामा जपह बहुअं के० घणो उपदेश न आपो; अर्थात् घणुं घणुं न बोलो. केमके जे जव्यजीवो, चीकणा के० कठण एवां जे आठ कर्मो तेमना, बधने करी बंधायाछे, ते सघला जीवोने, हितकारी एवो जे उपदेश अर्थात् धर्मना मार्गनो उपदेश, ते महोटो दोषरूप थइ परिणमे छे. ॥

कुणसि ममत्तं धण सयण विहव पमुहे सुणंत डुक्खेसु ॥ सिढिलेसि
आयरंपुण, अणंत सुक्खं मिमुक्खंमि ॥७७॥ संसारोडहहेउ, डुक्खफ
लो डुसह डुक्खरूवोय॥नचयंति तंपि जीवा, अइबद्धा नेह निअलेहिं ७८

व्याख्या–अणंतडुक्खेसु के० अनंत छे डुःख जेनेविषे एवा जे धन के० द्रव्य

अने सयण के० स्वजन ते परिवार अने वैनव प्रमुखनेविषे तु ममता धारण करो छो, ते सर्व केवां छे? तो के पुण के० वली अनतसुख ज्या छे एवा मोहनेविषे जे जीवना आदर के० उद्यम ते सर्वने शिथिल करे एवां छे ॥७७॥ आ चारे गतिरूप ससार छे ते दुःखनो हेतु के० कारणरूप छे फल जे थकी एवु छे, अने ए ससार दुःखे करी सहन थाय एवो दुःखमय छे. अर्थात् केवल दुःखस्वरूप छे; तोपण अत्यत स्नेहरूप साकले बधायला एवा जीवो आ ससारने छांमता नथी ॥ ७८॥

नियकम्म पवणचलिउ,जीवो ससारकाणणे घोरे॥ काकाविडबणाउ न पावए दुसहदुक्खाउ ॥७९॥ सिसिरमि सीयलानिल ॥ लहरि सह स्सेहिं भिन्न घणदेहो॥तिरियत्तणमि रन्ने,अणतसो निहणमणुपत्तो॥८०

व्याख्या—पोताना कर्मरूपी वायरे चलाव्यो एवो जीव, घोर के० नयंकर ससार रूप एवा काननेके० वननेविषे काकाके० कोण कोण विटबना नथी पामतो? अपितु सर्व विटबना दुःसह के० दुःखे करीने सहन थाय एवु छे दुःख जेनेविषे एवी वि टबनाउ पामेल छे ॥ ७९ ॥ सिसिरके०शीतकाल सबंधी जे सीयलानिलके० अत्यत शीतल एवा पवननी लहरि ते सहस्सेहि के० सहस्रोए करीने घनदेहो के० घणुं दृढ एवु जे निर्यच सबधीनु शरीर, ते भिन्न के० भेदाणु छे एवो आ जीव तु रन्न के० अटवीमाहे अनतीवार दुःख जोगवी निहण के० निधन एटले मरण तेने निर्यचना नवनेविषे पाम्यो ते सनार ॥ ८० ॥

गिम्मायवसतत्तो, रन्नेछुहिउ पिवासिउ बहुसो ॥ सपत्तोतिरियभवे मरणदुह बहु विसूरतो ॥ ८१ ॥ वासासुरन्नमज्झे, गिरिनिझरणोदगेहिवझतो ॥ सीयानिल डज्झविउ मउमितिरियत्तणेबहुसो ॥८२॥

व्याख्या—वली निर्यचना नवे रन्न के० अटवीनेविषे गिम्मायव के० ग्रीष्मऋतुना तापे करीने सतत्तके० तप्यो थको एवा आ जीव, छुहिउ के० नूख्यो अने पिवासिउ के० तरस्यो एवो होतो थको बहुसोके० घणीवार मरणना दुःखने अनुभवतो के० पश्चात्ताप करतो थको पाम्यो ॥ ८१ ॥ वली निर्यचना भवमां आ जीव वर्षाकालमां अटवी अने पर्वतोनां निझरणोनां जल पाणी तेणे करी वहनारके० बूडतो थको पीडा पामतो थको, अने शीतल एवा पवन करी दाझ्यो थको घणीवार मरण पाम्यो छे ॥ ८२ ॥

एवं तिरियजवेसु ॥ कीसंतो दुक्कसयसहस्सेहिं ॥ वसिउ अणंत खुत्तो, जीवो जीसण जवारसे ॥८३॥ डुठ्ठकम्मपलया, निले रि उजीसणंमि जवरसे॥हिंमंतो नरएसुवि, अणंत सोजीवपत्तोसि॥८४॥

व्याख्या–एवीरीते जीव! जीषण के० जयंकर एवा जवारसेके० आ जवरूप अ रण्यनेविषे तिर्यचना अवतारे क्लेश पामतो थको अने डुःखना शत, सहस्र, ल क्ष कोडि जोगवतो थको अनंत काल वस्यो. ॥८३॥ हे जीव तुं, डुठ्ठकम्मपलया निले–डुष्टके० आकरां एवां जे आठकर्म ते रुपजे प्रलयकालनो पवन.तेणे करीने प्रेर्यो थको जीसणंमि के० जयंकर एवा जवरसेके० जवरूपी अरण्यनेविषे हींमतो थको नरकनेविषे पण जमतो थको पूर्वोक्त डुःखने अनंतीवार पत्तोके०पाम्यो छे. ॥८४॥

सत्त सुनरय महीसु, वज्जानल दाहसीय वेयणासु ॥वसिउ अणंतखु त्तो. विलवंतो करुणसद्देहिं ॥८५॥ पिय माय सयण रहिउ. डुरंतवाही हिंपी डिउ बहुसो ॥ मणुयजवे निस्सारो, विलविउ किंन तं सरसि॥८६॥

व्याख्या–सत्तसुनरयमहीसुं के० साते नरक पृथ्वीनेविषे वज्जानल के० वज्जस मान कठण एवो जे अग्नि, तेनो दाह के० ताप, तेना जेवोज ताप ज्यां, तथा नि य के० शीत अर्थात् परमटाढ–तेनी वेदनाछे जेनेविषे, त्यां रे जीव तुं, करुण स द्देहिं के० दयामणा सादे करीने विलवंतो के० विलाप करतो थको अनंतखु त्तो के० अनंतीवार वसिउ के० रह्यो. ॥ ८५ ॥ हे जीव ! पिता माता अने स जन–एउंए रहित एटले एकलो उतो, वली डुरंतव्याधि के० डुःखे करीने अंत एटले छेडो जेनो एवी मोटी जे पीडा, तेणे करी तुं अनंतीवार पीडा पाम्यो थको निस्सार एवा मनुष्यना जवनेविषे पण तुं विलाप करतो हवो; ते तुं शुं नथी संजारतो?

पवणुव्व गयणुमग्गो अलक्खिउ जमइ जववणे जीवो॥ ठाण ठाणं मि समु, ज्जिकण धणसयणसंघाए ॥८७॥ विहिकंता असयं, जम्म जराम रण तिक्खकुंतोहिं ॥ डुहमणु हवंति घोरं, संसारे संसरंतिजिया ॥८८॥

व्याख्या–ए जीव, आकाशनेविषे वायुनी जेम आ जवरूप अरण्यनेविषे ठाम ठाम धन के० द्रव्य, स्वजन के० कुटुंबनो समूह तेउने ठांमीने जमेछे. ॥ ८७ ॥ ए जीव, जन्म, वृद्धपण, अने मरण–ए रूप तिक्खकुंत के० तीक्ष्ण जाले करी वा

रवार विंधायछे, घोर के० नयकर एवी अशाता वेदनीय अनुनवेछे, अने घ
तिरूप ससारनेविषे ससरतिके० भ्रमण करेछे ॥ ८८ ॥
तहवि खणंपि कयाविहु॥ अन्नाण नुयग मकियाजीवा॥ ससारचार
गाउ,नयउ विज्जति कईयावि ॥ ८९॥ कीलसि कियत वेल,सरीर वावी
सुजछ पइसमयं ॥ कालरहट्ट घडीहिं, सो सिज्जइजीवियन्नोहं ॥९०॥
व्याख्या–निश्चये अज्ञानरूपी नुयंग के० सापे मखेला एवा जे मूर्ख ससारी जीवो,ते
ससाररूपी चारगाके०बधीखाना थकी तहविके० तोपण कयाविहुके० कोइवारे खण
पिके० एक क्षणमात्र पण उद्वेग पामता नथी, अने उसरता नथी ॥८९॥ रे जीव, स
य समयनेविषे कालरूप अरहटनी घमिए करी आयुष्यरूपी जलनो समूह जेमांथी शो
षायछे, एवी आ शरीररूपी वापिकानेविषे तु केटलाकाल केलीके० रमत करीश ॥९०॥
रेजीव वुज्जमामुज्ज ॥ मा पमाय करे सिरेपाव ॥ किपरलोए गुरु डुक्ख
नायण होहिसि अयाण ॥ ९१॥ वुज्जसु रे जीवतुम मामुज्ज सुजिणमय
मिनाऊण ॥ जम्मा पुणरवि एसा, सामग्गी डुल्लहा जीव ॥ ९२॥
व्याख्या–रे अजाणजीव' रे पाप कर्मना करनार' तु प्रतिवोध पाम, मुझाइश नहीं
अने पांचप्रकारना प्रमाद करीश नहीं,कारण,परलोकनेविषे गुरुके० मोहोटां एवा डुख
तु नाजन के०ठाम तु थइश नही ए माटे रे मूर्ख' तु चेत ॥९१॥ रे जीव तु प्रतिवोध
पाम, ससारनेविषे मुफाइ मरीश नहीं, जिनधर्मनेविषे तत्व जाणीने ते आचरण
कर कारण, हे नव्य जीव' पुनरपि आवी सामग्री, जे वारवार मनुष्यपणु,आर्य
क्षेत्र, सिद्धांत श्रवण अने श्रद्धान करवु एवा चार अगनी प्राप्ती मलवी डुर्लनछे ९२
डुलहोपुण जिणधम्मो, तुमपमायायरोसुहेसीय॥ डुसह च नरय
डुक्खं कहहोहिसि तनयाणामो ॥९३॥ अथिरेण थिरोसमलेण नि
म्मलो परवसेण साहीणो॥देहेणजइ विढप्पइ धम्मोता किं न पज्जत्त९४
व्याख्या–हे जीव' वली श्रीवीतरागनो परुप्यो जिनधर्म महाडुर्लनछे, अने तु
प्रमादने आदरतो थको सुखनेवांछेछे अने नरकनां, डुखतो डुखे करी सहन
थाय एवां छे तो ताहरी कथनविष्यति के० शीगती थशे ? ते अमे जाणता नथी
॥ अथिर एवा शरीरे करी थिर एवो धर्म आचरीए, मलसहित एवा शरी
रे जैनधर्म स्वाधीनछे, माटे ते करवो जरा रोगादिके करी परवश एवा शरी
रे कार्य स्वाधीन छे ते करवु एवा देहे धर्म आचरण ...

घणुं वधारीए तो श्रीजिनधर्मनुं पूर्ण फल शुं न पामीए? अपितु सर्व पामीए. ॥

जह चिंतामणिरयणं सुलहं नहु होइतुच्छ विहवाणं ॥ गुणविहव वज्जियाणं जियाणतह धम्म रयणंपि ॥९५॥ जहदिठी संजोगो, नहो इ जच्चंधयाण जीवाणं॥तह जिणमय संजो गो न होइमिछंध जीवाणं९६

व्याख्या—जह के० जेम चिंतामणिरत्न, तुछविहवाणं के० अल्पधनना धणीने मळवुं सुलभ नथी, तेम गुणविहववज्जियाणंके० समकितप्रमुख गुण रूप विभव जे संपदा तेणे करी रहित एवा जीवोने धम्मरयणंपिके० धर्मरत्न पामवो सुलभ नथी. ॥९५॥जहके० जेम, दिठीसंजोगोके० नेत्रनो संजोग, जच्चंधयाणजीवाणंके० जन्म थी अंध एवा जीवेने नहोइके० नथाय, तह के० तेम, जिणमय के० जिनेश्वरनो भाष्योजे धर्म, तथा तत्व विचार, तेनी प्राप्ति मिछंधजीवाणंके० मिथ्यातदर्शने मो हित एवा अंध जीवोने नहोइ के० नथाय. ॥ ९६ ॥

पच्चरकमणं तगुणे जिणंद धम्मे न दोस लेसोवि ॥ तहविहु अन्नाणं धा, नरमंति कयावितंमि जिया ॥९७॥ मिछे अणंतदोसा, पयडा दी संति नविय गुण लेसो ॥ तहविय तंचेव जिया, हामोहंधानि सेवंति९८

व्याख्या—पच्चरकं के० प्रत्यक्षपणे जिणंदधम्मेअणंतगुणा के० श्रीजिनेश्वर नाथधर्मनेविषे अनंता गुणछे. न दोसलेसोवि के० राग द्वेषादिकदोषनो लेश पण नथी; तहविहु के० तोपण अन्नाणंधजिया के० अज्ञाने करी जे आंधला जीवो छे तेउ, तंमि के० ते जिनेश्वरभाषित धर्मविषे कयाविनरमंति के० कदापि काळे प ण रमे नही एटले चित्तलगावे नहीं ॥९७॥ मिछेके० मिथ्यातमतने विषे अणंतदो सा के० प्राणिहिंसादिक अनंतदोष, पयडादीसंति के० प्रगटपणे देखाय छे, नवि यगुणलेसो के० दया क्षमा प्रमुख गुणनो लवलेश न दीसे; तहविया के० तोपण, जिया के० जीव, तंचेवके० ते मिथ्यामतनेज हा इति खेदकरीने गुरूकहे छे. मो हंधानिसेवंति के० मोहेकरी अंध एवाजे प्राणीछे ते मिथ्यात्वने सेवे छे. ॥ ९८ ॥

धिध्धीताण नराणं विन्नाणे तहगुणेसु कुसलत्तं ॥ सुहसच्च धम्मरयणे सुपरिरकं जे नयाणंति ॥ ९९ ॥ जिणधम्मोय जिवाणं अपुव्वो क प्पपायवो ॥ सग्गापवग्गसुरकाणं फलाणं दाइ गोइमो ॥ १०० ॥

व्याख्या—धिध्धीके० धिकार पडो, धिक्कारपडो ताणनराणंके० ते मनुष्योना विन्नाणे

के०विज्ञाननेविषे, तहके० तेमज, गुणेसुके० दानप्रमुख गुणने विषे, कुशलत
चतुराइ प्रत्येपण, के जेके० जे जीवो सुहृतत्रधम्मरयणेके० नजाताचा धर्म
विषे सुपरिरक नयाणतिके० नली परीक्षाकरी नथीजाणता एटले थारूडो धर्म
के बीजो रूडो धर्म ठे ? एवी परीक्षा नकरी जाणे ॥ ९९ ॥ था जिनधर्म, नव
जीवोने अपूर्व कप्पपायवोके० अपूर्व कल्पवृक्ष ठे सग्ग के० स्वर्ग, अपवग्गके०
मोक्ष, तेहनां सुरकाण के०सुखरूप एवा फलाणके० फलने दाइ के० देणहार ठे
धम्मोबंधुसुमित्तोय, धम्मोयपरमोगुरु॥ मुरकमग्गे पयट्ठाण, धम्मो
परम सदिणो ॥ १०१ ॥ चउगइणं तउहानल पलित्त भवकाणणे
महान्नीमे ॥ सेवसु रे जीवतुम, जिणवयण अमियकुडसम ॥१०२॥
व्याख्या–ए धर्म बंधु के० भाइ अने सुमित्तो के० भलो मित्रठे एहज धर्म प
रमोगुरु के० उत्कृष्ट सद्गुरुठे, वली एहज धर्म मुरकमग्गपयट्ठाणके०मोक्ष मार्गने
विषे जे चालनारा–तेउने परमसहिणोके० उत्कृष्टो रथठे ॥१०१॥ चारे गतिमांहे
जे जन्म जरा मरणरूप अनत दुःख, तेहज अनल के० महा अग्नि, तेणे करी
पलित्तके०दग्ध थएलो एवो महान्नीमेनवकाणणेके०महा नयकर नवरूपी थरण्-
तेनेविषे अरे जीव, तुमके०तु अमियकुम्भसम जिणवयणसेवसुके०अमृत कुंभ समान
एवा श्रीजिनवचनने सेव जायमा बलतां जलकुम्भमां पेसवु तेहज बचावठे ॥१०२
विसमे नवमरुदेसे, अणंतदुह गिम्मताव सतत्तो ॥ जिणधम्मकप्परु
रक सरसुतुमं जीव सिवसुहद ॥ १०३ ॥ किवहुणा जिणधम्मे, जइय
व जहभवोदहिंघोर ॥ लहुतरिय मणतसुह लहड जिउमासयठाण १
व्याख्या–विसमे के० महाविषम एवा नवमरुदेसे के० संसाररूप निर्जन मरु
नेविषे, त्यां जे अनत दुःख तेहज जाणे गिम्मा के०ग्रीष्म कालना तापनी लहेर,
करी सतत्तो के०घणो तप्यो थको जीवरहेछे त्यां जिणधम्मकप्परुरकके० जिनध
री कल्पवृक्ष ते केवुछे ? तोके सिवसुहद के० मोक्ष सुखनु देणहारछे ते प्रत्ये, अ
व तुम के० तु सरसुके०दोडीने पहोंच ॥१०३॥ किंवहुनाके० घणु शु कहेवु'
धम्मेजइयव के० जिनधर्मनेविषे यत्न करवो जहके० जेम जिनधर्म सेवन क
भवोदहिघोर लहुयतरिय के० नयकर एवा ससार समुद्रने उतारने पार
अणत सुहमासयठाण के० अनतु सुखछे जनेविषे एवु शाश्वत
तेहने जिउलहइके०जीव पामे ॥१

॥ अथ श्रीऋषभवीरस्तवप्रारंभः ॥

॥ आर्यायुग्मम् ॥ सकलार्थसिद्धिसाधन—हरिचंदनचारुचरणपरिचरणौ ॥ अ
वनकजसंचरणौ निरुपाधिज्ञानवरचरणौ ॥ १ ॥ परमपुरुषार्थगतये पुरुषोत्तमध
देशिनौ वंदे ॥ पुरुषवरपुंडरीकौ पुरुषोत्तमऋषभवीरजिनौ ॥ २ ॥ अनुष्टुब्वृत्तम् ॥
स्तवनं कमलाकेलिभवनं विश्वपावनम् ॥ मूलं मंगलमालायाः स्तवनं जिनचंद्रयोः
॥ ३ ॥ मागधिका ॥ अणुरपि जिन योभवद्गुणो निखिलतया खलु केन वर्ण्यते ॥
तदपि गुणवतां गुणग्रहो भवति विशालफलाय केवलम् ॥ ४ ॥ आलिंगनकम् ॥
चिकुरावलिकांतिकदंबकरंचितकायरुचं दरवातहतांबुदसुंदरमेरुमिवोल्लसितम् ॥ तव
ये हृदये हृदयांबुजनस्मरवीरगुरुं जिननाभिभवं जननाभिभवं यदि नेच्छति तम् ॥
॥ ५ ॥ मागधिका ॥ सुतरां सुतरो भवो भव, जननजराजटिलोपि सांप्रतम् ॥मम
पश्यत एव तावकं दर्शनमंतिमं देवपावकम् ॥ ६ ॥ संगतकम् ॥ विनमदमरनरनि
करमुकुटतटघटितमणीश्रुचितरुचिरुचिरमुपचिततिमिरहरम् ॥ अजिनवनवकनक
कमलपरिकलितमृडुतलं प्रथमजिनपदयुगलमपगलितमलमभिगमवतु माम् ॥ ७ ॥
सोपानकम्॥ उज्जलति तेजसि राजति तान्नमिते यशसि व्याप्तमद्भुत सुतं मरुदेवि सु
देवि तथा ॥ पुण्यवती भवती भुवि दीपशिखेव महो विश्वजनेषु तमोहरणेन तथो
पकृतम् ॥ ८ ॥ वेष्टकम् ॥ नरहस्तिगंधहस्तिनं स्फुतरमल्लवल्गुविद्रमल्लविल्लारिपातकं
नि सपत्नरत्नं प्रमुदितवंदारुवृंदमिममिंडकुंदमंदारसुंदरं यशो बिभ्रतं ॥ चरमदेवदेवं
दिवदगुणमुनिजनपूजितातिशयराजितं विजितमत्तमोहमल्लं जानजयपताकिं च
तुरचतुरतवरधर्मचक्रवर्तिनमनुपमशमदमदम् ॥ ९ ॥ शालकुरंधकम् ॥ तव वीर
र यशो, जगतीत्रितयं चमत्कुरुते ॥ त्रिशलासुतशिशुनांजनमंदोलितमंदराद्रि
म् ॥ १० ॥ वेष्टकम् ॥ मधुकरकुलकालिमाचिकुरचारिमाभरदमीशमाद्रांद्र
विशालभालं भृशुगमपवाप्तित्रिदशपतिधनुररुणि[illegible]दिमरावती ॥
लीजलनिलजयिनी पवित्रनेत्रे विकसिततनिल[illegible]
सुभगं सुकुमालवालदलरच श्रयपदयुगं रतिपतिगिरिलीला[illegible]
देवोज्ज्वलदशनमिवांबुजं तदुदनम् ॥ ११ ॥ [illegible]
निते जनितप्रमदम् ॥ नीदापि स्नापने [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]
जोंधितसुगे गुरुपनरुनर[illegible] [illegible]
र्ग ॥ इक्षुमानदनदृपर्वेतरिति[illegible]

कटिजयाचरण श्चयि रूपमपि ते ॥ १३ ॥ त्रिनिर्विंशेषकम् ॥ नाराचक ॥ ध्येयगेय
नामधेय नागधेयसन्निधेय हेयरहित हस्तिराजमानयान वर्द्धमानदानवारिसिहित
साधुगन्धसिंधुराय शुद्धबुद्धिबंधुराय जिनप मग्ननिर्जुसगमाय सुक्रमाय निःसमाय
निस्सहाय मम नमोऽस्तु तुभ्यम् ॥ १४ ॥ कुसुमलता ॥ विषयविषविरावनाहिव
ए, निजनिकटैकनिषेवणे निपस ॥ चरमजिनप मामवेहि भृत्य, रचय विकिरसा
राजसंवरुत्यम् ॥ १५ ॥ भुजगपरिरिंगितकम् ॥ मर्दितमदनाजिनव, जगद्धवहिव
तिनाजिनव ॥ कोहि भजति नाजिनव, प्रययास्तुर्जिननाजिनवम् ॥ १६ ॥ हिल्लि
तकम् ॥ कपिकलापि कौतुककरी तव कितवकला, मोहमहारिचलचमूर्विचरति स
वला ॥ या नटकोटिविधनकरी त्रिजगति भवता, ज्ञातसुजातसाऽऽहतकप समस्त
मनता ॥१७॥ ललितकम् ॥ सर्वभुवनसार्वभौम निजशिरसि कैर्नागनरनलोगमै प्रसा
दरसिकं ॥ पुष्परचनकर्मणि प्रथममणुगणा, दधिरे च नपंज तव चरणरेणुकणा
॥ १८ ॥ किसलयमाला ॥ भगवन्निदमपि कृतक वचो ननु तेन तवानिहित ॥ पव
पांसुरपांसुलेन शिरसि द्विजेन निजे निहित ॥ कमलाविलासिनीवश कर्मव
सुर पूर्णमुदितनिनो, निरवासपदचिरादपि चिरपरिचितरोरमेक विनो॥१९॥ सुहुम
। ॥ जयति जय तिलकधारिणी, परिकल्पितमदहारिणी ॥ मारु देव तव भारती,
दधती यतिरसना रती ॥ २० ॥ विद्युद्विलसितम् ॥ जगदुद्धरिणी, त्रिपथी पर
। ॥ तमसां हरणी, यशसां करणी ॥ २१ ॥ युग्मम् ॥ वेष्टकम् ॥ बिभ्रती सम
दद्दाममधुरसुरसुरकिन्नरनरस्तुनिभृगवायुराजगमपापनरसगमसुराधमवनिता अ
ाननलोचनवचनविकारा ॥ २२ ॥ रत्नमाला ॥ रतिकररूपा प्रीतिरूपा गतिजित
रातिसकृना, विपुलनितंबा काचनकला विम्बाधरपीवरकुचकुना ॥ कान्तिकंठी
रठी यतीश्वकटिरसनारावा, मदनमहानटनूनवनायितनानिनिनाननना
ला ॥ २३ ॥ क्रितकम् ॥ सुखरमलमजीरराजिनी, कनककृतननामनानि
हृद्दिशानपहारमफिता वेणिबधपरिकर्मपफिता ॥ २४ ॥ द्वितीयं द्वित
स्मरकृदरचना सुलोचना पात्रजगिसुनगा सुनानना ॥ रुधती श्वसितनानमा
लोलरेजिश्मलेन पाणिना ॥ २५ ॥ दीपकम् ॥ पारिजाततरुपुष्परचता स
वेरेरजानितहमा ॥ चतुरवेरविधिनटितसदमा प्रकटीकृतनिजदनरिमा ॥
॥ विनाहग ॥ निनमार्जिंगति काचन कदलीदलसुहमानानिजमुजननपा
चन पारा मृदुनि वाता ॥ पटु चाटु वचनमपि पटयति काचन मादनमा
सनीनं हसति हृदिविलोकितमाला ॥ २७ ॥

मरागतारमंद्रमध्यतार येइकारशब्दसारमूर्छना मधुरसप्तवर्गमानतानमानशोभमान गीतगानमेकतानमेव कापि सृजति ॥ नटति कापि करणबंधचारुचारिकांगहारताल भेलनादिचतुरमेकधीरवीर सापि न तव ध्याननिदाकरी॥२८॥सप्तभिः कुलकम् ॥ नंदितकम् ॥ प्रथमं गुणवंतं, चरमं भगवंतम् ॥ प्रस्तुताविभवं तं, भज भोः श्रुतवंतम् ॥ २९ ॥ भासुरकम् ॥ जिन मारुदेवो जयति युगादिदेवो युगादितमोभरभ्नरित भरते सविता ॥ नाभिनृपतिकुलगगनविभासी, भविककमलवनखंमविकासी मोहग्रहनमतिरजनिविनाशी तेजोधनजनतापरिहासी ॥ ३० ॥ अपरनाराचकम् ॥ देवसालशालिपुष्पकर्णपूरलालसालिजालगुमगुमायमाननादकुपितगगनगामिकामिनीभिरादिवेव तावकीनपीनयशसि सप्रमोदनोदिताभिराजसुंदरातिसुंदरेषु मेरुकाननांतरेषु सुप्रवीणवेणुवादिवाद्यवादनादसादराभिरेकरीतिगीतिमार्गयोजनावतारिते कामधेनुदुग्धपानपारिजातफलवितानलेहनातिशायि सातमनुभवैकगम्यमजनि वासवेषु ॥ ३१ ॥ अपरललितकम् ॥ वीर या जगति तुंगवीरमदवाहिनी, जगदजगरगुरुकर्मरिपुविपुलवाहिनी ॥ त्रिभुवनैकसुभट मे विधेहि सहायतां, येन जिनेश जयामि सुखेन शिवाय ताम् ॥ ३२ ॥ वानवासिका ॥ अकर्मसिद्धौ मलैर्निषिद्धौ स्वभावशुद्धौ स्वयंप्रबुद्धौ॥ जिनेषु वृद्धौ गुणैः समृद्धौ मया निरुद्धौ हृदि प्रबुद्धौ ॥३३॥ ॥ अपरांतिका ॥ आदिमांतिमजिनौ नमामि तौ नेमुषां सपदि दत्तकामितौ ॥ यद्वलेन सहसैव नामितौ द्वेपरागसुभटौ बलामितौ ॥ ३४ ॥ आर्या ॥ इति मतिमूढेन मया नीतं स्तुतिगोचरं जिनपयमलं ॥ सुरललितपदकमलं नाशयतु सतामनादिमलं ॥ ३५ ॥ खंडितपरपाखंडं करिराजकरप्रचंडभुजदंमं ॥ कीर्तिलतावनखंमं ज्ञानादिकगुणप्रतिकरंमं ॥ ३६ ॥ शांतरससुधाकुंमं जिनपुंगवयुगलकं गलितदंडं ॥ पावितभारतखंमं ददातु मम शिवसुखमखंमं ॥ ३७ ॥ संप्रति सुविहितयतिपति, सूरिश्रीहीरविजयगुरुराज्ये ॥ श्रीसकलचंद्रवाचक, वालकमुनिशांतिचंद्रेण ॥ ३८ ॥ कवितामदपरिहारान्नुवता विमलाशयेन जिनराजौ ॥ यदवापि सुकृतमतुलं संघे शांतिर्भवतु तेन ॥ ३९ ॥ इति श्रीसकलचंद्रवाचकबालकमुनिशांतिचंद्रविरचितश्रीऋषभवीरस्तवः समाप्तः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ श्रीहृदयप्रदीपषट्त्रिंशिका प्रारभ्यते ॥

शब्दादिपंचविषयेषुविचेतनेषु [illegible] ध्रुवा-
तरगतान्यपिचेष्टितानि [illegible] कर्तुमी

शा कर्तुदुमायेनयतेगिरिं । जानंतितत्त्वमनागिरि तेकेपिनोहि
सम्यग्विरक्तिर्ननुपस्यचिते शम्यगुमर्गेम्यगततरोना । शशानुनूत्वात्
स्यैवसिद्धिर्नेन्द्रियापरस्य ३ गिर्सहमिनिकायमंहृतं ५ गर्द्दगिरि
बधमिवचेतनद्भिते मोघपंतितनुपेत्रर्गानिरं ॥ नोगार्गमेतमनिनाशरी
वृकिलमोगिनावै । जातानिर्वेदिद्वयाद्भिसम्यक् ज्ञानातूनत ६ कृणिपम
द्मांसमेदोस्थिपुरीषमूत्र पूर्णेनुराग कृणिपेकयते । इहा ... विवेकम
ध्यात्किसुसुह्यसीउं ८ धननकेवानिधनगामी ररिद्रिण केशनिनोनटा ।
धनेतितृष्णात्यकात्सुखीस्याद्रितिमेनिचार ७ शमास्तु गास्परोस्तिरोग स
परमांवधन। तद्योगद्ध खस्यविनाशनाय मशाम्यतोपक्रिपतेरिचार ८ अ
विचेतूमतीति स्तत्त्वस्यनिष्ठाचगुरुप्रसादात् । सुगीतिमर्गप्रजनेरनेन ना
नेडुड खी ९ मोहांधकारेभ्रमतीन्दृताम्तत् ससारष्ट गिभरूपयंमान । या
होदयेन यथास्थितंपश्यतिनात्मरूपं १० अपारानधायदुभामनाप
णिशत्रोपमानि । विषेणतुन्याविषयाभतेषां येषांहृदिस्मान्मदयानुभूति
किंतेपरदोषदृष्ट्या कार्यंचकिंतेपरचिंतयाच । वृथाकथंखिद्यसियाकृते कु
जसर्वमन्यत् १२ यस्मिन्कृतेकर्मणिसौख्यलेशो दुःखानुबन्धस्तथास्तिनां
तापोमरणहियावत् मूर्खोपिकुर्यात्पदृतन्नकर्म १३ यदर्जितंवयसाऽ
नतपोज्ञानसुखंचसत्त्वं। क्षणेनसर्वंप्रदहत्यहो तत् कामानलोप्राप्य ... पती
दसौमोहरिपुर्जनानां ज्ञानविवेकंचनिराकरोति । मोहानिनूनंहिजगद्धिन
बोधादपयातिमोह १५ सर्वत्रसर्वस्यसदाप्रवृत्तिर्दुःखस्यनाशायसुखस्य
पिडुःखंनविनाशमेति सुखनकस्यापिचजेस्थिरत्व १६ यत्कृत्रिमंरंगपिप
भ्रमनजवैकोनजनेतमत्यै । सर्वेपुतश्चाधममध्यमेषु यद्दृश्यतेतत्रकिमद्भु
क्षुधातृषाकामविकाररोष हेतुर्भवतेषजयदृति । तदस्ततत्रक्षणिकप्रयास
श्वरादूरतरंत्यजंति १७ गृहीतलिंगस्यचचेद्धनाशा गृहीतलिंगाविषयाभिला
तांलिंगोरसलोलुपश्चेद् विडंबननास्तिततोऽधिकंहि १९ येलुब्धचित्ताविष
बहिर्विरागाहृदिबद्धरागा । तेदांभिकावेषधराश्चधूर्ता मनांसिलोकस्यतुरंज
मुग्धश्चलोकोपिहियत्रमार्गं निवेशितस्तत्ररतिंकरोति । धूर्तस्यवाक्यं परिमोहि
पांनचित्तंभ्रमतीहलोके २१ येनिःस्पृहास्त्यक्तसमस्तरागा स्तत्त्वैकनिष्ठागनि
ना । संतोषपोषैकविलीनवांछा स्तेरंजयंतिस्वमनोनलोकं २२ तावद्दिवावो

[illegible] ॥ चिंतामणिंप्राप्यवरंहिलोके जनेजनेक.कथयन्[illegible]
[illegible]दर्शनानां तथैवतेषांशतशःप्रभेदाः । नानापथेसर्वजनःप्रवृत्त[illegible]
[illegible] ॥ २४ ॥ तत्स्वराज्यंहिधनंतदेव तपस्तदेवेहकलाचसैव
[illegible]नाशयेच्चमोचेद्दृष्ट्वातवैनिद्रंहिमन्ये ॥ २५ ॥ दृष्टैर्जनैःकियदि[illegible]
[illegible]जनैःकियद्विचिंतितापः । क्षीणातिनोनैवडनोतिचान्यान् स्वस्थ.सदौदार[illegible]
[illegible] ॥ २६ ॥ एकःपापात्पततिनरकेयातिपुण्यात्स्वरेकः पुण्यापुण्यप्रचयविगम[illegible]
[illegible]प्रयाति । तंगान्नूनंभवतिसुखंद्वितीयेनकार्यं तस्मादेकोविचरतिसदा[illegible]
[illegible] ॥२७॥ त्रैलोक्यमेतद्बहुनिर्जितंयैर्मनोजयेतेपियतोनशक्ताः । मनोजय[illegible]
[illegible]हियस्मात् रुपंत्रिलोकीविजयंवदंति ॥ २८ ॥ मनोजयान्नास्तिपरोहियोगो
[illegible]विचारणाच्च । समाधिसौख्यान्नपरंचसौख्यं संसारसारंत्रयमेतदेव॥२९॥
[illegible]ष्टावपिदुर्जनाये रसायनंचांजनधातुवादाः । ध्यानानिमंत्राश्चसमाधियोगा
[illegible]विफलभवंति ॥ ३० ॥ विंदंतितत्त्वंनयथाहियतंवै संकल्पचिंताविषयाकु
ये । नंतारदुःखैश्चकदर्थितानां स्वप्नेपितेषांनसमाधिसौख्यं ॥ ३१ ॥ [illegible]
नरत्वपथप्रकाशी नग्रंथकोटिपठनंजनरंजनाय । संजीवनीतिपरमौषधमस्ति[illegible]
मग्नजननांनवमूलभारः ॥ ३२ ॥ तावत्सुखेच्छाविषयादिभोगे [illegible]
खंनवेत्ति । लब्धेमनःस्वास्थ्यसुखैकलेशे त्रैलोक्यराज्येपिनतस्यतोषः ॥ ३३ ॥ नरेन्द्र
राजन्यनचक्रवर्तिनस्त देवसुखंरागयुतस्यमन्ये । यद्वीतरागस्यमुनेःसदात्म–[illegible]
स्थिरतांप्रयाति ॥३४॥ यथायथाकार्यशताकुलंवै कुत्रापिनोविश्रमतीहचित्तं । तथात
थातत्त्वमिदंदुरापं इहस्थितंसारविचारहीनैः ॥३५॥ शमसुखरसलेशात्द्वेष्यतांसंप्र
याता विविधविषयभोगात्यंतवाञ्छाविशेषाः । परमसुखमिदंयद्भुज्यतेऽतःसमाधौ मन
सितिततदातेशिष्यतेकिंवदान्यत् ॥ ३६ ॥ इति हृदयप्रदीपषट्त्रिंशतिका संपूर्णा॥

॥ मार्गानुसारीना लक्षण ॥

[illegible]ायसंपन्नविभवः शिष्टाचारप्रशंसकः । कुलशीलसमैःसार्द्धं कृतोद्वाहोन्यगोत्रजैः ॥
१ ॥ पापभीरुःप्रसिद्धंच देशाचारंसमाचरन् । अवर्णवादीनक्कापि राजादिषुविशेष[illegible]
॥ २ ॥ अनतिव्यक्तगुप्तेच स्थानेसुप्रातिवेश्मके । अनेकनिर्गमद्वार विवर्जितनिके[illegible]
ः ॥ ३ ॥ कृतसंगःसदाचारैर्मातापित्रोश्चपूजकः । त्यजन्नुपप्लुतंस्थान मप्रवृत्तिश्च[illegible]
ते ॥ ४ ॥ व्ययमायोचितंकुर्वन् वेषंवित्तानुसारतः । अष्टभिर्धीगुणैर्युक्तः शृण्वा[illegible]
ीमन्वहं ॥५॥ अजीर्णेभोजनत्यागी कालेभोक्तासात्म्यतः ।

धेन त्रिवर्गमपिसाधयन् ॥६॥ यथावदतिथौसाधौ दीनेचप्रतिपत्तिकृत् । सदाना
विष्टश्च पक्षपातिगुणेषुच ॥ ७ ॥ अदेशाकालयोश्चर्या त्यजन्जानन्बलाबन
स्थज्ञानवृद्धानां पूजक पोष्यपोषक ॥८॥ दीर्घदर्शी विशेषज्ञ कृतज्ञोलोकवल्लभ
लज्जा सदय सौम्य परोपकृतिकर्म्मठ ॥ ९ ॥ अंतरंगारिषड्वर्ग परिहारपराय
वशीकृतेंद्रियग्रामो गृहिधर्मायकल्पते ॥ १० ॥ ॥ ॥ ॥

॥ इति श्रीप्रकरणरत्नाकरपुस्तके

तृतीयभाग. समाप्त ॥